शब्द-संख्या—२११२७

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ-प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

दूसरा खंड

[ख—त]

प्रधान सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

सहायक सम्पादक

बदरीनाथ कपूर, एम. ए., पी-एच. डी.

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रकाशकीय

हिन्दी के प्रेमियो और सेवियो के सामने मानक हिन्दी कोश का यह द्वितीय खण्ड प्रस्तुत करते हुए हमें विशेष प्रसन्नता है। इसके प्रथम खण्ड के प्रकाशकीय वक्तव्य तथा सम्पादक के "आरम्भिक निवेदन" मे इस कोश के उद्देश्य तथा प्रयोजन के विषय मे सब बातें यथासम्भव विस्तार से कह दी गयी हैं। हिन्दी जैसी जीवित और विकास की ओर गतिशील भाषा के कोश का प्रणयन कभी सर्वथा सर्वांगपूर्ण नही हो सकता। राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुए हिन्दी को अभी थोड़ा ही समय हुआ है। पिछले कुछ वर्षो मे तीव्र गति से हिन्दी मे नये शब्द आये हैं। पिछली कुछ सदियों से जिन कतिपय विदेशी भाषाओ का सम्पर्क हिन्दी से रहा है उनसे कही अधिक विदेशी भाषाओं से हिन्दी का सम्पर्क अब होने लगा है। अपने देश की सहोदरा भाषाओ से भी हिन्दी का सम्पर्क अब बढने लगा है। जब हम यह चाहते हैं कि कम से कम समस्त भारत के लोग अन्तरप्रादेशिक विचार-विनिमय और भावाभिव्यक्ति के लिए हिन्दी का माध्यम अपनावें, तब इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है कि हम हिन्दी के क्षेत्र को कितना व्यापक बना रहे हैं। हिन्दी की उप-भाषाओं के बहुसंख्यक सेवक भी अपनी रचनाओं से हिन्दी के शब्द-भण्डार की अभिवृद्धि कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में हिन्दी के सर्वांगपूर्ण कोश के प्रणयन का यह कार्य सूत्रपात्र मात्र कहा जायगा।

हमे खेद है कि प्रथम खण्ड के प्रकाशित होने के तुरन्त बाद द्वितीय खण्ड प्रकाशित न हो सका। इस बीच कुछ समय बीत गया। मानक हिन्दी कोश को पाँच खण्डो मे प्रकाशित करने का विचार है। हम प्रयास कर रहे हैं कि आगे के सब खण्ड शीघ्र प्रकाशित हो जायँ।

प्रथम खण्ड के प्रति हिन्दी के मनीषी विद्वानों तथा अन्यान्य हिन्दी-प्रेमियो ने जो सद्भाव प्रकट किये हैं उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

हम इस कोश के प्रधान सम्पादक, उनके सहयोगी तथा अन्य ऐसे सभी लोगो के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने इसके मुद्रण और प्रकाशन मे विशेष योगदान किया है। सम्मेलन मुद्रणालय के प्रबन्धक और कर्मचारी अपने ही हैं फिर भी उन्हें साधुवाद देना आवश्यक है क्योकि कठिन परिस्थिति में विशेष सतर्कता के साथ उन्होंने इसके मुद्रण का कार्य सम्पन्न किया है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

गोपालचन्द्र सिंह
सचिव, प्रथम शासन निकाय

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अं०—अंगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक मे) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रंश
अर्द्ध० मा०—अर्द्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अ० य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियो की बोली
इब०—इबरानी भाषा
उग्र—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'।
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कबीर—कबीरदास
कश०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोक०—कोकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थ-शास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि० प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द्र०—चन्द्रवरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावा-द्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डि०—डिंगल भाषा
ढो० मा०—ढोल मारू रा दूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिब्बती
तु०—तुरकी भाषा
तुलसी—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलगु भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारी सिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखे
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीरप्रसाद द्विवेदी
नपु०—नपुंसक लिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
पं०—पजाबी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पु०—पुंलिंग
पु० हिं०—पुरानी हिन्दी
पुर्त्त०—पुर्त्तगाली भाषा
पू० हिं०—पूर्वी हिन्दी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशंकर प्रसाद
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रां०—फ्रांसीसी भाषा
बंग०—बंगाली भाषा
बर०—बरमी भाषा
बहु०—बहुवचन
बिहारी—कवि बिहारीलाल
बु० ख०—बुंदेलखंडी बोली
भारतेन्दु—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक संज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावें
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवाँ-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखाना
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात् हिन्दुस्तानी जहाजियों की बोली
लै०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर
व्या०—व्याकरण
शृं०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत भाषा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सि०—सिन्धी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
हि०—हिन्दी भाषा

*यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।
†यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य० स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास।
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास।
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास।
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास।
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० व०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
पं० त०—पञ्चमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० व० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष०त० —षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनो पाणिनीय व्याकरण के संकेत हैं। इनके अर्थ हैं, 'पृषोदर' आदि शब्दो की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दो की सिद्धि। जिन शब्दो की सिद्धि पाणिनीय सूत्रो से सभव नही होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियो का प्रयोग किया जाता है। इन विधियो से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णो के आगम, व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।

मानक हिन्दी कोश

दूसरा खण्ड

ख

ख—देवनागरी लिपि मे क वर्ग का दूसरा अक्षर जो अघोष, स्पृष्ट तथा महाप्राण है और कठ से उच्चरित होता है।

ख—पु०[स०√खन् (खोदना)+ड] १ गड्ढा। २ शून्य स्थान। ३. आकाश। ४ निकलने का मार्ग। निकास। ५ छेद। सूराख। ६ विल। विवर। ७ ज्ञानेन्द्रिय। ८ कूँआ। ९ तीर से लगा हुआ घाव। १० नगर। शहर। ११. सुख। १२ गले की वह नाली जिससे प्राणवायु आती-जाती है। श्वासनलिका। १३ गाड़ी के पहियें की नाभि का छेद जिसमे धुरा रहता है। आखा। १४ जन्म-कुडली मे लग्न से दसवाँ स्थान। १५ विंदु। सिफर। १६ सूर्य। १७ शब्द। १८ क्षेत्र। १९ कर्म। काम। २० अभ्रक।

खंक†—वि० [स० ककाल] दुर्वल । वलहीन ।
वि० दे० 'खुक्ख'।

खंकर—पु० [स०√खन् (खोदना)+क्विप्,√कृ (विखेरना)+अप्, खन्–कर कर्म० स०] वालो की लट । अलक ।

खंख—वि० [स० कक] १ छूछा। खाली । रिक्त । २ उजाड । ३. सुनसान । ४ दरिद्र । निर्धन ।

खंखणा—स्त्री० [सं०] घटी, घुघरू आदि के वोलने का शब्द ।

खंखर*—पु० =खकर ।
वि०=खख ।

खँखरा†—पु० [देश०] १ तावे का वडा देग । २ वाँस का वडा टोकरा।
वि०=खाँखर (खोखला) ।

खँखार—पु०=खखार।

खँखारना—अ०=खखारना ।

खंग—पु० [स० खड्ग] १ तलवार। २ गैडा ।

खगड़ा†—वि० [?] १ उजड्ड । २ उद्द‌ड ।
पु० दे० 'अगड़-खगड़'।

खँगना†—अ० [स० क्षय] कम होना । घटना । छीजना।

खंगर—पु० [देश०] १ एक साथ चिपकी और पकी हुई कई ईंटें या उनके टुकडे ।
वि० १ सूखा । शुष्क । २ दुवला-पतला । क्षीण ।
मुहा०—**खंगर लगना**=सूखा नामक रोग होना, जिससे शरीर दिन पर दिन दुवला होता जाता है ।

खँगवा—पु० [देश०] पशुओ के खुर पकने का एक रोग ।

खँगहा—वि० [हि० खाँग+हा (प्रत्य)] (पशु) जिसे खाँग हो या निकला हो।
पु० १ गैडा । २ सूअर । ३ मुर्गा ।

खँगारना—स०=खँगालना ।

खँगालना—स० [स० क्षालन, गु० खखाडवूं, मरा० खगडणें] १. किसी पात्र के अदर पानी डालकर उसे हिला-डुलाकर थोडा धोना । २. पानी से भरे हुए वरतन मे कोई चीज डुवाकर उसे हलका या थोडा धोना । ३ ऐसा काम करना कि किसी के घर की चीजें निकलकर इधर-उधर हो जायँ। चालाकी से सव कुछ ले लेना या नष्ट कर देना। ४ अदर की चीज हिला-डुलाकर वाहर निकालना ।

खँगी—स्त्री० [हि० खँगना] खँगने अर्थात् कम होने या छीजने की अवस्था, क्रिया या भाव । कमी । छीज ।

खँगैल—वि० [हि० खाँग] १ (पशु) जो खाँग या लंवे दाँतो से युक्त हो। जैसे—गैंडा, हाथी आदि। २ (पशु) जो खँगवा रोग मे पीडित हो।

खँगौरिया†—स्त्री०=हँसली (गहना) ।

खँघारना†—स०=खँगालना ।

खँचना†—अ० [हि० खाँचना] १. खाँचा जाना । २. अकित या चिह्नित होना ।
अ० [हि० खाँची] पूरी तरह मे भरा हुआ होना ।
†अ०=खिचना ।

खँचाना—स० [हि० खाँचना] १. किसी से खाँचने (अकित करने) का काम कराना ।
मुहा०—अपनी खँचाना=अपने मतलव या स्वार्थ की वात कहते चलना, दूसरे की न सुनना ।
२ दे० 'खाँचना' ।

खँचिया†—स्त्री०=खाँची (टोकरी) ।

खँचुला†—पु०=खाँचा (वडा टोकरा) ।

खँचैया†—वि० [हि० खाँचना] खाँचनेवाला ।

खंज—पु० [स०√खञ्ज् (लँगडाना)+अच्] पैर और जाँघ की नसो को जकड लेनेवाला एक वात-रोग, जिसमे रोगी उठने-वैठने या चलने मे असमर्थ हो जाता है ।
वि० १ जिसे उक्त रोग हुआ हो। २. पगु। लँगड़ा ।
†पु०=खजन (पक्षी) ।

खंजक—वि० [सं० खञ्ज+कन्] १ जो खज रोग से पीडित हो। जिसे खज रोग हुआ हो। २ पगु । लँगड़ा।

है कि जिस घोड़े के शरीर पर यह भौंरी होती है, वह खूँटे से बँधे रहने पर बहुत उपद्रव करता है।)
खूँटीगाड़—पु० [हिं० खूँटी+गाडना] घोडे की एक भौंरी। (कहते है कि जिस घोडे के शरीर पर यह भौंरी होती है, वह सदा खूँटे से बँधा रहना ही पसद करता है।)
खूँड़ा—पु० [स० क्षोड=खूँटा] जुलाहो का लोहे का वह पतला छड जिसमे वे नारा लगा कर ताना तानते है।
†वि० दे० 'खोडा'।
खूँड़ी—स्त्री० [हिं० खूँडा] वह पतली लकडी जिसकी सहायता से जुलाहे ताना कसते है।
खूँद—स्त्री० [हिं० खूँदना] खडे हुए घोडे के खूँदने अर्थात् जमीन पर बार बार पैर पटकने की क्रिया या भाव।
खूँदना—अ० [स० खडन=तोडना] [भाव० खूँद] १ चचल या तेज घोडो का खडे रहने की दशा मे पैर उठा-उठाकर जमीन पर पटकना। २ जमीन पर पैर इस प्रकार पटकना कि उसका कुछ अश खुद या कट जाय। उदा०—आजु नराएन फिर जग खूँदा।—जायसी। ३ पैरो से कुचलना या रौंदना। ४ अव्यवस्थित या तितर-बितर करना।
†अ०=कूदना। उदा०—चढै तो जाइ बारबह खूँदी।—जायसी।
खूँभी†—स्त्री०=खुत्थी।
खूँ-रेजी—स्त्री० [फा०] रक्तपात (दे०)।
खू—स्त्री० [फा०] १ आदत। २ स्वभाव।
खूकी—स्त्री० [देश०] गेरुई नाम का छोटा कीडा जो रबी की फसल को नुकसान पहुँचाता है। कूकी।
खूखू†—पु० [फा० खूक] सूअर।
खूगीर—पु० [फा०] १ घोडे की जीन के नीचे बिछाया जानेवाला ऊनी कपडा। नमदा। २ चारजामा। जीन। ३ रद्दी या व्यर्थ की चीजे या सामान।
मुहा०—**खूगीर की भरती**=अनावश्यक और व्यर्थ की चीजो या व्यक्तियो का वर्ग या समूह।
खूच—स्त्री० [देश०] जल-डमरू मध्य। (लश०)
खूझा—पु० [स० गुह्य, प्रा० गुज्झ] १ किसी फल, तरकारी आदि का वह रेशेदार अश जो खाये जाने के योग्य न समझकर फेक दिया जाता है। २ सूत, रेशम आदि के ततुओ या धागो का उलझा हुआ पिंड जो जल्दी काम मे न आ सकता हो।
खूटना†—अ० [स० खुडन] १ अवरुद्ध होना। रुकना २ बद होना। ३ समाप्त होना। न रह जाना।
स० १. रोकना या रोक-टोक करना। २ बद करना। ३. अत या समाप्ति करना। ४ छेडना।
खूटा—वि० [हिं० खोट] १. जिसमे किसी प्रकार की न्यूनता या कमी हो। २ दे० 'खोटा'।
खूद†—पु० [स० क्षुद्र] वह रद्दी अथवा बेकार अग जो किसी वस्तु को छानने अथवा साफ करने पर बच रहता है।
खूदड़ (दर)—पु०=खूद।
खून—पु० [फा०] १ लाल रग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो मनुष्यो, पशुओ आदि के शरीर मे नाडियो, शिराओ आदि मे से होकर चक्कर लगाता रहता है। रक्त। रुधिर। लहू।
मुहा०—(**आँखो में**) **खून उतरना**=अत्यन्त क्रोध के कारण आँखे लाल हो जाना। **खून उबलना या खौलना**=आवेश मे लानेवाला क्रोध उत्पन्न होना। (**किसी के**) **खून का प्यासा होना**=किसी की हत्या करने के लिए विकल होकर अवसर ढूँढ़ते रहना। (**किसी के सामने**) **खून खुश्क होना या सूखना**=किसी से बहुत अधिक डर लगना। (**किसी का**) **खून पीना**=किसी को बहुत अधिक तग या परेशान करना। बहुत दु खी करना या सताना। (**किसी का**) **खून बहाना**=किसी का वध या हत्या करना। (**अपना**) **खून बहाना**=किसी के लिए प्राण दे देना या देने पर उतारू होना। **खून बिगड़ना**=रक्त का ऐसा विकार होना कि किसी प्रकार का त्वचा सबधी रोग हो जाय। **खून सफेद हो जाना**=मनुष्यत्व, सौजन्य, स्नेह आदि से बिलकुल रहित हो जाना।
पद—**खून का जोश**=*रक्त सबध के कारण होनेवाला मानसिक आवेग।* जैसे—लडके के लिए माता-पिता मे या भाई के लिए भाई मे होता है।
२ किसी व्यक्ति की इस प्रकार की जानेवाली हत्या कि उसका शरीर लहू-लुहान हो जाय।
मुहा०—**खून सिर पर चढना या सवार होना** = किसी को मार डालने अथवा कोई अनिष्ट या भीषण कार्य करने पर उतारू होना।
पद—*खून खराबा, खून खराबी=मार-काट। रक्तपात।*
खून-खराबा—पु० [हिं० खून+खराबी] १ लकडियो आदि पर की जाने-वाली एक प्रकार की वार्निश। २ दे० 'खून-खराबी'।
खून-खराबी—स्त्री० [हिं० खून+खराबी] ऐसा लडाई-झगडा जिसमे शरीर से खून बहने लगे। मार-काट।
खूनी—वि० [फा०] १ खून सबधी। खून का। जैसे—खूनी बवासीर। २ *जिसमे से खून झलकता या टपकता हो। खून से भरा हुआ।* जैसे—खूनी आँखे। ३ खून के रग जैसा गहरा लाल। जैसे—खूनी रग। ४ (व्यक्ति) जिसने किसी का खून किया हो। हत्यारा। ५ (व्यक्ति) जो हरदम खून-खराबा या मार-काट करने के लिए तैयार रहता हो। बहुत बडा उपद्रवी और दुष्ट। ६ घातक। मारक। जैसे—खूनी वार।
पु० खून की तरह का गहरा लाल रग।
खूब—वि० [फा०] *सब प्रकार से अच्छा और उत्तम। बढिया।*
अ०य० *अच्छी तरह से। भली भाँति।* जैसे—खूब बकना, खूब मारना।
खूब कलाँ—पु० [फा०] फारस देश की एक प्रकार की घास जिसके बीज दवा के काम आते है।
खूबडखाबड—वि०=ऊबड-खाबड।
खूबसूरत—वि० [फा०] [भाव० खूबसूरती] जिसकी सूरत अर्थात् आकृति अच्छी हो। जो देखने मे बहुत भला लगता हो। सुन्दर।
खूबसूरती—स्त्री० [फा०] खूबसूरत होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। सौन्दर्य।
खूबानी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का बढिया फल। जरदालू।
खूबी—स्त्री० [फा०] १ खूब होने की अवस्था या भाव। अच्छाई। अच्छापन। भलाई। २ गुण। विशेषता।
खूरन—स्त्री० [स० क्षुर हिं० खुर] हाथी के पैरो के नाखूनो मे होनेवाला एक रोग।

खूसट—पु० [स० कौशिक] उल्लू।
वि० १. बहुत बडा मूर्ख। २. जो रसिक न हो। शुष्कहृदय।
खूसर—वि०=खूसट।
खृष्टीय—वि० दे० 'मसीही'।
खेई—स्त्री० [देश०] १. झडबेरी की सूखी झाडी। २ झाड-झखाड।
खेऊ—पु० [देश०] एक प्रकार का जगली पेड।
खेखसा—पु० [देश०] परवल की जाति का एक फल जिसकी तरकारी बनती है।
खेचर—वि० [स० खे√चर् (गति)+ट, अलुक्-समास] आकाश मे चलने या उडनेवाला। आकाशचारी।
पु० १ सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह और नक्षत्र जो आकाश मे चलते रहते हैं। २ देवता। ३. वायु। हवा। ४. आकाशयान। विमान। ५ चिडिया। पक्षी। ६ बादल। मेघ। ७ भूत-प्रेत, राक्षस, विद्याधर, बेताल आदि देव-योनियाँ। ८ शिव। ९. पारा। १० कसीस।
खेचरान्न—पु० [स० खेचर-अन्न, कर्म० स०] खिचडी।
खेचरी—स्त्री० [स० खेचर+ङीप्] १. आकाश मे उडने की शक्ति जो एक सिद्धि मानी जाती है। २ हठयोग की एक मुद्रा जिसमे जबान उलट कर तालू से और दृष्टि दोनो भौहो के बीच ललाट पर लगाई जाती है। इसे प्रतीकात्मक पद्धति मे 'गोमास भक्षण' भी कहते हैं। ३. तत्र मे उँगलियो की एक मुद्रा।
खेचरी गुटिका—स्त्री० [स० व्यस्तपद] तंत्र के अनुसार एक प्रकार की गोली जिसके सबध मे यह कहा जाता है कि इसे मुँह मे रखने पर आदमी आकाश मे उड सकता है।
खेचरी मुद्रा—स्त्री० [स० व्यस्तपद] १. योग साधन की एक मुद्रा जिसके साधन से मनुष्य को कोई रोग नही होता। २ एक प्रकार की मुद्रा जिसमे दोनो हाथो को एक दूसरे पर लपेट लेते है। (तंत्र)
खेजड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।
खेट—पु० [स०√खिट् (डरना)+अच्] १. किसानो की बस्ती। २. छोटा गाँव। ३. घास। ४ तिनका। तृण। ५. घोडा। ६. ढाल। ७ छडी। लाठी। ८. शरीर की खाल या चमडा। ९. कफ। १०. एक प्रकार का अस्त्र। ११. आखेट। शिकार।
पु० [खे√अट् (गति)+अच्, पररूप] ग्रह, नक्षत्र आदि।
खेटक—पु० [स० खेट्+कन] १. किसानो की बस्ती। २ छोटा गाँव। ३ ढाल। ४. बलदेव जी की गदा का नाम। ५. आखेट। शिकार।
खेटकी (किन्)—पु० [स० खेटक+इनि] १ वह ब्राह्मण जो भविष्य सबधी बातें बतलाता हो। भड्डर। २ शिकारी। ३. बधिक।
खेटी (टिन्)—वि० [स०√खिट् +णिनि] १ गाँव मे रहनेवाला (व्यक्ति)। २ कामुक।
खेड—पुं०=खेट (गाँव)।
खेडना—स० [स० खेटन] १ चलाना। उदा०—खँति लागँ त्रिभुवन पति खेडै।—प्रिथीराज। २. 'खदेडना'।
खेड़ा—पुं० [स० खेट] १. किसानो की बस्ती। छोटा गाँव। २ कच्चा मकान।
पद—खेड़े की दूब=तुच्छ या रद्दी वस्तु।
पु० [देश०] कबूतरो, चिडियो आदि को खिलाया जानेवाला रद्दी अन्न।
खेडापति—पुं० [हिं० खेडा+स० पति] गाँव का पुरोहित या मुखिया।
खेड़ी—स्त्री० [देश०] १. वह मासखड जो जरायुज जीवो, (जैसे—मनुष्य गाय, भैस आदि) के नवजात शिशुओ या बच्चो की नाल के दूसरे सिरे मे लगा रहता है। २ मूल धातुओं को गलाने पर उनमे से निकलनेवाली मैल। धातुमैल। (स्लैग) ३ एक प्रकार का बढिया लोहा।
खेढा—पु० [फा० खैल, हिं० खेडा] समूह।
खेढी—स्त्री०=खेडी।
खेत—पु० [स० क्षेत्र] १ वह भू-खड जो फसल उपजाने के लिए जोता-बोया जाता है।
मुहा०—खेत कमाना=खेत मे खाद आदि डालकर उसे उपजाऊ बनाना। खेत करना=जोतने-बोने के लिए भूमि को समतल करना।
२ खेत मे खडी हुई फसल।
मुहा०—खेत काटना=खेत मे उपजी हुई फसल काटना।
३. वह प्रदेश जहाँ कोई चीज उत्पन्न होती हो। जैसे—अच्छे खेत का घोडा। ४. युद्ध क्षेत्र। समर भूमि।
मुहा०—खेत आना=युद्ध मे मारा जाना। (किसी से) खेत करना=लडना। युद्ध करना। उदा०—जंभुक करै केहरि सौ खेतू।—कबीर। खेत माँडना=युद्ध का आयोजन करना। खेत देखना=युद्ध मे जीतना। विजयी होना। खेत रहना=युद्ध मे मारा जाना।
५. तलवार का फल। ६. रहस्य सप्रदाय मे, शरीर।
खेत बँट—स्त्री० [हिं० खेत+बाँटना] खेतो के बँटवारे का वह प्रकार जिसमे हर खेत टुकड़े-टुकडे करके बाँटा जाता है। 'चकबद' का उलटा।
खेतिया—पु०=खेतिहर (किसान)।
खेतिहर—पु० [स० क्षेत्रधर या हिं० खेती+हर] जमीन को जोत-बोकर उसमे फसल उपजानेवाला व्यक्ति। किसान। कृषक।
खेती—स्त्री० [हिं० खेत+ई० (प्रत्य०)] १ खेत को जोतने-बोने तथा फसल उपजाने की कला तथा काम। २ खेत में बोई हुई फसल।
खेती पथारी—स्त्री० दे० 'खेतीबारी'।
खेतीबारी—स्त्री० [हिं० खेती+बारी=बाग-बगीचा] खेत बोने-जोतने और उससे अन्न उपजाने का काम। कृषिकर्म।
खेती-भूमि—स्त्री० [हिं० खेती+स० भूमि] ऐसी भूमि जिस पर खेती होती हो या हो सकती हो। (कल्चरेबुल लैंड)
खेत्र—पु०=क्षेत्र।
खेद—पु० [स०√खिद् (दुःखी होना)+घञ्] १ किसी व्यक्ति द्वारा कोई अपेक्षित काम न करने अथवा कोई काम या बात ठीक तरह से न होने पर मन मे होनेवाला दुःख। जैसे—खेद है कि बार-बार लिखने पर भी आप पत्र का उत्तर नही देते। (रिग्रेट) २. परिश्रम आदि के कारण होनेवाली शरीर की शिथिलता। थकावट।
खेदना—स०=खदेडना।
खेदा—पु० [हिं० खेदना] १. जगली हाथियो के झुड पकडने की वह क्रिया या ढग जिसमे वे चारो ओर से खेद या खदेड़कर लट्ठो के बनाये हुए एक घेरे के अन्दर लाकर फँसाये या बन्द किये जाते है। २. चीते, शेर आदि हिंसक पशुओ का शिकार करने के लिए उनको उक्त प्रकार

से खदेड और घेर कर किसी निश्चित स्थान पर लाने की क्रिया या ढग। ३ आखेट। शिकार। (क्व०)

खेदाई—स्त्री०[हिं० खेदना] खेदने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खेदित—वि० [स० खेद+इतच्] १ जिसे खेद हुआ हो या पहुँचाया गया हो। खिन्न या दु:खी। २ थका हुआ। शिथिल।

खेदी (दिन्)—वि० [स०√खिद्+णिनि] १. खेद उत्पन्न करनेवाला। २. थका हुआ। शिथिल।

खेना—स० [स० क्षेपण, प्रा० खेवण] १ डाँड़ो की सहायता से नाव को चलाने के लिए गति देना। २ जैसे-तैसे या कष्टपूर्वक दिन बिताना। जैसे—रँड़ापा खेना।

खेप—स्त्री०[स० क्षेप] १ बहुत सी चीजें या आदमी किसी प्रकार हर बार ढो या लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। लदान। जैसे—जब चलते चलते रस्ते मे यह खेप तेरी ढल जावेगी।—नजीर। २ उतनी चीजें या उतने आदमी जितने एक बार उक्त प्रकार की ढुलाई मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाये जायँ। लदान। जैसे—चार खेप मे सब चीजें वहाँ पहुँच जायँगी।

मुहा०—खेप भरना=कही ले जाने के लिए माल इकट्ठा करके लादना। खेप हारना=(क) उक्त प्रकार से ढोया जानेवाला माल गँवाना या नष्ट करना। (ख) एक बार किया हुआ परिश्रम व्यर्थ जाना।

स्त्री० [स० आक्षेप] १ ऐब। दोष। २ खोटा सिक्का।

खेपड़ी—स्त्री० [सं० क्षेपणी] नाव खेने का डाँड। (डि०)

खेपना—स० [हिं० खेप] १ कष्टपूर्वक दिन बिताना। २ बरदाश्त करना। सहना।

खेम—पु०=क्षेम।

खेम कल्यानी—स्त्री०=क्षेमकरी।

खेमटा—पुं० [देश०] १ संगीत मे बारह मात्राओ का एक ताल। २. उक्त ताल पर गाया जानेवाला गीत। ३ उक्त ताल पर होनेवाला एक प्रकार का नाच।

खेमा—पु०[अ० खीम'] १ मोटे कपडे का बना हुआ वह तबू जो बाँसो आदि की सहायता से जमीन पर खड़ा किया जाता है।

मुहा०—खेमा गाड़ना=अभियान, यात्रा आदि के समय खेमा खडा करके पडाव डालना।

२ इस प्रकार खडा करके बनाया हुआ स्थायी घर।

खेय—वि० [स० खन् (खोदना)+क्यप्, इत्व] जो खोदा जा सके। पु० १ खाई। २ पुल।

खेर मुतिया—स्त्री०[?] एक प्रकार का छोटा शिकारी पक्षी।

खेरवा—पु०[हिं० खेना] समुद्री मल्लाह।

खेरा—पु०=खेडा (गाँव)।

खेरापति—पु०=खेडापति (गाँव का मुखिया)।

खेरी—स्त्री०[देश०] १ एक प्रकार की घास। २ एक प्रकार का गेहूँ। ३. एक प्रकार का जल-पक्षी।

स्त्री० दे० 'खेड़ी'।

खेरौरा—पु०दे० 'खिरौरा'।

खेल—पु० [स० केलि] १ समय बिताने तथा मन बहलाने के लिए किया जानेवाला कोई काम।

विशेष—खेल कई दृष्टियो से खेले जाते हैं। कुछ मनोविनोद के लिए, जैसे—ताश या शतरज का खेल; कुछ व्यायाम के लिए, जैसे—कबड्डी, गेंद, तैराई आदि; कुछ दूसरो का मनोविनोद करके धन उपार्जन करने के लिए, जैसे—कठपुतली या जादू का खेल, आदि आदि।

मुहा०—(किसी को) खेल खेलाना=व्यर्थ की बातो मे फँसाकर तग करना। खेल बिगाड़ना=(क) किसी का बना हुआ काम खराब करना। (ख) रग-भग करना।

२. बहुत साधारण या तुच्छ काम। ३ कोई अद्भुत या विचित्र काम। जैसे—कुदरत या भाग्य के खेल।

पु०[?] वह छोटा कुड जिसमे चौपाये पानी पीते है।

खेलक—पु०[हिं० खेलना] खिलाडी।

खेलना—अ० [स० खेलन; प्रा० खेलई, अप० खेड़ण, प० खेडना, मरा० खेडणें, उ० खेलिबा; ब० खेला] १ मन बहलाने या समय बिताने के लिए फुरती से उछलना-कूदना, दौडना-धूपना, हँसना-बोलना और इसी प्रकार की दूसरी हल्की शारीरिक क्रियाएँ करना। जैसे—बच्चो को खेलने के लिए भी कुछ समय मिलना चाहिए।

पद—खेलना-खाना=अच्छी तरह खाना-पीना और निश्चिन्त होकर आनन्द तथा सुख-भोग करना। जैसे—लडकपन की उमर खेलने-खाने के लिए होती है।

२. कोई ऐसा आचरण करना जिसमे कौशल, धूर्तता, फुरती, साहस आदि की आवश्यकता हो। जैसे—किसी के साथ चालाकी खेलना। ३ किसी चीज को तुच्छ या साधारण समझकर अनुचित रूप से अथवा मर्यादा का उल्लघन करते हुए इस प्रकार उसका उपयोग करना अथवा उसके प्रति आचरण करना कि वह दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता या हानिकारक सिद्ध हो सकता हो। खेलवाड या मजाक समझकर और परिणामों का ध्यान छोडकर कोई काम करना। जैसे—आग या पानी से खेलना, जगली जानवरो से खेलना, किसी के मनोभावो से खेलना। उदा०—स्वर्ग जो हाथो को है दूर खेलता उससे भी मन लुब्ध।—दिनकर।

मुहा०—जान या जी पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमे जान जाने की आशका या सभावना हो। जान जोखिम का काम करना। मुहा०—सिर पर मौत खेलना=मृत्यु का इतना समीप होना कि जीवित बचने की बहुत ही थोडी सभावना रहे।

४ किसी के साथ ऐसा कौशलपूर्ण आचरण या व्यवहार करना कि वह थककर परास्त या शिथिल हो जाय। जैसे—बिल्ली का चूहे के साथ खेलना अर्थात् बार बार पजे मारकर उसे इधर-उधर दौडाना और परेशान करना। ५ तृप्ति या सुख प्राप्त करने के लिए सहज और स्वाभाविक रूप से इधर-उधर सचार करना या हटते-बढते रहना। क्रीडा करना। जैसे—उसके चेहरे पर मुस्कराहट खेल रही थी। उदा०—उसके चेहरे पर लाज की लाली उसके सहज गौर वर्ण से खेलती रही।—अमृतलाल नागर। ६ किसी के साथ सभोग करना। (बाजारू)

पद—खेला-खाया (देखे)।

स० १. मन बहलाने या समय बिताने के लिए किसी खेल या खेलवाड मे सम्मिलित होना। जैसे—कबड्डी, गेंद, ताश, या शतरज खेलना। २ कौशल दिखाने के लिए कोई अस्त्र या शस्त्र हाथ मे लेकर चालाकी

और फुर्ती से उसका सचालन करना अथवा प्रयोग या व्यवहार दिखलाना। जैसे—तलवार, पट्टा, बनेठी या लाठी खेलना। ३ नाटक आदि मे योग देते हुए अभिनय करना। जैसे—महाराज प्रताप या सत्य हरिश्चन्द्र खेलना। ४ धन लगाकर हार-जीत की बाजी मे सम्मिलित होना। जैसे—जूआ या सट्टा खेलना।

विशेष—खेलने के उद्देश्य, प्रकार आदि जानने के लिए देखे 'खेल' के अन्तर्गत उसका 'विशेष'।

खेलनि—स्त्री०=खेल।

खेलनी—पु०[स० √खेल (खेलना)+ल्युट्+अन+ङीप] शतरज का खिलाडी।

स्त्री० वे चीजें जिनसे कोई खेल खेला जाता हो।

खेलवना—पु०[हिं० खेलना] १ पुत्र के जन्म के समय गाये जानेवाले उन गीतो की सज्ञा जिनमे शिशु के रोदन, माता, पिता और परिवार के अन्य लोगो के आनन्दमगल और इस आनन्दमगल के उपलक्ष्य मे किये जानेवाले कार्यो का वर्णन होता है। 'सोहर' से भिन्न।

†२ सोहर।

खेलवाड़—पु० [हिं० खेल+वाड (प्रत्य०)] १. केवल खेल या क्रीड़ा के रूप मे बच्चो की तरह किया जानेवाला काम। २. बहुत ही तुच्छ या सामान्य काम।

खेलवाटी—वि०[हिं० खेल+वार (प्रत्य०)] १. प्राय या सदा खेलवाड़ मे लगा रहनेवाला। २. दे० 'खिलाड़ी'।

खेलवाना—स० [हिं० खेलना] १. किसी को खेलाने मे प्रवृत्त करना। २ अपने साथ किसी को खेलने देना।

खेलवार—पु०[हिं०खेल+वाला] १ खेलनेवाला। खेलाडी। २. शिकारी। उदा०—मानो खेलवार खोली सीस ताज बाज की।—तुलसी।

पुं० दे० 'खेलवाड़'।

खेला—स्त्री०[स० √खेल्+अ-टाप्] १ खेल। २. जादू।

खेलाई—स्त्री०[हिं० खेल] १ खेलने अथवा खेलाने की क्रिया या भाव। जैसे—आज कल वहाँ शतरज की खूब खेलाई हो रही है। २ खेलने या खेलाने के बदले मे दिया जानेवाला पारिश्रमिक।

स्त्री० दे० 'खिलाई'।

खेला-खाया—वि० [हिं० खेलना+खाना] [स्त्री० खेली-खाई] जिसने किसी के साथ विलासिता या सभोग के सुख का अनुभव और ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।

खेलाड़ी—वि० [हिं० खेल+वार (प्रत्य०)] १. प्रायः या बराबर खेलता रहनेवाला। खेलवाटी। जैसे—खेलाड़ी लडका। २ दुश्चरित्रा या पुश्चली (स्त्री)।

पु० १ खेल मे किसी पक्ष मे सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति। २ कुछ विशिष्ट प्रकार के खेल-तमाशे करने या दिखानेवाला व्यक्ति। जैसे—महुअर या साँप का खेलाडी, गेद का खेलाड़ी।

खेलाना—स० [हिं० खेलना का प्रे०] १ किसी को खेलने मे प्रवृत्त करना। २ अपने साथ खेल या खेलने में सम्मिलित करना। ३ तरह-तरह की बातें करके इधर-उधर दौड़ाते रहना अथवा किसी काम या बात की झूठी आशा मे फँसाये रखना। ४ किसी को त्रस्त, दुःखी या परास्त करने के लिए उसके साथ ऐसा आचरण या व्यवहार करना कि वह बिल्कुल विवश और शिथिल हो जाय। जैसे—बिल्ली का चूहे को खेलाना।

मुहा०—खेला-खेलाकर मारना=दौडा-दौडाकर बहुत तंग, दुःखी या परेशान करना। उदा०—हतिहौ तोहिं खेलाई खेलाई।—तुलसी।

खेलार—पु०=खेलवार (खिलाडी)।

खेलि—स्त्री०[स० खे √अल् (गति)+इन्] खेल। क्रीड़ा।

पुं० १ पशु- पक्षी आदि जीव-जन्तु। २. सूर्य। ३ तीर। वाण। ४. गीत।

खेलुआ—पु० [हिं० खिलना या खिलाना] चमडा रंगनेवालो का एक औजार जो थाली की तरह का होता है।

खेलौना—पुं०=खिलौना।

खव—पु०[देश०] एक प्रकार की घास।

खेवइया—पु० दे० 'खेवैया'।

खेवक—वि० [हिं० खेना+क (प्रत्य०)] खेनेवाला। उदा०—जेहि रे नाव करिया औ खेवक वेग पाव सो तीर।—जायसी।

पुं० केवट। मल्लाह।

खेवट—पुं०[हिं० खेत+वट (प्रत्य०)] पटवारियो या लेखपालों का वह लेखा जिसमे यह लिखा रहता है कि किस खेत का कौन-कौन मालिक या पट्टीदार है, उसे कौन जोतता-बोता है और मालगुजारी कितनी है।

पु०—[स० केवट] मल्लाह। माँझी।

खेवटदार—पु०[हिं०+फा०] खेत मे का पट्टीदार या हिस्सेदार।

खेवटिया—पु०=केवट (मल्लाह)।

खेवड़ा—पु०=खेवरा।

खेवड़ा—पु०[स० क्षपणक, प्रा० खवणअ, हिं० खवडा] १. बौद्ध भिक्षु। २ एक प्रकार के तान्त्रिक साधु।

खेवणी—स्त्री०[स० क्षेपणी] नाव का डाँड। (डिं०)

खेवनहार—वि० [हिं० खेना+हार(प्रत्य०)] १ नाव खेनेवाला। २. खेकर या और किसी प्रकार सकट आदि से पार लगानेवाला।

पु० केवट। मल्लाह।

खेवना—स०=खेना।

खेवनाव—पु०[देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड।

खेवरना—स०[हिं० खौर] १. खौर अर्थात् चदन का टीका लगाना। २. स्त्रियो का चदन, केसर आदि से मुँह चित्रित करना।

खेवरा—पु० [स० क्षपणक प्रा० खवडा] क्षपणक जैन साधु।

पु० दे० 'खेवडा'।

खेवरिया—वि० [हिं० खेना] खेनेवाला। खेवक।

खेवरियाना—स० [देश०] एकत्र या जमा करना।

खेवा—पु०[हिं० खेना] १ लदी हुई नाव को एक स्थान से दूसरे स्थान पर खेकर ले जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ उक्त के आधार पर ढो अथवा लादकर कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। खेप। ३ उतनी सामग्री जितनी एक बार मे ढोकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाई जाती हो। ४. कोई काम या उसका कोई अश एक बार मे पूरा करने का अवकाश या समय। जैसे—इस खेवे मे सारा झगडा निपट जायगा। ५ किसी परम्परागत कार्य के विचार मे उसके पूर्वकालीन अथवा उत्तरकालीन विभागो मे से कोई एक विभाग। जैसे—पिछले खेवे के शृगारी कवियो ने तो हद कर दी थी।

पु० नाव का डाँड। उदा०—चलैं उताइल जिन्ह कर खेवा।—जायसी।

खेवाई—स्त्री० [हिं० खेना] १ नाव खेने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ वह रस्सी जिसमे डाँड नाव से बँधा रहता है।

खेवैया—पु० [हिं० खेना] १ नाव खेकर पार ले जानेवाला व्यक्ति। केवट। मल्लाह। २ किसी प्रकार के सकट से पार लगानेवाला व्यक्ति। जैसे—डगमग डगमग डोले नैया, पार करो तो जानूँ खेवैया।—गीत।

खेस—पु० [फा० खिस] करघे पर बुना हुआ एक प्रकार का मोटा कपडा जो चारपाई आदि पर बिछाया अथवा जाडे मे ओढा जाता है।

खेसर—पु० [स० खे√सृ (गति)+ट अलुक् स०] खच्चर।

खेसारी—स्त्री० [स० कृसर या खजकारि] एक प्रकार का कदन्न। लतरी। दुबिया मटर।

खेह—स्त्री० [स० क्षार, प० खेह] १ धूल-मिट्टी। उदा०—सैतव खेह उडावन झोली।—जायसी।

मुहा० खेह खाना=(क) व्यर्थ समय खोना। (ख) इधर-उधर की ठोकरे खाना। कष्ट भोगना।

२. भस्म। राख।

खेहलि—स्त्री० दे० 'खेह'।

खेहर—स्त्री०=खेवह।

खेहा—पु० [?] बटेर की तरह का एक पक्षी।

खेंग—पु० [फा० खिंग] घोडा। (डि०)

खेंचना—स०=खींचना।

खेंचनी†—स्त्री० [हिं० खींचना] लकडी की वह तख्ती जिस पर तेल लगाकर सिकली किये हुए अस्त्र आदि साफ किये जाते है।

खेंचा-खेंची—स्त्री०=खींचतान।

खेंचातान—स्त्री०=खींचतान।

खेंचातानी—स्त्री०=खींचतान।

खैकारा—वि० [स० क्षयकारी] नष्ट या बरबाद करनेवाला। उदा०—अब कुछ ताको सहज सिंगारा। बरनो जग पातक खैकारा।—नददास।

खैनी—स्त्री० [हिं० खाना] सुरती के पत्ते का चूरा जो चूना मिलाकर खाया जाता है।

खैबर—पु० [देश०] भारत और अफगानिस्तान के बीच की एक घाटी या दर्रा।

खैमा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जल-पक्षी।

खैयाम—पु० [अ०] १ खेमा सीनेवाला व्यक्ति। २ फारसी का एक प्रसिद्ध कवि उमर खैयाम।

खैर—पु० [स० खदिर] १ एक प्रकार का बबूल। कथ कीकर। सोनकीकर। २. उक्त वृक्ष की लकडियो के टुकडो को उबालकर निकाला हुआ सार पदार्थ जो पान पर लगाया जाता है। कत्था। ३ भूरे रग का एक प्रकार का पक्षी।

स्त्री० [फा० खैर] कुशल। क्षेम।

अव्य० [फा०] १. ऐसा ही सही। अस्तु। अच्छा। २ कोई चिन्ता नही। देखा जायगा। (उपेक्षा सूचक)

खैर-आफियत—स्त्री० [फा०] कुशल-मगल। कुशल-क्षेम।

खैरखाह—वि० [फा०] [भाव० खैरखाही] भलाई चाहनेवाला। शुभचितक।

खैरखाही—स्त्री० [फा०] शुभचितन। शुभकामना।

खैरबाद—पद [फा०] किसी से बिछुडते समय कहा जानेवाला पद जिसका अर्थ है—कुशलपूर्वक रहो।

खैर भैर—पु० [उत्पत्ति द] १ हल्ला। २ चहल-पहल। रौनक। उदा०—खैर भैर चहुँ ओर मच्यो अति आनद पूरन समाई।—रघुराज।

खैरवाल—पु० [देश०] कोलियार का वृक्ष।

खैरसल्ला—स्त्री० [अ० खैर+सलाह] कुशल-क्षेम। कुशल-मगल।

खैरसार—पु० [स० खदिर-सार] कत्था। खैर।

खैरा—वि० [हिं० खैर] खैर या कत्थे के रग का। कत्थई।

पु० १ उक्त प्रकार का रग। २. कत्थई रग के खुरोवाला बैल। ३. खैरे रग का कोई पक्षी या पशु। ४ धान की फसल का एक रोग।

पु० [देश०] १ तबला बजाने मे एक ताले (ताल) की दून। २. एक प्रकार की मछली।

खैरात—स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] १ दरिद्रो, भिखमगो आदि को दान रूप मे दिया जानेवाला धन या पदार्थ। २ दान।

खैरात खाना—पु० [अ०+फा०] वह स्थान जहाँ से लोगो को खैरात मिलती हो अथवा मुफ्त मे सबको भोजन-वस्त्र आदि बाँटे जाते हो।

खैराती—वि० [फा०] खैरात के रूप मे अथवा खैरात के धन से चलने या होनेवाला। जैसे—खैराती दवाखाना।

खैराद—पु०=खराद।

खैरियत—स्त्री० [फा०] १ कुशल-क्षेम। राजी-खुशी। २. कल्याण। भलाई।

खैलर—स्त्री० [स० क्ष्वेल] मथानी।

खैला—पु० [स० क्ष्वेड] जवान बछडा जिसे अभी हल आदि मे जोता न गया हो।

स्त्री० [फा० खैल.] फूहड स्त्री।

खोइचा—पु० [हिं० खूंट] १ धोती या साडी का अचल। किनारा।

मुहा०—खोइचा देना या भरना=शकुन के रूप मे किसी स्त्री के आँचल मे चावल, गुड आदि देना।

२ वह धन जो लडकी को विदाई के समय माँ-बाप देते है।

खोखना—अ० [खो खो से अनु०] खाँसना।

खोखला—वि०=खोखला।

खोखी—स्त्री०=खाँसी (कास)।

खोखो—पु० [अनु०] खाँसने का शब्द।

खोगा—पु० [देश०] रुकावट। बाधा।

पु०=खोगाह।

खोंगाह—पु० [स०] सफेद और भूरे रग का घोडा।

खोगी—स्त्री० [हिं० खोसना का देश०] १ खोसी हुई वस्तु। २ लगे हुए पानो का बँधा हुआ चौघडा।

खोंच—स्त्री० [म० कुच] १ किसी नुकीली चीज मे कपडे का थोडा-सा फटा हुआ अग। २ दे० 'खरोच'।

स्त्री० [देश०] झोली। उदा०—चातिक चित्त कृपा घनानद चोंच की खोंच सु क्यों कीर धारयो।—घनानद।

†स्त्री० १ मुट्ठी। २. मुट्ठी भर चीज।

†पुं० [स० क्रौंच] एक प्रकार का वगला।

खोचन†—स्त्री० [स० कुचन] १. खोचने अर्थात् गडाने या चुभाने की क्रिया या भाव। २. गडने या चुभनेवाली चीज ३. खटकने या चुभनेवाली वात। तीखी वात।उदा०—धिक वै मातु पिता धिक भ्राता देत रहत यो ही खोचन।—सूर।

खोचा—पु० [हि० खोचन] १. वह वाँस जिसपर पक्षियों को फँसाने के लिए वहेलिये लासा लगाते है। २. वह लकडी जिससे वृक्षों के फल तोडे जाते हैं। लग्घी। ३ दे० 'खोंच'। ४. दे० 'खोचन'।

खोचिया†—पु० [हि० खोची] १. खोची लेनेवाला। (दे० खोची) २ भिखमगा। भिक्षुक।

पु० [हि० खोचा] १ खोचा लगाकर फल तोड़नेवाला। २ खोचा लगाकर चिडियाँ फँसानेवाला, वहेलिया।

खोची—स्त्री० [हि० खोचा] १ सेवकों अथवा भिखारियों को दिया जानेवाला अन्न। २ जमीन या मकान का किसी ओर निकला या वढा हुआ कुछ अश या भाग।

खोंट—स्त्री० [हि० खोटना] खोटने का काम।

पु० वह जो खोटा गया हो।

पु०=खरोट।

खोटना—स० [स० खड] १ पौधो आदि का ऊपरी भाग चुटकी से दवाकर तोडना। २ टुकडे-टुकडे करना।

खोंटा—वि०=खोटा।

खोंड़र—पु० [स० कोटर] पेड का भीतरी खोखला भाग, जिसमे पशु-पक्षी अपने घर या घोंसले वनाते है।

खोड़हा—वि०=खोडा।

खोंड़ा—वि० [स० खड से] जिसका कोई अग टूटा हुआ हो अथवा न हो।

पुं० [स्त्री० अल्पा० खोडिया] अन्न रखने का वडा वरतन। कोठिला। (वुन्देल०) उदा०—अव की साल खोडिया और वडे भर दूगा अन्न से—। वृन्दावनलाल वर्मा।

खोतल†—पु०=खोता (चिडियों का घोसला)।

खोता—पु०=खोता (घोसला)।

खोया—पु०=खोता (घोसला)।

खोप(न)—स्त्री० [हि० खोपना] १. खोपने या चुभने के कारण फटा हुआ अंग। चीर। दरार। २. सिलाई मे दूर-दूर पर लगे हुए टाँके। गिलगा। ३. दे० 'खरोच'।

*स्त्री०=कोपल।

खोपना†—स० [अनु०] कोई नुकीली चीज किसी मे गडाना या धँसाना। घोपना।

खोपा—पु० [हिं० खोपना] [स्त्री० खोपिया, खोपी] १ हल की वह लकडी जिसमे फाल लगा रहता है। २ छाजन आदि का कोना। ३ भूसा रखने का छप्पर से छाया हुआ गोलाकार स्थान। ४ स्त्रियों के वालो का वँधा हुआ एक प्रकार का जूडा।

खोसना—स० [म० कोश+हि० ना प्रत्य०, गु० खोसवूं, मरा० खोसणे, उ० खोसिवा] एक वस्तु का कुछ अश दूसरी वस्तु मे इस प्रकार डालना, रखना या लगाना कि वह उसमे अटक या फँस जाय। जैसे—(क) कमर में धोती की लाँग खोसना। (ख) टोपी में कलगी खोसना।

खोआ†—पु० [स०क्षोद, आ० खोद] दूध का गाढा किया हुआ वह रूप जिसमे चीनी आदि मिलाकर वरफी, पेडे और दूसरी मिठाइयां वनाई जाती है। खोया। मावा।

खोइड़ार—पु० [हि० खोई+आर (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ रस पेरने के वाद गन्ने की खोई जमा की जाती है।

खोइया†—पु० [देश०] व्रज मे होनेवाला एक प्रकार का नाट्य जो घर मे वरात चली जाने पर वर-पक्ष की स्त्रियाँ रात के समय करती हैं। इसमे वे दूल्हा और दुल्हिन वनकर विवाह का नाट्य तथा राम और कृष्ण की लीलाएं आदि करती हैं।

स्त्री० दे० 'खोई'।

खोइलर†—स्त्री० [सं० क्ष्वेल] वह लकडी जिससे कोल्हू मे पड़े हुए गन्ने के टुकडे उलटते-पलटते हैं।

खोइहा†—पु० [हि० खोई+हा (प्रत्य०)] वह मजदूर जो गन्ने की खोई उठाकर फेंकता है।

खोई—स्त्री० [स० क्षुद्र] १. कोल्हू मे पेरे हुए गन्नो का वचा हुआ रस-विहीन अश। सीठी। २ भाड मे भुने हुए चावल या धान। लाई। लावा। ३ रामदाने की जाति का एक अन्न। ४. सिर पर लवादे की तरह लपेटा हुआ कवल या चादर।

खोकंद—पु० [फा०] तुर्किस्तान या तुर्की का एक प्रसिद्ध नगर।

खोखर†—वि०=खोखला।

पुं० [?] सम्पूर्ण जाति का एक प्रकार का राग।

खोखरा—पुं० [हि० खुक्ख या खोखला] टूटा हुआ जहाज। (लश०)

वि०=खोखला।

खोखल†—वि०=खोखला।

खोखला—वि० [हि० खुक्ख+ला, गु० खोख, मरा० खोक] १. ऐसी वस्तु जिसका भीतरी अंग या भाग निकल गया हो या न रह गया हो। जैसे— खोखला पेड। २ जिसमे तत्त्व या सार न हो। थोथा। निस्सार।

पु० १. खाली और पोली जगह। २. वडा छेद। विवर।

खोखा—पु० [वँ० खोका] [स्त्री० खोखी] वालक। लडका।

पु० [हि० खोखला] १ ऐसी हुडी जिसका रुपया चुकता हो चुका हो। २. वह कागज जिस पर हुडी लिखी जाती है।

खोगीर—पु०=खूगीर।

खोचकिल†—पु० [देश०] चिडियो का घोसला।

खोज—स्त्री० [हि० खोजना] १ किसी खोई या छिपी हुई वस्तु को ढूंढ़ने का काम। २. कोई नई वात, तथ्य आदि का पता लगाने का काम। शोध। ३ किसी व्यक्ति या पशु के चलने से जमीन या मिटटी पर वननेवाला चिह्न या निशान।

मुहा०—खोज मिटाना=वे चिह्न या लक्षण नष्ट करना जिनसे किसी वात या घटना का पता चल सकता हो।

४. उक्त चिह्नों के आधार पर इस वात का पता लगाने का काम कि कोई किस ओर गया है। ५ गाडी के पहिये की लीक।

खोजक*—वि०=खोजी।

खोजड़ा—पु० [हिं० खोज] १ किसी के चलने से जमीन पर बननेवाला चिह्न। २. दे० 'खोज'।

खोजना—स० [स० खुज=चोराना] १ किसी खोई, छिपी अथवा इधर-उधर रखी हुई वस्तु के पता लगाने का प्रयत्न करना। ढूँढना। २. अनुसधान या शोध करना।

खोज-मिटा—वि० [हिं० खोज+मिट्ना] [स्त्री० खोजमिटी] १ जिसके ऐसे चिह्न मिट चुके हो जिनके द्वारा किसी का पता लगाया जा सकता हो। २ एक प्रकार का अभिशाप या गाली। (स्त्रियाँ)

खोजवाना—स० [हिं० खोजना] खोजने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को कुछ खोजने मे प्रवृत्त करना।

खोजा—पु० [फा० ख्वाज] १. प्रतिष्ठित और मान्य व्यक्ति। २ मुसलमान राजाओं के अन्त पुरो मे रहनेवाला नपुसक सेवक। ३ नौकर। सेवक। ४ वम्बई राज्य मे मुसलमानो का एक सम्प्रदाय।

खोजाना†—स०=खोजवाना।

खोजी *†—वि० [हिं० खोज+ई (प्रत्य)०] खोजनेवाला। ढूँढनेवाला। (क्व०)

पु० वह व्यक्ति जो पैरो के चिह्न देखकर चोरो, डाकुओं, पशुओ आदि का पता लगाता हो।

खोजू—वि० पु०=खोजी।

खोट—पु० [स० कूट] १ वह दूषित या निकृष्ट पदार्थ जो किसी दूसरे अच्छे पदार्थ मे लोगों को ठगने के उद्देश्य से मिलाया जाय। जैसे—सुनार ने इस गहने मे कुछ खोट मिलाया है। २ किसी चीज मे या वात मे होनेवाला ऐव या दोष। खोटापन। जैसे—तुम मे यही तो खोट है कि सच वात जल्दी नही वताते। ३ किसी व्यक्ति अथवा कार्य के प्रति मन मे होनेवाली कपट-पूर्ण या दुष्ट धारणा अथवा भाव। मन मे होनेवाली बुरी भावना। जैसे—उस (व्यक्ति) मे अव भी खोट है।

खोटता*—स्त्री०=खोटाई (खोटापन)।

खोटपन—पु०=खोटापन।

खोटा—वि० [स० कूट, प्रा० मरा० गु० कूड; सि० कूरु; सिह० कुलु] [स्त्री० खोटी] १ (वस्तु) जो अपने वास्तविक या शुद्ध रूप मे न हो। जिसमे किसी प्रकार की मिलावट हुई हो। जैसे—खोटा सोना। २ झूठा। नकली। वनावटी। जैसे—खोटा सिक्का। ३ (व्यक्ति) जो जान-बूझकर किसी को कष्ट पहुँचाता या किसी की हानि करता हो। अथवा जिसके मन मे किसी के प्रति वैर हो। जो शुद्ध हृदयवाला न हो। 'खरा' का विपर्याय, उक्त सभी अर्थों मे। ४ खोट से भरा हुआ। खोट युक्त। अनुचित और बुरा। जैसे—खोटी वात।

पद—खोटा खरा=भला-बुरा। उत्तम और निकृष्ट। जैसे—किसी को खोटी-खरी वाते सुनाना= फटकारते हुए अच्छा रास्ता बतलाना।

मुहा०—खोटा खाना=(क) अनिन्दनीय या बुरे उपायों से कमाकर खाना। (ख) अनुचित और बुरा आचरण या व्यवहार करना। (किसी के साथ) खोटी करना= खोटापन या दुष्टता करना।

खोटाई—स्त्री० [हिं० खोटा+ई (प्रत्य०)] १. खोटे होने की अवस्था या भाव। खोटापन। २ कपट। छल। धोखेवाजी। ३ ऐव। दोष।

खोटाना—अ० दे० 'खुटना' (समाप्त होना)।

खोटापन—पु० [हिं० खोटा+पन (प्रत्य०)] खोटे होने की अवस्था, गुण या भाव। खोटाई।

खोटि—स्त्री० [स०√खोट् (खाना)+इन्) दुश्चरित्रा। व्यभिचारिणी।

खोड़—स्त्री० [हिं० खोट] १. किसी प्रकार का ऐव, दोष या हीनता। जैसे—कष्ट, रोग आदि। २ देवता, पितर, भूत-प्रेत आदि का कोप या वाधा। दैव कोप। ऊपरी फेर। ३. कमी। न्यूनता। उदा०—नाल्ह कहहि जिणि आवइ हो खोडि।—नरपति नाल्ह।

†वि० = खोडा।

खोड़र(ा)—पु० [स० कोटर] पुराने पेड़ का खोखला भाग।

खोड़िया†—स्त्री० दे० 'खोरिया'।

खोद†—पु० [हिं० खोदना] १ खोदने की क्रिया या भाव। २ खोद-खोदकर वाते पूछने की क्रिया या भाव। ३ जाँच-पड़ताल।

पद—खोद-विनोद।

पु० [फा० खोद] लडाई के समय सिर पर पहना जानेवाला लोहे का टोप। शिरस्त्राण।

खोदई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़।

खोदना—स० [स०क्षुद्; प्रा०खुद मरा०खोदणे, गुज० खोदवूं, उ०खोदिवा; वँ०खोदा] १ कुदाल आदि से जमीन पर आघात करके गड्ढा वनाना। जैसे—कब्र, कूआँ या नहर खोदना। २ उक्त प्रकार के आघात से कोई चीज तोड़ना। जैसे-दीवार या मकान खोदना। ३ उक्त प्रकार की क्रिया करके किसी चीज पर जमी, लगी अथवा अदर पड़ी हुई वस्तु वाहर निकालना। जैसे— खेत मे के पौधे अथवा खान मे के खनिज पदार्थ खोदना। ४. किसी वस्तु पर जमी अथवा लगी हुई मैल निकालना। जैसे—कान या दाँत खोदना। ५ धातु, पत्थर, लकडी आदि पर किसी औजार या उपकरण से कुछ लिखना या वेल-बूटे वनाना। जैसे—वरतनो पर नाम खोदना। ६ किसी के अग मे उँगली, छड़ी आदि गड़ाना या उससे दवाना। ७ कोई वात जानने के लिए किसी से तरह-तरह के प्रश्न करना।

मुहा०—खोद-खोदकर पूछना=हर वात पर शंका करके वार-वार कुछ और पूछना।

८ उत्तेजित करने या उसकाने का प्रयत्न करना।

खोदनी—स्त्री० [हिं० खोदना] खोदने का छोटा औजार। जैसे—कन-खोदनी, दँत-खोदनी।

खोद-विनोद†—पु० [हिं० खोद+विनोद] १ वहुत छोटी-छोटी वातें तक पूछने का काम। २ छेड़-छाड।

खोदवाना—स० [खोदना का प्रे० रूप] किसी को खोदने मे प्रवृत्त करना। खोदने का काम दूसरे से कराना।

खोदाई—स्त्री० [हिं० खोदना] १ खोदने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ भूगर्भ-स्थित वस्तुओ को वाहर निकालने के लिए जमीन खोदने की क्रिया या भाव। (एक्स्केवेशन) ३ पत्थर, लकडी लोहे आदि पर किसी नुकीली चीज से वेल-बूटे वनाने का काम।

खोना—स० [स० क्षेपन] १. कोई वस्तु अनजान मे या भूल से कहीं इस प्रकार छोड या गिरा देना कि वह खोजने पर जल्दी न मिले। किसी वस्तु से वचित होना। गँवाना। जैसे—ताली, पुस्तक या रुपये खोना। २. असावधानी, दुर्घटना, मृत्यु आदि के कारण वहुत वडी क्षति से

ग्रस्त होना। जैसे—आँखें खोना, ज्ञान खोना, मान खोना आदि। ३. असावधानता, प्रमाद आदि के कारण हाथ से यों ही निकल जाने देना। सदुपयोग न कर पाना। जैसे—सुयोग खोना। ४. खराब या बरबाद करना। जैसे—घर की दौलत खोना।

अ० अन्यमनस्क हो जाना। प्रकृतिस्थ न रह जाना। जैसे—हमारा प्रश्न सुनते ही वह तो खो गये।

पद—खोया-सा=(क) अन्यमनस्क, उदास या खिन्न। (ख) घबराया हुआ।

मुहा०—खोया जाना=चकपका जाना। सिटपिटा जाना। हक्का-बक्का होना।

†पु०=दोना (पत्तों का)।

खोन्चा—पु० [फा० ख्वानचा] फेरी लगाकर सौदा बेचनेवालों का वह थाल जिसमें वे फल, मिठाइयाँ आदि रखते हैं।

मुहा०—खोन्चा लगाना=खोन्चे में रखकर गली-गली घूमते हुए सौदा बेचना।

खोपड़ा—पु० [सं० खर्पर, प्रा० खप्पर, प० खोप्पा; सिं० खोपो, गु० खोपरूं, मरा० खोबरें] १. हड्डियों का वह ढाँचा जिसके अन्दर मस्तिष्क सुरक्षित रहता है। (स्कल्) २. मस्तिष्क। ३. सिर। ४. नारियल। ५. नारियल के अन्दर की गरी। ६. भिक्षुओं का दरियाई नारियल का बना हुआ खप्पर।

खोपड़ी—स्त्री० [हिं० खोपड़ा] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर।

मुहा०—(किसी की) खोपड़ी खाना या चाटना=बहुत सी बातें कह या पूछकर तंग करना। दिक या परेशान करना। खोपड़ी खुजलाना=ऐसा अनुचित या दुष्टतापूर्ण कार्य करना, जिससे मार खाने की नौबत आवे। (किसी की) खोपड़ी गंजी करना=सिर पर बहुत प्रहार करना। खूब मारना। (किसी की) खोपड़ी गढ़ना=जबरदस्ती या चालाकी से किसी से धन वसूल करना। खोपड़ी चटकना=गरमी, पीड़ा, प्यास आदि के कारण जी व्याकुल होना।

३ गोलाकार और बहुत कड़ा ऊपरी आवरण। जैसे—कछुए की खोपड़ी, नारियल की खोपड़ी।

खोपरा†—पु०=खोपड़ा।

खोपा—पु०[सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा] १. छप्पर का कोना। २. मकान का बाहरी कोना। ३ स्त्रियों की गुथी हुई चोटी की तिकोनी बनावट। ४ गरी का गोला।

खोबा—पुं०[देश०] गच या पलस्तर पीटने की थापी।

खोभ—स्त्री० [हिं० खोभना] खोभने की क्रिया या भाव।

*पु०=क्षोभ।

खोभना—स० [सं० क्षुभ्] किसी नरम या मुलायम वस्तु में कोई कड़ी तथा नुकीली चीज धँसाना, गड़ाना या चुभाना।

खोभरना—अ० [?] बीच में आकर आड़ा या तिरछा पड़ना।

स०=खोभना।

खोभरा*—पु०[हिं० खुभना] १ रास्ते में पड़नेवाली वह उभरी हुई चीज जो चुभती हो या जिससे ठोकर लगती हो। उदा०—जैसे कोई पाँवनि पै जाय कहूँ चढ़ाई लैन ताकूँ तौ न कोऊ काँटे खोभरे को दुख है।—सुन्दर। २. कूड़ा-करकट।

खोभराना—अ० =खुभराना।

खोभार—पु०[?] जमीन में खोदा हुआ वह गड्ढा जिसमें कूड़ा-करकट फेंका जाता है।

खोम—पु०[अ० कौम] १. जाति। २. कुल। समूह।

पु०[सं० क्षोम] किले का बुर्ज।

खोय—स्त्री०[फा० खू] १ आदत। बान। २ प्रकृति। स्वभाव।

खोया—पु०=खोआ।

खोर—स्त्री० [हिं० खुर] १. बस्तियों की तंग या सँकरी गली। कूचा। २ वह नाँद जिसमें चारा डालकर पशुओं को खिलाया जाता है।

स्त्री०[हिं० खोरना] नहाना। स्नान।

वि० [हिं० खोड़ा] जिसका कोई अंग टूट गया हो। उदा०—धनुष-बान सिसान किधौं गरुड़ बाहन खोर।—सूर।

वि० [फा०] एक विशेषण जो शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर खानेवाले का अर्थ देता है। जैसे—आदमखोर, नशाखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर आदि।

पुं० [देश०] बबूल की जाति का एक ऊँचा पेड़।

खोरडा†—वि० [?] [स्त्री० खोरडी] सफेद केशवाला। उदा०—अब जस होई खोरडी, जाग रहा करेस।—ढोला मारू।

खोरना†—अ० [सं० क्षालन] स्नान करना। नहाना।

खोरनी—स्त्री०[हिं० खोरना] वह लकड़ी जिससे भट्ठी या भाड़ में ईंधन झोंका जाता है।

खोरा—पुं०[सं० क्षुद्र या खोलक, फा० आबखोरा] [स्त्री० अल्पा० खोरिया] १ छोटा कटोरा या प्याला। २. एक प्रकार का गिलास।

†वि० दे० 'खोड़ा'।

खोराक—स्त्री०=खुराक।

खोराकी—वि० स्त्री०=खुराकी।

खोरि—स्त्री०[हिं० खुर] १. तंग या सँकरी गली। २ छोटी कोठरी। उदा०—खोरिन्ह महँ देखिअ छिटिआने।—जायसी।

स्त्री० [हिं० खोट] १ दोष के रूप में मानी जानेवाली अनुचित और लज्जाजनक बात। २. बुरा काम करने के समय होनेवाला भय या संकोच। उदा०—कत सकुचत निधरक फिरौ रतियौ खोरि तुम्हें न।—बिहारी।

खोरिया†—स्त्री० [?] वह आनन्दोत्सव जो वर पक्ष की स्त्रियाँ बरात घर से चल चुकने पर नाच-गाकर मनाती हैं।

†स्त्री० [हिं० खोरा] १ छोटी कटोरी या गिलास। २. वे बूँदे या सितारे जो स्त्रियाँ अपने मुँह पर शोभा के लिए लगाती हैं।

खोरी—स्त्री०[फा० खुर्द से हिं० खोर+ई प्रत्य०] खाने की क्रिया या भाव। जैसे—रिश्वतखोरी, हरामखोरी, हवाखोरी आदि।

*स्त्री०=कटोरी।

स्त्री०=खोर (सँकरी गली)।

खोल—पु० [सं० खोलक] [स्त्री० अल्पा० खोली] १. किसी चीज का ऊपरी आवरण। २ कुछ विशिष्ट प्रकार के कीड़े-मकोड़ों का वह ऊपरी प्राकृतिक आवरण जिसके अंदर वे रहते हैं। जैसे—घोंघे, सीपी आदि का खोल। ३. कपड़े का सिला हुआ झोले या थैले-जैसा आवरण जिसमें कोई चीज धूल, मिट्टी, मैल आदि से सुरक्षित रखने के लिए

रखी जाती है। गिलाफ। जैसे—तकिये या लिहाफ का खोल, सारंगी या सितार का खोल। ४ मोटे कपड़े की बनी हुई दोहरी चादर।
पु० छोटे मृदंग की तरह का एक प्रकार का बाजा।
वि० [स०√खोड् (लँगड़ाना) +अच्, ड=ल] जिसका कोई अंग टूटा-फूटा या विकृत हो। विकलांग।
पु० शिरस्त्राण। खोद।

खोलना—स० [स० क्षुर् (काटना या खोदना), प्रा० खुरल, मरा० खोलणे; सि० खोलणु; उ० खोलिवा; बँ० खोला] हिन्दी 'खुलना' का सकर्मक रूप जो भौतिक या मूर्त्त और अभौतिक या अमूर्त्त रूपों में नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होता है।

भौतिक या मूर्त्त रूपों में—१ किसी को जकड़ने या बाँधनेवाला उपकरण, चीज या तत्व इस प्रकार हटाना कि वह बँधा न रह जाय। बंधन से मुक्त या रहित करना। जैसे—(क) खूँटे में बँधी हुई गौ, घोड़ा या बकरी खोलना। (ख) गठरी या रस्सी की गाँठ खोलना। २ जकड़ी या लपेटी हुई चीज इस प्रकार अलग या ढीली करना कि वह निकल कर दूर हो जाय। जैसे—कमरबंद, पगड़ी या हथियार खोलना। ३ जड़ी, जमाई या बैठाई हुई चीज निकाल या हटाकर अलग या दूर करना। जैसे—(क) दरवाजे का पेंच खोलना। (ख) बोतल का काग या डाट खोलना। ४ जिसका मुँह बंद किया गया हो, उसके मुँह पर का बंधन हटाकर उसमें चीजों के आने-जाने का रास्ता करना। जैसे—(क) चिट्ठी निकालने के लिए लिफाफा खोलना। (ख) रुपए निकालने या रखने के लिए तोड़ा, थैली या बटुआ खोलना। ५. जो प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से बिलकुल बंद हो, उसे आघात आदि से काट, चीर या तोड़कर खंडित करना। जैसे—(क) नश्तर से घाव या फोड़े का मुँह खोलना। (ख) पत्थर या लाठी मारकर किसी का सिर खोलना। ६ बंद किया या भेड़ा हुआ जंगला या दरवाजा इस प्रकार खींचना या ढकेलना कि बीच में आने-जाने का मार्ग हो जाय। जैसे—खिड़की या फाटक खोलना। ७ आगे, ऊपर या सामने पड़ा हुआ आवरण, ढक्कन या परदा इस उद्देश्य से हटाना कि अन्दर, उस पार या नीचे की चीजें अथवा भाग सामने आ जायँ। जैसे—(क) पेटी या संदूक खोलना। (ख) मंदिर का पट खोलना। (ग) दवा पिलाने या दाँत उखाड़ने के लिए किसी का मुँह खोलना। ८ मोड़ी, लपेटी या तह की हुई चीज के सिरे आमने-सामने की दिशाओं में इस प्रकार फैलाना कि उसका अधिकतर भाग ऊपर या सामने हो जाय। विस्तृत करना। जैसे—(क) पढ़ने के लिए अखबार या किताब खोलना। (ख) बिछाने के लिए चादर या बिस्तर खोलना। ९ टँकी या सिली हुई चीज के टाँके या सिलाई अलग करना, तोड़ना या हटाना। जैसे—(क) साड़ी पर टँकी हुई गोट या फीता खोलना। (ख) लिहाफ का अस्तर या पल्ले खोलना। १० शरीर पर धारण की या पहनी हुई चीज उतार या निकाल कर अलग या दूर करना। जैसे—कमीज, कुरता या जूता खोलना। ११ यांत्रिक साधन से बंद होनेवाली चीज पर ऐसी क्रिया करना कि वह बंद न रह जाय। जैसे—(क) ताला या हथकड़ी खोलना। (ख) पानी निकालने के लिए टंकी की टोंटी खोलना। १२ यंत्रों आदि की मरम्मत या सफाई करने के लिए कल-पुरजे या कील-काँटे निकालकर उसके कुछ या सब अंग अलग-अलग करना या बाहर निकालना। जैसे—घड़ी या बाजा खोलना। १३. ठहराये या रोके हुए यान अथवा सवारी को उद्दिष्ट या गतव्य स्थान की ओर ले जाने के लिए आगे बढ़ाना या चलाना। जैसे—नाव या मोटर खोलना। १४ अवरोध बाधा या रुकावट हटाकर या उसके संबंध का कोई कृत्य अथवा घोषणा करके सार्विक उपयोग या व्यवहार के लिए सुगमता या सुभीता करना। जैसे—(क) जन-साधारण के लिए नहर, मंदिर या सड़क खोलना। (ख) चराई या शिकार के लिए जंगल खोलना। (ग) शरीर का विकृत रक्त निकालने के लिए किसी की फसद खोलना। (घ) रोजा खोलना (अर्थात् उपवास या व्रत का अंत करके खाना-पीना आरंभ करना)। १५ उद्योग, कला, व्यापार, शिक्षा आदि के संबंध का कोई नया कार्य आरंभ करना या संस्था खड़ी करना। जैसे—कारखाना, कोठी या पाठशाला खोलना। १६ नित्य नियत समय पर नैमित्तिक रूप से बंद की जानेवाली संस्था या स्थान का कार्य फिर से आरंभ करने के लिए वहाँ पहुँचना और काम शुरू करना। जैसे—ठीक समय पर दफ्तर या दूकान खोलना। १७ किसी विशिष्ट क्रिया या प्रकार से कोई कार्य आरंभ करना या चलाना। जैसे—(क) खबरें या भाषण सुनने के लिए रेडियो खोलना। (ख) लेन-देन के लिए खाता या हिसाब खोलना। १८ शरीर के कुछ विशिष्ट अंगों का कार्य आरंभ करने के लिए उन्हें उचित या सजग स्थिति में लाना। जैसे—(क) अच्छी तरह देखने या सुनने के लिए आँखें या कान खोलना। (ख) खाने के लिए मुँह या बोलने के लिए जबान खोलना।

अभौतिक या अमूर्त्त रूपों में—१ अज्ञेय, अस्पष्ट या दुर्बोध को ज्ञेय, स्पष्ट या सुबोध करना। जैसे—(क) किसी वाक्य या श्लोक का अर्थ या आशय खोलना। (ख) किसी की पोल या भेद खोलना। २ जानकारी के लिए स्पष्ट रूप से सामने रखना। परिचित या विदित कराना। जैसे—किसी के आगे अपना उद्देश्य, विचार या हृदय खोलना।

पद—जी खोलकर=(क) निष्कपट भाव या शुद्ध हृदय से। जैसे—जी खोलकर किसी से बातें करना। (ख) संकीर्णता आदि का भाव या विचार छोड़कर। जैसे—जी खोलकर खरचना, गाना या पढ़ाना।

खोलि—स्त्री० [स०√खोल् (गतिहीनता) + इन्] तरकश। तूणीर।

खोलिया—स्त्री० [देश०] बढ़इयों का एक उपकरण जिसमें वे लकड़ी पर बेल-बूटे आदि खोदते हैं।

खोली—स्त्री० [हिं० खोल का स्त्री० रूप] १ तकिये आदि का गिलाफ। २ रहने की छोटी कोठरी। (महा०)

खोवा—पु०=खोआ।

खोसड़ा—पु० [प०] जूता, विशेषत फटा-पुराना जूता।

खोसना*—स० १ दे० 'छीनना'। २ दे० 'खोंसना'।

खोह—स्त्री० [स० गोह] १ कंदरा। गुफा। २ गहरा गड्ढा। ३ दो पहाड़ों के बीच का गड्ढा अथवा तंग रास्ता। दर्रा। ४ खाई। (पश्चिम)
पु० दे० 'खोड़र'।

खोही—स्त्री० [स० खोलक] १ पत्तों की छतरी। २ घोघी।

खौं—स्त्री० [स० खन्] १ खात। गड्ढा। २ वह गहरा गड्ढा, जिसमें किसान अन्न संचित करते हैं।

खोंचा—पु० [फा० ख्वान्चा] १ खाने-पीने की चीजे रखने की लकडी की पेटी या सदूक। २ दे० 'खोन्चा'।

खोंट—स्त्री० [हि० खोटना] १ खोंटने की क्रिया। खरोच। २ दे० 'खरोट'।
पु० खुरड।

खोडा†—पु० [स० खन या खात] १. अनाज रखने का गड्ढा। २. गड्ढा।

खोदना†—स० १ दे० 'गूंदना'। २ दे० 'गुरचना'।

खोका†—वि०[हि० खाना] [स्त्री० खोकी] बहुत अधिक खानेवाला।

खोज—पु० [अ०] गभीर चिंतन। मनन।

खोड़—पु०=खौर।

खौफ—पु० [अ०] [वि० खौफनाक] १ दूरस्थ या सभावित भय। भीति। २ डर। भय। ३ आशका। खटका।

खौफनाक—वि० [अ०] १ भीति उत्पन्न करनेवाला। २. डरावना। भयानक।

खौर—पु० [स० क्षौर] १ मस्तक पर लगाया जानेवाला चदन का आडा धनुषाकार और लहरियेदार तिलक। २ पीतल का वह टुकडा जिससे उक्त प्रकार के तिलक मे लहरिया बनाया जाता है। ३ माथे पर पहनने का स्त्रियो का एक गहना। ४ मछली फँसाने का एक प्रकार का जाल।

खौरना—स० [हि० खौर] १ चदन का टीका या तिलक लगाकर उस पर लहरिया बनाना। २ खौर (तिलक) लगाना।

खौरहा—वि० [हि०खौरा+हा(प्रत्य०)][हि०खौरही] १ जिसके सिर के बाल झड गये हो। २ जिसे खौरा नामक रोग हुआ हो।

खौरा—पु० [स० क्षौर] १. सिर के बाल झडने का रोग। गज। २. कुत्ते, बिल्ली आदि को होनेवाली एक प्रकार की खुजली, जिसमे उनके शरीर के बाल झड जाते है।
वि० (पशु) जिसे उक्त रोग हुआ हो।

खौरि†—स्त्री०=खौर।
†—स्त्री०=खोरि (तग गली)।

खौरी—स्त्री० [देश०] सुनारो की बोली मे, राख।
मुहा०—खौरी करना=चाँदी या सोना भस्म करके उसकी राख बनाना।
†स्त्री०=खोरि।
†स्त्री०=खोपडी।

खौंर†—पु० [अनु०] बैल या साँड के डकारने का शब्द।

खौलना—अ० [स० क्ष्वेल] आग पर रखे हुए तरल पदार्थ का अधिक गरम होने पर उसमे उबाल आना या बुलबुले उठने लगना।
मुहा०—(किसी का) मिजाज खौलना=आवेग या क्रोध मे होना। जैसे—उनकी बाते सुनते ही हमारा मिजाज खौल गया।

खौलाना—स०[हि० खौलना] १ तरल पदार्थ को इतना अधिक गरम करना कि उसमे उबाल आने लगें। २ (अनुचित या कडी बात कह कर) किसी को उत्तप्त और क्रुद्ध करना।

खौहड†—वि० दे० 'खौहा'।

खौहा—वि० [हि० खाना] १ बहुत अधिक खानेवाला। पेटू और भुक्खड। २. दूसरो की कमाई से दिन बितानेवाला।

ख्यात—वि० [स० √ख्या (वर्णन करना)+क्त] जिसकी जगत् या समाज मे ख्याति हो। प्रसिद्ध। मशहूर।
†स्त्री० [स० ख्याति] वह काव्य-ग्रन्थ जिसमे किसी वीर पुरुष की कृतियों का वर्णन हो।

ख्याति—स्त्री० [स० √ख्या+क्तिन्] १ प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध या मान्य होने पर जगत् या समाज में होनेवाला नाम। शोहरत। २ अच्छा काम करने पर होनेवाली प्रसिद्धि या बडाई। कीर्ति। यश।

ख्यापक—वि० [स० √ख्या+णिच्+ण्वुल्—अक] १. घोषणा करनेवाला। २ कोई बात विशेषत अपराध या भूल स्वीकार करनेवाला।

ख्यापन—पु० [स०√ख्या+णिच्+ल्युट्—अन] १ घोषणा करना। २ कोई बात विशेषत: अपना अपराध स्वीकार करना।

ख्याल†—पु० [अ० खयाल-ध्यान] [वि० ख्याली] १. दे० 'खयाल'। २ केवल खयाल या ध्यान मे आ जाने पर मनमाने ढग से और कौतुक या परिहास के रूप मे किसी को खिझाने या चिढाने के लिए किया जानेवाला कोई अनुचित काम। तग या परेशान करने के लिए किया जानेवाला मजाक। उदा०—(क) यह सुनि ससिमनि भई बेहाल। जानि पर्यो नहिं हरि को ख्याल।—सूर। (ख) मोको जनि बरजौ जुवती कोउ, देखौ हरि के ख्याल।
मुहा०—(किसी के) ख्याल पडना=किसी को चिढाने और तग करने के लिए उतारू होना या पीछे पडना। उदा०—(क) ख्याल परे ये सखा सबै मिलि, मेरैं मुख लपटायो।—सूर। (ख) ये सब मेरे ख्याल परी है, अब ही बातन लै निरुआरति।—सूर।
†पु०=खेल (क्रीडा)।

ख्यालिया—पु० [हि० ख्याल (गीत)] वह गवैया जो ख्याल गाने में निपुण हो।

ख्याली—पु० [हि० ख्याल] १ सनकी। झक्की। मनकी। २ खेलवाडी।
वि०=खयाली।

ख्रिष्टान—पु० [हि० ख्रीष्ट] ईसा मसीह के चलाये हुए सप्रदाय का अनुयायी। मसीही।

ख्रिष्टीय—वि० [अ० क्राइष्ट] ईसा मसीह या उनके चलाये हुए धर्म से सम्बन्ध रखनेवाला।
पु० ईसा मसीह के मत का अनुयायी। ईसाई। मसीही।

ख्रीष्ट—पु० [अ० क्राइष्ट] [वि० ख्रिष्टीय] ईसा मसीह।

ख्वाँ—वि० [फा०] १ पढनेवाला। २ कहने या गानेवाला (यौगिक शब्दो के अत मे) जैसे—किस्सा-ख्वाँ, गजल-ख्वाँ।

ख्वाँदा—वि० [फा० ख्वाँद] पढा-लिखा। शिक्षित।

ख्वाजा—पु० [फा० ख्वाज] १ घर का मालिक। स्वामी। २. नेता सरदार या हाकिम। ३. बहुत बडा त्यागी और पहुँचा हुआ फकीर। महात्मा। ४. दे० 'खोजा'।

ख्वाजासरा—पु० दे० 'खोजा'।

ख्वान—पु० [फा०] थाल। परात।

ख्वानपोश—पु० [फा०] वह कपड़ा जिससे पकवान, मिठाई आदि से भरे थाल ढकते हैं।

खवाना†—स० [हिं० खाना का प्रे०] खिलाना। उदा०—खवाय विष, गृह लाय दीन्ही तउन पाए जरन।—सूर।
ख्वान्चा—पु० दे० 'खोन्चा'।
ख्वाब—पु० [फा०] १ सोने की अवस्था। नींद। २ वह जो कुछ नीद मे दिखाई पडे। स्वप्न।
ख्वाबगाह—स्त्री० [फा०] सोने का कमरा या स्थान। शयनागार।
ख्वार—वि० [फा०] [भाव० ख्वारी] (व्यक्ति) जो बहुत ही बुरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट और तिरस्कृत हो चुका हो।
ख्वारी—स्त्री० [फा०] ख्वार होने की अवस्था या भाव। दुर्गत। दुर्दशा।
ख्वास्तगार—वि० [फा०] [भाव० ख्वास्तगारी] चाहने या इच्छा करनेवाला। इच्छुक।
ख्वास्ता—वि० [फा० ख्वास्त] चाहा हुआ। इच्छित।
ख्वाह—अव्य० [फा०] १ या। अथवा। २ या तो। चाहे।
पद—ख्वाह-म-ख्वाह=(क) चाहे कोई चाहे या न चाहे। जबरदस्ती। (ख) निश्चित रूप से। अवश्य।
ख्वाहाँ—वि० [फा०] १ इच्छा रखनेवाला। इच्छुक। २ चाहनेवाला। प्रेमी।
ख्वाहिश—स्त्री० [फा०] [वि० ख्वाहिशमंद] अभिलाषा। इच्छा। चाह।
ख्वाहिशमंद—वि० [फा०] ख्वाहिश रखनेवाला। आकांक्षी। इच्छुक।
ख्वेंतर†—पु० [देश०] गोफना। ढेलवाँस। (लश०)
ख्वैना†—स० दे० 'खोना'।

ग

ग

ग—देवनागरी वर्णमाला मे कवर्ग का तीसरा व्यजन जो कठ्य स्पर्शी, अल्प-प्राण तथा सघोष है।
प्रत्य० कुछ शब्दो के अत मे प्रत्यय रूप मे लगकर यह निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) गानेवाला, जैसे—सामग। (ख) चलने या जानेवाला, जैसे—उरग, निम्नग, सर्वग आदि।
पु० [स०√गै (गाना)+क] १ सगीत मे 'गाधार' स्वर का सक्षिप्त रूप और सूचक वर्ण। २ छद शास्त्र मे गुरु मात्रा या उससे युक्त वर्ण का सूचक वर्ण। जैसे—यह दो जगण और ग, ल (अर्थात् गुरु और लघु मात्रा) का छद है। ३ गीत। ४. गणेश। ५ गधर्व।
गंग—पु० [स० गङ्गा] एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ९ मात्राएँ और अत मे दो गुरु होते हैं।
स्त्री०=गगा (नदी)।
गंगई—स्त्री० [अनु० गें गें से] मैना की तरह की भूरे रग की एक चिडिया। गलगलिया। सतभइया।
गंगका—स्त्री० [स० गगा+कन्-टाप्, अत्व] =गगा।
गंगकुरिया—स्त्री० [स० गङ्गा-कूल] एक प्रकार की हल्दी। (उडीसा)
गगतिरिया—स्त्री० [हिं० गगा+तीर] दलदलो मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा।
गंगन*—पु०=गगन।
गंगबरार—पु० [हिं०गगा+फा० बरार=बाहर या ऊपर लाया हुआ] किसी नदी की धारा के पीछे हटने से निकल आनेवाली जमीन।
गँगरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कपास।
गंगला—पु० [?] १ एक प्रकार का शलजम। २ एक प्रकार का वृक्ष।
गगशिकस्त—पु० [हिं० गगा+फा० शिकस्त=तोडा हुआ] वह भूमि जो नदी की धारा के आगे बढने के कारण जल-मग्न हो गई हो। वह भूमि जिसे बरसात मे नदी काट ले गई हो।
गंगाबु—पु० [स० गगा-अबु प० त०] १ गगाजल। २ पवित्र तथा शुद्ध जल। ३. वर्षा का जल।
गगा—स्त्री० [स० √गम् (जाना)+गन्—टाप्] १ भारतवर्ष की एक प्रधान और पवित्र नदी जो हरिद्वार के ऊपर से निकलकर कलकत्ते के पास बगाल की खाडी मे गिरती है। जाह्नवी। भागीरथी।
मुहा०—गंगा नहाना=किसी कर्त्तव्य का पालन करके उससे छुट्टी पाना या निश्चित होना।
२ हठ-योग मे, इडा (नाडी) का दूसरा नाम। ३ रहस्य सप्रदाय मे, मन को शुद्ध करनेवाली पवित्र वाणी।
गंगा-गति—स्त्री० [स० त०] १. मृत्यु। २ मृत्यु के उपरात होनेवाली मुक्ति। मोक्ष।
गंगा-चिल्ली—स्त्री० [मध्य० स०] जल-कुक्कुटी। (पक्षी)
गंगा-जमनी—वि० [हिं० गगा+जमुना] १ गगा और यमुना के मेल की तरह दो तरह का या दो रगो का। जैसे—गगा-जमुनी दाल=(केवटी दाल), गगा-जमुनी साडी। २ सोने और चाँदी अथवा ताँबे और पीतल के मेल से बना हुआ, जैसे—गगा-जमुनी कुरसी या लोटा। ३ सफेद और काला मिला हुआ। ४ अबलक। चितकबरा।
स्त्री० कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।
गंगा-जल—पु० [प० त०] १ गगा नदी का जल जो बहुत पवित्र माना जाता है। २ पुरानी चाल का एक प्रकार का बढिया सूती कपडा जिसकी पगडियाँ बनती थी।
गंगाजली—स्त्री० [स० गगाजल] शीशे या धातु की सुराहीनुमा लुटिया जिसमे यात्री तीर्थों से पवित्र जल लाते है।
मुहा०—गंगाजली उठाना=हाथ मे गगाजली लेकर शपथपूर्वक कोई बात कहना।
पु० भूरे रग का एक प्रकार का गेहूँ।
गंगा जाल—पु० [हिं० गगा+जाल] रीहा घास का बना हुआ मछुओ का जाल। (बगाल)
गंगा-दत्त—पुं० [तृ० त०] भीष्म पितामह का एक नाम।
गंगादह—पु०=गगाजली।
गंगा-द्वार—पु० [प० त०] हरिद्वार।

गंगा-धर—पु० [ष० त०] १ महादेव। शिव। २. समुद्र। ३ वैद्यक मे एक प्रकार का रस। ४ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे आठ रगण होते हैं। इसे खजन और गगोदक भी कहते है।

गंगाधार—पु० [गगा√धृ (धारण करना)+अण्] समुद्र।

गंगा-पथ—पु० [ष० त०] आकाश। (डि०)

गगा-पाट—पु० [हि० गगा+पाट] घोडे की एक भौरी जो पेट के नीचे होती है।

गंगा-पुजैया—स्त्री०=गगा-पूजा।

गगा-पुत्र—पु० [ष० त०] १ भीष्म। २ पुराणानुसार लेट पिता और तीवरी माता से उत्पन्न एक सकर जाति। ३ ब्राह्मणो की एक जाति जो पवित्र नदियो के किनारे घाटो पर बैठकर अथवा तीर्थस्थानो में रहकर दान लेती है। ४ उक्त जाति का व्यक्ति।

गंगा-पूजा—स्त्री० [ष० त०] विवाह के बाद की एक रीति जिसमे वर और वधू को किसी तालाब या नदी के किनारे ले जाकर उनसे पूजा कराई जाती है।

गंगा-यात्रा—स्त्री० [मध्य० स०] १ मरणासन्न व्यक्ति को मरने के लिए गगा-तट पर या किसी पवित्र जलाशय के किनारे ले जाने की पुरानी प्रथा। २ मृत्यु। स्वर्गवास।

गंगाराम—पु० [हि० गगा+राम] तोते को सबोधित करने का एक नाम।

गंगाल—पु० [हि० गगा+आलय] पानी रखने का एक प्रकार का बडा पात्र। कडाल।

गंगाला—पु० [हि० गगा+आलय] वह भूमि जहाँ तक गगा के चढाव का पानी पहुँचता है। कछार।

गगा-लाभ—पु० [ष० त०] मृत्यु। स्वर्गवास।

गंगावतरण—पु० [गगा-अवतरण, ष० त०] वह अवस्था जिसमे गगा जी स्वर्ग से उतरकर धरती पर आई थी। गगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना।

गगावतार—पु० [गगा-अवतार, ष० त०]=गगावतरण।

गंगावासी (सिन्)—वि० [स० गगा√वस् (बसना)+णिनि] गगा के तट पर रहनेवाला।

गगा-सागर—पु० [मध्य० स०] १ कलकत्ते के पास का वह स्थान जहाँ गंगा नदी समुद्र मे मिलती है और जो एक तीर्थ माना जाता है। २ एक प्रकार की बडी झारी। ३. खद्दर की छपी हुई आठ-नौ हाथ लबी जनानी धोती।

गंगा-सुत—पु० [ष० त०]=गगा-पुत्र।

गगिका—स्त्री० [स० गगा+कन्+टाप्, इत्व] गगा नदी।

गँगेऊ†—पु० [स० गागेय] १, भीष्म। २ कार्तिकेय।

गँगेटी—स्त्री० [स० गगाटी] दवा के काम आनेवाली एक प्रकार की जडी या बूटी।

गगेय*—वि०, पु०=गागेय।

गँगेरन—स्त्री० [स० गागेरुकी] नागबला नाम का पौधा।

गँगेरुआ—पु० [स० गागेरुक] एक प्रकार का पहाडी वृक्ष।

गगेरु—स्त्री०=गँगेरन।

गगेश—पु० [गगा-ईश, ष० त०] महादेव। शिव।

गगोझ*—पु०=गगोदक।

गंगोत्तरी—स्त्री० [स० गगावतार] उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ गगा नदी ऊँचे पहाडो से निकलती है।

गंगोदक—पु० [गगा-उदक, ष० त०] १ गगा नदी का जल जो बहुत पवित्र माना जाता है। २. गगा-धर वर्ण-वृत्त का दूसरा नाम। दे० 'गगा-धर'।

गंगोल—पु० [स०] गोमेदक मणि।

गंगोटी—स्त्री० [हि० गगा+मिट्टी] गगा के किनारे की मिट्टी या बालू।

गंगोलिया—पु० [हि० गगाल] एक प्रकार का खट्टा नीबू।

गज—पु० [स० कज या खज] १ एक रोग जिसमे सिर के बाल सदा के लिए झड जाते है। खल्वाट। (बाल्डनेस) २. सिर मे निकलनेवाली एक प्रकार की फुसियाँ।

पु० [फा०] १. खजाना। कोश। २. ढेर। राशि। ३ झुड। समूह। ४ अनाज रखने का कोठा या खत्ता। ५ पालतू कबूतरो के रहने की अलमारी। दरबा। ६ मद्य-पात्र। ७ मद्य-शाला। ८ एक प्रकार की लता। ९ अवज्ञा। तिरस्कार। १० ऐसी चीज जिसके अदर या साथ बहुत-सी चीजे लगी हुई हो। जैसे—गज-बाल्टी, गज-चाकू। ११ कुछ नामो के अत मे प्रत्यय के रूप मे लगकर ऐसी बस्तियो या बाजारो का वाचक शब्द जहाँ बनिये रहते हो अथवा व्यापार करते हो। जैसे—दारागज, भारतगज, पहाडगज, महाराजगज, विश्वेश्वर गज आदि।

गज-गुठारा*—पु०=गजगोला।

गंजगोला—पु० [हि० गज+गोला] तोप का वह गोला जिसके अदर छोटी-छोटी बहुत सी गोलियाँ भरी रहती है। (लश०)

गंज-चाकू—[हि० गज+फा० चाकू] वह चाकू जिसमे फल के अतिरिक्त कैंची, मोचना आदि कई उपकरण एक साथ लगे रहते है।

गंजन—पु० [सं०√गज् (शब्द)+ल्युट्—अन] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. दुर्गत। दुर्दशा। ३ नष्ट, पददलित, परास्त आदि करने की क्रिया या भाव। ४. सगीत मे ताल के आठ मुख्य भेदो मे से एक।

वि० [√गज+णिच्+ल्यु—अन] १ अवज्ञा या तिरस्कार करनेवाला। २. नष्ट करनेवाला।

गँजना—अ० [हि० गांज] १ गाँज या ढेर लगना। २ पूरित होना। भरा जाना।

गंजना—स० [स० गजन] १ गजन अर्थात् अपमान या तिरस्कार करना। २ पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट करना। ३ परास्त करना। हराना।

गजनी—स्त्री० [?] एक प्रकार की घास।

गंजफा—पु०=गजीफा।

गज-बाल्टी—स्त्री० [फा०+हि०] वह बडी बाल्टी जिसके अदर और साथ कटोरे, कडाही, गिलास, थालियाँ आदि भी रहती है।

गंजा—पु० [हि० गज] वह जिसके सिर के बाल झड गये हो। गज रोग का रोगी।

गंजाई—स्त्री० [हि० गंजना] गाँज (ढेर या राशि) लगाने की क्रिया या भाव। (डपिग)

गजाना—स० [हि० गजना] गाँजने का काम दूसरे से कराना। अच्छी या पूरी तरह से ढेर या राशि लगवाना।

†अ०=गँजना।

गजिका—स्त्री० [सं०√गज्+अ—टाप्+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] मदिरालय।

गँजिया—स्त्री० [स० गजिका] १. सूत की जालीदार थैली जिसमे रुपया-

पैसा रखते है। २ घास बाँधने का जाल। ३ मिट्टी का एक प्रकार का छोटा बरतन।

गंजी—स्त्री० [हिं० गज] १ ढेर। राशि। जैसे—अनाज की गजी। २ शकर-कद।

स्त्री० [गर्नसी (स्थान-नाम)] कमीज या कुरते के नीचे पहनी जानेवाली एक प्रकार की छोटी कुरती। बनियाइन।

वि० [हिं० गाँजा] गाँजा पीनेवाला। जैसे—गजी यार किसके, दम लगाया, खिसके।—कहा०।

गंजीना—पु० [फा० गजीन'] खजाना। कोश।

गंजीफा—पुं० [फा० गजफ] १ ताश की तरह के एक पुराने खेल का उपकरण जिसमे ८ रगो के ९६ पत्ते होते थे। ये पत्ते प्राय लाख और कागज के योग से बनते थे और इन पर ताश के पत्तो की तरह बूटियाँ और तसवीरे होती थी। ताश के पत्ते सभवत इसी के अनुकरण पर बने थे। २ उक्त उपकरण से खेला जानेवाला खेल। ३ ताश की गड्डी और उससे खेला जानेवाला खेल।

गँजेड़ी—वि० [हिं० गाँजा+एडी (प्रत्य०)] प्राय या बहुत गाँजा पीनेवाला। गजी।

गटम—पु० [?] ताड-पत्र पर लिखने की लोहे की कलम।

गट्ठिय—वि० [स० ग्रथित] जिसमे गाँठ पडी हुई हो। बाँधा हुआ।

गँठ—स्त्री० [हिं० गाँठ] गाँठ का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गँठ-जोडा, गँठ-बधन आदि।

†स्त्री०=गाँठ।

गँठकटा—पु० [हिं० गाँठ+काटना] वह व्यक्ति जो दूसरे की गाँठ मे बँधे हुए रुपए-पैसे चोरी से खोल या काटकर निकाल लेता हो। गिरहकट।

गँठ-छोरा—पु० [हिं० गाँठ+छोरना=छीनना] १ गठरी छीनकर ले भागनेवाला। उचक्का। २ दे० 'गँठ-कटा'।

गँठ-जोड़ा—पु० हिं० गाँठ+जोडना] गँठ-बधन (दे०)।

गँठ-बंधन—पु० [हिं० गाँठ+बधन] १ विवाह के समय वर के दुपट्टे के एक छोर को कन्या की चादर के एक छोर से गाँठ लगाकर बाँधने की रीति। २ कोई धार्मिक कृत्य करते समय उक्त प्रकार से पति-पत्नी के पल्लो मे गाँठ लगाने की रीति। ३ लाक्षणिक अर्थ मे दो चीजो, बातो या व्यक्तियो मे होनेवाला घनिष्ठ सग-साथ या सपर्क। ४ गुप्त सधि। साँठ-गाँठ।

गँठिवन—स्त्री०=गठिवन।

गँठुआ—पु० [हिं० गाँठ] कपडा बुनते समय टूटे हुए तागो को अथवा नई पाई के तागो को पुराने उतरे हुए कपडे के तागो से जोडने का काम।

गड—पु० [स० √गड् (मुख का एक भाग होना)+अच्] १. गाल। कपोल। २ कनपटी। ३ गले मे पहनने का काला धागा। गडा। ४ फोडा। ५ चिह्न। निशान। ६ दाग। ७ गाँठ। ८ गैडा। ९ मडलाकार चिह्न या लकीर। गराटी। १० नाटक का एक अग जिसमे सहसा प्रश्नोत्तर होने लगते है। ११ ज्येष्ठा, अश्लेषा और रेवती के अत के पाँच दड और मूल, मघा, तथा अश्विनी के आरभ के तीन दड। (ज्योतिष)

वि० बहुत बडा या भारी। जैसे—गड मूर्ख, गड शिला आदि।

गडक—पु० [स० गण्ड+कन्] १ गले मे पहनने का गडा या जतर। २. गाँठ। ३ गैडा। ४ चिह्न। निशान। ५ वह प्रदेश जिसमे मे होकर गडकी नदी बहती है। ६ उक्त प्रदेश का निवासी। ७ गडमाला नामक रोग।

स्त्री०=गडकी (नदी)।

गंडका—स्त्री० [स० गण्डक+टाप्] बीस वर्णो का एक वर्णवृत्त।

गंडकी—स्त्री० [स० गण्डक+ङीप्] १ मादा गैडा। २ उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो पटने के पास गगा मे मिलती है।

पु० सत्रह मात्राओ का एक ताल। (सगीत)

गंडकी-शिला—स्त्री० [प० त०] भगवान् विष्णु की गोल पत्थर की बनी हुई एक प्रकार की मूर्ति। शालग्राम की बटिया।

गंड-गोपालिका—स्त्री० [मध्य० स०] ग्वालिन नाम का कीडा।

गँड़तरा†—पु० [हिं० गाँड+तर=नीचे] छोटे बच्चो के नीचे का वह कपडा जो इसलिए बिछाया जाता है कि उनका मल-मूत्र बिछावन पर न लगे। गँतरा।

गँडदार—पु० [स० गड या हिं० गडासा+फा० दार] १ महावत। हाथीवान। २ दे० 'गडदार'।

गंड-दूर्वा—स्त्री० [कर्म० स०] १ गाँडर नामक घास जिसकी जड खस कहलाती है। २ दूब नाम की घास।

गंड-देश—पु० [प० त०]=गड-मडल।

गंडनी—स्त्री० [स० गडाली] सरकडे की जाति की एक वनस्पति। सरपोका। सर्पाक्षी। सरहटी।

गंड-मंडल—पु० [प० त०] कनपटी। गड-स्थल।

गंड-मालक—पु० [ब० स०] कठमाला नामक रोग।

गंड-माला—स्त्री० [ब० स०] कठमाला नामक रोग।

गंड-मालिका—स्त्री० [ब० स०] लज्जालु लता। लाजवती।

गंड-माली (लिन्)—वि० [स० गडमाला+इनि] जिसके गले मे कठ-माला नामक रोग की गिल्टियाँ निकली हुई हो।

गँडरा—पु० [स० गडाली] [स्त्री० गँडरी] १ मूँज की जाति की एक घास। २ एक प्रकार का धान।

गडल*—पु०=गड-स्थल (कनपटी)।

गडली—स्त्री० [स० गण्ड√ली (लीन होना)+क्विप्-ङीप्] छोटी पहाडी।

पु० शिव।

गंड-सूचि—स्त्री० [प० त०] नृत्य मे भाव बतलाने की एक मुद्रा।

गंड-स्थल—पु० [ष० त०] [स्त्री० गडस्थली] कनपटी।

गंडांत—पु० [स० गड-अत, प० त०] ज्येष्ठा, अश्लेषा और रेवती के अत के पाँच या तीन दड तथा मूल, मघा और अश्विनी के अत के तीन दड। (ज्योतिष)

गडा—पु० [स० गडक=गाँठ] १ तागे, रस्सी आदि मे लगाई जानेवाली गाँठ। २ दैविक उपद्रवो, बाधाओ आदि से रक्षित रहने के लिए कलाई या गरदन मे लपेटकर बाँधा जानेवाला मत्र-पूत डोरा या सूत। ३ पशुओ के गले मे बाँधा जानेवाला पट्टा।

पु० [स० गड=चिह्न] आडी, गोल या गोलाकार धारी या रेखा। जैसे—कनखजूरे की पीठ पर का गडा, तोते के गले का गडा।

पु० [?] चीजें गिनने में चार का समूह। जैसे—दो गंडे पैसे या चार गंडे आम।

गंडारि—स्त्री० [गंड-अरि, ष० त०] कचनार।

गंडाली—स्त्री० [सं० गंड√अल् (भूषित करना)+अण्-ङीप्] गाँडर घास।

गँडासा—पु० [हिं० गंड+आसा (प्रत्य०)] हँसिये की तरह का घास काटने का एक औजार।

गंडिनी—स्त्री० [सं० गंड+इनि—ङीप्] दुर्गा।

गँड़िया†—पु०=गाँडू।

गंडीर—पु० [सं०√गड्+ईरन्] १ पोई नाम की लता। २ थूहर। सेंहुड़।

गंडीरी—स्त्री० [सं० गंडीर+ङीष्] =गंडीर।

गंडु—पु० [सं०√गड्+उन्] १ गाँठ। २ तकिया।

गंडुक—पु०=गंडूष।

गंडु-पद—पु० [ब० स०] फीलपाँव नामक रोग।

गंडू—पु०=गाँडू।

गंडूक—पु० =गंडूष।

गंडू-पद—पु० [गंडु+ऊढ्, गंडू-पद, ब० स०] केंचुआ।

गंडूल—वि० [सं० गंडू√ला (लेना)+क] १ जिसमें गाँठें हों। गाँठदार। २ झुका हुआ। टेढ़ा।

गंडूष—पु० [सं०√गड्+ऊषन्] [स्त्री० गंडूषा] १. हथेली का गड्ढा। चुल्लू। २ पानी से किया जानेवाला कुल्ला। ३ हाथी के सूँड की नोक।

गँडेरी—स्त्री० [सं० गण्ड] १ ईख या गन्ने के छोटे टुकड़े जो कोल्हू में पेरने के लिए काटे जाते हैं। २ चूसने के लिए ईख या गन्ने को छीलकर काटे हुए छोटे टुकड़े। ३ किसी चीज के छोटे लंबोतरे टुकड़े।

गंडोपधान—पु० [गंड-उपधान ष० त०] गल-तकिया।

गँडोरा—पु० [सं० गंडोल=ईख] हरी कच्ची खजूर।

गंडोल—पु० [सं०√गड्+ओलच्] १ गुड़। २ कच्ची या लाल शक्कर। ३ ईख या गन्ना। ४ कौर। ग्रास।

गंतव्य—वि० [सं०√गम् (जाना)+तव्यत्] १ (स्थान) जहाँ किसी को जाना या पहुँचना हो अथवा जहाँ कोई जाने को हो। २ गम्य।

गंता (तृ)—पु० [सं०√गम्+तृच्] [स्त्री० गंत्री] वह जो किसी स्थान की ओर जा रहा हो। जानेवाला।

गंतु—पु० [सं०√गम्+तुन्] १ पथिक। यात्री। २ पथ। मार्ग।

गंत्रिका—स्त्री० [सं० गंत्री+कन्-टाप्, ह्रस्व] बैलगाड़ी।

गंत्री—स्त्री० [सं०√गम्+ष्ट्रन्—ङीप्] १ गाड़ी। २ बैलगाड़ी।

गंद—पु० [सं० गंध से फा० गन्द] १ बुरी चीज। २ बुरी बात।
मुहा०—गंद बकना=गंदी बातें कहना या गालियाँ देना।
३ दे० 'गंदगी'।

गंदगी—स्त्री० [फा०] १ गंदे होने की अवस्था या भाव। मैलापन। २ खराब, मैली और सड़ी-गली चीजें। ३. गुह। मल। ४ बहुत ही निकृष्ट बातें, विचार या व्यवहार। जैसे—समाज या साहित्य में गंदगी फैलाना बहुत बुरा है। ५ अपवित्रता। अशुद्धता।

गंदना—पुं० [सं० गंधन] १ लहसुन और प्याज की तरह का एक प्रकार का कंद जो तरकारी आदि में डाला जाता है। २ एक प्रकार की घास।

गंदम—पु० [देश०] [स्त्री० गंदमी] एक प्रकार की चिड़िया।
पु० [फा० गंदुम] गेहूँ।

गँदला—वि० [हिं० गंदा+ला (प्रत्य०)] १ (जल) जो स्वच्छ या निर्मल न हो। जिसमें धूल-मिट्टी आदि मिली हो। २ मलिन। मैला।

गंदा—वि० [सं० गन्ध से फा० गन्द] [स्त्री० गंदी] १ धूल, मिट्टी, मैल आदि से युक्त। जैसे—गंदा कपड़ा, गंदा कमरा। २ दूषित या बुरा। निंदनीय। जैसे—गंदा आचरण, गंदे विचार।

गंदापानी—पु० [फा० गंदा+हिं० पानी] १ मद्य। शराब। २ पुरुष का वीर्य। ३ स्त्री का रज।

गँदीला—पु० [सं० गंध] एक प्रकार की घास।

गंदुम—पु० [सं० गोधूम से फा०] [वि० गंदुमी] गेहूँ।

गंदुमी—वि० [फा० गंदुम] १. गेहूँ के रंग का। गेहुँआ। जैसे—गंदुमी कपड़ा। २. गेहूँ या उसके आटे का बना हुआ। जैसे—गंदुमी रोटी।

गंदोलना—स० [फा० गंदा] कोई चीज, विशेषतः पानी गंदा करना।

गंध—स्त्री० [सं०√गंध् (गति)+अच्] १ कुछ विशिष्ट पदार्थों के सूक्ष्म कणों का वायु के साथ मिलकर होनेवाला वह प्रसार जिसका अनुभव या ज्ञान नाक से होता है। बास। (ओडर)
विशेष—हमारे यहाँ गंध को पृथ्वी का गुण माना गया है।
२ सुगंध। ३ वह सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है। ४ बहुत ही हलके रूप में लगनेवाला किसी बात का पता। जैसे—देखो, इस बात की किसी को गंध न लगने पावे। ५ बहुत ही थोड़ा या नाम मात्र का अंश। जैसे—उसमें सौजन्य की गंध भी नहीं है।

गंध-कंदक—पु० [ब० स०; कप्] कसेरू।

गंधक—स्त्री० [सं० गंध+अच्+कन्] [वि० गंधकी] पीले रंग का और कुछ अप्रिय तथा उग्र गंधवाला एक प्रसिद्ध दाह्य खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग रसायन और वैद्यक में होता है।

गंधकवटी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वैद्यक में एक प्रकार की गोली या वटी जो पाचक कही गई है।

गंधकारिता—स्त्री० [सं० गंध√कृ (करना)+णिनि√तल्—टाप्, इत्व] वस्त्रों, शरीर आदि में लगाने के लिए सुगंधित द्रव्य तैयार करने की कला या विद्या। (परफ्यूमरी)

गंधकाश्म (न्)—पु० [सं० गंधक-अश्मन्, कर्म० स०] अपने मूल रूप में खनिज गंधक, (अपनी ज्वलनशीलता के विचार से)। (ब्रिमस्टोन)

गंध-काष्ठ—पु० [ब० स०] अगर नामक सुगंधित द्रव्य। अगरु।

गंधकी—वि० [गंधक से] १ गंधक के रंग का। हलका पीला। २ गंधक से बना हुआ। जैसे-गंधकी तेजाब।
पु० उक्त प्रकार का रंग।

गंध-कुटी—स्त्री० [ष० त०] मंदिर में का वह कमरा या दालान जिसमें बहुत-सी देवमूर्तियाँ रखी हों।

गंध-केलिका—स्त्री० [सं० गंध√केल् (चालन)+ण्वुल्-टाप्, इत्व] कस्तूरी।

गंध-कोकिल—पु० [मध्य० स०] सुगंध कोकिल नामक गंध द्रव्य।

गंध-गज—पु० [मध्य० स०] बहुत बड़ा और मस्त हाथी।

गंध-गात—पु० [सं० गंधगात्र] चंदन। (डिं०)

गंध-जल—पु० [मध्य० स०] सुगंधित जल या पानी। जैसे—केवड़ा जल, गुलाब जल आदि।
गंध-जात—पु० [ब० स०] तेज-पत्ता।
गंधज्ञा—स्त्री० [स० गंध√ज्ञा (जानना)+क–टाप्] नासिका। नाक।
गंध-तूर्य—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार की तुरही। (बाजा)।
गंध-तैल—पु० [मध्य० स०] वह तेल जिसमे किसी पदार्थ के कुछ ऐसे तत्त्व मिले हो जो उन पदार्थ की गंध देते हो। गंध से युक्त किया हुआ तेल। सुगंधित तेल।
गंधद—पु० [स० गंध√दा (देना)+क] चंदन।
वि० गंध देनेवाला। जिसमे गंध हो।
गंध-दला—स्त्री० [ब० स०] अजमोदा।
गंध-दारु—पु० [मध्य० स०] अगरु। अगर।
गंध-द्रव्य—पु० [मध्य० स०] दवाओ मे डालने, शरीर मे लगाने या औषधो मे मिलाने का कोई सुगंधित पदार्थ।
गंध-धूलि—स्त्री० [ब० स०] कस्तूरी।
गंधन—पु० [स०√गंध्+ल्युट्—अन] १. उत्साह। २. प्रकाश। ३ वध। ४ सूचना। ५ सोना। उदा०—गंधन मूल उपाधि वहु भूखन तन गन जान। —तुलसी।
गंध-नाकुली—स्त्री० [मध्य० स०] रास्ना।
गंध-नाडी—स्त्री० [मध्य० स०] नाक। नासिका।
गंध-नाल— पु० [ष० त०] १. नासिका। नाक। २ नाक का छेद। नथुना।
गंध-नालिका—स्त्री० [ष० त०] गंधनाल।
गंध-नाश—पु० [ब० स०] एक रोग जिसमे सुगंध, दुर्गंध आदि का अनुभव करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। (एनोस्मिआ)
गंधप—पु० [स० गंध√पा (पीना)+क] पितरो का एक वर्ग।
गंध-पत्र—पु० [ब० स०] १ सफेद तुलसी। २ बेल। बिल्व। ३ मरुआ।
गंधपत्रा—स्त्री० [स० गन्धपत्र+टाप्] कपूर कचरी।
गंधपत्री—स्त्री० [स० गन्धपत्र+ङीप्] अजमोदा।
गंध-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] सप्तपर्णी।
गंध-पलाशी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] हल्दी।
गंधपसार, गंधपसारी—स्त्री०=गंधप्रसारिणी।
गंध-पाषाण—पु० [मध्य० स०] गंधक।
गंध-पिशाचिका—स्त्री० [तृ० त०] सुगंधित द्रव्य जलाने पर निकलनेवाला धूआँ।
गंध-पुष्प—पु० [मध्य० स०] १ केवडा। २ बेत।
गंध-प्रत्यय—पु० [ब० स०] नासिका। नाक।
गंध-प्रसारिणी—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार का पौधा जिसके दुर्गंधयुक्त पत्ते दवा के काम आते है।
गंध-फल—पु० [ब० स०] कपित्थ। कैथ।
गंध-फला—स्त्री० [स० गन्धफल+टाप्] प्रियगु।
गंधफली—स्त्री० [स० गंधफल+ङीप्] १ प्रियगु। २ चपा।
गंधबंधु—पु० [स० गंध्√बंध (बाँधना)+उण्] आम का वृक्ष और उसका फल।
गंधबबूल—पु० [स० गंध+हि० बबूल] बबूल की जाति का एक छोटा पेड।
गंधबिलाव—पु० [स० गंध+हि० बिलाव=बिल्ली] बिल्ली की तरह का एक जगली जतु जिसके अडकोश से एक प्रकार का सुगंधित तरल पदार्थ निकलता है। गंध-मार्जार।
गंधबेन—पु० [स० गंधवेणु] रूसा या रोहिष नामक सुगंधित घास।
गंध-माता (तृ)—स्त्री० [स० ष० त०] पृथ्वी।
गंध-माद—पु० [ब० स०] भौरा। भ्रमर।
गंधमादन—पु० [स० गंध√मद (प्रसन्न होना)+णिच+ल्यु-अन] १. पुराणानुसार एक पर्वत जो इलावृत और भद्राश्व खड के बीच मे कहा गया है और अपने सुगंधित वनो के लिए प्रसिद्ध था। २ एक प्रकार का गंध-द्रव्य। ३ भौरा। ४ गंधक। ५ रावण का एक नाम।
गंधमादनी—स्त्री० [स० गंधमादन+ङीप्] १ मद्य। शराब। २ लाक्षा। लाख।
गंधमादिनी—स्त्री० [स० गंध√मद्+णिच्+णिनि–ङीप्] लाक्षा। लाख।
गंध-मार्जार—पु० [मध्य० स०] गंधबिलाव। (देखे)
गंध-मालती—स्त्री० [तृ० त०] एक प्रकार का गंध-द्रव्य।
गंध-मासी—स्त्री० [मध्य० स०] जटामासी।
गंध-मुड—पु० [स० गंध√मुड् (निवारण करना)+णिच्+अच्] एक प्रकार की लता।
गंध-मूल—पु० [ब० स०] पान की जड। कुलजन।
गंधमूली—स्त्री० [स० गंधमूल+ङीप्] कपूर कचरी।
गंध-मूषिका—स्त्री० [मध्य० स०] छछूँदर।
गंध-मृग—पु० [मध्य स०] वह मृग जिसकी नाभि मे कस्तूरी होती है। कस्तूरी मृग।
गंधरब*—पु०=गंधर्व।
गंध-रस—पु० [ब० स०] सुगंधसार नामक गंध-द्रव्य।
गंध-राज—पु० [ष० त०] १ चंदन। २ नख नामक गंध-द्रव्य। ३ बेले की जाति का एक पौधा और उसका फूल। मोगरा बेला।
गंधराज-गुग्गुल—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का गुग्गुल जिसे जलाने पर वातावरण सुगंधित हो जाता है।
गंधराजी—स्त्री० [स० गन्धराज+ङीप्] नख नामक गंध-द्रव्य।
गंधरी†—स्त्री० [स० गंधर्व] गंधर्व जाति की कन्या या स्त्री।
गंधर्व—पु० [स० गंध √अर्व् (मारना)+अच्, पररूप] [स० स्त्री० गंधर्वी, हिं० स्त्री० गंधर्बिन] १ पुराणानुसार एक प्रकार के देवता जो स्वर्ग मे गाने-बजाने का काम करते हैं।
विशेष—यह लोग सोम के रक्षक, रोगो के चिकित्सक, सूर्य के अश्वो के वाहक, स्वर्गीय ज्ञान के प्रकाशक, यम और यमी के जनक आर्य माने जाते है। इनका स्वामी वरुण है।
२. एक आधुनिक जाति जिसकी लडकियाँ गाने-नाचने का काम और वेश्या-वृत्ति करती है। ३. बालिकाओ की वह अवस्था जब उनका यौवन आरम्भ होता और उनके स्वर मे माधुर्य आता है। ४ मृग। हिरन। ५ घोडा। ६ एक शरीर से दूसरे शरीर मे गई हुई आत्मा। ७. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का मानसिक रोग। ८. सगीत मे एक प्रकार का ताल। ९ विधवा स्त्री का दूसरा पति।
गंधर्व-तैल—पु० [मध्य० स०] रेडी का तेल।
गंधर्व-नगर—पु० [ष० त०] १. नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास

जो कुछ विशिष्ट प्रकार की प्राकृतिक अवस्थाओ मे सूर्य की किरणें पडने पर आकाश मे या स्थल पर भ्रम से दिखाई पडता है। २ वेदान्त मे, उक्त के आधार पर किसी प्रकार का मिथ्या भ्रम। ३ चद्रमा के चारो ओर का घेरा या मडल। ४ सध्या के समय पश्चिम दिशा मे रग-विरगे वादलो मे फैली हुई लाली। ५ महाभारत के अनुसार मानसरोवर के पास का एक नगर।

गधर्व-पुर—पु० [प० त०] गधर्व-नगर।

गधर्व-रोग—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का उन्माद या पागलपन।

गधर्व-लोक—पु० [प० त०] वह जगत् या ससार जिसमे गधर्व रहते है।

गधर्व-वधू—स्त्री० [प० त०] एक प्रकार का गध-द्रव्य जिसे चीडा भी कहते है।

गंधर्व-विद्या—स्त्री० [प० त०] गान विद्या। सगीत।

गधर्व-विवाह—पु० [मध्य० स०] हिन्दू धर्म-शास्त्रो के अनुसार आठ प्रकार के विवाहो मे से एक जिसमे वर तथा कन्या अपनी इच्छा से एक दूसरे का वरण करते है। (कलियुग मे ऐसा विवाह वर्जित है।)

गधर्व-वेद—पु० [प० त०] चार उपवेदो मे से एक जिसमे सगीतशास्त्र का विवेचन है।

गधर्व-सगीत—पु० [प० त०] वैदिक युग के मध्य के वे लोक-गीत जिनसे देशी सगीत (आधुनिक लोकगीत) का विकास हुआ है।

गंधर्वा—स्त्री० [स० गधर्व+टाप्] दुर्गा का एक नाम।

गंधर्वास्त्र—पु० [गधर्व-अस्त्र, मध्य०स०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

गधर्वी—स्त्री० [स० गधर्व+ङीप्] १. गधर्व जाति की स्त्री। २. पुराणानुसार घोड़ो की आदि माता जो सुरभी की पुत्री थी।

वि० गधर्व-सवधी। गधर्वो का। जैसे—गधर्वी माया या रूप।

गधर्वोन्माद—पु० [गधर्व-उन्माद, मध्य० स०] एक प्रकार का उन्माद।

गधवती—स्त्री० [स० गध+मतुप्, वत्व, ङीप्] १ पृथ्वी। २. मदिरा। ३. वनमल्लिका। ४. मुरा नामक गध द्रव्य। ५. वरुण की पुरी का नाम। ६ व्यासदेव की माता का एक नाम।

गधवह—वि० [स० गध √वह् (ले जाना)+अच्] १ गध ले जाने या पहुँचानेवाला। २ सुगधित।

पु० १. वायु। हवा। २ नाक, जिससे गध का ज्ञान होता है। (डि०)

गंधवाह—पु० [स० गध √वह्+अण्] वायु। हवा।

गंध-सफेदा—पु० [स० गध+हिं० सफेद] १. सफेद छालवाला एक प्रकार का लवा वृक्ष। (यूकिलप्टस) २. उक्त वृक्ष के फूलो मे से निकलनेवाला एक प्रकार का सुगधित तेल।

गध-सार—पु० [व० स०] १ चदन। २ गधराज नामक वेला। मोगरा। ३ कपूर।

गंधहर—पु० [स० गध√हृ (हरण करना) +अच्] नाक। (डि०)

गंध-हस्ती—पु० [मध्य० स०] ऐसा हाथी जिसके कुभ से मद वहता हो। मदोन्मत्त हाथी।

गंधा—वि० स्त्री० [स० √गध+णिच्+अच्—टाप्] गध से युक्त। (यौ० शब्दो के अत मे) जैसे—रजनी गंधा, मत्स्य गधा।

गधाजीव—पु० [स० गध-आ √जीव् (जीना) +अच्] इत्र, तेल आदि बनाने और वेचनेवाला, गधी।

गंधाज्ञ—वि० [स० गध-अज्ञ, प० त०] [भाव० गधाज्ञता] १ (व्यक्ति) जिसे गध का अनुभव न होता हो। २ (व्यक्ति) जो गधो के प्रकार या स्वरूप न जानता हो। जो यह न वतला सकता हो कि यह गध किस चीज की या किस प्रकार की है।

गंधाज्ञता—स्त्री० [स० गधाज्ञ+तल्—टाप्] =गध-नाश (दे०)।

गधाढ्य—वि० [गध-आढ्य, तृ० त०] जिसमे वहुत अधिक खुशवू या सुगध हो।

पु० १ चदन। २ नारगी का वृक्ष। ३. एक प्रकार का गध-द्रव्य। ४. कई प्रकार के पौधो की सज्ञा।

गंधाना—पु० [हिं० गधन] रोला छद का एक नाम।

अ० [हिं० गध] किसी पदार्थ मे से गध या महक का फैलना। गध छोडना या देना।

स० गध या महक फैलाना।

गंधानुवासन—पु० [गध-अनुवासन, तृ० त०] किसी चीज को सुगधि से युक्त करना। सुवासित करना।

गधाविरोजा—पु० [हिं० गध+विरोजा] चीड या साल नामक वृक्ष का गोद या निर्यास जो प्राय फोडे-फुसियो पर लगाया जाता है। चद्रस।

गंधाम्ला—स्त्री० [गध-अम्ल, व० स०] जगली नीवू।

गंधार—पु० [स० गध√ऋ (गति)+अण्] १ भारत के उस पश्चिमोत्तर प्रदेश का पुराना नाम जो तक्षशिला मे कुनड या चित्राल नदी तक था। २. दे० 'गाधार'।

गधारी—स्त्री०=गाधारी।

गंधालिका—स्त्री० [स०] उडने तथा डक मारनेवाले उन छोटे-छोटे कीडो का वर्ग जिसमे वर्रे, भौरे, मधुमक्खियाँ आदि सम्मिलित है। (वास्प)

गंधाली—स्त्री० [स० गध-आली, व० स०] गधप्रसारिणी लता।

गंधालु—वि० [स० √गध्+आलुच्] १ खुशवूदार। २ सुवासित।

गंधाशन—पु० [गध-अशन, व० स०] वायु। हवा।

गंधाश्मा (श्मन्)—पु० [मध्य० स०] गधक।

गंधाष्टक—पु० [गध-अष्टक, प० त०] आठ प्रकार के गधो के मेल से वना हुआ गध। अष्ट-गध।

गंधिक—वि० [स० गध+ठन्—इक] गधवाला।

पु० १ गधक। २ गधी।

गधिनी—स्त्री० [स० गध+इनि—ङीष्] मदिरा। शराव।

गँधिया—पु० [हिं० गध] १ एक प्रकार का छोटा वरसाती कीडा, जिससे बहुत दुर्गन्ध निकलती है। २ हरे रग का एक प्रकार का कीडा जो धान आदि की फसल मे लगता है।

स्त्री० १ गाँधी नाम की वरसाती घास। २ गध-प्रसारिणी नामक लता।

गंधी—पु० [स० गाधिक, प्रा० गाधिअ, गु० प० बँ० गाँधी, मरा० गधे] १. वह जो सुगधित तेल, इत्र आदि वनाता और वेचता हो। अत्तार। २. गँधिया घास।

स्त्री० १. गँधिया घास। २. गँधिया कीडा।

गंधी पतंग—पु० [स० व्यस्तपद] धान की वालो मे लगनेवाला गँधिया नाम का कीडा।

गँधीला*—वि० [हिं० गध] १ जिसमे किसी प्रकार की गध हो। २. अप्रिय या बुरी गधवाला। बदबूदार।
†वि०=गँदला।

गधेंद्रिय—स्त्री० [स० गध-इद्रिय, मध्य० स०] सूँघने की इद्रिय। नासिका। नाक।

गधेज—स्त्री० [स० गध] अगिया नाम की घास।

गधेल—पु० [स० गध] एक प्रकार का छोटा वृक्ष या झाड।

गंधेला—पु०[हिं० गध] [स्त्री० अल्पा० गधैली] १. एक प्रकार की चिडिया। २. गध-प्रसारिणी लता।
वि० जिसमे से दुर्गंध आती हो। बदबूदार।

गंधोच्छल—वि० [स० गध-उच्छल, तृ० त०] गध से भरा हुआ। जिसमे से खूब गध निकल रही हो। उदा०—वह शोधशक्ति जो गधोच्छल। —निराला।

गधोत्कट—पु० [गध-उत्कट, तृ० त०] दौना। दमनक। (पौधा)
वि० उत्कट गधवाला।

गधोत्तमा—स्त्री० [गध-उत्तमा, तृ० त०] अगूरी शराब।

गंधोपजीवी (विन्)—पु० [स० गध-उप√जीव् (जीना) +णिनि] इत्रफरोश। गधी।

गधोपल—पु० [स० गध-उपल, मध्य० स०] गधक।

गधौली†—स्त्री०[स० गध से] कपूर कचरी।

गध्य—वि० [स० गध+यत्] १ गध-सबधी। २. जिसमे गध हो। गध-युक्त।

गध्रप*—पु०=गंधर्व।

गभारी—स्त्री० [स०√गम्+भृ (धारण करना)+अण्—डीप्] एक प्रकार का बडा वृक्ष।

गभीर—वि० [स० गम्+ईरन्, नि० भकार] १. जिसकी गहराई की थाह जल्दी न मिले। गहरा। जैसे—गभीर नद या समुद्र। २ घना। सघन। ३ भारी या विकट। घोर। जैसे—गभीर नाद। ४ (कथन या विषय) जिसे समझने के लिए बहुत सोच-विचार करना पडे। गूढ। जटिल। दुरूह। जैसे—गभीर समस्या। ५ चिंतित या भयभीत करनेवाला। चिताजनक। जैसे—गभीर स्थिति। ६ (व्यक्ति) जो किसी बात की गहराई तक जाता हो, जल्दी विचलित न होता हो और अपने मन के भाव जल्दी दूसरो पर प्रकट न होने देता हो। शात। धीर।
पु० १. जबीरी नीबू। २ कमल। ३. महादेव। शिव। ४ एक प्रकार का राग। (सगीत)

गंभीरक—वि० [स० गम्भीर+कन] गहरा। गभीर।

गंभीरवेदी (दिन्)—पु० [स० गम्भीर√विद् (जानना)+णिनि] ऐसा मस्त हाथी जो साधारण अकुश की चोट की परवा न करे।

गंभीरिका—स्त्री० [स० गभीर+कन्—टाप्, इत्व] एक प्रकार की ढोलक।

गँमार†— वि०, पु०=गँवार।

गमित*—वि० [स० गम] १. जिसके पास तक गम या पहुँच हुई हो। २. किसी जानकार द्वारा बतलाया हुआ। जैसे—गुरु गमित ज्ञान।

गँदे—स्त्री० दे० 'गौ'।

२—८

गँवई—स्त्री० [हिं० गाँव] [वि० गँवई†] १ छोटा गाँव। जैसे—गाँव-गँवई के लोग। २ गाँव।
वि० १ गाँव का। गाँव मे रहनेवाला। २ गँवार।
पु० देहाती।

गँवनना*—अ० [स० गमन] गमन करना। जाना।
स०=गँवाना।

गँवना†—अ०=गमन करना।

गँवरदल—वि० [हिं० गँवार+दल] गँवारो की तरह का। गँवार के समान। गँवारू।
पु० गँवारो का दल या समूह।

गँवरमसला—पु० [हिं० गँवार+अ० मसल] ग्रामीणो या देहातियो मे प्रचलित उक्ति या उनकी कहावत।

गँवहियाँ†—पु० [स० गोघ्न=अतिथि] १ गँवार। देहाती। २ अतिथि। मेहमान।

गँवाऊ—वि० [हिं० गँवाना] धन-सपत्ति गँवाने या नष्ट करनेवाला। 'कमाऊ' का विपर्याय।

गँवाना—स० [स० गम] १. कोई चीज असावधानी, उपेक्षा, प्रमाद आदि के कारण व्यर्थ अपने पास से निकल जाने देना। भूल, मूर्खता आदि के कारण किसी उपयोगी या मूल्यवान् वस्तु से वंचित होना। खोना। जैसे—(क) जूए या सट्टे मे धन गँवाना। (ख) मेले मे कपडा या छडी गँवाना। २ समय के सम्बन्ध मे, व्यर्थ नष्ट करना या बिताना। जैसे—लडको का खेल-कूद मे समय गँवाना। ३ दूर करना। निकालना। हटाना। उदा०—कहहिं गँवाइअ छिनकु स्रम, गँवनब अबहिं कि प्रात।—तुलसी।

गँवार—वि० [हिं० गाँव+आर (प्रत्य०)] [वि० गँवारी, गँवारू, स्त्री० गँवारिन] १ गाँव मे रहनेवाला (व्यक्ति)। देहाती। २ उक्त कारण से जो शिष्ट, सभ्य तथा सुशिक्षित न हो। असभ्य।* ३ अनजान। अनाडी। जैसे— हम तो इन सब बातो मे गँवार ठहरे।

गँवारता*—स्त्री०=गँवारपन।

गँवारपन—पु० [हिं० गँवार+पन (प्रत्य०)] गँवार होने की अवस्था या भाव। देहातीपन।

गँवारी—वि० [हिं० गँवार] १ गँवारो की तरह का। ग्राम्य। जैसे—गँवारी पहनावा या बोली। २ दे० 'गँवारू'।
स्त्री० १ गँवारपन। देहातीपन। २ गँवारो की-सी मूर्खता। ३ गाँव की रहनेवाली या गँवार की स्त्री।

गँवारू—वि० [हिं० गँवार+ऊ (प्रत्य०)] १ गाँव अथवा गाँव मे रहनेवालो से सबध रखनेवाला अथवा उनके जैसा। जैसे—गँवारू पहनावा, गँवारू चाल आदि। २ शिष्टता, सभ्यता, आदि से रहित।

गँवेली*—स्त्री०=गँवारी (गँवार स्त्री)।

गँस*—पु० [स० ग्रंथि] १. मन मे खटकनेवाली बात। २ मन मे छिपा हुआ द्वेष या वैर। ३ दे० 'गाँसी'। (तीर की)

गँसना*—स० [स० ग्रथन] १ अच्छी तरह कसकर जकडना, बाँधना या लगाना। गाँठना। २ कपडे की बुनावट मे बाने को कसना या दबाना जिसमे बुनावट गफ या घनी हो। ३ कस या ठूँसकर भरना।

अ० १ कसकर जकड़ा या बाँधा जाना। २ बुनावट मे सूतों का खूब पास पास होना। ३. कसकर या ठसाठस भरा जाना।

गँसीला—वि० [हिं० गाँसी] [स्त्री० गँसीली] गाँस या गाँसी की तरह नुकीला और चुभने या खटकनेवाला।

†वि० दे० 'गसीला'।

गँह— स० [स० ग्रहण] ग्रहण करना। पकडना। उदा०—एकै आम एकै विसवास प्राण गँहवास।—घनानन्द।

गइद*—पु० =गयद (हाथी)।

गइनाही*—स्त्री० [स० गहन] १ गहनता। गभीरता। २ किसी वात या विपय की पूरी जानकारी। गहन ज्ञान।

गइयर—पु०, स्त्री०=गैयर।

गई—वि० स्त्री० [हिं० गया का स्त्री० रूप] १. जो बीत चुकी हो। बीती हुई। जैसे—गई रात। २ पुरानी। जैसे—गई वात।

मुहा०—गई करना या कर जाना=किसी अनुचित वात के सबंध मे यह समझकर चुप हो जाना कि जाने दो, ध्यान मत दो।

गईवहोर—वि० [हिं० गया+वहुरि] १ विगडा हुआ काम या वात वनानेवाला। २ खोई हुई चीज ला देनेवाला।

गउमुख—वि०, पु०=गोमुख।

गउर†—पु०=गौर (विचार)।

वि०=गौर (गोरा)।

गउरव*—पु०=गौरव।

गउव—पु० [स० गवय] १ नील गाय। २ गौ। गाय। उदा०—गउव सिंघ रेंगहि एक वाटा। —जायसी।

गऊ—स्त्री० [स० गो] गाय। गौ।

गऊघाट—पु० [हिं०] गाय-बैलो आदि के पानी पीने के लिए वनाया हुआ ढालुआँ और विना सीढियो का घाट।

गकरिया—स्त्री०=गाकरी (लिट्टी)।

गक्खर—पु० [?] पुरानी चाल का एक प्रकार का हथियार।

गगन—पु० [स० √गम (जाना+युच—अन, ग आदेश] १ आकाश। आसमान।

मुहा०—गगन खेलना=नदी आदि के वहते हुए पानी का रह-रहकर उछलना। **(किसी चीज का) गगन होना**=उड़ते-उडते वहुत ऊपर आकाश मे चले जाना। जैसे—कवूतर या पतग का गगन होना।

२ आकाशस्थ ईश्वर या दैव। उदा०—गगन कटोरहि जगत बँधाएउ। —जायसी। ३. शून्य स्थान। ४. छप्पय नामक छद का एक भेद। ५. अवरक। ६ रहस्य सप्रदाय मे (क) अत करण या हृदय (ख) ब्रह्म के रहने का स्थान या हृदय रूपी कमल।

गगन-कुसुम—पु० [मध्य० स०] आकाश-कुसुम। कोई अलौकिक या अवास्तविक वस्तु।

गगनगढ़*—पु० [स०+हिं०] बहुत ऊँचा किला या महल।

गगन-गति—वि० [व०\स०] आकाश मे चलनेवाला। आकाशचारी।

पुं० १. चन्द्रमा, सूर्य आदि ग्रह। २ देवता। ३ वायु। हवा। ४ पक्षी।

गगन-गिरा—स्त्री० [मध्य० स०] आकाशवाणी।

गगनचर—वि० [स० गगन√चर (गति)+ट] आकाश मे उडने या चलनेवाला। आकाशचारी।

पु० १. ग्रह, नक्षत्र आदि। २ देवता। ३. पक्षी।

गगनचुंबी (बिन्)—वि० [स० गगन√चुंव् (चूमना)+णिनि] इतना अधिक ऊँचा कि आकाश को चूमता हुआ जान पडे। वहुत ऊँचा। अभ्रकष। (स्काई स्क्रैपर)

गगन-धूलि—पु० [स० ष० त०] १ कुकुरमुत्ते का एक भेद। २ केतकी या केवडे पर की सुगंधित धूल।

गगन-ध्वज—पु० [ष० त०] १. सूर्य। २. वादल। मेघ।

गगन-पति—पु० [ष० त०] इन्द्र।

गगन-भेड़—स्त्री० [हिं० गगन+भेड] कराँकुल या कूँज नामक जल-पक्षी।

गगनभेदी (दिन्)—वि० [स० गगन √ भिद (फाडना)+णिनि] १. आकाश को भेदने या फाडनेवाला (शब्द या स्वर)। आकाशभेदी। २. वहुत अधिक ऊँचा।

गगन-मडल—पु० [ष० त०] १ पृथ्वी के ऊपर का आकाश रूपी घेरा या मडल। २. हठ-योग की परिभाषा मे, ब्रह्माण्ड (सिर मे ऊपर की ओर का भीतरी भाग) और ब्रह्म-रध्र।

गगन-रोमंथ—पु० [ष० त०] अनहोनी या असभव वात।

गगनवटी*—पु० [स० गगनवर्त्ती] सूर्य। (डिं०)

गगन-वाटिका—स्त्री० [स० त०] वैसी ही असभव वात जैसी आकाश मे वाटिका या वाग-वगीचे के होने की होती है। आकाश-कुसुम।

गगन-वाणी—स्त्री०=आकाशवाणी।

गगन-विहारी (रिन्)—[स० गगन-वि०√हृ (हरण करना)+णिनि] आकाशचारी। गगनचर।

पु० १. सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह। २ देवता।

गगन-सिंधु—स्त्री० [ष० त०] आकाश-गगा।

गगन-स्पर्शन—पु० [ष० त०] १ वायु। हवा। २. आठ मरुतो मे से एक मरुत् का नाम।

गगन-स्पर्शी (शिन्)—वि० [स० गगन√स्पृश् (छूना)+णिनि] आकाश को स्पर्श करनेवाला। वहुत अधिक ऊँचा।

गगन-स्पृक्(श्)—वि० [स० गगन√स्पृश्+क्विप्] गगनस्पर्शी।

गगनांगना—स्त्री० [गगन-अगना, मध्य० स०] अप्सरा।

गगनांबु—पु० [गगन-अबु, मध्य० स०] आकाश से गिरा हुआ अर्थात् वर्षा का जल। वरसाती पानी।

गगनाध्वग—वि०, पु० [गगन-अध्वग, ष० त०] =गगनचर।

गगनानंग—पु० [गगन-अनग, स० त०] एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे पचीस मात्राएँ होती हैं।

गगनापगा—स्त्री० [गगन-आपगा, ष० त०] आकाश-गगा।

गगनेचर—पु० [अलुक् स०] १ ग्रह, नक्षत्र आदि। २ देवता। ३ चिडिया। पक्षी।

वि० आकाश मे उड़ने या चलनेवाला।

गगनोल्मुक—पु० [गगन-उल्मुक, म० त०] मगलग्रह।

गगरा—पु० [स० गर्गर=दही मथने का वर्तन] [स्त्री० अल्पा० गगरी] ताँवे, पीतल आदि का वना हुआ पानी रखने का वडा घडा। कलसा। गागर।

गगरिया*—स्त्री०=गगरी।

गगरी—स्त्री० [हिं०गगरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा गगरा।

मुहा०—गगरी फोडना=मृतक के दाहकर्म की समाप्ति करना। उदा०—अत की वार गगरिआ फोरी। —कवीर।

गगल—पु० [स० गरल] साँप का जहर। सर्प-विष।

गगली—पु० [देश०] एक प्रकार का अगर या अगरु।

गगोरी—पु० [स० गर्ग] एक प्रकार का छोटा कीडा।

गच—स्त्री० [अनु०] किसी नरम या मुलायम चीज मे किसी कडी, नुकीली या पैनी चीज के धँसने अथवा धँसाने से होनेवाला शब्द। जैसे—कलेजे, तरबूज या लौकी मे गच से छुरी धँसना या धँसाना।
स्त्री० [चीनी कचु, तुर्की गज] १ चूने-सुर्खी का मसाला। २ चूने-सुर्खी से कूटकर वनाई हुई पक्की और साफ-सुथरी जमीन या फर्श। ३ चूने, सुर्खी आदि से दीवारो पर किया हुआ पलस्तर या लेप। ४. साफ-सुथरा तल या सतह। ५ सगजराहत या सिलखडी को फूँककर तैयार किया हुआ चूना। (प्लास्टर ऑफ पेरिस)
वि० वहुत ही चमकीले और साफ तलवाला। उदा०—ज्यौ गच काँच विलोकि सेन जड छाँह आपने तन की।—तुलसी।

गचकारी—स्त्री० [हिं० गच+फा० कारी] १ चूने, सुर्खी आदि को मिलाकर तैयार किए हुए मसाले से दीवारो का पलस्तर, जमीन का फर्श आदि वनाने का काम। २. उक्त प्रकार की वनावट के लिए गच पीटने का काम।

गचगर—पु० [हिं० गच +फा० गर=वनानेवाला] वह कारीगर या राज जो गच वनाता हो। गच पीटने और वनानेवाला मिस्तरी।

गचगीरी—स्त्री०=गचकारी।

गचना—स० [अनु० गच] १. वहुत अधिक कस या ठूसकर भरना।
†स० दे० 'गाँसना'।

गचपच—वि०=गिचपिच।

गचाका—पु० [हिं० गच से अनु०] गच से गिरने या वोलने का शब्द।
क्रि० वि० १ एकदम से। सहसा। २. पूरी तरह से। भरपूर। (वाजारू)

गच्चा†—पु० [अनु०] १. गड्ढा। गर्त्त। २ जोखिम, हानि आदि की सभावना या उसका स्थल। ३. ऐसा धोखा या भ्रम जिससे भारी हानि हो।
मुहा०—गच्चा खाना=धोखे मे आकर अपनी हानि कर वैठना।

गच्छ—पु०[स० √गम् (जाना)+क्विप्, तुक्, गत्√ छो (काटना)+क] १ पेड। गाछ। २ जैन साधुओ के रहने का मठ। ३ जैन साधु का गुरु-भाई।

गछना*—अ० [स० गच्छ=जाना] चलना। जाना।
स० १. देन, निर्वाह, व्यवहार आदि के लिए अपने ऊपर या जिम्मे लेना। २ चलाना। निभाना।

गजद (दा)*—पु० [स० गजै] हाथी।

गज—पु० [स० √गज् (मत्त होना)+अच्] [स्त्री० गजी] १. हाथी। २ दिग्गज। ३ आठ की सख्या। ४ दीवार के नीचे का पुश्ता। ५ महिषासुर का एक पुत्र। ६ राम की सेना का एक वदर। ७ रहस्य सम्प्रदाय मे, मन जो हाथी की तरह वलवान् होता है और जल्दी वश मे नही आता।
पु० [फा० गज] १ लवाई नापने की एक माप जो सोलह गिरह, तीन फूट अथवा छत्तीस इच के वरावर होती है। (लकडी नापने का गज अपवाद रूप से दो फुट या चौवीस इच का माना जाता है।) २ उक्त माप का वह उपकरण या साधन जो कपडे, लकडी, लोहे आदि का वना होता है। ३ लोहे का वह छड जिससे पुरानी चाल की वदूको मे वारुद भरते थे। ४ सारगी वजाने की कमानी। ५ पुरानी चाल का एक प्रकार का तीर। ६. वह पतली लकडी जो वैलगाडी के पहिये मे मूँडी से पुट्ठी तक लगाई जाती है। ७ इमारत मे लकडी की वह पटरी जो घोडिया के ऊपर रखी जाती है।

गजअसन*—पु०=गजाशन।

गजइलाही—पु० [फा० गज+इलाही] अकवरी गज जो ४१ अगुल का होता और इमारत के काम मे आता है।

गज-कंद—पु० [व० स०] हस्तिकद।

गजक—पु० [फा० कज्रक] १ नशीली वस्तु (जैसे—अफीम, भाँग, शराव आदि का सेवन करने के समय मुँह का स्वाद वदलने के लिए खाई जानेवाली कोई चटपटी या स्वादिष्ठ चीज। जैसे—कवाव, पापड, समोसा आदि। २ गुड या चीनी का पाग वनाकर और उसमे अन्न के दाने, सूखे मेवे आदि डालकर जमाई जानेवाली एक प्रकार की पपडी। ३ तिल पपड़ी। ४ जलपान।
विशेष—पूरव मे यह शब्द प्राय. स्त्रीलिंग मे वोला जाता है।

गजकरनआलू—पु० [स० गजक-र्णालु] अरुआ नामकी लता जिसमे लवा कद होता है।

गज-कुंभ—पु० [ष० त०] हाथी के माथे पर दोनो ओर उठे या उभरे हुए अश।

गज-कुसुम—पु० [व० स०] नागकेसर।

गज-केसर—पु० [व० स०] एक प्रकार का वढिया धान।

गज-गति—स्त्री० [ष० त०] १ हाथी की चाल। २ हाथी की-सी मद और मस्त चाल। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त। ४ रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा मे शुक्र की स्थिति वा गति।
वि० हाथी की-सी मस्त चाल चलनेवाला। झूम-झूमकर चलनेवाला।

गज-गती—स्त्री० [फा० गज (नाप)+हिं० गति] कपडो की वह फुटकर विक्री जो गज के हिसाव से नापकर होती हो। (पूरे थान या थोक की विक्री से भिन्न)

गज-गमन—पु० [ष० त०] हाथी की-सी मंद और मस्त चाल।

गजगा—पु० [स० गज से] हाथियो का एक प्रकार का गहना।

गजगामी (मिन्)—वि० [स० गज√गम्+णिनि] [स्त्री० गजगामिनी] हाथी की तरह झूम-झूमकर मस्ती से चलनेवाला।

गजगाह—पु० [स० गज-ग्राह से] हाथी या घोडे पर डाली जानेवाली झूल। पाखर।

गजगौन*—पु०=गजगमन।

गजगौनी—वि० स्त्री०=गजगामिनी। (गजगामी का स्त्री० रूप)

गजगौहर—पु० [हिं० गज+फा० गौहर] गजमोती। गजमुक्ता।

गज-घाव—पु० [स० गज+हिं० घाव] एक प्रकार का हथियार जिससे युद्धक्षेत्र मे हाथियो पर वार किया जाता था।

गज-चर्म (र्मन्)—पु० [ष० त०] १ हाथी का चमड़ा। २ एक प्रकार का चर्मरोग जिसमे शरीर का चमडा हाथी के चमडे की तरह कडा और खुरदरा हो जाता है।

गज-चिर्भिटा—स्त्री० [मध्य० स०] इंद्रायन।

गज-छाया—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष में एक प्रकार का योग।

गजट—पुं० [अ० गजेट] वह राजकीय सामयिक पत्र जिसमें शासन-संबंधी सूचनाएँ प्रकाशित होती हैं। वार्तायन (दे०)।

गज-ढक्का—स्त्री० [मध्य० स०] हाथी पर रखकर बजाया जानेवाला बड़ा धौंसा।

गजता—स्त्री० [सं० गज+तल्—टाप्] १. हाथी होने की अवस्था या भाव। २. हाथियों का झुंड या समूह।

गज-दंत—पुं० [ष० त०] १. हाथी का दाँत। २. एक दाँत के ऊपर निकलनेवाला दूसरा दाँत। ३. वह पत्थर जो छज्जे का भार सँभालने के लिए उसके नीचे लगाया जाता है। ४. दीवार में लगी हुई चीजें टाँगने की खूँटी। ५. एक प्रकार का घोड़ा। ६. नृत्य में एक प्रकार का भाव प्रकट करने की मुद्रा।

गजदंती—वि० [सं० गजदंत+हिं० ई (प्रत्य०)] हाथी-दाँत का बना हुआ। जैसे—गजदंती चूड़ा या चूड़ियाँ।

गज-दान—पुं० [ष० त०] १. किसी को हाथी दान करके देना। २. हाथी के मस्तक से बहनेवाला दान या मद।

गजधर—पुं० [फा० गज+हिं० धर] मकान बनानेवाला मिस्त्री। राज। मेमार।

गज-नक्र—पुं० [मध्य० स०] गैंडा।

गजनफर—पुं० [अ०] शेर। सिंह।

गजनवी—वि० [फा०] १. गजनी नगर का रहनेवाला। जैसे—महमूद गजनवी। २. गजनी नगर से संबंध रखनेवाला।

गजना*—अ० [स० गर्जन] =गाजना (गरजना)।

गज-नाल—स्त्री० [ब० स०] १. पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप जो हाथी पर रखकर चलाई जाती थी। २. वह बड़ी तोप जिसे हाथी खींचकर ले चलते थे।

गज-नासा—स्त्री० [ष० त०] हाथी की नाक अर्थात् सूँड़।

गज-निमीलिका—स्त्री० [ष० त०] कोई चीज या बात देखते हुए भी यह प्रकट करना कि हम नहीं देख रहे हैं। जान-बूझकर अनजान बनना।

गजनी—पुं० [फा० मि० स० गञ्जन] [स्त्री० गजनवी] अफगानिस्तान के एक नगर का नाम जो महमूद की राजधानी थी।

†स्त्री० एक प्रकार की चिकनी मिट्टी। गाजनी।

गज-पति—पुं० [ष० त०] १. बहुत बड़ा हाथी। २. वह राजा जिसके पास बहुत से हाथी हों। ३. कलिंग देश के पुराने राजाओं की उपाधि।

गजपाँव—पुं० [हिं० गज+पाँव] एक प्रकार का जलपक्षी।

गजपाय*—पुं० =गजपाल।

गजपाल—पुं० [स०गज्√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] महावत। हाथीवान।

गज-पिप्पली—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का पौधा जिसके कुछ अंग दवा के काम आते हैं। गजपीपल।

गजपीपल—पुं० =गज-पिप्पली।

गज-पुट—पुं० [मध्य० स०] धातुओं के फूँकने की एक रीति। (वैद्यक)

गज-पुर—[ष० त०] हस्तिनापुर।

गज-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] नाग-पुष्पी नामक पौधा।

गज-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] [illegible]

गज-बंध—पुं० [त० स०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें किसी छंद के अक्षरों की योजना इस प्रकार होती है कि वे हाथी के रूप में बैठाये जा सकते हैं।

गज-बंधन—पुं० [ष० त०] १. हाथी बाँधने का खंभा। २. हाथी बाँधने का सिक्कड़।

गजब—पुं० [अ० गजब] १. कोप। क्रोध। बहुत तेज गुस्सा। रोष। क्रोध।

पद—गजब इलाही=ईश्वर का या दैवी कोप।

२. उक्त प्रकार के कोप के कारण होनेवाली कोई बड़ी विपत्ति या संकट।

मुहा०—(किसी पर) गजब गुजरना=ऐसा संकट आना जिसके निराकरण पर बहुत अधिक विपत्ति पड़े। उदा०—गजब गुजरा दर्शन की चाह में। —(किसी पर) गजब ढाना=किसी के लिए भीषण विपत्ति या संकट उत्पन्न करना।

३. बहुत बड़ा अनिष्ट। जुल्म। ४. अन्याय। जुल्म।

मुहा०—गजब ढाना=अन्याय या जुल्म करना। जैसे—तुम तो गजब करते हो।

५. बहुत ही अद्भुत या विलक्षण बात या चीज।

पद—गजब का=जो गुण, मात्रा आदि के विचार में हद दर्जे का हो। बहुत अधिक और असाधारण। जैसे—गजब की सर्दी।

गज-बाँक—पुं० गज-बाग।

गज-बाग—पुं० [सं० गज+फा० बाग=लगाम] हाथी को चलाने का अंकुश।

गजबीला—वि० [हिं० गजब] [स्त्री० गजबीली] गजब करने या ढानेवाला।

गजबेली—स्त्री० [सं० गज+वल्ली] कांतिसार लोहा।

गज-भक्षक—पुं० [ष० त०] पीपल।

गज-मणि—उभय० [मध्य० स०] गज-मुक्ता।

गज-मद—पुं० [ष० त०] मस्त हाथी के मस्तक से बहनेवाला दान या मद।

गजमनि—स्त्री० =गज-मणि (गजमुक्ता)।

गज-मुक्ता—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जो हाथी के मस्तक में स्थित माना जाता है। गज-मणि।

गज-मुख—पुं० [ब० स०] वह जिसका मुख हाथी के समान हो, अर्थात् गणेश जी।

गज-मोचन—पुं० [ष० त०] विष्णु का वह रूप जिसे धारण करके उन्होंने ग्राह से एक हाथी का उद्धार किया था।

गजमोती—पुं० [स० गजमौक्तिक, प्रा० गजमोत्तिअ] गज-मुक्ता।

गज-मौक्तिक—पुं० [मध्य० स०] गज-मुक्ता।

गजर—पुं० [स० गर्ज० हिं० गरज से वर्ण-विपर्यय] १. प्राचीन काल में, एक एक पहर पर समय-सूचक घंटा या घड़ियाल बजने का शब्द। पारा। २. बहुत तड़के या प्रभात के समय बजनेवाले घंटे या घड़ियाल का शब्द। उदा०—सुबह हुई, गजर बजा, फूल खिले हवा चली।—कोई शायर।

मुहा०—गजरदम या गजरबजे=बहुत तड़के या सवेरे।

३. आज-कल चार, आठ और बारह बजने पर उतनी बार घंटा बज चुकने के बाद फिर उतनी ही बार परंतु जल्दी जल्दी फिर उतने ही घंटे बजने का

शब्द। ४ आज कल की घड़ियों मे कुछ विशिष्ट यांत्रिक क्रिया से जगाने आदि के लिए घंटी के जल्दी जल्दी और टन-टन करके बजने का शब्द।

पु० [हिं० गजर बजर=मिला-जुला] लाल और सफेद मिला हुआ गेहूँ।

गज-रथ—पु० [मध्य० स०] वह रथ जिसे हाथी खीचते हो।

गजर-दम—क्रि० वि० [हिं० गजर+फा० दम] प्रभात के समय। बहुत सवेरे। तड़के।

गजर प्रबंध—पु० [हिं० गजर+स० प्रबंध] नाच-गाना आरंभ करने से पहले गाने और बजानेवालो का अपना स्वर और बाजे ठीक करना या मिलाना।

गजर बजर—वि० [अनु०] बिना समझे-बूझे यो ही एक दूसरे के साथ मिलाया या रखा हुआ।

पु० बेमेल चीजो की एक दूसरी मे मिलावट।

गजर-भत्ता†—पु०=गजर भात।

गजरभात—पु० [हिं० गाजर+भात] गाजर और चावल उबालकर बनाया जानेवाला मीठा भात।

गजरा—पु० [हिं० गज=समूह] १ फूलो की घनी गुँथी हुई बड़ी माला। हार। २ उक्त प्रकार की वह छोटी माला जो कलाई पर गहने के रूप मे पहनी जाती है। ३. मशरू नामका रेशमी कपड़ा।

पु० [हिं० गाजर] गाजर के पत्ते जो चौपायो को खिलाये जाते है।

गजराज—पु० [ष० त०] बहुत बड़ा हाथी।

गजरी—स्त्री० [हिं० गजरा] एक गहना जो स्त्रियाँ कलाई मे पहनती है।

स्त्री० [हिं० गाजर] एक प्रकार की छोटी गाजर।

गजरौट—स्त्री० [हिं० गाजर+औट (प्रत्य०)] गाजर की पत्ती। गजरा।

गजल—स्त्री० [फा० गजल] १ वह कविता जिसमे नायिका के सौंदर्य और उसके प्रति प्रेम का वर्णन हो। २ फारसी और उर्दू मे एक प्रकार का पद्य जिसमे दो-दो कड़ियो का एक-एक चरण होता है तथा प्रत्येक दूसरी कड़ी मे अनुप्रास होता है।

विशेष—(क) इसके गाने की पद्धति दिल्ली से चली थी। (ख) यह कई प्रकार के हलके रागो और धुनो मे गाई जाती है। (ग) एक गजल के विभिन्न चरणो मे एक-एक स्वतंत्र भाव होता है।

गजलील—पु० [ब० स०] ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

गज-बदन—पु० [ब० स०] गणेश जी।

गजवान†—पु०=हाथीवान (महावत)।

गज-विलसिता—स्त्री० [ब० स०] एक प्रकार का छंद या वृत्त।

गज-वीथी—स्त्री० [ष० त०] १ हाथियो की पंक्ति। २ शुक्र की गति के विचार मे रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा नक्षत्रों का वर्ग जिसके बीच से होकर शुक्र नलता है।

गज-व्रज—पु० [स० गज√व्रज (गति)+अच्, उप० स०] हाथियो पर चलनेवाली सेना।

वि० हाथी की-सी चालवाला।

गज-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ हाथी बाँधे जाते हो। फीलखाना।

गज-स्नान—पुं० [ष० त०] हाथियो की तरह किया जानेवाला स्नान जिसमे वे नहा चुकने के बाद फिर ढेर सी धूल और मिट्टी उड़ाकर अपना सारा शरीर गंदा कर लेते हैं। फलत. ऐसा काम जो कर चुकने के बाद न करने के समान कर दिया जाय।

गजही—स्त्री० [हिं० गाज=फेन] वह मथानी जिसमे कच्चा दूध मथकर मक्खन निकाला जाता है।

गजा*—पु० [?] वह डंडा जिससे बड़ा ढोल या नगाड़ा बजाया जाता है।

गजाजीव—पु० [स० गज-आ√जीव् (जीना)+अच्] वह जिसकी जीविका हाथी पालने अथवा हाथी चलाने से चलती हो।

गजाधर—पु०=गदाधर।

गजानन—पु० [गज-आनन, ब० स०] गणेश जी, जिनका मुँह हाथी के समान है।

गजायुर्वेद—पु० [गज-आयुर्वेद, ष० त०] वह शास्त्र जिसमें हाथियो के रोगों और उनके निदान का विवेचन होता है।

गजारि—पु० [गज-अरि, ष० त०] १ हाथी का शत्रु अर्थात् शेर। सिंह। २ एक प्रकार का साल वृक्ष।

गजारी*—पु०=गजारि।

गजारोह—पु० [स० गज-आ√रुह (चढ़ना)+अण्] १ हाथी पर चढ़ना। २. महावत।

गजाल—पु० [देश०] १ एक प्रकार की मछली। २ खूँटा या खूँटी।

गजाशन—पु० [गज-अशन, ष० त०] पीपल का पेड़।

गजासुर—पु० [गज-असुर, मध्य० स०] एक दैत्य जिसका वध शिवजी ने किया था।

गजास्य—पु० [गज-आस्य, ब० स०] गणेश जी।

गजिया—स्त्री० [हिं० गज] तारकशो और खिंटाई करनेवालो का एक औजार।

गजी—पु० [फा० गज] एक प्रकार का देशी मोटा सस्ता कपड़ा। गाढ़ा। सल्लम। जैसे—गजी-गाढ़ा पहनना। (अर्थात् देशी, मोटा और सस्ता कपड़ा पहनना)

वि०, पु० [स० गज+इनि] गजारोही।

स्त्री० [सं० गज+ ङीप्] हाथी की मादा। हथिनी।

गजेंद्र—पु० [गज-इंद्र, ष० त०] १. हाथियों का राजा, ऐरावत। २ बहुत बड़ा हाथी। गजराज। ३. पुराणानुसार वह हाथी जिसे जल मे ग्राह (घड़ियाल) ने पकड़ लिया था और जिसे भगवान् कृष्ण ने आकर छुड़ाया था।

गजेंद्र-गुरु—पु० [ष० त०] रुद्रताल का एक भेद। (संगीत)

गज्ज—स्त्री०=गरज (गर्जन)।

गज्जन—पु० दे० 'गजनी'।

गज्जना*—अ०=गरजना।

गज्जर†—पु० [अनु०] ऐसी भूमि जिसमे कीचड़ होने से कारण पैर धँसते हो। दलदल।

गज्जल—पु० [?] जंजीर।

गज्जूह*—पु० [सं० गज+यूथ] हाथियों का झुंड या दल।

गज्जा†—पु० [सं० गर्ज=शब्द] तरल पदार्थ में होनेवाले बहुत से छोटे-छोटे बुलबुलों का समूह। झाग। फेन।

मुहा०—गज्जा छोड़ना देना या मारना=मछली का पानी के अंदर से बुलबुले फेंकना।

पु० [सं० गंज, फा० गज] १ ढेर। राशि। २ कोश। खजाना। ३ धन-संपत्ति। दौलत।

मुहा०—गज्जा मारना=अनुचित रूप से और एक साथ बहुत-सा धन प्राप्त करना।

४ फायदा। मुनाफा। लाभ। (बाजारू)

गञ्जिन†—वि० [हिं० गंजना] १. घना। सघन। २. गाढ़ा और मोटा (कपड़ा या उसकी बुनावट)।

गट—पु० [अनु०] किसी तरल पदार्थ को पीते समय गले से होनेवाला शब्द।

पद—गट से=एक दम से। एक बारगी।

पु० [सं० गण] १ ढेर। राशि। समूह। २ जत्था। झुंड।

गटई†—स्त्री० [सं० कण्ठ या हिं० गट] गरदन। गला।

†स्त्री० १ =गिट्टी। २ =गोटी।

गटकना—अ० [सं० कण्ठ या हिं० गट] कोई चीज इस प्रकार खाना या पीना कि गले से गट शब्द हो।

स० १ कोई चीज खाना, पीना या निगलना। २ हड़पना।

गटकीला—वि० [हिं० गटक+ईला (प्रत्य०)] १ जो गटका जा सके। गटके जाने के योग्य। २. जिसे गटकने को स्वभावतः जी चाहे। उदा०—घर घर माखन गटकीले।—नारायण स्वामी।

गटगट—पु० [अनु०] तरल पदार्थ को निगलने या पीने के समय गले से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

क्रि० वि० गले से उक्त प्रकार का शब्द करते हुए, जल्दी जल्दी और तेजी से। जैसे-गटगट सारी बोतल पी जाना।

गटना†—स०[सं० ग्रन्थन, प्रा० गठन] १. अच्छी तरह या कस कर पकड़ना। उदा०—अपनी रुचि जितही तित खैंचति इंद्रिय ग्राम गटी।—सूर। २. किसी से युक्त या संबद्ध करना। मिलाना या लगाना। ३ गाँठ-बाँधना या लगाना।

अ० किसी से बँधा, मिला या लगा होना। युक्त होना।

गटपट—स्त्री० [अनु०] १ दो व्यक्तियों में होनेवाली घनिष्ठता। २ संभोग। सहवास। ३ विभिन्न वस्तुओं में होनेवाला मेल। मिलावट।

गटर—वि० [?] १. बड़ा। २ अधिक।

गटरमाला—स्त्री० [हिं० गटर+माला] बड़े दानोंवाली माला।

गटा†—पु०=गट्टा।

गटागट—क्रि० वि०=गटगट।

गटापारचा—पु० [मलाया देश०] १ एक प्रकार का गोंद। २. उक्त गोंद का वह रूप जो उसे रासायनिक क्रियाओं से स्वच्छ तथा कड़ी करने पर होता है तथा जिससे विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

गटी—स्त्री० [सं० ग्रन्थि, पा० गठि] गाँठ।

स्त्री०=गट (समूह)।

क्रि० वि० [हिं० गट=समूह] बहुत अधिक।

गट्ट—पु०=गट।

गट्टा—पु० [सं० ग्रन्थ, प्रा० गट, हिं० गाँठ] १ गाँठ। २ हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़। कलाई। ३ पैर की नली और तलवे के बीच की गाँठ। ४ नीचे के नीचे की वह गाँठ जहाँ दोनों नये मिलती हैं और जो फरसी या हुक्के के मुँह पर रहती है। ५. किसी चीज का मोटा और कड़ा बीज। जैसे—कमल-गट्टा। ६ एक प्रकार की देहाती मिठाई।

गट्टी—स्त्री० [देश०] १. जहाज या नाव में पाल बाँधने के खंभे के नीचे की चूल। (लश०) २. नदी का किनारा।

गट्टू†—पु० [हिं० गट्टा] दस्ता। मुठिया।

गट्ठर—पु० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठरी] १. बड़े कपड़े में रख, लपेट तथा गाँठ लगाकर बाँधा हुआ रूप। जैसे—धोबी के कपड़ों का गट्ठर। २. रस्सियों आदि से बँधा हुआ सामान। जैसे—घास या लकड़ियों का गट्ठर।

मुहा०—गट्ठर साधना=घुटनों को छाती से लगाकर और ऊपर से हाथ बाँधकर अर्थात् सारे शरीर को गट्ठर का रूप देकर ऊँचाई पर से पानी में कूदना।

गट्ठा—पु० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] १. गट्ठर (दे) २ प्याज, लहसुन आदि की गाँठ। ३ जरीब का बीसवाँ भाग जो तीन गज का होता है। कट्ठा।

गट्ठी—स्त्री० १. =गठरी। २ =गाँठ।

गठकटा—वि०=गँठ-कटा।

गठजोड़ा (जोरा)—पु०=गँठ-जोड़ा (गँठबंधन)।

गठदंड—पु० [हिं० गट्ठा+दंड] एक प्रकार का दंड। (व्यायाम)

गठन—स्त्री० [सं० घटन] १ गठे हुए होने की अवस्था या भाव। २. वह अवस्था या स्थिति जिसमें किसी वस्तु के विभिन्न अंग या अवयव किसी खास ढंग से बने हुए दिखाई पड़ते हों। बनावट। रचना।

गठना—अ० [हिं० गाँठना] १. दो वस्तुओं का परस्पर मिल कर एक होना। जुड़ना। सटना।

पद—गठा-बदन=हृष्ट-पुष्ट शरीर।

२ मोटी सिलाई होना। बड़े-बड़े टाँके लगना। जैसे—जूता गठना। ३ कपड़ों आदि की बुनावट। ४. गुप्त परामर्श, विचार, षड्यंत्र आदि में सम्मिलित होकर उसके निश्चय से सहमत होना। ५ अच्छी तरह निर्मित होना या बनना। ६ आपस में खूब मेल-मिलाप और साहचर्य होना। ७ स्त्री-पुरुष या नर-मादा का संभोग होना।

गठबंधन—पु०=गँठबंधन।

गठरी—स्त्री० [हिं० गट्ठर का स्त्री० और अल्पा०] १. किसी वस्तु अथवा वस्तुओं को कपड़े से चारों ओर से लपेटकर गाँठ बाँधने पर बनने-वाला रूप। छोटा गट्ठर।

मुहा०—गठरी बाँधना=(असबाब बाँधकर) यात्रा की तैयारी करना। (किसी को) गठरी कर देना=मार-पीटकर या बाँधकर बेकाम कर देना।

२ लाक्षणिक अर्थ में, कमाई या पूँजी। धन। जैसे—घबराओ मत, उस बुढ़िया की गठरी तुम्हीं को मिलेगी।

गठरेवाँ—पु० [हिं० गाँठ] चौपायों का एक रोग।

गठवाँसी—स्त्री० [हिं० गट्ठा+अंश] कट्ठे या बिस्वे का बीसवाँ अंश। बिस्वांसी।

गठवाई—स्त्री० [हिं० गाठना] (जूता) गठवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गठवाना—स० [हिं० गाठना] १ गठने या गाँठने का काम दूसरे से कराना। २ वडी और मोटी गाँठें लगवाना। जैसे—जूता गठवाना।३ जोड लगवाना। ४ प्रसग या सभोग कराना।

गठा†—पु०=गट्ठा।

गठाना—स०=गठवाना।

पु० [हिं० घुटना] नदी का वह भाग जहाँ घुटने भर जल हो। कम गहरा स्थान। (माँझी)

स०=गठवाना।

गठानी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पुराना देहाती कर।

गठाव—पु० [हिं० गठना] गठे होने का भाव। गठन।

गठिआ—स्त्री०=गठिया।

गठित—वि० [हिं० गठा] गठा हुआ। (असिद्धरूप)

गठिबंध—पु०=गँठवधन।

गठिया—स्त्री० [हिं० गाँठ] १ टाट का वह थैला या वोरा जिसमे घोडो, वैलो आदि पर लादने के लिए अनाज भरा जाता है। खुरजी। २ कोरे कपडो आदि की वह वडी गठरी जो वाहर भेजने के लिए वाँधी जाती है। ३. शरीर के अगो की गाँठो या जोडो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे पीडा और सूजन होती है। (रियुमेटिज्म) ४. पौधो या वृक्षो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग।

गठियाना†—स० [हिं० गाँठ] १. किसी वस्तु के दो छोरो अथवा दो विभिन्न वस्तुओं के दो छोरो को जोडने या वाँधने के लिए उनमे गाँठ लगाना। जैसे—टूटे हुए धागे को गठियान।। २ कोई चीज वाँधकर ऊपर से गाँठ लगाना। जैसे—धोती के पल्ले मे पैसे गठियाना।

गठिवन—पु० [स० ग्रथिपर्ण] मँझोले आकार का एक पहाडी पेड जिसकी पत्तियो मे जगह-जगह गाँठें होती है। इसकी कलियाँ औषध के काम आती है।

गठीला—वि० [हिं० गाँठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गठीली] जिसमे वहुत-सी गाँठें-पडी हो। गाँठोवाला।

वि० [हिं० गठन] १. जिसकी गठन या वनावट अच्छी और सुदर हो। गठा हुआ। । २ हृष्ट-पुष्ट। मजवूत।

गठुआ—पु० [हिं० गाँठ] १. कपडे का वह टुकडा जिससे जुलाहे ताने के ताँगो को गठकर ठस करते है।

गठुवा—पु०=गठुआ।

गठौंद†—स्त्री० [हिं० गाँठ+वध] १.गाँठ वाँधने की क्रिया या भाव। २. थाती। धरोहर।

गठौत—स्त्री० [हिं० गठना] १ गँठ-वधन। २ मेल-मिलाप या सग-साथ। ३ आपस मे अच्छी तरह सोच-समझकर तै की हुई गुप्त वात। ४ किसी काम या वात की उपयुक्तता।

गठौती—स्त्री०=गठौत।

गडंग—पु० [हिं० गढ+अग] अस्त्र-शस्त्र, वारूद आदि रखने का स्थान।

पु० [स० गर्व] १ घमड। शेखी। २ आत्म-श्लाघा।

गडगिया†—वि० [हिं० गडग] १ डीग मारनेवाला। शेखीवाज। २ वहुत वढ-वढकर वाते करनेवाला।

गड़त—स्त्री० [हिं० गाडना] १ अभिचार या टोटके के लिए, मत्र आदि पढकर कोई चीज कही गाडने की क्रिया। २ उक्त प्रकार से गाडी जानेवाली चीज।

गड—पु० [स० √गड् (सीचना)+अच्] १ ओट। आड २ घेरा। मडल। ३. चार-दीवारी। प्राचीर। ४ गड्ढा। ५ खाई।

गडक—पु० [देश०] एक प्रकार की मछली।

गड़कना—अ० [अनु०] गड-गड शव्द होना।

अ० [अ० गर्क] १. डूवना। २. नष्ट होना।

अ०=गरजना।

गड़काना—स० [अनु० गड+क] गड-गड शव्द उत्पन्न करना। गडगडाना।

स०=गरकाना (गरक करना या डुवाना)।

गडक्क†—पु० [अ० गर्क] १ डूवने या डुवाने से होनेवाला शव्द। २ पानी की उतनी गहराई जितने मे आदमी डूव सके।

गड़गज—पु०=गरगज।

गड़गडा—पु० [गड गड शव्द से अनु०] लवी नली या सटकवाला वडा हुक्का।

गड़गड़ाना—अ० [हिं० गडगड] १ गडगड होना। जैसे—हुक्का गडगडाना। २ गरजना।

स० गड-गड शव्द उत्पन्न करना।

गड़गडाहट—स्त्री० [हिं० गडगडाना] गडगड रूप मे होने या गडगडाने का शव्द। जैसे—गाडी या वादलो की गडगडाहट।

गड़गड़ी—स्त्री० [हिं० गडगड] एक प्रकार की वडी डुग्गी या छोटा नगाडा।

गड़गूवड़—पु० [हिं० गूदड] चिथडा। लत्ता।

गड़च्चा†—पु० 'दे०' 'गच्चा'।

गड़दार—पु० [हिं० गँडासा+फा० दार] १ वह व्यक्ति जो मतवाले हाथी को सँभालने के लिए हाथ मे भाला लेकर उसके साथ साथ चलता है।* २ महावत।

गड़ना—अ० [स० गर्त्त, प्रा० गड्ड=गड्ढा] १ हिन्दी 'गडना' का अकर्मक रूप। २ जमीन के अन्दर खोदे हुए गड्ढे मे गाडा जाना। जैसे—तार का खभा गडना, कब्र मे मुरदा या लाश गडना।

मुहा०—गड़े मुरदे उखाड़ना=पुरानी या वीती हुई वातें फिर से उठाकर उनके सम्वन्ध मे झगडना या तर्क-वितर्क और वाद-विवाद करना।

३. ऊपर से किसी प्रकार का दवाव पडने पर नीचेवाले तल मे धँसना या प्रविष्ट होना।

मुहा०—(लज्जा के मारे) जमीन में गड़ना=लज्जा के कारण ऐसी स्थिति मे होना कि मुँह दिखाने या सिर उठाने का साहस न होता हो। जैसे—मैं तो उनकी वाते सुनकर लज्जा के मारे जमीन मे गड गया। ४ किसी चीज का कुछ अश जमीन के अन्दर इस प्रकार जमना या स्थापित होना कि वह चीज वहाँ स्थित हो जाय। जैसे—किले पर झडा गडना। ५ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप में, कही प्रविष्ट होकर स्थापित या स्थित होना। उदा०—उर मे माखन-चोर गडे। ६ किसी कडी और नुकीली चीज का शरीर के किसी अग मे कुछ छेद करते हुए उसके अन्दर धँसना या पहुँचना। चुभना। जैसे—पैर मे काँटा या हाथ मे सूई गडना। ७ किसी परकीय या वाह्य पदार्थ के शरीर मे आने या होने के कारण उसके दवाव से किसी अग मे पीडा या कष्ट होना। जैसे—भोजन न पचने के कारण पेट गड़ना, धूल का कण पडने के कारण

आँख गडना। ८ लाक्षणिक रूप में किसी अनुचित, अनुपयुक्त या अशोभन बात का मन मे कुछ कसक या खटक उत्पन्न करना। खटकना। जैसे—इतने सुन्दर चित्रों के बीच मे वह भद्दा चित्र हमे तो गड रहा था। ९ आँख या ध्यान के सम्बन्ध मे, किसी विशिष्ट उद्देश्य से किसी चीज या बात पर स्थित या स्थिर होना। जमना। जैसे—(क) मेरी आँखें उसके चेहरे पर गडी थी। (ख) सबका ध्यान उसकी बातो पर गडा था।

गड़पंख—पु० [स० गरुड+हि० पख] १ एक प्रकार की बडी चिडिया। २ लडकों का एक प्रकार का खेल, जिसमे वे किसी को तग करने के लिए पक्षी की तरह बनाकर बैठाते है।

गड़प—स्त्री० [अनु०] १ पानी, कीचड आदि मे किसी चीज के सहसा गिरने या डूबने का शब्द। २ किसी वस्तु को बिना चबाये निगल जाने की क्रिया या भाव।

पद—गड़प से=चटपट। तुरन्त।

गड़पना—स० [अनु० गडप] १. किसी वस्तु को बिना चबाये निगल जाना। जल्दी मे खा या निगल लेना। २ किसी की चीज लेकर पचा जाना। अनुचित रूप मे दबा बैठना। हडपना।

गडप्पा—पु० [हि० गाड] १ बडा गड्ढा। २ पशुओं को फँसाने के लिए बनाया हुआ गड्ढा। ३ बहुत बडे धोखे की जगह।

गड़बड़—वि० [अनु०] १ जिसमे ठीक क्रम, परम्परा, व्यवस्था आदि का अभाव हो। विशृखल। जैसे—तुम्हारा यह लेखा बहुत गडबड है। २. बिना किसी क्रम, नियम या व्यवस्था के अथवा खराब या भद्दी तरह से आपस मे मिला या मिलाया हुआ। जैसे—तुमने अलमारी की सब पुस्तकें गडबड कर दी। ३ बे-ठिकाने या बे-सिर-पैर का। अड-बड। ऊट-पटाँग। जैसे—तुम्हारी इस तरह की गडबड कार्रवाई यहाँ नही चलने पायेगी।

पु० [स्त्री० गडबडी, वि० गडबड़िया] १ ऐसी अवस्था जिसमे क्रम, नियमितता, व्यवस्था आदि का बहुत अधिक और खटकनेवाला अभाव हो। जैसे—तुम जहाँ पहुँचते हो, वही कुछ न कुछ गडबड करते हो। २ असावधानता, भूल, भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ कर देने की क्रिया या भाव। ३ उत्पात। उपद्रव।

गड़बड़-घोटाला—पु० दे० 'गडबड़ झाला'।

गड़बड-झाला†—पु० [अनु०] ऐसा काम, बात या स्थिति जिससे बहुत अधिक गडबडी हो।

गड़बड़ा†—पु०=गडप्पा।

गड़बड़ाध्याय—पु० दे० 'गडबडा-झाला'।

गडबड़ाना—अ० [हि० गडबड़] १. गडबडी, चक्कर या धोखे मे पडना। २ क्रम आदि लगाने के समय भूल करना। भ्रम मे पड़ना। ३ अस्त-व्यस्त या तितर-बितर होना।

स० १. गड़बडी, चक्कर या धोखे मे डालना। २ भ्रम मे डालना। ३ क्रम आदि के विचार से आगे-पीछे या इधर-उधर करना। ४ अस्त-व्यस्त या तितर-बितर करना।

गडबडिया—वि० [हि० गडबड] १. जो कोई काम ठीक-ठिकाने अथवा व्यवस्थित रूप से न करता हो। क्रम, व्यवस्था आदि बिगाड़नेवाला। गडबड़ करनेवाला। २ उपद्रव या दगा करनेवाला। अशाति फैलानेवाला।

गड़बड़ी—स्त्री०=गड़बड़।

गड़रातवा—पु० [देश० गड़रा=गाढा+हि० तवा] एक प्रकार का लोहा जो किसी समय मध्यभारत की खानो मे निकलता था।

गड़रिया—पु० दे० 'गडेरिया'।

गड़री—पु०=गडेरिया।

गड़रू—पु० दे० 'गुटरू'।

गड़-लवण—पु० [स० गर्तलवण या गडलवण] साँभर नमक।

गडवाँत—स्त्री० [हि० गाडी+बाट] कच्ची सडक पर बना हुआ गाडी के पहियो का चिह्न। लीक।

गड़वा†—पु० १ =गाडा। २ =गडुआ।

गड़वात—स्त्री० [हि० गाडना] १ कोई चीज जमीन मे गाडने की क्रिया। २. गड्ढा खोदने का काम। ३ जमीन पर पड़ा हुआ गाडियों के पहियो का निशान।

गड़वाना—स० [हि० गाडना का प्रे० रूप] गाडने का काम किसी से कराना। गाडने मे लगाना।

स० [हि० गडाना] गडाने का काम दूसरे से कराना।

गडहन—पु० [हि० जडहन का अनु० ?] एक प्रकार का धान। उदा०—गडहन, जडहन, बडहन मिला। —जायसी।

गड़हा—पुं० [स्त्री० अल्पा० गडही]=गड्ढा।

गड़ा—पु० [हि० गड] कटी हुई फसल के डठलो का ढेर। गाँज। खरही।

पु० [गण=समूह] ढेर। राशि।

पद—गड़ा-बँटाई। (देखें)

गड़ाकू—स्त्री० [स० गल] एक प्रकार की मछली।

गड़ाना—स० [हि० गडना] हि० गड़ना का स० रूप। चुभाना। कोई नुकीली तथा कडी चीज किसी के अदर धँसाना।

स० दे० 'गड़वाना'।

गडाप—पु० [अनु०] जल मे कोई भारी वस्तु गिरने या फेंकने से होने-वाला शब्द।

गड़ापा—पु०=गडप्पा।

गड़ा-बँटाई—स्त्री० [हि० गडा=गाँज+बँटाई] फसल की वह बँटाई जिसमे वह दाएँ जाने के पहले डठलो आदि के सहित बाँटी जाती है। काटकर रखी हुई फसल की बँटाई।

गड़ायत—वि० [हि० गडना] गड़ने, चुभने या धँसनेवाला।

गड़ारी—स्त्री० [स० गड=चिह्न] १ मडलाकार रेखा। गोल लकीर। वृत्त। २ घेरा। मडल। जैसे—गडारीदार पाजामा। ३ वृत्ताकार चिह्न या धारी। आड़ी-तिरछी रेखाएँ। जैसे-- रुपए की आँवठ पर की गड़ारियाँ। ४. वह छोटा गोल पहिया जो लोहे के छड के चारो ओर घूमता है और जिस पर मोटी रस्सी लगाकर नीचे से भारी चीजें उठाई या ऊपर खीची जाती है। घिरनी। (पुली) जैसे—कूएँ की गडारी। ५ उक्त के दोनो किनारो के बीच की दबी हुई जगह जिसमे रस्सी रखी जाती है। ६ एक प्रकार की घास।

गड़ारीदार—वि० [हि० गड़ारी+फा० दार] १ जिस पर गडारियाँ अर्थात् गडे या धारियाँ पडी हो। जैसे—गड़ारीदार रुपया, गड़ारीदार कसीदा। २ जिसमे छोटे-छोटे घेरे हो या पडते हो। जैसे—गडारी-दार पाजामा=चौडी मोहरी का पाजामा।

गड़ावन—पु० [स० गड-लवण] एक प्रकार का नमक।
गड़ासा—पु०=गँडासा।
गडि—पु० [स० √गड् (मुख का एक देश होना)+इन्] १ वच्चा। वछडा। २. जल्दी न चलनेवाला या मट्ठर वैल।
गडियार—वि०=गरियार।
गड़िवारा—पु० [स्त्री० गडिवारिन]=गाडीवान।
गड़ु—पु० [स० √गड्+उन्] १. रोग के रूप मे शरीर के किसी अग मे उठी हुई गाँठ। जैसे—कूवड़, वतौरी आदि। २ गंड-माला नामक रोग।
†वि० [हिं० गडना] गड़ने या चुभनेवाला।
†वि०=गुरु (भारी)।
गड़ुआ—पु० [स० गडु] [स्त्री० अल्पा० गडई वा गडुई] एक प्रकार का टोंटीदार लोटा।
गड़ुई—स्त्री० [हिं० गडुआ का स्त्री० अल्पा० रूप] पानी रखने का छोटा गडुआ। झारी।
गडुक—पु० [स० गडु√कै (प्रतीत होना)+क] टोंटीदार लोटा। गडुआ।
गडुर†—पु० दे० 'गडुल'।
†पु०=गरुड।
गड़ुल—पु०[स० गडु+ल] वह व्यक्ति जिसका कूवड निकला हो।
वि० कुवडा। कुब्ज।
गडुलना—पु०=गडोलना।
गड़ुवा†—पु० दे० 'गडुआ'।
गडेर—पु० [स० √गड्+एरक्] वादल। मेघ।
गडेरिया—पु० [स० गड्डरिक, प्रा० गड्डरिअ] [स्त्री० गडेरिन] १. भेडे पालनेवाली एक प्रसिद्ध जाति।
पद—गड़ेरिया पुराण=गडेरियों की-सी या गँवारू वात-चीत और कथा-कहानियाँ।
२ उक्त जाति का पुरुप। वह जो भेडें चराता या पालता हो। ३. रहस्य सप्रदाय मे, ज्ञान जो मनुष्य को परमात्मा की ओर ले जाता है।
गडेरुआ—पु० [स० गण्डोल=ग्रास] चौपायो का एक रोग।
गड़ैता—पु० [देश०] खैरे रग का एक प्रकार का लवा साँप जिसकी पीठ पर गडारियाँ होती हैं।
गड़ौना†—पु० [?] एक प्रकार का पान। गड़ौना।
†स०=गडाना (चुभाना)।
गडोल—पु० [स० √गड्+ओलच्] १. ग्रास। कौर। २. गुड।
गडोलना†—पु० [हिं० गाडी+ओला, ओलना (प्रत्य०)] वच्चो के खेलने की छोटी गाडी।
गडौना—पु० [हिं० गाड़ना] एक प्रकार का पान जिसे पकाने के लिए जमीन मे गाडकर रखा जाता है।
†पु० [हिं० गडना] गडने या चुभनेवाली चीज। जैसे—काँटा।
गड्ड—पु० [स० गण] [स्त्री० गड्डी] १ एक ही तरह या आकार-प्रकार की वहुत-सी वस्तुओ का एक के ऊपर एक रखा हुआ समूह। गज। थाक। जैसे—कागजो या पुस्तको का गड्ड। २. मूल्य, लागत आदि के विचार से एक साथ रहनेवाली छोटी-वडी या कई तरह की चीजो का समूह।
पद—गड्ड मे=छोटी-वडी, महँगी-सस्ती या सव तरह की चीजें एक साथ और एक भाव से लेने पर।
पु०=गड्ढा।
गड्डना†—स०=गाडना। उदा०—को गड्डै सोवेत्तिको, को विलसै करि भेव।—चन्दवरदाई।
गड्डवड्ड, गड्डमड्ड—वि० [हिं० गड्ड] १. अव्यवस्थित रूप से एक दूसरे मे मिलाया हुआ। २. अंड-वड या वेमेल।
गड्डर—पु० [स० √गड्+डर] [स्त्री० गड्डरी, वि० गड्डरिक] १ भेडा। मेष। २. भेड।
गड्डरिक—पु०[स० गड्डर+ठन्—इक] गडेरिया।
वि० भेड-सवधी। भेड का।
गड्डरि (लि) का—स्त्री०[स० गड्डरिक+टाप्] भेडो की पाँत।
गड्डलिका-प्रवाह—पु० [प० त०] भेड़िया-धसान। (दे०)
गड्डरी—पु०=गडेरिया।
गड्डा—पु० [हिं० गड्ड] १ किसी चीज की वडी गड्डी। गट्ठा। २ आतिशवाजी मे चरखियो आदि मे लगाया जानेवाला पटाखा जो आतिश-वाजी छूटने के समय वहुत जोर का शब्द करता है।
†पु० [देश०] वडी वैलगाडी।
†पु० =गड्ढा।
गड्डाम—वि०[अ० गॉड+डेम इट] [स्त्री० गड्डामी] १. पाजी। लुच्चा। २ नीच।
गड्डी—स्त्री० [हिं० गड्ड का स्त्री०] १. प्राय एक ही आकार तथा प्रकार की वस्तुओ का क्रमश ऊपर-तले रखा हुआ समूह। गज। जैसे—नये नोटो की गड्डी, ताश की गड्डी, पान की गड्डी आदि। २ ढेर। समूह। गाँज। जैसे—आमो की गड्डी।
गड्डुक, गड्डूक—पु० [स० गडुक, पृषो० सिद्धि] गडुआ (पात्र)।
गड्ढा—पु० [स० गर्त, प्रा० गड्ड] १ वह जमीन जो प्राकृतिक क्रिया या रूप से आस-पास या चारो ओर की जमीन से वहुत-कुछ गहरी या नीची हो। जमीन मे वह खाली स्थान जिसमे लम्वाई, चौड़ाई और गहराई हो। जैसे—मिट्टी धँसने के कारण जमीन मे जगह-जगह गड्ढे पड गये थे। २ उक्त प्रकार की वह जमीन जो खोदकर आस-पास की जमीन से गहरी और नीची की गई हो। जैसे—पानी जमा करने के लिए गड्ढा खोदना। ३. किसी तल मे वह अग जो आस-पास के तल से कुछ गहरा या नीचा हो। जैसे—आँखो मे या गालो पर गड्ढे पड़ना। ४. ऐसी अवस्था या स्थिति जो किसी दृष्टि से विपत्ति लाने, सकट मे डालने या हानि करने-वाली हो। जैसे—अभी क्या है! आगे चलकर इस काम मे और भी वडे-वड़े गड्ढे मिलेंगे।
मुहा०—(किसी के लिए) गड्ढा खोदना=ऐसी स्थिति उत्पन्न करना, जिसमे कोई विपत्ति मे पड़े या किसी को सकट का सामना करना पडे। जैसे—जो दूसरो के लिए गड्ढा खोदता है, वह आप गड्ढे मे पडता है।
गड्ढा पाटना या भरना=विपत्ति या संकट की जो स्थिति उत्पन्न हुई हो उसे दूर करके फिर पहलेवाली और ठीक स्थिति लाना।
५ लाक्षणिक रूप मे उदर। पेट। जैसे—किसी न किसी तरह सभी अपना गड्ढा तो भरना ही पडता है।
गड़ंत—स्त्री० [हिं० गडना] १. कोई चीज गढकर तैयार करने या वनाने

की क्रिया या भाव। गढ़न। (क्व॰) २. अपने मन से गढ़कर कही जानेवाली बात। कपोल-कल्पित बात। जैसे—समय पर इनकी अनोखी गढ़त ने हमें बचा लिया। ३. कुश्ती लड़ने के तीन प्रकारों में से एक, जिसमें लड़नेवाले पहलवान आपस में अच्छी तरह गुथ या गुँथ जाते हैं।
वि॰ (कथन या विचार) जो वास्तविक न हो, बल्कि यों ही अपने मन से गढ़कर तैयार किया या बनाया गया हो। कपोल-कल्पित। जैसे—इनकी सब बातें इसी तरह की गढ़त होती हैं।

गढ़—पुं॰ [सं॰ गड - खाई] [स्त्री॰ अल्पा॰ गढ़ी] १. ऐसा किला जिसके चारों ओर खन्दक या खाई खुदी हो। २. किला। कोट। दुर्ग।
मुहा॰—गढ़ जीतना या तोड़ना = (क) युद्ध में किसी किले पर अधिकार प्राप्त करना। (ख) कोई बहुत बड़ा या विकट काम सम्पन्न करना।
३. काठ का बड़ा सन्दूक जिसका उपयोग प्राचीन काल में युद्ध में होता था। ४ किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य अथवा व्यक्तियों का केन्द्र अथवा प्रसिद्ध और मुख्य स्थान। बहुत बड़ा अड्डा। जैसे—(क) यह मुहल्ला तो गुंडों या बदमाशों का गढ़ है। (ख) कलकत्ता और बम्बई पूँजीपतियों के गढ़ हैं।

गढ़कप्तान—पुं॰ [हिं॰ गढ़ + अं॰ कैप्टेन] गढ़ या किले का प्रधान अधिकारी।

गढ़त—स्त्री॰ १ =गढ़न। २ =गढ़त।

गढ़न—स्त्री॰ [हिं॰ गढ़ना] १ गढ़ने या गढ़े जाने की क्रिया, ढंग या भाव। २ बनावट। रचना।

गढ़ना—स॰ [सं॰ घटन, प्रा॰ घडन, पश्चिमी हिं॰ घड़ना] १. कोई नई चीज बनाने के लिए किसी स्थूल पदार्थ को काट, छील या तराशकर तैयार या दुरुस्त करना। कारीगरी से निर्मित करना या बनाना। जैसे—पत्थर की मूर्ति या चाँदी-सोने के गहने गढ़ना। २. किसी चीज को काट-छाँट या छील-तराशकर सुन्दर और सुडौल रूप में लाना। जैसे—दरवाजे का पल्ला गढ़ना। ३ परिश्रम या मनोयोग से अच्छी तरह और सुन्दर रूप में कोई काम करना। जैसे—गढ़-गढ़कर लिखना। ४. अपने मन से कोई कल्पित बात बनाकर अथवा कोई बात नमक मिर्च लगाकर सुन्दर रूप में उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—गढ़-गढ़कर बातें करना। ५ किसी को ठीक रास्ते पर लाने के लिए खूब मारना पीटना। जैसे—मैं किसी दिन तुम्हें गढ़कर ठीक करूँगा।
मुहा॰—(किसी की) हड्डी-पसली गढ़ना=खूब मारना या पीटना।

गढ़पति—पुं॰ [हिं॰ गढ़+पति] १. गढ़ का मालिक या स्वामी। राजा। २. गढ़ का प्रधान अधिकारी।

गढ़वाना—स॰ [हिं॰ गढ़ना का प्रे॰] गढ़ने का काम किसी से कराना।

गढ़वार—पुं॰=गढ़वाल।

गढ़वाल—पुं॰ [हिं॰ गढ़ + वाला] १. गढ़ का स्वामी अथवा प्रधान अधिकारी। २ उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग का एक पहाड़ी भू-खंड।

गढ़वै—पुं॰ [सं॰ गढ़पति] गढ़ का प्रधान अधिकारी या रक्षक। किलेदार। उदा॰—हठ दृढ़ गढ़ गढ़वै सुचलि लीजै सुरँग लगाय।—बिहारी।
वि॰ [हिं॰ गढ़+वर्त्ती] आश्रय पाने के लिए सुरक्षित स्थान में छिपा या पहुँचा हुआ। उदा॰—गरम भाजि गढ़वै भई, तिय-कुच अचल मवासु।—बिहारी।

गढ़ा—पुं॰ [स्त्री॰ गढ़ी] दे॰ 'गड्ढा'।

गढ़ाई—स्त्री॰ [हिं॰ गढ़ना] गढ़ने की क्रिया, ढंग, भाव या मजदूरी।

गढ़ाना—स॰ [हिं॰ गढ़ना का प्रे॰ रूप] गढ़ने का काम [illegible] से कराना। गढ़वाना।
अ॰ [हिं॰ गाड़ गड़ना] अप्रिय, [illegible] या भारी जान पड़ना। [illegible] जैसे—[illegible]

गढ़ार—पुं॰ [हिं॰ गढ़ना] गढ़ने या गढ़ाने का काम, [illegible] गढ़न।

गढ़िया—पुं॰ [हिं॰ गढ़ना] वह जो वस्तुएँ [illegible] देता हो।
स्त्री॰=छोटा गड्ढा।

गढ़ी—स्त्री॰ [हिं॰ गढ़] [illegible] छोटा गढ़ या किला। २. ऊँचाई पर बनी हुई बस्ती और मजबूत इमारत। ३. छोटा गड्ढा।

गढ़ीश*—पुं॰=गढ़पति।

गढ़ैया—पुं॰ गढ़िया (गढ़नेवाला)।
स्त्री॰ गड़ही (छोटा गड्ढा)।

गढ़ोई*—पुं॰=गढ़पति।

गण—पुं॰ [सं॰ √गण् (गिनना) + अच्] १. जत्था। झुंड। समूह। २ कोटि। वर्ग। श्रेणी। ३. किसी के अनुयायी [illegible] व्यक्तियों का वर्ग या समूह। अनुचरों या परिचारकों का वर्ग। ४ शिव के परिषद। प्रमथ। ५ भूत। प्रेत। ६. नौकर। सेवक। ७ ऐसे पदार्थों, प्राणियों, व्यक्तियों आदि का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो। कोटि। वर्ग। जैसे—किसी आचार्य के अनुयायियों या शिष्यों का गण। ८. ऐसे आचार्यों का शिष्य-समुदाय जो अपने [illegible] शिष्यों को शिक्षा देता हो। ९. प्राचीन सैनिक-विभाजन में तीन गुल्मों का वर्ग या समूह। १०. नक्षत्रों की तीन कोटियों में से एक। ११. छंदशास्त्र में तीन वर्णों का वर्ग या समूह। जैसे—भगण, जगण, तगण, नगण, यगण, मगण आदि। १२ व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें एक ही तरह से लोप, आगम, वर्ण-विकार आदि होते हों। १३. सोआ नामक गंध-द्रव्य। १४ दे॰ 'गणराज्य'।

गणक—वि॰ [सं॰ √गण्+णिच्+ण्वुल्—अक] गिनने या गिनती करनेवाला। गणना करनेवाला।
पुं॰ [स्त्री॰ गणकी] १. गणितज्ञ। २ ज्योतिषी।

गणक-केतु—पुं॰ [सं॰ मध्य॰ स॰] एक प्रकार का धूमकेतु।

गण-कर्णिका—स्त्री॰ [सं॰ गण-कर्ण, ब॰ स॰, कप्, टाप्, इत्व] इन्द्रायणी लता।

गणकार—वि॰ [सं॰ गण√कृ (करना)+अण्] १ गणों का संकलन करनेवाला। २. गणों में बाँटने अथवा वर्गीकरण करनेवाला।

गणकी—स्त्री॰ [सं॰ गणक+ङीप्] ज्योतिषी की पत्नी।

गण-तंत्र—पुं॰ [प॰ त॰] वह राज्य या राष्ट्र जिसकी सत्ता जन-साधारण (विशेषत. मतदाताओं या निर्वाचकों) में निहित होती है। (रिपब्लिक)
विशेष—गणतंत्र की सरकार जन-साधारण द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की बनी होती है जो निर्वाचकों या मतदाताओं के प्रति उत्तरदायी होती है।

गण-तंत्री (त्रिन्)—वि॰ [सं॰ गणतंत्र +इनि] १ गणतंत्र-संबंधी।

२. गणतंत्र के सिद्धान्तों को मानने तथा उनमे विश्वास रखनेवाला। (रिपब्लिकन) ३ (देश) जिसमे गणतत्र हो।

गणदीक्षी (क्षिन्)—पु० [स० गण √दीक्ष् (यज्ञ करना)+णिनि] १ वह पुरोहित जो बहुत-से लोगों की ओर से यज्ञ करता हो। २. वह जिसने गणेश या शिव की दीक्षा ग्रहण की हो।

गण-देवता—पु० [ष० त०] १ समूहचारी देवता। २. वे देवता जो गणो मे विभक्त हैं अथवा जिनके गण बने हैं। जैसे—आदित्य, जिनकी सख्या १२ है और इसी लिए जिनका स्वतन्त्र गण है। इसी प्रकार मरुत्, रुद्र आदि भी गण-देवता कहे जाते हैं।

गण-द्रव्य—पु० [ष० त०] वह सपत्ति जिस पर किसी वर्ग या समुदाय का सामूहिक अधिकार हो।

गण-धर—पु० [ष० त०] जैनो मे एक प्रकार के आचार्य।

गणन—पु० [स० √गण्+ल्युट्—अन] [वि० गणनीय, गणित, गण्य] १ गिनने या गिनती करने की क्रिया या भाव। गिनना। (काउंटिंग) २. गिनती।

गणना—स्त्री० [स०√गण्+णिच्+युच्—अन] १. गिनती करने की क्रिया या भाव। गणन। जैसे—आपकी गणना नगर के अच्छे वैद्यो मे होती है। २. किसी प्रदेश, भूभाग या राज्य के जीवो, मनुष्यो आदि की होनेवाली गिनती। (सेन्सस) जैसे—मनुष्य-गणना, पशु-गणना आदि। ३ गिनती। सख्या। ४. केशव के अनुसार एक अलकार जिसमे एक-एक सख्या लेकर उससे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थो का उल्लेख होता है। जैसे—गगा-मग, गणेश-दृग, ग्रीव-रेख, गुण-लेखि। पावक, काल, त्रिशूल, वलि, सध्या तीनि विसेखि। —केशव। (इसमे वही चीजें गिनाई गई है, जो तीन-तीन होती है।)

गण-नाथ—पु० [ष० त०] १. गणो का नाथ या स्वामी। २. गणेश। ३. शिव।

गण-नायक—पु० [ष० त०] १ गणेश। २. शिव।

गण-नायिका—स्त्री० [ष० त०] दुर्गा।

गणनीय—वि० [स०√गण्+अनीयर्] १ गिनने मे आने के योग्य। गिने जा सकने के लायक। २ जो गिनी जाने को हो। ३ प्रतिष्ठित या मान्य वर्ग मे आ सकने के योग्य।

गणप—पु० [स० गण √पा (रक्षा करना)+क] गणेश।

गण-पति—पु० [ष० त०] १ गण का स्वामी। २. गणेश। ३ शिव।

गण-पर्वत—पु० [ष० त०] शिव के गणो के रहने का पर्वत अर्थात् कैलास।

गण-पाठ—पु० [ष० त०] व्याकरण मे एक ही नियम के अधीन रहनेवाले शब्दो का वर्ग।

गण-पुंगव—पु० [स० त०] किसी गण या वर्ग का प्रधान व्यक्ति। मुखिया।

गण-पूर्त्ति—स्त्री० [ष० त०] किसी सभा, समिति आदि की बैठक के कार्य-सचालन के लिए आवश्यक मानी जानेवाली निर्धारित अल्पतम सदस्यो की उपस्थिति। इयत्ता। (कोरम)

गण-भोजन—पु० [ष० त०] बहुत-से लोगो को एक साथ बैठाकर कराया जानेवाला भोजन। महभोज।

गण-मुख्य—पु० [ष० त०] गण का प्रधान व्यक्ति। मुखिया।

गण-राज्य—पु० [ष० त०] १. प्राचीन भारत मे एक प्रकार के राज्य, जिनमे किसी राजा का नहीं, बल्कि प्रजा के चुने हुए लोगो का शासन होता था। २. दे० 'गण-तन्त्र'।

गण-संख्या—स्त्री० [ष० त०] गणना या गिनती की सूचक संख्या। (कार्डिनल नम्बर) जैसे—एक, दो, तीन, चार आदि।

गणहास—पु० [स० गण√हस् (हँसना)+णिच्+ अण्] एक प्रकार का गध-द्रव्य।

गणाग्रणी—पु० [स० गण-अग्रणी, ष० त०] १ गण का अगुआ या मुखिया। २ गणेश।

गणाचल—पु० [स० गण-अचल, ष० त०] कैलास, जहाँ शिव के गण रहते हैं। गण-पर्वत।

गणाधिप—पु० [स० गण-अधिप, ष० त०] १. गण या गणो का अधिपति या स्वामी। २ गणेश। ३ जैनी साधुओं का प्रधान या मुखिया।

गणाध्यक्ष—पु० [स० गण-अध्यक्ष, ष० त] १ गणो का अध्यक्ष या स्वामी। २ गणेश। ३ शिव।

गणान्न—पु० [स० गण-अन्न, ष० त०] बहुत-से लोगो के लिए एक साथ बनाया जानेवाला भोजन।

गणि—स्त्री० [स० √गण्√इन्] गणना।

गणिका—स्त्री० [स० गण+ठन्—इक, टाप्] १ रडी। वेश्या। २. साहित्य मे, वह नायिका जो केवल धन के लोभ मे लोगो का मनोरजन करती हो। वेश्या नायिका। ३ पुराणानुसार जीवती नाम की एक परम दुराचारिणी वेश्या जो केवल अपने तोते को राम-राम पढाते समय मरने के कारण मोक्ष की अधिकारिणी हुई थी। ४. रहस्य-संप्रदाय मे, माया जो मनुष्यो को अपने जाल मे फँसाये रखती है। ५ गनियारी नामक वृक्ष।

गणि-कारिका—स्त्री० [ष० त०] गनियार का पेड।

गणिकारी—स्त्री० [सं० गणि√कृ +अण्—ङीप्] गनियार का पेड़।

गणित—पु० [सं०√गण्+क्त] वह शास्त्र जिनमे परिमाण, मात्रा, सख्या आदि निश्चित करने की रीतियो का विवेचन होता है। हिसाव। पाटीगणित, वीजगणित और रेखागणित ये तीनो इसी के प्रकार या भेद है। (मैथेमेटिक्स)

गणितज्ञ—वि० [स० गणित√ज्ञा (जानना)+क] १ गणित शास्त्र का ज्ञाता या पडित। २. ज्योतिषी।

गणेरु—पु० [सं० √गण्+एरु] कर्णिकार वृक्ष।
स्त्री० १. वेश्या। २ हथिनी।

गणेरुका—स्त्री० [स० गणेरु√कै (शब्द करना)+क—टाप्] १ वेश्या। २ कुटनी। ३ हथिनी।

गणेश—वि० [स० गण-ईश, ष० त०] गणो का मालिक या स्वामी। गणो मे प्रधान।
पु० हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो विद्या के अधिष्ठाता और विघ्नों के विनायक माने गये हैं। गणपति। विनायक।
विशेष—इनका मुँह और सिर बिल्कुल हाथी का माना गया है, इसी लिए इन्हें गजानन भी कहते हैं।

गणेश-कुसुम—पु० [उपमि० स०] लाल कनेर।

गणेश-क्रिया—स्त्री० [ष० त०] हठ-योग की एक क्रिया, जिसमें गुदा के अन्दर का मल साफ करके निकाला जाता है।

की सीमा। अंतिम उपाय। ७ एक-मात्र सहारा या अवलंब। उदा०—जाके गति है हनुमान की।—तुलसी। ८. चेष्टा। प्रयत्न। ९. ढग। रीति। १० मृत्यु के उपरान्त जीवात्मा का दूसरे शरीर मे होनेवाला गमन जैसे—धर्मात्माओं को उत्तम गति प्राप्त होना। ११. मुक्ति। मोक्ष। १२. दे० 'गत' (नृत्य और सगीत की)।

गतिक—पु० [स० गति+कन्] १ चलने की क्रिया या भाव। चाल। २ मार्ग। रास्ता। ३. आश्रय।
वि० १ गति-संबंधी। २ भौतिक गति या चाल से सबध रखनेवाला। (डायनामिक)

गति-भंग—पु० [प० त०] कविता-पाठ, सगीत आदि की गति या लय का बीच मे भग या विकृत होना।

गति-भेद—पु० [प० त०]=गतिभंग।

गति-मडल—पु० [प० त०] नृत्य मे शरीर के विभिन्न अगो की एक प्रकार की मुद्रा।

गतिमान् (मत्)—वि० [स० गति+मतुप्] १. जिसमे गति हो। जो चल अथवा हिल-डुल रहा हो। चलता हुआ। २. जो अपना कार्य ठीक प्रकार से निरतर कर रहा हो।

गतिया†—पु० [हिं० गत+इया (प्रत्य०)] सगीत मे गत या लय ठीक रखनेवाला, अर्थात् ढोलक, तबला या मृदग बजानेवाला।

गति-रोध—पु०[स० प० त०] १ बीच मे कठिनाई या बाधा आ पडने के कारण किसी चलते हुए काम या बात का रुक जाना। २ किसी प्रकार के झगडे या बात-चीत के समय बीच मे उत्पन्न होनेवाली ऐसी स्थिति जिसमे दोनो पक्ष अपनी-अपनी बातो पर अड़ जाते है और समझौते का कोई रास्ता निकलता हुआ दिखाई नही देता। (डेडलॉक)

गति-विज्ञान—पु० [प० त०] विज्ञान का वह अंग जिसमे द्रव्यो की गति और उन्हे परिचालित करनेवाली शक्तियो का विवेचन होता है। (डायनामिक्स)

गति-विद्या—स्त्री० [प० त०]=गति विज्ञान।

गति-विधि—स्त्री०[प० त०] आचरण-व्यवहार आदि करने अथवा रहने-सहने का रग-ढग। जैसे—सेना की गति-विधि का निरीक्षण करना।

गति-शास्त्र—पु० [प० त०] =गति-विज्ञान।

गतिशील—वि० [व० स०] १ चलनेवाला या चलता हुआ। २ आगे की ओर बढनेवाला। उन्नतिशील। ३ जो स्वय चलकर दूसरो को भी चलाता हो।

गति-हीन—वि० [प० त०] १. जिसमे गति न हो। २. ठहरा या रुका हुआ। ३ जिसके लिए कोई गति या उपाय न हो। असहाय और दीन।

गत्त†—स्त्री०=गति।

गत्ता—पु० [स० गात्रक] [स्त्री० गत्ती] कागज के कई तावो या परतो को एक दूसरी पर चिपका कर बनाई हुई दफ्ती।

गत्तालखाता—पु० [स० गर्त्त, प्रा० गत्त+हिं० खाता] १. डूबी हुई या गई बीती रकम का खाता या लेखा। बट्टाखाता। २. वह अवस्था जिसमे कोई चीज नष्ट या समाप्त मान ली जाती है और उसके सबध मे आदमी निराश हो जाता है।

गत्य—स्त्री० दे० 'गथ' (पूँजी)।

गत्यवरोध—पु० [स० गति-अवरोध, प० त०]=गतिरोध।

गत्वर—वि० [स०√गम्+क्वरप्, मलोप, तुक्] [स्त्री० गत्वरी] १. गति मे रहने या होनेवाला। चलनेवाला या चलता हुआ। गमनशील। २ नष्ट हो जानेवाला। नश्वर।

गत्वरा—स्त्री० [स० गत्वर+टाप्] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव।

गथ—पु० [सं० ग्रन्थ, प्रा० गत्थ] १. पास का धन। जमा। २ किसी कार्य या व्यापार मे लगाया जानेवाला धन। पूँजी। ३. धन-सम्पत्ति। माल। ४. गरोह। झुड। ५ समूह।

गथना—स० [स० ग्रथन] १ एक साथ मिलाना। जोडना। २ बातें बनाना।
अ० १ एक साथ मिलाया जाना। मिलकर इकट्ठा या एक होना। २ घुसना। पैठना। ३ दे० 'गुथना'।

गद—पु०[स० √गद्(बोलना)+अच्] १ एक प्रकार का विष या जहर। २ बीमारी। रोग। ३ श्रीकृष्ण के छोटे भाई का नाम। ४. राम की सेना का एक बन्दर। ५ एक असुर का नाम।
पु० [अनु०] किसी मुलायम वस्तु पर किसी कडी वस्तु के आघात से होनेवाला शब्द।

गदका—पु०=गतका।

गदकारा—वि० [अनु० गद+कार (प्रत्य०)] [स्त्री० गदकारी] १. गुदगुदा और मुलायम। २ मासल।

गदकारी—स्त्री० [फा०] चित्रकला मे चित्र अकित करने से पहले स्थान-स्थान पर रग भरने की क्रिया या भाव। रगामेजी।

गदगद—वि०=गद्गद्।

गदगदा—पु०[देश०] रत्ती नामक पौधा।

गदचाम—पु० [स० गदचर्म] हाथी का एक रोग।

गदन—पु० [स० √गद्+ल्युट्—अन्] १ कथन। २. वर्णन।

गदना—स० [स० गदन] १. कहना। बोलना। २. वर्णन करना।

गदबदा—वि० [अनु०] भरे हुए अथवा दोहरे शरीरवाला। उदा०—नगेतन, गदबदे साँवले, सहज छबीले।—पत।

गदम—पु० [देश०] वह लकडी जो नाव को एक बल पर खडी करने के लिए उसके पेंदे के नीचे लगाई जाती है। आड। थाम।

गदर—पु० [अ०] शासन को उलटने के लिए होनेवाला सैनिक विद्रोह।
पु० [हिं० गदराना] गदराने की क्रिया या भाव।
वि० यथेष्ट मात्रा मे सब जगह मिलनेवाला।
पु० [हिं० गदकारा] पुष्टि मार्ग के अनुसार एक प्रकार की रूईदार बगलबदी जो जाडे मे ठाकुर जी को पहनाते हैं।

गदरा—वि०=गद्दर।

गदराना—अ०[अनु०] १. जवानी मे शरीर के अगो का भरकर सुन्दर और सुडौल होना। जैसे—गदराया हुआ बदन। २. फलो आदि का पकने पर होना। ३ आँख का कीचड से भरना। ४ बहुत या अधिक मात्रा मे होना या पाया जाना।

गदला—वि०=गँदला।

गदलाना—स० [हिं० गदला] गँदला करना।
अ० गँदला होना।

गदह—पु०=गधा।

गदह पचीसी—स्त्री० दे० 'गधा-पचीसी'।

गदहरा—पुं० १. =गधा। २. =गद्दा।

गदहला—पुं०=गदहिला।

गदहलोट—स्त्री० [हिं० गदहा=गधा+लोटना] १. गधों की तरह जमीन पर इधर-उधर लोटने की क्रिया या भाव। २. कुश्ती का एक दाँव या पेंच। ३. दे० 'गधा लोटन'।

गदह हेंचू—पुं० दे० 'गधा हेंचू'।

गदहा—वि० [सं० गद√हा (त्याग)+क्विप्] गद अर्थात् रोग हरने-वाला।

पुं० चिकित्सक। वैद्य।

पुं० दे० 'गधा'।

गदहिया—स्त्री०=गधी।

गदहिला—पुं० [सं० गर्दभी, पा० गद्रभी प्रा० गद्दही] [स्त्री० गदहिली] १. वह गधा जिस पर ईंट, मिट्टी आदि ढोई जाती हैं। २ एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

गदांतक—पुं० [सं० गद-अंतक, ष० त०] अश्विनीकुमार।

गदांबर—पुं० [सं० गद-अंबर, मध्य० स०] मेघ।

गदा—स्त्री० [सं० गद+टाप्] १. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र जिसमें लंबे डंडे के आगे मोटा गोला लगा होता था। २ उक्त आकार की वह चीज जो कसरत या व्यायाम करने के लिए हाथों से उठाकर शरीर के इधर-उधर घुमाई जाती है। लोट।

पुं० [फा०] १ भिक्षुक। भिखमंगा। २. फकीर।

गदाई—वि० [फा० गदा=फकीर+ई० (प्रत्य)] १. तुच्छ। नीच। क्षुद्र। २. रद्दी। वाहियात।

स्त्री० भिखमंगा होने की अवस्था या भाव। भिखमंगापन।

गदाका—पुं० [अनु०] किसी को उठाकर जमीन पर इस प्रकार पटकने की क्रिया जिसमें गद शब्द हो।

वि० गदराये हुए सुडौल शरीरवाला।

गदागद—पुं० [सं० गद्-आ√गम् (जाना)+ड, गदाग√दंप् (शोध करना)+क] अश्विनी कुमार।

अ०य० [अनु०] १ गद गद शब्द करते हुए। २ एक के बाद एक। लगातार। (मुख्यत आघात या प्रहार के लिए) जैसे— गदागद घूँसे लगना।

गदाग्रज—पुं० [सं० गद-अग्रज, ष० त०] गद के बड़े भाई, श्रीकृष्ण।

गदाग्रणी—पुं० [सं० गद-अग्रणी, स० त०] क्षय या यक्ष्मा नामक रोग।

गदाधर—वि०[सं० गदा√धृ (धारण करना)+अच्] गदा धारण करने-वाला।

पुं० विष्णु जिनके हाथ में गदा रहती है।

गदाराति—पुं० [सं० गद-अराति, ष० त०] औषध। दवा।

गदाला—पुं० [हिं० गद्दा] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला गद्दा।

गदावारण—पुं० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे रहते थे।

गदि—स्त्री० [सं०√गद् (बोलना)+इन्] उक्ति। कथन।

गदित—भू०कृ० [सं० गद्+क्त] कहा हुआ। उक्त। कथित।

गदी (दिन्)—वि० [सं० गद+इनि][स्त्री० गदिनी] १. रोगी। बीमार। २ [गदा+इनि] जो गदा लिये हुए हो। गदाधारी।

गदेरा—पुं०=गदेला।

गदेला—पुं० [हिं० गद्दा] [स्त्री० अल्पा० गदेली] १. रूई आदि से भरा हुआ बहुत मोटा गद्दा। २. टाट का बना मोटा गद्दा जो हाथी की पीठ पर बिछाया जाता है।

पुं० [?] छोटा लड़का। बालक।

गदेली—स्त्री० =गदोरी (हथेली)।

गदोरी†—स्त्री० [हिं० गद्दी] हथेली।

गद्गद—वि० [सं० √गद्गद् (स्पष्ट न बोलना)+अच्] १. बहुत अधिक प्रेम, श्रद्धा, हर्ष आदि के आवेग से इतना भरा हुआ कि अपने आपको भूल जाय और स्पष्ट बोल न सके। २ (कंठ या वाणी) जो उक्त आवेग के कारण अवरुद्ध हो। ३. बहुत अधिक प्रसन्न या हर्षित।

पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी शब्दों का स्पष्ट उच्चारण नहीं कर सकता अथवा एक एक अक्षर का रुक-रुककर और कई बार में उच्चारण करता है। हकलाने का रोग।

गद्गदिका—स्त्री० [सं० गद्गद+कन्—टाप्, इत्व] हकलाने की क्रिया, भाव या रोग। हकलाहट।

गद्द—पुं० [अनु०] १. मुलायम चीज या जगह पर भारी चीज के गिरने से होनेवाला शब्द।

मुहा०—(किसी को) गद्द मारना=टोटका या टोना करके किसी पर ऐसा आघात करना कि वह वश में हो जाय।

२ अधिक भोजन करने अथवा गरिष्ठ वस्तुएँ खाने पर होनेवाला पेट का भारीपन।

मुहा०—(किसी चीज का) गद्द करना=कोई ऐसी वस्तु खा लेना जो जल्दी पच न सकती हो और जिसके फलस्वरूप पेट भारी हो जाता हो।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

गद्दम—पुं० [देश०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

गद्दर—वि० [अनु० गद्द से] १. जो अच्छी तरह पका न हो। अधपका। २ गदराया हुआ।

पुं० १ =गदा। २ =गद्दार।

गद्दा—पुं० [हिं० गद्द से अनु०] १ बिछाने की मोटी रूईदार भारी तोशक। २. वह बिछावन जो हाथी की पीठ पर हौदा कसने से पहले रखकर बाँधा जाता है। ३. घास, रुई आदि मुलायम वस्तुओं का बोझ। ४. किसी मुलायम चीज की मार या ठोकर।

गद्दार—वि० [अ०] जो अपने धर्म, राज्य, शासन, संस्था आदि के विरुद्ध होकर उसे हानि पहुँचाता अथवा पहुँचाना चाहता हो। गदर करनेवाला। बागी। विद्रोही।

गद्दारी—स्त्री० [अ०] गद्दार होने की अवस्था या भाव।

गद्दी—स्त्री० [हिं० गद्दा का स्त्री० अल्पा० रूप] १. वह छोटा गद्दा जो ऊँट, घोड़े आदि की पीठ पर जीन के नीचे बिछाया जाता है। २ वह छोटा गद्दा जिस पर बैठते या लेटते हैं। ३. वह स्थान जहाँ पर गद्दी आदि बिछाकर बैठकर कोई काम या व्यवसाय किया जाय। जैसे—कोठीवाल या महाजन की गद्दी। ४. किसी स्थान पर बैठने अथवा किसी पद को सुशोभित करने की अवस्था या भाव। जैसे—(क) राजा की गद्दी। (ख) बाप-दादा की गद्दी। ५ किसी राजवंश की पीढ़ी या

आचार्य की शिष्य-परम्परा। जैसे—(क) चार गद्दी के बाद इस वश मे कोई न रहेगा। (ख) यह अमुक गुरु की चौथी गद्दी है। ६. कपडे आदि की कई परतो की वह मुलायम तह जो किसी चीज के ऊपर या नीचे उसे आघात, झटके आदि से बचाने के लिए रखी जाती है। ७. हाथ या पैर की हथेली।

मुहा०—गद्दी लगाना=घोडे को हथेली या कुहनी से मलना।

८. एक प्रकार का मिट्टी का गोल वर्तन जिसमे छीपी रग रखकर छपाई का काम करते हैं।

पु० [स० गव्दिक] १. चंबा के पास का एक पहाडी प्रदेश। २. उक्त प्रदेश के निवासी जो प्राय. भेड-बकरियाँ पालकर जीविका चलाते है। ३ गडेरिया।

गद्दीनशीन—वि० [हिं० गद्दी+फा० नशीन] [भाव० गद्दीनशीनी] १ जो राजगद्दी पर बैठा हो। २. जो किसी की गद्दी पर आकर बैठा हो अर्थात् उत्तराधिकारी।

गद्य—पु० [स०√गद् (बोलना)+यत्] १ बोल चाल की भाषा मे लिखने का वह लेखन प्रकार जिसमे अलकार, मात्रा, वर्ण, लय आदि के बन्धन का विचार नही होता। वचनिका। 'पद्य' का विपर्याय। (प्रोज) २ ऐसी सीधी-सादी बोली या भाषा जिसमे किसी प्रकार की बनावट न हो।

गद्य-काव्य—पु० [कर्म० स०] वह गद्य जिसमे कुछ भाव या भावनाएँ ऐसी कवित्वपूर्ण सुन्दरता से व्यक्त की गई हो कि उसमे काव्य की-सी सवेदनशीलता तथा सरसता आ जाय।

गद्याणक—पु० [स० गद्याण+कन्] कलिंग देश का एक प्राचीन मान।

गद्यात्मक—वि० [स० गद्य-आत्मन्, ब० स०, कप्] [स्त्री० गद्यात्मिका] १. गद्य के रूप मे लिखा हुआ। २ गद्य-सबधी।

गधा—पु० [स० गर्दभ, प्रा० गद्दह] [स्त्री० गधी] १ घोडे की तरह का पर उससे बहुत छोटा एक प्रसिद्ध चौपाया जिस पर कुम्हार, धोबी आदि बोझ ढोते है। गदहा।

मुहा०—(किसी स्थान पर) गधे से हल चलवाना=पूरी तरह से उजाड़ना या नष्ट करना। **(किसी को) गधे पर चढ़ाना**=बहुत अधिक अपमानित करना। बदनाम और बेइज्जत करना।

२. गधे की तरह निरा बुद्धिहीन। बहुत बडा बेवकूफ या मूर्ख।

गधागधी—स्त्री० दे० 'गधाहेंचू'।

गधापचीसी—[हिं० गदहा+पचीसी] १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमे प्राय. कुछ विशेष ज्ञान नही होता और जिसमे ऊल-जलूल काम किये जाते है।

गधापन—पु० [हिं० गदहा+पन (प्रत्य०)] १. गधे होने की अवस्था या भाव। २. मूर्खता। बेवकूफी।

गधालोटन—पु० [हिं० गधा+लोटना] १. थकावट मिटाने के लिए या मस्त होकर गधे का जमीन पर इधर-उधर लोटना। २ वह स्थान जहाँ इस प्रकार गधा लोटा हो। (कहते है कि ऐसे स्थान पर पैर रखने से आदमी मे थकावट आ जाती है।)

गधा हेंचू—पु० [हिं० गधा+हेचू (गधे की बोली)] लडको का एक प्रकार का खेल।

गधीला—पु० [देश०] [स्त्री० गधीली] एक जगली जाति।

गधूल—पुं० [?] एक प्रकार का फूल।

गधेरा—पुं० [हिं० गधा+एरा] गधे का मालिक। जैसे—कुम्हार, धोबी आदि। उदा०—उसी समय गली की मोड से गधेरा आया।—वृंदावन लाल।

गन*—पु०=गण।

स्त्री० [अ०] बन्दूक।

गनक*—पु० [स० गणक] ज्योतिषी।

गनकेरुआ—पु० [स० गणकर्णिका] एक प्रकार की घास।

गनगनाना—अ० [अनु० गनगन] १. (शरीर) सरदी के कारण थरथर काँपना। २ शरीर के रोओ का सरदी आदि के कारण खडे होना। रोमाच होना।

गनगौर—स्त्री० [स० गण-गौरी] राजस्थान का एक पर्व जो चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक होता है और जिसमे कन्याएँ तथा स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।

गनती†—स्त्री०=गिनती।

गनना—स्त्री०=गणना।

स०=गिनना।

गननाना—अ० [अनु० गनगन] १ किसी स्थान का गनगन शब्द से भर जाना। गूँजना। २ चक्कर लगाना। घूमना।

स० कोई स्थान गनगन शब्द से पूर्ण या युक्त करना।

गननायक—पु० =गणनायक।

गनप—पु० १ =गणप। २ =गणपति।

गनपति—पु०=गणपति।

गनराय—पु० [स० गणराज] गणेश।

गनवर—स्त्री० [?] नरकट नामक घास।

गनाना†—अ० [हिं० गिनना] १ गिना जाना। २ गिनती मे आना।

स०=गिनाना।

गनाल—स्त्री० [स०धननाल] पुरानी चाल की एक प्रकार की बड़ी तोप।

गनिक—पु० [स० गणक] ज्योतिषी। उदा०—गनिक होइ जब देखैं; कहै न भेद।—जायसी।

गनिका†—स्त्री०=गणिका।

गनिबी*—अ० [हिं० गिनना का भविष्यत् कालिक ब्रज रूप] गिना जायगा। गिनती होगी। उदा०—मूढनि मे गनिबी कि तू हूठ्यो दै इठिलाहिं।—बिहारी।

गनियारी—स्त्री० [स० गणिकारी] रूमी की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।

गनी—वि० [अ० गनी] १. धनवान्। सपन्न। २ बहुत बडा दाता। उदार।

*स्त्री० [हिं० गिनना] गिनती। उदा०—इद्र समान है जाके सेवक बर बापुरे की कहा गनी।—सूर।

स्त्री० [अ०] टाट जिसके बोरे बनते है।

गनीम—पु० [अ०] १ दूसरो का माल लूटनेवाला व्यक्ति। लुटेरा। डाकू। २ दुश्मन। वैरी। शत्रु।

गनीमत—स्त्री० [अ०] १ डाके या लूट का माल। २. मुफ्त मे या बिना प्रयास मिलनेवाला धन। ३. बिलकुल प्रतिकूल या विपरीत स्थिति मे भी होनेवाली कोई थोडी-सी सतोषजनक या समाधानकारक बात। जैसे—वह सही सलामत घर लौट आया यही गनीमत है।

मुहा०—किसी का दम गनीमत होना=किसी का अस्तित्व विपरीत परिस्थितियों में भी किसी प्रकार समाधानकारक होना। जैसे—बाबू साहब का भी दम गनीमत।

गनेल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

गनेश†—पु०=गणेश।

†वि० मगलमय। शुभ। उदा०—भा यह समय गनेसू।—तुलसी।

गनौरी—स्त्री० [स० गुन्द्रा] नागरमोथा।

गन्ना—पु०[स० काण्ड] सरकडे की जाति का एक प्रसिद्ध गाँठदार लवा पौधा जिसके मीठे रस से गुड, चीनी आदि बनाई जाती है। ईख। ऊख।

गन्नी—पुं० [अ० गनी] १. पटसन, पाट आदि का बना हुआ टाट जिसके बोरे आदि बनते है। २. सन का बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।

गप—स्त्री० [स० गल्प०, प्रा० गप्प बँ० गप्प, गुज० मरा० और प० गप] [वि० गप्पी] १ केवल मन बहलाने के लिए की जानेवाली इधर-उधर की बातें। मनोविनोद के लिए की जानेवाली व्यर्थ की बातचीत।

मुहा०—गप लड़ाना=आपस मे इधर-उधर और प्राय. व्यर्थ की बाते करना।

पद—गप-शप=इधर-उधर की बातें। बहुत ही साधारण कोटि का या व्यर्थ का वार्त्तालाप।

२ बिलकुल कपोल-कल्पित और झूठी बात, अथवा ऐसी बात जिसका कुछ भी ठीक-ठिकाना न हो।

मुहा०—गप उड़ाना=झूठी और व्यर्थ की बात का लोगो मे प्रचार या प्रसार करना।

३. ऐसी अतिरंजित बात जिसमे सत्य का अश बहुत ही कम या नाम मात्र का हो।

क्रि० प्र०—हाँकना।

४. अपना बडप्पन प्रकट करने के लिए कही जानेवाली बहुत-कुछ अतिरंजित या मिथ्या भी बात। डीग।

क्रि० प्र०—मारना।

पु० [अनु०] १. कोई चीज झट से खाने अथवा निगलने की क्रिया अथवा इस क्रिया से होनेवाला शब्द। जैसे—वह गप से लड्डू निगल गया। २. खाने की क्रिया या भाव। जैसे—मीठा-मीठा गप, कड़ुआ-कडआ थू। ३ कोई नुकीली चीज किसी मुलायम वस्तु मे जल्दी या झटकें से धँसाने की क्रिया अथवा इस क्रिया से उत्पन्न होनेवाला शब्द। जैसे—डाक्टर ने गप से बाँह मे सूई चुभा दी।

गपकना—स० [अनु० गप+हि० करना] १. जल्दी-जल्दी खा या निगल जाना। २. हजम करना। हडपना।

गपछैया—स्त्री० [?] रेगमाही।

गपड़ चौथ—पु० [हि० गपोड़=बातचीत+चौथ] आपस मे होनेवाली इधर-उधर की या व्यर्थ की बातचीत।

वि० अड-बड। ऊट-पटाग।

गपना—स० [हि० गप] १. मन बहलाने अथवा समय बिताने के लिए इधर-उधर की बातचीत करना। गप करना। २. झूठमूठ की अथवा मन-गढ़त बातें कहना अथवा ऐसी बातो का प्रचार करना।

गपशप—पु० [हि० गप+शप अनु०] इधर-उधर की अथवा व्यर्थ की बातें।

गपागप—क्रि० वि० [हि० गप=निगलने का शब्द] १ गप गप शब्द करते हुए। जैसे—वह सारी मिठाई गपागप खा गया। २ बहुत जल्दी-जल्दी या चटपट। ३. बहुत अधिक मात्रा या मान मे।

गपिया—वि० [हि० गप]=गप्पी।

गपिहा†—वि०=गप्पी।

गपोड़—पु०=गपोडा।

वि०=गप्पी।

गपोड़ा—पु० [हि० गप+ओडा (प्रत्य०)] १. बहुत अधिक बढा-चढाकर कही हुई बात। २. बिलकुल कपोल-कल्पित और मिथ्या बात। बहुत बडी गप।

गपोड़िया—वि० [हि० गपोडा] बहुत बढा-चढाकर मन-गढत बातें कहनेवाला। गप्पी।

गपोड़ेबाज—वि०=गप्पी।

गपोड़ेबाजी—स्त्री० [हि० गपोडा+फा० बाजी] १ झूठ-मूठ की या व्यर्थ की बातो मे समय बिताने की क्रिया या भाव। २. बकवाद।

गप्प—स्त्री०=गप।

गप्पी—वि० [हि० गप] बहुत अधिक गप हाँकने और व्यर्थ की कपोल-कल्पित बातें कहनेवाला। गपोडिया।

गप्फा—पु० [अनु० गप] १. बहुत बडा कौर या ग्रास। २ सहज मे होनेवाला बहुत बडा आर्थिक लाभ।

गफ—वि० [स० ग्रप्स=गुच्छा] (कपडा) जिसकी बुनावट बहुत ठस हो।

गफलत—स्त्री० [अ०] १ प्रमाद के कारण होनेवाली असावधानी या बेपरवाही। २. अचेत या बेसुध होने की अवस्था या भाव।

गफिलाई—स्त्री०=गफलत।

गफूर—वि० [अ०] १. क्षमा या माफ करनेवाला। दयालु।

गफ्फार—वि० [अ०] बहुत बडा उदार तथा दयालु (ईश्वर या व्यक्ति)।

गबड़ी†—स्त्री०=कबड्डी।

गबड्डी†—स्त्री० =कबड्डी।

गबदी—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड।

गबद्द—वि० [हि० गावदी] जड़। मूर्ख।

गबन—पु० [अ०] किसी अधिकारी अथवा सेवक द्वारा शासन अथवा स्वामी का धन अपने काम मे लाने के लिए अनुचित रूप से तथा चोरी से निकाल या ले लेना।

गबर—पु० [अ० स्केपर] जहाज मे सब पालो के ऊपर रहनेवाला पाल। (लश०)

गबरगंड—वि०[हि० गोबर+स० गंड=मूर्ख] बहुत बडा मूर्ख। जड।

गबरहा—वि० दे० 'गोबरहा'।

गबरा†—वि०=गब्बर (घमडी)।

गबरू—वि० [फा० खूबरू] १. जवान। युवा। २. भोला-भाला।

पु० दूल्हा। पति।

गबरून—पु० [फा० गम्बरून] एक प्रकार का मोटा धारीदार कपड़ा।

गबीना†—पुं० [देश०] कतीरा (गोद)।

गबेजा—पु० दे० 'गवेजा'।

गब्बर—वि० [स० गर्व, पा० गब्ब] १ अभिमानी। घमडी। २ ढीठ। हठी। ३. अड़ियल। ४. कीमती। बहुमूल्य। ५. धनी। मालदार।

गव्बी†—वि०=गब्बर।
गब्बू†—पु०=गबरू।
गब्र—पुं० [फा०] पारस देश का अग्निपूजक मूल निवासी।
गभ—पु० [स०=भग पृषो० सिद्धि] भग।
गभरू—पु०=गबरू।
गभस्ति—पु० [स०√गम् (जाना)+ड, ग√भस् (प्रकाशित करना)+क्तिच्] १ किरण। रश्मि। २. सूर्य। ३. बाँह। बाहु।
स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा।
गभस्ति-पाणि—पु० [ब० स०] सूर्य।
गभस्तिमान्—पु० [स० गभस्ति-मतुप्] १. पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। २ एक पाताल का नाम।
गभस्ति-हस्त—पु० [ब० स०] सूर्य।
गभार†—वि० [स० गभीर] गहरा।
गभीर—वि०[स० गम् (जाना)+ईरन्, भ आदेश] =गभीर।
गभीरिका—स्त्री० [स० गभीर+टाप् +कन्, ह्रस्व, इत्व] वड़ा ढोल।
गभुआर†—वि० [स० गर्भ+हिं आर (प्रत्य०)] १ गर्भ या जन्म के समय का (बच्चे के सिर के बाल)। २ (बालक) जिसके सिर के गर्भ या जन्म के बाल कटे न हो। जिसका मुडन न हुआ हो। ३. अनजान। नासमझ।
गभुराना—अ०[स० गह्वर] मान, रोष आदि के कारण धीरे-धीरे होठो मे ही कुछ कहना। वडवडाना। वुडवुड़ाना।
गभुवार—वि०=गभुआर।
गम—पु० [स०√गम्+अप्] १. चलना या जाना। गमन। २. मार्ग। रास्ता। ३ गति। चाल। ४. पहुँच। पैठ।
पु० [अ० गम] १. मन मे होनेवाला गहरा या भारी दुख।
मुहा०—गम खाना=अपमानित, उत्तेजित, दुखित अथवा पीडित होने पर भी प्रतिकार न करना और शात रहना।
२. शोक। ३ चिंता। परवाह। फिक्र।
गमक—वि० [स०√गम्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ गमन करनेवाला। २ जानेवाला। गता। ३. वतलाने या सूचित करनेवाला। सूचक।
स्त्री० [अनु० गमगम से] १. महक। सुगध। २. सगीत मे किसी स्वर को अधिक रजक तथा श्रुति मधुर वनाने के लिए उसमे उत्पन्न किया जानेवाला एक विशिष्ट प्रकार का कपन।
विशेष :—कभी कभी किसी स्वर को उसके ठीक ऊपर या नीचेवाले स्वर के साथ मिलाकर वेगपूर्वक उच्चारण करने से भी गमक उत्पन्न होती है। सगीतशास्त्र मे इसके ये १५ भेद कहे गये है—तिरिप, स्फुरित, कम्पित, लोच, आन्दोलित, वलि, त्रिभिन्न, कुरुल, आहत, उल्लासित, प्लावित, गुम्फित, मुद्रित, नमित, और मिश्रित।
३ तवले की गभीर परन्तु मधुर आवाज।
गमकना—अ० [हिं० गमक] गमक या महक देना। महकना।
गमकीला†—[हिं० गमक] १ गमक से युक्त। २ सुगधित।
गमखोर—वि० [फा० गमख्वार] [भाव० गमखोरी] दूसरो द्वारा किये गये अत्याचार, अन्याय आदि को चुपचाप सहनेवाला। गम खानेवाला।
गमखोरी—स्त्री० [फा० गमख्वारी] गमखोर होने की अवस्था, गुण या भाव। अत्याचार, अन्याय आदि चुपचाप सहने की प्रवृत्ति।

२—१०

गमगीन—वि० [अ० +फा०] १. दुखी। २ संतप्त।
गमछा—पु०=अँगोछा।
गमत—पु० [स० गमन या गमय=पथिक] १. रास्ता। मार्ग। २. २ पेशा। व्यवसाय।
गमतखाना—पु० [?] नाव मे का वह नीचेवाला भाग जहाँ नदी का पानी रस कर इकट्ठा होता है। वँधाल। (लश०)
गमतरी—स्त्री०=गमतखाना।
गमय—पु०[स०√गम्+अयच्] १. मार्ग। राह। २ पथिक। ३ व्यवसाय। व्यापार। ४. आमोद-प्रमोद।
गमन—पु०[स० √गम्+ल्युट्—अन] [वि० गम्य] १. चलना या जाना। २ प्रस्थान या यात्रा करना। ३. मार्ग। रास्ता। ४. यान। सवारी। ५ स्त्री के साथ किया जानेवाला सभोग। जैसे—वेश्या-गमन।
६ वैशेषिक दर्शन के अनुसार किसी वस्तु के क्रमश एक स्थान से दूसरे स्थान को प्राप्त होने का कर्म (पाँच कर्मो मे से एक)।
गमनना—अ० [स० गमन] गमन करना। जाना।
गमन-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने अथवा ले जाने का अधिकार मिलता हो। चालान। रवन्ना।
गमना—अ० [स० गमन] १ गमन करना। जाना। २ खोना। हाथ से निकल जाना। ३ नाव मे पानी रसना। (लश०)
गमनाक—वि० [फा०] १. गम अर्थात् दुख या शोक उत्पन्न करनेवाला। २. गम या दुख से पीडित।
गमनागमन—पुं० [स० गमन-आगमन द्व० स०] १. जाना और आना। २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने की क्रिया या भाव। यातायात।
गमनीय—वि० [स० +गम्√गम्+अनीयर्] [स्त्री० गमनीया] गमन करने योग्य। गम्य।
गमला—पु० [पुर्त० से] १ नाँद के आकार का मिट्टी, धातु या लकडी का वना हुआ एक प्रकार का पात्र जिसमे फूल-पत्तियाँ, पौधे आदि लगाये या रखे जाते है। २ चीनी मिट्टी का वह वर्तन जिसमे पाखाना फिरते है। (कमोड)
गमागम—पु० [स० गम-आगम, द्व० स०] आना-जाना। गमनागमन।
गमाना—स०=गँवाना।
गमार†—वि० [स्त्री० गमारी]=गँवार।
गमी—स्त्री०[अ० गम] १ घर या परिवार के किसी आदमी की शोकजनक मृत्यु। २ ऐसी मृत्यु के उपरान्त उसका होनेवाला शोक।
गम्मत†—स्त्री०[स० गमय] १ हँसी। दिल्लगी। परिहास। विनोद। २ मजेदार घटना या वात। ३ आनन्द वहार या मौज की स्थिति।
गम्य—वि०[स०√गम् +यत्] [स्त्री० गम्या] १ जिस तक या जिसमे गमन हो सके। जिस तक पहुँचा जा सके। २. जिमके अदर जा या पहुँच सकें। जिसके अदर पैठ या प्रवेश हो सके। जैसे—बुद्धि-गम्य। ३ जो पाया या प्राप्त किया जा सके। योग्य। ४. जिसका साधन हो सके। साध्य। ५ जिसके साथ गमन या सभोग किया जा सके।
गम्यता—स्त्री० [स० गम्य+तल्—टाप्] गम्य होने की अवस्था या भाव।

गयंद—पु० [स० गजेंद्र, प्रा० गयिंद, गरद] १ बडा हाथी। २ दोहे का एक प्रकार या भेद। ३ रहस्य-सम्प्रदाय में, ज्ञान।

गय—पु० [स०] १ घर। मकान। २ आकाश। ३. धन। ४ प्राण। ५ पुत्र। वेटा। ६ औलाद। सन्तान। ७. एक असुर, जिसके नाम पर गया नामक तीर्थ बना है। ८ गया नामक तीर्थ। ९. राम की सेना का एक वन्दर।

†पु०=गज (हाथी)।

†स्त्री०=गति।

गय-गमणि*—वि० स्त्री० [स० गजगामिनी] हाथी के समान झूमकर चलनेवाली।

गयण—पु० [स० गगन, प्रा० गयण] आकाश। गगन। उदा०—पंखी कवण गयण लगि पहुँचै।—प्रिथीराज।

गयनग—पु० [स० गगन] आकाश। उदा०—गनन गनत गयनग, छलन छक्किय उछरग्गिय।—चदवरदाई।

गयनाल—स्त्री० [हिं० गय+नाल=नली] हाथी पर रखकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की तोप। गजनाल।

गयल—अ० [हिं० 'जाना' क्रिया का भूतकालिक पूर्वी रूप] गया।

†स्त्री०=गैल (गली)।

गयवली—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड़।

गयवा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

गय-शिर—पु० [प० त०] १ आकाश। २ एक पर्वत जो गया मे है। ३ गया तीर्थ।

गया—अ० [स० गत, प्रा० गअ; अप० गअल; गु० गओ; मरा० गेला; प० गिआ, मैं० गेल, वँ० गेलो, सिंह० गिय] [स्त्री० गयी] हिं० 'जाना' क्रिया का भूतकालिक एक वचन का रूप।

पद—गया गुजरा या गया वीता=(क) जो वहुत ही वुरी हालत मे हो। दुर्दशा-ग्रस्त। (ख) तुच्छ। हीन।

मुहा०—गयी करना=(क) वीती हुई वात पर ध्यान न देना। (ख) छोड देना। जाने देना।

स्त्री० [स० गय+अच्—टाप्] आधुनिक विहार राज्य का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान, जहाँ पिंडदान आदि करने का माहात्म्य है।

मुहा०—गया करना=गया मे जाकर पिंडदान, श्राद्ध आदि करना।

गयापुर—पु०=गया (विहार राज्य का एक नगर)।

गयारी—स्त्री० [देश०] किसी काश्तकार के मरने पर लावारिस छोडी हुई जोत।

गयाल†—स्त्री० [देश०] किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी छोडी हुई ऐसी सपत्ति जिसका उत्तराधिकारी कोई न हो।

पु० आसाम मे पाया जानेवाला एक पशु जिसका मास खाया जाता और जिसकी मादा का दूध पिया जाता है।

गयावाल—वि० [हिं० गया+वाल] गया मे रहने या होनेवाला।

पु० गया तीर्थ का पडा या पुरोहित।

गयास—स्त्री० [अ०] १ सहायता। २ मुक्ति। छुटकारा।

गरँऊँ—पु० [देश०] चक्की के चारो ओर वना हुआ मिट्टी का घेरा जिसमे पिसा हुआ आटा आदि गिरता है। उदा०— गरँऊँ चून विन सागर रीता, वाहु कहे पीमत दिन वीता।—ग्राम्यगीत।

गर—पु० [सं० √गॄ (लीलना)+अच्] १. प्राचीन भारत में एक प्रकार का कडआ और मादक पेय पदार्थ। २ एक प्रकार का रोग। ३. रोग। वीमारी। ४ विष। ५. वत्सनाभ। वछनाग। ६ ज्योतिष मे ग्यारह करणो मे से पाँचवाँ करण।

वि० रोगी।

†पु० [हिं० गला] गरदन। गला।

प्रत्य० [स० कर (कर्ता) से फा०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अत मे लगकर ये अर्थ देता है—(क) कोई काम करनेवाला अथवा कोई चीज वनानेवाला। जैसे—कारीगर, सिकलीगर, सौदागर आदि। और (ख) किसी से युक्त होने के भाव का सूचक होता है। उदा० —जोई गर, वँमगर, वुझगर भाई।—घाघ।

अव्य० [फा० अगर का सक्षिप्त रूप] अगर। यदि।

गरई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

गरक—वि० [अ० गर्क] १. डूवा हुआ। निमग्न। २. जो नदी आदि में डूवकर मर गया हो। ३. नष्ट। वरवाद। ४. मग्न। लीन।

गरकाव—पु० [फा०] डूवने की क्रिया या भाव। डुवाव।

वि० १ डूवा हुआ। जलमग्न। २ वहुत अधिक लीन या निमग्न।

गरकी—स्त्री० [अ०] १ डूवने की क्रिया या भाव। डूवना। डुवाव।

मुहा०—किसी को गरकी देना=वहुत अधिक कष्ट या दुख देना।

२ इतना अधिक पानी वरसना या वाढ आना जिससे फसल डूवकर नष्ट हो जाय। वूडा। अतिवृष्टि। ३. पानी मे डूवी हुई जमीन। ४ वह नीची भूमि जो वाढ मे प्राय डूव जाती हो। ५ कौपीन। लँगोटी। ६ गराडी।

गरगज—पु० [हिं० गढ+गजग] १. वास्तु मे, वह चौडा और वडा ढालुआ रास्ता जिस पर हाथी आ-जा सकते हो। २ किले का वुर्ज। ३. वह ऊँची भूमि या टीला जहाँ से शत्रु का पता लगाया जाता है। ४ नाव की छत। ५ फाँसी की टिकठी।

वि० वडा तथा शक्तिशाली। जैसे—गरगज घोडा।

गरगरा†—पु० [अनु०] गराडी। घिरनी। (लश०)

गरगवा—पु० [देश०] १. नर गौरैया। चिडा। २ एक प्रकार की घास।

गरगाव†—पु० वि०=गरकाव।

गर-चे—अव्य० [फा० अगरचे] यद्यपि।

गरज—स्त्री० [स० गर्जन] १ गरजने की क्रिया या भाव। २ वहुत गभीर या घोर शब्द। जैसे—वादल या सिंह की गरज।

स्त्री० [अ०] १. किसी उद्देश्य अथवा प्रयोजन की सिद्धि के लिए मन मे होनेवाली स्वार्थजन्य इच्छा।

मुहा०—(अपनी) गरज गाँठना=अपना स्वार्थ सिद्ध करना।

पद—गरज का वावला=स्वार्थांध।

२ आवश्यकता। जरूरत।

अव्य० १. इतना होने पर। आखिरकार। २ तात्पर्य यह है कि।

गरजन*—पु० [स० गर्जन] गरजने की क्रिया या भाव। गरज।

गरजना—अ० [सं० गर्ज्, प्रा० गज्ज, सिं० गाज, गु० गाजवूँ, प० गज्जणा, मरा० गाज (णे)] १. गभीर तथा घोर शब्द करना। जैसे—वादल

या सिंह का गरजना। २ (किसी वस्तु का) चटकना, तडकना या फूटना। जैसे—मोती गरजना।

गरज-मंद—वि० [फा०] [भाव० गरजमदी] १ जिसे गरज या आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २ चाहनेवाला। इच्छुक। ३. अपना काम या मतलव निकालनेवाला। स्वार्थी।

गरजी—वि०=गरजमद।

गरजुआ—पु० [हिं० गरजना] एक प्रकार की खुमी।

गरजू†—वि०=गरजमद।

गरट—पु० [स० ग्रथ] झुड। समूह। उदा०—गजनि गज्जि गजे गरट, रहे रोहि रण रग।—चदवरदाई।

गरटना—अ० [हिं० गरट] (पशुओ का) झुड वनाकर चलना।

गरट्ट†—पु०=गरट।

गरट्टना†—अ०=गरटना।

गरण—पु० [स० √गृ+ल्युट्–अन्] निगलने की क्रिया या भाव।

गरथ—स्त्री०=गथ (धन या पूँजी)।

गरथिना—स०=गूँथना। उदा०—इह करि रुक्न कुडलि करहि गरथि माल पुहपै घनिय।—चदवरदाई।

गरद—वि० [स० गर √दा (देना) +क] जहर या विप देनेवाला।

पु० जहर। विष।

स्त्री० [फा० गर्द] १ धूल। राख। २ मटमैले रग का एक प्रकार का रेशमी कपडा।

गरदन—स्त्री० [फा०] १ जीवो, प्राणियों आदि के धड और सिर के वीच का अग। ग्रीवा। गला।

मुहा०—गरदन उठाना=विरोध करना। **(तलवार से) गरदन उड़ाना**=सिर काटना। **गरदन उतारना या काटना**=(क) सिर काटना। (ख) वहुत वडी हानि करना। **(किसी की) गरदन झुकना**=(क) वे-सुध या वेहोश होना। (ख) मर जाना। **(किसी के आगे) गरदन झुकना**=(क) अधीन होना। (ख) लज्जित होना। **(किसी के आगे) गरदन झुकाना**=(क) आत्म-समर्पण करना। (ख) लज्जित होकर सिर नीचा करना। **गरदन ढलकना या ढलना**=मरने के वहुत समीप होना या मर जाना। **(किसी का) गरदन न उठाना**=वीमारी के कारण विलकुल चुपचाप या वे-सुध पडे रहना। **(किसी की) गरदन नापना**=गरदन से पकडकर किसी को धक्का देते हुए वाहर निकालना। **(अपनी) गरदन पर खून लेना**=हत्या का अपराधी या दोपी वनना। **(अपनी) गरदन पर जूआ रखना**=मुसीवत मोल लेना। **गरदन फँसना**=सकट मे पड़ना। **गरदन मरोड़ना**=गला दवाकर किसी को मार डालना। **गरदन मारना**=सिर काटना। **गरदन में हाथ देना या डालना**=कही से निकाल वाहर करने के लिए गरदन पकडना। गरदनियाँ देना।

२ वह आडी लवी लकडी जो जुलाहो की लपेट के दोनो सिरो पर आडी साली जाती है। साल। ३ गगरा, लोटा आदि वरतनो का गरदन के आकार का ऊपरी गोल भाग।

गरदन-घुमाव—पु० [हिं० गरदन+घुमाना] कुश्ती का एक पेच।

गरदन-तोड़—पु० [हिं० गरदन+तोडना] कुश्ती का एक दाँव।

गरदन-तोड़ वुखार—पु० [हिं०+फा०] एक प्रकार का सक्रामक और साघातिक ज्वर।

गरदन-वन्द—पु०=गुलूवद।

गरदन-वाँध—पु० [हिं० गरदन+वाँधना] कुश्ती का एक पेच।

गरदना—पु० [हिं० गरदन] १ मोटी गरदन। २ गरदन पर किया जानेवाला आघात। २ गरदन पर का मास। (कसाई)

गरदनियाँ—स्त्री० [हिं० गरदन+इया (प्रत्य०)] किसी की गरदन को हाथ से पकडकर उसे धक्का देते हुए कही से तिरस्कारपूर्वक वाहर निकालना।

गरदनी—स्त्री० [हिं० गरदन] १. सिले हुए कपडे का वह अग जो गले के चारो ओर पडता है। गरेवान। २ गले मे पहनने की हँसली (गहना)। ३ घोडे की पीठ पर डाला जानेवाला कपडा जो एक ओर उसकी गरदन मे वँधा रहता है। ४ कुश्ती मे कोहनी और पहुँचे के वीचवाले अश से विपक्षी की गरदन पर किया जानेवाला आघात। कुदा। घस्सा। रद्दा। ५ कुश्ती का एक पेंच। ६ दीवार के ऊपर की कगनी। कारनिस। ७ दे० 'गरदनियाँ'।

गर-दर्प—पु० [व० स०] भुजग। साँप।

गरदा—पु० [फा० गर्द] हवा के साथ उडनेवाली धूल या मिट्टी।

गरदान—वि० [फा०] १ घूम-फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला। २. एक ही विन्दु या स्थान के चारो ओर घूमनेवाला।

पु० १. शव्दो का रूप साधन। २ वह कवूतर जो घूम-फिर कर पुन अपने स्थान पर आ जाता है। ३. चक्कर। फेर।

गरदानना—स० [फा० गरदान] १ व्याकरण मे किसी शव्द के भिन्न भिन्न विकारी रूप वनाना या वतलाना। २ विस्तारपूर्वक और कई वार समझाकर कोई वात कहना। उद्धरणी करना। ३ ध्यान देना या महत्त्वपूर्ण समझना। जैसे—हम तुम्हें क्या गरदानते है!

गरदी—वि० [हिं० गरद] गरद नाम के कपडे की तरह का मटमैला या पीला। टसरी।

पु० उक्त प्रकार का रग। टसरी। (ड्रैव)

गरदुआ—पु० [हिं० गरदन] पशुओ को होनेवाला एक प्रकार का ज्वर।

गरधरन—पु० [स० गरलधर] विप को धारण करनेवाला, शिव।

गर-ध्वज—पु० [व० स०] अभ्रक।

गरना*—अ० [हिं० 'गारना' का अ०] १ गारा या निचोडा जाना। निचुडना। २ किसी चीज के निकल जाने पर उससे रहित या हीन होना।

†अ० १.=गडना। २.=गलना। उदा०—रकत न रहा विरह-तन गारा।—जायसी।

गरनाल—स्त्री० [हिं० गर+नली] चौडे मुँह की एक प्रकार की तोप। घननाल।

गर-प्रिय—पु० [व० स०] शिव।

गरव†—पु० १ =गर्व (अभिमान)। २ =गर्भ।

गरवई*—स्त्री०=गर्व।

गरव-गहेला—वि० [स० गर्व=अभिमान+स० गृहीत, प्रा० गहिल्ल] [स्त्री० गरव-गहेली] वहुत गर्व करनेवाला। अभिमानी। घमडी।

गरवना*—अ० [सं० गर्व] गर्व करना। इतराना। उदा०—कबीर कहा गरवियो काल गहै रे केस।—कबीर।

गरबा—पु० [देश०] [गुज० गरवा=घडा] एक प्रकार का गुजराती लोक-नृत्य जिसमे बहुत सी स्त्रियाँ कमर या सिर पर घडा रखकर तथा घेरा बनाकर नाचती है।

गरबाना†—अ० [सं० गर्व] घमड में आना। अभिमान करना। शेखी करना।

गरवित*—वि०=गर्वित।

गरबीला—वि० [स० गर्व] जिसे गर्व हो। अभिमानी। घमडी।

गरभ—पु० १.=गर्भ। २.=गर्व।

गरभदान*—पु० १ =गर्भ। २ =गर्भाधान।

गरभाना—अ० [हिं० गर्भ] १. गर्भ धारण करना। २. गर्भवती होना। ३. गेहूँ, जौ, धान आदि के पौधो मे बाल लगना।
स० गर्भ धारण कराना।

गरभी*—वि० [स० गर्वी] अभिमानी। घमडी।

गरम—वि० [स० घर्म से फा० गर्म] [क्रि० गरमाना, भाव० गरमाहट, गरमी] १ (पदार्थ) जिसका ताप-मान जीवों या प्राणियो के सहज और स्वाभाविक ताप-मान से कुछ अधिक हो। जैसे—नहाने का गरम पानी, दोपहर की गरम हवा। २ (प्राणी या शरीर) जिसका ताप-मान सहज या स्वाभाविक से कुछ अधिक या ऊपर हो। उस प्रकार का जैसा ज्वर या बुखार मे होता है। जैसे—रोज सध्या को इसका बदन गरम हो जाता है। ३. (शरीर) जिसमे सहज और स्वाभाविक ताप-मान वर्तमान हो। प्रसम ताप-मानवाला। जैसे—शरीर का गरम रहना जीवन का लक्षण है। ४ (पदार्थ) जो अग्नि, धूप आदि के सयोग से जल या तप रहा हो। जिसे छूने से शरीर में जलन होती हो। जैसे—कडाही (या तवा) गरम है; इसे मत छूना। ५ (पदार्थ) जिसमे विद्युत् की धनात्मक या सहिक धारा प्रवाहित हो रही हो। जैसे—बिजली का गरम तार छूना प्राणियो के लिए घातक होता है। ६. (प्रदेश या भू-भाग) जो विषुवत् रेखा पर या उसके आस-पास स्थित हो और इसी लिए जहाँ गरमी अपेक्षया अधिक पडती हो। जैसे—अरब, चीन, भारत आदि गरम देश है। ७ (औषध या खाद्य पदार्थ) जो शरीर के अदर पहुँचकर उष्णता या ताप उत्पन्न करता हो। जिसकी तासीर या प्रभाव तापकारक हो। जैसे—जायफल, मिर्च, लौग, आदि मसाले गरम होते है। ८ (पदार्थ) जो शरीर के ऊपरी भाग पर से शीत का प्रभाव कम करके उसमे हलकी उष्णता या ताप लाता हो। जैसे—जाड़े मे सब लोग गरम कपडे पहनते है। ९ (प्रकृति या स्वभाव) जिसमे उग्रता, क्रोध, द्वेष आदि तीव्र बातें अधिक प्रधान तथा प्रबल रहती हो। जैसे—वे गरम मिजाज के आदमी हैं।
मुहा०—(किसी से) गरम पड़ना या होना=आवेश या क्रोध मे आकर किसी से लडने-झगड़ने पर उतारू होना। -
१० जो किसी रूप मे उग्र, उत्कट या तीव्र हो अथवा जो किसी कारण से ऐसा हो गया हो। जैसे—तुम्हारी ऐसी ही बातो से हमारा मिजाज गरम हो जाता है। ११ (मादा पशु) जो काम-वासना के वश मे होकर गर्भ धारण करने के लिए उत्सुक या उपयुक्त हो। जैसे—कुतिया या गौ का गरम होना। १२ जिसमे आवेश, उत्साह, तीव्रता आदि बाते यथेष्ट मात्रा मे हों। जिसमे अभी तक किसी प्रकार की मदता, शिथिलता, ह्रास आदि के लक्षण न दिखाई देते हों। जैसे—(क) अभी तुम्हारा खून गरम है; जब बडे होंगे, तब तुममे सहनशीलता आवेगी। (ख) अभी यह मामला (या विवाद) इतना गरम है कि इसका निपटारा हो ही नही सकता। १३. (चर्चा या बात) जिसका यथेष्ट प्रचलन हो। जैसे—आज शहर मे एक नई खबर गरम है। १४. बिलकुल तुरत या हाल का। बहुत ही ताजा। जैसे—अभी तो चोट गरम है; कुछ देर बाद दरद बढेगा। १५. (बात-चीत) जिसके प्रसग मे कुछ उग्रता, उत्तेजना या कटुता आ गई हो। जैसे—ससद में इस विषय पर खूब गरम बहस हुई थी। १६ (बाजार या भाव) जिसमे खूब चहल-पहल या तेजी हो। जो चलता हुआ या बढती पर हो। जैसे—आज सोने का बाजार गरम है।
मुहा०—(किसी चीज या बात का) बाजार गरम होना=बहुत अधिकता, तीव्रता या प्रबलता होना। जैसे—(क) आज-कल हैजे का बाजार गरम है। (ख) शहरो मे चोरियो का बाजार गरम है।

गरम कपडा—पु० [हिं०] शरीर गरम रखनेवाला और जाडे मे पहनने का कपड़ा। ऊनी अथवा रुईदार कपडा।

गरम पानी—पु० [हिं०] १. वीर्य। शुक्र। (बाजारू) २. मदिरा। शराब।

गरम मसाला—पु० [हिं०] भोजन मे मिलाई जानेवाली ऐसी चीजें जो उसे चरपरा, पाचक और सुस्वादु बनाती हैं। जैसे—दालचीनी, धनियाँ, मिर्च, लौग आदि।

गरमाहट—स्त्री० [हिं० गरम+आहट (प्रत्य०)] १. गरम होने की अवस्था या भाव। २ कुछ हलकी गरमी। जैसे—कमरे में अब गरमाहट आई है।

गरमाई†—स्त्री० [फा० गरम से पजाबी] १. गरमी। २ ऐसी वस्तु जिसके उपयोग या सेवन से शरीरिक शक्ति बढती हो। जैसे—जच्चा को गरमाई खिलाओ, तभी वह जल्दी स्वस्थ होगी।

गरमागरम—वि० [हि० गरम+गरम] १. ऐसा गरम जिसमे अभी ठढक बिलकुल न आने पाई हो। काफी गरम। जैसे—गरमागरम चाय या दूध। २ बिलकुल ताजा या तुरत का। जैसे—गरमागरम खबर। ३ उत्तेजना से युक्त। जैसे—गरमागरम बहस।

गरमागरमी—स्त्री० [हिं० गरमा+गरम] १. किसी काम मे जल्दी से निबटाने या समाप्त करने मे होनेवाली तेजी। तत्परता। मुस्तैदी। २ अनबन या झगडा होने की स्थिति या भाव। ३. आवेशपूर्ण कहा-सुनी।

गरमाना—स० [फा० गर्म, हिं० गरम+आना (प्रत्य०)] १. कोई चीज आग पर रखकर उसे साधारण या हलका गरम करना। जैसे—पीने के लिए दूध या खाने के लिए ठडी रोटी गरमाना। २ साधारण उष्णता या ताप से युक्त करना। जैसे—आग तापकर या धूप सेककर हाथ-पैर गरमाना, रजाई ओढकर शरीर गरमाना। ३ ऐसा काम करना या ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिससे किसी मे कुछ गरमी (आवेश, उत्तेजना, उत्साह, तीव्रता, प्रसन्नता आदि) उत्पन्न हो। जैसे—(क) कोई तीखी बात कहकर किसी आदमी को गरमाना। (ख) शराब पिलाकर भैंसे को गरमाना। (ग) कुछ दूर दौड़ाकर घोडे को गरमाना। (घ) गवैये का आरम्भ मे धीरे-धीरे कुछ समय तक गाकर अपना गला

गरमाना। ४ किसी के जेब, हाथ आदि के सबध मे, उसमे कुछ धन रखकर उसे प्रसन्न या सतुष्ट करना । जैसे—उसने थानेदार (या पेशकार) का जेब (या हाथ) गरमाकर उसे अपने अनुकूल कर लिया।

अ० १ साधारण या हलकी उष्णता अथवा ताप से युक्त होना। गरम होना। जैसे—(क) थोडी देर आँच पर रहने से दूध या पानी का गरमाना। (ख) आग तापने या कबल ओढने से शरीर का गरमाना। २ आवेश, उत्तेजना आदि उग्र अथवा तीव्र मनोभावो से युक्त होना। जैसे—जरा सी बात पर इस तरह गरमाना अच्छा नही होता। ३ किसी आरम्भिक या औपचारिक क्रिया के प्रभाव से किसी प्राणी या उसके किसी अग का तेजी पर आना और ठीक तरह से अपना काम करने के योग्य होना। जैसे—(क) कुछ दूर दौडने से घोडे का गरमाना। (ख) कुछ देर तक धीरे-धीरे गा लेने पर गवैये का गला गरमाना। ४ स्वाभाविक रूप से पशुओ आदि का उमग मे आना और काम-वासना से युक्त होना। जैसे—गौ या घोडे का गरमाना। ५ जेब, हाथ आदि के सबध मे, रुपये पैसे की उत्साह-वर्धक या सुखद प्राप्ति होना। जैसे—आज कई दिन बाद इनका जेब (या हाथ) गरमाया है।

गरमी—स्त्री० [फा०] १. गरम होने की अवस्था, गुण या भाव। जैसे—आग या धूप की गरमी । २ वर्षा से पहले और वसत के बाद की ऋतु। ग्रीष्म काल। जेठ-असाढ के दिन। जैसे—इस साल गरमी मे पहाड पर जाने का विचार है। ३ किसी प्रकार का मानसिक आवेग या उमग। जोश।

मुहा०—(अपनी) गरमी निकालना=मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)। **(किसी की) गरमी निकालना**=ऐसा कार्य करना जिससे किसी का आवेग या क्रोध सदा के लिए अथवा कुछ दिनो के लिए दूर होकर मद या शात पड जाय।

५ दुष्ट मैथुन से जननेंद्रिय मे होने वाला एक भीषण रोग । आतशक या फिरग रोग। (सिफलिस) ६ घोडो और हाथियो को होनेवाला एक प्रकार का रोग। ७ दे० 'ताप'।

गरमीदाना—पु० [हिं० गरमी+दाना] अधिक गरमी पडने के कारण शरीर पर निकलनेवाले छोटे-छोटे लाल दाने। अँभौरी। पित्ती।

गररा*—पु० [हिं० गर्रा] घोडो की एक जाति।

गरराना*—अ० [अनु०] घोर या भीषण ध्वनि करना। गरजना।

गररी†—स्त्री० [देश०] किलँहटी या सिरोही नामकी चिडिया।

गरल—पु० [स०√गृ (निगलना)+अलच्] १ जहर। विष। २ बिच्छू, साँप आदि विषैले कीडो का जहर। ३ घास का बँधा हुआ पूला।

गरल-धर—वि० [ष० त०] विष धारण करनेवाला।

पु० १ महादेव। शिव। २ साँप।

गरलारि—पु० [गरल-अरि, ष० त०] मरकत मणि। पन्ना।

गरवा*—पु० [स० गुरु] १ भारी। २ महान्।

पु० दे० 'गला'।

गर-व्रत—पु० [ब० स०] मयूर। मोर।

गरसना—स०=ग्रसना।

गरह†—पु०=ग्रह।

गरहन—पु० [स० गर√हन् (नष्ट करना)+क] काली तुलसी। बबरी।

†पु०=ग्रहण।

गरहर—पु० [हिं० गर=गल+हर] वह काठ जो नटखट चौपायो के गले मे बाँधकर लटकाया जाता है। कुदा। ठेकुर।

गरहेडुवा—पु० [स० गवेडुका] कसेई। कौडिल्ला। (पक्षी)

गराँ—वि० [फा०] १ भारी। वजनी। २ कठिन। ३ अप्रिय। नागवार। ४ महँगा।

गरांडील—वि० [फा० गरा या अ० ग्राड ?] १ जो लब-तड़ग तथा मोटा-ताजा हो। २. बहुत बडा या भारी।

गराँव—स्त्री० [हिं० गर=गला] पशुओ के गले मे बाँधी जानेवाली बटी हुई दोहरी रस्सी जिसके एक सिरे पर मुद्धी और दूसरे सिरे पर गाँठ होती है।

गरा†—पु०=गला।

गराऊ†—पु० [स० गुरु, पु० हिं० गुरु गरुअ] पुराना अथवा बूढा भेडा। (गँडेरियो की बोली)

गराज—पु० [अ० गैरेज] मोटर गाडी या इसी तरह की और कोई सवारी रखने या रहने का घिरा हुआ स्थान। गिराज।

†स्त्री०=गरज (गर्जन)।

गराड़ी—स्त्री०=गडारी।

गराना—स० १. दे० 'गलाना'। २. दे० 'गारना'।

गरानी—स्त्री० [फा०] १. भारीपन। गुरुता। २. महँगी। ३ भोजन न पचने के कारण होनेवाला पेट का भारीपन।

†स्त्री०=ग्लानि।

गरामी—वि० [फा०] १ बुजुर्ग। वृद्ध। २ प्रसिद्ध। ३ सम्मानित।

गरारा—वि० [स० गर्व, पु० हिं० गारो+आर(प्रत्य०)] १. अभिमानी। घमडी। २ प्रबल। बलवान्। ३ तेज। प्रचड।

पु० [हिं० घेरा] १ पायजामे की ढीली मोहरी। जैसे—गरारेदार पायजामा। २. ढीली मोहरी का पायजामा। ३ खेमा, तबू आदि भरने का बडा थैला।

पु० [अ० गरार, अनु०] १ मुँह मे पानी भरकर गर गर शब्द करके कुल्ली करना। २ चौपायो का एक रोग जिसमे उनके गले मे घुर-घुर शब्द होता है।

गरारी—स्त्री० दे० 'गडारी।'

गराव—पु० [देश०] मध्य युग की एक प्रकार की बडी नाव।

गरावन†—पु०=गडावन।

गरावना†—स० =१ =गडाना। २ =गलाना।

गरावा†—पु० [देश०] ऐसी भूमि जो अधिक उर्वर न हो। कम उपजाऊ जमीन।

गरास—पु०=ग्रास।

गरासना*—स० [स० ग्रास] १ निगलना। २ दे० 'ग्रासना' या 'ग्रसना'।

गरिका—स्त्री० [स० गुरु+णिच्, गर् आदेश गरि+कन्—टाप्] नारियल की गरी।

गरित—वि० [स० +इतच्] १ जहर या विष से युक्त। २ जिसमे विष मिलाया गया हो।

गरिमता*—स्त्री० दे० 'गरिमा'। उदा०—उरजनि नहिन गरिमता तैसी।
—नददास।

गरिमा (मन्)—स्त्री० [सं० गुरु+इमनिच्, गर् आदेश] १. गुरुत्व। भारीपन। २. महत्त्व। महिमा। ३ अहंकार। घमंड। ४ आत्म-श्लाघा। शेखी। ५. आठ सिद्धियों में से एक, जिसके फल-स्वरूप मनुष्य अपने शरीर का भार जितना चाहे, उतना बढ़ा सकता है।

गरिया—पु० [देश०] दक्षिण और मध्यभारत में होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष।

गरियाना†—अ० [हिं० गारी=गाली] गालियाँ देना। दुर्वचन कहना।

गरियार—वि० [सं० गुरु=भारी] १ (पशु) जो कहीं बैठ जाने पर जल्दी अपनी जगह से न हिले। फलत मट्ठर या सुस्त। जैसे—गरियार बैल। *२ काम-धंधा करने में सुस्त। आलसी। उदा०—ढीह पतोहु धिया गरियार।—घाघ।

गरियारा—पु०=गलियारा।

वि०=गरियार।

गरियालू—पु० [हिं० करिया से करियालू] एक प्रकार का काला-नीला रंग जो ऊन रंगने के काम आता है।

वि० उक्त प्रकार के रंग का। काला-नीला।

गरिष्ठ—वि० [सं० गुरु+इष्ठन्, गर् आदेश] १ बहुत भारी। २ (खाद्य पदार्थ) जो बहुत कठिनता से या देर में पचता हो। ३ महत्त्वपूर्ण।

पु० १ एक प्राचीन तीर्थ। २ एक दानव का नाम।

गरी—स्त्री० [सं०√गृ (निगलना)+अच्+ङीप्] देवताड।

स्त्री० [सं० गुलिका, प्रा० गुड़िया] १. नारियल के अंदर का वह सफेद मुलायम गूदा जो खाया जाता है। २ किसी कड़े बीज के अंदर का मुलायम और जमा हुआ गूदा।

गरीब—वि० [अ० गरीब] [स्त्री० गरीबिन गरीबिनी, (क्व०), भाव० गरीबी] १ दीन और नम्र। २ दरिद्र। निर्धन। ३ निरुपाय। बेचारा।

पु० ईरानी संगीत में एक प्रकार का राग।

गरीबखाना—पु० [फा०] (अपनी नम्रता दिखलाने के लिए) इस गरीब (अर्थात् मुझ अकिंचन) के रहने का स्थान। मेरा घर।

गरीबनिवाज—वि० [फा० गरीब+नेवाज] दीनों पर दया करने और दुखियों का दुख दूर करनेवाला। दयालु।

गरीबपरवर—वि० [फा०] गरीबों की परवरिश करनेवाला। गरीबों को पालनेवाला। दीन-पालक।

गरीबी—स्त्री० [अ० गरीब] १ गरीब होने की अवस्था या भाव। २ २ दीनता। नम्रता। ३ दरिद्रता। निर्धनता।

गरीयस्—वि० [सं० गुरु+ईयसुन्, गर् आदेश] [स्त्री० गरीयसी] १ बहुत अधिक भारी। २ बहुत प्रबल और महान्। ३ महत्त्वपूर्ण।

गरु*—वि० [सं० गुरु] १ भारी। वजनदार। २ गौरवशाली। ३. जिसका स्वभाव गंभीर या शांत हो। धीर।

गरुअत्त—वि० [सं० गुरु] बड़ा। महान्।

गरुआ†—वि० [सं० गुरु] [स्त्री० गरुई] १ भारी। वजनी। २ अभिमानी। घमंडी।

†पुं०=गडुआ।

गरुआई—स्त्री० [हिं० गरुआ] गुरुता। भारीपन।

गरुआना*—अ० [सं० गुरु] भारी या वजनदार होना।

स० भारी करना या बनाना।

गरुड—पु० [सं० गरुत्√डी (उड़ना)+ड, पृषो० तलोप] १. गिद्ध की जाति का एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जो पुराणों में विष्णु का वाहन कहा गया है। २. सफेद रंग का एक प्रकार का जल-पक्षी जिसे पव्वा ढेंक भी कहते हैं। ३ प्राचीन भारत की एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ४. गरुड पक्षी के आकार का एक प्रकार का प्रासाद। ५ पुराणानुसार चौदहवें कल्प का नाम। ६. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७ छप्पय छंद का एक प्रकार या भेद। ८ नृत्य में, एक प्रकार की मुद्रा।

गरुड़गामी (मिन्)—पुं० [सं० गरुड√गम् (जाना)+णिनि] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

गरुड़-घंटा—पु० [ष० त०] ठाकुर जी की पूजा में बजाया जानेवाला वह घंटा जिसके ऊपर गरुड की आकृति बनी रहती है।

गरुड़-ध्वज—पु० [ब० स०] १. विष्णु। २ प्राचीनकाल के बने हुए ऐसे स्तंभ जिनपर गरुड की आकृति होती थी।

गरुड़-पक्ष—पु० [ष० त०] नृत्य में दोनों हाथ कमर पर रखने की एक मुद्रा।

गरुड़-पाश—पु० [मध्य० स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का फंदा जो शत्रु को फँसाने के लिए उसके ऊपर फेंका जाता था।

गरुड़-पुराण—पु० [मध्य० स०] अठारह पुराणों में से एक जिसमें यमपुर तथा अनेक प्रकार के नरकों का वर्णन है। प्रेत-कर्म का विधान भी इसी में है।

विशेष—हिन्दुओं में किसी के मर जाने पर दस दिन तक इसकी कथा सुनने का माहात्म्य है।

गरुड़-प्लुत—पुं० [ष० त०] नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

गरुड़-भक्त—पु० [ष० त०] प्राचीन भारत का एक संप्रदाय जो गरुड़ की उपासना करता था।

गरुड़-यान—पु० [ब० स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

गरुड़-रुत—पुं० [ष०त०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, जगण, भगण, जगण, तगण तथा अंत में एक गुरु होता है।

गरुड़-व्यूह—पु० [उपमि० स०] प्राचीन भारत में सैनिक व्यूह-रचना का एक प्रकार जिसमें सेना का मध्य भाग अपेक्षया अधिक विस्तृत रखा जाता था।

गरुड़-सिंह—पु० [उपमि० स०] प्राचीन भारतीय वास्तु में, वह कल्पित सिंह जिसका अगला भाग गरुड के समान तथा पिछला सिंह के समान होता था।

गरुड़ांक—पुं० [गरुड़-अंक] ब० स०] विष्णु।

गरुड़ांकित—पु० [गरुड-अंकित, उपमि० स०] दे० 'गरुडाश्मा'।

गरुड़ाग्रज—पु० [गरुड़-अग्रज, ष० त०] अरुण, जो गरुड का बड़ा भाई कहा गया है।

गरुड़ाश्मा (श्मन्)—पु० [गरुड-अश्मन्, उपमि० स०] पन्ना नामक रत्न।

गरुत्—पुं० [सं०√गृ (शब्द)+उति] पंख। पर।

गरुता†—स्त्री०=गुरुता।

गरुत्मान् (मत्)—पु० [सं० गरुत्+मतुप्] १. गरुड। २ पक्षी। ३ अग्नि।

गरुल—पु० [सं० गरुड़] गरुड़। उदा०—कंत गरुल होतहि निरदयी।—जायसी।
गरुवाई†—स्त्री०=गुरुता।
गरुहर†—वि०=गुरु (भारी)।
गरू*—वि०=गुरु।
गरूर—पु० [अ० गरूर] अभिमान। घमड।
गरूरत—स्त्री० =गरूर।
गरूरताई*—स्त्री० =गरूर।
गरूरा*—वि० [फा० गरूर] [स्त्री० गरूरी] १ अभिमानी २ घमडी।
पु०=गरूर।
गरेठना†—स०=गरेरना (घेरना)।
गरेठा—वि०=टेढ़ा।
गरेबान—पु० [फा०] किसी सिले हुए कपडे का वह अश जो गले के चारो ओर पडता है।
गरेरना—स०=घेरना (छेकना या रोकना)।
गरेलना†—स०=गरेरना।
गरेरा*—पु०=घेरा।
वि० [स्त्री० गरेरी] (वास्तु रचना) जिसमे घुमाव-फिराव हो। चक्करदार।
†पु०=गदेला (छोटा लड़का)।
गरेरी—स्त्री०=गडारी।
गरेहुआ†—वि० [सं० गुरु] १ भारी। २ भीषण। विकट।
गरैयाँ—स्त्री०=गराँव (पशुओ के गले मे बाँधने की रस्सी)।
गरोह—पु० [फा०] झुड। जत्था।
गर्क—वि० [अ०] १ डूबा हुआ। २ तल्लीन। विचारमग्न।
गर्ग—पु० [सं० √गॄ (स्तुति करना)+ग] १ एक वैदिक ऋषि जो आगिरस भरद्वाज के वशज और ऋग्वेद के एक सूक्त के मंत्र-द्रष्टा थे। २ ज्योतिष शास्त्र के एक प्राचीन आचार्य। ३ धर्मशास्त्र के प्रवर्त्तक एक प्राचीन ऋषि। ४ बैल। ५ साँड। ६. गगोरी नाम का छोटा कीडा। ७ बिच्छू। ८. केंचुआ। ९ एक पर्वत का पुराना नाम। १० ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जिनकी सृष्टि गया मे यज्ञ के लिए हुई थी। ११ सगीत में, एक प्रकार का ताल।
गर्गर—पु० [सं० गर्ग√रा (देना)+क] १ भँवर। २ एक प्रकार का पुराना बाजा। ३ गगरा। गागर। ४ एक प्रकार की मछली।
गर्गरी—स्त्री० [सं० गर्गर+ङीप्] १. दही जमाने की मटकी। दहेंड़ी। २. मथानी। ३ गगरी। कलसी।
गर्ज—स्त्री०=गरज।
गर्जक—पु० [सं०√गर्ज (गरजना)+ण्वुल्-अक] एक प्रकार की मछली।
वि० गरजनेवाला।
गर्जन—पु० [सं० √गर्ज्+ल्युट्-अन] १. घोर ध्वनि या भीषण शब्द करने या होने की क्रिया या भाव। गरज।
पद—गर्जन-तर्जन=क्रोध मे आकर जोर-जोर से बोलना और डाँटना-डपटना।
२ शाल की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।
गर्जना—स्त्री०[सं०] गर्जन (दे०)।
अ०=गरजना।
गर्जा—स्त्री० [सं०√गर्ज्+अङ्—टाप्] बादलों की गरज।
गर्जित—भू० कृ० [सं० √गर्ज्+क्त] गरजा हुआ।
गर्डर—पु० [अं०] लोहे का ढला हुआ वह मोटा और लंबा छड़ जो बड़ी छतें आदि पाटने मे शहतीर की जगह लगाया जाता है।
गर्त्त—पु० [सं०√गॄ (लीलना)+तन्] १ गड्ढा। गढ़ा। २. छेद। ३. दरार। ४ घर। ५ रथ। ६ जलाशय। ७ एक नरक का नाम। ८ एक शब्द जो स्थान-वाचक कुछ नामो मे उत्तर-पद के रूप मे लगता है। जैसे—चक्रगर्त्त, त्रिगर्त्त आदि।
गर्तकी—स्त्री० [सं० गर्त+कन्—ङीप्] वह स्थान जहाँ कपड़े बुने जाते हैं।
गर्ता—स्त्री० [सं० गर्त+टाप्] १. बिल। २ गुफा।
गर्ताश्रय—पु० [गर्त-आश्रय, ब० स०] बिल मे रहनेवाले जंतु। जैसे—चूहा, खरगोश आदि।
गर्तिका—स्त्री० [सं० गर्त+ठन्—इक, टाप्] =गर्तकी।
गर्द—स्त्री० [फा०] गरदा। धूल।
मुहा० के लिए देखें 'धूल' के मुहा०।
गर्दखोर—वि० [फा०] (कपड़ा या उसका रग) जो गर्द या मिट्टी आदि पडने से जल्दी मैला या खराब न होता हो। जैसे—खाकी रग।
पु० पैर पोछने का टाट आदि।
गर्दखोरा†—वि०=गर्दखोर।
गर्द-गुबार—पु० [फा०] धूल और मिट्टी जो हवा के साथ उडकर इधर-उधर गिरती है।
गर्दन—स्त्री०=गरदन।
गर्दना—पु० दे० 'गरदना'।
गर्दभंग—पु० [हिं० गर्द+भग] एक प्रकार का गाँजा जिसे चूरू चरस भी कहते हैं।
गर्दभ—पु० [सं० √गर्द् (शब्द करना)+अभच्] १ गधा। गदहा। २ सफेद कुमुदनी या कोई। ३ विडग। ४ गदहिला नाम का कीड़ा।
गर्दभक—पु० [सं० गर्दभ+कन्] १ गुबरैला नाम का कीडा। २ एक प्रकार का चर्मरोग।
गर्दभ-याग—पु० [तृ० त०] अवकीर्ण याग।
गर्दभांड—पु० [सं० गर्दभ√अम् (जाना)+ड] पलाश या पाकर नामक वृक्ष।
गर्दभा—स्त्री० [सं० गर्दभ+टाप्] सफेद कटकारी।
गर्दभिका—स्त्री० [सं० गर्दभ+ङीप्+कन्-टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार का रोग जिसमें लाल फुंसियाँ निकलती हैं। गदहिला।
गर्दभी—स्त्री० [सं० गर्दभ+ङीप्] १ गर्दभ की मादा। गधी। २. एक प्रकार का कीडा। ३ अपराजिता लता। ४ सफेद कटकारी। ५ गर्दभिका या गदहिला नामक रोग।
गर्दाबाद—वि० [फा० गर्द+आबाद] १ गर्द या धूल से भरा हुआ। २. टूटा-फूटा। ध्वस्त। ३ उजाड। वीरान। ४. बेसुध। बेहोश।
गर्दालू—पु० [फा० गर्द+आलू] आलूबुखारा।
गर्दिश—स्त्री० [फा०] १. चारो ओर घूमने की क्रिया या भाव।

चक्कर। २. विपत्ति या संकट मे डालनेवाला दिनो (या भाग्य) का फेर।

गर्दुआ—पु० = गरदुआ।

गर्दूं—पु० [फा०] १ आकाश। २ गाडी। रथ।

गर्द्ध—पु० [स० गृध् (चाहना)+घञ्] [वि० गर्द्धी, गर्द्धित] १. लालच। लोभ। २. गर्दभाड। पाकर।

गर्द्धित—वि० [स० गर्द्ध+इतच्] लोभ से युक्त। लुब्ध।

गर्द्धी (द्धिन्)—वि० [स० √गृध्+णिनि] [स्त्री० गर्द्धिनी] १ लोभी। २ लुब्ध।

गर्नाल—स्त्री० = गरनाल।

गर्व—पु० = गर्व।

गर्वा—पु० [?] १. मिट्टी का वह पात्र जो कुछ देवी-देवताओ की पूजा के लिए मगल कलश के रूप मे सजाकर प्रस्थापित किया जाता है। २. वह गीत जो उक्त पात्र को प्रस्थापित करते समय गाया जाता है। (गुजरात)

गर्वीला—वि० = गर्वीला।

गर्भंड—पु० [गर्भ-अड, प० त०, पररूप] बहुत बडी या उभरी हुई नाभि।

गर्भ—पु० [स० √गृ (सीचना)+भन्] १ पेट के अन्दर का भाग। उदर। २. स्तनपायी (मादा) प्राणियो के शरीर का वह भीतरी भाग जिसमे शुक्र और रज के सयोग से नये प्राणी उत्पन्न होते, बढते, पनपते और अत मे जन्म लेते हैं। गर्भाशय। ३ उक्त के आधार पर मादा स्तनपायी प्राणियो के गर्भवती होने की अवस्था या काल।

मुहा०—गर्भ गिरना = गर्भपात होना। गर्भ रहना = पेट मे बच्चा आना।

४. लाक्षणिक अर्थ मे, किसी वस्तु का वह भीतरी भाग जिसमे कोई चीज छिपी या दबी रहती अथवा पनपती, बढती या स्थित रहती है। जैसे—यह बात तो अभी भविष्य के गर्भ मे ही है। ५ गर्भ मे आनेवाला नया जीव। (क्व०) ६ फलित ज्योतिष मे नये मेघो की उत्पत्ति जिससे वृष्टि का आगम होता है।

गर्भक—पु० [स० गर्भ√कै (शब्द)+क] १ पुत्रजीव वृक्ष। पतजिव। २. फूलो का गुच्छा जो बालो मे खोसा जाता है। [गर्भ+कन्] दो रातो और उनके बीच के दिन की अवधि।

गर्भकार—वि० [स० गर्भ√कृ (करना)+अण्] (व्यक्ति) जिसके संपर्क से स्त्री ने गर्भ धारण किया हो।

पु० सामगान का एक प्रकार का भेद।

गर्भ-काल—पु० [प० त०] १. गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल। ऋतुकाल। २ वह सारा समय जब तक स्त्रियो को गर्भ रहता हो। गर्भ-धारण से प्रसव तक का समय।

गर्भ-केसर—पु० [प० त०] फूल के बीच मे के वे केसर या सीके जो उसके स्त्रीलिंग अग के रूप मे होते हैं। उसी के साथ पराग केशर का सपर्क होने पर फल और बीज उत्पन्न होते हैं। (कार्पेल, पिस्टिल)

गर्भ-कोष—पु० [प० त०] गर्भाशय।

गर्भ-गृह—पु० [उपमि० स०] १. मकान के मध्य की कोठरी। बीच का घर। २ मन्दिर के बीच की वह कोठरी जिसमे प्रतिमा या मूर्ति रहती है। ३. वह कोठरी जिसमे गर्भवती स्त्री सन्तान प्रसव करती है। सौरी। ४ आँगन।

गर्भघाती (तिन्)—वि० [सं० गर्भ√हन् (नष्ट करना)+णिनि] [स्त्री० गर्भघातिनी] गर्भ गिराने या नष्ट करनेवाला।

गर्भ-चलन—पु० [प० त०] गर्भाशय मे बच्चे का इधर-उधर हिलना-डोलना।

गर्भ-च्युति—स्त्री० [प० त०] १. प्रसव। २. गर्भपात।

गर्भज—वि० [सं० गर्भ√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १. जो गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। (अडज, स्वेदज आदि से भिन्न) २. दे० 'जन्म-जात'।

गर्भ-जात—वि० [प० त०] = गर्भज।

गर्भदंश—पु० = गदहा।

गर्भद—वि० [स० गर्भ√दा (देना)+क] गर्भकार।

पु० पुत्रजीव वृक्ष।

गर्भदा—स्त्री० [सं० गर्भद+टाप्] सफेद भटकटैया।

गर्भ-दात्री—स्त्री० [प० त०] = गर्भदा।

गर्भ-दास—पु० [प० त०] [स्त्री० गर्भदासी] दासी का पुत्र, अर्थात् जन्मजात दास। गोला।

गर्भ-दिवस—पु० [च० त०] १. गर्भकाल। २ कार्तिकी पूर्णिमा से लेकर लगभग १९५ दिनो का समय जब कि मेघो के गर्भ मे आने अर्थात् आकाश मे बनने का समय होता है। (बृहत्सहिता)

गर्भ-द्रुत—पु० [प० त०] वैद्यक मे पारे की शुद्धि के लिए किए जानेवाले सस्कारो मे से तेरहवाँ सस्कार।

गर्भ-द्रुह—वि० [स० गर्भ√द्रुह् (बुराई सोचना)+क्विप्] [स्त्री० गर्भ-द्रुहा] गर्भ का द्रोही ; अर्थात् गर्भ न चाहने या उसे नष्ट करनेवाला।

गर्भ-धरा—वि० [प० त०] गर्भ धारण करनेवाली। गर्भवती।

गर्भ-धारण—पु० [प० त०] गर्भ मे नया जीव धारण करना। गर्भवती होना।

गर्भ-नाडी—स्त्री० [प० त०] वह नाडी जो एक ओर गर्भ के बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय से मिली होती है।

गर्भ-नाल—स्त्री० [प० त०] १. फूलो के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ केसर होता है। २ दे० 'गर्भ-नाडी'।

गर्भ-निस्रव—पु० [प० त०] वह झिल्ली जो बच्चे के जन्म लेने पर गर्भ से निकलती है। आँवल। खेड़ी।

गर्भ-पत्र—पु० [प० त०] १. कोपल। गाभा। २ दे० 'गर्भनाल'।

गर्भपाकी (किन्)—पु० [सं० गर्भ-पाक, प० त०, +इनि] साठी धान।

गर्भ-पात—पु० [प० त०] १. गर्भ का गिरना। पेट के बच्चे का पूरी बाढ के पहले गर्भ से निकलकर गिर पडना और व्यर्थ हो जाना। (गर्भ-स्राव से भिन्न, दे० 'गर्भ-स्राव)

गर्भ-पातक—वि० [प० त०] (औषध या पदार्थ) जिसके प्रयोग या व्यवहार से गर्भपात हो जाय। गर्भ गिरानेवाला।

पु० लाल सहिजन।

गर्भ-पातन—पु० [स० प० त०] जान-बूझकर पेट या गर्भ का गिराना, जिससे गर्भस्थ जीव मर जाता है। (यह विधिक दृष्टि से अपराध भी है और नैतिक तथा धार्मिक दृष्टि से पाप भी)।

गर्भ-पातिनी—स्त्री० [स० गर्भपातिन्+ङीप्] १ कलिहारी। २ विशल्या नामक ओषधि।

गर्भपाती (तिन्)—वि० [सं० गर्भ √पत् (गिरना)+णिच्+णिनि] [स्त्री० गर्भपातिनी] गर्भपात करने या गिरानेवाला।

गर्भ-भवन—पु० [ष० त०] १. वह कोठरी जिसमे स्त्री बच्चा प्रसव करती है। सौरी। २ दे० 'गर्भ-गृह'।

गर्भ-मंडप—पु० [ष० त०] १ गर्भ-गृह। २. पति और पत्नी का शयनागार।

गर्भ-मास—पु० [ष० त०] वह महीना जिसमे स्त्री ने गर्भ धारण किया हो।

गर्भ-मोक्ष—पु० [ष० त०] प्रसव।

गर्भरा—स्त्री० [स० गर्भ√रा (देना)+क–टाप्] प्राचीन काल की एक प्रकार की बडी नाव।

गर्भवती—स्त्री० [सं० गर्भ+मतुप्–वत्व, ङीप्] स्त्री, जिसके पेट मे बच्चा हो। गर्भिणी।

गर्भ-वास—पु० [स० त०] १. बच्चे का गर्भाशय मे रहना। २ गर्भाशय।

गर्भ-विज्ञान—पुं० [ष० त०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि गर्भ मे कलल किस प्रकार बनता है, उसमे जीवन का सचार कैसे होता है और उसकी वृद्धि या विकास किस प्रकार होता है। (एम्ब्रायॉलोजी)

गर्भ-व्याकरण—पु० [ष० त०] आयुर्वेद का वह अंग जिसमे बालक के गर्भ मे आने, बढ़ने, जन्म लेने आदि की बातो का विवेचन होता है।

गर्भ-व्यूह—पु० [उपमि० स०] युद्ध मे सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमे सेना अपने सेनापति या रक्षणीय वस्तु को चारो ओर से घेरकर खड़ी होती और लडती थी।

गर्भ-शंकु—पु० [ष० त०] वह सँड़सी जिससे मरा हुआ बच्चा गर्भ मे से निकाला जाता था। (फर्सेप्स)

गर्भ-शय्या—स्त्री० [ष० त०] पेट के अंदर का वह स्थान जिस पर गर्भ स्थित रहता है।

गर्भ-संधि—स्त्री० [मध्य० स०] नाट्य शास्त्र मे एक प्रकार की संधि। जिस संधि मे उपाय कही दब जाय और खोज करने पर बीज का और भी विकास हो उसे गर्भ-संधि कहते हैं।—प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र।

गर्भस्थ—वि० [स० गर्भ√स्था (ठहरना)+क] गर्भ में आया या ठहरा हुआ (बच्चा)।

गर्भ-स्थली—स्त्री० [मयू० स०] गर्भाशय।

गर्भ-स्थापन—पु० [ष० त०] गर्भाशय मे वीर्य पहुँचाकर गर्भ-धारण कराना। (सेमिनेशन)

गर्भ-स्राव—पु० [ष० त०] गर्भ के गिरने या नष्ट होने की वह अवस्था जब कि वह पिंड बनने से पहले बहुत-कुछ तरल रूप मे रहता है। (एबॉर्शन)

विशेष—साधारणत. तीन-चार महीने तक गर्भ तरल रूप मे रहता है और गर्भ-स्राव होने पर वह रक्त के रूप मे बहकर निकल जाता है। पर इससे अधिक बडे होने पर जब वह पिंड का रूप धारण करके निकलता है, तब उसे गर्भपात कहते हैं।

गर्भस्रावी (विन्)—वि० [सं० गर्भ√स्रु (बहना) + णिच्+णिनि] [स्त्री० गर्भ-स्राविनी] गर्भ-स्राव करने या करानेवाला।

पु० हिंताल नामक वृक्ष।

२—११

गर्भ-हत्या—स्त्री० [ष० त०] गर्भ मे आये हुए जीव या प्राणी को किसी प्रकार नष्ट कर देना या मार डालना।

गर्भांक—पुं० [सं० गर्भ-अंक, उपमि० स०] १. नाटक के अंक का एक अंग जिसमें केवल एक घटना का दृश्य होता है। २. एक नाटक में दिखलाया जानेवाला कोई दूसरा नाटक या उसका दृश्य।

गर्भागार—पु० [स० गर्भ-आगार, उपमि० स०] १. गर्भ-गृह। २. आँगन। ३ गर्भाशय।

गर्भाधान—पु० [स० गर्भ-आधान, ष० त०] १. स्त्री के गर्भ या पेट मे पुरुष के वीर्य से जीव या प्राणी की सृष्टि का सूत्रपात। संभोग करके वीर्य गर्भाशय मे स्थित करना या होना। २. गृह्यसूत्र के अनुसार मनुष्य के सोलहो संस्कारो मे से पहला संस्कार जो उस समय होता है जब स्त्री ऋतुमती होने के उपरान्त शुद्ध होती है।

गर्भारि—पु० [सं० गर्भ-अरि, ष० त०] छोटी इलायची।

गर्भाशय—पु० [स० गर्भ-आशय, ष० त०] स्त्रियों या मादा पशुओ के पेट मे वह स्थान जिसमे वीर्य के पहुँचने पर जीव या प्राणी की सृष्टि का सूत्रपात होता है। बच्चेदानी। (यूट्रस)

गर्भिणी—वि० [स० गर्भ+इनि-ङीप्] स्त्री या मादा प्राणी जिसे गर्भ हो। गर्भवती। (प्रेगनैन्ट)

स्त्री० १. खिरनी का पेड़। २ प्राचीन भारत मे एक प्रकार की बड़ी नाव जो समुद्रो मे चलती थी।

गर्भित—वि० [सं० गर्भ+इतच्] १ जिसने गर्भ धारण किया हो। गर्भ से युक्त। २. जिसके गर्भ अर्थात् भीतरी भाग मे कुछ हो या छिपा हो। जैसे—सारगर्भित कथन। ३ भरा हुआ। पूरित। ४. साहित्यिक रचना का एक दोष जो किसी एक भाव के सूचक वाक्य के अन्तर्गत किसी दूसरे भाव का सूचक कोई और वाक्य भी सम्मिलित किये जाने पर होता है।

गर्भी (भिन्)—वि० [स० गर्भ+इनि] १. गर्भवाला। २ गर्भित।

गर्भीला—वि० [सं० गर्भ+हिं० ईला (प्रत्य०)] १ जिसके गर्भ अथवा भीतरी भाग मे कोई चीज स्थित हो। २ (रत्न) जिसके अन्दर से आभा निकलती हो।

गर्भोदक—पु० [स० गर्भ-उदक, ब० स०] पुराणानुसार एक समुद्र जिसमे श्रीकृष्ण को शेषशायी महाविष्णु के दर्शन हुए थे।

गर्भोपघात—पु० [स० गर्भ-उपघात, ष० त०] गर्भ-हत्या।

गर्भोपनिषद्—पु० [स० गर्भ-उपनिषद्, मध्य० स०] अथर्ववेद सम्बन्धी एक उपनिषद् जिसमें गर्भ की सृष्टि, अभिवृद्धि, प्रसव आदि का वर्णन है।

गर्म—वि० [फा०] दे० 'गरम'।

गर्रा—वि० [देश०] लाख के रग जैसा। लाखी।

पु० १. लाखी रंग। २ लाखी रग का घोड़ा। ३. लाखी रंग का कबूतर।

पु० [अ० गर्र] १. अभिमान। घमड। २. कोई ऐसा उग्र कार्य जो, अपने अभिमान और बल के प्रदर्शन के लिए किया गया हो। ३. सतलज नदी का एक नाम जो उसे बहावलपुर के आस-पास प्राप्त है।

स्त्री०=गराड़ी। (बुन्देल०) उदा०—गर्रा पै डोरी डार गुइयाँ बरी डार गुइयाँरी।—लोकगीत।

गर्री—स्त्री० [हिं० गरेरना] १ खलिहान में लगाई हुई डठल की गाँज। २. तागा लपेटने का एक औजार।

गर्व—पु० [स० √गर्व् (अहकार करना)+घञ्] [वि० गर्वित, गर्ववान] १. अपने किसी श्रेष्ठ कार्य, वात, वस्तु, व्यक्ति आदि के सवध मे होनेवाली न्यायोचित अहभावना। जैसे—हमे अपने देश, धर्म तथा सस्कृति पर गर्व है। २ अपनी शक्ति, समर्थता आदि की दृष्टि से मन मे होनेवाली अयुक्तिपूर्ण अहभावना। जैसे—उन्हे अपनी डडेवाजी पर गर्व है। ३ अभिमान। घमड। ४ साहित्य मे वह अवस्था जव मनुष्य अपने किसी गुण या विशेषता के विचार से दूसरो की अपेक्षा अपने को वहुत वढ़ा-चढा समझता है तथा अपने आचरण या व्यवहार से अपनी श्रेष्ठता प्रकट करता है और कभी-कभी अपने उत्कर्ष की भावना से दूसरो की अवज्ञा भी करता है। (इसकी गणना सचारी भावो मे होती है)

गर्वर—वि० [स० √गृ (लीलना)+वरच्] जिसे गर्व हो।

गर्वरी—स्त्री० [स० गर्वर+ङीप्] दुर्गा।

गर्ववंत—वि० [स० गर्ववान्] (व्यक्ति) जिसे अपने अथवा अपनी किसी चीज, वात या व्यवहार पर गर्व हो। अभिमानी। घमडी।

गर्वाना—अ० [स० गर्व] स्वय गर्व करना।
स० किसी को गर्वित करना या कराना।

गर्विणी—वि० स्त्री० [स० गर्व+इनि–ङीप्] १. गर्व करनेवाली (स्त्री०)। २ मान करने या रूठनेवाली। मानिनी।

गर्वित—वि० [स०√गर्व् +क्त] [स्त्री० गर्विता] १. गर्व से युक्त। २. गर्व या अभिमान करनेवाला।

गर्विता—स्त्री० [सं० गर्वित+टाप्] साहित्य मे वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण आदि का अथवा अपने पति या प्रेमी के परम अनुराग का गर्व या घमड होता है।

गर्विष्ठ—वि० [स० गर्व+इष्ठन्] १. जिसे गर्व हो। गर्वीला। २ अभिमानी। घमडी।

गर्वी (विन्)—वि० [स० गर्व+इनि] अभिमानी। घमडी।

गर्वीला—वि० [स० गर्व+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गर्वीली] १. गर्व करनेवाला। गर्व से युक्त। २ अभिमानी।

गर्हण—पु० [स०√गर्ह् (निंदा करना)+ल्युट्–अन] [वि० गर्हणीय, गर्हित] किसी को वहुत वुरा समझकर की जानेवाली उसकी निन्दा। भर्त्सना।

गर्हणा—स्त्री० [स०√गर्ह्+णिच्+युच् –अन्, टाप्] =गर्हण।

गर्हणीय—वि० [स० √गर्ह्+अनीयर्] जिसका गर्हण या निन्दा करना उचित हो। गर्हण का पात्र (अर्थात् निंदनीय या वुरा)।

गर्हा—स्त्री० [स० गर्ह्+अ–टाप्] गर्हणा। निंदा।

गर्हित—भू० कृ० [स० √गर्ह्+क्त] १ जिसकी गर्हणा या निन्दा की गई हो। २. इतना दूषित या वुरा कि उसे देखने पर मन मे घृणा उत्पन्न होती हो।

गर्ह्य—वि० [सं०√गर्ह्+ण्यत्] =गर्हणीय।

गलंती, गलंतीका—स्त्री० [स०√गल् (क्षरण होना)+शतृ–ङीप्+कन्–टाप्] [√गल्+शतृ—ङीप्] १. छोटी कलसी। २. छेददार घडा जिसमे से शिवलिंग पर पानी चूता रहता है।

गलंश—पु० दे० 'गलनंग'।

गल—पु० [स०√गल् (खाना)+अप्] १. गला। कठ। गरदन। २ एक प्रकार का पुराना वाजा। ३ गडाकू मछली। ४. दाल।
पु० हिं० 'गला' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गलफाँसी, गलवहियाँ आदि।

गलई—स्त्री० =गलही।

गल-कंवल—पुं० [स० स० त०] गाय के गले के नीचे का वह भाग जो लटकता रहता है। झालर। लहर।

गलक—पु० [स० गल+कन्] १ गला। २ गड़ाकू मछली। ३ मोती। उदा०—गुहे गलक कुतल मँह कैसे।—जायसी।

गलका—पु० [हिं० गलना] १ हाथ की उँगलियो के अगले सिरे पर होने-वाला जहरीला फोडा जिससे हाथ मे टपक पडती है। इसकी गिनती चेचक या माता मे होती है। २ एक प्रकार की चावुक।

गलकोड़ा, गलखोड़ा—पु० [हिं० गला+कोडा] १. कुश्ती का एक पेंच। २ मालखभ की एक कसरत। ३ एक प्रकार का कोडा या चावुक।

गलगंजन—पु० [हिं० गल+गाँजना] १. शोर-गुल। २ डीग।

गलगंजना—स० [हिं० गलगजन] १. जोर जोर से चिल्लाना। शोर-गुल करना। २ डीग हाँकना।

गल-गंड—पु० [स० त०] एक प्रकार का रोग जिसमे गले की अवटुका नामक ग्रन्थियो मे सूजन होती है और जो वडी गाँठ के रूप मे वाहर निकल आती है। घेघा। (गायटर)

गलगल—स्त्री० [देश०] १ मैना की जाति की एक चिडिया जो कुछ सुर्खी लिये काले रग की होती है। गिरगोटी। गलगलिया। २ एक प्रकार का वड़ा खट्टा नीवू जिसका अचार पडता है। ३ चरवी की वत्ती का वह टुकडा जो चलते हुए जहाजो की सीसे की उस नली मे लगा रहता है जिससे समुद्र की गहराई नापी जाती है। (लश०) ४ एक प्रकार का मसाला जो लकडियो को जोडने अथवा उनके छेद वद करने के काम आता है।

गलगला—वि० [हिं० गलना या गीला] [स्त्री० गलगली] १ भीगा हुआ। आर्द्र। तर। २ आँसुओ से भरा हुआ (नेत्र)। ३ वहुत ही कोमल या मुलायम।

गलगलाना—अ० [हिं० गलना] १ गीला या तर होना। भीगना। २ कठोर पदार्थ का वहुत कोमल हो जाना। ३ (हृदय का) आर्द्र या दयालु होना। मन का कोमल भावो से युक्त होना। ४ हर्षित होना।

गलगाजना—अ० [हिं० गाल+गाजना] १ खुशी से गाल वजाना। २. शोर-गुल करना। ३ डीग मारना।

गलगुच्छा—पु०=गलमुच्छा।

गलगुथना—वि० [हिं० गाल] जिसका शरीर खूव भरा हुआ और गाल फूले हो। जैसे—गलगुथना वच्चा।

गल-ग्रह—पु० [प० त०] १ गले मे पड़ा हुआ कष्टदायक वधन। २. इस रूप मे होनेवाली विपत्ति अथवा सकट। ३. आई हुई वह आपत्ति जो कठिनता से टले। ४ मछली फँसाने का काँटा। ५. गले मे कफ अटकने या रुकने के कारण होनेवाला एक रोग। ६ ज्योतिष के अनु-सार कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी, अमावस्या और प्रतिपदा।

गलघोंटू—वि० [हिं० गला+घोंटना] गला घोंटने या दवानेवाला।

पु० १. ऐसा काम या बात जो गला घोंटनेवाली हो। २. व्यर्थ का और कष्टदायक भार।

गलचा—स्त्री० [?] कबोज देश और उसके आस-पास बोली जानेवाली कुछ बोलियो का वर्ग या समूह।

गलछट—स्त्री०=गलफडा।

गलजँदडा—पु० [स० गल+यत्र, पं० जदरा] १. वह जो सदा पीछे या साथ लगा रहे। गले का हार। २ गले मे लटकाई जानेवाली कपडे की वह पट्टी जो चोट खाये हुए हाथ को सहारा देने के लिए बाँधी जाती है और जिसकी लपेट मे हाथ या कलाई रहती है।

गलजोड—पु०=गलजोत।

गलजोत—स्त्री० [हिं० गला+जोत] १ वह रस्सी जिससे एक बैल का गला दूसरे बैल के गले से बाँधा जाता है। गलजोड। २ गले मे पडा हुआ किसी प्रकार का कष्टदायक बधन। ३. दे० 'गलजँदडा'।

गलझंप—पु० [हिं० गला+झाँपना] हाथी के गले मे बाँधी जानेवाली लोहे की जजीर।

गलतंग—वि० [स० गलित+अग] बेसुध। बेखबर। बेहोश।

गलतंस—पु० [स० गलित+वश] १ ऐसी सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न रह गया हो। लावारिस जायदाद। २ ऐसा व्यक्ति जिसकी सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न रह गया हो।

गलत—वि० [अ०] १. (मौखिक या लिखित प्रश्नोत्तर या हिसाब-किताब) जिसमे कलन या गणन सबधी कोई भूल हो अथवा जो नियम या सिद्धान्त की दृष्टि से ठीक न हो। २ (लेख) जो अक्षरी, व्याकरण आदि की दृष्टि से शुद्ध न हो। जिसमे किसी प्रकार की भूल या भूलें हो। ३ जो तथ्य के अनुरूप न हो। जो असत्य या झूठ हो। जैसे—तुम गलत कहते हो, मैंने कभी ऐसा नही कहा था। ४. जो उचित या विहित न हो। दूषित या बुरा। जैसे—उन्होने गलत रास्ता अपनाया है।

गल-तकिया—पु० [हिं० गाल+तकिया] गाल के नीचे रखा जानेवाला एक प्रकार का गोल छोटा तकिया।

गलतनामा—पु०=शुद्धिपत्र।

गलतनी—स्त्री० [हिं० गला+तनना] बैल के गेराँव मे बाँधी जानेवाली रस्सी। पगहा।

गलत-फहमी—स्त्री० [अ० +फा०] किसी की कही हुई बात का अर्थ या आशय कुछ का कुछ समझना। कोई बात समझने मे कुछ धोखा खाना।

गलतां—वि०=गलतान।

गलता—पु० [फा० गलतान] १ एक प्रकार का बहुत चमकीला, मोटा कपडा जिसका ताना रेशम का और बाना सूत का होता है। २ दीवार मे बनी हुई कँगनी या छज्जी। कारनिस।

गलताड—पु० [स० ष० त०] जूए या जुआठे की वह खूँटी जो अन्दर की ओर होती है।

गलतान—वि० [फा०] १ लडखडाता या लुढकता हुआ। २. घूमता या चक्कर खाता हुआ।

पु० एक प्रकार का रेशमी कपडा।

गलती—स्त्री० [अ० गलत+ई फा०] १ कलन या गणना सबधी भूल। २ नियम, रीति, व्याकरण, सिद्धान्त, आदि की दृष्टि से होनेवाली कोई भूल। अशुद्धि। ३ ठीक प्रकार से कोई काम न करने, न देखने या न समझने की अवस्था या भाव।

पु० [हिं० गलना] अभिषेक-घट जिसमे छिद्र होता है। उदा०—पुन गलती पुजारा, गाडुवा नैव ढालती।

गलथना—पु० [स० गलस्तन, पा० गलत्थन, गलथन] कुछ बकरियों के गले मे लटकता हुआ लबोतरा मास-पिंड।

गलथैली—स्त्री० [हिं० गाल+थैली] पशुओं विशेषत बदरो के गले के अन्दर थैली के आकार का वह अग जिसमे वे खाने की वस्तु पहले भर लेते है और तब बाद मे धीरे-धीरे निकालकर खाते है।

गलदश्रु—वि० [स० गलत्-अश्रु, ब० स०] जिसके आँसू बह रहे हो। रोता हुआ।

गलन—पु० [स० √गल्+ल्युट्—अन्] १ गलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी तरल पदार्थ का किसी पात्र मे से चूना या रिसना।

गलनहाँ—पु० [हिं० गलना+नहँ=नाखून] १ हाथियों का एक रोग जिसमे उनके नाखून गलगलकर निकलने लगते है। २. वह हाथी जिसे उक्त रोग हो।

गलना—अ० [स० गलन] १. ताप की अधिकता के कारण किसी घन पदार्थ का तरल होना। जैसे—बरफ, मक्खन या सोना गलना। २ किसी तरल पदार्थ मे डाले हुए कडे या घन पदार्थ का कोमल होकर उसमे घुल कर मिल जाना। जैसे—दूध या पानी मे चीनी गलना। ३. आग पर रखकर उबाले या पकाये जाने पर किसी कडी वस्तु का इतना नरम हो जाना कि धीरे से उँगली से दबाने पर वह टूट-फूट या दब जाय। जैसे—तरकारी या दाल गलना।

मुहा०—(किसी की) दाल गलना=कौशल, प्रयत्न आदि मे सफलता होना। (प्राय नहिक रूप मे प्रयुक्त) जैसे—यहाँ आपकी दाल नही गलेगी, अर्थात् प्रयत्न सफल न होगा।

४ उक्त के आधार पर किसी वस्तु का इतना नरम, (क्षीण या जीर्ण) हो जाना कि छूने भर से फट जाय। जैसे—रखे-रखे कपडा या कागज गलना। ५ शरीर का क्रमश क्षीण होते-होते बहुत ही दुर्बल और निस्सार होना। जैसे—चिन्ता करते करते उनका शरीर गलकर आधा रह गया है। ६. रोग आदि के कारण शरीर के किसी अग का धीरे-धीरे कटकर नष्ट होना। जैसे—कोढ से पैर या हाथ की उँगलियाँ गलना। ७ बहुत अधिक सरदी के कारण ऐसा जान पड़ना कि पैर या हाथ की उँगलियाँ तरल होकर गिर या बह जायँगी। जैसे—पूस-माघ मे तो यहाँ हाथ-पैर गलने लगते है। ८ इच्छा न होने पर भी व्यर्थ व्यय होना। जैसे—सौ रुपए गल गए। ९ निष्फल अथवा व्यर्थ हो जाना। जैसे—जूए मे दाँव या चौपड के खेल मे मोहरा गलना। १०. गड्ढे आदि मे बनाई या रखी हुई चीज का धीरे-धीरे नीचे धँसना या बैठना। जैसे—कूएँ की बनावट मे जमवट गलना। ११ (किसी नक्षत्र का) वर्षा करना। पानी बरसाना। जैसे—गली रेवती जल को नासै।—भड्डरी। १२ समय से पहले स्राव या पतन होना। जैसे—गर्भ गलना।

गलफडा—पु० [फेफड़ा का अनु०] १ जल में रहनेवाले जीवों का वह अवयव जिससे वे पानी मे साँस लेते है। (यह स्थल मे रहनेवाले प्राणियों के फेफडे का ही आरभिक रूप है)। २ गाल का चमडा।

गलफरा—पु०=गलफडा।

गलफाँस—स्त्री०=गलफाँसी।

गलफाँसी—स्त्री० [हिं० गला+फाँसी] १. गले मे पडी हुई फाँसी या उसका फदा। २ ऐसा बहुत बडा सकट जिससे छुटकारा मिलना बहुत कठिन हो। ३. मालखभ की एक प्रकार की कसरत।

गलफूट—स्त्री० [हिं० गाल+फूटना] (क) अड-बड बकने या (ख) नीद मे बड-बडाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

गलफूला—वि० [हिं० गाल-फूलना] [स्त्री० गलफूली] जिसके गाल फूले हुए हों।

पु० गले के फूलने या सूजने का एक रोग।

गलफेड़—पु० [स० गल-पिंड] गले के आस-पास की गिलटियाँ।

गलबंदनी—स्त्री०=गुलूबद (आभूषण)।

गलबदरी—स्त्री० [हिं० गलना+बदरी=बादल] शीतकाल की बदली जिसमे हाथ-पाँव गलने लगते है।

गलबली†—पु० [अनु०] १ कोलाहल। २ गडबड।

गलबहियाँ (बाहीं)—स्त्री० [हिं० गला+बाँह] दो व्यक्तियो के परस्पर गले मे हाथ डालकर आलिंगन करने की अवस्था या भाव।

गलबा—पु० [अ० गल्ब] अभिभूत करनेवाली प्रबलता। जैसे—नीद का गलबा।

पु०=बलवा (विद्रोह)।

गलमँदरी—स्त्री० [हिं० गाल+मुद्रा] १ व्यर्थ की बकवाद। २. दे० 'गल-मुद्रा'।

गलमुच्छा—पु० [हिं० गाल+मूछ] गालो पर के वे बाल जो बीच मे ठोढी पर के बाल मूँड दिए जाने पर भी बचाकर रखे और बढाये जाते हैं।

गलमुद्रा—स्त्री० [स० ष० त०] शिव के पूजन के समय उन्हे प्रसन्न करने के लिए गाल बजाने (अर्थात् गालो की सहायता से विशिष्ट प्रकार का स्वर निकालने) की क्रिया या भाव। गलमँदरी।

गलवाना—स० [हिं० 'गलाना' का प्रे० रूप] किसी वस्तु को गलाने का काम दूसरे से कराना। किसी को गलाने मे प्रवृत्त करना।

गल-शुंडी—स्त्री० [स० त०] जीभ की जड के पास की छोटी घटी। कौआ। जीभी।

गल-शोथ—पु० [ष० त०] कुछ रोगो (जैसे—जुकाम, तुंदिका, शोथ आदि) के कारण गले के भीतरी भाग मे होनेवाली सूजन और पीडा। (सोर थ्रोट)

गलसिरी—स्त्री० [स० गल-श्री] गले मे पहनने का कठ-श्री नामक गहना।

गलसुआ—पु० [हिं० गाल+सूजन] एक रोग जिसमे गाल के नीचे का भाग सूज जाता और उससे पीडा होती है। कनपेडा।

गलसुई—स्त्री० १ दे० 'गल तकिया'। २ दे० 'गलसुआ'।

गल-स्तन—पु० [स० त०] [वि० गलस्तनी] कुछ बकरियो के गले मे लटकनेवाला मांस-पिंड। गलथना।

गल-स्वर—पु० [ब० स०] एक प्रकार का प्राचीन बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

गल-हंड†—पु०=गलगड (रोग)।

गलही—स्त्री० [स० गल+हिं० ही (प्रत्य०)] नाव का वह अगला कोना जो गोलाकार और कुछ ऊपर उठा हुआ होता है।

गलांकुर—पु० [स० गल-अकुर, मध्य० स०] एक रोग जिसमे गले के अन्दर का कौआ या घटी सूज जाती है। (टान्सिल)

गला—पुं० [स० गल, प्रा० गल, पा० गलो, द्र० गार्, गरोर्, उ० प० ब० गला, गु० गलु०, मरा० गठा, सिं० गरो] १. शरीर का वह गोलाकार लबोतर अग जो धड के ऊपर और सिर के नीचे होता है और जिसके अन्दर साँस लेने, स्वरो का उच्चारण करने और खाने-पीने की चीजे पेट तक पहुँचानेवाली नलिकाएँ होती है। गरदन। ग्रीवा।

मुहा०—**(अपना या दूसरे का) गला काटना**=छुरी, तलवार या किसी धारदार औजार से काटकर सिर को धड से अलग करना और इस प्रकार मृत्यु का कारण बनना। गरदन काटकर हत्या करना। जैसे—चोरो ने चलते-चलाते बुढिया का गला भी काट डाला। **(किसी का) गला काटना**=किसी का सब-कुछ छीन लेना अथवा इसी प्रकार की और कोई बहुत बडी हानि करना। जैसे—दूसरो का गला काट-काटकर ही तो वे बडे आदमी बने है। **(किसी का) गला घोटना**=गला दबाना (दे० आगे)। **(किसी बात या व्यक्ति से) गला छूटना**=कष्ट, सकट आदि (अथवा त्रस्त करनेवाले व्यक्ति) से पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। जान बचना। पिंड छूटना। जैसे—चलो, इनके आ जाने से हमारा गला छूट गया। **(किसी का) गला जकड़ना**=कोई बधन लगाकर या बाधा खडी करके किसी को बोलने से बलपूर्वक रोकना। **(किसी से) गला जोड़ना**=मैत्री या घनिष्ठ सबध स्थापित करना। गहरा मेल-मिलाप पैदा करना। **(किसी का) गला टीपना या दबाना**=(क) हाथ या हाथो से गला इस प्रकार चारो ओर से दबाना कि उसका दम घुट जाय या साँस रुक जाय और वह मर जाय या मरने को हो जाय। (ख) कोई काम करने या स्वार्थ साधने के लिए जबरदस्ती किसी को विवश करना। अनुचित रूप से बहुत अधिक दबाव डालना। **(किसी का) गला पकड़ना**=किसी को किसी बात के लिए उत्तरदायी ठहराना। जैसे—यदि इस युक्ति से हमारा काम न हुआ तो हम तुम्हारा गला पकड़ेंगे। **गला फँसना**=किसी प्रकार के कष्टदायक बंधन मे पड़ना। जैसे—तुम्हारे ही कारण अब इसमे हमारा भी गला फँस गया है। **(किसी का) गला रेतना**=किसी को क्रमश. और निर्दयतापूर्वक बहुत अधिक कष्ट पहुँचाकर अथवा उसकी बहुत अधिक हानि करके अपना मतलब निकालना। जैसे—इस तरह दूसरो का गला रेतकर अपना काम निकालना ठीक नही है। **(कोई बात) गले तक आना**=किसी कार्य, बात या व्यापार की इतनी अधिकता होना कि उसका निर्वाह या सहन करना बहुत अधिक कठिन हो जाय। जैसे—जब बात गले तक आ गई, तब मैं भी बिगड खडा हुआ।

विशेष—जब नदी या बाढ का पानी बढता-बढता आदमी के गले तक पहुँच जाता है, तब वह असह्य भी हो जाता है और आदमी अपने जीवन से निराश भी हो जाता है। लाक्षणिक रूप मे यह मुहावरा ऐसी ही स्थिति का सूचक है।

(कोई चीज या बात) गले पड़ना=इच्छा न होते हुए भी जबरदस्ती या भार रूप में आकर प्राप्त होना। जैसे—यह व्यर्थ का झगडा आकर हमारे गले पटा है। उदा०—' गरे परि की लागि प्यारी कहैये।

(अपने) गले बाँधना=जान-बूझकर या इच्छापूर्वक अपने साथ या पीछे लगाना। उदा०—लोभ पास जेहि गर न बँधाया। —तुलसी। **(किसी के) गले बाँधना, मढ़ना या लगाना**=किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे कोई चीज देना अथवा कोई भार सौंपना। **(किसी को) गले लगाना**=(क) आलिंगन करना। (ख) अपराध, दोष आदि का विचार छोडकर अपना बनाना। जैसे—उच्च वर्णो के लोगो को चाहिए कि वे हरिजनो को गले लगावे।

पद—गले का ढोलना या हार=ऐसी वस्तु या व्यक्ति जो सदा साथ रखा जाय अथवा रहे। जिसका या जिससे जल्दी साथ न छूटे।

२. शरीर के उक्त अग का वह भीतरी भाग जिसमे खाने, पीने, बोलने, साँस लेने आदि की नालियाँ रहती है। मुंह के अन्दर का वह विवर जिसका सबध पेट, फेफडो आदि से होता है।

मुहा०—गला आना या पडना=गले की घटी मे पीडा या सूजन होना। गलाकुर रोग होना। **गला उठाना या करना**=गले की घटी वढ जाने पर उसे उँगली से दवाकर और उस पर कोई दवा लगाकर उसे ऊपर उठाना। घटी बैठाना। **(किसी चीज का) गला काटना**=चरपरी या तीखी चीज खाने पर उसका गले के भीतरी भाग मे हल्की खुजली, चुनचुनाहट या जलन पैदा करना। जैसे—जमीकद या सूरन यदि ठीक तरह से न वनाया जाय तो गला काटता है। **गला घुटना**=प्राकृतिक कारणो अथवा अस्वस्थता, रोग आदि के फल-स्वरूप साँस आने-जाने मे वाधा होना। दम घुटना। **गला जकडना**=गले की ऐसी अवस्था होना कि सहज मे कुछ खाया-पिया या वोला न जा सके। **(किसी चीज का) गला पकडना**=कसैली या खट्टी चीज खाने पर गले मे ऐसा विकार या हलकी सूजन होना कि खाने-पीने, वोलने आदि मे कष्ट हो। जैसे—ज्यादा खटाई खाओगे तो गला पकड़ लेगी। **गला फँसना**=गले के अन्दर किसी चीज का पहुँचकर इस प्रकार अटक फँस, या रुक जाना कि खाने-पीने, वोलने साँस लेने आदि मे कष्ट होने लगे। जैसे—सुपारी खाने से गला फँस गया है। जरा-सा पानी पी लें तो ठीक हो जाय। **(किसी चीज का) गले के नीचे उतरना**=वहुत ही कष्ट से या लाचारी हालत मे किसी चीज का खाया जाना। जैसे—अव तो पानी भी कठिनाई से गले के नीचे उतरता है। **(किसी बात का) गले के नीचे उतरना**=(क) ठीक प्रकार से समझ मे आना। (ख) ग्राह्य, मान्य या स्वीकृत होना। जैसे—उनका उपदेश तुम्हारे गले के नीचे उतरा या नही ?

३ शरीर के उक्त अग का वह अश जिससे वोलने के समय शब्दो आदि का और गाने के समय स्वरो आदि का उच्चारण होता है। स्वर-नाली। जैसे—जव तक गवैये का गला अच्छा न हो तव तक उसके गाने मे रस नही आता।

मुहा०—गला खुलना=गले का इस योग्य होना कि उसमे से अच्छी तरह या ठीक तरह से स्वर निकल सके। **गला गरमाना**=गाने, भाषण देने आदि के समय आरभ मे कुछ देर तक धीरे-धीरे गाने या वोलने के वाद कठ-स्वर का तीव्र या प्रवल होकर पूरी तरह से काम करने के योग्य होना। **गला फटना**=वहुत चिल्लाने, वोलने आदि से अथवा स्वर-नाली मे कोई रोग होने के कारण कठ-स्वर का इस प्रकार विकृत हो जाना कि उससे ठीक, सुरीला और स्पष्ट उच्चारण न हो सके। जैसे—चिल्लाते-चिल्लाते गला फट गया पर तुमने जवाव न दिया। **गला फाड़ना**=वहुत जोर से चिल्ला-चिल्लाकर वोलना और फलत अपना कठ-स्वर कर्णकटु तथा विकृत करना। जैसे—तुम लाख गला फाडा करो, पर वहाँ तुम्हारी सुनता कौन है ? **गला फिरना**=गाने के समय स्वरों और उनकी श्रुतियो पर वहुत ही सहज मे और सुन्दरतापूर्वक अथवा सुरीलेपन से कठ-स्वर का उच्चरित होना अथवा ऊपर और नीचे के स्वरो पर सरलतापूर्वक आना-जाना। जैसे—हर गिटकिरी, तान, पलटे और फदे पर उसका गला इस तरह फिरता था कि तबीयत खुश हो जाती थी। **गला बैठना**=वहुत अधिक गाने, चिल्लाने, वोलने आदि से अथवा कुछ प्रकृत कारणो या विकारो से कठ-स्वर का इतना धीमा या मद पडना कि कठ से होनेवाला शब्दो का उच्चारण सहज मे दूसरो को सुनाई न पडे।

४. कमीज, कुरते, कोट आदि पहनने के कपडो का वह अश जो गरदन पर और उसके चारो ओर रहता है। गेरवान। ५. घडे, लोटे, सुराही आदि पात्रो का वह ऊपरी गोलाकार तग और लवोतरा भाग जो उनके पेट और मुँह के बीच मे पडता है और जिससे होकर उन पात्रो मे चीजे आती-जाती (अर्थात् निकलती या भरी जाती) है। जैसे—गगरे का गला टूट गया है।

गलाऊ—वि० [हिं० गलाना] गलानेवाला।

वि० [हिं० गलना] जो गल सकता हो। गलनशील।

गलाना—स० [हिं० गलना का प्रे० रूप] १. किसी घन या ठोस पदार्थ को इतना अधिक गरम करना या तपाना कि वह तरल हो जाय। जैसे—मक्खन या सोना गलाना। २ कडे और कच्चे अन्नो, तरकारियो आदि को उवाल या पकाकर नरम या मुलायम और खाये जाने के योग्य करना। जैसे-आलू या दाल गलाना। ३ तरल पदार्थ मे किसी क्रिया से कोई विलेय वस्तु घुलाना। जैसे—तेजाव मे चाँदी गलाना। ४ वहुत अधिक चिंता या श्रम करके अपने शरीर को क्षीण और दुर्वल वनाना। जैसे—देश की सेवा मे तन या शरीर गलाना। ५ किसी प्रकार नष्ट या वरवाद करना। ६ ठढक या सरदी का अपनी तीव्रता से हाथ-पैर इतना सुन्न करना कि वे गल कर अलग होते हुए जान पडें। जैसे—हाथ-पैर गलानेवाली सरदी पडना। ७ वास्तु-शास्त्र मे, किसी खडी रचना पर इतना दवाव या वोझ डालना कि वह धीरे-धीरे नीचे धँस कर अदृश्य हो जाय। जैसे—पुल वनाने के लिए कोठी या खभा गलाना।

गलानि—स्त्री०=ग्लानि।

पु० [स०] एक प्रकार की मछली।

गलार—वि० [हिं० गाल] १ वहुत गाल वजानेवाला अर्थात् वकवादी। २ झगडालू।

स्त्री० [?] मैना (पक्षी)।

पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष।

गलारी—स्त्री० [स० गल्प, प्रा० गल्ल] गिलगिलिया नाम की चिडिया। गल-गलिया।

गलावट—स्त्री० [हिं० गलाना] १ गलने की क्रिया या भाव। २ गलने के कारण घटने या नष्ट होनेवाला अश। ३ ऐसी वस्तु जो दूसरी वस्तुओ को गलाने मे सहायक होती हो।

गलि—पु० [स० गडि ड को ल] १ वछडा। २ सुस्त वैल।

गलित—वि० [सं० √गल्+क्त] १. (पदार्थ) जो पुराना या बासी होने के कारण गल या सड गया हो। गला हुआ। २ (तत्त्व या शरीर) जो पुराना होने के कारण रस, सार आदि से रहित हो गया हो। जैसे—गलित अग, गलित यौवन। ३ पुराने होने के कारण जो खडित और जीर्ण-शीर्ण हो चुका हो। नष्ट-भ्रष्ट। ४ जिसमे गलने-गलाने आदि की प्रवृत्ति हो। जैसे—गलित कुष्ठ। ५ चुआ या चुआया हुआ। ६ जो आवेग, उमग आदि की अधिकता के कारण मत्त होकर अ-वश या आपे से बाहर हो गया हो। उदा०—अति मद-गलित ताल फल ते गुरु युगल उरोज उतगनि कौ।—सूर।

गलितक—पु० [सं० गलित√कै (प्रतीत होना)+क] नृत्य मे एक प्रकार की अग-भगी या मुद्रा।

गलित-कुष्ठ—पु० [कर्म० स] आठ प्रकार के कुष्ठो में से एक जिसमे रोगी के अग गल-गलकर गिरने लगते है।

गलित-यौवना—वि० स्त्री० [ब० स०] (स्त्री०) जिसका यौवन बीत जाने के कारण बहुत-कुछ नष्ट हो चुका हो।

गलिया—स्त्री० [हिं० गली] चक्की के ऊपर के पाट मे का वह छेद जिसमे दलने या पीसने के लिए अनाज डाला जाता है।

वि० [सं० गलित] (पशु) जो बहुत ही मट्ठर या सुस्त हो।

गलियारा—पु० [हिं० गली+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री अल्पा० गलियारी] १. गली की तरह का लबा, सीधा रास्ता। २ किसी देश मे से होकर जानेवाला वह स्थल-मार्ग जिस पर एकाधिकार किसी दूसरे देश का होता है। (कारिडोर)

गलियारी—पु० [हिं० गलियारा] छोटी या तग गली।

गली—स्त्री० [सं० गल] १ वह सँकरा मार्ग जिसके दोनो ओर घर आदि बने होते हैं तथा जिस पर चलकर लोग प्राय: घरो को जाते है। (लेन)

पद—गली-कूचा। (दे०)

मुहा०—**गली कमाना**=गली मे झाड़ू देकर या उसकी नालियो, मोरियों आदि साफ करके जीविका उपार्जित करना। **गली गली मारे फिरना**=(क) व्यर्थ इधर-उधर घूमना। (ख) जीविका के लिए इधर से उधर भटकना। (ग) किसी पदार्थ का चारों ओर अधिकता से मिलना।

२ किसी गली के आस-पास के घरो का समूह, मुहल्लो के नामवाचक रूप मे। जैसे—कचौरी गली, गणेश गली आदि।

गलीचा—पु० [फा० गालीच (कालीन चा=तु० काली या कालीन से)] १ ऊन की बुनी हुई एक प्रकार की मोटी चादर जिस पर लोग बैठते है। २. कँकरीली जमीन। (कहार)

गलीज—वि० [अ०] १. गँदला। मैला। २. अपवित्र। नापाक।

स्त्री० १ कूडा-कर्कट। गदगी। २ मल-मूत्र आदि।

गलीत—वि० [सं० गलित] १ गदा या मैला। २ अनुचित या बुरा। ३ दे० 'गलित'।

गलीम*—पु०=गनीम।

गलू—पु० [सं०] एक प्रकार का पत्थर जिससे प्राचीन काल मे मद्यपात्र आदि बनते थे।

गलेफ†—पु०=गिलाफ।

गलेबाज—वि० [हिं० गला+बाज] [भाव० गलेबाजी] १. जिसका गला बहुत अधिक या तेज चलता हो। बहुत अधिक, जोर से या बढ़-बढ कर बातें करनेवाला। २ बहुत सी तानें और पल्टे लेनेवाला और गले का काम अच्छी तरह दिखलानेवाला (गवैया)।

गलेबाजी—स्त्री० [हिं० गला+बाजी] १. बहुत जोर से या बढ-बढ कर बातें करने की क्रिया या भाव। २. गाते समय बहुत अधिक तानें और पलटे लेना।

गलैचा†—पु०=गलीचा।

गलोना—पु० [देश०] एक प्रकार का कधारी या काबुली सुरमा।

गलौ*—पु० [सं० ग्लौ] चद्रमा।

गलौआ—पु० [हिं० गाल] बदरो के गालो के अदर की थैली जिसमे वे जल्दी-जल्दी खाने की वस्तुएँ भर लेते हैं और बाद मे फिर से उसमे से निकालकर चबा-चबा कर खाते हैं।

वि० [हिं० गलाना] १ जो गलाकर फिर से नया बनाया गया हो। २ जो गलाया जाने को हो।

गलौघ—पु० [सं० त०] एक प्रकार का रोग जिसमे गले के अदर सूजन हो जाती है और साँस लेने में कठिनता होती है।

गल्प—स्त्री० [सं० जल्प वा कल्प] १. मिथ्या प्रलाप। गप्प। २ डीग। शेखी। ३. भावपूर्ण या विचार-प्रधान कोई छोटी घटनात्मक कहानी। ४. मृदग के बारह प्रबधो मे से एक।

गल्यारा—पु० दे० 'गलियारा'।

गल्ल—पु० [सं०√गल्+ल] गाल। कपोल।

†स्त्री० [सं० गल्प] १. बात। (पजाब) २. शोर। हल्ला।

गल्लई—स्त्री० [अ० गुल, हिं० गुल्ला] शोर-गुल।

वि० [हिं० गल्ला=अनाज] अनाज या गल्ले के रूप मे होने अथवा दिया-लिया जानेवाला। जैसे—खेत की पैदावार का गल्लई बँटवारा।

गल्लक—पु० [सं०√गल्+क्विप्, गल्√ला (लेना)+क] १. मद्य पीने का पात्र। २ एक प्रकार का राल।

गल्लह—पु० [सं० गल्ल] ख्याति। प्रसिद्धि। उदा०—बात विनोद बमतरं, सुनी दाहिमी गल्लह।—चदवरदाई।

गल्ला—पु० [फा० गल्ल] १. कुछ विशिष्ट प्रकार के पशुओं का झुड। दल। जैसे—बकरियो या भेडो का गल्ला। २ वह थैली या सदूक जिसमे दूकानदार रोज की बिक्री से आनेवाला धन रखते हैं। गुल्लक। जैसे—बोहनी न बट्टा, गल्ले मे हाथ। (कहा०)

पुं० [अ० गल्ल] १. अनाज। अन्न। २ उतना अन्न जितना चक्की मे पीसने के लिए एक बार डाला जाता है। ३. पेड-पौधो आदि की उपज या पैदावार।

पु० [?] एक प्रकार का बेंत जिसे मोला भी कहते हैं।

गल्लाफरोश—पुं० [फा०] अनाज बेचनेवाला व्यापारी।

गल्ली—स्त्री०=गली।

गल्वर्क—पु० [सं०√गल्+उन्, गलु-अर्क ब० स०] प्राचीन भारत मे गलू नामक पत्थर का बननेवाला मद्य-पात्र। गलू पत्थर का बना हुआ प्याला।

गल्ह—वि० [सं० गल्भ] धृष्ट। ढीठ।

†स्त्री० [सं० गल्प] बात।

गल्हाना—स० [हि० गल्ह] १. बातें करना। २. बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग हाँकना।
गवँ—स्त्री० दे० 'गौं'।
गव—पु० [स० गवय] रामचद्र जी की सेना का एक बन्दर।
गवईस†—पु०=गौरीश (शिव)।
गवख†—पु०=गवाक्ष।
गवन—पु० [स० गमन] १. गमन। जाना। २ गति। चाल। उदा०—छाँड़ि सुख-धाम अरु गरुड तजि साँवरो पवन के गवन तें अधिक धायो।—सूर। ३ दे० 'गौना'।
गवनचार—पु० [हि० गवन+चार] विवाह के बाद वधू का पहले-पहल वर के घर जाना। गौना।
गवनना*—अ० [अ० गमन] गमन करना। जाना।
गवना—पु०=गौना।
*अ०=गवनना (जाना)।
गवय—पु० [स०√गु (शब्द करना)+अप्, गव√या (जाना)+क] [स्त्री० गवयी] १. नीलगाय। २ राम की सेना का एक बदर। ३. एक प्रकार का छद जिसके प्रथम चरण मे १९ मात्राएँ होती है और ११ मात्राओं पर विराम होता है। इसका दूसरा चरण आधा दोहा होता है। ४. तिमिंगिल वर्ग का एक स्तनपायी बडा जल-जतु। (ड्यूगाग)
गवरल†—स्त्री०=गौरी।
गवरि—स्त्री०=गौरी।
गवर्नमेंट—स्त्री० [अ०] १ राज्य का शासन करनेवाली सत्ता। शासन। सरकार। २ उन व्यक्तियों का वर्ग या समूह जो देश का शासन और उसके कार्यों का सचालन करते हैं।
गवर्नर—पु० [अ०] १. शासन करनेवाला व्यक्ति। शासक। हाकिम। २ किसी प्रदेश या प्रात का वह सबसे बडा अधिकारी जो सम्राट् अथवा केंद्रीय शासन की ओर से नियुक्त हुआ हो। आज-कल का राज्यपाल।
गवर्नर-जनरल—पु० [अ०] वह प्रधान शासक जिसके अधीन किसी देश के विभिन्न प्रातों के गवर्नर काम करते हैं।
गवर्नरी—स्त्री०[अ० गवर्नर+हि० ई (प्रत्य०)] गवर्नर का काम, पद या शासन।
वि० गवर्नर सबधी। गवनर्र का।
गवमेंट—स्त्री०=गवर्नमेंट।
गवल—पु० [स० गव√ला (लेना)+क।] जगली भैंसा। अरना।
गवष†—पु०=गवाक्ष।
गवहियाँ†—पु० [स० गोघ्न=अतिथि] अतिथि। मेहमान।
वि०, पु०=गँवार।
गवाक्ष—पु० [स० गो-अक्षि, ष० त०] १ दीवारो मे बना हुआ छोटा झरोखा। छोटी खिडकी। २. रामचद्र की सेना का एक बदर।
गवाक्षित—वि० [स० गवाक्ष+इतच्] १ (दीवार) जिसमे गवाक्ष बने हो। २ खिडकीदार (मकान)।
गवाक्षी—स्त्री० [स० गवाक्ष+ङीप्] १ इद्रवारुणी। २ अपराजिता।
गवाख*—पु०=गवाक्ष।
गवाची—स्त्री० [स० गो√अन्च् (गति)+क्विन्—ङीप्] मछलियो की एक जाति का वर्ग।
गवाछ†—पु० =गवाक्ष।
गवादन—पु०[स० गो-अदन, ष० त०] गौओ, बैलो, भैंसो आदि के खाने की घास या चारा।
गवाधिका—स्त्री० [स० गो-अधि√ कै (प्रतीत होना)+क—टाप्] लाक्षा। लाख।
गवामयन—पु०[स०गवाम्-अयन,अलुक् स०] दस या बारह महीने मे पूरा होनेवाला एक वैदिक यज्ञ।
गवार—वि० [फा०] 'गवारा' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के अत मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—खुशगवार, नागवार आदि।
†स्त्री० दे० 'ग्वार'।
गवारा—वि० [फा०] १. जो अगीकृत या गृहीत करने के योग्य हो। २. पचने या हजम होनेवाला। अनुकूल। रुचिकर। ३. बरदाश्त करने या सहने योग्य। सह्य।
गवारिश—स्त्री० [फा०] ओषधियो का चूर्ण। (इसी का अरबी रूप जवारिश है।)
गवालीक—पु० [स० गो-अलीक, च० त०] वह मिथ्या भाषण जो गौ आदि चौपायो के सबध मे हो। (जैन)
गवाश—वि०, पु० [स० गो√अश् (खाना)+अण्] =गवाशन।
गवाशन—वि० [स० गो√अश्+ल्यु—अन] गौ का मास खानेवाला। गो-भक्षी।
पु० १. चमार। २ चाडाल।
गवास—वि० [स० गवाशन] गौ की हत्या करनेवाला।
पु० कसाई।
स्त्री० [हि० गाना] गाने की क्षणिक प्रवृत्ति या शौक। जैसे—कभी कभी आपको भी गवास लगती है।
गवाह—पु० [फा०] १ ऐसा व्यक्ति जिसने कोई घटना स्वय देखी हो अथवा जिसे किसी घटना, तथ्य, बात आदि की ठीक और पूरी जानकारी हो। साक्षी। जैसे—बहुत से लोग इस घटना के गवाह है। २ वह व्यक्ति जो न्यायालय मे अथवा किसी न्यायकर्त्ता के समक्ष अपनी जानकारी बतलावे अथवा तथ्य का सत्यापन या समर्थन करे। साक्षी। ३. वह जो दो पक्षो मे होनेवाले लेन-देन, व्यवहार, समझौते आदि के सचमुच घटित होने के प्रमाण किसी लेख्य पर हस्ताक्षर करे अथवा आवश्यकता होने पर उक्त घटना का सत्यापन या समर्थन करे। (विटनेस, उक्त तीनो अर्थो मे)
गवाही—स्त्री० [फा०] किसी घटना के सबध मे गवाह की कही हुई बात या दिया हुआ बयान। गवाह का कथन। साक्ष्य। (एविडेन्स)
मुहा०—गवाही देना=किसी साक्षी का किसी ओर से समर्थन करना या उसे ठीक बतलाना (**किसी काम या बात मे**) **मन गवाही देना**=मन या अत करण का यह कहना कि यह बात ठीक है अथवा ऐसा होना चाहिए या होगा। जैसे—हमारा मन तो गवाही देता है कि वे अवश्य यहाँ आवेंगे।
गविआ†—स्त्री०=गौ। उदा०—बदल बिआएल गविआ बाँझे।—कबीर।
गविष्टि—स्त्री० [स० गवेष्टि] १. इच्छा या कामना। २ लडने-झगडने की इच्छा या प्रवृत्ति।
वि० [ब० स०] जो गौ या गौएँ लेना-चाहता हो।
गविष्ठ—पु० [स० गवि√स्था (ठहरना)+क] सूर्य।

गवीधुक—पु० [स०√गवेधुक, पृषो, सिद्धि] कौड़िल्ला नामक पक्षी।
गवीश—पु० [स० गो-ईश, ष० त०] १. गोस्वामी। २ विष्णु। ३. साँड।
गवेसी*—वि० [स० गवेषण से] गवेषणा या खोज करनेवाला। उदा०—को वर बाँधि गवेसी होई—जायसी।
गवेजा†—स्त्री० [स० गवेषण?] १. बातचीत। २ वाद-विवाद। बहस।
गवेधु—पु० [स० गवे√धा (धारण करना)+कु, अलुक् स०] कसेई या कौड़िल्ला नामक पक्षी।
गवेधुक—पु० [स० गवेधु+कन्] =गवेधु।
गवेरुक—पु० [स० गो√ईर् (गति)+उकञ्] गेरू।
गवेल†—वि० [हिं० गाँव] [स्त्री० गवेली] १ गाँव या देहात-सबधी। २. गँवार। देहाती।
गवेश—पु० = गवीश।
गवेष—पु० [स० √गवेष् (ढूँढना)+घञ्] =गवेषण।
गवेषक—वि० [स० √गवेष्+ण्वुल्—अक] गवेषणा करनेवाला।
गवेषण—पु० [स०√गवेष्+ल्युट्—अन] १. खोई हुई गाय को ढूँढने का काम। खोजना। २ चाहना। ३ दे० 'गवेषणा'।
गवेषणा—स्त्री० [स०√गवेष्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ गौ पाने की इच्छा करना। २ खोई हुई गौ ढूँढने निकलना। ३ कोई चीज खोजने या ढूँढने का काम। ४ किसी बात या विषय का मूल रूप या वास्तविक स्थिति जानने के लिए उस बात या विषय का किया जानेवाला परिश्रम-पूर्वक अध्ययन और अनुसधान। (रिसर्च)
गवेषित—भू० कृ० [स०√गवेष्+क्त] १. (विषय) जिसके सबध मे गवेषणा हुई हो। २ (कोई नई बात या तथ्य) जिसका अध्ययन, अनुशीलन आदि मे पता चला हो।
गवेषी (षिन्)—वि० [स० √गवेष्+णिनि] गवेषण करनेवाला। गवेषक।
गवेसना*—स० [स० गवेषणा] खोजना। ढूँढना।
स्त्री०=गवेषणा।
गवेसी—वि०=गवेषी।
गवैहाँ—वि० [हिं० गाँव+ऐहा (प्रत्य०)] १ ग्रामीण। देहाती। २. गँवारो की तरह का। देहाती।
गवैया—पु० [हिं० गाना] वह जो सगीत-शास्त्र का ज्ञाता हो और उसके अनुसार अच्छा गाता हो। गायक। (म्यूजीशियन)
गव्य—वि० [स० गो+यत्] गो से उत्पन्न या प्राप्त। जैसे—दूध, दही, घी गोबर, गोमूत्र आदि।
पद—पंच-गव्य। (देखे)
पु० १ गौओं का झुड। २ दे० 'पच-गव्य'।
गव्या—स्त्री० [स० गव्य+टाप्] १. गौओं का झुड। २ दो कोस की दूरी या नाप। ३. ज्या। ४. गोरोचन।
गव्यूत—पु०=गव्यूति।
गव्यूति—स्त्री० [स० गो-यूति, ष० त०, अव् आदेश] दो कोस या दो हजार धनुष की दूरी की एक प्राचीन नाप।
गश—पु० [अ० गशी से फा०] किसी प्राणी के सज्ञाहीन होने की अवस्था। बेहोशी। मूर्च्छा।
गश्त—पु० [फा०] सुरक्षा बनाये रखने और अनियंत्रित बातो का पता लगाने तथा उन्हे रोकने के लिए समय-समय पर किसी अधिकारी का किसी क्षेत्र मे अथवा उसके चारो ओर घूमना।
क्रि० प्र०—लगाना।
गश्तसलामी—स्त्री० [फा० गश्त+अ० सलाम] वह भेंट या नजर जो दौरे पर आनेवाले हाकिमो को दी जाती थी।
गश्ती—वि० [फा०] १. चारो ओर गश्त लगानेवाला। जगह-जगह घूमता-फिरता रहनेवाला। जैसे—गश्ती पुलिस। २. जो चारों ओर सभी सबद्ध व्यक्तियों के पास भेजा जाता हो। जैसे—गश्ती चिट्ठी, गश्ती हुक्म।
स्त्री० १. आवारो की तरह चारो ओर चक्कर लगानेवाली स्त्री। २. कुलटा। व्यभिचारिणी।
गस†—स्त्री०=गाँस।
गसना—स० [स० कषण=कसना] १. कस या जकड़कर बाँधना। गाँथना। २ बुनावट मे बाने के तागो को आपस मे अच्छी तरह मिलाकर बैठाना। ३ दे० 'गसना'।
†स० =ग्रसना।
गसीला—वि० [हिं० गसना] [स्त्री० गसीली] १ जकड़ा या बँधा हुआ। २. गठा हुआ। गठीला। ३. (कपड़ा) जिसके सूत सूत्र सटे या मिले हों। गफ।
गस्त†—स्त्री०=गश्त।
गस्सा†—पु० [स० ग्रास, प्रा० गास, गस्स] भोजन का कौर। ग्रास।
मुहा०—गस्सा मारना=जल्दी जल्दी कौर या ग्रास मुँह मे रखना।
गहँडिल†—वि० [हिं० गड्ढा] गड्ढे मे का अर्थात् गँदला (पानी)।
गहक†—स्त्री० [हिं० गहकना] गहकने की क्रिया या भाव।
गहकना—अ० [स० गद्गद] १. प्रबल चाह या लालसा से युक्त होना। ललकना। २ आवेग या उमग मे आना।
गहकोड़ा†—पु० =गाहक (दलाल)।
गहक्कना—अ०=गहकना।
गहगच—पु० [अनु०] १ दलदल। २ जजाल। झझट।
गहगड्ड—वि० [स० गह=गहरा+गड्ड=ढेर] १. गहरा या घोर (नशा)। २ इकट्ठा और बहुत अधिक। जैसे—गहगड्ड माल मारना।
गहगह*—वि० =गहगहा।
गहगहा—वि० [स० गद्गद्] १ परम प्रसन्न। प्रफुल्लित। २. उमग से भरा हुआ। ३. धूम-धामवाला। (बाजा)
गहगहाना—अ० [हिं० गहगहा] १. बहुत प्रसन्न होना। आनद से फूलना। २ फसल या हरियाली का लहलहाना।
स० बहुत अधिक प्रसन्न या प्रफुल्लित करना।
गहगहे—क्रि० वि० [हिं० गहगहा] १. बहुत प्रफुल्लता से। प्रसन्नतापूर्वक। बहुत अच्छी तरह। उदा०—ते बहुरे बोलत गहगहे। २ जोरो से। ३. धूम-धाम से।
गहगौर†—वि० [हिं० गहगहा+गौर=गोरा] [स्त्री० गहगौरी] बहुत अधिक प्रसन्नता के कारण जिसका गौर वर्ण खूब खिला हो। उदा०—पूरन जोबन है गहगौरी।—नददास।
गहडोरना—स० [देश०] (पानी) गदा करना।

गहथा†—वि० [स० ग्रस्त] (चद्रमा या सूर्य) जिसे ग्रहण लगा हो। उदा०—गहथा आथा गहथा ऊगे।—भड्डरी।

गहन—वि० [स० गाह (विलोना) +ल्युट्, ह्रस्व] १. (जलाशय) इतना या ऐसा गहरा जिसकी थाह जल्दी न मिले। जैसे—गहन ताल या दह। २ (स्थान) जिसमे प्रवेश करना वहुत ही कठिन हो। दुर्गम। ३ (वात या विषय) जो जल्दी सवकी समझ मे न आ सके। दुरूह। जैसे—गहन विषय। ४ घना। निविड। जैसे—गहन वन।

पु० १ गहराई। गहरापन। २ अभेद्य या दुर्गम स्थान। ३ चारो ओर से घिरा या छिपा हुआ स्थान। ४ गुफा। ५ जगल। ६ कष्ट। दुख। ७ जल। पानी। ८ कलक।

पु० [स० ग्रहण, प्रा० गहण, ग्रहण] [स्त्री० हि० गहना] १ गहने या पकडने की क्रिया या भाव। २ धारण करने की क्रिया या भाव। ग्रहण। ३ जिद। टेक। हठ। ४. गहना नामक उपकरण या औजार। ५ पानी वरसने पर धान के खेतो मे की जानेवाली हलकी जोताई।

*वि० (यौ० के अत मे) पकड़नेवाला।

†पु० [हि० गहना] कोई चीज वधक या रेहन रखने की क्रिया या भाव।

†पु० =ग्रहण।

गहनता—स्त्री० [स० गहन+तल्—टाप्] १ गहन होने की अवस्था या भाव। २ दुर्गमता। ३. गभीरता। गहराई।

गहना—स० [वै० स० गृभायति, गृह्णाति, स० ग्रह, प्रा० गिण्हइ, सिं० गिन्हणु, उ० धेनू, सिंह० गन्नवा, मरा० घेणे] १. हाथ से कसकर या अच्छी तरह से पकडना। जैसे—चरण गहना।

मुहा०*—**गह डारना**=पकडकर गिरा या दवा देना। उदा०—तन निरवैर भया सव ह्निन कै, काम क्रोव गहि डारा।—कवीर।

२ धारण करना। जैसे—शस्त्र गहना। ३ ग्रहण करना। जैसे—हठ गहना।

पु० [स० ग्रहण=धारण करना] १ शरीर पर पहनने के अलकार या आभूषण। जेवर।

मुहा०—**(कोई चीज) गहने रखना**=किसी के पास वधक या रेहन रखना।

२ कुम्हारो का एक औजार जिसका उपयोग घडे आदि वनाने मे होता है। ३ एक प्रकार का उपकरण जिससे खेतो की घास निकाली जाती है।

†स० =गाहना।

गहनि—स्त्री० [हि० गहना (क्रि०)] १. गहने अर्थात् धारण करने या पकडने की क्रिया या भाव। २ जिद। टेक। हठ।

गहनी—स्त्री० [?] १ मसालो से नाव के छेद आदि वद करने की क्रिया। २ चौपायो का एक रोग जिसमे उनके दाँत हिलने लगते है। ३ गहना नामक उपकरण या औजार।

गहनु*—वि०=गहन।

पु०=ग्रहण।

गहने†—क्रि० वि० [हि० गहना=वधक] वधक या रेहन के रूप मे।

वि० वधक या रेहन रखा हुआ।

गहवर—वि० [स० गह्वर] १. गभीर। गहरा। २. दुर्गम। विकट। ३ घवराया हुआ। उद्विग्न। व्याकुल। ४. वेचैन। विकल। ५. किसी के ध्यान मे इतना मग्न या लीन होना कि आस-पास की वातो की कुछ भी खवर न हो। ६ चटकीला। चमकदार। उदा०—गंगा गहवरि पिअरि चढउवै, होरिल जव होइहैं हो।—लोकगीत। ७. घना। निविड। उदा०—जँह आवे तम पुज कुज गहवर तरु छाही।—नददास।

गहवरन—स्त्री० [हि० गहवरना] व्याकुलता। घवराहट।

गहवरना*—अ० [हि० गहवर] १ घवराना। २ वेचैन या विकल होना। ३ करुणा आदि से जी भर आना।

गहवराना—स० [हि० गहवरना] घवडा देना।

अ०=गहवरना।

गहभरना—स० [हि० भरना] अच्छी तरह भरना।

गहमह—स्त्री० [अनु०] १. चहल-पहल। रौनक। २. जगमगाहट। उदा०—गई रवि किरण ग्रहे थई गहमह—प्रिथीराज।

गहमहना—अ० [हि० गहगहाना] वहुत प्रसन्न होना।

गहमागहम—स्त्री० [हि० गहमना] चहल-पहल। रौनक।

गहम्मह—वि० [स० गहन] गहरा। उदा०—घटिय सेस दिन रह्यौ सवै भर भीर गहम्मह।—चदवरदाई।

गहर—स्त्री० [?] देर। उदा०—कीजै नगहर वेग मेरी दुख हर मेरे।—सेनापति।

पु० [स० गह्वर] १ दुर्गम। २ गूढ।

*वि०=गहरा।

*स्त्री० =गहराई।

गहरगूल—वि० [हि० गहरा] अत्यन्त गहरा।

गहरना—अ० [हि० गहर=देर] देर लगाना। विलव करना।

अ० [अ० कट्टर] १ झगडना। २ कुढना। ३ क्रोव करना।

गहरवार—पु० [गहरिदेव=एक राजा] क्षत्रियो की एक जाति।

गहरा—वि० [स० गभीर, पा० गामीरो, प्रा० गहीर, उ० गहिर, प० गैरा, सिं० गहरो, गु० घेरु, ने० गैरो, मरा० गहिरा] [वि० स्त्री० गहरी] [भाव० गहराई, गहरापन] १ जिसका तल चारो ओर के स्तर या विस्तार से नीचे की ओर अधिक दूरी तक हो। जैसे—गहरा कूआँ, गहरा वरतन, गहरी नदी। २ (पानी) जिसकी थाह वहुत नीचे हो। गभीर 'उथला' या 'छिछला' का विपर्याय। ३. लाक्षणिक अर्थ मे (विषय या व्यक्ति) जिसकी थाह न मिलती या न लगती हो। गूढ। रहस्यमय। 'ओछा' का विपर्याय।

पद—गहरा पेट=ऐसा हृदय जिसमे छिपी हुई वातो का जल्दी औरो को पता न चले।

मुहा०—गहरे मे चलना=ऐसा आचरण या व्यवहार करना जिसका भेद सहज मे सवको न मालूम हो सके।

४ जो अदर या भीतर की ओर अधिक दूरी तक चला गया हो। जैसे—गहरा मकान। ५ (रग) जो वहुत अधिक चटकीला हो। 'हलका' का विपर्याय। ६. (आँख) जिसमे नीद भरी हो। ७. साधारण की अपेक्षा वहुत अधिक। जैसे—गहरी दोस्ती।

पद—गहरा असामी=धनी या मालदार व्यक्ति। **गहरा हाथ**=(क) भारी आघात। (ख) भारी रकम। **गहरे लोग**=चतुर या सयाने लोग।

मुहा०—गहरी घुटना=(क) घनिष्ठता होना। (ख) गहरी भाँग छनना। **गहरी छनना**=गहरी घुटना।

८. जिसका परिणाम या फल बहुत उग्र या तीव्र हो। जैसे—गहरा नशा, गहरी चोट। ९ विकट।

गहराई—स्त्री० [हिं० गहरा+ई० (प्रत्य०)] १ गहरे होने की अवस्था या भाव। गहरापन। २ (विषय आदि की) गभीरता या गहनता। ३ घनता। निविडता।

गहराना†—अ० [हिं० ग्रहण] गहरा होना। उदा०—मध्या का गहराया झुटपुट। भीलो का-सा धरे सिर मुकुट।—पत।

स० गहरा करना। जैसे—कूआँ गहराना।

अ० [स० गह्वर, पु० हिं० गभुराना] १. जिद या हठ करना। अडना। २ मान, रोष आदि के कारण हंठो मे बुडबुडाना। गभुराना। उदा०—दोऊ अधिकाई भरे, एकै गौं गहराइ।—विहारी।

गहराव†—पु०=गहराई।

गहरु*—स्त्री०=गहर (देर या विलव)।

गहरे†—क्रि० वि० [हिं० गहरा] १ अच्छी तरह। २ यथेष्ट।

गहरेबाज—वि० [हिं० गहरा+बाज] [भाव० गहरेबाजी] गहरे मे अर्थात् तेजी से चलने या चलानेवाला (एक्का और उसका घोडा)।

गहरेबाजी†—स्त्री० [हिं० गहरा+बाजी] एक्के के घोडे की खूब तेज कदम चाल।

गहलौत—पु० [?] राजपूताने के क्षत्रियो का एक वश।

गहवर—पु० [स० गह्वर] १ कदरा। गुफा। २ देवालय। मदिर।

गहवरिया—वि० [स० गह्वर] १. गहरा। २. सघन। उदा०—तरु गहवरिया थिय तरुण।—प्रिथीराज।

गहवा†—पु० [हिं० गहना=पकडना] सँडसी।

गहवाना—स० [हिं० गहना का प्रे०] किसी से पकडने का काम कराना। पकडवाना। गहाना।

गहवारा—पु० [फा०] १ झूला। २ पालना।

गहव्वर—वि० दे० 'गह्वर'।

गहाई†—स्त्री० [हिं० गहना] गहने या गहाने अर्थात् पकडने या पकड़वाने की क्रिया या भाव। पकड।

गहागड्ड—वि०=गहगड्ड।

गहागह—वि०=गहगहा।

गहाना—स० [हिं० गहना] १ किसी को कुछ गहने या धारण करने मे प्रवृत्त करना। पकड़ाना। २ (कष्ट, विपत्ति आदि से) ग्रस्त या युक्त कराना।

गहासना*—स०=ग्रसना। उदा०—जौ चदहिं पुनि राहु गहासा।—जायसी।

गहिरदेव—पु० [हिं० गहिर+देव] काशी के एक राजकुमार जिसे गहरवार लोग अपना आदि पुरुष मानते है।

गहिरा†—वि०=गहरा।

गहिराई†—स्त्री०=गहराई।

गहिराव†—पु०=गहराव।

गहिरो*—वि०=गहरा।

गहिला†—वि० [हिं० गहेला] [स्त्री० गहिली] उन्मत्त। पागल।

गहिलाना—स० [स० गाहन से] १. प्रवाहित करना। बहाना। २ धकेल कर दूर करना या हटाना। उदा०—. .जउ काजल गहिलाइ।—ढोलामारू।

गहिलोत—पु०=गहलौत।

गहीर*—वि० १ =गहरा। २ =गभीर।

गहीला—वि० [हिं० गहेला] [स्त्री० गहेली] १. उन्मत्त। पागल। २ अभिमानी। गर्वीला।

गहु†—स्त्री० [स० गह्वर या गैव] तग या सँकरा मार्ग। गली।

गहुआ—पु० [हिं० गहना=पकडना] छोटे मुँहवाली एक प्रकार की सँडसी।

गहुरी—स्त्री० [हिं० गहना] १ किसी चीज को पकडने या पकड़वाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ किसी दूसरे के माल को अपने यहाँ हिफाजत मे रखने की मजदूरी।

गहेजुआ†—पु० [देश०] छछूँदर।

गहेलरा†—वि०=गहेला।

गहेला—वि० [हिं० गहना=पकडना+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० गहेली] १ कोई चीज ग्रहण या धारण करनेवाला। जैसे—गरब गहेला। २ अभिमानी। गर्वीला। ३ उन्माद रोग से ग्रस्त। पागल। विक्षिप्त। ४ गँवार।

गहैया—वि० [हिं० गहना+ऐया (प्रत्य०)] १. गहने या पकड़नेवाला। २. अंगीकार, स्वीकार या ग्रहण करनेवाला।

गह्वर—पु० [स० √गाह् (छिपाना)=वरच् पृषो० सिद्धि] १ ऐसा अंधेरा और गहरा स्थान जिसके अदर की चीजो या बातो का बाहर से कुछ भी पता न चले। २. दुर्भेद्य और विषम स्थान। ३. छिपने या छिपकर रहने आदि के लिए जमीन मे खुदा या खोदा हुआ कोई अंधेरा और गहरा स्थान। जैसे—गुफा, बिल, विवर आदि। ४. झाड़ियों या लताओ से घिरा हुआ स्थान। कुज। ५. जंगल। वन। ६ बहुत ही गभीर और गूढ बात या विषय। ७ दभ, पाखड या इसी प्रकार की और कोई बात। ८. जल। पानी। ९ रुदन। रोना।

वि० १ दुर्गम। विषम। २ छिपा हुआ। गुप्त। ३ गभीर। गहरा।

गह्वरी—स्त्री० [स० गह्वर+ङीप्] कदरा। गुफा।

गाँकर†—स्त्री० दे० 'गाकरी'।

गांग—वि० [स० गगा+अण्] गगा-सबधी। गगा का।

पु० १ गगा का किनारा या तट। २. भीष्म। ३ कार्त्तिकेय। ४. वर्षा का जल। ५. सोना। स्वर्ण। ६. धतूरा। ७ बडा तालाब। ताल। ८ हिलसा मछली।

*स्त्री०=गगा। उदा०—गाँग जउँन जौ लहिजल तौ लहि अम्मरमाथ।—जायसी।

गांगट—पु० [स० गाग√अट् (गति)+अच्] केकड़ा।

गाँगन†—स्त्री० [?] एक प्रकार की फुँसी या छोटा फोड़ा।

गांगायनि—पु० [स० गगा+फिञ्-आयन] १ भीष्म। २ कार्त्तिकेय। ३ एक प्रवरकार ऋषि।

गांगी—स्त्री० [स० गाग+ङीप्] दुर्गा।

गांगेय—वि० [स० गगा+ढक्-एय] १ गगा-सबधी। २. गगा से उत्पन्न। पु० १ भीष्म। २. कार्त्तिकेय। ३. सोना। स्वर्ण। ४ धतूरा।

५ कसेरू। ६ हिलसा मछली। ७ दक्षिण भारत के गगवाडी प्रदेश का एक प्राचीन राजवश।

गांगेयी—स्त्री० [सं० गागेय+ङीप्] हिलसा मछली।

गांगेरुक—पु० [स० गाग√ईर् (गति) +कु+कं] गोरख इमली का बीज।

गांगेरुका—स्त्री० [स० गागेरुक+टाप्] १ नागवल्ली। २ एक प्रकार का क्षुद्र अन्न।

गांगेरुकी—स्त्री० [स० गागेरुक+ङीप्] गागेरुका।

गांगेष्ठी—स्त्री० [स० गागे√स्था (ठहरना)+क-ङीप्, अलुक् स०] एक प्रकार की लता। कटशर्करा।

गांग्य—वि० [स० गंगा+व्यञ्] १ गगा का। २ गगा मे या गगा से उत्पन्न होनेवाला।

गाँछना†—स०=गूथना।

गाँज—पु० [हिं० गाँजना] १ गाँजने अर्थात् ढेर लगाने की क्रिया या भाव। २ ढेर। राशि। जैसे—भूसे या लकडी का गाँज।

गाँजना—स० [फा० गज] ढेर या राशि लगाना। एक के ऊपर एक रखना या लगाना। जैसे—भूसा गाँजना, लकडी गाँजना।

स० [स० गजन] तोडना-फोडना। नष्ट करना। उदा०—अई चीत गढ और सूं तू गाँजियो न जाय।—बाँकीदास।

गाँजा—पु० [स० गञ्जा, गृज, प्रा० उ० गजा, ब० मरा० गाँजा, सिं० गाँज़ी, गु० गाँजे] १ भाँग की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी मादक सूखी कलियाँ या फूल चिलम मे रखकर तमाकू की तरह पीये जाते हैं।

गाँठ—स्त्री० [स० ग्रथि, पा० गठि] [वि० गँठीला] १ कपडे, डोरे, रस्सी आदि के सिरो को घुमाकर और एक दूसरे मे फँसाकर कसने या बाँधने से बननेवाला रूप जो आस पास के तलो से कुछ उभरा हुआ, गोलाकार और मोटा होता है। ग्रथि। गिरह। जैसे—कोई चीज बाँधने के लिए रस्सी मे गाँठ लगाना।

मुहा०—गाँठ जोड़ना या बाँधना=(क) विवाह के समय अथवा उसके बाद कोई धार्मिक शुभ कार्य करने के समय वर और वधू के कपडो के पल्ले या सिरे आपस मे उक्त प्रकार से बाँधना। (ख) परस्पर बहुत ही घनिष्ठ सबध स्थापित करना।

२ डोरे या रस्सी के किसी अश के घूमफिरकर फदा बनाने और उस फदे मे उलझने या फँसने से बननेवाला उक्त प्रकार का रूप। जैसे—इस डोरे या नख मे कई जगह गाँठे पड गई है। ३ कोई चीज बाँधकर अपने पास रखने के लिए कपडे के पल्लो को आपस मे फँसाकर दिया जानेवाला उक्त प्रकार का रूप। ४ उक्त के आधार पर कोई चीज अपने अधिकार मे होने की अवस्था या भाव। उदा०—खोटे राम गाँठ लिख डोलै महँगी वस्तु मोलावै।—कबीर।

मुहा०—किसी की गाँठ कतरना या काटना= किसी की गाँठ से बँधा हुआ या किसी के पास का धन चालाकी या चोरी से ले लेना। चुरा या ठग कर ले लेना। **(कोई बात) गाँठ बाँधना**=किसी बात पर इस उद्देश्य से पूरा ध्यान देना कि वह सदा बहुत अच्छी तरह याद रहे। जैसे—हमारी बात गाँठ बाँध रखो, किसी समय बहुत काम आवेगी।

पद—गाँठ का=अपने पास का। पल्ले का। जैसे—बात की बात मे गाँठ के दस रुपए खर्च हो गए। **गाँठ का पूरा**=जिसके पास यथेष्ट धन हो। **गाँठ से**=अपने पास से। पल्ले से। जैसे—गाँठ से निकालकर खरच करना पडे, तब पता चले।

५ किसी चीज की बँधी हुई बडी गठरी। गट्ठर। जैसे—कपडे या रेशम की आज चार गाँठे आई है। ६ वानस्पतिक क्षेत्र मे वृक्षो के काडो, टहनियों आदि मे बीच-बीच मे होनेवाला उभारदार, गोलाकार, मोटा अश या भाग। पर्व। पोर। (बल्ब) जैसे—ईख या बाँस मे होनेवाली गाँठें। ७ उक्त आकार के आधार पर कोई उभारदार, गोलाकार और ठोस चीज या रचना। जैसे—प्याज की गाँठ, हल्दी की गाँठ।

पद—गाँठ-गँठीला (देखें)।

८ शरीर के अगो मे का जोड या सधि-स्थान। जैसे—आज तो हमारी गाँठ-गाँठ मे दरद हो रहा है। ९ उक्त के आधार पर मन मे जमा या बैठा हुआ किसी प्रकार का दुर्भाव, द्वेष या वैर जो पारस्परिक सद्भावना के अभाव का सूचक होता है। उदा०—साधू वही सराहिये जाके हिये न गाँठ।

मुहा०—मन की गाँठ खोलना=मन मे छिपा हुआ दुर्भाव स्पष्टरूप से इसलिए कहना कि आगे के लिए सफाई हो जाय। **मन मे गाँठ पड़ना**=मन मे दुर्भाव, द्वेष या वैर-विरोध का भाव जमना या बैठना। जैसे—मेरे पिया के जिया मे पड गई गाँठ, कौन जतन से खोलूँ।—स्त्रियो का गीत।

१० किसी प्रकार की उलझन या झगडे-बखेडे की अथवा पेचीदी बात या स्थिति।

मुहा०—गाँठ खुलना=उलझन या झझट दूर होना। पेचीदी समस्या का निराकरण या समाधान होना।

११. कटोरी के आकार का एक प्रकार का घुँघरूदार गहना जो कोहनी के ऊपर पहना जाता है।

गाँठकट—पु० [हिं० गाँठ+काटना] गाँठ काटनेवाला व्यक्ति। गिरहकट।

गाँठ गँठीला—वि० [हिं० गाँठ] जिसमे जगह-जगह कई या बहुत-सी गाँठे पडी हो। जैसे—टूटे से फिर के जुडे तो गाँठ-गँठीला होय। (कहा०)

गाँठगोभी—स्त्री० [हिं० गाँठ+गोभी] गोभी की जाति का एक प्रकार का कद जिसके पत्तो का सपुट गोल और बडी गाँठ के रूप मे होता है और जिसकी तरकारी बनती है।

गाँठदार—वि० [हिं० गाँठ+दार (प्रत्य०)] जिसमे गाँठ या गाँठे पडी हो। जैसे—गाँठदार लकडी।

गाँठना—स० [स० ग्रथन, पा० गठन] १. गाँठ देना, बाँधना या लगाना। २. दो चीजें आपस मे जोडने या मिलाने के लिए डोरी, डोरे आदि से जोडकर गाँठे लगाना या मोटी सिलाई करना। जैसे—जूता गाँठना। ३ किसी को अपनी ओर मिलाने के लिए उसके साथ स्वार्थपूर्ण सबध स्थापित करना। जैसे—यदि उन्हे किसी तरह गाँठ सको तो बहुत काम हो। ४ पर-स्त्री को सभोग के लिए तैयार करना और फलत. उसके साथ सभोग करना। ५ अनुचित रूप से कोई काम पूरा या सिद्ध करना। जैसे—अपना मतलब गाँठना। ६ दबोचकर अपने अधिकार या हाथ मे करना। जैसे—बिल्ली आज हमारा एक कबूतर गाँठ ले गई। ७ आघात या वार रोककर उसे विफल करना।

गाँठि*—स्त्री०=गाँठ।

गाँठी—स्त्री० [हिं० गाँठ] १ गाँठ। २ कोहनी पर पहनने का एक गहना।

गाँड़—स्त्री० [स० गर्त, प्रा० गड्ड या कन्न० गेराडे=पुरुष की जननेंद्रिय ?] १ मल-त्याग करने की इद्रिय। गुदा। गुह्य।

विशेष—यद्यपि इस शब्द के साथ अनेक मुहावरे है पर वे सब अश्लील होने के सिवा अ-साहित्यिक भी है, इसलिए वे छोड़ दिये गये है।
२. किसी चीज के नीचे का भाग। तल्ला। पेंदी।

गाँडर—स्त्री० [स० गडाली] एक प्रसिद्ध घास जिसकी जड बहुत सुगधित होती है और खस कहलाती है। गंडदूर्वा।

गाँडा—पु० [स०काड या खड] [स्त्री० गेंडी] १ किसी पेड-पौधे आदि का वह निकम्मा अश जो उससे काटकर अलग कर दिया गया हो। जैसे—ईख का गाँडा। २. ईख या ऊख की गँडेरी। ३. ईख। गन्ना। ४ चक्की के चारो ओर का घेरा। मेंडरी।

गांडाली—स्त्री० [सं० गाण्ड–आ√ला (लेना)+क–ङीप] गाँडर नामक घास।

गाँडी—स्त्री० [स० गड]=गाँडर।

गाँडीर—वि० [स० गण्डीर+अण्] गडीर पौधे से प्राप्त या उसका वना हुआ। गडीर का।

गांडीव—पु० [स० गाण्डी=ग्रन्थि+व] १ अर्जुन का वह धनुष जो उसे अग्निदेव से प्राप्त हुआ था। २. धनुष।

गांडीवी (विन्)—पु० [स० गाण्डीव+इनि] १. अर्जुन। २ अर्जुन का वृक्ष।

गाँडू—वि०[हि० गाँड] १ जिसे गाँड मराने की लत हो। गुदा-भंजन कराने-वाला। २. कायर और निकम्मा।

गाँती—स्त्री०=गाती।

गांतु—वि० [सं०√गम् (जाना)+तुन्, वृद्धि] गमन करनेवाला। चलने या जानेवाला।
पु० १. पथिक। बटोही। २ गवैया। गायक।

गांत्री—स्त्री०[सं० गन्त्रीड+अण्–ङीप्] बैलगाडी।

गाँथना*—स० १=गूँथना। उदा०—मालिनि आउ मौर लै गाँथे।—जायसी। २.=गाँठना।

गांदिनी—स्त्री० [स० गो√दा (देना)+णिनि. पृषो० सिद्धि] १. अक्रूर की माता जो काशिराज की कन्या और श्वफल्क की भार्या थी। २. गगा।

गांदी—स्त्री०=गादिनी।

गांधर्व—वि० [स० गधर्व+अण्] १. गधर्व-सवधी। गधर्व का २. गधर्व जाति या देश का। ३ (मत्र) जिसका देवता गधर्व हो।
पु० १ गान विद्या। संगीत-शास्त्र। २. गधर्व जाति। ३ भारत का एक प्राचीन भाग जिसमे गधर्व लोग रहते थे। ४. हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार आठ प्रकार के विवाहो मे से एक जो पहले गंधर्व जाति मे प्रचलित था और जिसमे वर और वधू आपस मे मिलकर स्वेच्छापूर्वक वैवाहिक संवध स्थापित कर लेते थे। प्राचीन भारत मे यह विवाह क्षत्रियो के लिए विहित था, पर कलियुग मे वर्जित है। ५ घोडा।

गांधर्व-वेद—पु०[कर्म० स०] सामवेद का उपवेद जिसमे सामगान के स्वर, लय आदि का विवेचन है। संगीत-शास्त्र।

गांधर्विक—वि० [स० गन्धर्व+ठक्–इक] १. गधर्व-सवधी। गधर्व का। २. गधर्व विद्या अर्थात् सगीत-शास्त्र का ज्ञाता।

गांधर्वी—स्त्री० [स० गान्धर्व+ङीप्] दुर्गा।

गाँधार—वि० [सं० गान्ध+ऋ (गति)+अण्] १. गंधार देश सवधी। गधार का। २ गंधार देश में रहने या होनेवाला।
पु० १ गंधार नामक प्राचीन देश जो पेशावर से कधार तक था। २ उक्त देश का निवासी। ३. सगीत के सात स्वरो मे से तीसरा स्वर। ४. एक प्रकार का पाडव राग जो अद्भुत, करुण और हास्यरस के लिए उपयुक्त कहा गया है। ५ गधरस नामक सुगधित द्रव्य।

गांधार—पु० [कर्म० स०] गाधार नामक राग का दूसरा नाम।

गांधार-भैरव—पु० [कर्म० स०] प्रातः समय गाया जानेवाला एक प्रकार का संकर राग।

गांधारि—पु० [स० गन्ध+अण्, गान्ध√ऋ+इन्] दुर्योधन के मामा शकुनि का एक नाम।

गांधारी—स्त्री० [स० गान्धार +इन्—ङीप्] १. गाधार देश की स्त्री। २. धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की माता जो गाधार के राजा सुवल की पुत्री थी। ३. पाडव सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो दिन के दूसरे पहर मे गाई जाती है। ४ तत्र तथा हठयोग के अनुसार दाहिनी आँख की एक नाडी। ५ जवासा।
पु० [स० गाधारिन्] १. जैनो के एक शासन देवता। २ गाँजा।

गांधिक—पु० [स० गन्ध+ठक्–इक]१. सुगन्धित द्रव्य बनाने और वेचने-वाला व्यक्ति। गाँधी। २. गध द्रव्य। सुगधित पदार्थ। ३ दे० 'गाँधी'।

गाँधी—पु० [सं० गध से] १. वह जो सुगधित तेल आदि वनाने का काम करता हो। गाँधी। २ गुजराती वैश्यो का एक वर्ग। ३. गँधिया नाम का कीड़ा। ४. गधिया नाम की घास।
†स्त्री० हींग।

गांधी टोपी—स्त्री० [गांधी (महात्मा)+टोपी] खद्दर की वनी हुई किश्ती नुमा लवोतरी टोपी।
विशेष—महात्मा गाधी ने पहले पहल इस प्रकार की टोपी पहनना आरम्भ किया था। इसलिए उन्ही के नाम पर इसका नाम पड़ा।

गांधीवाद—पु०[हि० गाधी+स० वाद]महात्मा गाधी की विचारधाराओ पर स्थित वह वाद जिसमे सत्य और अहिंसा तथा तप और त्यागपूर्वक अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अग्रसर होने की व्यवस्था है। रामराज्य की स्थापना इस वाद का चरम ध्येय है।

गाभीर्य—पु०[स० गम्भीर+ष्यञ्] गभीर होने की अवस्था, गुण या भाव। गभीरता।

गाँव—पु० [स० ग्राम, पा०, प्रा, गु० गाम, अप० गाँअ, बँ०, उ० गाँ, ने० सिं० गाँउँ, मरा० गाँव; गाव] [वि० गँवार, गँवारू] १ खेती-वारी आदि करनेवाले लोगो की छोटी वस्ती जिसमे १०-२० या १००-२०० घर हो। खेडा।
मुहा०—गाँव मारना=गाँव मे पहुँचकर डाका डालना और वहाँ के सब लोगो को लूटना।
२. मनुष्यो की वस्ती। ३. जगह। स्थान। उदा०—एक तुम्हारे ह्वै पिय प्यारे, छाँडि और सब गाँव।—भारतेंदु। ४ वस्ती। ५ रहस्य-सम्प्रदाय मे, काया या शरीर।

गाँवटी—वि० [हिं० गाँव] १. गाँव मे रहने या होनेवाला। गाँव का।

देहाती। उदा०—गाँवटी और जगली जानवरो के चरने से।—वृंदावन लाल वर्मा। २ दे० 'गँवार'।

गाँव-पंचायत—स्त्री०=ग्राम पचायत।

गाँव सभा—स्त्री०=ग्राम पचायत।

गाँस—स्त्री० [हिं० गासना] १ तीर, वरछी, भाले आदि हथियारो का नुकीला फल। २ उक्त फल का अथवा किसी नुकीली वस्तु (जैसे—काँटा या सूई) का वह टुकडा जो टूटकर घाव के अन्दर रह गया हो और वहुत कष्ट देता हो। ३ किसी के प्रति मन मे वैठा हुआ द्वेष या वैर जो वदला लेने की प्रेरणा करता हो। मनोमालिन्य।

मुहा०—(मन की) गाँस निकालना=शत्रु से वदला चुकाकर अपना मन शात करना।

४ मन मे खटकने या चुभनेवाली वात। उदा०—प्रीतम के उर वीच भये दुलही को विलास मनोज की गासी।—मतिराम। ५ कष्ट या पीडा देनेवाली कोई चीज या वात। ६ किसी प्रकार का ववन या रुकावट।

मुहा०—(किसी को) गाँस मे रखना=अपने अधिकार या वश मे रखना।

७. दे० 'गाँठ'।

गाँसना—स० [हिं० गाँस] १ हिन्दी 'गँसना' का सकर्मक रूप। २ छेद करके दो चीजो को एक मे मिलाते हुए अच्छी तरह फँसाना, लगाना या सटाना। ३ किसी चीज मे गाँसी या नुकीली चीज गडाना या घँसाना।

मुहा०—(कोई वात मन मे) गाँसकर रखना=कोई अप्रिय या खटकनेवाली वात अच्छी तरह मन में जमा या वैठाकर रखना। उदा० —तुम वह वात गाँसि करि राखी, हम को गई भुलाई।—सूर। **गाँस गहना**=गाँसकर रखना।

४ अच्छी तरह वाँधकर या रोककर अपने अधिकार, नियत्रण या शासन मे रखना। ५. किसी चीज मे कुछ ठूँस या भरकर रखना। ६ जहाज के पेंदे के छेदो मे उन्हे वन्द करने के लिए मसाला भरना। (लश०)

गाँसी—स्त्री०=गाँस।

गाँहक†—पु०=गाहक।

गाइ (ई)†—स्त्री०=गाय।

गाइन—वि० [हिं० गाना] गानेवाला।

पु० गवैया। गायक।

गाउन—पु० [अं०] १ एक प्रकार का लवा ढीला पहनावा जो प्राय योरप, अमेरिका आदि देशो की स्त्रियाँ पहनती है। २. उक्त प्रकार का वह पहनावा जो कुछ विशिष्ट लोगों (जैसे-डाक्टरो, वकीलो, स्नातकों आदि) को कोई उच्च परीक्षा पारित करने पर उसके चिह्न-स्वरूप मिलता है।

गाऊघप्प—वि० [हिं० खाऊ+गप्प] १ सव कुछ खा-पी जानेवाला। २ दूसरो का माल खा या हडप जानेवाला।

गाकरी†—स्त्री० [स० अगार+कर] आग पर सेकी हुई वाटी या लिट्टी। अगा कडी।

गागर—स्त्री० [स० गर्गर] धातु या मिट्टी का वना हुआ ऊँचे गलेवाला एक प्रकार का घडा।

मुहा०—गागर में सागर भरना=(क) थोडे स्थान मे वहुत अधिक चीजें भरना। (ख) कोई ऐसी पदावली या वाक्य वोलना या लिखना जिसमे वहुत अधिक भाव भरे हो। (साहित्य)

गागरा†—पु० [स्त्री० गागरी] =गगरा।

गाच—स्त्री० [अ० गाज] १ झीनी बुनावट का एक प्रकार का पतला कपडा। २ फुलवर नाम का रगीन बूटीदार कपडा।

गाछ—पु० [स० गच्छ] १ पेड। वृक्ष। २ उत्तरी वगाल मे होनेवाला एक प्रकार का पान।

†स्त्री०=गाच।

गाछी—स्त्री० [हिं० गाछ] १ छोटा पेड। २ छोटा वगीचा। ३ खजूर की नरम कोपल जिसे सुखाकर तरकारी वनाई जाती है।

†स्त्री०=खुरजी।

गाज—स्त्री० [स० गर्ज, प्रा० गज्ज] १ गूँजने की क्रिया, भाव, या शब्द। गर्जन।

पद—**गाजा-वाजा**=कई तरह के वाजे।

२ बिजली। वज्र।

मुहा०—गाज पड़ना=विजली गिरना या वज्रपात होना। **(किसी वस्तु पर) गाज पडना**=पूरी तरह से नष्ट या वरवाद होना। **(किसी व्यक्ति पर) गाज पड़ना**=वहुत वडी आफत या सकट मे पडना। **गाज मारना**-गाज पडना।

पु० [अनु० गजगज] पानी आदि का फेन। झाग।

स्त्री० [?] काँच की चूडी।

गाजना—अ० [स० गर्जन, पा० गज्जन] १. गर्जन करना। गरजना। २ शोर मचाना। उदा०— जूँ अवर पर इदर गाजा।—ग्राम्य गीत। ३ खूव प्रसन्न होना।

गाजर—स्त्री० [स० गृजन] मूली की जाति का एक प्रसिद्ध मीठा लवोतरा कद जिसका अचार, तरकारी, मुरव्वा आदि वनाये जाते हैं।

मुहा०—(किसी को) गाजर-मूली समझना=(क) अशक्त या असमर्थ समझना। (ख) तुच्छ या हेय समझना।

गाजा—पु० [फा० गाज] एक प्रकार का चूर्ण या लेप जो स्त्रियाँ सौंदर्य वढाने के लिए मुँह पर मलती है।

†पु०=गाँजा। उदा०—गाजा पिये गुरु ज्ञान मिटे।

गाजाधर—पु०=गदाधर।

गाजी—पु० [अ०] १ मुसलमानो मे वह वीर या योद्धा जो धर्म के लिए विधर्मियो से युद्ध करता हो। २ उक्त प्रकार के युद्ध मे प्राण देनेवाला व्यक्ति। ३ वहुत वडा वहादुर या वीर।

गाजीमर्द—पु० [अ०+फा०] १ वहुत वडा योद्धा या वीर। २ घोडा।

गाजीमियाँ—पु० [अ०] महमूद गजनवी का भानजा सालार मसऊद जो वहराइच मे श्रावस्ती के जैन राजा सुहृद्देव के हाथो मारा गया था।

गाटर—पु० [पु० हिं० गटई=गला] जुआठे की वह लकड़ी जिसके इधर उधर वैल जोते जाते है।

पु० [?] खेत का छोटा टुकडा। गाटा।

पु० [अ० गर्डर] लोहे की मोटी और लवी घरन।

गाटा†—पु० [हिं० कट्ठा] १ खेत का छोटा टुकडा। छोटा खेत। गाटर। २ वैलो की वह दौनी जो पयाल का चूरा कराने के लिए होती है।

गाड़—पु० [स० गर्त, प्रा० गड्ड मिलाओ अ० गार] १ जमीन मे खोदा

या बना हुआ गड्ढा। २ वह गड्ढा जो अनाज भरकर रखने के लिए जमीन मे खोदा जाता है। ३ वह गड्ढा जिसमे ईख की खोई का बचा हुआ रस निचुडकर इकट्ठा होता है। ४ वह गड्ढा जिसमे पानी भरकर नील भिगोते है। ५ कूएँ का भगाड (देखा)। ६ खेत की मेड।

गाड़ना—स० [प्रा० गड्डा, बँ० गारा, उ० गार, गु० गाडवूँ मरा० गाडणें] १ कोई चीज छिपाने या दबाने के लिए जमीन मे खोदे हुए गड्ढे मे रखना और तब उस पर इस प्रकार मिट्टी आदि डालना या भरना कि वह ऊपर से दिखाई न दे। जैसे—जमीन मे धन गाड़ना। २. उक्त प्रकार से मृत शरीर जमीन के अदर रखकर मिट्टी आदि से दबाना। दफन करना। दफनाना। जैसे—ईसाइयों और मुसलमानो के मुरदे गाडे जाते है। ३. कोई चीज कही दृढतापूर्वक खडी करने के लिए उसके नीचे का कुछ अश जमीन मे उक्त प्रकार से धँसाना या दबाना। जैसे—खभा, झडा या बाँस गाडना। ४ (खेमा या तबू) खडा करना। ५. किसी नुकीली चीज की नोक या सिर जमीन या दीवार मे इस प्रकार धँसाना या दबाना कि वह जल्दी इधर-उधर न हो सके। जैसे—कील या खूँटी गाडना। ६. दूसरो की दृष्टि से बचाने के लिए अथवा और किसी प्रकार चोरी से अधिक मात्रा मे कोई चीज इस उद्देश्य से छिपाकर अपने पास रखना कि उपयुक्त अवसर आने पर उससे अनुचित लाभ उठाया जा सके। (होडिंग)।

गाडर†—स्त्री० [स० गड्डरी या गड्डरिका] भेड।
स्त्री० दे० 'गाँडर'।

गाड़रू†—पु०=गारुडी।

गाडव—पुं० [स० गडु+अण्] बादल। मेघ।

गाड़ा†—पु० [हिं० गाडी] १ बडी गाडी। २. बडी बैलगाड़ी। ३ बडा छकडा।
पु० [हिं० गाड] १ जगल का वह गड्ढा जिसमे चोर, डाकू आदि छिपकर बैठते थे। २ दे० 'गाड'।
मुहा०—गाडे बैठना=(क) किसी की घात मे कही छिपकर बैठना। (ख) चौकी या पहरे पर बैठना।
पु० [हिं० गाडना] १. हिंदुओं का वह वर्ग जो मुसलमानो के शासन-काल में डर कर अपने मुरदे गाडने लगा था। २ मुलसमान जो अपने मुरदे जमीन मे गाडते है।

गाड़ी—स्त्री० [प्रा० गत्तिआ, गाड्डआ, दे०, प्रा० प० गड्डी, गोडइ, उ०बँ० गारी, सिं० गाडो, गु० मरा० गाडी] १. पहियो पर जडा या बैठाया हुआ लकड़ी-लोहे आदि का वह ढाँचा जिसे घोड़े, बैल आदि खीचते है और जिस पर सवारियाँ तथा सामान एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाये जाते है। शकट।
क्रि० प्र०—खीचना।—चलाना।—हाँकना।
पद—गाड़ी भर=बहुत अधिक। ढेर-सा।
मुहा०—गाड़ी जोतना=गाडी चलाने के लिए उसके आगे घोडे या बैल जोतना।
२. रेलगाडी।

गाड़ीखाना—पु० [हिं० गाडी+खाना] वह कमरा, घर या स्थान जहाँ गाडियाँ रखी जाती हो।

गाड़ीवान—पुं० [हिं० गाडी+अं० मैन का हिं० रूप वान] गाडी चलाने या हाँकनेवाला।

गाढ़—वि० [स०√गाह् (पैठना)+क्त] १ बहुत अधिक। अतिशय। २. दृढ। पक्का। मजबूत। ३ गभीर। गहरा। ४ घना। ५ तेज। प्रबल। ६. कठिन। विकट। ७. दुरुह या दुर्गम।
स्त्री० कष्ट, विपत्ति या सकट का समय या स्थिति।
पु० [?] जुलाहो का करघा।

गाढ़ता—स्त्री० [स० गाढ+तल्—टाप्] १ गाढे, गभीर या गहन होने की अवस्था या भाव। २ कठिनता। दुरुहता।

गाढा—वि० [स० गाढ] [स्त्री० गाढी] १ (पदार्थ) जिसमें तरलता अपेक्षया कम हो। जो अधिक तरल या पतला न हो। जैसे—गाढा दूध, गाढी भाँग (या उसका घोल)।
मुहा०—गाढ़ी छनना=गाढी भाँग पीयी जाना जिसमे खूब नशा हो।
२ (रग) जो अधिक गहरा हो। बहुत हलका न हो। जैसे—गाढा लाल, गाढा हरा। ३ (वस्त्र) जिसके सूत परस्पर खूब मिले हो। ठस बुनावट-वाला और अपेक्षया मोटा। ४. दृढ। पक्का। उदा०—गयी लक गाढी गहयौ-चदबरददाई। ५ (सबध) जिसमे आत्मीयता, घनिष्ठता आदि की अधिकता हो। जैसे—गाढी दोस्ती।
मुहा०—(आपस मे) गाढ़ी छनना=(क) घनिष्ठ मित्रता होना। (ख) खूब घुल-मिलकर परामर्श या बातें होना।
६. उग्र। प्रचड। जैसे—गाढी शत्रुता। ७ बहुत ही कठिन या विकट। जैसे—गाढे दिन (दे०)। उदा०—तिन्हहि सराप दीन्ह अति-गाढा।—तुलसी। ८ जिसमे बहुत अधिक परिश्रम होता हो या हुआ हो।
पद—गाढ़े की कमाई—बहुत परिश्रम से कमाया हुआ धन।
९ जिसमे कष्ट, सकट आदि की अधिकता हो। जैसे—गर्भवती या प्रसूता के गाढे दिन।
पु० १ कष्ट, विपत्ति या संकट की अवस्था, प्रसग या समय। जैसे—गाढ़े मे जल्दी कोई साथ नही देता। २. जुलाहे का बुना हुआ देशी, मोटा सूती कपड़ा। ३ मस्त हाथी।

गाढ़े†—क्रि० वि० [हिं० गाढा] १ दृढतापूर्वक। २ गहरा रग लिये हुए। ३ कठिनता या सकट के समय मे। उदा०—चोर न लेहिं, घटै नहि कबहूँ, गाढे आवत काम।—काष्ठजिह्वास्वामी।

गाणपत—वि० [स० गणपति+अण्] गणपति-सबधी। गणपति का।
पु० [स० गणपति] गणेश जी की उपासना तथा पूजा करनेवाला एक प्राचीन सप्रदाय।

गाणेश—पु० [स० गणेश+अण्] गणेश का उपासक।
वि० गणेश सबंधी।

गात—पु० [स० गात्र, पा० गत्त] १. देह। शरीर। २ स्त्रियो का यौवन-काल।
मुहा०—गात उमगना=यौवन का आगमन या आरंभ होने पर बालिका के स्तन उभरना।
३ पुरुष या स्त्री का गुप्त अग। ४. गर्भ।
मुहा०—गात से होना=गर्भवती होना।

गातलीन—स्त्री० [अ० गाटलिन] जहाज मे वह डोरी जो मस्तूल के ऊपर एक चरखी मे लगी रहती और रीगिन उठाने मे काम आती है।

गातव्य—वि० [स०√गै (गाना)+तव्यत्] गाने अथवा गाये जाने के योग्य।

गाता (तृ)—वि० [स०√गै+तृच्] गानेवाला।
†—पु०=गत्ता।
गतानुगतिक—वि० [स० गतानुगत+ठक्—इक] गतानुगति या अध अनुसरण के रूप मे होनेवाला।
गाती—स्त्री० [स० गात्री] १ वच्चो को सरदी से वचाने के लिए उनके शरीर पर लपेटकर गले मे वाँधा जानेवाला छोटा कपड़ा। २ उक्त प्रकार से शरीर के चारो ओर चादर लपेटने का ढग या प्रकार। ३ कपडे का वह टुकडा जो साधु लोग अपने गुप्त अंग ढकने के लिए कमर मे लपेट कर उसके दोनों सिरे गले मे वाँधते है।
गातु—पु०[स०√गै+तुन्] १ गाने की क्रिया या भाव। गाना। २. गानेवाला। गायक। ३ गधर्व। ४ कोयल। ५ भौंरा। ६ पथिक। वटोही। ७ पृथ्वी।
गात्र—पु० [स०√गम् (जाना)+त्रन्, आकार आदेश] १ देह। शरीर। २ हाथी के अगले पैरो का ऊपरी भाग।
गात्रक—पु० [स० गात्र+कन्] शरीर।
गात्र-भगा—स्त्री० [व० स० टाप्] केवाँच। कौछ।
गात्र-रुह—पु० [गात्रे√रुह् (जन्म लेना)+क] शरीर के रोएँ। रोम।
गात्रवत्—वि० [स० गात्र+तुप्, वत्व] सुदर शरीरवाला।
गात्र-वर्ण—पु० [मध्य० स०] स्वर साधन की एक प्रणाली जिसमे सातो स्वरो मे से प्रत्येक का उच्चारण तीन तीन वार किया जाता है। जैसे—सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग आदि।
गात्र-सम्मित—वि० [व० स०] (गर्भ) जो तीन महीने के ऊपर का होकर शरीर के रूप मे आ गया हो।
गात्रानुलेपनी—स्त्री० [गात्र-अनुलेपनी, प० त०] अगराग।
गात्रावरण—पु० [स० गात्र-आवण, प० त०] १ शरीर ढकनेवाली कोई चीज। २ युद्ध के समय शरीर को ढकनेवाले कवच, जिरह-वकतर आदि।
गात्रिका—स्त्री० [स० गात्र+कन्—टाप्, इत्व] शाल की तरह की एक प्रकार की पुरानी चादर।
गाथ—पु० [स०√गा (गाना या स्तुति)+थन् १ गाना। गान। २ प्रशसा। स्तुति । स्तोत्र । ३ कथा । कहानी । ४ विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन।
गाथक—पु० [स० √गा+थकन्] गाथा कहने या लिखनेवाला।
गाथना†—स० [हिं० गथना] १ अच्छी तरह पकडना । २ कसना। जकडना। ३ गूंधना। ४ गूंथना। पिरोना।
गाथा—स्त्री० [स० गाथ+टाप्] १ गीत, विशेपत अपनी रमणीयता के कारण सव तरह के लोगो मे गाया जानेवाला गीत। २ प्राकृत भाषा का एक छद जिसमे उक्त प्रकार के गीत लिखे जाते थे।
विशेष—इन गीतो मे किसी के किए हुए यज्ञो आदि का प्रशसात्मक उल्लेख होता था।
३ परवर्ती काल मे, आर्या छद का एकभेद या रूप जिसमे पाली, प्राकृत आदि मे ऐसी रचनाएँ होती थी, जिनमे ताल, स्वर आदि के नियमो का वधन नही होता था। ४ छोटे-छोटे पद्यो मे वहुत ही सीधे सादे ढग से और विस्तारपूर्वक कही हुई वह प्रभावोत्पादक कथा जिसमे प्राय सच्ची घटनाओ या विशिष्ट तथ्यो का वर्णन होता है। (वैलड) ५, पारसियों तथा वौद्धो के धर्मग्रथो मे की उक्त प्रकार की रचनाएँ। ६ कोई कथा या वृत्तांत। ७. किसी की प्रशसा या स्तुति।
गाथाकार—पु० [स० गाथा√कृ (करना)+अण्] १ गाथाएँ रचनेवाला। २ महाकाव्य का रचयिता । ३ गायक।
गाथिक—पु० [स० गाथा+ठक-इक] [स्त्री० गाथिका] =गाथक।
गाथी (थिन्)—पु० [स० गाथा+इनि] सामवेद गानेवाला।
गाद†—स्त्री० [स० गाध=जल के नीचे का तल] १ तरल पदार्थ के नीचे वैठी हुई गाढी चीज। तलछट। २ तेल की कीट। ३. कोई गाढी चीज। जैसे—गोद।
गादड़†—वि० [स० कातर या हिं० गीदड] मट्ठर। सुस्त।
पु० १ गीदड। २ कायर। डरपोक। ३ वह वैल जो किसी तरह जल्दी न चलता हो।
स्त्री० [स० गड्डर] भेड।
गादर—वि० [हिं० गदराना] गदराया हुआ।
†पु० दे० 'गादड'।
†पु० [हिं० कादर] वह वैल जो चलता-चलता वैठ जाता हो।
गादा—पु० [स० गाधा=दलदल] १ खेत मे खडी फसल जो अभी पकी न हो। २ उक्त फसल के अव-पके अन्न के दाने। ३ महुए का फल जो पेड से टपका हो। हरा महुआ।
गादी—स्त्री० [हिं० गद्दी] १ छोटी टिकिया के आकार का एक प्रकार का पकवान। २ दे० 'गद्दी'।
गादुर—पु०=चमगादड।
गाध—पु० [स०√गाध् (प्रतिष्ठा)+घञ्] १ स्थान। जगह। २ जल के नीचे का स्थल। तल। ३ नदी का प्रवाह। वहाव। ४ लालच। लोभ।
वि० १ (जलाशय) जो इतना छिछला या कम गहरा हो कि चल या हलकर पार किया जा सके। २ अल्प। थोडा।
गाधा—स्त्री० [स० गाध+टाप्] १ गायत्री स्वरूपा महादेवी। २ वहुत अधिक कष्ट या दु ख। उदा०—भव-वाधा गाधा हरन राधा राधा जीय।—सत्यनारायण।
†पु०=गधा।
गाधि—पु० [स०√गाध्+इन्] कुशिक राजा के पुत्र जो विश्वामित्र के पिता थे।
गाधि-पुर—पु० [प० त०] कान्यकुब्ज। कन्नौज।
गाधेय—पु० [स० गाधि+ढक्-एय] गाधि ऋषि के पुत्र, विश्वामित्र।
गाधेया—स्त्री० [स० गाधेय+टाप्] गाधि ऋषि की कन्या सरस्वती जिसका विवाह ऋचीक से हुआ था।
गान—पु० [स०√गै (गाना)+ल्युट्—अन] वि० गेय, गातव्य] १ गाने की क्रिया या भाव। गाना। २ वह जो गाया जाय। गीत। ३. किसी प्रकार का वखान या वर्णन। जैसे—यशोगान। ४ शव्द। ५. जाना। गमन।
गानगर—पु० [हिं० गान+फा० गर] =गायक।
गानना* स०=गाना। उदा०—नर अरु नारि राम गुन गानहि।—तुलसी।
गाना—स० [स० गान] १. कविता, गीत आदि के चरणो या पदो का वह क्रमिक, मोहक और सरस उच्चारण जो सुर तालवाले नियमो के अनुसार किसी विशिष्ट लय मे होता है। २ पक्षियो आदि का मधुर स्वर मे वोलना।

कलरव करना। ३ विस्तारपूर्वक किसी विषय की चर्चा या वर्णन करना। (विशेषत कविता या छदो मे)।

मुहा०—अपनी ही गाना=अपनी ही बात कहते चलना (और दूसरे की न सुनना)।

४.प्रशसा या स्तुति करना। ५ आराधना करना। भजना। उदा०—दिन द्वै लेहुँ गोविंदहि गाइ। —सूर।

पु० १ लय, राग आदि मे कविता, पद्य आदि का उच्चारण करने की क्रिया या भाव। २.गाई जानेवाली चीज या रचना। गीत।

गानी(निन्)—वि० [स० गान+इनि] १.गानेवाला। २.गमन करने या जानेवाला।

गाफिल—वि० [अ०] [भाव० गफलत] १ अचेत। बे-सुध। २ असावधान। ३ लापरवाह।

गाव—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड जिसका निर्यास नाव के पेंदे की लकडियों पर उन्हे सडने-गलने से बचाने के लिए लगाया जाता है।

गावलीन—स्त्री० [?] जहाज पर पाल चढाने की एक प्रकार की चरखी या गराडी।

गाभ—पु० [स० गर्भ, प्रा० प० गब्भ, सिह० गब, सि० गभु, मरा० गाभ] १ गर्भ, विशेषत मादा पशुओं का गर्भ।

मुहा०—गाभ डालना=(क) मादा पशु का ऐसी क्रिया करना जिससे उसका गर्भ गिर जाय। अपना गर्भ गिराना,--बाहर निकालना या फेंकना। (ख) लाक्षणिक रूप मे, बहुत ही डर जाना (व्यग्य और हास्य)

२ किसी चीज का मध्य भाग। ३ दे० 'गाभा'। ४. बरतन ढालने के लिए वह साँचा जिस पर अभी गोबरी की तह न चढाई गई हो (कसेरे)।

गाभा—पु० [स० गर्भ] १ नया कोमल पत्ता। कल्ला।

मुहा०—गाभा आना=बीच मे से नया पत्ता निकलना। २ पौधों, वृक्षों आदि के डठलों या शाखाओं के अदर का कोमल भाग। ३. लिहाफ, रजाई आदि के फटने पर उनमे से निकलनेवाली रूई। ४. कच्चा अनाज। ५.किसी चीज का भीतरी भाग।

गाभिन—वि० स्त्री० [स० गर्भिणी] (मादा पशु) जिसके पेट मे बच्चा हो। गर्भिणी।

गाभिनी—वि० स्त्री०=गाभिन।

गाम—पु० [स० ग्राम, पा० गाम] गाँव।

गामचा—पु० [फा० गामूच] घोडे के टखने और सुम के बीच का भाग।

गामत—स्त्री० [स० गमन] १ निकलने का मार्ग। निकास। २ छेद। सूराख (लश०)।

गामा—*पु० [स० ग्राम] गँवार। ग्रामीण। उदा०—रामते अधिक नाम करतन जेहि, किये नगर-गत गामों।— तुलसी।

गामिनी—स्त्री० [स०√गम् (जाना)+णिनि-ङीप्] प्राचीन काल की एक प्रकार की बडी नाव जो समुद्रों मे चलती थी।

वि० स्त्री० स० 'गामी' का स्त्री०।

गामी (मिन्)—वि० [स०√गम्+णिनि] [स्त्री० गामिनी] १.गमन करनेवाला। चलने या जानेवाला। जैसे—शीघ्रगामी। २.गमन या सभोग करनेवाला। जैसे—वेश्यागामी।

गामुक—वि० [स०√गम्+उकञ्] जानेवाला। गामी।

गाय—स्त्री० [स० गो, प्रा० पा० गावी, बँ० उ० ने० गाइ, प० गाँ, गु०, मरा० गाय] सींगोंवाला एक प्रसिद्ध मादा चौपाया जिसका दूध अत्यत पुष्टिकारक और स्वादिष्ट होता और पीने तथा दही, पनीर, मक्खन आदि बनाने के काम आता है। 'साँड की मादा।

मुहा०—गाय का बछिया तले और बछिया का गाय तले करना=इधर का उधर और उधर का इधर करना। हेरा-फेरी करना।

२ बहुत सीधा-सादा और निरीह व्यक्ति।

३. सत साहित्य मे, (क) आत्मा। (ख) वाणी। (ग) माया।

गायक—पु० [स० गै (गाना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० गायिका] १ वह व्यक्ति जो गीत गाता हो। २. वह जो गीत गाकर अपनी जीविका का निर्वाह करता हो। ३ प्रशसा या स्तुति करनेवाला व्यक्ति।

गायकवाड़—पु० [मरा०] बडौदा के उन पुराने महाराजाओं की उपाधि जो मराठों के उत्तराधिकारी थे।

गायकी—स्त्री० [स० गान] १. गान-विद्या। २ गान विद्या के अनुसार ठीक तरह से गाने की क्रिया या भाव। ३ गान विद्या का पूरा ज्ञान और उसके अनुसार होनेवाला गाना।

गायगोठ—स्त्री० [हि० गाय+गोठ] वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी या रखी जाती है। गोशाला।

गायण—*पु०=गायन।

गायत—वि० [अ०] १ बहुत अधिक। २. हद दरजे का।

स्त्री० १. किसी वस्तु की अधिकता। २ गरज। मतलब।

गायताल—पु० [हि० गाय+ताल] निकृष्ट या निकम्मा चौपाया।

वि० निकम्मा और निकृष्ट। रद्दी।

गायताल खाता—पुं० [हि०] खाते या बही का वह अश जिसमे ऐसी रकमें लिखी जाती है जिनके वसूल होने की बहुत ही कम आशा होती है।

गायत्र—पु० [स० गायत्√त्रै (रक्षा करना)+क] [स्त्री० गायत्री] गायत्री छद।

गायत्री—पु० [सं० गायत्र+ङीप्] १ एक प्रकार का वैदिक छद। २ उक्त छद मे रचित एक प्रसिद्ध वैदिक मंत्र जो भारतीय आर्यो मे परम पवित्र माना जाता है। सावित्री। ३. दुर्गा। ४ गगा। ५ छः अक्षरो की एक प्रकार की वर्णिक वृत्ति जिसके कई भेद हैं। ६ खैर का पेड।

गायन—पु० [सं०√गै+ल्युट्—अन] १. गाने की क्रिया या भाव। २ गाई जानेवाली छन्दात्मक रचना। गीत। गान। ३ गवैया। गायक। ४. कार्त्तिकेय।

गायब—वि० [अ०] जो सहसा अन्तर्धान हो गया अथवा परोक्ष मे चला गया हो। जो आँखों से ओझल हो गया हो। लुप्त।

मुहा०—(कोई चीज) गायब करना=चालाकी या चोरी से कोई चीज उठा लेना या हटा लेना।

पद—गायब गुल्ला=जो इस प्रकार अदृश्य या लुप्त हो गया हो कि जल्दी उसका पता न चले।

पुं० चौसर, शतरज, आदि खेलने का वह विशिष्ट कौतुकपूर्ण प्रकार जिसमे कोई कुशल खेलाडी स्वय तो आड़ मे छिपा हुआ बैठा रहता है और दूसरे खेलाडी की चाल का रूप या विवरण सुन कर ही उस चाल के उत्तर मे अपने पक्ष की चाल चलने का आदेश देता है। बिसात, मोहरे आदि से अलग और दूर रहकर तथा उन्हे बिना देखे खेलने का ढग या प्रकार।

मुहा०—गायब खेलना=उक्त प्रकार से आड मे बैठकर चौसर, शतरज या ऐसा ही कोई खेल (बिना उसके उपकरण देखे) खेलना।

गाय-बगला—पु० [हिं०] एक प्रकार का बगला (पक्षी) जो प्राय. पशुओ के झुडो के आस-पास मँडराता रहता और उनके शरीर पर के कीड़े खाता है। सुरखिया बगला।

गायब-बाज—पु० [अ०+फा०] [भाव० गायब-बाजी] वह खेलाड़ी जो गायब (चौसर, शतरज आदि) खेलता हो।

गायबाना—क्रि० वि० [अ० गायबान] १ गुप्त रीति से। छिपे छिपे। २ किसी की चोरी से या पीठ पीछे।

गायरौन—पु०=गोरोचन।

गायित्री—स्त्री०=गायत्री।

गायिनी—वि० स्त्री० [स०√गै+णिनि-ङीप्] १. गानेवाली स्त्री। २. वह स्त्री जो गाकर अपनी जीविका का निर्वाह करती हो। ३ एक प्रकार का मात्रिक छद।

गार—पु० [अ० गार] १ नीची जमीन। २ गड्ढा। ३ जगली जानवरो के रहने की माँद। ४. कदरा। गुफा।

वि० [फा०] एक विशेषण जो सयुक्त पदो के अत मे अव्यय की तरह लगकर ये अर्थ देता है—(क) करनेवाला, जैसे—खिदमतगार, गुनहगार, सितमगार। (ख) साघन। जैसे—रोजगार (अर्थात् रोज का साधन)।

स्त्री०=गाली। उदा०—सुनहुँ ब्रज बसि स्रवन मैं ब्रज वासिनिन की गार।—नागरीदास।

पु०†=गारा।

गारत—स्त्री० [अ०] लूट-मार।

वि० ध्वस्त। नष्ट। बरबाद।

गारद—स्त्री० [अ० गार्ड] १ सिपाहियो अथवा सैनिको का वह छोटा दल या दस्ता जो किसी स्थान की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया हो। २ पहरा।

मुहा०—गारद में रखना=पहरे मे रखना (अपराधियो आदि को)।

गारना—स० [स० गालन] १ निचोडना। २ पानी के साथ घिस या रगडकर किसी चीज का रस या सार भाग निकालना। जैसे—चदन गारना। ३ पानी मे डालकर किसी चीज को गलाना या घुलाना। ४ गिराना, निकालना या बहाना। जैसे—आँसू गारना। उदा०—तुम कटु गरल न गारो।—मैथिलीशरण। ५ निकाल या हटाकर अलग या दूर करना। ६ त्यागना। ७. खोना। गँवाना। ८ क्षीण या नष्ट करना। जैसे—तपस्या करके शरीर गारना। ९ किसी का अभिमान चूर्ण करना। उदा०—द्रौपदी को चीर बढ्यौ दुस्सासनै गारी।—सूर।

गारभेली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जगली फालसे का वृक्ष जो पूर्वी भारत तथा हिमालय की तराई मे होता है।

गारा—पु० [हिं० गारना] १ दीवारो आदि की जुड़ाई करने के लिए मिट्टी को पानी मे सानकर तैयार किया हुआ लसदार घोल। २ उक्त काम के लिए सुर्खी, चूने आदि का तैयार किया हुआ मसाला। ३ मछलियो के खाने का वह चारा जो उन्हे फँसाने के लिए बसी मे लगाया जाता है। उदा०—नेह नीर बसी नयन, बतरस गारी लाई।—विक्रम सतसई।

वि० १ गीला। तर। २ उदासीन। खिन्न।

मुहा०*—जी गारा करना=किसी की ओर से उदासीन या खिन्न होना।

पु० [अ० गार?] वह नीची भूमि जहाँ वर्षा का पानी जमा होता हो।

पु० [?] दोपहर के समय गाया जानेवाला सकीर्ण जाति का एक राग।

मुहा०—गारा करना=विस्तारपूर्वक और बार-बार कोई बात कहना या सुनाना।

गारा कान्हड़ा—पु० [देश०] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जो सध्या समय गाया जाता है।

गारि—स्त्री०=गाली।

गारी*—स्त्री०=गाली।

गारु—*वि० [स० गुरु] भारी।

गारुड़—वि० [स० गरुड+अण्] गरुड-सबधी। गरुड़ का।

पु० १ साँप का विष उतारने का एक प्रकार का मत्र जिसके देवता गरुड़ कहे गये हैं। २ गरुड के आकार की एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ३ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ४ पन्ना या मरकत नामक रत्न। ५ सोना। स्वर्ण। ६ गरुड पुराण।

गारुड़ि—पु० [स० गरुड+इञ्] १ सगीत मे आठ प्रकार के तालो मे से एक। २ दे० 'गारुडी'।

गारुड़िक—पु०=गारुड़ी।

गारुड़ी (ड़िन्)—पु० [स० गारुड+इनि] १ वह व्यक्ति जो साँप का विष मत्र-बल से उतार देता हो। २ मत्र से अथवा और किसी प्रकार साँप पकडने अथवा उसे वश मे करनेवाला व्यक्ति। ३ सँपेरा।

गारुत्मत—पु० [स० गरुत्मत्+अण्] १ मरकत या पन्ना नामक रत्न। २ गरुड का अस्त्र।

गारुरी*—पु०=गारुडी। उदा०—जाँवत गुनी गारुरी आये।—जायसी।

गारो (रौ)—पु० [स० गर्व] १ अभिमान। गर्व। उदा०—क्षुद्र पतित तुम तारि रमापति अब न करौ जिय गारौ।—सूर। २ गौरव। ३ प्रतिष्ठा। मान।

गार्ग—वि० [स० गर्ग+अण्] गर्ग सबधी।

गार्गि—पु० [स० गर्ग+इञ्] गर्ग मुनि का पुत्र या वशज।

गार्गी—स्त्री० [स० गर्ग+यञ्-ङीप्, यलोप] १. गर्ग गोत्र की एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी विदुषी जिसकी कथा बृहदारण्यक उपनिषद् मे है। यह याज्ञवल्क्य की पत्नी थी। २ दुर्गा।

गार्गीय—वि० [स० गर्ग+छञ्-ईय] [वि० स्त्री० गार्गेयी] १ जिसका जन्म गर्ग गोत्र मे हुआ हो। २ गर्ग सबधी।

गार्ग्य—वि० [स० गर्ग+यञ्]=गार्गेय।

पु० एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।

गार्जर—पु० [स० गर्जर+अण्] गाजर नामक कद।

गार्ड—पु० [अ०] १ पहरा देनेवाला व्यक्ति। २ रक्षा करनेवाला व्यक्ति। रक्षक। ३ देख-रेख या निगरानी करनेवाला व्यक्ति। निरीक्षक। ४. रेलवे का वह अधिकारी जो रेलगाडी के साथ उसकी देख-रेख और व्यवस्था करने के लिए रहता है।

गार्डन—पु० [अ०] उद्यान। बगीचा।

गार्डन पार्टी—स्त्री० [अ०] उद्यान-गोष्ठी।

गार्दभ—वि० [स० गर्दभ+अण्] गर्दभ-सम्बन्धी। गधे का।

गार्द्ध्य—पु० [स० गर्द्ध+ष्यञ्] लालच। लोभ।

गार्ध्र—वि० [स० गृध्र+अण्] गृध्र-सबधी।

पु० १ लालच। लोभ। २ तीर। बाण।

गार्भ—वि० [स० गर्भ+अण्] १ गर्भ-संबधी। गर्भ का। २ गर्भ से उत्पन्न होनेवाला।

पु० वे सब काम जो गर्भ के पोपण, रक्षण आदि के लिए किए जाते हो।

गार्हपत—वि० [स० गृहपति+अण्] गृहपति सबधी।

पु० गृहपति का भाव। गृहपतित्व।

गार्हपत्य—वि० [स० गृहपति+ञ्य] गृहपति-सबधी।

पु० १ गृहपति होने की अवस्था, पद या भाव। २ दे० 'गार्हपत्याग्नि'।

गार्हपत्याग्नि—स्त्री० [स० गार्हपत्य-अग्नि, कर्म० स०] छ प्रकार की अग्नियो मे पहली और प्रधान अग्नि जिसका रक्षण गृहपति का कर्तव्य होता था।

गार्हमेध—पु० [स० गार्ह,गृह+अण्,गार्ह-मेध, कर्म०स०] गृहस्थ के लिए आवश्यक धार्मिक कृत्य या यज्ञ। पच महायज्ञ।

गार्हस्थ्य—पु० [स० गृहस्थ+ष्यञ्] १ गृहस्थ होने की अवस्था या भाव। २ गृहस्थाश्रम। ३ पच महायज्ञ।

गार्हस्थ्य-विज्ञान—पु० [प० त०] वह विज्ञान जिसमे घर के काम-काज (जैसे खाना-पकाना, सीना-पिरोना, बच्चे पालना आदि) सबधी बाते बताई जाती है। (डोमेस्टिक सायन्स)

गाल—पु० [स०, प्रा०, द्र०, प०, गल्ल, उ०, ब०, मरा० गाल, सिं० गलु] १ मुख-विवर और नासिका के दोनो ओर कनपटी तक के बाहरी विस्तार जिससे जबडे ढके रहते है। कनपटी के आस-पास, नीचे और सामने का अग। कपोल।

मुहा०—गाल फुलाना=(क) गर्व-सूचक आकृति बनाना। अभिमान प्रकट करना। (ख) मौन रहकर अथवा रूठकर रोप प्रकट करना।

२ उक्त अगो के बीच का वह भाग जो मुँह के अन्दर होता है और जिससे खाने, पीने, बोलने आदि मे सहायता मिलती है।

मुहा०—गाल मे चावल भरना या भरे होना=ऐसी स्थिति होना कि जान-बूझकर चुप रहना पडे अथवा बहुत धीरे-धीरे रुक-रुक कर मुँह से बाते निकले। **(किसी के) गाल मे जाना**=किसी का कौर या ग्रास बनना। किसी के द्वारा खाया जाना। जैसे—काल(या शेर) के गाल मे जाना। **गाल में भरना**= कोई चीज खाने के लिए मुँह मे भरना या रखना।

३ बहुत बढ-बढकर बाते करने की प्रवृत्ति या स्वभाव। मुँहजोरी।

मुहा०—गाल करना=बढ-बढकर या उद्दडतापूर्वक बाते करना। **गाल फुलाकर कोई काम करना**=अभिमानपूर्वक कोई काम करना। उदा०—बचन कहहि सब गाल फुलाई।—तुलसी। **गाल बजाना**=(क) बहुत बढ-बढकर व्यर्थ की बाते करना। (ख) डीग मारना। शेखी हाँकना। (ग) शिव के पूजन के समय मुँह मे हवा भरकर दोनों गालो पर इस प्रकार हलका आघात करना कि बम बम या ऐसा ही और कुछ शब्द निकले। **गाल मारना**= गाल बजाना।

४ किसी चीज की उतनी मात्रा, जितनी एक बार मे खाने के लिए मुँह मे रखी जाय। कौर। ग्रास। जैसे—(क) वह अनमने भाव से चार गाल खाकर चटपट उठ गया। (ख) वह एक-एक पूरी का एक-एक गाल करता थ।

मुहा०—गाल मारना=ग्रास मुख मे रखना। कौर मुँह मे डालना।

५ उतना अन्न जितना एक बार चक्की मे पीसने के लिए मुट्ठी मे डाला जाता है। झीक। ६. किसी चीज का बीचवाला अश या भाग।

पु० [?] एक प्रकार का तमाखू का पत्ता।

स्त्री०=गाली (प० और राज०)।

गालगूल—पु० [हिं० गाल+अनु०] इधर-उधर की अनाप-शनाप या व्यर्थ की बातें। गपशप।

गालन—पु० [स० √गल् (क्षरित होना)+णिच् +ल्युट्] १ गलाने की क्रिया या भाव। २ किसी तरल पदार्थ को इस प्रकार एक पात्र मे से दूसरे पात्र मे पहुँचाना या ले जाना कि उसमे की मैल पहलेवाले पात्र मे ही रह जाय। (फिल्टरेशन) ३ निचोडना।

गालना†—अ० [हिं० गाल] बातें करना। बोलना।

स० गाल मे रखकर खाना।

गालबंद—पु० [हिं० गाल+बद] एक प्रकार का बधन जिसमे चमडे के तस्मे को किसी कॉटी मे फँसाकर अँटकाते है। (जहाजी)

गालमसूरी—स्त्री० [हिं०] मध्य युग का एक प्रकार का पकवान। उदा०—दूध बरा उत्तम दधि बाटी, गालमसूरी की रुचि न्यारी।—सूर।

गालव—पु० [स० √गल् (चुआना या खाना)+घञ्, गाल√वा (गति, गध)+क] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम जो विश्वामित्र के शिष्य थे। २ पाणिनि से पहले के एक प्राचीन वैयाकरण। ३ एक प्राचीन स्मृतिकार आचार्य। ४ तेंदू का पेड। ५ लोध का पेड।

गालव-माता—स्त्री०=गल का (रोग)।

गाला—पु० [हिं० गाल=ग्रास] १ धुनी हुई रुई का पहल जो चरखे पर सूत कातने के लिए बनाया जाता है। पूनी।

पद—रूई का गाला=बहुत उज्ज्वल। प्रकाशमान।

२ रूई का छोटा टुकडा जो बहुत हल्का होता और हवा मे इधर-उधर उड जाता है।

†पु० दे० 'गाल'।

गालित—वि० [स० √गल+णिच्+क्त] १ गलाया हुआ। २ (तरल पदार्थ) जो एक पात्र मे से दूसरे पात्र मे इस प्रकार ले जाया गया हो कि उसमे की मैल पहलेवाले पात्र मे रह गई हो। ३. निचोडा हुआ।

गालिनी—स्त्री० [स०√गल्+णिच्+णिनि—ङीप्] तत्र की एक मुद्रा।

गालिब—वि० [अ०] १ जो किसी पर छाया हुआ हो। जिसने किसी पर अधिकार जमा लिया अथवा उसे अभिभूत कर लिया हो। २ विजयी। श्रेष्ठ।

गालिबन्—क्रि० वि० [अ०] सभावना है कि। सभवत।

गालिम—वि० [अ० गालिब] १. जिसने किसी को दबा लिया हो। २. प्रचड। प्रबल।

गाली—स्त्री०[स० गालि] १ प्राय क्रुद्ध होने पर किसी को कही जानेवाली कोई ऐसी अश्लील तथा गर्हणीय बात जिसमे किसी के आचरण, प्रतिष्ठा, स्थिति आदि पर अनुचित आक्षेप या आरोप किया गया हो। दुर्वचन।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—निकालना।—बकना।

२. विवाह आदि शुभ अवसरो पर गाये जानेवाले वे गीत जिनमे लोगों को परिहास के लिए कलक-सूचक बातें कही जाती हैं।

गाली-गलौज—स्त्री० [हिं० गाली+गलौज अनु०] दोनो पक्षो का एक दूसरे को गालियाँ देना।

गाली-गुफ्ता—पु०=गाली-गलौज।

गालू—वि० [हिं० गाल०] १ गाल बजानेवाला। बढ-बढ़कर बातें करनेवाला। २ बकवादी।

गाल्हना—अ०, स०=गालना।

गाव†—स्त्री०=गाय।

पु०=बैल।

गावकुशी—स्त्री० [फा०] गोवध। (दे०)

गावकुस—पु०, [स० ग्रीवा=गला+कुश=फल] (घोडे आदि की) लगाम। (डिं०)

गाव-कौहान—पु० [फा०] ऐसा घोडा जिसकी पीठ पर बैल की तरह कूवड निकला हो।

गाव खुर्द—वि० [फा०] १ गायब। लापता। २ नष्ट-भ्रष्ट।

गाव-गिल—स्त्री० [फा०] प्योडी नामक रग।

गावड़—स्त्री० [स० ग्रीवा] गला। गर्दन। (डिं०)

गावड़ी†—स्त्री० १.=गाय। २ =गावड।

गाव-तकिया—पु० [फा०] एक प्रकार का लबा, गोल तथा मोटा तकिया जिसके सहारे प्राय रईस लोग गद्दी पर बैठते हे। मसनद।

गावदी—वि० [हिं० गाय+स० धी] १ सीधा-सादा या ना समझ (व्यक्ति)। २ मूर्ख। जड।

गावदुम—वि० [फा०] १ जो गाय की दुम (पूँछ) की तरह एक ओर मोटा और दूसरी ओर बराबर पतला होता गया हो। २ ढालुवाँ।

गावदुमा—वि०=गावदुम।

गावना—स०=गाना।

गाव-पछाड़—स्त्री० [हिं० गाव=गरदन+पछाड] कुश्ती का एक पेच जिसमे विपक्षी को गले से पकडकर गिरा दिया जाता है।

गावल—पु० [?] दलाल।

गावलाणि—पु०=गावल्गणि (सजय)।

गावली†—स्त्री०=दलाली।

गावल्गणि—पु० [स० गवल्गण+इञ्] सजय का एक नाम।

गाव-सुम्मा—पु० [हिं० गाव+सुम=खुर] फटे हुए खुरोवाला घोडा।

गावी—स्त्री० [देश०] वडी समुद्री नावो पर का पाल।

गास—पु० [स ग्रास] १ विपत्ति। सकट। २ दुख। कष्ट।

गासिया—पु० [अ० गाशिय] घोडे की जीन पर बिछाने का कपडा। जीनपोश।

गाह—स्त्री० [स० गाथा] गाथा (दे०)। उदा०—छद प्रबध कवित्त जति साटक गाह दुहत्थ।—चदवरदाई।

पु० [स०√गह् (गहना+घञ्] गहनता। गहराई।

पु० [स० गाह] १ ग्राहक। २. पकड। ३ ग्राह। मगर।

स्त्री० [फा०] १ कोई विशिष्ट स्थान। जैसे—बदरगाह, शिकारगाह। २ कोई विशिष्ट काल।

गाहक—पु० [स०√गाह (गोता लगाना)+ण्वुल्-अक] अवगाहन करनेवाला।

†पु०=ग्राहक।

मुहा०—(किसी के) जी या प्राण का गाहक होना=किसी की जान लेने पर उतारू होना।

गाहकताई—स्त्री० [स० ग्राहकता] १. ग्राहक होने की अवस्था या भाव। २ कदरदानी। गुण-ग्राहकता।

गाहकी—स्त्री० [हिं० गाहक] १ गाहक। ग्राहक। २ गाहक के हाथ माल बेचने की क्रिया।

गाहटना—स० [स० गाह्] १ मथना। विलोडना। २ नष्ट-भ्रष्ट करना। उदा०—रिण गाहटते राय खलाँ रिण।—प्रिथीराज।

गाहन—पु० [स० ग्रहण] पकडने की क्रिया या भाव। गहण।

पु० [स० √गाह्+ल्युट्–अन] पानी मे पैठकर गोता लगाना।

गाहना—स० [स० अवगाहन] १. पानी मे पैठना या धँसना। २ पानी मे गोता लगाकर थाह लेना। ३ किसी विषय या बात की गहराई की थाह लेना। अवगाहन करना। ४. जल आदि को क्षुब्ध करना। आलोडन करना। ५ अनाज के डठलो को डडे से पीटकर उनके दाने गिराना या झाडना। उदा०—चैत काटा और गाहा नही कि भाँवर पडवा दूँगा। —वृन्दावनलाल। ६ खेत मे हेगा या पाटा चलाना। ७ चलते हुए चक्कर लगाना या दूर तक जाना। ८ कुछ ढूँढने के लिए इधर-उधर दौडना-धूपना और परेशान होना। ९ जहाज की दरारो मे सन आदि भरना। काल-पट्टी करना। (लश०) १० व्यवस्था बिगाडना। गडबडा देना।

गाहा—स्त्री० [स० गाथा, प्रा० गाहा] १ किसी प्रकार का कथात्मक चरित्र-वर्णन। वृत्तान्त। २ आर्या छन्द का दूसरा नाम।

गाहिता (तृ)—वि० [स०√गाह्+तृच्] १ गोता लगाने या स्नान करनेवाला। २ गाहन करनेवाला।

गाहिनी—स्त्री० [स० √गाह्+णिनि–ङीप्] एक प्रकार का विषम वृत्त या छद जिसके चारों चरणो मे क्रम से २२, २०, १८ और १२ मात्राएँ होती है। यह सिहनी छंद का बिलकुल उलटा होता है।

गाही—स्त्री० [हिं० गहना=ग्रहण] वस्तुएँ (विशेषत फल आदि) पाँच-पाँच के समूहो मे बाँटकर गिनने का एक मान। जैसे—१० गाही (अर्थात् ५०) आम।

पद—गाही के गाही=बहुत अधिक।

गाहू—स्त्री०=उपगीति (छन्द)।

गाहे-बगाहे—क्रि० वि० [फा०] १ बीच-बीच मे कुछ स्थानो पर। इधर-उधर। २ बीच-बीच मे। थोडे थोडे समय पर। कभी-कभी।

गिंजना—अ० [हिं० गीजना] किसी पदार्थ का हाथ आदि से ठीक प्रकार से व्यवहार या स्पर्श न किये जाने के कारण खराब या कुछ मैला होना। गीजा जाना।

गिंजाई—स्त्री० [हिं० गीजना] गिंजने या गीजे जाने की क्रिया या भाव।

स्त्री० [स० गृजन] एक प्रकार का छोटा बरसाती कीडा। ग्वालिन। घिनौरी।

गिंड़नी—स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसकी छोटी किन्तु लबोतरी पत्तियो का साग बनता है।

गिंडुरी—स्त्री० दे० 'इँडुआ'।

गिंडुवा—पु०=तकिया।

†अ० गिनती मे आना। गिना जाना।

गिनी—स्त्री० [अं०] १. इगलैंड मे प्रचलित एक प्रकार का सोने का सिक्का। २ एक प्रकार की लबी विलायती घास जो मैदानो मे लगाई जाती है।

गिन्ती—स्त्री०=गिनती।

गिन्नी—स्त्री० [हिं० घिरनी] १. चक्कर। २ घुमाने या चक्कर खिलाने की क्रिया।

स्त्री०=गिर्नी।

गिम—स्त्री० [स० ग्रीवा] गरदन। गला। उदा०—गिम सजो लावल मुकुता हारे। —विद्यापति।

गिमटी—स्त्री० [अ० डिमिटी] एक प्रकार का बढ़िया मजबूत सूती कपडा।

गिय—पु०=गिउ (गला)।

गियान*—पु०=ज्ञान।

गियाह—पु० [स० हय] एक प्रकार का घोडा। घोडो की एक जाति।

गिर्—स्त्री० [स०√गृ (शब्द)+क्विप्] दे० 'गिरा'।

गिरंट—पु० [अ० गार्नेट] १ ग्वारनट नाम का बढिया रेशमी कपडा। २ एक प्रकार की देशी मलमल।

गिरंथ—पु०=ग्रथ।

गिरंदा—वि० [फा० गीर=पकडनेवाला] १ पकड़ने या पकडकर रखने-वाला। २ फदे मे फँसानेवाला। उदा०—हँस हँस मन मूसि लिया वे बडा गरीब गिरदा है।—आनन्दघन।

गिरंस—वि०=भारी। उदा०—तरकस पच गिरस तीर प्रति सनँग तीन सय।—चदवरदाई।

गिर—पु० [सं० गिरि से] गिरनार काठियावाड के देश का भैसा।

†पु०=गिरि।

(गिर के यौ० के लिए दे० गिरि के यौ०)

*स्त्री०=गिरा (वाणी)।

गिरई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

गिरगट—पु०=गिरगिट।

गिरगिट—पु० [स० कृकलास या गलगवि] छिपकली की जाति का एक जतु जो आवश्यकतानुसार अपना रंग बदल लेता है।

मुहा०—**गिरगिट की तरह रंग बदलना**=कभी कुछ और कभी कुछ करना, कहना या मानना। एक बात पर स्थिर न रहना।

गिरगिटान—पु०=गिरगिट।

गिरगिट्टी—स्त्री०[?] एक प्रकार का छोटा पेड जिसकी छाल खाकी रग की होती है।

गिरगिरी—स्त्री० [अनु०] चिकारे या सारंगी की तरह का एक प्रकार का खिलौना।

गिरजा—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जो कीड़े-मकोड़े खाता है।
पु० [पुर्त० इगरिजिया] ईसाइयो का प्रार्थना-मदिर।
स्त्री०=गिरिजा।

गिरणा†—पु०=गिद्ध। (राज०) उदा०—कायर केरे मास को गिर-णा कबहुँ न खाइ।—जटमल।

गिरद—अव्य०=गिर्द।

गिरदा—पु० [फा० गिर्द] १ घेरा। २ चक्कर। ३. तकिया। ४. हल-वाइयों आदि का पाठ करता है। ५. कपड़े का वह गोल टुकड़ा जो हुक्के के नीचे रखा जाता है। ६ [illegible] फरी। ७ नगरों, टोल आदि का घेरना।

गिरदागिरद—क्रि० वि० =गिर्दागिर्द।

गिरदान—पु० १ =गिरगिट। २.=गरदान।

गिरदाब—पु० [फा० गिर्दाब] पानी का भँवर।

गिरदाली—स्त्री० [फा० गिर्द] लोहारो का एक उपकरण जिससे वे गलाया हुआ लोहा एक स्थान पर समेटते है।

गिरदावर—पु० [फा०] वह अधिकारी जो किसी क्षेत्र मे घूम-घूमकर कामों की जाँच या देख-रेख करता हो।

गिरदावरी—स्त्री० [फा०] गिरदावर का काम या पद।

गिरदौह—क्रि० वि० [फा० गिर्द] आस-पास। इर्द-गिर्द। उदा०—नरनाहाँ वर गढ्ढ, गाह गिरदौह दुअनय।—चन्दवरदाई।

गिरवर—वि० पु०=गिरिधर।

गिरवारन—पु० दे० 'गिरिवर'।

गिरधारी—पु० दे० 'गिरिधर'।

गिरना—अ० [स० गलन] १ किसी उच्च स्तर या स्थान पर स्थित वस्तु का अचानक तीव्र वेग से जमीन पर आ पडना। जैसे—(क) आकाश से हवाई जहाज या तारा गिरना। (ख) छत पर से लड़के का नीचे गिरना। २ किसी ऊँचे स्थान पर बँधी, लगी या लटकती हुई वस्तु का अपने आधार से छूट या टूटकर नीचे के स्थान पर आ पडना। जैसे—(क) पेड से पत्ता या फल गिरना। (ख) कूएँ मे बाल्टी गिरना। ३ जमीन को आधार बनाकर उस पर खड़ी होने, बैठने अथवा चलनेवाली वस्तु का जमीन पर पड या लेट जाना। जैसे—(क) दीवार या छत गिरना। (ख) कुरसी या मेज गिरना। (ग) चलती हुई गाड़ी या दौड़ता हुआ लड़का गिरना।

पद—**गिरता-पड़ता या गिर-पडकर**=बहुत कठिनाई या मुश्किल से। गिरा-पड़ा (देखें)।

४ किसी धारा या प्रवाह का नदी या समुद्र मे मिलना। जैसे—गंगा नदी कलकत्ते के पास समुद्र मे गिरती है। ५. किसी उच्च विभाग, श्रेणी, स्थिति आदि मे होने या रहनेवाली वस्तु का अपेक्षया निम्न विभाग, श्रेणी, स्थिति आदि मे जाना। नीचे आना। जैसे—तापमान गिरना, पारा गिरना। ६ लाक्षणिक अर्थ मे, प्रशस्त स्तर या मान आदि से किसी चीज का अवनति या उतार पर होना। जैसे—स्वास्थ्य गिरना। ७ कारोबार काम या मन्द होना। जैसे—बाजार गिरना। ८ किसी वस्तु के मूल्य मे उतार या कमी होना। जैसे—चीजो का भाव गिरना। १०. किसी वस्तु को देखने, लेने आदि के लिए बहुत से व्यक्तियों का एक साथ जा पहुँचना। जैसे—दुकान पर ग्राहकों का गिरना। ११. किसी स्थान पर बहुत अधिक भीड़ जमने पर एक दूसरे को धक्के लगाना। जैसे—आदमी पर आदमी गिरना। १२ किसी ऐसे रोग का होना जिससे शरीर के अंगों का विकार हो कि उसका वेग ऊपर से नीचे को आता है। जैसे—[illegible] गिरना, फालिज (लकवा) गिरना। १३ सहसा अप्रत्याशित रूप से उपस्थित या प्राप्त होना। आ पड़ना। जैसे—(क) सिर पर विपत्ति का पहाड़ गिरना। (ख) शिकार मे आकर बाज़ का [illegible] गिरना।

गिरनार—पुं० [सं० गिरि+हिं० नार=नगर] गुजरात में स्थित रैवतक नामक एक पर्वत जो जैनियों का तीर्थ है।

गिरनारी, गिरनाली—वि० [हिं० गिरनार] गिरनार पर्वत का। गिरनार सम्बन्धी।

पुं० गिरनार का निवासी।

गिरफ्त—स्त्री० [फा०] १ कोई चीज अच्छी तरह पकड़ने की क्रिया या भाव। पकड़। २ हथियारों का वह अंग जहाँ से वे पकड़े जाते हैं। ३ अपराध, दोष, भूल आदि का पता लगाने का खास ढंग या हथकंडा।

गिरफ्तार—वि० [फा०] १ जो कोई अपराध या दोष करने के कारण अधिकारियों द्वारा पकड़ा गया हो। २ कष्ट, संकट आदि में ग्रस्त या फँसा हुआ।

गिरफ्तारी—स्त्री० [फा०] १ गिरफ्तार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ कोई अभियोग लगने या अपराध करने पर उसके विचार के लिए राज्य द्वारा पकड़े जाने की क्रिया, अवस्था या भाव। (अरेस्ट)

गिरवान—पु० [सं० ग्रीवा] गर्दन। गला।

†पु०=गरेबान।

गिरबूटी—पु० [सं० गिरि+हिं० बूटी] अगूर-शेफा (देखें)।

गिरमिट—पु० [अं० गिमलेट=बड़ा बरमा] लकड़ी, लोहे आदि में छेद करने का बड़ा बरमा।

पु० [अं० एग्रीमेंट] इकरारनामा। संविदा-पत्र।

गिरमिटिया—पु० [हिं० गिरमिट] किसी उपनिवेश में गया हुआ शर्तबंद हिन्दुस्तानी मजदूर।

गिरवर—पु०=गिरिवर।

गिरवान*—पु०=गीर्वाण।

पु० [फा० गरेबान] १ कुरते आदि में गले का भाग। २ गरदन। गला।

गिरवाना—स० [हिं० गिराना] १. किसी को कोई चीज गिराने में प्रवृत्त करना। २ किसी से तोड़ने-फोड़ने या गिराने का काम करवाना। जैसे—मकान या दीवार गिरवाना।

गिरवी—वि० [फा०] १ (चीज) जो गिरो या रेहन रखी गई हो। २. रेहन रखे हुए माल से संबंध रखनेवाला। रेहन संबंधी।

†स्त्री० गिरो। बंधक। रेहन।

गिरवीदार—पु० [फा०] वह व्यक्ति जो दूसरों को रुपए उधार देने के बदले में उनकी वस्तुएँ अपने पास बंधक रखता हो। रेहनदार।

गिरवीनामा—पु० [फा०] वह लेख्य जिसमें गिरो की शर्तें लिखी हों। रेहननामा।

गिरवीपत्र—पु० दे० 'गिरवीनामा'।

गिरस्त†—पु० [सं० गृहस्थ] १. पूर्वी उत्तर प्रदेश के मुसलमान जुलाहे (कदाचित् गृहस्थ साधुओं के वंशज होने के कारण)। २. दे० 'गृहस्थ'।

गिरस्ती—स्त्री०=गृहस्थी।

गिरह—स्त्री० [सं० ग्रह से फा०] १. कपड़े, डोरी आदि के सिरे को एक दूसरे में फँसाकर बाँधी जानेवाली गाँठ। २ किसी कपड़े, धोती आदि के पल्ले में कोई चीज विशेषत पैसे आदि रखकर तथा लपेटकर लगाई जानेवाली गाँठ जिसे लोग प्राय कमर में खोसते थे। ३. खरीता। खीसा। जेब। ४ गाँठ के रूप में उठा हुआ शरीर के दो अंगों का संधि-स्थान। जैसे—जाँघ और टाँग के बीच का घुटने पर का जोड़। ५ गज का सोलहवाँ अंश या भाग। ६ कलाबाजी। कलैया। ७ कुश्ती का एक दाँव।

पद—गिरहकट (दे०)।

पु० गृह। उदा०—गिरह उजाड़ एक सम लेखौं। —कबीर।

गिरहकट—पु० [फा० गिरह=जेब या गाँठ+हिं० काटना] गिरह या गाँठ में बँधा हुआ धन काटनेवाला व्यक्ति। जेबकतरा।

गिरहथ—पु०=गृहस्थ।

गिरहदार—वि० [फा० गिरह=जेब या गाँठ] जिसमें गाँठ या गाँठें पड़ी हों। गठीला।

गिरहबाज—पु० [फा०] एक प्रकार का कबूतर जो आकाश में उड़ते समय कलैया खाता है।

गिरहर—वि० [हिं० गिरना+हर (प्रत्य०)] जो शीघ्र ही गिर पड़ने को हो। गिराऊ।

गिरही—पु० [सं० गृहिन्] १ गृहस्थ। २ देव-दर्शन के लिए आया हुआ यात्री। (पडे और भडुडर)

गिराँ—वि० [फा० गरा] १ जिसका दाम अधिक हो। बहुमूल्य। महँगा। २ भारी। ३. अप्रिय या अरुचिकर।

गिरा—स्त्री० [सं०√गॄ (शब्द)+क्विप्—टाप्] १. वह शक्ति जिसकी सहायता से मनुष्य बातें करता या बोलता है। वाक् शक्ति। २ उक्त शक्ति की देवी, सरस्वती। ३ सरस्वती नदी। ४ जबान। जीभ। ५ कही या बोली हुई बात। ६ बोली या भाषा। जबान। ७ सुन्दर कविता।

गिराज—पु० [अं० गैरेज] मोटर गाड़ी रखने के लिए बना हुआ कमरा या कोठा।

गिराधव—पु० [सं०] ब्रह्मा।

गिराधौ—*पु०=गिराधव।

गिराना—स० [हिं० गिरना] १ किसी उच्च स्तर या स्थान पर स्थित वस्तु को बलपूर्वक नीचे उतारना या लाना। जैसे—परदा गिराना। २ किसी आधार पर खड़ी वस्तु को आघात आदि पहुँचा कर जमीन पर लाना। जैसे—(क) किसी को चबूतरे या कुरसी से नीचे गिराना (ख) रेल की लाइन तोड़ कर गाड़ी गिराना। ३ किसी वस्तु या रचना को तोड़-फोड़ कर उसका नाश या ध्वंस करना। जैसे—दीवार या मकान गिराना। ४ महत्त्व, मूल्य, शक्ति आदि घटाना या कम करना। जैसे—दाम गिराना। ५ धार्मिक, नैतिक आदि दृष्टियों से निम्न स्तर पर लाना। जैसे—अधिकार के पद ने ही उन्हें इतना गिराया है। ६ प्रवाह को ढाल की ओर ले जाना। जैसे—नाली में मोरी का पानी गिराना। ७ किसी चीज को इस प्रकार हाथ से छोड़ देना कि वह नीचे जा पड़े। जैसे—लोटा या दावात गिराना। ८. किसी पात्र में रखी हुई वस्तु को जमीन पर उँडेलना। जैसे—लोटे में का पानी या दावात में की स्याही गिराना। ९. कोई ऐसा रोग उत्पन्न करना जिसके विषय में लोगों का यह विश्वास हो कि उसका वेग ऊपर से नीचे की ओर जाता या होता है। जैसे—बहुत अधिक मानसिक चिंता नजला गिराती है। १० उपस्थित करना। सामने ला रखना। जैसे—मकान बनाने के लिए ईंटें या मसाला गिराना। ११. युद्ध या लड़ाई में बुरी तरह से घायल करना या मार डालना। जैसे—चार सिपाहियों को तो अकेले उसी ने गिराया था।

गिरानी—स्त्री० [फा०] १ वह स्थिति जिसमे चीजे महँगी हो जाती हैं। मँहगी। २ अपच आदि के कारण होनेवाला पेट का भारीपन।

गिरा-पड़ा—वि० [हिं० गिरना+पडना] १ जमीन पर गिरकर पडा हुआ। २ टूटा-फूटा। जीर्ण-शीर्ण। ३ पतित। ४ जिसका कुछ भी महत्त्व या मूल्य न हो।

गिरापति—पु० [स० ष० त०] ब्रह्मा।

गिरापतु—पु० [स० गिरा-पितृ] सरस्वती के पिता। ब्रह्मा।

गिरामी—वि०=गरामी (प्रसिद्ध)।

गिराव—पु० [अ० ग्रेप] तोप का वह गोला जिसमे छोटी छोटी गोलियाँ और छर्रे भी रहते है।

पु०=गिरावट।

गिरावट—स्त्री० [हिं० गिरना] १ गिरने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. अध पात। पतन।

गिरावना—स०=गिराना।

गिरास—पु०=ग्रास।

गिरासना†—स०=ग्रसना।

गिरासी—स्त्री० [देश०] गुजरात मे रहनेवाली एक उपद्रवी प्राचीन जाति।

गिराह—पु० [स० ग्राह] ग्राह या मगर नामक जलजतु।

गिरि—पु० [स०√गॄ+कि] १ पर्वत। पहाड। २. दशनामी साधुओ के एक वर्ग की उपाधि। जैसे—स्वामी परमानन्द गिरि। ३ सन्यासियों का एक भेद या वर्ग। ४ पारे का एक दोष जो खानेवाले का शरीर जड़ कर देता है। ५ आँख का एक रोग जिसमे ढेढर या पुतली फट या फूट जाती है।

गिरि-कटक—पु० [ष० त०] वज्र।

गिरि-कंदर—पु० [ष० त०] पहाड की गुफा।

गिरिक—वि० [स० गिरि+कन्] १ गिरि या पर्वत सवधी। गिरि या पर्वत मे होनेवाला। पहाडी।

पु० [स० गिरि√कै (प्रकाशित होना) +क] महादेव। शिव।

गिरि-कदंब—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का कदव (वृक्ष)।

गिरि-कदली—स्त्री० [मध्य० स०] पहाडी केला।

गिरि-कर्णिका—स्त्री० [गिरि-कर्ण, व० स० कप्, टाप्, इत्व] १ पृथ्वी। २ अपराजिता लता। ३ अपामार्ग। चिचड़ा।

गिरि-कर्णी—स्त्री० [गिरि-कर्ण, व० स० ङीप्] १ अपराजिता या कोयल नाम की लता। २ जवासा।

गिरिका—स्त्री० [स० गिरि+क-टाप्] १ चूहे की मादा। चूही। २ छोटा चूहा। चुहिया।

गिरि-काण—वि० [तृ० त०] जो गिरि नामक नेत्ररोग के कारण काना हो गया हो।

गिरि-कूट—पु० [ष० त०] पहाड़ की चोटी।

गिरिचर—पु० [स० गिरि√चर् (चलना)+ट] पहाड पर रहने या विचरण करनेवाला।

गिरिज—वि० [स० गिरि√जन् (उत्पन्न होना)+ड] पहाड पर, पहाड मे या पहाड से उत्पन्न होनेवाला।

पु० १ शिलाजीत। २ लोहा। ३ अवरक। अभ्रक। ४ गेरू। ५. एक प्रकार का पहाडी महुआ।

गिरिजा—स्त्री० [सं० गिरिज-टाप्] १ हिमालय की पुत्री, पार्वती। गौरी। २ गगा। ३ पहाड़ी केला। ४ चमेली। ५ चकोतरा।

पु०=गिरजा (ईसाइयो का प्रार्थना-मदिर)।

गिरिजा-कुमार—पु० [ष० त०] कार्तिकेय।

गिरिजा-पति—पु० [ष० त०] महादेव।

गिरिजा-बीज—पु० [ष० त०] गधक।

गिरिजा-मल—पु० [ष० त०] अभ्रक।

गिरि-जाल—पु० [ष० त०] पर्वत-माला।

गिरिज्वर—पु० [स० गिरि√ज्वर् (रुग्ण होना) +णिच्+अच्] वज्र।

गिरित्र—पु० [स० गिरि√त्रै (रक्षा करना)+क] १ महादेव। शिव। २ समुद्र। सागर।

गिरि-दुर्ग—पु० [स० कर्म० स०] पहाडी किला।

गिरि-दुहिता (तृ)—स्त्री० [ष० त०] पार्वती।

गिरि-द्वार—पु० [ष० त०] पहाड की घाटी। दर्रा।

गिरिधर—पु० [ष० त०] गिरि अर्थात् गोवर्धन पर्वत को धारण करनेवाले, श्रीकृष्ण।

गिरिधरन—पु०=गिरिधर।

गिरि-धातु—पु० [ष० त०] गेरू।

गिरिधारन—पु०=गिरिधर।

गिरिधारी (रिन्)—पु० [स० गिरि√धृ (धारण करना)+णिनि] श्रीकृष्ण।

गिरि-ध्वज—पु० [ब० स०] इद्र।

गिरि-नंदिनी—स्त्री० [ष० त०] १ पार्वती। २ गगा। ३ पहाड से निकली हुई नदी।

गिरि-नगर—पु० [स० मध्य० स०] १ गिरनार पर्वत पर बसा हुआ एक नगर जो जैनियो का एक पवित्र तीर्थ है। २ पुराण के अनुसार रैवतक पर्वत।

गिरि-नाथ—पु० [ष० त०] १ महादेव। शिव। २ हिमालय। ३ गोवर्धन पर्वत।

गिरि-नितंब—पु० [ष० त०] पहाड की ढाल।

गिरि-पथ—पु० [मध्य० स०] दो पहाडो के बीच का मार्ग। घाटी। दर्रा।

गिरि-पीलु—पु० [ष० त०] फालसा।

गिरिपुष्पक—पु० [गिरि-पुष्प ष० त०, गिरिपुष्प√कै (चमकना)+की] १ पथरफोड नाम का पौधा। २ शिलाजीत।

गिरि-प्रस्थ—पु० [ष० त०] पहाड के ऊपर का चौरस मैदान।

गिरि-प्रिया—स्त्री० [ब० स०] सुरागाय

गिरि-बांधव—पु० [ष० त०] शिव।

गिरिभिद्—पु० [स० गिरि√भिद् (फाडना) +क्विप्] पाषाण भेद।

वि० पहाडो को फोडनेवाला (नद, नदी, झरना आदि)।

गिरिमल्लिका—स्त्री० [गिरि-मल्लि, स० त० + कन्-टाप्] कुटज। कोरैया।

गिरि-मान—पु० [ब० स०] बहुत बड़ा हाथी।

गिरि-मृत्—स्त्री० [ष० त०] १. पहाडी मिट्टी। २ गेरू।

गिरि-राज—पु० [ष० त०] १ बड़ा पर्वत। २ हिमालय। ३. गोवर्धन पर्वत। ४. सुमेरु।

गिरि-वर्तिका—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का पहाडी हस।

गिरि-व्रज—पु० [ब० स०] १. केकय देश की राजधानी। २ जरासंध की राजधानी, राजगृह।

गिरिश—पु० [स० गिरि√शी (सोना)+ड] महादेव। शिव।

गिरिशाल—पु० [स० गिरि√शल् (गति)+अण्] एक प्रकार का बाज पक्षी।

गिरिशालिनी—स्त्री० [स० गिरि√शल्+णिनि-ङीप्] अपराजिता लता।

गिरि-शिखर—पु० [प० त०] पहाड की चोटी।

गिरि-संभव—पु० [ब० स०] एक प्रकार का पहाडी चूहा।

गिरि-सार—पु० [प० त०] १. लोहा। २ शिलाजीत। ३. राँगा। ४ मैनाक पर्वत। ५. मलय पर्वत।

गिरि-सुत—पु० [प० त०] मैनाक पर्वत।

गिरि-सुता—स्त्री० [प० त०] पार्वती।

गिरींद्र—पु० [गिरि-इंद्र, प० त०] १ बहुत बडा पर्वत या पहाड। २ हिमालय। ३ शिव। ४. आठ बडे पर्वतो के आधार पर ८ की सख्या।

गिरी—स्त्री० [हिं० गरी] कुछ विशिष्ट फलो के बीजो के अदर का मुलायम गूदा जिसकी गिनती सूखे मेवो मे होती है। जैसे—खरबूजे के बीजो या बादाम की गिरी।

पु०=गिरि।

गिरीश—पु० [गिरि-ईश, प० त०] १ बहुत बडा पर्वत या पर्वतो का राजा। २ हिमालय पर्वत। ३. सुमेरु पर्वत। ४ कैलास पर्वत। ५ गोवर्धन पर्वत। ६. महादेव। शिव।

गिरेबान—पु०=गरेबान।

गिरेवा—पु० [स० गिरि] १ छोटी पहाडी। टीला। २. पहाड या पहाडी पर की ऊँची चढ़ाई।

गिरेश—पु० [स० गिरा—ईश, प० त०] १ ब्रह्मा। २. विष्णु।

गिरैयाँ—स्त्री० [हिं० गेरना=डालना] बैलो आदि के गले में बाँधी जाने-वाली रस्सी। गेराँव। पगहा। उदा०—तिय जानि गिरैयाँ गही बन-माल सुऐंचे लला इँच्यो छावत हे।—पद्माकर।

गिरैया†—वि० [हिं० गिराना+ऐया (प्रत्य०)] १. गिरानेवाला। २ गिरनेवाला। ३ पतनोन्मुख।

गिरो—पु० [फा०] १ कोई चीज किसी के पास जमानत के रूप मे रखकर उससे रुपया उधार लेना। रेहन। २ दूसरे की कोई चीज जमानत मे रखकर उसके बदले मे रुपए उधार देना। रेहन।

पद—गिरो-गट्ठा=दूसरो की चीजे अपने पास रेहन रखने का व्यवसाय।

वि० (वस्तु) जो रेहन रखी गई हो।

गिरोवर—पु० [स० गिरिवर] पर्वत।

गिर्गिट—पु०=गिरगिट।

गिर्जा—पुं० दे० 'गिरजा'।

स्त्री०=गिरिजा।

गिर्जाघर—पु० दे० 'गिरजा'।

गिर्द—अव्य० [फा०] १. आस-पास। २. चारो ओर।

पद—इर्द-गिर्द (देखें)।

पु० किसी चीज की गोलाई या उसकी नाप। घेरा।

गिर्दागिर्द—अव्य० [अव्य०] १. आस-पास। इर्द-गिर्द। २ चारो ओर।

गिर्दाब—पु० [फा०] भँवर।

गिर्दावर—वि० [फा०] चारो ओर घूमनेवाला।

पु० १. वह अधिकारी जो चारों ओर घूम-घूमकर कामों और कर्मचारियों का निरीक्षण करता हो। २. मालविभाग का एक अधिकारी जो पटवारियों के कामो की जाँच करता है।

गिल—पु० [स० गिल् (लीलना)+क] १. मगर नामक जल-जतु। २ जँबीरी नीबू।

वि० निगलने या खानेवाला।

स्त्री० [फा०] १. मिट्टी। २. गीली मिट्टी। ३ गारा।

गिलकार—पु० [फा०] गारे और चूने से इमारत का काम करनेवाला कारीगर। मेमार। राज।

गिलकारी—स्त्री० [फा०] गारे और चूने से इमारत बनाने, विशेषत दीवारों पर पलस्तर लगाने का काम।

गिलकिया—स्त्री० [देश०] नेनुवाँ या घियातोरी नामक तरकारी।

गिलगिल—पु० [स० गिल√गिल्+क] नक्र या नाक नामक जलजन्तु।

गिलगिला—वि० [हिं० गीला-गीला] [स्त्री० गिलगिली] १. आर्द्र और कोमल। गीला और नरम। २ करुणा, रोष आदि के कारण रोमाचित। उदा०—कोटरो से गिलगिली घृणा यह झाँकती हे।—अज्ञेय।

†पु० एक प्रकार का पक्षी।

गिलगिलिया—स्त्री० [अनु०] सिरोही नाम की चिडिया। किलहँटी।

गिलगिली—पु० [देश०] घोड़ो की एक जाति।

स्त्री० गिलगिलिया या सिरोही नामक चिडिया।

गिलजई—पु० [देश०] अफगानिस्तान की एक वीर जाति।

गिलट—पु० [अं० गिल्ड=सोना चढाना] १ पीतल, लोहे आदि की बनी हुई ऐसी वस्तु जिस पर सोने, चाँदी आदि का पानी चढा हुआ हो। २ उक्त प्रकार से सोने या चाँदी का पानी चढ़ाने की क्रिया या भाव। ३ सफेद रंग की एक घटिया धातु।

गिलटी—स्त्री० [स० ग्रंथि] १ शरीर के अन्दर जोड़ो आदि के पास होनेवाली गोल गाँठ जिसमे से कई प्रकार के रस निकलकर शारीरिक व्यापारो मे सहायक होते हैं। २. रक्त मे विकार होने के कारण शरीर के अन्दर पडनेवाली छोटी गाँठ। ३ एक रोग जिसमे शरीर के विभिन्न अगो मे गाँठें निकल आती है। ४ दे० 'ग्रंथि'।

गिलण*—पु०=गिलन।

गिलन—पु० [स०√गिल्+ल्युट्-अन] [वि० गिलित] निगलने की क्रिया या भाव।

†पु०=गैलन।

गिलना—स० [स० गिलन] १. निगलना। २. इस प्रकार छिपा या दबा लेना कि किसी को पता न चले। ३. ग्रसना। उदा०—अद्भुत द्रव्य ससि अहि गिल्यौ, साख सुरंग मनावही।—चन्दबरदाई।

गिलबिला—वि० [अनु०] आर्द्र और कोमल। पिलपिला।

गिलबिलाना—अ० [अनु०] अस्पष्ट उच्चारण के कारण बोलने मे गड-बडाना।

गिलम—स्त्री० [फा० गिलीम=कबल] १. ऊन का बना हुआ मुलायम और चिकना कालीन। २. बडा और मोटा पर मुलायम गद्दा (बिछाने का)।

† वि० कोमल। नरम। मुलायम।

गिलमाँ—पु० [अ० 'गुलाम' का वहु०] इस्लाम के अनुसार वे सुन्दर बालक जो बहिश्त मे धर्मात्माओ की सेवा और भोग-विलास के लिए रहते हैं।

गिलमिल—पु० [हिं० गिलम=कोमल] मध्य युग का एक प्रकार का बढिया मुलायम कपड़ा।

गिलम्मा†—वि० दे० 'गिलम'।
† पु० दे० 'गिलमाँ'।

गिलहरा—पु० [देश०] एक प्रकार का धारीदार, मोटा सूती कपडा।
पु० गिलहरी का नर।
†पु०=वेलहरा।

गिलहरी—स्त्री० [सं० गिरि=चुहिया] चूहे की तरह का एक प्रसिद्ध छोटा जन्तु जो प्राय. घरो और वगीचो मे रहता और पेडो पर चढ़ सकता है।

गिल-हिकमत—स्त्री० [फा० +अ०] औषध बनाने की कपडौटी नाम की क्रिया। दे० 'कपडौटी'।

गिला—पु० [फा०] १ उपालभ। उलाहना। २ निंदा। शिकायत।

गिलाई—स्त्री०=गिलहरी।

गिलाजत—स्त्री० [अ० गलीज का भाव०] १. गलीज या गदे होने की अवस्था या भाव। गदगी। २ गदी और वुरी चीज। ३ मल। गुह।

गिलान†—स्त्री० [हिं० गीला] गीलापन।
† स्त्री०=ग्लानि। उदा०—लखि दरिद्र विद्वान को जग-जन करे गिलान।—दीन०।

गिलाफ—पु० [अ०] १ कपडे की वह वडी थैली जो तकिये, लिहाफ आदि के ऊपर उनकी रक्षा के लिए चढाई जाती है। खोल। २ तलवार आदि की म्यान। कोष।
† पु० 'लिहाफ' के स्थान पर भूल से प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

गिलाय—स्त्री०=गिलहरी।

गिलायु—पु० [स० गिल+क्यङ्+उ] एक रोग जिसमे गले के अदर गाँठे वँध जाती है। इसमे वहुत पीडा होती है।

गिलावा†—पु० [फा० गिल=मिट्टी+आव=पानी] मिट्टी और पानी का वना हुआ वह गाढा घोल जिससे राज मजदूर दीवारो की चुनाई करते हैं। गारा।

गिलास—पु० [अ० ग्लास] १ पीतल, लोहे, शीशे आदि का वना हुआ पानी पीने का एक प्रसिद्ध लवोतरा छोटा वरतन। २ किसी वस्तु की उतनी मात्रा जितनी उक्त पात्र में समाती हो। जैसे—मैंने तीन गिलास पानी पीया। ३ आलू-वालू या ओलची नाम का पेड जिसका फल वहुत मुलायम और स्वादिष्ट होता है।

गिलित—भू० कृ० [स० √गिल्+क्त] निगला हुआ।

गिलिम—स्त्री०, वि०=गिलम।

गिली—वि० [फा० गिल=मिट्टी] १. मिट्टी से सम्बन्ध रखनेवाला। २ मिट्टी का वना हुआ।
† स्त्री०=गुल्ली।

गिलेफ†—पु०=गिलाफ।

गिलोय—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की कडवी वेल जिसके पत्ते दवा के काम आते हैं। गुरुच। गुडूची।

गिलोल†—स्त्री०=गुलेल। उदा०—लोल हैं कलोल ते गिलोल से लसत है।—सेनापति।

गिलोला—† पु० दे० 'गुलेला'।

गिलौंदा†—पु०=गुलेंदा।

गिलौरी—स्त्री० [देश०] लगे हुए पानो का वीडा।
पु० [सं० गल्प] १ ज्ञान की वातें। ज्ञान-चर्चा। २. मन-वहलाव के लिए की जानेवाली वातचीत (वाजारू)।

गिलौरीदान—पु० [हिं० गिलौरी+दान] पान रखने का डिब्बा। पानदान।

गिल्टी†—स्त्री०=गिलटी।

गिल्यान†—स्त्री०=ग्लानि।

गिल्ला—पु०=गिला (शिकायत)।
† वि०=गीला।

गिल्ली—स्त्री०=गुल्ली।

गिल्लो†—स्त्री०=गिलहरी।

गिव†—स्त्री० [स० ग्रीवा] गरदन। गला। उदा०—चूरहिं गिव अभरन औहारू।—जायसी।

गिवन†—पु० [?] गैंडा नामक पशु। (राज०)

गिवल†—पु० [?] गैंडा। उदा०—जिणवन भूलन जावता, गैंद गिवल गिडराज।—कविराजा सूर्यमल।

गिष्णु—पु० [स० √गा (गाना)+इष्णुच्, आकार का लोप] १ मत्र सस्वर गानेवाला व्यक्ति। २ गवैया। गायक।

गिहथ†—पु० [स० गृहस्थ] [स्त्री० गिहथिन] =गृहस्थ।

गींजना—स० [स० गृजन] किसी कोमल या चिकनी वस्तु को हाथ से दवा, मरोड या मसलकर खराव करना। जैसे—कपडा, फल या फूल गीजना।

गींद†—पु०=गेंद।

गींदवा†—पु० [स० गेडुक] छोटा गोल तकिया। (राज०) उदा०-मुडियाँ मिलसी गीदवो वलेन धणरी वाँह।— कविराजा सूर्यमल।

गींडुआ—पु०=गीदवा।

गींव†—स्त्री० [स० ग्रीवा] गर्दन। गला।

गी (गिर्)—स्त्री० [स० √गृ (शब्द करना)+क्विप्] १ वोलने की शक्ति। वाणी। २. सरस्वती।

गीउ—स्त्री०=ग्रीवा (गला)।

गीठम—पु० [देश०] एक प्रकार का घटिया गलीचा।

गीड़†—पु० [हिं० कीट=मैल] आँख से निकलनेवाला कीचड।

गीत—वि० [स० √गै (गाना)+क्त] गाने के रूप मे आया या लाया हुआ। गाया हुआ।
पु० वह छोटी पद्यात्मक रचना जो केवल गाये जाने के लिए वनी हो।
विशेष—(क) इसमे प्राय एक ही भाव की अभिव्यजना होती है। (ख) इसमे लय तथा स्वर की प्रधानता अन्य पद्यात्मक रचनाओ से अधिक होती है।
२ प्रशसा। वडाई।
मुहा०—(किसी के) गीत गाना=प्रशसा या वडाई करना।
३ कथन। चर्चा।
मुहा०—(अपना) गीत गाना=वरावर अपनी ही वात कहते जाना।

गीतक—पु० [स० गीत+कन्] १. गीत। गाना। २. प्रशंसा। बड़ाई। वि० १ गीत गानेवाला। २. गीत बनानेवाला।
गीतकार—पु० [स० गीत√कृ (करना)+अण्] [भाव० गीतकारिता] वह जो लोगो के गाने के लिए गीत बनाता या लिखता हो।
गीत-क्रम—पु० [प० त०] १ किसी गीत के स्वरो के उतार-चढाव अर्थात् गाने का क्रम। २ सगीत में एक प्रकार की तान।
गीत-प्रिय—पु० [ब० स०] शिव।
गीत-प्रिया—स्त्री० [ब० स० टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।
गीत-भार—पु० [प० त०] १ गीत का पहला चरण या पद। टेक। २. उक्त (टेक) के विस्तृत अर्थ मे की हुई ऐसी प्रतिज्ञा जिसका पूरा निर्वाह किया जाय। टेक।
गीता—स्त्री० [स० गीत+टाप्] १. ऐसी छदोबद्ध कथा या वृत्तान्त जो लोगों के गाने के लिए प्रस्तुत किया गया हो। २. किसी का दिया हुआ छन्दोबद्ध और ज्ञानमय उपदेश। जैसे—रामगीता, शिवगीता आदि। ३ तारीफ। प्रशसा। उदा०—एक रस एक रूप जाकी गीता सुनियत।—केशव। ४ भगवद्गीता। ५ सकीर्ण राग का एक भेद। ६. छब्बीस मात्राओं का एक छद जिसमे १४ और १२ मात्राओं पर विराम होता है।
गीतातीत—वि० [स० गीत-अतीत, द्वि० त०] १. जो गाया न जा सके। २ जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय। अनिर्वचनीय।
गीतायन—पु० [स० गीत-अयन, प० त०] गीत के साधन, वीणा, मृदग आदि।
गीति—स्त्री० [सं०√गै+क्तिन्] १. गान। गीत। २. आर्या छन्द का एक भेद जिसके विषम चरणों मे १२ और सम चरणो में १८ मात्राएँ होती हैं। उद्गाथा। उद्गाहा।
गीतिका—स्त्री० [स० गीति+कन्–टाप्] १. छोटा गीत। २. एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ और १० के विराम से २६ मात्राएँ होती है। इसकी तीसरी, १० वी, १७ वी और २४ वी मात्राएँ सदा लघु होती है। ३ एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण में, सगण, जगण, भगण, रगण, सगण और लघु, गुरु, होते है।
गीति-काव्य—पु० [मध्य० स०] ऐसा काव्य जो मुख्यत गाये जाने के उद्देश्य मे ही बना हो।
गीति-नाट्य—पु०=गीति-रूपक।
गीति-रूपक—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का रूपक जो पूरा या बहुत कुछ पद्य मे लिखा होता है। (ऑपेरा)
गीती (तिन्)—वि० [सं० गीत+इनि] गाकर पढने या पाठ करनेवाला।
गीत्यार्या—पुं० [स० गीति-आर्या, कर्म० स०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे ५ नगण और एक लघु होता है। अचल धृति।
गीया—स्त्री० [स०√गै+थक्–टाप्] १ वाणी। २. गीत।
गीदड़—पु० [स० गृध्र=लुब्ध या फा० गीदी] १. भेडिये या कुत्ते की जाति का एक जानवर जो लोमडी से मिलता-जुलता होता है। यह प्राय उजाड स्थानो और जगलो मे रहता है, और इसका दिखाई देना या बोलना अशुभ माना जाता है। शृगाल। सियार। (जैकाल)
पद—गीदड़-भभकी (देखें)।
मुहा०—किसी स्थान पर गीदड़ बोलना=बिलकुल उजाड या निर्जन होना।
२. कायर या डरपोक व्यक्ति।
गीदड़-भभकी—स्त्री० [हिं०] मन मे डरते हुए ऊपर से दिखावटी साहस अथवा क्रोध या रोष प्रकट करते हुए कही जानेवाली बात।
क्रि० प्र०—दिखाना।—देना।
गीदड़रूख—पु० [हिं० गीदड+रूख=वृक्ष] उत्तरी भारत मे होनेवाला मँझोले कद का एक पेड।
गीदी—वि० [फा०] १. गीध सबधी। २ (व्यक्ति) जिसमें शक्ति या साहस न हो। कायर। डरपोक।
गीध—पु० [स० गृध्र] १ गिद्ध नामक प्रसिद्ध मासाहारी पक्षी। गिद्ध। २. लाक्षणिक अर्थ मे बहुत ही चतुर और लालची या लोभी व्यक्ति।
गीधना—अ० [स० गृध्र=लुब्ध] १ गिद्ध की तरह किसी काम, चीज या बात के पीछे पडना। २ बहुत ही बुरी तरह से लोभ करना। उदा०—करि अभिमान विषय रस गीध्यो, स्याम सरन नहि आयो।—सूर। ३. एक बार कोई अनुकूल बात होते देखकर या कुछ लाभ उठाकर बराबर उसकी ताक मे लगे रहना। परचना। उदा०—सीधे सोनों आन के गीधे गीधहिं तारि।—बिहारी। ४ किसी से बहुत मेल-जोल रखना।
गीबत†—स्त्री० [अ०] १ अनुपस्थिति। गैर हाजिरी। २ किसी की अनुपस्थिति मे उसकी की जानेवाली निन्दा या बुराई। चुगली।
गीर—वि० [फा०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दो के अत मे लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) पकडनेवाला। जैसे—दामनगीर, राहगीर। (ख) अपने अधिकार मे रखनेवाला। जैसे—जहाँगीर।
स्त्री० [स० गिरा] वाणी।
गी-रथ—पु० [स० गिर्-रथ, ब० स०] १. बृहस्पति का एक नाम। २. जीवात्मा।
गीरवान*—पुं०=गीर्वाण (देवता)।
गीरवाण, गीरवान—पु०=गीर्वाण।
गीर्ण—वि० [स०√गॄ (शब्द करना)+क्त] १ कथित। कहा हुआ। २. विस्तारपूर्वक बतलाया हुआ। वर्णित। ३ निगला हुआ।
गीर्णि—स्त्री० [स०√गॄ+क्तिन्] १ वर्णन। २ प्रशसा। स्तुति। ३ निगलने की क्रिया या भाव।
गीर्देवी—स्त्री० [गिर्-देवी, प० त०] सरस्वती। शारदा।
गीर्पति—पु० [गिर्-पति, प० त०] १ बृहस्पति। २ पडित। विद्वान्।
गीर्भाषा—स्त्री० [गिर्-भाषा, कर्म० स०] दे० 'गीर्वाणी'।
गीर्वाण—पु० [गिर्-वाण ब० स०] देवता। सुर।
गीर्वाणी—स्त्री० [गिर्-वाणी, कर्म० स०] देवताओं की भाषा। देव-भाषा। संस्कृत।
गीला—वि० [हिं० गलना] [स्त्री० गीली] १ जो जल से युक्त हो। भीगा हुआ। तर। नम। जैसे—गीला कपडा, गीली आँखें। २. जो अभी सूखा न हो। जैसे—गीला रग। ३. जो शराब पिये हुए हो और जिस पर उसका नशा सवार हो।
पु० [?] एक प्रकार की जगली लता।
गीलापन—पु० [हिं० गीला+पन (प्रत्य०)] गीले होने की अवस्था या भाव। तरी। नमी।
गीली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड जिसके हीर की लकडी

चिकनी, भारी और मजबूत होती तथा मेज, कुर्सियाँ बनाने के काम मे आती हैं। वरमी।

गीव—स्त्री० =ग्रीवा (गरदन)।

गीष्पति—पु० [गिर्-पति, ष० त०] १. बृहस्पति। २. पडित। विद्वान्।

गुग†—वि०=गूँगा।

गुंगवहरी—स्त्री० [हिं० गूँगा+वहरा] साँप की तरह लबी मछलियो की एक जाति। वरम। वाँवी।

गुंगा†—वि० [स्त्री० गूँगी] =गूँगा।

गुंगी—स्त्री० [हिं० गूँगा] दो-मुँहा साँप। चुकरेंड।

गुंगुआना—अ० [अनु०] १. गूंगे की तरह गूँ गूँ शब्द करना। २ (लकडी का) अच्छी तरह न जलना और वहुत धूआँ देना।

गुंचा—पु० [अ० गुन्च] १ फूल की कली। कोरक। २ आनद-मगल। ३ नाच-रग।

मुहा०—गुंचा खिलना=(क) खूब नाच-रग या आनद-मंगल होना। (ख) मुख की आकृति आनदपूर्ण और प्रफुल्लित होना। (ग) दे० 'गुल' के अन्तर्गत मुहा० 'गुल खिलना'।

गुंची—स्त्री०=घुंघची।

गुंज—स्त्री० [स०√गुज् (गूँजना)+घञ्] १ भौरो के गुजन का शब्द। गुजार। २ पक्षियो आदि का कलरव। ३ आनद-ध्वनि।

†स्त्री० [स० गुजा] १ घुंघची। २ सोने के तारो का वना हुआ गले मे पहनने का गोप नामक गहना। उदा०—मुसाहिव जू ने अपने गले का गुज उतारा और पूरन को पहना दिया।—वृन्दावनलाल।

†पु० [?] सलई का पेड।

गुंजक—पु० [स०√गुज्+ण्वुल्-अक] एक प्रकार का पौवा।

वि० गुजन करने या गूँजनेवाला।

गुंजन—पु० [स०√गुज्+ल्युट्—अन] १ भौरो के गूँजने की क्रिया। २ गूँजने का शब्द। गुजार।

गुंजना—अ० [स० गुजन] गूँज से युक्त होना। गूँजना।

गुजना—अ० [स० गुजन] भौंरे का गुजार करना। गुनगुनाना।

गुज-निकेतन— पु० [ष० त०] भौरा। मधुकर।

गुजरना—अ० [हिं० गुजार] १ भौरो का गुजन करना। २ (स्थान का) गुजन या मधुर ध्वनि से युक्त होना। ३ गरजना।

गुंजल्क—स्त्री० [फा०] १. कपडे आदि की शिकन। सिलवट। २. उलझन की वात। गुत्थी। ३ गाँठ।

स्त्री० [स० गुजा] घुंघची नाम की लता और उसके वीज।

गुंजा—स्त्री० [स०√गुञ्ज्+अच्—टाप्] घुंघची नामक लता और उसके वीज।। (दे० 'घुंघची')

गुंजार—पु० [स० गुज+हिं० आर] भौरो की गूंज। भौरो की भन-भनाहट।

गुंजारना—अ० [हिं० गुजार] १ भौरो का गुजार करना। २ मधुर ध्वनि उत्पन्न करना।

गुंजारित—वि०=गजित।

गुंजित—वि० [स०√गुज्+क्त] १ (स्थान) जो भौरो की गुजार से युक्त हो। २. (स्थान) जो गूँज या प्रतिध्वनि से भर गया हो।

गुंजिया—स्त्री० [हिं० गूँज=लपेटा हुआ पतला तार] कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

गुंजी (जित्)—वि० [स० गुज+इनि] गूँजनेवाला।

†स्त्री० =गूँज।

गुंटा—पु० [देश०] पानी का छोटा गड्ढा या ताल।

गुंठन—पु० [स०√गुठ् (ढकना)+ल्युट्—अन] १ किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु से छिपाने, ढकने, लपेटने आदि की क्रिया या भाव। २. लेप लगाना।

गुंठा*—वि० [हिं० गठना] १ अच्छी तरह से गठा हुआ। २ जो आकार-प्रकार मे छोटा, परन्तु गठा हुआ हो। ३ नाटा। ठिगना। पु० छोटे आकार का एक प्रकार का घोडा। टाँगन।

गुंठित—भू० कृ० [स० √गुठ्+क्त]। १ ढका हुआ। २. छिपाया हुआ। ३ लेप किया हुआ। ४ चूर किया या पीसा हुआ।

गुड—वि० [स०√गड् (चूर्ण करना)+अच्] चूर किया या पीसा हुआ। पुं० १ चूर्ण। २. फूलो का पराग। ३ मलार राग का एक भेद। ४ कसेरु का पौधा।

गुंडई—स्त्री० [हिं० गुडा+ई प्रत्य०] गुडे होने की अवस्था, गुण या भाव। गुडापन।

गुंडक—पु० [स० गुड+कन्] १. मधुर और मद स्वर। २ धूल। ३ तेल रखने का वरतन। ४ ऐसा आटा जिसमे धूल या मिट्टी मिली हो।

गुंडली†—स्त्री०=कुडली।

गुडा—पु० [स० गडक=गैंडा, मि० असमी गुडा=गैंडा] [स्त्री० गुंडी] अनियंत्रित रूप से हर जगह उद्दण्डतापूर्वक आचरण या व्यवहार करने-वाला व्यक्ति।

गुंडापन—पु० [हिं० गुडा+पन (प्रत्य०)] गुडे होने की अवस्था या भाव।

गुंडित—भू० कृ० [स० √गुड्+क्त] १. चूर्ण किया या पीसा हुआ। २ धूल मे मिलाया अथवा धूल से ढका हुआ।

गुडीर—वि० (स०√गुड्+ईरन्) १ चूर्ण करने या पीसनेवाला। २ नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला।

गुंदला—पु० [स० गुडाला] नागरमोथा नाम की घास।

गुंदीला—वि० [हिं० गोद+ला] (वृक्ष) जिसका निर्यास गोद के रूप मे होता हो। गोदवाला।

गुंधना—अ० [स० गुध=क्रीडा] १ हिं० 'गूँधना' का अ०। गूँधा जाना। २ पानी मे मिलाकर माँडा या साना जाना। ३. तागो, वालो की लटो आदि का गुच्छेदार लडी के रूप मे गूँथा या पिरोया जाना।

†अ० दे० 'गुथना'।

गुंधवाना—स० [हिं० गूँधना का प्रे०] गूँधने का काम दूसरे से करवाना। दूसरे को कोई चीज गूँधने मे प्रवृत्त करना।

गुंधाई—स्त्री० [हिं० गूँधना] १ गूँधने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गुंधावट—स्त्री० [हिं० गूँधना] गूँधने की क्रिया, ढग या भाव।

गुंफ—पु० [स० √गुफ् (गूँथना)+घञ्] [वि० गुफित] १ कई चीजो के आपस मे मिलकर उलझने या गुथने की क्रिया, दशा या भाव। २ फूलो का गुच्छा। ३ मूँछ। ४ गल-मुच्छा। ५ कारण माला अलकार का एक नाम।

गुंफन—पुं० [स०√गुफ्+ल्युट्—अन] [वि० गुंफित] १ डोरे, तागे आदि के रूप मे होनेवाली चीजो को आपस मे इस प्रकार उलझाना या फँसाना कि उनका रूप सुदर हो जाय। गूंथना। २ डोरे आदि मे पिरोना। जैसे—माला गुफन। ३. भरने का काम। भराई। जैसे—शब्दों का गुफन।

गुंफना—स्त्री० [स० √गुफ्+युच्—अन, टाप्) १ गुफन या उसके फल-स्वरूप प्राप्त होनेवाला रूप। २ शब्दों आदि की मधुर और सुन्दर योजना।

†स०=गूथना।

गुफित—भू० कृ० [स०√गुफ्+क्त] १ गूंथा हुआ। २ सुन्दरता-पूर्वक एक दूसरे के साथ मिलाया या लगाया हुआ।

गुंबज—पु०=गुबद।

गुंबद—पु० [फा०] वास्तु-रचना मे वह शिखर जो आधे गोले के आकार का और अदर से पोला हो। गुबज। जैसे—मसजिदो का गुंबद।

पद—गुंबद की आवाज=प्रतिध्वनि।

गुंबदी—वि० [फा०] गुबद की शकल का।

पु० गुबद के आकार का वह गोल खेमा जिसके बीचोबीच एक ही खभा होता है।

गुंबा—पु० [फा० गुबद] सिर मे चोट लगने और उसके फल-स्वरूप खून जमने से पडनेवाली गाँठ। गुलमा।

गुंभी—स्त्री० [स० गुफ=गुच्छा] वनस्पति का अंकुर। गाभ।

स्त्री० [हिं० गून] रस्सी, विशेषत नाव आदि का पाल खीचने की रस्सी। गून।

गुआ—पु० [सं० गुवाक] एक तरह की सुपारी।

गुआर— स्त्री०= ग्वार (कुलथी)।

गुआर पाठा— पु० दे० 'ग्वारपाठा'।

गुआरी† —स्त्री०=ग्वार।

गुआलिन—स्त्री० १.=ग्वार (कुलथी)। २ =ग्वालिन।

गुइयाँ—स्त्री०, पु० दे० 'गोइयाँ'।

पु०[हिं० गोहन=साथ] १ वह व्यक्ति जो खेल-कूद मे किसी का साथ देता है। खेल का साथी। २ मित्र।

स्त्री० सखी।

गुगरल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बत्तख।

गुगानी—स्त्री० [देश०] पानी की हलकी हिलोर। खलभली। (लश०)

गुगुलिया†—पु० [अनु०] वदर नचानेवाला व्यक्ति। मदारी।

गुग्गुर—पु०=गुग्गुल।

गुग्गुल—पु० [स०√गुज् (शब्द करना)+क्विप्, गुज्√गुड् (रक्षा करना) +क] १ सलई का पेड़ जिससे धूप या राल निकलती है। २ राल जो सुगधि के लिए जलाते है। ३. एक प्रकार का वडा कँटीला पेड़ जो दक्षिण भारत मे होता है।

गुच—पु० [हिं० गोछ] एक प्रकार की भेड। (पजाब)

गुची—स्त्री० [स० गुच्छ] सौ पानो की गड्डी। आधी ढोली।

गुच्ची—स्त्री० [अनु०] १ जमीन मे खोदा हुआ वह छोटा लबोतरा गड्ढा जो लडके गुल्ली-डडा आदि खेलने के लिए बनाते हैं। २ जमीन मे खोदा हुआ कोई छोटा गड्ढा।

वि० बहुत छोटा। जैसे—गुच्ची-सी आँख।

गुच्चीपाला—पु० [हिं० गुच्ची=गड्ढा+पाला=सीमा] एक खेल जिसमे लडके एक छोटा-सा गड्ढा बनाकर उसमे कुछ दूर से कौडियाँ फेकते हैं।

गुच्छ—पु० [स०√गु (शब्द करना)+क्विप्, गुत्—शो (सूक्ष्म करना) +क] १. गुच्छा। २. ऐसा झाड या पौधा जिसमे मोटा तना न हो, केवल पतली टहनियाँ और पत्तियाँ हों। झाडी। ३. बत्तीस लडो का हार। ४ मोतियो की माला। ५. मोर की पूँछ। ६ घास का पूला।

गुच्छक—पुं० [स० गुच्छ+कन्] =गुच्छ।

गुच्छ-पत्र—पु० [ब० स०] ताड का पेड।

गुच्छ-पुष्प—पु० [ब० स०] १ अशोक वृक्ष। २. छतिवन। ३. रीठा। ४. धव। धातकी।

गुच्छ-फल—पु० [ब० स०] १. रीठा। २ निर्मली। ३. दमनक। दौना। ४. अगूर। ५. केला। ६ मकोय।

गुच्छल—पु० [स० गुच्छ√अल् (पर्याप्ति)+अच्, पररूप] एक प्रकार की घास।

गुच्छा—पु० [स० गच्छ] १. एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओ का ऐसा समूह जो एक साथ उगा, उपजा या बना हो। जैसे—अगूरों का गुच्छा। २ एक साथ इकट्ठी की हुई एक प्रकार की वस्तुओं का समूह। जैसे—तालियों का गुच्छा। ३ तारो, बालो आदि की उक्त प्रकार की रचना या रूप। झब्बा। फुंदना।

गुच्छातारा—पुं० [हिं० गुच्छा+तारा] कचपचिया नाम का तारा-पुज।

गुच्छार्द्ध—पु० [गुच्छ-अर्द्ध, प० त०] वह हार जिसमे सोलह अथवा चौबीस लड होते हैं।

गुच्छार्ध—पु०=गुच्छार्द्ध।

गुच्छी—स्त्री० [स० गुच्छ] १ करज। कजा। २ रीठा। ३ खुभी की जाति की एक वनस्पति जो कश्मीर और पजाब मे होती है। और जिसके बीज-कोषो के गुच्छों की तरकारी बनती है।

गुच्छेदार—वि० [हिं० गुच्छा+फा० दार (प्रत्य०] १ जो गुच्छे या गुच्छो के रूप मे हो। २ जिसमें गुच्छा या गुच्छे लगे हों।

गुज—पु० [देश०] बाँस आदि की वह पतली छोटी फाँक जो दो चीजो को जोड़ने के लिए उनमे जडी जाती है। बाँस की कील या मेख। (बढई)

गुजर—पु० [फा०] १ किसी विन्दु या स्थान से होते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव। २. काल-क्षेप या जीवन-यापन की दृष्टि से होनेवाला निर्वाह। जैसे—सौ रुपए मे गुजर करना पडता है। ३ आने-जाने, निकलने आदि का द्वार या मार्ग। जैसे—इस कमरे मे हवा का गुजर नही है। ४. पहुँच। पैठ। प्रवेश। जैसे—इतने बडे दरबार मे भला हमारा गुजर कैसे हो सकता है।

पद—गुजर-बसर (देखे)।

गुजरगाह—स्त्री० [फा०] १ किसी के गुजरने अर्थात् आने-जाने का मार्ग या स्थान। २ नदी पार करने का घाट। ३. मार्ग। रास्ता।

गुजरना—अ० [फा० गुजर+ना (प्रत्य०)] १ किसी स्थान से होते हुए आगे बढना। जैसे—यह सडक बनारस से गुजरती है। २ एक स्थिति से होकर दूसरी स्थिति मे पहुँचना।

मुहा०—(किसी का) गुजर जाना=मृत होना। मरना। जैसे—उनके चाचा आज गुजर गये।

३ कोई घटना या बात घटित होना। जैसे—वहाँ तुम पर क्या गुजरी।

मुहा०—किसी पर गुजरना=किसी पर विपत्ति या संकट पडना।

४. व्यतीत होना। बीतना। जैसे—इसी प्रकार कितने ही वर्ष गुजर गये। ५ निर्वाह होना। ६ दूर रहना। बाज आना। जैसे—हम तो ऐसे जीने से गुजरे।

गुजरनामा—पु० [अ०+फा०] वह अधिकार-पत्र जिसकी सहायता से कोई किसी मार्ग से होता हुआ आगे जा सकता है। राहदारी का परवाना। पार-पत्र।

गुजर-वसर—पु० [फा०] कालक्षेप या जीवन-यापन की दृष्टि से होनेवाला निर्वाह। गुजारा।

गुजरवान—पु० [फा०] १. नदी पार करानेवाला, अर्थात् मल्लाह। माँझी। २ वह जो घाट की उतराई या कर उगाहता हो।

गुजरात—पु० [स० गुर्जर-राष्ट्र] [वि० गुजराती] भारतीय सघ के बम्बई राज्य का एक प्रदेश।

गुजराती—वि० [हि० गुजरात] 'गुजरात' प्रदेश मे बनने, होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। जैसे—गुजराती खान-पान, पहनावा या माल।

पु० 'गुजरात' प्रदेश का निवासी।

स्त्री० १. गुजरात की भाषा। २ देवनागरी से मिलती हुई वह लिपि जिसमे उक्त भाषा लिखी जाती है। ३ छोटी इलायची।

गुजरान—स्त्री० [फा०] जीवन का निर्वाह और समय का बीतना (खाने पीने, रहने-सहने आदि के विचार से)। जैसे—हमारी भी किसी तरह गुजरान होती ही है।

गुजरानना—स० [हि० गुजर] १ किसी के सामने उपस्थित या पेश करना। जैसे—अरजी या नजर गुजरानना। २. व्यतीत करना। बिताना। जैसे—दिन गुजरानना।

गुजरिया—स्त्री०=गूजरी।

गुजरी—स्त्री० [स० गुर्जर, हि० गूजर] १ कलाई पर पहनने की एक प्रकार की पहुँची। २ गूजरी नाम की रागिनी। ३ दे० 'गूजरी'।

स्त्री० [हि० गुजरना] मध्य युग मे, दोपहर के बाद सडको के किनारे लगनेवाला छोटा बाजार।

गुजरेटा—पु० [हि० गूजर+एटा=बेटा (प्रत्य०)] [स्त्री० गुजरेटी] १ गूजर का पुत्र या लडका। २ गूजर जाति का पुरुष या व्यक्ति। गूजर। ग्वाला।

गुजश्ता—वि० [फा० गुजश्त] बीते हुए काल से सबध रखनेवाला। गत। भूत।

गुजार—वि० [फा०] गुजारने (अर्थात् करने, देने या सामने लाने) वाला (यौ० के अत मे)। जैसे—खिदमतगुजार, मालगुजार, शुक्रगुजार आदि।

पु० वह स्थान जहाँ से होकर लोग गुजरते या आगे बढते हों। जैसे—घाट, रास्ता आदि।

गुजारना—स० [फा० गुजर] १. किसी स्थान से होते हुए आगे बढाना। २ (समय) काटना या बिताना। व्यतीत करना। ३. किसी बडे के सामने उपस्थित, पेश या निवेदन करना। जैसे—अर्ज गुजारना। ४ पालन करना। जैसे—नमाज गुजारना। ४ (कष्ट या विपत्ति) डालना। ढाना। उदा०—गजब गुजारत गरीबन की धार पै।—पद्माकर।

गुजारा—पु० [फा० गुजार] १ गुजरने या गुजारने की क्रिया या भाव। २ गुजर। निर्वाह। ३. जीवन-निर्वाह के लिए मिलनेवाली आर्थिक सहायता या वृत्ति। ४ वह स्थान जहाँ से लोग नाव पर चढकर पार जाते हों अथवा आकर उतरते हों। ५. मार्ग मे पड़नेवाला वह स्थान जहाँ कोई अधिकार-पत्र दिखाना या कर देना पड़ता हो।

गुजारिश—स्त्री० [फा०] निवेदन। प्रार्थना।

गुजारिशनामा—पु० [फा०] निवेदन-पत्र। प्रार्थना-पत्र।

गुजारी—स्त्री० [?] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

गुजारेदार—पु० [फा०] वह व्यक्ति जिसे जीवन-निर्वाह के लिए गुजारा या वृत्ति मिलती हो।

गुजी†—स्त्री० [?] नथनों मे जमा हुआ सूखा मल। नकटी।

गुजुआ—पु० [देश०] [स्त्री० गूर्जी, गुजुई] गोबरैला नाम का कीडा।

गुज्जर†—पु० दे० 'गूजर'।

गुज्जरवै*—पु० [स० गुर्ज (पति)] गुजरात का राजा।

गुज्जरी—स्त्री० दे० 'गूजरी'।

गुज्झ*—वि०=गुह्य।

गुज्झना—अ० [हि० गुज्झ] छिपना।

गुज्झा—पु० [स० गुह्यक] १. रेशेदार गूदा। २ रेशो का गुच्छा। ३. बाँस की कील या मेख। गोझा। ४ एक प्रकार की कँटीली घास।

वि० [स० गुह्य] छिपा हुआ। गुप्त।

गुझ*—वि०=गुह्य।

गुझवाती*—स्त्री० [स० गुह्य+हि० बात] १ गुप्त या छिपी हुई बात। २ ऐसी बात जिसका अर्थ या रहस्य सहज मे स्पष्ट न होता हो। उदा०—स्याम सनेसो कबहूँ न दीन्हौ जानि बूझ गुझबाती।—मीराँ।

गुझरौट—स्त्री० [हि० गुज्झा] १ साडी का वह भाग जो स्त्रियाँ चुनकर नाभि के पास खोस लेती है। उदा०—कर उठाय घूँघट करत उसरत पट गुझरौट।—बिहारी। २. स्त्रियो की नाभि के आस-पास का भाग।

पु० [स० गुह्य-आवर्त] कपडे की शिकन। सिकुडन।

गुझिया—स्त्री० [स० गुह्यक, प्रा० गुज्झआ, गुज्झा] १. एक प्रकार का पकवान। कुसली। पिराक। २ खोए की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।

गुझौट†—पु० दे० 'गुझरौट'।

गुट—पु० [स० गोष्ठ=समूह] १ झुड। यूथ। समूह। २. किसी विशिष्ट उद्देश्य से बनाया हुआ व्यक्तियो का वह छोटा दल जो किसी विशिष्ट पक्ष या मत का पोषण करने के लिए बनाया जाता है। जैसे—अब तो कांग्रेस मे भी कई गुट हो गये हैं।

क्रि० प्र०—बनाना।—बाँधना।

पद—गुटबंदी (देखें)।

पु० [अनु०] कबूतरो आदि के बोलने अथवा इसी प्रकार का कोई शब्द।

गुटकना—अ० [अनु०] १ गुटगुट शब्द करना। जैसे—कबूतर का गुटकना, तबले का गुटकना।

अ० दे० 'गटकना' (निगलना)।

स० दे० 'गुटकाना'।

गुटका—पु० [स० गुटिका] [स्त्री० अल्पा० गुटकी] १. बहुत छोटे

आकार में छपी हुई पुस्तक। जैसे—गुटका रामायण। २ कोई गोल ठोस चीज। छोटा गोला। जैसे—लट्टू। ३. गुपचुप नाम की मिठाई। ४. सूखे कत्थे में मिलाए हुए इलायची, लौंग, सुपारी आदि जो मसाले के रूप में पान में मिलाकर अथवा पान के स्थान पर खाई जाती है।

गुटकाना—स० [अनु०] १ 'गुटकना' का स० रूप। गुटकने में प्रवृत्त करना। २. धीरे-धीरे किसी साधन के द्वारा गुट-गुट शब्द उत्पन्न करना। जैसे—ढोलक या तबला गुटकाना।

गुटकी—स्त्री० [हिं० गुटिका] छोटी टिकिया। उदा०—गुरु मिलिया रैदास जी, दीन्ही ग्यान की गुटकी।—मीराँ।

गुटबंदी—स्त्री० [हिं० गुट+फा० बंदी] १. कुछ लोगों का आपस में मिलकर अपना एक अलग गुट या दल बनाने की क्रिया या भाव। २ पारस्परिक मत-भेद, राग-द्वेष आदि के कारण किसी संस्था, समुदाय आदि के लोगों का छोटे-छोटे गुट बनाना।

गुटबैगन—पु० [?] एक प्रकार का कँटीला पौधा।

गुटरगूँ—स्त्री० [अनु०] कबूतरों के गुट-गुट करते हुए बोलने का शब्द।

गुटिका—स्त्री० [स० वटी+क, पृषो० सिद्धि] १. छोटी गोली या टिकिया। वटिका। वटी। २ योग की एक प्रकार की सिद्धि से प्राप्त होनेवाली वह गोली जिसके सम्बन्ध में यह प्रवाद है कि इसे मुँह में रख लेने पर आदमी जहाँ चाहे वहाँ तत्काल अदृश्य होकर पहुँच सकता है।

गुट्ट—पु०=गुट।

गुट्टा—पु० [हिं० गोटी] लाख की बनी हुई वह चौकोर गोटी जिनसे लड़कियाँ खेला करती है।

वि० छोटे कद का। ठिंगना। नाटा।

पु० [प०] गेंदे का पौधा और उसका फूल।

गुट्ठल—वि० [हिं० गुठली] १. (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २. गुठली के आकार का और कठोर या कड़ा। ३. (बात) जो जल्दी समझ में न आवे। जटिल या दुरूह। ४. (व्यक्ति) जिसकी समझ में जल्दी कोई बात न आती हो। जड़। मूर्ख। उदा०—ग्रथ गथित गुट्ठल मति मूरखता जुत पडिता। —रत्ना०।

†पु० १ गुठला की तरह जमी या बंधी हुई गाँठ। (क्व०) २ गिलटी।

गुट्ठा—स्त्री० [हिं० गुठली] १ कड़ी और मोटी गाँठ। २ पैर का टखना।

गुठला—पु० [हिं० गुठली] १ बड़ी और मोटी गुठली। २. उक्त आकार-प्रकार की कोई कड़ी चीज। जैसे—शरीर में मास का गुठला।

वि० [हिं० कुंठ] जिसकी धार ठीक काम करने के योग्य न रह गई हो। कुंद। भोथरा। जैसे—गुठला चाकू, गुठले दाँत।

पु० [स० अंगुस्थल, प्रा० अगुट्ठल] अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गुठलाना—अ० [हिं० गुठली] १. गुठली की तरह कड़ा और गोल बनना या होना। जैसे—मास गुठलाना। २. (अस्त्र-शस्त्र की धार का) कुंद या भोथरा होना। ३. खट्टी चीज खाने के बाद दाँतों का और कुछ खाने या चबाने के योग्य न रह जाना।

स० गुठला (कुंद या भोथरा) करना।

गुठली—स्त्री० [स० गुटिका] आम, जामुन आदि फलों के बीच से निकलनेवाला कड़ा तथा बड़ा बीज।

गुड़ंबा—पु० [हिं० गुड़+आँब, आम] गुड़ (अथवा चीनी) में कच्चे आम को पकाकर बनाई जानेवाली एक तरकारी।

गुड़—पु० [स० गुड, गुल, पा० गुलो, प्रा०, प० गुड़, बँ०, उ० गुर, सि० गुड़, गु० गोट, ने० गुलियो, मरा० गुड़] १ ऊख के रस का वह रूप जो उसे पकाकर खूब गाढ़ा करने पर प्राप्त होता है, और जो बाजार में बट्टी, भेली आदि के रूप में मिलता है। जैसे—गुड़ न दे तो गुड़ की सी बात तो कहे। (कहा०)

मुहा०—**गुड़ च्यूँटा होना**=(क) ऐसा पारस्परिक घनिष्ठ सबध होना, जैसे गुड़ और च्यूँटे का होता है। (ख) बहुत अधिक अनुरक्त या लीन होना। **गुड़ दिखाकर ढेला मारना**=कुछ लालच देकर फिर ऐसा बरताव करना जिससे कुछ प्राप्त न हो उल्टे कष्ट भोगना पड़े। **कुल्हिया में गुड़ फोड़ना**=इस प्रकार गुप्त रूप से या छिपकर कोई काम करना कि दूसरों को पता न चले। **गूँगे का गुड़ खाना**=दे० 'गूँगा' के अन्तर्गत मुहा०।

पद—**गुड़ भरा हँसिया**=असमंजस का ऐसा काम जो बहुत अभीष्ट या प्रिय होने पर भी बहुत ही कठिन होने के कारण किया न जा सके। २. रहस्य सप्रदाय में (क) मन, (ख) ईश्वर का ध्यान, (ग) गुरु का उपदेश।

गुड़क—पु० [सं० गुड+कन्] १. गोलाकार पदार्थ। २ गेंद। ३ गुड़। ४ गुड़ में पकाकर तैयार की हुई दवा।

गुड़गुड़—स्त्री० [अनु०] १. वेगपूर्वक जल में से होकर वायु के बाहर निकलने पर होनेवाला शब्द। जैसे—हुक्के की गुड़गुड़, कूएँ या नदी में लोटा डुबोने से होनेवाली गुड़गुड़। २ किसी बद चीज में हवा के चलने से होनेवाला शब्द। जैसे—पेट में होनेवाली गुड़गुड़।

गुड़गुड़ाना—अ० [अनु०] गुड़गुड़ शब्द होना।

स० गुड़गुड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे—हुक्का गुड़गुड़ाना।

गुड़गुड़ाहट—स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना+हट (प्रत्य०)] गुड़गुड़ शब्द करने या होने की अवस्था या भाव। गुड़गुड़ा।

गुड़गुड़ी—स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना] १. बार बार गुड़गुड़ शब्द होने की अवस्था या भाव। २ फरशी या और किसी प्रकार का हुक्का जिसमें तमाकू पीने के समय गुड़गुड़ शब्द होता है।

गुड़च—स्त्री० = गुरुच।

गुड़-धनिया—पु० [हिं० गुड़+धनियाँ] गुड़ में मिलाये हुए धनिये के बीज जो शुभ अवसरों पर थोड़े-थोड़े खाये-खिलाये जाते है।

गुड़धानी—स्त्री० [हिं० गुड़+धान] १ भुने हुए गेहूँ को गुड़ में मिलाकर बनाया जानेवाला लड्डू। २. दे० 'गुड़-धनिया'।

गुड़ना—स० [देश०] डडा इस तरह फेंकना कि वह अपने सिरों के बल पलटे खाते हुए कुछ दूर तक चला जाय।

स० दे० 'गुणना'।

†अ०=बजना। (राज०)

गुड़रु—पु० [स० गरुड] एक प्रकार का पक्षी।

गुड़ल†—वि० दे० 'गँदला'।

गुड़लपण†—पु०=गँदलापन। उदा०—पृथी पक जलि गुडलपण।—प्रिथीराज।

गुड़हर—पु० [हिं० गुड़+हर] १. अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।

२ एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ और फूल अरहर की तरह के होते हैं।

गुड़हल†—पु०=गुड़हर।

गुड़ा—स्त्री० [सं० गुड+टाप्] १ गुटिका। गोली। २. कपास। ३ थूहड।

गुड़ाकू—पु० [हि० गुड+तमाकू] गुड मिलाकर बनाया हुआ पीने का तमाकू।

गुड़ाकेश—पु० [सं० गुडाका (निद्रा)-ईश, ष० त०] १. शिव। महादेव। २ अर्जुन।

गुडासा—पु० [?] दे एक प्रकार का कीड़ा।

गुडिया—स्त्री० [हि० गुड्डा का स्त्री० अल्पा० रूप] १. बच्चो के खेलने का एक प्रकार का छोटा खिलौना जो छोटी लडकी के रूप मे कपड़े, रबड आदि का बना होता है।

पद—**गुड़िया सा**=बहुत छोटा, परन्तु खूब सजा हुआ। जैसे—गुडिया-सा घर। **गुड़ियो का खेल**=बहुत ही छोटा और सहज काम।

महा०—**गुड़िया संवारना**=अपने वित्त के अनुसार जैसे-तैसे लडकी का व्याह करना।

२ कोई सुदर अथवा सजकर रहनेवाली निकम्मी और मूर्ख लडकी।

स्त्री० [हि० गोड=पैर] छोटा पैर (जैसे—बच्चो का)। उदा०—छोटी छोटी गुड़ियाँ अँगुरियाँ छोटी।—सूर।

गुड़िला—पु० [सं० गुड्, हि० गुड्डा का पुराना रूप] १. मनुष्य की आकृति का पुतला। २. दे० 'गुड्डा'।

गुड़ी†—स्त्री० [सं० गुडिका] १. कोई गोल कडी चीज। गाँठ। गुट्ठी। २. मन मे छिपा हुआ द्वेष। गाँठ।

†स्त्री०=गुड्डी (पतग)।

गुड़ीला†—वि० [हि० गुड़] १ जिसमें गुड मिला हो अथवा जो गुड के योग से बना हो। २ गुड के से स्वादवाला।

गुड़ुच—स्त्री० =गुरुच।

गुड्डुरू†—पु० [सं० कुडल] १ कोई ऐसी मडलाकार रचना जिसके बीच में छोटा गड्ढा हो। २ उक्त आकार की वह लकडी या लोहे का टुकडा जिसमे किवाड की चूल बैठाई जाती है। ३ छोटा गड्ढा। ४ एक प्रकार का पक्षी जो प्रातःकाल मधुर स्वर मे तुही-तुही बोलता है। उदा०—तुही तुही कह गुडुरु खीहा।—जायसी।

गुड्डुवा—पु० [?] [स्त्री० गुडुई] १ बडी गुडिया। २ दे० 'गुड्डा'।

गुड़ूची—स्त्री० [सं०√गुड्+ऊचट्-ङीप्] गुरुच। गिलोय।

गुड्डा—पु० [सं० गुड=खेलने की गोली] [स्त्री० अल्पा० गुडिया] १ कपडे का बना हुआ पुतला जिसे लड़कियाँ खेलती है।

महा०—**(किसी के नाम का) गुड्डा बनाना या बाँधना**=भांडो, मिरासियो आदि का किसी कजूस को अपमानित या बदनाम करने के लिए उक्त प्रकार का गुड्डा बनाना और गली-गली उसकी निंदा करते फिरना।

२ उडाने के लिए पतले कागज की बडी गुड्डी या पतग। ३ केवल देखने भर का, पर वस्तुतः अकर्मण्य या निकम्मा व्यक्ति। जैसे—कुसस्कारो के गुड्डे। ४ बडी पतग।

गुड्डी—स्त्री० [सं० गुरु-उड्डीन] १ बहुत पतले कागज का वह चौकोर टुकडा जो डोर या नख की सहायता से आकाश मे उडाया जाता है। छोटा कनकौआ या पतग। २ घुटने पर की हड्डी। चक्की।

महा०—(किसी की) हड्डी-गुड्डी तोड़ना=बहुत अधिक मारना-पीटना।

३ चिडियो के डैनो या परो की वह स्थिति जो उडने के कुछ पहले होती है। कुदा। ४ एक प्रकार का छोटा हुक्का। ५ दे० 'गुडिया'।

गुड्डू—पु० [?] एक प्रकार का छोटा कीडा जो धूल मे गोलाकार घर बनाकर रहता है।

गुढ़ना†—अ० [हि० गूढ] छिपना। उदा०—तरुनी बन दृग गढनि मे रही गुढी की लाज।—बिहारी।

अ० [हि० गुण] गुण सीखना या गुणो से युक्त होना। जैसे—तुम पढ़े तो हो, पर गुढे नही हो।

गुढ़ा†—पु० [सं० गूढ] जगल मे चोरो, डाकुओ आदि के छिपने का स्थान।

गुण—पु० [सं०√गुण् (आमंत्रण)+अच्] १ किसी वस्तु की वह महत्वपूर्ण या विशिष्ट निजी विशेषता जिसके कारण, वह दूसरी वस्तुओ से अलग मानी तथा रखी जाती हो। २ किसी वस्तु का वह तत्त्व जिसके प्रभाव से खराबियाँ या बुराइयाँ दूर होती हो। गुणकारी या लाभदायक तत्त्व। जैसे—औषध का गुण। (क्वालिटी, प्रापर्टी) ३ किसी व्यक्ति की वह प्राकृतिक विशेषता जिसके कारण समाज मे उसकी प्रशसा होती हो अथवा होनी चाहिए।

महा०—(किसी का) गुण गाना=किसी के किये हुए उपकार या अच्छे कामो की खूब चर्चा करना। **गुण मानना**=उपकृत होने पर कृतज्ञता प्रकट करना। उदा०—मानूँ रे ननदिया मैं तेरा गुण मानूँ।—गीत।

४ किसी कला, विद्या, शास्त्र आदि मे प्राप्त की जानेवाली निपुणता। प्रवीणता। ५ कला या विद्या। हुनर। ६ प्रकृति के अन्तर्गत मानी जानेवाली तीन प्रकार की वृत्तियाँ जो जीव-जंतुओ, मनुष्यो, वनस्पतियों आदि मे पाई जाती हैं। यथा—सत्त्व, रज और तम।

विशेष—सत्त्व, रज और तम ये तीनो गुण साख्य मे कहे गये हैं। परन्तु योगशास्त्र मे शम, दम और तितिक्षा ये तीनो गुण कहे गये हैं।

७ (उक्त वृत्तियो के आधार पर) तीन की सख्या का सूचक शब्द। ८ राजनीति मे, परराष्ट्र के साथ व्यवहार करने के ६ ढग—सधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय। ९ संस्कृत व्याकरण मे 'अ' 'ए' और 'ओ' स्वर। १० साहित्य मे वह तत्त्व जिससे काव्य की शोभा बढती है। जैसे—ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि। ११ प्रकृति। १२ रस्सी या तागा। डोरा। १३ धनुष की डोरी।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो किसी सख्या के अंत मे लगकर उसका उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे—द्विगुण, त्रिगुण, चतुर्गुण आदि।

अव्यय के अनुसार। उदा०—इगित जामै समय गुण, बरनहु दूत अलोभ।—केशव।

गुणक—पु० [सं०√गुण्+ण्वुल्—अक] १ वह अक जिससे किसी अंक को गुणा करे। (मल्टिप्लायर) २ मालाकार। माली।

गुण-कर—वि० [ष० त०] गुणकारी। लाभदायक।

गुणकरी—स्त्री० [सं० गुणकर+ङीप्] सवेरे के समय गाई जानेवाली एक रागिनी जो किसी के मत से भैरव राग की और किसी के मत से हिंडोल राग की भार्या है।

गुणकली—स्त्री० =गुणकरी (रागिनी)।

गुणकार—पुं० [सं० गुण√कृ (करना) अण्] १. गुणवान्। गुणी। २. संगीतज्ञ। ३. रसोइया। ४. भीमसेन जो अज्ञातवास में रसोइए का काम करते थे।

गुण-कारक—वि० [ष० त०] गुण करनेवाला। फायदेमंद। लाभदायक।

गुणकारी (रिन्)—वि० [सं० गुण√कृ+णिनि] =गुणकारक।

गुन-गौरी—स्त्री० [तृ० त०] १. गौरी के समान गुणवाली सौभाग्यवती स्त्री। २. स्त्रियों का एक प्रकार का व्रत और पूजन। गनगौर (देखें)।

गुण-ग्राहक—पुं० [ष० त०] १. गुण को परखकर उसका आदर और सम्मान करनेवाला व्यक्ति। कदरदान। २. गुणियों का सम्मान करने-वाला।

गुणग्राही (हिन्)—वि० [सं० गुण√ग्रह् (ग्रहण करना)+णिनि] [स्त्री० गुणग्राहिणी] =गुण-ग्राहक।

गुणघाती (तिन्)—वि० [गुण√हन् (हिंसा) णिनि] गुण न मानकर उलटे अपकार करनेवाला। कृतघ्न।

गुणज—वि० [सं० गुण√जन् (उत्पन्न होना)+ड] (अंक) जिसका गुणा किसी विशेष दृष्टि या प्रकार से हो सकता हो। (मल्टीपुल) जैसे—सार्वगुणज। (कामन मल्टीपुल)

गुणज्ञ—वि० [सं० गुण√ज्ञा (जानना)+क] १. गुण को जानने और पहचाननेवाला। गुण का पारखी। २. (व्यक्ति) जिसमें बहुत से गुण हों।

गुण-दोष—पुं० [द्व० स०] किसी वस्तु की अच्छी और बुरी बातें। अच्छाइयाँ और बुराइयाँ। (मेरिट्स)

गुण-धर्म—पुं० [द्व० स०] किसी पदार्थ में विशेष रूप से पाया जानेवाला उसका कोई गुण या धर्म। वस्तुगत विशेषता। (प्रापर्टी)

गुणन—पुं० [सं०√गुण्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० गुण्य, गुणीय, गुणित] १ गणित में, एक संख्या को दूसरी संख्या से गुणा करना। जरब देना। २ हिसाब करना। गिनना। ३ अनुमान, कल्पना या विचार करना। ४. उद्धरणी करना। रटना। ५. मनन करना। सोचना।

गुणन-फल—पुं० [ष० त०] वह संख्या जो एक संख्या को दूसरी संख्या से गुणन करने पर प्राप्त होती है। (प्राडक्ट)

गुणना—स० [सं० गुणन] १. गुणन या गुणा करना। जरब देना। २. मन में सोचना, समझना या विचार करना। गुनना।

गुणनिका—स्त्री० [सं०√गुण्+युच्—अन+कन्—टाप्] १ नाटक में पूर्वरंग। २ नृत्य की कला या विद्या। ३ रत्न। ४. हार। ५. शून्य।

गुणनीय—वि० [सं०√गुण्+अनीयर्] जिसका गुणन या गुणा हो सके अथवा किया जाने को हो।

गुणमै*—पुं०=गुणमोती।

वि०=गुणमय।

गुणमोती—पुं० [सं० गुण-मौक्तिक] एक प्रकार का बहुमूल्य मोती। सर्पमणि या गजमुक्ता की भाँति राजस्थानी साहित्य में आता एवं सौन्दर्य की दृष्टि से इसका विशेष स्थान है। उदा०—गुणमोती मखतूल गुण।—प्रिथीराज।

गुणवंत—वि० [सं० गुणवत्] [स्त्री० गुणवती] (व्यक्ति) जिसमें अनेक अच्छे गुण हों। गुण या गुणों से युक्त। गुणवान्।

गुण-वाचक—वि० [ष० त०] जो किसी चीज या बात का गुण या विशेषता सूचित करता हो। जैसे—गुणवाचक विशेषण, गुणवाचक संज्ञा।

गुण-वाद— पुं० [ष० त०] मीमांसा में अर्थवाद का एक भेद।

गुणवान् (वत्)—वि० [सं० गुण+मतुप्, वत्व] [स्त्री० गुणवती] (व्यक्ति) जो अनेक प्रकार के गुणों से युक्त हो। गुणी।

गुण-विधि—स्त्री० [ष० त०] मीमांसा में वह विधि जिसमें गुण-कर्म का विधान हो।

गुण-व्रत—पुं० [मध्य० स०] जैनियों में मूलव्रतों की रक्षा करनेवाले तीन व्रत—दिग्व्रत, भोगोपभोगनियम और अनर्थ-दंड-निषेध।

गुण-संग—पुं० [ष० त०] गुणों का पारस्परिक मेल या सामंजस्य।

गुण-सागर—वि० [ष० त०] (व्यक्ति) जिसमें बहुत-से अच्छे-अच्छे गुण हों। बहुत बड़ा गुणी।

पुं० एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है।

गुण-हीन—वि० [तृ० त०] जिसमें किसी प्रकार का या कोई गुण अथवा विशेषता न हो।

गुणांक—पुं० [गुण-अंक, ष० त०] गणित में वह राशि या संख्या जिससे किसी दूसरी राशि या संख्या (गुण्यक) को गुणा किया जाता है।

गुणा—पुं० [सं० गुणन] [वि० गुण्य, गुणित] गणित की वह क्रिया जो यह जानने के लिए की जाती है कि किसी अंक या संख्या को एक से अधिक बार जोड़ने पर फल कितना होता है। जरब। (मल्टीप्लिकेशन) जैसे—यदि यह जानना हो कि ८ को लगातार ५ बार जोड़ने से कितना होता है तो ८ को ५ से गुणा करना पड़ेगा।

गुणाकर—वि० [गुण-आकर ष० त०] जिसमें अनेक गुण हों। बहुत बड़ा गुणवान्। गुणों की खान।

गुणाढ्य—वि० [गुण-आढ्य, तृ० त०] बहुत गुणोंवाला। गुण-पूर्ण।

पुं० पैशाची भाषा के एक प्रसिद्ध प्राचीन कवि।

गुणातीत—वि० [गुण-अतीत, द्वि० त०] १. गुणों से अलिप्त, परे और भिन्न। २ जिसका सत्व, रज आदि गुणों से कोई संबंध न हो और जो इन सब से परे हो। (परमात्मा या ब्रह्म का एक विशेषण।)

पुं० परमात्मा। ब्रह्म।

गुणानुवाद—पुं० [गुण-अनुवाद, ष० त०] किसी के अच्छे गुणों की चर्चा या वर्णन। गुण-कथन। तारीफ। प्रशंसा।

गुणान्वित—वि० [गुण-अन्वित, तृ० त०] गुणों से युक्त।

गुणालय—वि० [गुण-आलय, ष० त०,] बहुत से गुणोंवाला। गुणाकर।

गुणिका—स्त्री० [सं०√गुण्+इन्+क—टाप्] शरीर पर होनेवाली गाँठ या सूजन।

गुणित—भू० कृ० [सं०√गुण् (आवृत्ति)+क्त] जिसका गुणन किया गया हो। गुणा किया हुआ।

गुणी (णिन्)—वि० [सं० गुण+इनि] (व्यक्ति) जिसमें अनेक गुण हों। गुणों से युक्त।

पुं० १. कला-कुशल पुरुष। हुनरमंद। २. वह जिसमें विशेष या अलौकिक गुण या शक्ति हो। ३. झाड़-फूँक करनेवाला ओझा।

गुणीभूत—वि० [सं० गुण+च्वि√भू (होना)+क्त] १. मुख्य अर्थ से रहित। २. गौण बना हुआ।

गुणीभूत व्यंग्य—पुं० [कर्म० स०] काव्य में व्यंग्य का वह भेद या प्रकार

जिसमे अर्थ या तो रसो आदि का अग होता है या काकु से आक्षिप्त या वाच्यार्थ का उपपादक होता है अथवा अर्थ अस्फुट रहता है। इसमे वाच्यार्थ ही प्रधान रहता है, व्यंग्य नही।

गुणेश्वर—पु० [गुण-ईश्वर, ष० त०] १. तीनों गुणों पर प्रभुत्व रखनेवाला। परमेश्वर। ईश्वर। २. चित्रकूट पर्वत।

गुणोपेत—वि० [गुण-उपेत, तृ० त०] १. गुणो से युक्त। २ गुणवान्। गुणी।

गुण्य—पु० [स० गुण+यत्] १. वह संख्या जिसका गुणन करना हो अथवा किया जा सकता हो। २ गुणी।

गुण्यांक—पु० [गुण्य-अक कर्म० स०] वह सख्या या राशि जिसे गुणा किया जाय।

गुतेला—पु० [?] एक प्रकार की मछली। वंग्।

गुत्ता—पु० [देश०] १. लगान पर खेत जोतने-बोने आदि के लिए खेतिहर को देने का व्यवहार। २. लगान।

गुत्थ—पु० [हि० गुथना] १ हुक्के के नैचे पर लपेटे हुए सूत की वह बुनावट जो चटाई की बुनावट की तरह होती है। २ उक्त प्रकार की बुनावटवाला नैचा।

गुत्थम-गुत्था—पु० [हि० गुथना] १. दो जीवो, पशुओ या व्यक्तियो मे लड़ाई होते समय की वह स्थिति जिसमे वे एक दूसरे को कसकर दबाये अथवा पकडे होते हैं और नीचे गिराने या पटकने की चेष्टा करते हैं। २ उलझाव। फँसाव।

गुत्थी—स्त्री० [हि० गुथना] १. धागे, रस्सी आदि का उलझा हुआ रूप। २ किसी विषय, समस्या आदि का उलझा हुआ ऐसा रूप जिसका सहसा निराकरण न हो सके।

मुहा०—गुत्थी सुलझाना=कठिन समस्या की मीमासा करना। कठिनाइयो से बचने का मार्ग निकालना।

गुत्स—पु० [स०√गुध् (वेष्टित करना)+स, कित्] दे० 'गुच्छ'।

गुथना—अ० [स० गुत्सन, प्रा० गुत्थन] १ धागे, रस्सी आदि के अगो का आपस मे उलझ जाना। २. गूँथा या पिरोया जाना। ३ भद्दी तरह से सीया जाना। ४ लडते समय एक दूसरे को कसकर दबाना या पकडना।

पु० गुलेल मे लगी हुई वह रस्सी जिसकी सहायता से ढेला फेंका जाता है।

गुथवाना—स० [हि० गूँथना का प्रे०] गूथने का काम दूसरे से करवाना।

गुथुवाँ—वि० [हि० गुथना] १ उलझा हुआ। २ गूथा हुआ।

गुद—स्त्री० [स०√गुद् (खेलना)+क] मल-द्वार। गुदा।

गुदकार—वि०=गुदकारा।

गुदकारा—वि० [हि० गूदा वा गुदार] १. जिसमे गूदा हो। गूदे से भरा हुआ। २. मुलायम और लचीला। गुदगुदा।

गुद-कील—पु० [ष० त०] अर्श या बवासीर नाम का रोग।

गुदगर—वि०=गुदकारा।

गुद-गुदा—वि० [हि० गूदा] [स्त्री० गुदगुदी] १ (गूदेदार वस्तु) जो छूने पर मुलायम तथा भली प्रतीत हो। २. (ऐसी वस्तु) जिसमे कोई मुलायम चीज भरी हुई हो। ३. मासल।

गुदगुदाना—अ० [हि० गुदगुदा] १ किसी के कोमल या मासल अगो को उँगलियो से इस प्रकार खुजलाना या सहलाना कि वह हँसने लगे। गुदगुदी करना। २ विनोद या परिहास के लिए छेडना। ३. किसी के मन में किसी बात की इच्छा या लालसा उत्पन्न करना।

गुदगुदाहट—स्त्री० [हि० गुदगुदाना+आहट (प्रत्य०)] १ गुदगुदाने की क्रिया या भाव। २ मन मे होनेवाली किसी बात की हलकी इच्छा। ३. दे० 'गुदगुदी'।

गुदगुदी—स्त्री० [हि० गुदगुदाना] १. किसी द्वारा गुदगुदाये जाने ने शरीर मे होनेवाली हलकी खुजली या सुरसुरी। २ हलकी इच्छा या वासना। ३. उल्लास। ४. सभोग की इच्छा या कामना।

गुद-ग्रह—पु० [ष० त०] कोष्ठबद्धता का रोग।

गुदड़िया—पु० [हि० गूदड] १ गुदड़ी पहनने या ओढनेवाला। २. गूदड़ या रद्दी चीजें खरीदकर बेचनेवाला व्यापारी। ३. खेमा, दरी, फर्श आदि चीजें किराये पर देनेवाला व्यापारी।

वि० गुदड़ी या गूदड सबंधी।

गुदड़ी—स्त्री० [हि० गूथना=मोटी सिलाई करना] १. फटे-पुराने कपडों की कई तहो को एक मे सीकर बनाया हुआ ओढना या बिछावन। २. टूटी-फूटी तथा फटी-पुरानी वस्तुओ की सज्ञा। ३ वह स्थान जहाँ पर फटी-पुरानी तथा टूटी-फूटी वस्तुएँ मिलती हो।

पद—गुदड़ी बाजार=वह बाजार जिसमे पुरानी या टूटी-फूटी वस्तुएँ बिकती हो। **गुदड़ी मे का लाल**=(क) तुच्छ स्थान मे छिपी या दबी हुई उत्तम वस्तु। (ख) ऐसा गुणी जिसके रूप-रग, वेष आदि से उसके गुणी होने का पता न चलता हो।

गुदनहारी—स्त्री०=गोदनहारी।

गुदना—अ० [हि० गोदना का अ०] गोदा जाना।

†पु० दे० 'गोदना'।

गुद-निर्गम—पु० [ष० त०] गुदा से काँच बाहर निकलने का रोग।

गुदनी—स्त्री० दे० 'गोदनी'।

गुद-पाक—पु० [ष० त०] गुदा के पक जाने का रोग।

गुद-भ्रंश—पु० [ष० त०] गुदा से काँच निकलने का रोग।

गुदमा—पु० [देश०] एक प्रकार का मोटा और मुलायम पहाडी कबल।

गुदर*—पु० [फा० गुज़र] १. निर्वाह। २ निवदन। प्रार्थना। ३. निवेदन आदि के लिए किसी की सेव. मे होनेवाली उपस्थिति। हाजिरी।

गुदरना*—अ० [फा० गुज़र+हि० ना० (प्रत्य०)] १ गुजरना। २ सेवा मे उपस्थित होना। ३ अलग रहना या होना।

स० दे० 'गुदरानना'।

गुदरानना—स० [फा० गुज़र+हि० ना (प्रत्य०)] १ किसी के आगे रखना या पेश करना। २ निवेदन करना। ३ भेंट करना।

गुदरिया—पु० [देश०] एक प्रकार का नीबू।

स्त्री०=गुदडी।

गुदरी—स्त्री०=गुदडी।

गुदरैन†—स्त्री० [हि० गुदरना] १. याद किये हुए पाठ को दोहराना या सुनाना। २ परीक्षा।

गुदवाना—स० [हि० गोदना] गोदने का काम दूसरे से कराना। गुदाना। जैसे—गोदना गुदवाना।

गुद-स्तंभ—पु० [ष० त०] पेट में से मल का जल्दी न निकलना। मलावरोध। कब्जियत।

गुदांकुर—पु० [गुद-अंकुर, स० त०] १. गुदा में निकलनेवाले बवासीर के दाने या मसे। २. बवासीर।

गुदा—स्त्री० [स० गुद] वह इंद्रिय जिससे प्राणी मल त्याग करते हैं। मलद्वार।

गुदाज—वि० [फा०] १ गदराया हुआ। गुदकारा। २. गूदेदार। ३. मांस से भरा हुआ। मांसल। मोटे दलवाला। ४ खूब चमकीला और तेज (रंग)।

गुदाजरंग—पु० [फा०] चित्रकला में, खूब चमकीला रंग।

गुदाना—स०=गुदवाना।

गुदाम—पु० दे० 'गोदाम'।
†पु० दे० 'बुताम' (बटन)।

गुदार†—वि० [हिं० गूदा] १. जिसमें अधिक गूदा हो। गूदेदार। २ मांसल।

गुदारना*—स० [हिं० गुदरना का स० रूप] १. गुजारना। २. सेवा में उपस्थित करना। ३ अलग करना। ४ छोड़ देना। ५. पढ़कर सुनाना।

गुदारा—पु० [फा० गुजारा] १ नाव पर नदी पार करने की क्रिया। उतारा। २ वह स्थान जहाँ से लोग नाव पर सवार होते या उतरते हैं।
मुहा०—गुदारे लगना=(क) किनारे लगना। (ख) कार्य पूरा या समाप्त होना।
३ दे० 'गुजारा'।
वि०=गुदार।

गुदियारा†—वि०=गुदकारा।

गुदी—स्त्री० [देश०] नदी के किनारे का वह स्थान जहाँ टूटी-फूटी नावों की मरम्मत होती तथा नई नावें बनाई जाती है।

गुदुरी†—स्त्री० [हिं० गदराना] १. मटर की फली। २. मटर तथा चने की फसल में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

गुदौष्ठ—पु० [गुद-ओष्ठ, ष० त०] गुदा के मुख पर का मांस।

गुद्दा†—पु० [देश०] वृक्ष की मोटी डाली।
पु०=गूदा।
पु०=कुंदा (लकड़ी का)।

गुद्दी†—स्त्री० [हिं० गूदा] १. किसी फल के बीज के भीतर का गूदा। गिरी। मगज। २ सिर का पिछला भाग।
मुहा०—आँखें गुद्दी में होना या चला जाना=ऐसी मानसिक स्थिति होना जिसमें कोई चीज ठीक तरह से दिखाई न दे अथवा कोई बात समझ में न आवे। (परिहास और व्यंग्य) गुद्दी से जीभ खींचना=(क) जबान खींचकर निकाल लेना। (ख) बहुत कड़ा दंड देना।
पद—गुद्दी की नागिन=गरदन के पीछे वालों की भौंरी जो बहुत अशुभ मानी जाती है।
३ हथेली पर का गुदगुदा मांसल अंश। गद्दी।

गुन*—पु० [स० गुण] १. गुण। २. ऐसा कार्य जिसे पूरा करने के लिए विशिष्ट गुण या योग्यता अपेक्षित हो। उदा०—काहू नर सों यह गुन होई।—जायसी।

गुनगुना—वि० [अनु०] (व्यक्ति) जो नाक से बोलता हो।
वि० कुनकुना (कदुष्ण)।

गुनगुनाना—अ० [अनु०] १ नाक से गुन गुन शब्द करना। २. इस प्रकार बोलना कि कुछ स्वर नाक से भी निकले। ३. बहुत धीरे-धीरे और अस्पष्ट रूप में गाना।

गुनधुन—स्त्री० [हिं० गुनना+धुन] सोच-विचार। चिंता।

गुनना—अ० [स० गुणन] १. गुणों आदि से युक्त होना। जैसे—पढ़ना और गुनना। २. मन में सोच-विचार करना। कुछ समझने के लिए सोचना। ३. किसी को कुछ महत्त्व का समझना। जैसे—वह कुछ गुनता है।
स० १. कथन या वर्णन करना। २. गुणा करना।
*पु० [illegible]।

गुनमंत—वि० गुणवान।

गुनरखा—पुं०=गोनरखा।

गुनवंत†—वि०=गुणवान्।

गुनवान—वि०=गुणवान्।

गुनह—पु० [फा०] 'गुनाह' का संक्षिप्त रूप। जैसे—गुनहगार।

गुनहगार—वि० [फा०] १. जिसने कोई गुनाह किया हो। पापी। २. अपराधी। ३. दोषी।

गुनहगारी—स्त्री० [फा०] गुनहगार होने की अवस्था या भाव।

गुनही†—पु०=गुनहगार।
वि० दे० 'गुनहगार'।

गुना—प्रत्य० [सं० गुणन] १. एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के अंत में यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि कोई परिमाण, मात्रा या संख्या निरंतर कई बार आने पर कितनी होती है। जैसे—चौगुना, दस गुना आदि।
पु० गणित में गुणन करने की क्रिया। गुणन।
†पु० [?] टिकिया के आकार का एक प्रकार का मीठा पकवान।

गुनावन†—पु० [स० गुणन] १. मन में किसी बात पर सोच-विचार करने की क्रिया या भाव। उदा०—लाग भूप पर बाल मनहि मन करन गुनावन।—रत्ना०। २ आपस में होनेवाला परामर्श। सलाह-मशविरा।

गुनाह—पु० [फा०] धर्म, विधि, शासन आदि की आज्ञा या मान्यता के विरुद्ध किया हुआ ऐसा आचरण जिसके कारण उसके कर्ता को दण्ड का भागी बनना पड़ता है। अपराध। पाप।

गुनाहगार—पु०=गुनहगार।

गुनाही—वि० [फा० गुनाह] अपराधी या दोषी। गुनहगार।

गुनिया—पु० [हिं० गुणी] वह जिसमें कोई विशिष्ट गुण हो। गुणवान्। गुणी।
स्त्री० [हिं० कोण] १ वह उपकरण या औजार जिससे बढ़ई, राज आदि कोने की सीध नापते है। २. दे० 'कोनिया'।
†पु० [हिं० गून] नाव की गून खीचनेवाला मल्लाह। गुनरखा।

गुनियाला*—वि० [हिं० गुण] गुणोंवाला। गुणी। उदा०—प्रीति करी है तुज्झ से बहु गुनियाला कंत।—कबीर।

गुनी—वि०, पु०=गुणी।
वि० [स० गुण] जिसमें डोरी या रस्सी लगी हो। उदा०—बाँधे बाँधे मोहन गुनी सुनी न ऐसी प्रीति।—घनानंद।

गुनीला—वि० [हिं० गुणी] १ जिसमे गुण हो। गुणवान्। २ गुणन या गुणा करनेवाला। ३. अपने गुणों के द्वारा लाभ पहुँचाने या हित करनेवाला।

गुनोबर—पु० [फा० सनोबर] देवदार या सनोबर की जाति का पेड।

गुन्ना—पु० [अ० गुन्न] अनुस्वार का वह आधा उच्चारण जो हिंदी मे अर्द्ध चंद्र से सूचित होता है। जैसे—रवाँ मे नून (अनुस्वार) गुन्ना है।

गुन्नी—स्त्री० [स० गुण, हिं० गून] रस्सी को बटकर बनाया हुआ एक प्रकार का कोड़ा जिससे व्रज मे होली के अवसर पर लोग एक दूसरे को मारते हैं।

गुपंति—वि०=गुप्त।
स्त्री०=गुप्ति।

गुपचुप—क्रि० वि० [हिं० गुप्त+चुप] विना किसी से कुछ कहे या बतलाए हुए।
पु० १ गुलाव जामुन की तरह की एक प्रकार की मिठाई। २. लड़कों का एक खेल जिसमे वे गाल या मुँह फुलाकर धीरे से उस पर मुक्का मारते हैं। ३. एक प्रकार का खिलौना।

गुपाल*—पु०=गोपाल।

गुपुत*—वि०=गुप्त।

गुप्त—वि० [स०√गुप् (छिपाना, रक्षा करना)+क्त] १ (कार्य या व्यवहार) जो दूसरों की जानकारी से छिपाकर किया जाय। जैसे—गुप्त दान, गुप्त मत्रणा। २ (गुण, वस्तु आदि) जिसके सबंध मे लोग परिचित न हो। जैसे—गुप्त मार्ग। ३ जिसे जानना कठिन हो। गूढ। दुरूह। ४ जिसका पता ऊपर से देखने पर न चले। जैसे—गुप्त मार। ५ छिपाकर रखा हुआ। रक्षित।
पु० १ मगध का एक प्राचीन राजवश जिसने सारे उत्तरीय भारत मे अपना साम्राज्य स्थापित किया था। (ई० चौथी-पाँचवी शताब्दी) २. वैश्यो के नाम के साथ लगनेवाला अल्ल। जैसे—कृष्णदास गुप्त।

गुप्तक—वि० [स० गुप्त से] किसी चीज को छिपातथा सँभालकर रखनेवाला रक्षक।

गुप्त-काशी—स्त्री० [कर्म० स०] हरिद्वार और बदरीनाथ के बीच मे पड़नेवाला एक तीर्थ।

गुप्त-चर—पु० [कर्म० स०] १ प्राचीन भारत मे वह व्यक्ति जो गुप्त रूप से दूसरे राज्यो के भेद जानने के लिए इधर-उधर भेजा जाता था। २ जासूस। भेदिया।

गुप्त-दान—पु० [कर्म० स०] ऐसा दान जो अपना नाम, पता और दान की वस्तु का मूल्य, स्वरूप आदि विना किसी पर प्रकट किये हुए दिया जाय।

गुप्ता—स्त्री० [स० गुप्त+टाप्] १. साहित्य मे, वह परकीया नायिका जो पर-पुरुष से अपना संबंध या सभोग छिपाने का प्रयत्न करती हो। २. रखी हुई स्त्री। रखेली।

गुप्ति—स्त्री० [स०√गुप्+क्तिन्] १ गुप्त रखने अर्थात् छिपाने की क्रिया या भाव। छिपाव। २. रक्षा करने या रक्षित रखने की क्रिया या भाव। ३. तत्र मे गुरु से मत्र लेने के समय का एक संस्कार जो मत्र को गुप्त रखने के उद्देश्य से किया जाता है। ४. कारागार। ५. गुफा। ६ योग का यम नामक अग।

गुप्ती—स्त्री० [सं० गुप्त] १. कुछ अस्त्रो मे रहनेवाली वह व्यवस्था जिसमे आघात करनेवाली चीज किसी आवरण में छिपी रहती है और खटका दवाने पर वाहर निकल आती है। २ वह छड़ी जिसके अदर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार छिपी रहती है।

गुप्तीदार—वि० [हिं० गुप्ती+फा दार (प्रत्य०)] (अस्त्र) जो गुप्ती-वाली प्रक्रिया से बना हो। जैसे—गुप्तीदार कुलग, छडी या फरना।

गुप्तोत्प्रेक्षा—स्त्री० [स० गुप्त-उत्प्रेक्षा, कर्म० स०] उत्प्रेक्षा अलकार का एक भेद जिसमें 'मानो' 'जानो' आदि सादृश्यवाचक शब्द नहीं होते। प्रतीय-माना उत्प्रेक्षा।

गुप्फा—पु० [स० गुम्फ] गुच्छा।

गुफा—स्त्री० [स० गुहा] जमीन अथवा पहाड़ के अदर का गहरा तथा अँधेरा गड्ढा। कदरा।

गुफ़्त—वि० [फा०] कहा हुआ।
स्त्री० उक्ति। कथन।

गुफ़्तगू—स्त्री० [फा०] दो पक्षो मे होनेवाली साधारण बातचीत। वार्ता-लाप।

गुफ़्तार—स्त्री० [फा०] १. बात-चीत। २ बात-चीत करने का ढग।

गुबरैला—पु० [हिं० गोवर+ऐला (प्रत्य०)] सडे या सूखे हुए गोवर मे पडने या रहनेवाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

गुबार—पु० [अ०] १. गर्द। धूल।
पद—गर्द-गुबार=हवा मे उड़नेवाली धूल और मिट्टी।
२ मन में रहनेवाला दुर्भाव या मैल।
मुहा०—(मन का) गुबार निकालना=अप्रिय तथा कटु बातें कहकर मन का क्रोध या दु ख कम करना।
३ आँखों की वह अवस्था जिसमे चीजें धुँधली दिखाई देती हैं।

गुबारा—पु० दे० 'गुब्बारा'।

गुबिंद—पु०=गोविन्द।

गुब्बा—पु० [देश०] रस्सी में डाला हुआ फदा। (लश०)

गुब्बाड़ा—पु०=गुब्बारा।

गुब्बार—पु० १=गुबार। २. =अफर्या।

गुब्बारा—पु० [हिं० कुप्पा] १ कागज आदि का वना हुआ वह गोलाकार उपकरण जिसके बीच मे जलता हुआ लत्ता बाँधने से उसके धूएँ के जोर से वह आकाश मे उड़ने लगता है। २. रवड़ की बनी हुई एक प्रकार की थैली जिसमे हवा से कोई हलकी गैस भरने से वह हवा मे उड़ने लगती है। ३. हवा से भरी हुई उक्त आकार की वह थैली जिसकी सहायता से सैनिक लोग हवाई जहाजो पर से जमीन पर उतरते हैं। छतरी। ४ गोले के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी जो ऊपर आकाश की ओर फेंकने पर फट जाती है।

गुभीला—पु० [हिं० गुह=मल] पेट के अदर का सूखा हुआ मल। गोटा। सुद्दा।

गुम—वि० [फा०] १. जो आँखो के सामने न हो। । छिपा हुआ। अप्रकट। गुप्त। २. जो भूल आदि के कारण हाथ से निकल गया हो और न मिल रहा हो। खोया हुआ। ३. जिसका पता न हो या न लगता हो। ४. जो ख्यात या प्रसिद्ध न हो। जैसे—गुमनाम।
पु० ऐसी वातावरणिक स्थिति जिसमें हवा न चल या न वह रही हो।
पु० [?] समुद्र की खाडी। (लश०)

गुमक—स्त्री०=गमक।

गुमकना—अ० [स० गम] किसी स्थान मे शब्द का गूंजना।
गुमका†—पु० [देश०] डठल या भूसी से दाना अलग करने का काम।
गुमची†—स्त्री०=घुँघची।
गुमजी—स्त्री०=गुमटी।
गुमटा—पु० [स० गुवा+टा (प्रत्य०)] १. वह गोल सूजन जो माथे या सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमी। २. कोई अर्द्ध-गोलाकार उभार। ३. कपास के ढोडे नष्ट करनेवाला एक प्रकार का कीडा।
गुमटी—स्त्री० [फा० गुवद] १ मकान के ऊपरी भाग मे सीढी की छत जो शेष भाग मे अधिक ऊपर उठी हुई होती है। २ रेलवे लाइन के किनारे कही-कही बना हुआ वह छोटा गोलाकार और गुवद-नुमा कमरा जिसमे खलासी रहता है।
पु० जहाज या नाव मे का पानी बाहर फेंकनेवाला खलासी या मल्लाह।
पु० [हि० गुमटा का अल्पा० रूप] छोटा गुमटा।
गुमना†—अ० [फा० गुम] गुम हो जाना। खो जाना।
स० गुम करना। खो देना।
गुमनाम—वि० [फा०] १. जिसे या जिसका नाम कोई न जानता हो। अप्रसिद्ध। जैसे—गुमनाम आदमी या बस्ती। २. जिसमे किसी का नाम न लिखा हो। बिना नाम का। जैसे—गुमनाम पत्र, गुमनाम शिकायत।
गुमर—पु० [फा० गुबार] १. अभिमान। घमंड। शेखी। २. मन मे छिपा हुआ दुर्भाव या द्वेष। गुबार।
गुमराह—वि० [फा०] [भाव० गुमराही] जो ठीक या सीधा रास्ता भूलकर इधर-उधर चला गया हो। भटका या भूला हुआ। पथ-भ्रष्ट।
गुमराही—स्त्री० [फा०] गुमराह होने की अवस्था या भाव। पथ-भ्रष्टता।
गुम-सुम—वि० [फा० गुम+अनु० सुम] १. जो कुछ भी बोल-चाल न रहा हो। २. जो बिलकुल हिल-डोल न रहा हो।
क्रि० वि० बिलकुल चुप-चाप और बिना किसी को जतलाये हुए।
वि० [हि० गुम] बिलकुल गुम-सुम या चुप रहनेवाला। चुप्पा।
गुमान—पु० [फा०] १. अनुमान। २. कल्पना। ३ अभिमान। घमड। ४ अनुमान या कल्पना के आधार पर किया जानेवाला सदेह। शक।
गुमाना†—स० [फा० गुम=खोया हुआ] १. गुम करना। खोना। २ हाथ से निकल जाने देना। गँवाना।
अ०=गुमना (गुम होना)।
गुमानी—वि० [हि० गुमान] गुमान करनेवाला। अभिमानी। घमडी।
गुमावण—वि० [हि० गुम] १. गुम करने या खोनेवाला। २. खराब या नष्ट करनेवाला। उदा०—काय कलाली छल कियो, सेज गुमावण रग।—कविराजा सूर्यमल।
गुमाश्ता—पु० [फा० गुमाश्त] वह जो किसी बडे व्यापारी या कोठीवाल की ओर से बहीखाता लिखने या माल खरीदने और बेचने का काम करता हो।
गुमाश्तागीरी—स्त्री० [फा०] गुमाश्ते का काम या पद।
गुमिटना†—अ० [सं० गुम्फित] लिपटना।
स० लपेटना।
गुम्मट—पु० १. =गुबद। २ =गुमटा।
गुम्मर†—पु०=गुमटा।
गुम्मा—पु० [देश०] बडी और मोटी ईंट।
गुरँब—पु०=गुड़बा। उदा०—औमा अम्रित गुरँब गरेठा।—जायसी।
गुरबा†—पु० दे० 'गुड़बा'।
गुरभर*—पु० [हि० गुड़बा] मीठे आम का पेड़।
गुर—पु० [स० गुरुमत्र] १. वह अमोघ साधन या सूत्र जिससे कोई कठिन काम निश्चित रूप से चटपट तथा सरलता से सपन्न होता हो। २ बहुत अच्छी युक्ति।
†पु० [स० गुण] तीन गुणों के आधार पर तीन की सख्या। (टि०)
†पु०=गुरु।
पु०=गुड।
गुरसई†—स्त्री० [?] जमीन रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें रेहनदार उसकी तीन चौथाई मालगुजारी देता है और एक चौथाई महाजन देता है।
गुरखाई†—स्त्री० = गुरसई।
गुरगा—पु० [स० गुरुग] [स्त्री० गुरगी] १. गुरु का अनुगामी। चेला। शिष्य। २. टहलुआ। दास। सेवक। ३. अनुचर। ४. जासूस। भेदिया।
गुरगाबी—पु० [फा०] एक प्रकार का देशी जूता।
गुरच—स्त्री० =गुरुच।
गुरचना†—अ० [हि० गुरुच] सिकुडकर गुरुच की बेल की तरह टेढा-मेढा होना और आपस मे उलझ जाना।
गुरचियाना—अ०=गुरचना।
गुरची†—स्त्री० [हि० गुरुच] १ सिकुड़न। बल। २. डोरे आदि के उलझने या फँसने से पडनेवाली गाँठ या गुत्थी।
गुरचों†—स्त्री० [अनु०] आपस मे धीरे-धीरे होनेवाली बात-चीत। काना-फूसी।
गुरज*—पु० [फा० गुर्ज] १. किसी भवन, मीनार आदि का ऊपरी गोलाकार भाग। गुबज। उदा०—सोभित सुबरन बरन मे उरज गुरज के रूप।—मतिराम। २. एक प्रकार की गदा। गुर्ज।
गुरजा—पु० [देश०] लवा या लोवा नामक पक्षी।
गुरझन*—स्त्री० [स० अवरुधन, पु० हि० उरझन] १. पेंच की बात। उलझन। २ ग्रथि। गाँठ।
गुरझना†—अ०=उलझना।
गुरझाना†—स०=उलझाना।
गुरुर्थ—पु० [स० गुरु+अर्थ] गभीर, बहुत बडा या महत्त्वपूर्ण अर्थ।
गुरदा—पु० [फा० गुर्द] १. रीढदार जीवो के पेट के अदर के वे दो अग जो खाये हुए पदार्थों से बननेवाला रक्त साफ करते हैं और बचे हुए तरल पदार्थ को पेशाब के रूप मे नीचे मूत्राशय मे भेजते हैं। (किडनी) २. साहस। हिम्मत। ३. एक प्रकार की छोटी तोप। ४. लोहे का एक प्रकार का बड़ा कलछा जिससे पकाते समय गुड़ चलाया जाता है।
गुरदाह†—पु०=गुरदा (छोटी तोप)।
गुरदिल—पु० [देश०] १. जलाशयो के किनारे रहने तथा मछलियाँ खानेवाला किलकिला की जाति का पक्षी। बदामी। २. कचनार।
गुरना†—अ०=घुलना। उदा०—गुरि गुरि आपु हेराई जौं मुएहु न छाँड़े पास।—जायसी।

गुरनियालू—पु० [देश०] जमीकद, रतालू आदि की जाति का एक प्रकार का कद।

गुरबत—स्त्री० [अ०] १. विदेश का निवास। प्रवास। २ यात्रा-काल मे पथिक की दीन स्थिति। निस्सहाय होने की अवस्था। ३. उक्त अवस्था के फलस्वरूप होनेवाली मनुष्य की परवशता तथा विवशता।

गुरबरा—पु० [हिं० गुड+वरा] [स्त्री० अल्पा० गुरवरी] १ गुड डालकर पकाया हुआ मीठा वडा। २ गुड के घोल मे डाला हुआ वडा।

गुरविनी*—स्त्री० [स० गुर्विणी] १ गुरु-पत्नी। २ गर्भवती स्त्री।

गुरमुख—वि० [हिं० गुरु+मुख] जिसने गुरु से मत्र लिया हो। दीक्षित।

गुरमुखी—स्त्री० [स० गुरु+मुख+हिं० ई (प्रत्य०)] पजाव मे प्रचलित देवनागरी लिपि का वह रूप जिसे सिक्खो के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने चलाया था।

गुरम्मर—पु० [हिं० गुड+अब] १. गुड की तरह मीठे फलोवाला आम का पेड। २ दे० 'गुडवा'।

गुरल—पु० [?] भूरे रग की एक प्रकार की पहाडी वकरी जिसे कश्मीर मे रोम और असम मे छागल कहते है और जिसका मास वहुत स्वादिष्ट होता है।

गुरवनी—स्त्री०=गुर्विणी (गर्भवती)।

गुरवी—वि० [स० गर्व] अभिमानी। घमडी।

गुरसल—पु० [देश०] किलहँटी या गिलगिलिया नामक पक्षी।

गुरसी†—स्त्री०=गोरसी।

गुरसुम—पु० [देश०] सोनारो की एक प्रकार की छेनी।

गुरहा—पु० [देश०] १. छोटी नावो के अदर की ओर दोनो सिरो पर जडे हुए तख्ते जिनमे से एक पर मल्लाह वैठता है और दूसरे पर सवारियाँ वैठती है। २ एक प्रकार की छोटी मछली।

गुराई†—स्त्री० [?] तोप लादने की गाडी।

स्त्री०=गोराई (गोरापन)। उदा०—साँवरे छैल छुओगे जु मोहि तो गोरे गात गुराई न रैहै।

गुराउ†—पु०=गोरापन।

गुराव—पु० [देश०] १. तोप लादने की गाडी। २ वह नाव जिसमे एक ही मस्तूल हो।

वि० [स० गुरु] १. वहुमूल्य। उदा०—सुनि सौमेस वधाइ दिय, है गै चीर गुराव।—चदवरदाई। २ वडा या भारी।

†पु०=गुराई।

पु० [हिं० गुरिया] १. चारा काटने का काम। २. चारा काटने का गँडासा।

गुरायसु*—स्त्री० [स० गुरु+हिं० आयसु] गुरुओ या वड़े लोगो की आज्ञा या आदेश।

गुरिंदा—पु० [फा० गुर्ज] गदा। (क्व०)

गुरिंदा—पु० [फा० गोयदा] जासूस। भेदिया।

गुरि—स्त्री०=गुर (युक्ति)।

गुरिग*—स्त्री०=गोरी।

गुरिय*—स्त्री०=गोरी।

गुरिया—स्त्री० [स० गुटिका] १. धातु, लकड़ी, शीशे आदि का वह छोटा छेददार दाना जिसे माला मे पिरोते है। मनका। २. किसी वस्तु का छोटा अग। टुकडा। ३. मछली के मास का टुकडा।

स्त्री० [देश०] १. दरी वुनने के करघे की वह वड़ी लकडी जिसमे वँ का वाँस लगा रहता है। झिल्लन। २. पाटे या हेगे की वह रस्सी जो वैलो की गरदन के पास जूए के वीच मे वाँधी जाती है।

गुरिल्ला†—पुं०=गोरिल्ला।

गुरीरा*—वि० [हिं० गुड+ईरा (प्रत्य०)] १ जिसमे गुड़ की-सी मिठास हो। २ उत्तम। वढिया।

गुरु—वि० [स०√गृ (उपदेश देना)+कु] १. (वस्तु) जो तौल या भार मे अधिक हो। वजनी। जैसे—गुरु भार। २ अधिक लवाई-चौडाई या विस्तारवाला। ३. (शब्द या स्वर) जिसके उच्चारण या निर्वहण मे किसी नियत मान से दूना समय लगता हो। जैसे—गुरु अक्षर, गुरु मात्रा। ४. महत्त्वपूर्ण। जैसे—गुरु अर्थ। ५ वल, वुद्धि, वय, विद्या आदि मे वडा और फलत आदरणीय या वदनीय। जैसे—गुरु-जन। ६ कठिन। मुश्किल। जैसे—गुरु-कार्य। ७. कठिनता से अथवा देर मे पकने या पचनेवाला। जैसे—गुरु-पाक।

पु० [स्त्री० गुरुआनी] १ विद्या पढाने या कला आदि की शिक्षा देनेवाला आचार्य। शिक्षक। उस्ताद। २ यज्ञोपवीत कराने और गायत्री मत्र का उपदेश देनेवाला आचार्य। ३. देवताओ के आचार्य और शिक्षक वृहस्पति। ४ वृहस्पति नामक ग्रह। ५ पुष्य नक्षत्र जिसका अधिष्ठाता देवता वृहस्पति ग्रह है। ६. छदशास्त्र मे, दो कलाओं या मात्राओंवाला अक्षर जिसका चिह्न ऽ है। जैसे—का, दा आदि। ७ सगीत मे, ताल का वह अश जिसमे एक दीर्घ या दो लघु मात्राएँ होती हैं और जिसका चिह्न ऽ है। ८ व्रह्मा। ९ विष्णु। १० महेश। शिव। ११. परमेश्वर। १२. द्रोणाचार्य। १३ कोई पूज्य और वड़ा व्यक्ति। १४. कुछ हठयोगियो के अनुसार शरीर के अन्दर का एक चक्र या कमल जो अष्टकमल से भिन्न और अतिरिक्त है।

गुरुआइन†—स्त्री०=गुरुआनी।

गुरुआई—स्त्री० [स० गुरु+हिं० आई (प्रत्य०)] १ गुरु का कार्य, धर्म या पद। २ चालाकी। धूर्त्तता।

गुरुआनी—स्त्री० [स० गुरु+आनी प्रत्य०] १. गुरु की पत्नी। २ विद्या सिखाने अथवा शिक्षा देनेवाली स्त्री। शिक्षिका।

गुरुइ—स्त्री०=गुर्वी (गर्भवती)।

वि०=गुरु (भारी)। उदा०—विरह गुरुइ खप्पर कै हिया।—जायसी।

गुरु-कुंडली—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष मे वह कुडली या चक्र जिसके द्वारा जन्म-नक्षत्र के अनुसार एक-एक वर्ष के अधिपति ग्रह का निरूपण होता है।

गुरु-कुल—पु० [ष० त०] १. गुरु का घराना या वश। २. गुरु, आचार्य या शिक्षक के रहने का वह स्थान जहाँ वह विद्यार्थियो को अपने पास रखकर शिक्षा देता हो। ३ उक्त के अनुकरण पर वननेवाला एक आधुनिक विद्यापीठ जिसमे विद्यार्थियो को प्राचीन सास्कृतिक ढग से शिक्षा देने के सिवा उनसे व्रह्मचर्य आदि का पालन कराया जाता है।

गुरु-गंधर्व—पु० [कर्म० स०] इन्द्रजाल के छ भेदो मे से एक।

गुरु-गम—वि० [स०+हिं०] १ गुरु के माध्यम से प्राप्त होनेवाला। जैसे—गुरु-गम ज्ञान। २. गुरु का वतलाया हुआ।

गुरु-गृह—पु० दे० 'गुरु-कुल' २ और ३.।

गुरुघ्न—पु० [स० गुरु√हन् (हिंसा)+क] गुरु अथवा किसी गुरुजन को मार डालनेवाला व्यक्ति, अर्थात् बहुत बडा पापी।

गुरुच—स्त्री० [स० गुडूची] पेडो पर चढनेवाली एक प्रकार की मोटी लता जो बहुत कडवी होती और प्राय' ज्वर आदि रोगो मे दी जाती है। गिलोय।

गुरुच खाप—पु० [?] एक उपकरण या औजार जिससे बढई लकडी छीलकर गोल करते हैं।

गुरुचांद्री—वि० [स० गुरुचद्रीय] जो गुरु और चन्द्रमा के योग से होता हो। जैसे–गुरुचाद्री योग।

गुरु-जन—पु० [कर्म० स०] माता, पिता, आचार्य आदि पूज्य और बडे लोग।

गुरुडम—पु० [स० गुरु+अ० प्रत्य० डम] दूसरों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए गुरु बनने का ढोंग रचना।

गुरु-तल्प—पु० [प० त०] १.गुरु की शय्या। २ गुरु की पत्नी। ३.गुरु (पूज्य और बडी) की स्त्री के साथ किया जानेवाला सभोग जो बहुत बडा पाप माना गया है।

गुरु-तल्पग—पु० [सं० गुरुतल्प√गम् (जाना) +ड] गुरुतल्प नामक पाप करनेवाला व्यक्ति।

गुरुतल्पी (ल्पिन्)—पु० [गुरुतल्प+इनि]=गुरु-तल्पग।

गुरुता—स्त्री० [स० गुरु+तल्–टाप्] १. गुरु होने की अवस्था या भाव। २ भारीपन। ३. बडप्पन। महत्ता।

गुरु-ताल—पु० [ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

गुरु-तोमर—पु० [कर्म० स०] तोमर छद का वह रूप जो उसके प्रत्येक चरण के अन्त मे दो मात्राएँ बढाने से बनता है।

गुरुत्व—पु० [स० गुरु+त्व] १. गुरु होने की अवस्था या भाव। २ गुरु का कार्य या पद। ३ भारीपन। ४. बडप्पन। महत्त्व। ५. पृथ्वी की वह आकर्षण-शक्ति जो अधर मे के पदार्थो को अपनी ओर अर्थात् नीचे खीचती है। (ग्रैविटी)

गुरुत्व-केन्द्र—पु० [प० त०] पदार्थ विज्ञान मे किसी पदार्थ के बीच का वह बिन्दु जिस पर यदि उस पदार्थ का सारा विस्तार सिमट कर आ जाय तो भी उसके गुरुत्वाकर्षण मे कोई अन्तर न पडे। (सेन्टर ऑफ ग्रैविटी)

गुरुत्व-लम्ब—पु० [प० त०] किसी पदार्थ के गुरुत्व केन्द्र से सीधे नीचे की ओर खीची जानेवाली रेखा।

गुरुत्वाकर्षण—पु० [स० गुरुत्व-आकर्षण प० त०] भौतिक शास्त्र मे, वह शक्ति जिसके द्वारा कोई पिंड किसी दूसरे पिंड को अपनी ओर आकृष्ट करता है अथवा स्वय उसकी ओर आकृष्ट होता है। पिंडो की एक दूसरे को आकृष्ट करने की वृत्ति। (ग्रैविटेशन)

गुरु-दक्षिणा—स्त्री० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे सारी विद्या पढ चुकने के उपरान्त गुरु को दी जानेवाली उसकी दक्षिणा।

गुरु-दैवत—पु० [ब० स०] पुष्य नक्षत्र।

गुरुद्वारा—पु० [स० गुरु-द्वार] १. आचार्य या गुरु के रहने का स्थान। २ सिक्खो का वह पवित्र मन्दिर जहाँ लोग ग्रन्थसाहब का पाठ करने जाते हैं।

गुरु-पत्रक—पु० [ब० स०] राँगा या वग नामक धातु।

गुरु-पाक—वि० [ब० स०] (खाद्य पदार्थ) जो सहज मे न पकता या न पचता हो। कठिनता से अथवा देर मे पकने या पचनेवाला।

गुरु-पुष्य—पु० [मध्य० स०] बृहस्पति के दिन पुष्य नक्षत्र पडने का योग, जो शुभ कहा गया है।

गुरु-पूर्णिमा—स्त्री० [प० त०] आषाढ की पूर्णिमा जिस दिन गुरु की पूजा करने का माहात्म्य है।

गुरु-बला—स्त्री० [ब० स०] संकीर्ण राग का एक भेद।

गुरुविनी—स्त्री० दे० 'गुर्विणी'।

गुरुभ—पु० [प० त०] १. पुष्य नक्षत्र। २. मीन राशि। ३. धनु राशि।

गुरुभाई—पु० [सं० गुरु+हिं० भाई] दो या दो से अधिक ऐसे व्यक्ति जिन्होंने एक ही गुरु से मत्र लिया या शिक्षा पाई हो। एक ही गुरु के शिष्य।

गुरु-मंत्र—पु० [मध्य० स०] १. वह मत्र जो गुरु के द्वारा शिष्य को दीक्षा देने के समय गुप्त रूप से बतलाया जाता है। २ कोई काम करने की सबसे बड़ी युक्ति जो किसी बहुत बडे अनुभवी ने बतलाई हो।

गुरु-मार—वि० [स० गुरु+हिं० मारना] १. अपने गुरु को दबाकर उसका स्थान स्वय लेनेवाला। (व्यक्ति) २. गुरु को भी दबा या परास्त कर सकनेवाला (उपाय या साधन)। जैसे—गुरु मार विद्या।

गुरु-मुख—वि० [ब० स०] जिसने धार्मिक दृष्टि से किसी गुरु से मत्र लिया या सीखा हो।

गुरुमुखी—स्त्री०=गुरमुखी (लिपि)।

गुरु-रत्न—पु० [कर्म० स०] १. पुष्पराग या पुखराज नामक रत्न। २. गोमेद नामक रत्न।

गुरु-वर—पु० [स० त०] १. बृहस्पति। २. गुरुओ मे श्रेष्ठ व्यक्ति।

गुरु-वार—पु० [प० त०] सप्ताह का पाँचवाँ दिन जो बुधवार के बाद और शुक्रवार से पहले पड़ता है। बृहस्पतिवार।

गुरु-वासर—पु० [प० त०]=गुरुवार।

गुरुवासी (सिन्)—पु० [गुरुवास, स० त०, +इनि] गुरु के घर मे रहकर शिक्षा प्राप्त करनेवाला शिष्य। अतेवासी।

गुरुशिखरी (रिन्)—पु० [मध्य० स०,+इनि] हिमालय, जिसकी चोटी सब पहाडो की चोटियो मे ऊँची है।

गुरु-सिंह—पु० [ब०स०] एक पर्व जो उस समय लगता है जब बृहस्पति ग्रह सिंह राशि पर आता है।

गुरू—पु० [स० गुरु] १. गुरु। आचार्य। २ बहुत बडा धूर्त्त। चालाक।

गुरू घटाल—पु० [हिं० गुरु+घटा] बहुत बडा चालाक या धूर्त्त।

गुरेट—पु० [हिं० गुर, गुड+बेट] एक प्रकार का बेलन जिससे कडाहे मे पकाया जानेवाला ईख का रस चलाया जाता है।

गुरेर—स्त्री० [हिं० गुरेरना]। गुरेरने की क्रिया, ढग या भाव। †स्त्री०=गुलेल।

गुरेरना†—स० [स० गुरु=बडा+हेरना=ताकना] आँखें फाडकर और क्रोधपूर्वक किसी की ओर देखना। घूरना।

गुरेरा—पु० [हिं० गुरेरना] १. किसी को गुरेरने या क्रोधपूर्वक देखने की क्रिया या भाव।

पद—गुरेरा-गुरेरी=एक दूसरे को क्रोधपूर्वक देखना।

२. आमना-सामना। देखा-देखी।

गुर्ज—पु० [फा०] १ गदा नामक पुराना शस्त्र। २. मोटा डंडा या सोंटा।
†पु०=बुर्ज।

गुर्ज-बरदार—पु० [फा०] गदाधारी सैनिक।

गुर्जमार†—पु० [फा० गुर्ज+हिं० मार] १ हाथ मे लोहे की गदा लेकर चलनेवाले मुसलमान फकीरो का एक सप्रदाय। २ उक्त सप्रदाय का फकीर।

गुर्जर—पु० [स० गुरु√ जृ (जीर्ण होना)+णिच्+अण्] [स्त्री० गुर्जरी]। १ गुजरात देश। २ उक्त देश का निवासी। ३. उक्त देश मे रहने वाली एक प्राचीन जाति जो अब गूजर कहलाती है।

गुर्जराट—पु० [स० गुर्जर-राष्ट्र] गुजरात देश।

गुर्जरी—स्त्री० [स० गुर्जर+ङीप्] १. गुजरात देश की स्त्री। २ गुर्जर या गूजर जाति की स्त्री। ३ एक रागिनी जो भैरव राग की भार्या कही गई है। गूजरी।

गुर्जा—पु० [?] १ एक प्रकार का कुत्ता।
†स्त्री० १.= बुर्जी। २. = झोपडी।

गुर्द—पु० [फा०] गुर्दिस्तान का निवासी।

गुर्दा†—पु० = गुरदा।

गुर्दिस्तान—पु० [फा०] फारस के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश। आज-कल का कुर्दिस्तान।

गुर्र—वि०, पु० १. = गुर्रा। २. =गर्रा।
स्त्री०=गुर्राहट।

गुर्रा—पु० [अ० गुर्र] १ मुहर्रम महीने की द्वितीया का चाँद। २ छुट्टी का दिन। ३ काम के बीच में पड़नेवाला नागा। ४ अनशन। उपवास। ५. टाल-मटोल। हीला-हवाला।
क्रि० प्र०—बताना।
पु० वि०, लाल और सफेद मिला हुआ।
पु० दे० 'गर्रा'।

गुर्राना—अ० [अनु०] १ गुर्र गुर्र शब्द करना। जैसे—कुत्ते का गुर्राना। २ क्रोध मे आकर कर्कश स्वर मे बोलना। जैसे—आपस मे एक दूसरे पर गुर्राना।

गुर्राहट—स्त्री० [हिं० गुर्राना] गुर्राने की क्रिया या भाव।

गुर्री—स्त्री० [देश०] भुने हुए जौ।

गुर्वादित्य—पु० [स० गुरु-आदित्य, ब० स०] गुरु अर्थात् बृहस्पति और आदित्य अर्थात् सूर्य का एक साथ एक ही राशि मे होनेवाला गमन। इसे एक प्रकार का योग माना गया है।

गुर्विणी—स्त्री० [स० गुरु+इनि-ङीप्] १. गर्भवती स्त्री। २ गुरु की स्त्री। गुरु-पत्नी।

गुर्वी—स्त्री० [स० गुरु+ङीष्] =गुर्विणी।

गुलच—पु० [स० गुड√अञ्च् (गति)+अण्, शक० पररूप] एक प्रकार का कद।

गुलंचा†—पु० = गुरुच।

गुलंदाज—पु० = गोलदाज।

गुल—पु० [फा०] १ गुलाब। जैसे—गुलकद, गुलरोगन आदि। २. पुष्प। फूल। जैसे—गुलमेंहदी।
मुहा०—गुल कतरना=कोई अनोखा या विलक्षण काम करना या बात कहना। (परिहास और व्यय)। गुल खिलना=किसी प्रसग मे कोई नई, मजेदार या विलक्षण घटना होना। गुल खिलाना=नई, मजेदार या विलक्षण घटना घटित करना।
३ वह गड्ढा जो हँसने के समय कुछ लोगो के गालो मे पडता है और सौंदर्यवर्धक माना जाता है। ४ पशुओ के शरीर पर होनेवाला फूल के आकार का रग या गोल दाग। जैसे—कुत्ते या चीते पर का गुल। ५. गरम लोहे से दागकर शरीर पर बनाया जानेवाला उक्त प्रकार का चिह्न या दाग।
मुहा०—गुल खाना=किसी चीज से अपना शरीर उक्त प्रकार से जलाना या दागना जिसमे शरीर पर उस चीज का दाग या निशान बन जाय। जैसे—प्रियतमा की अँगूठी या छल्ले से अपनी छाती या हाथ पर गुल खाना। (उर्दू कविताओ मे प्रयुक्त)
६ दीए की बत्ती का वह अश जो बिलकुल जल जाने पर छोटे से फूल का आकार धारण कर लेता है।
मुहा०—(चिराग) गुल करना=(चिराग) बुझाना या ठढा करना।
७ जलता हुआ कोयला। अगारा। ८. चिलम पर रखकर पीये जाने-वाले तमाकू का वह रूप जो उसे बिलकुल जल जाने पर प्राप्त होता है। जट्ठा। ९ जूते के तल्ले मे एडी के नीचे पडनेवाला अग जो प्राय पान के आकार का होता है। १० कारचोबी की बनी हुई फूल के आकार की बडी टिकुली जो स्त्रियाँ सुन्दरता के लिए कनपटी पर लगाती है। ११ चूने की वह बड़ी गोलाकार बिंदी जो सिर मे दर्द होने पर कनपटियो पर लगाते हैं। १२ कनपटी। १३. एक रग की चीज पर दूसरे रग का बना हुआ कोई गोल निशान। १४ आँख का डेला। (क्व०) १५ एक प्रकार का रगीन या चलता गाना। १६. गोबर मे कोयले का चूरा मिलाकर बनाया हुआ वह गोला जो अगीठियो मे जलाने के लिए बनाया जाता है। १७. युवती और सुदर स्त्री। (बाजारू)
पु० [अ० गुल] शोर। हल्ला। जैसे—लड़को का गुल मचाना।
पु० [देश०] १ हलवाई का भट्ठा। २ खेतो मे पानी ले जाने की नाली।

गुल-अजायब—पु० [फा० गुल+अ० अजायब=अजीब का बहु०] १. एक प्रकार का फूलदार पौधा। २. इस पौधे का फूल।

गुल-अब्बास—पु० [फा० गुल+अ० अब्बास] १ एक प्रकार का बरसाती पौधा। २. इस पौधे का पीले या लाल रग का फूल।

गुल-अब्बासी—वि० [फा० गुल+अ० अब्बास+ई (प्रत्य०)] गुल-अब्बास के रंग का।
पु० एक प्रकार का रग जो हलका कालापन लिये हुए पीला या लाल होता है।

गुल-अशर्फी—पु० [फा०] १. एक प्रकार का पौधा। २ उस पौधे का फूल जो पीला होता है।

गुलउरा†—पु०=गुलौर।

गुल-औरंग—पु० [फा०] एक प्रकार का गेंदा और उसका फूल।

गुलकंद—पु० [फा०] चीनी या मिसरी मे मिलाकर और धूप अथवा चाँदनी मे रखकर पकाई हुई गुलाब की पत्तियाँ जो प्राय. रेचक होती हैं और औषध के रूप मे खाई जाती हैं।

गुलकट—पु० [फा० गुल+हिं० काटना] कपडे पर बेल-बूटे छापने का एक प्रकार का ठप्पा। (छीपी)

गुलकार—पुं० [फा०] [भाव० गुलकारी] बेल-बूटे, फूल आदि बनानेवाला कारीगर।

गुलकारी—स्त्री० [फा०] तरह-तरह के बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ बनाने का काम। २. किसी चीज पर बनाये हुए बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ।

गुल-केश—पुं० [फा० गुल+केश] १. मुर्गकेश नामक पौधा। कलगा। २. उक्त पौधे का फूल।

गुलखैरू—पुं० [फा० गुल+खैरू] १ एक प्रकार का पौधा। २. इस पौधे का फूल जो नीले रंग का होता है।

गुलगचिया—स्त्री० दे० 'गिलगिलिया'।

गुलगपाड़ा—पुं० [अ० गुल+हि० गप्प] बहुत से लोगों का एक साथ बोलने तथा हँसने से होनेवाला शब्द। शोर-गुल। हो-हल्ला।

गुलगीर—पुं० [फा०] वह कैंची जिससे दीए आदि की बत्ती का गुल काटा जाता है। गुल काटने की कैंची।

गुलगुल—वि० = गुलगुला।

गुलगुला—वि० [अनु०] [स्त्री० गुलगुली] कोमल। नरम। मुलायम।
पुं० १. गोली के आकार का एक प्रकार का पकवान। २. कनपटी।
†पुं० [?] ऊसर में होनेवाली एक प्रकार की घास।

गुलगुलाना†—स० [हि० गुलगुल] किसी कड़ी और गूदेदार चीज को दबा-दबाकर मुलायम करना।
अ० नरम या मुलायम पड़ना। पिचपिचा होना।

गुलगुलिया—पुं० [?] मदारी, विशेषतः बंदर नचानेवाला मदारी।

गुलगुली—स्त्री० [देश०] पहाड़ी झरनों में रहनेवाली एक प्रकार की काँटेदार बड़ी मछली।

गुलगोथना—वि०=गल-गुथना

गुलचना†—स० [हि० गुलचा] गुलचा मारना। हलकी, चपत लगाना।

गुलचमन—पुं० [फा०] फूलों का बाग।

गुलचला—पुं० [हि० गोला+चलाना] तोप का गोला चलानेवाला। तोपची।

गुलचाँदनी—स्त्री० [फा० गुल+हि० चाँदनी] १. एक प्रकार का पौधा जिसमें फूल लगते हैं। २. इस पौधे का सफेद फूल जो प्रायः रात के समय खिलता है।

गुलचा—पुं० [हि० गाल] १. प्रेमपूर्वक किसी के गाल पर लगाई जानेवाली हलकी चपत। २. कोई छोटी, गोल मुलायम चीज।

गुलचाना†*—स० [हि० गुलचा+ना] १. हलकी चपत लगाना। २. आघात करना।

गुलचिआना—स०=गुलचाना।

गुलची—स्त्री० [?] लकड़ी में गलता बनाने का बढ़इयों का एक औजार।

गुलचीन—पुं० [?] १. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो बारहों महीने फूलता है। २ उक्त वृक्ष का फल जो अन्दर की ओर पीला और बाहर सफेद होता है।

गुल-छर्रा—पुं० [हि० गोली+छर्रा] अनुचित रूप से तथा खूब खुलकर किया जानेवाला आनन्द-मंगल या भोग-विलास।
क्रि० प्र०—उड़ाना।

गुलजलील—पुं० [फा०] असबर्ग का फूल जिससे रेशम रँगा जाता है।

गुलजार—पुं० [फा०] बाग। वाटिका।
वि० १. हरा-भरा। २. सब तरह से भरा-पूरा और सुन्दर। आनंद और शोभा से युक्त। जैसे—घर गुलजार होना। ३. जिसमें खूब चहल-पहल और रौनक हो। जैसे—गुलजार शहर।

गुलझटी—स्त्री० [हि० गोल+झट=जमाव] १ तागों आदि के उलझने से पड़नेवाली गाँठ। २. मन में रहनेवाला द्वेष या वैर-भाव। मन की गाँठ। ३. कपड़े में की सिकुड़न। सिलवट।

गुलझड़ी—स्त्री० = गुलझटी।

गुलझरी—स्त्री०=गुलझटी।

गुलतराश—पुं० [फा०] १ वह जो कपड़े, कागज आदि के टुकड़े काटकर उनके फूल बनाता हो। २. वह माली जो पौधे आदि को काट-छाँटकर उन्हें गमले, घोड़े, हाथी आदि की आकृतियों में लाता हो। ३. वह नौकर जो दीपकों के गुल काटने का काम करता हो। ४. दीए की बत्ती पर का गुल काटने की कैंची। गुलगीर। ५. बढ़इयों, संगतराशों आदि का वह औजार जिससे लकड़ी, पत्थर आदि पर बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ बनाते हैं।

गुलता—पुं० [हि० गोल] मिट्टी की वह छोटी गोली जो गुलेल में रखकर चलाई या छोड़ी जाती है।

गुलतुर्रा—पुं० [फा०] कलगा नाम के पौधे का फूल जो गहरे लाल रंग का होता है। मुर्गकेश। जटाधारी।

गुलथी—स्त्री०=गुलथी।

गुलथी—स्त्री० [हि० गोल+सं० अस्थि] १. किसी गाढ़ी चीज की जमी हुई गाँठ या गुठली। २. माँस की जमी हुई गाँठ। गिल्टी। ३. दे० 'गुत्थी'।

गुलदस्ता—पुं० [फा० गुलदस्त.] १. कई प्रकार के फूलों तथा पत्तियों को विशेष क्रम से सजाकर बाँधा हुआ गुच्छा। २. लाक्षणिक अर्थ में उत्कृष्ट तथा चुनी हुई वस्तुओं का संग्रह या समूह। ३. दे० 'गुलदान'।'

गुल-दाउदी—स्त्री०=गुलदावदी।

गुलदान—पुं० [फा०] गुलदस्ता रखने का पात्र। फूलदान।

गुलदाना—पुं० [फा०] बुँदिया नाम की मिठाई जिसके लड्डू भी बनते हैं।

गुलदार—वि० [फा०] १. (पौधा या वृक्ष) जिसमें फूल लगे हों। २. (कपड़ा, कागज, पत्थर आदि) जिस पर फूल काढ़े, लिखे या खोदे हुए हों।
पुं० १ वह जानवर जिसके शरीर पर फूल के गोल चिह्न हों। २ एक प्रकार का कसीदा।

गुल-दावदी—स्त्री० [फा० गुल+दाऊदी] एक पौधा और उसके फूल जो गुच्छों में लगते हैं।

गुल-दुपहरिया—स्त्री० [फा० गुल+हि० दुपहरिया] १. एक प्रकार का पौधा। २ इस पौधे का सुगंधित फूल जो गहरे लाल रंग का होता है।

गुलदुम—स्त्री० [फा०] बुलबुल।

गुलनरगिस—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की लता।

गुलनार—पुं० [फा०] १. अनार का फूल। २. एक प्रकार का अनार जिसमें सुन्दर फूल ही होते हैं फल नहीं लगते। ३ एक प्रकार का गहरा लाल रंग जो अनार के फूल की तरह का होता है।

गुलपपड़ी—स्त्री० [फा० गुल+हि० पपड़ी] सोहन हलुए की तरह की एक प्रकार की मिठाई।

गुलफानूस—पु० [फा०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो शोभा के लिए बगीचों में लगाया जाता है।

गुल-फाम—वि० [फा०] फूलों के समान रंगवाला, अर्थात् परम सुंदर।

गुलफिरकी—स्त्री० [फा० गुल+हिं० फिरकी] १ एक प्रकार का बड़ा पौधा जिसमें गुलाबी रंग के फूल लगते हैं। २ उक्त पौधे के फूल।

गुलफुँदना—पु० [हिं० गोल+फुँदना] एक प्रकार की घास।

गुलबकावली—स्त्री० [फा० गुल+सं० बकावली] १ हल्दी की जाति का एक पौधा जो प्राय दलदलों या नम जमीन में होता है। २ इस पौधे का लंबोतरा फूल जो कई रंगों का और बहुत सुगंधित होता है। (यह आँखों के रोगों में उपकारी माना जाता है।)

गुलबक्सर—पु० [फा० गुल+देश० बक्सर] ताश के पत्तों में खेले जाने-वाले नकश नामक खेल की एक बाजी।

गुल-बदन—वि० [फा०] जिसके शरीर की रंगत फूल के समान सुंदर हो। पु० एक प्रकार का बहुमूल्य रेशमी धारीदार कपड़ा।

गुलबादला—पु० [फा०] एक प्रकार का पेड़ जिसके रेशों को बटकर रस्से बनाये जाते हैं। ऊदल।

गुलबूटा—पु० [फा० गुल+हिं० बूटा] (किसी चीज पर) खोदे, छापे, बनाये या लिखे हुए फूल, पत्ते, पौधे आदि।

गुलबेल—स्त्री० [फा० गुल+हिं० बेल] एक प्रकार की लता।

गुलमा—पु० [सं० गुल्म] [स्त्री० गुलमी] १ चोट लगने के कारण होने-वाली गोल कड़ी सूजन। २ कीमा भरकर पकाई हुई बकरी की आँत। दुलमा।
†पु० = गुलाम।

गुलमेंहदी—स्त्री० [फा० गुल+हिं० मेंहदी] १ एक प्रकार का छोटा पौधा जिसके तने में कई रंगों के फूल लगते हैं। २ उक्त पौधे के फूल।

गुलमेख—स्त्री० [फा०] वह कील जिसका ऊपरी सिरा फूल के आकार का गोल और चौड़ा होता है। फुलिया।

गुलरेज—पु० [फा०] आतिशबाजी में, वह अनार या फुलझड़ी जिससे कई प्रकार के फूल झड़ते हैं।

गुलरोगन—पु० [फा०+अ०] गुलाब की पत्तियों के योग से बनाया हुआ तेल।

गुललाला—पु० [फा०] १ पोस्ते के पौधे की तरह का एक पौधा। २ इस पौधे का फूल जो गहरे लाल रंग का और बहुत सुन्दर होता है।

गुलशकरी—स्त्री० [फा०] १. चीनी और गुलाब के फूल के योग से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। २. दे० 'गँगेरन' (पक्षी)।

गुलशन—पु० [फा०] वह छोटा बगीचा जिसमें अनेक प्रकार के फूल खिले हों। फुलवारी।

गुलशब्बो—पु० [फा०] १ लहसुन से मिलता-जुलता एक प्रकार का छोटा पौधा। २ इस पौधे के सफेद रंग के सुगंधित फूल जो प्राय रात के समय खिलते हैं। रजनीगंधा। सुगंधराज। ३ रात के समय अँधेरे में खेला जानेवाला एक खेल जिसमें एक दूसरे को चपत लगाते हैं।

गुलसुम—पु० [फा० गुल+हिं० सुमन] सुनारों का एक औजार जिससे वे गहनों पर बेल-बूटे आदि बनाते हैं।

गुलसौसन—पु० [फा०] १ एक प्रकार का पौधा। २ इस पौधे का फूल जो हलके आसमानी रंग का होता है।

गुलहजारा—पु० [फा०] एक प्रकार का गुललाला (पौधा और फूल)।

गुलहयी†—स्त्री० =गुलर्या।

गुलाब—पु० [फा०] १ एक प्रकार का प्रसिद्ध कँटीला पौधा जो कभी-कभी लता के रूप में भी होता है। इसके सुगंधित फूल गुलाबी, लाल, पीले, सफेद आदि अनेक रंगों के होते हैं। २ इस पौधे या लता का फूल जो अनेक रंगों का, बहुत सुन्दर और बहुत सुगंधित होता है। ३ गुलाब-जल।
मुहा०—गुलाब छिड़कना=गुलाब-जल छिड़कना।

गुलाब-चश्म—पु० [फा०] एक प्रकार की चिड़िया जिसके पैर लाल, चोंच काली और बाकी शरीर खैरे रंग का होता है।

गुलाब-छिड़काई—स्त्री० [फा० गुलाब+हिं० छिड़कना] १ विवाह की एक रीति जिसमें वर पक्ष और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे पर गुलाब-जल छिड़कते हैं। २ उक्त रीति के समय मिलनेवाला नेग।

गुलाबजम—पु० [?] एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पत्तियों से एक प्रकार का भूरा रंग निकलता है। सोना-फूल।

गुलाब-जल—पु० [फा०+सं०] गुलाब के फूलों का भभके से उतारा हुआ सुगंधित अरक।

गुलाबजामुन—पु० [फा० गुलाब+हिं० जामुन] १ घी में तली हुई तथा शीरे में भिगोई हुई खोये की एक प्रसिद्ध मिठाई। २ एक प्रकार का फल-दार वृक्ष। ३ उक्त वृक्ष का फल जो बहुत स्वादिष्ट होता है।

गुलाब-तालू—पु० [फा० गुलाब+तालू] वह हाथी, जिसके तालू का रंग गुलाबी हो। (ऐसा हाथी बहुत अच्छा समझा जाता है।)

गुलाबपाश—पु० [फा०] झारी के आकार का एक प्रकार का लम्बा पात्र जिसमें गुलाब-जल आदि भरकर शुभ अवसरों पर लोगों पर छिड़कते हैं।

गुलाबपाशी—स्त्री० [फा०] गुलाब-जल छिड़कने की क्रिया या भाव।

गुलाब-बाड़ी—स्त्री० [फा० गुलाब+हिं० बाड़ी] आनंद-मंगल का वह उत्सव जिसमें आस-पास के स्थान और चीजें गुलाब के फूलों से सजाई गई हों।

गुलाबाँस—पु० =गुल-अब्बास।

गुलाबा—पु० [फा० गुलाब] एक प्रकार का बरतन।

गुलाबी—वि० [फा०] १ गुलाब-संबंधी। गुलाब का। २ गुलाब के रंग का। ३ गुलाब के फूल की तरह का। ४. गुलाब अथवा गुलाब-जल से सुगंधित किया हुआ। ५ बहुत थोड़ा या हलका। जैसे—गुलाबी नशा, गुलाबी सरदी।
पु० गुलाब के फूल की तरह का रंग। (रोज)
स्त्री० १ शराब पीने की प्याली। २ गुलाब की पखड़ियों से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। ३. एक प्रकार की मैना जो ऋतु-भेद के अनुसार अपना रंग बदलती है।

गुलाम—पु० [अ०] १. मोल लिया या खरीदा हुआ नौकर। दास। २ बहुत ही तुच्छ सेवाएँ करनेवाला नौकर। ३ ताश का वह पत्ता जिस पर गुलाम की आकृति बनी रहती है। ४ गंजीफे के पत्तों में, एक प्रकार का रंग।

गुलाम-गर्दिश—स्त्री० [अ०+फा०] १. वह छोटी दीवार जो जनान-खाने में अन्दर की ओर सदर दरवाजे के ठीक सामने अथवा ओट या परदे के लिए बनाई जाती है। २ किसी बड़ी कोठी के आस-पास बने हुए वे

छोटे मकान जिनमे नौकर-चाकर रहते है।

गुलाम-चोर—पु० [अ०+हिं०] एक प्रकार का ताश का खेल।

गुलाम-जादा—पु० [अ०+फा०] गुलाम या दास की सन्तान।

गुलाम-माल—पु० [अ०] १ सस्ती या हल्के दरजे की वह चीज जो बहुत दिनो तक काम देती हो। जैसे—मोटा कवल या दरी। २ बहुत थोडे दाम पर खरीदी हुई वढिया चीज।

गुलामी—स्त्री० [अ० गुलाम+ई (प्रत्य०)] १ गुलाम होने की अवस्था या भाव। दासता। २ बहुत ही तुच्छ सेवाएँ। चाकरी। ३ परतन्त्रता। पराधीनता।

वि० गुलाम-सम्वन्धी। गुलाम या उसकी तरह का। जैसे—गुलामी आदत।

गुलाल—पु० [फा० गुल्लाला] एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे होली के दिनो मे हिंदू एक दूसरे पर छिडकते हैं।

गुलाला—पु० [हिं० गुल्ली] महुए के बीज की गिरी या मीगी।

वि० गुली या महुए के वीज से निकाला हुआ।

पु० दे० 'गुल्लाला'।

गुलाली—स्त्री० [हिं० गुलाल+ई० (प्रत्य०)] चित्रकारी मे काम आनेवाला गहरे लाल रग का एक प्रकार का चूर्ण या बुकनी। किरमिजी। (कारमाइन)

गुलिका—स्त्री० [स० गुड+ठन्–इक–टाप्, 'ड' को 'ल'] १ खेलने का छोटा गेंद। २ गोली। ३ गुल्ली।

गुलियाना†—स० [स० गिल=निगलना] बाँस आदि के चोंगे मे भरकर पशुओं को ओषधि आदि पिलाना। ढरका देना।

स० [हिं० गोल] गोले या गोली के रूप मे वनाना या लाना।

गुलिस्ताँ—पु० [फा०] फूलो का वाग। फुलवारी। वाग।

गुली†—स्त्री०=गुल्ली।

गुलुफ†—पु०=गुल्फ।

गुलू—पु० [देश०] १ एक प्रकार का जगली वडा पेड जिसका गोद कतीरा कहलाता है। २ एक प्रकार का वटेर।

स्त्री० एक प्रकार की मछली।

पु० [फा०] १ गरदन। गला। २ कठ-स्वर।

गुलूबंद—पु० [फा०] १ लवी पट्टी के आकार का वना हुआ वह कपडा जो जाडे से वचने के लिए गले मे, कानो तथा सिर पर लपेटा जाता है। २ गले मे पहनने का एक गहना जो लवी पट्टी के आकार का होता है।

गुलूला—पु०=गुलेला।

गुलेंदा—पु० [हिं० गोल] महुए का पका हुआ फल। कोलेंदा।

गुले—पु० [देश०] उत्तरी भारत का एक प्रकार का छोटा पेड़।

गुलेटन—पु० [हिं० गोल] सिकलीगरो का मसाला रगडने का छोटा गोल पत्थर।

गुलेनार—पु०=गुलनार (अनार का फूल)।

गुले राना—पु० [फा० गुल+अ० रअन] १ एक प्रकार का पौधा। २ उक्त पौधे का सुन्दर फूल जो अन्दर की ओर लाल और वाहर पीला होता है।

गुलेल—स्त्री० [फा० गिलूल] एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जिसमे लगी हुई डोरी की सहायता से मिट्टी की छोटी गोलियाँ दूर तक फेंकी जाती है और जिससे छोटी चिडियाँ आदि मारी जाती है।

†पु०=गुरुच।

गुलेलची—पु० [हिं० गुलेल+ची (प्रत्य०)] वह जो गुलेल चलाने मे अभ्यस्त हो। गुलेल चलानेवाला शिकारी।

गुलेला—पु० [फा० गुलूला] १ मिट्टी की वह गोली जिसको गुलेल से फेककर चिडियो का शिकार किया जाता है। २ दे० 'गुलेल'।

गुलैंदा—पु० =गुलेंदा।

गुलोह—स्त्री० [फा० गिलोय] गुरुच।

गुलौर—पु० [स० गुल=गुड+हिं० औरा (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ रस पकाकर गुड वनाया जाता हो।

गुलौरा†—पु० = गुलौर।

गुल्गा—पु० [देश०] जलाशयो के किनारे होनेवाली एक प्रकार की लता।

गुल्फ—पु० [स०√गल् (चुआना)+फक्, उत्व] एडी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म—पु० [स०√गुड् (वेष्टित करना)+मक्, 'ड' को 'ल'] १. ऐसी वनस्पति जिसकी जड या नीचे का भाग गोल वडी गाँठ के रूप मे होता है और जिसमे से कोमल डठलोवाली अनेक शाखाएँ निकलती हैं। जैसे-ईख, वाँस आदि। २ पेट मे होनेवाला एक रोग जिसमे वायु के कारण गाँठ-सी पड जाती या गोला-सा वँध जाता है। ३. रोग के रूप मे शरीर के ऊपर वननेवाली किसी प्रकार की गाँठ। ४. प्राचीन भारत मे, सेना की वह टुकड़ी जिसमे ९ रथ, ९ हाथी, २७ घोडे और ४५ पैदल सैनिक होते थे। ५ किला। दुर्ग।

गुल्म-वात—पु० [व० स०] तिल्ली या प्लीहा मे होनेवाला एक रोग।

गुल्म-शूल—पु० [व० स०] पेट मे होनेवाली वह पीडा जो अन्दर गुल्म रोग होने के कारण होती है।

गुल्मी (ल्मिन्)—वि० [स० गुल्म+इनि] [स्त्री० गुल्मिनी] १ गुल्म या गाँठ के रूप मे होनेवाला। २ गुल्म रोग से पीडित।

स्त्री० [स० गुल्म+अच्—ङीप्] १ पेडो या पौधो का झुरमुट। झाडी। २ इलायची का पेड। ३. आँवले का पेड। ४. खेमा। तवू।

गुल्मोदर—पु० [स० गुल्म-उदर, मध्य० स०] दे० 'गुल्मवात'। (रोग)

गुल्लक—स्त्री०=गोलक।

गुल्लर†—पु० =गूलर।

गुल्ला—पु० [अ० गुल या हिन्दी हल्ला का अनु०] शोर। हल्ला। जैसे—हल्ला-गुल्ला।

†पु० [स० गुलिक] १. ईख आदि का कटा हुआ छोटा टुकडा। गँडेरी। २ कालीन, दरी आदि बुनने के करघो मे लगनेवाला वाँस का टुकड़ा। ३ लकडी का कोई वड़ा टुकडा। वडी गुल्ली। ४. रूई ओटने की चरखी मे लोहे का वह छड जो उसके खूँटे को इधर-उधर हिलने नही देता। ५ गोटा, पट्ठा, आदि वुननेवालो का एक प्रकार का मोटा डोरा।

पु० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पहाडी पेड जिसके हीर की लकडी सुगधित, हल्की और भूरे रग की होती है। इसे 'सराय' भी कहते है।

†पु० १ =गुलेला। २ रस-गुल्ला। (वँगला मिठाई)

गुल्लाला—पु० [फा० गुलेलाल] गुललाला नामक पौधा और उसका फूल।

वि० उक्त फूल की तरह का गहरा लाल।
पु० एक प्रकार का गहरा लाल रग। उदा०—जेहि चपक बरनी करै, गुल्लाला रग नैन।—विहारी।

गुल्ली—स्त्री० [स० गुलिका=गुठली] १ धातु, लकडी आदि का कोई गोलाकार, छोटा लबोतरा टुकडा। जैसे—डडे के साथ खेलने की गुल्ली, छापेखाने मे फरमा कसने की गुल्ली, हथियारोपर का मोरचा खुरचने की गुल्ली। २ उक्त आकार और रूप मे ढाला हुआ धातु का टुकडा। पासा। जैसे—चाँदी या सोने की गुल्ली। ३ मक्के की वह बाल जिसके दाने झाड लिये गये हो। खुखडी। ४ केवडे का फूल जो गोलाकार लवा होता है। ५ ऊख या गन्ने के कटे हुए टुकडे। गँडेरी। ६ मधुमक्खी के छत्ते का वह भाग जिसमे शहद इकट्ठा होता है। ७ फल के अन्दर की गुठली।
क्रि० प्र०—बँधना।
मुहा०—गुल्ली बँधना=युवावस्था मे शरीर के अन्दर वीर्य का एकत्र होकर पुष्ट होना।
८ एक प्रकार की मैना (पक्षी) जिसे 'गगा मैना' भी कहते हैं।

गुल्ली-डडा—पु० [हि०] १. हाथ भर लवा डडा और चार-छ अगुल गोल लबोतरी गुल्ली, जिसमे बच्चे खेलते है। २ लडको का एक प्रसिद्ध खेल जिसमे काठ की उक्त गुल्ली डडे से मारकर दूर फेकी जाती है।
मुहा०—गुल्ली-डडा खेलना=खेल-कूद अथवा इधर-उधर के फालतू कामो मे समय नष्ट करना।

गुवा*—पु० दे० 'गुवाक'।

गुवाक—पु० [स०√गु (अव्यक्त शब्द करना)+आक, नि० सिद्धि] सुपारी, विशेपत चिकनी सुपारी।

गुवार†—पु० = ग्वाल।

गुवारपाठा—पु० =ग्वारपाठा।

गुवाल*—पु० =ग्वाल।

गुविंद*—पु० = गोविन्द।

गुष्टि—स्त्री०=गोष्ठी।

गुसल—पु० [अ० गुस्ल] नहाने की क्रिया। स्नान। सारे शरीर से नहाना।

गुसलखाना—पु० [अ० गुस्ल+फा० खान] नहाने-धोने का कमरा या कोठरी। स्नानागार।

गुसाँई—पु०=गोसाँई या गोस्वामी।

गुसा*—पु० = गुस्सा।

गुसैयाँ—पु० =गोसाई।

गुसैल—वि०=गुस्सैल।

गुस्ताख—वि० [फा०] [भाव० गुस्ताखी] (व्यक्ति) जो वडो की आज्ञा को शिरोधार्य न करता हो और उन्हे अनुचित रूप से तथा अशिष्टतापूर्वक उत्तर देता हो। उद्दड। बे-अदव।

गुस्ताखी—स्त्री० [फा०] १ गुस्ताख होने की अवस्था या भाव। धृष्टता। उद्दडता। २ उद्दण्डता का परिचायक कोई कार्य।

गुस्ल—पु०=गुसल।

गुस्लखाना—पु०=गुसलखाना।

गुस्सा—पु० [अ०] १. किसी के द्वारा कोई अनुचित कार्य, विरोध या हानि होने पर मन मे होनेवाली वह उग्र भावना जिसमे उस वस्तु या व्यक्ति को तोडने-फोडने, मारने-पीटने या उसकी किसी प्रकार की हानि करने की इच्छा होती है। क्रोध।
विशेष—इसमे मनुष्य स्वय अपने पर नियत्रण खो वैठता है और कभी-कभी अपनी भी हानि कर बैठता है।
मुहा०—(किसी पर) गुस्सा उतारना=किसी को अपने क्रोध की प्रतिक्रिया का पात्र बनाना। (किसी पर) गुस्सा चढना=किसी पर क्रोध आना। गुस्सा निकालना=क्रुद्ध होने पर हानि करनेवाले की हानि करना। गुस्सा पीना=गुस्सा आने पर भी किसी से कुछ न कहना।

गुस्सैल—वि० [अ० गुस्सा+हि० ऐल (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जिसे स्वभावत. बात-बात पर गुस्सा आता हो। क्रोधी।

गुह—पु०[स०√गुह् (रक्षा करना, छिपाना)+क] १. विष्णु। २.कार्तिकेय। ३ गौतम बुद्ध। ४ घोडा। ५ मेढा। ६ कदरा। गुफा। ७ हृदय। ८ माया। ९ शालिपर्णी। सरिवन। १० निपाद जाति का एक नायक जो राम को वनवास के समय मिला था और जिसने उन्हे शृगवेरपुर मे गगा के पार उतारा था। ११. एक प्रकार के बगाली कायस्थो का अल्ल या उपाधि।
पु० [स० गूथ=मैल] गुदा मार्ग से निकलनेवाला मल। पाखाना।
मुहा०—(किसी पर) गुह उछालना=किसी के निंदनीय कार्यो का प्रचार करना। गुह उठाना= (क) पाखाना साफ करना। (ख) तुच्छ से तुच्छ सेवा करना। गुह खाना=वहुत ही बुरा या अनुचित काम करना। (किसी का) गुह-मूत करना=वच्चे का पालन-पोषण करना। (किसी को) गुह में घसीटना=वहुत अधिक अपमान या दुर्दशा करना। गुह मे ढेला फेंकना=नीच के साथ ऐसा व्यवहार करना जिसमे अपना ही अहित या बुराई होती हो। (किसी को) गुह मे नहलाना=वहुत अधिक दुर्दशा करना।
वि० [स० गुह्य] रहस्यमय। गूढ। उदा०—बैंधि वार मार हवै गो ग्यान गुह गाँसी।—मीराँ।

गुहज्य†—वि० [स० गुह्य] छिपा हुआ। गुप्त। उदा०—गुहज्य नाम अमीरस मीठाजो पीजै सो पावै।—गोरखनाथ।

गुहडा†—पु० [देश०] चौपायो का खुरपका नामक रोग।

गुहना*—स०=गूथना (पिरोना)।

गुहराना†—स०=गोहराना (पुकारना)।

गुहवाना†—स० [हि० गुहना का प्रे०] गुहने या गूँथने का काम कराना। गुँथवाना।

गुह-षष्ठी—स्त्री० [मध्य० स०] अगहन सुदी छठ जो कार्तिकेय की जन्म-तिथि कही गई है।

गुहांजनी—स्त्री० [स० गुह्य-अजन] आँख की पलक पर होनेवाली फुसी। बिलनी। अजनहारी।

गुहा—स्त्री० [स० गुह+टाप्] १ गुफा। कदरा। २ जानवरो के रहने की माँद। चुर। ३ चोरो-डाकुओ के छिपकर रहने की जगह। ४ अत करण। हृदय। ५ बुद्धि। ६ शालपर्णी। ७. वह कल्पित मूल स्थान जहाँ से सारी सृष्टि का उद्भव तथा विकास माना गया है। उदा०—किस गहन गुहा से अति अधीर।—प्रसाद।

गुहाई†—स्त्री० [हि० गुहना] गुहने (गूँथने) की क्रिया, भाव या

मजदूरी।

गुहाचर—पु० [स० गुहा√चर् (गति)+ट] ब्रह्म।

गुहाना—स०=गुहवाना।

गुहा-मानव—पु० [स० मध्य० स०] इतिहास पूर्व काल के वे मनुष्य जो पाषाण युग मे पर्वतो आदि की कदराओ मे रहते थे। (केव-मैन)

गुहार—स्त्री०=गोहार।

गुहारना—स० [हिं० गुहार] रक्षा या सहायता के लिए पुकार मचाना। उदा०—दीन प्रजा दु ख पाइ आई नृप-द्वार गुहारति।—रत्ना०।

गुहाल†—स्त्री०=गोशाला।

गुहाशय—पु० [स० गुहा√शी (सोना)+अच्] १ विल या माँद मे रहनेवाला जतु। २ परमात्मा।

गुहिन—पु० [स०√गुह्+इनन्] जगल। वन।

गुहिर†—वि०=गभीर।

गुहेरा—पु० [हिं० गुहना=गूथना] गहने आदि गूथने का काम करनेवाला व्यक्ति। पटवा।

†पु० =गोव (जन्तु)।

गुहेरी†—स्त्री० [स० गौधेरिका] गुहाँजनी (विलनी)।

गुह्य—वि० [स०√गुह्+यत्] १ गुप्त रखने या छिपाये जाने के योग्य। २ (अलौकिक या रहस्यमय वात या वस्तु) जिसका ठीक-ठीक अर्थ या स्वरूप समझना कठिन हो। जिसे जानने या समझने के लिए विशेष आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता हो। (एसोट्रिक) ३. रहस्यमय।

पु० १ छल। कपट। २. भेद। रहस्य। ३ ढोग। ४ शरीर के गुप्त अग। जैसे—गुदा, भग, लिंग आदि। ५ कछुआ। ६ विष्णु। ७. शिव।

गुह्यक—पु० [स०√गुह्+ण्वुल्—अक, पृपो० सिद्धि] किन्नर, गधर्व, यक्ष आदि देवताओ की तरह की एक देव-योनि जो कुबेर की सपत्ति आदि की रक्षा करती है।

गुह्यकेश्वर—पु० [स० गुह्यक-ईश्वर ष० त०] कुबेर।

गुह्य-दीपक—पु० [स० कर्म० स०] जुगनूँ।

गुह्य-द्वार—पु० [स० कर्म० स०] १ मल-द्वार। गुदा। २ चोर-दरवाजा।

गूँ—पु० [फा०] १ रग। जैसे—गुलगूँ=गुलाव के रग का। २ ढग। प्रकार। ३ वर्ग।

गूँगा—वि० [फा० गुँग=जो वोल न सके] [वि० स्त्री० गूँगी] १ (व्यक्ति) जिसकी वाक्-शक्ति ऐसी विकृत हो कि कुछ भी वोल न सके। जैसे—गूँगा लडका। २ जिसमे मनुष्य की तरह शब्दो का उच्चारण करने की शक्ति न हो। जैसे—पशु-पक्षी गूँगे होते है।

पु० वह जो वोल न सकता हो।

पद—गूँगे का गुड=ऐसी स्थिति जिसमे उसी प्रकार अनुभूति का वर्णन न हो सके, जिस प्रकार गूँगा व्यक्ति गुड खाने पर भी उसकी मिठास का वर्णन नही कर सकता। **गूँगे का सपना**=गूँगे का गुड। **गूँगी पहेली**=वह पहेली जो मुँह से न कही जाय, इशारो मे कही जाय।

मुहा०—गूँगे का गुड खाना=कोई ऐसा अनुभव करना जिसका वर्णन न हो सकता हो।

गूँगी—स्त्री० [हिं० गूँगा] पैर मे पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

गूँच—स्त्री० [स० गुञ्ज] गुजा। घुँघची।

गूँछ—स्त्री० [देश०] गहरे पानी मे रहनेवाली एक प्रकार की वडी मछली वूँछ।

गूँज—स्त्री० [स० गुज] १. भौरो का गुनगुन शब्द करना। गुजन। २ मक्खियो के भिनभिनाने का शब्द। ३ किसी तल या सतह से परावर्तित होकर सुनाई पडनेवाला शब्द या ध्वनि। प्रतिध्वनि। ४ किसी स्थान मे होनेवाली किसी वात की विस्तृत चर्चा। धूम। जैसे—शहर मे इस वात की गूँज है। ५. किसी प्रकार के कार्य की प्रतिक्रिया। (ईको) ६ किसी स्थान पर किसी विशिष्ट वात के होने की अधिक या विस्तृत चर्चा। जैसे—आज-कल शहर मे इस वात की बहुत गूँज है। ७ लट्टू मे नीचे की ओर जडी हुई वह लोहे की कील जिस पर लट्टू घूमता है। ८ नथ, वाली आदि मे सुन्दरता के लिए लपेटा हुआ छोटा पतला तार।

गूँजना—अ० [स० गुजन] १. भौरो का गुजारना। गुजन करना। २ मक्खियो का भिनभिनाना। ३ किसी शब्द का किसी तल से टकरा कर फिर से सुनाई पडना। प्रतिध्वनि होना। ४ (किसी चर्चा का) किसी स्थान मे फैलना।

गूँझ—स्त्री०=गूँज।

गूँठ—पु० [हिं० गोठा=छोटा, नाटा] एक प्रकार का छोटे कद का पहाडी टट्टू।

गूँथना†—स० =गूथना।

गूँदना—स० =गूँधना।

गूँदा†—पु०=गोदा।

गूँदी—स्त्री० [?] गँधेला नाम का पेड जिसकी जड, छाल और पत्तियाँ औपध के काम मे आती है।

गूँधना—स० [स० गुध=क्रीडा] १. किसी प्रकार के चूर्ण मे थोडा-थोडा पानी (अथवा कोई तरल पदार्थ) मिलाते तथा हाथ से मलते हुए उसे गाढे अवलेह के रूप मे लाना। माँडना। सानना। जैसे—आटा गूँधना। २ दे० 'गूथना'।

गू—पु० =गुह (मल)।

गूगल, गूगुल—पु० =गुग्गुल।

गूजर—पु० [स० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] १ गुर्जर देश मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति। २ अहीर। ग्वाला। ३. क्षत्रियो का एक भेद।

गूजरी—स्त्री० [स० गुर्जरी] १ गूजर जाति की स्त्री। २ ग्वालिन। ३ पैरो मे पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना। ४ गुर्जरी नाम की रागिनी।

गूजी†—स्त्री० [हिं० गुजुवा की स्त्री०] काले रग का एक प्रकार का छोटा कीडा।

गूझना†—अ० =छिपना।

स०=छिपाना।

गूझा—पु० [स० गुह्यक, प्रा० गुज्झा] [स्त्री० गुझिया] १ वडी गुझिया (पकवान)। २ मलद्वार। गुदा।

†पु० =गुज्झा (रेशा)।

गूटी—स्त्री० [देश०] १ लीची का पेड लगाने का एक ढग या प्रकार। २ चौपायो का एक रोग।

गूडी—स्त्री० [स० गुहा वा गुह्य] अनाज की वाली मे का वह छोटा गड्ढा जिसमे से दाना निकाल लिया गया हो।

गूढ़—वि० [स०√गुह् (छिपाना) +क्त] १ छिपा हुआ। गुप्त। जैसे—गूढपाद। २ (क्लिष्ट या पेचीदी वात) जिसका अभिप्राय या आशय सहज मे लोग न समझ सकते हो। अर्थ-गर्भित। जटिल। दुरूह। जैसे—गूढ विषय। ३ जिसमे कोई विशेष अभिप्राय छिपा हो। गभीर।
पु० १ स्मृति मे पाँच प्रकार के साक्षियो मे से वह जिसे अर्थी ने प्रत्यर्थी की वात वतला या सुना दी हो। २ गूढोक्ति नामक अलकार। (साहित्य)

गूढचर—पु०=गुप्तचर। उदा०—गूढचर इन्द्रिय अगूढ चोर मारि दै।—देव।
वि० छिपकर घूमने-फिरनेवाला।

गूढ-चारी (रिन्)—वि०,पु० [स० गूढ√चर् (गति)+णिनि, उप० स०] =गूढचर।

गूढज—पु० [स० गूढ√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] वह पुत्र जिसे पति के घर रहते हुए भी पत्नी ने अपने किसी सवर्ण जार से पैदा किया हो।

गूढ़-जात—पु० [प० त०] =गूढज।

गूढ़-जीवी (विन्)—पु० [स० गूढ√जीव् (जीना)+णिनि, उप० स०] वह जिसकी जीविका के साधन का किसी को पता न चले।

गूढ़ता—स्त्री० [स० गूढ+तल्—टाप्] गूढ होने की अवस्था या भाव।

गूढत्व—पु० [स० गूढ+त्व] गूढता।

गूढ़-नीड़—पु० [व० स०] खजन पक्षी।

गूढ-पत्र—पु० [व० स०] १ करील वृक्ष। २. अकोट वृक्ष। ३ [कर्म० स०] मतदान-पत्र। (वैलट)

गूढ-पथ—पु० [कर्म० स०] १ छिपा हुआ रास्ता। जैसे—सुरग। २ [व० स०] अत करण या अतरात्मा।

गूढ़-पद, गूढ़-पाद—पु० [व० स०] सर्प। साँप।

गूढ-पुरुष—पु० [कर्म० स०] जासूस। भदिया।

गूढ-पुष्प—पु० [व० स०] १ पीपल, वड, गूलर, पाकर इत्यादि वृक्ष जिनमे फूल नही होते अथवा नही दिखाई देते। २. मौलसिरी।

गूढ-भाषित—पु० [कर्म० स०] ऐसे शब्दो मे कही हुई वात जो सव की समझ मे न आती हो।

गूढ़-मंडप—पु० [कर्म० स०] देव मदिर के अन्दर का वरामदा या दालान।

गूढ-मार्ग—पु० [कर्म० स०] सुरग।

गूढ-मैथुन—पु० [व० स०] काक। कौआ।

गूढ़-लेख—पु० [कर्म० स०] लिखने या सवाद भेजने की गुप्त लिपि-प्रणाली। (साइफर)

गूढ-व्यंग्य—पु० [कर्म० स०] काव्य मे एक प्रकार की लक्षणा जिसमे व्यग्य का अभिप्राय जल्दी सव की समझ मे नही आ सकता।

गूढ-सहिता—स्त्री० [प० त०] वह सग्रह जिसमे गूढ-लेख के नियमो, सकेतो सिद्धान्तो आदि का विवेचन हो। (साइफर कोड)

गूढ़ांग—पु० [गूढ-अग, कर्म० स०] १ इन्द्रिय, गुदा आदि गुप्त अग। २ [व० स०] कछुआ।

गूढ़ा†—स्त्री० [स० गूढ] १ ऐसी वात जिसका अर्थ जल्दी सव की समझ मे न आवे। २ पहेली। (राज०)

गूढ़ाशय—पु० [गूढ-आशय, कर्म० स०] =गूढ-पुरुष (जासूस)।

गूढोक्ति—स्त्री० [गूढ-उक्ति, कर्म० स०] १ गूढ कथन या वात। २ साहित्य मे एक अलकार जिसमे कोई व्यग्यपूर्ण वात किसी दूसरे आदमी को सुनाने के लिए किसी उपस्थित आदमी से कही जाती है।

गूढोत्तर—पु० [गूढ-उत्तर कर्म० स०] साहित्य मे उत्तर अलकार का एक भेद जिसमे किसी वात का दिया जानेवाला उत्तर अपने मे कोई और गूढ अर्थ छिपाये होता है।

गूथना—स० [स० ग्रथन] १ डोरे, तागे आदि के रूप की चीजो को समेट कर सुदरतापूर्वक आपस मे वाँधना। जैसे—चोटी या सिर के वाल गूथना। २ विखरी हुई अथवा कई चीजो को पिरोकर एक मे मिलाना। जैसे—फूलो या मोतियों की माला गूथना। ३ आपस मे जोडने या मिलाने के लिए मोटे-मोटे टाँके लगाना। गाँथना। जैसे—गुदडीगूथना।

गूद—स्त्री० [स० गूढ या हि० गोदना] १ गड्ढा। गर्त्त। २ कम गहरा चिह्न या रेखा।
†पु० = गूदा।

गूदड़—पु० [हिं० गूथना] [स्त्री० गुदडी] जीर्ण-शीर्ण या फटा-पुराना कपडा जो काम मे आने के योग्य न रह गया हो।
पद—**गूदड़शाह वा गूदडसाँई**=फटे-पुराने कपडे सीकर पहननेवाला साधु।

गूदर†—पु० = गूदड।

गूदा—पु० [स० गुप्त, प्रा० गुत्त] [स्त्री० गूदी] १ फल आदि के अन्दर का कोमल और गुदगुदा सार भाग। जैसे—आम, इमली या नारगी का गूदा। २ किसी चीज के अन्दर का गीला गाढा सार भाग। मज्जा। (पिथ्) ३ किसी चीज को कूटकर तैयार किया हुआ उसका कुछ गीला पिंड या रूप। (पल्प) ४ खोपडी का सार भाग। भेजा। ५ गिरी। मीगी।

गूदेदार—वि० [हिं० गूदा+फा० दार] जिसके अन्दर गूदा रहता हो।

गून—स्त्री० [स० गुण=रस्सी] १ नाव खीचने की रस्सी। २ रीहा नामक घास।

गूना—पु० [फा० गून =रंग] एक प्रकार का सुनहला रग जो धातु की वनी चीजो पर चढाया जाता है।

गूनी*—स्त्री०=गोनी।

गूमट†—पु० = गुम्मट।

गूमडा—पु०= गुमडा या गुम्मड।

गूमना†—स० [?] १. गूंधना। माँडना। सानना। २ कुचलना। रौदना।

गूमा—पु० [स० कुभा, गुभा] एक प्रकार का पौधा जिसकी गाँठो पर सफेद फूलो के गुच्छे लगते हैं। कुभा। द्रोणपुष्पी।

गूरा†—पु०=गुल्ला।

गूल—पु०=गुल्म (सेना का)।

गूलर—पु० [स० उदुवर] १ पीपल, वरगद आदि की जाति का एक वडा पेड जिसकी डालो आदि से एक प्रकार का दूध निकलता है और जिसका फल ओषधि, तरकारी आदि के रूप मे खाया जाता है। उदुवर। २ उक्त वृक्ष का फल।

पद—गूलर का फूल=(क) दुर्लभ वस्तु। (ख) असभव बात। (गूलर मे फूल होता ही नही, इसी आधार पर यह पद बना है।)

मुहा०—गूलर का पेट फड़वाना=गुप्त या दबी हुई बात क. प्रकट कराना। भेद खुलवाना।

†पु० = मेढक।

गूलर-कबाब—पु० [हिं० गूलर+फा० कबाब] एक प्रकार का कबाब जो उबले और पिसे हुए मास से गूलर के फल के आकार का होता या गोलियों के रूप मे बनाया जाता है।

गूलू—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष। पुड़्क।

गूवाक—पु०=गुवाक।

गूपणा—स्त्री० [स० गु√उप् (जलाना)+युच्—अन, टाप्] मोर की पूँछ पर बना हुआ अर्द्धचन्द्र चिह्न। मोर-चद्रिका।

गूह—पु० [स० गूथ] गुह। मल।

मुहा० के लिए दे० 'गुह' के मुहा०।

गूहन—पु० [स०√गूह+ल्युट्—अन] छिपाने का कार्य।

गूहा छीछी—स्त्री० [हिं० गूह+छीछी] ऐसा गदा झगडा या लडाई जिससे देखने-सुननेवालो तक के मन मे घृणा उत्पन्न होती हो।

गृंजन—पु० [स०√गृञ्ज् (शब्द करना)+ल्युट्—अन] १ एक प्रकार का लाल रग का लहसुन। । २ शलजम।

गृत्स—वि० [स०√गृध् (चाहना)+स] चतुर तथा योग्य (व्यक्ति)। मेधावी।

गृधु—वि० [स०√गृध्+कु] कामुक।

पु० कामदेव।

गृध्य—पु० [स०√गृध्+क्यप्] १ इच्छा। कामना। २ लालच। लोभ।

गृध्र—पु० [स०√गृध्+क्रन्] [स्त्री० गृध्री] १ गिद्ध नाम का प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। २ जटायु।

वि० लालची। लोभी।

गृध्र-कूट—पु० [ब० स०] राजगृह के पास का एक पर्वत।

गृध्र-व्यूह—पु० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना जो गिद्ध के आकार की होती थी।

गृध्रसी—स्त्री० [स० गृध्र√सो (नष्ट करना)+क-ङीप्] एक वातरोग जिसमे कमर, कूल्हों और टाँगो मे दर्द होता है। (स्याटिका)

विशेष—गृध्रस्या एक नाडी का नाम है। कहते है कि उसी मे वात का प्रकोप बढने से यह रोग होता है।

गृध्रस्या—स्त्री० [स० गृध्रसी+यत्—टाप्?] एक वात-नाडी।

गृध्रिका—स्त्री० [स० गृध्र+ङीप्+कन्—टाप्, ह्रस्व] कश्यप की पुत्री जो गिद्धो की आदि माता थी। (पुराण)

गृम†—स्त्री० [स० ग्रीवा] गला। उदा०—फूटल वलय टूटल गृम-हार। —विद्यापति।

गृष्टि—स्त्री० [स०√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्तिच्, पृषो० सिद्धि] १ वह गाय, जिसे एक ही बच्चा हुआ हो। २ वह स्त्री जिसे एक ही सन्तान हुई हो।

गृह—पु० [स०√ग्रह्+क] १ ईंट, पत्थर, चूने, सीमेंट आदि से बना हुआ वह निवास-स्थान जहाँ कोई व्यक्ति (अथवा परिवार) रहता हो। घर। मकान। जैसे—राजगृह। २ विस्तृत क्षेत्र मे, वह क्षेत्र, शहर या राज्य जिसमे कोई रहता हो। ३. राज्य या राष्ट्र के भीतरी कामो का क्षेत्र। जैसे—गृह-मत्री।

वि० १ (यौ० के आरम्भ मे) घर मे रखकर पाला हुआ जैसे—गृह-कपोत, गृह-दास। २ गृह या घर से सबध रखनेवाला। जैसे—गृह-शास्त्र। ३ देश के भीतरी भाग से सबध रखनेवाला। जैसे—गृह-युद्ध।

गृह-उद्योग—पु० [मध्य० स०] जीविका उपार्जन करने के लिए घर मे बैठकर किये जानेवाले रचनात्मक कार्य। जैसे—करघे से कपडा बुनना, बाँस की खपचियो से टोकरियाँ बनाना, रस्सी बटना आदि आदि।

गृह-कन्या—स्त्री० [प० त०] घीकुवार। ग्वारपाठा।

गृह-कर्मन्—पु० [प० त०] घर-गृहस्थी के काम-धन्धे।

गृह-कलह—पु० [स० त०] १ घर के लोगो मे आपस मे होनेवाला झगडा या लडाई। २ किसी देश या राष्ट्र के निवासियो मे आपस मे होनेवाला झगडा या लडाई।

गृह-कार्य—पु० [प० त०] घर-गृहस्थी के काम-धन्धे।

गृह-कुमारी—स्त्री०=गृहकन्या।

गृह-गोधा—स्त्री० [प० त०] छिपकली।

गृह-गोधिका—स्त्री० [प० त०] छिपकली।

गृहज—वि० [स० गृह√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] जो घर मे उत्पन्न हुआ हो।

पु० घर में पैदा होनेवाला दास। गोला।

गृह-जन—पु० [प० त०] घर मे रहनेवाले आपस के सब लोग। कुटुबी।

गृह-जात—वि० [स० त०] जो घर मे उत्पन्न हुआ हो।

पु० सात प्रकार के दासो मे से वह जो घर मे रखे हुए दास या दासी से उत्पन्न हुआ हो।

गृह-ज्ञानी (निन्)—वि० [स० त०] जिसका सारा ज्ञान घर के अन्दर ही सीमित हो। बाहर का कुछ भी हाल न जाननेवाला। कूप-मडूक।

गृहणी—स्त्री० [स० गृह√नी (ले जाना)+क्विप्, णत्व] १ काँजी। २ प्याज।

†स्त्री० दे० 'गृहिणी'।

गृह-त्याग—पु० [प० त०] विरक्त होकर और घर छोडकर कही निकल जाना।

गृहत्यागी (गिन्)—वि० [स०गृहत्याग+इनि] जो घर-बार छोडकर और विरक्त होकर गृहस्थाश्रम से निकल आया हो।

गृह-दाह—पु० [प० त०] १ घर मे आग लगाने या भस्म करने की क्रिया या भाव। २ ऐसा लडाई-झगडा जिससे घर का सब-कुछ नष्ट हो जाय।

गृह-दीर्घिका—स्त्री० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे धवल-गृह के आस-पास की नहर जो राजाओ और रानियो के जल-विहार के लिए बनी होती थी।

गृह-देवता—पु० [प० त०] घर के भिन्न-भिन्न कार्यों के देवता जिनकी सख्या ४५ कही गई है।

गृह-देवी—स्त्री० [प० त०] घर की स्वामिनी। गृहिणी।

गृह-नीड—पु० [ब० स०] गौरैया (पक्षी)।

गृहप—पु० [स० गृह√पा (रक्षा करना)+क, उप० स०] १. घर

का स्वामी। गृहपति। २ चौकीदार। पहरेदार। ३ अग्नि। आग। ४ कुत्ता।

गृह-पति—पु० [ष० त०] [स्त्री० गृहपत्नी] १ वह व्यक्ति जिसके पास घर या मकान हो। घर या मकान का मालिक। २ किसी घर अर्थात् घर मे रहनेवाले परिवार का मुख्य व्यक्ति। ३. अग्नि। आग। ४ कुत्ता।

गृह-पत्नी—स्त्री० [ष० त०] =गृहिणी।

गृह-पशु—पु० [ष० त०] १ घर मे पाला हुआ पशु। पालतू जानवर। २ कुत्ता।

गृह-पाल—पु० [स० गृह√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अण्, उप० स०] १ घर की रखवाली करनेवाला चौकीदार। २ कुत्ता।

गृह-पालित—भू० कृ० [स० त०] जो घर मे रखकर पाला-पोसा गया हो। जैसे—गृह-पालित दास या पशु।

गृह-प्रवेश—पु० [स० त०] १ नये बनवाये या खरीदे हुए मकान मे, विधिपूर्वक पूजन आदि करने के उपरात, पहले-पहल बाल-बच्चो सहित उसमे प्रवेश करना। २ उक्त अवसर पर होनेवाला समारोह और धार्मिक कृत्य। वास्तु-पूजन।

गृह-बलि—स्त्री० [मध्य० स०] घर मे ही नित्य दी जानेवाली बलि। वैश्व-देव।

गृह-भूमि—स्त्री० [ष० त० या मध्य० स०] वह भूमि जिस पर मकान बना हो या जो मकान बनाने के लिए उपयुक्त हो। (कृषि भूमि से भिन्न)

गृह-भेद—पु० [ष० त०] घर के लोगो का आपस मे लड-झगडकर एक दूसरे से अलग होना।

गृह-भेदी—(दिन्)—वि० [स० गृह√भिद् (फाडना)+णिनि, उप० स०] घर के लोगो मे आपस मे लडाई-झगडा करानेवाला।

गृह-मत्रालय—पु० [ष० त०] १. वह मत्रालय जिसमे किसी राज्य या राष्ट्र के गृह-सबधी कार्यो की देख-भाल करनेवाले लोग काम करते है। गृहमत्री का कार्यालय। (होममिनिस्टरी) २ उक्त मत्रालय का अधिकारी वर्ग।

गृह-मंत्री (त्रिन्)—पु० [ष० त०] राज्य या राष्ट्र के भीतरी मामलो (तथा शाति, रक्षा आदि) की व्यवस्था करनेवाला मत्री। (होम मिनिस्टर)

गृह-मणि—पु० [ष० त०] दीपक। दीया।

गृह-माचिका—स्त्री० [स० गृह√मच् (छिपकर रहना)+ण्वुल्—अक +टाप्, इत्व, उप० स०] चमगादड।

गृह-मृग—पु० [स० त०] कुत्ता।

गृह-मेध—पु० [ष० त०] पच महायज्ञ।

गृह-मेधी (धिन्)—पु० [स० गृहमेध+इनि] १ गृह-मेध करनेवाला। २ गृहस्थ।

गृह-युद्ध—पु० [स० त०] १ घर मे ही आपस के लोगो मे होनेवाला लडाई-झगडा। २ किसी एक ही राज्य या राष्ट्र के विभिन्न प्रदेशो के निवासियो या राजनीतिक दलो का आपस मे होनेवाला युद्ध। (सिविल वार)

गृह-रक्षक—पु० [ष० त०] १ एक प्रकार का अर्द्ध सैनिक सघटन जो स्वतत्र भारत मे स्थानिक शाति और सुरक्षा के उद्देश्य से बनाया गया है। २. इस सघटन का कोई अधिकारी या सदस्य। (होमगार्ड)

गृह-लक्ष्मी—स्त्री० [ष० त०] घर की स्वामिनी, सती और सुशीला स्त्री।

गृह-वाटिका—स्त्री० [मध्य० स०] घर मे ही लगाया हुआ छोटा बाग।

गृह-वासी (सिन्)—वि० [स० गृह√वस् (बसना)+णिनि, उप० स०] घर बनाकर उसमे रहनेवाला।
पु० गृहस्थ।

गृह-वित्त—पु० [ब० स०] गृह-स्वामी।

गृह-सचिव—पु० [ष० त०] गृह-मत्रालय का प्रधान शासनिक अधिकारी। (होम सेक्रेटरी)

गृह-सज्जा—स्त्री० [ष० त०] घर की सजावट और उसकी सामग्री।

गृहस्त†—पु०=गृहस्थ।

गृहस्थ—पु० [स० गृह√स्था (ठहरना)+क] १ वह जो घर-बार बनाकर उसमे अपने परिवार और बाल-बच्चो के साथ रहता हो। पत्नी और बाल-बच्चोवाला आदमी। घरबारी। २ हिंदू धर्म-शास्त्रो के अनुसार वह जो ब्रह्मचर्य का पालन समाप्त करके और विवाह करके दूसरे आश्रम मे प्रविष्ट हुआ हो। ज्येष्ठाश्रमी। ३ खेती-बारी आदि से जीविका चलानेवाला व्यक्ति। ४ जुलाहा।

गृहस्थाश्रम—पु० [स० गृहस्थ-आश्रम, ष० त०] हिन्दू धर्मशास्त्रो के अनुसार चार आश्रमो मे से दूसरा आश्रम जिसमे लोग ब्रह्मचर्य के उपरान्त विवाह करके प्रवेश करते थे और स्त्री-पुत्र आदि के साथ रहते और उनका पालन करते थे।

गृहस्थाश्रमी (मिन्)—पु० [स० गृहस्थाश्रम+इनि] गृहस्थाश्रम मे रहनेवाला व्यक्ति।

गृहस्थी—स्त्री० [स० गृहस्थ+हि० ई० (प्रत्य०)] १ प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि से उसका घर, परिवार के सब लोग और उसमे रहनेवाली जीवन-निर्वाह की सब सामग्री। घर-बार और बाल-बच्चे। २. घर का सब सामान। माल-असबाब। जैसे—इतनी बड़ी गृहस्थी उठाकर कही ले जाना सहज नही है। ३ खेती-बारी और उसमे सबध रखनेवाले काम-धधे। ४ गृहस्थाश्रम। ५ खेती-बारी।

गृह-स्वामी (मिन्)—पु० [ष० त०] [स्त्री० गृह-स्वामिनी] घर का मालिक जो गृहस्थी के सब लोगो का पालन-पोषण और देख-रेख करता हो।

गृहाक्ष—पु० [स० गृह-अक्षि, ष० त० टच् प्रत्य०] घर मे बनी हुई खिडकी या झरोखा।

गृहागत—भू० कृ० [स० गृह-आगत, द्वि० त०] घर मे आया हुआ।
पु० अतिथि। मेहमान।

गृहाराम—पु० [स० गृह-आराम, मध्य० स०] घर के चारो ओर या सामने लगाया हुआ बाग।

गृहाश्रम—पु० [स० गृह-आश्रम, कर्म० स०] =गृहस्थाश्रम।

गृहाश्रमी (मिन्)—पु० [स० गृहाश्रम+इनि] =गृहस्थाश्रमी।

गृहासक्त—वि० [गृह-आसक्त, स० त०] १ घर से दूर रहने या होने के कारण जो चिंतित तथा दुखी हो। (होम सिक) २ हर दम जिसे घर-गृहस्थी, बाल-बच्चो आदि की चिंता लगी रहती हो।

गृहिणी—स्त्री० [स० गृह+इनि—ङीप्] १ घर की मालकिन जो गृहस्थी के सब कामो की देख-रेख करती हो। २ जोरू। पत्नी। भार्या।

गृही (हिन्)—पु० [स० गृह +इनि] [स्त्री० गृहिणी] १ गृहस्थ। गृह-

विशेष—मानक गेज ५६½ इंच ही माना जाता है, वैसे छोटे तथा बडे गेजो की भी पटरियाँ होती है।

गेजुनिया†—पु० [देश०] गुलदुपहरिया (पौधा और फूल)।

गेटिस—पु० [अ० गेटर] १. सैनिको आदि के पहनने का कपडे या चमडे का वह आवरण जिससे पिंडलियाँ ढकी या बाँधी जाती हैं। २. कपडे, रबर आदि का वह छोटा तस्मा या पतली पट्टी जिससे पहने हुए मोजे का ऊपरी भाग इसलिए कसा जाता है कि मोजा नीचे न गिरने पावे।

गेड़—स्त्री० [हिं० गेडना] गेडने की क्रिया या भाव। २ मडलाकार बनाया हुआ गड्ढा या खीची हुई रेखा। ३ दे० 'गेंड़'।

गेड़ना—स० [स० गड=चिह्न] १. किसी चीज को घेरने के लिए उसके चारो ओर गड्ढा, मेड़ या और किसी प्रकार की रेखा बनाना। २ किसी चीज के चारो ओर घूमना। परिक्रमा करना। ३ रहट चलाने के लिए उसका हत्था पकड़कर चारो ओर चक्कर लगाना। ४ दे० 'गेंडना'।

गेड़ी—स्त्री० [स० गड=चिह्न] १ गेड़ने की क्रिया या भाव। २ लडको का एक खेल जिसमे किसी मडलाकार रेखा के बीच मे लकडी का एक टुकडा रखकर और उस पर आघात करके उसे रेखा से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है। ३. उक्त खेल की वह लकडी जो मडलाकार रेखा के बीच मे रखी जाती है।

गेणा†—पु०=गहना या आभूषण। (राज०) उदा०—गेणो तो म्हाँरे माला दोवड़ी और चन्दन की कुटकी।—मीराँ।

गेदा†—पु० [?] चिडिया का वह छोटा बच्चा जिसके पर अभी तक न निकले हो।

गेन†—पु०=गगन (आकाश)। उदा०—कोपि कन्ह घायी वली, जनु अग्गि विच्छुटी गेन।—चन्दवरदाई।

गेनुर—स्त्री० दे० 'गोनर'।

गेवा—पु० [देश०] करघे मे, कघी की वे तीलियाँ जिनके बीच मे से ताने के सूत आपस मे उलझने से बचाने के लिए निकाले जाते हैं।

गेय—वि० [स० √गै (गाना)+यत्] १ गाये जाने के योग्य। २ जो गाया जा सके। जैसे—गेय पद। ३ प्रशसनीय। श्रेष्ठ।

गेरना†—स० [हिं० गिराना का पुराना रूप] १. (गले आदि मे ऊपर से) डालना। उदा०—माला पै लाल गुलाल गुलाब सों गेरि गरे गजरा अलबेली।—पद्माकर। २ गिराना।

स० दे० 'गेडना'।

गेरवाँ—पु० दे० 'गेराँव।'

गेराँई†—स्त्री० =गेराँव।

गेराँव†—पु० [हिं० गर=गला] १ चौपायो के गले मे बाँधी जानेवाली रस्सी। पगहा। २. उक्त रस्सी का वह मडलाकार अश जो चौपायो के गले मे पडा रहता है।

†पु० हिं० 'गाँव' का अनु०। जैसे—गाँव-गेराँव की चीज।

गेरुआ—वि० [हिं० गेरू+आ (प्रत्य०)] १ गेरू के रग का। मटमैला-पन लिये लाल रग का। २ गेरू-मिट्टी के रग से रगा हुआ। गैरिक। जोगिया। भगवा।

पु० १ गेरू से तैयार किया हुआ रग। जोगिया। (मैमन) २ गेरू के रग का एक छोटा कीडा जो फसल की हानि करता है। ३ गेहूँ के पौधो का एक रोग जिसमे उनकी पेडी बहुत कमजोर हो जाती है।

गेरुआ बाना—पु० [हिं०] त्यागियों, योगियो अथवा साधु-सन्यासियो का पहनावा जो गेरुए रंग का होता है।

गेरुई—स्त्री० [हिं० गेरू] फसल या पौधो को होनेवाला एक रोग जो प्राय उनकी जडो मे एक प्रकार के गेरुए रग के कीडे लगने से उत्पन्न होता है।

गेरुल—पु०=गेंद।

गेरुला†—पु० [?] जूडा या वेणी (स्त्रियो की)।

गेरू—पु० [स० गैरिका, पा० गेरुकम्, प्रा० गेरिअ, गैरुप, प०, व० गेरी, उ०, गु०, ने० गेरु, सिं०, मरा० गेरू] एक प्रसिद्ध खनिज लाल मिट्टी जो प्राय कपडे, दीवारे आदि रगने मे और कभी-कभी दवाओ के काम आती है।

गेला†—वि० [हिं० गेया, या गया (बीता)?] [स्त्री० गेली] १ नासमझ। मूर्ख। २ गया-बीता। तुच्छ। हेय। उदा०—गेली दुनियाँ बावली ज्याँ कूँ राम न भावे।—मीराँ।

गेली—स्त्री० [अ०] छापेखाने मे धातु या लकड़ी की वह छिछली किश्ती जिस पर छापे के अक्षर जोड़ या बैठाकर रखे जाते हैं।

पद—गेली प्रूफ=इस प्रकार उक्त किश्ती मे जोड़कर रखे हुए अक्षरो पर से छापा जानेवाला कागज जिस पर बैठाये हुए अक्षरो की भूलें ठीक की जाती है।

गेल्हा†—पु० [देश०] तेल रखने का चमडे का बडा कुप्पा। (तेली)

गेवर—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड। गँगवा।

गेसू—पु० [फा०] बालो की लट। जुल्फ।

गेह—पु० [स० ग-ईह, ब० स०] १. रहने की जगह। २ घर। मकान।

गेहनी—स्त्री० [हिं० गेह] १. घर की मालिक स्त्री। गृह-स्वामिनी। गृहिणी। २ पत्नी। भार्या।

गेह-पति—पु० [ष० त०] घर का मालिक। गृहपति।

गेही (हिन्)—पु० [स० गेह+इनि] घर-बार बनाकर उसमे रहनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ। उदा०—गेही सग्रह परिहरै, सग्रह करै विरक्त।—भगवत-रसिक।

गेहुँअन—पु० [हिं० गेहूँ] मटमैले रग का एक प्रकार का बहुत जहरीला फनदार साँप।

गेहुँआ—वि० [हिं० गेहूँ] १ गेहूँ के रग का। हलका बादामी। २. (शरीर का वर्ण) जो न बहुत गोरा हो और न बहुत साँवला।

गेहूँ—पु० [स० गोधूम, पा० गोधूमो, प्रा० गहूअँ, गहूम, प० ग्यूँ, गु० घऊँ-व० गोम, उ० गहम्, मरा० गहूँ] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी बालो मे लगनेवाले दाने छोटे, लबोतरे बीजो के रूप मे होते है और जिनके आटे या चूर्ण से कचौरी, पूरी, रोटी आदि पकवान बनते हैं। २ उक्त पौधे के छोटे लबोतरे दाने या बीज।

गेहे-शूर—पु० [स० त०, सप्तमी का अलुक्] वह जो घर मे ही बहादुरी दिखानेवाला हो, बाहरी लोगो के सामने कायर हो।

गेंटा†—पु० [देश०] कुल्हाडी।

गेंडा—पु० [स० गण्डक, पा० गण्डको, प्रा० गण्डअ, गु० गडो, मरा०, गेंडा] भैंसे के आकार का एक प्रसिद्ध शाकाहारी स्तनपायी जगली पशु जिसके थुथने पर एक या दो सीग होते है। प्राचीन काल मे इसके चमडे से ढालें बनाई जाती थी। (रेहाइनोसेरस)

गैती—स्त्री० [देश०] १ जमीन खोदने की कुदाल। २ एक पेड जिसकी लकड़ी का रंग लाल होता है।

गैद—पु० [स० गयद] हाथी। उदा०—जिण वन भूल न जावता, गैद गिनल गिडराज।—कविराजा सूर्यमल।
†पु० =गेंद।

गै*—पु० [स० गज, प्रा० गय] हाथी।

गैगहण—वि० [अनु० गहगहाना] आकाश को गुंजानेवाला (शब्द)। पु० आकाश गुंजानेवाला शब्द। उदा०—होइ वीर हक गैगहण।—प्रिथीराज।

गैति—स्त्री० [स० गज=गय>गै+?] हाथियों का झुड।
स्त्री०=गैती।

गैन—पु० [स० गमन] १ गमन करना। जाना। २ गैल। मार्ग। ३ कदम। पग। उदा०—कबहुँक ठाढे होत टेकि कर चल न सकै इक गैन—सूर।
†पु०=गगन (आकाश)।
†पु०=गयद (हाथी)। उदा०—कोऊ नहिं बरजै, जो इनको वनै मत्त जिमि गैन।—भारतेंदु।

गैना—पु० [हिं० गाय] छोटा और नाटा बैल।

गैनी*—वि० स्त्री०=गामिनी (गामी का स्त्री रूप)। जैसे—गज-गैनी।

गैफल—पु० [?] जहाज के आगे की तरफ का एक छोटा पाल। (लश०)

गैफल कँजा—पु० [?] गैफल नामक पाल को चढाने-उतारने की रस्सी। (लश०)

गैब—पु० [अ०] १ वह लोक जो सामने दिखाई न देता हो। अदृश्य लोक। २ परोक्ष।

गैबत—स्त्री० [अ०] किसी के पीठ-पीछे की जानेवाली शिकायत। निन्दा। चुगली।

गैबदाँ—वि० [अ०] [भाव० गैबदानी] ऐसी बातो का जाननेवाला जो प्रत्यक्ष और अनुमान द्वारा न जानी जा सकें। परोक्ष की बातो का ज्ञाता।

गैबर—पु० [देश०] लकलक की जाति की एक चिडिया जिसके डैने और पीठ सफेद, दुम काली तथा चोच और पैर लाल होते है।
*पु० [स० गजवर] बडा हाथी।

गैबी—वि० [अ० गैब] १ गैब या परोक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला। गैब का। २ छिपा हुआ। गुप्त। ३. किसी अज्ञात देश या स्थान से आया हुआ। ४. बिलकुल नया और अपरिचित।

गैयर*—पु० [स० गजवर] हाथी। बडा हाथी।
वि० [हिं० गैया] गौ की तरह सीधे स्वभाववाला। उदा०—मन मतग गैयर हने मनसा भई सिचान।—कबीर।
स्त्री० दे० 'नीलगाय'।

गैया—स्त्री० [स० गो] गाय। गौ।

गैर—वि० [अ०] १ प्रस्तुत से भिन्न। कुछ और या कोई और। जैसे—गैर मौरूसी=मौरूसी से भिन्न। २. अन्य। दूसरा। ३. जिसके साथ आत्मीयता का संबध न हो। जैसे—गैर आदमी, गैरमर्द। ४ दूसरे या दूसरो से सबध रखनेवाला। जैसे—गैर इलाके या गैर मुल्क का।
मुहा०—गैर करना=(क) गैरो या परायो का-सा व्यवहार करना। (ख) वैर-विरोध या शत्रुता करना।
५. कथित से भिन्न होने के कारण ही विपरीत या विरुद्ध। जैसे—गैर जरूरी, गैर मुमकिन, गैर वाजिब, गैर हाजिर आदि।
पु० दे० 'गैयर'।
†स्त्री १ दे० 'गैल'। २ दे० 'घर'।

गैर-आबाद—वि० [अ०+फा०] १ (प्रदेश) जिसमे मनुष्यों की बस्ती न हो। २ (भूमि) जो जोती बोई न गई हो या न जाती हो।

गैर-इसाफी—स्त्री० [अ०] अन्याय।

गै-रगी—स्त्री० [हिं० गै=गला+रगी] सुनारो की बोली मे, हँसुली।

गैर-जरूरी—वि० [अ०] अनावश्यक।

गैर-जिम्मेदार—वि० [अ०+फा०] [भाव० गैर-जिम्मेदारी] १. जो जिम्मेदार या जवाबदेह न हो। २. जो अपनी जिम्मेदारी या उत्तर-दायित्व न समझता हो। अनुत्तरदायी।

गैरत—स्त्री० [अ०] मन मे होनेवाली अपने ही सबध मे वह खेदजनक भावना जो कोई अनुचित या अशोभन काम करने पर उत्पन्न होती है या होनी चाहिए। लज्जा। शर्म।

गैरतदार—वि० [अ०+फा०] लज्जाशील।

गैरतमद—वि०=गैरतदार।

गैर-दखीलकार—पु० [अ०+फा०] वह असामी (या खेतिहर) जिसे दखील-कारीवाले अधिकार प्राप्त न हों। (नानऑकुपेन्सी टेनेन्ट)

गैर-मजरूआ—वि० [अ०] (भूमि) जो जोती-बोई न गई हो या न जाती हो।

गैर-मनकूला—वि० [अ०] (पदार्थ या सम्पत्ति) जिसे एक स्थान मे उठाकर दूसरे स्थान पर न ले जाया जा सके। अचल। स्थावर।

गैर-मामूली—वि० [अ०] १ नित्य के नियम से भिन्न। २ असाधारण।

गैर-मिसिल—वि० [अ०] १. जो मिसिल मे न हो, बल्कि उसके बाहर हो। २ किसी दूसरे वर्ग या विभाग का। ३. अनुचित । ४ जो उपयुक्त अवसर पर न हो। बे-मौके। ५. अशिष्टतापूर्ण या अश्लील। (परहास, व्यग्य आदि के सबध मे प्रयुक्त) जैसे—गैरमिसिल दिल्लगी।

गैर-मुनासिब—वि० [अ०] जो मुनासिब अर्थात् उचित न हो । अनुचित ।

गैर-मुमकिन—वि० [अ०] जो मुमकिन अर्थात् सभव न हो । असभव।

गैर-मुल्की—वि० [अ०] १ गैर या दूसरे देश का। विदेशी। २ दूसरे राज्यो या राष्ट्रो से सबध रखनेवाला। पर-राष्ट्रीय।

गैर-रस्मी—वि० [अ०+फा०] (कार्य या व्यवहार) जो परपरा, रीति आदि के अनुसार न किया गया हो।

गैर-वसली—स्त्री० [अ०] कच्चे मकानो की छत छाने की वह प्रणाली जिसमे बाँस की पतली कमाचियो को दृढतापूर्वक केवल बुन देते हैं और उन्हे रस्सियो से नही बाँधते।

गैर-वसूल—वि० [अ०] [भाव० गैर-वसूली] जो वसूल या प्राप्त न हुआ हो, अभी वसूल होने को बाकी हो।

गैर-वाजिब—वि० [अ०] अनुचित। नामुनासिब।

गैर-सरकारी—वि० [अ०] १ जो सरकारी या राजकीय न हो बल्कि,

उससे भिन्न हो। अराजकीय। २. जिसके लिए सरकार उत्तरदायी न हो। (वक्तव्य आदि)

गैर-हाजिर—वि० [अ०] जो हाजिर या उपस्थित न हो। अनुपस्थित।

गैर-हाजिरी—स्त्री० [अ०] हाजिर या उपस्थित न होने की अवस्था या भाव। अनुपस्थिति।

गैरिक—पु० [स० गिरि+ठञ्—इक] १ गेरू। २ सोना। स्वर्ण। वि० १ गेरू के रग मे रगा हुआ। २ गेरू के रग का।

गैरियत—स्त्री० [अ०] गैर (पराया या भिन्न) होने की अवस्था या भाव।

गैरी—स्त्री० [स०] लागलिका वृक्ष। विषलाँगला।
वि० [?] १. कूडा-करकट भरकर खाद बनाने का गड्ढा। २ खेत से काटकर लाए हुए डठलो आदि का ढेर। खरही।

गैरीयत—स्त्री०=गैरियत।

गैरेय—पु० [स० गिरि+ढक्—एय] शिलाजीत।

गैल—स्त्री० [हिं० गली] १ मार्ग। रास्ता। २ गली।
मुहा०—(किसी को) गैल करना=रास्ते मे जाने के लिए किसी को साथ कर देना। (किसी की) गैल जाना=(क) किसी के बतलाये हुए रास्ते पर जाना। अनुकरण या अनुसरण करना। (ख) कोई ऐसा काम करना जिससे किसी का सामना हो या विरोध करना पडे। (किसी को) गैल बताना=दे० 'रास्ता' के अतर्गत मुहा०—'(रास्ता बताना'। (किसी को) गैल लेना=रास्ते मे चलने के लिए किसी व्यक्ति को अपने साथ लेना।

गैलड़—पु० [अ० गैर+हिं० लडका] वह लडका जिसे उसकी माँ अपने साथ लेकर दूसरे पति या यार के यहाँ चली आई हो।

गैलन—पु० [अ०] तरल पदार्थ मापने का एक अँगरेजी मान जो तीन सेर के लगभग होता है।

गैलरी—स्त्री० [अ०] १ सीढियो की तरह ऊपर-नीचे बनी हुई कोई ऐसी रचना जिस पर बहुत-से लोग बैठते या चीजे रखी जाती हो। २ उक्त कार्यो के लिए ऊपर के खड मे बनी हुई कोई समतल रचना।

गैला—पु० [हिं० गैल] १ गाडी के पहियो की लीक। २ बैलगाडियो आदि के चलने का रास्ता। ३ गैल या रास्ते मे चलनेवाला। बटोही। यात्री। उदा०—गैल चलत गैला हूँ मारे घायल पडे गरियाले मे।—ग्राम्य-गीत।
†वि० [हिं० गया] [स्त्री० गैली] गया-बीता। उदा०—गैली दीखे मीराँ बावली, सुपना आल जँजाल।—मीराँ।

गैलारा—पु०=गैला।

गैस—स्त्री० [अ०] १. किसी पदार्थ (या द्रव्य) का प्राकृतिक अथवा रासायनिक क्रिया से बना हुआ वह वायुवत् रूप जो अत्यत प्रसरणशील होता है। २ वह द्रव्य जिसे जलाकर रोशनी की जाती है तथा चीजे गरम की जाती है। ३ बडी लालटेन की तरह का वह उपकरण जिसमे गैस जलाकर रोशनी उत्पन्न की जाती है। ४ पाखाने आदि मे से निकलनेवाली तीव्र गधयुक्त वायु।

गैस-मापी—पु० [अ०+हिं०] गैस के आधान के मुँह पर लगा हुआ वह उपकरण जो गैस बाहर निकलने पर उसका मान या माप बतलाता है। (गैसोमीटर)

गैसा†—वि० [?] [स्त्री० गैसी]=गहरा। उदा०—सुनहु सूर तुम्हरे छिन छिन मति बडी पेट की गैसी हौ।—सूर।

गोंइठा†—पु० [स० गो-विष्ठा] १. गाय के गोबर का सूखा हुआ उपला या चिप्पड। गोहरा। २ उपला। गोहरा।

गोंइड—पु० [हिं० गाँव+मेड] १. गाँव की सीमा। २ उक्त सीमा के आस-पास का क्षेत्र या भूमि।

गोंइयाँ†—उभय०=गोइयाँ।

गोंई†—स्त्री० [हिं० गोहन] बैलो की जोडी।

गोंच†—स्त्री० [स० गोंचदना] जोंक।

गोंछ—स्त्री० [हिं० गलमोछ] १. गलमुच्छा। २. बहुत बडी मूँछ।

गोंजना—स० [?] १. भद्दी तरह से मिला-जुलाकर खराब या गदा करना। २ घँघोलना। ३. खोसना।

गोंजिया†—स्त्री०=गोभी।

गोंटा—पु० [?] एक प्रकार का छोटा पेड।
†पु० दे० 'गोटा'।

गोंठ—स्त्री० [स० गोष्ठ] धोती की वह लपेट जो कमर पर रहती है। मुर्री।

गोंठना—स० [स० कुठन] (शस्त्र आदि की) धार या नोक कुंठित या भोथरी करना।
स० [स० गोष्ठ] १ चारो ओर रेखा या लकीर बनाकर घेरना। २ पकवान के अदर मसाले, मेवे आदि भरकर उनका मुँह इस प्रकार मोड कर बद करना कि वे मसाले या मेवे बाहर न गिरने पावे।

गोंठनी—स्त्री० [हिं० गोठना] लोहे, पीतल का एक छोटा औजार जिससे पकवानों का मुँह गोठते या मोडकर बद करते है।

गोंड—पुं० [स० गोण्ड] १ एक असभ्य जगली जाति जो प्राय गोंडवाना प्रदेश (मध्य भारत) मे रहती थी और अब चारों ओर फैल गई है। २ उक्त जाति का कोई व्यक्ति। ३ वर्षाऋतु मे गाया जानेवाला एक राग।
†पु० [स० गोरणु] १. नाभि के ऊपर का निकला हुआ मास-पिंड। २ वह व्यक्ति जिसका उक्त मास-पिंड असाधारण रूप से बडा या मोटा हो।
पु० [सं० गोष्ट] १ गायों के रहने का स्थान। २ लगर के ऊपर का गोलाकार भाग।

गोंडरा—पु० [स० कुडल] [स्त्री० गोंडरी] १ चरसे या मोट के ऊपर का काठ का घेरा। मेंडरा। २ गोल आकार की कोई वस्तु। मेंडरा। ३ गोल घेरा। ४ चारो ओर खीची हुई मडलाकार रेखा या लकीर।

गोंडरी—स्त्री० [स० कुडली] १ कुडल की तरह की कोई गोलाकार रचना या वस्तु। २ दे० 'इँडुरी'।
स्त्री० [हिं० गोंड] गोंडवाने की बोली। गोंडवानी।

गोंडला†—पु०=गोंडरा।

गोंडवाना—पु० [हिं० गोंड] मध्यभारत का वह प्रदेश जिसमे मूलत गोंड जाति के लोग रहते थे।

गोंडवानी—स्त्री० [हिं० गोंडवाना] गोंडवाना प्रदेश की बोली।
वि० गोंडवाने का।

गोंड़ा—पु० [स० गोष्ठ] १ घेरा हुआ स्थान। बाडा। २ गाँव या ऐसी ही कोई छोटी बस्ती। ३. किसी एक किसान के वे सब खेत या उनका घेरा

जो एक ही स्थान पर एक दूसरे से सटे हुए हों। ४ घर के बीच का आँगन। ५ विवाह के समय की परछन नामक रीति।

मुहा०—गोडा सीजना=दरवाजे पर बरात आने के समय कन्या-पक्ष से कुछ धन निछावर करके बाँटना या लुटाना।

† पु० [?] साल के जगलो मे होनेवाली एक प्रकार की लता।

गोड़ी—स्त्री० [हिं० गोड] गोडवाना प्रदेश मे बोली जानेवाली गोड जाति की बोली। गोडवानी।

गोद—पु० [स० कुदुरु वा हिं० गूदा] १ कुछ विशिष्ट पौधो तथा वृक्षो मे से निकलनेवाला चिपचिपा या लसीला तरल निर्यास जो जमकर ढलो या दानो के रूप मे हो जाता है। २ उक्त निर्यास को पानी मे घोलकर तैयार किया हुआ वह रूप जिसमे कागज आदि चिपकाये जाते हैं।

स्त्री० दे० 'गोदी'।

गोददानी—स्त्री० [हिं० गोद+फा० दान] वह पात्र जिसमें गोद भिगोकर रखा रहे।

गोंदनी†—स्त्री० दे० 'गोंदी'।

गोंदपँजीरी—स्त्री० [हिं० गोद+पँजीरी] वह पँजीरी जिसमें गोद भी मिलाया गया हो।

गोदपाग—पु० [हिं० गोद+पाग] गोद और चीनी के मेल से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। पपडी।

गोंदरा†—पु० [स० गुद्रा=एक घास] १. गोनरा नामक घास। २ नरम घास या पयाल का बना हुआ एक प्रकार का छोटा आसन।

गोदरी—स्त्री० [स० गुद्रा] १ एक प्रकार की मुलायम लबी घास जो पानी मे होती है। गोनी। २. उक्त घास की बनी हुई चटाई।

गोदला—पु० [स० गुद्रा] १. नागरमोथा नामक घास की एक जाति। २ गोनरा या गोनी नामक घास।

गोंदा—पु० [हिं० गूंधना] १. बुलबुलो को खिलाई जानेवाली गूंधे हुए भूने चने के बेसन की छोटी-छोटी गोलियाँ।

मुहा०—गोदा दिखाना=(क) बुलबुलों को लडाने के लिए उनके आगे गोंदा फेंकना। (ख) दो पक्षो मे लडाई लगाना।

२ गीली मिट्टी के वे पिंड जो कच्ची दीवारें बनाने के समय एक पर एक रखे जाते है। गारा। उदा०—उसको मिट्टी के गोदो की ऊँचाई देकर फूस से ढक दिया।—वृन्दावनलाल वर्मा।

गोंदी†—स्त्री० [स० गुन्द्रा] एक प्रकार की घास जिसके डठलो से चटाइयाँ बनती हैं। गोदरी।

गोंदीला—वि० [हिं० गोद+ईला(प्रत्य०)] [स्त्री० गोंदीली] १. (वृक्ष) जिसमे से गोद निकलती हो। २ जिसमे गोंद लगी हो। गोद से युक्त।

गोंवडा—पु० [हिं० गाँव] गाँव के आस-पास के खेत।

गो—स्त्री० [स०√गम् (जाना)+डो] १. गाय। गौ। २ वृप राशि। ३ वृषभ नामक ओषधि। ४ इद्रिय। ५. वाणी। ६. सरस्वती। ७ जिह्वा। जीभ। ८. प्रकाश या उसकी किरण। उदा०—ब्रात ठौर तजि गो दिसि जाही। —जायसी। ९ देखने की शक्ति। दृष्टि। १० बिजली। ११ पृथ्वी। १२ दिशा। १३. जननी। माता। १४ दूध देनेवाले पशु। जैसे—बकरी, भैंस आदि।

पु० [स०] १. बैल। २ शिव का नदी नामक गण। ३ घोडा। ४ चंद्रमा। ५ शिव। ६ आकाश। ७ स्वर्ग। ८. तीर। बाण। ९ वह जो किसी की प्रशसा करता या यश गाता हो। १०. गवैया। गायक। ११ जल। पानी। १२ वज्र। १३ शरीर के रोएँ। रोम। १४. शब्द। १५. नौ की सख्या।

अव्य० [?] सख्यावाचक विशेषणो के साथ प्रयुक्त होनेवाला एक अव्यय जो गिनती पर जोर देने के लिए 'ठो' की तरह आता है। (पूरब) जैसे—चार गो कपडा।

स्त्री० [फा०] गाय। गौ।

पद—गो-कुशी (देखें)।

अव्य० [फा०] यद्यपि।

पद—गो कि=यद्यपि।

वि० [फा०] १. कहने या बोलनेवाला। जैसे—दरोग-गो=झूठ बोलनेवाला। २ बतलाने, समझाने या व्याख्या करनेवाला। जैसे—कानूनगो=नियम या विधान बतलानेवाला।

अ० भूतकालिक 'गया' क्रिया का स्थानिक रूप।

प्रत्य० हिं० 'गा' प्रत्यय का स्थानिक रूप। (ब्रज०)

गोअर†—वि० दे० 'गँवार'। उदा०—सखि हे बुझल कान्ह गोअर। —विद्यापति।

†पु०=ग्वाल।

गोइँजी†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जिसका मुंह और सिर देखने मे बहुत कुछ एक जैसा लगता है।

गोइँठा—पु० [स० गो+विष्ठा] उपला। गोहरा। कडा।

गोइँठौरा—पु० [हिं० गोइँठा+औरा (प्रत्य०)] व्यक्ति जो उपले या गोहरे बनाता तथा बेचता हो।

गोइँड़(ा) †—पु० [स० गोष्ठ=ग्राम] १ गाँव की सीमा। २. गाँव की सीमा के पास की जमीन। ३. किसी स्थान के आस-पास का प्रदेश।

गोइंदा—पु० [फा० गोयन्द] गुप्त रूप से समाचार एकत्र करके किसी के पास पहुँचानेवाला व्यक्ति। गुप्तचर। जासूस। भेदिया।

गोइ*—पु० [?] गेंद।

गोइयाँ—उभय० [हिं० गोहनियाँ] बराबर साथ मे रहनेवाला सगी या साथी।

गोइयार—पु० [देश०] खाकी रग का एक प्रकार का पक्षी।

गोई—स्त्री० [फा०] १ कहने की क्रिया या भाव। २ वह जो कुछ कहा जाय। कथन। उक्ति।

स्त्री०=गोइयाँ।

स्त्री० [?] १. रूई की पूनी। २ बैलो की जोडी।

गोऊ†—वि० [हिं० गोना+ऊ (प्रत्य०)] १. कोई चीज या बात किसी से छिपानेवाला। २. छीनने या हरण करनेवाला।

गो-कंटक—पु० [प० त०] गोक्षुर। गोखरू।

गो-कन्या—स्त्री० [प० त०] कामधेनु।

गो-कर—पु० [ब० स०] सूर्य।

गो-कर्ण—वि० [ब० स०] जिसके कान गऊ के कानो की तरह लबे हो।

पु० [प० त०] १ गौ के कान। २ [ब० स०] खच्चर, जिसके कान गौ के कानो की तरह लबे होते हैं। ३ एक तरह का हिरन। ४ एक तरह का तीर या बाण। ५. एक प्रकार का साँप जिसके कान की तरह के अग होते है। ६ दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध शैव तीर्थ। ७ उक्त

तीर्थ मे स्थापित शिव की मूर्ति। ८ शिव के एक गण का नाम। ९ नाप के लिए, बित्ता। बालिश्त। १० नृत्य मे हाथ की एक प्रकार की मुद्रा।

गोकर्णी—स्त्री० [सं० गोकर्ण+ङीप्] मूर्वा या मुरहरी नाम की लता। वि० जिसका आकार या रूप गौ के कान की तरह समकोणिक त्रिभुज की तरह का हो।

गोका—स्त्री० [सं० गो+कन्-टाप्] १ छोटी गाय। २ नील गाय। †वि० [हिं० गौ+का] गाय का। जैसे—गौ का दूध। (पश्चिम)

गोकिराटी—स्त्री० [सं० गोकिरा=वाणी√अट् (गति)+अच्—ङीप्] सारिका (पक्षी)।

गो-कील—पु० [ष० त०] १ हल। २ मूसल।

गो-कुंजर—पु० [सं० त०] १. खूब मोटा-ताजा और बलिष्ठ बैल या साँड। २ शिव का एक गण।

गोकुंद—स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत की नदियों मे पाई जानेवाली एक प्रकार की मछली।

गो-कुल—पु० [ष० त०] १ गौओं का झुंड। गो-समूह। २ गोशाला। ३ मथुरा के पास की वह बस्ती जहाँ नंद और यशोदा ने श्रीकृष्ण और बलराम को पाला था।

गोकुल-नाथ—पु० [ष० त०] श्रीकृष्ण।

गोकुल-पति—पु० [ष० त०] श्रीकृष्ण।

गोकुलस्थ—पु० [सं० गोकुल√स्था (ठहरना)+क] १ वल्लभी गोस्वामियों का एक भेद। २ तैलंग ब्राह्मणो का एक भेद।

गो-कुशी—स्त्री० [फा०] गौ का मास खाने के लिए किया जानेवाला गौ का वध। गो-हत्या। गोवध।

गो-कृत—पु० [तृ० त०] गोबर।

गोकोक्ष—पु० [?] जोक नामक कीड़ा।

गोकोस—पु० [सं० गो-क्रोश] १. उतनी दूरी जहाँ तक गाय के रँभाने का शब्द पहुँचता हो। २ छोटा या हलका कोस।

गोक्ष—पु० [सं० गो-अक्ष, ष० त० ?] =गोकोक्ष (जोक)।

गो-क्षीर—पु० [ष० त०] गौ का दूध।

गोक्षुर—पु० [ष० त०] १. गौ का खुर। २ गोखरू नामक क्षुप और उसका फल।

गोख†—पु० [सं० गवाक्ष] झरोखा। (राज०) उदा०—ऊभी गोख अवेखियौ पेला रौदल सेर।—कविराजा सूर्यमल।

गोखग—पु० [सं० गो और खग] पशु और पक्षी।

गोखरू—पु० [सं० गोक्षुर] १ एक प्रकार का क्षुप जिसमे चने के बराबर कड़े और कँटीले फल लगते है। २ उक्त क्षुप के फल जो दवा के काम आते है। ३. उक्त फलो के आकार के धातु के बने वे कँटीले दाने जो मस्त हाथियों को वश मे करने के लिए उनके रास्ते मे बिछाये जाते है। ये दाने हाथी के पैरो मे चुभकर उन्हे चलने या भागने नही देते। ४ गोटे और बादले से बनाया हुआ उक्त आकार का वह साज जो कपड़ो मे शोभा के लिए टाँका जाता है। ५ शरीर के किसी अग मे काँटा गड़ने या कोई रोग होने के कारण बना हुआ कड़ा गोलाकार उभार। ६ पौधो की बाल। ७ हाथ मे पहनने के कड़े के आकार का एक गहना। ८ कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोखा—पु० [सं० गवाक्ष] झरोखा।

पु० [सं० गो से] गौ या बैल का कच्चा चमड़ा।

गो-खुर—पु० [ष० त०] १ गौ का पैर। २ जमीन पर पड़ा हुआ गौ के खुरो का निशान।

गोखुरा—पु० [सं० गोक्षुर] साँप।

गोगा†—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० गोगी] छोटा काँटा। मेख।

गोगापीर—पु० एक पीर जिसकी पूजा प्राय छोटी जातियों के हिंदू और मुसलमान करते है। (पश्चिम)

गो-गृह—पु० [ष० त०] गोशाला।

गो-ग्रंथि—स्त्री० [मध्य० स०] १ गोबर। २ [ब० स०] गोशाला। ३ [ष० त०] गोजिह्विका नामक ओषधि।

गो-ग्रास—पु० [ष० त०] भोजन का वह थोड़ा-सा अश जो खाने से पहले गौ को देने के उद्देश्य से निकालकर अलग रख दिया जाता है।

गोघरी—स्त्री० [देश०] गुजरात मे होनेवाली एक प्रकार की कपास।

गो-घात—पु० [सं० गो√हन् (हिंसा)+अण्, उप० स०] १ दे० 'गोघातक'। २ [ष० त०] गोहत्या।

गो-घातक—पु० [ष० त०] १ गौ की हत्या करनेवाला। २ कसाई।

गो-घाती (तिन्)—पु० [सं० गो√हन्+णिनि, उप० स०] =गोघातक।

गो-घृत—पु० [ष० त०] गौ के दूध से तैयार किया हुआ घी।

गो-घोख—पु० [सं० गो-घोष] गोशाला। उदा०—घर हट ताल भमर गोघोख।—पृथीराज।

गोघ्न—वि० [सं० गो√हन्+क] १ गौ को मारने या उसका वध करनेवाला।

पु० अतिथि या मेहमान जिसके सत्कार के लिए किसी समय गौ का वध करने की प्रथा थी।

गो-चंदन—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का चदन।

गोचंदना—स्त्री० [सं० गोचन्दन+अच्+टाप्] एक प्रकार की जहरीली जोक।

गोचना†—पु० [हिं० गेहूँ+चना] ऐसा गेहूँ जिसमे आधे के लगभग चना मिलाया गया हो।

†स० [?] गति मे बाधक होना। रास्ता रोकना।

गोचनी—स्त्री०=गोचना (गेहूँ और चना)।

गो-चर—वि० [सं० गो√चर् (गति)+अच्, उप० स०] जिसका ज्ञान इद्रियों द्वारा हो सके।

पु० १ वे सब चीजे या बाते जिनका ज्ञान इद्रियो से होता अथवा हो सकता हो। उदा०—गो गोचर जहँ लगि मन जाई।—तुलसी। २ गौओं के चरने का स्थान। चरागाह। चरी। (पास्चर लैंड) ३ प्रदेश। प्रात। ४ फलित ज्योतिष मे वह गणना जो मनुष्य की जन्मपत्री के अभाव मे उसके प्रसिद्ध नाम के आधार पर की जाती और वास्तविक से कुछ भिन्न तथा स्थूल होती है।

गोचर-भूमि—स्त्री० [कर्म० स०] गौओ के चरने के लिए छोड़ी हुई भूमि। चरागाह। चरी। (पास्चर-लैंड)

गोचरी—स्त्री० [सं० गोचर से] भिक्षावृत्ति।

†स्त्री०=गोचर-भूमि।

गोचर्म (र्मन्)—पु० [ष० त०] १ गौ का चमड़ा। २. जमीन की एक

पुरानी नाप जो २१०० हाथ लंबी और इतनी ही चौडी होती थी। चरस। चरसा।

गो-चारक—पु० [ष० त०] वह जो गौएँ चराने का काम करता हो।

गो-चारण—पु० [ष० त०] गौएँ-भैंसे आदि चराने का काम।

गो-चारी (रिन्)—पु० [स० गो√चर्+णिच् + णिनि, उप० स०]=गोचारक।

गोची—स्त्री० [स० गो√अच् गति)+क्विप+.ङीप्, नलोप, अलोप] १. एक प्रकार की मछली। २ हिमालय की एक पत्नी का नाम।

गोज—वि० [स० गो√जन् (जन्म लेना)+ड, उप० स०] गौ से उत्पन्न, निकला या बना हुआ।

पु० १. दूध से बना हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। २ एक प्रकार के प्राचीन क्षत्रिय जो राज्याभिषेक के अधिकारी नही होते थे।

पु० [फा०] १ अपानवायु। पाद। २ चिलगोजा।

गोजई—स्त्री० [हि० गेहूँ+जौ] ऐसा गेहूँ जिसमे आधे के लगभग जौ मिला हुआ हो।

गो-जर—पु० [स त०] बुड्ढा बैल या साँड।

पु० दे० 'कनखजूरा'।

गो-जल—पु० [ष० त०] गो-मूत्र।

गोजा†—पु० [स० गजावन] छोटे पौधो का नया कल्ला।

†पु०=बडी गोजी (छडी या डडा)।

गोजागरिक—पु० [स० गो=स्वार्थ-जागर=सावधानी, स०त०, गोजागर+ठन्—इक[१ कँटियारी नाम का क्षुप। २ सुख और सौभाग्य।

गोजिया—स्त्री० [स० गोजिह्वा] बनगोभी नाम की घास।

गो-जिह्वा—स्त्री० [स० ष० त०] बनगोभी नामक घास जो औषध के काम आती है।

गोजी†—स्त्री० [स० गजावन] १. पशुओ विशेषतः गौओं को हाँकने की लकडी। २. बडी और मोटी लाठी। ३. उक्त लाठियो से खेला जानेवाला वह खेल जिसमे लाठी चलाने और लाठी रोकने का अभ्यास किया जाता है।

गो-जीत—वि० [स० गोजित्] जिसने इद्रियो को जीत लिया हो। जितेद्रिय।

गोज्जल—पु० [स० ?] छोटे जलाशयो मे रहनेवाली एक प्रकार की मछली।

गोझनवट†—स्त्री० [देश०] स्त्रियो की सार्डी के अचल या पल्ले का उतना अश जो पीठ और सिर पर रहता है।

गोझा—पु० [स० गुह्यक] [स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया] १. गुझिया नामक पकवान। २ जेब। खलीता। ३. जोक। ४. दे० 'गुज्झा'।

गोट—स्त्री० [स० गोष्ठ] चुनरी, धोती, लिहाफ आदि के किनारो पर सुन्दरता के लिए लगाई जानेवाली कपडे की पट्टी। मगजी।

स्त्री० [स० गोष्ठी] गोष्ठी।

स्त्री० [स० गुटक] गोटी। (दे०)

स्त्री० [स० गोष्ठ] गोठ। गोशाला।

†पु० छोटा गाँव। खेडा।

गोट-बस्ती—स्त्री० [हि० गोट+बस्ती] १. छोटा गाँव। २ छोटी बस्ती।

गोटा—पु० [हि० गोट] १ रुपहले या सुनहले तारो की बनी हुई बडी पट्टी जो गोट के रूप मे सिले हुए कपडों के किनारा पर टाँकी जाती है।

पद—गोटा-पट्ठा। (देखें)

२ भुना हुआ धनिया अथवा उसके बीज। ३ भोजन के बाद खाने के लिए एक मे मिलाये हुए इलायची, खरबूजे, सुपारी आदि के कतरे हुए छोटे-छोटे टुकडे। ४. गरी या नारियल का गोला। ५. पेट के अन्दर का सूखा हुआ मल। कडी।

†पु०=गोला। उदा०—(क) चदा गोटा टीका करि लै सूरा करि लै बाटी।—गोरखनाथ। (ख) औ घूर्टहि तँह ब्रज के गोटा।—जायसी।

†वि० १. पूरा। समूचा। सारा। २ कुल। सब। (पूरब)

गोटा-पट्ठा—पु० [हि० गोटा+पट्ठा] गोटा और पट्ठा नामक बादले की पट्टियाँ जो कपडो पर प्राय साथ-साथ टाँकी जाती है।

गोटिया-चाल—स्त्री० [हि० गोटी+चाल] वैसी ही दाँव-पेंच भरी चाल जैसी चौपड, शतरज आदि की गोट चलने में चली जाती है। गहरी और छिपी हुई चालबाजी।

गोटी—स्त्री० [स० गुटिका] १. ककड, पत्थर इत्यादि का छोटा टुकडा जिससे लडके कई तरह के खेल खेलते हैं। २ लकडी, हाथीदाँत आदि के बने हुए वे विशिष्ट आकार-प्रकार के टुकडे जिनसे चौपड, शतरज आदि खेलते हैं। नरद। मोहरा। ३ कार्य सिद्ध होने का उपयुक्त अवसर। उदा०—सतरु कोटि जो पाइअ गोटी।—जायसी। ४ कार्य सिद्ध करने के लिए चली जानेवाली चाल या की जानेवाली युक्ति।

मुहा०—गोटी जमना या बैठना=चली हुई चाल या की हुई युक्ति का ठीक बैठना और कार्य सिद्ध होने का निश्चय या सभावना होना। **गोटी लाल होना**= युक्ति ठीक बैठने के कारण कार्य पूरी तरह से सिद्ध होना या पूरा लाभ होना।

५ एक प्रकार का खेल जो ९, १५, १८ या इससे अधिक गोटियो से भूमि पर एक दूसरी को काटती हुई कई आडी और सीधी रेखाएँ बनाकर खेला जाता है।

पद—गोटिया-चाल (देखें)।

गोठ—स्त्री० [स० गोष्ठ, पा०प्रा० गोट्ठ, ब०ने० उ० गोठ, सि० गोठु, गु० गोठो, मरा० गोठा] १. गौएँ बाँधकर रखने का घेरा या स्थान। गोशाला। २. गोष्ठी नामक श्राद्ध। ३. नगर या बस्ती के बाहर किसी रमणीक स्थान मे की जानेवाली वह सैर जिसमे लोग वही भोजन आदि बनाकर खाते और घूमते-फिरते है। (पिकनिक)

गोठा†—पु० [स० गोष्ठी] परामर्श। सलाह।

गोठि—स्त्री० १ =गोठ। २ =गोष्ठी।

गोठिल†—वि० [हि० गुठला] १. जिसमे गुठले पडे हो। गुट्ठल। २ जिसकी धार या नोक मुडकर बेकाम हो गई हो। कुद। भोथरा।

गोड़—पु० [स० गम, गो] १. पाँव। पैर। (पूरब)

क्रि० प्र०—दबाना।

मुहा०—(किसी के) गोड़ पड़ना या लगना=चरण छूना। प्रणाम करना। **गोड़ भरना**= पैरो मे आलता या महावर लगाना।

२. टाँग। ३ जहाज के लगर का फाल जिसके सहारे वह जमीन पर टिकता या ठहरता है।

†पु० [?] भडभूँजो की एक जाति।

गोड़इत—पु० [हि० गोइँड़+ऐत (प्रत्य०)] १. मध्ययुग मे चिट्ठियाँ

आदि ले जानेवाला हरकारा। २. आज-कल गाँव-देहातो मे पहरा देने-वाला राजकीय चौकीदार।

गोड़ई—स्त्री० [हिं० गोड+पाई] करघे की वे लकडियाँ जो पाई करने मे पाई के दोनो ओर खडी की जाती हैं। (जुलाहे)

†स्त्री०=गोडाई।

गोड़गाव—पु० [हिं०गोड=पैर +गाव] वह छोटी रस्सी जिसे गिरावँ की तरह बनाकर और पिछाडीवाली रस्सी के सिरो पर बाँधकर घोड़े के पिछले पैर मे फँसाते हैं।

गोडन—पु० [देश०] वह प्रक्रिया जिससे ऐसी मिट्टी से भी नमक बनाया जा सकता है जो नोनी नही होती।

गोड़ना—स० [हिं० कोडना] फावडे से अखाडे, खेत आदि की मिट्टी इस प्रकार खोदना तथा उसे उलट-पलट करना कि वह पोली, भुरभुरी और मुलायम हो जाय।

गोडली—उभय० [कर्णाटी] वह जो सगीत विशेषत नृत्य मे पारगत हो।

गोड़वाँस—पु० [हिं० गोड=पैर+वाँस (प्रत्य०)] पैर विशेषत पशुओ के पैर बाँधने की रस्सी।

गोड़वाना—स० [हिं० गोडना का प्रे०] दूसरे को खेत आदि गोडने मे प्रवृत्त करना। गोडने का काम दूसरे से कराना।

गोड़-सँकर†—पु० [हिं० गोड+साँकर] पैरो मे पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोड़-सिहा†—वि० [हिं० गोड+सिहाना=ईर्ष्या करना] सिहाने अर्थात् डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

गोड़-हरा—पु० [हिं० गोड+हरा (प्रत्य०)] पैर मे पहनने का कोई गहना। जैसे—कडा, पाजेब आदि।

गोड़ाँगी†—स्त्री० [हिं० गोड+अगी] १ पायजामा। २. जूता।

गोडा—पु० [हिं० गोड=पैर] पैर और जाँघ के बीच का जोड। घुटना। (पश्चिम)

मुहा०—**गोडे थकना**=परिश्रम, वृद्धावस्था आदि के कारण बहुत शिथिल होना।

गोड़ा†—पु० [हिं० गोड=पैर] १. चौकी, तिपाई, पलग आदि का पाया। २. वह रस्सी जिसमे पानी सीचने की दौरी बाँधी जाती है। ३ वृक्ष का थाँवला या थाला।

गोड़ाई—स्त्री० [हिं० गोडना] गोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गोड़ाना—स० [हिं० गोडना का प्रे०] खेत आदि की गोडाई दूसरे से कराना।

†अ० खेत आदि का गोडा जाना।

गोडा पाई†—स्त्री० [हिं० गोडना+पाई (जुलाहो की)] बार-बार कही आते-जाते रहना।

गोड़ारी†—स्त्री० [हिं० गोड़=पैर+आरी (प्रत्य०)] १ खाट, पलग आदि का वह भाग जिधर पैर रखे जाते हैं। पैताना। २ जूता।

†स्त्री० [हिं० गोडना ?] तुरत खोदकर निकाली हुई घास।

गोड़िया—स्त्री० [हिं० गोड=पैर का अल्पा०] १ छोटा गोडा। २ छोटा पैर।

वि०, पु० [हिं० गोटी ?] तरह तरह की युक्तियाँ लगाने और जोड-तोड बैठानेवाला। काइयाँ। चालाक।

†पु० [?] १ मल्लाह। २. सँपेरा। उदा०—कलपै अकबर काय, गुण पूगीधर गोड़िया।—दुरसाजी।

गोड़ी—स्त्री० [हिं० गोटी] किसी युक्ति के फलस्वरूप उत्पन्न ऐसी स्थिति जिसमें कुछ लाभ की सभावना हो। प्राप्ति का डौल।

मुहा०—**गोड़ी जमना या बैठना**=फायदे के लिए जो चाल चली गई हो उसका सफल होना। **गोडी हाथ से जाना**=उक्त प्रकार का प्रयत्न विफल होना।

†स्त्री०=गोड़ (चरण या पैर)।

मुहा०—**(कहीं किसी की) गोड़ी आना या पड़ना**=किसी का कही आकर उपस्थित होना या पहुँचना।

गोढ़—पु०=गोठ (गोशाला)।

गोणी—स्त्री० [स० √गुण् (आवृत्ति)+घञ् ? ङीप्] १ दोहरे टाट का बोरा। २ अनाज आदि की एक पुरानी नाप या तौल। ३. ऐसा पतला कपडा जिसमे कोई चीज छानी जा सके।

गोत—पु० [स० गोत्र] १ गोत्र। २ कुल, परिवार या वश। जैसे—नात का न गोत का, बाँटा माँगे पोत का।—कहा०। ३ समूह। उदा०—मनु कागदि कपोत गोत के उडाये। —रत्ना०।

†स्त्री० [हिं० गोतना] १ गोते या डुबाये जाने की क्रिया या भाव। २ तद्रा। ३ चिता। फिक्र।

गोतम—पु० [स० ब० स०, पृषो० सिद्धि] १. एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि जो अहल्या के पति थे। २ एक मत्रकार ऋषि। ३ दे० 'गौतम'।

गोतमी—स्त्री० [स० गोतम+ङीप्] गोतम ऋषि की पत्नी, अहल्या।

गोता—पु० [अ० गोत] १ गहरे जलाशय मे उतरकर अपने शरीर को जल मे इस प्रकार डुबाना कि बाहर कोई अग न रह जाय। डुबकी।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

मुहा०—**(किसी को) गोता देना**=किसी को जल मे उक्त प्रकार से डुबाना और निकालना।

२. नदी, समुद्र आदि के तल मे पड़ी हुई चीजे निकालने के लिए उक्त प्रकार से उसके तल तक जाने की क्रिया या भाव। ३ किसी अथाह या बहुत गहरी चीज या बात मे से किसी तत्त्व का पता लगाने का प्रयत्न। जैसे—साहित्य मे गोता लगाना। ४ इस प्रकार कही से अनुपस्थित या गायब हो जाना कि किसी को कुछ पता न चले। जैसे—यह धोबी तो महीने-महीने भर का गोता लगाया करता है। ५ सहसा होनेवाली कोई बहुत बडी भूल। (क्व०)

मुहा०—**गोता खाना**=(क) कोई बहुत बडी भूल या हानि कर बैठना। (ख) धोखे मे आना। छल मे फँसना।

†पु० [स० गोत्र] समान गोत्र या वश। जैसे—नाते-गोते के लोग।

गोताखोर—पु० [अ०] १ वह जो गहरे पानी मे गोता लगाकर नीचे की चीजें निकाल लाने का व्यवसाय करता हो। (डाइवर) २ जल के अदर गोता लगाकर चलनेवाली डुबकनी नाव। (सब मेरीन)

गोतामार†—पु०=गोताखोर।

गोतिया†—वि० [स० गोत्र] १ गोत्र-सबधी। २ अपने गोत्र का। गोती।

गोती—वि० [स० गोत्रीय] [स्त्री० गोतिन, गोतिनी] (व्यक्ति) जो अपने ही गोत्र का हो।

गोतीत—वि० [गो-अतीत, द्वि० त०] जो इन्द्रियो द्वारा न जाना जा सके। पु० ईश्वर।

गो-तीर्थ—पु० [मध्य० स०] गोशाला।

गोतीर्थक—पु० [सं० गोतीर्थ+कन्] सुश्रुत के अनुसार फोडे आदि चीरने का एक ढग या प्रकार।

गोत्र—पु० [स० गो√त्रै (पालन करना)+क] १ सतति। सतान। २ नाम। सज्ञा। ३ क्षेत्र। ४ वर्ग। समूह। ५ राजा का छत्र। ६ वढती। वृद्धि। ७. धन-सपत्ति। दौलत। ८ पर्वत। पहाड। ९. वधु। भाई। १०. कुल। वश। ११ भारतीय आर्यो मे किसी कुल या वश का एक प्रकार का अल्ल या सज्ञा जो किसी पूर्वज अथवा कुल-गुरु ऋषि के नाम पर होती है। वश-नाम। जैसे—काश्यप, शाडिल्य, भारद्वाज आदि गोत्र।

गोत्र-कार—पु० [स० गोत्र√कृ (करना)+अण्, उप० स०] वह ऋषि जो किसी गोत्र के प्रवर्त्तक माने जाते हो।

गोत्रज—वि० [सं० गोत्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] १ किसी के गोत्र मे उत्पन्न। २. वे जो एक ही गोत्र मे उत्पन्न हुए हो। गोती।

गोत्र-प्रवर्त्तक—वि० [प० त०] (ऋषि) जो किसी गोत्र के मूल पुरुष माने जाते हो। जैसे—भारद्वाज, वसिष्ठ आदि।

गोत्र-सुता—स्त्री० [प० त०] पार्वती।

गोत्रा—स्त्री० [स० गोत्र+टाप्] १ गौओ का झुड या समूह। २ पृथ्वी।

गोत्री (त्रिन्)—वि० [स० गोत्र+इनि] एक ही अर्थात् समान गोत्र मे उत्पन्न होनेवाले (व्यक्ति)। गोती।

गोत्रोच्चार—पु० [गोत्र-उच्चार, प० त०], १ विवाह के समय वर और वधू के वश, गोत्र और पूर्वजो आदि का दिया जानेवाला परिचय। २ किसी के पूर्वजो तक को दी जानेवाली गालियाँ। (परिहास और व्यंग्य)

गोदंत—पु० [प० त०] गोदती हरताल।

गोदंती—स्त्री० [स० गोदन्त+ङीष्] वह कच्ची और सफेद हरताल जो अभी शुद्ध न की गई हो।

गोद—स्त्री० [स० क्रोड] १ बैठे हुए व्यक्ति का सामने का कमर और घुटनो के बीच का भाग जिसमे बच्चो आदि को लिया जाता है। २ खडे हुए मनुष्य का वक्ष.स्थल और कमर के बीच का वह स्थान जिस पर बच्चो को बैठाकर हाथ के घेरे से सँभाला जाता है।

पद—गोद का बच्चा=ऐसा छोटा बच्चा जो प्राय गोद मे ही रहता हो।

मुहा०—(किसी को) गोद बैठाना या लेना =किसी को अपना दत्तक पुत्र बनाना।

३. स्त्रियो की साडी का वह भाग जो पेट तथा वक्ष.स्थल पर रहता है। अचल।

मुहा०—(किसी के आगे) गोद पसारकर बिनती करना या माँगना = अत्यन्त अधीनता से माँगना या प्रार्थना करना। अपनी असहाय तथा दीन अवस्था वतलाते हुए किसी से किसी बात की प्रार्थना करना। **गोद भरना**=(क) सौभाग्यवती स्त्रियो के अचल मे मगल कामना से नारियल, मिठाई आदि रखना जो शुभ समझा जाता हे। (ख) सतान होना। औलाद होना।

४ कोई ऐसा स्थान जहाँ किसी को माँ की गोद का-सा आराम तथा सुख मिले। जैसे—प्रकृति की गोद मे ही आपका लालन-पालन हुआ था।

गोद-गुदाली—पु० [देश०] गूलू नाम का पेड।

गोदनहर—स्त्री०=गोदनहारी।

गोदनहरा—पु० [हिं० गोदना+हरा (प्रत्य०)] १ गोदना गोदने का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। २ वह व्यक्ति जो माता छापता या टीका (सूई) लगाता हो।

गोदनहारी—स्त्री० [हिं० गोदना+हारी (प्रत्य०)] कजड या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदती है।

गोदना—स० [हिं० खोदना=गडाना] १. कोई नुकीली तथा कडी चीज निरर्थक किसी कोमल तल मे गडाना या चुभाना। जैसे—चमडे मे सूई गोदना। २ बिलकुल निरर्थक रूप मे अक्षर, चिह्न आदि बनाना। जैसे—लडका लिखता क्या है, यो ही बैठा-बैठा गोदा करता है। ३ किसी को उत्तेजित या प्रेरित करनेवाली कोई क्रिया करना या बात कहना। ४. चुभती या लगती हुई कोई कडवी या कडी बात कहना। ५ हाथी के मस्तक मे अकुश गडाना।

†स०=गोडना (जमीन)।

पु० १. तिल के आकार का वह विशिष्ट प्रकार का चिह्न या बिंदी जो शरीर के किसी अग पर सुन्दरता, पहचान आदि के लिए नील या कोयले के पानी मे डुबाई हुई सूई बार-बार गडाकर बनाई जाती है।

विशेष—ऐसी एक या अनेक बिंदियाँ प्राय गाल, कलाई, आदि पर यों ही अथवा कुछ विशिष्ट आकृतियो के रूप मे बनाई जाती है।

२ वह सूई जिसकी सहायता से अनेक प्रकार के रोगो (जैसे—प्लेग, शीतला, हैजा आदि) से रक्षित रखने के लिए कुछ विशिष्ट ओषधियाँ शरीर मे प्रविष्ट की जाती है। सूई। ३. खेत गोडने का कोई उपकरण।

गोदनी—स्त्री० [हिं० गोदना] १. कोई ऐसी चीज जिससे गोदा जाय। २ गोदना गोदने की सूई।

गोदर—वि० [हिं० गदराना] १ गदराया हुआ। २ पूरी तरह से युवा अवस्था मे आया हुआ।

गोदा—स्त्री० [स० गो√दा (देना)+क—टाप्] १ गोदावरी नदी। २. गायत्री स्वरूपा महादेवी।

पु० [हिं० गोदना] चित्रकला मे वे छोटे-छोटे बिन्दु जो आकृतियो आदि के स्थान और रूप-रेखा स्थिर करने के लिए लगाये जाते हैं।

पु० [?] १. कटवाँसी बाँस। २. वृक्ष की नई डाल या शाखा। ३ गूलर, पीपल, वड आदि के पके हुए फल।

गो-दान—पु० [प० त०] १. शास्त्रीय विधि से सकल्प करके ब्राह्मण को गौ दान करने की क्रिया जिसका विधान कुछ विशिष्ट शुभ अवसरो पर अथवा प्रायश्चित्त आदि के लिए किया गया है। २ एक धार्मिक सस्कार जो विवाह से पहले ब्राह्मण कुमार को १६ वर्ष, क्षत्रिय को २२ वर्ष और वैश्य को २४ वर्ष की अवस्था मे करना चाहिए। केशात।

गोदाना—स० [हिं० गोदना] (गोदना) गोदने का काम किसी से कराना।

गोदाम—पु० [अ० गोडाउन] वह घर या कमरा जहाँ पर बिक्री के लिए खरीदी हुई वस्तुएँ जमा करके रखी जाती है।

गो-दारण—पु० [स० गो√दृ (विदारण)+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०] १. जमीन खोदने की कुदाल। २ जमीन जोतने का हल।

गोदावरी—स्त्री० [स० गो√दा (देना)+वनिप्—ङीप्, र] दक्षिण भारत

की एक प्रसिद्ध पवित्र नदी जो नासिक के पास से निकलकर बगाल की खाडी मे गिरती है।

गोदी†—स्त्री०=गोद।
स्त्री० [मरा०] समुद्र का घाट जहाँ से जहाजो पर माल चढाया-उतारा जाता है। (डाक)
पु० [देश०] एक प्रकार का बबूल जो प्राय. नहरो के किनारे बाँधो पर लगाया जाता है।

गोदी मजदूर—पु० [मरा०+फा०] जहाजो पर से माल उतारने तथा चढाने का काम करनेवाला मजदूर।

गो-दुह—पु० [सं० गो√दुह (दूहना)+क्विप्, उप० स०] १ गौ दुहनेवाला। २. ग्वाला।

गोदूनिका—स्त्री[व०] बेंत की जाति का एक वृक्ष जो पूर्वीय बगाल और आसाम मे बहुत होता है। इसकी टहनियों से चटाइयाँ बनाई जाती हैं।

गो-दोहन—पु० [ष० त०] गौ का दूध दुहने की क्रिया या भाव।

गोदोहनी—स्त्री० [स० दोहन+ङीप्, गो-दोहनी, ष० त०] वह बरतन जिसमे गौ का दूध दूहा जाता है।

गो-द्रव—पु० [ष० त०] गौ या बैल का मूत्र । गोमूत्र।

गोध—स्त्री० [सं० गोधा] छिपकली की तरह का गोह नामक एक जगली जानवर।

गो-धन—पु० [ष० त०] १. गौओ का झुड या समूह । २ [कर्म० स०] गौ या गौओ के रूप मे होनेवाली सपत्ति। ३ [गो-धन=शब्द, व० स०] चौडे फलवाला एक प्रकार का तीर। ४ जलाशयो के पास रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर भूरा, पैर हरे और चोच लाल होती है।
†पु० =गोवर्धन।

गोधना†—पु०[स० गोवन] भाई दूज के दिन का एक कृत्य जिसमे स्त्रियाँ गोबर से भाई के शत्रु की आकृति बनाकर उसे मूसल से मारती हैं।

गो-धर—पु० [सं० √धृ (धारण)+अच्, गो-धर, ष० त०] पर्वत। पहाड।

गो-धर्म्म—पु० [ष० त०] पशुओ की भाँति पराये पुरुषों या स्त्रियों से सभोग करना।

गोधा—स्त्री० [स० √गुध् (लपेटना)+घ ? टाप्] छिपकली की तरह का एक जगली जानवर। गोह।

गोधा-पदी—स्त्री० [व० स०, ङीप्] १. मूसली नाम की ओषधि। २. हसपदी लता।

गोधावती—स्त्री० [सं० गोधा+मतुप्, वत्व, ङीप्]=गोधापदी।

गोधिका—स्त्री० [स० √गुध्+ण्वुल्-अक, टाप् इत्व] १ छिपकली। २ घड़ियाल की मादा।

गोधिकात्मज—पु० [गोधिका-आत्मज, ष० त०] गोह की तरह का एक छोटा जानवर।

गोधिया†—स्त्री० दे० 'गोइयाँ'।

गोधी—स्त्री० [स० गोधूम] एक प्रकार का गेहूँ जो दक्षिण मे अधिकता से होता है और जिसकी भूसी जल्दी नही छूटती।

गोधूम—पु० [स०√गुध्+ऊम] १. गेहूँ। २ नारंगी।

गोधूमक—पु० [स० गोधूम-क=शिर, व० स०] गेहुँअन नाम का साँप।

गो-धूलि—स्त्री० [मध्य० स०] १. गौओ के चलने-फिरने या दौडने से उडनेवाली धूल। २ सायकाल का वह समय जब जगल से चरकर लौटती हुई गौओं के खुरो से धूल उडती है और जो शुभ कार्यो के लिए उपयुक्त समझा जाता है।

गोधूली—स्त्री०=गोधूलि।

गो-धेनु—स्त्री० [कर्म० स०] वह गौ जो दूध देती हो और जिसके साथ उसका बच्चा भी हो।

गोध्र—पु० [स० गो√धृ (धारण)+क] पहाड। पर्वत।

गोनंद—पु० [स० गो√नन्द् (प्रसन्न होना)+णिच्+अण्] १. कार्तिकेय के एक गण का नाम। २ एक प्राचीन देश।

गोन—स्त्री० [स० गोणी, गु०, व० गुण, सिं० गूणी, मरा० गोण] १. वह दोहरा बोरा जो अनाज आदि भरकर बैलो की पीठ पर लादा जाता है। २ अनाज आदि भरने का बोरा। ३ कोई बडा थैला। ४ अनाज आदि की एक पुरानी तौल जो १६ मानी (२५६ सेर) की होती थी।
†स्त्री० [?] एक प्रकार का साग।
†स्त्री० दे० 'गून'।
*पुं०=गमन।

गोनर†—पु०=गोनरा।

गोनरखा—पु० [हिं० गोन=रस्सी+रखना] १ नाव का वह मस्तूल जिसमे गोन बाँधकर उसे खीचते हैं। २ उक्त मस्तूल मे रस्सी बाँधकर नाव को खीचनेवाला मल्लाह या मजदूर।

गोनरा—पु० [स० गुंद्रा] उत्तरी भारत मे होनेवाली एक प्रकार की लम्बी घास जो पशुओ के खाने और चटाइयाँ बनाने के काम आती है।

गोनर्द—पु० [स० गो√नर्द् (शब्द)+अच्] १. उत्तर-पश्चिमी भारत का एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतजलि का जन्म हुआ था। २ महादेव। शिव। ३ नागरमोथा। ४. सारस पक्षी।

गोनर्दीय—पु०[स० गोनर्द+छ-ईय] महर्षि पतजलि जो गोनर्द देश के थे।

गो-नस—पु० [स० गो-नासिका, व० स०, नस आदेश] १ एक प्रकार का साँप। २ वैक्रात मणि।

गोना*—स० [स०गोपन] १. छिपाना। लुकाना। उदा०—होइ मैदान परी अब गोई।—जायसी। २ चुराना। उदा०—नगर नवल कुँवर वर सुंदर मारग जात लेत मन गोई।—सूर।

गो-नाथ—पु०[ष० त०] १. गोस्वामी। २ बैल।

गोनास—पु० =गोनस।

गोनिया—स्त्री० [स० कोण, हिं० कोना+इया (प्रत्य०)] बढई, लोहार आदि का एक समकोण औजार जिससे वे दीवार, लकडी आदि की सिधाई जाँचते है।
पु० [हिं० गोन] वह जो अपनी या बैलों की पीठ पर गोन, अर्थात् बोरा लादकर ढोता हो।
पु० [हिं० गोन=रस्सी+इया (प्रत्य०)] रस्सी बाँधकर उससे नाव खीचनेवाला मल्लाह।

गो-निष्यंद—पु० [स० नि√स्यन्द् (बहना)+अच् गो-निष्यद, ष० त०] गोमूत्र।

गोप—पु० [स० गो√पा (पालना)+क] १. गौओ का पालन करनेवाला और स्वामी। २. ग्वाला। अहीर। ३ गोशाला का अध्यक्ष। ४

राजा। ५ उपकारक, रक्षक और सहायक। ६. गाँव का मुखिया। ७. बोल या मुर नाम की ओषधि।

पु० [स० गुफ] सिकरी या जजीर की तरह की गले मे पहनने की माला।

गोपक—पु० [स० गोप+कन्] १ गोप जाति का व्यक्ति। २ बहुत से गाँवो का मालिक या सरदार। ३ [√गुप् (रक्षा करना, छिपाना)+ण्वुल्-अक्] रक्षा करनेवाला व्यक्ति।

वि० १ गोपन करने या छिपानेवाला। २ रक्षक।

गोप-ज—वि० [सं० गोप√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] [स्त्री० गोपजा] गोप से उत्पन्न।

पु० गोप जाति का पुरुष।

गोपजा—स्त्री० [स० गोपज+टाप्] १. गोप जाति की स्त्री। २ राधिका।

गो-पति—पु० [प० त०] १ शिव। २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४. सूर्य। ५. राजा। ६. नौ उपनदो मे से एक। ७ बैल या साँड। ८ ग्वाला। अहीर। ९ ऋषभ नामक ओषधि। १०. वह जो बहुत बोलता हो। मुखर। वाचाल।

गो-पथ—पु० [प० त०] अथर्ववेद का एक ब्राह्मण।

गो-पद—पु० [प० त०] १. गौओ के रहने का स्थान। २ गौ का खुर। ३. गौ के खुरो या पैरो का चिह्न या निशान। ४ गौ के खुर से जमीन मे पडनेवाला गड्ढा। उदा०—गो-पद जल बूडहि घट जोनी।—तुलसी।

गोप-दल—पु० [गोपद√ला (लेना)+क, उप० स०] सुपारी का पेड।

गोपदी (दिन्)—वि० [स० गोपद+इनि] गाय के खुर के समान बहुत छोटा।

गोपन—पु० [स० √गुप् (रक्षा करना)+ल्युट्—अन] १. छिपाने या लुकाने की क्रिया या भाव। २ कोई बात किसी दूसरे से छिपाकर रखना। दुराव। ३ रक्षा। ४ व्याकुलता। ५. चमक। दीप्ति। ६. डाँट-डपट। भर्त्सना। ७ निंदा। ८ भय। ९. छिपी हुई जगह। उदा०—दोनो सखियाँ मिल गोपन मे करती मर्म निवेदन।—पत। १० तेजपत्ता।

वि० छिपा हुआ। गुप्त। उदा०—मद हास्य से गोपन स्वीकृति देती थी।—पत।

गोपना—स० [स० गोपन] १. छिपाना। २. मन की बात प्रकट न करना।

गोपनीय—वि० [स०√गुप्+अनीयर] १ (वस्तु) जिसे दूसरो से छिपाकर रखना आवश्यक हो। २ (बात या रहस्य) जिसे दूसरो पर प्रकट न करना चाहिए।

गोपयिता (तृ)—वि० [स०√गुप्+णिच्+तृच्] छिपानेवाला।

गोप-राष्ट्र—पु० [मध्य० स०] आधुनिक ग्वालियर का प्राचीन नाम।

गोपांगना—स्त्री० [गोप अगना, प० त०] १ गोप जाति की स्त्री। गोपी। २ अनतमूल नाम की ओषधि।

गोपा—वि० [स० गोपक से] १. छिपानेवाला। २ जो मन की बात न बतलाता हो अथवा रहस्य प्रकट न करता हो।

स्त्री० [स० गोप+टाप्] १ गोप जाति की स्त्री। गोपी। २ अहीरिन। ग्वालिन। ३ श्यामा नाम की लता। ४ गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा का दूसरा नाम।

गोपाचल—पु० [स० गोप-अचल, मध्य० स०] १. ग्वालियर के पास के पर्वत का पुराना नाम। २. ग्वालियर।

गोपायक—वि० [स०√गुप्+आय्+ण्वुल्-अक] १. छिपानेवाला। २ रक्षा करनेवाला।

गोपायन—पु० [स०√गुप्+आय्+ल्युट्-अन] १. गोपन। २ रक्षण।

गो-पाल—पु० [स० गो√पाल् (पालन करना)+णिच्+अण, उप० स०] १ गौ का पालक, रक्षक और स्वामी। २. अहीर। ग्वाला। ३ श्रीकृष्ण। ४ मन जो इंद्रियो का पालन और रक्षा करता है। ५. राजा। ६ एक प्रकार का छद जिसका प्रत्येक चरण १५ मात्राओं का होता है। इसमे ८ और ७ पर यति होती है।

गो-पालक—पु० [प० त०] १ गौओं का पालन करनेवाला। गो-पाल। ग्वाला। २ शिव। ३ राजा।

गोपाल-कक्षा—स्त्री० [प० त०] महाभारत के अनुसार पश्चिम भारत का एक प्राचीन देश।

गोपाल-तापन, गोपाल-तापनीय—पु० [सं०√ तप्+णिच्+ल्यु-अन, गोपाल-तापन, प० त०] [गोपाल-तापनीय=सेव्य, ब० स०] एक उपनिषद् जिसकी टीका शकराचार्य तथा अन्य कई विद्वानो ने की है।

गोपाल-मंदिर—पु० [प० त०] वैष्णवो का वह बडा मन्दिर जिसमे गोपाल जी की मूर्ति रहती है।

गो-पालि—पु० [स० गो √पाल्+णिच्+इन्, उप०स०] १. एक प्रवर। २. महादेव। शिव।

गोपालिका—स्त्री० [स० गोपालक+टाप्, इत्व] १ ग्वालिन। अहीरिन। २ सारिवा नाम की ओषधि। ३ ग्वालिन नामक बरसाती कीडा। गिजाई।

गोपाली—स्त्री० [स० गोपाल+ङीप्] १ गौ पालनेवाली स्त्री। २ कार्तिकेय की एक मातृका।

गोपाष्टमी—स्त्री० [गोप अष्टमी मध्य० स०] कार्तिक शुक्ला अष्टमी। कहते है कि इसी दिन श्रीकृष्ण ने गोचारण आरभ किया था। इस दिन गोपूजन, गो प्रदक्षिणा आदि का माहात्म्य कहा गया है।

गोपिका—स्त्री० [स० गोपी+कन्-टाप्, ह्रस्व] १. गोप जाति की स्त्री। गोपी। २. अहीरिन। ग्वालिन।

वि० स्त्री० 'गोपक' का स्त्री०।

गोपिका-मोदी—स्त्री० [स० गोपिका√मुद् (प्रसन्न होना)+णिच्+अण् ङीप्, उप० स०] एक सकर रागिनी जो कामोद और केदारी के योग से बनती है।

गोपित—भू० कृ० [स० √गुप्+णिच्+क्त] १ छिपा या छिपाया हुआ। गुप्त। २ रक्षित।

गोपिनी—स्त्री० [स० गोपी] १ गोप जाति की स्त्री। गोपी। २ [सं०√गुप्+णिनि—ङीप्] श्यामा लता। ३ तात्रिको की तत्र पूजा के समय की नायिका।

वि० स्त्री० छिपानेवाली।

गोपिया—स्त्री० [हिं० गोफन] गोफन। ढेलवाँस (दे०)।

गोपी (पिन्)—वि० [स० √गुप्+णिनि] [स्त्री० गोपिनी] १ छिपानेवाला। २ बचाने या रक्षा करनेवाला।

स्त्री० [स० गोप+ङीप्] १. गोप जाति की स्त्री। २ अहीर या

ग्वाले की स्त्री। ३ व्रज की उक्त जाति की प्रत्येक स्त्री जो श्रीकृष्ण से प्रेम करती थी। ४ [√गुप्+अच्—ङीप्] सारिवा नाम की ओषधि।

गोपी-चंदन—पुं० [मध्य० स०] द्वारका के सरोवर की वह पीली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं (आज कल यह नकली भी बनने लगी है।)

गो-पीत—पुं० [स० गो=गोरोचना-पीत, उपमि० स०] एक प्रकार का खंजन पक्षी।

गोपीता—स्त्री०=गोपी।

गोपीय—पुं० [स० गो√पा (पीना, रक्षा करना)+थक्, निं ईत्व] १ वह सरोवर जहाँ गौएँ जल पीती हो। २ एक प्राचीन तीर्थ। ३ पालन-पोषण या रक्षण। ४ राजा।

गोपी-नाथ—पुं० [प० त०] गोपियो के स्वामी, श्रीकृष्ण।

गो-पुच्छ—पुं० [प० त०] १ गौ की पूँछ। गाय की दुम। २ एक प्रकार का बदर। ३ एक प्रकार का गावदुम हार। ४ एक प्रकार का पुराना बाजा।

गो-पुटा—स्त्री० [व० स०, टाप्] बडी इलायची।

गो-पुत्र—पुं० [प० त०] १ सूर्य के पुत्र। कर्ण। २. गाय का बछडा।

गोपुर—पुं० [स०√गुप्(रक्षा)+उरच्] १ बडे किले, नगर, मदिर आदि का ऊँचा, बडा और मुख्य द्वार। २ बडा दरवाजा। फाटक। ३ गोलोक। स्वर्ग।

गोपेंद्र—पुं० [गोप-इद्र, प० त०] १ गोपो का राजा या स्वामी। २ श्रीकृष्ण।

गोप्ता(प्तृ)—वि० [स०√गुप्+तृच्] १ छिपानेवाला। २ रक्षक। पुं० विष्णु।
स्त्री० गगा।

गोप्य—वि० [स० √गुप्+ण्यत्] १ गुप्त रखने या छिपाने लायक। गोपनीय। २ बचाकर या रक्षित रखे जाने के योग्य। ३ छिपा या बचाकर रखा हुआ। गुप्त।
पुं० १. दास। सेवक। २. दासी से उत्पन्न की हुई संतान। ३ कोई चीज रेहन या गिरवी रखने का वह प्रकार जिसमे रेहन रखी हुई चीज के आय-व्यय पर उसके स्वामी का ही अधिकार रहता हो और जिसके पास चीज रेहन रखी जाय वह केवल सूद लेने का अधिकारी हो। दृष्टबधक। ४. [गोपी+यत्] गोपियो का वर्ग या समूह।

गो-प्रचार—पुं० [प० त०] गौओ के घूमने-फिरने और चरने की जगह। चरागाह। चरी।

गो-प्रवेश—पुं० [व० स०] गौओं के चरकर लौटने का समय। सध्या। गोधूलि।

गोफ—पुं० [?] गले मे पहनने का सोने का एक प्रकार का गहना।

गो-फण—स्त्री० [स०?] जख्म, फोडे आदि पर बाँधने की एक प्रकार की पट्टी या बधन। (सुश्रुत)

गोफन(१)—पुं० [स० गोफण] छीके की तरह का एक प्रकार का जाल जिसमे भरे हुए छोटे-छोटे ककड, पत्थर उसे रस्सी से बाँधकर घुमाने पर चारो ओर वेग से गिरते हैं और चोट पहुँचाते हैं। ढेलवाँस।

गोफा—पुं० [स० गुम्फ] १ अरुई, केले, सूरन आदि का नया मुँह-बँधा कल्ला। २ एक हाथ की उँगलियो को दूसरे हाथ की उँगलियो मे फँसाने से बनने वाली मुद्रा।
क्रि० प्र०—जोडना।

गो-बंधन—पुं० [प० त०] बधन (रस्सी या साँकल) जिससे गाय बाँधी जाय। उदा०—गोबधन कचन पै धारे फेंटा झुकि रह्यो माथ।—हरिश्चन्द्र।

गोबर—पुं० [स० गोमय] गाय का मल या विष्ठा जो हिंदुओ मे पवित्र माना जाता और सूख जाने पर ईधन के रूप मे जलाया जाता है।
क्रि० प्र०—पाथना।
मुहा०—गोबर खाना=एक बार अनुपयुक्त ढग से काम करने पर तथा अपनी भूल मालूम होने या सफलता न मिलने पर भी फिर से उपयुक्त ढग से काम न करना।

गोबर-गणेश—वि० [हिं० गोबर+स० गणेश] १ जो आकार-प्रकार या रूप-रंग की दृष्टि से बहुत ही भद्दा हो। २ निरा मूर्ख (व्यक्ति)।

गोबर-गिद्धा—पुं० [हिं० गोबर+गिद्धा] गिद्ध की जाति का एक पक्षी।

गोबर-धन—पुं०=गोवर्धन।

गोबरहारा—पुं० [हिं० गोबर+हारा (प्रत्य०)] गोबर उठाने तथा पाथनेवाला व्यक्ति।

गोबराना†—स० [हिं० गोबर+ना (प्रत्य०)] जमीन या दीवार पर गोबर पोतना या लीपना।

गोबरिया—पुं० [हिं० गोबर] बछनाग की जाति का एक पहाडी पौधा।

गोबरी—स्त्री० [हिं० गोबर+ई (प्रत्य०)] १. उपला। कडा। गोहरा। २ जमीन या दीवार पर गोबर से की जानेवाली पोताई या लिपाई।
क्रि० प्र०—करना।—फेरना।
स्त्री० [देश०] जहाज के पेंदे का छेद। (लश०)
मुहा०—गोबरी निकालना=जहाज के पेंदे मे छेद करना।

गोबरैला—पुं० [हिं० गोबर+ऐला या औला (प्रत्य०)] गोबर मे उत्पन्न होने और रहनेवाला एक छोटा कीडा।

गोबरौरा, गोबरौला†—पुं०=गोबरैला।

गोबिया—पुं० [देश०] आसाम की पहाडियो मे होनेवाला एक प्रकार का छोटा बाँस।

गोबी†—स्त्री०=गोभी।

गोभ—पुं० [स० गुफ वा हिं० गोफा] पौधो का एक रोग जिसमे उनकी जडो मे से नये-नये अकुर निकलने के कारण उनकी बाढ रुक जाती है।

गोभा—स्त्री० [?] १ पानी की तरग। लहर। २. मन की तरंग। उमग। उदा०—जसुमति ढोटा व्रज की सोभा देखि सखि कछु औरै गोभा।—सूर।
पुं० दे० 'गाभा'।

गोभिल—पुं० [स०] सामवेदीय गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

गोभी—स्त्री० [स० गोजिह्वा=बन गोभी वा गुफ=गुच्छा] १. एक प्रकार की जगली घास। २ एक प्रसिद्ध पौधा जिसमे सफेद रग का बडा फूल लगता है और जिसकी तरकारी बनाई जाती है। ३ उक्त पौधे का फूल।

गो-भुज—पुं० [स० गो√भुज् पालन करना)+क, उप० स०] राजा।

गो-भृत—पुं० [सं० गो√भृ (धारण करना)+क्विप् उप० स०] पर्वत। पहाड़।

गोमंत—पुं० [सं०] १. सह्याद्रि के अंतर्गत एक पहाड़ी जहाँ गोमती देवी का स्थान है। यह सिद्धपीठ माना जाता है। २ वह जो कुत्ते पालता और बेचता हो।

गोम—पुं० [सं० गगन] आकाश। उदा०—मिली सेन दूनों निजरि गज्जे गोम निसान।—चदवरदाई।

स्त्री० [देश०] १. घोड़ों की नाभि पर होनेवाली एक प्रकार की भँवरी। २. पृथ्वी। (डिं०)

गो-मक्षिका—स्त्री० [मध्य० स०] कुकुरमाछी। कुकरौंछी।

गोमती—स्त्री० [सं० गो+मतुप्–ङीप्] १. उत्तर प्रदेश की एक नदी जो सैदपुर के समीप गंगा मे मिलती है। २ बंगाल की एक नदी। ३. एक देवी जिसका प्रधान स्थान गोमंत पर्वत पर है। ४. एक वैदिक मंत्र। ५. ग्यारह मात्राओं का एक छंद।

गोमती-शिला—स्त्री० [मध्य० स०] हिमालय पर की एक चट्टान या पहाड़ी।

विशेष:—कहते है कि अर्जुन का शरीर यहीं पहुँचने पर गला था।

गो-मत्स्य—पुं० [उपमि० स०] एक प्रकार की मछली। (सुश्रुत)

गोमथ—पुं० [सं० गो√मथ् (विलोना)+अच्] गोप। ग्वाला।

गोमय—पुं० [सं० गो+मयट्] गाय का मल या विष्ठा। गोबर।

गोमर—पुं० [हिं० गौ+मर (प्रत्य०)=मारनेवाला] १. गौ को मारनेवाला व्यक्ति। २. कसाई। बूचर।

गो-मल—पुं० [ष० त०] गोबर।

गो-मांस—पुं० [ष० त०] गाय का मांस जिसे खाना हिंदू शास्त्रों मे वर्जित है।

गोमा—स्त्री० [देश०] गोमती नदी।

पुं० [फा०] १. एक प्रकार का वृक्ष जिसके फूलों का रस कान की पीड़ा दूर करता है। २. उक्त वृक्ष का फूल।

गोमाय—पुं०=गोमायु।

गोमायु—पुं० [सं० गो√मा (शब्द करना)+उण्, युक् आगम] १. गीदड़। श्रृगाल। २ एक प्रकार का मेढक।

गोमी (मिन्)—पुं० [सं० गो+मिनि] गीदड़ (श्रृगाल)।

स्त्री० [?] पृथ्वी। (डिं०)

गोमुख—पुं० [ष० त०] १. गौ का मुँह। २. [ब० स०] मगर नामक जलजंतु। ३ योग मे एक प्रकार का आसन। ४. टेढ़ा-मेढ़ा घर। ५. ऐपन। ६ एक यक्ष का नाम। ७ इंद्र के पुत्र जयंत का सारथी। ८. नरसिंहा नामक बाजा।

वि० गौ के समान मुँहवाला। जिसका मुँह गौ के मुँह के समान हो। जैसे—गोमुख नाली या शंख, गोमुख संधि या सेंध।

पद—गोमुख नाहर या व्याघ्र=ऐसा परम क्रूर और हिंसक व्यक्ति जो ऊपर से देखने पर गौ के समान निरीह और सीधा-सादा जान पड़े।

गो-मुखी—स्त्री० [सं० गोमुख+ङीप्] १. कपड़े की वह कोणाकार थैली जिसमे हाथ डालकर जप करते समय माला फेरते हैं। जप-गुथली। २ गंगा का उद्गम स्थान जो गौ के मुख के आकार का है। ३. गौ के मुँह के आकार की घोड़े की भौंरी। ४. चमड़े से मढ़ा हुआ एक प्रकार का पुराना बाजा। ५. राढ़ देश की एक नदी जिसे आज-कल गोमुख कहते हैं।

गो-मूत्र—पुं० [ष० त०] गौ का मूत्र जो हिन्दुओं मे बहुत पवित्र तथा अनेक रोगों की ओषधि माना गया है।

गो-मूत्रिका—स्त्री० [सं० गोमूत्र+ठन्–इक] १. एक विशेष प्रकार का चित्र-काव्य जो लहरियेदार रेखा के रूप में होता है।

विशेष—इस चित्र-काव्य का नाम इसलिए 'गो-मूत्रिका पड़ा है कि इसकी पंक्तियाँ प्रायः वैसी ही होती है जैसी गौ या बैल के चलते-चलते जमीन पर मूतने से बनती है।

२. अंकन, चित्रण आदि मे लहरियेदार बेल। बैलमुतनी। बरधमुतान। (मिएन्डर) ३ सुगंधित बीजोंवाली एक प्रकार की घास।

गो-मृग—पुं० [मध्य० स०] नील गाय।

गो-मेद—पुं० [सं० गो√मिद् (चिकना करना)+णिच्+अच्, उप० स०]=गोमेदक।

गोमेदक—पुं० [सं० गोमेद+कन्] १. एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो कई रंगों का होता है। राहुमणि। (जर्कन) २. काकोल नामक विष। ३. पत्रक नाम का साग। ४. कबाबचीनी। शीतल-चीनी।

गो-मेध—पुं० [सं०√मेध् (हिंसा)+घञ्, गो-मेध, ष० त०] अश्वमेध की तरह का एक यज्ञ जिसमें गौ के मांस से हवन किया जाता था और जो कलियुग में वर्जित है।

गोयँड़—स्त्री० [सं० गोष्ठ अथवा हिं० गाँव+मेड़] गाँव के आस-पास की भूमि।

गोयंदा—पुं०=गोइंदा।

गोय*—पुं० दे० 'गेंद' (खेलने का)।

गोया—अव्य० [फा०] १. जैसे। २ मानो।

गो-यान—पुं० [मध्य० स०] वह गाड़ी जिसे गाय या बैल खींचते हों।

गो-रंकु—पुं० [तृ० त०] १. वह जो मंत्रों का पाठ करता हो। २. दिगम्बर साधु। ३. कैदी। ४. एक प्रकार का जल-पक्षी।

गोर—स्त्री० [फा०] जमीन मे खोदा जानेवाला वह गड्ढा जिसमे मुसलमान आदि मुर्दा गाड़ते हैं। कब्र।

†पुं० [अ० गोर] [वि० गोरी] फारस देश का एक पुराना प्रान्त।

†वि० [सं० गौर] १. गौर वर्ण का। गोरा। २. सफेद।

गोरका—पुं० [देश०] अरैल नाम का वृक्ष।

गो-रक्ष—पुं० [सं० √रक्ष् (रक्षा करना)+घञ्, गो-रक्ष, ष० त०] १. गौ की रक्षा करने का काम। २. [गो √रक्ष्+अण्, उप० स०] ग्वाला। ३. नेपाल देश का निवासी। गोरखा। ४. नारंगी।

गो-रक्षक—वि० [ष० त०] गौओं की रक्षा करनेवाला।

पुं० १. गोपाल। २. ग्वाला।

गो-रक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० गो√रक्ष्+णिनि, उप० स०] [स्त्री० गोरक्षिणी] गोरक्षक।

गोरख—पुं०=गोरखनाथ (योगी)।

गोरख-इमली—स्त्री० [हिं० गोरख+इमली] बहुत बड़ा और मोटे तनेवाला एक प्रकार का पेड़।

गोरख-ककड़ी—स्त्री० [हिं० गोरख+ककडी] फूट नामक ककडी या फल। गोरखी।

गोरख-डिब्बी—स्त्री० [हिं० गोरख+डिब्बी] पानी का वह कुड या स्रोत जिसमे से गरम अथवा खनिज पदार्थों से युक्त जल निकलता हो।

गोरख-धंधा—पु० [हिं० गोरखनाथ+धंधा] १. ऐसा कठिन और जटिल काम या बात जिसका निराकरण सहज मे न हो सकता हो। २ ऐसी झझट या बखेडा जिससे जल्दी छुटकारा न हो। ३. कई तारो, कडियों या लकडी के टुकडो का वह समूह या रचना जिसे जोडने या अलग-अलग करने के लिए विशेष बुद्धिबल की आवश्यकता होती है।

विशेष:—ये एक प्रकार के खिलौने से होते हैं।

गोरख-नाथ—पु० [गोरक्षनाथ] ई० १५ वी शताब्दी के एक प्रसिद्ध अवधूत महात्मा और हठयोगी जिनका चलाया हुआ गोरखपथ नामक सप्रदाय है। इन्ही के नाम पर गोरखपुर शहर बसा है।

गोरख-पंथ—पु० [हिं० गोरखनाथ+पथ] महात्मा गोरखनाथ द्वारा प्रस्थापित एक पथ या सप्रदाय।

गोरख-पंथी—वि० [हिं० गोरखनाथ+पथी] गोरखनाथ के चलाये हुए पथ का अनुयायी।

गोरख-मुंडी—स्त्री० [स० मुण्डी] एक प्रकार की घास जिसमे घुण्डी की तरह के छोटे गोल फल लगते है, ये फल रक्तशोधन के लिए बहुत गुणकारी कहे गये है।

गोरखर—पु० [फा०] गधे की जाति का एक प्रकार का जगली पशु जो गधे से बड़ा और घोडे से छोटा होता तथा उत्तर-पश्चिमी भारत मे पाया जाता है।

गोरखा—पुं० [स० गोरक्ष अथवा हिं० गो+रखना] १ नेपाल देश का एक प्रदेश। २ उक्त प्रदेश में रहनेवाली एक वीर जाति। ३. उक्त जाति का पुरुष।

गोरखाली—स्त्री० [हिं० गोरख] गोरखा नामक जाति और प्रदेश की बोली।

गोरखी—स्त्री०=गोरख-ककडी।

गोर-चकरा—पु० [देश०] सन की जाति का एक जगली पौधा।

गो-रज (स्)—स्त्री० [मध्य० स०] गौओ के चलते समय उनके खुरों से उड़नेवाली धूल जो पवित्र मानी गई है।

गोरटा—वि० [हिं० गोरा] [स्त्री० गोरटी] गोरे रंगवाला। गोरा।

गोरड़ा†—वि० [स्त्री० गोरडी]=गोरटा। (राज०) उदा०—तियाँ तिहारी गोरडी, दिन दिन लाख लहाड।—ढोलामारू।

†पु० [हिं० गोडना] ईख। ऊख। (अवधी)

गोरन—पु० [देश०] १ कुछ नदियो तथा समुद्र के किनारे पर होनेवाला एक प्रकार का पेड जिसकी लकडी का रग लाल होता है। २ उक्त वृक्ष की लकडी जो नावें बनाने के काम आती है। ३ उक्त वृक्ष की छाल जो चमडा सिझाने के काम आती है।

गोर-मदाइन—स्त्री० [?] इद्रधनुष। (बुदेल०)

गोरया—पु० [देश०] अगहन मे होनेवाला एक प्रकार का धान।

गोरल—पु० [देश०] एक प्रकार का जगली बकरा।

†वि० =गोरा (गौर वर्णवाला)।

†स्त्री० गौरी। पार्वती।(राज०)उदा०—म्हाँना गुरु गोविन्द री आण, गोरल ना पूजाँ।—मीराँ।

गो-रव—पु० [ब० स०] केसर।

गोरवा—पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जिसकी छोटी तथा पतली टहनियों से हुक्को के नैचे बनाये जाते है।

गो-रस—पु० [ष० त०] १ गौ का दूध। २ दही। ३ छाछ। मठा। ४ इन्द्रियो के सुख-भोग से मिलनेवाला आनन्द।

गोरसर—पु० [देश०] बाँस के पखो मे डडी के पास लगाई जानेवाली कमाची।

गोरसा—पु० [स० गोरस] [स्त्री० गोरसी] वह बच्चा जो गाय का दूध पीकर पला हो।

गोरसी—स्त्री०[स० गोरस+ई (प्रत्य०)]एक प्रकार की छोटी अगीठी जिस पर दूध गरम किया जाता है।

गोरा—वि० [स० गौर, प्रा० गोर, ब० उ० प० मरा० गोरा, सि० गोरो, गु० गोरूँ, ने० गोरो] (व्यक्ति) जिसके शरीर का वर्ण बरफ की तरह सफेद और स्वच्छ हो। गौर वर्णवाला।

पद—गोरा भभूका=बहुत अधिक गोरा-चिट्टा।

पु० [स्त्री० गोरी] अमेरिका, यूरोप आदि ठढे देशो मे रहनेवाला ऐसा व्यक्ति जिसका वर्ण गौर हो।

पु०[देश०] १ एक प्रकार की कल जिससे नील के कारखाने मे बट्टियाँ काटी जाती है। २ एक प्रकार का नीबू।

गोराई†—स्त्री० [स० गौर +हिं० आई] १. गोरे होने की अवस्था या भाव। गोरापन। २ व्यक्ति का रूप सम्बन्धी सौन्दर्य।

गोराटी—स्त्री० [स० गो०√रट्(रटना)+अण्—ङीप्] मैना पक्षी।

गोराडू—पु० [देश०] ऐसी मिट्टी जिसमे बालू का भी अश हो।

गोरा-पत्थर—पु० [हिं० गोरा+पत्थर] सफेद रग का एक प्रकार का चिकना तथा मुलायम पत्थर। घीया पत्थर। सग-जराहत। (सोप स्टोन)

गोरामूंग—पु० [हिं० गोरा+मूंग] एक प्रकार का जगली मूंग।

गो-राष्ट्र—पु० [मध्य० स०] प्राचीन भारत का एक प्रदेश जिसमे अधिकतर गोप जाति के लोग रहते थे।

गोरिल्ला—पु० [अफ्रिका] अफ्रीका के जगलो मे रहनेवाला एक प्रकार का वनमानुस।

गोरी—स्त्री० [स०गौरी] १ वह स्त्री जिसका वर्ण गौर हो। २. रूपवती स्त्री। सुन्दरी।

वि० [अ० गोर देश०] फारस के गोर नामक देश का। जैसे—मुहम्मद गोरी।

गोरू—पु० [स० गोरूप;पा० गोरूप, ब० गरु, उ० ने० गोरु, प० गोरु, मरा०गुरूँ] गौ, बकरी, भैस आदि सीगवाले पालतू पशु। (कैटिल)

पुं० [स० गोरुत] दो कोस की दूरी। (राज०)

गोरू-चोर—पु० [हिं० गोरू+चोर] दूसरो की गौएँ, बकरियाँ, भैसे आदि चुरानेवाला व्यक्ति। (ए वैक्टर)

गो-रूप—पु० [ब० स०] महादेव।

गो-रोच—पु० [स० गो√रुच् (दीप्ति)+अच्, उप० स०] हरताल।

गो-रोचन—पु० [मध्य० स०] एक पीला सुगधित द्रव्य जो गौ के पित्ताशय से निकलता और पवित्र माना जाता है।

गो-रोचना—स्त्री० [मध्य० स०] गोरोचन।
गोर्खा—पु०=गोरखा।
गोर्खाली—स्त्री०=गोरखाली।
गोर्द, गोर्ध—पु० [स०√गुर् (उद्यम)+ददन् नि० सिद्धि] मस्तिष्क।
गोलंदाज—पु० [फा०] वह व्यक्ति जो तोप मे गोला भरकर चलाता हो।
गोलदाजी—स्त्री० [फा०] तोप से गोले चलाने का काम या कला।
गोलंबर—पु० [हि० गोल+अवर] १ वास्तु मे किसी प्रकार की गोलाकार रचना। जैसे—गुवद, वगीचो आदि मे वना हुआ गोल चवूतरा। २. गोलाई। ३. कलवूत जिसपर रखकर जूता, टोपी आदि चीजे सीते है। (कालिव)
गोल—पु० [स० √गुड् (रक्षण)+अच्, डस्य ल.] १ मडलाकार या वृत्ताकार वनावट या रचना। २ गोलाकार पिंड। गोला। ३ ज्योतिप मे, गोल यत्र। ४ विधवा का जारज पुत्र। गोलक। ५ मदन या मैनफल नामक वृक्ष। ६ मुर नामक ओपधि। ७. मिट्टी का गोलाकार घडा। ८ दक्षिण-पश्चिमी युरोप के कुछ विशिष्ट भागो का पुराना नाम।
वि० १ जिसकी गोलाई वृत्त के समान हो। (सर्कुलर) जैसे—अँगूठी, पहिया, सूर्य आदि। २ जो वहुत कुछ वृत्ताकार हो। जैसे—गोल मुँह, गोल सिर। ३ (वस्तु) जिसके वाहरी तल का प्रत्येक विंदु उसके केंद्र से वरावर दूरी पर हो। (स्फेरिकल) जैसे—खेलने का गेद, फेंकने का गोला। ४ (वस्तु) जिसकी आकृति वेलन जैसी हो। जैसे—गोल गिलास, गोल पाया।
पु० [स० गोल-योग] उपद्रव। खलवली।
पद—गोल वात=ऐसे रूप मे कही जानेवाली वात जिसका ठीक-ठीक आशय या भाव किसी की समझ मे न आता हो। कई अर्थोवाली वात।
मुहा०—गोल करना=कोई चीज कही से चुपके से हटा देना। गायव करना। **गोल रहना**=विलकुल चुप रहना। **गोल होना**=कहीं से चुपचाप हट जाना। खिसक जाना।
पु० हि० 'गोला' का सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गोलंदाज, गोलवर।
पु० [फा० गोल] १ एक ही जाति के वहुत से पशुओं का समूह। जैसे—भेडो का गोल। २ एक ही प्रकार या वर्ग के वहुत से लोगो का झुड।
क्रि० प्र०—वाँधना।
पु० [अ०] १ फुटवाल, हाकी आदि खेलने के मैदानो का वह भाग जहाँ एक दल के खेलाडी गेंद पहुँचाकर दूसरे दल को हराते हैं। २. उक्त स्थान मे गेंद पहुँचाने की अवस्था या भाव।
गोलक—पु० [स० गोल+कन् वा√गुड्+ण्वुल्—अक,डस्य ल] १. किसी प्रकार का गोल पिंड या डला। २ विधवा स्त्री की वह सतान जो उसके जार या यार से उत्पन्न हो। ३ मिट्टी का वहुत वड़ा घडा। कुडा। ४. फूलो का निकाला हुआ सुगंधित सार भाग। ५ आँख का डेला। ६ आँख की पुतली। ७ वह थैली या सदूक जिसमे किसी विशेष कार्य के लिए धन सग्रह किया जाय। गुल्लक। ८ वह थैली या सदूक जिसमे दूकानदार रोज की विक्री के रुपए-पैसे रखते है। ९. गुवद या उसके आकार की कोई गोल रचना। उदा०—गिर रहा निस्तेज गोलक जलधि मे असहाय।—प्रसाद। १०. दे० 'गो-लोक'।

गोल-कलम—स्त्री० [हि० गोल+कलम] एक प्रकार की छेनी जो धातुओ पर नक्काशी करने के काम मे आती है।
गोल-कली—स्त्री० [हि० गोल+कली] एक प्रकार का अगूर और उसकी लता।
गोल-गप्पा—पु० [हि० गोल+अनु० गप] घी, तेल आदि मे तली हुई एक प्रकार की छोटी फुलकी जो खटाई के रस मे डुबा कर खाई जाती है।
वि० (उक्त के आधार पर) जो गोल गप्पे के समान गोलाकार और फूला हुआ हो।
गोल-पंजा—पुं० [हि० गोल+पजा] पुरानी चाल का वह जूता जिसकी नोक ऊपर की ओर मुडी हुई नही होती थी। मुडा जूता।
गोल-पत्ता—पु०=गोल-फल।
गोल-फल—पु० [देश०] गुलगा नामक ताड (वृक्ष) का फल। [स० व० स०] मदन वृक्ष।
गोल-मटोल—वि० [हि० गोल+मटोल (अनु०)] १. वहुत कुछ गोलाकार। २ नाटे कद तथा भारी शरीरवाला। (व्यक्ति)
गोल-माल—पु० [स० गोल (योग)] ऐसी अव्यवस्था या गडवड़ी जो जान-बूझकर और दुष्ट उद्देश्य से की गई हो।
गोल-मिर्च—स्त्री० [हि० गोल+मरिच] काली मिर्च।
गोल-मुँहाँ—पु० [हि० गोल+मुँह] कसेरो की एक प्रकार की गोल मुँह-वाली हथौडी।
गोल-मेज—स्त्री० [हि० गोल+फा० मेज] वह गोल मेज (या मेजो का मडलाकार विन्यास) जिसके चारो ओर वैठकर कुछ दलो या देशो के प्रतिनिधि पूर्ण समानता के भाव मे किसी समस्या पर न्यायोचित रूप से और सवको सन्तुष्ट करने के उद्देश्य से विचार करें।
गोल-मोथी—स्त्री० [हि० गोल+मोथा] मोथे की जाति का एक पेड जिसके डठलो से चटाइयाँ वनाई जाती हैं।
गोल-यत्र—पु० [कर्म० स०] ज्योतिपियो का एक प्रकार का यत्र जिससे सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि ग्रहो और नक्षत्रो की गति-विधि, स्थिति, अयन, परिवर्तन आदि का पता लगाते हैं। और जो प्राचीन भारत मे वाँस की तीलियों आदि से वनता था।
गोल-योग—पु० [कर्म० स०] १. ज्योतिप मे एक योग जो एक ही राशि मे छ या सात ग्रहो के एकत्र होने से होता और वहुत अनिष्टकारक माना जाता है। २ गडवडी। गोल-माल।
गोलर—पु० [देश०] कसेरू।
गोलरा—पु० [देश०] एक प्रकार का लम्वा सुन्दर पेड जिसके हीर की लकडी चमकीली और वहुत कडी होती है। इसके पत्तो से चमडा सिझाया जाता है और लकड़ी से नावें, जहाज आदि और खेती के औजार वनाये जाते है।
गोल-विद्या—स्त्री० [प० त०] ज्योतिप विद्या का वह अग जिसमे आकाश-स्थ पिंडो और ग्रहो के आकार-विस्तार, ऋतु-परिवर्तन, गति-विधि आदि का विचार तथा विवेचन होता है।
गो-लांगूल—पु० [स० व० स०] एक प्रकार का वदर जिसकी पूँछ गौ की पूँछ की तरह होती है।
गोला—पु० [स० गोल] [स्त्री० गोली] १ गेद की तरह का कोई गोलाकार पिंड या वस्तु। २ धागो, रस्सियों आदि को लपेटकर वनाया हुआ उक्त आकार का पिंड। जैसे—डोरी या सूत का गोला। ३ किसी

पिसी हुई वस्तु के चूर्ण को भिगोकर या पानी आदि मे सानकर बनाया जानेवाला पिंड। जैसे—आटे या भाँग का गोला। ४ लोहे का वह गोल बडा पिंड जिसे व्यायाम करते समय लोग हाथ से उठाकर दूर फेंकते है।

मुहा०—**गोला उठाना**=प्राचीन काल मे अपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिए जलता हुआ लोहे का गोला इस प्रतिज्ञा से उठाना कि यदि हम निर्दोष है तो हमारा हाथ नही जलेगा।

५ धडाके से फटनेवाला एक प्रकार का रासायनिक विस्फोटक पिंड।

पद—**गोला बारूद**=युद्ध मे शत्रुओ का नाश करनेवाली सामग्री। अस्त्र-शस्त्र आदि। (अम्यूनिशन्स)

६ वास्तु मे, खभे, दीवार आदि के ऊपर की गोलाकार रचना। ७ मिट्टी, काठ आदि का गोलाकार ढाँचा जिसके ऊपर कपडा लपेट-कर पगडी तैयार की जाती है। ८ नारियल का वह भाग जो उसके ऊपर की जटा छीलने के बाद बच रहता है। गरी का गोला। ९ कुछ विशिष्ट प्रकार की लकडियो का वह लबा तना या लट्ठा जो छाजन आदि के काम के लिए छतो पर रखा जाता है। १० एक प्रकार का ठोस बाँस जो डडे, छडियाँ आदि बनाने के काम आता है।

मुहा०—**गोला लाठी करना**=लडको का हाथ पैर बाँधकर दोनो घुटनो के बीच मे डडा डालना। (दुष्टता करने पर दिया जानेवाला एक प्रकार का दड या सजा)

११ पेट मे होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे थोडी थोडी देर पर पेट के अन्दर नाभि से गले तक वायु का एक गोला आता-जाता हुआ जान पडता है। १२ अनाज, किराने आदि का बडा बाजार या मडी। १३ घास का गट्ठर। १४ जगली कबूतर। १५ कूएँ के ऊपर की गोला-कार जगत। १६ तालाब या नदी के किनारे का घाट। १७ एक प्रकार का बेत जो बहुत लबा और मुलायम होता है तथा टोकरे आदि बनाने के काम मे आता है।

स्त्री० [स०] १ बच्चो के खेलने का गेंद या गोली। २ छोटा घडा या मटकी। ३ गोदावरी नदी। ४ दुर्गा। ५ सखी। सहेली। ६ स्याही। मसि। ७ मैनसिल। ८ मडली।

वि० वृत्त के आकार का गोल।

पु० [अ० गोल=झुड] पशु-पक्षियो आदि का झुड।

पु० [हि० गोली=दासी] गोली (अर्थात् दासी) के गर्भ से उत्पन्न लडका या व्यक्ति।

विशेष—मध्ययुग मे राजपूताने (राजस्थान) मे ऐसे लोगो की अलग जाति या वर्ग ही बन गया था।

पु० [अ० गुलाम] ताश मे का गुलाम नाम का पत्ता।

गोलाई—स्त्री० [हि० गोल+आई (प्रत्य०)] १ किसी वस्तु के गोल होने का भाव या स्थिति। २ किसी गोल वस्तु के किनारे पर का बाहरी गोल घेरा।

गोलाकार—वि० [गोल-आकार ब० स०] जिसकी आकृति गोल हो। गोल आकारवाला। जैसे—गोलाकार चबूतरा।

गोलाधार—वि० [हि० गोला+धार] मूसलाधार। (वर्षा)

गोलाध्याय—पु० [गोल-अध्याय, ब० स०] भास्कराचार्य का एक ग्रथ जिसमे भूगोल और खगोल का वर्णन है।

गोलार्द्ध—पु० [गोल-अर्द्ध, ष० त०] १ किसी प्रकार के गोले का आधा भाग। २ गोल या पृथ्वी का आधा भाग। (हेमिस्फियर)

विशेष—भूमध्य रेखा पृथ्वी को उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धो मे विभा-जित करती है और खमध्य रेखा पृथ्वी को पूर्वी तथा पश्चिमी गोलार्द्धो मे।

३ उक्त किसी आधे भू-भाग का मानचित्र।

गोलासन—पु० [गोल-आसन=क्षेपण, ब० स०] पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप।

गोलियाना†—स० [हि० गोल या गोला] १. कोई चीज गोल करना। गोले के रूप मे बनाना या लाना। २ छोटी-छोटी गोलियाँ बनाना। ३ पशुओ को औषध आदि गोली के रूप मे बनाकर जबरदस्ती खिलाना। ४ जबरदस्ती कोई चीज या बात किसी के गले मे उतारना। ५ कोई चीज कही से गायब करना। गोल करना। उडाना।

गोली—स्त्री० [हि० गोला का स्त्री० और अल्पा०] १ कोई छोटा गोला या गोलाकार पिंड। वटिका। जैसे—दवा की गोली, बदूक की गोली, रेशम या सूत की गोली। २ मिट्टी का वह छोटा गोलाकार पिंड जिससे बच्चे कई तरह के खेल खेलते है। ३ उक्त पिंडो से खेला जानेवाला खेल। ४ उक्त प्रकार का शीशे का वह गोलाकार या लबोतरा पिंड जो तमचो, बदूको आदि से शत्रुओ को मारने अथवा पशु-पक्षियो का शिकार करने के लिए चलाया जाता है।

मुहा०—**गोली खाना**=बदूक आदि की गोली का आघात सहना। **(किसी काम या व्यक्ति को) गोली मारना**=उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना। जैसे—गोली मारो ऐसे नौकर को।

५ किसी प्रकार का घातक वार।

मुहा०—**गोली बचाना**=किसी सकट या आपत्ति से धूर्ततापूर्वक अपना बचाव कर लेना।

स्त्री० [?] १ मिट्टी का छोटा घडा। ठिलिया। २ पीले या बादामी रग की गौ। ३ पशुओ का एक प्रकार का रोग।

स्त्री० [स० गोला=सखी] १ मध्य युग मे वह स्त्री जो वधुओ की सहेली के रूप मे उसके साथ ससुराल भेजी जाती थी।

विशेष—ऐसी स्त्रियाँ प्राय दासी वर्ग की होती थी। आगे चलकर राज-स्थान आदि मे ऐसी दासियो की एक अलग जाति या वर्ग ही बन गया था, जो पूर्ण रूप से दास ही माना जाने लगा था। भारत मे स्वराज्य होने और सामतशाही का अत होने पर समाज का यह वर्ग भी स्वतन्त्र हो गया।

२ छोटी-मोटी सेवाएँ या टहल करनेवाली दासी।

पु० [अ० गोल] फुटबाल, हाकी आदि का वह खिलाडी जो गोल मे खडा होता है तथा उसमे गेंद जाने से रोकता है। (गोलकीपर)

गोलीय—वि० [स० गोल+छ—ईय] १ गोल-सबधी। २ खगोल, भूगोल आदि से सबध रखनेवाला।

गोलैंदा—पु० [देश०] महुए का फल। कोइदा।

गो-लोक—पु० [मध्य० स०] १ विष्णु या कृष्ण का निवास-स्थान जो पुराणानुसार ब्रह्माड मे सब लोको से ऊपर और श्रेष्ठ माना गया है। २ स्वर्ग। ३ ब्रजमडल।

गोलोक-वास—पु० [स० त०] परलोक वास। (मृत्यु के लिए आदरार्थक)

गोलोकेश—पु० [गोलोक-ईश, ष० त०] श्री कृष्णचन्द्र।

गोलोचन—पु०=गोरोचन।

गो-लोमी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १ सफेद दूब। २. वेश्या।

गोलौआ—पु० [हिं० गोल] बाँस आदि का बड़ा टोकरा।

गो-वध—पु० [स० ष० त०] गौ को मार डालना जो हिन्दुओं में बहुत बड़ा पाप समझा जाता है।

गोवना*—स०=गोना (छिपाना)।

गो-वर्द्धन—पु० [ष० त०] १. गौओं का पालन, रक्षण और वृद्धि करने का काम। २ [गो√वृध् (बढ़ना)+णिच्+ल्यु—अन] वृंदावन का एक प्रसिद्ध पर्वत। कहते हैं अति वर्षा से व्रज की रक्षा करने के लिए श्री कृष्ण ने इसे उँगली पर उठा लिया था। ३ उक्त पर्वत के पास की एक बस्ती।

गोवर्धन-धारी (रिन्)—पु० [गोवर्धन√धृ (धारण करना)+णिनि, उप० स०] श्रीकृष्ण।

गोवर्ल—पु० [स० गोवल, ब० स०] गोप। ग्वाला। उदा०—जिम गोवळ माँहि सोहइ गोव्यद।—नरपतिनाल्ह।

गोविद—पु० [स० गो√विद् (लाभ)+श, नुम्] १ परब्रह्म। परमात्मा। २ तत्त्व शास्त्र और वेदान्त का अच्छा ज्ञाता या पंडित। ३. गौओं या गोशाला का मालिक। ४. श्रीकृष्ण। ५ बृहस्पति। ६ शंकराचार्य के गुरु का नाम।

गोविंद-द्वादशी—स्त्री० [मध्य० स०] फागुन महीने के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि।

गोविंद-पद—पु० [ष० त०] मोक्ष। निर्वाण।

गोवि—पु० [स० ?] सकीर्ण राग का एक भेद।

गो-वीथी—स्त्री० [ष० त०] चन्द्रमा के मार्ग का वह अंश जिसमें भाद्रपद, रेवती और अश्विनी तथा किसी किसी के मत से हस्त, चित्रा और स्वाती नक्षत्रों का समूह है।

गो-वैद्य—पु० [ष० त०] १. पशुओं की चिकित्सा करनेवाला वैद्य। २. [उपमि० स०] अनाड़ी या ना-समझ चिकित्सक। (परि० हास्य)

गो-व्रज—पु० [ष० त०] १. गौओं का झुंड या समूह। गोठ। २. गोचर भूमि। चरागाह।

गो-व्रत—पु० [स० त०] गो-हत्या लगने पर उसके प्रायश्चित्त के लिए किया जानेवाला व्रत जिसमें बराबर एक मास तक किसी गौ के पीछे-पीछे घूमना और केवल गौ का दूध पीकर रहने का विधान है।

गोश—पु० [फा०] सुनने की इंद्रिय। कान।

गोश-गुजार—वि० [फा०] किसी के कानों तक पहुँचाया हुआ (विवरण या समाचार)।

गोशपेंच—पु० [फा०] कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोशम—पु० दे० 'कोसम'।

गोशमायल—पु० [फा०] मोतियों का वह गुच्छा जो कान के पास पगड़ी पर लटकाया जाता था।

गोशमाली—स्त्री० [फा०] १ किसी को दंड देने के लिए उसके कान उमेठना या मलना। २. चेतावनी मिली हुई भर्त्सना। ताड़ना।

गोशवारा—पु० [फा०] १ खजक नामक पेड़ का गोंद जो मस्तगी का-सा और मस्तगी ही की जगह काम में भी लाया जाता है। २. कान का कुंडल या बाला। ३ ऐसा बड़ा मोती जो सीप में से अकेला ही निकला हो। ४. कलगी। तुर्रा। ५. कलाबत्तू का बुना हुआ पगड़ी का आँचल जो प्रायः शोभा के रूप में कान के पास लटकता है। ६ संख्याओं का योग। जोड़। ७. वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर मद का आय-व्यय अलग-अलग दिखाया गया हो। ८. पंजी, बही आदि में भिन्न मदों या विभागों का शीर्षक।

गोशा—पु० [फा० गोशः] १. अलगाव। कोण। कोना। २. एकान्त स्थान। ३. कमान की नोक। धनुष की कोटि। ४. ओर। दिशा।

गोशा-नशीन—वि० [फा०] [भाव० गोशा-नशीनी] घर-गृहस्थी या संसार से विरक्त होकर एकान्त वास करनेवाला।

गो-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ गौएँ पाली तथा रखी जाती हों। बहुत सी गौओं के रहने का स्थान।

गो-शीर्ष—पु० [ब० स०] १ एक पर्वत का प्राचीन नाम। २ उक्त पर्वत पर होनेवाला चन्दन। ३ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

गो-शृंग—पु० [ब० स०] १. एक प्राचीन ऋषि। २ एक प्राचीन पर्वत। ३ कीकर। बबूल।

गोश्त—पु० [फा०] १. शरीर के अन्दर का मांस। २. मारे हुए पशु का मांस जो लोग खाते हैं। जैसे—बकरी या भेड़ का गोश्त।

गोष्ठ—पु० [सं० गो√स्था (ठहरना)+क] १ गौओं के रहने का स्थान। गोशाला। २. [गोष्ठी+अच्] एक ही प्रकार के पशुओं के रहने का स्थान। जैसे—अश्व गोष्ठ। ३. एक प्रकार का प्राचीन श्राद्ध जो बहुत से लोग मिलकर करते थे। ४. परामर्श, सलाह मशविरा। ५ दल। मंडली।

गोष्ठ-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ लोग मिलकर परामर्श आदि करते हों। सभा का भवन या स्थल।

गोष्ठागार—पु० [गोष्ठ-आगार, ष० त०] =गोष्ठ-शाला।

गोष्ठी—स्त्री० [सं० गोष्ठ+ङीष्] १. छोटा गोष्ठ। २. परिचितों या मित्रों की मंडली या समुदाय। ३ औपचारिक रूप से होनेवाली ऐसी बैठक जिसमें किसी विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए मित्र-मंडली के सदस्य भाग लेते हैं। जैसे—उद्यान गोष्ठी, साहित्य-गोष्ठी। ४ इस प्रकार होनेवाला विचार-विमर्श। ५ एक प्रकार का एकांकी नाटक जिसमें ५ या ७ स्त्रियाँ और ९ या १० पुरुष हों।

गोष्पद—पु० [स० ष० त० सुट् नि० या गो√पद् (गति)+अच्] १. गौओं के रहने का स्थान। गोष्ठ। २. वह गड्ढा जो गीली जमीन पर गौ का खुर पड़ने से बनता है। ३. प्रभास क्षेत्र के अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ। ४. दे० 'गोपद'।

गोस—पु० [?] १. एक प्रकार का झाड़ जिसमें से गोंद निकलता है। २ तड़का। प्रभात।

पु० [फा० गोश] १. कान। २ जहाज का रुख इस प्रकार कुछ टेढ़ा करना कि उसे ठीक प्रकार से हवा लगे। (लश०)

गोसई—स्त्री० [देश०] कपास के पौधों का एक रोग जिसके कारण उनमें फूल नहीं लगते।

गोसठ*—स्त्री० =गोष्ठी।

गोसमायल†—पु०=गोशमायल।

गो-सर्ग—पु० [ष० त० वा० ब० स०] वह समय जब गौएँ चरने के लिए खोलकर छोड़ी जाती हैं; अर्थात् प्रातःकाल।

गोसली†—स्त्री० दे० 'गोधूलि'।

गोसल्ल—पु० [अ० गुस्ल] स्नान। उदा०—करि गोसल्ल पवित्र होइ चिन्त्यौ रहमानम्।—चदवरदाई।

गोसव—पु० [स० गो√सू (हिंसा)+अप् (आधारे)] गोमेध-यज्ञ।

गोसहस्री—स्त्री० [गो-सहस्र प० त०, +अच्-डीष्] ज्येष्ठ और कार्तिक मासों की अमावास्याएँ।

गोसा—पु० [स० गो] उपला। कडा

†पुं० =गोशा।

गोसाईं—पु० [स० गोस्वामी] १ उत्तर भारत की एक जाति जो गृहस्थ होने पर भी प्राय गेरुए वस्त्र पहनती है (कदाचित् ऐसे त्यागियो के वशज जो फिर गृहस्थ आश्रम मे आ गये थे)। २. साधु-सन्यासियो और त्यागियो के लिए सम्बोधन। ३ जितेंद्रिय। ४. मालिक। स्वामी। ५ ईश्वर। वि० वडा। श्रेष्ठ।

गोसाती—स्त्री० [फा० गोशा] विपरीत दिशा से चलनेवाली हवा जो जहाज के मार्ग मे वाधक होती है। (लश०)

गोसी—स्त्री० [देश०] समुद्र मे चलनेवाली एक प्रकार की नाव जिसमे कई मस्तूल होते है।

गोसी परवान—पु० [देश०] जहाज के मस्तूल मे पाल के ऊपरी छोर को हटाने-वढाने के लिए लगाया जानेवाला धातु का लवा छड।

गो-सुत—पु० [ष० त०] गौ का वच्चा। वछडा।

गो-सूक्त—पुं० [स० ष० त०] अथर्ववेद का वह अश जिसमे ब्रह्माण्ड की रचना का गौ के रूप मे वर्णन किया गया है। गोदान के समय इसका पाठ किया जाता है।

गोसैयाँ†—पु० [स० गोस्वामी, हिं० गोसाईं] १. गौओं का स्वामी। गोस्वामी। २ मालिक। स्वामी। ३ ईश्वर। प्रभु।

गोस्तना—स्त्री० [व० स०, टाप्] द्राक्षा। दाख। मुनक्का।

गो-स्तनी—स्त्री० [व० स० डीष्] दाख। मुनक्का।

गो-स्वामी (मिन्)—पु० [प० त०] १. वह जिसने इन्द्रियो को अपने वश मे कर लिया हो। जितेन्द्रिय। २ वैष्णव सप्रदाय मे आचार्यों के वशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी।

गोह—स्त्री० [स० गोधा] छिपकली की जाति का एक वडा जगली (लगभग डेढ फुट लवा) जतु जिसकी फुफकार विषैली होती है।

गोहटा†—पु० [हिं० गोह+टा (प्रत्य०)] गोह का वच्चा।

गो-हत्या—स्त्री० [प०त०] गौ को मार डालना, जो वहुत वडा पाप माना गया है।

गोहन—पु० [?] १. संगी। साथी। २ सग। साथ।

क्रि० वि० सग मे। साथ-साथ। उदा०—औ तोहि गोहन झाँझ मँजीरा।—जायसी।

गोहनियाँ†—पु० [हिं० गोहन+इया (प्रत्य०)] सगी। साथी।

गोहने—क्रि० वि० [हिं० गोहन] साथ मे। सग मिलकर। उदा०—गोहनै गुपाल फिरूँ ऐसी आवत मन मे। —मीराँ।

गोहर—पु० [स० गोधा] विसखोपरा नामक जतु।

गोहरा—पु० [हि० गो+ईल्ल या गोहल्ल] [स्त्री० अल्पा० गोहरी] गोवर पाथ कर धूप मे सुखाया हुआ उसका गोलाकार पिंड जो ईंधन का काम देता है। उपला। कडा।

गोहराना†—अ० [हिं० गोहार] १ पुकारना। वुलाना। आवाज देना। २ जोर से चिल्लाना। उदा०-वरु धरु मारु मारु गोहरावहिं।—तुलसी।

गोहरौरा—पु० [हिं० गोहरी+ओरा (प्रत्य०)] १. गोहरो अर्थात् उपलो या कडो का ढेर। २ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार का ढेर लगा रहता है।

गोहलोत—पु० [गोह (नाम)] =गहलौत (क्षत्रियो का वर्ग)।

गोहानी†—स्त्री० दे० 'गोइड'।

गोहार—स्त्री० [स० गो+हार (हरण)] १ प्राचीन भारत मे वह चिल्लाहट या पुकार जो अपनी गौओ के छिन जाने या लुटेरो द्वारा लुट जाने पर मचाई जाती थी। २ कष्ट, सकट, हानि आदि के समय अपनी रक्षा या सहायता के लिए मचाई जानेवाली पुकार।

मुहा०—**गोहार मारना** =सहायता के लिए पुकार मचाना। **गोहार लड़ना**=पहलवानो आदि का अखाड़े मे उतरकर तथा दूसरे पहलवानो आदि को ललकार कर उनसे लडना।

३. चिल्लाकर लोगो को इकट्ठा होने के लिए पुकारना। चिल्लाहट। ४. शोर। हल्ला।

गोहारी†—स्त्री० [हिं० गोहार] १. गोहार। २ किसी की क्षति पूरी करने के लिए दिया जानेवाला धन। (लश०) ३. वन्दरगाह में उचित से अधिक समय तक ठहरने के वदले मे दिया जानेवाला धन। (लश०)

गोही†—स्त्री० [स० गोपन] १ दुराव। छिपाव। २ गुप्त या छिपी हुई वात-चीत।

†स्त्री० [?] फलो की गुठली या वीज।

गोहुवन†—पु० =गेहुँअन (साँप)।

गोहूँ†—पु०=गेहूँ।

गौं—स्त्री० [स० गम्, प्रा० गवँ] १. अपने स्वार्थ या हित के साधन की प्रवल इच्छा। प्रयोजन। मतलव। जैसे—वह अपनी गौं को आवेगा।

पद—**गौं का यार**=मतलवी। स्वार्थी।

मुहा०—**गौं गाँठना या निकालना**= अपना मतलव निकालना। स्वार्थ साधन करना। **गौं पडना**=मतलव होना।

२ प्रयोजन, स्वार्थ आदि सिद्ध होने का उपयुक्त समय। उदा०— ..... समय सयानी कीन्ही जैसी आई गौं परी।—तुलसी।

मुहा०—**गौं ताकना**=स्वार्थ साधने के लिए उपयुक्त अवसर की ताक मे रहना।

३. ढग। ढव। ४ तरह। प्रकार। उदा०—भोग करौ जोई गौं —सूर। ५ पार्श्व। पक्ष।

गौंच†—स्त्री० = कौछ।

गौंजिक—पु० [स० गुञ्जा+ठक्-इक] १. जौहरी। २ सुनार।

वि० गुंजा या घुँघची से सवध रखनेवाला।

गौंट—पु० [?] एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकडी वहुत कड़ी होती है।

गौंटा†—पु० [हिं० गाँव+टा (प्रत्य०)] १. छोटा गाँव। २ गाँव के सव लोगो से लिया जानेवाला चन्दा। वेहरी। ३ गाँव की गली या पगडडी। ४ वरात के घर लौट आने पर गाँव के लोगों को दिया जानेवाला दान।

गौंस†—स्त्री० = गौ।

गौंहाँ†—वि० [हिं० गाँव+हा (प्रत्य०)] गाँव का। गाँव-मवधी।

गौ—स्त्री० [स०गो] १. गाय। गैया। २ रहस्य सप्रदाय मे (क) मन की वृत्ति, (ख) आत्मा और (ग) इद्रियाँ तथा मन।
*अ० हिं० 'गया' का स्थानिक रूप। उदा०—अलपै लाभ मूलगौ खाई—कबीर।

गौख†—पु० =गौखा (गवाक्ष)।

गौखा†—पु० [स० गवाक्ष] १ छोटी खिड़की। २. आला। ताखा। ३ देहाती मकानो मे दरवाजे के पास का छोटा दालान या बैठक।
पु० [हिं० गौ=गाय] १ गाय या बैल का चमडा। २ गावदी। मूर्ख।

गौखी†—स्त्री० [हिं० गौखा] १ गाय या बैल की खाल का बना जूता। २ जूता।

गौगा—पु० [अ०] १ शोर। गुल-गपाडा। हल्ला। २ अफवाह। जनश्रुति।

गौचरी—स्त्री० [हिं० गौ+चरना] मध्य युग मे, वह कर जो जमीदार अपने खेतो मे गौएँ आदि चरानेवाले किसानो, चरवाहो आदि से वसूल करता था।

गौड़—पु०[स०√गुड्(रक्षण)+घञ्] १ वग देश का वह प्राचीन विभाग जो किसी के मत मे मध्य बगाल से उडीसा की उत्तरी सीमा तक और किसी के मत से वर्तमान वर्दवान के आस-पास था। २ उक्त देश का निवासी। ३. पुराणानुसार ब्राह्मणो का एक वर्ग जिसके अन्तर्गत सारस्वत, कान्य-कुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड ये पाँच भेद हैं और इसी लिए जिन्हे पच गौड भी कहते है। ४. उक्त वर्ग के अन्तर्गत ब्राह्मणो की एक जाति जो दिल्ली के आस-पास तथा राजपूताने मे रहती है। ५. राजपूतो के ३६ कुलो या वर्गो मे से एक। ६ कायस्थो की एक उपजाति। ७. सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है और जो तीसरे पहर तथा सध्या के समय गाया जाता है।

गौड़-नट—पु० [ब० स०] गौड और नट के योग से बना हुआ एक सकर राग। (सगीत)

गौड़-पाद—पु० [ब० स०] स्वामी शकराचार्य के गुरु के गुरु का नाम।

गौड़-सारंग—पु० [ब० स०] गौड और सारग के योग से बना हुआ एक सकर राग जो दिन के तीसरे पहर मे गाया जाता है।

गौड़िक—वि० [स० गुड+ठक्-इक] १ गुड-सबधी। २ गुड का बना हुआ। ३ जिसमे गुड मिला हुआ हो।
पु० १ ईख। २ गुड से बनी हुई शराब।

गौड़िया†—वि०, पु० =गौडीय।

गौड़ी—स्त्री० [स० गुड+अण्-ङीप्] १. गुड को सडाकर बनाई हुई शराब। २ काव्य मे एक प्रकार की रीति या वृत्ति जो ओज गुण प्रधान मानी जाती है तथा जिसमें द्वित्व, टवर्गीय, संयुक्त आदि वर्ण तथा लबे-लबे समास अधिक होते है। ३. सध्या के समय तथा रात के पहले पहर मे गाई जानेवाली सपूर्ण जाति की एक रागिनी।

गौड़ीय—वि० [स० गौड+छ—ईय] १. गौड देश सबधी। गौड देश का। २ (साहित्यिक रचना) जिसमे गौडी वृत्ति के तत्व हो।
पु० चैतन्य महाप्रभु का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय।
स्त्री० गौड देश की बोली या भाषा।

गौड़ेश्वर—पु० [गौड-ईश्वर, ष० त०] महात्मा कृष्ण चैतन्य जिन्हे गौराग महाप्रभु भी कहते है।

गौण—वि० [स० गुण+अण्] १ जो किसी की तुलना मे महत्त्व, मान आदि के विचार से कुछ घटकर हो। जो प्रधान या मुख्य न हो। २ (शब्द का अर्थ) जो मुख्य या मूल अर्थ से भिन्न हो। लाक्षणिक (अर्थ)। ३ बहुत ही सामान्य रूप मे पूरक या सहायक बनने या होनेवाला।

गौण-चान्द्र—पु० [कर्म० स०] वह चाद्र मास जिसका आरभ कृष्ण प्रतिपदा मे माना जाता है।

गौणिक—वि० [स० गुण+ठक्—इक] १ गुण-सबधी। गुण या गुणो का। जैसे—पदार्थो की गौणिक समानता। २ सत्त्व, रज और तम इन तीनो गुणो से सबध रखनेवाला। ३. गुणवान्। गुणी।

गौणी—स्त्री० [स० गौण+ङीप्] साहित्य मे अस्सी प्रकार की लक्षणाओ मे से एक जिसमे किसी पद का अर्थ केवल गुण, रूप आदि के सादृश्यवाले (उसके कार्य, कारण या अग,गी भाववाले सबध से भिन्न) तत्त्व से निकलता है। जैसे—यदि कहा जाय 'देवदत्त सिंह है' तो शब्दार्थ के विचार से ऐसा होना असभव है, पर समझनेवाला लक्षणा के द्वारा इसमे यह समझता है कि देवदत्त सिंह के समान बलवान् या पराक्रमी है।
वि० स० गौण का स्त्री० रूप। (क्व०)

गौतम—पु० [स० गोतम+अण्] १. गोतम ऋषि के वशज। २ पुराणो आदि के अनुसार एक ऋषि जिन्होने अपनी स्त्री अहल्या को इन्द्र के साथ अनुचित सबध रखने के कारण शाप देकर पत्थर की तरह जड कर दिया था और जिसका उद्धार भगवान् श्री रामचन्द्र ने किया था। ३. न्याय-शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य और प्रणेता एक ऋषि जो ईसा से प्राय. ६०० वर्ष पहले हुए थे। ४ बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक बुद्धदेव का एक नाम। ५ एक स्मृतिकार ऋषि। ६ कृपाचार्य। ७ सप्तर्षि मंडल में का एक तारा। ८. नासिक के पास का वह पर्वत जिसमे गोदावरी नदी निकलती है। ९. क्षत्रियो का एक वश या वर्ग। १०. भूमिहारो का एक वश या वर्ग। ११ एक प्रकार का विष।

गौतमी—स्त्री० [स० गौतम+ङीप्] १. गोतम ऋषि की पत्नी, अहल्या। २ कृपाचार्य की स्त्री। ३ गोदावरी नदी। ४. गौतम ऋषि की बनाई हुई स्मृति। ५ दुर्गा।

गौद(ा)—पु० दे० 'घौद'।

गौदान—पु० =गोदान।

गौदुमा—वि० =गावदुम।

गौन—पु० [देश०] खेत मे वह छायादार स्थान जहाँ बैल बाँधे जाते हैं।
†पु० =गाउन।
पु० [स० गमन] १ जाना। २ गति। पैठ। ३ प्रवेश।

गौनई†—स्त्री० [स० गायन] गायन। सगीत।

गौनर्द—पु० [स० गोनर्द+अण्] पतंजलि ऋषि जो गोनर्द देश के थे।

गौनहर—स्त्री० =गौनहारी।

गौनहाई†—स्त्री० [हिं० गौना+हाई (प्रत्य०)] वह वधू जो गौना होने के बाद ससुराल मे पहले-पहल आई हो।

गौनहार—स्त्री० [हिं० गौन+हार (प्रत्य०)] १. वह स्त्री जो दुलहिन का गौना होने पर उसके साथ उसकी ससुराल जाय। २ दे० 'गौन-हारी'।

गौनहारिन—स्त्री० =गौनहारी।

गौनहारी—स्त्री० [हिं० गावना=गाना+हारी प्रत्य०] निम्न कोटि की

गानेवाली स्त्रियो का एक वर्ग या समाज। इस वर्ग की स्त्रियाँ प्राय टोली बनाकर गाती और वेश्यावृत्ति भी करती हैं।

गौना—पु० [स० गमन] विवाह के बाद की एक रसम जिसमे वर अपनी ससुराल से वधू को पहले-पहल अपने साथ अपने घर लाता है। द्विरागमन। मुकलावा।

क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—लाना।

†पु० [स्त्री० गौनी] बारहसिंघा।

गौपिक—वि० [स० गोपिका+अण्] गोपी-सबधी।

पु० गोपी का वशज या सतान।

गौपुच्छ—वि० [स० गोपुच्छ+अण्] गाय की पूँछ के समान। गावदुम।

गौप्तेय—पु० [स० गुप्ता+ढक्–एय] गुप्त जाति नामवाले (अर्थात् वैश्य) का पुत्र।

गौमुख—पु०=गोमुख।

गौमुखी—स्त्री०=गोमुखी।

गौमेद—पु०=गोमेद।

गौरंड—पु० [स० गौराग] गोरो अर्थात् अगरेजो का देश। विलायत। उदा०—कला कलित गौरड देस के दिव्य बनाए।—रत्नाकर।

गौर—वि० [स० गु (जाना)+र नि० सिद्ध] १. गौर वर्ण का। गोरे रंग का। गोरा। २ उज्ज्वल। स्वच्छ। ३ श्वेत। सफेद।

पु० १ सफेद या गोरा रग। २. लाल रग। ३ पीला रग। ४. चद्रमा। ५ सोना। स्वर्ण। ६ प्राचीन काल का एक प्रकार का बहुत छोटा मान जो तीन सरसो के बराबर होता था। ७ एक प्रकार का हिरन। ८ केसर। ९ धौ का पेड। १० सफेद सरसो। ११ बगाल के प्रसिद्ध वैष्णव महापुरुप चैतन्य महाप्रभु का एक नाम जो उनके शरीर के गौर वर्ण के कारण पडा था। १२ कैलास के उत्तर का एक पर्वत। १३. पद्म केसर। १४ बृहस्पति ग्रह का एक नाम।

स्त्री० [स० गौरी] हिंदुओ मे कही-कही प्रचलित एक प्रथा जिसमे विवाह निश्चित हो जाने पर कन्या के सबधी उसकी पूजा करते हैं।

पु० [?] ऊँचे कद का एक सुन्दर शाकाहारी जगली पशु जो भूरे रग का होता है।

†पु० दे० 'गौड'।

पु० [अ०] १ सोच-विचार। चिंतन। २. खयाल। ध्यान।

गौरक्ष्य—पु० [स० गोरक्ष+ष्यञ्] गौएँ पालने तथा उनकी रक्षा करने का काम। गो-रक्षण।

गौर-ग्रीव—पु० [ब० स०] पुराणानुसार एक देश जो कूर्म्म विभाग के मध्य मे है।

गौर-तलब—वि० [अ०] (विपय) जिस पर विचार करना आवश्यक हो। विचारणीय।

गौरता—स्त्री० [स० गौर+तल्+टाप्] १ गौर अर्थात् गोरे होने की अवस्था या भाव। गोराई। गोरापन। २ सफेदी।

गौर-मदाइन—पु० [?] इद्रधनुप। (बुदेल०)

गौरव—पु० [स० गुरु+अण्] १ गुरु अर्थात् भारी होने की अवस्था या भाव। गुरुता। भारीपन। २ गुरु अर्थात् बडे होने की अवस्था या भाव। बडप्पन। महत्व। ३. आदर। इज्जत। सम्मान। ४. अभ्युत्थान। उत्कर्प। उन्नति। ५ गभीरता। गहराई।

गौरवा*—पु० [स० गौर, गौरववत्] गौरैया का नर। चिडा पक्षी। उदा०—जाहि बया गहि पिय कठ लवा। करे मेराउ सोई गौरवा।—जायसी।

वि० गौरवयुक्त।

गौरवान्वित—वि० [गौरव-अन्वित, तृ० त०] गौरव या महिमा से युक्त। सम्मानित।

गौरवित—वि० [स० गौरव+इतच्] १ जिसका गौरव हुआ हो। २ जो गौरव से युक्त हो। सम्मानित।

गौर-शाक—पु० [ब० स०] एक प्रकार का महुआ और उसका फल।

गौर-शालि—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का शालि धान्य।

गौर-सुवर्ण—पु० [ब० स०] एक प्रकार का साग जिसके पत्ते छोटे, सुनहले और सुगधित होते है।

गौरांग—पु० [गौर-अग, ब० स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ चैतन्य महाप्रभु।

वि० [स्त्री० गौरागी] गोरे अग या शरीरवाला। जैसे—अमेरिका या यूरोप के निवासी।

गौरा—स्त्री० [स० गौर+टाप्] १ गोरे रग की स्त्री। २ पार्वती। गौरी। ३ हल्दी। ४ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

गौरार्द्रक—पु० [गौर-आर्द्रक, कर्म० स०] अफीम, सखिया, कनेर आदि स्थावर विष।

गौरास्य—पु० [गौर-आस्य ब० स०] एक प्रकार का बदर जिसके शरीर का रग काला और मुँह गोरे रग का होता है।

गौराहिक—पु० [गौर-अहि, कर्म० स० +कन्] एक प्रकार का साँप।

गौरि—पु० [स० गौर+इञ्] आगिरस ऋषि।

†स्त्री०=गौरी।

गौरिक—वि० [स० गौर+ठन्—इक] गोरा।

पु० सफेद सरसो।

गौरिका—स्त्री० [स० गौरी+कन्–टाप्, ह्रस्व] आठ वर्ष की कन्या। गौरी।

गौरिया—पु० [?] १. मिट्टी का बना हुआ छोटा हुक्का। २ एक प्रकार का मोटा कपडा।

†स्त्री० दे० 'गौरैया'।

गौरिल—पु० [स० गौर+इलच्] १. सफेद सरसो। २ लोहे का चूरा।

गौरी—स्त्री० [स० गौर+ङीप्] १ गोरे रग की स्त्री। २ पार्वती। ३ वरुण की पत्नी। ४ आठ वर्ष की कन्या। ५ तुलसी। ६. मल्लिका। ७ चमेली। ८ हलदी। ९ दारु हल्दी। १०. मजीठ। ११. सफेद दूब। १२ सध्या समय गाई जानेवाली सपूर्ण राग की एक रागिनी। १३, चित्रो आदि में दिखायी जानेवाली उज्ज्वलता या प्रकाश। १४ भारत (अखड) की पश्चिमोत्तर सीमा पर बहनेवाली एक प्राचीन नदी।

स्त्री० दे० 'गौडी'।

गौरी-चंदन—पु० [मध्य० स०] लाल चदन।

गौरीज—पु० [स० गौरी√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] १ गौरी के पुत्र, कार्त्तिकेय और गणेश। २ अभ्रक।

वि० गौरी से उत्पन्न।

गौरी-पुष्प—पु० [ब० स०] प्रियगु नाम का वृक्ष।

गौरी वेंत—पुं० [?] एक प्रकार का वेंत जिसे पक्का वेंत भी कहते हैं।
गौरी-ललित—पुं० [उपमि० स०] हरताल।
गौरी-शंकर—पुं० [मध्य० स०] १. शिव का वह रूप जिसमें उनके साथ गौरी अर्थात् पार्वती भी रहती हैं। २ हिमालय की एक बहुत ऊँची चोटी।
गौरीश—पुं० [गौरी-ईश, ष० त०] शिव।
गौरीसर—पुं० [?] हंसराज नाम की बूटी। सेंमल पत्ती।
गौरतल्पिक—पुं० [स० गुरु-तल्प+ठक्-इक] वह शिष्य जिसका गुरु-पत्नी मे अनुचित सबध हो।
गौरैया†—स्त्री० [?] १. काले रग का एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका सिर भूरा और गरदन सफेद होती है। २ हर जगह घरो मे रहनेवाली एक प्रसिद्ध छोटी चिडिया। चिडी।
†पुं० मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।
गौलक्षणिक—पुं० [स० गो-लक्षण ष० त०+ठक्-इक] गाय-बैलों के भले-बुरे लक्षण पहचाननेवाला।
गौलना—अ० [?] अनुभूत होना।
गौला—स्त्री०=गौरी (पार्वती)।
गौलिक—पुं० [सं० गुड+ठक्-इक 'ड' को 'ल'] १. मुष्कक नामक वृक्ष। २. एक प्रकार का लोध।
गौल्मिक—पुं० [स० गुल्म+ठक्-इक] सैनिकों के गुल्म का नायक।
वि० गुल्म-सबधी।
गौशाला—पुं०=गोशाला।
गौश्रृंग—पुं० [सं० गोशृंग+अण्] एक प्रकार का साम गान।
गौखी*—स्त्री० [स० गवाक्ष] खिडकी।
गौसम—पुं० [हिं० कोसम] १. कोसम नामक वृक्ष और उसका फल। २. उक्त पेड की लकडी।
गौहर—पुं० [फा०] मोती।
†पुं० [स० गोष्ठ] गोशाला। गोठ।
ग्यांविर—पुं० [देश०] कीकर की जाति का एक वृक्ष जिसकी लकडियो से पपडिया खैर बनाया जाता है।
ग्याति*—स्त्री० १=ज्ञाति। २.=जाति।
ग्यान†—पुं०=ज्ञान।
ग्यारस—स्त्री० [हिं० ग्यारह] चान्द्र मास के कृष्ण या शुक्ल की ग्यारहवी तिथि। एकादशी।
ग्यारह—वि० [स० एकादशन्; पा० पै० एकादस, एकारस; अर्धमा० एक्कारस; प्रा० अप० एगारह, एआरह; गु० अगिआर; सिं० यारह, प० ग्यारॅं; ब० उ० एगार] जो गिनती मे दस और एक हो।
पुं० उक्त अक की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—११।
ग्रंथ—पुं० [स०√ ग्रथ् (रचना, बाँधना)+घञ्] १. गाँठ। ग्रथि। २. किताब या पुस्तक जिसके पन्ने या पृष्ठ पहले गाँठ बाँध कर रखे जाते थे। ३. धार्मिक या साहित्यिक दृष्टि से कोई महत्त्वपूर्ण बडी पुस्तक। जैसे—गुरु ग्रथ-साहब। ४. गाँठ मे का अर्थात् अपने पास का धन। जमा। पूंजी।
ग्रंथ-कर्त्ता(र्तृ)—पुं० [ष० त०] ग्रथ या पुस्तक का रचयिता। लेखक।
ग्रंथ-कार—पुं० [ग्रथ √कृ(करना)√अण् उप० स०] दे० 'ग्रथ-कर्त्ता'।
ग्रंथ-चुंबक—पुं० [ष० त०] वह जो ग्रंथो या पुस्तकों को यों ही सरसरी तौर पर देख जाता हो, उनमें प्रतिपादित विषयों का अध्ययन न करता हो।
ग्रंथ-चुंबन—पुं० [ष० त०] ग्रथ या पुस्तक यों ही सरसरी तौर पर देख जाना, उसमे प्रतिपादित विषय का ठीक ज्ञान प्राप्त न करना।
ग्रंथन—पुं० [सं०√ग्रंथ्+ल्युट्-अन] १. गाँठ लगाकर जोडना, बाँधना या मिलाना। २. गूँथना। ३. ग्रथ या पुस्तक की रचना करना। ग्रथ बनाना।
ग्रंथना*—स०=गूथना।
ग्रंथ-माला—स्त्री० [ष० त०] एक ही स्थान से समय-समय पर प्रकाशित होनेवाली एक ही प्रकार अथवा वर्ग की अनेक पुस्तको की अवली या शृंखला।
ग्रंथ-संधि—स्त्री० [ष० त०] ग्रंथ का कोई विभाग। जैसे—सर्ग, परिच्छेद, अध्याय, अंक, पर्व्व आदि।
ग्रंथ-साहब—पुं० [हिं० ग्रथ+साहब] सिक्खों का धर्म-ग्रथ जिसमें नानक, कबीर आदि गुरुओं की वाणियाँ सगृहीत हैं।
ग्रंथालय—पुं० [ग्रथ-आलय, ष० त०] १. वह स्थान जहाँ पुस्तकें रखी जाती हो। २ वह कमरा या घर जिसमे लोगों के पढने के लिए पुस्तकें रखी गई हो। पुस्तकालय।
ग्रंथावलि (ली)—स्त्री० [ग्रथ-आवलि (ली) ष० त०] ग्रथमाला।
ग्रंथि—स्त्री० [स०√ग्रथ्+इन्] १. धागे, रस्सी आदि मे पडने या डाली जानेवाली गाँठ। २ गाँठ के आकार की कोई कड़ी गोलाकार रचना या वस्तु। ३. वायु आदि के विकार के कारण शरीर के किसी अंग मे बननेवाली गाँठ। ४. शरीर के अन्दर कोषाणुओं के योग से बनी हुई कई प्रकार की गाँठों में से हर एक।
विशेष—ये ग्रंथियाँ शरीर के भिन्न भिन्न भागों में अनेक आकार-प्रकार की होती हैं और इनमें से ऐसे तरल तत्त्व या रस निकलते हैं जो शरीर की रक्षा और वृद्धि के लिए उपयोगी होते या अनुपयोगी तत्त्वो को शरीर के बाहर निकालते हैं। जैसे—बीज ग्रथि, लस ग्रथि आदि। (दे०)
५. कोई बाँधनेवाली चीज। बधन। ६. आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र मे वे बातें जो मनुष्य को इस ससार के साथ बाँधे रहती हैं और उसे आध्यात्मिक दिशा में जाने से रोकती है। ७ कुटिलता। टेढापन। ८. आलू। ९ पिपरामूल। १०. भद्रमुस्तक। ११ ग्रथिपर्णी। गठिवन।
ग्रंथिक—पुं० [स० ग्रथ+ठन्-इक] १. पिपरामूल। २. ग्रथिपर्णी। गठिवन। ३. गुग्गुल। ४. करील। ५. ज्योतिषी। ६ सहदेव पाण्डव का वह नाम जो उन्होंने अज्ञातवास के समय धारण किया था।
ग्रंथित—भू० कृ० [सं० ग्रथ+इतच्] १ जिसमे गाँठ लगी हो। २. गाँठ लगाकर बाँधा हुआ। ३. गूथा हुआ।
ग्रंथि-दूर्वा—स्त्री० [मध्य० स०] गाडर दूब।
ग्रंथि-पत्र—पुं० [ब० स०] चोरक नामक गध-द्रव्य।
ग्रंथि-पर्ण—पुं० [ब० स०] गठिवन का पेड।
ग्रंथिपर्णी—स्त्री० [स० ग्रंथिपर्ण+ङीष्] गाडर दूब।
ग्रंथि-फल—पुं० [ब० स०] १ कैथ का पेड या फल। २. मैनफल।
ग्रंथि-बंधन—पुं० [ष० त०] १. गाँठ बाँधकर अथवा ऐसी ही और किसी क्रिया से दो या अधिक चीजें एक साथ करना या लगाना। २ विवाह के समय वर और कन्या के कपड़ों के पल्लो को गाँठ देकर आपस मे बाँधने

की क्रिया जो पारस्परिक घनिष्ठ संबंध स्थापित करने की सूचक होती है। गँठ-बंधन।

ग्रंथि-मूल—पु० [ब० स०] ऐसी वनस्पतियाँ जो गाँठों के रूप में होती है। कंद। जैसे—गाजर, मूली, शलजम आदि।

ग्रंथि-मोचक—पु० [ष० त०] गिरहकट। जेब-कतरा।

ग्रंथिल—वि० [सं० ग्रन्थि+लच्] जिसमें गाँठ या गाँठें हो। गाँठदार। पु० १ करील का वृक्ष। २ पिपरामूल। ३ अदरक। आदी। ४ विककत वृक्ष। ५ चौलाई का साग। ६ आलू या ऐसा ही और कोई गोल कंद। ७ चोरक नामक गंध-द्रव्य।

ग्रंथिला—स्त्री० [सं० ग्रन्थिल+टाप्] १ गाडर दूब। २ माला दूब। ३ भद्रमुस्तक। भद्रमोथा।

ग्रंथीक—पु० [सं०=ग्रन्थिक, पृषो० सिद्धि] पिपरामूल।

ग्रंस†—पु० [सं० ग्रंथि=कुटिलता] १ कुटिलता। टेढ़ापन। २ कुटिलता या छल-कपट से भरा हुआ आचरण या व्यवहार। ३ मन में रखा जाने-वाला द्वेष। ४ दे० 'गाँसी'।

ग्रथन—पु० [सं० ग्रन्थन] [भू० कृ० ग्रन्थित] १ ग्रंथि या गाँठ लगाकर बाँधना। २. ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत करना। रचना। ३ गूथना। पिरोना।

ग्रथित—भू० कृ० [सं०√ग्रन्थ् (गूथना)+क्त] १. जिसका ग्रथन हुआ हो। गठा या बँधा हुआ। २ बनाया या रचा हुआ। रचित। ३ गूथा या पिरोया हुआ। ४ जिसमें जमने के कारण गाँठें पड़ गई हो। ५ दबाया या जीता हुआ।
पु० दे० 'अर्बुद'।

ग्रब्ब*—पु०=गर्व।

ग्रसन—पु० [सं०√ग्रस् (खाना)+ल्युट्—अन] १ ग्रसने या पकड़ने की क्रिया या भाव। पकड़। २ खाना या निगलना। भक्षण। ३. बुरी तरह से अपने चंगुल में फँसाना। ४ कौर। ग्रास। ५ ग्रहण। ६ फलित ज्योतिष में दस प्रकार के ग्रहणों में से एक खंड-ग्रहण जिसके फलस्वरूप अभिमानियों का पतन या नाश होता है।

ग्रसना—स० [सं० ग्रसन] १ इस प्रकार किसी को पकड़ना कि वह जल्दी छूटने, निकलने या भागने न पावे। अच्छी तरह से दबाते हुए पकड़ना। २ काम निकालने के लिए बहुत तंग करना या पीछे पड़ना।

ग्रसपति—पु० [ष० त०?] प्राचीन वास्तु-कला में मनुष्य के मुख की वे आकृतियाँ जो एक पंक्ति में किसी पत्थर में खुदी हुई हो।

ग्रसित—भू० कृ०=ग्रस्त।

ग्रसिष्णु—वि० [सं०√ग्रस्+इष्णुच्] १ जो ग्रसन करने पर उद्यत हो या उसका अभ्यस्त हो। २ निगलने या हड़पनेवाला।
पु० परमात्मा।

ग्रस्त—भू० कृ० [सं०√ग्रस्+क्त] १ खाया या निगला हुआ। २ ग्रसा या पकड़ा हुआ। जैसे—ग्रह-ग्रस्त। ३ कष्ट, रोग आदि से युक्त। पीड़ित। जैसे—ज्वर-ग्रस्त। ४ किसी के नियंत्रण में आया हुआ।

ग्रस्ता (स्तृ)—वि० [सं०√ग्रस्+तृच्] १ ग्रसन करने या पकड़नेवाला। २ भक्षक।

ग्रस्तास्त—वि० [सं० ग्रस्त-अस्त, कर्म० स०] (चन्द्रमा या सूर्य) जो ग्रहण लगे रहने की दशा में ही अस्त हो जाय।
पु० ऐसा ग्रहण जो चन्द्रमा या सूर्य के अस्त होने के समय तक न छूटा हो।

ग्रस्ति—स्त्री० [सं०√ग्रस्+क्तिन्] १ निगलने की क्रिया या भाव। २ ग्रसने या पकड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। ग्रास।

ग्रस्तोदय—पु० [ग्रस्त-उदय, ष० त०] ऐसा ग्रहण जिसमें चन्द्रमा या सूर्य ऐसी अवस्था में उदित हो कि उस पर ग्रहण लगा हुआ हो।

ग्रस्य—वि० [सं०√ग्रस्+यत्] १ जिसे खाया या निगला जा सके। २ जिसे ग्रसा जा सके। ग्रस्त होने का पात्र।

ग्रह—पु० [सं०√ग्रह् (ग्रहण करना)+अप्] १ ग्रहण करने, पकड़ने, लेने या वश में करने की क्रिया या भाव। २ [√ग्रह्+अच्] वह जो किसी को पकड़ता, वश में करता या प्रभावित करता हो। ३ वह आकाशस्थ पिंड जो किसी सौर जगत् का अंग हो और उस जगत् के सूर्य की परिक्रमा करता हो। (प्लैनेट) जैसे—पृथ्वी, बुध, शुक्र आदि।
विशेष—कुछ आकाशस्थ पिंडों का नाम ग्रह कदाचित् इसलिए पड़ा था कि वे मनुष्यों के भाग्यों को वश में रखने और प्रभावित करनेवाले माने जाते थे।
४ हमारे सौर जगत् में चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु जो सूर्य की परिक्रमा करनेवाले पिंड माने गये थे और जिनमें स्वयं सूर्य को भी सम्मिलित करके नौ ग्रहों की कल्पना की गई थी।
विशेष—आधुनिक ज्योतिषियों ने अनुसंधान करके दो-तीन और भी ऐसे छोटे तारों और तारा-पुंजों का पता लगाया है जो हमारे सूर्य की परि-क्रमा करते है, और इसी लिए जिनकी गिनती ग्रहों में होने लगी है।
५ उक्त नौ ग्रहों के आधार पर नौ की संख्या का सूचक शब्द। ६ राहु जो ग्रहण के समय चन्द्रमा अथवा सूर्य को ग्रसनेवाला माना गया है। ७ बालकों को होनेवाले अनेक प्रकार के छोटे-मोटे रोग जो पहले भूत-प्रेत आदि बाधा के फल समझे जाते थे। बाल-ग्रह (देखें)।

ग्रहक—वि० [सं० ग्राहक] ग्रहण करनेवाला।
पु० १ ग्राहक। २ कैदी।

ग्रह-कल्लोल—पु० [सं० त०] राहु नामक ग्रह।

ग्रह-कुष्मांड—पु० [कर्म० स०] एक देव-योनि। (पुराण)

ग्रह-गोचर—पु० [ष० त०] दे० 'गोचर'।

ग्रह-ग्रस्त—भू० कृ० [तृ० त०] जिस पर भूत-प्रेत आदि की बाधा हो।

ग्रह-ग्रामणी—पु० [ष० त०] ग्रहों का स्वामी, सूर्य।

ग्रह-चिंतक—पु० [ष० त०] ग्रहों की गति, स्थिति आदि का विचार करने-वाला व्यक्ति। ज्योतिषी।

ग्रहण—पु० [सं० ग्रह्+ल्युट्—अन] १ पकड़ने या लेने की क्रिया या भाव। २ कोई बात ठीक समझकर मान लेना। ३ अंगीकार या स्वीकार करना। ४ सूर्य या चंद्रमा पर क्रमशः चंद्रमा या पृथ्वी की छाया पड़ने की वह स्थिति जिसमें उनका कुछ अथवा पूरा बिंब अँधेरा या ज्योति-विहीन-सा प्रतीत होने लगता है। (इक्लिप्स) ५ उक्त के आधार पर किसी वस्तु, व्यक्ति आदि की वह स्थिति जिसमें उसकी उज्ज्वलता, महत्त्व, मान आदि पर किसी प्रकार का धब्बा लगा हो। ६. ऐसी वस्तु जिसके कारण किसी की उज्ज्वलता, महत्त्व, मान आदि पर बुरा प्रभाव पड़ता हो। ७ तात्पर्य। मतलब।

ग्रहणांत—पु० [ग्रहण-अंत, ष० त०] अध्ययन का समाप्ति पर होना।

ग्रहणा—स०=गहना (पकडना)।

ग्रहणि, ग्रहणी—स्त्री० [स०√ग्रह्+अनि] [ग्रहणि+ङीप्] १ पक्वाशय और आमाशय के बीच की एक नाडी जो अग्नि या पित्त का प्रधान आधार मानी गयी है। (सुश्रुत) २ उक्त नाडी मे विकार होने के कारण होनेवाली दस्तो की एक बीमारी। सग्रहणी।

ग्रहणीय—वि० [स०√ग्रह+अनीयर्] १ ग्रहण अर्थात् अगीकार किये जाने के योग्य। २ नियम या विधि के रूप मे माने जाने के योग्य।

ग्रह-दशा—स्त्री० [प० त०] १ गोचर ग्रहो की स्थिति। २ ज्योतिष के अनुसार ग्रहो के किसी विशिष्ट स्थिति मे होने के फलस्वरूप मनुष्य की होनेवाली अवस्था (प्राय कष्टप्रद या दु खद अवस्था) ३ अभाग्य। दुर्भाग्य।

ग्रह-दाय—स्त्री० [प० त०] फलित ज्योतिष मे, किसी की वह आयु जो उसके जन्म लेने के समय के ग्रहो की स्थिति के अनुसार निश्चित की जाती है।

ग्रह-दृष्टि—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष मे, जन्म-कुडली के विभिन्न घरो मे स्थित ग्रहो का एक दूसरे पर पडनेवाला प्रभाव।

विशेष—शुभ ग्रह की दृष्टि का फल शुभ और अशुभ ग्रह की दृष्टि का फल अशुभ माना जाता है।

ग्रह-द्रुम—पु० [मध्य० स०] काकडासीगी।

ग्रह-नायक—पु० [प० त०] सूर्य।

ग्रहनाश—पु०[स० ग्रह√नश् (नष्ट होना)+णिच्+अण्, उप०स०] सतिवन नामक पेड।

वि० ग्रहो का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

ग्रहनेमि—पु० [प० त०] १ चद्रमा। २ चद्रमा के मार्ग का वह भाग जो मूल और मृगशिरा नक्षत्रों के बीच मे पडता है। ३ आकाश। (डि०)

ग्रह-पति—पु० [ष० त०] १ सूर्य। २ शनि। ३ आक या मदार का पौधा।

ग्रह-पीड़ा—स्त्री० [मध्य० स०] ग्रह-बाधा।

ग्रह-बाधा—स्त्री० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे ग्रहो की क्रूर दृष्टि या स्थिति के कारण होनेवाला भौतिक कष्ट या पीडा।

ग्रह-मर्द—पु० [ष० त०]=ग्रह-युद्ध।

ग्रह-मैत्री—स्त्री०[प० त०] वर और कन्या के ग्रहो के स्वामियो की मित्रता या अनुकूलता जिसका विचार हिन्दुओं मे विवाह के समय किया जाता है। (फलित ज्योतिष)

ग्रह-यज्ञ—पु० [प० त०] ग्रहो की उग्रता या कोप की शान्ति के लिए किया जानेवाला एक प्रकार का पूजन या यज्ञ।

ग्रह-युति—स्त्री० [स० प० त०] एक राशि के एक ही अश पर एक ही समय मे दो या कई ग्रहो का एकत्र होना।

ग्रह-युद्ध—पु० [ष० त०] सूर्य सिद्धान्त के अनुसार बुध, बृहस्पति, शुक्र शनि या मगल मे से किसी एक ग्रह का चद्रमा के साथ अथवा उक्त ग्रहो मे से किसी दो ग्रहो का एक साथ एक राशि के एक अश पर इस प्रकार एकत्र होना कि उस पर ग्रहण लगा हुआ जान पडे। इसका फल भयकर कहा गया है।

ग्रह-युद्धभ—पु० [ग्रह-युद्ध, व० स०, ग्रहयुद्ध-भ, कर्म० स०] वह नक्षत्र जिस पर कोई दो ग्रह एक साथ एकत्र हो। ग्रह-युद्ध का केन्द्र।

ग्रह-योग—पु० [प० त०]=ग्रहयुति।

ग्रह-राज—पु० [प० त०] १ सूर्य। २ चद्रमा। ३. बृहस्पति।

ग्रह-वर्ष—पु० [मध्य० स०] वह सारा समय जितने मे कोई ग्रह अपने सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है।

विशेष—ग्रहो की कक्षाओ के अलग-अलग विस्तारो के अनुसार ही यह वर्ष या समय छोटा या बडा होता है।

ग्रह-विप्र—पु० [मध्य० स०] बगाल और दक्षिण मे होनेवाले एक प्रकार के ब्राह्मण जो कुछ विशिष्ट क्रियाओ मे ग्रहो के शुभाशुभ फल बतलाते है। २ ग्रहो का फल तथा स्थिति बतलानेवाला ब्राह्मण। ३ ज्योतिषी।

ग्रह-वेध—पु० [प० त०] शास्त्रीय विधि से वेध (देखें) करके ग्रहो की स्थिति आदि का ठीक पता लगाना।

ग्रह-शांति—स्त्री० [प० त०] १. वह पूजन जो ग्रहो का प्रकोप शात करने के उद्देश्य से किया जाता है। २.ग्रहो का प्रकोप शात होने की अवस्था या भाव।

ग्रह-शृगाटक—पु० [प० त०] बृहत्सहिता के अनुसार ग्रहो का एक प्रकार का योग जिसके फल अवस्थानुसार कभी शुभ और कभी अशुभ होते है।

ग्रह-समागम—पु० [प० त०] किसी राशि मे चद्रमा के साथ मगल, बुध आदि ग्रहो का योग।

ग्रह-स्वर—पु० [प०त०] सगीत मे वह स्वर जिसमे किसी राग का आरभ होता है।

ग्रहा—स्त्री०=गृहिणी। उदा०—मुरूस धामय तेज दीपक कला, तारुण्य लच्छी ग्रहा।—चन्दवरदाई।

ग्रहागम—पु० [ग्रह-आगम, प०त०] ग्रहो या भूत-प्रेत आदि की कष्टदायक बाधा होना।

ग्रहाचार्य—पु०=ग्रहविप्र।

ग्रहाधार—पु० [ग्रह-आधार प० त०] ध्रुव नक्षत्र।

ग्रहाधीश—पु० [ग्रह-अधीश, प० त०] सूर्य।

ग्रहामय—पु० [ग्रह-आमय, मध्य० स०] ग्रहो या भूत-प्रेतो की बाधा के कारण होनेवाले रोग। (मिरगी, मूर्च्छा, आदि रोग इसी के अन्तर्गत माने जाते है।)

ग्रहावर्त—पु० [ग्रह-आवर्त व०स०] जन्मपत्री।

ग्रहाश्रय—पु० [ग्रह-आश्रय, प० त०]=ग्रहाधार।

ग्रहाह्वय—पु० [स० ग्रह-आ√ह्वे (स्पर्धा)+श] भूताकुश नामक पौधा।

ग्रहिल—वि० [स० ग्रह+इलच्] १. जिसे किसी ने ग्रस्त किया या बुरी तरह से पकडा हो। २ जो किसी ग्रह या भूत-प्रेत की बाधा से पीडित हो। ३ दुराग्रही। हठी। ४ किसी विषय का अनुरागी या रसिक।

ग्रहीत—वि० दे० 'गृहीत'।

ग्रहीतव्य—वि० [स०√ग्रह्√तव्यत्] दे० 'गृहीतव्य'।

ग्रहीता (तृ)—वि० [स०√ग्रह्+तृच्] दे० 'गृहीता'।

ग्रहोपराग—पु० [ग्रह-उपराग, प० त०] ग्रहो को लगनेवाला ग्रहण।

ग्रह्य—पु० [स० ग्रह+यत्] एक प्रकार का यज्ञपात्र।

वि० ग्रह-सबधी।

ग्रांडील—वि० [अँ० ग्रैंड=विशाल] १ ऊँचे कद का। २ लवा, चौडा और ऊँचा। ३ खूब मोटे-ताजे शरीरवाला।

ग्राम—पु० [सं०√ग्रम् (खाना)+मन् आत्व] १ मनुष्यों का समूह या उनके रहने का स्थान। आवादी। वस्ती। २ छोटी वस्ती। गाँव। ३ ढेर। राशि। समूह। जैसे—गुण-ग्राम। ४ शिव। ५ पड्ज से निपाद तक क्रम से सातो स्वरो का समूह। सप्तक।
वि० १ गाँव या वस्ती मे रहनेवाला। २ पालतू। जैसे—ग्राम-शूकर। ३ गवाँर। देहाती।

ग्राम-कंटक—पु० [प० त०] वह जो गाँव या वस्ती मे तरह-तरह के उत्पात या उपद्रव करके सब लोगो को कष्ट पहुँचाता या दु खी रखता हो।

ग्राम-कुक्कुट—पु० [प० त०] पालतू मुरगा।

ग्राम-कूट (क)—पु० [प० त०] शूद्र।

ग्राम-गीत—पु० [स० मध्य० स०] गाँवो मे गाये जानेवाले गीत। लोक-गीतो के अतर्गत ग्रामगीतो और जगली लोगो के गीतो को सम्मिलित किया या माना जाता है।

ग्राम-गेय—पु० [स० त०] एक प्रकार का साम।
वि० गाँव मे गाया जाने वाला।

ग्राम-घात—पु० [प० त०] गाँव को लूटना।

ग्राम-चर—वि० [स० ग्राम√चर् (गति)+ट, उप० स०] गाँव मे रहनेवाला।

ग्राम-चर्या—स्त्री० [प० त०] स्त्री के साथ किया जानेवाला सभोग या सहवास।

ग्राम-चैत्य—पु० [प० त०] गाँव का पवित्र और पूज्य वृक्ष।

ग्रामज—वि० [स० ग्राम√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] गाँव मे उत्पन्न होनेवाला। ग्राम मे उत्पन्न।

ग्राम-जात—वि० [प० त०] =ग्रामज।

ग्रामणी—पु० [स०ग्राम√नी (ले जाना)+क्विप्, उप० स०] १ गाँव का मालिक। २ गाँव का मुखिया। ३ लोगो का नेता या प्रधान व्यक्ति। ४ विष्णु। ५. यक्ष। ६ नाई। हज्जाम।
स्त्री० १ वेश्या। २ नील का पौधा।

ग्राम-देव—पु० [ष० त०]=ग्राम देवता।

ग्राम-देवता—पु० [प० त०] गाँव का वह स्थानिक प्रधान देवता जो उसका रक्षक माना जाता है और जिसकी पूजा गाँव के सब लोग करते है।

ग्राम-धर्म—पु० [प० त०] स्त्री-सभोग। मैथुन।

ग्राम-पचायत—स्त्री० [स०+हि०] गाँव के चुने हुए लोगो की वह पचायत जो गाँव भर के झगडो-वखेडो का निर्णय करती है और वहाँ की सब प्रकार से सुव्यवस्था करती है।

ग्राम-पाल—पु० [स० ग्राम√पाल् (रक्षाकरना)+णिच्+अण्, उप० स०] १ गाँव का मालिक या स्वामी। २ गाँव का प्रधान अधिकारी और रक्षक।

ग्राम-प्रेष्य—पु० [प० त०] वह जो गाँव के सब लोगो की सेवा करता हो। मनु के अनुसार ऐसा मनुष्य यज्ञ और श्राद्ध आदि कार्यो मे सम्मिलित नही किया जाना चाहिए।

ग्राम-मुख—पु० [व० स०] गाँव का वाजार। हाट।

ग्राम-मृग—पु० [प०त०] १ गाँव मे रहनेवाले पशु। २ कुत्ता।

ग्राम-याजक—पु० [प० त०] वह ब्राह्मण जो ऊँच-नीच सभी तरह के लोगो का पुरोहित हो। (ऐसा व्यक्ति प्राय पतित माना जाता है।)

ग्राम-याजी (जिन्)—पु० [स० ग्राम√यज् (पूजा)+णिच्+णिनि, उप० स०]=ग्राम-याजक।

ग्राम-युद्ध—पु० [प०त०] गाँव या वस्ती भर मे होनेवाला उपद्रव और मार-पीट।

ग्राम-वल्लभा—स्त्री० [प० त०] १ वेश्या। रडी। २ पालक का साग।

ग्राम-वासी (सिन्)—वि० [स० ग्राम√वस् (वसना)+णिनि, उप० स०] १ गाँव मे वसने या रहनेवाला। २. पालतू।

ग्राम-सिंह—पु० [ष० त०] कुत्ता।

ग्राम-सुधार—पु० [स० ग्राम+हि० सुधार] गाँव के दोष दूर करने तथा सब क्षेत्रो मे उसकी उन्नति करने का काम। गाँव की अवस्था सुधारने का काम। (रूरल अपलिफ्ट)

ग्राम-हासक—पु० [ष०त०] वहनोई, जिससे गाँव भर के सब लोग हँसी-मजाक करते है।

ग्रामाचार—पु० [ग्राम-आचार, ष०त०] किसी गाँव की विशिष्ट प्रथाएँ तथा रीति-रिवाज।

ग्रामाधान—पु० [ग्राम-आधान, प०त०] आखेट। मृगया। शिकार।

ग्रामाधिप, ग्रामाध्यक्ष—पु० [ग्राम-अधिप, ग्राम अध्यक्ष, प० त०] गाँव का प्रधान अधिकारी। मुखिया।

ग्रामिक—वि० [स० ग्राम+ठञ्—इक] १ गाँव मे उपजने या होनेवाला। २ ग्रामवासियो से सवधित।
पु० १ गाँव का चुना या माना हुआ प्रधान अथवा मुखिया। २ ग्रामवासी।

ग्रामिणी—स्त्री० [स० ग्राम+इनि—ङीप्] नील का पौधा।

ग्रामी (मिन्)—वि० [स० ग्राम+इनि] १ (व्यक्ति) जो गाँव मे रहता हो। २ ग्राम्य।
पु० १ ग्रामवासी। देहाती। २ गाँव मे रहनेवाले पशु। जैसे—कुत्ता, कौआ, मुरगा आदि।
स्त्री० १ पालक का साग। २ नील का पेड।

ग्रामीय—वि० [स० ग्राम+छ ईय] ग्राम्य।

ग्रामेय—पु० [स० ग्राम+ढक्—एय] ग्रामवासी।
वि० ग्राम्य।

ग्रामेयी—स्त्री० [स० ग्रामेय+ङीप्] वेश्या।

ग्रामेश, ग्रामेश्वर—पु० [सं० ग्राम-ईश, ग्राम-ईश्वर, प०त०] गाँव का प्रधान या मुखिया।

ग्राम्य—वि० [स० ग्राम+यत्] १ गाँव से सवध रखनेवाला। गाँव का। जैसे—ग्राम्य गीत, ग्राम्य-सुधार। २ गाँव मे रहने या पाया जानेवाला। ३ ग्रामवासियो के रीति-रिवाज, स्वभाव, व्यवहार आदि मे सवध रखनेवाला। जैसे—ग्राम्य व्यवहार। ४ जो ग्रामवासियो की प्रकृति, स्वभाव, व्यवहार आदि का-सा हो। असभ्य या अरुचिपूर्ण। ५ अश्लील। ६ जिसमे किसी प्रकार का सशोधन या सुधार न हुआ हो। अनगढ़ और प्रकृत। ७ (जीव या पशु) जो पाला-पोसा और गाँव या वस्ती मे रखा गया हो अथवा रहता आया हो। जैसे—कुत्ता, गधा, गौ आदि ग्राम्य पशु।

पु० १ अनाडी। बेवकूफ। मूर्ख। २ मैथुन की एक मुद्रा या रति-बध। ३ काव्य का एक दोष, जो किसी साहित्यिक रचना मे (क) गँवारू शब्दो के प्रयोग अथवा (ख) गँवारू विषयो के वर्णन के कारण उत्पन्न माना गया है। ४ यह शब्दगत और अर्थगत दो प्रकार का होता है। ४ अशिष्ट और अश्लीलतापूर्ण कथन या बात। ५. स्त्री-प्रसग। मैथुन। ६ मिथुन राशि।

ग्राम्य-कर्म (न्)—पु० [कर्म० स०] स्त्री-प्रसग। मैथुन।

ग्राम्य-कुंकुम—पु० [कर्म०स०] बर्रे का पौधा या फूल। कुसुभ।

ग्राम्य-देवता—पु०[कर्म० स०]=ग्रामदेवता।

ग्राम्य-दोष—पु० [कर्म० स०] काव्य का 'ग्राम्य' नामक दोष। (दे० 'ग्राम्य')

ग्राम्य-धर्म—पु० [ष०त०] मैथुन। स्त्री-प्रसग।

ग्राम्य-पशु—पु० [कर्म० स०] पालतू जानवर।

ग्राम्य-मृग—पु० [कर्म० स०] कुत्ता।

ग्राम्य-वल्लभा—स्त्री०=ग्राम-वल्लभा।

ग्राम्या—स्त्री०[स० ग्राम्य+टाप्] १. नील का पौधा। २ तुलसी।

ग्राव (न्)—पु०[स०√ग्रस्(भक्षण)+ड=ग्र-आ√वन् (सलग्न होना)+विच्] १ पत्थर। २ पहाड़। ३ ओला। ४. बादल।

वि० कठोर। कडा।

ग्राव-स्तुत्—पु० [स० ग्राव√स्तु(स्तुति करना)+क्विप्, उप० स०] सोलह ऋत्विजो मे से तेरहवाँ ऋत्विज्। अच्छावाक।

ग्रावह—पु० [स० ग्रावा] पत्थर की कील। उदा०—परि पै प्रसन्न परतीत करि, तव काढत ग्रावह जुही।—चन्दवरदाई।

ग्राव-हस्त—पु० [ब०स०] यज्ञ करनेवाला वह ऋत्विज् जिसके हाथ मे अभिषव का पत्थर रहता है।

ग्रावायण—पु०[स० ग्राव+फक्—आयन] एक प्रवर का नाम।

ग्रास—पु० [स०√ग्रस्+घञ्] १ ग्रसने अर्थात् बुरी तरह से पकडने या दवाने की क्रिया या भाव। २. चद्रमा या सूर्य को लगनेवाले ग्रहण की स्थिति जो उसके ग्रस्त अश के विचार से कही जाती है। जैसे—खग्रास, सर्व-ग्रास। ३ उतना भोजन जितना एक वार मुँह मे डाला जाय। कौर। निवाला।

ग्रासक—वि० [स०√ग्रस्+ण्वुल्-अक] १. ग्रस्त करने या बुरी तरह से पकडनेवाला। २ ग्रास के रूप मे खाने या मुँह मे रखनेवाला। ३ भक्षक। ४ छिपाने या दवानेवाला।

ग्रासना—पु० [स० ग्रास] १ ग्रस्त करना। बुरी तरह से पकडना। २ निगलना। ३. कष्ट पहुँचाना। पीडित करना।

ग्राह—पु० [स०√ग्रह्(पकडना)+ण] १. मगर। घडियाल। २ भक्त समाज मे, वह विशिष्ट मगर जिसके पजे से भगवान् ने गज को छुडाया था। ३ [√ग्रह्+घञ्] चद्रमा आदि को लगनेवाला ग्रहण। ४ ग्रहण करने, पकडने या लेने की क्रिया या भाव। ग्रहण। ५ ज्ञान। ६ [√ग्रह्+ण] ग्राहक।

ग्राहक—पु०[स०√ग्रह्+ण्वुल्—अक] १ ग्रहण करने या लेनेवाला। २ वह जो मूल्य देकर कोई चीज लेता या लेना चाहता हो। खरीददार। ३ आदरपूर्वक कुछ पाने या लेने की इच्छा या प्रवृत्ति रखनेवाला। जैसे—गुण-ग्राहक। ४ वह औषधि जिसके सेवन से पतला दस्त आना वन्द हो जाय और बँधा पैखाना होने लगे। ५. वाज नामक पक्षी। ६. चौपतिया नामक साग। ७ विष आदि के प्रकोपो की चिकित्सा करनेवाला वैद्य। विष-वैद्य।

वि० ग्रहण करनेवाला। जैसे—ग्राहक यत्र।

ग्राहक-यंत्र—पु० [कर्म० स०] एक वैज्ञानिक उपकरण जो प्रेषक यत्र द्वारा भेजे गये सदेश ग्रहण करता है। (रिसीवर)

ग्राहना*—स० [स० ग्रहण] १. ग्रहण करना। लेना। उदा०—पै केवल निज नगर माँहि प्रचलित मत ग्राहैं।—रत्ना०। २. ग्रस्त करना। पकडना।

ग्राह-मुख—वि० [स० ब० स०] जिसका मुख घडियाल का-सा हो।

ग्राहिका—स्त्री० [स० ग्राहक+टाप्, इत्व] त्रिवली का तीसरा वल।

ग्राही (हिन्)—वि० [स०√ ग्रह्+णिनि] १. ग्रहण या स्वीकार करनेवाला। लेनेवाला। २. आदरपूर्वक मानने या लेनेवाला। जैसे—गुण-ग्राही। ३ (औषध या खाद्य पदार्थ) जो मल रोकता हो। कब्ज करनेवाला।

ग्राह्य—वि०[स०√ग्रह्+ण्यत्] १ जो ग्रहण किये जाने को हो अथवा किये जाने के योग्य हो। २. जो प्राप्त किया या लिया जा सकता हो। ३ जो ठीक होने के कारण माना जा सकता हो। ४. जिसे इंद्रियाँ देख, सुन, पहचान या समझ सकती हो।

ग्राह्य-व्यक्ति—पु० [कर्म० स०] १. वह प्रमुख व्यक्ति जिसे और लोग या दूसरे देशवाले भी प्रमुख मानें और उसकी बाते या मत ग्रहण कर सकें। २ आधुनिक राजनीति मे, विदेशी दूतावास का ऐसा अधिकारी जो अपनी ईमानदारी और सचाई के कारण ग्राह्य हो। (पर्सना ग्रैटा)

ग्रिह—पु० १ दे० 'ग्रह'। २ दे० 'गृह'।

ग्रीक—वि० [अ०] यूनान देश अथवा इसके वासियो मे सवध रखनेवाला। यूनानी।

पु० यूनान देश का निवासी।

स्त्री० यूनान देश की प्राचीन भाषा।

ग्रीखम†—पु०=ग्रीष्म।

ग्रीध†—पु० [स० गृध्र] [स्त्री० ग्रीधणी] गीध। उदा०—चारौं पल ग्रीधणी चिड।—प्रिथीराज।

ग्रीवा—स्त्री० [स०√गृ (निगलना)+वन्, नि० सिद्धि] सिर और धड को जोडनेवाला अंग। गरदन। गला

ग्रीवी (विन्)—वि० [स० ग्रीवा+ईनि] लबी गरदनवाला।

पु० ऊँट।

ग्रीषम†—पु०= ग्रीष्म।

ग्रीष्म—स्त्री० [स०√ग्रस्+मक् नि० सिद्धि] [वि० ग्रैष्म, ग्रैष्मिक] १. छ ऋतुओ मे से दूसरी ऋतु जिसमे बहुत अधिक गरमी पडती है। जेठ और आषाढ के दिन। २ गरमी। ताप।

वि० उष्ण। गरम।

ग्रीष्म-ऋतु—स्त्री० [प० त०] गरमी के दिन। जेठ और आषाढ के महीने।

ग्रीष्म-काल—पु०=ग्रीष्म ऋतु।

ग्रीष्म-भवा—स्त्री०[सं०ग्रीष्म√भू(होना)+अच्—टाप्]नेवारी का फूल।

ग्रीष्मावकाश—पु० [स० ग्रीष्म-अवकाश प० त०] कुछ विशिष्ट गरम

प्रदेशो मे कडी गरमी के समय होनेवाली छुट्टियाँ। गरमी की छुट्टियाँ। (समर वोकेशन)

ग्रीष्मी—स्त्री० [स० ग्रीष्म+अच्-डीष्] =ग्रीष्मभवा।

ग्रीस—पु० [अ०] [वि० ग्रीक] यूनान देश।

ग्रेन—पु० [अं०] एक पाश्चात्य तौल जो प्राय एक जौ के बराबर होती है।

ग्रेनाइट—पु० [अं०] हलके भूरे रग का एक तरह का आग्नेय पत्थर जो बहुत कडा होता है।

ग्रेह*—पु०=गेह (घर)।

ग्रेही*—पु० [स० गृही] घर-बारवाला अर्थात् ससारी व्यक्ति।

ग्रेजुएट—पु० [अं०] वह जिसने उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त की हो। स्नातक।

ग्रेम—पु० [अं०] एक पाश्चात्य तौल जो लगभग १५½ ग्रेन (या औस के अट्ठाइसवे भाग) के बराबर होती है।

ग्रैवेयक—पु० [स० ग्रीवा+ढकञ्-एय] १. गले मे पहनने का कोई गहना। जैसे—हार, माला, हैकल आदि। २. हाथी के गले मे बाँधी जानेवाली जजीर। ३. जैनो के एक प्रकार के नौ देवता जो लोक पुरुष की गरदन पर स्थित माने गये हैं।

ग्रैष्म—वि० [स० ग्रीष्म+अण्] १ ग्रीष्म-संबधी। २ ग्रीष्म ऋतु मे होनेवाला। जैसे-ग्रैष्म रोग। ३ ग्रीष्म ऋतु में बोया जानेवाला।

ग्रैष्मिक—वि० [स० ग्रीष्म+ठञ्-इक] =ग्रैष्म।

ग्लान—वि० [सं० √ग्लै (अप्रसन्नता) +क्त] १ ज्वर आदि रोगो से पीडित। बीमार। रोगी। २. थका हुआ। शिथिल। ३ कमजोर। दुर्वल।

*स्त्री० = ग्लानि।

ग्लानि—स्त्री० [स० √ग्लै +क्तिन्] १. मानसिक या शारीरिक शिथिलता।

विशेष—साहित्य मे यह एक सचारी भाव माना जाता और अनाहार, निद्रा, परिश्रम, प्यास, रोग, सभोग आदि के कारण होता है। इसके अनुभाव है—शिथिलता, निर्वलता, मद गति, कातिहीन दृष्टि आदि आदि।

२. अपने ही किसी कार्य का अनौचित्य मालूम होने पर मन मे होनेवाला खेद या हल्का दु.ख। मानसिक खेद।

ग्लास—पु० दे० 'गिलास'।

ग्लौ—पु० [स० √ग्लै+डौ] १. चद्रमा। २. कपूर। ३ पृथ्वी।

ग्वाँड़ा†—पु० [स० गुण्ड] १. घेरा। वृत्त। २ घिरा हुआ स्थान। बाडा।

ग्वार—स्त्री० [स० गोराणी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियो की तरकारी और उसकी फलियो मे से निकलनेवाले बीजो की दाल बनती है।

ग्वार-नट—स्त्री० [अ० गारनेट] एक प्रकार का बढिया रगीन रेशमी कपडा।

ग्वार-पाठा—पु० [स० कुमारी-पाठा] घी-कुआँर।

ग्वारी*—स्त्री० दे० 'ग्वार'।

ग्वाल—पु० [सं० गोपाल, प्रा० गोवाल, व० गोयाल, गु० गोवाड, मरा० गवडी, प० गवाल] [स्त्री० ग्वालिन] गौएँ पालने तथा दूध आदि बेचने का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। अहीर।

ग्वाल-ककड़ी—स्त्री० [हिं० ग्वाल+ककडी] एक वनस्पति जिसकी जडें, पत्ते, बीज आदि दवा के काम आते हैं।

ग्वाल-गीत—पु० [हिं० ग्वाल+गीत] वे गीत जो ग्वाले या चरवाहे पशु चराते समय गाते हैं। (पैसूचोरल साग)

ग्वाल-दाड़िम—पु० [हिं० ग्वाल+दाडिम] मालकगनी की जाति का एक छोटा पेड़।

ग्वाल-बाल—पु० [हिं० ग्वाल+बाल] १ अहीरो के लडके। २ कृष्ण के बाल-सखा।

ग्वाला—पु० [स० गोपाल, प्रा० गोवाल] १ अहीर। ग्वाल। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी बहुत मुलायम होती है और जिस पर चित्रो आदि की उकेरी या खुदाई होती है।

ग्वालिन—स्त्री० [हिं० ग्वाल] १ ग्वाल जाति की स्त्री। २. ग्वाले की पत्नी। ३ ग्वारनामक पौधा। ४ गिजाई नामक बरसाती कीडा।

ग्वाह*—पु० = गवाह।

ग्वैठना*—स० [स० गुठन, हिं० गुमेठना] १. मरोडना। २ दे० 'गोठना'।

ग्वैंठा†—पु० =गोइठा।

ग्वैंड़ा*—पु० [हिं० गाँव + इडा] १. गाँव के आस-पास की भूमि। २ खेत या गाँव की सीमा।

ग्वैंड़े†—क्रि० वि० [हिं० ग्वैंडा] १ गाँव के आस-पास। गाँव के नजदीक।

२ निकट। पास। करीब।

ग्वैयाँ†—स्त्री० दे० 'गोइँयाँ'।

वि० [हिं० गाँव+ऐयाँ (प्रत्य०)] गाँव मे रहने या होनेवाला।

पु० देहाती।

घ

घ—देवनागरी वर्णमाला मे क-वर्ग का चौथा व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से कठ्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा सघोष है।

घँगोल†—पु० [देश०] कुमुद। कोई।

घँघरा†—पु० [स्त्री० घँघरी] घघरा।

घँघोना—स०=घँघोलना।

घँघोरना†—स०=घँघोलना।

घँघोलना—स० [हिं० घन+घोलना] १ किसी पात्र मे रखे हुए पानी मे हाथ या और कोई चीज डालकर उसे इस प्रकार हिलाना-डुलाना कि उसमे नीचे जमी या बैठी हुई कोई वस्तु पानी मे अच्छी तरह घुल-मिल जाय। २ नदी, नाले आदि के तल की मिट्टी इस प्रकार पैर, लकड़ी आदि से हिलाना-डुलाना कि वह ऊपर उठकर पानी गँदला कर दे।

घंट—पु० [स० घट] १ घडा । २. पानी का वह घडा जो किसी के मरने पर उसकी आत्मा को जल पहुँचाने के लिए १० या १२ दिनो तक पीपल मे बाँधकर लटकाते है ।
†पु०=घटा ।

घंटक—पु० [स०√घण् (दीप्ति) +क्त+कन्] एक प्रकार का क्षुप ।

घट धातु—स्त्री० [स० घटा–धातु] ताँबे और टीन के योग से बनाई जानेवाली एक मिश्र धातु जिससे घटे आदि बनते है । (बेल मेटल)

घंटा—पु० [स०√घट् (शब्द करना)+अच्—टाप्] [स्त्री० अल्पा० घटी] १ घट धातु का बना हुआ गोलाकार टुकडा जिसे लकडी, लोहे आदि के डडे या हथौडे से पीटने या मारने पर जोर की आवाज होती है ।
विशेष—हमारे यहाँ इसकी गिनती बाजो मे होती है और मदिरों मे आरती आदि के समय यह बजाया जाता है ।
मुहा०—**(किसी को) घंटे मोरछल से उठाना**=किसी वृद्ध का शव बाजे-गाजे और धूम-धाम से श्मशान पर ले जाना।
२ उक्त बाजा बजाने से उत्पन्न होनेवाला शब्द ।
क्रि० प्र०—बजना ।—बजाना ।
३. प्राचीन काल मे पहर-पहर पर घटा बजाकर समय की दी जानेवाली सूचना । ४ आज-कल दिन-रात का चौबीसवाँ भाग जो ६० मिनट का होता है । ५ कोई काम करने की वह निश्चित अवधि या भोग-काल जो ६० मिनटों या कभी-कभी इससे कुछ कम का होता है। जैसे—स्कूल मे पहले घटे मे हिसाब सिखाया जाता है और दूसरे घटे मे हिन्दी पढाई जाती है। ६ उक्त अवधि की घटा बजाकर दी जानेवाली सूचना । ७ पूर्ण अस्वीकृति, विफलता, व्यर्थता आदि का सूचक निराशाजनक शब्द। ठेगा ।
मुहा०—**(किसी को) घंटा दिखाना**=ऐसा उत्तर देना या मुद्रा बनाना जिससे कोई अर्थी पूरी तरह से निराश हो जाय। **घंटा हिलाना**=(क) व्यर्थ बैठे रहना । (ख) व्यर्थ का काम करना ।
८. लिंगेद्रिय । (बाजारू)

घंटाकरन—पु० [स० घटाकर्ण] १ बडे पत्तोवाली एक प्रकार की घास । २ दे० 'घटा-कर्ण' ।

घंटा-कर्ण—पु० [ब० स०] शिव का एक प्रसिद्ध उपासक जो कानो मे इसलिए घटे बाँधे रहता था कि राम या विष्णु का नाम उसके कानो मे न पहुँचने पाये ।

घंटाघर—पु० [हि० घटा+घर] वह ऊँची मीनार जिस पर बडी धर्म-घडी लगी रहती है और जिसके घटे का शब्द दूर तक सुनाई पडता है ।

घंटापथ—पु० [ष० त०] चौडी या बडी सडक । राजमार्ग ।

घंटिक—पु० [स० घटा+ठन्—इक] घडियाल या मगर। (जल-जन्तु)

घंटिका—स्त्री० [स० घटा+कन्–टाप् इत्व] १. छोटा घटा । २ घुँघरू । ३ वे छोटे घडे जो रहट मे बाँधे जाते है । क्षुद्र-घटिका ।

घंटियार—पु० [हि० घटी] पशुओ का एक प्रकार का रोग जिसमे उनके गले मे काँटे निकल आते है और उनसे कुछ खाया नही जाता ।

घंटी—स्त्री० [स० घटा] १ घटे की तरह बजाया जानेवाला धातु का वह उपकरण जो औधे मुँह के अर्ध गोलाकार पात्र की तरह होता है तथा जिसके बीच मे बजाने के लिए कोई धातु का टुकडा (लोलक) बँधा रहता है और जिसके ऊपरी भाग में डॉटी होती है जिसे हाथ मे पकडकर उसे बजाते है । २ कोई ऐसा छोटा उपकरण जिस पर आघात करने से शब्द उत्पन्न होता हो। जैसे—साइकिल या मेज पर की घटी । ३. उक्त उपकरणो के बजने का शब्द । ४ छोटी लुटिया । ५ घुँघरू। ६ गले का वह बाहरी बीचवाला भाग जिसमें हड्डी कुछ उभरी हुई होती है । ७ गले मे अन्दर को आगे बढा हुआ मास-पिंड । कौआ । घाँटी ।
मुहा०—**घंटी उठाना या बैठाना**=घटी के बढ या लटक जाने पर कोई दवा लगाकर उसे मलते हुए बैठाना ।

घंटील—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो चारे के काम मे आती और जमीन पर दूर तक फैलती है ।

घंटु—पुं० [स०√घट्+उन्] १ ताप। २ प्रकाश । ३ गजघटा।

घंई*—स्त्री० [?] १. पानी का भँवर। २ खभे की जगह लगाई जाने-वाली चाँड । टेक । थूनी ।
वि० [स० गभीर ?] बहुत अधिक गहरा ।

घउरी—स्त्री० =घौरी ।

घघरबेल—स्त्री० [हि० घुघराला+बेल] बदाल ।

घघरा—पु० [हि० घन+घेरा] [स्त्री० अल्पा० घघरी] १. टखनो तक लबा, गोल तथा बडे घेरेवाला एक प्रसिद्ध पहनावा जिसे स्त्रियाँ कमर मे नाडे से बाँधती है। २ वह लहँगा जो स्त्रियाँ धोती के नीचे पहनती है ।

घघराघोर†—पु०[हि० घँघरा+घोर] १ छुआछूत के विचार का अभाव। २. बहुत अधिक भ्रष्टाचार ।

घघरी—स्त्री० [हि० घघरा] छोटा घघरा या लहँगा ।

घट—पु० [स०√घट् (शब्द करना)+अच्] १. जल भरकर रखने का बडा बरतन विशेषत. मिट्टी का बरतन । कलश । घडा ।
पद—**मगल घट**=मागलिक अवसर पर जल से भरकर रखा जानेवाला कलश या घडा।
२ देह। शरीर। ३ अन्त करण। मन ।
मुहा०—**घट में बसना या बैठना**=(क) हृदय मे स्थापित होना । मन मे बसना । (ख) ध्यान पर चढा रहना ।
४ कुभ राशि । ५ हाथी का कुभ । ६ २० द्रोण की तौल । ७ किनारा ।
वि० [हि० घटना] किसी की तुलना मे कुछ घटा हुआ, कम, थोडा या हलका। उदा०—को घट ये वृषभानुजा ये हलधर के बीर—बिहारी।

घट-कंचुकी—स्त्री० [मध्य० स०] तात्रिको की एक रीति जिसमे पूजा करनेवाली सब स्त्रियो की कचुकियाँ या चोलियाँ एक घड़े मे भर देते हैं, और तब जिस पुरुष के हाथ मे जिस स्त्री की कचुकी या चोली आ जाती है, वह उसी स्त्री के साथ सभोग करता है ।

घटक—वि० [स०√घट्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० घटिका] १ कोई चीज घटित करने, बनाने या रचनेवाला (अश या तत्त्व) । २ कोई घटना या बात घटित या प्रस्तुत करनेवाला (पदार्थ या व्यक्ति) । ३ चतुर । चालाक ।
पु० १ विवाह-सबध स्थिर करानेवाला ब्राह्मण या और कोई व्यक्ति । बरेखिया । २ दलाल । ३ मध्यस्थ । ४ बीच मे पड़कर काम

पूरा करानेवाला चतुर व्यक्ति। ५ घडा। ६ बगाल और मिथिला मे एक प्रकार के ब्राह्मण जो सब गोत्रो और परिवारो का लेखा रखते और यह बतलाते है कि अमुक-अमुक पक्षो मे विवाह सबध हो सकता है या नही। ७. वह चीज या बात जो कोई दूसरी चीज या बात घटित करने या बनाने मे मुख्य रूप से अथवा साधन की भाँति सहायक होती है। घटित करनेवाला अश या तत्त्व। (फैक्टर)

घटकना*—स०=टकना।

घट-कर्कट—पु० [स० ?] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

घट-कर्पर—पु० [ष० त०] १ कालिदास के सम-कालीन कवि जिनकी गिनती विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नो मे होती थी। २ घडे आदि का टूटा हुआ अश। ठीकरा।

घटका—पु० [स० घटक=शरीर, अथवा अनु० घर्र-घर्र] मृत्यु होने से पहले की मनुष्य की वह स्थिति जिसमे उसका साँस घर-घर शब्द करता तथा रुक-रुक कर चलता है। घर्रा।

क्रि० प्र०— लगना।

घट-कार—पु० [स० घट√कृ (करना)+अण्, उप० स०] घट अर्थात् घडे बनानेवाला अर्थात् कुम्हार।

घट-घाट*—वि० [हिं० घटना] किसी की अपेक्षा थोडा कम या हलका। घटकर।

घटज—पु० [स० घट√जन् (उत्पन्न होना)+ड,उप०स०] अगस्त्य मुनि, जिनके सबंध मे कहा जाता है कि ये घडे मे से उत्पन्न हुए थे।

वि० घट से उत्पन्न।

घटती—स्त्री० [हिं० घटना] १ घटने अथवा कम होने की क्रिया या भाव। घटाव। 'बढती' का विपर्याय। २ उच्च स्तर से निम्न स्तर पर आने की अवस्था या स्थिति। ३ मात्रा, मान, मूल्य आदि मे घटने या कम होने की अवस्था या भाव।

पद—घटती से=बट्टे से। (देखे 'बट्टा' के अन्तर्गत)

४ अवनति। ह्रास।

मुहा०—घटती का पहरा=अवनति या दुर्दशा के दिन। बुरा जमाना।

५ कमी। न्यूनता।

वि० जिसमें कुछ घटी, कमी या न्यूनता हो। (डेफिशिट) (विशेष दे० 'अववर्त्त')

घट-दासी—स्त्री० [स०√घट्+णिच्+अन्—टाप्, घटा-दासी कर्म०स०] १ नायक और नायिका को एक दूसरे के सन्देश पहुँचानेवाली दूती। २ कुटनी।

घटन—पु० [स०√घट्+ल्युट्—अन] [वि० घटनीय, घटित] १. घटित होने अर्थात् गढे या बनाये जाने की क्रिया या भाव। २ कोई घटना उपस्थित होने या सामने आने की क्रिया या भाव।

घटना—स्त्री० [स०√घट् +णिच्+युच् अन, टाप्] १ ऐसी बात जो घटित हुई अर्थात् अस्तित्व मे आई अथवा प्रत्यक्ष हुई हो। कार्य या क्रिया के रूप मे सामने आनेवाली बात। २ कोई अप्रत्याशित या विलक्षण बात जो हो जाय। वाकया। ३ कोई ऐसी अनिष्टकारक बात जो नियम, विधि, व्यवहार आदि के विरुद्ध हो।

अ० [स० घटन] १ घटित होना। अस्तित्व मे आना। उदा०—घटई तेज बल मुख छवि सोई।—तुलसी। २. कार्य के रूप मे किया जाना। सपन्न होना। बनना। उदा०—कार्य-वचन-मन सपनेहुँ कबहुँक घटत न काज पराये।—तुलसी। ३ ठीक आना, उतरना या बैठना। ४. चरितार्थ होना। सिद्ध होना।

†स० १ बनाना। रचना। २ पूरा या सपन्न करना। उदा०—सब विधि काज घटब मैं तोरे।—तुलसी।

अ० [स० घृष्ट, प्रा० घट्ट] १ उच्च स्तर से निम्न स्तर पर आना। जैसे—(क) नदी का पानी घटना। (ख) किसी का मान या प्रतिष्ठा घटना। २ मात्रा, मान, मूल्य आदि मे कम ठहरना। कम पडना। जैसे—(क) खाने की सामग्री घटना। (ख) पुस्तक का दाम घटना। ३ पूरा न रह जाना। ४ रोगी का अत समय मे मृत्यु के समीप पहुँचना। प्राणवायु का कम होना। ५ मृत होना। मरना। जैसे—उनका चार बरस का लडका परसो घट गया।

घटनाई†—स्त्री० दे० 'घडनई'।

घटना-क्रम—पु० [ष० त०] एक के बाद एक कुछ घटनाएँ होते रहने का क्रम या भाव। घटनाओ का सिलसिला।

घटना-चक्र—पु० [ष० त०] एक के बाद एक अथवा एक के साथ एक करके होनेवाली अनेक प्रकार की घटनाओ का समूह। जैसे—घटना-चक्र ने फिर महायुद्ध की सम्भावना उत्पन्न कर दी।

घटनावली—स्त्री० [घटना-आवली, ष० त०] बहुत-सी घटनाओ का सिलसिला या समूह।

घटना-स्थल—पु० [ष० त०] घटना घटित होने का स्थान। (प्लेस आफ अकरेन्स)

घट-पल्लव—पु०[द्व० स०, घटपल्लव+अच्?] वास्तु शास्त्र मे, वह खभा जिसका सिरा घडे और पल्लव के आकार का बना हो।

घट-बढ़—स्त्री० [हिं० घटना+बढना] १ घटने-बढने अर्थात् कम या अधिक होने की अवस्था या भाव। कमी-बेशी। न्यूनाधिक्य। २ उतार-चढाव। परिवर्तन। ३ नृत्य, सगीत आदि मे आवश्यकतानुसार लय घटाने और बढाने की क्रिया या भाव।

वि० कभी अथवा कही कुछ कम और कभी अथवा कही कुछ अधिक।

घट-योनि—पु० [ब० स०] अगस्त्य मुनि।

घट-राशि—पु० [मध्य० स०] एक द्रोण की नाप जो लगभग सोलह सेर की होती है।

घटवाई—पु० [हिं० घाट+वाई] घाट का कर लेनेवाला अधिकारी।

स्त्री० वह कर जो घाट का अधिकारी यात्रियो आदि से घाट पर उतरने-चढने के बदले वसूल करता है।

स्त्री० [हिं० घटवाना] घटवाने अर्थात् कम कराने की क्रिया, भाव अथवा पारिश्रमिक।

घट-वादन—पु० [ष० त०] सगीत मे मिट्टी का घडा औधा करके उसे तबले की तरह बजाने की क्रिया अथवा विद्या।

घटवाना—स० [हिं० घटना का प्रे०] घटाने या कम करने का काम कराना।

घटवार—पु० [हिं० घाट+पाल या वाला] १ घाट का महसूल लेनेवाला। २ मल्लाह। केवट। ३. घाट का देवता। ४ दे० 'घाटिया'।

घटवारिया—पु०=घटवालिया।

घटवाल—पु० घटवार।

घटवालिया—पु० [हिं० घाट+वाला] १ तीर्थ स्थानो मे दान लेनेवाला

पड़ा। तीर्थ-पुरोहित। २. नदी आदि के घाट पर दान लेनेवाला ब्राह्मण। घाटिया।

घटवाह—पु० [हिं० घाट+वाह (प्रत्य०)] घाट का ठेकेदार जो घाट पर महसूल लेता है।

घटवाही—स्त्री० दे० 'घट्ट-कर'।

घट-संभव—पु० [व० स०] अगस्त्य मुनि।

घटहा†—पु० [हिं० घाट+हा (प्रत्य०)] १. घाट का ठेकेदार। घटवाह। २ वह नाव जो घाट पर से सवारियाँ लेकर दूसरी जगह या उस पार ले जाती है।

वि० [स्त्री० घटही] घाट पर का। घाटवाला।

घटा—स्त्री० [सं०√घट्+अङ्—टाप्] १. आकाश में उमड़े या छाए हुए घने बादलों की राशि या समूह। मेघमाला। २ ढेर। राशि। ३ झुंड। समूह। ४ गोष्ठी। ५. एक प्रकार का ढोल।

घटाई—स्त्री० [हिं० घटना+ई (प्रत्य०)] १. घटने या घटाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. घटे हुए अर्थात् हीन होने की अवस्था या भाव। हीनता। ३. अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

घटाकाश—पु० [घट-आकाश, मध्य०स०] तर्क या न्याय में घड़े के अन्दर का अवकाश अर्थात् खाली स्थान।

घटाग्र—पु० [घट-अग्र, ष० त०] वास्तु विद्या में खंभे के नौ विभागों में से आठवाँ विभाग।

घटा-टोप—पु० [सं० घटा-आटोप, तृ० त०] १. घने बादलों की गहरी और चारों ओर छाई हुई घटा जिससे प्रायः बहुत अँधेरा हो जाता है। २. चारों ओर से ढकने के लिए गाड़ी, पालकी आदि के ऊपर डाला जानेवाला ओहार। ३. चारों ओर से खूब घेरनेवाला दल या समूह।

वि० चारों ओर से पूरी तरह घिरा हुआ। उदा०—घटाटोप करि चहुँ-दिसि घेरी।—तुलसी।

घटा-घूम—स्त्री० [हिं०घटा+घूम] किसी काम या बात की अधिकता के कारण मचनेवाली धूम या हलचल। जैसे—सप्ताह के प्रारम्भ में व्यापार कुछ ढीला था, बाद को घटा-घूम के कारण बाजार सँभल गया।

घटाना—स० [हिं० घटना (प्रा० घट्ट)] १. हिन्दी 'घटना' क्रिया का स० रूप। २ उच्च स्तर से निम्न स्तर पर लाना। जैसे—मान घटाना। ३ मात्रा, मान, मूल्य आदि में कमी करना। कम करना। जैसे—दाम घटाना। ४. गणित में, किसी बड़ी राशि में से कोई छोटी राशि निकालना।

स० [हिं० घटना (सं० घटन)] १ घटित करना। २ किसी एक बात के तथ्य या तथ्यों का दूसरी बात पर पूरा उतारना या आरोपित करना।

घटाव—पु० [हिं० घटना] १. घटने अर्थात् कम होने की अवस्था या भाव। कमी। २. मात्रा, मान आदि घटने अर्थात् उतरने या कम होने की अवस्था या भाव। 'चढ़ाव' या 'बढ़ाव' का विपर्याय। उतार। ३. अवनति।

पद—घटाव-बढ़ाव=कभी घटने और कभी बढ़ने की अवस्था, क्रिया या भाव।

४ दे० 'घटती'।

घटावना†—स०=घटाना।

घटि—वि० [हिं० घटना] किसी की तुलना में घटिया या कम।

क्रि० वि०=घटकर।

स्त्री०=घटी (कमी)।

घटिक—पु० [सं० घट+ठन्—इक] वह व्यक्ति जो विशिष्ट समयों पर लोगों की जानकारी के लिए घंटे बजाता हो।

घटिका—स्त्री० [सं०√घट्+णिच्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १. समय का मान बतलानेवाला कोई छोटा यंत्र। घड़ी। २. समय का एक मान जो आज-कल के २४ मिनटों के बराबर होता है। ३. [घट+ङीप्+कन्—टाप्, ह्रस्व] छोटा घड़ा। गगरी।

घटिका-यंत्र—पुं० [ष० त०] =घटी-यंत्र।

घटिकावधान—पु० [घटिका-अवधान, ब० स०] घड़ी भर में ही बहुत से काम एक साथ कर डालने की कला, विद्या अथवा शक्ति।

घटिकाशतक—पुं० [ब० स०] १. वह व्यक्ति जो घड़ी भर में सौ अर्थात् बहुत से काम कर सकता हो। २. वह जो घड़ी भर में सौ श्लोक या पद्य बना सकता हो।

घटित—भू० कृ० [सं०√घट्+णिच्+क्त] १. जो घटना के रूप में उपस्थित या वर्तमान हुआ हो। २ अर्थ आदि के विचार से ठीक या पूरा उतरा हुआ। घटा हुआ। ३ जो गढ़कर अथवा और किसी रूप में बनाया गया हो अथवा किसी रूप में बना हो। निर्मित। रचित।

घटिताई*—स्त्री० [हिं० घटित] घटित होने की अवस्था या भाव।

स्त्री० [हिं० घटना=कम होना] १ कमी। न्यूनता। उदा०—इनहूँ में घटिताई कीन्हीं।—सूर। २ त्रुटि।

घटिया—वि० [हिं० घट+इया (प्रत्य०)] १. जो औरों की तुलना में घटकर अर्थात् खराब या हीन हो। २. जो गुण, धर्म आदि की दृष्टि से प्रसम या मानक स्तर से घटकर हो। जैसे—घटिया कपड़ा, घटिया पुस्तक। 'बढ़िया' का विपर्याय। ३. अधम। नीच।

घटियारी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे खवी भी कहते हैं। इसमें अदरक की-सी महक होती है।

घटिहा—वि० [हिं० घात+हा (प्रत्य०)] १. घात या धोखे-बाजी करने-वाला। २ घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। ३ चालाक। धूर्त। ४. दुष्ट और लंपट या व्यभिचारी। ५ नीच। वाहियात।

घटी—स्त्री० [सं० घट+अच्—ङीप्] १ २४ मिनट का समय। घड़ी। २. छोटा घड़ा। गगरी। ३. प्राचीन काल का वह छोटा घड़ा जिसमें जल भरकर और उसमें छेददार कटोरा रखकर उसमें भरनेवाले पानी के हिसाब से समय का मान स्थिर करते थे। ४ आज-कल समय बतलाने-वाला किसी प्रकार का यंत्र। घड़ी। ५ रहट में बाँधी जानेवाली छोटी गगरी या हँड़िया।

पुं० [सं० घट+इनि=घटिन्] १. कुंभ राशि। २ शिव।

स्त्री० [हिं० घटना] १. घटने अर्थात् कम होने की क्रिया या भाव। कमी। न्यूनता। २ घाटा। टोटा। ३ क्षति। नुकसान। हानि। ४. मूल्य, महत्त्व आदि में होनेवाली कमी। विशेष दे० 'छीज'।

घटी-यंत्र—पु० [ष० त०] १. प्राचीन काल का समय-सूचक यंत्र जो छोटे घड़े की तरह होता था और जिसमें भरे हुए जल में डूबनेवाले कटोरे की सहायता से समय का मान स्थिर करते थे। २ रहट। ३ संग्रहणी नामक रोग का एक प्रकार या भेद।

घटूका*—पु० = घटोत्कच।

घटोत्कच—पु० [घट-उत्कच, ब० स०] हिडिंबा के गर्भ से उत्पन्न भीम-सेन का पुत्र जिसे महाभारत के युद्ध मे कर्ण ने मारा था।

घटोद्भव—पु० [घट-उद्भव, ब० स०] अगस्त्य मुनि।

घटोर*—पु० [स० घटोदर] मेढ़ा। मेष। (डिं०)

घट्ट—पु० [स०√घट्ट् (चलाना)+घञ्] १ घाट। २ वह स्थान जहाँ चुगी या महसूल लिया जाता था।

* पु० =घट।

घट्ट-कर—पु० [मध्य० स०] वह कर जो किसी घाट पर नदी पार करने-वालो से लिया जाता है। (फेरी टोल)

घट्टन—पु० [स० घट्ट+ल्युट्—अन] १ चलाना या हिलाना-डुलाना। २ घोटना। ३. सघटन।

घट्टना—स्त्री० [स०√घट्ट्+युच्—अन टाप्] १ हिलाना-डुलाना। २. रगडना। ३ पेशा। वृत्ति।

घट्टा—पु० १ दे० 'घाटा'। २ दे० 'घट्ठा'।

घट्टित—पु० [स०√घट्ट्+क्त] नृत्य मे पैर चलाने का एक प्रकार जिसमे एडी को जमीन पर दबाकर पजा नीचे-ऊपर हिलाते है।

घट्टी—स्त्री० = घटिका।

घट्ठ—पु० [स० गोष्ठ] परामर्श आदि के लिए होनेवाला जमावडा। (राज०)

घट्ठा—पु० [स० घट्ट] चोट, रगड आदि के कारण शरीर के किसी अग मे होनेवाली कडी, उभारदार गाँठ। जैसे—बरतन माँजने से हाथ मे या लाठी की चोट लगने से सिर पर घट्ठा पड गया।

मुहा०—(किसी काम या बात का) घट्ठा पड़ना=पूरा पूरा अनुभव और ज्ञान होना।

घड़†—स्त्री० [स० घट्ट] सेना। (राज०) उदा०—दाटक अवड दड नह दीवो, दोयण घड सिर दाव दियो।—दुरसाजी।

†स्त्री०=घटा। (राज०)

घड़घड़—स्त्री० [अनु०] किसी प्रकार उत्पन्न होनेवाला घडघड शब्द।

घड़घड़ाना—अ० [अनु०] गडगड या घडघड शब्द होना। गडगडाना। जैसे—गाडी या बादलो का घडघडाना।

स० घडघड शब्द उत्पन्न करना।

घड़घड़ाहट—स्त्री० [अनु० घडघड] घडघड होने की ध्वनि या भाव।

घड़त—स्त्री० दे० 'गढत'।

घड़न—स्त्री० [स० घटन] घडने या गढने की क्रिया, प्रकार या भाव। गढन।

घड़नई—स्त्री० [हिं० घडा+नैया (नाव)] घडो मे बाँस बाँधकर बनाया हुआ वह ढाँचा जिस पर चढकर लोग छोटी-छोटी नदियाँ, नाले पार करते है।

घड़ना—स० दे० 'गढना'।

घड़नैल†—स्त्री० दे० 'घडनई'।

घड़ा—पु० [स० घट, पा० घटो, प्रा० घडग, घड, बँ० घरा, सिं० घरो, गु० घडो, मरा० घडा] १ धातु, मिट्टी आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध गोलाकार पात्र जो प्राय पानी भरने या अनाज आदि रखने के काम आता है। कलसा। गगरा।

मुहा०—(किसी पर) घड़ो पानी पडना=अपनी त्रुटि या भूल सिद्ध होने पर दूसरो के सम्मुख लज्जित होना।

पद—चिकना घड़ा=ऐसा व्यक्ति जो दूसरो द्वारा लज्जित किये जाने पर भी सकुचित न होता हो। बहुत बड़ा निर्लज्ज।

घड़ाई—स्त्री० दे० 'गढाई'।

घड़ाना—स० दे० 'गढाना'।

घड़ामोड़ा*—वि० [हिं० गढ+मोड़ना] शूर-वीर। (डिं०)

घड़िया—स्त्री० [स० घटिका, हिं० घडी] १ छोटी घडी, कलसी या गगरी। २ मिट्टी के वे छोटे बरतन जो रहट मे बाँधे जाते हैं। ३. गर्भाशय। बच्चे-दानी। ४ शहद का छत्ता। ५ मिट्टी का वह छोटा प्याला जिसमे आँच देने से उसमे धातु की मैल कटकर ऊपर आ जाती है। (सुनार)

घड़ियाल—पु० [स० घटिकालि, प्रा० घडियालि=घटो का समूह] वह बडा घटा जो पूजा मे या समय की सूचना के लिए बजाया जाता है।

पु० [स० ग्राह ?] छिपकली की जाति का, परंतु उससे बहुत बडा, भीषण तथा हिंसक एक प्रसिद्ध जलजन्तु जिसकी त्वचा कँटीली होती है और मुँह बहुत अधिक लबा होता है। ग्राह।

घड़ियाली—पु० [हिं० घडियाल] समय की सूचना देने के लिए घड़ियाल बजानेवाला व्यक्ति।

स्त्री० एक प्रकार का छोटा घडियाल या घटा जो प्राय देव-पूजन के समय बजाया जाता है। विजय-घट।

घड़ी—स्त्री० [स० घटी] १ काल का एक प्राचीन मान जो दिन-रात का ३२ वाँ भाग और ६० पलो का होता है। आज-कल के हिसाब से यह २४ मिनट का होता है।

पद—घड़ी घड़ी=रह-रहकर थोडी देर पर। बार-बार। **घड़ी पहर**=थोड़ी-देर। उदा०—घडी पहर बिलबौरे भाई जरता है।—कबीर।

मुहा०। घड़ी या घड़ियाँ गिनना =(क) बहुत उत्सुकतापूर्वक और समय पर ध्यान रखते हुए किसी बात की प्रतीक्षा करना। (ख) मरने के निकट होना। **(किसी का) घडी सायत पर होना**=ऐसी स्थिति मे होना कि थोडी ही देर मे प्राण निकल जायँगे। मरणासन्न अवस्था।

२ किसी काम या बात के घटित होने का अवसर या समय। जैसे—जब इस काम की घडी आवेगी तब यह आप ही हो जायगा।

मुहा०—घड़ी देना=ज्योतिषी का मुहूर्त या सायत बतलाना।

३ आज-कल, वह प्रसिद्ध छोटा या बड़ा यत्र जो नियमित रूप मे घटा, मिनट आदि अर्थात् समय का ठीक मान बतलाता है। यह यत्र कई प्रकार का होता है। जैसे—जेब घडी, दीवार घडी, धूप घडी आदि। ४ पानी रखने का छोटा घडा।

पद—घडी-दीया (देखे)।

स्त्री० [हिं० घडना] कपडो आदि की लगाई जानेवाली तह।

घड़ी-दीया—पु० [हिं० घड़ी+दीया=दीपक] हिन्दुओ मे, कर्मकाड का एक कृत्य जो किसी के मरने पर १०, १२ या १३ दिनो तक चलता है। इसमे एक छेददार घडे मे जल भरकर उसे चूने या टपकने के लिए कही रख-दिया जाता है और उसके पास एक दीया रखा जाता है जो दिन-रात जलता रहता है।

घड़ीसाज—पु० [हिं० घडी+फा० साज] घडियो की मरम्मत करनेवाला कारीगर।

घड़ीसाजी—स्त्री० [हिं० घडी+फा० साजी] घडी (यत्र) की मरम्मत करने का काम।

घड़ोला—पु० [हि० घडा+ओला (प्रत्य०)] छोटे आकार का घडा। छोटा घडा।

घड़ोंची—स्त्री० [हि० घडा+औंची (प्रत्य०)] लकडी की बनी हुई वह चौकी या चौखटा जिस पर पानी से भरे हुए घडे रखे जाते हैं।

घण*—पु० दे० 'घन'।
वि० दे० 'घना'।

घणा*—वि० [स्त्री० घणी] दे० 'घना'।

घत†—पु० [हि० घात] १ दे० 'घात'। २ ठीक और पूरा ढग या रीति। उदा०—मैं जानत या व्रत के घत कों।—सूर।

घतर†—पु० [?] तडका। प्रभात का समय।

घतिया—पु० [हि० घात+इया(प्रत्य०)] १. घात करनेवाला। २. विश्वासघात करनेवाला। धोखेबाज।

घतियाना—स० [हि० घात] १ अपनी घात या दाँव मे लाना। मतलब पर चढाना। २ कोई चीज चुरा, छिपा या दबाकर रख लेना।

घत्ता—पु० [?] अपभ्रश का एक प्रसिद्ध मात्रिक अर्द्धसम छद जिसके विषम चरणों मे १८-१९ और सम चरणो मे १३ मात्राएँ तथा तीन लघु होते है।

घत्तानंद—पु० [?] एक मात्रिक अर्द्धसम छद।

घन—पु० [स०√हन् (हिंसा)+अप्, घनादेश] १. मेघ। बादल। २ लोहा। ३ लोहा पीटने का बहुत बडा हथौडा। ४. झुड। समूह। ५ कपूर। ६. अभ्रक। ७ बजाने का बडा घटा। घडियाल। ८ एक प्रकार की सुगधित घास। ९. कफ। श्लेष्मा। १० नृत्य का एक प्रकार या भेद। ११ सगीत मे धातु का ढला हुआ वह बाजा जो केवल ताल देने के काम आता हो। जैसे—झांझ, मँजीरा आदि। १२. किसी चीज या बात की अधिकता या यथेष्ट मान। जैसे—आनन्द-घन। उदा०—पवन के घन घिरे पडते थे बने मधु अब।—प्रसाद। १३. मुख।(डि०) १४ गणित मे किसी अक को किसी अक के वर्ग से गुणा करने पर निकलने-वाला गुणनफल। जैसे—४ का घन (४×१६=)६४ होगा। १५ पदार्थों के मान का वह रूप जिसमे उनकी लबाई(या ऊँचाई)चौडाई (या गहराई) और मोटाई के कुल विस्तारो का अतर्भाव होता है। १६. ज्यामिति मे वह पदार्थ जिसके छ समान वर्गित पक्ष हों। १७ वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, पदार्थ की तीन स्थितियो मे से एक जिसमे उसके अणु एक साथ इस प्रकार सटे होते हैं कि वे अलग तथा अकेले क्रियाशील या गतिशील नही हो सकते है।
वि० १ घना (देखें)।
पद—**घन का**=(क) देखने मे बहुत अधिक घना। जैसे—घन का बादल। (ख) मात्रा या मान मे बहुत अधिक। जैसे—घन की विपत्ति।
२ (पदार्थ) जिसके अणु एक साथ इस प्रकार सटे हुए हों कि वे अलग-अलग क्रियाशील या गतिमान न हो सकते हों। ठस या ठोस ३. भारी। ४. दृढ। पक्का।
* पु०=शत्रुघन। उदा०—रघुनदन बिनु बधु कुअवसर जद्यपि घनु दूसरे हैं।—तुलसी।

घनक*—स्त्री० [स० घन] १ गर्जन। २ गडगडाहट। ३ चोट। प्रहार।

घनकना—अ० [हि० घनक] जोर की आवाज करना। गरजना।
स० चोट या प्रहार करना।

घनकफ—पु० [प० त०] ओला।

घनकारा*—वि० [हि० घनक] ऊँची आवाज करने या गरजनेवाला।

घन-काल—पुं० [प० त०] वर्षा ऋतु। बरसात।

घन-कोदंड—पु० [प० त०] इन्द्रधनुष।

घन-क्षेत्र—पु० [प० त०] किसी चीज की गहराई, चौडाई और लबाई का समूचा विस्तार।

घनगरज—स्त्री० [हि० घन+गर्जन] १ बादल के गरजने की ध्वनि। २ खुभी की जाति का एक छोटा पौधा जिसकी तरकारी बनती है। ढिंगरी। ३. एक प्रकार की तोप।

घनघटा—स्त्री० [हि० घन+घटा] बादलो की गहरी या घनी घटा।

घनघनाना—अ० [अनु०] घन घन शब्द होना। घटे की ऐसी ध्वनि निकलना।
स० घन-घन शब्द उत्पन्न करना।

घनघनाहट—स्त्री० [अनु०] घन-घन शब्द निकलने की ध्वनि या भाव।

घनघोर—वि० [हि० घन+घोर] १ बहुत अधिक घना। जैसे—घनघोर बादल। २ भीषण या विकट। जैसे—घनघोर युद्ध। ३ (कलन या गणित) जिसमें लंबाई, चौडाई और मोटाई तीनों का योग या विचार हो। (क्यूब)।
पु० १ तुमुल नाद। भीषण ध्वनि। २. बादलो की गरज।

घनचक्कर—पु० [हि० घन+चक्र] १ वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि सदा चचल रहे। बहुत चंचल बुद्धि का आदमी। २. बेवकूफ। मूर्ख। ३ वह जो बराबर इधर-उधर व्यर्थ घूमता फिरे। ४ जजाल। झझट। ५. एक प्रकार की आतिशबाजी जो चक्कर के रूप मे होती और बहुत जोर का शब्द करती है। ६. सूरजमुखी (पौधा और फूल)।

घनता—स्त्री० [स० घन+तल्—टाप्] १. घने होने की अवस्था या भाव। घनापन। २. अणुओं आदि की पारस्परिक ठोस गठन। ठोसपन। ३. दृढता। मजबूती। ४ किसी पदार्थ की सारी लबाई, चौडाई और मोटाई का समूह।

घनताल—पु० [स० घनता√अल् (पर्याप्ति) + अच्] १. चातक। पपीहा। २ [घन-ताल, कर्म० स०] करताल की तरह का एक बडा बाजा।

घनतोल—पु० [सं० घन√तुल् (तोलना)+अण्, उप० स०] चातक। पपीहा।

घनत्व—पु० [स० घन+त्व] =घनता।

घननाद—पु० [प० त०] १ बादलो की गरज। २ मेघनाद (रावण का पुत्र)।

घनपति—पु० [प० त०] मेघों के अधिपति, इन्द्र।

घन-प्रिय—वि० [ब० स० वा प० त०] बादल जिसे प्रिय हो अथवा जो बादलो का प्रिय हो।
पु० १. मोर। मयूर। २ मोरशिखा नाम की घास।

घन-फल—पु० [प० त०] १ वह गुणनफल जो किसी सख्या को उसी सख्या से दो बार गुणा करने से निकलता है। घन। २ वह जो किसी ठोस चीज की लबाई, चौडाई और मोटाई (या गहराई) के मानो को एक दूसरे से गुणा करने पर निकलता है।

घनबहेड़ा—पुं० [हिं० घन+वहेड़ा] अमलतास।
घनबान—पुं० [हिं० घन + वाण] १ एक प्रकार का वाण।
घन-बेला—पुं० [हिं० घन+वेला] [स्त्री० अल्पा० घन-वेली] एक प्रकार के वेले का पौधा और उसका फूल।
घन-मान—पुं० [ष० त०] किसी वस्तु की लवाई, चौडाई और मोटाई का सम्मिलित मान। (क्यूब मेजर)
घन-मूल—पुं० [प० त०] गणित मे किसी घन (राशि) का मूल अक। (क्यूब रूट) जैसे—२७ का घन मूल ३ होता है, क्योकि ३ को ३ से दो वार गुणा करने पर ही २७ होता है।
घन-रस—पुं० [प० त०] १ जल। पानी। २ कपूर। ३ हाथियो का एक रोग जिसमे उनका खून विगड़ जाता और नाखून गलने लगते है।
घन-वर्धन—पुं० [तृ० त०] [वि० घनवर्धनीय, भाव० घनवर्धनीयता] धातुओ आदि को हथौडे से पीटकर वढाना।
घन-वाह—पुं० [घन√वह (ले जाना) +णिच्, +अण् उप० स०] वायु।
घनवाहन—पुं० [व० स०] इन्द्र, जिसका वाहन मेघ माना गया है।
घन-वाही—स्त्री० [हिं० घन+वाही (प्रत्य०)] १ किसी चीज को घन या हथौडे से कूटने का काम। घन चलाना। २ वह गड्ढा या स्थान जहाँ खडे होकर घन (हथौडा) चलाया जाता है।
घन-श्याम—वि० [उपमि० स०] जिसका रग वादल के समान श्याम हो। हल्का नीलापन लिये हुए काला।
पु० १ काला वादल। २. श्रीकृष्ण का एक नाम।
घन-सार—पुं० [प० त०] १ कपूर। २ चंदन। ३ जल। ४ सुदर वादल। ५ [व० स०] पारा।
घनहर*—पुं० [स० घन=वादल] वादल। मेघ।
घनहस्त—वि० [व० स०] जो लवाई, चौडाई और मोटाई या गहराई तीनो आयामो मे एक-एक हाथ भर हो।
पु० १ क्षेत्र या पिंड जो एक हाथ लवा, एक हाथ चौडा और एक हाथ गहरा या मोटा हो। २ अन्न आदि नापने का एक पुराना मान जो एक हाथ लवा, एक हाथ चौडा और एक हाथ गहरा होता था। खारी। खारिका।
घनांजनी—स्त्री० [घन-अजन, व० स०, डीप्] दुर्गा।
घनात—पु० [घन-अत, व० स०] वर्षा की समाप्ति पर आनेवाली शरद् ऋतु।
घना—वि० [स० घन] [स्त्री० घनी] १. (वस्तु) जिसके विभिन्न अश, अवयव या कण इस प्रकार आपस मे मिल या सट गये हो कि वह अविभिन्न समूह जान पडे। जैसे—घना कोहरा, घना वादल। २ (अवकाश या स्थान) जिसमे वहुत सी वस्तुएँ सट-सटकर खडी, पडी या रहती हो। जैसे—घना जगल, घना शहर। ३ (वस्त्र आदि) जिसकी वुनावट के ताने-वाने आपस मे खूव सटे हुए हो। गफ। गझिन। ४ जिसमे गाढता या प्रखरता वहुत अधिक हो। जैसे—घना अधकार, घनी नीलिमा। ५ जिसमे आपसदारी या समीपता वहुत अधिक हो। घनिष्ठ। गहरा। जैसे—घना सवध। ६ वहुत अधिक। अतिशय। जैसे—घनी पीडा। जैसे—जिनके लाड वहुतेरे, उनके दुःख भी घनेरे। (कहा०)
स्त्री० [स० घन+अच्—टाप्] १ मापपर्णी। २. रुद्रजटा। जटाधारी लता। ३ एक प्रकार का पुराना वाजा।
घनाकर—पु० [घन-आकर, प०त०] वर्षाऋतु।
घनाक्षरी—स्त्री० [घन-अक्षर, व० स०, डीप्] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ३१ वर्ण होते हैं और अत में प्राय: गुरु वर्ण होता है। इसे कवित्त भी कहते है।
घनागम—पु० [घन-आगम, ष०त०] वर्षाऋतु का आरम्भ।
घनाघन—पु० [स०√हन् (हिंसा) +अच्, नि० सिद्धि] १ देवताओ का राजा, इद्र। २ वरसनेवाला वादल। उदा०—गगन-अगन घनाघन ते सघन तम।—सेनापति। ३ मस्त हाथी।
क्रि० वि० लगातार घन-घन शब्द करते हुए।
घनात्मक—वि० [स० घन-आत्मन्, व०स०, कप्] १ (पदार्थ) जिसकी लवाई, चौडाई और मोटाई या गहराई वरावर हो। २ (क्षेत्रफल) जो लवाई, चौडाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो।
घनात्यय—पु० —[घन-अत्यय, व०स०]=घनात।
घनानंद—पु० [घन-आनद, व०स०] गद्य काव्य का एक भेद।
घनामय—पु० [घन-आमय, व०स०] खजूर।
घनाली*—स्त्री० [स० घन-अवली] वादलो की पक्ति या समूह। उदा० —चचला थी चमकी घनाली घहराई थी।—मैथिलीशरण।
घनाश्रय—पु० [घन-आश्रय, प०त०] आकाश।
घनिष्ठ—वि० [स० घन+इष्ठन्] जिसके साथ वहुत अधिक या घना हेल-मेल, मित्रता, सवध या सहचार हो। जैसे—घनिष्ठ मित्र।
घनिष्ठता—स्त्री० [स० घनिष्ठ+तल–टाप्] १ घनिष्ठ होने की अवस्था, गुण या भाव। २ वह स्थिति जिसमे दो व्यक्तियो मे पारस्परिक इतना मेल या स्नेह होता है कि वे एक दूसरे के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझने लगते है।
घनीभवन—पु० [स० घन+च्वि ईत्व√भू (होना)+ल्युट्–अन] किसी तरल या द्रव पदार्थ का जमकर गाढा, घना या ठोस होना।
घनीभाव—पु० [स० घन+च्वि, ईत्व√भू+घञ्]=घनीभवन।
घनीभूत—भू० कृ० [स० घन+च्वि, ईत्व, √भू+क्त] १ जो गाढा होकर या जमकर घना हो गया हो। २ जो किसी प्रकार वढ़कर वहुत अधिक या घोर हो गया हो। जैसे—जो घनीभूत पीडा थी॰॰ ।—प्रसाद।
घनेतर—वि० [घन-इतर, प० त०] १ जो घन न हो, वल्कि उससे भिन्न हो। २ तरल।
घनेरा*—वि० [हिं० घना] १ मान, सख्या आदि मे वहुत अधिक या वहुत-सा। २ घना।
घनोदधि—पु० [घन-उदधि, व० स०] एक नरक।
घनोदय—पुं० [घन-उदय, व०स०] वर्षाऋतु का आरम्भ।
घनोपल—पु० [घन-उपल, ष०त०] ओला।
घन्नई*—स्त्री० दे० 'घड़नई'।
घपचिआना—अ० [हिं० घपची] १ असमजस मे पड़कर चकपकाना। चक्कर मे आना। २ व्याकुल होना। घवराना।
स० १ किसी को असमजस या चक्कर मे डालना। २ घवराहट पैदा करना।

घपची—स्त्री० [हिं० घन+पच] वस्तु को पकड रखने के लिए दोनों हाथों के पंजों की गठान। दोनों हाथों की मजबूत पकड़।
क्रि० प्र०—बाँधना।

घपला—पुं० [अनु०] १. बिना क्रम की मिलावट। २. ठीक प्रकार से कोई काम न करने के कारण होनेवाली अव्यवस्था या गड़बड़ी। ३ वह कार्य जिसके कारण कोई गड़बड़ी विशेषत अधिक आर्थिक गड़बड़ी हुई हो। गोल-माल।

घपलेबाज—वि [हिं +फा०] घपला करने की प्रवृत्तिवाला।

घपलेबाजी—स्त्री० [हिं०+फा०] घपला करने की अवस्था, गुण या भाव।

घपुआ†—वि०=घप्पू।

घप्पू†—वि० [अनु०] निरा मूर्ख। निर्बुद्धि।

घबड़ाना—अ० =घबराना।

घबड़ाहट—स्त्री०=घबराहट।

घबराना—अ० [स० गह्वर या हिं० गड़बड़ाना] १. आशंका या भय उत्पन्न होने पर मन मे धुकधुकी होने लगना। डर के कारण हृदय काँपने लगना। कुछ विकल होना। जैसे—(क) अधिकारी के नाम से ये कर्मचारी घबराते है। (ख) इन बीमारियों से शहरवाले घबरा गये हैं। २ कोई काम करने मे भय आदि के कारण हिचकना। जैसे—थाने जाने मे वह न जाने क्यों घबराता है। ३ आश्चर्य आदि के कारण भौचक्का होना। सकपकाना। जैसे—इतने आदमियों को एक साथ देखकर वह घबरा गया। ४ कोई काम करते-करते उससे जी उकता, उचट या ऊब जाना। जैसे—यहाँ रहते-रहते वह घबरा गये हैं। ५. किसी व्यक्ति, समाचार आदि की प्रतीक्षा करते-करते बहुत अधिक बेचैन या विकल होना। जैसे—आपके समय पर न पहुँचने से सारा घर घबरा रहा था।
स० १ ऐसी स्थिति उत्पन्न करना कि कोई अधीर या विकल होकर यह निश्चय न कर सके कि क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए। २ इतना उद्विग्न करना कि दूर होने या हट जाने को जी चाहने लगे। ३ किसी के मन मे आतुरता और चचलता उत्पन्न करना।

घबराहट—स्त्री० [हिं० घबराना] घबराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

घमंका†—पुं० [अनु०] १. आघात आदि से उत्पन्न होनेवाला घम् शब्द। २ घूंसा। मुक्का।

घमंड—पुं० [?] अहं भावना का वह अनुचित तथा उग्र रूप जिसमें मनुष्य अपने बुद्धि-बल, सामर्थ्य आदि को बहुत अधिक महत्त्व देता हुआ दूसरों को अपने सामने तुच्छ या नगण्य समझने लगता है। अभिमान। शेखी।
क्रि० प्र०—करना। —टूटना।—होना।

घमंडी—वि० [हिं० घमंड] [स्त्री० घमंडिन] जिसे घमंड हो। घमंड करनेवाला।

घम—पुं० [अनु०] कोमल तल पर कड़ा आघात लगने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। जैसे—पीठ पर घम से मुक्का लगना।

घमकना—अ० [अनु० घम] १ घम-घम शब्द होना। २ जोर का शब्द करना। गरजना। जैसे—बादलों का घमकना।
स० १ घम-घम शब्द उत्पन्न करना। २ ऐसा आघात करना जिससे घम शब्द हो। जैसे—मुक्का घमकना।

घमका—पुं० [अनु०] १. आघात आदि से उत्पन्न होनेवाला घम शब्द। घमका। २. दे० 'उमस'।

घमकाना*—स० [हिं० घमकना] १. घम-घम शब्द उत्पन्न करना। २ बजाना।

घमखोर†—वि० [हिं० घाम+फा० खोर (खानेवाला)] १. घाम या धूप खानेवाला। २. जो धूप मे रह सके या धूप सह सके।

घमघमा†—पुं० [हिं० घाम=धूप] दिन का ऐसा समय जिसमें धूप निकली हो।

घमघमाना—अ० [अनु० घम-घम] घम-घम शब्द होना।
स० [अनु०] घम-घम शब्द उत्पन्न करते हुए कोई आघात या प्रहार करना। जैसे—दस-पाँच घूँसे या मुक्के घमघमाना।

घमर—पुं० [अनु०] १. नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द। २ गंभीर ध्वनि।

घमरा—पुं० [सं० भृंगराज] भृंगराज नाम की बूटी। भँगरैया।

घमरौल—स्त्री० [अनु० घम घम] चाल-मेल की ऐसी स्थिति जिसमें किसी चीज या बात का कुछ भी पता न चले। बहुत बड़ी अव्यवस्था या गड़बड़ी।

घमस—स्त्री० दे० 'घमसा'।

घमसा—पुं० [हिं० घाम] १. वर्षा काल की वह गरमी जो हवा न चलने के कारण होती है। उमस। २ घनापन। घनता।

घमसान—वि०, पुं०=घमासान।

घमाका—पुं० [अनु० घम] भारी आघात से होनेवाला घम शब्द।

घमाघम—क्रि० वि० [अनु०] घम-घम शब्द के साथ। भारी आघात करते हुए। जैसे—उसने घमाघम चार घूँसे लगा दिये।
स्त्री०= घमाघमी।

घमाघमी—स्त्री० [अनु०] १. निरंतर घमघम होनेवाली ध्वनि या जोर का शब्द। २. गहरी या भारी मार-पीट। ३. ऐसी भीड़-भाड़ जिसमें खूब धक्कम-धक्का होता हो। ४. धूम-धाम।

घमाना—अ० [हिं० घाम] सरदी से बचने के लिए घाम या धूप मे बैठना। धूप खाना या सेंकना।
स० सुखाने आदि के लिए कोई चीज धूप मे रखना। धूप दिखाना।

घमायल—वि० [हिं०घमाना] घाम या धूप की गरमी से पका हुआ (प्राय फलों के लिए)।

घमासान—पुं० [अनु० घम+सान (प्रत्य०)] घोर और भीषण मार-काट अथवा युद्ध। गहरी और भारी लड़ाई।
वि० बहुत ही घोर, भीषण या विकट (उपद्रव या मार-काट)। जैसे—घमासान युद्ध।

घमाह†—पुं० [हिं० घाम] ऐसा बैल जो गरमी मे हल जोतने से जल्दी थक जाता हो।

घमोला—वि० [हिं० घाम=धूप] घाम खाया हुआ। घाम से मुरझाया हुआ।

घमूह—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो प्राय करील आदि की झाड़ियों के पास होती और चारे के काम मे आती है।

घमोई—स्त्री० [देश०] बाँस का एक प्रकार का रोग जिससे बाँस की जड़ों मे बहुत से पतले और घने अंकुर निकलकर उसकी बाढ़ और

नये कल्लो का निकलना रोक देते है। २ दे० 'घमोय'।

घमोय—स्त्री० [देश०] गोमी की तरह का एक छोटा पौधा जिसके पत्ते कटावदार तथा काँटो से भरे होते हैं। भड़भाड। स्वर्णक्षीरी।

घमौरी—स्त्री०=अँभौरी।

घर—पु०[स० गृहम्; पा०, प्रा० घरम्; उ०, गु० ने०, प०, बँ०, मरा० घर, सिं० घरु; कश्०, सिह० गर] [वि० घरु, घराऊ, घरेलू] १ ईंट, पत्थर, मिट्टी, लकड़ी आदि की वह विशिष्ट वास्तु रचना जो प्राय. दीवारो से घिरी और छतो से पटी हुई होती है और जिसमे लोग अपने परिवार या बाल-बच्चो के साथ रहते हैं; और इसी लिए जिसमें गृहस्थी का भाव भी सम्मिलित है। मकान। (हाउस)

मुहा०—घर आँगन हो जाना=घर का टूट-फूटकर खँडहर या मैदान हो जाना। जैसे—ऐसा सुन्दर घर अब आँगन हो गया है। **घर का आँगन होना**=घर या उसमे रहनेवाले परिवार के सुख-सौभाग्य आदि का ऐसा विस्तार या वृद्धि होना जो सब प्रकार से अभीष्ट तथा शुभ हो। **घर-घर के हो जाना**=अपने रहने का घर न होने के कारण कभी किसी के घर और कभी किसी के घर जाकर रहना। इधर-उधर मारे-मारे फिरना। उदा०—तेरे मारे यातुधान भये घर-घर के।—तुलसी। **घर सिर पर उठाना**=बहुत कोलाहल करना या शोर मचाना। हो-हल्ला करना।

२. (क) उक्त प्रकार के भवन या रचना का कोई ऐसा अलग खड या विभाग जिसमे स्वतत्र रूप से कोई परिवार रहता हो। किसी परिवार का निवास-स्थान। (ख) उक्त खड या विभाग मे रहने-वाला परिवार। जैसे—इस मकान के चारो घरो से एक-एक रुपया मिला है। ३. उक्त में एक साथ रहनेवालो की पूरी सामाजिक इकाई। एक ही मकान या उसके विभाग मे एक साथ रहनेवाले परिवार या रिश्ते-नाते के सब लोग। जैसे—(क) आज घर भर मेला देखने जायगा। (ख) घर के सब प्राणियो को ब्याह का न्योता मिला है। (ग) हैजे मे घर के घर तबाह हो गये।

मुहा०—घर करना=(क) बसने या स्थायी रूप से रहने के लिए अपना निवास स्थान बनाना। जैसे—जगल मे घर करना। (ख) घर-गृहस्थी का ऐसा ठीक और पूरा प्रबंध करना कि परिवार के सब लोगो का ठीक तरह से निर्वाह होता रहे। (ग) पुरुष और स्त्री का पति-पत्नी के रूप में रहकर गृहस्थी चलाना। जैसे—आओ मीता, घर करें, आया सावन मास।—स्त्रियो का गीत। **(किसी काम को) घर का रास्ता समझना**=(क) बहुत ही सरल और सुगम समझना। (ख) सामान्य और सुपरिचित समझना। **घर के घर**=अदर ही अदर और गुप्त रूप से। बिना औरो को या बाहरी लोगो को जतलाये। जैसे—सब झगडे घर के घर तै हो गये। **घर के घर रहना**=लेन-देन, व्यवहार, व्यापार आदि मे ऐसी स्थिति मे रहना कि न तो कुछ आर्थिक लाभ हो और न हानि ही। **(किसी का) घर घालना**=(क) किसी को इस प्रकार नष्ट या बरबाद करना कि उसकी बहुत बडी आर्थिक हानि हो अथवा मान-मर्यादा नष्ट हो जाय। (ख) किसी परिवार मे अशाति, कष्ट, वैमनस्य आदि उत्पन्न करना। **घर चलाना**=घर के व्यय आदि का निर्वाह और प्रबध करना। **घर जमाना**=घर-गृहस्थी की सभी उपयोगी चीजें एकत्र करना जिसमे सब आवश्यकताएँ पूरी होती रहे। **(किसी के) घर तक पहुँचना**=किसी को माँ-बहन तक की गालियाँ देना। **(किसी का) घर देख पाना या देख लेना**=एक बार कहीं से उद्देश्य-सिद्धि या फल-प्राप्ति हो जाने पर परच जाना और प्राय उसी ओर प्रवृत्त होना। जैसे—अब तो इन्होने घर देख लिया है, नित्य पहुँचा करेंगे। **(किसी स्त्री का किसी के) घर पड़ना**=किसी के घर जाकर पत्नी भाव से रहना। **(दर, लागत या भाव के विचार से कोई चीज) घर पड़ना**=भाव, लागत, व्यय आदि के विचार से किसी चीज की दर या दाम जात या स्थिर होना। जैसे—ये मोजे दस रुपये दरजन तो घर पडते हैं, यदि ग्यारह रुपये दरजन भी न बिकें तो हमें क्या बचेगा? (दूकानदार) **(किसी का) घर फोड़ना**=किसी परिवार मे उपद्रव, कलह या लड़ाई-झगड़ा खड़ा करना जिसमे उस घर के रहनेवाले एक दूसरे से अलग हो जाना चाहे। **(अपना) घर बनाना**=आर्थिक दृष्टि से अपना घर सम्पन्न और सुखी करना। **(किसी का) घर बसना**=विवाह हो जाने और घर मे पत्नी के आ जाने के कारण घर आबाद होना। **(किसी) का) घर बिगाड़ना**=(क) किसी के घर की समृद्धि नष्ट करना। घर तबाह करना। (ख) घर मे फूट फैलाना। घर के लोगो मे परस्पर लडाई कराना। (ग) किसी की बहू-बेटी को बुरे मार्ग पर ले जाना। **(स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना**=किसी के घर जाकर पत्नी भाव से रहने लगना। **घर बैठे**=बिना कोई विशेष परिश्रम या प्रयास किये। जैसे—अब सारा काम घर बैठे हो जायगा। **(अपना या किसी का) घर भरना**=घर को धन-धान्य से पूर्ण करना। जैसे—इन्होंने जन्म भर अपना (या अपने मालिक का) घर भरने के सिवा किया ही क्या है? **(किसी स्त्री को) घर में डालना**=उपपत्नी या रखेली बनाकर अपने घर मे रख लेना। **घर से**=अपने पास से। पल्ले से। जैसे—हमे तो घर से सौ रुपए निकाल कर देने पडे। **घर सेना**=घर मे चुपचाप और व्यर्थ पडे रहना, बाहर न निकलना। **घर से बाहर पाँव या पैर निकालना**=किसी प्रकार के कुमार्ग या दुष्कर्म मे प्रवृत्त हो काम करना।

पद—घर का=(क) निज का। अपना। जैसे—घर का मकान या बगीचा, घर के लोग। (ख) आपस के लोगो का। जिससे परायो या बाहरवालो का कोई सबध न हो। जैसे—घर का झगडा, घर की पूँजी। (ग) स्त्री की दृष्टि से उसका पति या स्वामी। उदा०—घर के हमारे परदेस को सिधारे यातें दया करि बूझीए हम रीति राहवारे की।—कविंद। **घर का अच्छा**=(क) कुल, शील आदि के विचार से श्रेष्ठ। (ख) आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और सुखी। **घर का उजाला**=परिवार, वश आदि की मान-मर्यादा बढानेवाला व्यक्ति। **घर का न घाट का**=जिसके रहने का ठीक-ठिकाना या कोई निश्चित स्थान न हो। जैसे—धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का। (कहा०) **घर का बहादुर, मर्द या शेर**=वह जो अपने घर के अन्दर या घर के लोगो के सामने ही बहादुरी की डीग हाँकता हो, बाहरी लोगो के सामने दब जाता हो। **घर की खेती**=ऐसा काम, चीज या बात जो अपने घर में आप से आप या अपने साधारण परिश्रम से यथेष्ट परिमाण मे मिल या हो सकती हो। **घर के बाढ़े**=जो अपने घर मे ही रहकर बडा हुआ हो, परन्तु जिसे अभी बाहरवालो के सामने कुछ कर दिखाने का अवसर न मिला हो अथवा ऐसी शक्ति न आई हो। घर ही का बहादुर या वीर। उदा०—द्विज देवता घरहि के बाढ।—तुलसी। **घर में**=(क) स्त्री। जोरू। घरवाली।

घर-गृहस्थी—स्त्री० [हिं० घर+गृहस्थी] १ घर में रहनेवाले परिवार के सदस्य और उनकी सब वस्तुएँ। जैसे—घर-गृहस्थी यहाँ से उठाकर अब कहाँ जायँ। २ परिवार के लोग।

घरघराना—अ० [अनु० घर घर] [भाव० घरघराहट] कफ के कारण गले से साँस लेते समय घर-घर शब्द निकलना या होना।
स० घर-घर शब्द उत्पन्न करना।

घर-घराना—पु० [हिं० घर+घराना] १ आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियो से सपन्न और प्रतिष्ठित परिवार। २. कुल या वश और उसकी मर्यादा आदि। जैसे—पहले उनका घर-घराना देख लेना तब विवाह की वात करना।

घरघराहट—स्त्री० [अनु० घर्र घर्र] घर-घर शब्द होने की क्रिया या भाव। जैसे—कफ के कारण गले मे होनेवाली घरघराहट।

घर-घाट—पु० [हिं०] १ किसी काम या वात के वे महत्वपूर्ण अग या पक्ष जिनकी ठीक और पूरी जानकारी होने पर वह काम या वात अच्छी तरह और सुगमतापूर्वक पूरी या सम्पन्न होती है। जैसे—कुश्ती, चित्रकारी, रोजगार या सगीत के घर-घाट। २ किसी चीज की वनावट के विचार से उसके उतार-चढाव या सुडौल गठन। जैसे—कटार या तलवार का घर-घाट। ३ अपनी विशिष्ट प्रकार की मनोवृत्ति के अनुसार किसी व्यक्ति का कार्य अथवा व्यवहार करने का कौशल, ढग या प्रणाली। जैसे—पहले यह तो समझ लो कि वह किस (या कैसे) घर-घाट का आदमी है। ४. उचित और उपयुक्त स्थिति। ठौर-ठिकाना। जैसे—पहले अपना पेट पालने का तो घर-घाट कर लो, फिर व्याह भी होता रहेगा।

घर-घालक—वि० [हिं० घर+घालक=घालनेवाला] १. दूसरो का घर घालने या विगाडनेवाला। २ अपने कुल या वश को कलकित या वरवाद करनेवाला।

घर-घालन†—पु० [हिं० घर+घालना] अपना या दूसरो का घर कलकित या वरवाद करना।
वि०=घर-घालक।

घर-घुसड—वि०=घर-घुसना।

घर-घुसना—वि० [हिं० घर+घुसना=घुसा रहनेवाला] [स्त्री० वि० घर-घुसनी] (व्यक्ति) जो प्राय घर मे और विशेषत स्त्रियो के पास वैठा रहता हो, वाहर घूमता-फिरता या काम-काज न करता हो अथवा कम करता हो।

घर-घुसा—वि०=घर-घुसना।

घर-चित्ता—पु० [हिं० घर+चीतर] घरो आदि मे रहनेवाला एक प्रकार का साँप।

घर-जँवाई—पु० [हिं० घर+जँवाई=जामाता] वह जँवाई या दामाद जिसे ससुर ने अपने ही घर मे रख लिया हो। ससुराल मे स्थायी रूप से रहनेवाला दामाद। घर-दमाद।

घर-जाया—पु० [हिं० घर+जाया=पैदा] [स्त्री० घर-जायी] गृह-स्वामी की दृष्टि से, उसके घर मे उत्पन्न होनेवाला दासी-पुत्र।

घर-जुगत—स्त्री० [हिं० घर+स० युक्ति] घर-गृहस्थी के सव काम-कम या थोडे खर्च मे अच्छी तरह चलाने की युक्ति या योग्यता।

घर-झँकना†—वि० [हिं० घर+झाँकना] [स्त्री० घर-झँकनी] वारी-वारी से लोगों के घर व्यर्थ जाकर तुरन्त ही लौट आनेवाला।

घरट्ट (क)—पु० [स० √घृ (सीचना)+विच्, घर्√अट्ट (गति) +अण्, उप० स०] [घरट्ट+कन्] [स्त्री० अल्पा० घरट्टिका] हाथ से चलाई जानेवाली चक्की। जाँता।

घरण (णि)†—स्त्री०=घरनी।

घर-दमाद—पु० =घर-जँवाई।

घरदारी—स्त्री० [हिं० घर+फा० दारी] घर मे रहकर किये जानेवाले गृहस्थी के काम-काज।

घर-दासी—स्त्री० [हिं० घर+स० दासी] १ गृहिणी। २ पत्नी।

घर-द्वार—पु०=घर-वार।

घरद्वारी—स्त्री० १ दे० 'घर-पत्ती'। २ दे० 'घर-वारी'।

घरन—स्त्री० [देश०] पहाडी भेडों की एक जाति। जुँवली।

घरनई†—स्त्री०=घडनई।

घरनाल—स्त्री० [हिं० घोडा+नाली] पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप। रहकला।

घरनी—स्त्री० [स० गृहिणी] १. गृह-स्वामिनी। २ पत्नी। भार्या। जैसे—विन घरनी घर भूत का डेरा। (कहा०)

घरपत्ती—स्त्री० [हिं० घर+पत्ती=भाग] किसी जातीय या सार्वजनिक कार्य की अभिपूर्ति के लिए सवधित घरों या परिवारो से लिया जानेवाला सहाश। चदा। वेहरी।

घरपरना—पु० [स० घर+परना=वनाना] कच्ची मिट्टी का गोल पिंडा जिस पर ठठेरे घरिया वनाते है।

घर-फोड़ा—वि० [हिं० घर+फोडना] [स्त्री० वि० घर-फोडी] १ (व्यक्ति) जो दूसरो के घरों मे कलह या विरोव उत्पन्न कराता हो अथवा उसके सदस्यो को आपस मे लडाता हो। २ अपने ही परिवार के सदस्यो से लड-झगड कर उन्हे अलग रहने के लिए विवश करनेवाला।

घर-फोरा†—वि०=घर-फोडा।

घर-बंद—वि० [हिं०] १ घर मे वद किया हुआ। २ पूर्णतया अधिकार मे लिया हुआ। जैसे—विद्या किसी की घर-वद नही है।

घरबंदी—स्त्री० [हिं० घर+वदी=वाँधना] १. अपराधी या अभियुक्त को उसके घर मे ही कैद करने की आज्ञा, क्रिया या भाव। २ चित्रकला मे, अलग-अलग पदार्थ दिखाने के लिए पहले छोटे-छोटे विन्दुओ से उनका स्थान घेरकर उनके विभागो के लिए स्थान नियत करना।

घर-बसा†—पु० [हिं० घर+वसना] [स्त्री० घर-वसी] १. स्त्री की दृष्टि से उसका पति या स्वामी जिसके कारण उसका घर वसा हुआ माना जाता अथवा रहता है। उदा०—एहो घर-वसे, आजु कौन घर वसे हो। —घनानन्द। २. उपपति। यार।

घरबसी—वि०, स्त्री० [हिं० घर+वसना] १ घर वसानेवाली (अर्थात् पत्नी)। २ घर की समृद्धि वढानेवाली। भाग्यवती। ३ उपपत्नी। रखेली।

घर-बार—पु० [हिं० घर+वार=द्वार] १ वह स्थान जहाँ कोई स्थायी रूप से रहता तथा काम-काज करता हो। जैसे—आपका घर-वार कहाँ है? २ घर और घर के सव काम-काज। जैसे—अपना घर-वार अच्छी तरह से देखो। ३ घर-गृहस्थी की सव सामग्री।

घरबारी—पु० [हिं० घर+वार] स्त्री, वाल-वच्चो तथा परिवार के अन्य

सदस्यों के साथ रहने तथा उनका भरण-पोषण करनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ।

घरवैसी†—स्त्री [हिं० घर+बैठना] वह स्त्री जो पत्नी बनाकर घर मे बैठा या रख ली गई हो। उपपत्नी। रखेली।

घरम—पु० [स० घर्म] घाम। धूप।

घरमकर†—पु०=घर्मकर (सूर्य)।

घरयार†—पु०=घड़ियाल।

घरर-घरर—पु० [अनु०] वह शब्द जो किसी कडी वस्तु को दूसरी कड़ी वस्तु पर रगड़ने से होता है। रगड का शब्द।

घररना—स० [अनु० घरर घरर] १. घरर-घरर शब्द उत्पन्न करना। २ किसी कडी चीज को किसी दूसरी कड़ी चीज पर इस प्रकार रगड़ना कि वह घरर-घरर शब्द उत्पन्न करने लगे।

अ० घरर-घरर शब्द होना।

घरवात†—स्त्री० [हिं० घर+वात (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी का सामान।

घरवाला—पु० [हिं० घर+वाला (प्रत्य०)] १ घर का मालिक। गृह-स्वामी। २. स्त्री की दृष्टि से उसका पति। जैसे—तुम्हारा घरवाला क्या काम करता है?

घरवाली—स्त्री० [हिं० घर+वाली (प्रत्य०)] १. घर की मालकिन। गृह-स्वामिनी। २. पति की दृष्टि से उसकी पत्नी या स्त्री। जैसे—आज-कल आपकी घरवाली शायद कही गई है।

घरवाहा—पु०[हिं० घर+वा या वाहा (प्रत्य०)] १. छोटा-मोटा घर। २. घरौंदा।

घरसा†—पुं० [स० घर्ष]=घिस्सा।

घरहाई†—वि० [हिं० घरहाया का स्त्री० रूप] १. अपने घर अथवा दूसरों के घरो मे झगडा लगाने या फूट डालनेवाली (स्त्री)। २. अपने अथवा दूसरों के घरों की फूट या लडाई-झगडे की वातें इधर-उधर कहनेवाली।

घरहाया—वि० [हिं० घर+घात] [स्त्री० घरहाई] घर मे मत-भेद उत्पन्न करने, फूट डालने या लडाई-झगडा लगानेवाला।

घरांव—पु० [हिं० घर] घर का-सा सवध। मेल-जोल। घनिष्ठता। उदा०—दोनो परिवारो मे इतना घरांव था कि इस सवध का हो जाना कोई आसाधारण वात न थी। —प्रेमचन्द।

घरा†—पु०=घडा।

घराऊ—वि० [हिं० घर+आऊ (प्रत्य०)] घर मे होने अथवा उससे सवध रखनेवाला। जैसे—घराऊ कलह।

घराट†—वि० [?] भीषण। विकट।

घराड़ी—स्त्री० [हिं० घर+आडी (प्रत्य०)] वह स्थान जहां कोई व्यक्ति और उसके पूर्वज बहुत दिनों से रहते चले आये हों। डीह।

घराती—पु० [हिं० घर+आती (प्रत्य०)] विवाह मे, कन्या पक्ष के लोग। 'बराती' का विपर्याय।

घराना—पुं० [हिं० घर+आना (प्रत्य०)] कुल। खानदान। वंश। (विशेषत प्रतिष्ठित और सम्पन्न)

घरिआर†—पुं०=घडियाल।

घरिआरी—वि०=घडियाली।

घरिणी—स्त्री० [सं० घर+इनि—ङीप्] घरनी (पत्नी)।

घरियक*—क्रि० वि० [हिं० घरी (घडी)+स० एक] घडी भर। बहुत थोडे समय तक।

घरिया—स्त्री० [हिं० घरा (घडा)+इया (प्रत्य०)] १. छोटा घड़ा। २ मिट्टी का प्याला या हांडी। ३. मिट्टी का वह छोटा प्याला जिसमें आँच देने से धातु की मैल कटकर ऊपर आ जाती है। घड़िया।

घरियाना†—स० [हिं० घरी] कागज, कपडे आदि की तह लगाना।

घरियार†—पु० = घडियाल।

घरियारी†—पु० = घड़ियाली (घंटा बजानेवाला व्यक्ति)।

घरी—स्त्री० [?] तह। परत।

स्त्री० = घड़ी।

घरीक†—क्रि० वि० [हिं० घरी+एक] घड़ी भर अर्थात् बहुत थोडे समय के लिए।

घरुआ†—पु० [हिं० घर+वा (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी का अच्छा प्रबंध। वि० घर का। घर संबंधी।

घरुआदार†—पुं० [हिं० घर+फा० दार] [स्त्री० घरुआ-दारिन, भाव० घरुआदारी] १. घर या गृहस्थी का उत्तम प्रबंध करनेवाला व्यक्ति। २. वह जो समझ-बूझकर गृहस्थी का खर्च चलाता हो।

घरुआदारी†—स्त्री० [हिं० घर + दारी] घर का उत्तम प्रबंध करने का भाव।

घरुवा†—पु० = घरुआ।

घरू—वि० [हिं० घर+ऊ (प्रत्य०)] घर का। १. जिसका संबंध स्वयं अपने घर या गृहस्थी से हो। घरेलू। २ आपसदारी का। निजी।

घरेला†—वि० = घरेलू।

घरेलू—वि० [हिं० घर+एलू (प्रत्य०)] १. घर का। घर संबंधी। जैसे-घरेलू झगड़ा। २ (कार्य या व्यवहार) जो अपने घर या आपसदारी से संबंध रखता हो। निजी। ३ (धंधा) जो घर के अंदर बैठ कर किया जाय। जैसे—घरेलू उद्योग-धंधे। ४. (पशु) जो घर मे रखकर पाला-पोसा गया हो। पालतू।

घरैया†—वि० = घराऊ।

पुं० १. अपने घर का आदमी। २. बहुत ही निकट का संबंधी।

घरोप—पु० [हिं० घर+ओप (प्रत्य०)] घर के लोगो का-सा आपसी व्यवहार। घनिष्ठ संबंधी।

घरौंदा—पु० [हिं० घर+औंदा (प्रत्य०)] १. छोटा घर। २ कागज, मिट्टी आदि का छोटा घर जिससे बच्चे खेलते हैं। ३. लाक्षणिक अर्थ मे कोई अस्थायी या नश्वर वस्तु।

घरौना†—पु० दे० 'घरौंदा'।

घर्घर—पु० [स० घर्घ√रा (दान)+क] पुरानी चाल का ताल देने का एक प्रकार का बाजा।

पु० [अनु०] किसी भारी चीज के चलने से होनेवाली कर्कश ध्वनि। जैसे—गाडी, चक्की या मशीन की घर्घर।

घर्घरक—पु० [स० घर्घर+कन्] घाघरा नदी।

घर्घरा (री)—स्त्री० [स० घर्घर+टाप्] [घर्घर+ङीप्] १ एक प्रकार की वीणा। २ घुंघरूदार करधनी। ३. घुंघरू या छोटी घंटी।

घर्म—पु० [सं०√घृ (क्षरण) +मक्] १. अग्नि या सूर्य का ताप। गरमी।

२. धूप। ३ गरमी के दिन। ग्रीष्म काल। ४. पसीना। ५ पतीला। ६. एक प्रकार का यज्ञ।

घर्म-विंदु—पु० [ष० त०] पसीना।

घर्मांबु—पु० [घर्म-अंबु, ष० त०] पसीना।

घर्मांशु—पु० [घर्म-अंशु, ब० स०] सूर्य।

घर्माक्त—वि० [घर्म-अक्त, तृ० त०] पसीने से तर या लथ-पथ।

घर्मार्द्र—वि० [घर्म-आर्द्र तृ० त०] पसीने से लथ-पथ।

घर्मोदक—पु० [घर्म-उदक, ष० त०] पसीना।

घर्रा—पु० [अनु० घरर घरर=घिसने वा रगड़ने का शब्द] १. एक प्रकार का अजन जो आँख आने पर लगाया जाता है। २. गले मे कफ रुकने के कारण होनेवाली घरघराहट।

मुहा०—घर्रा चलना या लगना=मरने के समय गले मे कफ रुकने के कारण साँस का घर-घर करते हुए रुक-रुककर चलना। घुंघुरू बोलना। घटका लगना।

३ जेल के कैदियो को दिया जानेवाला वह कठोर दड जिसमे उन्हें मोट खीचने या कोल्हू पेरने के काम मे लगाया जाता है।

घर्राटा—पु० [अनु० घर्र+आटा (प्रत्य०)] १. घर्र-घर्र का शब्द। २. गहरी नीद के समय कुछ लोगो की नाक मे से निकलनेवाला शब्द। खर्राटा।

मुहा०—घर्राटा मारना या लेना=गहरी नीद मे नाक से घर्र-घर्र शब्द निकालना। गहरी नीद सोना।

घर्रामी—पु० [?] वह राज या मिस्त्री जो छप्पर छाने का काम करता हो। छपरबंद।

घर्ष—पु० [स०√घृष् (घिसना)+घञ्] १. रगड़। घर्षण। २ टक्कर। ३ सघर्ष। ४. पीसना।

घर्षण—पु० [सं०√घृष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० घृष्ट] १. रगडने की क्रिया या भाव। घिस्सा। रगड। (फ्रिक्शन) २. लाक्षणिक अर्थ मे, दो व्यक्तियो या विचारधाराओ मे होनेवाला पारस्परिक विरोधजन्य सघर्ष।

घर्षणी—स्त्री० [स० घर्षण+ङीप्] हरिद्रा। हलदी।

घर्षित—भू० कृ० [स०घृष्ट] १ घिसा, पिसा या रगडा हुआ। २ अच्छी तरह माँजा हुआ।

घलना—अ० [हिं० घालना] १ हिं० घालना का अकर्मक रूप। घाला जाना। २ किसी पर शस्त्र या हथियार का चलाया या छोडा जाना। अस्त्र का प्रहार होना। ३. मार-पीट या गहरी लडाई होना।

घलाघल (ली)—स्त्री० [हिं० घलना] १ गहरा आघात-प्रतिघात। २ मार-पीट।

घलुआ†—पु० [हिं० घाल] वह वस्तु जो दुकानदार किसी खरीददार को प्रसन्न करने के लिए तौल से अधिक या सौदे से अतिरिक्त देता है।

वि० घालनेवाला।

पु० दे० 'घोलुआ'।

घवद*—स्त्री० = घौद।

घवरि†—स्त्री० =घौद।

घसकना†—अ० = खिसकना।

घसखुदा—वि० [हिं० घास+खोदना] १ घास खोदनेवाला। २ किसी काम में घसियारों की तरह बहुत ही अनाडी या मूर्ख।

पुं० घसियारा।

घसत—पु० [?] बकरा। (डिं०)

घसना†—स० [स० घसन] खाना। भक्षण करना। (डिं०)

†अ०, स० = घिसना।

घसिटना—अ० हिं० 'घसीटना' का अकर्मक रूप। घसीटा जाना।

घसियारा—पु० [हिं० घास+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घसियारी वा घसियारिन] घास खोदकर लाने और बेचनेवाला व्यक्ति।

घसीट—स्त्री० [हिं० घसीटना] १ घसीटने की क्रिया या भाव। २ जल्दी-जल्दी लिखने की क्रिया या भाव। ३. बहुत जल्दी मे और अक्षर आदि घसीट कर लिखी हुई लिखावट। ४. वह पट्टी या फीता जिससे उडते हुए पालों को मस्तूल से बाँधा जाता है।

घसीटना—स० [स० घृष्ट, प्रा० घिस्ट+ना (प्रत्य०)] १. जमीन पर खडी या पड़ी हुई वस्तु, व्यक्ति आदि को इस प्रकार खीचकर आगे ले चलना कि वह जमीन पर गिरता-पडता तथा जमीन से रगड़ खाता हुआ खीचनेवाले के पीछे खिचता चला जाय। २ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी व्यक्ति को बलपूर्वक किसी कार्य या व्यापार मे शामिल करना या फँसाना। जैसे—हमे आप ही तो यहाँ घसीट लाये थे। ३ बहुत जल्दी-जल्दी तथा अस्पष्ट लिखावट लिखना।

घसीटा-घसीटी—स्त्री० [हिं० घसीटना] बार-बार इधर-उधर या अपनी ओर घसीटने की क्रिया या भाव।

घस्मर—वि० [सं०√घस् (खाना)+क्मरच्] भक्षक। खानेवाला।

पु० वह जिसका ध्यान सदा खाने की ओर ही रहे। पेटू।

घस्सा†—पु० =घिस्सा।

घहनना—अ० = घहनाना।

घहनाना†—अ० [अनु०] १ घंटा बजने का शब्द होना। घंटे आदि से ध्वनि निकलना। २. जोर की ध्वनि होना। गरजना।

स० उक्त प्रकार की ध्वनि उत्पन्न करना।

घहरना—अ० = घहराना।

घहराना—अ० [अनु०] १. गरजने का-सा भीषण नाद होना। २ वेग-पूर्वक या घोर शब्द करते हुए कही आकर गिरना या पहुँचना। सहसा आ उपस्थित होना। टूट पडना। ३ चारो ओर से आकर घेरना या छाना।

स० १ भीषण शब्द करना। २ घेरना या छाना।

घहरानि†—स्त्री० [हिं० घहराना] १. घहराने की क्रिया या भाव। २ गंभीर या घोर शब्द। गरज।

घहरारा*—पुं० [हिं० घहराना] [स्त्री० अल्पा० घहरारी] घोर शब्द। गभीर ध्वनि। गरज।

वि० १ घोर शब्द करने या गरजनेवाला। २ घहराकर अथवा जोर से आकर गिरने या पडनेवाला।

घहाना—अ०, स० =घहराना।

घाँ*—स्त्री० [सं० ख; या घाट = ओर।] १ दिशा। दिक्। २ ओर। तरफ। ३. जगह। स्थान।

घाँघरा—पु० [स्त्री० घाँघरी] १. =घाघरा। २ =लोबिया (फली)।

घाँघल—स्त्री० [?] बखेडा। झझट। (राज०)

घाँची†—पु० [हिं० घान+ची] तेली। (डिं०)

घांटिक—वि० [स० घटा+ठक्—इक] घटा या घटी वजानेवाला।
पु० १ स्तुति-पाठक। २. धतूरा।
घांटी†—स्त्री० [सं० घटिका] १ गले के अदर की घटी। कौआ। २ कठ। गला।
घांटो—पु० [?] चैती की तरह का एक प्रकार का लोक-गीत जो चैत-वैसाख मे गाया जाता है। (पूरब)
घांह†—स्त्री० = घा (ओर या तरफ)।
घा†—स्त्री० [स० ख अथवा घाट=ओर] १ ओर। तरफ। जैसे—चहूँघा। २ दिशा।
घाइ†—पु० = घाव।
वि० = घायल।
घाइल*—वि० = घायल।
घाईं†—स्त्री० [हिं० घाँ या घा] १. ओर। तरफ। २ दो चीजो के वीच की जगह। अवकाश। ३ वार। दफा। ४ पानी मे का चक्कर। भँवर।
अव्य०=तरह। नाईं। (वुन्देल०)
घाई—स्त्री० [स० गभस्ति=उँगली] १ दो उँगलियों के वीच की सधि। अटी। २ कोई ऐसा कोना जहाँ दो रेखाएँ आकर मिलती हो। जैसे—पौधे की पेडी और डाल के वीच की घाई। ३ अँगीठी के ऊपरी सिरे पर का उभार।
स्त्री० [स० घात] १. आघात। प्रहार। वार। जैसे—वनेठी या सोटे की घाई। २ चोट लगने से होनेवाला घाव। जैसे—कुठार की घाई। ३ चालाकी या धोखे की चाल।
मुहा०—(किसी को) घाइयाँ वताना=धोखा देने के लिए इधर-उधर की वातें करना। झाँसा-पट्टी या दम-वुत्ता देना।
† स्त्री० = गाही।
घाऊ—पुं० [सं० घात] १. आघात। चोट। उदा०—यह सुनि परा निसानहिं घाऊ।—तुलसी। २ घाव। जखम।
घाऊघप—वि० [हिं० खाऊ+गप वा घ१] १ गुप्त रूप से या चुपचाप दूसरों का माल उडाने, खाने या हजम करनेवाला। २ सव कुछ खा-पी या फूँक-तापकर नष्ट करनेवाला। ३ वहुत वडा चालाक या धूर्त।
घाग—पु० = घाघ।
घागही†—स्त्री० [देश०] पटसन।
घाघ—पु० [?] १ गोंडे के रहनेवाले एक वहुत चतुर और अनुभवी कवि जिसकी कही हुई वहुत-सी कहावतें उत्तरीय भारत मे प्रसिद्ध हैं। ये कहावतें खेती-वारी, ऋतु, काल तथा लग्न, मुहूर्त्त आदि के सवंध मे हैं,और देहातो मे वहुत प्रचलित हैं। २ वहुत ही अनुभवी, चतुर या धूर्त व्यक्ति। ३ ऐंद्रजालिक। जादूगर। वाजीगर। ४ उल्लू की जाति का एक वडा पक्षी।
घाघरा—पु० [सं० घर्घर=क्षुद्रघंटिका] [स्त्री० अल्पा० घाघरी] १ वह चुननदार तथा वडे घेरेवाला पहनावा जो स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं और जिससे कमर से एडी तक के अंग ढके रहते हैं। लहँगा। २ एक प्रकार का कवूतर। ३ एक प्रकार का पौवा।
स्त्री० [स० घर्घर] सरयू नदी का एक स्थानिक नाम।
घाघरापलटन—स्त्री० [हिं०] स्कॉटलैंड देश के पहाडी गोरो की सेना जिनका पहनावा कमर से घुटने तक लहँगे की तरह का होता है।
घाघस—पु० [?] १. वटेर की जाति का भूरे रंग का एक पक्षी जिसका मास खाया जाता है। २ एक प्रकार की मुरगी।
पु० = घाघ (उल्लू की जाति का वडा पक्षी)।
घाघी—स्त्री० [स० घर्घर] मछलियाँ फाँसने का एक प्रकार का वडा जाल।
घाट—पु० [स० घट्ट] १ जलाशय, नदी आदि के तट पर वह स्थान जहाँ लोग विशेष रूप से नहाते, धोते, जल भरते, नावों पर चढते-उतरते, अथवा उन पर सामान आदि लादते-उतारते हो।
मुहा०—घाट नहाना=किसी के मरने पर उदक क्रिया करना। **(नाव का) घाट लगना**=नाव का सवारियाँ चढाने या उतारने, सामान लादने या उतारने के लिए घाट पर पहुँचना या किनारे पर लगना। **(लोगों का) घाट लगना**= नाव द्वारा नदी पार जाने के इच्छुक व्यक्तियों का घाट पर इकट्ठा होना।
२ तालाव, नदी आदि के तट के आस-पास का वह स्थान जहाँ सीढियाँ आदि वनी होती हैं तथा जिस पर से होकर लोग जल तक पहुँचते है। ३. चढाव-उतार का पहाडी मार्ग। ४ पहाड। जैसे—पूर्वी घाट। ५ किसी चीज की वनावट मे वह अग जिसमें कुछ चढ़ाव-उतार या गोल रेखा का-सा रूप हो।
पद—घर-घाट। (देखें)
५ कोई काम पूरा होने की जगह या स्थान। ठिकाना।
मुहा०—घाट-घाट का पानी पीना=(क) अनेक स्थानों को देख आना अथवा वहाँ रह आना। (ख) अनेक अथवा तरह-तरह की चीजो के स्वाद लेना अथवा तरह-तरह के काम करना।
६ ओर। तरफ। दिशा। ७ चाल-चलन। रग-ढग। ८ तलवार की धार। ९ जौ की गिरी। १०. दुलहिन का लहँगा। ११ रहस्य सप्रदाय मे, घट या हृदय।
स्त्री० [हिं० घटिया=वुरा] १ धोखा। छल। कपट। २ कुकर्म। वुराई।
स्त्री० [हिं० घटना] घटने या घटकर होने की अवस्था या भाव।
वि० [हिं० घट] १.कम। थोड़ा। २ घटिया।
क्रि० वि० घटकर।
पु० [स०√घट्+घञ्+अच्] [स्त्री० घाटी, घाटिका] १. गरदन का पिछला भाग। २ अँगिया मे का गला।
घाटना*—अ० = घटना (कम होना)।
घाट-पहल—पु० [हिं०] गढ या तराशकर वनाई जानेवाली चीज मे उसकी वनावट का उतार-चढाव और पार्श्व जो उसे सुडौल वनाते हैं। जैसे—इस हीरे का घाट-पहल वहुत वढिया है।
घाट-वंदी—स्त्री० [हिं० घाट+वदी] १. घाट पर नाव लाने-ले जाने अथवा माल आदि चढाने या उतारने का निषेध या रुकावट। (एम्वार्गो) २ घाट वाँधने अर्थात् वनाने की क्रिया, ढग, भाव या रूप।
घाटवाल—पु० [हिं० घाट+वाला (प्रत्य०)] १. घाट का अधिकारी, मालिक या स्वामी। २ वह ब्राह्मण जो घाट पर वैठकर स्नान करने-वालो से दान-दक्षिणा लेता हो। घाटिया।
घाटा—पु० [हिं० घटना] १ घटने की क्रिया या भाव। २ वह (धन

या सामग्री) जो कुछ घटे या कम पडे। ३. लेन-देन, व्यापार आदि मे होनेवाली आर्थिक हानि। टोटा। नुकसान। (लॉस)

क्रि० प्र०— आना।–उठाना।–खाना।–देना।–पड़ना।–भरना।–सहना।–होना।

पु० [हिं० घाटी] पहाडी मार्ग।

घाटारोह†—पु० [हिं० घाट +स० रोध] घाट पर का आवागमन वद करना। घाट पर किसी को आने-जाने, उतरने-चढने न देना। घाट रोकना।

घाटि†—वि० [हिं० घटना] कम। न्यून।

क्रि० वि० किसी की तुलना मे कम, थोडा या हलका।

स्त्री० [स० घात] अनुचित और निंदनीय कर्म। दुष्कर्म।

घाटिका—स्त्री० [स० घाट+कन्–टाप्, इत्व] गले का पिछला भाग। गरदन।

घाटिया—पु० [हिं० घाट+इया (प्रत्य०)] १ वह ब्राह्मण जो घाट पर बैठकर नहानेवालो से दान-दक्षिणा आदि लेता हो। २ घाट का स्वामी।

घाटी—स्त्री० [हिं० घाट] १ दो पर्वत-श्रेणियो के वीच का तंग या सँकरा मार्ग। २ पर्वतीय प्रदेशो के वीच मे पडनेवाला मैदान। जैसे—कश्मीर की घाटी। ३ चढाव या उतार का पहाडी मार्ग। पहाड की ढाल। ४ वह पत्र जिसमे यह लिखा रहता है कि घाट पर आने या वहाँ से जानेवाले माल का महसूल चुका दिया गया है।

स्त्री० [स० घाटिका] गले का पिछला भाग।

घाटी-मार्ग—पु० [हिं० घाट+स० मार्ग] १ पहाडियो के वीच मे नदी की धारा आदि से बना हुआ सकीर्ण पथ। २ दर्रा।

घाटो†—पु० = घाटा।

वि० [हिं० घटना] दरिद्र। गरीव।

पु० [हिं० घाट] १ एक प्रकार का गीत जो घाट पर पानी भरने के समय स्त्रियाँ गाती थी। २ दे० 'घाँटो'।

घात—पु० [स०√हन् (हिंसा)+घञ्, कुत्व, त आदेश] [वि० घाती] १ अस्त्र-शस्त्र अथवा हाथ-पैर आदि से किसी पर की जानेवाली चोट। प्रहार। मार। २ जान से मार डालना। वध। हत्या। जैसे—गोघात। ३ धोखे मे रखकर किया जानेवाला अहित या वुराई। ४ गणित मे किमी सख्या को उसी सख्या से गुणा करने से निकलनेवाला गुणनफल। (पावर)

स्त्री० १ अपना स्वार्थ सिद्ध करने का उपयुक्त अवसर।

मुहा०—**घात ताकना**=उपयुक्त अवसर की ताक मे रहना। **(किसी के) घात पर चढ़ना या घात मे आना**=ऐसी अवस्था मे होना जिससे कोई दूसरा आसानी से अपना मतलव गाँठ सके। **(किसी को) घात मे पाना**= किसी को ऐसी स्थिति मे पाना जिससे कोई स्वार्थ सिद्ध होता हो। **(किसी की) घात मे फिरना, रहना या होना** = किसी को हानि पहुँचाने का अवसर ढूँढते रहना। **(किसी की) घात मे बैठना**=ऐसी जगह छिपकर बैठना जहाँ से किसी पर सहज मे आघात या वार किया जा सके। **घात लगना** = ऐसा इष्ट और उपयुक्त अवसर मिलना जिसमे कोई दुष्ट उद्देश्य या स्वार्थ सहज मे सिद्ध हो सके। **घात लगाना**=कोई काम करने (विशेषत अपना मतलव साधने) की युक्ति निकालना।

२ वह स्थान या स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति ऐसे उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा मे हो जिसमे कोई काम वन या उद्देश्य सिद्ध हो सकता हो। ३ दाँव। पेच। छल। ४ रग-ढग। तौर-तरीका।

वि० अमगल या हानि करनेवाला। अशुभ। जैसे—घात तिथि, घात नक्षत्र, घात वार।

घातक—वि० [स०√हन्+ण्वुल्—अक, कुत्व, त आदेश] १ घात या प्रहार करनेवाला। २ मार डालनेवाला। वधिक। ३ कष्ट या हानि पहुँचानेवाला। जैसे—घातक विचार। ४ जिसके कारण या द्वारा कोई मर सकता हो या मर जाय। (फैटल) जैसे—घातक रोग।

पु० १. हिंसक। २ हत्यारा। ३. फलित ज्योतिष मे, वह योग जिसके फलस्वरूप आदमी मर सकता हो। ४. दुश्मन। शत्रु।

घातकी †—वि०, पु० = घातक।

घातन—पु० [स० √हन्+णिच्+ल्युट्—अन, कुत्व, त आदेश] १ घात करने की क्रिया या भाव। २ मारना।

घात-स्थान—पु० [ष० त०] वह स्थान जहाँ पर प्रहार किया गया हो या होता हो। वध-स्थान।

घाता—पु० [?] १ वह चीज जो ग्राहक को तौल या गिनती के ऊपर दी जाय। घाल। २. कोई काम करते समय वीच मे अनायास होनेवाला लाभ। जैसे—पुस्तक तो वापस मिली ही, तिस पर जलपान मिल गया घाते मे।

घाति—पु० [स० √हन्+क्तिन्, कुत्व, त आदेश] पक्षियो को फँसाना या मारना।

स्त्री० चिडिया फँसाने का जाल।

घातिक—वि० =घातक।

घातिया—वि० = घाती।

घाती (तिन्)—वि० [स०√हन्+णिनि, कुत्व, त आदेश] [स्त्री० घातिनी] १ घात या प्रहार करनेवाला। २ मार डालने या वध करनेवाला। ३ नाश करनेवाला।

घातुक—वि० [स०√हन्+उकञ्, कुत्व, त आदेश] १ घातक। २ हानि करनेवाला। ३ क्रूर। निर्दय।

घात्य—वि० [स०√हन्+ण्यत्, कुत्व, त आदेश] १. जिसका या जिसे घात किया जा सके या किया जाने को हो। २ नष्ट किये या मारे जाने के योग्य।

घान—पु० [स० घना=समूह] १ किसी वस्तु की उतनी मात्रा जितनी एक वार कडाही, कोल्हू, चक्की आदि मे तलने, पेरने, पीसने आदि के लिए डाली जाय। २ उतना अश जितना एक वार मे पकाया, वनाया या तैयार किया जाय। ३ हर वार क्रमश उक्त प्रकार के या ऐसे ही और काम करने की क्रिया या भाव। जैसे—दूसरा या चौथा घान।

मुहा०—**घान उतरना** =उक्त प्रकार से एक वार काम ठीक उतरना या पूरा होना। **घान डालना** =उक्त प्रकार का कोई काम शुरू करना। **घान पड़ना या लगना**=उक्त प्रकार का कोई काम आरभ होना।

पु० [हिं० घन=वड़ा हथौड़ा] १ वडा हथौडा। घन। २ वहुत वडा आघात या प्रहार।

*पु० [स० घ्राण] १ सूँघने की क्रिया या भाव। २ गंध। वू। उदा०—जहाँ न राति न दिवस है, जहाँ न पौन न घानि।—जायसी।

घाना*—स० [स० घात, प्रा० घाय + ना (प्रत्य०)] १ घात या प्रहार करना। २ नाश या सहार करना।

स० = गहना (पकड़ना)।

घानि*—स्त्री० १ = घान (गध)। २ =घानी।

घानी—स्त्री० [हिं० घान] १. वह स्थान जहाँ कोई काम करने के लिए एक-एक करके घान डाले जाते हों। २. ऊख, तेल आदि पेरने का कोल्हू या उसकी जगह। ३ ढेर। राशि ४. दे० 'घान'।

मुहा०—**घानी करना**=पीसना, पेरना या ऐसा ही और कोई काम करना।

घानी की सवारी—स्त्री० [हिं०] मालखभ की एक कसरत जिसमें एक हाथ मे मोंगरा पकडकर मालखभ के चारो ओर घानी या कोल्हू की तरह चक्कर लगाते हैं।

घापं†—स्त्री० [?] बादलों की घटा।

घाम†—पु० [स० घर्म, प्रा० घम्म, पा० गिहन] १. सूर्य का ताप-युक्त प्रकाश। धूप।

मुहा०—**घाम खाना**=(क) सरदी दूर करने के लिए धूप में रहना। (ख) धूप के अधिक या तीव्र प्रभाव मे पडना। **घाम लगना**=लू लगना।

२. कष्ट। विपत्ति। सकट।

मुहा०—**(कहीं या किसी पर) घाम आना**=कठिनाई या संकट आना। **घाम बचाना या बराना**=कष्टदायक बात से बचना।

† ३. पसीना।

घामड़—वि० [हिं० घाम] १. (पशु) जो अधिक घाम या धूप लगने के कारण विकल हो गया हो। २ ना-समझ। मूर्ख। † ३. आलसी।

घाम-निधि*—पु०=सूर्य।

घामरी*—स्त्री० [हिं० घामडी] १. धूप आदि न सह सकने के कारण होनेवाली विकलता। २. प्रेम के कारण होनेवाली विह्वलता।

घाय†—पु०=घाव।

घायक*—वि०=घातक।

घायल—वि० [हिं० घाय] १. जिसे घाव या चोट लगी हो, विशेषत. ऐसी चोट लगी हो जिसके कारण उसके शरीर का कोई अग कट या फट गया हो और रक्त बहने लगा हो। जख्मी। २. (व्यक्ति) जिसे किसी के कुव्यवहार से क्लेश हुआ हो। दूसरे के अनुचित व्यवहार से अपने को अपमानित समझनेवाला (व्यक्ति)। ३. जुए मे हारा हुआ (जुआरी)।

पु० कनकौआ या गुड्डी लडाने का एक ढंग या प्रकार।

घार†—स्त्री० [स० गर्त्त] पानी के बहाव से कटकर बना हुआ गड्ढा या नाला।

घारी†—स्त्री० दे० 'खरिक'।

घार्षणिक—वि० [स० घर्षण + ठक्—इक] घर्षण-सबधी। घर्षण का।

घाल—पु० [हिं० घालना=डालना] १. किसी चीज का वह थोडा-सा अंश जो सौदा बिक चुकने पर उचित गिनती या तौल के अतिरिक्त अन्त मे ग्राहक के माँगने पर दुकानदार उसे प्रसन्न रखने के लिए देता है। घलुआ। २. उक्त के आधार पर बहुत ही तुच्छ या हेय पदार्थ।

मुहा०—**घाल न गिनना** =कुछ भी न समझना। तुच्छ समझना। उदा०—सरग न घालि गनै बैरागा।—जायसी।

३ आघात। प्रहार। उदा०—को न गएउ एहि रिसि कर घाला।—जायसी।

क्रि० वि० बे-फायदा। व्यर्थ।

स्त्री० घालने की क्रिया या भाव। उदा०—तिसकी घाल अजाँई जाइ।—कबीर।

घालक—वि० [हिं० घालना] [स्त्री० घालिका] १. मारने या वध करनेवाला। २ नाशक। ३. बहुत अधिक अपकार या हानि करनेवाला।

घालकता—स्त्री० [घालक+ता (प्रत्य०)] घालक होने की अवस्था, गुण या भाव।

घालना—स० [प्रा० अप० घल्ल, मरा० घालणें] १. कोई चीज किसी के अन्दर डालना या रखना। उदा०—को अस हाथ सिंह मुख घालै।—जायसी। २. कोई चीज किसी दूसरी चीज पर बैठाना, रखना या लगाना। उदा०—(क) राजकुँवरि घाली वर-माल।—नरपति नाल्ह। (ख) घालि कचपची टीका सजा।—जायसी। ३. (अस्त्र या शस्त्र किसी पर) चलाना, छोडना या फेंकना। ४ कोई कार्य सपन्न या सपादित करना। ५. बुरी तरह से चौपट या नष्ट करना। बिगाड़ना। जैसे—किसी का घर घालना। ६. वध या हत्या करना। मार डालना।

घाल-मेल—पु० [हिं० घालना+मेलना] १. विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की ऐसी मिलावट अथवा विभिन्न बातों का ऐसा सम्मिश्रण जो देखने अथवा सुनने मे भला प्रतीत न होता हो। २. अनुचित सबध। ३. मेल-जोल।

घाव—पु० [स० घात, पा० घातो, प्रा० घाअ, गु० प० घा, सिं० घाऊ, मरा० घाव, घाय] १. शरीर के किसी अंग पर किसी वस्तु का आघात लगने से होनेवाला कटाव या पड़नेवाली दरार। क्षत। जख्म।

मुहा०—**घाव खाना**=आघात या प्रहार सहने के कारण घायल होना। **घाव पूजना या भरना**= क्षत या घाव मे नया मास भर आने के कारण उसका अच्छा होना।

२. शरीर का वह अग या अश जो कटने-फटने, सड़ने-गलने आदि के कारण विकृत हो गया हो। ३. मानसिक आघात आदि के कारण होनेवाली मन की दु खपूर्ण स्थिति।

मुहा०—**घाव पर नमक छिड़कना**=दु खी या पीडित को और अधिक दु.ख या पीड़ा पहुँचाना।

घाव-पत्ता—पु० [हिं० घाव+पत्ता] एक प्रकार की लता जिसके पत्ते घाव पर बाँधने से घाव जल्दी भरता है।

घावरा—पु० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा सुगधित वृक्ष जिसकी छाल चिकनी और लकडी मजबूत तथा चमकीली होती है।

घावरिया†*—पु० [हिं० घाव+वरिया (वाला)] घावो की चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति। जर्राह।

घावा†—वि०=घायल। (राज०)

घास—स्त्री० [स० √घस् (खाना)+घञ्, पा० प्रा० घास, प० घाह, सिं० गाहु; गु० घास्; ने० घाँस्, उ० मरा० घास] १. छोटी हरी वनस्पतियों में से कोई और हर एक जिसके पत्ते चरनेवाले पशु खाते हैं। तृण।

पद—**घास-पात या घास-फूस**—(क) तृण और वनस्पति। (ख) कूडा-करकट। **घास-भूसा**=(क) पशुओं का चारा। (ख) व्यर्थ की रद्दी चीजें।

मुहा०—**घास काटना, खोदना, गढ़ना या छीलना** =तुच्छ या व्यर्थ का काम करना।

२. घास की आकृति के कटे हुए कागज, पन्ना आदि के पतले लम्बोतरे टुकडे। ३ एक प्रकार का रेशमी कपडा।

घासलेट—पु०[अ० गैस लाइट] १. मिट्टी का तेल। २ तुच्छ या अग्राह्य वस्तु।

घासलेटी—वि०[हिं० घासलेट+ई प्रत्य०] १ हलके किस्म का। साधारण या निम्न कोटि का। २ अश्लील या गदा और रद्दी। जैसे—घासलेटी साहित्य।

घासी† —स्त्री०[हिं० घास] घास। चारा। तृण।
पु० घसियारा।

घाह—स्त्री०[स० ख=ओर] ओर। दिशा। उदा०—उतरि समुद्द अथाह, घाह लका घर धुज्जिय।—चदवरदाई।
स्त्री०=घाई।

घिअ†—पु०=घी।

घिआँड़ा—पु० [हिं० घी+हडा] वह बरतन जिसमे घी रखा जाता हो।

घिआ—स्त्री०=घीया।

घिऊ†—पु०=घी।

घिग्घी—स्त्री०[अनु०] १ अधिक देर तक रोने से थकावट आदि के कारण साँस मे होनेवाली वह रुकावट जिससे आदमी घी-घी शब्द करने लगता है। २ भयभीत होने पर मुँह से ठीक प्रकार से शब्द न निकलने की स्थिति।
क्रि० प्र०—बँधना।

घिघिआना—अ० [हिं० घिग्घी] १ असहाय तथा दीन बनकर करुण स्वर से बार-बार विनती करना। २ चिल्लाना।

घिचपिच—स्त्री० [स० घृष्ट-पिष्ट] १ लिखावट या लेख जिसके अक्षर या शब्द इस प्रकार आपस मे सटे हो कि पाठक सुविधापूर्वक उसे न पढ पाता हो। २ अपेक्षाकृत थोडे मे अत्यधिक वस्तुओ के बिना क्रम से रखे जाने की स्थिति।
वि० अस्पष्ट (लिखावट)।

घिन—स्त्री०[स० घृणा] [क्रि० घिनाना, वि० घिनौना] किसी गदी अथवा गली-सडी वस्तु को देखने पर मन मे होनेवाली अरुचिपूर्ण भावना जिसके फल-स्वरूप मनुष्य उस वस्तु से घबराकर दूर भागना चाहता है। घृणा। नफरत।
क्रि० प्र०—आना।—खाना।—लगना।

घिनावना—वि० [स्त्री० घिनावनि] घिनौना। उदा०—देखत कोइलरि घिनावनि बोलत सोहावनि हो।—ग्रा० गी०।

घिनौची†—स्त्री०=घडौची।

घिनौना†—वि० [हिं० घिन+औना (प्रत्य०)] [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने पर मन मे घिन उत्पन्न होती हो। घृणित।

घिनौरी†—स्त्री०[हिं० घिन] ग्वालिन नामक कीडा।

घिन्नी—स्त्री ०=घिरनी।
†स्त्री०=गिन्नी।

घिय†—पु०=घी।

घियाँड़ा—पु० [हिं० घी+हँडा] घी रखने का पात्र। घृत-पात्र।

घिया—स्त्री०=घीया।

घियाकश—पु०=घीयाकश।

घियातरोई—स्त्री०=घीयातोरी।

घिरत†—पु०=घृत।

घिरना—अ०[स० ग्रहण] १. किसी के घेरे मे आना। जैसे—शेर घिर गया। २ सब दिशाओ से किसी वस्तु द्वारा ढक लिया जाना। जैसे—बादलो से आकाश घिरना। ३ चारो ओर मे आकर उपस्थित होना। जैसे—घटाएँ घिरना।

घिरनी—स्त्री०[स० घूर्णन] १. गराडी। चरखी। २. चक्कर। फेरा।
मुहा०—**घिरनी खाना**=चारो ओर चक्कर लगाना।
३ रस्सी बटने की चरखी। ४. लट्टू नामक खिलौना। ५. दे० 'घिन्नी'।
†स्त्री०=गिनी या गिन्नी। (सोने का अगरेजी सिक्का)
पु० [?] १. किलकिला या कौडियाला नामक जलपक्षी। २ लोटन कबूतर।

घिरवाना—स० [हिं० 'घेरना' का प्रेर०] घेरने का काम किसी से कराना।

घिराई—स्त्री०[हिं० घेरना] १. घेरने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ पशु चराने का काम या पारिश्रमिक।

घिरायँद—स्त्री० =खरायँद (मूत्र की दुर्गन्ध)।

घिराव—पु०[हिं० घेरना] १ घेरने अथवा घेरे जाने की क्रिया या भाव। २ घेरा।

घिरावना*—स० १ दे० 'घिरवाना'। २. दे० 'घेरना'।

घिरित*—पु०= घृत।

घिरिन परेवा-—पु०[हिं० घिरनी+परेवा] गिरहबाज कबूतर।

घिरिया—स्त्री०[हिं० घिरनी] १. शिकार को घेरने के लिए बनाया जानेवाला मनुष्यो का घेरा। २ बहुत असमजस या सकट की स्थिति।

घिरौंची—स्त्री०=घडौंची।

घिरौरा†—पु०[देश०] घूस नामक जन्तु का बिल।

घिर्तकाँदौ—पु० [?] चम्पारन मे होनेवाला एक प्रकार का जडहन धान। उदा०—घिर्तकाँदौ औ कुँवर बेरासू।—जायसी।

घिर्राना†—स०[अनु० घिर घिर] घसीटना। (पु० हिं०)
अ० दे० 'घिघियाना'।

घिर्री—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।
स्त्री०[हिं० घेरा] एक ही घेरे मे बार-बार घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया।
मुहा०—**घिर्री खाना**=कोई काम पूरा करने के लिए बार-बार कही आना-जाना।
†स्त्री०=घिरनी।

घिव†—पु०=घी।

घिसकना†—अ०=खिसकना।

घिसकाना†—स०=खिसकाना।

घिसघिस—स्त्री०[हिं० घिसना] जान-बूझकर और सुस्ती मे किया जानेवाला ऐसा काम जिसमे उचित मे बहुत अधिक समय लगे। जैसे—तुम्हारी यह घिस-घिस हमे अच्छी नही लगती।

घिसटना†—अ०[हिं० घसीटना का अ०] १ घसीटा जाना। २. जमीन पर रेंगते या उसमे रगड खाते हुए बहुत धीरे-धीरे चलना।

२. कपडे, सूत आदि का कोई गोलाकार फुँदना जो शोभा के लिए लगाया जाता है। ३ किसी चीज के सिरे पर बनी हुई कोई गोलाकार छोटी आकृति या रचना। जैसे—हाथ मे पहनने के कडे या जोशन की घुडी।
४ द्वेष, राग, वैर आदि के कारण मन मे रहनेवाली गाँठ या दुर्भाव। **मुहा०—जी या मन की घुंडी खोलना**=मन मे दबी हुई बात कहकर या रोष प्रकट करके दुर्भाव दूर करना।
५ कोई पेचीली बात। ६ धान का अकुर जो खेत कटने पर जड से फूटकर निकलता है। दोहला। ७ एक प्रकार की घास।

घुंडीदार—वि० [हिं० घुडी+फा० दार] १ (चीज) जिसमे घुडी टँकी, बनी या लगी हो। २ पेचीला।
पु० एक प्रकार की सिलाई जिसमे एक टाँके के बाद दूसरा टाँका फदा डालकर लगाते और जगह-जगह उसे घुडी का रूप देते चलते है।

घुंसा†—पु० [देश०] वह लकडी जिसके सहारे जाठ उठाकर कोल्हू मे डालते है।

घुआ—पु०=घूआ।

घुइयाँ†—स्त्री० [?] अरुई या अरवी नामक तरकारी।

घुइरना†—स० १ दे० 'घूरना'। २ दे० 'घुडकना'।

घुइस†—स्त्री०=घूस (जन्तु)।

घुकुआ†—पु० [हिं० घूका] तग मुँह की बाँस आदि की टोकरी।

घुग्घी—स्त्री० [?] पड़ुक या फाख्ता नाम का पक्षी।
†स्त्री०=घोघी।

घुग्घू—पु० [स० घूक] १ उल्लू नामक पक्षी। २ मूर्ख व्यक्ति। ३ मिट्टी का एक प्रकार का खिलौना जो फूँककर बजाया जाता है।

घुघुआ—पु० दे० 'घुग्घू'।

घुघुआना—अ० [हिं० घुग्घू] १ उल्लू पक्षी का बोलना। २ उक्त पक्षी की तरह अस्पष्ट स्वर मे बोलना। ३ दे० 'गुर्राना'।

घुघुरी—स्त्री० दे० 'घुंघनी'।
†स्त्री० [हिं० घुंघरू] छोटा घुंघरू।

घुघ्घू†—पु०=घुग्घू।

घुटकना†—स० [स० घुट् प्रा० घोट्ट] १ घूंट-घूंट करके कोई तरल पदार्थ पीना। २ दे० 'गुटकना'।

घुटकी—स्त्री० [हिं० घुटकना] १ गले की वह नली जिसमे से होकर खाद्य पदार्थ पेट मे जाते है। २ गले मे रुक-रुककर आने-जानेवाला साँस।
मुहा०—घुटकी लगना=मरने के समय रुक-रुककर साँस आना-जाना।

घुटन—स्त्री० [हिं० घुटना] १. दम घुटने की-सी अवस्था या भाव। २. ऐसी अवस्था जिसमे कर्तव्य न सूझने पर मन मे बहुत घबराहट होती हो। (सफोकेशन)

घुटना—पु० [स० घुटक, दे० प्रा० गोड्डक, प्रा० गोड्ड, गोड, व० गोर, उ० गोरो, प० गोड्डा, सिं० गोडो, मरा० घुडगा, गुडगा] १ पैर के बीच का वह जोड जिसके ऊपर जाँघ और नीचे टाँग होती है।
मुहा०—घुटना टेकना=सुस्ताने के लिए घुटनो के बल बैठना। **(किसी के आगे) घुटना या घुटने टेकना**=अपनी अधीनता या पराजय मानकर किसी के आगे सिर झुकाना। **घुटनो (के बल) चलना**=हाथो और घुटनो के बल उस प्रकार धीरे-धीरे खिसकते हुए चलना जिस प्रकार छोटे बच्चे चलते है। **घुटनो मे सिर देना**=(क) सिर नीचा किये चिंतित या उदास होकर बैठना। (ख) लज्जित होना। सिर नीचा करना। **(किसी के) घुटनो से लगकर बैठना**=सदा पास और सटकर बैठे रहना।
२ उक्त गाँठ के आस-पास का स्थान।
अ० [हिं० घोटना] १ हिं० 'घोटना' क्रिया का अ० रूप। घोटा जाना।
२. गले मे साँस का रुकना। जैसे—धूएँ या धूल से दम घुटना। ३ बहुत अधिक मानसिक कष्ट या वेदना के कारण जीवन बिताना कठिन होना।
मुहा०—घुट-घुटकर मरना=बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट भोगते हुए और कठिनता से मरना।
४ किसी चीज का बहुत कस या जकडकर अटकना, फँसना या बद होना। जैसे—डोरी या रस्सी की गाँठ घुटना। उदा०—आन गाँठ घुटि जाय त्यों, मान गाँठ छुटि जाय।—बिहारी। ५ अच्छी तरह पीसा या मिलाया जाना। खूब पिसना या मिलना। जैसे—(क) भग घुटना। (ख) उबलने के बाद अच्छी तरह गलकर दाल का घुटना।
पद—घुटा हुआ=बहुत ही अनुभवी और चालाक (आदमी)।
६ घिसे जाने पर चिकना होना। ७ आपस मे बहुत ही घनिष्ठ सबध होना। जैसे—आज-कल उन दोनो मे खूब घुटती है। ८ आपस मे गुप्त अथवा घनिष्ठतापूर्ण बातें होना। जैसे—जब मैं वहाँ पहुँचा, तब उन दोनो मे खूब घुट रही थी। ९ बार-बार करते रहने से किसी काम या बात का पूरा अभ्यास होना। हाथ बैठना। जैसे—लिखने के समय बच्चो की पट्टी घुटना। १० उस्तरे से बालो का अच्छी तरह मूँडा जाना। जैसे—दाढी घुटना।
स० जकडने, बाँधने आदि के लिए अच्छी तरह कसना। बधन कडा करना। जैसे—घुटकर बाँधना।

घुटनी†—स्त्री० हिं० घुटना का स्त्री० अल्पा० रूप।

घुटन्ना—पुं० [हिं० घुटना] १ घुटनो तक पहुँचनेवाला पायजामा। २ तग मोहरीवाला पायजामा।

घुटरूँ—क्रि० वि० [हिं० घुटना] घुटनो के बल, उसी प्रकार घिसटकर जिस प्रकार छोटे बच्चे चलते है।

घुटरू†—पु० [हिं० घुटना] छोटा घुटना। बच्चे का घुटना।

घुटवाना—स० [हिं० घोटना का प्रे०] १ घोटने का काम दूसरे से कराना। २ दाढी, मूँछ आदि मुँडाना।
स० [हिं० घुटना] घुटने दबवाना।

घुटाई—स्त्री० [हिं० घुटना या घोटना] १ घोटने या घोटे जाने की क्रिया भाव या मजदूरी। २ खूब रगड-रगडकर किसी चीज को चिकना बनाने का काम। ३ दाढी, मूँछ आदि मूँडने या मुंडवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घुटाना—स० [हिं० घोटना का प्रे०] १. घोटने का काम किसी से कराना। २ कोई चीज रगडवाकर चमकीला बनवाना। घटवाना। ३ दाढी, मूँछ आदि मुंडाना।

घुटाला—पु०=घोटाला।

घुटी†—स्त्री०=घुट्टी।

घुटुरुन—पु० [हिं० घुटरु+अन (प्रत्य०)] घुटनो के बल चलने की क्रिया या भाव।

क्रि॰ वि॰ घुटनों के बल। घुटरूँ।
घुटुरू।—पु॰=घुटरू।
क्रि॰ वि॰=घुटरूँ।
घुट्टवा।—पु॰=घुटना (पैर का)।
घुट्टा।—पु॰=घोटा।
घुट्टी—स्त्री॰ [हि॰ घूंट या घोटना]। देशी दवाओ का एक प्रकार का घोल जो बहुत छोटे बच्चों को उनकी पाचन-शक्ति ठीक करने के लिए पिलाया जाता है।
क्रि॰ प्र॰—देना।—पिलाना।
मुहा॰—(कोई चीज या बात) घुट्टी में पडना=बहुत छोटी अवस्था से ही प्रकृति का अग बनना या स्वभाव बनना। जैसे—कह कर मुकर जाना तो उनकी घुट्टी मे पडा है।
घुड़—पु॰[हि॰ घोडा] हिन्दी 'घोडा' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—घुड-चढा, घुड-दौड़, घुड-मुँहा आदि।
घुड़कना—स॰ [अनु॰ घुर घुर] खीझने अथवा क्रुद्ध होने पर खिझाने अथवा क्रोध दिलानेवाले को डाँटते हुए यह कहना कि ऐसा काम मत करो जिससे हम खीझें या क्रुद्ध हों।
घुड़की—स्त्री॰ [हि॰ घुडकना] १. घुडकने की क्रिया या भाव। २. क्रुद्ध होकर अथवा खीझकर डाँटते हुए किसी को कही जानेवाली बात।
पद—बंदर-घुडकी (देखें)।
घुडचढ़ा—पु॰[हि॰ घोडा+चढना] १. वह जो घोडे पर चढा हो। घुड सवार। अश्वारोही। २. एक प्रकार का स्वांग जिसमे घोडे की-सी आकृति बनाकर उसके बीच मे सवार की तरह चलते है।
घुडचढ़ी—स्त्री॰ [हि॰ घोडा+चढना] १. हिंदुओं मे विवाह की एक रीति जिसमे वर घोडे पर चढकर दुल्हिन के घर जाता है। २. गाँवो मे रहनेवाली वेश्या, जो घोडे पर चढकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती हो। ३ घोडे की पीठ पर रख या लादकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी तोप। घुडनाल।
घुड़दौड़—स्त्री॰ [हि॰ घोडा+दौड] १. घोडो की दौड। २ एक प्रतियोगिता जिसमे घोडो को खूब तेज दौडाया जाता है और सबसे तेज दौडनेवाले घोडे (अथवा उसके स्वामी को) पुरस्कृत किया जाता है। ३ चलने मे घोडो की तरह की बहुत तेज चाल। ४. एक प्रकार की बडी नाव जिसके अगले भाग पर घोडे का मुँह बना होता है। ५ घुडसवार सेना की कवायद।
क्रि॰ वि॰ घोड़ो की तरह तेजी से आगे बढते या दौडते हुए।
घुड़नाल—स्त्री॰ [हि॰ घोडा+नाल] घोडे की पीठ पर रखकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की पुरानी चाल की छोटी तोप।
घुड़बहली—स्त्री॰ [हि॰ घोड़ा+बहल+ई] एक प्रकार का रथ जिसमे घोडे जुतते हो।
घुड़मक्खी—स्त्री॰ [हि॰ घोड़ा+मक्खी] भूरे रग की वह मक्खी जो घोडो को काटती है।
घुड़मुँहा—वि॰[हि॰ घोडा+मुँह]जिसका मुख घोडे की तरह लबा हो।
पु॰ एक कल्पित मनुष्य जाति जिसका धड मनुष्य का-सा और मुँह घोडे का-सा माना गया है।
घुड़ला—पु॰[हि॰ [घोडा+ला (प्रत्य॰)] १. बच्चो के खेलने के लिए बनाया हुआ काठ, पत्थर, मिट्टी आदि का छोटा घोडा। २ छोटा घोडा। ३ छोटी रस्सी या सिकडी। (लश॰)
घुडसवार—पु॰ [हि॰ घोडा+सवार] [भाव॰ घुडसवारी] वह जो घोडे पर सवार हो। अश्वारोही।
घुडसवारी—स्त्री॰ [हि॰ घोडा+सवारी] घोडे पर सवार होने की क्रिया या भाव।
घुड़सार—स्त्री॰ =घुडसाल।
घुड़साल—स्त्री॰[हि॰ घोडा+स॰ शाला] वह जगह या बाडा जहाँ घोडे बाँधे जाते हैं। अस्तबल।
घुड़िया—स्त्री॰ [हि॰ घोडी का अल्पा॰] बहुत छोटी घोडी। विशेष दे॰ 'घोटिका'।
घुड़कना।—स॰=घुडकना।
घुण—पु॰ [स॰ √घुण् (घूमना)+क] घुन।
घुण-लिपि—स्त्री॰ [मध्य॰ स॰]=घुणाक्षर।
घुणाक्षर—पु॰ [घुण-अक्षर, मध्य॰ स॰] लिखे हुए अक्षरो की तरह के वे चिह्न जो पत्ते, लकडी आदि पर घुन लगने से बन जाते है।
घुणाक्षर-न्याय—पु॰ [ष॰त॰] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस अवस्था मे होता है जिसमे कोई घटना सयोगवश वैसे ही हो जाती है जैसे लकडी आदि पर घुन लगने से यो ही कुछ अक्षर से बन जाते हैं।
घुन—पु॰ [स॰ घुण, प्रा॰ मरा॰ घूण, ब॰घुन्, उ॰ घूण; प॰ घुण्] १ एक प्रकार का लाल रग का छोटा कीडा जो अनाज के दानों का भीतरी अग खाकर उन्हे खोखला कर देता है। २ सफेद रग का एक प्रकार का छोटा पतला कीडा जो कागज, लकड़ी आदि खाता है।
मुहा॰—घुन लगना= चिन्ता, रोग, शोक आदि के कारण मनुष्य की ऐसी स्थिति होना कि उसका शरीर दिन पर दिन क्षीण होता जाय।
घुनघुना—पु॰ [अनु॰] बच्चो का झुनझुना नामक खिलौना।
घुनना—अ॰[स॰ घुण] १. घुन के द्वारा लकडी आदि का खाया जाना। जैसे—अनाज या लकडी घुनना। २ चिन्ता, रोग आदि के कारण मनुष्य का शरीर दिन पर दिन क्षीण होना।
घुनाक्षरन्याय—पु॰=घुणाक्षरन्याय।
घुन्ना—वि॰[अनु॰] [स्त्री॰ घुन्नी] (व्यक्ति) जो अपने क्रोध, दुःख, द्वेष आदि के भाव मन मे उपयुक्त अवसर पर किसी से बदला लेने के लिए छिपाये रखता हो।
घुप—वि॰ [स॰ कूप या अनु॰] गहरा (अँधेरा)। निविड। (अंधकार)।
घुमँड़ना।—अ॰=घुमडना।
घुमंतू—वि॰ [हि॰ घूमना] जो बराबर इधर-उधर यो ही घूमता-फिरता रहता हो।
घुमक।—स्त्री॰=घुमड।
घुमक्कड़—वि॰[हि॰ घूमना+अक्कड (प्रत्य॰)] बहुत अधिक घूमनेवाला (व्यक्ति)।
घुमची।—स्त्री॰ = घुँघची।
घुमटा—पु॰ [हि॰ घूमना+टा (प्रत्य॰)] सिर मे चक्कर आने का एक

रोग। इसमे प्राय मनुष्य का सिर चकराने लगता है, उसकी आँखो के सामने अँधेरा छा जाता है और वह गिर पडता है।
क्रि० प्र०—आना।

घुमड़—स्त्री० [हिं० घुमडना] वरसनेवाले वादलो का घेर-घार।

घुमडना—अ० [हिं० घूम+अटना] १ वादलो का उमड-उमड तथा घूम-घूमकर इकट्ठा होना। गहरे वादल छाना। २ इकट्ठा होना। छा जाना।

घुमड़ी—स्त्री० [हिं० घुमडना=घूमना] १ किसी केन्द्र पर स्थिर रहकर चारो ओर फिरने की क्रिया। २. किसी केन्द्र के चारो ओर घूमते रहने की क्रिया। ३ उक्त प्रकार से घूमते रहने के कारण सिर मे आनेवाला चक्कर। ४ एक प्रकार का रोग जिसमे सिर मे चक्कर आते हैं। ५ पानी का भँवर। ६ चौपायों का घुमनी नामक रोग।

घुमना†—वि० [हिं० घुमना] [स्त्री० घुमर्न‍ि] १ वरावर घूमता रहनेवाला। २ घुमक्कड।
अ०=घूमना।

घुमनी—स्त्री० [हिं० घुमना] १ पशुओं का एक रोग जिसमे उनके पेट मे पीडा होती है और वे चक्कर खाकर गिर जाते हैं।

घुमरना—अ० [हिं० घूमना] १ चक्कर खाना। घूमना। २ भ्रम मे पडना।
अ० दे० 'घुमडना'।

घुमराना—अ० =घुमडना।

घुमरी†—स्त्री० =घुमडी।

घुमाँ—पु० [हिं० घूमना] जमीन की एक नाप जो आठ वीघो के वरावर होती है। (पजाव)

घुमाऊ—वि० [हिं० घुमाना] घुमानेवाला।
*पु० दे० 'घुमाव' ४।

घुमाना—स० [हिं० घूमना का स०] १ किसी को घूमने मे प्रवृत्त करना। जैसे—आँखें घुमाना। २ चक्कर या फेरा देना। जैसे—घडी की सूई घुमाना। ३ कुछ दिखाने या सैर कराने के लिए इधर-उधर ले जाना। जैसे—किसी को शहर घुमाना। ४ एक ओर से हटाकर दूसरी ओर ध्यान प्रवृत्त करना या लगाना। ५ एक दिशा से दूसरी दिशा मे ले जाना। ६ वापस करना। लौटाना।
†अ० [हिं० घूम=नीद] शयन करना। सोना।

घुमारा—वि० [हिं० घूमना] १ घूमनेवाला। २ घूमता हुआ।
वि० [हिं० घूम= नीद] १ जिसे नीद आ रही हो। उनीदा। २ मतवाला। मत्त।

घुमाव—पु० [हिं० घुमाना] १ घूमने या घुमाने की क्रिया या भाव। २ वह स्थान या स्थिति जहाँ से कुछ घूमकर किसी ओर जाता हो। जैसे-रास्ते या सडक का घुमाव। ३ किसी वात, वाक्य आदि मे होनेवाला पेचीलापन या जटिलता। चक्कर। फेर।
पद—घुमाव-फिराव। (देखे)
४ उतनी भूमि जितनी दिन भर मे एक हल से जोती-जाती हो। ५ दे० 'घुमाँ'।

घुमावदार—वि० [हिं० घुमाव+दार] १ जिसमे कुछ घुमाव हो। २ चक्करदार।

घुमाव-फिराव—पु० [हिं० घूमना-फिरना] १ घूमने या फिरने की क्रिया या भाव। २ वात-चीत या व्यवहार मे होनेवाला ऐसा पेचीलापन या जटिलता जिसमे कुछ कपट या छल भी हो। जैसे-हमे घुमाव-फिराव की वातें अच्छी नही लगती।

घुम्मरना—अ० १. =घुमड़ना। २ =घूमना।

घुरकना†—अ० =घुडकना।

घुरका—पु० [हिं० घुरघुराना] चौपायो का एक रोग।

घुरकी†—स्त्री० =घुडकी।

घुरघुर—पु० [अनु०] १ विल्ली, सूअर आदि के गले से तथा साँस लेते समय कफ अटकने के कारण मनुष्य के गले से निकलनेवाला शब्द। २ किसी के कान के पास मुँह ले जाकर वहुत ही धीमे स्वर मे कही जानेवाली वात।

घुरघुरा†—प० [अनु०] गले मे होनेवाला कठमाला नामक रोग।

घुरघुराना—अ० [अनु० घुर घुर] गले से घुर-घुर शव्द निकलना।
स० गले से घुर-घुर शव्द उत्पन्न करना।

घुरघुराहट—स्त्री० [हिं० घुरघुराना] घुर-घुर शव्द निकालने की क्रिया या भाव।

घुरचा†—पु० [देश०] एक प्रकार की चरखी जिससे कपास ओटी जाती है।

घुरण—पु० [स०√घुर (शव्द)+ल्युट्-अन] घुर-घुर शव्द करने की क्रिया या भाव।

घुरना*—अ० [अनु०] घुर-घुर शव्द होना।
स० १ घुर-घुर शव्द करना। उदा०—घुरत परेवा गीवँ उचावा।—जायसी। २ वजना या वोलना। जैसे-—डका या मृदग घुरना। उदा० घुरै नीसाण सोड घनघोर।—प्रिथीराज।
†अ० =घुलना। उदा०—तव पिय उर घुरि सोयो चहै।—नददास।
अ० [स० घूर्णन] १. घूमना। २ (आँख) झपकना। ३ (झडे आदि का) फहरना। उदा०—घर घर घुरत निसान कहि न जात कछु आज की।—नददास।

घुरविनिया—स्त्री० [हिं० घूरा+वीनना] कूडे-करकट के ढेर पर से अनाज के दाने आदि चुन या वीनकर एकत्र करने की क्रिया या भाव।
पु० वह जो उक्त प्रकार से दाने आदि एकत्र करके उन्ही से अपना निर्वाह करता हो (अर्थात् परम दरिद्र)।

घुरमना* अ० =घूमना। उदा०—घुरमि घुरमि घायल महि परही।—तुलसी।

घुरला*—स्त्री० [हिं० घुरना= घूमना] लोगों के आने-जाने से वना हुआ मार्ग। कच्चा छोटा रास्ता। पगडडी। उदा०—नेह नेह की वहल मे घुरला जानत नाह।—रसनिधि।

घुरहरी†—स्त्री० दे० 'खुरहरी'।

घुराना—अ० [हिं० घुरना] चारो ओर से आकर छा या भर जाना।
स० शव्द उत्पन्न करना। वजाना।
†स० १ =घुलाना। २ =घुमाना। ३ =फहराना (झडा आदि)।

घुरमना†—अ० =१. घुमडना। २ =घूमना।

घुरुहरी†—स्त्री० [हिं० खुर + हर (प्रत्य०)] १ जगल मे पशुओ के

चलने से बना हुआ तंग रास्ते का-सा निशान या पगडंडी। २ बहुत ही छोटा और पतला या सँकरा रास्ता। पगडंडी।

घुर्मित—वि० [सं० घूर्णित] घूमता हुआ। चक्कर खाता हुआ।

घुर्राना†—अ० = गुर्राना।

घुर्रुवा—पु० [देश०] जानवरों का एक संक्रामक रोग।

घुलंच—पुं० [सं०√घुर्+क्विप्, घुर्√अञ्च् (गति)+अण्, उप० स०] गवेधु नामक कदन्न।

घुलना—अ० [सं० घूर्णन, प्रा० घुलन] १ किसी कड़ी या ठोस चीज का तरल पदार्थ मे गलकर अच्छी तरह मिल जाना। जल के संयोग से संयोजक अणुओं का अलग-अलग होना। जैसे—दूध या पानी मे चीनी घुलना।२ आँच आदि की सहायता से गलकर, नरम होकर या मुलायम पड़कर तरल पदार्थ मे मिल जाना। जैसे—दाल जरा और घुलने दो। ३. किसी मे या किसी के साथ बहुत अच्छी तरह या खूब मिल जाना। जैसे—किसी के साथ आँखे घुलना। उदा०—तव पिय उर घुरि गोयो यहँ।—नंददास।

मुहा०—(किसी से)घुल घुलकर बातें करना=प्रेमपूर्वक खूब मिलकर बातें करना। बहुत घनिष्ठता से बातें करना। घुल-मिलकर=बहुत अच्छी तरह मिलकर। बहुत मेल-जोल से।

४ पकने आदि के कारण ठोस न रहकर मुलायम पड़ जाना। जैसे—ये आम खूब घुल गये है।५ बुढ़ापे, रोग, शोक आदि के कारण शारीरिक दृष्टि से बहुत ही क्षीण या दुर्बल हो जाना।

मुहा०—घुल-घुलकर मरना=बहुत दिनों तक मानसिक या शारीरिक कष्ट भोगते हुए बहुत क्षीण तथा दुर्बल होकर मरना।

६ जुए मे दाँव का किसी कारण व्यर्थ हो जाना। जैसे—कौड़ी पर कौड़ी टिकने से दाँव घुल गया। ७ समय का व्यर्थ हाथ से निकलना या बीतना। जैसे—कचहरी मे जरा-जरा सी बातो मे बरसो घुल जाते हैं।

घुलवाना—स० [हि० घुलाना का प्रे०] १ घोलने का काम किसी दूसरे से कराना। २ आँख मे काजल या सुरमा लगवाना।

घुलाना—स० [हिं० घुलना] १ किसी तरल पदार्थ मे कोई कड़ी या ठोस चीज छोड़कर उसे इस प्रकार हिलाना, मिलाना या उबालना कि वह उसमे घुल जाय। २ मुँह मे रखी हुई चीज का रस चूसते हुए उसे खा जाना। ३. गरमी या ताप पहुँचाकर नरम करना। ४ शरीर क्षीण या दुर्बल करना। ५ यंत्रणा देना। ६ अपनी ओर प्रवृत्त करने का प्रयत्न करना। ७ (सुरमा या काजल) लगाना। सारना। ८ (काल या समय) बिताना। गुजारना।

घुलावट—स्त्री० [हि० घुलना] १ घुलने या घुलाने की क्रिया या भाव। २ पारस्परिक स्नेहपूर्ण व्यवहार की घनिष्ठता।

घुवा—पु० = घूआ।

घुसड़ना†—अ० = घुसना।

घुसना—अ० [सं० घुष, प्रा० घुसणा, गु० घुसवूँ, ने० घुस्नु, मरा० घुसणे] १ बलपूर्वक और सामने के निषेधक अथवा बाधक तत्त्वों को इधर-उधर हटाते हुए अन्दर जाना, प्रवेश करना या आगे बढना। जैसे—(क) दरवाजा तोड़कर(अथवा और किसी प्रकार) किसी के मकान के अन्दर घुसना। (ख) तमाशा देखने के लिए धक्कम-धक्का करते हुए भीड़ मे घुसना। (ग) पेट मे तलवार या तीर घुसना।

क्रि० प्र०—आना।—जाना—पड़ना। —बैठना।

पद—घुस-पैठ। (देखें)

मुहा०—(किसी जगह) घुसकर बैठना=(क) आस-पास के लोगों को दबाते या हटाते हुए कही जाकर बैठना। (ख) लोगों की दृष्टि से बचने के लिए आड़ मे छिपकर बैठना। जैसे—सिपाहियों का नाम सुनते ही वह घर में घुसकर बैठ गया।

२. अनावश्यक अथवा अनुचित रूप से परंतु बलपूर्वक या हठात् किसी कार्य या चर्चा मे सम्मिलित होना। जबरदस्ती किसी के बीच मे पड़ना। जैसे—दूसरों की बातों में जबरदस्ती घुसने की आदत अच्छी नहीं। ३. किसी बात या विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए मनोनिवेशपूर्वक उसके अंगों-उपांगों आदि का अध्ययन या विचार करके उसकी तह तक पहुँचना। जैसे—किसी विषय मे अच्छी तरह घुसे बिना कभी उसका पूरा ज्ञान नहीं होता। ४ किसी चीज या बात का इस प्रकार पूरी तरह से दबना या दूर होना कि सहसा वह दिखाई न दे। जैसे—मुकदमे की पहली पेशी में ही उनकी सारी अकड़ और शेखी घुस गई।

घुस-पैठ—स्त्री० [हिं० घुसना+पैठना] १ घुसने और पैठने की क्रिया या भाव। २ गति। पहुँच। प्रवेश। ३ प्रयत्न करके या बलपूर्वक कहीं पहुँच कर अपने लिए स्थान बनाने की क्रिया या भाव।

घुसवाना—स० [हिं० घुसाना का प्रे०] घुसने या घुसाने का काम किसी से कराना।

घुसाना—स० [हिं० घुसना] १. हिं० 'घुसना' का स० रूप। किसी को घुसने मे प्रवृत्त करना। २.कोई चीज गड़ाना, चुभाना या धँसाना।३ किसी अवकाश या स्थान मे किसी वस्तु या व्यक्ति को ढकेलना, पहुँचाना या प्रविष्ट करना।

घुसेड़ना—स० = घुसाना।

घूँगची† —स्त्री० = घुंघची।

घूँघट—पु० [सं० गुंठ] १ स्त्रियों की चुदरी, धोती, साड़ी आदि का वह भाग जिसे वे सिर पर से कुछ नीचे खींचकर अपना मुँह ढँकती हैं।

क्रि० प्र०—उठाना।—उलटना।—करना। —काढ़ना।—खोलना। —डालना। —निकालना।—मारना।

२. वह दीवार जो बाहरी दरवाजे के सामने इसलिए बनी रहती है जिसमे चौक या आँगन बाहर से दिखाई न पड़े। गुलामगर्दिश। ओट। ३ सैनिक-क्षेत्र मे युद्ध के समय सेना का दबकर किसी ओर मुड़ना।

मुहा०—घूँघट खाना= (क) सेना का युद्धस्थल से पीछे की ओर अथवा दाहिने-बाएँ मुड़ना। (ख) किसी चीज का सामने से हटकर इधर-उधर मुड़ना या लौटना।

घूँघर—पु० [हिं० घुमरना] बालो मे पड़ा हुआ मरोड़। छल्ला।

घूँघरा—पु० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

घूँघरि†—स्त्री० [हिं० घुमड़ना] ? बादलों का समूह। उदा०—घूँघरि दिसनि देखि मय बाढी।—नन्ददास। २ दे० 'घूँघर'।

घूँघरी† —स्त्री० [हिं० घूँघरू] छोटा घुँघरू। नूपुर।

घूँघरू+—पु० = घुंघरू।

घूँचा—पु० =घूँसा।

घूँट—पु० [अनु० घुट घुट=गले के नीचे पानी आदि उतरने का शब्द] १. तरल

पदार्थ की उतनी मात्रा जितनी एक बार मुँह मे भर कर गले के नीचे उतार दी जाती है।

मुहा०—घूँट लेना=घूँट-घूँट करके या थोडा-थोडा करके पीना।

पु० [स० घूंट] एक प्रकार का पहाडी टट्टू। गुठा। गूँठ।

२ एक प्रकार का झाड या छोटा पेड।

घूँटना—स० [हिं० घूंट] पानी या और कोई तरल पदार्थ घूँट-घूँट या थोड़ा थोडा करके गले के नीचे उतारना।

घूँटा†—पु० [स० गुफ] पैर के बीच का जोड। घुटना।

घूँटी—स्त्री० दे० 'घुट्टी'।

घूँबना—अ० =घूमना। उदा०—महि घूँविअ पाइअ नहि वारु।—जायसी।

घूँस—स्त्री० = घूस (रिश्वत)।

पु० = घूस (जतु)।

घूँसा—पु० [हिं० घिस्सा] १ बँधी हुई मुट्ठी का वह रूप जो किसी को मारने के लिए बनाकर उठाया या ताना जाता है। मुक्का। २ उक्त प्रकार से किया जानेवाला प्रहार।

घूँसेबाज—पु० [हिं० घूँसा+फा० बाज] वह खिलाडी जो घूँसेबाजी के खेल मे भाग लेता हो।

घूँसेबाजी—स्त्री० [हिं० घूँसा+फा० बाजी] १ आपस मे घूँसो या मुक्को के प्रहार से होनेवाली लडाई। २ एक खेल जिसमे दो खिलाडी एक दूसरे को घूँसे मार कर परास्त करते है।

घूआ—पु० [देश०] १. काँस, मूँज वा सरकडे आदि का रुई की तरह का फूल जो लबे सीको मे लगता है। २ कीचड़, मिट्टी आदि मे होनेवाला एक प्रकार का छोटा कीडा। रेवाँ। ३ दरवाजे के पास का वह छेद जिसमे किवाडे की चूल धँसी रहती है।

घूक—पु० [स० घू √कै (शब्द)+क] [स्त्री० घूकी] उल्लू पक्षी। घुग्घू।

घूक-नादिनी—स्त्री० [घूक √ नद् (शब्द) + णिनि—ङीप्, उप० स०] गगा।

घूका—पु० [हिं० घूआ] १ बाँस। बेत। २ मूँज आदि की बनी हुई सँकरे मुँहवाली डलिया।

घूगस†—पु० [देश०] ऊँचा बुर्ज। गरगज।

घूघ—स्त्री० [हिं० घोघी] धातु की वह टोपी जो लडाई मे सिर को चोट से बचाने के लिए पहनी जाती है।

पु० [स० घूक] उल्लू।

घूघरा—पु० =घुँघुरू।

घूघस—पु० [?] किले के फाटक से अन्दर जाने के लिए बना हुआ चक्करदार रास्ता। (राज०)

घूघी†—स्त्री० [देश०] १ थैली। २ जेब। खीसा। ३ पडुक या फाख्ता नाम का जल-पक्षी।

घूघू—पु० =घुग्घू।

घूटना†—स० १ =घूँटना। २ =घोटना।

घूठन†—पु० =घुटना।

घूडा†—पु० =घूर।

घूनस†—स्त्री० [?] पाग (ब्याह की पगडी) मे लटकनेवाला झब्बा या झालर।

घूना†—वि० =घुन्ना।

घूम—स्त्री० [हिं० घूमना] १ घूमने की क्रिया, भाव या स्थिति। घुमाव। २ चक्कर। घेरा। ३ मोड।

स्त्री० [बँ० मिलाओ हिं० ऊँघ] १ निद्रा। नीद। (पूरब) उदा०—न इस मोह की घूम से घिरो।—मैथिलीशरण। २ नशा।

घूम-घुमारा†—वि० [हिं० घूमना] १ घूमता या चक्कर खाता हुआ। २ अलसता, मद आदि से भरा हुआ। उदा०—कृष्ण रसामृत-पान अलस कछु घूम-घुमारे।—नददास।

घूमना—अ० [स० घूर्णन, प्रा० घुम्मइ] १. किसी केंद्र पर स्थित वस्तु का चारो ओर चक्कर लगाना। जैसे—चक्की के पाट, घड़ी की सूई अथवा रथ के पहियो का घूमना। २ किसी एक वस्तु का किसी दूसरी वस्तु को केंद्र बनाकर उसके चारो ओर चक्कर लगाना। जैसे—चद्रमा पृथ्वी के चारो ओर और पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है। ३ किसी वस्तु का अपने अक्ष या धुरी पर चारो ओर फिरना। जैसे—लट्टू का घूमना। ४ किसी ओर चलते-चलते दाहिने या बाएँ बढना। जैसे—यह रास्ता आगे चलकर दाहिनी ओर घूम गया है। ५ चलते-चलते पीछे की ओर फिरना। लौटना। जैसे—मैने घूमकर देखा तो वह भी मेरे पीछे-पीछे आ रहा था।

मुहा०—(किसी को) घूम घुमाना=टाल-मटोल या हीला-हवाला करते हुए किसी को किसी काम के लिए बार-बार दौडाना।

६ मन बहलाने या सैर करने के लिए इधर-उधर जाना। जैसे—रोज सवेरे वह घूमने निकलता है। ७ अनेक देशो या स्थानो मे सैर-सपाटे के लिए अथवा किसी विशिष्ट उद्देश्य से जाना। जैसे—(क) वे अमेरिका या यूरोप घूम आये है। (ख) गाँव-गाँव घूमकर गाँधी ने सोये भारतीयो को जगाया था। ८ अचानक एक ओर से किसी दूसरी ओर प्रवृत होना।

मुहा०—(किसी की ओर) घूम पड़ना=आवेश या क्रोध मे आकर किसी दूसरे से बाते करने लगना। जैसे—उनसे बाते करते-करते वे अचानक मुझ पर घूम पडे।

† ९ किसी चीज का घेर।

पद—घूम-घुमारा। (देखे)

अ० [बँ० घूम =नीद] १ निद्रा मे होना। सोना। २ उन्मत्त या मतवाला होना। ३. तन्मय या लीन होना। उदा०—बिहँसि बुलाय बिलोकि उत्त प्रौढ तिया रस घूमि।—बिहारी।

घूमनी—स्त्री० =घुमरी (चक्कर)।

घूमा—पु० [देश०] एक प्रकार का साग जिसमे सफेद फूल लगते है।

घूर—पु० [स० कूट] १ कूडे-करकट का ढेर। २ वह स्थान जहाँ पर उक्त ढेर लगा हो। ३ पोले गहने को भारी करने के लिए उसके अन्दर भरा हुआ बालू, सुहागा आदि। (सुनार)

घूरघार—स्त्री०=घूरा-घारी।

घूरना—अ० [स० घूर्णन] इस प्रकार आँखे निकालकर क्रोधपूर्वक किसी की ओर देखना जिससे वह कोई कार्य करने या न करने को विवश होता हो। जैसे—पिता जी के घूरते ही लडके घर चले आये।

घूरा-घारी—स्त्री० [हिं० घूरना+अनु०] १ घूरने की क्रिया या भाव। २ एक दूसरे की ओर देखने अथवा नजर मिलाने का कार्य।

घूर्ण—पु० [स०√घूर्ण् (चक्कर काटना)+घञ्] १. इधर-उधर घूमना। २ किसी वस्तु के चारो ओर घूमना।

वि० घूमता हुआ।

घूर्णन—पुं० [सं० √घूर्ण् + ल्युट्—अन] घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव।

घूर्णिका—स्त्री० [सं० √घूर्ण् + ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] एक प्रकार का वैज्ञानिक यंत्र जिसकी सहायता से घूमने या चक्कर लगानेवाले पदार्थों या पिंडों के बल, वेग आदि मापे जाते हैं। (जाइरोस्कोप)

घूर्णित—वि० [सं० √घूर्ण् + क्त] घूमा, घूमता या घुमाया हुआ।

घूर्णी (र्णिन्)—वि० [सं० घूर्ण + इनि] घूमनेवाला।

घूर्ण्य—वि० [सं० √घूर्ण् + ण्यत्] १. जो घूम सकता या घुमाया जा सकता हो। २. घूमता हुआ।

घूस—स्त्री० [सं० गुहाशय = चूहा] चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु जो प्रायः पृथ्वी के अन्दर बिल खोदकर रहता है। घुंइस।

पुं० [सं० गुह्याशय या हिं० घुसना] १. किसी अधिकारी को कोई अनुचित, अवैध या कर्तव्य-विरुद्ध कार्य करने के लिए दिया जानेवाला धन। २. अपना काम जल्दी कराने के लिए किसी अधिकारी को दिया जानेवाला धन जो अवैध या अविधिक होता है। रिश्वत।

घूस-खोर—वि० [हिं० घूस + फा० खोर] [भाव० घूसखोरी] घूस या रिश्वत लेनेवाला। रिश्वती।

घृणा—स्त्री० [सं० √घृ (सींचना) + नक्—टाप्] [वि० घृणित] १. अनुचित या मर्यादा के विरुद्ध कार्य करनेवाले व्यक्ति अथवा उसके किये हुए कार्य या कृति के प्रति होनेवाली घोर स्वाभाविक अरुचि। जैसे—अश्लील साहित्य से मुझे घृणा है। २. दया।

घृणित—वि० [सं० √घृणा + इतच्] देखने-सुनने से जिसके प्रति मन में घृणा होती या हो सकती हो। घृणा के योग्य। घृण्य।

घृणी (णिन्)—वि० [सं० घृणा + इनि] १ घृणा करनेवाला। २. दयालु। ३ दीप्त।

घृण्य—वि० [सं० घृणा + यत्] = घृणित।

घृत—पुं० [सं० √घृ + क्त] १ मक्खन को तपाकर तैयार किया जानेवाला एक प्रसिद्ध खाद्य द्रव्य। घी। २ पानी।

वि० तर किया या सींचा हुआ।

घृत-कुमारी—स्त्री० [ष० त०] घी-कुँवार। ग्वार-पाठा।

घृत-धारा—स्त्री० [ष० त०] १ घी की धारा। २ [घृत √धृ (धारण करना) + णिच् + अण्, उप० स०, टाप्] पुराणानुसार कुशद्वीप की एक नदी।

घृत-पूर—पुं० [घृत √पूर् (पूर्ण करना) + अण्, उप० स०] घेवर नाम की मिठाई।

घृत-प्रमेह—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र घी के समान चिकना और गाढ़ा होता है।

घृताची—स्त्री० [सं० घृत √अंच् (गति) + क्विन्, ङीप्] १. स्वर्ग की एक अप्सरा। २ यज्ञ में आहुति देने का स्रुवा।

घृतान्न—पुं० [घृत-अन्न, मध्य० स०] १. घी में पकाया या तला हुआ अन्न या खाद्य पदार्थ। २. [ब० स०] अग्नि।

घृतार्चि (स्)—पुं० [घृत-अर्चिस्, ब० स०] अग्नि।

घृती (तिन्)—वि० [सं० घृत + इनि] जिसमें घी पड़ा हो।

घृतोद—पुं० [घृत-उदक, ब० स०, उद आदेश] घी का समुद्र। (पुराण)

घृष्ट—वि० [सं० √घृष् (घिसना) + क्त] घिसा या रगड़ा हुआ।

घृष्टि—स्त्री० [सं० √घृष् + क्तिन्] १ घिसने या रगड़ने की क्रिया या भाव। २. संघर्ष। ३. स्पर्धा।

पुं० [√घृष् + क्तिच्] [स्त्री० घृष्टी] सूअर।

घेंघ—पुं० [देश०] १. एक प्रकार का भोजन जो भुने हुए चने का [illegible] में मिलाकर पकाने से बनता है।

†पुं० घेघा (रोग)।

घेंघा†—पुं० घेघा।

घेंट†—पुं० [हिं० घाँटी] गला। गरदन।

घेंटा—पुं० [अनु० घें-घें] [स्त्री० घेंटी] सूअर का बच्चा।

घेंटी†—स्त्री० [?] चने की फली जिसके अन्दर बीज रूप में दाना होता है।

घेंटुला—पुं० [हिं० घेंटा] [स्त्री० घेंटुली या घेंटुलिया] सूअर का छोटा बच्चा।

घेंड़ी—स्त्री० [हिं० घी + ?] मिट्टी की वह हाँड़ी जिसमें घी रखा जाता है।

घेघा—पुं० [देश०] १ गले की नली जिसमें से होकर खाद्य पदार्थ पेट में पहुँचता है। २. गला। ३ एक प्रकार का रोग जिसमें गले के चारों ओर बहुत अधिक सूजन हो जाती है और मांस बढ़ जाता है।

घेतला—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० घेतली] एक प्रकार का भद्दा जूता जिसका पंजा चपटा और मुड़ा हुआ होता है। (बुन्देलखंड)

घेपना†—स० [देश०] १. हाथ या पैर से रौंदकर मिलाना। एक में गड्डमड्ड करना। २. गूँधना। ३. स्त्री के साथ प्रसंग या संभोग करना। (बाजारू)

घेर—पुं० [हिं० घेरना] १. घेरने की क्रिया या भाव। जैसे—घेर-घार। २. चारों ओर से घेरनेवाली चीज का फैलाव या विस्तार। घेरा। मंडल। ३. परिधि। घेरा।

घेरघार—स्त्री० [हिं० घेरना] १. चारों ओर से घेरने की क्रिया या भाव। जैसे—बादलों की घेर-घार। २ अपना काम निकालने के लिए किसी को प्रायः घेरे रहना और उससे अनुनय-विनय करते रहना। ३ घेरा। फैलाव।

घेरदार—वि० [हिं० घेर + फा० दार] जिसका घेरा या फैलाव अधिक हो। जैसे—घेरदार पायजामा।

घेरना—स० [हिं० गिर्, ब० घेरा, उ० घेरिबा, गु० घेरवुं, मरा० घेरणें] १. किसी वस्तु के चारों ओर पंक्ति के रूप में कोई चीज या कुछ चीजें खड़ी करना। जैसे—दीवार आदि बनाकर अथवा पेड़-पौधे उगाकर कोई स्थान घेरना। २. किसी वस्तु, बिंदु आदि के चारों ओर घेरा या वृत्त बनाना। जैसे—लाल स्याही से घेरे हुए शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। ३ रेखाओं आदि की सहायता से किसी क्षेत्र की सीमा निर्धारित करना। ४ आरक्षी (पुलिस) अथवा सेना का इस प्रकार किसी मकान या स्थान के चारों ओर खड़े हो जाना कि उस मकान या स्थान से कोई बाहर न निकलने या भागने पावे। छेंकना। ५. चारों ओर बिखरी हुई वस्तुओं अथवा चरते हुए पशुओं को एक स्थान पर इकट्ठा करना। ६ किसी वस्तु का चारों ओर से आकर किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार छा जाना कि वह ढक जाय। जैसे—कई दिनों से बादलों ने आकाश घेर रखा है। ७. चारों ओर से बंधन या रुकावट में लाना। जैसे—कष्टों या रोगों

का आकर घेरना। ८ कही बैठ या रुककर कोई स्थान इस प्रकार भरना कि औरो के लिए अवकाश या जगह न रह जाय। जैसे—आगे की सारी कुरसियाँ तो लडको ने घेर रखी हैं। ९ किसी को चारो ओर से बहुत दबाव डालकर, कोई काम करने के लिए विवश करना। जैसे—वे मुझे भी घेरकर वहाँ ले गये। १० बहुत अनुनय, आग्रह या खुशामद करना।

घेरनी†—स्त्री० [?] एक प्रकार का पक्षी।

घेरा—पु० [हिं० घेरना] १ किसी वस्तु, स्थान आदि को चारो ओर से घेरने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु या वस्तुओ का वह मडलाकार रूप या समूह जो किसी दूसरी वस्तु को चारो ओर से घेरे हुए हो। जैसे—दीवार या बाँसो का घेरा। ३ परिधि तथा परिधि का मान। जैसे—गोपियो के घेरे मे कृष्ण का नृत्य। ४ दीवार, बाढ आदि से घिरा हुआ स्थान। अहाता। (एन्क्लोज़र) ५ आरक्षी (पुलिस), सेना आदि के इस प्रकार किसी स्थान को घेरकर खडे होने की स्थिति जिसमे उस स्थान के निवासी उस स्थान से बाहर न निकल सकें अथवा बाहर से उनके पास कोई सहायता न पहुँच सके। जैसे—किले के चारो ओर मराठा सैनिको का घेरा पडा था। ६ पहनने के कपडो मे, शरीर की चौडाई के बल का कुल विस्तार। जैसे—कमीज या कुरते का घेरा। ७ किसी घन पदार्थ की चौडाई और मोटाई का कुल विस्तार। जैसे—इस पेड का घेरा चार हाथ है।

घेराई—स्त्री०=घिराई।

घेरा-बंदी—स्त्री० [हिं० घेरा+फा० बदी] १ किसी के चारो ओर घेरा डालने की क्रिया या भाव। २ आधुनिक राजनीति मे, वह स्थिति जिसमे कुछ राज्य मिलकर किसी दूसरे देश अथवा राज्य के चारो ओर इस उद्देश्य से घेरा बनाते हैं कि वह देश उभरने न पावे अथवा अपना प्रभाव और शक्ति बढा न सके। (एन्सर्किलमेंट)

घेराव—पु०=घिराव।

घेलौना†—पु०=घाल (घलुआ)।

घेवर—पु० [स० घृतपूर, घृतवर, प्रा० घेऊर, घेवर, गु० ने० घेवर, मरा० घीवर] मैदे की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई जिसमे घी बहुत अधिक पडता या लगता है।

घेवरना—स० [?] पोतना। लगाना। उदा०—पुरुखन्ह खरग सभारे चंदन घेवरे देह।—जायसी।

घेंटा—पु०=घेंटुला।

घेसाहर—स्त्री० [?] फौज। सेना। (डिं०)

घैया—स्त्री० [हिं० घी या स० घात] १. गौ के थन से निकली हुई दूध की धार जो मुँह लगाकर पीई जाय। २. ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। ३ वृक्ष के तनो आदि मे रस या स्राव निकालने के लिए उस पर लगाया हुआ क्षत। छेव।

†स्त्री० =घा (ओर)।

घैर—पु० [देश०] १ निन्दामय चर्चा। बदनामी। उदा०—घैर तें डरपि सखी घर लाई।—नददास। २ चुगली। शिकायत। ३ चर्चा।

घैरनी†—स्त्री० [?] एक प्रकार का कीडा जो दीवारो पर मिट्टी से घर बनाता है।

घैरा, घैरु*—पु०=घैर।

घैला†—पु० [स० घट] [स्त्री० अल्पा० घैली] मिट्टी का घड़ा।

घैहल†—वि०=घायल।

घैहा†—वि० [हिं० घाव] घायल।

घोंघ—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

घोंघा—पु० [स० कम्बुक] [स्त्री० घोंघी] १ शख की तरह का एक कीडा जो प्राय नदियो, तालाबो आदि मे पाया जाता है। उदा०—मरे समुन्दर घोंघा हाथ।—कहा०। २ अनाजो मे छिलके का वह कोश जिसके अन्दर दाना रहता है। ३ निरर्थक या व्यर्थ की वस्तु या व्यक्ति। वि० बेवकूफ। मूर्ख।

पद—घोंघा बसत=परम मूर्ख।

घोंघिल—पुं० [?] लगलग की जाति का एक पक्षी।

घोंघी—स्त्री०=घुग्घी।

घोंचा—पु० [हिं० गुच्छा] [स्त्री० घोंची] १. फलो, फूलो आदि का गुच्छा। घौद। स्तवक। २ ऐसा बैल जिसके सीग मुडकर कानो तक जा पहुँचे हो।

घोंची—स्त्री० [हिं० घोंचा] वह गाय जिसके सीग कानो की ओर मुड़े हो।

घोंचुआ†—पु०=घोसला।

घोंचू†—पु० [?] मूर्ख। बेवकूफ।

घोंट—पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत बडा जगली वृक्ष जिसकी लकड़ी खेती के औजार बनाने के काम मे आती है।

पु० [हिं० घोंटना] १ घोंटने की क्रिया या भाव। २ दे० 'घूंट'।

घोंटना—स० १.=घूंटना। २ =घोटना

घोंटू—वि० [हिं० घोंटना+ऊ (प्रत्य०)] घोंटने अर्थात् चारो ओर से कसकर दबानेवाला। जैसे—गलाघोंटू कानून।

घोंपना—स० [अनु० घप] १ गडाना। चुभाना। धँसाना। २ भद्दी और मोटी सिलाई करना। ३ दे० 'घेपना'।

घोंसला—पु० [स० कुलाय] १ तिनको, पत्तो आदि की वह कलापूर्ण रचना जिसमे पक्षी रहते तथा अडे देते हैं। जैसे—बया का घोसला। २. वह आला या ताखा जिसमे पक्षी रहते तथा बच्चे देते हो। जैसे—कबूतर का घोसला। ३. किसी व्यक्ति के रहने का तुच्छ तथा छोटा स्थान।

घोंसुआ†—पु०=घोंसला।

घोखना—स० [स० घुष] याद रखने के लिए बार-बार पढना या रटना। स्मरण रखने के लिए बार-बार उच्चारण करना। जैसे—पाठ घोखना।

घोखवाना—स० [हिं० घोखना का प्रे०] किसी को घोखने या रटने मे प्रवृत्त करना।

घोगर—पु० [देश०] खरपत नामक पेड।

घोघ†—पु० [देश०] वह जाल, जिसमे बटेर फँसाये जाते है।

घोघा—पु० [देश०] चने आदि की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीडा।

घोघी†—स्त्री० दे० 'घुग्घी'।

घोचिल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।

घोट—पु० [स० घोटक] १ घोडा। २ ऐसा पुरुष, जिसमे घोडे की-सी शक्ति हो। उदा०—काय दहेसइ पोयणी, काय कुँवारा घोट।—ढोला मारू।

पु० [हिं० घोटना] घोटने की क्रिया या भाव।

घोटक—पु० [स०√घुट्(लौटना)+ण्वुल्–अक] घोडा। अश्व।

घोटकारि—पु० [घोटक-अरि प०त०] भैंसा।

घोटना—स०[स० घृष्ट √घृष्, घट्ट्, उ० घोटिवा, प० घोटणा; सिं० घोटणू, मरा० घोटणे] १ किसी कडी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर बार-बार इस प्रकार मलना या रगडना कि वह चमकीली या चिकनी हो जाय। जैसे—कपडा या दीवार घोटना। २ पत्थर, लकडी, लोहे आदि के किसी उपकरण से किसी वस्तु को इस प्रकार बार-बार दवाना या रगडना कि वह चूर-चूर या बहुत महीन हो जाय। जैसे—भाँग घोटना, मोती घोटना। ३ किसी का गला इतने जोर से दवाना कि वह मर जाय या उसका दम घुटने अर्थात् रुकने लगे। ४. कुछ सीखने मे किसी बात का अभ्यास या मश्क करना। जैसे—पटिया पर अक्षर घोटना। ५ मुँह जवानी याद करना। जैसे—पाठ घोटना। ६ उस्तरे, आदि से बाल साफ करना। जैसे—दाढी घोटना।

पु०[स्त्री० घोटनी] १ वह वस्तु जिससे कोई चीज घोटी जाय। घोटने का उपकरण। २ लकडी का वह कुदा जो जमीन मे कुछ गडा रहता है और जिस पर रखकर रँगे कपडे घोटे जाते है। (रँगरेज)

घोटवाना—स०[हिं० घोटना का प्रे०] रगडवाना। घोटकर चिकना कराना। घोटने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ घोटने मे प्रवृत्त करना। (दे० 'घोटना')

घोटा—पु०[हिं० घोटना] १ घोटने, पीसने अथवा रगडने की क्रिया या भाव। २ पत्थर, लकडी, लोहे, शीशे आदि का वह उपकरण जिससे कोई चीज घोटने का काम किया जाय। (वर्निशर) ३ रँगरेजो का एक उपकरण जिसे वह रगे हुए कपडो पर रगडते है जिससे कपडे चमकीले हो जाते हैं। ४ घुटा हुआ चमकीला कपडा। ५ पाठ आदि मुँह जवानी याद करने के लिए उसे वार-बार पढने तथा कहने का काम। जैसे—पाठशाला मे लडके घोटा लगाते है। ६. बाँस आदि का वह चोगा जिससे घोडो, वैलों आदि को ओषधि पिलाई जाती है। ७ नगजडियों का एक औजार जिससे वे डाँक को चमकीला करते है। ८ छुरे से वाल वनाने या वनवाने की क्रिया या भाव। हजामत।

क्रि० प्र०—फिरवाना।

घोटाई—स्त्री० [हिं० घोटना+आई (प्रत्य०)] १ घोटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। (सभी अर्थो मे) २ चित्रकला मे, पूरी तरह से चित्र अकित हो जाने पर उसे शीशे पर उलटकर उसकी पीठ पर घोटे से रग- ·· — जिससे चित्र मे चमक आ जाय।

पुर—पु० —पु०[देश०] रेवद चीनी की जाति का एक पेड जिसमे से एक ाई। राल निकलती है जो दवा, रँगाई आदि के काम आती है।

की —पु० [[मरा०] १. किसी काम या वात मे होनेवाली बहुत बडी और गा गडबडी। २ किसी कार्यालय, सस्था आदि के किसी

-पु० ी० [स ारी द्वारा उसके हिसाव-किताव मे की हुई गडवडी अथवा

्था या ा। २ ध ारी, कर्मच ' आदि का किया हुआ दुरुपयोग।

सामग्री, धन घृत-अन्न, पड़ना=(क) किसी कार्य या बात का निपटारे

—घोटाले मे । २ [मे न होना। (ख) सामग्री, धन आदि का ऐसी

झने की स्थिति [घृत-अ वापस मिलना बहुत कठिन हो।

मे होना कि उसको [स० घृत- घोटी+कन्–टाप्, ह्रस्व] [√घुट्+अच्–

घोटी—स्त्री०[स० क, व० म०,

घोडी। (घिसन।

घोटू†—वि० [हिं० घोटना] १. घोटनेवाला। २ चारो ओर से कसकर दवानेवाला। जैसे—गल-घोटू नियम।

पु० १.=घोटा। २.=घुटना।

घोड़†—पु० दे० 'घुड'।

घोड़चढा—पु० दे० 'घुड-चढा'।

घोड़-दौड—स्त्री० दे० 'घुड-दौड'।

घोड़-मुहाँ—वि० दे० 'घुड-मुहाँ'।

घोडरासन—पु०[हिं० घोडा+रासन] रास्ना नामक ओषधि का एक भेद।

घोड़-रोज—पु०[हिं० घोडा+रोज] एक प्रकार की नीलगाय जो घोडे की तरह बहुत तेज दौडती है।

घोड़-सन—पु०[हिं० घोडा+सन] एक प्रकार का सन।

घोड-सार, घोड़-साल†—स्त्री० दे० 'घुड-साल'।

घोड़ा—पु०[स० घोटक प्रा० घोडा] [स्त्री० घोडी] १ तेज दौडनेवाला एक प्रसिद्ध पालतू चौपाया जिस पर लोग सवारी करते है तथा जो गाडियाँ, टाँगे, रथ आदि भी खीचता है।

मुहा०—**घोड़ा उठाना**=घोडे को तेज दौडाना। **घोड़ा उलाँगना**=किसी नये घोडे पर पहले-पहल सवारी करना। **घोड़ा कसना**=सवारी के लिए घोडे पर जीन या चारजामा कसना। **घोडा खोलना**=(क) घोडे का साज या चारजामा उतारना। (ख) घोडे को बन्धन-मुक्त करना। **घोडा छोड़ना**=(क) किसी के पीछे घोडा दौड़ाना। (ख) दिग्विजय के लिए अश्वमेध का घोडा छोडना। (ग) घोडे का साज या चारजामा उतारकर उसे चरने के लिए खुला छोडना। **(किसी के पीछे) घोड़ा डालना**=किसी को पकडने के लिए उसके पीछे तेजी से जाना। **घोड़ा निकालना**=(क) घोडे को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। (ख) दौड आदि मे घोडे को आगे वढा ले जाना। **घोड़े पर चढ़े आना**=अपना काम पूरा कराने के लिए बहुत जल्दी मचाना। **घोड़ा फेरना**=घोडे को दौडाने का अभ्यास कराने के लिए एक वृत्त मे घुमाना। कावा देना। **घोड़ा बेचकर सोना**=निश्चिंत या वेफिक्र होकर गहरी नींद सोना।

२ बदूक, मशीन आदि का वह खटका या पेच जो घोडे के मुख के आकार का होता है, और जिसे दवाने से कोई विशिष्ट क्रिया होती है। ३ बच्चो के खेलने का घोडे की आकृति का खिलौना। ४ शतरज मे घोड़े की आकृति का एक मोहरा जो २½ घर चलता है। ५ घोडे के मुख के आकार का लकडी, पत्थर आदि का वना हुआ टोटा जो भार सँभालने के लिए छज्जे के नीचे दीवार मे लगाया जाता है। ६ कसरत करने के लिए लकडी का वह मोटा कुंदा जो चार पायो पर ठहरा होता है और जिसे लडके दौडकर लाँघते हैं। ७ दीवार मे लगी हुई कपडे टाँगने की खूँटी।

घोड़ा-करज—पु० [स० घृतकरज] एक प्रकार का करज जो चर्मरोग और ववासीर को ठीक करता है तथा विष-नाशक माना जाता है।

घोड़ा-गाड़ी—स्त्री०[हिं० घोडा+गाडी] वह गाडी जिसे घोडा या घोडे खीचते हो।

घोडाचोली—स्त्री०[हिं० घोडा+चोला=शरीर] वैद्यक की एक प्रसिद्ध ओषधि जो अनेक रोगो को दूर करनेवाली मानी गई है।

घोडानस—स्त्री० [हिं० घोडा+नस] पिंडली के नीचे और एडी के पीछे की मोटी नस। कूँच। पै।

घोड़ानीम—स्त्री० [हिं० घोड+नीम] बकायन (वृक्ष)।

घोड़ापलास—पु० [देश०] मालखभ की एक कसरत जिसमे एक हाथ मालखभ पर घुमाकर सामने रखते और दूसरे से मोगरा पकड़ते है।

घोड़ा-बच—स्त्री० [हिं० घोडा+बच] बच नामक वनस्पति का एक भेद जिसका रग सफेद और गध उग्र होती है।

घोड़ा-बाँस—पु० [हिं० घोडा+बाँस] एक प्रकार का बडा और मोटा बाँस।

घोड़ा-बेल—स्त्री० [हिं० घोडा+बेल] एक बेल जिसकी पत्तियाँ एक बालिश्त भर लंबे सीको मे लगती हैं।

घोडिया—स्त्री० [हिं० घोडी+या (प्रत्य०)] १ घोडी। २ छोटी घोडी। ३ दीवार मे कपडा आदि टाँगने के लिए लगाई जानेवाली खूँटी। ४ जुलाहो का एक उपकरण।

घोडी—स्त्री० [हिं० घोडा] १. घोडा जाति के पशु की मादा। २ खेल मे वह लडका जिसकी पीठ पर दूसरे लडके चढते हैं। ३ विवाह की वह रस्म जिसमे वर घोडी पर चढकर कन्या के घर जाता है।

मुहा०—घोडी चढ़ना=विवाह के दिन वर का घोडी पर चढकर कन्या के घर जाना।

४ विवाह के दिनो मे वर-पक्ष मे गाये जानेवाले कुछ विशिष्ट प्रकार के गीत। ५ हाथीदाँत आदि का वह छोटा लबोतरा टुकडा जो तबूरे, सारगी, सितार आदि मे तूँबे के ऊपर लगा हुआ होता है तथा जिस पर उसके तार टिके या ठहरे रहते हैं। ६ दो जोडी बाँसो मे रस्सी तानकर बनाया हुआ वह ढाँचा जिस पर धोबी गीले कपड़े सूखने के लिए फैलाते हैं। ७ काठ का एक प्रकार का आयताकार ढाँचा (जिसके नीचे चार पाये लगे रहते है) जिसे दौड आदि के समय दौडनेवालो के मार्ग मे बाधा उत्पन्न करने के लिए रखा जाता है। (हर्डल) ८ दे० 'घोडिया'।

घोण—पु० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का सितार की तरह का बाजा।

घोणा—स्त्री० [सं०√घुण् (घूमना)+अच्—टाप्] १ नाक। (डिं०) २ थूथन।

घोणी (णिन्)—पु० [स० घोण+इनि] शूकर।

घोमस—पु० [?] सामुद्रिक।

घोमसा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

घोर—वि० [स०√हन् (हिंसा)√अच्, घुर् आदेश] [स्त्री० घोरा] १ जो आकार, प्रकार, प्रभाव आदि की दृष्टि से विकराल या भीषण हो। डरावना। २ जो मान, मात्रा आदि के विचार से अति तक पहुँचा हुआ हो। जैसे—घोर तपस्या, घोर निद्रा, घोर वर्षा। ३ (स्वर) जो बहुत ही कठोर और भय-उत्पादक हो। जैसे—घोर नाद। ४ बहुत बडा। उदा०—ऊँचे घोर मदिर के अन्दर रहाती हैं।—भूषण। ५ बहुत ही बुरा। जैसे—घोर पाप। ६ बहुत ही घना या सघन। जैसे—घोर जगल, घोर बियाबान।

क्रि० वि० बहुत अधिक। अत्यन्त।

†पु०=घोडा।

†पु०=घोल।

उभ०=घोष।

स्त्री० [फा० गोर] कब्र। उदा०—सज्यो घोर हुस्सैन सय करयो प्रवेश अपान।—चदबरदाई।

घोरना*—अ० [स० घोर] जोर का या भारी शब्द करना। गरजना। स०=घोलना।

घोरमारी—स्त्री० दे० 'महामारी'।

घोरसार*—पु०=घुडसाल।

घोरा—स्त्री० [स० घोर+टाप्] श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रो मे बुध की गति। (ज्योतिष)

पु० [हिं० घोडा] १ घोडा। २ खूँटी। ३ टोडा।

घोराघोरी†—क्रि० वि० [सं० घोर से अनु०] खूब जोरों से। उदा०—घोरा-घोरी कीन्ह बटोरा।—कबीर।

स्त्री० बहुत अधिक उग्रता, तीव्रता या विकटता।

घोरारा—पु० [देश०] एक प्रकार का गन्ना।

घोरिया†—स्त्री०=घोडिया।

घोरिला†—पु० [हिं० घोडी] १ बच्चो के खेलने का मिट्टी का घोडा। २ छोटे आकार का घोड़ा। ३ दीवार मे लगी हुई खूँटी। उदा०—फूलन के विविध हार घोरिलन ओरमत उदार।—केशव।

घोरी†—स्त्री० १ =अघोरी। २ =घोडी।

घोल—पु० [सं० √घुड् (व्याघात)+घञ्, ड को ल] १ बिना पानी डाले मथा हुआ दही। २ लस्सी। ३ किसी तरल पदार्थ मे कोई दूसरी (तरल अथवा घुलनशील) वस्तु मिलाकर तैयार किया हुआ मिश्रण। (सोल्यूशन)

घोल-दही—पु० [हिं० घोलना+दही] मट्ठा।

घोलना—स० [स० घुण्, घोलय, प्रा० घोलेई, ब० घुलान, उ० घोरिवा, प० घोलणा, सिं० घोरणु, गु० घोडवूं; ने० घोल्नु; मरा० घोलणें] किसी तरल पदार्थ मे कोई अन्य घुलनशील वस्तु मिलाना। जैसे—दूध मे चीनी घोलना।

मुहा०—(कोई चीज) घोल कर पी जाना=किसी चीज का सपूर्णतया अत कर देना। जैसे—तुम तो लज्जा घोल कर पी गये। **घोल पीना**=घोल कर पी जाना।

घोला—पु० [हिं० घोलना] १ किसी वस्तु को जल मे घोलकर बनाया हुआ मिश्रण। जैसे—अफीम या भाँग का घोला।

मुहा०—घोले में डालना=(क) रोक या फँसा रखना। उलझन मे डाल रखना। (ख) किसी काम मे टाल-मटोल करना। **घोले मे पडना**= झझट या बखेडे मे पडना। ऐसे काम मे फँसना जो जल्दी पूरा न हो।

२ वह नाली जिससे खेत सीचने के लिए पानी ले जाते हैं। बरहा।

घोलुआ (लुवा)†—वि० [हिं० घोलना+उवा (प्रत्य०)] घोला हुआ। जो घोल कर बनाया गया हो।

पु० १ सब्जी, मास आदि का रसा या शोरबा। २. पीने की तरल ओषधि। ३. पानी मे कोई चीज (जैसे—अफीम, भाँग, सीमेंट) घोल कर बनाया हुआ मिश्रण। ४ मिट्टी का पुरवा।

घोष—पु० [स०√घुष् (स्तुति आदि)+घञ्] १ अहीरो की बस्ती। आभीर-पल्ली। २. अहीर। ३ गोशाला। ४ छोटी बस्ती। गाँव। ५ बगालियो की एक जाति। ६ शब्द। नाद। ७ जोर से की हुई पुकार। घोर शब्द। गर्जन। ८ किसी विशेष दल, पक्ष या सिद्धान्त की वह पुकार या पद जो जन-साधारण को अपनी ओर आकृष्ट

करने के लिए बनाया जाता है। नारा। (स्लोगान) ९. व्याकरण मे शब्दो के उच्चारण मे होनेवाला एक प्रकार का बाह्य प्रयत्न। ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व और ह का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है। १०. ईशान कोण का एक प्राचीन देश। ११ ताल के ६० मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)

घोषक—पु० [स०√घुष्+ण्वुल्—अक] घोषणा करनेवाला अधिकारी या कर्मचारी।
वि० घोष करनेवाला।

घोषण—पु० [स०√घुष्+ल्युट्—अन] घोषणा करने की क्रिया या भाव।

घोषणा—स्त्री० [स०√घुष् +णिच्+युच्—अन, टाप्] १. जन-साधारण को सुनाकर जोर से कही जानेवाली बात। २. सार्वजनिक रूप से निकली हुई राजाज्ञा। (प्रोक्लेमेशन) ३. मुनादी। डुग्गी।

घोषणा पत्र—पु० [प०त०] १ वह पत्र जिस पर कोई राजाज्ञा लिखी हो। २ वह पत्र जिस पर कोई व्यक्ति किसी बात की सत्यता घोषित करता हो। (प्रोक्लेमेशन)

घोषलता—स्त्री० [स० कर्म० स०] कडुई तोरई।

घोषवत्—वि० [स० घोष+मतुप्, व आदेश] (शब्द) जिसमे घोष प्रयत्न-वाले अक्षर अधिक हो।

घोषवती—स्त्री०[स० घोषवत्+ङीप्] वीणा।

घोषा—स्त्री०[स० घोष+टाप्] सौंफ।

घोषाल—पु०[स० घोष] बगाली ब्राह्मणो की एक जाति।

घोसना*—स्त्री०=घोषणा।
स० घोषणा करना।

घोसी—पु० [स० घोष] अहीर या ग्वाला (विशेषतः मुसलमान)।

घौर (ा) —पु०=घौद।

घौद—पु० [देश०] फलों का बडा गुच्छा। गौद। जैसे—केले का घौद।

घौर (ा) —पु०=घौद।

घौरी—स्त्री० [फा० घूरी] १. कूड़े-कचरे की ढेरी। २ राशि। ढेर। ३ घौदा। उदा०—काहै गही केस की घौरी।—जायसी।

घौह (ा)—पु०[हि० घाव] अमरूद, आम आदि का वह फल जिसमें दाग पड़ गया हो। चुटैल फल।

घ्न —वि० [स० पूर्वपद के साथ] नष्ट करनेवाला (यौ० शब्दो के अत मे) जैसे—कृमिघ्न, पापघ्न।

घ्यूँट†—पु०=घूँट।

घ्यूँटना†—स०=घूँटना।

घ्राण—स्त्री० [सं०√घ्रा (सूंघना)+ल्युट्—अन] [वि० घ्रेय] १ सूंघने की इन्द्रिय। नाक। २ सूंघने की शक्ति। ३. सुगध।

घ्राणेन्द्रिय—स्त्री०[घ्राण-इन्द्रिय, ष० त०] सूंघने की इन्द्रिय अर्थात् नाक।

घ्रात—भू० कृ० [स०√घ्रा+क्त] सूंघा हुआ।

घ्रातव्य—वि०[स०√घ्रा+तव्यत्] सूंघे जाने के योग्य।

घ्राता (तृ)—वि०[स०√घ्रा+तृच्] सूंघनेवाला।

घ्राति—स्त्री० [स०√घ्रा+क्तिन्] सूंघने की क्रिया या भाव।

घ्रेय—वि० [स०√घ्रा+यत्] सूंघे जाने के योग्य। जो सूंघा जा सके।

ङ

ङ—व्यजन वर्ण का पाँचवाँ और क-वर्ग का अन्तिम अक्षर या वर्ण। यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारण-स्थान कठ और नासिका है। इसमे सवार, नाद, घोष और अल्पप्राण नामक प्रयत्न लगते हैं।

च

च—हिन्दी वर्ण- माला का छठा व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्शसघर्षी, अल्पप्राण और अघोष माना गया है।

चंक—वि०[सं० चक्र] १. पूरा-पूरा। २ समूचा। सारा। समस्त।
पुं० उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के किसानों का एक उत्सव जो फसल कटने पर होता है।

चंकवर—पु० दे० 'चकवँड'।

चंकुर—पु० [स०√चक् (घूमना)+उरच्] १ रथ। यान। २ पेड। वृक्ष।

चंक्रमण—पु०[स० √क्रम् (गति) +यङ्, द्वित्वादि, +ल्युट्—अन] [वि० चक्रमित]१ धीरे-धीरे टहलना। घूमना। सैर करना। २ बहुत अधिक या बार-बार घूमना। ३ घूमने, चलने या सैर करने का स्थान। (बौद्ध)

चंग—वि० [स०√चक् (तृप्त होना)+अच्, नि० सिद्धि] १. दक्ष। कुशल। २. स्वस्थ। तदुरुस्त। ३ सुन्दर।
स्त्री०[फा०] १ डफ की तरह का एक प्रकार का बाजा। २. बडी गुड्डी। पतग।
मुहा०—(किसी की) चंग उमहना या चढ़ना=(क) किसी बात की अधिकता या जोर होना। (ख) किसी व्यक्ति का प्रताप या वैभव बढा हुआ होना। (ग) किसी व्यक्ति की इच्छा पूरी करनेवाली बात होना या ऐसी बात का अच्छा अवसर मिलना। उदा०—त्यो पद्माकर दीन्ह मिलाइ कौ चग चबाइन की उमही है।—पद्माकर। (किसी को) चग पर चढ़ाना=कोई काम करने के लिए किसी को बहुत अधिक बढावा देना। मिजाज या हौसला बढाना।
३ बीन, सितार आदि बाजो का ऊँचा या चढा हुआ स्वर। ४. गजीफे के आठ रगो मे से एक। ५. तिब्बत मे होनेवाला एक प्रकार का जौ। ६. भूटान मे बननेवाली एक प्रकार के जौ की शराब।

चंगना—स०[फा० चग या तग] १ कसना। खीचना। २ तग या परेशान करना।

चगबाई—स्त्री० [हिं० चग+बाई] एक वात रोग जिसमे हाथ, पैर आदि जकड जाते है।

चगला—स्त्री० [स०?] एक रागिनी जो मेघराग की पुत्रवधू कही गयी है।

चंगा—वि० [स० प्रा० चग, व० चाना, कन्न०चागु, प० चगा, सि० चगी, गु० चाँगी, मरा० चाग, चागले] [स्त्री० चगी] १ तदुरुस्त। नीरोग। स्वस्थ। जैसे—रोगी को चगा करना। २ अच्छा। उत्तम। बढिया या श्रेष्ठ। जैसे—चगा खेल, चगा विचार। ३. निर्विकार और पवित्र। शुद्ध। जैसे—मन चगा तो कठौती मे गगा। (कहा०)

अव्य० [प०] अच्छा।

चगु—पु० [हिं० चौ=चार+अगु] १ चगुल। (दे०) २ पकड रखने की क्रिया या भाव। पकड। ३ अधिकार। वश।

चंगुल—पु०[हिं० चौ=चार+अगुल वा फा० चगाल] १ पक्षियो (जैसे —कौआ, चील आदि) तथा पशुओ (जैसे— चीते, शेर आदि) का टेढा पजा जिससे वे किसी पर प्रहार करते अथवा कोई चीज पकडते है। २ हाथ की उँगलियो को हथेली की ओर कुछ झुकाने पर बननेवाली एक विशिष्ट मुद्रा जो कोई चीज पकडने के समय स्वभावत बन जाती है। जैसे—एक चगुल आटा उठा लाओ। ३ किसी व्यक्ति के प्रभाव अथवा वश मे होने की वह स्थिति जिसमे से निकलना सहज न हो।

मुहा०—(किसी के) चंगुल में फँसना =पूरी तरह से किसी के अधिकार या वश मे पडना या होना।

चँगेर—स्त्री०[स० चगेरिका] १ बाँस की खमाचियो की बनी हुई छोटी डलिया जिसमे फल, फूल, मिठाइयाँ आदि रखते है। २. धातु आदि का बना हुआ उक्त प्रकार का पात्र। ३ पानी भरने की चमडे की मशक। पखाल। ४. पालने की तरह की वह टोकरी जिसमे बच्चे लेटाकर झुलाये और सुलाये जाते है।

चँगेरा—पु० [स्त्री० चँगेरी] बडी चँगेर।

चगेरिक—पु० [स०?] [स्त्री० चगेरिका ?] बडी चँगेर। टोकरा। डला।

चँगेरी†—स्त्री०=चँगेर।

चँगेल—स्त्री० [देश०] खँडहरो आदि मे होनेवाली एक प्रकार की घास।

†स्त्री०=चँगेर।

चंगेली—स्त्री०=चँगेर।

चंच—पु०[स० √चच् (हिलना-डुलना)+अच्] पाँच अगुल की एक नाप।

†पु०=चंचु।

चंचत्पुट—पु०[स०√चच्+शतृ, चचत्-पुट, ब०स०] सगीत मे, एक ताल जिसमे पहले दो गुरु, तब एक लघु, फिर एक प्लुत मात्रा होती है।

चँचरी—स्त्री०[देश०] १ पत्थर के ऊपर से होकर बहनेवाला पानी। २ एक प्रकार की चिडिया जो जमीन पर घास के नीचे घोसला बनाती है। ३ अनाज का वह दाना जो कूटने-पीटने पर भी बाल मे लगा रह जाता है। कोमी। भूडरी।

चंचरी—स्त्री०[स०√चर् (गति)+यङ्-लुक्, द्वित्वादि,+टक्-ङीप्] १. भौरी। भ्रमरी। २ चार चरणो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, सगण, दो जगण, भगण और तब फिर रगण होता है। ३ छियालिस मात्राओवाला एक प्रकार का छद। ४ चाँचर नामक गीत।

चंचरीक—पु० [स० √चर्+ईकन्, नि० सिद्धि] [स्त्री० चचरीकी] भौरा। भ्रमर।

चंचरीकावली—स्त्री० [स० चचरीक-आवली, ष० त०] १ भौरो की अवली, पक्ति या समूह। २ तेरह अक्षरो के एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश यगण, मगण, दो रगण और एक गुरु होता है।

चंचल—वि० [स० √चच् (चलना)+अलच्] [स्त्री० चचला, भाव० चचलता] १ जो एक स्थान पर खडा, स्थित या स्थिर न रहकर बराबर इधर-उधर आता-जाता, चलता-फिरता अथवा हिलता-डुलता रहता हो। जैसे—चचल दृग, चचल पवन। २ जिसमे स्थायित्व न हो। ३ (व्यक्ति) जो एक न एक काम, बात आदि मे स्वभावत फँसा या लगा रहता हो। चुलबुला। ४ जो स्थिरचित्त अथवा एकाग्र होकर कोई काम न करता हो। जैसे—चचल बालक। ५ नटखट। शरारती। ६ जो शात न हो। उद्विग्न। विकल। जैसे—चचल हृदय।

पु० १ वायु। हवा। २. उपद्रवी, कामुक या रसिक व्यक्ति।

चंचलता—स्त्री० [स० चचल+तल्—टाप्] १ चचल होने की अवस्था या भाव। अस्थिरता। २ चपलता। ३ पाजीपन। शरारत। ४ उद्विग्नता।

चंचलताई*—स्त्री०=चचलता।

चचला—स्त्री० [स० चचल+टाप्] १ लक्ष्मी। २ बिजली। विद्युत्। ३ पिप्पली। ४. चार चरणो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, जगण, रगण, जगण, रगण और लघु होता है।

चचलाई*—स्त्री० = चचलता।

चचलास्य—पु० [चचल-आस्य, ब० स०] एक प्रकार का गध-द्रव्य।

चंचलाहट—स्त्री० = चचलता।

चचली—स्त्री०[स० चचरी, रस्य ल] चचरी नामक वर्णवृत्त का दूसरा नाम।

चंचा—स्त्री० [स० चच+टाप्] १ घास-फूस का पुतला जो खेतो मे पक्षियो आदि को डराने के लिए लगाया जाता है। २ बाँस, बेत आदि की बनी हुई चटाई, टोकरी आदि।

चचा-पुरुष—पु० [कर्म० स०] दे० 'चचा' १।

चंचु—पु० [स० √चच्+उन्] १ चेच नाम का साग। २ रेड का पेड। ३. हिरन।

स्त्री० १ पक्षियो की चोच। २ किसी चीज के आगे का नुकीला भाग। (बीक)

चंचुका—स्त्री० [स० चचु+कन्-टाप्] चोच।

चचु-पत्र—पु० [ब० स०] चेच नाम का साग।

चंचु-पुट—स्त्री० [ष० त०] पक्षियो की चोच।

चंचु-प्रवेश—पु० [ष० त०] किसी चीज या बात मे होनेवाला बहुत थोडा ज्ञान, प्रवेश या सम्पर्क।

चंचुभृत्—पु० [स०चचु √भृ (भरना) + क्विप्, उप० स०] चिडिया। पक्षी।

चचुमात् (मत)—पु० [स० चचु+मतुप्] पक्षी।

चचुर—वि० [स०√चच्+उरच्] दक्ष। निपुण।

पु० चेच नाम का साग।

चचुल—पु० [स० चचुर, र को ल] हरिवंश के अनुसार विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

चचू—स्त्री० [स० चचु+ऊङ्] चोंच।

चचू-सूची—पु०[ब० स०] हंस की जाति का एक पक्षी। बत्तख। कारंडव।

चँचोरना—स० = चिचोड़ना।

चट—वि० [स० चड] चालाकी अथवा धूर्तता से अपना काम निकाल लेनेवाला। बहुत बड़ा चालाक या धूर्त।

चंड—वि० [स० √चड् (कोप करना) + अच्] [स्त्री० चंडा] १. बहुत अधिक तेज या प्रखर। बहुत उग्र या तीव्र। २. प्रबल। बलवान्। ३. बहुत कठिन। विकट। ४ उग्र, उद्धत या क्रोधी स्वभाववाला।

पु० १ ताप। गरमी। २ क्रोध। गुस्सा। ३ शिव। ४ कार्तिकेय। ५ यम का एक दूत। ६ एक दैत्य जो दुर्गा के हाथों से मारा गया था। ७ शिव का एक गण। ८ एक भैरव का नाम। ९. विष्णु का एक पारिषद। १० इमली का पेड। ११ राम की सेना का एक बंदर। १२ कुबेर के आठ पुत्रो मे से एक जो शिवपूजन के लिए गूँथकर फूल लाया था और इसी पर पिता के शाप से जन्मातर मे कस का भाई हुआ था और कृष्ण के हाथ से मारा गया था।

चंडकर—पु० [ब० स०] सूर्य।

चंडकौशिक—पु०[कर्म० स०] १ एक मुनि का नाम। २ राजा हरिश्चद्र के चरित्र से सबध रखनेवाला एक प्रसिद्ध नाटक। ३ वह साँप जिसने महावीर स्वामी के दर्शन करके दूसरो को काटना छोड दिया था। (जैन)

चंडता—स्त्री० [स० चंड+तल्—टाप्] चंड होने की अवस्था या भाव।

चंडत्व—पु० [स० चंड+त्व] =चंडता।

चंड-दीधिति—पु० [ब० स०] सूर्य।

चंड-नायिका—स्त्री० [कर्म० स०] १ दुर्गा। २. तांत्रिको की आठ नायिकाओं मे से एक जो दुर्गा की सखी कही गई है।

चंड-भार्गव—पु० [कर्म० स०] च्यवन वंशी एक ऋषि जो महाराज जनमेजय के सर्प-यज्ञ के होता हुए थे।

चंड-मुंड—पु० [द्व० स०] चड और मुड नाम के दो राक्षस जो दुर्गा के हाथो मारे गये थे।

चंड-मुंडा—स्त्री० [स० चडमुंड+अच्—टाप्] चामुंडा देवी।

चंडमुंडी—स्त्री० [स० चंडमुंड+अच्—ङीप्] तांत्रिको की एक देवी।

चंड-रसा—स्त्री० [ब० स०, टाप्]एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण और एक यगण होता है। इसी को चौवंसा, शशिवदना और पादाकुलक भी कहते हैं।

चंड रुद्रिका—स्त्री० [कर्म० स०] तंत्र मे एक प्रकार की सिद्धि जो अष्ट नायिकाओ के पूजन से प्राप्त होती है।

चंडवती—स्त्री० [स० चड+मतुप्—म =व—ङीप्] १ दुर्गा। २ तांत्रिको की आठ नायिकाओं मे से एक।

चंड-वात—पु० [कर्म० स०] कुछ अधिक तेज चलनेवाली वह आँधी जिसके बीच-बीच मे कुछ वर्षा भी होती है। तूफान। (टाइफून)

चंड-वृष्टि-प्रयात—पु० [चंड-वृष्टि, कर्म० स०, चंडवृष्टि-प्रयात, ष० त०] एक प्रकार का दडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण (।।।) और सात रगण (ऽ।ऽ) होते है।

चंडांशु—पु० [चंड अंशु ब० स०] सूर्य।

चंडा—स्त्री०[स० चंड+टाप्] १. उग्र स्वभाववाली स्त्री। २ तांत्रिकों की आठ नायिकाओं मे से एक। ३ कौंछ। सोआ। ४ चोर नामक गंध द्रव्य। ५. सफेद दूब। ६. सौंफ। ७. सोआ नाम का साग। ८. एक प्राचीन नदी।

चंडाई—स्त्री० [स० चंड+हि० आई] १ चंडता। २ शीघ्रता। जल्दी। ३ उतावली। ४. प्रबलता। तेजी। ५ अत्याचार। उपद्रव।

चंडात—पु० [स० चंड √अत्(गति)+अण्, उप० स०] एक प्रकार की सुगंधित घास।

चंडातक—पु० [स० √अत्—ण्वुल्—अक, चंड-आतक, ष० त०] एक प्रकार की छोटी कुरती या चोली।

चंडाल—वि० [सं० √चंड् (कोप) +आलच्] [स्त्री० चडालिन, चंडालिनी] =चांडाल।

वि० बहुत ही निकृष्ट तथा नृशंस कर्म करनेवाला।

पु० १. एक बहुत निकृष्ट या निम्न जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता तथा ब्राह्मणी माता से मानी जाती है। २ उक्त जाति का पुरुष।

चंडाल-कंद—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का कद जो रक्त-पित्त-नाशक तथा रक्त-शोधक माना जाता है।

चंडालता—स्त्री० [स० चंडाल+तल्—टाप्] चंडाल या चांडाल होने की अवस्था, गुण या भाव।

चंडालत्व—पु० [स० चडाल+त्व] =चंडालता।

चंडाल-पक्षी (शकुन)—पु० [कर्म० स०] कौआ।

चंडाल-बाल—पु० [हि० चंडाल+बाल] कुछ लोगों के माथे पर उगनेवाला वह बड़ा और मोटा बाल जो अशुभ फलदायक माना जाता है।

चंडाल-वल्लकी—स्त्री० = चंडाल-वीणा।

चंडाल-वीणा—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार का सितारा या तँबूरा।

चंडालिका—स्त्री० [स० चडाल+ठन्—इक, टाप्] १ दुर्गा। २ चंडाल-वीणा। ३. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ दवा के काम आती है।

चंडालिनी—पु० [स० चडाल+इनि—ङीप्] १. चंडाल वर्ण की स्त्री। २ बहुत ही दुष्ट और निकृष्ट स्वभाववाली स्त्री। ३ वह दोहा जिसके आरभ मे जगण पड़ा हो। (अशुभ)

चंडावल—पु० [हि० चंड + अवलि] १ सेना के पीछे का भाग। पीछे रहनेवाले सिपाही। 'हरावल' का विपर्याय। २ बहुत बड़ा योद्धा या वीर। ३. पहरेदार। संतरी।

चँडासा—पु० [हि० चांड़ = जल्दी +आसा (प्रत्य०)] किसी काम के लिए मचाई जानेवाली जल्दी।

मुहा०—चँडासा चढ़ाना = (क) बहुत जल्दी मचाना। (ख) कोई ऐसा काम या युक्ति करना जिससे किसी को विवश होकर कोई काम जल्दी करना पडे।

चंडाह—पु० [देश०] गाडे की तरह का एक मोटा कपड़ा।

चंडि—स्त्री० [स० √चड्+ इन्] = चंडिका।

चंडिक—वि० [सं० चड + ठन्—इक] [स्त्री० चंडिका] १ कर्कश स्वभाववाला और दुष्ट। २ जिसके लिंग के आगे का चमड़ा कटा हो। जिसका खतना हुआ हो।

चंडिक-घंट—पु० [चंडिका-घंटा, ब० स०] शिव।

चडिका—स्त्री० [स० चडिक+टाप्] १ दुर्गा का एक रूप। २ बहुत कर्कशा और दुष्ट स्त्री। ३ गायत्री देवी।
वि० कर्कशा, दुष्टा और लडाकी।

चंडिमा (मन्)—स्त्री० [स० चड +इमनिच्] १ गरमी। ताप। २ उग्रता। तीव्रता। ३ क्रोध। गुस्सा। ४ निष्ठुरता। ५ आवेश। जोश।

चंडिल—पु० [स० √चड् +इलच्] १ रुद्र। २ बथुआ नामक साग। ३ नापित। हज्जाम।

चडी—स्त्री० [स० चड +ङीष्] १ दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने महिषासुर के वध के लिए धारण किया था। २ बहुत ही उग्र स्वभाववाली, कर्कशा और दुष्टा स्त्री। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश दो नगण, दो सगण और एक गुरु होता है।

चडी-कुसुम—पु० [ब० स०] १ कनेर का वह पौधा जिसमे लाल रग के फूल लगते हो। २ [मध्य० स०] उक्त प्रकार का फूल।

चंडी-पति—पु० [प० त०] शिव।

चंडीश—पु० [चडी-ईश, प० त०] शिव।

चंडीसुर—पु० [स० चडीश्वर] एक प्राचीन तीर्थ-स्थल।

चंडु—पु० [स० √चड् +उन्] १ चूहा। २ छोटा बदर।

चंडू—पु० [स० चड =तीक्ष्ण से ?] अफीम मे बनाया हुआ एक प्रकार का अवलेह जो नशे के लिए तमाकू की तरह पीया जाता है।

चंडूखाना—पु० [हिं० चडू +खाना] वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर चंडू पीते है।
पद—**चंडूखाने की गप**=बिलकुल झूठी और बे-सिर-पैर की खबर या गप।

चंडूबाज—पु० [हिं० चडू +फा० बाज (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो प्राय चडू पीता हो।

चंडूल—पु० [देश०] १ मधुर स्वरवाली खाकी रग की एक चिडिया जो झाडियो, पेडो आदि मे सुदर घोसला बनाकर रहती है। २ बहुत बडा बेवकूफ या भद्दा आदमी।

चंडेश्वर—पु० [चड-ईश्वर, कर्म० स०] शिव का एक रूप।

चंडोग्रा—स्त्री० [चडा-उग्रा, कर्म० स०] दुर्गा का एक रूप या शक्ति।

चडोदरी—स्त्री० [चड-उदर, ब० स० ङीष्] एक राक्षसी जिसे रावण ने सीता को समझाने के लिए नियत किया था।

चंडोल—पु० [स० चन्द्र-दोल] १. हाथी के हौदे की तरह की एक प्रकार की पालकी जिसे चार आदमी उठाते है। २ मिट्टी का एक प्रकार का खिलौना। चौघडा।

चंद—पु० [स० √चद (आह्लादित करना) + णिच् +अच्] १ चद्रमा। २ कपूर। ३. पिंगल मे रगण का दसवाँ भेद जिसमे दो लघु, एक दीर्घ और तब फिर दो लघु वर्ण होते हैं। (।।ऽ।।)। जैसे—पुतली-घर। ४ लाहौर के रहनेवाले हिंदी के एक बहुत प्राचीन कवि जो दिल्ली के अतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की सभा मे थे। इनका बनाया हुआ पृथ्वी राज रासो बहुत प्रसिद्ध महाकाव्य है। चदवरदाई।
वि० [फा०] १ गिनती मे थोडा। कुछ। २ कई। जैसे—चद आदमी आने को है।

चंदक—पु० [स० √चद् +णिच् + ण्वुल्-अक] १ चद्रमा। २ चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३ चाँद या चाँदा नाम की छोटी मछली। ४ सिर पर पहना जानेवाला एक अर्द्धचद्राकार गहना। ५. उक्त गहने के आकार की कोई रचना जो मालाओ आदि के नीचे शोभा के लिए लगाई जाती है। ६ एक प्रकार की मछली।

चंदक-पुष्प—पु० [मध्य० स०] १. लौंग। लवंग। २. [प० त०] चद्रकला।

चंदण—पु० = चदन।

चंद-धर—पु० [स० प० त० ?] ध्रुपद राग का एक भेद।

चंदन—पु० [स० √चद् +णिच् +ल्युट्—अन] १. दक्षिण भारत मे उगनेवाला एक प्रसिद्ध पेड जिसके हीर की लकडी बहुत सुगंधित होती है। गधसार। मलयज। श्रीखड। २ उक्त वृक्ष की लकड़ी। ३ उक्त लकडी को जल मे घिस या रगडकर बनाया हुआ गाढा घोल या लेप जिसका टीका आदि लगाया जाता है।
मुहा०—**चंदन उतारना**=पानी के साथ चदन की लकडी को घिसना जिसमे उसका अश पानी मे घुल जाय। **चंदन चढ़ाना** = किसी चीज पर घिसे हुए चदन का लेप करना।
४ गध-प्रसारिणी लता। ५. छप्पय छद के तेरहवें भेद का नाम। ६ एक प्रकार का बडा तोता जो उत्तरीय भारत, मध्य भारत, हिमालय की तराई, काँगडा आदि मे होता है।
वि० १ बहुत ही शीतल और सुगधित। २ उत्कृष्ट। उदा०—चदन तेज त्यों चदन की रति . । भूषण।

चंदन-गिरि—पु० [प० त०] मलय पर्वत।

चदन-गोह—स्त्री० [हिं० चदन +गोह] १. चदन के पेड पर रहनेवाली एक प्रकार की गोह। २ छोटी गोह।

चंदन-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] चदन से लेपी हुई वह गौ जो सौभाग्यवती स्वर्गीया माता के उद्देश्य से (वृषोत्सर्ग की तरह) खुली छोड दी जाती है।

चंदन-पुष्प—पु० [प० त०] १. चदन का फूल। २ [ब० स०] लौंग। लवंग।

चदन-यात्रा—स्त्री० [ब० स०] वैशाख सुदी तीज। अक्षय तृतीया।

चंदनवती—वि० स्त्री० [स० चदन +मतुप्, वत्व, ङीप्] केरल देश की भूमि जहाँ चदन के वृक्ष अधिकता मे होते हैं।

चंदन-शारिवा—स्त्री० [उपमि० स०] एक प्रकार की शारिवा या अनतमूल की लता जिसमे चदन की-सी सुगध होती है।

चंदन-सार—पु० [प० त०] १ पानी के साथ घिसकर तैयार किया हुआ चदन। २. [ब० स०] वज्रक्षार। ३ नौसादर।

चंदनहार—पु० = चद्रहार।

चंदना—स्त्री० [स० चदन +अच्—टाप्] =चदन-शारिवा।
स० [स० चदन] शरीर मे चदन पोतना या लगाना।
†पु० = चद्रमा।

चंदनादि—पु० [चदन-आदि, ब स०] वैद्यक मे चदन, खस, कपूर, बकुची, इलायची आदि पित्तशामक दवाओ का एक वर्ग।

चदनादि-तैल—पु० [प० त०] वैद्यक मे लाल-चदन के योग से बननेवाला एक प्रसिद्ध तैल जो अनेक रोगो मे शरीर पर मला जाता है।

चंदनी—वि० [हिं० चदन +ई (प्रत्य०)] १ चंदन-सबधी। चदन का।

२ जिसमें चंदन की सुगंध हो। ३ चंदन की लकड़ी के रंग का। कुछ लाली लिये हुए भूरा।

स्त्री० [सं० चन्दन+ङीप्] रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी।

पुं० शिव।

†स्त्री० = चाँदनी।

चंदनीया—स्त्री० [सं० √चद्+अनीयर्+टाप्] गोरोचन।

चँदनौटा†—पुं० [हिं० चंदन+औटा (प्रत्य०)] १. वह चकला जिस पर चंदन घिसा जाता है। २ एक प्रकार का लहँगा। उदा०—चंदनौटा खीरोदक फारी।—जायसी।

चँदनौता—पुं०=चँदनौटा।

चंदबान—पुं० [सं० चंद्रबाण] एक प्रकार का बाण जिसके सिरे पर अर्द्धचंद्राकार लोहे की गाँसी या फल लगा रहता था और जिससे शत्रुओं का सिर काटा जाता था।

चँदराना†—अ० [सं० चंद्रमा] १. पागल या विक्षिप्त होना जो चंद्रमा का प्रभाव माना जाता है। २ जान-बूझकर अनजान बनना।

स० १. (किसी को) झूठा, पागल या मूर्ख बनाना। २. चकमा या धोखा देना।

चँदला—वि० [हिं० चाँद=खोपड़ी] जिसकी चाँद के बाल झड़ या झड़ गये हों। गंजा। गंजा।

चँदवा—पुं० [सं० चन्द्रक] १ एक प्रकार का छोटा मंडप जो राजाओं के सिंहासन या गद्दी के ऊपर चाँदी, सोने आदि की चार चोबों के सहारे ताना जाता है। चँदोवा। वितान। चंदरछत। २. छाया आदि के लिए ताना जानेवाला लंबा-चौड़ा कपड़ा। ३ किसी चीज के ऊपरी भाग में लगाया जानेवाला कोई गोल या चौकोर टुकड़ा। ४ मोर की पूँछ पर की चंद्रिका। ५ एक प्रकार की मछली। चाँदा। ६ तालाब में का वह गहरा गड्ढा जिसमें मछलियाँ फँसाकर पकड़ी जाती हैं।

चंदसिरा—स्त्री० [सं० चंद्र-श्री] एक प्रकार का बड़ा गहना जो हाथी के मस्तक पर बाँधा या पहनाया जाता है।

चंदा—पुं० [सं० चन्द्र] चंद्रमा। जैसे—चंदा मामा दौड़ि आ। दूध भरी कटोरिया।

पुं० [फा० चंद] १ किसी परोपकारी अथवा सार्वजनिक कार्य के लिए दी या माँगी जानेवाली व्यक्तिगत आर्थिक सहायता। जैसे—मंत्री जी ने अनाथालय के निर्माण के लिए सभी भाइयों से चंदा देने की अपील की है। २ वह नियत धन जो किसी अवधि के लिए किसी संस्था को उसके सदस्य आदि बने रहने अथवा किसी पत्र-पत्रिका के ग्राहक बने रहने के लिए देना पड़ता है। जैसे—इस पत्रिका का वार्षिक चंदा ५) है। (सब्स्क्रिप्शन, उक्त दोनों अर्थों में) ३ किसी प्रकार का बीमा कराने पर उसके लिए समय समय पर दिया जानेवाला धन। (प्रीमियम)

चंदामामा—पुं० [हिं० चंदा=चाँद+मामा] बच्चों को बहलाने का एक प्रिय पद जो उनके लिए चंद्रमा का वाचक होता है।

चंदावत—पुं० [सं० चन्द्र] क्षत्रियों की एक जाति।

चंदावती—स्त्री० [सं० चंद्रवती] संगीत में एक रागिनी जो श्रीराग की सहचरी कही गई है।

चंदावल—पुं० [फा०] वे सैनिक जो सेना के पीछे रक्षा के लिए चलते हैं। चंडावल। 'हरावल' का विपर्याय।

चंदिका—स्त्री० = चंद्रिका।

चंदिनि, चंदनी†—स्त्री० [सं० चंद्रिका] १ चाँदनी। चंद्रिका। २ बिछाने की चाँदनी।

चँदिया—स्त्री० [हिं० चाँद का अल्पा०] १ सिर का मध्यभाग। खोपड़ी। चाँद।

मुहा०—चँदिया पर बाल तक न छोड़ना = (क) सिर पर जूते, थप्पड़ आदि मार-मारकर सिर गंजा कर देना। (ख) सर्वस्व छीन या लूट लेना। चँदिया मूड़ना =चँदिया पर बाल तक न छोड़ना।

२ वह छोटी रोटी जो सब से अंत में बचे हुए आटे और पलेथन से बनाई जाती है। ३. तालाब के नीचे का गहरा गड्ढा। ४. चाँदी की छोटी टिकिया।

चंदिर—पुं० [सं० √चंद्+किरच्] १ चंद्रमा। २ हाथी। ३ पूरक।

चंदिरा—स्त्री० [सं० चंद्रिका] चंद्रमा का प्रकाश। ज्योत्स्ना। चाँदनी। उदा०—सरद चंदिरा उनए न्हाँ धीरे धरनी पर।—रत्न।

चंदे—अ०य०[फा०] १. थोड़े से। कुछ। २. थोड़ी देर तक।

चँदेरी—स्त्री० [सं० चेदि या हिं० चंदेल] राजस्थान के अंतर्गत एक प्राचीन नगरी जो शिशुपाल की राजधानी थी।

चँदेरीपति—पुं० [हिं० चँदेरी+सं० पति] चँदेरी का राजा, शिशुपाल।

चंदेल—पुं०[सं० चेदि से] [स्त्री० चंदेलिन] क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।

चंदेवरी—स्त्री०=चँदेरी। उदा०—प्रोहित चंदेवरी पुरी।—प्रिथीराज।

चँदोआ†—पुं० =चँदवा।

चँदोवा†—पुं० = चँदवा।

चंद्र—पुं० [सं० √चंद्+रक्] १ चंद्रमा। २ जल। पानी। ३ कपूर। ४. सोना। स्वर्ण। ५ रोचनी नाम का पौधा। ६ पुराणानुसार १८. उपद्वीपों में से एक। ७ लाल रंग का मोती। ८ हीरा। ९ मृगशिरा नक्षत्र। १०. नेपाल का एक पर्वत। ११ मोर की पूँछ की चंद्रिका। १२. सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जानेवाली बिंदी। १३ हठ योग में, (क) इड़ा नाड़ी। (ख) तालु-मूल में स्थित वह गाँठ जिसमें से अमृत या सोम नामक रस निकलता है। १४ रहस्य संप्रदाय में, ज्ञान।

स्त्री० चंद्रभागा में गिरनेवाली एक नदी।

वि० १. आनंददायक। २ सुंदर। ३ श्रेष्ठ।

चंद्रक—पुं०[सं० चंद्र+कन्] १. चंद्रमा। २. चंद्रमा की तरह का घेरा या मंडल। ३ चंद्रिका। चाँदनी। ४ मोर की पूँछ पर की चंद्रिका। ५ नाखून। नख। ६. कपूर। ७ सफेद मिर्च। ८. सहिजन। ९. जल। पानी। १० एक प्रकार की मछली। ११ एक राग जो मालकोस का पुत्र कहा गया है।

चंद्रकर—पुं०[ष० त०] १ चन्द्रमा की किरण। २ चाँदनी। चंद्रिका।

चंद्र-कला—स्त्री०[ष०त०] १ चंद्रमा की १६ कलाएँ या भाग जिनके नाम ये हैं—पूषा, यशा, सुमनसा, रति, प्राप्ति, धृति, ऋद्धि, सौम्या, मरीचि, अंशुमालिनी, अंगिरा, शशिनी, छाया, संपूर्णमंडला, तुष्टि और अमृता। २. उक्त कलाओं में से कोई एक या प्रत्येक। ३ चंद्रमा की किरण। ४ माथे पर पहनने का एक गहना। ५ एक प्रकार का छोटा ढोल। ६. एक प्रकार की मछली। बचा। ७ एक प्रकार का सवैया छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और एक गुरु होता है।

इसका दूसरा नाम सुन्दरी भी है। ८ सगीत मे एक प्रकार का सात-ताला ताल जिसमे तीन गुरु और तीन प्लुत के वाद एक लघु होता है। ९. मोर की पूँछ पर की चद्रिका। १० एक प्रकार की वगला मिठाई।

चंद्रकला-धर—पु०[प०त०] महादेव। शिव।

चंद्र-कांत—पु०[उपमि० स०] १. एक प्रकार की प्रसिद्ध कल्पित मणि जो लोक प्रवाद के अनुसार चद्रमा की किरणें पडने पर पसीजने लगती है। २ चंदन। ३. कुमुद। ४ एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है। ५ लक्ष्मण के पुत्र चद्रकेतु की राजधानी का नाम।

चद्र-कान्ता—स्त्री० [प०त०] १ चद्रमा की स्त्री। २ रात्रि। रात। ३ मल्ल प्रदेश की एक प्राचीन नगरी। ४ वे वर्ण-वृत्त जिनमे पन्द्रह अक्षर होते हो।

चन्द्र-कांति—स्त्री० [व०स०] १ चाँदी। रजत। २ [प० त०] चाँदनी। चद्रिका।

चंद्र-काम—पु० [मध्य० स०] तत्र मे वह मानसिक कष्ट या पीडा जो किसी पुरुष को उस समय होती है जब कोई स्त्री उसको वशीभूत करने के लिए मत्र-तत्र आदि का प्रयोग करती है।

चंद्रकी (किन्)—वि०[स० चद्रक+इनि] चद्रक से युक्त।
पुं० मयूर। मोर।

चंद्र-कुमार—पु०[प०त०] वुध ग्रह, जो चद्रमा का पुत्र माना जाता है।

चंद्र-कुल्या—स्त्री०[प० त०] कश्मीर की एक प्राचीन नदी।

चंद्र-कूट—पुं०[प०त०] कामरूप देश का एक पर्वत।

चंद्र-केतु—पु०[व०स०] लक्ष्मण का एक पुत्र, जिसे चद्रकात प्रदेश का राज्य मिला था।

चंद्र-क्रीड—पु०[व०स०] सगीत में एक प्रकार का ताल।

चंद्र-क्षय—पु०[प०त०] अमावास्या।

चंद्र-गिरि—पु०[प०त०] नैपाल का एक पर्वत जो काठमाडू के पास है।

चंद्र-गुप्त—पु०[तृ०त०] १. चित्रगुप्त। २ मगध देश का प्रथम मौर्यवंशी राजा जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र मे थी और जिसने यूनानी राजा सील्यूकस पर विजय प्राप्त करके उसकी कन्या व्याही थी। समुद्रगुप्त इसी का पुत्र था।

चंद्र-गृह—पु०[प०त०] कर्क राशि।

चंद्र-गोल—पु०[कर्म०स०] १ चद्र-मडल। २ चद्रलोक।

चंद्र-ग्रह—पु०=चद्रग्रहण।

चंद्र-ग्रहण—पु०[प०त०] १ चद्रमा की वह स्थिति जिसमे उसका कुछ या सारा विंव पृथ्वी की छाया पडने के कारण दिखाई नही देता। २ हठयोग की परिभाषा मे वह अवस्था जब प्राण इडा नाडी के द्वारा कुंडलिनी मे पहुँचते है।

चंद्र-चचल—पु०[उपमि०स०] खरसा या चद्रक नाम की मछली।

चंद्र-चित्र—पु०[प०त०] वाल्मीकि रामायण मे उल्लिखित एक देश।

चंद्र-चूड—पु०[व०स०] (मस्तक पर चद्रमा धारण करनेवाले) शिव। महादेव।

चंद्र-चूड़ामणि—पु०[व०स०] १ फलित ज्योतिष मे ग्रहो का एक योग। जब नवम स्थान का स्वामी केन्द्रस्थ हो तब यह योग होता है। २ महादेव।

चंद्रज—पु०[स० चद्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप०स०] वुध ग्रह, जो चद्रमा का पुत्र माना जाता है।

चंद्रजोत—स्त्री०[स० चद्रज्योति] १. ज्योत्स्ना। चाँदनी। २ एक प्रकार की आतिशवाजी।

चंद्र-ताल—पु०[मध्य०स०] एक प्रकार का वारहताला ताल जिसे परम भी कहते हैं। (सगीत)

चंद्र-दारा—स्त्री०[प० त०] चद्रमा की पत्नियाँ।
विशेष—आकाशस्थ २७ नक्षत्र ही जो दक्ष की कन्याएँ कही जाती है, चद्रमा की पत्नियाँ मानी गई है।

चंद्र-द्युति—स्त्री०[प० त०] १ चद्रमा का प्रकाश या किरण। चाँदनी। २. चदन वृक्ष की लकडी।

चंद्र-धनु (स्)—पुं०[मध्य० स०] रात के समय चद्रमा के प्रकाश मे दिखाई देनेवाला इद्रधनुष।

चंद्र-धर—वि०[प० त०] चद्रमा को धारण करनेवाला।
पु० महादेव।

चंद्र-पंचांग—पु०[मध्य०स०] वह पचाग जिसमे महीनो की तिथियो का आरभ चान्द्रमास के अनुसार अर्थात् प्रतिपदा से होता हो।

चंद्र-पर्णी—स्त्री०[व० स०, ङीष्] प्रसारिणी लता।

चंद्र-पाद—पु०[प० त०] चंद्रमा की किरणे।

चंद्र-पाषाण—पु०[मध्य०स०] चद्रकात मणि।

चंद्र-पुत्र—पु०[प०त०] वुध ग्रह, जो पुराणानुसार चद्रमा का पुत्र माना गया है।

चंद्र-पुष्पा—स्त्री०[व० स०, टाप्] १ चाँदनी। २ सफेद भटकटैया। ३ वकुची।

चंद्र-पुरी—स्त्री० [स० चद्र+देश० पूर] गरी के योग से वननेवाली एक प्रकार की वगला मिठाई।

चंद्र-प्रभ—वि०[व०स०] जिसमे चद्रमा की-सी प्रभा या ज्योति हो।
पु० १. जैनो के आठवें तीर्थंकर जो महासेन के पुत्र थे। २ तक्षशिला के एक प्राचीन राजा।

चंद्र-प्रभा—स्त्री०[प०त०] १. चद्रमा की प्रभा। चाँदनी। २ [व० स०] वकुची नामक ओषधि। ३ वैद्यक की एक प्रसिद्ध गुटिका जो अर्श, भगंदर आदि के रोगियो को दी जाती है।

चंद्र-प्रासाद—पु०[मध्य० स०] छत के ऊपर का वह कमरा जिसमे वैठकर लोग चाँदनी का आनद लेते हो।

चंद्र-बंधु—पु०[प०त०] १ चद्रमा का भाई शख (क्योकि चद्रमा के साथ वह भी समुद्र मे से निकला था)। २ [व०स०] कुमुद, जो चद्रमा के निकलने पर खिलता है।

चंद्र-वधूटी—स्त्री० =चद्रवधू।

चंद्र-वाण—पु०[मध्य०स०] पुरानी चाल का एक वाण जिसका फल अर्द्ध-चद्राकार होता था।

चंद्र-वाला—स्त्री०[प०त०] १ चद्रमा की पत्नी। २. चद्रमा की किरण। ३ वडी इलायची।

चंद्र-विंब—पु०[ष०त०] दिन के पहले पहर मे गाया जानेवाला सपूर्ण जाति का एक राग जो हिंडोल का पुत्र कहा गया है।

चंद्रबोड़ा—पु०[स० चद्र-वोड्र ?] एक प्रकार का अजगर।

चंद्र-भवन—पुं०[ष० त०] संगीत में एक प्रकार का राग।
चंद्र-भस्म—पुं०[उपमि०स०] कपूर।
चंद्र-भा—स्त्री० [ष०त०] १ चंद्रमा का प्रकाश। २. [ब०स०] सफेद भटकटैया।
चंद्र-भाग—पुं०[ष०त०] १ चंद्रमा की कला। २ चंद्रमा की सोलह कलाओं के आधार पर सोलह की संख्या। ३. [ब०स०] हिमालय पर्वत का वह भाग जिसमें से चन्द्रभागा या चनाब नदी निकलती है।
चंद्र-भागा—स्त्री०[सं० चंद्रभाग+अच्—टाप्] पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में बहनेवाली प्रसिद्ध चनाब नदी का पुराना नाम जो उसके चंद्रभाग नामक हिमालय के एक शिखर से निकलने के कारण पड़ा था।
चंद्र-भाट—पुं०[सं०चंद्र+हिं० भाट] शिव और काली के उपासकों का एक सम्प्रदाय।
चंद्रभानु—पुं०[सं०] श्रीकृष्ण की पटरानी सत्यभामा के १० पुत्रों में से सातवें पुत्र का नाम।
चंद्र-भाल—पुं०[ब०स०] वह जिसके मस्तक पर चंद्रमा हो, अर्थात् महादेव।
चंद्र-भास—पुं०[ब०स०] तलवार।
चंद्र-भूति—स्त्री०[ब०स०] चाँदी।
चंद्र-भूषण—पुं०[ब०स०] वह जिसका भूषण चंद्रमा हो, अर्थात् महादेव।
चंद्र-मंडल—पुं०[ष०त०] चंद्रमा का पूरा बिंब या मंडल।
चंद्र-मणि—पुं०[मध्य० स०] १ चंद्रकांत मणि। २ उल्लाला छंद का दूसरा नाम।
चंद्र-मल्लिका—स्त्री०[मध्य० स०] एक प्रकार की चमेली।
चंद्रमस्—पुं०[सं० चंद्र=आह्लाद√मि (मापना)+असुन्, म् आदेश] चंद्रमा।
चंद्रमा—पुं०[सं० चंद्रमस्] पृथ्वी का एक प्रसिद्ध उपग्रह जो पृथ्वी से २५३०००मील दूर है और जिसका व्यास २१६० मील है तथा जिसके कारण रात के समय पृथ्वी पर चाँदनी या प्रकाश होता है और जो एक चांद्र मास में पृथ्वी की एक परिक्रमा करता है। चाँद। विधु। शशि।
चंद्र-मात्रा—स्त्री० [ष०त० ?] तालों के १४ भेदों में से एक। (संगीत)
चंद्रमा-ललाट—पुं० [हिं० चंद्रमा+ललाट] शिव, जिनके ललाट पर चंद्रमा है।
चंद्रमा-ललाम—पुं०[हिं० चंद्रमा+ललाम=तिलक] महादेव।
चंद्र-माला—स्त्री०[ष०त०] १. २८ मात्राओं का एक छंद। २. चंद्रहार।
चंद्रमास—पुं०=चांद्रमास।
चंद्र-मुकुट—पुं०[ब०स०] शिव।
चंद्र-मुख—वि०[ब०स०] [स्त्री० चंद्रमुखी] चंद्रमा के समान सुन्दर मुखवाला।
चंद्र-मौलि—पुं०[ब०स०] शिव। महादेव।
चंद्र-रत्न—पुं०[मध्य० स०] मोती।
चंद्र-रेख (ा)—स्त्री०[ष०त०] १. चंद्रमा की कला। २. चंद्रमा की किरण। ३. द्वितीया का चंद्रमा। ४ बकुची। गठरी। ५ एक प्रकार का गहना। ६. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण और दो यगण होते हैं।
चंद्र-ललाम—पुं०[ब०स०] महादेव। शिव।
चंद्र-लेखा—स्त्री० =चंद्र-रेख।
चंद्र-लोक—पुं०[ष०त०] १ आकाश-मंडल का वह क्षेत्र जिसमें चंद्रमा रहता है। चंद्रमा का लोक २. चन्द्रमा में स्थित जगत् या संसार।
चंद्र-वंश—पुं०[ष०त०] क्षत्रियों का एक प्राचीन वंश जिसके आदि पुरुष राजा पुरूरवा थे।
चंद्रवंशी (शिन्)—वि०[सं०चंद्रवंश+इनि] १ चंद्रवंश-सम्बन्धी २ क्षत्रियों के चंद्रवंश में जन्म लेनेवाला।
चंद्र-वदन—वि० [ब०स०] [स्त्री० चंद्रवदनी] चंद्रमा के समान सुन्दर मुखवाला। परम सुन्दर।
चंद्र-वधू—स्त्री०[ष०त०] वीरबहूटी।
चंद्र-वर्त्म (न्)—पुं०[ष०त०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण भगण और सगण (ऽ।ऽ ।।। ऽ।। ।।ऽ) होते हैं।
चंद्र-वल्लरी—स्त्री०[ष०त०] सोम लता।
चंद्र-वल्ली—स्त्री०[ष०त०] १ सोम लता। २. माधवी लता। २ ३ प्रसारिणी नाम की लता।
चंद्रवा—पुं०=चँदवा।
चंद्र-वार—पुं०[ष०त०] सोमवार।
चंद्र-विंदु—पुं०[मध्य०स०] लिखने में अर्द्धचंद्राकार युक्त वह बिन्दु जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगता है। जैसे—'साँस' में के ऊपर का ँ।
चंद्र-वेष—पुं०[ब०स०] शिव। महादेव।
चंद्र-व्रत—पुं०[ष० त०]=चांद्रायण (व्रत)।
चंद्रशाला —स्त्री०[सं० चंद्र√शाल् (शोभित होना)+अच्—टाप्, उप० स०] १ चाँदनी। चंद्रिका। २ छत के ऊपर का वह कमरा जिसमें बैठकर लोग चाँदनी रात का आनन्द लेते हों।
चंद्रशालिका—स्त्री०[सं० चंद्रशाला+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व]=चंद्रशाला।
चंद्र-शिला—स्त्री०[मध्य०स०] चंद्रकांत मणि।
चंद्र-शूर—पुं०[स०त०?] हालों या हालम नाम का पौधा। चसुर।
चंद्र-शृंग—पुं०[ष०त०] द्वितीया के चंद्रमा के दोनों नुकीले छोर या भाग।
चंद्र-शेखर—पुं०[ब०स०] १ महादेव, जिनके मस्तक पर चंद्रमा है। २. एक पर्वत का नाम जो अराकान में है। ३ एक प्राचीन नगर। ४. संगीत में, एक प्रकार का सात-ताला ताल।
चंद्रस—पुं०[देश०] गंधा बिरोजा।
चंद्र-सुत—पुं०[ष०त०] बुध (ग्रह)।
चंद्र-हार—पुं०[मध्य०स०] एक प्रकार का गले का हार जिसमें अर्द्धचंद्राकार धातु के कई टुकड़े लगे रहते हैं और बीच में पूर्णचन्द्र के आकार का गोल टिकड़ा बना होता है।
चंद्र-हास—पुं०[ब०स०] १ खड्ग। तलवार। २. रावण की तलवार का नाम। ३. [ष०त०] चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी।
चंद्रहासा—स्त्री०[सं०चंद्रहास+टाप्] सोमलता।
चंद्रांकित—पुं०[चंद्र-अंकित, तृ०त०] महादेव। शिव। वि०चंद्रमा की आकृति से अंकित या युक्त।
चंद्रांशु—पुं०[चंद्र-अंशु, ष०त०] १चंद्रमा की किरण। २ [ब०स०] विष्णु।
चंद्रा—स्त्री०[सं० चंद्र+टाप्] १ छोटी इलायची। २. चँदोआ। ३ गुडूची। गुरुच।

स्त्री०[स० चद्र] मरने के समय से कुछ पहले की वह अवस्था जिसमे आँखो की टकटकी बँध जाती है, गला कफ से रुँध जाता है और वोला नही जाता।

चंद्रातप—पु०[चद्र-आतप, प०त०] १ चाँदनी। चंद्रिका। २ [चद्र-आ√तप्+अच्] चँदवा।

चंद्रात्मज—पु०[चद्र-आत्मज, प०त०] वुध ग्रह।

चंद्रानन—वि०[चद्र-आनन, व०स०] [स्त्री० चद्रानना] =चद्रवदन। पु०=कार्तिकेय।

चंद्रापीड़—पु० [चद्र-आपीड, व०स०] १ शिव। महादेव। २. कश्मीर का एक प्रसिद्ध धर्मात्मा राजा जो प्रतापादित्य का वडा पुत्र था और जो शकाव्द ६०४ मे सिंहासन पर बैठा था।

चद्रायण—पु०=चाद्रायण।

चद्रायतन—पु०[प० त०] चद्रशाला।

चंद्रार्क—पु०[चद्र-अर्क, द्व० स०] १ चद्रमा और सूर्य। २ चाँदी, ताँवे आदि के योग से वनी हुई एक मिश्र धातु।

चंद्रार्द्ध—पु० [चंद्र-अर्द्ध, प० त०] चंद्रमा का आधा भाग जो प्राय. द्वितीया के दिन दिखाई देनेवाले रूप का होता है। अर्धचंद्र।

चंद्रार्द्ध-चूड़ामणि—पु० [व० स०] महादेव। शिव।

चंद्रालोक—पु०[चद्र-आलोक, ष० त०] १. चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। चद्रिका। २ कविवर जयदेव कृत सस्कृत का एक प्रसिद्ध अलकार-ग्रथ।

चंद्रावती—स्त्री० [चंद्र-आवर्त, व०स० टाप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक पद मे ४ नगण पर एक सगण होता है और ८, ७ पर विराम। विराम न होने पर "शशिकला" (मणिगुणशरभ) वृत्त होता है। इसका दूसरा नाम 'मणिगुणनिकर' है।

चंद्रावली—स्त्री०[चद्र-आवली ष० त० ?] कृष्ण की सखी एक गोपी जो चद्रभानु की कन्या थी।

चंद्रिका—स्त्री० [सं० चद्र+ठन्—इक, टाप्] १ चद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २ मोर की पूँछ पर का वह अर्द्धचद्राकार चिह्न जो सुनहले मडल से घिरा होता है। ३. इलायची। ४. चाँदा नाम की मछली। ५ चन्द्रभागा नदी। ६. कनफोडा नाम की घास। ७ चमेली। ८ सफेद भटकटैया। ९ मेथी। १०. चसुर या हालम पौधा। ११ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न. न, त, त, ग (।।। ।।। ऽऽ। ऽऽ। ऽ) और ७-६ पर यति होती है। १२. एक देवी का नाम। १३ माथे पर पहनने का टीका या वेंदी। १४ स्त्रियो के पहनने का एक प्रकार का मुकुट या शिरोभूषण जिसे चद्रकला भी कहते थे।

चंद्रिकातप—पु० [चद्रिका-आतप, मयू० स०] चाँदनी। ज्योत्स्ना।

चंद्रिका-द्राव—पु०[व०स०] चद्रकात मणि।

चंद्रिकापायी (यिन्)—पु० [स० चद्रिका√पा(पीना)+णिनि युक्, उप०स०] चकोर पक्षी जो चन्द्रमा से निकलनेवाले अमृत या रस का पीनेवाला कहा गया है।

चंद्रिकाभिसारिका—स्त्री० [चद्रिका-अभिसारिका, मध्य० स०]= शुक्लाभिसारिका (नायिका)।

चंद्रिकोत्सव—पु०[चद्रिका-उत्सव, मध्य० स०] शरत् पूर्णिमा के दिन होनेवाला एक प्राचीन उत्सव।

चंद्रिमा—स्त्री०=चद्रिका।

चंद्रिल—पु० [स० चद्र+इलच्] १. शिव। महादेव। २ नाई। हज्जाम। ३ वथुआ नाम का साग।

चंद्रेष्टा—स्त्री० [चद्र-इष्टा, व०स०] कुमुदिनी।

चंद्रोदय—पु०[चद्र-उदय, ष० त०] १ चद्रमा के उदित होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ चँदोआ। ३ वैद्यक मे एक रस।

चंद्रोपराग—पु०[स० चद्र-उपराग, प० त०] चद्रमा को लगनेवाला ग्रहण। चद्र-ग्रहण।

चंद्रोपल—पु० [चद्र-उपल, मध्य० स०] चद्रकात मणि।

चंद्रौल—पु० [सं० चद्र] राजपूतो की एक जाति।

चंप—पु०[स०√चप्(गमन)+अच्] १. चपा। २ कचनार।

चंपई—वि० [हिं० चपा] चपा के फूल के रग का। पीले रग का।

चंपक—पु० [स०√चंप्+ण्वुल्-अक] १. चपा। २ चपाकली। ३ चपा केला। ४. साख्य मे एक सिद्धि जिसे रम्यक भी कहते है। ५. सपूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर मे गाया जाता है।

चंपक-माला—पु०[ष० त०] १. चंपक के फूलो की माला। २ चपाकली। ३. चार चरणो का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश भगण, मगण, सगण, और गुरु होता है।

चंपक-रंभा—स्त्री० [मध्य०स०] चपा केला।

चंपकली—स्त्री० =चपाकली।

चंपकारण्य—पु० [चंपक-अरण्य, मध्य०स०] आधुनिक चम्पारन का पुराना नाम।

चपकालु—पुं० [सं० चंपक√अल् (भूपित करना)+उण्] जाक या रोटी फल का पेड।

चंपकावती—स्त्री० [स० चपक+मतुप्, वत्व, ङीप्, दीर्घ] चपापुरी।

चंप-कोश—पुं० [व०स०] कटहल।

चंपत—वि० [देश०]१. (व्यक्ति) जो विना किसी से कुछ कहे अथवा अपना पता वतलाये कही चला अथवा भाग गया हो। २. (वस्तु) जो किसी स्थान पर से गायव कर दी गई हो।

चँपना—अ० [सं० चप्] १. वोझ पडने पर झुकना या दवना। २. उपकार, लज्जा आदि के कारण किसी के सामने झुकना या दवना। †स०=चाँपना।

चंपा—पु०[स० चप+टाप्; प्रा० चपअ, चपय, गु० चाँपुं, पं० चंवा; म० चाँफा] [वि० चपई] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसमे उग्र गधवाले पीले लवोतरे फूल लगते हैं। २. उक्त वृक्ष का फूल। ३ वगाल मे होनेवाला एक प्रकार का केला। ४ एक प्रकार का घोडा। ५ एक प्रकार का रेशम का कीडा। ६ एक प्रकार का बहुत वड़ा सदावहार पेड़ जो दक्षिण भारत मे अधिकता से होता है। इसकी लकडी वहुत मजवूत होती और इमारत के काम के सिवा गाडी, पालकी, नाव आदि वनाने के काम मे भी आती है। इसे 'सुलताना चपा' भी कहते है।
स्त्री० अग देश की पुरानी राजधानी का नाम।

चंपाकली—स्त्री०[हिं० चपा+कली] गले मे पहनने का एक आभूषण जिसमे चपा की कली के आकार के सोने के टुकडे रेशम के डोरे मे पिरोये हुए रहते है।

चंपापुरी—स्त्री० [स० मध्य० स०] अंग देश की पुरानी राजधानी, चंपा। कर्णपुरी।

चंपारण्य—पु०[स० चंपा-अरण्य, मध्य० स०] प्राचीन काल का एक जंगल जो उस स्थान पर था जिसे आज-कल चंपारन कहते है।

चंपावती—स्त्री० [स० चंपा+मतुप्, वत्व, ङीप्, दीर्घ] चंपा नगरी।

चंपू—पु० [स०√चप्+उ]नाटक का वह प्रकार या भेद जिसका कुछ अंश गद्य मे हो और कुछ पद्य मे।

चंपेल—पु० [सं० चंपा-तेल] चमेली अथवा चंपा का तेल। (राज०)

चंपेली|—स्त्री०=चमेली।

चंपौनी—स्त्री०[हिं० चाँपना] जुलाहों के करघे की भँजनी मे लगी हुई एक पतली लकड़ी।

चंबई—पु०[चंबा प्रदेश से] एक प्रकार का गहरा फीरोजी रंग जिसमे कुछ नीली झलक होती है। (एज्यूरिअन)

वि० उक्त रंग का अथवा उक्त रंग में रंगा हुआ।

चंबल—स्त्री० [स० चर्मण्वती] १. एक नदी जो विन्ध्य पर्वत से निकलकर इटावे के पास जमुना मे मिली है। २ नहरो आदि के किनारे पर लगी हुई वह लकड़ी जिससे उनका पानी ऊपर चढ़ाया जाता है। ३ पानी की बाढ।

क्रि० प्र०—आना।—लगाना।

पु० [फा० चबुल] [स्त्री० अल्पा० चबली] १. भीख माँगने का कटोरा या खप्पर। भिक्षापात्र। २. चिलम के ऊपर का ढकना।

पु० [?] तलुए या हथेली मे होनेवाला एक प्रकार का चर्म रोग जिसमे उनका चमड़ा फटने तथा सटने लगता है।

चंबी—स्त्री०[हिं० चाँपना] कागज या मोमजामे का वह तिकोना टुकड़ा जो कपड़ो पर रंग छापते समय उन स्थानो पर रखा जाता है जहाँ रंग चढ़ाना अभीष्ट नही होता। पट्टी। कतरनी।

चंबू—पु०[?] १. एक प्रकार का धान जो पहाड़ों पर बिना सींची जमीन पर चैत मे होता है। २ धातु का बना छोटे मुँहवाला एक प्रकार का लोटा या लुटिया जिससे देवमूर्तियों पर जल चढाते हैं।

चंबेलिया|—वि०=चमेलिया।

चंबेली|—स्त्री०=चमेली।

चंवर—पु०[स० पा० प्रा० चामर, बं० चमर, उ० चाअर, प० चौर, मरा० चौरी] [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १. पशुओ मुख्यत. सुरा गाय की पूँछ के लंबे बालो का वह गुच्छा जो दस्ते के अगले भाग मे लगा होता है और जिसे देवमूर्तियो, धर्मग्रंथो, राजाओ आदि के ऊपर और इधर-उधर इसलिए डुलाया जाता है कि उन पर मक्खियाँ आदि न बैठने पावें।

क्रि० प्र०—डुलाना।—हिलाना।

२. घोड़ों, हाथियो आदि के सिर पर लगाई जानेवाली कलगी।

चंवर ढार—पु० [हिं० चँवर+ढारना] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चंवरी—स्त्री० [?] विवाह-मंडप। उदा०—चँवरी ही पहिचाणियो, कँवरी मरणो कत।—कविराजा सूर्यमल।

स्त्री०=छोटा चँवर।

चंसुर—पु०[स० चंद्रसूर] एक प्रकार का पौधा जिसके पत्ते पतले और कटावदार होते हैं। उन पत्तों का साग बनाकर खाया जाता है। हालम। हालो।

चइ—पु०[अनु०] महावतों की बोली का एक आदेश-सूचक शब्द जो हाथी को घूमने के लिए कहा जाता है।

चइत|—पु०=चैत।

चइन|—पु०=चैन।

चई—स्त्री० [सं० चव्य] चव्य या चाव नामक वनस्पति।

चउँहान—पु०=चौहान।

चउक—पु० =चौक।

चउकी|—स्त्री०=चौकी।

चउतरा|—पुं०=चबूतरा।

चउथा|—वि०, पु०=चौथा।

चउदस|—स्त्री०=चौदस।

चउदह|— वि०=चौदह।

चउपाई|—स्त्री० =चौपाई।

चउपारि—स्त्री० = चौपाल।

चउर|—पु० = चँवर।

चउरा—पु० = चौरा।

चउरास्या—पु० = चौरासिया। उदा०—चउरास्या जे कै वसइ अमेस। —नरपति नाल्ह।

चउहट्ट—पु० =चौहट्ट।

चउहान*—पुं० = चौहान।

चक—पु० [सं० चक्र] १. चक्रवाक (पक्षी)। चकवा। २. २. चक्र नामक अस्त्र। ३. चाक। पहिया। ४. चकई नाम का खिलौना। ५. चक्का (दे०)। ६. जमीन का लंबा-चौड़ा बड़ा टुकड़ा।

पद—चकबंदी (देखें)।

७ छोटा गाँव। खेड़ा। ८. करघे की बैंसर के कुलवांसे से लटकती हुई रस्सियों से बँधा हुआ डंडा जिसके दोनो छोरों पर से चकडोर नीचे की ओर जाती है। ९. ओर। तरफ। दिशा। उदा०—पवन विचार चक चक्रमन चित्त चढ़ि भूतल अकास भ्रमै घाम जल सीत मे।—केशव। १०. अधिकता। ज्यादती। बाहुल्य।

मुहा०—चक बँधना=बराबर अधिकता या वृद्धि होना।

११. अधिकार। प्रभुत्व।

मुहा०—चक जमना या बैठना=पूरी तरह से अधिकार या प्रभुत्व स्थापित होना।

१२ एक प्रकार का गहना जिसका आकार गोल और उभारदार होता है। (पंजाब)

वि० बहुत अधिक। भरपूर। यथेष्ट।

वि० = भौंचक।

पु० [स०] साधु।

वि० खल। दुष्ट।

चकई—स्त्री० [हिं० चकवा] मादा चकवा। मादा सुरखाब।

स्त्री० [सं० चक्र] काठ का एक प्रसिद्ध खिलौना जो लगी हुई डोरी पर ऊपर-नीचे चढता-उतरता है।

वि० चक्र के आकार का। गोल। जैसे—चकई आड़ या मेंव।

चकचकाना—अ० [देश०] १. किसी तरल पदार्थ का किसी चीज मे रस कर ऊपर या बाहर निकलना। २. भीग जाना। भीगना।

†अ० = चकना (चकित होना)।

चकचकी†—स्त्री० [अनु०] करताल नाम का बाजा।

चकचाना†—अ० [देश०] अधिक प्रकाश मे नेत्रो का चौधियाना।

चकचाल†—स्त्री० [स० चक्र+हिं० चाल] १ चक्र की गति या चाल। २ चक्कर। फेरा। ३ चक्र की तरह घूमते रहने का भाव। ४ पार्थिव आवागमन के चक्र मे पडे या फँसे होने की अवस्था।

चकचाव*—पु० = चकाचौध।

चकचून—वि० [स० चक्र-चूर्ण] १. चूर किया हुआ। चकनाचूर। अच्छी तरह पीस कर वारीक किया हुआ। २ अच्छी तरह तोडा-फोड़ा या चकनाचूर किया हुआ।

चक+चूर—वि० = चकचून।

चकचूरना*—स० [हिं० चक+चूरन] १. बहुत महीन पीसना या छोटे-छोटे टुकडे करना। २ चकनाचूर करना।

चकचोह—स्त्री० = चुहल।

चकचोहा—वि० [हिं० चक (=भरपूर)+चोआ (=रस)] [स्त्री० चकचोही] १ रस से खूब भरा हुआ। २ चिकना-चुपडा।
स्त्री० [अनु०] हँसी-ठट्ठा। चुहल।

चकचौंध—स्त्री० = चकाचौध।

चकचौंधना—अ० [सं० चक्षु और अध] चकाचौध होना।
स० चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंह—स्त्री० = चकाचौंध।

चका-चौबंद—वि० = चाक-चौबद।

चकचौहना—अ० [हिं० चक + चौहना] चाह भरी दृष्टि से देखना। प्रेम-पूर्वक देखना।

चकचौहाँ—वि० [हिं० चकचौहना] १ जो नेत्रों को चौंधिया देता हो। २. बहुत ही प्रकाशपूर्ण या चमकीला। ३. सुदर। सुहावना।

चकड़बा—पु० = चकरवा।

चक-डोर—पु० [हिं० चकई+डोर] १ चकई, लट्टू आदि घुमाने या नचाने की डोरी। २ जुलाहो के करघे की वह डोरी जिसमे वेसर वँधी रहती है।

चकडोल—स्त्री० [स० चक्र-दोला] एक प्रकार की पुरानी चाल की पालकी। (राज०) उदा०—चकडोल लगैं इणि भाँति सुंचाली।—प्रिथीराज।

चकत—स्त्री० [हिं० चकी =दाँतों की पकड] दाँतो से कसकर पकडने की क्रिया या भाव। दाँतो की पकड।
मुहा०—**चकत मारना** = दाँतो से पकडकर मास आदि नोचना।

चकताई†—पु० = चकत्ता।

चकती—स्त्री० [सं० चक्रवत्] १ कपडे, चमडे, धातु आदि का फाड़ या काटकर बनाया हुआ गोल या चौकोर टुकडा। २ उक्त प्रकार का कटा हुआ वह टुकडा जो वैसी किसी दूसरी ही चीज की कटी या टूटी हुई जगह पर लगाया जाता है। जैसे—कपडे या परात मे लगाई हुई चकती।
मुहा०—**आसमान या बादल में चकती लगाना** = (क) अनहोनी या असभव काम या बात करने का प्रयास करना। (ख) बहुत बढ-चढकर और अपनी शक्ति के बाहर की बाते करना।
३. दुबे भेडे की गोल चक्राकार दुम।

चकत्ता—पु० [स० चक्रवत्ता] १ रक्त-विकार आदि के कारण पड़ा हुआ शरीर पर बडा गोल दाग। चमडे पर उभरा हुआ धब्बा या दाग। ददोरा। जैसे—कोढ या दाद होने पर शरीर मे जगह-जगह चकत्ते पड जाते हैं। २. शरीर मे गडे या गडाये हुए दाँतो का चिह्न या निशान। जैसे—कुत्ते या बदर के काटने से शरीर पर पडनेवाला चकत्ता।
मुहा०—**चकत्ता भरना या मारना** = दाँतो से काटकर मास निकाल लेना।
पु० [तु० चगताई] १ मुगल या तातार अमीर चगताई खाँ जिसके वश मे बाबर, अकबर आदि मुगल बादशाह हुए थे। २. उक्त के वश का कोई व्यक्ति। ३ बहुत बडा राजा। महाराज।

चकदार—पु० [हिं० चक+फा० दार (प्रत्य०)] वह जो किसी दूसरे की जमीन पर कुआँ बनवाकर उस जमीन का लगान देता है।

चकना—अ० [स० चक्र=भ्रात] १ चकित या विस्मित होना। भौंचक्का होना। चकराना। २. भयभीत या सशंकित होना। ३ चौकना।

चकनाचूर—वि० [हिं० चक =भरपूर+चूर] १ जिसके टूट-फूटकर बहुत से छोटे-छोटे टुकडे हो गये हो। चूर-चूर। चूर्णित। २ लाक्षणिक रूप मे, बहुत अधिक थका हुआ। बहुत शिथिल और श्रात।

चकपक—वि० [स० चक्र =भ्रात] चकित। भौंचक्का। हक्का-बक्का।
स्त्री० चकित या विस्मित होने की अवस्था या भाव।

चकपकाना—अ० [स० चक्र=भ्रात] १ बहुत अधिक चकित या विस्मित होना। भौचक्का या हक्का-बक्का होना। २ भय या शका से विकल होना। ३ चौकना।

चकफेरी—स्त्री० [स० चक्र, हिं० चक+हिं० फेरी] किसी वृत्त या मडल के चारो ओर घूमने या फिरने की क्रिया या भाव। परिक्रमा। भँवरी।
क्रि० प्र०—करना।—खाना। —फिरना।—लेना।

चकबंट—स्त्री० [हिं० चक+बाँटना] बहुत से खेतो को कुछ आदमियो मे बाँटने का वह प्रकार जिसमे कई खेतो के चक या समूह प्रत्येक हिस्सेदार को दिये जाते है।

चकबंदी—स्त्री० [हिं० चक+फा० बदी] १ भूमि के बहुत बडे खंड को छोटे-छोटे चको या भागो मे बाँटने की क्रिया या भाव। २ छोटे-छोटे खेतो को एक मे मिलाकर उनके बड़े-बडे चक या विभाग बनाने की क्रिया या भाव। (कन्सोलिडेशन आफ होल्डिंग्स)

चकबक—पु० = चकमक।

चकबस्त—पु० [फा०] १ चको मे बँटा हुआ भूमि खड। २ कश्मीरी ब्राह्मणों का एक भेद या वर्ग।

चकमक—पु० [तु० चकमाक] एक प्रकार का आग्नेय कडा पत्थर जिस पर चोट पडने से आग निकलती है। (फ्लिन्ट)

चकमा—पु० [स० चक्र=भ्रात] १ ऐसा धोखा या भुलावा जो किसी का ध्यान किसी दूसरी ओर आकृष्ट करके दिया जाय। किसी का ध्यान दूसरी ओर रखकर उसे दिया जानेवाले धोखा।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।
२ लडको का एक प्रकार का खेल।
†पु० [?] एक प्रकार का बदर।

चकमाक—पु० = चकमक।

चकमाकी—वि० [तु० चकमक] चकमक का। जिसमे चकमक हो।
स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की बदूक जो चकमक पत्थर के योग से गोली छोड़ती थी।

चकर—पु० [स० चक्र] चक्रवाक पक्षी। चकवा।
†पु० चक्कर।

चकरबा—पु० [स० चक्रव्यूह] १. ऐसी स्थिति जिसमे यह न सूझे कि क्या करना चाहिए। असमजस की और विकट अवस्था। २ व्यर्थ का झगड़ा या बखेड़ा।

चकर-मकर—पु० [स० चक्र+फा० मकर] छल-कपट की बात। धोखे-बाजी।

चकरसी—पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़ जो बगाल और आसाम मे होता है। इसके हीर की चमकीली और मजबूत लकड़ी मेज, कुरसी आदि सामान बनाने के काम मे आती है।

चकरा†—पु० [हिं० चक्कर] पानी का भँवर।
† वि० [स्त्री० चकरी] चारो ओर घूमने या चक्कर खानेवाला।
वि० [स्त्री० चकरी] चौड़ा। विस्तृत।
† पु० = चकला।

चकराना—अ० [स० चक्र] १. सिर का चक्कर खाना। सिर घूमना। २. किसी प्रकार के चक्कर या फेर मे पड़ना। ३ चारों ओर या इधर-उधर घूमना। भ्रात होना। भटकना। ४. चकित होना।
स० १ चक्कर देना या खिलाना। २. किसी को चक्कर या फेर मे डालना। चकित या स्तमित करना।

चकरानी—स्त्री० [फा० चाकर का स्त्री०] =चाकरानी (दासी)।

चकरिया—वि० [फा० चाकरी+हा (प्रत्य०)] नौकरी-चाकरी करनेवाला।
पुं० टहलुआ। सेवक।

चकरिहा—वि० = चकरिया।

चकरी†—स्त्री० [स० चक्री] १ चक्की। २ चक्की का पाट। ३. चक्की के पाट की तरह की कोई गोलाकार चिपटी चीज। ४. लड़को के खेलने का चकई नाम का खिलौना। ५ चारो ओर भटकानेवाला चक्कर या फेर। भ्राति। उदा०—यह तौ सूर तिन्हैं लै सौंपौ जिनके मन चकरी।—सूर।

चकरी-गिरह—स्त्री० [जहाजी] अर्गल मे लगी हुई रस्सी की गाँठ जो उसे रोके रहती है। (लश०)

चकलं†—पु० [हिं० चक्का] १ किसी पौधे को दूसरी जगह लगाने या खोदकर निकालने की क्रिया या भाव। २. वह मिट्टी जो उक्त प्रकार से पौधे को उखाड़कर दूसरी जगह ले जाने पर उसकी जड़ मे लिपटी रहती है।

चकलई—स्त्री० [हिं० चकला] चकला (चौड़ा या सपाट) होने की अवस्था या भाव। विस्तार।

चकला—पु० [स० चक्र, हिं० चक, +ला (प्रत्य०)] १. काठ, पत्थर, लोहे आदि का गोलाकार चिकना खड जिस पर पूरी या रोटी बेली जाती है। २. वह भू-भाग जो एक ही तल मे दूर तक फैला हो और जिसमे कई गाँव या बस्तियाँ हो।
पद—चकलेदार (देखें)।
३. व्यभिचार करानेवाली वेश्याओं की बस्ती या मुहल्ला। ४. चक्की।
वि० [स्त्री० चकली] अधिक विस्तारवाला। चौड़ा। जैसे—चकला मैदान।

चकलाना—स० [हिं० चकल] पौधे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाने के लिए मिट्टी समेत उखाड़ना। चकल उठाना।
स० [हिं० चकला] चकला अर्थात् चौड़ा या विस्तृत करना।

चकली—स्त्री० [स० चक्र, हिं० चक्र] १. छोटा चकला जिस पर चंदन आदि घिसते हैं। चौकी। हिरसा। २ गड़ारी। घिरनी।

चकलेदार—पु० [हिं० चकला+फा० दार] वह अधिकारी जो किसी चकले अर्थात् विस्तृत भू-भाग की मालगुजारी आदि वसूल करता और किसी की ओर से वहाँ की व्यवस्था तथा शासन करता था।

चकल्लस—स्त्री० [?] १. झगड़ा-बखेड़ा। २ मित्रो मे होनेवाला हँसी-मजाक या हास-परिहास।

चकवँड़—पु० [स० चक्रमर्द] एक प्रकार का जगली बरसाती पौधा जिसकी पत्तियाँ, डठल या तने की ओर नुकीली और सिरे की ओर गोलाई लिये हुए चौड़ी होती हैं। पमार। पवाड़।
पु० [स० चक्र] मिट्टी का वह छोटा पात्र जिसमे से थोड़ा-थोड़ा हाथ से जल निकालकर चक्के पर चढ़े हुए पात्र को कुम्हार गीला तथा चिकना करता है।

चकवा†—पु० [स० चक्रवाक; पा० चक्कवाको, प्रा० चक्कवाअ, चकाअ; गु० चको; सिं० चकुओ, प० चक्का; सिं० सक्का; ने० चखेवा; मरा० चकवा] [स्त्री० चकई] १. एक प्रसिद्ध जल-पक्षी जिसके सबध मे यह कहा जाता है कि यह रात को अपने जोड़े से अलग हो जाता है। सुरखाव। २. रहस्य सप्रदाय मे, मन।
पु० [स० चक्र] १. एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत मजबूत और छाल कुछ स्याही लिये सफेद या भूरी होती है। इसके पत्ते चमड़ा सिझाने के काम मे आते हैं। २. जुलाहो की चरखी मे लगी हुई बाँस की छड़ी। ३. हाथ से दबा-दबाकर बढ़ाई हुई आटे की लोई।

चकवाना†—अ० = चकपकाना।

चकवार†—पु० दे० 'कछुआ'।

चकवाह†—पु० = चकवा।

चकवी—स्त्री०=चकई।

चकवै—पु० १ दे० 'चक्रवर्त्ती'। २. दे० 'चकोर'।

चकसेनी†—स्त्री० [देश०] काकजघा।

चकहा†—पु० [स० चक्र] गाड़ी आदि का पहिया।
पु० = चकवा।

चकाँड़—पु० [हिं० चक+आँड] चिपटा अडकोश।

चका†—पु० [सं० चक्र] १ पहिया। २. चक्क।
* पु० = चकवा।

चकाकेवल—स्त्री० [हिं० चकवा, चक्का,] काले रग की मिट्टी जो सूखने पर चिटक जाती और पानी मे लसदार होती है। यह कठिनता से जोती जाती है।

चकाचक—स्त्री० [अनु०] तलवार आदि के लगातार शरीर पर पड़ने का शब्द।

क्रि० वि० [अनु०] अच्छी तरह से। अधिक मात्रा मे। जैसे—चकाचक खाया था।

वि० १ चटकीला। २ मजेदार। ३ रस आदि मे डूबा हुआ। तर। तराबोर।

चकाचौंध—स्त्री० [स० चक= चमकना+चौ=चारो ओर+अंध] १ किसी वस्तु के अत्यधिक प्रकाशित होने की वह स्थिति जिसमे नेत्र अधिक प्रकाश के कारण उस वस्तु को देख न पाते हो और जल्दी-जल्दी खुलने तथा बद होने (झपकने) लगते हो। २ उक्त प्रकार की वस्तुओ के देखने से आँखो पर होनेवाला परिणाम।

क्रि० प्र० — लगना। —होना।

चकाचौंधी†—स्त्री० = चकाचौंध।

चकातरी—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

चकाना†—अ० १ = चकपकाना। २. =चकराना।

चकाबू—पु० [स० चक्रव्यूह] १ प्राचीन काल मे युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए उसके चारो ओर खडा किया जानेवाला सैनिक व्यूह। २ भूल-भुलैयाँ (दे०)।

चकार—पु० [स० च+कार] १ वर्णमाला मे छठा व्यजन वर्ण जो च है। २. मुँह से निकलनेवाला किसी प्रकार का शब्द। जैसे—उसके मुँह से चकार तक न निकला।

†पु० [हिं० चोर का अनु०] चोर या उचक्का। जैसे—चाईं-चकार चौर और नटखट तोरे बदे।—तेगअली।

चकावल—स्त्री० [देश०] घोड़े के अगले पैर मे गामचे की हड्डी का उभार।

चकासना*—अ० = चमकना।

चकित—वि० [स० √चक् (भ्रात होना) +क्त] जो अप्रत्याशित या अद्भुत कार्य, बात या व्यवहार देखकर विकल या विस्मित, सशकित या स्तब्ध हो गया हो। आश्चर्य मे आया या पडा हुआ।

चकितवत*—वि० = चकित।

चकिता—स्त्री० [स० चकित+टाप्] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।

चकिताई*—स्त्री० [हिं० चकित] चकित होने की अवस्था या भाव।

चकिया†—स्त्री० [स० चक्रिका] किसी चीज का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। जैसे—पत्थर की चकिया।

चकुंदा†—पु० [स० चक्रमर्द] चकवँड (दे०)।

चकुरी†—स्त्री० [स० चक्र] मिट्टी की छोटी हाँडी।

चकुला†—पु० [देश०] चिडिया का बच्चा। चेटुआ।

चकुलिया—स्त्री० [स० चक्रकुल्या] एक प्रकार का पौधा।

चकृत†—वि० = चकित।

चकैठ—पु० [स० चक्र-यष्टि] वह डडा जिससे कुम्हार चाक घुमाते है।

चकैड़ी—स्त्री० [स० चक्रभाण्डिका, प्रा० चक्कहडिया] चकवँड (दे०)।

चकैव*—पु० = चक्रवाक (चकवा पक्षी)। उदा०—कुच-जुग चकैव चरइ गगावारे।—विद्यापति।

चकोट—पु० [हिं० चकोटना] १. चकोटने की क्रिया या भाव। २ गाड़ी के पहिये से जमीन पर पडनेवाली लकीर।

चकोटना—स० [हिं० चिकोटी] चिकोटी काटना। चुटकी से मास नोचना।

चकोतरा—पु० [स० चक्र=गोला] १ एक प्रकार का नीबू की जाति का पेड जिसमे खट-मीठे गोल फल लगते है। २ उक्त पेड का फल जो प्रायः खरबूजे की तरह बडा होता है।

चकोता—पु० [हिं० चकत्ता] एक प्रकार का रोग जिसमे घुटने के नीचे छोटी-छोटी फुसियाँ निकल आती है।

चकोर—पु० [स० √चक् (तृप्त होना) +ओरन्] [स्त्री० चकोरी] १ एक प्रकार का बडा तीतर जो नैपाल, पजाब और अफगानिस्तान के पहाडी जगलो मे बहुत मिलता है। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश. सात भगण, एक गुरु और अत मे एक लघु होता है। यह एक प्रकार का सवैया है।

चकोह†—पु० [स० चक्रवाह] पानी का भँवर।

चकौंड़†—पु० =चकवँड।

चकौंध—स्त्री० = चकाचौंध।

चकौटा—पु० [देश०] १ भूमि की लगान का एक पुराना प्रकार। २ ऋण चुकाने के बदले मे दिया जानेवाला पशु। मुलवन।

चक्क—पु० [स० √चक्क् (पीडा होना) +अप्] पीडा। दर्द।

† वि० भर-पूर। यथेष्ट। जैसे—चक्क माल।

पु० [स० चक्र] १ चक्रवाक पक्षी। चकवा। २ कुम्हार का चाक। ३ ओर। तरफ। दिशा। ४ दे० 'चक्र'।

चक्कर—पु० [स० चक्र] १ लकडी, लोहे आदि का गोलाकार ढाँचा जो छडो, तीलियो आदि द्वारा चक्रनाभि पर कसा रहता है और किसी अक्ष या धुरे को केंद्र बनाकर उसके चारो ओर घूमता तथा यान, रथ आदि को आगे खीचता चलता है। २ उक्त आकार की कोई घूमनेवाली वस्तु। चाक। जैसे-(क) अतिशबाजी का चक्कर। (ख) पानी का चक्कर (भँवर)। (ग) सुदर्शन चक्कर। ३ कोई गोलाकार आकृति। मडल। घेरा। ४ गोल सडक या रास्ता। ५ किसी गोलाकार मार्ग के किसी बिंदु से चलकर तथा उसके चारो ओर घूमकर फिर उसी बिंदु पर पहुँचने की क्रिया या भाव। गोलाई मे घूमना।

मुहा०—**चक्कर काटना**=किसी चीज के चारो ओर घूमना। मँडराना।

६ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना और फिर वहाँ से लौटकर आना। जैसे—(क) आज मुझे शहर के चार चक्कर लगाने पडे है। (ख) मैं उनके घर कई चक्कर लगा आया पर वे मिले नही।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

७ रास्ते का घुमाव-फिराव। जैसे—इस रास्ते से बहुत चक्कर पडेगा। ८ कोई ऐसी कठिन, पेचीली या झझट की बात या समस्या जिससे आदमी परेशान या दु खी होता हो। जैसे—कचहरी के चक्कर मे इस भले आदमी को व्यर्थ फँसाया गया है। ९ धोखा। भुलावा।

मुहा०—**(किसी के) चक्कर मे आना**=किसी के फेर मे फँसना। धोखा खाना। **(किसी को) चक्कर मे डालना**=(क) किसी ऐसे कठिन काम मे किसी को फँसाना कि वह परेशान हो जाय। (ख) चकित करना।

१० ऐसी असमजस की स्थिति जिसमे मनुष्य कुछ सोच या निश्चित न कर पाता हो। ११. पीडा, रोग आदि के कारण मस्तिष्क मे होनेवाला एक विकार जिसमे व्यक्ति के चारो ओर सामने की चीजे घूमने लगती हैं। घुमटा।

चक्कल—वि० [स० √चक्क् (पीडित होना) +अलन्] गोल। वर्तुल।

चक्कवइ*—वि० = चक्रवर्ती।

चक्कवत*—पु० = चक्रवर्ती (राजा)।

चक्कवा*—पु० = चकवा।

चक्कवै—वि० =चक्रवर्ती। उदा०—अइस चक्कवै राजा चहूँ खड भै होई।—जायसी।

चक्कस—पु० [फा० चकस] बुलबुल, बाज आदि पक्षियो के बैठने का अड्डा जो प्राय लोहे के छड का बना होता है।

चक्का—पु०[स०चक्रम्, प्रा० पा० चक्क, बँ० गु० मरा० चाक, उ० चक; प० चक्क, सि० चकु, ने० चाको] स्त्री० अल्पा० चक्की] १. गाडी, रथ आदि का पहिया। चाक। २ पहिये की तरह की कोई गोलाकार चीज। ३ किसी चीज का गोलाकार जमा हुआ टुकडा। चक्का। जैसे—कत्थे या दही का चक्का। ४ ईंट, पत्थर आदि का टुकडा जो प्राय. फेककर मारा जाता है। ५ ईंट, पत्थर के टुकडो आदि का क्रम से और सजाकर लगाया हुआ ढेर। थाक।

चक्की—स्त्री० [स० चक्री, प्रा० चक्की] १. आटा पीसने, दाल दलने आदि का वह प्रसिद्ध यत्र जो एक दूसरे पर रखे हुए पत्थर के दो गोलाकार टुकडो के रूप मे होता है और जिनमे से ऊपरवाले पत्थर के घूमने से उसके नीचे डाली हुई चीजे पिसती या दली जाती है। जाँता।

क्रि० प्र०—चलाना।—पीसना।

मुहा०—चक्की पीसना = (क) चक्की मे डालकर गेहूँ आदि पीसना। (ख) बहुत अधिक परिश्रम का काम निरतर करते रहना।

पद—चक्की का पाट = चक्की के दोनो पत्थरो मे से हर एक। **चक्की की मानी** =(क) चक्की के नीचे के पाटे के बीच मे गडी हुई वह खूँटी जिस पर ऊपर का पाट घूमता है। (ख) ध्रुवतारा। **चलती चक्की** = जगत्। ससार। जैसे—चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय।—कबीर।

स्त्री० [स० चक्रिका] १ पैर के घुटने की गोल हड्डी। २. ऊँटो के घुटनो पर का गोल घट्ठा। चाकी। बिजली।

चक्की-रहा—पु० [हिं० चक्की +रहाना] चक्की को टाँकी से कूटकर खुरदरी करनेवाला कारीगर।

चक्कू†—पु० = चाकू।

चक्खी—स्त्री० [हिं० चखना] १. स्वाद के लिए चखी अर्थात् थोडी-थोडी खाई जानेवाली चटपटी और नमकीन चीज। चाट। जैसे—कचालू, गोलगप्पा आदि। २ कोई नशे की चीज पीने के समय या उसके बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाई जानेवाली चटपटी या नमकीन चीज। ३ बटेरो को दाना चुगाने की क्रिया।

चक्र—पु० [स० √कृ (करना) +क, नि० द्वित्व] १ गाड़ी का वर्त्तुलाकार पहिया। विशेष दे० 'चक्कर'। २. कुम्हार का चाक। ३ कोई वर्त्तुलाकार चीज। ४ छोटे पहिए के आकार का एक प्राचीन अस्त्र। ५. चक्की। ६ कोल्हू। ७ पानी का भँवर। ८ हवा का बवडर। चक्रवात। ९ दल। समुदाय। १० एक प्रकार का सैनिक-व्यूह। ११ गाँवो, शहरो का समूह। मडल। १२ मडलाकार घेरा। जैसे—राशि-चक्र। १३ ऐसे गोल या चौकोर खाने जो रेखाओ आदि से घिरे हों। जैसे—कुडली चक्र। १४ सामुद्रिक मे हाथ की वह रेखा जो गोलाई मे घूमी हो। १५ समय की वह अवधि जिसमे कुछ निश्चित प्रकार की घटनाएँ आदि क्रमश घटती अथवा अवस्थाएँ बदलती हो और फिर उतने ही समय मे जिनकी पुनरावृत्ति होती हो। (साइकिल) जैसे—अर्थशास्त्र मे व्यापार चक्र। (ट्रेड साइकिल)। १६ फेरा चक्कर। १७ चकवा। १८ तगर का फूल। १९. योग के अनुसार मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर आदि शरीरस्थ कमल या पद्म। २०. एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश। आसमुद्रात भूमि। २१ दिशा। प्रात। २२ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण, तीन नगण और अत मे लघु, गुरु होते हैं। २३. धोखा। २४ (क) शरीर विज्ञान या दैहिकी के अनुसार जीवधारियो के शरीर के अदर की वह रचना जो ततु-जाल के रूप मे होती और कुछ विशिष्ट प्रक्रियाएँ करती है। (प्लेक्सस) (ख) योग शास्त्र के अनुसार शरीर के उक्त विशिष्ट अग जो आधुनिक विज्ञान-वेत्ताओ के अनुसार कुछ विशिष्ट जीवनरक्षिणी और विकासकारिणी गिल्टियो के आस-पास पडते हैं। (प्लेक्सस)

विशेष—पहले इनकी सख्या ६ मानी गई थी जिससे 'षट्-चक्र' (दे०) पद बना, पर आगे चलकर हठ-योग मे जब इनकी सख्या आठ मानी गई जिससे ये अष्टचक्र या अष्टकमल (दे०) कहलाने लगे। और भी आगे चलकर कुछ लोगो ने इनमे 'ललना-चक्र' नामक नवाँ और 'गुरु-चक्र' नामक दसवाँ चक्र भी बढा दिया है।

२५ अपना सघटन दृढ करने के लिए राजनीतिक, सामाजिक आदि कार्य करनेवालों का किसी स्थान पर एकत्र होकर विचार-विनिमय, प्रदर्शन आदि करना। जमाव। (रैली) २६ गुप्त रूप से कही आड़ मे रहकर की जानेवाली कार्रवाई। अभिसधि। जैसे—यह सारा चक्र आप ही का चलाया हुआ है। २७. (सख्या के विचार से) बदूक, राइफल आदि से गोली चलाने की क्रिया। (राउण्ड) जैसे—पुलिस ने चार चक्र गोलियाँ चलाईं। २८ धातु का एक विशेष प्रकार का टुकडा जो प्राय' सैनिकों को कोई वीरता-पूर्ण काम करने पर पदक या तमगे के रूप मे दिया जाता है। जैसे—महावीर चक्र, वीर चक्र आदि।

चक्रक—पु० [स० चक्र √कै (प्रतीत होना) + क) १ नव्य न्याय मे, एक प्रकार का तर्क। २ एक प्रकार का साँप।

वि० पहिये के आकार का। गोलाकार।

चक्र-कारक—पु० [प० त०] १. नखी नामक गध द्रव्य। २ हाथ के नाखून।

चक्र-कुल्या—स्त्री० [प० त०] चक्रपर्णी लता। पिठवन।

चक्र-क्रम—पु० [उपमि० स०] कुछ विशिष्ट घटनाओ का कई विशिष्ट अवसरो पर क्रमश. तथा बराबर रहने का क्रम। चक्र की तरह बार-बार घूमकर आनेवाला क्रम। (साइक्लिक आर्डर) जैसे—गरमी, बरसात और सरदी का चक्र-क्रम।

चक्र-गज—पु० [स० त०] चकवँड़।

चक्र-गति—स्त्री० [प० त०] १ किसी केंद्र के चारो ओर अथवा अपने ही अक्ष पर चारो ओर घूमने की क्रिया या भाव। २ दे० 'चक्र क्रम'।

चक्र-गर्त्त—पु० = चक्र-तीर्थ।

चक्र-गुच्छ—पु० [ब० स०] अशोक (वृक्ष)।

चक्र-गोप्ता (प्तृ)—पु० [प० त०] १ सेनापति। २ राज्य का रक्षक अधिकारी। ३ रथ और उसके चक्र आदि की रक्षा करनेवाला योद्धा।

चक्र-चर—वि० [स० चक्र √चर् (चलना) +ट, उप० स०] चक्कर या चक्र मे चलनेवाला।
पु० तेली।
चक्र-जीवक—पु० [स० चक्र √जीव् (जीना) +ण्वुल्—अक, उप० स०] कुम्हार।
चक्र-जीवी (विन्)—पु० [स० चक्र √जीव्+णिनि, उप० स०] =चक्र-जीवक।
चक्र-ताल—पु० [मध्य० स०] सगीत मे एक प्रकार का चौदह-ताला ताल।
चक्रतीर्थ—पु० [मध्य० स०] १ दक्षिण भारत का वह तीर्थ-स्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वतो के बीच तुगभद्रा नदी घूमकर बहती है। २. नैमिषारण्य का एक सरोवर।
चक्र-तुंड—पु० [व० स०] गोल मुँहवाली एक प्रकार की मछली।
चक्र-दंड—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार की कसरत जिसमे जमीन पर दड करके झट दोनो पैर समेट लेते हैं और फिर दाहिने पैर को दाहिनी ओर और बाएँ पैर को बाई ओर चक्कर देते हुए पेट के पास लाते हैं।
चक्र-दंती—स्त्री० [व० स०, डीप्] १ दती वृक्ष। २. जमाल गोटा।
चक्र-दंष्ट्र—पु० [व० स०] सूअर। शूकर।
चक्रधर—वि० [स० चक्र √धृ (धारण) +अच्, उप० स०] चक्र धारण करनेवाला। जिसके पास या हाथ मे चक्र हो।
पु० १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. ऐंद्रजालिक। बाजीगर। ४. किसी छोटे भू-भाग का अधिकारी या शासक। ५ साँप। ६ गाँव का पुरोहित। ७ नटराग से मिलता-जुलता पाडव जाति का एक राग जो सध्या समय गाया जाता है।
चक्रधारा—स्त्री० [प० त०] चक्र की परिधि।
चक्रधारी (रिन्)—वि०, पु० [स० चक्र √धृ (धारण) +णिनि, उप० स०] = चक्रधर।
चक्र-नख—पु० [व० स०] व्याघ्र नख नामक ओषधि। बघनखा।
चक्र-नदी—स्त्री० [मध्य० स०] गडकी नदी।
चक्र-नाभि—स्त्री० [प० त०] पहिये का वह मध्य भाग जिसके बीच मे से अक्ष या धुरा होकर जाता है।
चक्र-नाम—पु० [व० स०] १ माक्षिक धातु। सोनामक्खी। २ चकवा या चक्रवाक पक्षी।
चक्र-नायक—पु० [प० त०] व्याघ्र नख नाम की ओषधि।
चक्र-नेमि—स्त्री० [प० त०] पहिये का घेरा या परिधि।
चक्र-पर्णी—स्त्री० [व० स०, डीप्] पिठवन।
चक्र-पाणि—पु० [व० स०] हाथ मे चक्र धारण करनेवाले, विष्णु।
चक्र-पाद—पु० [व०स०] १. गाडी। रथ। २ हाथी।
चक्र-पादक—पु० चक्रपाद (दे०)।
चक्र-पानि*—पु० = चक्रपाणि।
चक्र-पाल—पु० [स० चक्र √पाल् (रक्षा) +णिच् +अण्, उप० स०] १ वह जो चक्र धारण करे। २ किसी प्रदेश का शासक या सूबेदार। ३ गोल आकृति। वृत्त। ४ सगीत मे शुद्ध राग का एक भेद।
चक्र-पूजा—स्त्री० [स० त०] १ तात्रिको की एक प्रकार की पूजा-विधि जिसमे बहुत से उपासक एक चक्र या मडल के रूप मे बैठकर तात्रिक क्रियाएँ करते हैं। २. दे० 'चरकपूजा'।

२—२५

चक्र-फल—पु० [व० स०] एक प्राचीन अस्त्र जिसका फल गोलाकार होता था।
चक्र-बंध—पु० [व० स०] कविता-रचना का एक प्रकार जिसमे उसके शब्द खानो मे भरे जाते है।
चक्र-बंधु—पु० [प० त०] १ सूर्य। २ अँगूठी। ३ समूह।
चक्र-बांधव—पु० [प० त०] चक्र-बधु (दे०)।
चक्र-भृत्—पु० [स० चक्र√भृ (धारण) +क्विप्, उप० स०] १. चक्र नामक अस्त्र धारण करनेवाला व्यक्ति। २ विष्णु।
चक्र-भेदिनी—स्त्री० [स० चक्र √भिद् (विदारण) √णिनि–डीप्, उप० स०] रात्रि। रात।
चक्र-भोग—पु० [प० त०] ज्योतिष मे ग्रह की वह गति जिसके अनुसार वह एक स्थान से चलकर फिर उसी स्थान पर पहुँचता है।
चक्र-भ्रम—पु० [स० चक्र √ भ्रम् (घूमना) + अच्, उप० स०] खराद।
चक्र-भ्रमर—पु० [व० स०] एक प्रकार का नृत्य।
चक्र-मंडल—पु० [व० स०] एक प्रकार का नृत्य जिसमे नाचनेवाला किसी केंद्र के चारो ओर नाचता हुआ घूमता है।
चक्र-मंडली (लिन्)—पु० [स० चक्र-मडल उपमि० स०, +इनि] अजगर साँप की एक जाति।
चक्र-मर्द—पु० [स० चक्र √मृद् (मर्दन) +अण, उप० स०] चकवँड।
चक्र-मीमांसा—स्त्री० [प० त०] वैष्णवो की चक्र-मुद्रा धारण करने की विधि।
चक्र-मुख—वि० [व० स०] गोल मुँहवाला।
पु० सूअर।
चक्र-मुद्रा—पु० [मध्य० स०] शरीर के विभिन्न अगो पर दगवाया या लगवाया जानेवाला चक्र के आकार का चिह्न।
चक्र-यंत्र—पु० [उपमि० स०] ज्योतिष सबधी वेध करने का एक प्रकार का यत्र।
चक्र-यान—पु० [मध्य०स०] ऐसी गाडी जिसमे पहिये लगे हो।
चक्र-रद—पु० [व० स०] सूअर।
चक्र-रिष्टा—स्त्री० [व० स०] बक। बगला।
चक्र-लक्षणा—स्त्री० [व० स०] गुरुच या गुडुची नामक लता।
चक्र-लिप्ता—स्त्री० [प० त०] ज्योतिष मे राशि-चक्र का कलात्मक भाग अर्थात् २१६०० भागो मे से एक भाग।
चक्र-लेखित्र—पु० [मध्य० स० (लेखित्र ?)] एक प्रकार का छोटा उपकरण जिसकी लेखनी की नोक पर लगे हुए छोटे से चक्र द्वारा एक विशेष प्रकार के कागज पर बनाये हुए अक्षरो की सहायता से किसी लेख आदि की प्रतिलिपियाँ तैयार की जाती हैं। (साइक्लोस्टाइल)
चक्र-वर्तिनी—स्त्री० [स० चक्र √वृत् (बरतना) +णिनि, डीप्, उप० स०] १ किसी दल या समूह की अधीश्वरी। २ जनी या पानडी नाम का पौधा जिसकी पत्तियाँ सुगधित होती है।
चक्र-वर्ती (तिन्)—वि० [स० चक्र √वृत् +णिनि, उप० स०] [स्त्री० चक्र-वर्तिनी] (राजा) जिसका राज्य बहुत दूर-दूर तक और विशेषत. समुद्र-तट तक फैला हुआ हो। सार्वभौम।
पु० १ ऐसा सम्राट् जो दो समुद्रो के बीच की सारी भूमि पर एकच्छत्र

[illegible]। २ किसी दल का अधिपति। समूह-नायक। ३ बथुआ (साग)।

चक्रवाक—पुं० [सं० चक्र √वच् (बोलना) +घञ्, ब० स०] [स्त्री० चक्रवाकी] चकवा पक्षी।

चक्रवाड़—पुं० = चक्रवाल।

चक्रवात—पुं० [सं० उपमि० स०] चक्कर खाती हुई बहुत तेज चलनेवाली हवा। बवंडर। (व्हर्ल विंड)

चक्रवान् (वत्)—पुं० [सं० चक्र+मतुप्] पुराणानुसार चौथे समुद्र के बीच में स्थित माना जानेवाला एक पर्वत जहाँ विष्णु भगवान ने हयग्रीव और पंचजन नामक दैत्यों को मारकर चक्र और शंख दो आयुध प्राप्त किये थे।

चक्रवाल—पुं० [सं०] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो भूमंडल के चारों ओर स्थित तथा प्रकाश और अंधकार (दिन-रात) का विभाग करनेवाला माना गया है। लोकालोक पर्वत। २ घेरा। मंडल। ३ चंद्रमा के चारों ओर दिखाई देनेवाला धुंधले प्रकाश का घेरा या मंडल।

चक्र-वृत्ति—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक भगण, तीन नगण और अंत में लघु-गुरु होते हैं।

चक्र-वृद्धि—स्त्री० [उपमि० स०] १. ऋण का वह प्रकार जिसमें मूल धन पर ब्याज देने के अतिरिक्त उस ब्याज पर भी ब्याज दिया जाता है जो किसी निश्चित अवधि तक चुकाया नहीं जाता। (कम्पाउंड इन्टरेस्ट) २. गाड़ी आदि का भाड़ा।

चक्र-व्यूह—पुं० [मध्य० स०] १. युद्ध-क्षेत्र में किसी वस्तु या व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए उसके चारों ओर असंख्य सैनिकों का किसी क्रम या सिलसिले से खड़े होने की अवस्था या स्थिति। २. सेना का ऐसे ढंग से युद्ध-क्षेत्र में खड़ा या स्थित होना कि शत्रु उन्हें सरलता से भेद न सके।

चक्र-शल्या—स्त्री० [ब० स०]। सफेद घुंघची। २ काक-तुंडी। कौआ, ठोंठी।

चक्र-श्रेणी—स्त्री० [ब० स०] मेढासींगी।

चक्र-संज्ञ—पुं० [ब० स०] १ वंग नामक धातु। रांगा। २. चकवा पक्षी।

चक्र-संवर—पुं० [सं० चक्र-सम्√वृ (रोकना) +अच्, उप० स०] एक बुद्ध का नाम।

चक्र-हस्त—पुं० [ब० स०] विष्णु।

चक्रांक—पुं० [चक्र-अंक, ष० त०] विष्णु के चक्र का चिह्न जो वैष्णव अपने शरीर के अंगों पर दगवाते हैं।

चक्रांक-पुच्छ—पुं० [ब० स०] १. मोर। २ मोर का पंख। उदा०—उन्नत [illegible] चक्रांक-पुच्छ।—निराला।

चक्रांकित—वि० [चक्र-अंकित, तृ० त०] १. जिस पर चक्र का चिह्न अंकित हो। २ (व्यक्ति) जिसने अपने शरीर पर चक्र का चिह्न दगवाया हो। जिसने चक्र की छाप लीया हो।

पुं० वैष्णवों का एक सम्प्रदाय जिसके लोग अपने शरीर पर चक्र का चिह्न दगवाते हैं।

चक्रांग—पुं० [चक्र-अंग, ब० स०] १. चकवा पक्षी। २. गाड़ी या रथ। ३. हंस। ४. कुटकी नाम की ओषधि। ५ हिलमोचिका या हुलहुल नाम का साग।

चक्रांगा—स्त्री० [सं० चक्रांग+टाप्] १. काकड़ासिंगी। २ सुदर्शन नाम का पौधा या लता।

चक्रांगी—स्त्री० [सं० चक्रांग+ङीष्] १. कुटकी नाम की ओषधि। २. हंस की मादा। हंसिनी। ३ हुलहुल नाम का साग। ४. मजीठ। ५. काकड़ासिंगी। ६ मूसाकानी।

चक्रांत—पुं० [चक्र-अंत, ब० स०] गुप्त अभिसंधि। षड्यंत्र।

चक्रांतर—पुं० [सं० चक्रांत √रा (लेना) +क] एक बुद्ध का नाम।

चक्रांश—पुं० [चक्र-अंश, ष० त०] १ किसी चक्र का कोई अंश। २ चंद्रमा के चक्र का ३६० वाँ अंश।

चक्रा—स्त्री० [सं० चक्र+टाप्] १. नागरमोथा। २. काकड़ासिंगी।

चक्राक—पुं० [सं० चक्र √अक् (गति) +अच्] [स्त्री० चक्राकी] हंस नामक पक्षी।

चक्राकार—वि० [चक्र-आकार, ब० स०] चक्र या पहिये के आकार का। मंडलाकार।

चक्राट—पुं० [सं० चक्र √अट् (गति) +अण्, उप० स०] १ साँप पकड़नेवाला। २. मदारी। ३. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त। ४. सोने का दीनार नाम का सिक्का।

चक्रानुक्रम—पुं० [चक्र-अनुक्रम, उपमि० स०] = चक्र-क्रम।

चक्रायुध—पुं० [चक्र-आयुध, ब० स०] विष्णु।

चक्रावल—पुं० [सं०] १. घोड़ों का एक रोग जिसमें उनके पैरों में घाव हो जाता है। २. उक्त रोग से होनेवाला घाव।

चक्राह्व—पुं० [चक्र-आह्वान, ब० स०] १. चकवा पक्षी। चक्रवाक। २. चकवँड़।

चक्रिक—वि० [सं० चक्र+ठन्—इक] १ चक्र से युक्त। २. चक्र धारण करनेवाला।

चक्रिका—स्त्री० [सं० चक्रिक+टाप्] घुटने की गोल हड्डी। चक्की।

चक्रित†—वि० = चकित।

चक्री (क्रिन्)—पुं० [सं० चक्र+इनि] १ वह जो चक्र धारण करे। २ विष्णु। ३. गाँव का पुरोहित। ४ कुम्हार। ५. कुंडली मारकर बैठनेवाला साँप। ६ चकवा पक्षी। ७ गुप्त-चर। जासूस। ८ तेली। ९ बकरा। १० चकवँड। ११ तिनिश नामक वृक्ष। १२ कौआ। १३ व्याघ्र नख या बघनहाँ नामक गंधद्रव्य। १४ गधा। १५ रथ का सवार। रथी। १६ चंद्रशेखर के मत में आर्याछंद का २२ वाँ भेद जिसमें ६ गुरु और ४५ लघु होते हैं। १७ एक प्राचीन वर्णसंकर जाति। १८ चक्रवर्ती राजा।

वि० १ (गाड़ी आदि) जिसमें पहिया लगा हो। २ गोलाकार (वस्तु)। ३ चक्र धारण करनेवाला (व्यक्ति)।

चक्रीय—वि० [सं० चक्र+छ—ईय] १. चक्र-संबंधी। चक्र का। २ चक्र-क्रम के अनुसार होनेवाला। (साइक्लिक)

चक्रेश्वर—पुं० [चक्र-ईश्वर, ष० त०] १ चक्रवर्त्ती। २ तांत्रिकों में चक्र के अधिष्ठाता देवता।

चक्रेश्वरी—स्त्री० [सं० चक्र-ईश्वरी, ष० त०] जैनों की एक महाविद्या।

चक्ष—पुं० [सं० √चक्ष् (देखना, बोलना) +अच्] नकली दोस्त। स्वार्थी मित्र।

चक्षण—पु० [स० √चक्ष्+ल्युट्—अन] १ कृपा-दृष्टि। २ अनुग्रह-पूर्ण व्यवहार। ३ बातचीत। कथन। ४ मद्य आदि के साथ खाने की चाट। चक्खी।

चक्षम—पु० [स० √चक्ष्+अम] १ बृहस्पति। २ उपाध्याय।

चक्षा (क्षस्)—पु० [स० √चक्ष्+अस्] १ बृहस्पति। २ आचार्य।

चक्षुःपथ—पु० [प० त०] १ दृष्टि-पथ। २ क्षितिज।

चक्षुश्रवा (वस्)—वि० [ब० स०] नेत्रो से सुननेवाला।

पु० साँप।

चक्षु (क्षुस्)—पु० [स० √चक्ष्+उस्] १ देखने की इद्रिय। आँख। नेत्र। २ पश्चिमी एशिया के वक्षु नद (आधुनिक आक्सस नदी) का एक पुराना नाम।

चक्षुरपेत—वि० [चक्षुर्-अपेत, तृ० त०] नेत्रहीन। अधा।

चक्षुरिंद्रिय—स्त्री० [चक्षुर्-इद्रिय, कर्म० स०] देखने की इद्रिय। आँख। नेत्र।

चक्षुर्दर्शनावरण—पु० [चक्षुर्-दर्शन तृ० त०, चक्षुर्दर्शन-आवरण प० त०] जैन शास्त्र मे वे कर्म जिनके उदय होने से चक्षु द्वारा दिखाई पडने मे बाधा होती है।

चक्षुर्मल—पु० [प० त०] आँख से निकलनेवाला मल या कीचड।

चक्षुर्वन्य—वि० [तृ० त०] नेत्र रोग से ग्रस्त या पीडित।

चक्षुर्विषय—पु० [प० त०] १ वे सब चीजे या बाते जो आँख से दिखाई देती है। २ क्षितिज।

वि० जो चक्षुओ का विषय हो।

चक्षुर्हा (हन्)—वि० [स० चक्षुस् √हन् (मारना)+क्विप्, उप० स०] जिसके देखने मात्र से कोई चीज नष्ट हो जाती हो।

चक्षुष्कर्ण—पु० [ब० स०] सर्प। साँप।

चक्षुष्पति—पु० [प० त०] सूर्य।

चक्षुष्पथ—पु० [प० त०] १ दृष्टि-पथ। २ क्षितिज।

चक्षुष्मान् (मत्)—वि० [स० चक्षुस्+मतुप्] १ आँखोवाला। २ सुदर आँखोवाला।

चक्षुष्य—वि० [स० चक्षुस्+यत्] १ नेत्र-सबधी। २ जो देखने मे प्रिय लगे। मनोहर। सुदर। ३ जो नेत्रो के लिए हितकर हो। ४ नेत्रो से उत्पन्न होनेवाला।

पु० १. आँखो मे लगाने का अजन या सुरमा। २. केतकी। केवड़ा। ३ सहिजन। ४ तूतिया।

चक्षुष्या—स्त्री० [स० चक्षुष्य+टाप्] १ सुदर नेत्रोवाली स्त्री। २ वनकुलथी। चाकसू। ३ मेढासीगी।

चक्षुस्—पु०=चक्षु।

चख—पु० [स० चक्षुस्] आँख।

पु० [अनु०] झगडा। तकरार।

पद—चख-चख=कहा-सुनी या बक-झक। झगडा और तकरार।

पु० १ =नीलकठ (पक्षी)। २ =गिलहरी।

चख-चख—स्त्री० [अनु०] १ दो व्यक्तियो या पक्षो मे किसी बात पर होनेवाली कहा-सुनी। झगडा। २ कलह।

चखचौंध†—स्त्री० =चकाचौंध।

चखना—स० [प्रा० चक्ख, चड्ड, बँ० चाखा, उ० चाखिबा, प० चक्खणा; मरा० चाखणे] १. किसी खाद्य वस्तु का स्वाद जानने के लिए उसका थोडा-सा अश मुँह मे रखना या खाना। चीखना। २ किसी चीज या बात की साधारण अनुमति प्राप्त करना। जैसे—लडाई का मज़ा चखना।

चखा—पु० [हिं० चखना] १. चखनेवाला। २. रस का आस्वादन करने-वाला। प्रेमी। रसिक। उदा०—विपिन विहारी दोउ लसत एक रूप सिंगार। जुगल रस के चखा।—सत्यनारायण।

चखा-चखी—स्त्री० [फा० चख =झगडा] १ जोरो का या बहुत अधिक लडाई-झगडा या तकरार। २ बहुत अधिक वैर-विरोध या लाग-डाँट।

चखाना—स० [हिं० 'चखना' का प्रे०] किसी को कुछ चखने मे प्रवृत्त करना।

चखिया—वि० [फा० चख =झगडा] चख-चख या तकरार करनेवाला। झगडालू।

चखु*—पु० =चक्षु।

चखोड़ा†—पु० [हिं० चख+ओड] बुरी नजर से बचाने के लिए लगाई जानेवाली काली बिंदी। डिठौना। उदा०—बनि रहे रुचिर चखोडा गाल।—नददास।

चखौती—स्त्री० [हिं० चखना] खाने-पीने की चट-पटी और स्वादिष्ट चीजें।

चगड़—वि० =चघड़।

चगताई—पु० [तु०] मध्य एशिया निवासी तुर्कों का एक प्रसिद्ध वश जो चगताई खाँ से चला था। बाबर, अकबर, औरगजेब आदि इसी वश के थे।

चगत्ता—पु० दे० 'चगताई'।

चंगर—पु० [देश०] १. घोड़ो की एक जाति। २ एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।

चगुनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जो प्रायः १८ इच लंबी होती है।

चघड़—वि० [देश०] १ चतुर। चालाक। २ धूर्त।

चचर—स्त्री० [देश०] वह जमीन जो बहुत दिन परती रहने के बाद पहली बार जोती तथा बोई गई हो।

चचरा—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

†वि० =चचेरा।

चचा—पु० [स० तात] [स्त्री० चची] =चाचा।

मुहा०—**(किसी को) चचा बनाना या बनाकर छोड़ना**=उचित दड या प्रतिफल देना। (व्यंग्य)

चचिया—वि० उभ० [हिं० चचा] संबध मे चाचा या चाची के स्थान पर पडने या होनेवाला। जैसे—चचिया ससुर चचिया सास अर्थात् पति या पत्नी का चाचा या चाची।

चचींड़ा†—पु० [स० चिचिडा] १ एक प्रकार की लता। २ इस लता के फूल जो तरोई की तरह के होते और तरकारी बनाने के काम आते है। ३ दे० 'चिचडा'।

चचेंड़ा†—पु० =चचीडा।

चचेरा—वि० [हिं० चचा] [स्त्री० चचेरी] १ चाचा से उत्पन्न। जैसे—चचेरा भाई, चचेरी बहन। २. सबध के विचार से चाचा या चाची के स्थान पर पडने या होनेवाला। चचिया। जैसे—चचेरी सास।

चचोड़ना—स० [अनु० वा० देश०] दाँत से खीच या दवाकर खाना या रस चूसना। दाँतो से दवा-दवाकर खाना या चूसना। जैसे—आम चचोडना।

चचोड़वाना—स० [हिं० 'चचोडना' का प्रे०] किसी को चचोडने मे प्रवृत्त करना।

चच्चर—पु० दे० 'चाँचर'।

चच्छु*—पु० = चक्षु।

चच्छुस्रवासी*—पु० [स० चक्षु श्रवस्] सर्प। साँप। उदा०—सो लट भई तेहि चच्छुस्रवासी।—जायसी।

चट—क्रि० वि० [अनु०] १. चट शब्द करते हुए। २ जल्दी से। झट। तुरत।

पद—चट-पट (देखें)।

मुहा०—चट से = वहुत जल्दी। तुरत।

पु० १ वह शब्द जो किसी कडी वस्तु के टूटने पर होता है। जैसे—लकडी या शीशा चट से टूट गया। २ उँगलियो के पोर जोर से खीचने पर अदर की हड्डियो की रगड से होनेवाला शब्द।

क्रि० प्र०—वोलना।

भू० कृ० [हिं० चाटना] १ (पदार्थ) जो चाट या खाकर समाप्त कर दिया गया हो। २ (धन) जो भोग आदि के द्वारा नष्ट या समाप्त कर दिया गया हो।

मुहा०—चट कर जाना =(क) सव खा जाना। (ख) दूसरे की वस्तु लेकर न देना। दवा रखना। **चट करना** =खाना या निगलना।

पु० [स० चित्र, हिं० चित्ती] १. दाग। धव्वा। २. घाव आदि के कारण शरीर पर वना हुआ चिह्न या दाग। ३. चकत्ता। ४ ऐब। दोष। ५. कलक। लाछन।

†पु० [?] पटसन का वना हुआ टाट।

चटक—पु० [स० √चट् (भेदन करना) +क्वुन्—अक] [स्त्री० चटका] १. गौरा पक्षी। गौरैया। चिडा।

पद—चटकाली (देखें)।

२. पिप्पलामूल।

स्त्री० [स० चटुल = सुन्दर] चटकीलापन। चमक-दमक। काति।

पद—चटक-मटक (देखें)।

३ छापे के कपडो को साफ करने का एक ढग।

वि० चटकीला। चमकीला। जैसे—कटक रग, चटक चाँदनी।

स्त्री० १ फुरतीलापन। तेजी। २ चचलता। शोखी।

वि० १ फुरतीला। तेज। २ चटपटा। चटकारा।

क्रि० वि० चटपट। शीघ्रता से। तुरंत।

चटकई†—स्त्री० [हिं० चटक] १. चटक होने की अवस्था या भाव। २ चमकीलापन। ३. तेजी। फुरती। ४ जल्दी।

चटकदार—वि० [हिं० चटक +फा० दार (प्रत्य०)] १ जिसमे चटक या चमक-दमक हो। चमकते हुए रगवाला। चमकीला। २ तेज। फुरतीला।

चटकना—अ० [अनु० चट] १ 'चट' शब्द करते हुए टूटना या फूटना। हलकी आवाज के साथ टूटना या तडकना। कड़कना। जैसे—शीशा चटकना। २ किसी वीच मे कही से कुछ कट या फट जाना। हलकी दरार पडना। जैसे—लकडी चटकना। ३ कोयले, लकडी आदि का जलते समय चट-चट शब्द करना। ४ कलियो आदि का चट-चट शब्द करते हुए खिलना। जैसे—गुलाव की कलियाँ चटकना। ५. चिढकर अप्रसन्न होना या हलका क्रोध दिखलाना। रुष्ट होना। जैसे—तुम तो जरा-सी वात मे चटक जाते हो। ६ आपस मे अनवन या विगाड होना।

वि० जल्दी चटकने या टूटनेवाला।

पु० तमाचा। थप्पड।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

चटकनी—स्त्री० = सिटकिनी (दरवाजे की)।

चटक-मटक—स्त्री० [हिं० चटक +मटक] नाज-नखरे से लोगो को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए शरीर के कुछ अग हिलाने-डुलाने की क्रिया या भाव।

चट-कल—स्त्री० [हिं० चट = पटसन +कल (यंत्र)] वह कारखाना जहाँ जूट या पटसन की चीजें वनती हो।

चटकवाही†—स्त्री० [हिं० चटक + वाही (प्रत्य०)] १ शीघ्रता। जल्दी। २ तेजी। फुरती।

चटका—पु० [हिं० चटकना] १ चटकने की क्रिया या भाव। २ मन उचटने का भाव या स्थिति। विराग। ३ तमाचा। थप्पड।

पु० [हिं० चाट] १ चरपरा स्वाद। २ सुख या स्वाद मिलने के कारण उत्पन्न होनेवाली लालसा। चसका।

पु० [देश०] हरे चने की डोडी। पपटा।

पु० [स० चित्र, हिं० चट्टा] १ दाग। धव्वा। २ शरीर पर पड़नेवाला चकत्ता।

†पुं० [हिं० चट] १ शीघ्रता। जल्दी। २ तेजी। फुरती।

चटकाई*—स्त्री० [हिं० चटक +आई (प्रत्य०)] चटकीलापन। उदा०—लगत चित्र सी नदनादि वन की चटकाई।—रत्ना०।

चटकाना—स० [हिं० चटकना हिं० चटकना का स०] १ किसी को चटकने मे प्रवृत्त करना। ऐसा करना जिससे कुछ चटके। २ उँगलियो के पोरो को इस प्रकार झटके से खीचना या जोर से दवाना कि उनमे से चट शब्द निकले। ३. किसी चीज से चट चट शब्द उत्पन्न करना। जैसे—जूतियाँ चटकाना। देखे 'जूती' के अन्तर्गत। ४ चट शब्द उत्पन्न करते हुए कोई चीज तोडना। ५ किसी व्यक्ति को इस प्रकार अप्रसन्न या उद्विग्न करना कि वह कड़वी और रूखी वातें करने लगे। ६ किसी के मन मे विरक्ति उत्पन्न करके उसे कही से चले जाने या भगाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—ये लोग नये नौकर को टिकने नही देते, उसे आते ही चटका देते हैं। ७. चिढाना।

चटकारा—पु० [अनु० चट] १ किसी चटपटी वस्तु के खाते या चाटते समय तालू पर जीभ टकराने से होनेवाला शब्द।

पद—चटकारे का = इतना स्वादिष्ठ कि खाने या पीने के समय मुँह से चट चट शब्द होता हो। जैसे—चटकारे की तरकारी या हलुआ।

२. कोई स्वादिष्ठ चीज खाने या पीने के वाद उसके स्वाद की वह स्मृति जो वह चीज फिर से खाने या पीने का चसका उत्पन्न करे।

मुहा०—चटकारे भरना = खूब चाट-चाटकर और स्वाद लेते हुए

कोई चीज खाना या पीना। खाने-पीने के समय जीभ से होंठ चाटते रहना।
† वि० १ =चटकीला। २ =चटपटा।
वि० [स० चटुल] [स्त्री० चटकारी] चंचल। चपल।

चटकारी*—स्त्री० [अनु०] चुटकी, जिसे बजाने पर चट-चट शब्द होता है।
क्रि० प्र० —बजाना।—भरना।

चटकाली—स्त्री० [स० चटक-आली, ष० त०] १ चटको अर्थात् गौरा पक्षियो की पंक्ति या समूह। २ चिडियो की पंक्ति या समूह।

चटका-शिरा—स्त्री० [ष० त०] पिपरामूल।

चटकाहट—स्त्री० [हिं० चटकना] १ कोई चीज चटकने से उत्पन्न होने-वाला चट शब्द। उदा०—फूलति कली गुलाब की चटकाहट चहुँ-ओर।—बिहारी। २ चटकने या तडकने की क्रिया या भाव।

चटकी—स्त्री० [स० चटक] बुलबुल की तरह की एक चिडिया।
† स्त्री० = चटका।

चटकीला—वि० [हिं० चटक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चटकीली] [भाव० चटकीलापन] १ (रग) जो चमकीला और तेज हो। जैसे—चटकीला लाल या हरा। २ (पदार्थ,) जिसका रग चमकीला और तेज हो। जैसे—चटकीला कपडा, चटकीली धारियाँ। ३ जिसमे खूब आभा और चमक हो। जैसे—मुख की चटकीली ज्योति या छवि। ४ (खाद्य पदार्थ) जिसमे खूब नमक, मिर्च और मसाले पडे हो। जैसे—चटकीली तरकारी। ५ (बात) जो चित्ताकर्षक तथा सुदर हो। लुभावना। जैसे—चटकीला राग। ६ (पदार्थ) जिसका स्वाद उग्र या तीव्र हो। जैसे—दाल मे नमक कुछ चटकीला है।

चटकीलापन—पु० [हिं० चटकीला +पन (प्रत्य०)] चटकीले होने की अवस्था, गुण या भाव।

चटकोरा*—पु० [अनु०] एक प्रकार का खिलौना।

चटखना—अ० = चटकना।
पु० =चटकना।

चटखनी†—स्त्री० = चटकनी (सिटकिनी)।

चटखारा—वि०, पु० = चटकारा।

चट-चट—स्त्री० [अनु०] किसी चीज के चटकने या तडकने के समय होने-वाला चट-चट शब्द। जैसे—चट-चट करके छत की कई कडियाँ टूट गई। २ किसी चीज के जलने या फटने के समय होनेवाला चट-चट शब्द। जैसे—लकडियाँ चट चट करती हुई जल रही थी। ३ उँगलियाँ चटकाने पर होनेवाला चट-चट शब्द।
क्रि० वि० चट-चट शब्द उत्पन्न करते हुए।
मुहा०—चट-चट बलैयाँ लेना = प्रिय व्यक्ति (विशेषत. बच्चे) को विपत्ति, सकट आदि से बचाने के उद्देश्य से उँगलियाँ चटकाते हुए उसकी मगल-कामना करना। (स्त्रियाँ)

चटचटा—पु० [अनु०] बार-बार होनेवाला चट-चट शब्द।
वि० [स्त्री० चटचटी] जिसमे से बार-बार चट-चट शब्द होता हो। जैसे—चट-चटी लकडी (जलाने की)।

चटचटाना—अ० [हिं० चट चट+आना (प्रत्य०)] १. किसी वस्तु का चट-चट शब्द करना। २ चट-चट शब्द करते हुए किसी वस्तु का टूटना या तड़कना। ३ चट-चट शब्द करते हुए जलना।
स० चट-चट शब्द करते हुए कोई काम करना।

चटनी—स्त्री० [हिं० चाटना] १ चाटकर खाई जानेवाली वस्तु। अवलेह। २ आम, इमली, पुदीना आदि खट्टी वस्तुओ मे नमक, मिर्च, धनिया आदि मिलाकर गीला पीसा या घोला हुआ गाढा चरपरा अवलेह जो भोजन का स्वाद तीक्ष्ण करने के लिए उसके साथ खाया जाता है।
मुहा०—(किसी की) चटनी करना या बनाना = (क) पदार्थ आदि तोड-फोडकर चूर-चूर करना। (ख) व्यक्ति आदि को बहुत अधिक मारना। **(किसी चीज का) चटनी होना या हो जाना** = (क) खाद्य पदार्थ का स्वादिष्ठ होने के कारण सब मे इस प्रकार थोड़ा-थोडा बँट जाना कि कुछ भी बाकी न बचे। (ख) किसी चीज का कम होने के कारण थोडा-थोडा काम मे लगने या बँटने पर कुछ भी बाकी न बचना।
३ काठ का चार-पाँच अंगुल लबा एक खिलौना जिसे छोटे बच्चे मुँह मे डालकर चाटते या चूसते हैं।

चटप—स्त्री० [अनु०] १ आक्रमण। २ मनोवेग की प्रबलता। उदा०—काम स्याम तनु चटप कियौ। —सूर।

चट-पट—क्रि० वि० [अनु०] १ बहुत जल्दी। तुरत। जैसे—चट-पट चले जाओ। २ अपेक्षाकृत बहुत थोडे समय मे। जैसे—काम चट-पट खतम कर यहाँ चले आना।
वि० [स्त्री० चटपटी] = चटपटा।

चटपटाना†—अ० [हिं० चटपट] जल्दी मचाना।
स० किसी को जल्दी करने मे प्रवृत्त करना।

चटपटी—स्त्री० [हिं० चटपट] १ जल्दी। शीघ्रता। २ उतावली। हडबडी।
क्रि० प्र०—पडना।—मचना।
३. आकुलता। घबराहट। ४ बेचैनी। विकलता। उदा०—मो दृग लागि रूप, दृगन लगी अति चटपटी।—बिहारी। ५ उत्सुकता। छट-पटी।
स्त्री० [हिं० चटपटा] खाने की चटपटी चीज। चाट। जैसे—कचालू आदि।

चटर—पु० [अनु०] चट-चट शब्द।

चटर-चटर—स्त्री० [अनु०] खडाऊँ पहनकर चलने से होनेवाली चट-चट की ध्वनि।

चटरजी—पु० [ब० चाटुर्ज्या] बगाली ब्राह्मणो की एक शाखा। चट्टो-पाध्याय।

चटरी†—स्त्री० [देश०] १ खेसारी नाम का अन्न। लतरी। २. रबी की फसल के साथ उगनेवाली एक वनस्पति।

चटवाना—स० [हिं० चाटना का प्रे०] किसी को कुछ चाटने मे प्रवृत्त करना। चटाना।

चटशाला—स्त्री० [हिं० चट+स० शाला] छोटे बच्चो की पाठशाला।

चटसार—स्त्री०=चटशाला।

चटसाल—स्त्री०=चटशाला।

चटा—पु० [हिं० चटशाला] चटशाला मे पढ़नेवाला बालक या विद्यार्थी। उदा०—मनौ मार-चटसार सुढार चटा-से पढही।

चटाई—स्त्री० [स० कट=चटाई?] बाँस आदि खर जाति के डठलो की खपाचियो, ताड आदि के पत्तो का एक दूसरे मे गूँथकर बनाया हुआ लबा आसन या आस्तरण।

स्त्री० [हिं० चाटना] चटाने या चाटने की क्रिया या भाव।

चटाईदार—वि० [हिं० चटाई+फा० दार] जिसकी बुनावट या रचना चटाई की बनावट की तरह हो। जैसे—धोती का चटाईदार किनारा, गले मे पहनने की चटाईदार सिकडी।

चटाक—पु० [अनु०] १ वह शब्द जो दो वस्तुओं के टकराने अथवा किसी वस्तु के गिरने, टूटने आदि से होता है।

क्रि० वि० चट या चटाक शब्द उत्पन्न करते हुए।

पद—चटाक-पटाक=(क) चटाक या चट-चट शब्द के साथ। (ख) बहुत जल्दी। तुरन्त।

२ थप्पड मारने से होनेवाला शब्द।

†पु०=चकत्ता (दाग)।

चटाकर—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड जिसका फल खट्टा होता है।

चटाका—पु०[अनु०] १ लकडी या और किसी कडी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द। २ तीव्रता। प्रबलता।

मुहा०—चटाके का=कडाके का। जोरो का।

३ थप्पड जिसके लगने से चटाक शब्द होता है। (पश्चिम)

क्रि० वि० चट-पट। तुरन्त।

चटाख†—पु०=चटाक।

चटाचट—स्त्री० [अनु०] क्रमश अथवा लगातार टूटती हुई वस्तुओ से होनेवाला चट-चट शब्द।

क्रि० वि० एक पर एक। लगातार। जैसे—उसे चटाचट थप्पड लगे।

चटान†—स्त्री० =चट्टान।

चटाना—स० [हिं० चाटना का प्रे०] १. किसी को कुछ चाटने मे प्रवृत्त करना। जैसे—बच्चे को खीर चटाना। २ थोडा-थोडा खिलाना। जैसे—बच्चे को कुछ चटा दो। ३. घूस या रिश्वत देना। जैसे—कचहरी वालो को कुछ चटाकर अपना काम निकालना। ४ छुरी, तलवार आदि की धार रगडकर या और किसी प्रकार तेज करना। जैसे—चाकू को पत्थर चटाना।

चटापटी—स्त्री० [हिं० चटपट] १ चटपटी। जल्दी। २. ऐसा रोग या महामारी जिसमे लोग चटपट या बहुत जल्दी मर जाते हो।

क्रि० वि०=चट-पट।

चटावन—पु०[हिं० चटाना] १. चटाने की क्रिया या भाव। २. हिंदुओ का एक सस्कार जिसमें छोटे बच्चे के मुँह मे पहले-पहल अन्न लगाया जाता है। अन्नप्राशन।

चटिक—क्रि० वि० [हिं० चट] चटपट। तत्काल। तुरत।

चटिका—स्त्री० [स० चटक+टाप् ,इत्व] पिपरामूल।

चटियल—वि०[देश०] (मैदान) जिसमे पेड, पौधे आदि बिलकुल न हो। उजाड और सपाट।

चटिया—पु० [हिं० चटशाला+इया (प्रत्य०)] १ चटशाला मे पढने-वाला अथवा पढा हुआ विद्यार्थी। २ चेला। शिष्य।

चटिहाट—वि०[देश०] १ उजड्ड। २ जड। मूर्ख।

चटी†—स्त्री०१ =चटसार। २ =चट्टी।

चटु—पु० [स०√चट् (भेदन करना)+कु] १ खुशामद। चापलूसी। २ उदर। पेट। ३. यतियो, योगियो आदि का आसन।

चटुक—पु० [स० चटु+कन्] काठ का बडा बरतन। कठौता।

चटुकार—वि० [स० चटु,√कृ (करना)+अण्, उप० स०] खुशामद करनेवाला।

चटुल—वि० [स० चटु+लच्] १. चचल। चपल। २. सुंदर। ३. मधुर-भाषी।

चटुला—स्त्री० [स० चटुल+टाप्] १ बिजली। २ प्राचीन काल का स्त्रियो का एक प्रकार का केश-विन्यास।

चटु-लालस—वि० [ब०स०] (व्यक्ति) जो अपनी खुशामद करवाना चाहता हो। खुशामद-पसन्द।

चटुलित—भू० कृ० [स० चटुल+इतच्] १. हिलाया हुआ। २ बनाया-सँवारा या सजाया हुआ।

चटुल्लोल—वि० [सं० चटुल-लोल, कर्म० स० नि० सिद्धि] १ चंचल। २ सुन्दर। ३ मधुर भाषी।

चटैल†—वि०=चटियल।

चटोर—वि० दे० 'चटोरा'।

चटोरपन—पु०=चटोरापन।

चटोरा—वि० [हिं० चाट+ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० चटोरी] १. जिसे चटपटी चीजें खाने का शौक हो। २ अधिक खाने का लोभी। ३. जो अपनी संपत्ति या पूँजी खा-पका गया हो।

चटोरापन—पुं० [हिं० चटोरा+पन (प्रत्य०)] चटोरे होने की अवस्था, गुण या भाव।

चट्टा†—वि० [हिं० चाटना] १ (खाद्य पदार्थ) जिसे अच्छी तरह खा या चाट लिया गया हो। २. (माल) जो खा-पीकर खत्म कर दिया गया हो। ३ जिसका कुछ भी अश न बच रहा हो।

क्रि० वि०=चट।

चट्टा—पु० [सं० चेटक=दास] चेला। शिष्य।

पु० [देश०] १. चटियल मैदान। २. चकत्ता। ददोरा। ३ ईंटों, बालू, मिट्टी आदि को गिनने या नापने के लिए उनका लगाया या बनाया हुआ सुव्यवस्थित थाक या ढेर।

पुं०[सं० कट+चटाई ?] बाँस आदि की लम्बी चटाई।

चट्टान—स्त्री० [हिं० चट्टा] १ पत्थर का बहुत बडा और विशाल खड। २ किसी वस्तु का बहुत बडा और ठोस टुकडा। जैसे—नमक की चट्टान। ३ ऐसी वस्तु जिसमे चट्टान की-सी दृढता या स्थिरता हो।

चट्टा-बट्टा—पु० [हिं० चट्टू=चाटने का खिलौना+ बट्टा=गोला] १ काठ के खिलौनो का समूह जिसमे चट्टू, झुनझुने, गोले आदि रहते है।

मुहा०—चट्टे-बट्टे लड़ाना=इधर की बाते उधर कहकर लोगो को आपस मे लडाना या उनमे वैर-विरोध उत्पन्न कराना।

२. वे गोले जिन्हे बाजीगर झोले में से निकालकर लोगो को दिखाते है।

पद—एक ही थैले के चट्टे-बट्टे=एक ही गुट के मनुष्य। एक ही तरह या स्वभाव के लोग।

चट्टी—स्त्री०[हिं० चट्टा या अनु०] टिकान। पडाव। मजिल। (विशेषत. पहाडी इलाको मे प्रयुक्त)

स्त्री० [अनु० चट चट] खुली एडी का एक प्रकार का जूता।

स्त्री०[हिं० चाँटा=चपत] १ क्षति। २ जुरमाना। दड।

क्रि० प्र०—भरना।

चट्टू†—वि०=चटोरा।
पु० [अनु०] १ पत्थर का बड़ा खरल। २. छोटे बच्चो का एक प्रकार का खिलौना जिसे वे प्राय मुँह मे रखकर चाटते या चूसते रहते है। चुसनी।

चड़—पु०[अनु०] १ लकड़ी आदि के टूटने या फटने से होनेवाला शब्द। २ सूखी लकड़ी के जलने, टूटने आदि से होनेवाला शब्द।

चड़ना†—अ०=चढ़ना। (पजाब और राजस्थान)

चड-बड़—स्त्री०[अनु०] निरर्थक प्रलाप। टें-टें। बक-बक।

चड़ाक—पु० [अनु०] किसी वस्तु के टूटने, फूटने, नोचे जाने पर होनेवाला चड शब्द।

चडी—स्त्री० [स० चरण या हिं० चढना?] उछलकर मारी जानेवाली लात।

चड्डा—पु० [देश०] जघे का ऊपरी भाग।
वि० मूर्ख।

चड्डी—स्त्री० [हिं० चड्डा] एक प्रकार का लँगोट।

चड्ढी—स्त्री० [हिं० चढना] बच्चो का एक खेल जिसमे वे एक दूसरे की पीठ पर चढकर सवारी करते हैं।
मुहा०—**चड्ढी गाँठना**—सवारी करना। **चड्ढी देना**—हारने पर पीठ पर सवार कराना।

चड्‌ढो—स्त्री० [हिं० चुड=भग] स्त्रियो के लिए एक प्रकार की गाली जो उनकी दुश्चरित्रता की सूचक होती है।

चढ़त—स्त्री० [हिं० चढाना] वह जो कुछ चढाया (श्रद्धापूर्वक देवी-देवता को भेंट किया) गया हो।

चढ़ता—वि० [हिं० चढना] [स्त्री० चढती] १. आरम्भ होकर बढता हुआ। जैसे—चढता दिन। २ जिस की अभिवृद्धि, उन्नति या विकास हो रहा हो। विकासशील। जैसे—चढती जवानी। ३ किसी की तुलना मे अच्छा या बढिया। जैसे—इससे भी चढती धोती लाओ।
†पु० पूरब की दिशा जिधर से सूर्य चढता या निकलता है। (पश्चिम)

चढ़न—स्त्री० [हिं० चढना] १ चढने या चढाने की क्रिया या भाव। चढ़ाई। २ देवताओ पर चढाया हुआ धन आदि। चढावा। चढत।

चढ़नदार—पु० [हिं० चढना+फा० दार (प्रत्य०)] वह मनुष्य जिसे व्यापारी गाडी, नाव आदि पर चढाकर माल के साथ उसकी रक्षा के लिए भेजते हैं। (लश०)

चढ़ना—अ० [स० उच्चलन या चलन, प्रा० उच्चउन, चड्डन] १ केवल पैरो की सहायता से यो ही अथवा हाथो का सहारा लेते हुए ऊपर की ओर बढना। जैसे—(क) आदमियो का पहाड या सीढियो पर चढना। (ख) गिलहरियो या बदरो का पेड़ो पर चढ़ना। २. कही चलने या जाने के लिए अथवा यो ही किसी चीज, जानवर, सवारी आदि के ऊपर बैठना या स्थित होना। आरोहण करना। जैसे—(क) घोडे, झूले नाव, पालकी या रेल पर चढना। (ख) किसी की गोद अथवा कधे, पीठ, सिर आदि पर चढना। ३ किसी विशिष्ट उद्देश्य से और जान-बूझकर चल या जाकर पहुँचना। जैसे—(क) मुकदमा चलाने के लिए कचहरी चढना। (ख) मार-पीट करने के लिए किसी के घर या दूकान पर चढना। (ग) युद्ध करने के लिए शत्रु के देश पर चढना।
मुहा०—**(किसी पर) चढ़ बैठना**=किसी को पूरी तरह से अपने अधीन करते हुए विवश कर देना।
४ किसी प्रकार के क्रमिक विकास मे ऊपर की ओर अग्रसर होना या आगे बढना। जैसे—(क) लडको का दरजा चढना। (ख) दिन या वर्ष चढ़ना। (ग) ताप-मापक यत्र का पारा चढना। ५ किसी चीज का मान, मूल्य आदि बढना। जैसे—(क) गाने-बजाने मे स्वर चढ़ना। (ख) बाजार मे चावल या चीनी का दाम (या भाव) चढना।
मुहा०—**(किसी की) चढ़ बनना**=यथेष्ट प्रभाव, सफलता आदि के कारण किसी का महत्त्व या मान बहुत बढ जाना। जैसे—मत्री हो जाने पर तो अब उनकी और भी चढ बनी है।
६. देवी-देवता आदि के सामने श्रद्धा-भक्ति से निवेदित और समर्पित किया जाना। जैसे—(क) मदिर मे दक्षिणा या मिठाई चढना। (ख) देवी के आगे बकरा या भेंडा चढना। ७ किसी प्रकार या रूप से ऊपर की ओर उठना, खिचना, तनना या बढना। जैसे—(क) गुड्डी का आसमान मे चढना। (ख) तालाब या नदी का पानी चढना। (ग) कुरते की आस्तीन या पायजामे का पाँयचा चढना। ८ एक चीज का दूसरी चीज पर टाँका, बैठाया, मढ़ा, रखा या लगाया जाना। स्थापित या स्थित किया जाना। जैसे—(क) साडी पर गोटा-पट्ठा या बेल चढना। (ख) चूल्हे पर कडाही या तवा चढना। (ग) किताब पर जिल्द, तकिये पर गिलाफ या तसवीर पर चौखटा और शीशा चढ़ना। ९ किसी प्रकार की प्रक्रिया से किसी चीज के ऊपरी तल या भाग पर पोता, फैलाया या लगाया जाना। जैसे—(क) कपडे या दरवाजे पर रग चढना। (ख) बिजली की सहायता से चाँदी पर सोना चढना। १० ग्रहो, नक्षत्रो आदि का उदित होकर आकाश मे ऊपर आना या उठना। जैसे—चद्रमा या सूर्य चढना। ११ कुछ विशिष्ट प्रकार के बाजो की डोरी, तार, बधन आदि का आवश्यकता से अधिक कडा या कसा हुआ होना, जिसके फल-स्वरूप ध्वनि या स्वर अपेक्षया अधिक ऊँचा या तीव्र होता है। जैसे— तबला या सारगी चढना। १२ किसी प्रकार की क्रिया या प्रक्रिया का आरभ, सचार या सपादन होना। जैसे—बुखार चढना, रसोई चढना। १३ कुछ विशिष्ट प्रकार की दशाओ, मनोवेगो आदि का उत्कट या तीव्र रूप धारण करते हुए प्रत्यक्ष या स्पष्ट होना। जैसे—(क) जवानी, नशा या मस्ती चढना। (ख) उमग, गुस्सा, दिमाग, शेखी या शौक चढना। १४ बही-खाते आदि मे नामो, रकमो आदि का यथास्थान अकित होना या लिखा जाना। जैसे—(क) रजिस्टर मे नाम चढना। (ख) बही मे हिसाब चढना।

चढ़वाना—स० [हिं० चढाना का प्रे०] १. किसी को कही चढने मे प्रवृत्त करना। २ (माल आदि) चढाने का काम कराना।

चढ़ाई—स्त्री० [हिं० चढना] १ चढने अर्थात् ऊँचे स्थल की ओर जाने की क्रिया या भाव। २ ऐसी भूमि जिसका विस्तार एक ओर से बराबर ऊँचा होता गया हो। ऊँचाई की ओर जानेवाली भूमि। ३ विपक्षी या शत्रु-राज्य अथवा व्यक्ति के अधिक्षेत्र मे पहुँचकर उस पर हठात् किया जानेवाला आक्रमण। ४ दे० 'चढन'।

चढ़ाउ†—पु० =चढाव।

चढ़ा-उतरी—स्त्री० [हिं० चढना+उतरना] १ बार-बार चढने तथा उतरने की क्रिया या भाव। २. दे० 'चढा-ऊपरी'।

चढ़ा-ऊपरी—स्त्री० [हिं० चढना +ऊपर] १ आर्थिक क्षेत्र मे, कोई चीज खरीदने के समय उसके खरीददारो का एक दूसरे से वढ-चढकर मूल्य देने को प्रस्तुत होना। २ एक दूसरे से आगे वढने या निकलने का प्रयत्न करना।

चढा-चढ़ी—स्त्री० [हिं० चढना] १ बार-बार लोगो के ऊपर चढने की क्रिया या भाव। २ चढा-ऊपरी।

चढ़ान† —स्त्री० [हिं० चढना] १ चढने की क्रिया या भाव। २ ऐसा स्थान जो बराबर ऊपर की ओर उठता या चढता चला गया हो। जैसे-पहाड की चढान।

चढ़ाना—स० [हिं० चढना] १ किसी को चढने मे अर्थात् ऊपर की ओर जाने मे प्रवृत्त करना। २ उठाकर किसी चीज को ऊँचाई पर ले जाना। ३. यान, सवारी आदि पर किसी को बैठाना। जैसे—लडके को घोडी पर (विवाह के समय) चढाना। ४ किसी प्रकार के क्रमिक विकास मे ऊपर की ओर अग्रसर करना या बढाना। ५ किसी चीज का मान, मूल्य आदि बढाना।

मुहा०—सिर पर चढ़ाना (दे०)।

६ श्रद्धापूर्वक कोई चीज समर्पित करना। जैसे—भगवान को फल चढाना। ७ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज उच्च स्तर पर पहुँचे। जैसे—(क) आस्तीन चढाना। (ख) गुड्डी या पतग चढाना। ८ कोई चीज या आवरण किसी चीज पर रखना या पहनाना। जैसे—(क) चूल्हे पर कड़ाही चढाना। (ख) तकिये पर खोली चढाना। ९. लेप आदि पोतना या लगाना। जैसे—दीवारो पर रग चढाना। १०. कोई क्रिया, मनोवेग या व्यापार तीव्र करना। जैसे—किसी को गुस्सा चढाना। ११. वही, खाते आदि पर कोई आय या व्यय की मद लिखना। १२. अपने ऊपर या सिर पर लेना। जैसे—कर्ज चढाना।

चढ़ाव—पु० [हिं० चढना] १ चढने या चढाने की क्रिया या भाव।

पद—चढ़ाव-उतार =ऊँचा-नीचा स्थान।

२. बराबर आगे या ऊपर की ओर होनेवाली गति। ३ वढती। वृद्धि।

पद—चढ़ाव-उतार= (क) एक ओर मोटे और दूसरी ओर पतले होने का भाव। (ख) उन्नति और अवनति।

४ दर या भाव की तेजी। ५ वह दिशा जिधर से जल-धारा आ रही हो। ६ स्वर का आरोह। ७ काम-वासना। ८ दरी के करघे का वह बाँस जो वुननेवाले के पास रहता है। ९. दे० 'चढावा' १. और २।

चढ़ावा—पु० [हिं० चढाना] १ वे आभूषण जो विवाह के समय कन्या को पहनने के लिए वर-पक्ष के घर से आते है। २ कन्या को विवाह के समय उक्त आभूषण पहनाने की एक रीति। ३ वे चीजे जो श्रद्धापूर्वक किसी देवता को चढाई जायँ। पुजापा। ४ उत्तेजना। बढावा। ५ टोटके की वह सामग्री जो बीमारी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए किसी चौराहे या गाँव के किनारे रखी जाती है। उतारा।

चढैत—वि० [हिं० चढना +ऐत (प्रत्य०)] १. चढनेवाला। २ सवार होनेवाला।

चढ़ैया*—वि० [हिं० चढना +ऐया (प्रत्य०)] चढने या चढानेवाला। उदा०—छात्र छत्र को छेम चपरे चित चाव-चढैया।—रत्ना०।

चढौआ—पु०—चढावा।

चढ़ौवाँ—वि० [हिं० चढाना] १ (पदार्थ) जो चढाया जाता हो। २ (जूता) जिसकी एडी ऊँची या उठी हुई हो।

चण—पु० [स० √चण् (देना) +अच्] चना।

चणक—पु० [स० √चण् +क्वुन्—अक] १ चना। २ एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

चणका—स्त्री० [स० चणक +टाप्] तीसी।

चणकात्मज—पु० [स० चणक-आत्मज, प० त०] चणक के पुत्र, चाणक्य।

चण-द्रुम—पु० [उपमि० स०] १ क्षुद्र गोक्षुर। छोटा गोखरू। २. एक प्रकार का रोग।

चणपत्री—स्त्री० [व० स०, ङीप्] रुदती नामक पौधा।

चणिका—स्त्री० [स० चणक +टाप्, इत्व] एक प्रकार की घास जो औषध के काम आती है।

चणिया—पु० [गुज० चणियो] औरतो का छोटा घाघरा।

चतरंग†—पु० =चतुरग।

चतर†—वि० =चतुर।

†पु० =छत्र।

चतरना—अ० [हिं० छितराना] छितराया जाना।

स० छितराना।

†स० =चितरना।

चतरभंग—पु० [स० छत्र-भग] १ वैल के डिल्ले का मास एक ओर लटक जाने की अवस्था, भाव या दोष। २ दे० 'छत्र-भग'।

चतरभौंगा—वि० [हिं० चतरभग] (वैल) जिसके डिल्ले का मास एक ओर लटक गया हो।

चतुःशाख—वि० [स० चतुर्-शाखा, व० स०] चार शाखाओवाला।

पु० देह। शरीर।

चतुःसीमा(मन्)—स्त्री० [स० चतुर्-सीमन्, प० त०] किसी क्षेत्र, भवन आदि के चारो ओर की सीमा। चौहद्दी।

चतुरंग—वि० [स० चतुर्-अग, व० स०] [स्त्री० चतुरगिणी] जिसके चार अग हो। चार अगोवाला।

पु० १ सेना के चार अग—हाथी, घोडा रथ और पैदल। २ चतुरगिणी सेना का सेनापति। ३ चतुरगिणी (सेना)। ४ सगीत मे वह गाना जिसमे उसके साधारण वोल के साथ सरगम, तराने और किसी वाद्य (जैसे-तवला, सितार आदि) के वोल भी मिले हो। ५ शतरज का खेल।

चतुरंगिणी—स्त्री० [स० चतुर्-अग, कर्म० स०+इनि] ऐसी सेना जिसमे हाथी, घोडे, रथ और पैदल ये चारो अग हो।

चतुरंगी—वि० =चतुर। उदा०—चित्रन होर च्यति मनरे चतुरगी नाह। —चन्दवरदाई।

चतुरंगुल—पु० [स० चतुर्-अगुल, व० स०] अमलतास।

चतुरंगुला—स्त्री० [स० चतुरगुल +टाप्] शीतल लता।

चतुरंता—स्त्री० [स० चतुर्-अत, व० स०, टाप्] पृथ्वी।

चतुर—वि० [स० √चत् (याचना करना) + उरच्] १ (व्यक्ति) जिसकी वुद्धि प्रखर हो और इसी लिए जो हर काम वहुत समझ-बूझकर तथा जल्दी करता हो। कार्य और व्यवहार मे कुशल। २ अपना मतलव निकाल लेनेवाला। ३ निपुण। दक्ष। ४ चालाक। धूर्त्त। ५ जिसे वाते वनानी खूव आती हो।

चतुरई—†स्त्री० =चतुराई।

चतुरक—पु० [स० चतुर+कन्] चतुर।
चतुर-क्रम—पु [व० स०?] सगीत मे ३२ मात्राओ का एक प्रकार का ताल।
चतुरता—स्त्री० [स० चतुर+तल—टाप्] चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव।
चतुरदसगुन*—पु० =चौदह विद्या। (दे० 'विद्या')
चतुरनीक—पु० [स० चतुर्-अनीक, व० स०] चतुरानन। ब्रह्मा।
चतुरपन—पु० [हिं० चतुर+पन] =चतुरता।
चतुरबीज†—पु० =चतुर्बीज।
चतुरभुज†—पु० =चतुर्भुज।
चतुरमास†—पुं० =चतुर्मास।
चतुरमुख†—वि०, पु० चतुर्मुख।
चतुरम्ल—पु० [स० चतुर्-अम्ल द्विगुस०] वद्यक मे, अमलवेत, इमली, जबीरी और कागजी नीबू के रसो को मिलाकर बनाया हुआ खट्टा द्रव्य।
चतुरश्र—वि० [स० चतुर्-अश्रि, व० स०, अच् नि०] चार कोनोवाला। पु० १ ब्रह्मसतान नामक केतु। २ ज्योतिष मे चौथी या आठवी राशि।
चतुरसम*—पु० =चतुस्सम।
चतुरस्र—पु० [सं० चतुर-अस्रि, व० स०, अच् नि०] १. सगीत मे, एक प्रकार का तिताला ताल। २ नृत्य मे, हाथ की एक प्रकार की मुद्रा या हस्तक।
चतुरह—पुं० [स० चतुर्-अहन्, द्विगुस०, टच्] वे याग जो चार दिनो मे पूरे होते हो।
चतुरा—स्त्री० [हिं० चतुर से] नृत्य मे धीरे-धीरे भौंह कँपाने की क्रिया। वि०, पु० =चतुर।
चतुराई—स्त्री० [स० चतुर+हिं० आई (प्रत्य०)] १ चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव। २. होशियारी। ३ चालाकी। धूर्तता।
चतुरात्मा—पु० [स० चतुर्-आत्मन् व० स०] १ ईश्वर। २. विष्णु।
चतुरानन—वि०, पु० [सं० चतुर्-आनन, व० स०] जिसके चार मुँह हो। चार मुखोवाला।
पु० ब्रह्मा।
चतुरापन*—पु० =चतुराई।
चतुराश्रम—पु० [स० चतुर्-आश्रम, द्विगुस०] ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास ये चारो आश्रम।
चतुरासीति†—वि० [स० चतुरशीति] चौरासी।
चतुरिंद्रिय—पु० [स० चतुर्-इद्रिय, व० स०] चार इद्रियोवाले जीव या प्राणी।
चतुरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की पतली लबी नाव जो एक ही पेड के तने को खोदकर बनाई जाती है।
चतुरूषण—पु० [स० चतुर्-ऊषण, द्विगुस०] वैद्यक मे सोठ, मिर्च, पीपल, और पिपरामूल, इन चार उष्ण या गरम पदार्थो का समूह।
चतुर्गति—वि० [स० व० स०] चार दिशाओ या प्रकारो की गतिवाला। पु० १ विष्णु। २ ईश्वर। ३ कछुआ।
चतुर्गव—पु० [स० चतुर्-गो, द्विगुस०] वह गाडी जिसे चार बैल मिलकर खीचते हो।

चतुर्गुण—वि० [स० द्विगुस०] १ चार गुणोवाला। २. चौपहला। ३ चौगुना।
चतुर्जातक—पु० [स० द्विगुस०] वैद्यक मे, इलायची (फल), दारचीनी (छाल), तेजपत्ता (पत्ता) और नागकेसर (फूल) इन चारो पदार्थों का समूह।
चतुर्थ—वि० [सं० चतुर्+डट् थुक् आगम] क्रम या गिनती मे चार की सख्या पर पडनेवाला। चौथा। जैसे—चतुर्थ आश्रम, चतुर्थ श्रेणी। पु० एक प्रकार का चौताला ताल। (सगीत)
चतुर्थक—पु० [सं० चतुर्थ+कन्] वह बुखार जो हर चौथे दिन आता हो। चौथिया ज्वर।
चतुर्थ-काल—पु० [कर्म० स०] १. दिन का चौथा पहर। २ सन्ध्या का समय।
चतुर्थ-भाज्—वि० [स० चतुर्थ √भज् (ग्रहण करना)+ण्वि, उप० स०] प्रजा द्वारा उपजाये हुए अन्न आदि मे से कर स्वरूप एक चौथाई अंग पानेवाला (अर्थात् राजा)।
चतुर्थांश—पुं० [चतुर्थ-अश, कर्म० स०] १. किसी चीज के चार बराबर भागो मे से हर एक। चौथाई। २. [ब० स०] चार अशो या भागो मे से किसी एक अश या भाग का मालिक।
चतुर्थांशी (शिन्)—वि० [स० चतुर्थांश+इनि] चतुर्थांश पानेवाला।
चतुर्थाश्रम—पु० [सं० चतुर्थ-आश्रम, कर्म० स०] आश्रमो मे चौथा, अर्थात् सन्यास।
चतुर्थिका—स्त्री० [स० चतुर्थ+कन्, टाप्, इत्व] एक परिमाण जो ४ कर्ष के बराबर होता है। पल।
चतुर्थी—स्त्री० [स० चतुर्थ+ङीप्] १ चांद्रमास के किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ। २ सस्कृत व्याकरण मे सप्रदान कारक या उसमे लगनेवाली विभक्ति।
चतुर्थी-कर्म (र्मन्)—पु० [मध्य० स०] विवाह के चौथे दिन के कृत्य जिनमे स्थानिक देवता, नदी आदि के पूजन होते हैं।
चतुर्थी-क्रिया—स्त्री० [मध्य० स०] किसी की मृत्यु के चौथे दिन होनेवाले कृत्य।
चतुर्थी तत्पुरुष—पु० [तृ० त०] तत्पुरुष समास का वह प्रकार या भेद जिसमे चौथी विभक्ति का लोप होता है।
चतुर्दंत—वि० [सं० ब० स०] चार दाँतोवाला। जिसके चार दाँत हो। पु० ऐरावत नामक हाथी जिसके चार दाँत कहे गये है।
चतुर्दंष्ट्र—पु० [स० व० स०] १ ईश्वर। २ कार्तिकेय की मेना। ३ एक राक्षस का नाम।
चतुर्दश (न्)—वि० [स० मध्य० स०] चौदह।
चतुर्दश-पदी—स्त्री० [स० व० स०, ङीप्] पाश्चात्य ढग की एक प्रकार की कविता जिसमे कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार कुल चौदह चरण या पद होते हैं। (सॉनेट)
चतुर्दशी—स्त्री० [स० चतुर्दशन्+डट्—ङीप्] चाद्रमास के किसी पक्ष की चौदहवी तिथि। चौदस।
चतुर्दिक् (श्)—अव्य० [स० द्विगुस०] चारो दिशाओ मे। चारो ओर। पु० चारो दिशाएँ।
चतुर्दिश—पु० [स० द्विगुस०] चारो दिशाएँ।

क्रि० वि० चारों ओर से। चारों दिशाओं में या से।

चतुर्दोल—पुं० [सं० चतुर् √दुल् (ढोना) +णिच्+घञ्] १. चार डंडों का हिंडोला या पालना। २. वह सवारी जिसे चार कहार उठाकर ले चलते हों। ३ चंडोल नाम की सवारी।

चतुर्द्वार—पुं० [सं० ब० स०] वह घर जिसके चारों ओर चार दरवाजे हों।

चतुर्धाम (न्)—पुं० [सं० द्विगु स०] हिन्दुओं के द्वारका, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी और बदरिकाश्रम ये चार मुख्य तीर्थ या धाम।

चतुर्बाहु—वि० [सं० ब० स०] चार बाँहों या भुजाओंवाला।

पुं० १ महादेव। शिव। २. विष्णु।

चतुर्बीज—पुं० [सं० द्विगु स०] वैद्यक में, काला जीरा, अजवाइन, मेथी और हालिम इन चार पदार्थों के दानों या बीजों का समूह।

चतुर्भद्र—पुं० [सं० द्विगु स०] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों का समूह।

वि० उक्त चारों पदार्थों से युक्त।

चतुर्भाव—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

चतुर्भुज—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० चतुर्भुजा] १. (व्यक्ति) जिसकी चार भुजाएँ हों। चार भुजाओंवाला। २. (ज्यामिति में वह क्षेत्र) जिसमें चार भुजाएँ या कोण हों। जैसे—सम चतुर्भुज क्षेत्र।

पुं० १. विष्णु। २ ज्यामिति में, चार भुजाओंवाला क्षेत्र।

चतुर्भुजा—स्त्री० [सं० चतुर्भुज+टाप्] १. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति। २ दुर्गा की एक चार भुजाओंवाली विशिष्ट मूर्त्ति।

चतुर्भुजी—पुं० [हिं० चतुर्भुज से] १. एक वैष्णव संप्रदाय जिसके आचार, व्यवहार आदि रामानन्दियों से मिलते-जुलते होते हैं। २. उक्त संप्रदाय का अनुयायी या सदस्य।

वि० चार भुजाओंवाला।

चतुर्मास—पुं० [सं० द्विगु स०] आषाढ़ मास की शुक्ला एकादशी से कार्तिक-शुक्ला एकादशी तक की अवधि जिनमें विवाह आदि शुभ काम वर्जित हैं। चौमासा।

चतुर्मुख—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० चतुर्मुखी] जिसके चार मुख हों। चार मुँहोंवाला।

क्रि० वि० चारों ओर।

पुं० १ ब्रह्मा। २ संगीत में, एक प्रकार का चौताला ताल। ३ नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा।

चतुर्मुखी—वि० [हिं० चतुर्मुख से] चतुर्मुख।

चतुर्मूर्ति—पुं० [सं० ब० स०] विराट्, सूत्रात्मा, अव्याकृत और तुरीय इन चारों अवस्थाओं या रूपों में रहनेवाला, ईश्वर।

चतुर्युग—पुं० [सं० द्विगु स०] चारों युगों का समूह। चतुर्युगी।

चतुर्युगी—स्त्री० [सं० चतुर्युग+ङीप्] सत्ययुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग इन चारों युगों का समूह। ४३२०००० वर्षों का समय। चौकड़ी।

चतुर्वक्त्र—पुं० [सं० ब० स०] ब्रह्मा।

चतुर्वर्ग—पुं० [सं० द्विगु स०] अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष ये चारों पदार्थ या उनका समूह।

चतुर्वर्ण—पुं० [सं० द्विगु स०] १. ... के चारों वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वाही (हिन्)—वि० [सं० चतुर् ... √वह् (ढोना) +णिनि, उप० स०] जिसे चार (पशु या व्यक्ति) मिलकर खींचते या वहन करके ले चलते हों।

पुं० चार घोड़ों की गाड़ी। चौकड़ी।

चतुर्विंश—वि० [सं० चतुर्विंशति+डट्] चौबीसवाँ।

पुं० एक दिन में पूरा होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

चतुर्विंशति—वि० [सं० मध्य० स०] चौबीस।

स्त्री० चौबीस का सूचक अंक या संख्या।

चतुर्विद्य—वि० [सं० ब० स०] १. जिसने चारों वेद पढ़े हों। २. चारों विद्याओं का ज्ञाता। पंडित।

चतुर्विद्या—स्त्री० [सं० कर्म० स०] चारों वेदों की विद्या या ज्ञान।

चतुर्विध—वि० [सं० ब० स०] १ चार प्रकारों या रूपों का। २. चौतरफा।

क्रि० वि० चार प्रकारों या रूपों में।

चतुर्वीर—पुं० [सं० ब० स० ?] चार दिनों में होनेवाला एक प्रकार का सोमयाग।

चतुर्वेद—पुं० [सं० ब० स०] १ परमेश्वर। ईश्वर। २ [कर्म० स०] चारों वेद।

वि० [ब० स०] चारों वेदों का ज्ञाता।

चतुर्वेदी (दिन्)—पुं० [सं० चतुर्वेद+इनि] १ चारों वेदों को जाननेवाला पुरुष। २. ब्राह्मणों का एक भेद या वर्ग।

चतुर्व्यूह—पुं० [सं० ष० त०] १. चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। जैसे—(क) राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। (ख) कृष्ण, बलदेव, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध। (ग) संसार, संसार का हेतु, मोक्ष और मोक्ष का उपाय। २. विष्णु। ३. योग-शास्त्र। ४. चिकित्सा-शास्त्र।

चतुर्होत्र—पुं० [सं० ब० स०] १ परमेश्वर। २ विष्णु।

चतुल—वि० [सं० √ चत् (गति) + उलच्] स्थापन करनेवाला। स्थापक।

चतुश्चक्र—पुं० [सं० चतुर्-चक्र, ब० स०] एक प्रकार का चक्र जिसके अनुसार मंत्रों के शुभ या अशुभ होने का विचार किया जाता है। (तंत्र)

चतुश्चत्वारिंश—वि० [सं० चतुश्चत्वारिंशत्+डट्] चौवालीसवाँ।

चतुश्चत्वारिंशत्—स्त्री० [सं० चतुर्-चत्वारिंशत् मध्य० स०] चौवालीस की संख्या या अंक।

चतुश्चरण—वि० [सं० चतुर्-चरण, ब० स०] १. चार पैरोंवाला। २ चार भागों या वर्गोंवाला।

पुं० चौपाया। पशु।

चतुश्शृंग—वि० [सं० चतुर्-शृंग, ब० स०] जिसके चार सींग हों। चार सींगोंवाला।

पुं० कुशद्वीप के एक पर्वत का नाम। (पुराण)

चतुष्क—वि० [सं० चतुर्+कन्] जिसके चार अंग या पार्श्व हों। चौपहल।

पुं० १ चार वस्तुओं का वर्ग या समूह। २ वास्तु में एक प्रकार का चौकोर मकान। ३. एक प्रकार की छड़ी या डंडा।

चतुष्कर—पुं० [सं० चतुर्-कर, ब० स०] वह जंतु जिसके चारों पैरों के आगे के भाग हाथ के समान हों। पंजेवाले जानवर। जैसे—बंदर।

वि० जिसके चार हाथ हों।

चतुष्करी (रिन्)—वि० [सं० चतुर्-कर, द्विगु स०, +इनि] =चतुष्कर।

चतुष्कर्ण—वि० [स० चतुर्-कर्ण, ब० स०] (बात) जिसे चार कान अर्थात् दो ही आदमी जानते हो।

चतुष्कर्णी—स्त्री० [स० चतुष्कर्ण +ङीप्] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

चतुष्कल—वि० [स० चतुर्-कला, ब० स०] चार कलाओ या मात्राओ-वाला। जिसमे चार कलाएँ या मात्राएँ हो। जैसे—छन्दःशास्त्र मे चतुष्कल गण, सगीत मे चतुष्कल ताल।

चतुष्की—स्त्री० [स० चतुष्क +ङीप्] १ एक प्रकार की चौकोर पुष्करिणी। २ मसहरी। ३ चौकी।

चतुष्कोण—वि० [स० चतुर्-कोण, ब० स०] चार कोणोवाला। चौकोर। चौकोना। जैसे—चतुष्कोण क्षेत्र।

पु० ज्यामिति मे, वह क्षेत्र जिसमे चार कोण हो। (क्वाड्रैंगिल)

चतुष्टय—पु० [स० चतुर् +तयप्] १ चार की सख्या। २ चार चीजो का वर्ग या समूह। ३ फलित ज्योतिष मे जन्म-कुडली मे केन्द्र, लग्न, और लग्न से सातवाँ तथा दसवाँ घर या स्थान।

चतुष्टोम—पु० [स० चतुर्-स्तोम, मध्य० स०] १ चार स्तोमवाला एक प्रकार का यज्ञ। २ अश्वमेघ यज्ञ का एक अग। ३ वायु। हवा।

चतुष्पथ—पु० [स० चतुर्-पथिन्, ब० स०] १ चौराहा। चौमुहानी। २ ब्राह्मण।

चतुष्पद—वि० [स० चतुर्-पद, ब० स०] १ चार पैरोवाला (जीव या पशु)। २ (पद्य) जिसमे चार चरण या पद हो।

पु० १ चौपाया। २ वैद्यक मे वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक इन चारो का समूह। ३. फलित ज्योतिष मे एक प्रकार का करण जिसमे जन्म लेनेवाला दुराचारी, दुर्बल और निर्धन होता है। ४ दे० 'चतुष्पदी'।

चतुष्पद-वैकृत—पु० [ष० त०] एक जाति के पशुओ का दूसरी जाति के पशुओ के साथ होनेवाला मैथुन अथवा स्तन-पान।

चतुष्पदा—स्त्री० [स० चतुष्पद +टाप्] चौपैया छद जिसके प्रत्येक चरण मे तीस मात्राएँ होती है।

चतुष्पदी—स्त्री० [स० चतुष्पद +ङीप्] १. चौपाई छद जिसके प्रत्येक चरण मे १५ मात्राएँ और अन्त मे गुरु-लघु होते है। २ ऐसा गीत जिसमे चार चरण या पद हो।

चतुष्पर्णी—स्त्री० [स० चतुर्-पर्ण, ब० स०, ङीप्] १ छोटी अमलोनी। २ सुसना नाम का साग जिसमे चार-चार पत्तियाँ एक साथ होती है।

चतुष्पाटी—स्त्री० [स० चतुर् √पट् (गति) +णिच् +अण्—ङीप्, उप० स०] नदी।

चतुष्पाठी—स्त्री० [स० चतुर्-पाठ, ब० स०, ङीप्] वह विद्यालय जिसमे बच्चो को चारो वेद पढाये जाते हैं।

चतुष्पाणि—वि० [स० ब० स०] जिसके चार हाथ हो। चार हाथोवाला।

पु० विष्णु।

चतुष्पाद—वि०, पु० [स० चतुर्-पाद, ब० स०] = चतुष्पद।

चतुष्पार्श्व—वि० [स० चतुर्-पार्श्व, ब० स०] चौपहला। चौतरफा।

चतुष्फल—वि० [स० चतुर्-फल, ब० स०] १. जिसमे चार फल हो। २ जिसमे चार पहल या पार्श्व हों। चौपहला।

चतुष्फलक—पु० [स० चतुर्-फल, ब० स०, कप्] ऐसा ठोस पदार्थ जिसमे किसी तल के ऊपर चार त्रिकोणिक तल (जैसे—किसी केलास या रवे मे होते हैं) हो। (ट्रेट्राहेड्रन)

चतुष्फला—स्त्री० [स० चतुष्फल +टाप्] नागवला नाम की बूटी।

चतुस्तन—वि० [स० चतुर्-स्तन, ब० स०] [स्त्री० चतुस्तनी] चार स्तनोवाला (प्राणी)।

स्त्री० गाय। गौ।

चतुस्ताल—पु० [स० चतुर्-ताल, ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का चौताला ताल।

चतुस्सन—पु० [स० चतुर्-सन्, द्विगुस०] १. सनक, सनत्कुमार, सनदन और सनातन ये चार ऋषि जिनके नामो के आरंभ मे 'सन' है। २. विष्णु।

चतुस्सम—पु० [सं० चतुर्-सम, ब० स०] १. एक औषध जिसमे लौंग, जीरा, अजवाइन और हड बराबर मात्राओ मे मिलाये जाते है। यह पाचक, भेदक और आमशूल नाशक कहा गया है। २ एक मिश्रित गध द्रव्य जिसमे २ भाग कस्तूरी, ४ भाग चदन, ३ भाग कुंकुम और ३ भाग कपूर मिला रहता है।

वि० १. जिसमे चार चीजें बराबर मिली हो। २ जो चारो ओर अथवा प्रकार से बराबर हो।

चतुस्सीमा (मन्)—स्त्री० [स० चतुर्-सीमन्, द्विगुस०, डाप्] चौहद्दी।

चतुस्सूत्री—स्त्री० [स० चतुर्-सूत्र, द्विगुस०, ङीप्] व्यासदेव-कृत वेदात के आरम्भिक चार सूत्र जो बहुत कठिन हैं और जिन पर भाष्यकारो मे बहुत मत-भेद है।

चतुस्सम्प्रदाय—पु० [स० चतुर्-सम्प्रदाय, द्विगुस०] वैष्णवो के ये चार प्रधान सप्रदाय—श्री, माध्व, रुद्र और सनक।

चतूरात्र—पु० [सं० चतुर्-रात्रि, द्विगुस० अच्] चार रात्रियो मे समाप्त होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

चत्र-भुज†—वि०, पु० = चतुर्भुज।

चत्वर—पु० [स० √चत् (स्वीकार करना) +ष्वरच्] १ कोई चौकोर टुकडा या स्थान। २. वह स्थान जहाँ चार भिन्न-भिन्न मार्ग आकर मिलते हो। चौमुहानी। चौराहा। ३ वह स्थान जहाँ भिन्न-भिन्न जातियो, देशो आदि के लोग आकर एकत्र होते या मिलते हो। ४. हवन आदि के लिए बनाया हुआ चौतरा या वेदी। ५ चार रथो का समूह।

चत्वर-वासिनी—स्त्री० [स० चत्वर √वस् (रहना) +णिनि—ङीप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

चत्वाल—पुं० [स० √चत् +वालञ्] १ हवन आदि के लिए जमीन में खोदा हुआ चौकोर गड्ढा। होमकुड। २ कुश नामक घास। ३ गर्भ। ४ चबूतरा। चौतरा। ५ वेदी।

चदरा†—पु० दे० 'चादर'।

चदरिया*—स्त्री० =चादर। उदा०—झीनी झीनी बीनी चदरिया। —कबीर।

चदिर—पुं० [स० √चन्द् (चमकना) +किरच्] १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ हाथी। ४. साँप।

चद्दर—स्त्री० [फा० चादर] १ ओढ़ने की चादर। २ धातु का लबा-चौडा चौकोर टुकड़ा या पत्तर। जैसे—पीतल या लोहे की चद्दर। ३ नदी के बहाव मे वह स्थिति जिसमे उसका पानी कुछ दूर तक ऊपर

से देखने पर चादर के समान सम-तल रहता है। ४. एक प्रकार की छोटी तोप।

चनक*—पुं०[स० चणक] चना।

चनकन†—पु०[देश०] शलगम।

चनकना†—अ०=चटकना। उदा०—चनकि गई सीसी गयो छिरकत छनकि गुलाव।—शृं०।

चनखना—अ०[?] चिढना। खफा होना। उदा०—श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुज विहारी सो प्यारी जब तूं वोलत चनख चनख।—हरिदास।

चनचना—पु०[अनु०] एक प्रकार का कीडा जो तमाकू की फसल को हानि पहुँचाता है। झनझना।

चनन†—पु०=चदन।

चनवर*—पु०[?] ग्रास। कौर।

चना—पु०[स० चण, चणक, प्रा० चणअ, ने० व० चना; सिं० चणो; उ० गु० प० मरा० चणा] १. चैती की फसल का एक प्रसिद्ध पौधा जो हाथ भर ऊँचा होता है। २ उक्त पौधे के दाने या वीज जिनकी गिनती अनाजो मे होती है। बूट। छोले।

पद—लोहे के चने=वहुत कठिन और परिश्रमसाध्य काम।

चनियारी—स्त्री० [?] एक प्रकार का जल-पक्षी जो साँभर झील के निकट और वरमा मे अधिकता से पाया जाता है। इसके पर बहुत सुन्दर होते है और टोपियो मे लगाने तथा गुलूवद वनाने के काम मे आते है। हरगीला।

चनुअरी—स्त्री०=चनोरी।

चनेठ—पु० [हिं० चना] १ एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियाँ चने की पत्तियो से मिलती-जुलती होती हैं। २. इस घास से वनाया हुआ एक औषध जो पशुओ को कुछ रोगो मे खिलाया जाता है।

चनोरी—स्त्री०[?] वह भेड जिसके सारे शरीर के वाल या रोएँ सफेद हों। (गड़ेरिया)

चन्हारिन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जगली चिडिया।

चप—स्त्री०[देश०] कोई घोली हुई वस्तु। घोल। जैसे—चूने का चप।

वि० [फा०] वायाँ। वाम।

पद—चप व रास्त=(क) वाएँ और दाहिने भाग। (ख) वाएँ और दाहिने, दोनो ओर।

स्त्री० [हिं० चाप] चाप। दवाव। उदा०—कौन की है चप तोहि तेरो और अरि को?—सेनापति।

चपकन—स्त्री० [हिं० चपकना] १. एक प्रकार का अगा। अँगरखा। २ किवाड, सदूक आदि मे लोहे, पीतल आदि का वह दोहरा साज जिसमे ताला लगाकर वद किया जाता है।

चपकना—अ०=चिपकना।

चपका—पु० [हिं० चपकना] एक प्रकार का कीडा।

चपकाना—स०=चिपकाना।

चप-कुलिश—स्त्री० [तु० चपकलश] १. तलवारो से होनेवाली लडाई। २. अडचन, असमजस या कठिनाई की स्थिति।

क्रि० प्र०—मे पडना।

३ वहुत अधिक भीड-भाड या रेल-पेल।

चपट—पु० [स०√चप् (सात्वना देना)+क, चप√अट् (जाना)+अच्, पररूप] चपत। तमाचा।

चपटना—अ० १=चिपकना। २.=चिमटना।

चपटा†—वि०[स्त्री० चपटी] =चिपटा।

चपटाना—स०१ =चिपकाना। २ =चिमटाना।

चपटी—स्त्री० [हिं० चपटा] १ एक प्रकार की किलनी जो चौपायो को लगती है। २ हाथ से वजाई जानेवाली ताली। थपोडी। ३. भग। योनि।

मुहा०—चपटी खेलना या लड़ाना=सभोग की वासना पूरी करने के लिए दो स्त्रियो का परस्पर योनि मिलाकर रगडना। (वाजारू)

चपड़-चपड़—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो कुत्ते, विल्ली, शेर आदि के पानी पीते समय होता है।

क्रि० वि० उक्त प्रकार का शब्द करते हुए।

चपड़ा—पु० [हिं० चपटा] १ साफ की हुई लाख का पत्तर। २ किसी चीज का चिप्पड या पत्तर। ३ लाल रग का एक प्रकार का फतिगा जो गदे और सीडवाले स्थानो मे रहता है। ४. मस्तूल मे वाँधने की रस्सी।

चपड़ी—स्त्री० [हिं० चपटा] १. तख्ती। पटिया। २ दे० 'चिपडी'।

चपत—पु० [स० चपट] १ वह प्रहार जो मनुष्य अपनी हाथ की उँगलियो तथा हथेली के योग से किसी के सिर पर करता है। २ लाक्षणिक अर्थ मे, आघात या क्षति।

क्रि० प्र०—जडना।—लगना।—लगाना।

चपतगाह—स्त्री०[हिं० चपत+फा० गाह] खोपडी जिस पर चपत लगाया जाता है। (परिहास)

चपतियाना—स० [हिं० चपत] किसी को चपत या चपते लगाना।

चपती—स्त्री० [हिं० चिपटा] काठ का वह चिपटा छड जिससे लडके पट्टी, कागज आदि पर सीधी लकीरे खीचते है।

चपदस्त—पु० [फा० चप+दस्त] ऐसा घोडा जिसका अगला दाहिना पैर सफेद हो।

चपना—अ० [हिं० चाँप] १ अदर या नीचे की ओर धँसना। २ किसी के सामने लज्जित भाव से चुप रहना और उससे दवना। ३ दवाव पडने से कुचला जाना। ४ चौपट या नष्ट होना। (क्व०)

चपनी—स्त्री० [हिं० चपना] १ छिछली कटोरी। २ वरतनो का ढक्कन। ३. दरियाई नारियल का वना हुआ एक प्रकार का कमडल। ४ वह लकड़ी जिसमे ताना वाँधकर गडरिये कवल वुनते है। ५ घुटने की हड्डी। चक्की।

चपरकनातिया—वि०=चपर-कनाती।

चपर-कनाती—वि० [हिं० चपर+तु० कनात+ई (प्रत्य०)] वहुत ही तुच्छ कोटि का ऐसा व्यक्ति जो इधर-उधर लोगो की खुशामद और सेवाएँ करके पेट पालता हो।

चपर गट्टू—वि० [हिं० चौपट+गटपट] १ चारो ओर से कसकर पकडा या दवाया हुआ। २. विपत्ति का मारा। अभागा।

चपरना†—अ०[हिं० चुपडना?] १. आपस मे खूब अच्छी तरह मिलना। ओत-प्रोत होना। उदा०—दोउ चपरि ज्यौं तरुवर छाया।—सूर। २ भाग या हट जाना।

स० दे० 'चुपडना'।

चपरनी†—स्त्री० [देश०] वेश्याओ का गाना। मुजरा। (वेश्याओ की परिभाषा)

चपरा†—वि०[?] कोई बात कहकर या कोई काम करके मुकर जाने-वाला। झूठा।

अव्य० १. हठात्। २ जैसे हो, वैसे। ३ ख्वाहमख्वाह।

पु० दे० 'चपड़ा'।

चपराना—स०[हिं० चपरा] किसी को झूठा बनाना। झुठलाना।

चपरास—स्त्री०[हिं० चपरासी] १ धातु आदि का वह टुकडा जिसे पेटी या परतले मे लगाकर अरदली, चौकीदार, सिपाही आदि पहनते है और जिस पर उनके मालिक, कार्यालय आदि के नाम खुदे या छपे रहते हैं। २ वह कलम जिससे सुनार मुलम्मा करते हैं। ३. मालखंभ की एक कसरत जो दुबगली के समान होती है। दुबगली मे पीठ पर से बेत आता है और इसमे छाती पर से आता है। ४ आरे आदि के दाँतो का दाहिनी या बाईं ओर होनेवाला झुकाव। (बढइयो की परिभाषा) ५ कुरतो के मोढे पर की चौडी धज्जी या पट्टी।

चपरासी—पु० [फा० चप=बायाँ+रास्त=दाहिना] १ वह नौकर जो चपरास पहनकर अपने मालिक के सामने उसकी छोटी-मोटी सेवाएँ करने के लिए सदा उपस्थित रहता है। अरदली। जैसे—किसी अदालत या हाकिम का चपरासी। २ कार्यालय के कागज-पत्र आदि लाने या ले जानेवाला नौकर।

चपरि†—क्रि० वि० [स० चपल] १ फुरती से। तेजी से। २ जोर से। ३ सहसा। एकबारगी। ४ बलपूर्वक पकड या दबाकर। उदा०—चपरि चढायो चाप चद्रमा ललाम को।—तुलसी।

चपरी—स्त्री० [हिं० चपटा] खेसारी नाम का कदन्न जिसमे चपटी फलियाँ लगती है।

चपरैला—पु० [देश०] एक प्रकार की घास। कूरी।

चपरौनी†—स्त्री० [हिं० चपटा] लोहारो का एक औजार जिससे बालटू का सिरा पीटकर चौडा किया जाता है।

चपल—वि० [स० √चुप् (रेंगना)+कल, उकारस्य अकार] १ जो गति मे हो। गतिमान्। २ काँपता या हिलता हुआ। ३ अस्थिर। ४ क्षणिक। ५ चुलबुला। ६ चटपट काम करनेवाला, फुरतीला (व्यक्ति)। ७ उतावली करनेवाला। जल्दबाज। ८ चालाक। धूर्त्त।

पु० १ पारा। पारद। २ मछली। ३ चातक। पपीहा। ४ एक प्रकार का पत्थर। ५ चोर नामक गंध-द्रव्य। ६ राई। ७ एक प्रकार का चूहा।

चपलक—वि० [स० चपल+कन्] १. अस्थिर। चचल। २ बिना सोचे-समझे काम करनेवाला। अविचारी।

चपलता—स्त्री० [स० चपल+तल्—टाप्] १ चपल होने की अवस्था या भाव। चचलता। २ साहित्य मे वह अवस्था जब किसी प्रकार के अनुराग के कारण आचरण की गम्भीरता या अपनी मर्यादा का ध्यान नही रह जाता। इसकी गिनती सचारी भावो मे होती है। ३ तेजी। फुरती। ४ जल्दी। शीघ्रता। ५ चालाकी। ६ ढिठाई। धृष्टता।

चपलत्व—पु० [स० चपल+त्व] =चपलता।

चपलफाँटा—पु० [स० चपल+हिं० फट्टा=धज्जी] जहाज के फर्म के तख्तो के बीच की खाली जगह मे खडे बल मे बैठाए हुए तख्ते या पच्चड़ जिनमे मस्तूल फँसे रहते हैं।

चपलस—पु०[देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड जिसकी लकडी मे सजावट के सामान, चाय के सदूक, नावो के तख्ते आदि बनते हैं। यह ज्यो-ज्यो पुरानी होती है त्यो-त्यो अधिक कड़ी और मजबूत होती जाती है।

चपला—स्त्री० [स० चपल+टाप्] १. लक्ष्मी। २ बिजली। विद्युत्। ३ दुश्चरित्रा या पुश्चली स्त्री। ४ पिप्पली। ५ जीभ। जिह्वा। ६ भाँग। विजया। ७ मदिरा। शराब। ८ आर्या छद का वह भेद जिसके पहले गण के अत मे गुरु हो, दूसरा गण जगण हो, तीसरा गण दो गुरुओ का हो, चौथा गण जगण हो, पाँचवे गण का आदि गुरु हो, छठा गण जगण हो, सातवाँ जगण न हो और अत मे गुरु हो। ९ प्राचीन काल की एक प्रकार की नाव जो ४८ हाथ लबी, २४ हाथ चौडी और २४ हाथ ऊँची होती थी और केवल नदियो मे चलती थी।

वि० स० 'चपल' का स्त्री०।

पु० [हिं० चप्पड] जहाज मे लोहे या लकडी की पट्टी जो पतवार के दोनो ओर उसकी रोक के लिए लगाई जाती है। (लश०)

चपलाई*—स्त्री०=चपलता।

चपलान—पु० [हिं० चप्पड] जहाज की गलही के अगल-बगल के कुदे जो धक्के सँभालने के लिए लगाए जाते हैं। (लश०)

चपलाना—अ० [स० चपल] १ चपलता दिखाना। २ धीरे-धीरे आगे बढना, चलना या हिलना-डोलना।

स० १. किसी को चपल बनाना। २ चलाना-फिराना या हिलाना-डुलाना।

चपली—स्त्री० [हिं० चप्पल+ई (प्रत्य०)] छोटी चप्पल।

चपवाना—स० [हिं० चपना का प्रे०] चपने या चापने का काम किसी से कराना।

चपाक†—क्रि० वि०[अनु०] १ अचानक। २ चटपट।

चपाट—पु०[हिं० चपटा] वह जूता जिसकी एडी उठी न हो। चपौर जूता।

चपाती—स्त्री०[स० चर्पटी, प्रा० चप्पती, ब० चापाती, गु० ने० फा० मरा० चपाती] एक प्रकार की पतली, हलकी और मुख्यत. हाथो से दबाकर बढाई हुई (चकले पर बेली हुई रोटी से भिन्न) रोटी।

पद—चपाती-सा पेट=ऐसा पेट जो बहुत निकला हुआ न हो। कृशोदर।

चपाती-सुमा—पुं०[उ०] चपाती या रोटी की तरह के पतले सुमोवाला घोडा।

चपाना—स०[हिं० चपना] १ किसी को चपने या दबने मे प्रवृत्त करना। उदा०—मुफलिस को इस जगह भी चपाती है मुफलिसी।—नजीर। २ एक रस्सी के सिरे को दूसरी रस्सी के सिरे के साथ बटकर जोडना या मिलाना।

चपेकना†—स०=चिपकाना।

चपेट—स्त्री० [स० चप√इट् (गति)+अच्] १ चपेटने की क्रिया, परिणाम या भाव। २. आघात। प्रहार। ३ तमाचा। थप्पड। ४ कठिनाई या सकट की स्थिति।

चपेटना—स० [स० चपेट] १ अचानक आक्रमण, प्रहार आदि करके दबाना या सकट मे डालना। दबोचना। २. उक्त प्रकार की क्रिया

से दवाते हुए पीछे हटाना। जैसे—सिक्खों की सेना चारो ओर से शत्रुओं को चपेटने लगी। ३ क्रोधपूर्वक डराते-धमकाते हुए किसी पर विगडना।

चपेटा—पु०=चपेट।
वि० [हिं० चपेटना?] दोगला। वर्ण-सकर।

चपेटिका—स्त्री०[स० चपेट+कन्–टाप्, इत्व] तमाचा।

चपेटी—स्त्री० [स० चपेट+ङीप्]भादो सुदी छठ। भाद्रपद की शुक्ला षष्ठी। (इस दिन स्त्रियाँ सतान की रक्षा के उद्देश्य से पूजन आदि करती हैं।)

चपेड़†—स्त्री० [स० चपेट] तमाचा। थप्पड।

चपेरना—स०=चपेटना।

चपेहा†—पु०[देश०] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

चपोटसिरीस—पु०[देश०] सिरीस की जाति का एक पेड।

चपोटी†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की छोटी टोपी।

चपौर—पु०[देश०] १ एक प्रकार का जलपक्षी जिसकी चोंच और पैर पीले तथा सिर गर्दन और छाती हलकी भूरी होती है। २ ऐसा जूता जिसकी एडी उठी हुई न हो।

चप्पड़†—पु०=चिप्पड।

चप्पन—पु० [हिं० चपना=दवना] छोटे आकार का छिछला कटोरा।

चप्पल—स्त्री० [चपचप से अनु०] १ खुली एडी का एक प्रसिद्ध जूता जिसमे चमडे आदि की पट्टियाँ तल्ले पर लगी रहती है और जिनमे पैर फँसाये जाते हैं। २. वह लकडी जिस पर जहाज की पतवार या कोई खभा गडा रहता है। (लश०)

चप्पल सेंहुड़—पु०[हिं० चपटा+सेहुँड] नागफनी।

चप्पा—पु० [स० चतुष्पाद, प्रा० चउप्पाव] १. चतुर्थांश। चौथाई भाग। चौथाई हिस्सा। २ कुछ या थोडा अश। टुकडा। भाग। ३ चार अगुल की नाप। ४ भूमि का बहुत छोटा टुकडा। उदा०—चप्पे जितनी कोठरी और मियाँ मुहल्लेदार। (कहा०)
वि० एक चौथाई। जैसे—चप्पा रोटी।

चप्पी—स्त्री० [हिं० चपना=दवना] सेवा-भाव से धीरे-धीरे हाथ-पैर दवाने की क्रिया या भाव। चरण-सेवा। चपी।

चप्पू—पु० [हिं० चाँपना] नाव का वह डांड जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी

चफाल—पु० [हिं० चौ+फाल] ऐसा भू-खड जिसके चारो ओर कीचड या दलदल हो।

चबक—स्त्री० [अनु०] रह-रहकर उठनेवाला दर्द। चिलक। टीस।
वि० कायर। डरपोक।

चबकना—अ०[अनु०] रह-रहकर दर्द करना। टीसना। चमकना।

चबका†—पु०=चावुक। उदा०—सहज पलाण पवन करि घोडा, लै लगाम चित चवका।—गोरखनाथ।

चबकी—स्त्री० [हिं० चावुक] स्त्रियो के केश वाँधने की सूत या ऊन की गुथी हुई रस्सी। चोटी। परांदा।

चबनी हड्डी—स्त्री० [हिं० चावना+हड्डी] वह हड्डी जो भुरभुरी और पतली हो, और फलतः सहज मे चवाई जा सकती हो।

चबर-चबर—स्त्री० [अनु०] वकवास। उदा०—हमको यह सब चवर-चवर पसद नही है।—वृन्दावनलाल वर्मा।
क्रि० वि० चब-चब शब्द करते हुए।

चबला—पु० [देश०] पशुओं के मुँह मे होनेवाला एक रोग। लाल रोग।

चबवाना—स० [हिं० चवाना का प्रे०] किसी को कुछ चवाने मे प्रवृत्त करना।

चबाई—स्त्री०[हिं० चवाना] चवाने की क्रिया, ढग या भाव।
पु०=चवाई।

चबाना—स० [स० चर्वण] १. खाते समय किसी चीज को दाँतो से बार-बार इस प्रकार दवाते हुए काटना या कुचलना कि वह छोटे-छोटे कणो मे विभक्त हो जाय।
मुहा०—चबा-चबाकर बातें करना=बहुत धीरे-धीरे और रुक-रुककर बातें करना। (धूर्तता, वनावट आदि का सूचक)। चबे को चबाना=किए हुए काम को फिर-फिर करना। पिष्टपेषण करना।
२ पशुओ आदि का किसी को दाँतो से काटना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, नष्ट करना। जैसे—तुम्हें तो वह चबा डालेगा।

चबारा—पु०=चौवारा।

चबाव*—पुं०=चवाव।

चबूतरा—पु०[स० चतुस्-स्तर (प्र-स्तर); प्रा० चउत्थर; व० चौतारा; पं० चौंतरा, गु० चोंतरो, ने० चौतारो, मरा० चौथरा] १. मकान के अगले भाग मे बैठने के लिए बनाई हुई खुली, चौकोर और चौरस जगह। चौंतरा। २ उक्त प्रकार की कोई बडी रचना जो चारो ओर से खुली हो। चौंतरा। ३. मध्ययुग मे कोतवाली या थाने मे का वह स्थान जहाँ कोतवाल या थानेदार बैठकर अभियोग सुनते और दड देते थे।

चबेना—पु०[हिं० चवाना] चवाकर खाने के लिए सूखा भुना हुआ चना अथवा और कोई अन्न। चर्वण। भूँजा।

चबेनी†—स्त्री० [हिं० चवाना] १ जल-पान की सामग्री। २ वह धन या रकम जो जल-पान आदि के लिए दी जाय।

चब्बा—पु० =चौआ।

चब्बू—वि० [हिं० चवाना] १ बहुत चवाने अर्थात् खानेवाला। बहुत अधिक भोजन करनेवाला। २. खा-खरचकर धन नष्ट करनेवाला।

चब्भू—वि० =चब्बू।

चभी—स्त्री० [हिं० चमक] किसी की गरदन पकडकर उसे जबरदस्ती पानी मे दी जानेवाली डुबकी या गोता।

चभक—स्त्री० [अनु०] १ पानी मे किसी वस्तु के डूबने का शब्द।
२. काटने या डक मारने की क्रिया या भाव।

चभच्चा—पु० = चहबच्चा।

चभड़-चभड़—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो कोई वस्तु खाने या पीने के समय मुँह के हिलने आदि से होता है। जैसे–कुत्तो का चभड-चभड पानी पीना।

चभना—अ० [स० चर्वण] १ चाभा या खाया जाना। २ दरेरा खाना। दवना। पिसना। उदा०—मुरयौन मन मुरवानु, चभि भी चूरनु चपि चूरू।—विहारी।

चभाना—स० [हिं० चाभना का प्रे०] १ किसी को चाभने या खाने मे प्रवृत्त करना। २ अच्छी तरह भोजन कराना।
†अ० = चवाना।

चभोक—वि० [देश०] वेवकूफ। मूर्ख।

चभोरना—स० [हिं० चुभकी] १ तरल पदार्थ मे कोई चीज अच्छी तरह डुवाना। जैसे—घी मे रोटी चभोरना। २ गरदन से पकडकर किसी को गहरे पानी मे गोता देना।

चमंक—स्त्री० = चमक।

चमंकना—अ० = चमकना।

चमक—स्त्री० [हिं० चमकना] १ चमकने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु का वह गुण या तत्त्व जिसके कारण उसमे से प्रकाश निकलता है। जैसे—कपडे, विजली या सोने की चमक। ३. प्रकाश। रोशनी। ४. आभा। काति। ५ कमर, पीठ आदि मे होनेवाली वह आकस्मिक और क्षणिक पीड़ा जो अधिक तनाव या वल पड़ने के कारण होती है। झटका लगने से होनेवाला दर्द। ६ चौंकने की क्रिया या भाव। चौक।

चमक चाँदनी—स्त्री० [हिं०] वह स्त्री जो हर समय खूव वनी-ठनी रहे और खूव चमकती-मटकती रहे।

चमक-दमक—स्त्री० [हिं० चमक+दमक (अनु०)] १ चमकने और दमकने की क्रिया, गुण या भाव। २ तडक-भडक। ठाठ-वाट।

चमकदार—वि० [हिं० चमक+फा० दार] जिसमे चमक हो। चमकीला।

चमकना—अ० [स० चमत्क्र, प्रा० चमक्केइ, वँ० चकान, उ० चमकिवा, मरा० चमकणें] १ किसी प्रकाशमान वस्तु का इतना अधिक तथा सहसा प्रकाश देना कि उस पर आँखें न ठहर सकें। जैसे—विजली चमकना। २ किसी वस्तु का झिल-मिलाती हुई किरणो के माध्यम से प्रकाश देना। जैसे—आकाश मे तारो का चमकना। ३. किसी चिकने तलवाली वस्तु का प्रकाश मे अधिक उज्ज्वल तथा प्रकाश-पूर्ण भासित होना। जैसे—धूप मे गहना या शीशा चमकना। ४ उक्त प्रकार के प्रकाश का आँखो पर ऐसा प्रभाव पड़ना कि वे निरन्तर खुली न रह सकें। जैसे—धूप मे आँखें चमकना। ५ किसी वस्तु का वहुत ही उत्कृष्ट रूप मे प्रकट या प्रस्तुत होना। जैसे—गला या गाना चमकना। ६ (कार्य, वस्तु आदि का) उन्नति या वृद्धि पर होना। जैसे—रोजगार चमकना। ७ (किसी वस्तु, वात आदि का) अपना उग्र या प्रचड रूप दिखलाना। जैसे—शहर मे हैजा चमकना। ८. कीर्ति, प्रताप, वैभव आदि से युक्त होना। जैसे—भाग्य चमकना। ९ किसी को देखने पर घवराते हुए चौंक कर पीछे हटना। विदकना। जैसे—हाथी को देखकर गौ या घोडे का चमकना। १० साधारण रूप से नाराज होना या विगड़ना। जैसे—गलती तो उन्ही की थी, पर वे चमके हम पर। ११ जल्दी से दूर हो जाना या हट जाना। चपत होना। उदा०—सखा साथ के चमकि गए सव, गह्यौ श्याम कर धाइ।—सूर। १२. नाज-नखरे या हाव-भाव से चेष्टाएँ करना। (स्त्रियाँ) जैसे—तुम तो वातो-वातो मे चमकने लगती हो।
†वि० [स्त्री० चमकनी] १ खूव चमकनेवाला। २. जरा-सी वात मे चिढ या विगड जानेवाला। ३ अनुचित रूप से नाज-नखरा या हाव-भाव दिखलानेवाला। ४ जल्दी चौंकने या विदकनेवाला। जैसे—चमकता घोडा या वैल।

चमकवाना—स० [चमकाना का प्रे०] १ चमकाने का काम करवाना। २ किसी चीज मे चमक उत्पन्न कराना।

चमकाना—स० [हिं० चमकना का स०] १. काति, दीप्ति या चमक से युक्त करना। ओप या चमक लाना। उज्ज्वल करना। २ चौंकाना। ३ भडकाना। ४ खिझाना। चिढाना। ५ उत्तेजित करके आगे वढाना। जैसे—लड़ाई के मैदान मे घोडा चमकाना। ६ नखरे मे कोई अग जल्दी-जल्दी हिलाना-डुलाना। जैसे—आँखें या उँगलियाँ चमकाना। ७ कीर्ति, वैभव, सफलता आदि से युक्त करना। जैसे—उनके छोटे भाई ने आकर उनका रोजगार चमका दिया।

चमकारा—पुं० [हिं० चमक] चकाचौंध उत्पन्न करनेवाली चमक या प्रकाश।
वि० [स्त्री० चमकारी] खूव चमकनेवाला। चमकता हुआ। चमकीला। उदा०—अधरविंव दसनन की सोभा, दुति दामिनि चमकारी।—सूर।

चमकारी†—स्त्री० १ = चमक। २. = चमकी।

चमकी—स्त्री० [हिं० चमक] रुपहले या सुनहले तारो के वे छोटे-छोटे गोल या चौकोर चिपटे टुकडे जो जरदोजी के काम मे लगाये जाते हैं। सितारे। तारे।

चमकीला—वि० [हिं० चमक+ईला (प्रत्य०)] १ जिसमे चमक हो। चमकदार। जैसे—चमकीला कपडा, चमकीले तारे।

चमकुल†—वि० [हिं० चमकना] १ चमकीला। २ चटकने-मटकनेवाला। उदा०—वैल मरकहा चमकुल जोय।—घाघ।

चमकौवल—स्त्री० [हिं० चमक+औवल (प्रत्य०)] शरीर के अंगों को नखरे से चमकाने-मटकाने की क्रिया या भाव। जैसे—उँगलियो की चमकौवल।

चमक्को—स्त्री० [हिं० चमकना] १. वहुत अधिक चमकने-मटकनेवाली स्त्री। चचल और निर्लज्ज स्त्री। २. झगडालू स्त्री।

चमगादड़—पु० [सं० चर्मचटक] [स्त्री० चमगिदडी] १ केवल रात के समय उड़नेवाला एक प्रसिद्ध छोटा जन्तु जिसके चारो पैर झिल्ली-दार होते हैं और जो दिन मे वृक्षो की डालो आदि मे लटका रहता है। इसकी छोटी वड़ी अनेक जातियाँ होती हैं और इसे दिन मे दिखाई नही देता। २ ऐसा व्यक्ति जो अपना कोई निश्चित मत या सिद्धान्त न रखता हो और केवल स्वार्थ-साधन के लिए कभी इस पक्ष मे और कभी उस पक्ष मे जा मिलता हो। (एक प्रसिद्ध कहानी के आधार पर)

चमचम—स्त्री० [अनु०] एक प्रसिद्ध लवोतरी वगला मिठाई।
वि० [हिं० चमक] खूव चमकता हुआ। चमकीला। दे० 'चमाचम'।
क्रि० वि० खूव चमक-दमक से। दे० 'चमाचम'।

चमचमाना—अ० [हिं० चमक] खूव चम-चम करना या चमकना। प्रकाशमान होना।
स० ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज खूव चमकने लगे या उसमे से चमक निकलने लगे। जैसे—जूता या तलवार चमचमाना।

चमचा—पु० [तु० चम्च मि० स० चमस] [स्त्री० अल्पा० चमची] १. कलछी की तरह का एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जिसमे अडाकार छोटी कटोरी मे लवी डाँड़ी लगी होती है, और जिससे कोई चीज उठाकर खाई या पी जाती है। चम्मच। २ जहाज की दरजो मे अलकतरा ढालने

की कलछी। (लश०) ३ नाव मे डाँड का चौडा अग्रभाग। हाथा। हलेसा। पँगई। बैठा। ४ इजन, भट्ठी आदि मे से कोयला निकालने का एक प्रकार का वडा फावडा। † ५ चिमटा।

चमचिच्चड़—वि० [हिं० चाम+चिचडी] (व्यक्ति) जो चिचड़ी या किलनी की तरह किसी मे या किसी से चिपटा रहे। पिंड या पीछा न छोडनेवाला।

चमची—स्त्री० [हिं० चमचा] १ छोटा चम्मच। २ आचमनी। ३ वह चिपटे और चौडे मुँहवाली सलाई जिससे पान पर कत्था और चूना लगाते है।

चमजुई—स्त्री० [स० चर्मयूका] पशुओ या मनुष्यो के शरीर मे से उत्पन्न होनेवाला एक छोटा कीडा। चिचड़ी।

वि० स्त्री० = चमचिच्चड।

चमटना†—स० = चिमटना।

चमटा—पु० =चिमटा।

चमड़ा—पु० [स० चर्म] १ पशुओ और मनुष्यो के सारे शरीर का वह ऊपरी आवरण जिससे मास और नसे ढकी रहती है और जिस पर प्राय. वाल या रोएँ उगे रहते है। त्वचा। (स्किन) २. मरे हुए पशुओ अथवा पशुओ को मार कर उनकी उतारी हुई खाल को छील तथा सिझाकर औद्योगिक कार्यो के लिए तैयार किया हुआ उसका रूप। (हाइड)

मुहा०—**चमड़ा उवेड़ना या खींचना** = चमड़े को शरीर से अलग करना। **चमड़ा सिझाना** = (क) चमडे को ववूल की छाल, सज्जी, नमक आदि के पानी मे डाल कर मुलायम करना। (ख) लाक्षणिक रूप मे, वहुत अधिक मारना या पीटना।

३ छाल। छिलका।

चमड़ी—स्त्री० [हिं० चमडा] चर्म। त्वचा। खाल।

मुहा०—(किसी की) **चमड़ी उधेड़ना**=इतना अधिक मारना कि शरीर की त्वचा उड जाय और उसमे से खून निकलने लगे।

चमत्करण—पु० [स० चमत्√कृ (करना)+ल्युट्—अन] चमत्कार करने या होने की क्रिया या भाव।

चमत्कार—पु० [स० चमत्√कृ+घञ्] [वि० चमत्कारी, चमत्कृत] १. कोई ऐसी अनोखी या विलक्षण वात जिसे देखकर सब लोग चौंक पड़ें और यह न समझ सके कि यह कैसे हो गई। २ ऐसा अद्भुत काम या वात जो इस लोक मे सहसा न दिखाई देती हो। अलौकिक-सा जान पडनेवाला काम या वात। करामात। जैसे—मृत प्राणी को जीवित कर दिखाना; या जलते हुए अगारो पर दौडना और उन्हे उठा-उठाकर खाने लगना। ३ ऐसी अद्भुत या अनोखी वात जिसे देख या सुनकर मन फडक उठे। जैसे—कविता या कहानी की चमत्कार। ४ आश्चर्य। विस्मय। ५ [चमत्√कृ+अण्] डमरू। ६ अपामार्ग। चिचडा।

चमत्कारक—वि० [स० चमत्√कृ +ण्वुल्—अक] चमत्कार उत्पन्न करनेवाला।

चमत्कारिक—वि० [स० चमत्कार+ठन्—इक] १. चमत्कार-सबधी। २. इतना विलक्षण कि चौंका दे। (मार्वलस) ३ अलौकिक या असभव-सा जान पडनेवाला। (मिरैक्यूलस)

चमत्कारित—भू० कृ० [स० चमत्कार+इतच्] चमत्कृत। विस्मित।

चमत्कारिता—स्त्री० [स० चमत्कारिन्+तल्—टाप्] चमत्कारी होने की अवस्था, गुण या भाव। चमत्कारपन।

चमत्कारी (रिन्)—वि० [स० चमत्√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० चमत्कारिणी] १ (वस्तु) जिसमे चमत्कार हो। जिसमे कुछ विलक्षणता हो। अद्भुत। २ चमत्कार उत्पन्न करनेवाला। ३ चमत्कार दिखानेवाला (व्यक्ति)। करामाती।

चमत्कृत—भू० कृ० [स० चमत्√कृ+क्त] जो किसी प्रकार का चमत्कार या विलक्षण वात देखकर चौंक पडा हो। चकित। विस्मित। उदा०—इतना न चमत्कृत हो वाले! अपने मन का उपचार करो।—प्रसाद।

चमत्कृति—स्त्री० [स० चमत्√कृ+क्तिन्] १ चमत्कृत होने की अवस्था या भाव। २ चमत्कार।

चमन—पु० [फा०] १ फूल-पत्तो आदि से भरी हुई हरी क्यारी। २. फुलवारी। छोटा वगीचा। ३ ऐसी गुलजार जगह जहाँ खूब रौनक हो।

चमन-वदी—स्त्री० [फा०] क्यारियाँ आदि वनाकर वाग लगाने या सजाने की कला या क्रिया।

चमर—पु० [स०√चम् (खाना)+अरच्] १. सुरा गाय। २. सुरा गाय की पूँछ का वना हुआ चँवर। चामर। ३ किसी प्रकार का चँवर। ४ एक दैत्य का नाम।

वि० [हिं० चमार] हिं० 'चमार' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो मे लगने के पहले प्राप्त होता है और जो तुच्छ या हीन का वाचक होता है। जैसे—चमर चलाकी, चमर रग आदि।

चमरक—पु० [स० चमर+कन्] मधुमक्खी।

चमरख—स्त्री० [हिं० चाम+रक्षा] चरखे मे लगी हुई चमड़े, मूँज आदि की वह चकती जिसमे तकला पहनाया जाता है।

चमरखा—पु० [स० चर्मकशा] एक प्रकार की सुगंधित जड जो उवटन आदि मे पडती है।

चमर-गिद्ध—पु० [हिं०] एक प्रकार का वडा गिद्ध।

चमर-चलाक†—वि० [हिं० चमार+फा० चालाक] बहुत ही तुच्छ या हीन प्रकार का चतुर या चालाक।

चमर-चलाकी—स्त्री० [हिं०] चमारो की-सी तुच्छ या हीन चालाकी या धूर्त्तता।

चमर-जुलाहा—पु० [हिं० चमार+जुलाहा] हिंदू जुलाहा। कोरी। (मुसलमानो की दृष्टि से, उपेक्षा-सूचक पद)।

चमर-पुच्छ—वि० [व० स०] (पशु) जिसकी पूँछ चँवर की तरह हो या चँवर वनाने के काम आ सकती हो।

पु० १ चँवर। २ गिलहरी। ३ लोमड़ी।

चमर-वंकुलिया†—स्त्री० = चमर-वगली।

चमर-वगली—स्त्री० [हिं० चमार +वगला] वगले की जाति की काले रंग की एक चिडिया।

चमर-रग—वि० [हिं०] (व्यक्ति) जिसकी रग या स्वभाव चमारो का-सा तुच्छ या हीन हो।

स्त्री० चमारो की-सी तुच्छ या हीन प्रकृति, प्रवृत्ति या स्वभाव।

चमर-शिखा—स्त्री० [उपमि० स०] घोडो के सिर पर लगाई जानेवाली कलगी।

चमरस—पु० [हिं० चाम] चमडे के जूते की रगड से ँर मे होनेवाला घाव।
चमरा खारी—पु० [हिं० चमार+खारी] खारी नमक।
चमरावत—स्त्री० [हिं० चमार] चमडे के मोट आदि बनाने की मजदूरी जो काश्तकारो या जमीदारो से चमारो को मिलती है।
चमरिक—पु० [स० चमर+ठन्—इक] कचनार का पेड।
चमरिया†—वि० [हिं० चमार] चमारो का-सा तुच्छ। हीन।
चमरिया सेम—पु० [हिं०] एक प्रकार की सेम। सेम का एक भेद।
चमरी—स्त्री० [स० चमर+ङीप्] १ सुरा गाय। २ चँवर। ३ पौधो की मजरी।
चमरू—पु० [देश०] १ चमडा। २. खाल। ३. चरसा। (लश०)
चमरोर—पु० [देश०] एक प्रकार का बडा पेड जिसकी छाया बहुत घनी होती है।
चमरौट—स्त्री० [हिं० चमार+औट (प्रत्य०)] खेत, फसल आदि का वह भाग जो चमारो को उनकी सेवाओ के बदले मे दिया जाता है।
चमरौधा—पु० दे० 'चमौआ'
चमला—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० चमली] भीख माँगने का ठीकरा। भिक्षा-पात्र।
चमस—पु० [स० √चम् (खाना) +असच्] [स्त्री० अल्पा० चमसी] १ सोम-पान करने का यज्ञ-पात्र जो पलाश आदि की लकडी का बनता और चम्मच के आकार का होता था। २. कलछा या कलछी। ३ पापड। ४ लड्डू। ५ उड़द का आटा। घुआँस। ६ एक प्राचीन ऋषि। ७ नौ योगीश्वरो मे से एक योगीश्वर का नाम।
चमसा—पु० [स० चमस] चमचा। चम्मच।
†पु० = चौमासा।
चमसी—स्त्री० [स० चमस+ङीप्] १ चम्मच के आकार का लकडी का एक यज्ञ-पात्र। २. उडद, मसूर मूँग आदि का आटा या पीठी।
चमाऊ—पुं० [स० चामर] चामर। चँवर।
†पु० दे० चमौआ'।
चमाक*—स्त्री० = चमक।
चमाचम—वि० [हिं० चमकना का अनु०] इतना अधिक साफ और स्वच्छ कि चम-चम करता हुआ चमकता हो।
चमार—पु०[स० चर्मकार, प्रा० चम्मारअ; बँ० चामार, उ० ने० चमार, सिं० चमारु, सिंह० सोम्मारु, प० चम्यार; मरा० चाभार] १ एक जाति जो चमडे के जूते, मोट आदि बनाती तथा उनकी मरम्मत करती है। २ एक जाति जो गलियो आदि मे झाड़ू देती है। ३ उक्त जातियो का पुरुष। ४. नीच प्रकृतिवाला आदमी।
चमारनी—स्त्री० = चमारी।
चमारिन—स्त्री० = चमारी।
चमारी—स्त्री० [हिं० चमार] १ चमार जाति की स्त्री। २ गलियो मे और सडको पर झाड देनेवाली स्त्री। ३ चमार का काम या पेशा। ४ चमारो की-सी वृत्ति या स्वभाव।
वि० १ चमार-सबधी। चमार का। २ चमारो की तरह का।
स्त्री० [?] कमल का वह फूल जिसमे कमलगट्टे के जीरे खराब हो जाते है।
चमियारी—स्त्री० [देश०] पद्म काठ।

चमीकर—पु० [स०] प्राचीन काल की एक खान जिससे सोना निकलता था। (इसी से सोने को चामीकर कहते है।)
चमू—स्त्री० [सं० √चम् (नष्ट करना) +णिच् +ऊ] १. सेना। फौज। २ प्राचीन भारत मे सेना का वह विभाग जिसमे ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घुड-सवार और ३६४५ पैदल सैनिक होते थे। ३ कफन। ४ कब्र।
चमूकन—पु० [देश०] एक प्रकार की किलनी जो चौपायों के शरीर मे चिपटी रहती है।
चमू-चर—पु० [सं० चमू √चर् (चलना) +ट] १ सिपाही। सैनिक। २ सेनापति।
चमू-नाथ—पु० [प० त०] = चमूपति।
चमू-नायक—पु० [प० त०] = चमूपति।
चमू-पति—पु० [ष० त०] सेनापति। सेनानायक।
चमूरु—पु० [स० √चम् (खाना) +ऊरु] एक प्रकार का हिरन।
चमू-हर—पु० [स० चमू √हृ (हरण करना) +अच्, उप० स०] महादेव। शिव।
चमेलिया—वि० [हिं०] १ चमेली के फूल की तरह का ऐसा सफेद (रग) जिसमे कुछ पीली झलक हो। (लैवेंडर) २. चमेली की गंध से युक्त।
पु० हलका पीलापन लिये सफेद रग।
चमेली—स्त्री० [स० चपावेल्ली; बँ० ने० चमेली; प० मरा० सिं० चँवेली; गु० चँपेली] १. एक प्रसिद्ध लता जिसमे पीलापन लिये सफेद रग के छोटे-छोटे सुगधित फूल लगते है। २ उक्त लता का फल।
पद—चमेली का जाल = एक प्रकार के कसीदे का काम।
३ नदी या समुद्र की ऊँची लहर की वह थपेड जिससे नावे आदि डगमगाने लगती और कभी-कभी डूब जाती है।
चमोई—स्त्री० [देश०] सिक्किम, भूटान आदि प्रदेशो मे होनेवाला एक पेड जिसकी छाल से कागज बनाया जाता है। इसे धनकोटा, सतपूरा, सतबरसा इत्यादि भी कहते हैं।
चमोटा—पु० [स० चर्मपट्ट] [स्त्री० अल्पा० चमोटी] १ नरम चमड़े का वह टुकडा जिस पर नाई छूरे को उसकी धार तेज करने के लिए बार-बार रगडते है। २ बडी चमोटी। कोडा।
चमोटी—स्त्री० [हिं० चमोट] १. चाबुक। कोडा। २ पतली छडी। कमची। बेत। ३ वह चमडा जो बेडियो के भीतरी भाग मे इसलिए लगाया जाता है कि पैरो मे लोहे की रगड न लगे। ४ चमडे का बना छोटा चमोटा। ५ चमडे का वह पट्टा जिसकी सहायता से खराद का चक्कर खीचा जाता है।
चमौआ—पु० [हिं० चाम] वह देशी जूता जिसका तला चमडे से सीया गया हो। चमरौधा।
चम्मच—पु० [फा० मिलाओ, म० चमस्] बडा चमचा जिससे खाने-पीने की चीजे चलाई तथा निकाली जाती है।
चम्मल—पुं० = चमला (भिक्षापात्र)।
चम्मोरानी—पु० [देश०] बच्चो का एक प्रकार का खेल। सात समुदर।
चय—पु० [स० √चि (बटोरना) +अच्] १. ढेर। राशि। समूह। २ टीला। ढूह। ३ किला। गढ। ४. किले या शहर की चार-दीवारी।

परकोटा। फसील। ५ इमारत या दीवार की नीव। बुनियाद। ६. चबूतरा। चौतरा। ७ चौकी या ऐसा ही और कोई ऊँचा आसन। ८ बहुत ही मनोहर और हरा-भरा स्थान। ९ वैद्यक मे कफ, पित्त या वात का विकृत होकर इकट्ठा होना। १० यज्ञ के लिए अग्नि का चयन जो एक सस्कार के रूप मे होता है।

चयक—वि० [स० चायक] चयन करनेवाला।

चयन—पु०[सं० √चि +ल्युट्—अन] १ आवश्यकता, रुचि आदि के अनुसार बहुत-सी वस्तुओ मे से कोई एक या कई वस्तुएँ चुन या छाँटकर अलग निकालने की क्रिया या भाव। जैसे—गुलदस्ते के लिए फूलो अथवा सग्रहालय के लिए पुस्तको का चयन करना। २. इस प्रकार चुनी हुई वस्तुओ का समूह। सकलन। ३ यज्ञ के लिए अग्नि का एक सस्कार।

चयनक—पु० [हिं० चयन से] चुने हुए व्यक्तियो का वह वर्ग या समूह जिसमे से कोई एक या कई व्यक्ति किसी विशेप कार्य के सपादन या सचालन के लिए किसी उच्च अधिकारी या सस्था द्वारा नियत किये जाते हैं। नामिका। (पैनेल)

चयन-शील—वि० [व० स०] जो चयन करने या सग्रह करने के काम मे लगा हो या लगा रहता हो।

चयना—स० [स० चयन] चयन करना। इकट्ठा करना। उदा०—रजनी गत वासर मृग तृष्ना रसहरि कौन चयौ।—सूर।

चयनिका—स्त्री०[स० चयन +कन् +टाप्—इत्व] १ चुनी हुई कविताओ, कहानियो, लेखो या ऐसी ही और चीजो या वातो आदि का सग्रह। २. पत्र-पत्रिकाओ आदि का वह विभाग या स्तभ जिसमे दूसरी पत्र-पत्रिकाओ से ली हुई अच्छी टिप्पणियाँ, लेख या उनके साराश रहते है।

चयनीय—वि० [स०√चि+अनीयर्] जो चयन किये या चुने जाने के योग्य हो।

चयित—भू० कृ० [स० चित] १ चयन किया या चुना हुआ। २ चुनकर इकट्ठा किया हुआ।

चरंद—पु० [फा० चरिंद] चरनेवाले जीव या प्राणी। जैसे—गौ, घोडे, बैल आदि।

चर—वि० [स०√ चर् (गमन) +अच्] १. जो इधर-उधर चलता-फिरता हो। जैसे—चर जीव या प्राणी। २ जो विचरण करता रहता हो। विचरण करनेवाला। जैसे—खेचर, जलचर, निशिचर आदि। ३ जो अपने स्थान से इधर-उधर हटता-बढता रहता हो। जैसे—चर नक्षत्र या राशि। ४ खाने या चरनेवाला।

पु० १ वह व्यक्ति जो राज्य या राष्ट्र की ओर से देश-विदेश की बातो का छिपकर पता लगाने के लिये नियुक्त हो। गूढ पुरुष। जासूस। २ वह जो किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए कही भेजा जाय। दूत। ३. ज्योतिष मे देशांतर जिसकी सहायता से दिन-मान निकाला जाता है। ४ खजन या खँडरिच नाम का पक्षी। ५ कौडी। ६ कौड़ियो या पांसे से खेला जानेवाला जूआ। ७ मगल ग्रह। ८ मगलवार। ९. मेष,वृष, मिथुन आदि राशियाँ। १० कीचड़ या दलदल। ११. वह जमीन जो नदी के साथ बहकर आनेवाली मिट्टी जमने से बनी हो। १२ वह गड्ढा जिसमे बरसात का पानी इकट्ठा हो। १३ नदी के बीच मे बना हुआ बालू का टापू या मैदान। १४. नदी का किनारा जहाँ पानी कम हो। (लश०) १५ नाव या जहाज मे एक गूढे (बाहर की ओर निकला हुआ आडा शहतीर) से दूसरे गूढे तक की लबाई या स्थान। (लश०) १६ वायु। हवा।

पु० [अनु०] कपडे, कागज आदि के फटने से होनेवाला शब्द।

चरई—स्त्री० [स० चारिका] जुलाहो का वह स्थान जहाँ ताने के सूत छोटे तागो से बाँधे जाते है।

स्त्री० दे० 'चरनी'।

चरक—पु० [स० चर+कन्] १ दूत। चर। २ गुप्तचर। जासूस। भेदिया। ३ पथिक। यात्री। ४ वैद्यक के एक प्रसिद्ध आचार्य जो शेष नाग के अवतार कहे गये है और जिनका 'चरक-सहिता' नामक ग्रन्थ बहुत प्रामाणिक है। ५. उक्त चरक 'सहिता नामक' ग्रन्थ। ६ बौद्धो का एक सप्रदाय। ७. भिखमगा। भिक्षुक।

स्त्री० [?] एक प्रकार की मछली।

†पु० [स० चक्र] सफेद कोढ का दाग। फूल।

†पु० = चटक।

चरकटा—पु० [हिं० चारा+काटना] १. चारा काटनेवाला व्यक्ति। २ अयोग्य या हीन बुद्धिवाला व्यक्ति।

चरकना*—अ० = चिटकना।

चरकसंहिता—स्त्री० [स० मध्य० स०] चरक मुनि द्वारा रचित एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ।

चरका—पुं० [फा० चरक.] १. हलके हाथ से किया हुआ वार या घाव या जखम। २ धातु के गरम टुकड़े से दागने के कारण शरीर पर पड़ा हुआ चिह्न। ३. नुकसान। हानि। ४. चकमा। धोखा।

पु० [देश०] मडआ नाम का कदन्न।

चर-काल—पु० [कर्म० स०] १ ज्योतिप के अनुसार समय का कुछ विशिष्ट अश जिसका काम दिन-मान स्थिर करने मे पडता है। २ उतना समय जितना किसी ग्रह को एक अश से दूसरे अश तक जाने या पहुँचने मे लगता है।

चरकी—स्त्री० [स० चरक+ङीप्] एक प्रकार की जहरीली मछली।

चरख—पु० [फा० चर्ख मि० स० चक्र] १. पहिए के आकार का अथवा इसी प्रकार का और कोई घूमनेवाला गोल चक्कर। चाक। २ खराद। ३ कलाबत्तू, रेशम आदि लपेटने का चरखा। ४ कुम्हार का चाक। ५ गोफन। ढेलवाँस। ६. तोप लादकर ले चलने की गाडी।

पु० [फा० चरग] १ लकड़बग्घा नाम का जगली हिंसक पशु। २ बाज की तरह की एक शिकारी चिड़िया।

चरख कश—पु० [फा० चर्खकश] खराद या चरख की डोरी या पट्टा खीचनेवाला व्यक्ति।

चरखड़ी—स्त्री० [हिं० चरख] एक प्रकार का दरवाजा।

चरखपूजा—स्त्री० [स० चक्र—पूजा] कुछ जगली जातियो की एक प्रकार की शिव-पूजा जो चैत की सक्राति को होती थी। इसमे किसी खम्भे पर बरछा लगाकर लोग गाते, बजाते और नाचते हुए चक्कर लगाते थे और बरछे से अपनी जीभ या शरीर छेदते थे। कहते है कि इसी दिन बाण नामक शैव राजा ने अपना रक्त चढाकर शिव को प्रसन्न किया था जिसकी स्मृति मे यह पूजा होती थी, जो ब्रिटिश शासन-काल मे बद कर दी गई।

चरखा—पुं० [फा० चरखी मि० स० चक्र] [स्त्री० अल्पा० चरखी] १. पहिए के आकार का अथवा इसी प्रकार का कोई और घूमनेवाला गोल चक्कर। चरख। जैसे—कुएँ से पानी निकालने का चरखा। २ लकडी का वह प्रसिद्ध छोटा यत्र जिससे ऊन, रेशम, सूत आदि कातते हैं। रहट। ३ ऊख का रस पेरने की लोहे की कल। ४. तारकशो का तार खीचने का यत्र। ५ सूत लपेट कर उसकी पेचक या लच्छी बनाने का यत्र। ६ किसी प्रकार की गराडी या घिरनी। ७ वडी या वेडौल पहियोवाली गाडी। ८ रेशम की लच्छो खोलने का 'डडा' नामक उपकरण। ९. गाड़ी का वह ढांचा जिसमे नया घोडा जोतकर सधाया और सिखाया जाता है। खड-खड़िया। १० बुढापे के कारण जर्जर और शिथिल व्यक्ति। ११. झझट से भरा हुआ और प्राय. व्यर्थ का लवा-चौडा काम। (व्यग्य) १२. कुश्ती मे नीचे पड़े हुए विपक्षी को चित करने का एक पेच। १३ रहस्य सप्रदाय मे, चित्त।

चरखी—स्त्री० [हिं० चरखा का स्त्री० अल्पा०] १ पहिए की तरह घूमनेवाली कोई वस्तु। २ गोलाकार घूमनेवाला किसी प्रकार का छोटा उपकरण। जैसे—कपास ओटने या सूत लपेटने की चरखी, रस्सी। वटने की चरखी, कुएँ से पानी निकालने की चरखी। ३ कुम्हार का चाक ४ चक्कर की तरह गोलाकार घूमनेवाली एक प्रकार की आतिशवाजी। ५ मटमैले रग की एक प्रकार की चिड़िया जिसे 'सत-बहिनी' भी कहते हैं।

चरग—पु० [फा० चरग] १ एक प्रकार की शिकारी चिडिया। २ लकड-वग्घा।

चर-गृह, चर गेह—पु० [मध्य० स०] =चर-राशि।

चरचना—स० [स० चर्चन] १. शरीर मे चदन आदि पोतना या लगाना। २ किसी चीज पर कुछ पोतना। लेप लगाना। ३ अनुमान, कल्पना आदि से कुछ समझना या सोचना। ताडना या लखना। ४ चर्चा या जिक्र करना। ५. पहचानना।

स० [स० अर्चन] अर्चन या पूजा करना।

चरचरा†—वि० [अनु०] [स्त्री० चरचरी] १ = चरपरा। (राज०) उदा०—लूंब सरीसी प्यारी चरचरी जी म्हाँरा राज।—लोक-गीत। २ =चिडचिडा।

पु० खाकी रग की एक चिडिया जिसके शरीर पर धारियाँ होती है।

चरचराटा†—पु० [अनु०] दवदवा। रोवदाव। उदा०—अव तो सव तरफ अँगरेजो का चरचराटा है।—वृदावनलाल वर्मा।

चरचराना—अ० [अनु० चरचर] १ चर-चर शब्द करते हुए गिरना, टूटना या जलना। २ घाव के आस-पास का चमडा तनने और सूखने के कारण उसमे हलकी पीडा होना। चर्राना। ३ दे० 'चर्राना'।

स० चर चर शब्द करते हुए कोई चीज गिराना या तोडना।

चरचराहट—स्त्री० [हिं० चरचराना+हट (प्रत्य०)] १. चरचराने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज के गिरने या टूटने से होनेवाला चर-चर शब्द।

चरचा—स्त्री० = चर्चा।

विशेष—उर्दूवाले इसके आकारान्त होने के कारण भूल से इसे पुलिंग मानते है।

चरचारी†—वि० [हिं० चरचा] १ चर्चा चलानेवाला। २ दूसरों की निंदात्मक चर्चा करनेवाला।

चरचित*—भू० कृ० = चर्चित।

चरज—पु० [फा० चरग] चरख नामक शिकारी चिडिया।

†पुं०= आचरज।

चरजना—अ० [सं० चर्चन] १ धोखा या भुलावा देना। वहकाना। २ अनुमान या कल्पना करना।

चरट—पु० [स० √चर् (चलना)+अटच्] खजन।

चरण—पु० [स०√चर् (चलना)+ल्युट्—अन] १. किसी देवता या पूज्य व्यक्ति के पाँव या पैर के लिए आदर-सूचक शब्द। जैसे—(क) हमारा धन्य भाग जो आज यहाँ आपके चरण पधारे है। (ख) वडो की चरण-पादुका पूजना या चरण-सेवा करना।

मुहा०—**(किसी के) चरण छूना** = वहुत आदरपूर्वक चरण छूते हुए दडवत् या प्रणाम करना। **(कहीं-कहीं) चरण देना**=पैर रखना। **(कहीं किसी के) चरण पड़ना**=पदार्पण या शुभागमन होना। **(किसी के) चरण लेना**=चरण छूकर प्रणाम करना। **(किसी के) चरणो पड़ना**= चरणो पर सिर रखकर प्रणाम करना।

२ वडो या महापुरुषो का सान्निध्य या सामीप्य। जैसे—भगवान् के चरण छोडकर वह कही जाना नही चाहते। ३ किसी चीज विशेषत. काल, मान आदि का चौथाई भाग। जैसे—यह वीसवी सदी का तीसरा चरण है। ४ छद, पद्य, श्लोक आदि का चौथा भाग अथवा कोई एक पूरी पक्ति। ५ नदी का वह भाग जो तटवर्ती पहाडी गुफा या गड्ढे तक चला गया हो। ६ घूमने-फिरने या सैर करने की जगह। ७ जड। मूल। ८ गोत्र। ९ क्रम। सिलसिला। १०. आचार-व्यवहार। ११ चद्रमा, सूर्य आदि की किरण। १२. कोई काम पूरा करने के लिए की जानेवाली सव क्रियाएँ। अनुष्ठान। १३ गमन। जाना। १४ पशुओ आदि का चारा चरना। १५ भक्षण करना। खाना। १६ वेद की कोई शाखा। जैसे—कठ, कौथुम आदि चरण। १७ किसी जाति, वर्ग या सप्रदाय के लिए विहित कर्म। १८ आधार। सहारा। १९ खभा।

चरण-कमल—पु० [उपमि० स०] कमलो के समान सुन्दर चरण या पैर। (आदर-सूचक)

चरणकरणानुयोग—पु० [चरण-करण, प० त०, चरणकरण-अनुयोग, व० स०] जैन साहित्य मे, ऐसा ग्रन्थ जिसमे किसी के चरित्र का वहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से विचार या व्याख्या की गई हो।

चरण-गुप्त—पु० [स० व० स०] एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसके कई भेद होते है। इसमे कोष्ठक वनाकर उनमे कविता के चरणो या पक्तियो के अक्षर भरे जाते हैं।

चरण-ग्रंथि—स्त्री० [प० त०] पैरो मे नीचे की ओर की गाँठ। गुल्फ। टखना।

चरण-चिह्न—पु० [प० त०] १ पैरो के तलुए की रेखा या लकीरें। २ वालू, मिट्टी आदि पर पडे हुए किसी के पैरो के चिह्न या निशान जिन्हें देखकर किसी का अनुकरण या अनुसरण किया जाता है। ३ धातु, पत्थर आदि की वनाई हुई देवताओ आदि के चरणो की आकृति जो प्राय पूजी जाती है।

चरण-तल—पु० [प० त०] पैर का तलुआ।

चरण-दास—पु० [प० त०] १ चरणो की सेवा करनेवाला दास या सेवक। २ दिल्ली के एक महात्मा साधु जो जाति के धूसर बनिये थे। इनका जन्म संवत् १७६० मे और शरीरांत स० १८३९ मे हुआ था। इनके चलाये हुए सम्प्रदाय के साधु चरणदासी साधु कहलाते हैं। ३ जूता। (परिहास)

चरण-दासी—वि० स्त्री० [प० त०] चरणो की सेवा करनेवाली (दासी या स्त्री)।
स्त्री० १ पत्नी। भार्या। २ जूता।
वि० चरण-दास संबंधी।
पु० महात्मा चरणदास के चलाये हुए सम्प्रदाय का अनुयायी।

चरण-न्यास—पु० =चरण-चिह्न।

चरणप—पु० स० चरण √पा (रक्षा करना)+क, उप० स०] पेड़। वृक्ष।

चरण-पर्व (न्)—पु० [प० त०] गुल्फ। टखना।

चरण-पादुका—स्त्री० [प० त०] १ खडाऊँ। पाँवडी। २. धातु, पत्थर आदि की बनी हुई किसी देवी-देवता या महापुरुष के चरणो की आकृति जिनकी पूजा होती है।

चरण-पीठ—पु० [प० त०] = चरण-पादुका।

चरण-युग (ल)—पु० [प० त०] किसी देवता या पूज्य व्यक्ति के दोनो चरण या पैर।

चरण-रज (स्)—स्त्री० [प० त०] किसी पूज्य व्यक्ति के चरणो की धूल जो बहुत पवित्र समझी जाती है।

चरण-शुश्रूषा—स्त्री० = चरण-सेवा।

चरण-सेवा—स्त्री० [प० त०] किसी पूज्य व्यक्ति के पैर दबाकर की जाने वाली सेवा।

चरण-सेवी (विन्)—पु० [स० चरण√सेव् (सेवा करना)+णिनि, उप० स०] १ वह जो किसी की चरण-सेवा करता हो। २. दास। सेवक।

चरणा—स्त्री० [स० चरण +अच्+टाप्] एक रोग जिसमें मैथुन के समय स्त्रियो का रज बहुत जल्दी स्खलित हो जाता है।
†पु० [?] काछा।
क्रि० प्र०—काछना।

चरणाक्ष—पु० [चरण-अक्षि, व० स०] अक्षपाद या गौतम ऋषि का एक नाम।

चरणाद्रि—पु० [चरण-अद्रि, व० स०] १. विन्ध्य पर्वत की एक शिला (चुनार नगरी के समीप) जिस पर बने चरण-चिह्न को हिंदू बुद्धदेव का और मुसलमान जिसे 'कदमे रसूल' बतलाते है। २ उत्तर प्रदेश का चुनार नामक स्थान।

चरणानति—स्त्री० [चरण-आनति, स० त०] किसी बड़े के चरणो पर झुकना, गिरना या पड़ना।

चरणानुग—वि० [चरण-अनुग, प० त०] १ किसी के चरणो या पद-चिह्नों का अनुगमन करनेवाला व्यक्ति। अनुगामी। २ अनुयायी। ३. शरणागत।

चरणामृत—पु० [स० चरण-अमृत, प० त०] वह पानी जिससे किसी देवता या महात्मा के चरण धोये गये हो और इसी लिए जो अमृत के समान पूज्य समझ कर पिया जाता हो। २ दूध, दही, घी, चीनी और शहद का वह मिश्रण जिसमे लक्ष्मी, शालिग्राम आदि को स्नान कराया जाता है और जो उक्त जल की भाँति पवित्र समझकर पिया जाता है। पचामृत।
मुहा०—चरणामृत लेना = (क) चरणामृत पीना। (ख) बहुत ही थोडी मात्रा मे कोई तरल पदार्थ पीना।

चरणायुध—पु० [चरण-आयुध, व० स०] मुरगा जो अपने पैरो के पंजो से लड़ता है।

चरणार्द्ध—वि० [चरण-अर्द्ध प० त०] चरण अर्थात् चतुर्थांश का आधा (भाग)।
पु० १. किसी चीज का आठवाँ भाग। २. किसी कविता या पद्य के चरण का आधा भाग।

चरणि—पु० [स० √चर् (चलना) +अनि] मनुष्य।
वि० गमन करने या चलनेवाला। चर।

चरणोदक—पु० [चरण-उदक, प० त०] चरणामृत। (दे०)

चरणोपधान—पु० [चरण-उपधान प० त०] १ वह चीज जिस पर पैर रखे जायँ। २. पाँवदान।

चरत—पु० [हिं० बरत (व्रत) का अनु० अथवा हिं० चरना से] १ व्रत या उपवास के दिन व्रत न रखकर या उपवास न करके सब कुछ खाना-पीना। २. ऐसा दिन जिसमे मनुष्य नियमित रूप से अन्न आदि खाता-पीता हो।

चरता—स्त्री० [स० चर+तल्—टाप्] चर होने की अवस्था या भाव। पृथ्वी।

चरतिरिया†—स्त्री० [देश०] मिरजापुर जिले मे होनेवाली एक प्रकार की कपास।

चरती—पु० [हिं० चरत] व्यक्ति, जिसने व्रत न रखा हो। व्रत के दिन भी नियमित रूप से अन्न आदि खानेवाला।

चरत्व—पु० [स० चर+त्व] चर होने की अवस्था या भाव। चरता।

चरथ—वि० [सं० √चर् (चलना) +अथ)] चलनेवाला। चर। जगम।

चरदास—स्त्री० [?] मथुरा जिले मे होनेवाली एक प्रकार की घटिया कपास।

चर-द्रव्य—पु० [कर्म० स०] वह संपत्ति जिसका स्थान-परिवर्तन हो सकता हो। जैसे—गहने, पशु आदि।

चरनंग—पु० [स० चरण-अग]चरण। पैर। उदा०—चरनग वीर तल वज्जइय, मवर जोर जम दड्ढ कसि।—चन्दवरदाई।

चरन†—पु० दे० 'चरण'। ('चरन' के यौ० के लिए दे० 'चरण' के यौ०)
†स्त्री० [?] कौड़ी।

चर-नक्षत्र—पु० [कर्म० स०] स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण और धनिष्ठा आदि कुछ विशिष्ट नक्षत्र जिनकी सख्या भिन्न-भिन्न आचार्यों के मत से अलग-अलग है।

चरनचर*—पु० [स० चरणचर] पैदल चलनेवाला दूत या सिपाही।

चरनदासी—स्त्री० [= चरण-दासी।

चरन-धरन*—पुं० [स० चरण +हिं० धरना] खड़ाऊँ। उदा०—चरन धरन तब राजैं लीन्हा।— जायसी।

चरनबरदार—पु० [स० चरण +फा० बरदार] वह नौकर जो बडे आदमियो को जूते पहनाता, उतारता, लाता, ले जाता तथा यथास्थान रखता हो।

चरना—अ० [स० पा० चरति, प्रा० चरइ; बँ० चरा, उ० चरिबा; पं०-

चरना; सिं० चरणु, गु० चरवूँ, ने० चर्नु; मरा० चरणे, मि० फा० चरीदन] १ पशुओ का घास आदि खाने के लिए खेतो और मैदानो मे फिरना। जैसे—मैदान मे गौएँ चर रही है।

मुहा०—अक्ल का चरने जाना =दे० 'अक्ल' के मुहा।

२ इधर-उधर घूमना-फिरना या चलना। विचरण करना।

स० १. पशुओ का खेतो आदि मे उगी हुई घास, पौधे आदि खाना। जैसे—घोडे घास चर रहे है। २. (व्यक्तियो का) अभद्रतापूर्वक तथा जल्दी-जल्दी खाना।

पु० [?] काछा।

क्रि० प्र०—काछना।

३. सुनारो का वह औजार जिससे वे नक्काशी करते समय सीधी लकीरे बनाते है।

चरनायुध†—पु० = चरणायुध।

चरनि*—स्त्री० [स० चर =गमन] चाल। गति।

चरनी*—स्त्री० [हिं० चरना] १ पशुओ के चरने का स्थान। चरी। चरागाह। २ वह नाँद या बडा पात्र अथवा पात्र के आकार की रचना जिसमे पशुओ को चारा खिलाया जाता है। ३ पशुओ के खाने की घास आदि। चारा।

चरन्नी†—स्त्री० [हिं० चार+आना] = चवन्नी।

चरपट—पु० [स० चर्पट] १. चपत। तमाचा। थप्पड। २ उचक्का। उदा०—चरपटचोर धूर्त गँठिछोरा।—जायसी। ३ चर्पट नामक छद।

चरपर†—वि० = चरपरा।

चरपरा—वि० [अनु०] [वि० स्त्री० चरपरी] (खाद्य पदार्थ) जिसमे खटाई, मिर्च आदि कुछ अधिक मात्रा मे मिली हो और इसी लिए जो स्वाद मे कुछ तीखी हो।

वि० [स० चपल] चुस्त। तेज। फुरतीला।

चरपराना—अ० [हिं० चरचर] घाव मे खुश्की के कारण तनाव होना और उसके फलस्वरूप पीडा होना।

अ० [हिं० चरपर] चरपरी वस्तु खाने पर मुँह मे हलकी जलन होना।

चरपराहट—स्त्री० [हिं० चरपरा] १. चरपरा होने की अवस्था, भाव या स्वाद। २ घाव आदि की चरचराहट। ३. ईर्ष्या। डाह।

चरफराना—अ० १ = चरपराना। २ = छटपटाना।

चरब—वि० [फा० चर्ब] तेज। तीखा।

चरब जबान—वि० [फा० चर्ब-जबान] [भाव० चरब-जबानी] १ प्राय कठोर और तीखी बाते कहनेवाला। कटु-भाषी। २ बहुत बढबढकर बाते करनेवाला। वाचाल। ३. बिना सोचे-समझे बहुत अधिक या तेज बोलनेवाला।

चरबन—पु० =चबैना।

चरबाँक—वि० [फा० चर्ब =तेज] १ चतुर। चालाक। होशियार। २. निडर। निर्भय। ३ आचार, व्यवहार, स्वभाव आदि के विचार से उद्दड तेज या शोख। ४ चचल। चुलबुला। जैसे—चरबाँक आँखे।

चरबा—पु० [फा० चर्ब] १ लेखे, हिसाब आदि का लिखा हुआ पूर्व रूप। खाका। २. अनुलिपि। नकल। ३ चित्रकला मे वह पतला पारदर्शी कागज जिसकी सहायता से चित्रो की छाप ली जाती है।

क्रि० प्र०—उतारना।

चरबाई—वि० = चरवाँक।

चरबाना—स० [स० चर्म] ढोल पर चमडा मढाना।

चरबी—स्त्री० [फा०] प्राणियो के शरीर मे रहनेवाला सफेद या हलके पीले रग का गाढा, चिकना तथा लसीला पदार्थ।

मुहा०—(शरीर पर) चरबी चढ़ना = मोटा होना। (आँखो मे) चरबी छाना = अभिमान या मद मे अधा होना।

चरी—पु० [कर्म० स०] चर ग्रह या राशि।

चर-भवन—पु० [मध्य० स०] =चर राशि।

चरम—वि० [स० √चर् (चलना) +अमच्] १ अतिम सीमा तक पहुँचा हुआ। हद दरजे का। जैसे—चरम पथ। २. सबसे अधिक या आगे बढा हुआ। जैसे—चरम गति। ३. अतिम। आखिरी। जैसे—चरम अवस्था (=वृद्धावस्था)। ४ पश्चिमी।

पु० १. पश्चिम दिशा। २ वृद्धावस्था। ३ अत। ४ उपन्यास, कहानी, नाटक आदि मे का वह अश या अवस्था जहाँ पर कथा की धारा अधिकतम ऊँचाई पर पहुँचती है। (क्लाइमैक्स)

* पु० = चर्म।

चरम-काल—पु० [कर्म० स०] मृत्यु का समय।

चरम-गिरि—पु० [कर्म० स०] अस्ताचल।

चरम-पंथ—पु० [स० चरम +हिं० पथ] वह विचार-धारा जो यह प्रतिपादित करती है कि समाज को अस्वस्थ बनानेवाले तत्त्वो को सारी शक्ति से और शीघ्रतापूर्वक दूर या नष्ट कर देना चाहिए। (ऐक्स्ट्रीमिज्म)

चरम-पंथी—पु० [हिं० चरमपथ से] वह जो इस बात का पक्षपाती हो कि सामाजिक दोषो को बलपूर्वक और शीघ्रता से दूर या नष्ट कर देना चाहिए। (एक्स्ट्रीमिस्ट)

चरम-पत्र—पु० [कर्म० स०] अपनी सपत्ति के उत्तराधिकार, व्यवस्था आदि के सबध मे अतिम अवस्था मे लिखा जानेवाला पत्र या लेख। दित्सा-पत्र। वसीयतनामा। (विल)

चरमर—पु० [अनु०] कसी या तनी हुई चीमड चीज के दबने या मुडने से होनेवाला शब्द। जैसे—चलने मे जूते का चरमर बोलना।

चरमरा—वि० [अनु०] चरमर शब्द करनेवाला। जिससे चरमर शब्द निकले। जैसे—चरमरा जूता।

पु० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे तकडी भी कहते है।

चरमराना—अ० [हिं० चरमर] चरमर शब्द होना।

स०—चरमर शब्द उत्पन्न करना।

चरमवती—स्त्री० [स० चर्मण्वती] चबल नदी।

चरम-वय (स्)—वि० [ब० स०] १. अधिक अवस्थावाला (व्यक्ति)। २ पुराना।

चर-मूर्ति—स्त्री० [कर्म० स०] देवता की वह मूर्ति या विग्रह जो किसी एक जगह स्थापित न हो, बल्कि आवश्यकता के अनुसार एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रखी जा सकती हो।

चर-राशि—स्त्री० [मध्य० स०] मेष, कर्क, तुला और मकर ये चार राशियाँ जो चर मानी गई है। (ज्योतिष)

चरलौता—पु० [देश०] एक प्रकार की काष्ठौषधि।

चरवाँक—वि० = चरबाँक।

चरवा—पु० [देश०] एक प्रकार का बढ़िया मुलायम चारा जो बारहों महीने अधिकता से उत्पन्न होता है। कहीं-कहीं यह गौओ-भैसो को उनका दूध बढाने के लिए दिया जाता है। धम्मन।

चरवाई—स्त्री० [हिं० चरवाना] पशु चरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चरवाना—स० [हिं० चराना का प्रे०] चराने का काम किसी से कराना। पशु चराने का काम दूसरे से कराना।

चरवाहा—पु० [हिं० चरना+वाहा=वाहक] वह व्यक्ति जो दूसरो के पशुओ को चराकर अपनी जीविका चलाता हो।

चरवाही—स्त्री० [स० चर+हिं० वाही] १ पशु चराने का काम, भाव या मजदूरी। २ उलटी-सीधी या निर्लज्जता से भरी बाते कर के दूसरो को उपेक्षापूर्वक धोखे मे रखना। उदा०—चरवाही जानो करी बे-परवाही बात।—राम सतसई।

चरवी—स्त्री० [स० चर] कहारो का एक साकेतिक शब्द जो इस बात का सूचक होता है कि रास्ते मे आगे गाडी, एक्का आदि है।

चरवैया—वि० [हिं० चरना] १ चरनेवाला। २. चरानेवाला।
पु० चरवाहा।

चरव्य—वि० [स० चरु+यत] जिसका या जिससे चरु बनाया जा सके।

चरस—स्त्री० [स० चर्य या रस ?] १. गाँजे के पौधो के डठलो पर से उतारा हुआ एक प्रकार का हरा या हलका पीला गोंद या चेप जो प्राय मोम की तरह का होता है और जिसे लोग गाँजे या तमाकू की तरह पीते है। नशे मे यह प्राय गाँजे के समान ही होता है।
पु० [फा० चर्ज] आसाम मे अधिकता से होनेवाला एक प्रकार का पक्षी जिसका मास बहुत स्वादिष्ठ होता है। इसे वनमोर या चीनी-मोर भी कहते है।
†पु० दे० 'चरसा'।

चरसा—पु० [स० चर्म्म] १ भैंस या बैल आदि के चमडे का बना हुआ वह बडा थैला जिसकी सहायता से खेत सींचने के लिए कूएँ से पानी निकाला जाता है। पुर। मोट। २. चमडे का बना हुआ कोई बडा थैला। ३ जमीन की एक नाप जो प्राय २००० हाथ लंबी और इतनी ही चौडी होती थी। गो-चर्म।
† पु० =चरस (पक्षी)।

चरसिया—पु० =चरसी (चरस पीनेवाला)।

चरसी—पु० [हिं० चरस+ई (प्रत्य०)] १ वह जो चरस की सहायता से कूएँ से पानी निकालकर खेत सींचता हो। मोट खींचनेवाला। २ वह जो गाँजे, तमाकू आदि की तरह चरस पीता हो।

चरही—स्त्री० दे० 'चरनी'।

चराई—स्त्री० [हिं० चरना] १ चरने की क्रिया या भाव। २. पशु आदि चराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चराऊ—पु० [हिं० चरना] पशुओ के चराने का स्थान। चरी।

चराक—पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।
* पु० =चिराग।

चराग†—पु० =चिराग।

चरागाह—पु० [फा०] पशुओ के चरने का स्थान, जहाँ प्राय घास आदि उगी रहती है। चरनी। चरी।

चराचर—वि० [चर-अचर, द्व० स०] चर और अचर। जड और चेतन। स्थावर और जगम।
पु० १ ससार। २ ससार में रहनेवाले सभी जीव और पदार्थ। ३ कौड़ी।

चराचर-गुरु—पु० [ष० त०] १. ब्रह्मा। २. ईश्वर।

चरान—पुं० [हिं० चर=दल दल] समुद्र के किनारे की वह दल-दल जिसमे से नमक निकाला जाता है।
स्त्री० चरने या चराने की क्रिया या भाव।
† पुं० =चरागाह।

चराना—स० [हिं० चरना] १ पशुओ को खेतो या खुले मैदानो मे लाकर वहाँ उगी हुई घास खाने या चरने में उन्हे प्रवृत्त करना। जैसे—गौ-भैंस चराना। २ किसी के साथ इस प्रकार का चातुर्यपूर्ण आचरण या व्यवहार करना कि मानो वह पशु के समान अबोध हो। जैसे—वाह! अब तो तुम भी हमे चराने लगे।

चराव—पु० [स० चर] पशुओ के चरने का स्थान। चरनी। चरागाह।

चरावना†—स० =चराना।

चरावर—स्त्री० [चरचर से अनु०] व्यर्थ की बातें। बकवाद।

चरिंद—पु० =चरिंदा।

चरिंदा—पु० [फा० चरिन्द] चरनेवाला जीव या प्राणी। पशु। हैवान। जैसे—गाय भैंस बैल आदि।

चरि—पु० [स० चर+इनि] जानवर। पशु।

चरित—पु० [स० √चर् (चलना)+क्त] १ आचरण और व्यवहार या रहन-सहन। २ किसी के जीवन की घटनाओ का उल्लेख या विवरण। जीवन-चरित्र। ३. किसी के किए हुए अनुचित या निंदनीय काम। करतूत। करनी। (व्यग्य) जैसे—इनके चरित्र सुने तो दग रह जाएँगे।

चरित-कार—पु० [ष० त०] =चरित-लेखक।

चरित-नायक—पु० [ष० त०] वह व्यक्ति जिसके जीवन की घटनाओ के आधार पर कोई पुस्तक या जीवनी लिखी गई हो।

चरित्र-लेखक—पुं० [ष० त०] किसी के जीवन की घटनाएँ या जीवन-चरित्र लिखनेवाला लेखक।

चरितवान्—वि० दे० 'चरित्रवान्'।

चरितव्य—वि० [स० √चर्+तव्यत्] (कार्य या व्यवहार) जो करने या आचरण के रूप मे लाये जाने के योग्य हो।

चरितार्थ—वि० [चरित-अर्थ, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसका अर्थ, अभिप्राय या उद्देश्य पूरा या सिद्ध हो चुका हो। कृतकार्य। कृतार्थ। जैसे—भगवान की भक्ति मे लगकर वे चरितार्थ हो गए। २ (बात या विषय) जिसके अस्तित्व का उद्देश्य पूरा या सिद्ध हो गया हो। जैसे—अपना जीवन चरितार्थ करना। ३ (उक्ति या कथन) जो अपने ठीक-ठीक अर्थ मे पूरा उतरता या घटित होता हो। जैसे—आपकी उस दिन की भविष्य-द्वाणी आज चरितार्थ हो गई।

चरितार्थता—स्त्री० [स० चरितार्थ+तल्—टाप्] चरितार्थ या कृतार्थ होने की अवस्था या भाव।

चरित्तर†—पु० [सं० चरित्र] छलपूर्ण अनुचित आचरण या व्यवहार जैसे—तिरिया-चरित्तर।

चरित्र—पु० [स०√चर्+इत्र] १. वे सब बातें जो आचरण, व्यवहार आदि के रूप मे की जायँ। किया या किये हुए काम। कार्य-कलाप। २. अच्छा आचरण या चाल-चलन। सदाचार। जैसे—चरित्रवान्। ३ जीवन मे किये हुए कार्यों का विवरण। जीवन-चरित। जीवनी। ४ कहानी, नाटक आदि मे कोई पात्र। ५ कोई महान् अथवा श्रेष्ठ व्यक्ति। ६ स्वभाव। ७ छलपूर्ण अनुचित आचरण और व्यवहार। करतूत। चरित्र। (व्यग्य) ८. कर्त्तव्य। ९ शील। स्वभाव। १०. चलने की क्रिया या भाव। ११ पग। पाँव। पैर।

चरित्र-नायक—पु०=चरितनायक।

चरित्र-पजी—स्त्री० दे० 'आचरण-पजी'।

चरित्र-बंधक—पु० [प० त०] १ मैत्रीपूर्ण तथा सद्व्यवहार करने की प्रतिज्ञा। २ वह चीज जो किसी के पास कुछ शर्तों के साथ वधक या रेहन रखी जाय। ३ उक्त प्रकार से वधक या रेहन रखने की प्रणाली।

चरित्रवान् (वत्)—वि०[स० चरित्र+मतुप्] [स्त्री० चरित्रवती] (व्यक्ति) जिसका चरित्र सद् हो। सदाचारी।

चरित्र-हीन—वि० [तृ० त०] (व्यक्ति) जिसका आचरण या चाल-चलन बहुत ही खराव या निन्दनीय हो। वदचलन।

चरित्रा—स्त्री० [स० चरित्र+टाप्] इमली का पेड।

चरिष्णु—वि० [स०√चर्+इष्णुच्] चलनेवाला। चर। जगम।

चरी—स्त्री० [हिं० चरना] १ वह जमीन जो किसानो को अपने पशुओ के चारे के लिए जमीदार से विना लगान मिलती है। २ वह प्रथा जिसके अनुसार किसान उक्त प्रकार से जमीदार से जमीन लेता है। ३ वह स्थान जो पशुओ के चरने के लिए खुला छोडा जाता है। चरागाह। ४ छोटी ज्वार के हरे पेड जो पशुओं के चारे के काम आते हैं। कडवी। स्त्री० [स० चर=दूत] १ सदेशा ले जानेवाली स्त्री। दूती। २ दासी। नौकरानी।

चरींद—पु० [फा० चरिंद या हिं० चरना] खाने या चरने के लिए निकला हुआ जगली पशु। (शिकारी)

चरु—पु० [स० √चर्+उ] [वि० चरव्य] १ हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ अन्न। हविष्यान्न। हव्यान्न । २. वह पात्र जिसमे उक्त अन्न पकाया जाता है। ३ यज्ञ। ४. ऐसा भात जिसमे से माँड़ न निकाला गया हो। ५ पशुओ के चरने की जगह। चरी। चरागाह। ६ वह महसूल जो पशुओ के चरने की जमीन पर लगता है। ७. वादल। मेघ।

चरुआ†—पु०[स० चरु] [स्त्री० अल्पा० चरुई] चौडे मुँहवाला मिट्टी का वह वरतन जिसमे प्रसूता स्त्री के लिए औषध मिला जल पकाया जाता है।

चरुका—स्त्री०[स० चरु+कन्—टाप्] एक प्रकार का धान। चरक।

चरुखला†—पु० [हिं० चरखा, प० चरखला] सूत कातने का छोटा चरखा।

चरुचेली (लिन्)—पु० [स० चरु-चेल, उपमि०म०,+इनि] शिव।

चरु-पात्र—पु० [प०त०] वह पात्र जिसमे यज्ञ आदि के लिए हविष्यान्न रखा या पकाया जाता है।

चरु-व्रण—पु०[प० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पूआ (पकवान) जिस पर चित्र वनाये जाते थे।

चरु-स्थाली—स्त्री ०[प० त०] =चरु-पात्र।

चरू—पु० दे० 'चरु'। स्त्री० दे० 'चरी'।

चरेर—वि०=चरेरा।

चरेरा—वि० [चरचर से अनु०] [स्त्री० चरेरी] १. कडा और खुरदरा। २. कर्कश। पु० [देश०] हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती और इमारत के काम मे आती है।

चरेरू—पु० [हिं० चरना] चरनेवाला पशु।

चरेली—स्त्री०[?] ब्राह्मी बूटी।

चरैया—पुं० [हिं० चरना] १ चरानेवाला। २. चरनेवाला। †स्त्री० चिडिया।

चरैला—पु० [हिं० चार+ऐल=चूल्हे का मुँह] एक प्रकार का चार मुँहों-वाला चूल्हा जिस पर एक साथ चार चीजें पकाई जा सकती हैं। पु० [?] चिडियाँ फँसाने का एक प्रकार का जाल।

चरोखर—स्त्री० [हिं० चारा+खर] १ पशुओ के चरने की जगह। चरी। चरागाह। २ मिट्टी आदि की वह रचना जिसमे नाँद वैठाई जाती है।

चरोतर—पु० [स० चिरोत्तर] वह भूमि जो किसी मनुष्य को जीवन भर भोगने के लिए दी गई हो।

चरौआ—पु०[हिं० चराना] १ पशुओ के चरने का स्थान। चरी। २ चरवाहा।

चर्क—पु०[देश०] जहाज का मार्ग। रूख। (लश०)

चर्ख†—पु०=चरख।

चर्खकश—पु० [फा०] खराद की डोरी या पट्टा खीचने या चरख चलाने-वाला।

चर्खा†—पु०=चरखा।

चर्खी†—स्त्री०=चरखी।

चर्च—पु०[अ०] १ वह मदिर जिसमे मसीही प्रार्थना करते हैं। गिरजा। २ मसीही धर्म की कोई शाखा या सप्रदाय। पु०=चर्चन।

चर्चक—वि० [स०√चर्च् (वोलना)+ण्वुल्—अक] चर्चा करनेवाला।

चर्चन—पु० [स०√ चर्च्+ल्युट्—अन] १. चर्चा करने की क्रिया या भाव। २ चर्चा । ३ लेप लगाना। लेपन।

चर्चर—वि० [स०√चर्च्+अरन्] गमनशील। चलनेवाला। चर।

चर्चरिका—स्त्री० [स० चर्चरी+कन्—टाप्—ह्रस्व] नाटक मे वह गीत जो दर्शको के मनोरजन के लिए दो अको के वीच मे अर्थात् ऐसे समय मे होता है जव कि रगमच पर अभिनय नही होता।

चर्चरी—स्त्री० [स० चर्चर+ङीप्] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, सगण, दो जगण, भगण और तव फिर रगण (र, स, ज,ज, भ, र) होता है। २ वसत या होली के दिनो मे गाया जानेवाला चाँचर नामक गीत। ३ होली की धम-धाम और हुल्लड़। ४ ताली वजने या वजाने का शब्द। ५ ताल के ६० मुख्य भेदों मे से एक। (सगीत) ६ प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। ७ आमोद-प्रमोद के समय की जानेवाली क्रीडा। ८. नाच-गाना। ९ दे० 'चर्चरिका'।

चर्चरीक—पु० [न०√चर्च् (ताडना)+ईकन् नि० सिद्धि] १ महाकाल भैरव। २ साग-भाजी। तरकारी। ३ सिर के बाल गूँथना या बनाना। केश-विन्यास।

चर्चस—पु० [स०√चर्च्+असुन्] कुबेर की नौ निधियो मे से एक।

चर्चा—स्त्री० [न०√चर्च्+णिच+अड्—टाप्] १. किसी विषय पर या व्यक्ति के सबध मे होनेवाली बात-चीत। जिक्र। वार्त्तालाप। २ बहुत-से लोगो मे फैली हुई ऐसी बात जिसके सबध मे प्राय. सभी लोग कुछ न कुछ कहते हो। ३ किसी प्रकार का कथन या उल्लेख। ४. विचारपूर्वक किसी बात के सब पक्षो पर होनेवाला विचार। जैसे—आज की गोष्ठी मे इन्ही विषयों पर चर्चा हो सकती है। ५ किवदती। अफवाह। ६. किसी चीज के ऊपर कोई गाढी चीज पोतना, लगाना या लेपना। लेपन। ७ गायत्री रूपा महादेवी। ८. दुर्गा।

चर्चिक—वि० [स० चर्चा+ठन्—इक] वेद आदि जाननेवाला।

चर्चिका—स्त्री० [स० चर्चा+कन्—टाप्, इत्व] १. चर्चा। जिक्र। २ दुर्गा। ३ एक प्रकार का सेम।

चर्चित—भू० कृ० [स०√चर्च्+क्त] १. चर्चा के रूप मे आया हुआ। २ जिसकी चर्चा की गई हो या हुई हो ३ जो लेप के रूप मे ऊपर से पोता या लगाया गया हो। जैसे—चदनचर्चित ललाट या शरीर।

चर्णाद्रि—पु० दे० 'चरणाद्रि'।

चर्पट—पु० [स० √चृप् (उद्दीप्त करना)+अटन्] १ हाथ की खुली हुई हथेली। २ उक्त प्रकार की हथेली से लगाया हुआ तमाचा या थप्पड। वि० बहुत अधिक। विपुल।

चर्पटा—स्त्री० [स० चर्पट+टाप्] भादो सुदी छठ।

चर्पटी—स्त्री० [स० चर्पट+ङीप्] एक प्रकार की चपाती या रोटी।

चर्परा—वि०=चरपरा।

चर्बजबान—वि०[फा०] बहुत अधिक और तेजी से बोलनेवाला।

चर्बण—पु०=चर्वण।

चर्बित—भू० कृ०=चर्वित।

चर्बी—स्त्री०=चरबी।

चर्भट—पुं० [स०√चर्+क्विप्, √भट् (पालना)+अच्, चर्-भट्, कर्म० स०] ककडी।

चर्भटी—स्त्री० [स० चर्भट+१, ङीप्] चर्चरी गीत। २ चर्चा। ३ आनन्द के समय की जानेवाली क्रीडा। ४ आनन्दध्वनि।

चर्म (न्)—पु० [स०√चर्+मनिन्] १. शरीर पर का चमडा। २. ढाल जो पहले चमडे की बनती थी।

चर्म-करंड—पु० [प० त०] चमडे का बडा कुप्पा जिसके सहारे नदी पार करते थे। (कौ०)

कर्म-करण—पु० [प० त०] चमडे की चीजें बनाने का काम।

चर्म-करी—स्त्री० [स० चर्मन्√कृ (करना)+ट—ङीप्, उप० स०] स्त्री० एक प्रकार का गध-द्रव्य। २ मासरोहिणी नाम की लता।

चर्मकशा—स्त्री० [सं०=चर्मकषा, पृषो० सिद्धि] १. एक प्रकार का गध द्रव्य। चमरखा। २ मासरोहिणी लता। ३. सातला नाम का थूहड।

चर्मकषा—स्त्री० [स० चर्मन् √कष् (खरोचना)+अच्—टाप्] चर्म-कशा।

चर्मकार—पु०[स० चर्मन्√कृ+अण्, उप०स०] [स्त्री० चर्मकारी] चमडे का काम करने अर्थात् चमडे की चीजे बनानेवाला व्यक्ति अथवा ऐसे व्यक्तियों की जाति। चमार।

चर्म-कारक—पु०[प० त०]=चर्मकार।

चर्मकारी—स्त्री०=चर्म-कार्य।

चर्म-कार्य—पु०[प० त०] चमडे की चीजें बनाने का कार्य या पेशा।

चर्म-कील—पु० [स० त०] १. बवासीर नामक रोग। २. एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर पर मास की कीले सी निकल आती और बहुत कष्ट देती है। न्यच्छ।

चर्म-कूप—पु०[प० त०] चमडे का कुप्पा।

चर्म-ग्रीव—पु०[ब० स०] शिव का एक अनुचर।

चर्म-घटिका—स्त्री० [प० त०] जोक।

चर्मचक्षु (स्)—पु० [प० त०] चमडे की बनी हुई ऊपरी आँखे (अतश्चक्षु या ज्ञान चक्षु से भिन्न)। जैसे—खाली चर्म-चक्षुओ से देखने पर ईश्वर नही दिखाई देगा।

चर्म-चटका, चर्मचटी—स्त्री० [तृ० त०] [चर्मन्√चट्+अच्—ङीप्] चमगादड।

चर्म-चित्रक—पु० [प० त०] श्वेत कुष्ठ नामक रोग।

चर्म-चेल—पु० [मध्य०स०] वह चमडा जो उलटकर कपडे की तरह ओढा या पहना गया हो।

चर्मज—वि० [स० चर्मन्√जन् (उत्पत्ति)+ड, उप०स०] चर्म या चमडे से उत्पन्न होनेवाला।

पु० १. रोआँ। रोम। २ खून। रक्त। लहू।

चर्मण्वती—स्त्री० [स० चर्मन्+मतुप्—ङीप्] १ चबल नदी जो विंध्याचल पर्वत से निकलकर इटावे के पास यमुना से मिलती है। शिवनद। २. केले का पेड।

चर्म-तरंग—पु० [स० त०] शरीर के चमडे पर पडी हुई झुर्री।

चर्म-दंड—पु०[मध्य०स०] चमडे का बना हुआ कोड़ा या चाबुक।

चर्म-दल—पु० [स० चर्मन्√दल् (विदीर्ण करना)+णिच्+अण्, उप०स] एक प्रकार का कोढ जिसमे पहले किसी स्थान पर बहुत-सी फुसियाँ हो जाती हैं और तब वहाँ का चमडा फट जाता है।

चर्म-दूषिका—स्त्री० [प० त०] दाद नामक रोग।

चर्म-दृष्टि—स्त्री० [प० त०] चर्म-चक्षुओ की अर्थात् साधारण दृष्टि। आँख।(ज्ञान-दृष्टि से भिन्न)

चर्म-देहा—पु०[ब० स०] मशक के ढग का एक प्रकार का पुराना बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

चर्म-द्रुम—पु० [मध्य० स०] भोजपत्र का पेड।

चर्म-नालिका—स्त्री० [प० त०] चमडे का कोडा या चाबुक।

चर्म-नासिका—स्त्री० =चर्म-नालिका।

चर्म-पट्टिका—स्त्री० [प० त०] चमोटी।

चर्म-पत्रा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] चमगादड।

चर्म-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीप्]=चर्म-पत्रा।

चर्म-पादुका—स्त्री०[मध्य० स०] चमडे का बना हुआ जूता।

चर्म-पीड़िका—स्त्री०[प० त०] एक प्रकार की शीतला (रोग)।

चर्म-पुट—पु०[मध्य० स०] चमडे का कुप्पा या थैला।

चर्म-पुटक—पु० [स० चर्म-पुट+कन्]=चर्म-पुट।
चर्म-प्रभेदिका—स्त्री० [ष०त०] चमडा काटने का सुतारी नामक औजार।
चर्म-बंध—पु० [ष० त०] १ चमडे का तस्मा या पट्टी। २ चमडे का कोडा या चाबुक।
चर्म-मडल—पु० [मध्य०स०] एक प्राचीन देश का नाम। (महाभारत)
चर्म-मसूरिका—स्त्री० [मध्य०स०] मसूरिका रोग का एक भेद जिसमे रोगी के शरीर मे छोटी-छोटी फुसियाँ या छाले निकल आते हैं।
चर्म-मुंडा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] दुर्गा।
चर्म-मुद्रा—स्त्री० [मध्य०स०] १ तत्र मे एक प्रकार की मुद्रा। २ चमडे का सिक्का।
चर्म-यष्टि—स्त्री० [मध्य०स०] चमडे का कोडा या चाबुक।
चर्म-रंगा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] एक प्रकार की लता जिसे आवर्त्तकी और भगवद्वल्ली भी कहते है।
चर्मरी—स्त्री० [स० चर्मन्√रा (दाने)+क-ङीप्] एक प्रकार की लता जिसका फल बहुत विषैला होता है।
चर्मरु—पु० [स० चर्मन्√रा+कु] =चमार।
चर्म-वंश—पुं० [ब०स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।
चर्म-वसन—पु० [ब०स०] महादेव। शिव।
चर्म-वाद्य—पु० [मध्य०स०] ढोल, नगाडा आदि ऐसे बाजे जिन पर चमडा मढा होता है।
चर्म-वृक्ष—पु० [मध्य०म०] भोजपत्र का पेड।
चर्म-संभवा—स्त्री० [ब०स०] इलायची।
चर्मसार—पु० [ष०त०] वैद्यक मे, खाये हुए पदार्थों से शरीर के अंदर बननेवाला रस।
चर्मांत—पु० [चर्मन्-अत, ब०स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का यत्र जिसका व्यवहार चीर-फाड आदि मे होता था।
चर्माख्य—पु० [चर्मन्-आख्या, ब०स०] कुष्ठ रोग का एक प्रकार या भेद।
चर्मानला—स्त्री० [म०] प्राचीन काल की एक नदी।
चर्मानुरजन—पु० [चर्मन्-अनुरजन, ष०त०] बदन पर लगाने का सिंदूर की तरह का एक द्रव्य।
चर्मार—पु० [स० चर्मन्√ऋ (गति)+अण्, उप० स०] चर्मकार। चमार।
चर्मिक—पु० [न० चर्मन्+ठन्—इक] हाथ मे ढाल लेकर लडनेवाला योद्धा।
चर्मी (र्मिन्)—पु० [स० चर्मन्+इनि, टिलोप]=चर्मिक।
चर्य्य—वि० [स√चर् (चलना)+यत्] १. जो चरण अर्थात् आचरण के रूप मे किये जाने के योग्य हो। २. कर्त्तव्य।
चर्य्या—स्त्री० [स० चर्य्य+टाप्] १ वह जो किया जाय। आचरण। जैसे—व्रतचर्य्या, दिनचर्य्या आदि। २ आचरण। चाल-चलन। ३ काम-धधा। ४ जीविका या वृत्ति। ५ सेवा। ६ धर्मशास्त्र के अनुसार विहित काम करना और निषिद्ध काम न करना। ७ भोजन करना। खाना। ८ चलना। गमन।
चर्राना—अ० [अनु०] १ लकडी आदि का टूटने या तडकने के समय चर चर शब्द होना। २ घाव के सूखने के समय होनेवाले तनाव के कारण हलकी पीडा होना। ३ शरीर मे चुनचुनाहट या हलकी जलन होना। ४ किसी कार्य, बात, वस्तु आदि की प्रबल इच्छा होना। जैसे—किसी काम या बात का शौक चर्राना।

२—२८

चर्री—स्त्री० [हिं० चर्राना] ऐसी लगती हुई बात जिससे किसी के मर्म पर आघात होता हो।
चर्वण—पु० [स०√चर्व् (चबाना)+ल्युट्—अन] [वि० चर्व्य] १ किसी चीज को मुँह मे रखकर दाँतो से बराबर कुचलने की क्रिया। चबाना। २ चबाकर खाई जानेवाली चीज। ३. भुना हुआ अन्न। चबेना। दाना।
चर्वित—भू०कृ० [सं०√चर्व्+क्त] १. चाबा या चबाया हुआ। २. खाया हुआ। भक्षित।
चर्वित-चर्वण—पु० [ष० त०] किसी किये हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना। पिष्टपेषण।
चर्वित-पात्र—पु० [ष० त०] उगालदान। पीकदान।
चर्विल—पु० [अ०] गाजर की तरह की एक पाश्चात्य तरकारी जो कुआर-कातिक मे क्यारियो मे बोई जाती है।
चर्व्य—वि० [स०√चर्व्+ण्यत्] १ चबाये जाने के योग्य। २ जो चबाकर खाया जाय।
चर्षणि—पु० [स०√कृष् (लिखना)+अनिच्, च आदेश] आदमी। मनुष्य।
चर्षणी—स्त्री० [स० चर्षणि+ङीप्] १ मानव जाति। २ कुलटा स्त्री।
चर्स—स्त्री० =चरस।
चलंता—वि० [हिं० चलना] १ चलता हुआ। चलता रहनेवाला। २ चलनेवाला।
चलंदरी—स्त्री०=चलनदरी।
चल—वि० [स० चल् (जाना)+अच्] १. जो चल रहा हो, चलता हो या चल सकता हो। जैसे—चल-चित्र। २ चलता या हिलता-डुलता रहनेवाला। जैसे—चल चचु। ३ अस्थिर। चचल। ४ जो एक स्थान से उठाकर या हटाकर दूसरे स्थान पर रखा या लाया जा सके। (मूवेबुल) जैसे—चल सपत्ति। ५ नश्वर।
पु० [√चल्+णिच्+अप्] १ काँपने, चलने या हिलने की क्रिया या भाव। २. पारा। ३ महादेव। शिव। ४ विष्णु। ५ ऐब। दोष। ६ चूक। भूल। ७ कपट। छल। धोखा। ८ दोहा छद का एक भेद जिसमे ११ गुरु और २६ लघु मात्राएँ होती है। ९ नृत्य मे अग की वह चेष्टा जिसमे हाथ के इशारे से किसी को अपनी ओर बुलाया जाता है। १० नृत्य मे शोक, चिंता, परिश्रम या उत्कठा दिखलाने के लिए गहरा साँस लेना। ११ गणित मे वह राशि जिसके कई मान या मूल्य हों। १२ उक्त राशि का प्रतीक चिह्न। (वेरिएब्ल, उक्त दोनो अर्थो मे)
चलक—पु० [स० चल+कन्] १ माल। असबाब। २ दे० 'चल' ११ तथा १२।
चलकना†—अ०=चिलकना।
चल-कर्ण—वि० [ब०स०] जिसके कान सदा हिलते रहते हो।
पु० १ हाथी। २ ज्योतिष मे, पृथ्वी से ग्रहो का प्रसम अन्तर।
चलका—पु० [देश०] एक प्रकार की नाव।

चल-केतु—पु० [कर्म० स०] ज्योतिष मे, एक प्रकार का पुच्छलतारा जिसके उदय से अकाल या दुर्भिक्ष पडता है।

चल-चंचु—पु०[व०स०] जिसकी चोच हिलती रहती हो अर्थात् चकोर।

चल-चलाव—पु० [हिं० चलना+चलाव।(अनु०)] १ कही से चलने अथवा चल पडने की क्रिया, तैयारी या भाव। चलाचली। २. मृत्यु। उदा०—दुनियाँ है चल-चलाव का रस्ता, सभल के चल।—कोई शायर।

चलचा—पु०[देश०] ढाक। पलास।

चल-चाल—वि०[व० स०] चलविचल। चचल। अस्थिर।

चल-चित्त—वि०[व०स०] (व्यक्ति) जिसका मन कही या किसी निश्चय पर टिकता या लगता न हो। चचल चित्तवाला।

चल-चित्र—पु० [कर्म० स०] १ भा या छाया चित्रो का वह अनुक्रम जो इतनी तेजी से परदे पर विक्षेपित किया जाता है कि दृष्टि-भ्रम के कारण उनमे दिखाई देनेवाली वस्तुएँ, व्यक्ति आदि चलते-फिरते नजर आते हैं। २ छाया या भाचित्रित कथा या कहानी। (मूवी)

चल-चित्रण—पु० [प० त०] भा या छाया-चित्रण के द्वारा चल-चित्र तैयार करना। (फिल्मिग)

चल-चित्रित—वि० [स० चलचित्र+णिच्+क्त] चल-चित्र के रूप मे तैयार किया हुआ। (फिल्म्ड)

चल-चूक—स्त्री० [स० चल=च वल] धोखा। छल। कपट।

चलता—स्त्री० [स० चल+तल्-टाप्] १. चल अर्थात् गतिमान् या गतिशील होने की अवस्था या भाव। २ अस्थिरता। चचलता।

वि० [हिं० चलना] [स्त्री० चलती] १ जो चल रहा हो। जो गति मे हो। जैसे—चलती गाडी मे से मत उतरो।

मुहा०—**(किसी को) चलता करना**=जैसे-तैसे दूर करना या हटाना। पीछा छुडाने के लिए रवाना करना। जैसे—मैंने दो-चार बातें करके उन्हे चलता किया। **(कोई काम) चलता करना**=जैसे-तैसे निपटाना या पूरा करना। जैसे—कई काम तो आज मैंने यो ही चलते किये। **(किसी व्यक्ति का) चलता या चलते बनना या होना**=चुपचाप खिसक या हट जाना। जैसे—झगडा बढता हुआ देखकर मैं तो वहाँ से चलता बना। **चलते-फिरते नजर आना**=चलता या चलते बनना। जैसे—अब आप यहाँ से चलते-फिरते नजर आइए।

२ जो प्रचलन या व्यवहार मे बराबर आ रहा हो। जैसे—चलता माल, चलता सिक्का। ३ जिस पर से होकर लोग बराबर आते-जाते रहते है। जैसे—चलता रास्ता। ४. जो ठीक प्रकार से काम करने की स्थिति मे हो। जैसे—चलती मशीन, चलती घडी। ५ जिसका अथवा जहाँ पर काम-काज या कारोबार ठीक प्रकार से चल रहा हो। जैसे—चलती दूकान, चलती वकालत। ६ जिसका क्रम बराबर चलता रहता हो। जैसे—चलता खाता (दे०)। ७. जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से जा अथवा ले जाया जा सकता हो। जैसे—चलता पुस्तकालय, चलता सिनेमा। ८. (व्यक्ति) जो अधिक चतुर या होशियार हो। धूर्त्त। जैसे—चलता पुरजा (दे०)। ९ (कार्य या वस्तु) जिसे करने अथवा बनाने मे विशेष योग्यता अपेक्षित न हो। जैसे—ऐसे चलते काम तो यहाँ नित्य आया करते है।

पद—चलता गाना। (देखें)

१०. जिसमे समस्त अगो या ब्योरे की बातो पर विशेष ध्यान न दिया गया हो या न दिया जाय। काम-चलाऊ। जैसे—किसी काम या किताब को चलती निगाह से देखना। ११. जो अपने अत या समाप्ति के पास तक पहुँच रहा हो। जैसे—चलती अर्थात् ढलती उमर।

पद—चलता समय या समाँ। (देखें)

पु०[हिं० चलना] १ उलटा नाम का पकवान जो पिसी हुई दाल या बेसन से रोटी के रूप मे पकाया जाता है। २ रास्ते मे वह स्थान जहाँ फिसलन और कीचड बहुत अधिक हो।

पु०[देश०] १ एक प्रकार का बहुत बडा सदाबहार वृक्ष जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती है और पानी मे भी जल्दी गलती-सडती नही है। २. उक्त वृक्ष का फल जो तरकारी बनाने और यो भी खाने के काम आता है। ३ कवच।

†पु०=चिलता (कवच)।

चलता खाता—पु०[हिं० पद] लेन-देन का ऐसा हिसाब जिसका क्रम बराबर चलता या बना रहता हो, बीच मे बद न होता हो। (करेण्ट एकाउण्ट)

चलता गाना—पु० [हिं०] ऐसा गाना जो शुद्ध राग-रागिनियो के अन्तर्गत न हो पर जिसका प्रचार सर्व-साधारण मे हो। जैसे—गजल, दादरा, लावनी आदि।

चलता छप्पर—पु०[हिं० पद] छाता। (फकीरो की भाषा)

चलता पुरजा—पु०[हिं० पद] व्यवहार-कुशल व्यक्ति। चालाक या चुस्त व्यक्ति।

चलता लेखा—पु०=चलता खाता।

चलता समय—पु०=चलता समाँ।

चलता समाँ—पु० [हिं०] जीवन का अतिम भाग या समय। वृद्धावस्था।

चलती—स्त्री० [हिं० चलना] कोई कार्य करने या करा सकने का अधिकार। उदा०—आज-कल उस दरबार मे उनकी बडी चलती है।

वि० हिं० 'चलता' का स्त्री० रूप।

चलतू—वि० [हिं० चलना] १ दे० 'चलता'। २ (भूमि) जो जोती-बोई जाती हो।

चलदंग—पु०[व०स०] झीगा मछली।

चल-दल—पु० [व०स०] पीपल का वृक्ष।

चलन—पु० [स०√चल्+ल्युट्-अन] १. गति। चाल। २ कपन। ३. चरण। पैर। ४. हिरन। ५ ज्योतिष मे विषुवत् की वह गति जिससे दिन और रात दोनो बराबर रहते है। ६ नृत्य मे एक प्रकार की चेष्टा या मुद्रा।

पु०[हिं० चलना] १. चलने की अवस्था, क्रिया या भाव। गति। चाल। २. प्रचलित रहने की अवस्था या भाव। प्रचलन। जैसे—कपडे या सिक्के का चलन। ३. आचार-व्यवहार आदि से संबध रखने वाली प्रथा। रीति। रवाज। ४. अच्छा आचरण या व्यवहार। जैसे—जो चलन से रहेगा, उसे कभी कोई कष्ट न होगा।

चलन-कलन—पु०[तृ० त०] ज्योतिष मे एक प्रकार का गणित जिसके द्वारा पृथ्वी की गति के अनुसार दिन-रात के घटने-बढने का हिसाब लगाया जाता है।

चलनदरी—स्त्री०[हिं० चलन+दरी] वह स्थान जहाँ यात्रियो को पुण्यार्थ जल पिलाया जाता हो। पौसरा।

चलन-समीकरण—पु०[प० त०] गणित में एक प्रकार की क्रिया। दे० 'समीकरण'।

चलनसार—वि० [हिं० चलन+सार (प्रत्य०)] १. जिसका उपयोग, न या व्यवहार बराबर हो रहा हो। जैसे—चलनसार सिक्का। २ जो बहुत दिनों तक चल सके अर्थात् काम में आ सके। जैसे—चलनसार धोती।

चलनहार|—वि०[हिं० चलना+हार (प्रत्य०)] १ जो अभी चलने को उद्यत या प्रस्तुत हो । २. जो अभी चल रहा हो। चलनेवाला। ३ दे० 'चलनसार'।

चलना—अ० [स० चलन] १. पैरों की सहायता से जीव-जंतुओं का एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए आगे बढना। जैसे—आदमियों या घोडो का चलना।

मुहा०—चल देना= (क) कोई स्थान छोड़कर वहाँ से दूर होना या हट जाना। (ख) विना कहे-सुने या चुपके से खिसक या हट जाना। जैसे—वह लड़का मेरे सब कपड़े लेकर चल दिया। **चल पड़ना**= चलना आरंभ करना। जैसे—सवेरा होते ही यात्री चल पड़े।

२ पहियो आदि की सहायता से अथवा और किसी प्रकार किसी ओर अग्रसर होना या बढना। जैसे—गाडी या जहाज का चलना, मछली या साँप का चलना। ३ किसी प्रकार की गति से युक्त होकर आगे बढ़ना। गति मे होना। जैसे—आँधी या हवा चलना, ग्रहो या नक्षत्रों का चलना। ४ किसी प्रकार की गति से युक्त होकर या हिलते-डोलते हुए कोई कार्य सपन्न या सपादित करना। जैसे—घडी, नाडी या यंत्र चलना। ५ कोई काम करते हुए उसमे आगे की ओर बढना। उन्नति करना। अग्रसर होना।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) चल निकलना = किसी काम या बात मे तत्परतापूर्वक लगे रहकर औरो से कुछ आगे बढना या उन्नति करना। जैसे—थोडे ही दिनो मे वह संस्कृत पढने (या दस्तकारी सीखने) में चल निकलेगा। **(किसी काम या बात का) चल निकलना** =उन्नति, वृद्धि आदि के मार्ग पर आगे बढना। जैसे—रोजगार (या वकालत) चल निकलना।

६. उचित या साधारण गति से क्रियाशील रहना। सक्रिय रहना या होना। जैसे—(क) लिखने में कलम चलना। (ख) कारखाना या दूकान चलना। (ग) विना कहीं अटके या रुके बराबर बढते चलना। ७ किसी कार्य, बात या स्थिति का उचित रूप से निर्वाह या वहन होना। काम निकलना या होता रहना। जैसे—(क) इतने रुपयो से काम नही चलेगा। (ख) यह लडका चौथे दरजे मे चल जायगा।

मुहा०—पेट चलना =खाने-पीने का सुभीता होता रहना। जीविका-निर्वाह होना। जैसे—इसी मकान के किराये से उनका पेट चलता है।

८ किसी चीज का ठीक तरह से उपयोग या व्यवहार मे आते रहना। बराबर काम देते रहना। जैसे—(क) यह कपडा तो अभी बरसो चलेगा। (ख) बुढापे के कारण अब उनका शरीर नही चलता। (ग) पाकिस्तानी नोट और रुपए भारत मे नही चलते। ९ शरीर के किसी अंग का अपने कार्य मे प्रवृत्त या रत होना। जैसे—जवान या मुँह चलना अर्थात् जवान या मुँह से बातें निकलना, मुँह चलना अर्थात् मुँह से खाने या चबाने की क्रिया होना; हाथ चलना अर्थात् हाथ के द्वारा किसी पर प्रहार होना। १० किसी काम या बात का आरंभ होना। छिडना। जैसे—किसी की चर्चा या जिक्र चलना, कोई प्रसंग या बात चलना; कोई नई प्रथा या रीति चलना। ११. प्रहार के उद्देश्य से अस्त्र-शस्त्र आदि का प्रयोग या व्यवहार होना। जैसे—गोली, तलवार या लाठी चलना। १२ उक्त के आधार पर, लाक्षणिक रूप मे आपस मे वैर-विरोध या वैमनस्य का व्यवहार होना। जैसे—आज-कल दोनों भाइयो मे खूब चल रही है। १३. तरल पदार्थ का अपने आधान या पात्र मे से होते हुए आगे बढते या बहते रहना। जैसे—पानी गिरने या बरसने पर पनाला या मोरी चलना। १४ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे शरीर के किसी अंग मे से तरल पदार्थ का असाधारण या विकृत रूप मे बाहर निकलना या निकलते रहना। जैसे—पेट चलना अर्थात् दस्त के रूप मे पेट में से निरंतर बहुत सा मल निकलना, पेट और मुँह चलना अर्थात् लगातार बहुत से दस्त और कै होना। १५ मार्ग या रास्ते के संबंध मे, ऊपर से लोगो का आना-जाना होना। जैसे—(क) यह सड़क रात भर चलती है। (ख) यह गली सवेरे से चलने लगती है। (ग) यह जल-मार्ग आज-कल नही चलता। १६ किसी क्रम या परंपरा का बराबर आगे बढ़ते रहना या जारी रहना। जैसे—किसी का नाम या वंश चलना। उदा०—रघुकुल रीति सदा चलि आई।—तुलसी। १७ मन का किसी प्रकार की वासना से युक्त होकर किसी ओर प्रवृत्त होना। जैसे—खाने-पीने की किसी चीज पर मन चलना। १८ अधिकार, युक्ति वश, शक्ति आदि के संबंध मे अपना ठीक और पूरा काम करना अथवा परिणाम या फल दिखाना। जैसे—जब तक हमारी (युक्ति या शक्ति) चलेगी, तब तक हम उन्हें ऐसा नही करने देंगे।

मुहा०—(किसी की) कुछ चलना =किसी का कुछ अधिकार या वश अथवा उपाय या कौशल सफल या सार्थक होना। जैसे—किसी की कुछ नही चलती कि जब तकदीर फिरती है।—कोई शायर।

१९ किसी लिखावट या लेख का ठीक तरह से पढ़ा जाना और समझ मे आना। जैसे—उनका लिखा हुआ पत्र या लेख यहाँ किसी से नही चलता (पढा जाता)। २० खाने या पीने के समय किसी पदार्थ का ठीक तरह से गले के नीचे उतरना। खाया, निगला या पीया जाना। जैसे—(क) पेट बहुत भर गया है, अब एक भी पूरी (या रोटी) नही चलेगी। (ख) ले लो अभी दो लड्डू तो और चल ही जायँगे। २१ खाने-पीने की चीजे परोसने के समय अलग-अलग चीजो का क्रम से सामने आना या रखा जाना। जैसे—पहले पूरी-तरकारी और तब मिठाई चलनी चाहिए। २२. लोगों के साथ अच्छा और मेल-जोल का आचरण या व्यवहार करना। जैसे—ससार (या समाज) मे सबसे मिलकर चलना चाहिए। २३ आज्ञा, आदेश, उदाहरण आदि के अनुसार आचरण या व्यवहार करना। जैसे—सदा बडो की आज्ञा और उपदेश के अनुसार अथवा उनके दिखलाये या बतलाये हुए मार्ग पर चलना चाहिए। २४ किसी प्रकार के कपट, चालाकी या धूर्तता का आचरण या व्यवहार करना। जैसे—हम देखते है कि आज-कल तुम हमसे भी चलने लगे हो। २५ किसी काम या चीज का अपने उचित, चलित या नियत क्रम, मार्ग या स्थिति से इधर-उधर या विचलित होना जो दोष, विकार आदि का सूचक होता है। जैसे—(क) ऐसा जान पडता है कि छत (या दीवार) भी दो-चार दिन मे चली जायगी। (ख) उनका आधा खेत तो इस बरसात मे गंगा मे चला गया।

मुहा०—(किसी चीज का) चल जाना=किसी चीज का कट-फट, टूट-फूट या गल-सडकर अथवा और किसी प्रकार खराव या विकृत हो जाना। जैसे—(क) थान मे से टुकडा फाडने के समय कपडे का चल जाना अर्थात् सीधा न फटकर इधर-उधर या तिरछा फट जाना। (ख) कढी, दाल या भात का चल जाना अर्थात् वासी होने के कारण सडने लगना। (ग) अगरखा या कुरता चल जाना अर्थात् किसी जगह से कट, फट या मसक जाना। (घ) किसी का दिमाग या मस्तिष्क चल जाना अर्थात् कुछ-कुछ पागल या विक्षिप्त-सा हो जाना। जैसे—जान पडता है कि इस लडके का दिमाग कुछ चल गया है। २६ इस लोक से प्रस्थान करना। काल के मुँह मे जाना। मर जाना। जैसे—सवको एक न एक दिन चलना है।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) चल वसना= मर जाना। स्वर्गवासी होना। जैसे—आज मोहन के पिता चल वसे।

२७ नष्ट या समाप्त होना।

मुहा०—(किसी चीज का) चला जाना =नष्ट या समाप्त हो जाना। न रह जाना। जैसे—उनके आने से मेरी भूख और प्यास चली जाती है।

म० १ कुछ विशिष्ट खेलो मे किसी चीज के द्वारा अपनी वारी से चलने की-सी क्रिया करना। आगे वढाना या रखना अथवा सामने लाना। जैसे —(क) चौसर की गोटी, ताश का पत्ता या शतरज का मोहरा चलना। (ख) घोडा या हाथी चलना; वादशाह या बेगम चलना। २ किसी प्रकार की चाल, तरकीब या युक्ति को क्रियात्मक रूप देना। जैसे—(क) आपस मे तरह-तरह की चाले चलना। (ख) नित्य नई तरकीव चलना।

पु० [हिं० चलनी] १ वड़ी चलनी या छलनी। २ चलनी की तरह का लोहे का वह वडा कलछा या पौना जिससे उवलते हुए ऊख के रस पर का फेन या मैल उठाते है। ३ हलवाइयो का उक्त प्रकार का वह उपकरण जिससे चाशनी या शीरे पर की मैल उठाई जाती है।

चलनि*—स्त्री० = चलन।

चलनिका—स्त्री० [स० चलनी+कन्—टाप्, ह्रस्व] १ स्त्रियो के पहनने का घाघरा। २ झालर।

चलनी—स्त्री० =छलनी।

स्त्री० [स० √चल्+ल्युट्—अन, ङीप्] =चलनिका।

चलनौस—पु० [हिं० चालना+औस (प्रत्य०)] किसी वस्तु मे का वह अश जो उसे चालने या छानने पर चलनी मे वच रहता है। चालन। चोकर।

चलनौसन—पु० =चलनौस।

चलपत†—पु० =चलपत्र।

चल-पत्र—पु० [व० स०] पीपल का पेड, जिसके पत्ते हरदम कुछ न कुछ हिलते रहते है।

चलबाँक—वि० [हिं० चलना+वाँका] तेज चलनेवाला। शीघ्रगामी। †वि० =चरवाँक।

चलविचल—वि० =चल-विचल।

चल-मित्र—पु० [कर्म० स०] वह मित्र (राजा) जो सदा साथ न दे सके।

चल-मुद्रा—स्त्री० [कर्म० स०] वह मुद्रा जिसका चलन किसी देश मे सव जगह समान रूप से होता हो। (करेन्सी)

चल-रेखा—स्त्री० [कर्म० स०] चचल रेखा अर्थात् तरग।

चलवत—पु० [स० चल+हिं० वत] पैदल सिपाही। प्यादा।

चलवाना—स० [हिं० चलाना का प्रे०] १. चलने का काम दूसरे से कराना। २ किसी को कोई चीज चलाने मे प्रवृत्त करना।

चल-विचल—वि० [स० कर्म० स०] १. अपने स्थान से हटा हुआ। २ अस्थिर। चचल। ३. अस्त-व्यस्त।

चलवया—पु० [हिं० चलना] १ चलनेवाला। २ चलानेवाला।

चल-संपत्ति—स्त्री० [कर्म० स०] ऐसी सपत्ति जो एक स्थान से आसानी से हटाई-वढाई जा सकती हो। (मूवेवुल प्रापर्टी)

चला—स्त्री० [स० √चल्+अच्—टाप्] १ विजली। दामिनी। २ पृथ्वी। ३. लक्ष्मी। ४ पीपल। ५ शिलारस नामक गंध-द्रव्य। †पु० =चाला।

चलाऊ—वि० [हिं० चलना] १ जैसे-तैसे काम चलानेवाला। जैसे—काम-चलाऊ पुस्तक। २. अधिक समय तक टिकने या ठहरनेवाला।

चलाक—वि०=चालाक।

चलाकी—स्त्री०=चालाकी।

चलाका—स्त्री० [स० चला =विजली] विजली। दामिनी। विद्युत्।

चलाचल—वि० [स० √चल्+अच्, द्वित्व] चचल। चपल।

स्त्री० [हिं० चलना] १. चलाचली। २ गति।

चलाचली—स्त्री० [हिं० चलना] १. चलने की क्रिया या भाव। २. कही से चलने के समय की जानेवाली तैयारी। ३ प्रस्थान। ४ एक के वाद दूसरे का भी जाना।

चलातंक—पु० [चल-आतक, व० स०] एक वातरोग जिसके कुप्रभाव से हाथ-पाँव आदि काँपने लगते है। राशा।

चलान—स्त्री० [हिं० चलना] १. चलने या चलाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ व्यापारिक क्षेत्र मे कोई चीज या माल कही भेजे जाने या रवाना करने की क्रिया या भाव। जैसे—अनाज या रूई की चलान। ३ उक्त प्रकार से कही से चलकर आई हुई चीज या माल। जैसे—नई चलान का कपडा। ४ अभियुक्त को पकड़कर न्यायालय मे विचार के लिए भेजे जाने की क्रिया या भाव। जैसे—चोर या जुआरी की चलान होना। ५ वह कागज जिसमे सूचना के लिए भेजी हुई चीजो की सूची, विवरण आदि लिखे रहते है। रवन्ना।

चलानदार—पु० [हिं० चलान+फा० दार] वह व्यक्ति जो माल की चलान रक्षा के लिए उसके साथ जाता है।

चलाना—स० [हिं० चलना का स०] १. हिन्दी 'चलना' क्रिया का सकर्मक रूप। किसी को चलाने मे प्रवृत्त करना। ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ या कोई चले। जैसे—लडके को पैदल चलाना। २ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई यान या सवारी किसी ओर आगे वढे। जैसे—गाड़ी, नाव, मोटर या रेल चलाना। ३ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई यत्र ठीक तरह से अपना काम करने लगे। जैसे—घडी, मशीन, रेडियो या हलचलाना। ४. किसी प्रकार की या किसी रूप मे गति देना। इधर-उधर करते हुए हिलाना-डुलाना। जैसे—चूल्हे पर चढाई हुई तरकारी या दाल चलाना। ५ किसी के आचरण, गति-विधि, व्यवहार आदि की देख-रेख रखते हुए

उसके सब व्यापार सचालित करना। जैसे—लडको को जैसे चलाओगे, वैसे ही वे चलेगे। ६ उक्त प्रकार या रूप से किसी का सचालन करते हुए उसे अपने साथ निर्वाह के योग्य बनाना। कुछ करने के लिए उपयुक्त बनाना। जैसे—(क) इस लडके को हम छठे दरजे मे चला ले जायँगे। (ख) ऐसे गँवार नौकर को भी आप चला ही ले गये। ७ उचित अथवा साधारण रूप से किसी काम, चीज या बात को क्रियाशील या सक्रिय रखना। ऐसी व्यवस्था करना जिससे कोई काम अच्छी तरह से चलता रहे। जैसे—कार्यालय, कोठी या पाठशाला चलाना। ८ किसी स्थिति का निर्वाह या उत्तरदायित्व का वहन करना। जैसे—(क) वह गृहस्थी के सब काम अच्छी तरह चला लेता है। (ख) इस महँगी मे लोगो के लिए गृहस्थी चलाना बहुत कठिन हो रहा है।

मुहा०—**(अपना या किसी का) पेट चलाना**=भोजन आदि के व्यय का निर्वाह करना। जीविका चलाना। जैसे—पहले तुम अपना पेट तो चला लो, तब व्याह की बात सोचना। **(कोई काम या बात) चलाये चलना**=किसी प्रकार निर्वाह करते चलना। जैसे—अभी तो हम जैसे-तैसे चलाये चलते हैं।

९ कौशल, योग्यता तथा तत्परतापूर्वक कोई काम करना। जैसे—शासन चलाना। १० किसी चीज को बराबर उपयोग या व्यवहार मे लाते रहना। जैसे—यह कबल तो वह दस बरस चलावेगा। ११ शरीर के किसी अग को उसके किसी नियमित कार्य मे प्रवृत्त या रत करना। जैसे—(क) मुँह चलाना, अर्थात् भोजन करना या खाना। (ख) हाथ चलाना अर्थात् ठीक तरह सक्रिय रहकर पूरा काम करना। १२ शरीर के किसी अग को किसी असाधारण रूप मे अथवा कुछ उग्र प्रकार से प्रयुक्त या सक्रिय करना। जैसे—(क) जबान चलाना, अर्थात् बहुत बढ-चढकर या उद्दडतापूर्ण बातें करना। (ख) किसी पर हाथ चलाना अर्थात् उसे थप्पड या मुक्का मार बैठना। १३ प्रहार करने के लिए अस्त्र-शस्त्र या किसी और साधन से काम लेना। जैसे—(क) तलवार, तीर या तोप चलाना। (ख) डडा या लाठी चलाना। (ग) घूँसा या लात चलाना। १४ तत्र-मत्र आदि के प्रयोग से कोई ऐसी क्रिया सपादित करना कि जिससे किसी का कोई अनिष्ट हो अथवा वह कोई उद्दिष्ट कार्य करने मे प्रवृत्त हो। जैसे—मत्र-बल से कटोरा या कौडी चलाना।

मुहा०—**(किसी पर) मूठ चलाना**=मुट्ठी मे भरी या रखी हुई कोई चीज अभिमन्त्रित करके किसी के नाम पर या किसी के उद्देश्य से कहीं फेकना।

१५ भेजने की प्रेरणा करना। भेजवाना। उदा०—..जलभाजन सब दिये चलाई।—तुलसी। १६ तरल पदार्थ इतनी अधिकता से गिराना या डालना कि वह बहने लगे। जैसे—(क) पानी गिराकर मोरी चलाना। (ख) खून की नदियाँ चलाना अर्थात् बहाना। १७ ऐसी क्रिया करना जिससे शरीर के अदर से कोई तरल पदार्थ अधिक मात्रा मे बाहर निकलने लगे। जैसे—इस दवा की एक पुडिया ही तुम्हारा पेट चला देगी। १८ किसी काम या बात का आरभ करना। शुरू करना। छेडना। जैसे—किसी की चर्चा, जिक्र या प्रसग चलाना।

मुहा०—**किसी की चलाना**=किसी के अधिकार, प्रभुत्व, शक्ति आदि की चर्चा या प्रसग छेडना। जैसे—उनकी क्या चलाते हो, वे तो बहुत कुछ कर सकते हैं।

१९ कोई नया नियम, प्रथा, रीति आदि प्रचलित करना। जारी करना। जैसे—नया कानून या नया धर्म चलाना। २०. किसी क्रम, परपरा आदि का निर्वाह करना या उसे बराबर बनाये रखना। जैसे—पूर्वजो या बड़ो का नाम चलाना। २१. किसी प्रकार की कामना या वासना के वश मे होकर अपने मन को उसी के अनुसार प्रवृत्त करना। जैसे—दूसरो के अधिकार या वैभव पर मन चलाना ठीक नही। २२ अस्पष्ट लिखावट पढने का प्रयत्न करना। जैसे—हमसे तो यह चिट्ठी नही चलती, जरा तुम्ही चलाकर देखो। २३ खाने-पीने की चीजे परोसने के लिए लोगो के सामने लाना। जैसे—पहले नमकीन चला लो; तब मिठाई चलाना। २४ सामाजिक रीति-व्यवहार आदि का ठीक तरह से आचरण या पालन करना। जैसे—हम तो बराबर उसी तरह से उनके साथ चलाते है, आगे उनकी इच्छा। २५ दूसरो को अपनी आज्ञा, आदेश आदि के अनुसार आचरण या व्यवहार करने मे प्रवृत्त करना अथवा ऐसा करने के लिए जोर देना। जैसे—आपसवालो पर इस तरह हुकुम मत चलाया करो। २६ कपडे आदि के सबध मे अनुचित रूप से या बुरी तरह ऐसी क्रिया करना कि वे कही इधर-उधर से कुछ फट जायँ। जैसे—(क) इस खीचातानी मे तुमने हमारी कमीज चला दी। (ख) जल्दी मे टुकडा फाड़ने के समय तुमने यह कपडा चला दिया। २७ खोटे या जाली सिक्को के सबध मे, कोई देन चुकाने के लिए धोखे से किसी को दे देना। जैसे—वह खोटी अठन्नी नौकर ने बाजार मे चला दी। २८ विधिक क्षेत्रो मे, कोई अभियोग किसी न्यायालय मे कार्रवाई या विचार के लिए उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—किसी पर मुकदमा चलाना।

चलानी—वि० [हिं० चलान] १. दूसरे स्थान से बिकने के लिए आया हुआ। जैसे—चलानी आम, चलानी परवल। २ चलान सबधी। जैसे—चलानी मुकदमा।

स्त्री० बिक्री के लिए माल बाहर भेजने का काम या व्यवसाय।

चलायमान—वि० [स० चल+क्यङ्+शानच्] १ चलनेवाला। जो चलता हो। २. चचल। ३ विचलित।

चलार्थ—पु० [स० चल-अर्थ, कर्म०स०] वह धन विशेषत. मुद्रा जिसका प्रयोग या व्यवहार निरतर होता रहता हो। (करेंसी)

चलार्थ-पत्र—पु० [प० त०]=चल-पत्र।

चलाव—पु० [हिं० चलना] १. चलने की क्रिया या भाव। २ प्रयाण। पयान। ३. चलावा (गौना)।

चलावना†—स०=चलाना।

चलावा—पु० [हिं० चलाना] १ रीति। रस्म। रिवाज। २ द्विरागमन। गौना। ३ गाँव मे सक्रामक रोग फैलने पर उसके उपचार के लिए किया जानेवाला उतारा। चलौआ।

चलासन—पु० [चल-आसन, कर्म०स०] सामयिक व्रत मे आसन बदलना जो बौद्धो मे एक दोष माना गया है।

चलि—पु० [स०√चल्+इन्] १ आवरण। २ अँगरखा।

चलित—वि० [स०√चल्+क्त] १ अस्थिर। चलायमान। २. जो चल रहा हो। चलता हुआ। जैसे—चलित ग्रह। ३. जो चलन मे हो। (करेंट) जैसे—चलित प्रथा। ४. जिसका प्रचलन या व्यवहार प्राय सब जगह या सब लोगो मे होता हो। (यूजुअल)

पु० नृत्य मे एक प्रकार की चेष्टा जिसमे ठुड्डी की गति मे क्रोध या क्षोभ प्रकट हो।

चलित-ग्रह—पु०[कर्म०स०] ज्योतिष में वह ग्रह जिसमें भोग का आरम्भ हो चुका हो।
चलित्र—पु०[स०?]अपनी ही शक्ति से चलनेवाला इंजन।(लोकोमोटिव)
चलुक—पु०[स०√चल्+उन्+कन्] १ चुल्लू भर पानी। २. एक छोटा पात्र।
चलैया—पु० [हिं० चलना] चलनेवाला।
चलोर्मि—स्त्री० [स० चल+ऊर्मि, कर्म०स०] चलती या आगे बढती हुई लहर।
चलौना—पु०[हिं० चलाना] १ दूध, तरकारी आदि चलाने का लकडी का एक उपकरण या डंडा। २. वह लकडी का टुकडा जिसमें चरखा चलाया जाता है।
चलौवा—पु०=चलावा।
वि०=चलाऊ।
चल्ली—स्त्री० [देश०]तकले पर लपेटा हुआ सूत या ऊन आदि। कुकडी।
चल्हवा—पु०=चेल्हा (मछली)।
चव—वि०=चौ।
पु० १ =चौ। २ =चव्य।
चवदसु—†वि०=चौदह।
स्त्री० =चौदस (चतुर्दशी)।
चवना—अ०[स० च्यवन] चूना। टपकना।
स० चुआना या टपकाना। उदा०—लता विटप माँगे मधु चवही। —तुलसी।
चवन्नी—स्त्री० [हिं० चौ(चार का अल्पा०) +आना+ई (प्रत्य०)] एक सिक्का जिसका मूल्य २५ नये पैसे अथवा पुराने चार आने के बराबर होता है।
चवर—पु०=चँवर।
चवरा—पु०[स० चवल] लोबिया।
†पु०=चौरा।
चवर्ग—पु०[प० त०] [वि० चवर्गीय] नागरी वर्णमाला के च से ञ तक के अक्षरों का समूह।
चवल—पु०[स √चर्व् (चबाना)+अलच् पृषो०] लोबिया।
चवा—स्त्री० [स० चौ+वात] चारों ओर से एक साथ चलनेवाली वायु। उदा०—सुणि सुन्दरि, सच्चउ चवा . ।—ढोलामारू।
चवाइन—स्त्री० 'चवाई' का स्त्री० रूप। उदा०—जदपि चवाइन चीकनी चलति चहूँ दिसि सैन।—बिहारी।
चवाई—वि० [हिं० चवाव] [स्त्री० चवाइन] १ बदनामी की चर्चा फैलानेवाला। कलंकसूचक प्रवाद फैलानेवाला। २ दूसरों की बुराई करनेवाला। निंदक।
स्त्री० १ चारों ओर फैली हुई निंदा। २ झूठी अफवाह या खबर।
चवाउ†—पु०=चवाव।
चवायनि—स्त्री०=चवाइन।
चवालीस—वि०=चौवालीस।
चवाव—पु० [हिं० चौवाई] १. चारों ओर फैलनेवाली चर्चा। प्रवाद। अफवाह। २ उक्त प्रकार की निन्दा।
चवि—स्त्री० [स०√चर्व् (चबाना)+इन्, पृषो० सिद्धि]=चविका।
चविक—पु० [स० चवि+कन्] एक प्रकार का पेड।
चविका—स्त्री० [स० चविक+टाप्] चव्य नाम की ओषधि।
चवैया—पुं०=चवाई।
चव्य (का)—पु० [सं०√चर्व+ण्यत्, पृषो० चव्य+कन्-टाप्] चाब नाम की ओषधि। दे० 'चाब'।
चव्यजा—स्त्री०[स० चव्य√जन्(उत्पत्ति)+ड-टाप्] गजपीपल।
चव्या—स्त्री०[स० चव्य+टाप्]=चव्य।
चशक—स्त्री०[हिं० चसका] किसी विशिष्ट अवसर पर साहबों के यहाँ से बावर्चियों को मिलनेवाला भोजन।
चशम—स्त्री०=चश्म।
चशमा—पु० =चश्मा।
चश्म—स्त्री०[फा०] १ आँख। नयन। नेत्र। २ आँख की तरह का कोई छेद या रचना।
पद—चश्म बद्दूर=इसे बुरी नजर न लगे।(कोई अच्छी या सुन्दर चीज देखने पर)
चश्मक—स्त्री० [फा० चश्म] १ आँखों से किया जानेवाला इशारा या संकेत। २ मनमुटाव। वैमनस्य। ३. ऐनक। चश्मा।
चश्मदीद—वि० [फा०] १. जो आँखों से देखा हुआ हो। प्रत्यक्ष देखा हुआ। २. प्रत्यक्षदर्शी। जैसे—चश्मदीद गवाह।
चश्मदीद गवाह—पु० [फा०] वह साक्षी जो अपनी आँखों से देखी हुई घटना कहे। वह गवाह जो चश्मदीद माजरा (आँखों देखी घटना) बयान करे।
चश्मनुमाई—स्त्री०[फा०] आँखें दिखा या निकालकर किसी को डराना। भयभीत करना।
चश्मपोशी—स्त्री०[फा०]जान-बूझकर किसी अनुचित बात को टाल जाना। उपेक्षा करना।
चश्मा—पु० [फा० चश्मः] १ जल-स्रोत। सोता। २ आँखों पर लगाया जानेवाला धातु आदि का एक प्रकार का प्रसिद्ध ढाँचा या कमानी जिसमें लगे हुए शीशों की सहायता से वस्तुएँ अधिक स्पष्ट दिखाई पडती हैं। क्रि० प्र—लगाना।
चष—पु० [स० चक्षुस्] नेत्र। आँख।
चषक—पु० [स०√चष् (पीना)+क्वुन्-अक] १ वह पात्र जिसमें ढाल-कर शराब पी जाती है। शराब पीने का प्याला। २ मधु।
चषचोल—पु०[हिं० चष+चोल=वस्त्र] आँख पर की पलक।
चषण—पुं० [स०√चष् (खाना)+ल्युट्-अन] १ भोजन करना। खाना। २ वध करना। मार डालना। ३. क्षय या नाश करना।
चषाल—पु० [स०√चष्(बाँधना) आलच्] लकडी की वह गराडी जो यज्ञ के खभे में लगी रहती थी और जिसमें बलि-पशु की रस्सी बाँधी जाती थी।
चस—स्त्री० [अनु०] गोटे आदि की पतली धारी जो मगजी के आगे पहने जानेवाले वस्त्रों में लगाई जाती है।
चसक—स्त्री० [अनु०] १. हलका दर्द या पीडा। कसक। टीस। २ गोटे आदि की वह पतली गोट जो मगजी के आगे लगाई जाती है।
पु०=चषक।

चसकना—अ०[हिं० चसक] शरीर के किसी अग मे रह-रहकर हल्की पीड़ा होना। टीस उठना।

चसका—पु०=चस्का।

चसकी—स्त्री० दे० 'चसका'।

चसना—अ०[स० चषण] १. प्राण त्यागना। मर जाना। २. ठगा जाना।

अ०[हिं० चाशनी] १ दो चीजो का आपस मे चिपक, लग या सट जाना। २ कपडे आदि का खिचने पर फट या मसक जाना।

चसम—पु० [देश०] रेशम के तागो मे निकला हुआ निरर्थक अश।

स्त्री०=चश्म।

चसमा†—पु०=चश्मा।

चस्का—पु०[स० चषण] १ किसी काम या वात से होनेवाली तृप्ति या मिलनेवाले सुख के कारण फिर-फिर वैसी ही तृप्ति या सुख पाने के लिए मन मे होनेवाली लालसापूर्ण प्रवृत्ति या मनोवृत्ति। चाट। जैसे—जूए या शराव का चस्का, गाना सुनने या वाते करने का चस्का। २ उक्त प्रकार की प्रवृत्ति का वह पुष्ट रूप जो आदत या वान वन गया हो। लत।

क्रि० प्र०—पडना।—लगना।—लगाना।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग मुख्यत ऐसे ही कामो या वातो के सवध मे होता है जो लोक मे या तो कुछ बुरी या प्राय अनावश्यक और व्यर्थ की समझी जाती है। साधारणत भगवद्‌भक्ति का चस्का' या 'साहित्य- सेवा का चस्का' सरीखे प्रयोग देखने-सुनने मे नही आते।

चस्पाँ—वि० [फा०] १ गोद, लेई, सरेस आदि की सहायता से किसी पर चिपकाया, लगाया या सटाया हुआ। २ किसी के साथ अच्छी तरह चिपका या लगा हुआ।

चस्म†—स्त्री०=चश्म।

चस्सी—स्त्री०[देश०] हथेली या पैर के तलुए मे होनेवाली सुरसुराहट या हलकी खुजली।

चह—पु०[सं० चय] १ नदी के किनारे वनाया हुआ वह चवूतरा जिस पर चढकर मनुष्य, पशु आदि नाव पर जाते है। पाट। २. नदी पार करने के लिए वनाया हुआ पीपे आदि का अस्थायी पुल।

स्त्री०[फा० चाह] गड्ढा।

चहक—स्त्री०[हिं० चहकना] १ चहकने की क्रिया या भाव। २ चिडियो का चहचह शब्द।

†पु० दे० 'चहला'।

चहकना—अ०[अनु०] १ कुछ पक्षियो का प्रसन्न होकर चहचह शब्द करना। जैसे—चिडियो का चहकना। चहचहाना। २ लाक्षणिक अर्थ मे, उमग मे आकर प्रसन्नतापूर्वक खूब वोलना या वढ-वढकर या अधिक वाते करना। (परिहास और व्यग्य)

चहका—पु०[देश०] १ लकडी, जिसका कुछ अश जल रहा हो। जलती हुई लकडी। लुआठी। लूका।

क्रि० प्र०—लगाना।

२. वनेठी।

पु०[स० चय] ईंट या पत्थर का वना हुआ फर्श।

†पु० दे० 'चहला'।

चहकार—स्त्री०[हिं० चहकना+कार (प्रत्य०)] चिडियो के चहकने का शब्द।

चहकारना†—अ०=चहकना।

चहचहा—पु०[हिं० चहचहाना] १. चहचहाने की क्रिया या भाव। चहक। २ खूब जोरो से होनेवाला हँसी-ठट्ठा।

वि० १ आनद या प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला २। तुरन्त का। ताजा।

चहचहाना—अ० [अनु०] कुछ पक्षियो का उमग मे आकर या प्रसन्न होकर चहचह शब्द करना। चहकना।

चहचहाहट—स्त्री० [हिं० चहचहाना+हट(प्रत्य०)] चहचहाने या चहकने की क्रिया या भाव।

चहटा—पु० [देश०] १ कीचड। पक। २ दलदल।

चहता—वि०[स्त्री० चहती] =चहेता (दे०)।

चहनना—स० [हिं० चहलना] १ कुचलना। चहलना। रौदना। २ अच्छी तरह मिलाना। मिश्रित करना। ३. खूव जी भरकर या अच्छी तरह खाना।

चहना†—अ०=चाहना।

चहनि*—स्त्री० [हिं० चाहना=देखना] १. देखने की क्रिया या भाव। २ दृष्टि। नजर।

†स्त्री०=चाह (अभिलाषा)।

चह-बच्चा—पु० [फा० चाह=कुआँ+वच्चा] १ पानी, विशेषत गदा या मैला पानी भरने का छोटा गड्ढा या हौज। २ वह गड्ढा जो गाड या छिपाकर धन रखने के लिए वनाया गया हो।

चहर†—वि० [हिं० चाह या चाहना] जो चाहा जा सके, अर्थात् उत्तम, वांछनीय या श्रेष्ठ।

वि०[चहचह से अनु०] १ चपल। चुलवुला। २ तीखा। तेज।

स्त्री० १ जोर की ध्वनियाँ या शब्द। २ शोर-गुल। हो-हल्ला। ३ उत्पात।

स्त्री०[हिं० चहल] आनन्दोत्सव। धूम-धाम।

स्त्री०[हिं० चहरना] चहचहानेवाली चिडिया।

पद—चहर की वाजी=चिडियो का-सा खेल। वहुत ही तुच्छ काम या वात। उदा०—यो ससार चहर की वाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी।—मीराँ।

चहरना†—अ०[हिं० चहचह या चहर] १ चहचह शब्द करना। २. आनदित होना।

स० [?] १ कुचलना। २. खूव अच्छी तरह खाना।

चहराना—स०[हिं० चहरना का स०] किसी को चहरने मे प्रवृत्त करना।

अ० १ =चहरना। २ =चर्राना। ३. =चहकना।

चहरुम—वि० दे०'चहारुम'।

चहल—स्त्री०[हिं० चहलना या चहला] १. चहलने की क्रिया या भाव। २ आनन्द मनाने की क्रिया या भाव।

पद—चहल-पहल। (देखे)

३ कीचड। ४ दलदल। ५ कीचड से भरी हुई वह जमीन जिसमे हल से जोताई करने की आवश्यकता न पडती हो।

वि० १ अच्छा। वढिया। २. चटकीला। तेज। ३ चचल। चुलवुला।

चहल-कदमी—स्त्री०[हिं० चहल+फा० कदम] मुलायम होकर तथा धीरे-धीरे चलने की क्रिया या भाव।

चहलना—स०[देश०] पैरों से कुचलना या रौंदना।
अ० धीरे-धीरे अथवा मस्ती से चलना या सैर करना। टहलना।

चहल-पहल—स्त्री० [हिं० चहल+पहल, अनु०] १. किसी स्थान पर किसी कारण से बहुत से लोगों के आने-जाते रहने की अवस्था या भाव। रौनक। २. उक्त के कारण होनेवाला आनन्दोत्सव। धूम-धाम।
क्रि० प्र०—मचना।

चहला—पुं० [सं० चिकिल] १ कीचड़। २ कीचड़ से भरी हुई जमीन। दलदल। उदा०—इक भीजे चहले परे, बूड़े बहे हजार।—बिहारी।

चहली—स्त्री० [देश०] कुएँ में से पानी खींचने की चरखी। गराड़ी। घिरनी।

चहारुम†—पुं०=चेहरुम।

चहवारा—वि०[हिं० चहना+वारा (वाला)] चाहनेवाला।
पुं० पक्षी।

चहा†—पुं०[?] चितकबरे रंग का एक प्रकार का पक्षी जो कीचड़ में से कीड़े-मकोड़े खाता है और जिसका मांस बहुत स्वादिष्ट माना जाता है।

चहार—वि०[फा०] तीन और एक। चार।
पुं० चार की संख्या अथवा उसका सूचक अंक।

चहार-चंद—वि०[फा०] चार गुना। चौगुना।

चहारदीवारी—स्त्री०[फा०] किसी मैदान या स्थान को चारों ओर से घेरने के लिए बनाई जानेवाली दीवार या दीवारें। प्राचीर।

चहार-यारी—पुं०[फा०] मुसलमानों का वह वर्ग जो मुहम्मद साहब के चारों यारों या साथियों का भक्त और समर्थक है।

चहारशंबा—पुं०[फा० चहारशंबः] बुधवार।

चहारुम—वि०[फा०] चौथाई।
पुं० चौथाई अंश या भाग। चतुर्थांश।

चहियत—अव्य०=चाहिए। (ब्रज)

चहो-चहा—पुं० [हिं० चाहना=देखना] परस्पर देखने की क्रिया या भाव।

चहुँ*—वि०[हिं० चौ=चार] चारों। जैसे—चहुँ ओर।

चहुँका†—स्त्री०=चिहुँक।

चहुँकना†—अ०=चौंकना।

चहुँटना*—अ०=चिहुँटना।
स० [?] चोट पहुँचाना।

चहुँटी—स्त्री०[?] चुटकी।

चहु-मुखा—वि० =चौमुखा।

चहुरा—पुं०=चौवरा।
वि०=चौहरा।

चहुरी†—स्त्री०[?] एक प्रकार का छोटा बरतन।

चहुवान—पुं० =चौहान।

चहूँ—वि०=चहुँ० (चारों)।

चहूँटना—अ०=चिमटना।

चहेटना—स०[?] १ किसी चीज को दबा या निचोड़कर उसका रस या सार निकालना। गारना। २ खदेड़ना। भगाना। ३. दे०'चपेटना'।

चहेता—वि०[हिं० चाहना+एता (प्रत्य०)] [स्त्री० चहेती] जिसे कोई बहुत अधिक चाहता हो। प्रिय। जैसे—चहेता लड़का, चहेती स्त्री।

चहेल—स्त्री०[हिं० चहला] १ कीचड़। चहला। २ दलदल।

चहोड़ना—स०[?] १ चारों ओर से [illegible] पीछा करना। उदा०—[illegible]।—[illegible]। २ पौधों को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान लगाना। रोपना। ३ ठेल-ठाल कर अपने अधिकार में लेना। खदेड़ना। भगाना। ४ उत्तेजित या प्रोत्साहित करना। ५ पता लगाना। ६ जल्दी में कोई काम करना।

चहोड़ा—पुं० [हिं० चहोड़ना] [illegible] लिया जाता है।

चहोरना—स० =चहोड़ना।

चहोरा—पुं० =चहोड़ा।

चाँइयाँ—पुं०[हिं० चाँई+एक (?)] १. लोगों की चीजें उठा या चुरा ले जानेवाला। उचक्का। २. [illegible]।

चाँई—पुं०[?] १. [illegible] २. दे० 'चाँइयाँ'।
स्त्री०[?] १. एक रोग जिसमें सिर के बाल और फुंसियाँ निकल आती हैं, जिससे बाल झड़ जाते हैं। २. उक्त प्रकार की फुंसियाँ।
वि० जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। गंजा।

चाँई मूँई—स्त्री०[?] सिर में होनेवाली एक प्रकार की छोटी फुंसियाँ जिनसे बाल गिर जाते हैं।

चाँक—पुं०[हिं० चौ=चार+अंक (अंक)] १. लकड़ी की वह थापी जिस पर कुछ अक्षर खुदे होते हैं और जिससे खलिहान में अन्न की राशि के ऊपर छाप या निशान लगाये जाते हैं। २. उक्त प्रकार से लगाया हुआ चिह्न या निशान। ३. टोटके के लिए शरीर के किसी पीड़ित स्थान के चारों ओर खींचा जानेवाला घेरा। गोंठ।

चाँकना—स०[हिं० चाँक] १. खलिहान में अनाज की राशि के चारों ओर मिट्टी, राख, ठप्पे आदि से निशान लगाना। चाकना। २. किसी तरह सीमा निर्धारित करना। ३. पहचान के लिए किसी चीज पर निशान लगाना।

चाँका—पुं० १ दे० 'चाँक'। २ दे० 'चक्का'।

चाँगज—पुं०[देश०] एक प्रकार का शिकारी [illegible]।

चाँगला—वि०[फा० चंग से] [स्त्री० चाँगली] १. चंगा। [illegible]। २ स्वस्थ। तन्दुरुस्त। ३ हट्टा-कट्टा। [illegible]। ४ चतुर। चालाक।
पुं० घोड़ों का एक प्रकार का रंग।

चाँगेरी—स्त्री०[सं०] अमलोनी नाम का साग।

चाँच*—स्त्री० =चोंच। (राज०) उदा०—चाँच कटाऊँ पपइया रे।—मीराँ।

चाँचर—स्त्री०[सं० चर्चरी] १ बसन्त ऋतु में गाया जानेवाला एक राग। जिसके अन्तर्गत होली, फाग, लेद आदि गाने होते हैं। चर्चरी। २. परती छोड़ी हुई जमीन। ३ एक प्रकार की मटियार जमीन। ४ कच्चे मकानों के दरवाजे पर लगाई जानेवाली टट्टी।
†पुं०[देश०] मान्दार नामक क्षुप।

चाँचरि—स्त्री० =चाँचर।

चाँचल्य—पु० [स० चचल+ष्यञ्] चचल होने की अवस्था, गुण या भाव। चचलता।

चाँचिया—पु० [?] १ एक छोटी जाति जो चोरी, डाके आदि से निर्वाह करती है। २ चोर। ३ उचक्का। ४ डाकू। लुटेरा। ५ बहुत बडा धूर्त्त व्यक्ति। काँइयाँ।

वि० [हि० चाँई ?] चोरो, डाकुओ आदि का। जैसे—चाँचिया जहाज।

चाँचियागिरी—स्त्री० [हि० चाँचिया+फा० गीरी (प्रत्य०)] चाँचिया लोगो का काम या व्यवसाय। चोरी करने या डाके डालने का धधा।

चाँचिया जहाज—पु० [हि० चाँई?] समुद्री डाकुओ का जहाज।

चाँची—पु०=चाँचिया।

चाँचु†—स्त्री०=चोच।

चाँट—पु० [हि० छीटा] १ हवा मे उडते हुए जल-कणो का प्रवाह जो तूफान आने पर समुद्र मे उठता है। (लश०)

मुहा०—**चाँट मारना**=जहाज के बाहरी किनारे के तख्तो पर या पाल पर पानी छिडकना। (यह पानी इसलिए छिडका जाता है जिसमे तख्ते धूप के प्रभाव से चटक न जायँ और पाल कुछ भारी हो जाय।)

चाँटा—पु० [हि० चिमटना] [स्त्री० चाँटी] च्यूँटा। चीटा।

पु० [अनु०] हथेली तथा हाथ की उँगलियो से किसी के गाल पर किया जानेवाला प्रहार। तमाचा। थप्पड।

क्रि० प्र०—जडना।—मारना।—लगाना।

चाँटी—स्त्री० [हि० चाँटा] १. च्यूँटी। चीटी। २ मध्य युग मे कारीगरो पर लगनेवाला एक प्रकार का कर। ३ तबले की सजाफदार मगजी जिस पर तबला बजाते समय तर्जनी उँगली से आघात किया जाता है। ४ तबले के उक्त अश पर तर्जनी उँगली से किया जानेवाला आघात। ५ उक्त आघात के कारण होनेवाली मधुर ध्वनि या शब्द।

चाँड—वि० [स० चड] १ उग्र। तीव्र। प्रबल। २ बलवान्। शक्तिशाली। ३ उद्दड। उद्धत। ४ किसी की तुलना मे बढकर। श्रेष्ठ। ५ अघाया हुआ। तृप्त। सतुष्ट। ६ चतुर। चालाक।

स्त्री० [स० चड=प्रबल] १ वह वस्तु या रचना जो किसी दूसरी वस्तु विशेषत छत या दीवार को गिरने या ढहने से रोकने के लिए लगाई या बनाई जाती है। टेक। थूनी।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

२ ऐसी प्रबल आवश्यकता या कामना जिसकी पूर्त्ति तत्काल होने की अभिलाषा हो। ३ उक्त प्रकार की आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए मन मे होनेवाली आकुलता या बेचैनी।

मुहा०—**चाँड सरना**=उक्त प्रकार की आवश्यकता पूरी हो जाना अथवा उस आवश्यकता की पूर्त्ति होने पर मन की आकुलता या बेचैनी दूर होना।

४ तीव्रता। प्रबलता। ५ किसी ओर से पडनेवाला ऐसा दबाव जिसके फलस्वरूप किसी को विवश होकर कोई उद्दिष्ट कार्य करना पडे। जैसे—जब तक चाँड नही लगाओगे, तब तक वह तुम्हारा काम नही करेगा।

चाँड़ना—स० [हि० चाँड] १ चाँड या टेक लगाना। २ खोदकर उखाडना या गिराना। ३ खोदकर गहरा करना। ४ नष्ट-भ्रष्ट करना। उजाडना। ५ कसना या दबाना। उदा०—माया लोभ मोह है चाँडे, काल नदी की धार।—तुलसी।

चांडाल—पु० [स० चण्डाल+अण्] [स्त्री० चाडाली, चाडालिनी] १ एक प्राचीन अन्त्यज, नीच और बर्बर जाति। पुक्कस। मातग। श्वपच। २ बहुत ही दुष्ट, नीच और पतित व्यक्ति। (गाली)

चाडालिका—स्त्री० [स० चण्डाल+वुञ्-अक, चाडालक+टाप्, इत्व] १ चडालवीणा। २ दुर्गा। ३ एक प्रकार का पौधा।

चांडालिनी—स्त्री० [स० चाडाल+इनि-ङीप्] एक देवी।

चांडाली—स्त्री० [स० चाडाल+ङीप्] १ चाडाल जाति की स्त्री। २ [हि०] चाडाल होने की अवस्था, गुण या भाव। ३ चांडाल का कार्य।

चाँड़िला—वि० [स० चड] [स्त्री० चाँडिली] १ उग्र। प्रचड। २. उद्धत। नटखट। शोख। ३ बहुत अधिक।

चाँड़ी†—स्त्री०=चोगी या कीप।

चांडू†—पु०=चडू।

चाँढा—पु० [हि० चाँड] जहाज के दो तख्तो के बीच का जोड। (लश०)

चाँद—पु० [स० चद्र, पा० प्रा० प० चद, उ० ब० गु० ने० चाँद, सि० चडु चद्रु; मरा० चाँद, चाँदोबा] १ चद्रमा।

मुहा०—**चाँद का खेत करना**=चद्रमा के निकलने के समय उसकी आभा का चारो ओर फैलना। **चाँद चढना**=चद्रमा का ऊपर आना या उदय होना। **चाँद पर थूकना**=ऐसा अनुचित और निन्दनीय कार्य करना जिसका परिणाम उलटे कर्त्ता पर पडे। जैसे—किसी ऐसे महात्मा पर कलक लगाना जिसके फल-स्वरूप स्वय अपमानित होना पडे। (ऊपर की ओर थूकने से अपने ही मुँह पर थूक पडती है। इसी से यह मुहा० बना है) **चाँद पर धूल डालना**=किसी निर्दोष अथवा परम पवित्र पर कलक लगाना।

पद—**चाँद का कुडल या मडल**=बहुत हलकी बदली पर प्रकाश पडने के कारण चद्रमा के चारो ओर दिखायी देनेवाला वृत्त या घेरा। **चाँद का टुकड़ा**=परम सुन्दर वस्तु या व्यक्ति। **चाँद दीखे**=शुक्ल पक्ष की द्वितीया के बाद। जैसे—चाँद दीखे आना तुम्हे काम दे दिया जायगा। **चाँद-सा मुखड़ा**=अत्यन्त सुन्दर मुख। **आज किधर चाँद निकला**?=(क) आज कैसे दिखाई पडे? (ख) यह नई बात कैसे हुई? (जब कोई मनुष्य बहुत दिनो पर दिखाई पडता है तब उससे कहा जाता है)।

२ चाद्रमास। महीना। जैसे—आज एक चाँद बाद आप दिखाई पडे है। ३ मुसलमानी मास गणना के अनुसार महीने का पहला दिन जो उनके हिसाब से शुक्ल पक्ष की द्वितीया को आरम्भ होता है। जैसे—चाँद के चाँद तनख्वाह मिलना। ४ द्वितीया के चद्रमा के आकार का एक गहना। ५ चद्रमा के आकार-प्रकार का कोई अर्द्ध-गोलाकार अथवा मडलाकार धातु-खड या रचना। जैसे—ढाल पर का चाँद, चाँदमारी मे निशाना साधने का चाँद, लप की चिमनी के पीछे उसका प्रकाश प्रत्यावर्तित करने के लिए लगाया जानेवाला चाँद। ६ घोडे के माथे पर की एक प्रकार की भौंरी। ७ भालू की गरदन के नीचे का सफेद बालोवाला घेरा। (कलदर) ८ सिर पर पहना जानेवाला चद्रमा के आकार का मडलाकार ताज। ९ पशुओ के मस्तक पर का गोलाकार सफेद या किसी भिन्न रग का दाग या फूल। १० कलाई पर गोदा जानेवाला मडलाकार गोदना।

स्त्री० १ खोपडी का सबसे ऊँचा और मध्य भाग। २ खोपडी।

मुहा०—चाँद पर बाल न छोडना=(क) सिर पर इतना मारना कि बाल झड जायँ। (ख) सब कुछ ले लेना, कुछ बाकी न छोडना।

चाँद-तारा—स्त्री०[हिं० चाँद+तारा] १ एक प्रकार की बढिया मलमल जिस पर चाँद और तारो के आकार की बूटियाँ बनी होती थी। २ एक प्रकार का कनकौआ या पतग जिस पर उक्त प्रकार की आकृतियाँ बनी होती है।

चाँदना—पु०[हिं० चाँद+ना (प्रत्य०)] १ उजाला। प्रकाश। २ चाँदनी। ज्योत्स्ना।

मुहा०—(किसी जगह) **चाँदना कर देना**=सब कुछ उडा ले जाना। कुछ भी बाकी न छोडना। जैसे—चोरो ने घर पर चाँदना कर दिया।

चांदनिक—वि० [स० चन्दन+ठक्—इक] १ चदन का। चदन-सबधी। २ चदन मे होने, रहने अथवा उससे बननेवाला। ३. जिसमें चदन की महक हो। चदन से सुवासित।

चाँदनी—स्त्री० [स० चद्र>चद्रण, दे० प्रा० चदिण; प्रा० चद्ण, बँ०, उ० चादनी, गु० चादरणु, मरा० चादणें] १ चाँद का प्रकाश। रात के समय होनेवाला चद्रमा का उजाला या प्रकाश। कौमुदी। चद्रिका। ज्योत्स्ना।

क्रि० प्र०—खिलना।—छिटकना।—फैलना।—बिछना।

मुहा०—चाँदनी मारना=(क) लोक-प्रवाद के अनुसार चाँदनी का बुरा प्रभाव पडने के कारण घाव या जख्म का अच्छा न होना। (ख) चाँदनी पडने या लगने के कारण घोडो को एक प्रकार का आकस्मिक रोग होना।

पद—चाँदनी रात=वह रात जिसमे चद्रमा का प्रकाश चारो ओर फैला हो। शुक्ल पक्ष की रात्रि। **चार दिन की चाँदनी**=अस्थायी या क्षणिक वैभव या सुख। स्त्री० [हिं० चदनी] १ बिछाने की बडी सफेद चादर। सफेद फर्श। **विशेष**—कहते है कि पहले नूरजहाँ ने अपने महल मे चदन के रग का एक फर्श बनवाया था, उसी से यह शब्द 'बिछाने की चादर' के अर्थ मे चल पडा।

२ छत पर या ऊपर की ओर तानने का कपडा। छतगीर। ३ गुल-चाँदनी नाम का पौधा और उसका फूल।

चाँद-बाला—पु० [हिं० चाँद+बाला (कान मे पहनने की बडी बाली)] कान मे पहनने का एक प्रकार का बाला जिसके नीचे का भाग अर्द्धचन्द्राकार होता है।

चाँदमारी—स्त्री०[हिं० चाँद+मारना] १ कपडे, तख्ते, दीवार आदि पर बने हुए चद्र-चिह्नो पर तीर, बन्दूक आदि से निशाने लगाने की अभ्यासात्मक क्रिया। २ वह मैदान जहाँ उक्त प्रकार की क्रिया होती है।

चाँदला—वि०[हिं० चाँद] १ (दूज के चद्रमा के समान) टेढा। वक्र। २ जिसके सिर के बाल झड गये हो। चँदला। गजा।

चाँद-सूरज—पु०[हिं० चाँद+सूरज] एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ चोटी मे गूँधकर पहनती है।

चाँदा—पु०[हिं० चाँद] १ चाँदमारी के मैदान मे वह स्थान जहाँ से दूर-बीन लगाई जाती है। २ वह पटरा जिस पर निशाना लगाने या अभ्यास करने के लिए छोटे-छोटे चिह्न बने रहते हे। ३ खेत, भूमि आदि की नाप में वह केन्द्र-स्थल जहाँ से दूरी की नाप लेकर हद बाँधी जाती है। ४ छप्पर का पाखा जो प्राय. चन्द्राकार होता है। ५ ज्यामिति मे, धातु, प्लास्टिक, सीग आदि का अर्द्ध-वृत्ताकार एक प्रसिद्ध उपकरण जिससे कोण आदि नापे जाते है। (प्रोट्रैक्टर)

चाँदी—स्त्री०[हिं० चाँदनी] १ एक प्रसिद्ध सफेद चमकीली कीमती धातु जो अपेक्षया नरम होती है और जिसके गहने, बरतन, सिक्के आदि बनते है। इसका गुरुत्व सोने के गुरुत्व का आधा होता है। इससे कई एक ऐसे क्षार बनाये जाते है जिन पर प्रकाश का प्रभाव बहुत विलक्षण पडता है। रजत। रौप्य।

मुहा०—चाँदी कर डालना या कर देना=जलाकर राख कर डालना। (गाँजे, तमाकू आदि की भरी हुई चिलम के सबध मे प्रयुक्त।)

२ चाँदी के सिक्को के आधार पर, धन-सपत्ति। दौलत।

मुहा०—चाँदी बरसना=खूब आमदनी होना। **चाँदी काटना**=प्राय अनुचित रूप से खूब रुपया पैदा करना। खूब धन कमाना। **चाँदी की ऐनक लगाना**= घूस या रिश्वत लेकर ही किसी का काम करना। जैसे—हमारे तहसीलदार साहब चाँदी की ऐनक लगाते हैं। **(किसी की) चाँदी होना**=बहुत अधिक आय या आर्थिक लाभ होना।

पद—चाँदी का जूता=वह धन जो किसी को अपने अनुकूल या वश मे करने को दिया जाता है। घूस या रिश्वत के रूप मे दिया जानेवाला धन। **चाँदी का पहरा** =आर्थिक दृष्टि से पूर्णता, सुख-समृद्धि के दिन।

३. खोपडी का मध्य भाग। चाँद। चँदिया।

मुहा०—चाँदी खुलवाना=चाँद के ऊपर के बाल मुड़ाना।

४ एक प्रकार की छोटी मछली। ५ चूने की सफेदी। (क्व०) ६ सफेद रग अथवा सफेद रग की कोई वस्तु। ७ जल जाने पर किसी चीज की होनेवाली सफेद राख। जैसे—तमाकू जलकर चाँदी हो गया।

चांद्र—वि०[स० चन्द्र+अण्] चद्रमा-सबधी। चद्रमा का। जैसे—चाद्र मास, चाद्रवत्सर।

पु० १. चाद्रायण व्रत। २ चद्रकात मणि। ३. मृगशिरा नक्षत्र। ४ पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। ५ अदरक। आदी।

चांद्रक—पु० [स० चान्द्र√कै (प्रतीत होना)+क] सोठ।

चांद्र-पुर—पु०[कर्म०स०] बृहत्सहिता के अनुसार एक नगर जिसमे एक प्रसिद्ध शिवमूर्ति होने का उल्लेख है।

चांद्रमस—वि०[स० चन्द्रमस्+अण्] चद्रमा सबधी।

पु० मृगशिरा नक्षत्र।

चाद्रमसायन—पु०[स० चाद्रमसायनि, पृषो० सिद्धि] बुध ग्रह।

चांद्रमसायनि—पु०[स० चद्रमस्+फिञ्—आयन] बुध ग्रह।

चांद्रमसी—स्त्री० [स० चान्द्रमस+ङीप्] बृहस्पति की पत्नी का नाम।

चांद्र-मास—पु० [कर्म० स०] वह मास जो चद्रमा की गति के अनुसार निश्चित होता है। उतना काल जितना चद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने मे लगता है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तक का समय।

चाद्र-वत्सर—पु०[कर्म०स०] =चाद्रवर्ष।

चाद्र-वर्ष—पु०[कर्म०स०] बारह चाद्र मासो का समय। (यह सौर वर्ष से लगभग १० दिन छोटा है।)

चांद्रव्रतिक—वि० [स० चान्द्रव्रत+ठन्–इक] चाद्रायण व्रत करनेवाला। पु० राजा।

चांद्रायण—पु०[चद्र-अयन, ब-स०, णत्व, दीर्घ] [वि० चाद्रायणिक] १. महीने भर का एक व्रत जिसमे चद्रमा के घटने-बढने के अनुसार आहार के कौर या ग्रास घटाने-बढाने पडते है। २ २१ मात्राओ का एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ११ और १० पर यति होती है। पहले विराम पर जगण और दूसरे पर रगण होना आवश्यक होता है।

चांद्रायणिक—वि०[स० चान्द्रायण+ठञ्–इक] चाद्रायण व्रत करनेवाला।

चांद्रि—पुं०[स० चन्द्र+इञ्] बुध ग्रह।

चांद्री—स्त्री०[स० चान्द्र+ङीप] १ चद्रमा की स्त्री। २ चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३ सफेद भटकटैया।
वि०=चाद्र।

चाँप—पु०, स्त्री०=चाप। (दे०)
पु० [हिं० चंपा] चपा का फूल।

चाँपना—स०=चापना।

चांपला—स्त्री०[स०√चम्प्+अङ्+इलच्–टाप्] एक प्राचीन नदी। (कदाचित् आधुनिक चवल।)

चांपेय—पु०[स० चम्पा+ढक्–एय] १ चपक। २ नागकेसर। ३ किंजल्क। ४ सुवर्ण। ५ धतूरा।

चांपेयक—पु०[स० चाम्पेय+कन्] किंजल्क। केसर।

चाँयँचाँयँ—स्त्री०[अनु०] व्यर्थ की बातें। बकवाद।

चाँवँ चाँवँ—स्त्री० =चाँयँ चाँयँ।

चाँवर†—पु०=चावल।
†स्त्री०=चँवर।

चा†—विभ० [मरा० चा (विभक्ति)] [स्त्री० ची] का (विभक्ति)। उदा०—देस-देस चा देसपति।—प्रिथीराज।
स्त्री०=चाप।

चाइ*—पु०=चाव।

चाईं†—पु०=चाँईं।

चाउ†—पु०=चाव।

चाउर†—पु०=चावल।

चाऊ—पु०[देश०] ऊँट या बकरे का (के) बाल। (पहाडी बोली)

चाक—पु० [स० चक्र, प्रा० चक्क] १ किसी प्रकार का चक्कर या घूमनेवाली गोलाकार चीज। २ वह गोल पत्थर जो एक कील पर घूमता है और जिस पर मिट्टी का लोदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते हैं। कुलाल चक्र। ३ गाडी, रथ आदि का पहिया। ४ कूएँ से पानी खीचने की गराडी। चरखी। ५ मिट्टी का वह गोलाकार छोटा पात्र जिसमें मिसरी के कूजे जमाये जाते है। ६ खलिहान मे अन्न की राशि पर लगाया जानेवाला चिह्न या छाप। थापा। ७ हथियारो पर सान रखने या उनकी धार तेज करने का चक्कर। ८ मिट्टी का वह थक्का या लोदा जो कूएँ से पानी निकालने की ढेकली के दूसरे सिरे पर जमाया रहता है। ९. मिट्टी का वह बरतन जिससे पकाने के लिए ऊख का रस कटाहे मे डालते हैं। १० किसी प्रकार का मडलाकार चिह्न या रेखा।
पु० [फा०] १ फटी या फाडी हुई चीज के बीच मे पडी हुई दरार या सधि। फटा हुआ अश या भाग। २ आस्तीन की खुली हुई मोहरी।
वि० फटा या फाडा हुआ। जैसे—दामन या सीना चाक करना।
वि० [तु०] १ हृष्ट-पुष्ट। २ दृढ। पक्का। मजबूत।
पद—चाक-चौबंद। (देखे)
स्त्री० [अ० चॉक] खरिया मिट्टी। दुद्धी।

चाकचक—वि० [स० चाकचक्य] १ चारो ओर से सुरक्षित। २ दृढ। मजबूत। ३ दे० 'चाक-चौबद'।

चाकचक्य—स्त्री० [स० √चक् (तृप्ति)+अच+द्वित्व, चकचक+ष्यञ्] १ चमक-दमक। २ चकाचौध। ३ सुदरता। ४ शोभा।

चाकचिक्य—पुं० [स०=चाकचक्य, पृषो० सिद्धि] १ चमक। २ चकाचौध।

चाक-चौबंद—वि० [तु०+फा०] १ चारो ओर से ठीक और दुरुस्त। २ हर तरह से काम के लायक। ३ चुस्त। फुरतीला।

चाकट—पु० [देश०] हाथ मे पहनने का एक प्रकार का कडा।

चाकदिल—पु० [फा०] एक प्रकार का बुलबुल (पक्षी)।

चाकना—स० [हिं० चाक = चक्र] १ किसी ढेर या वस्तु को घेरने के लिए उसके चारो ओर विशेषत वृत्ताकार रेखा खीचना। २ उक्त के आधार पर सीमा निर्धारित करने के लिए रेखा खीचना। ३ खलिहान मे पटे हुए अन्न की राशि पर चिह्न या निशान लगाना, जिसमे से यदि कोई कुछ चुरा ले जाय तो पता लग जाय। ४ पहचान के लिए किसी चीज पर निशान लगाना।
†स० [फा० चाक] चाक करना। फाडना।

चाकर—पु० [फा०] [स्त्री० चाकरानी] १ दास। भृत्य। २ नौकर। सेवक। उदा०—म्हाँने चाकर राखो जी।—मीराँ।

चाकरनी†—स्त्री० = चाकरानी।

चाकरानी—स्त्री० [हिं० चाकर का स्त्री०] दासी। नौकरानी।

चाकरी—स्त्री० [फा०] १ चाकर का काम, पद या भाव। २ नौकरी। ३. टहल। सेवा।
क्रि० प्र०—बजाना।

चाकल†—वि० = चकला (चौडा)।

चाकलेट—पु० [अ० चॉकलेट] एक प्रकार की पाश्चात्य मिठाई।

चाकसू—पु० [स० चक्षुष्या] १ निर्मली या बनकुलथी का पौधा। २ उक्त पौधे के बीज जिनका चूर्ण आँख के कुछ रोगो मे उपयोगी होता है।

चाका—पु० १ =चाक। २ = चक्का (पहिया)।

चाकी—स्त्री० [स० चक्र] बिजली। वज्र।
क्रि० प्र०—गिरना।—पडना।
स्त्री० [हिं० चक्की या फा० चाक ?] पटे या बनेठी का एक प्रकार का आघात या वार जो सिर पर किया जाता है।
†स्त्री० = चक्की।

चाकू—पु० [तु०] तरकारी, फल आदि चीजे काटने, छीलने आदि के काम आनेवाला लोहे का धारदार एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जो लकडी आदि के दस्ते मे जडा होता है। छुरी।

चाक्र—वि० [स० चक्र+अण्] १ चक्र या पहिये से सबध रखनेवाला। २ जिसकी आकृति चक्र या पहिये जैसी हो। ३ जो चक्रो या पहियो की सहायता से चलता हो। ४ (युद्ध) जो चक्रो की सहायता मे हो।

चाक्रायण—पु० [स० चक्र+फक्—आयन] चक्र नामक ऋषि के वंशधर।

चाक्रिक—पु० [स० चक्र+ठक्—इक] १ दूसरो की स्तुति गानेवाला। चारण। भाट। २ वह जो किसी प्रकार का चक्र चलाकर जीविका निर्वाह करता हो। जैसे—कुम्हार, गाडीवान, तेली आदि। ३ सहचर। साथी। वि० १ चक्र के आकार का। गोलाकार। २ चक्र-सबधी। ३ किसी चक्र या मडली मे रहने या होनेवाला।

चाक्रिका—स्त्री० [स० चाक्रिक+टाप्] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

चाक्रेय—वि० [स० चक्र+ढञ्—एय] चक्र-सबधी। चक्र का।

चाक्षुष—वि० [स० चक्षुस्+अण] १ चक्षु-सबधी। २ जो चक्षुओं या नेत्रो से जाना या देखा जा सके। जिसका बोध आँखो से होता हो। पु० १ न्याय मे वह प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका बोध आँखो से होता या हो सकता हो। २ पुराणानुसार छठे मन्वतर का नाम। ३ स्वायभुव मनु के एक पुत्र का नाम।

चाक्षुष-यज्ञ—पु० [स० कर्म० स०] अच्छी, मनोरजक और सुदर चीजो, दृश्य आदि देखकर आँखे तृप्त करने की क्रिया। जैसे—अभिनय, नृत्य आदि देखना।

चाख—पु० [स० चाष] नीलकठ (पक्षी)।

चाखना†—स० = चखना।

चाखुर†—स्त्री० [देश०] खेतो आदि को निराकर निकाली हुई घास।
†स्त्री० [स० चिकुर] गिलहरी।

चाचपुट—पु० [स०] सगीत मे, ताल के ६० मुख्य भेदो मे से एक।

चाचर—पु० [स० चर्च=घायल करना] युद्धस्थल। रण-भूमि। (राज०) उदा०—चोटियाली कूदै चौसठि चाचरि।—प्रिथीराज।
स्त्री० = चाँचर (होली के गीत)।

चाचरि—स्त्री० = चाँचर।

चाचरी—स्त्री० [स० चर्चरी] योग की एक मुद्रा।

चाचा—पु० [स० तात] [स्त्री० चाची] १ पिता का छोटा भाई। २ प्रौढ या वृद्ध आदमी के लिए सबोधन का एक शब्द। जैसे—चाचा नेहरू।

चाट—स्त्री० [हि० चाटना] १ चाटने की क्रिया या भाव। २ वह चटपटी चीज जो प्राय चरपरे और तीखे स्वाद के लिए ही चाटी या खाई जाती है। जैसे—कचालू, गोलगप्पा, दही का बडा आदि। ३ उक्त प्रकार की चीजें खाने की इच्छा या कामना। ४ उक्त प्रकार की चीजो से मिलनेवाले स्वाद के फल-स्वरूप पडनेवाली आदत या लत जो बार-बार वैसी चीजें खाने या पाने की इच्छा उत्पन्न करती या शौक लगाती है। जैसे—अफीम या मिठाई की चाट।
मुहा०—(किसी को) चाट पर लगाना = किसी को किसी चीज या बात का चस्का या स्वाद लगाकर उसका अभ्यस्त करना।
५ किसी प्रकार की प्रबल इच्छा या गहरी चाह। लोलुपता। जैसे—तुम्हे तो बस रुपये की चाट लगी है। ६ बुरी आदत। लत।
क्रि० प्र०—लगना।
पु० [स० √चट् (भेदन करना)+णिच्+अच्] १ वह जो किसी का विश्वासपात्र बनकर उसका धन हरण करे। ठग। २ उचक्का। उठाईगीरा।

चाटना—स० [स० चष्ट, दे प्रा० चट्ट, प्रा० चट्टई; बँ० चाटा; उ० चाटिबा, प० चट्टना, सि० चटणु; गु० चाटवूँ, ने० चाटनु, मरा० चाटणे] १ खाने की कोई गाढी या लसीली चीज मुँह मे ले जाने के लिए जबान से समेट कर उठाना। जैसे—हथेली पर रखा हुआ घी या शहद चाटना। २ उँगली से उक्त प्रकार की कोई चीज उठाकर जीभ पर रखना या लगाना। जैसे—चटनी या दवा चाटना। ३ कोई वस्तु अधिक मात्रा मे तथा लोलुपतापूर्वक खाना। जैसे—तुम्हें तो खीर अच्छी नही लगी, तुम्हारा भाई तो चाट-चाटकर खा गया है। ४ धन, सपत्ति आदि खा-पकाकर नष्ट करना। जैसे—लाखो रुपये की सपत्ति वह दो वर्षों मे चाट गया। ५ पशुओं का प्रेमपूर्वक किसी के शरीर पर बराबर जीभ फेरना। जैसे—कुत्ते का अपने पिल्ले या मालिक का हाथ चाटना।
मुहा०—चूमना चाटना = बार-बार प्रेमपूर्वक चुबन करना।
६. कीडो का किसी वस्तु को खा जाना। जैसे—ऊनी कपडे कीडे चाट गये।

चाटपुट—पु० दे० 'चाचपुट'।

चाटा—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० चाटी] १ वह बरतन जिसमे कोल्हू का पेरा हुआ रस इकट्ठा होता है। नाँद। २ मिट्टी का बडा और मोटे दल का मटका। जैसे—अचार या आटे का चाटा (या चाटी)।

चाटी—पु० [हि० चटशाला मे का चट] चेला। शिष्य। जैसे—चेले-चाटी।
स्त्री० [हि० चाटा] मिट्टी का एक प्रकार का मटका। छोटा चाटा।

चाटु—पु० [स० √चट् (भेदन करना)+ञुण्] १ बहुत ही प्रिय और मीठी बात। मधुर वचन। २ किसी बडे को केवल प्रसन्न करने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जिसमे उसकी कुछ प्रशसा या बडाई हो। खुशामद। चापलूसी।

चाटुक—पु० [स० चाटु+कन्] मीठी बात।

चाटुकार—पु० [स० चाटु √कृ (करना)+अण्, उप० स०] १ खुशामद करनेवाला व्यक्ति। चापलूस। २ सोने के तार मे पिरोई हुई मोतियो की माला।

चाटुकारी—स्त्री० [स० चाटुकार+हि० (प्रत्य०)] झूठी प्रशसा या खुशा-मद करने का काम। चापलूसी। चाटु।

चाटुता—स्त्री० [स० चाटु] खुशामद। चापलूसी।

चाटु-पटु—वि० [स० त०] १ चाटुकार। खुशामदी। २ भट। भाँड।

चाटु-लोल—वि० [स० त०] चाटुकार।

चाटूक्ति—स्त्री० [चाटु-उक्ति, कर्म० स०] चाटुता से भरी हुई बात। खुशामद या चापलूसी की बात।

चाड़†—स्त्री० = चाँड।
†स्त्री० = चढाई।

चाड़ना—स० = चाँडना। उदा०—कुचगिरि चढि अति थकित ह्वै चली डीठि मुख-चाड। —बिहारी।

चाड़िला—वि० = चाँडिला (चाँड)।

चाडी†—स्त्री० [स० चाटु] किसी की अनुपस्थिति मे पीठ पीछे की जाने-वाली निंदा। चुगली।
क्रि० प्र०—खाना।

चाडू—पु० = चाटुकार। उदा०—मान करत रिस माने चाडू।—जायसी।

चाढ़—स्त्री० [हि० चाह से] १. इच्छा। चाह। २ अनुराग। प्रेम।
†स्त्री० [हि० चढना] चढाई।

चाढना—स० १ =चढना। २ =चढाना।

चाढा—वि० [हिं० चढना या चढाना] १ ऊपर चढा या चढाया हुआ। २ जिसकी प्रतिष्ठा या मर्यादा बहुत बढाई गई हो।

वि० [हिं० चाँड] १ प्रिय। प्यारा। २ प्रेमी।

पु० दे० 'चाढी'।

चाढी—पु० [हिं० चाड] १ चाहनेवाला। इच्छुक। २ किसी पर आसक्त होने या प्रेम करनेवाला। अनुरक्त। प्रेमी। उदा०—देखत ही जुस्याम भए चाढी।—सूर।

चाणक—पु० [स० चाणक्य] १ चालाकी। होशियारी। २ धूर्त्तता। चालबाजी। उदा०-साच का सबद सोना की रेख निगुरा कौ चाणक सगुरा कौ उपदेस।—गोरखनाथ।

चाणक्य—पु० [स० चणक+ष्यञ्] १ वह जो चणक ऋषि के वंश या गोत्र का हो। २ अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य और चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधान मंत्री विष्णुगुप्त (कौटिल्य) का एक नाम।

चाणूर—पु० [स०√चण् (शब्द करना)+ऊरण] कंस का एक मल्ल जो कृष्ण के हाथो मारा गया था।

चातक—पु० [स० √चत् (माँगना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० चातकी] १ पपीहा पक्षी जो वर्षा-काल मे बहुत बोलता है। विशेष दे० 'पपीहा'। २ रहस्य संप्रदाय मे, मन।

* वि० =याचक।

चातकनी*—स्त्री० =चातकी।

चातकानन्दन—पु० [स० चातक-आ√नन्द् (हर्षित करना)+ल्यु—अन] १ वर्षा काल। २ बादल। मेघ।

चातर—पु० [हिं० चादर?] मछली पकडने का बडा जाल। २ षड्‌यंत्र।

वि० =चातुर (चतुर)।

चातुर—वि० [स० चतुर+अण्] जो आँखो से दिखाई दे। नेत्र-गोचर।

पु० [चतुर्+अण्] १ चार पहियो की गाडी। २ मसनद।

वि० [स० चतुर] १ चतुर। होशियार। २ चालाक। धूर्त्त। ३ खुशामदी। चापलूस। (क्व०)

चातुरई*—स्त्री० =चतुराई।

चातुरक—वि०, पु० [स० चातुर+कन्] =चातुर।

चातुरक्ष—पु० [स० चतुरक्ष+अण्] १. चार पासो का खेल। २ छोटा गोल तकिया।

चातुरता—स्त्री० =चतुरता।

चातुरिक—पु० [स० चातुरी+ठक्—इक] सारथी। रथवान।

चातुरी—स्त्री० [स० चतुर+ष्यञ्-ङीप्, यलोप] १ चतुरता। व्यवहार-दक्षता। होशियारी। २ चालाकी। धूर्त्तता। ३ निपुणता।

चातुर्थक—वि० [स० चतुर्थ+ठक्—क] हर चौथे दिन आने, घटने या होनेवाला। चौथिया।

पु० चौथिया ज्वर।

चातुर्थिक—वि० [स० चतुर्थ+ठक्—इक] =चातुर्थक।

चातुर्दश—पु० [स० चतुर्दशी+अण्] राक्षस।

वि०

१ चतुर्दशी संबंधी। २ जो चतुर्दशी को उत्पन्न हुआ हो।

चातुर्भद्र(क)—पु० [स० चतुर्भद्र+अण्] १ चारो पदार्थ, यथा—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। २ वैद्यक मे, ये चार ओषधियाँ—नागर मोथा, पीपल (पिप्पली), अतीस और काकडासिंगी। कोई-कोई चक्रदत्त के अनुसार इन चार चीजो को भी चातुर्भद्र कहते हैं—जायफल, पुष्कर-मूल, काकडा सिंगी और पीपल।

चातुर्महाराजिक—पु० [स० चतुर्महाराजिक+अण्] १ विष्णु। २. गौतम बुद्ध का एक नाम।

चातुर्मास—वि० [स० चतुर्मास+अण्] १. चार महीनो मे संपन्न होनेवाला। २. चार महीनो का।

चातुर्मासिक—वि० [स० चतुर्मास+ठक्—इक] चार महीनो मे होने-वाला (यज्ञ, कर्म आदि)।

चातुर्मासी—स्त्री० [स० चतुर्मास+अण्-ङीप्] पूर्णमासी।

वि० [हिं०] चौमासे का।

चातुर्मास्य—पुं० [सं० चतुर्मास+ण्य] १ चार महीनो मे होनेवाला एक वैदिक यज्ञ। २ वर्षा ऋतु के चार महीनो मे होनेवाला एक प्रकार का पौराणिक व्रत। चौमासा।

चातुर्य्य—पु० [स० चतुर+ष्यञ्] =चतुरता।

चातुर्वर्ण्य—पु० [स० चतुर्वर्ण+ष्यञ्] १ हिंदुओ के ये चारो वर्ण,—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। २ चारो वर्णो के पालन के लिए विहित धर्म। जैसे—ब्राह्मण का धर्म यजन, याजन, दान, अध्यापन, अध्ययन और प्रतिग्रह, क्षत्रिय का धर्म बाहुबल से प्रजा-पालन आदि।

वि० चारो वर्णों मे होने अथवा उनसे संबंध रखनेवाला।

चातुर्विद्य—वि० [स० चतुर्विद्या+ष्यञ्] चारो वेदो का ज्ञाता।

पु० चारो वेद।

चातुर्होत्र—पु० [स० चतुर्होतृ+अण्] [वि० चातुर्होत्रिय] चार होताओ द्वारा संपन्न होनेवाला यज्ञ।

चात्र—पु० [स०√चाय् (देखना)+ष्ट्रन्] अग्नि-मंथन यंत्र का एक अवयव जो बारह अंगुल लंबा और खैर की लकडी का होता था।

चात्रण—पु० =चात्र।

चात्रिक—पु० =चातक। उदा०—चात्रिक भइउ कहत पिउ पिऊ।—जायसी।

चात्वाल—पु० [स०√चत् (याचना)+ वालञ्] १ हवन-कुंड। २ वेदी। ३ कुश। दर्भ। ४ गड्ढा।

चादर—स्त्री० [फा०] १ कपडे का वह आयताकार टुकडा जिसे सोते समय लोग नीचे बिछाते अथवा ऊपर ओढते हैं। २ उक्त आकार-प्रकार का वह टुकडा जिसे स्त्रियाँ धड पर लपेटती तथा उसके कुछ अंश से सिर ढकती हैं; और जो प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि का सूचक होता है। **मुहा०**— **(किसी का) चादर उतारना**=अपमानित या अप्रतिष्ठित करना। नष्ट करना। **चादर रहना**=कुल या परिवार की मर्यादा रक्षित रहना। प्रतिष्ठा का बना रहना। **चादर से बाहर पर फैलाना**=अपनी बिसात, योग्यता या शक्ति से अधिक काम या व्यय करना। **चादर हिलाना**=युद्ध मे शत्रुओ से घिरे हुए सैनिको का आत्म-समर्पण का संकेत करने के लिए कपडा हिलाना। युद्ध रोकने का झंडा दिखाना। ३ स्त्रियो के ओढने का उक्त प्रकार का कपडा जो उनके सधवा या सौभाग्यवती होने का सूचक होता है।

मुहा०—(किसी स्त्री को) चादर ओढाना=किसी विधवा स्त्री को पत्नी बनाकर अपने घर मे रखना।
४. किसी धातु का बहुत बडा आयताकार और पतला पत्तर। जैसे—टीन, पीतल या शीशे की चादर। ५ ऊपर से गिरते या बहते हुए पानी की वह धारा जिसकी चौडाई अधिक और मोटाई कम हो। ६ बढी हुई नदी के वेगपूर्ण प्रवाह मे स्थान-स्थान पर पानी का वह फैलाव जो बिलकुल समतल होता है और जिसमे भँवर या हिलोरा नही होता। ७ फूलो आदि की बनी हुई वह लबी-चौडी और चौकोर रचना जो चँदोए, चादर आदि के रूप मे किसी धार्मिक या पूज्य स्थान पर चढाई जाती है। (मुसलमान) जैसे—किसी मजार पर चादर चढाना। ८. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे यथेष्ट लबाई और चौडाई मे फुलझडियाँ झडती है। झरना।

चादर छिपौवल—स्त्री० [हिं०] लडको का एक खेल जिसमे वे किसी लडके के ऊपर चादर डालकर लडको से उसका नाम पूछते है। जो लडका ठीक नाम बता देता है, वह चादर से ढके हुए लडके को स्त्री बनाकर ले जाता है।

चादरा—पु०[हिं० चादर] पुरुषो के ओढने-विछाने की बडी चादर।

चानक†—क्रि० वि०=अचानक।
पु०=चाणक्य।

चानणा†—पु०=चाँदना (प्रकाश)।

चानन†—पु० १ =चाँदना। २ =चदन।

चानस†—पु० [अ० चास] ताश का एक प्रकार का खेल।

चाप—पु०[स० चप+अण्] १ धनुष। २ ज्यामिति में वृत्त की परिधि का कोई भाग। (आर्क) ३. मेहराब।
स्त्री० [हिं० चापना=दबाना] १ चापने की क्रिया या भाव। दाब। २ पैरो की आहट।
पु० [अ० चॉप] आलू, बेसन आदि की बनी तथा घी आदि मे तली हुई नमकीन टिकिया।

चापक—पु०[स० चाप से] धनुष की डोरी। उदा०—क्रीडत गिलोल जब लालकर, मार जानि चापक सुमन।—चन्दवरदाई।

चाप-कर्ण—पु०[प० त०] ज्यामिति मे वह सरल रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गई हो। जीवा। (कॉर्ड)

चाप-जरीब—पु०[हिं० चाप+अ०जरीब] जमीन की लबाई की एक नाप या मान।

चापट—स्त्री०[हिं० चिपटना] १ चोकर। २ भूसी।
†वि०=चौपट।

चापड़—वि० [स० चिपिट, हिं० चिपटा, चपटा] १ जो दबकर चिपटा हो गया हो। २ जो कुचले जाने के कारण जमीन के बराबर हो गया हो। ३ सब प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट। चौपट।
पु० वह कडी जमीन जो अच्छी तरह जोती न गई हो। जैसे—मत वो चापड, उजडेगा टापर।—खेतिहरो की कहावत।

चाप-दंड—पु०[उपमि०स०] वह डडा जिससे कोई वस्तु आगे की ओर ढकेली जाय।

चापना—स० [स० चप्, प्रा० चप्पइ, बँ० चापा, उ० चापुआ, गु० चापवूं मरा० चॉपणे] ऊपर से जोर लगाकर भार या रखकर दबाना। चाँपना २. छाती से लगाकर दबाना। आलिंगन करते समय किसी को दबाना।

चापर†—वि०=चापड।

चापल—पु०[स० चपल+अण्] चंचलता। चपलता।
वि० चचल। चपल।

चापलता—स्त्री०=चपलता।

चापलूस—वि० [फा०] [भाव० चापलूसी] जो किसी के सामने उसकी आवश्यकता से अधिक या झूठी प्रशसा करे। खुशामदी। चाटुकार।

चापलूसी—स्त्री० [फा०] वह झूठी प्रशसा जो केवल दूसरो को प्रसन्न और अनुकूल करने के लिए की जाय। झूठी बडाई या प्रशसा से भरी बात। खुशामद। चाटुता।

चापी (पिन्)—पुं० [स० चाप+इनि] १. वह जो हाथ मे चाप अर्थात् धनुष रखता हो। धनुर्धर। २. शिव। ३. धनु राशि।

चापू—पु०[देश०] हिमालय के आस-पास के प्रदेशो में होनेवाली एक प्रकार की छोटी बकरी जिसके बाल बहुत लबे और मुलायम होते और कबल आदि बनाने के काम आते हैं।

चाफंद—पु०[हिं० चौ=चार+फदा] मछलियाँ फँसाने का एक प्रकार का जाल।

चाब—स्त्री० [स० चव्य] १. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकडी और जड औषध के काम में आती है। इसकी लकडी और जड से कपडे आदि रँगने के लिए एक प्रकार का पीला रग निकाला जाता है। २. उक्त पौधे के छोटे गोल फल जो औषध के रूप मे काम आते हैं।
स्त्री० [हिं० चाबना] १. चाबने की क्रिया या भाव। २ डाढ। चौभड। ३ कुछ स्थानो मे घर मे बच्चा होने के समय का एक उत्सव या रीति।
स्त्री०[स० चतु.] १. चार की सख्या। (डिं०) २. कपडा। वस्त्र। (डिं०)
†पु० [सं० चप] एक प्रकार का बाँस।

चाबन†—पु०=चबेना।

चाबना—स० [सं० चर्वण, प्रा० चव्वण] १ दाँतो से कोई कडी चीज खाते समय दबाना। चबाना। जैसे—कुत्ते का हड्डी चाबना। २ खूब पेट भरकर भोजन करना। ३ अनुचित रूप से किसी का धन खाते चलना।

चाबस—अव्य० दे० 'शाबाश'।

चाबी—स्त्री०[हिं० चाप=दबाव, पुर्त्त० चेव] १. धातु आदि का वह उपकरण जिससे ताला खोला तथा बंद किया जाता है। कुजी। ताली। २. किसी यत्र मे लगा हुआ वह अग जिसे घुमाकर उसकी कमानी इसलिए कसी जाती है कि वह यत्र चलता रहे या चलने लगे। जैसे—घडी या बाजे की चाबी।
क्रि० प्र० —देना।—भरना।
३. कोई ऐसा पच्चड जिसे दो जुडी हुई वस्तुओ की सधि मे ठोक देने से जोड दृढ होता हो।
क्रि० प्र०—भरना।
४ कोई ऐसी युक्ति या साधन जिसके प्रयोग से किसी को कुछ करने मे प्रवृत्त किया जा सके। जैसे—उनकी चाबी तो हमारे हाथ मे है।

चाबुक—पु० [फा०] १. चमडे, रस्सी आदि को बटकर बनाया हुआ कोडा जिसका प्रयोग किसी को मारने के लिए होता है। छोटा, पतला कोडा। जैसे—भले घोडे को एक चाबुक बहुत है।
पद—चाबुक सवार। (देखें)
२ लाक्षणिक रूप मे कोई ऐसी बात जिससे कोई कार्य करने की उत्तेजना उत्पन्न हो।

चाबुक-सवार—पु० [फा०] [भाव० चाबुक-सवारी] घोडे पर सवार होकर उसे विविध प्रकार की चालें सिखाने अथवा उसकी चाल दुरुस्त करनेवाला व्यक्ति।

चाबुक-सवारी—स्त्री० [फा०] चाबुक सवार का काम, पद या पेशा।

चाभ—स्त्री० दे० 'चाब'।

चाभना—स०=चाबना।

चाभा—पु० [हिं० चाबना] बैलो का एक रोग जिसमे उनकी जीभ पर काँटे उभड़ आते है और उनसे कुछ खाया या चबाया नही जाता।

चाभी—स्त्री०=चाबी।

चाम—पु० [स० चर्म] चमडा। खाल। उदा०—मानवता की मूर्त्ति गढोगे तुम सँवार कर चाम।—पत।
मुहा०—**चाम के दाम चलाना**=(क) चमडे के सिक्के चलाना। (ख) अपने प्रताप, बल, वैभव आदि से उसी प्रकार जबरदस्ती अनोखे और असाधारण कार्य करना, जिस प्रकार निजाम नामक भिश्ती ने हुमायूँ को डूबने से बचाकर फल-स्वरूप थोडे समय के लिए राज्याधिकार प्राप्त करके चमडे के सिक्के चलाये थे। (ग) व्यभिचार से धन कमाना। (बाजारू)

चाम-चोरी—स्त्री० [हिं० चाम+चोरी] गुप्त रूप से किया जानेवाला पर-स्त्री-गमन।

चामड़ी—स्त्री०=चमडी।

चामर—पु० [स० चमरी+अण्] १ चँवर। मोरछल। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं।

चामर-ग्राह—पु० [स० चामर√ग्रह् (ग्रहण करना)+अण्, उप० स०] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चामर-ग्राहिक—पु० [स० चामरग्राहिन्+कन्]=चामर-ग्राह।

चामर-ग्राही (हिन्)—पु० [स० चामर√ग्रह्+णिनि, उप०स०]=चामर-ग्राह।

चामर पुष्प—पु० [ब०स०] १ सुपारी का पेड। २ आम का पेड। ३ केतकी। ४ कांस।

चामर-व्यजन—पु० [प० त०] चँवर। मोरछल।

चामरिक—पु० [स० चामर+ठन्—इक] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चामरी—स्त्री० [स० चामर+अच्+ङीप्] सुरागाय।

चामिल—स्त्री० दे० 'चवल'।

चामीकर—पु० [स० चमीकर+अण्] १ सोना। स्वर्ण। २. कनक। धतूरा।
वि० [चामीकर+अण्] १ सोने का बना हुआ। २. सोने की तरह का। सुनहला।

चामीकराचल—पु० [चामीकर-अचल, प० त०] सुमेरु पर्वत।

चामुंडा—स्त्री० [स० चमू√ला (आदान)+क, पृषो० सिद्धि] एक देवी जिन्होने शुभ-निशुभ के चड और मुड नामक दो सेनापति दैत्यो का वध किया था। कापालिनी। भैरवी।

चाम्य—पु० [स०√चम् (खाना)+ण्यत्] खाद्य पदार्थ।

चाय—स्त्री० [चीनी चा] १ एक प्रसिद्ध पौधा या झाड जिसकी पत्तियाँ १०-१२ अगुल लबी, ३-४ अगुल चौडी और दोनो सिरो पर नुकीली होती हैं। २ उक्त पौधे की सुगधित और सुखाई हुई पत्तियाँ जिन्हे उबालकर पीने की चाल अब ससार भर मे फैल गई है। ३ उक्त पत्तियो का उबालकर तैयार किया हुआ पेय जिसमे चीनी, दूध आदि भी मिलाया जाता है।
†पु०=चाव (चाह)। उदा०—मौन वदन उर चाय।—नागरीदास।

चायक—पु० [स० √चि (चयन करना) ण्वुल्—अक] चुननेवाला। चयन करनेवाला।
वि० [हिं० चाय=चाव या चाह] चाहने या प्रेम करनेवाला।

चायदान—पु० [हिं० चाय+फा० दान] करवे की आकृति का एक प्रकार का चीनी-मिट्टी या धातु का एक प्रसिद्ध पात्र जिसमे चाय का गरम पानी रक्खा जाता है।

चायदानी—स्त्री०=चायदान।

चाय-पानी—पु० [हि० पद] ऐसा जल-पान जिसके साथ पेय रूप मे चाय भी हो।

चार—वि० [स० चत्वारि, प्रा० चत्तार, चत्तारी, चत्तारो, अप० उ० बँ० मि० चारि, गु० प० मरा० चार] १ जो गिनती मे तीन से एक अधिक हो। दो का दूना। तीन और एक। जैसे—चार घोडो की गाडी।
मुहा०—**(किसी से) चार आँखें करना**=किसी के सामने होकर उसकी ओर देखना। आँखें मिलाना। **(किसी चीज में) चार चाँद लगना**=प्रतिष्ठा, शोभा, सौंदर्य आदि चौगुनी होना या बहुत बढ़ जाना। **चार पगड़ी करना**=जहाज का लगर डालना। जहाज ठहराना। (लश०) **चार पाँच करना**= इधर-उधर की बाते या हीला-हवाला करना। **चारों खाने चित गिरना**=(क) इस प्रकार चित गिरना जिससे हाथ-पाँव फैल जायँ। (ख) पूरी तरह से या सब प्रकार से ऐसा परास्त होना कि फिर कुछ भी करने योग्य न हो। **चारों फूटना**=चारो आँखें (दो हिये की और दो ऊपर की) फूटना अर्थात् इतना दुर्बुद्धि या मत्त होना कि बुरा-भला कुछ दिखाई न दे।
पद—**चार गुरदेवाला**=बहादुर और साहसी। जीवटवाला। **चारो ओर**=सभी ओर। हर तरफ। **चारो धाम**=हिंदुओ के ये चारो बड़े तीर्थ या पुण्य धाम—जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, द्वारका, और बदरिकाश्रम। **चारो पदार्थ**=हिन्दुओ मे ये चारो काम्य पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। **चारों मग्ज**=हकीमी नुसखो मे, इन चारो चीजो के बीजो की गिरियाँ—ककडी, कद्दू, खरबूजा और खीरा।
२ कई एक। बहुत से। अनेक। जैसे—चार आदमी जो कहे, वह मान लेना चाहिए।
मुहा०—**चार के कंधो पर चढ़ना या चलना**=मर कर अरथी आदि पर चढना और कुछ लोगो की सहायता से कब्रिस्तान या श्मशान की ओर जाना।
३ गिनती मे कुछ कम या थोडे। कतिपय। कुछ। जैसे—(क) चार

बातें उन्होंने कही तो चार मैंने भी सुनाईं। (ख) अभी चार दिन की तो बात है कि वे यहाँ आकर नौकर हुए हैं।

पद—चार-तार=थोड़े से अच्छे कपड़े और गहने। जैसे—जब से मियाँ का रोजगार चला है, तब से बीबी के पास चार-तार दिखाई देने लगे हैं, नहीं तो पहले क्या था। (स्त्रियाँ) **चार दिन की चाँदनी**=थोड़े समय तक ठहरनेवाला वैभव या सुख-भोग। जैसे—उनकी यह सारी रईसी बस चार दिन की चाँदनी है। **चार पैसे**=थोड़ा धन। कुछ रुपया-पैसा। उदा०—जब पास में चार पैसे रहेंगे, तभी नाते-रिश्ते के लोग पूछेंगे। पु० चार का सूचक अंक या संख्या। चार का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४।

*†वि०=चारु।

पु०[सं०√चर् (चलना)+घञ्। चर+अण् (अर्थानुसार ज्ञातव्य)] [भू० कृ० चारित, वि० चारी] १. चलने की क्रिया या भाव। गति। चाल। २ आचार। ३. रसम। रीति। जैसे—द्वारचारी। ४. कारागार। जेलखाना। ५ गुप्तचर। जासूस। ६ दास। सेवक। ७ भोजन करना। खाना। भक्षण। ८ चिरौंजी। पियाल। ९. वह विष जो पशु-पक्षियों आदि को फँसाने या मारने के लिए बनाया जाता है।

चार आइना—पु०[फा० चार+आइन=लोह] एक प्रकार का कवच या बकतर जिसमें लोहे की चार पटरियाँ जड़ी रहती हैं जिनमें से एक छाती पर, एक पीठ पर और दो दोनों बगलों में (भुजाओं के नीचे) रहती हैं।

चारक—पु० [सं० √चर्+णिच्+ण्वुल्—अक। चार+कन्। √चर्+ण्वुल्—अक (अर्थानुसार ज्ञातव्य)] १ चलाने या संचार करानेवाला। संचारक। २ गति। चाल। ३ गाय-भैंस चरानेवाला। चरवाहा। ४ चिरौंजी। पियाल। ५ गुप्त-चर। जासूस। ६ सहचर। साथी। ७ घुड़सवार। ८ वह ब्रह्मचारी या ब्राह्मण जो बराबर इधर-उधर घूमता-फिरता रहे। ९ आदमी। मनुष्य। १० चरक ऋषि का ग्रंथ या सिद्धान्त। ११. वह कारागार जिसमें अभियुक्त तब तक रखा जाता है, जब तक उसके अभियोग का निर्णय न हो जाय। हवालात।

चार-कर्म (न्)—पु०[ष० त०] चर अर्थात् जासूस का काम। जासूसी। (एस्पायनेज)

चारकाने—पु० बहु०[हिं० चार+काना=मात्रा] चौसर या पासे का एक दाँव।

चारखाना—पु०[फा० चारखान] १. आड़ी और खड़ी धारियों या रेखाओं की ऐसी रचना जिसमें बीच-बीच में चौकोर खाने पड़ते हों। २ वह कपड़ा जिसमें उक्त प्रकार के चौकोर खाने बने हों।

चारग-मारग—पु०[सं० चार+मार्ग] आचरण और व्यवहार की धूर्तता। चालबाजी और ढंग।

चार-चक्षु (स्)—पु०[ब० स०] राजा, जो अपने चरों या जासूसों के द्वारा सब बातें देखता है।

चार-चश्म—वि०[फा०] [भाव० चार-चश्मी] १ निर्लज्ज। बेहया। २ जिसमें शील, सौजन्य आदि का अभाव हो। बेमुरौवत। ३. कृतघ्न। नमक-हराम।

चारज—पु० दे० 'चार्ज'।

चारजामा—पु०[फा० चारजाम] चमड़े या कपड़े का वह टुकड़ा जो सवारी करने में पहले घोड़े की पीठ पर कसा जाता है। जीन।

चारटा—स्त्री० [सं०√चर् (चलना)+णिच्+अटन्—टाप्] पद्मचारिणी वृक्ष। भूम्यामलकी।

चारटिका—स्त्री०[सं०√चर्+णिच्+अटन्—ङीप्+कन्—टाप्, ह्रस्व] नली नामक गंध-द्रव्य।

चारटी—स्त्री० [सं० √चर्+णिच्+अटन्-ङीप्]=चारटा।

चारण—पु० [सं०√चर् (चलना)+णिच्+ल्यु—अन] १. एक जाति जो मध्ययुग में राजाओं के दरबार में उनकी तथा उनके पूर्वजों की कीर्ति या यश का वर्णन गाकर करती थी। बंदीजन। भाट। २ उक्त जाति का व्यक्ति। ३. वह जो बराबर इधर-उधर घूमता रहता हो।

चार-तूल—पु०[सं०त०] चँवर।

चारदा†—पु०[हिं० चार+दा (प्रत्य०)] १ चौपाया। २ कुम्हारों की बोली में उनका गधा।

चारदीवारी—स्त्री०[फा०] १ सुरक्षा अथवा सीमा निर्धारण की दृष्टि से किसी मकान या स्थान के चारों ओर बनाई जानेवाली ऊँची दीवार। २ नगर के चारों ओर का परकोटा। प्राचीर। शहर-पनाह।

चारन†—पु०=चारण।

चारना†—स० १.=चराना। २ =चलाना।

चार-ना-चार—क्रि० वि० [फा०] विवश होकर। मजबूर या लाचार होकर।

चार-पथ—पु०[ब०स०] राज-मार्ग।

चारपाई—स्त्री०[हिं० चार+पाया] चार पायोंवाला वह प्रसिद्ध उपकरण जो बीच में बाध, सुतली, निवाड़ आदि से बुना रहता है और जिस पर लोग सोते है। छोटा पलंग। खाट।

पद—**चारपाई का कान**=चारपाई का वह अंग जो उसके टेढ़े हो जाने के कारण एक ओर ऊपर उठ आया हो।

मुहा०—**चारपाई धरना, पकड़ना या लेना**=(क) चारपाई पर लेटना। (ख) इतना बीमार होना कि चारपाई से उठ न सके। अत्यन्त रुग्ण होना। **चारपाई पर पड़ना**=चारपाई पकड़ना। **चारपाई सेना**=रोग आदि के कारण अधिक समय तक चारपाई पर पड़े रहना। **चारपाई से पीठ लगना**=चारपाई पकड़ना। **चारपाई से लगना**=चारपाई पकड़ना।

चारपाया—पु०[फा० चारपाय] चार पैरोंवाला पशु। चौपाया।

चार-पाल—पु०[सं० चार√पाल् (पालन करना)+णिच्+अण्] गुप्तचर। जासूस।

चार-पुरुष—पु०[कर्म०स०] गुप्त-चर। भेदिया।

चार-प्रचार—पु०[ष०त०] किसी काम के लिए जासूस नियुक्त करना। (प्राचीन भारतीय राजतंत्र)

चार-बंद—पु०[फा०] १. शरीर के अंग या अवयव। २ शरीर के अंगों की गाँठें या जोड़।

चार-बाग—पु०[फा०] १ चौकोर बगीचा। २ ऐसा बाग या बगीचा जिसमें फलोंवाले वृक्ष हों। ३. एक प्रकार का बड़ा रूमाल या शाल जिसके चारों बराबर भाग अलग-अलग रंगों के और अलग-अलग प्रकार के बेल-बूटों से युक्त होते हैं।

चार-बालिश—पु०[फा०] एक प्रकार का बड़ा गोल तकिया। मसनद।

चार-भट—पु०[सं० त०] वीर सैनिक।

चार-मेख—स्त्री०[हिं० +फा०] मध्ययुग का एक प्रकार का दड या सजा जिसमे अपराधी को जमीन पर लेटाकर उसके दोनो हाथ और दोनो पैर चार खूंटो से बाँध दिये जाते थे।

चारयारी—स्त्री०[हिं० चार+फा० यार] १ चार मित्रो का दोस्ताना। २ चार मित्रो की गोष्ठी या मडली। ३ मुसलमानो मे सुन्नियो का वह सप्रदाय जो मुहम्मद के चार मित्रो और सहायको (अबूबकर, उमर, उस्मान और अली) को खलीफा मानता है। ३ मुसलमानी शासनकाल का चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिस पर मुहम्मद साहब के उक्त चारो मित्रो या साथियो के नाम अकित हैं। और जिसका प्रचार कई तरह के टोने-टोटको के लिए होता है।

चारवा—पु०=चौपाया।

चार-वायु—स्त्री०[मध्य०स०] गरम हवा। लू।

चारांतरित—पु०[स० चार-अतरित तृ० त०] गुप्तचर।

चारा—पु०[हिं० चरना] १ गाय, बैल आदि पशुओ के खाने के लिए दी जानेवाली, पत्ती, घास आदि। २ चिड़ियो, मछलियो आदि को फँसाने अथवा जीवित रखने के लिए खिलाई जानेवाली वस्तु। ३ निकृष्ट भोजन। (व्यग्य) ४ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी को फँसाने अथवा अपना काम निकालने के लिए दूसरे को दिया जानेवाला प्रलोभन। क्रि० प्र०—डालना।—फकना।

पु०[फा० चार] १. इलाज। २ उपाय। ३ युक्ति।

चाराजोई—स्त्री० [फा०] दूसरे से पहुँची हुई या पहुँचनेवाली हानि के प्रतिकार या बचाव के लिए न्यायालय या हाकिम से की जानेवाली याचना। नालिश। फरियाद। जैसे—अदालत से चाराजोई करना।

चारायण—पु०[स० चर+फक्—आयन] काम-शास्त्र के एक आचार्य।

चारासाज—वि०[फा० चार साज] [भाव० चारासाजी] विपत्ति के समय सहायता देकर दूसरे का काम बनानेवाला।

चारि—वि०, पु०=चार।

चारिका—स्त्री०[स० चारक+ टाप्, इत्व] सेविका। दासी।

चारिटी—स्त्री०=चारटी।

चारिणी—स्त्री०[स० √चर्+णिच्+णिनि-ङीप्] करुणी वृक्ष। वि० स० चारी (चारिन्) का स्त्री० रूप। जैसे—ब्रह्मचारिणी, व्रत-चारिणी।

स्त्री० [हिं० चारण] चारण जाति की स्त्री।

चारित—भू० कृ० [स०√चर्+णिच+क्त] १ जो चलाया गया हो। चलाया हुआ। गतिमान किया हुआ। २. भभके आदि से उतारा या खीचा हुआ। जैसे—चारित आसव।

पु० आरा (लकडी चीरने का)।

†पु०=चारा (पशुओ का भोजन)।

चारितार्थ्य—पु०[स०चरितार्थ+ष्यञ्] चरितार्थ होने की अवस्था या भाव। चरितार्थता।

चारित्र—पु०[स० चरित्र+अण्] १ किसी कुल या वश मे परम्परा से चला आया हुआ आचार-व्यवहार। कुल की रीति। २ अच्छा चाल-चलन। सदाचार। ३ रीति-व्यवहार। ५ मरुत् गणो मे से एक। ४ स्त्री का पातिव्रत या सतीत्व। ६ सन्यास। (जैन)

चारित्रवती—स्त्री०[स० चारित्र+मतुप्, वत्व, ङीप्] योग मे एक प्रकार की समाधि।

चारित्र-विनय—पु०[तृ०त०] आचरण या चरित्र द्वारा नम्र और विनीत भाव-प्रदर्शन। शिष्टाचार। नम्रता।

चारित्रा—स्त्री०[स० चारित्र+अच्-टाप्] इमली।

चारित्रिक—वि० [स० चरित्र+ठक्-इक] १ चरित्र-सबधी। २. अच्छे चरित्रवाला।

चारित्रिकता—स्त्री०[स० चारित्रिक+तल्-टाप्] १ अच्छा चरित्र। २ चरित्र-चित्रण की कला या कौशल।

चारित्री (त्रिन्)—वि०[स० चारित्र+इनि] अच्छे चरित्रवाला। सदा-चारी।

चारित्र्य—पु०[स० चरित्र+ष्यञ्] चरित्र। आचरण।

चारिम—वि० १.=चौथा। उदा०—जामिनि चारिम पहर पाओल।—विद्यापति। २ =चारो।

चारी (रिन्)—वि०[स० (पूर्वपद के साथ होने पर)√चर् (चलना)+णिनि] एक विशेषण जो समस्त पदो के अत मे लग कर निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) चलने या विचरण करनेवाला। जैसे—व्योम-चारी। (ख) कोई विशिष्ट आचरण या क्रिया करनेवाला। जैसे—व्यभिचारी। (ग) पालन करनेवाला। जैसे—ब्रह्मचारी, व्रतचारी।

पुं० १ पैदल चलनेवाला सिपाही। २ साहित्य मे, सचारी भाव। ३ नृत्य मे एक प्रकार की क्रिया।

चारु—वि०[स√चर् (चलना)+उण्] आकर्षक और मनोहर। सुन्दर। पु०१ बृहस्पति। २ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ३ कुकुम। केसर।

चारुक—पु० [स० चारु+कन्] सरपत के बीज जो दवा के काम आते हैं।

चारु-केशरा—स्त्री०[ब० स०] १ नागरमोथा। २. सेवती का फूल।

चारु-गर्भ—पु०[ब० स०] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारु-गुप्त—पु०[कर्म० स०] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारु-चित्र—पु०[ब० स०?] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चारुता—स्त्री०[स० चारु+तल्—टाप्] चारु होने की अवस्था, गुण या भाव। मनोहरता। सुन्दरता।

चारुत्व—पु०[स० चारु+त्व] चारुता।

चारु-दर्शन—वि०[ब० स०] [स्त्री० चारु-दर्शना] जो देखने मे बहुत सुदर हो। रूपवान्।

चारुदेष्ण—पु०[स०] रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र जिन्होंने निकुभ आदि दैत्यो के साथ युद्ध किया था। (हरिवश)

चारु-धामा—स्त्री०[ब० स०] इद्र की पत्नी, शची।

चारु-धारा—स्त्री०[ब० स०] इद्र की पत्नी, शची।

चारु-धिष्ण—पु०[स०] ग्यारहवें मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक।

चारु-नालक—पु०[ब० स०, कप्] कोकनद। लाल कमल।

चारु-नेत्र—वि०[ब० स०] [स्त्री० चारुनेत्रा] सुन्दर नेत्रोंवाला। पु० एक प्रकार का हिरन।

चारु-पर्णी—स्त्री०[ब० स०,ङीप्] प्रसारिणी लता। गधपसार।

चारु-पुट—पु०[ब०स०] ताल के ६० मुख्य भेदो मे से एक। (सगीत)

चारु-फला—स्त्री०[ब० स०, टाप्] अगूर या दाख की लता।

चारु-लोचन—वि० [व०स०] [स्त्री० चारु-लोचना] सुन्दर नेत्रोंवाला। पु० एक प्रकार का हिरन।

चारु-वर्धना—स्त्री० [स० चारु√वृध् (वृद्धि करना)+णिच्+ल्युट-अन—टाप्] सुन्दर स्त्री। सुन्दरी।

चारु-शिला—स्त्री० [कर्म०स०] एक प्रकार का रत्न।

चारु-शील—वि० [व०स०] [स्त्री० चारु-शीला] उत्तम शील या स्वभाव-वाला।

चारु-सार—पु० [कर्म०स०] सोना। स्वर्ण।

चारुहासिनी—स्त्री० [स० चारुहासिन्+ङीप्] १. सुन्दर रूप से हँसने-वाली स्त्री। २. वैताली नामक छद का एक प्रकार या भेद।

चारुहासी (सिन्)—वि० [स० चारु√हस् (हँसना)+णिनि] [स्त्री० चारुहासिनी] १. सुदर रूप से हँसनेवाला। मनोहर मुसकानवाला। २ जो हंसता हुआ सुन्दर तथा भला जान पडे।
पु० वैताली छद का एक भेद।

चारेक्षण—पु० [सं० चार-ईक्षण, व०स०] राजा।

चारोली†—स्त्री० [देश०] फलो आदि की गुठली।

चार्घा—स्त्री० [स०] प्राचीन भारत मे एक प्रकार की सडक जो छ. हाथ चौडी होती थी।

चार्चिक—वि० [स० चर्चा+ठक्—इक] वेद-पाठ मे कुशल।

चार्चिक्य—पु० [स० चर्चिका+ष्यञ्] १ शरीर मे अगराग का लेपन। २. अगराग। ३ वेद-पाठ-सबधी कौशल या निपुणता।

चार्ज—पु० [अ०] १ किसी काम या पद का भार। कार्य-भार। २. रक्षण आदि के लिए की जानेवाली देख-रेख। ३. किसी पर लगाया जानेवाला अभियोग। ४ किसी कार्य या सेवा का पारिश्रमिक। परिव्यय। ५ एक-दम से किया जानेवाला आक्रमण।

चार्टर—पु० [अ०] १ वह लेख जिसमे शासन की ओर से किसी को कोई स्वत्व या अधिकार देने की बात लिखी रहती है। सनद। अधिकार-पत्र। २ कुछ शर्तो पर जहाज या और कोई बडी सवारी किराये पर देना या लेना।

चार्म—वि० [स० चर्मन्+अण्] १. चर्म-सबधी। २. चमडे का बना हुआ। ३ चमडे से मढा हुआ।

चार्मिक—वि० [स० चर्मन्+ठक्-इक] चमडे से बना हुआ।

चार्य—पु० [स० चर+ष्यञ्] १ चर होने की अवस्था या भाव। चरता। २. दूतत्व। ३ जासूसी। ४. [√चर्+ण्यत्] एक प्राचीन वर्ण सकर जाति। (व्रात्य वैश्य की सवर्णा स्त्री से उत्पन्न)

चार्वाक—पु० [स० चारु-वाक, व०स०, पृषो० सिद्धि०] १ एक प्रसिद्ध अनीश्वरवादी और नास्तिक विद्वान्। बार्हस्पत्य। (चार्वाक दर्शन के रचयिता) २ उक्त विद्वान् द्वारा चलाया हुआ मत या दर्शन जो 'लोकायत' कहलाता है। चार्वाक दर्शन। ३ एक राक्षस जिसने कौरवो के मारे जाने पर ब्राह्मण वेश मे युधिष्ठिर की राजसभा मे जाकर उनको राज्य के लोभ से भाई-बन्धुओ को मारने के लिए धिक्कारा था और जो उस सभा के ब्राह्मणो के हाथो मारा गया था।

चार्वाक-दर्शन—पु० [मध्य०स०] चार्वाक नामक प्रसिद्ध विद्वान् का बनाया हुआ दर्शन-ग्रन्थ जिसमे ईश्वर, पर-लोक, पुनर्जन्म और वेदो के मत का खडन किया गया है।

चार्वाक-मत—पु० [प०त०] चार्वाक का चलाया हुआ मत या सम्प्रदाय।

चार्वी—स्त्री० [स० चारु+ङीप्] १ बुद्धि। २. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३. चमक। दीप्ति। ४. सुन्दर स्त्री। सुन्दरी। ५ कुबेर की पत्नी का नाम। ६ दारु हल्दी।

चाल—स्त्री० [हिं० चलना या स० चार] १. चलने की क्रिया या भाव। गति। २. वह अवस्था या क्रिया जिसमे कोई जीव या पदार्थ किसी दिशा मे अथवा किसी रेखा पर बराबर अपना स्थान बदलता हुआ क्रमश. आगे बढता रहता है। चलने, दौडने आदि के समय निरतर आगे बढते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—चलते या दौडते आदमी की चाल, डाक या सवारी गाडी की चाल। ३. पैर उठाने और रखने के ढग के विचार से किसी के आगे बढते रहने का प्रकार, मुद्रा या रूप। जैसे—(क) खरीदने मे पहले घोडे की चाल देखी जाती है। (ख) वह झूमती (या लडखडाती) हुई चाल से चला आ रहा था। ४. गति मे लगनेवाले समय के विचार मे, चलने की क्रिया या भाव। जैसे—कछुए या च्यूँटी की चाल। ५ किसी आदमी या चीज के चलते रहने की दशा मे उसकी गति-विधि आदि की सूचक ध्वनि या शब्द। आहट।
मुहा०—(किसी की) चाल मिलना=किसी के गतिमान होने, चलने-फिरने आदि की आहट, ध्वनि या शब्द सुनाई पडना। जैसे—(क) आज तो पिछवाडेवाले मकान मे कुछ आदमियो की चाल मिल रही है; अर्थात् ऐसा जान पडता है कि उसमे कुछ लोग आकर ठहरे है। (ख) सन्ध्या हो जाने पर जगल मे पशु-पक्षियो की चाल नही मिलती।
६. बहुत से आदमियो या जीवो के चलने-फिरने के कारण होनेवाली चहल-पहल, धूम-धाम, हलचल या हो-हल्ला। जैसे—कूच की आज्ञा मिलते (या नगाड़ा बजते) ही सारी छावनी मे चाल पड गई।
क्रि० प्र०—पडना।
७. फलित ज्योतिष के अनुसार अथवा और किसी प्रकार के सुभीते के विचार से कही से चलने या प्रस्थान करने के लिए स्थिर किया हुआ दिन, मुहूर्त या समय। चाला। उदा०—पोथी काढि गवन दिन देखें, कौन दिवस है चाला।—जायसी। ८ किसी पदार्थ (जैसे—यत्र आदि) अथवा उसके किसी अग की वह अवस्था जिसमे वह बराबर इधर-उधर आता-जाता, घूमता या हिलता-डोलता रहता है। जैसे—इजन के पुरजो की चाल, घडी के लगर की चाल। ९ तत्परता, वेग आदि के विचार से किसी काम या बात के होते रहने की अवस्था या गति। जैसे—(क) आज-कल कार्यालय (या ग्रथ-सम्पादन) का काम बहुत धीमी चाल से हो रहा है। (ख) इमारत (या नहर) के काम की चाल अब तेज होनी चाहिए। १०. किसी चीज की बनावट, रचना, रूप आदि का ढग या प्रकार। ढब। तर्ज। जैसे—नई चाल का कुरता या टोपी, नई चाल की थाली या लोटा। ११ कोई काम करने का ढग, प्रकार या युक्ति। जैसे—अब उसे किसी और चाल से समझाना पडेगा। १२ ऐसा ढग, तरकीब या युक्ति जिसमे कुछ विशिष्ट कौशल भी मिला हो। विशिष्ट प्रकार का उपाय। तरकीब। जैसे—अब तो किसी चाल से यहाँ से अपना छुटकारा कराना चाहिए। १३ किसी को धोखा देने या बहकाने के लिए की जानेवाली चालाकी से भरी तरकीब या युक्ति। जैसे—हम तुम्हारी चाल समझते हैं।
मुहा०—(किसी से) चाल चलना=किसी को धोखा देने या भ्रम मे रखने

की तरकीब या युक्ति करना। जैसे—तुम कहीं चाल चलने से बाज नही आते। (किसी की) चाल मे आना या फँसना=किसी के धोखे या बहकावे मे आना। जैसे—वह सीधा आदमी तुम्हारी चाल मे आ गया।
पद—चाल-बाज, चालबाजी। (देखें स्वतन्त्र पद)।
१४ किसी काम, चीज या बात के चलनसार या प्रचलित रहने की अवस्था या भाव। जैसे—आज-कल इस तरह के गहनो (या साडियों) की चाल नहीं है। १४ नैतिक दृष्टि से आचरण, व्यवहार आदि करने का ढग, प्रकार या स्वरूप। जैसे—(क) तुम अपने लडके की चाल सुधारो। (ख) यदि तुम्हारी यही चाल रही तो तुम्हारा कहीं ठिकाना न लगेगा।
पद—चाल-चलन, चाल-ढाल। (देखे स्वतन्त्र पद)
१६. चौसर, ताश, शतरज आदि खेलो मे अपना दाँव या बारी आने पर गोटी, पत्ता, मोहरा आदि आगे बढाने या सामने लाने की क्रिया। जैसे—(क) हमारी चाल हो चुकी, अब तुम्हारी चाल है। (ख) तुम्हारी इस चाल ने सारी बाजी का रुख पलट दिया। १७ मुद्रणकला मे, छापने के लिए यथा-स्थान बैठाये हुए अक्षरो के सबध मे वह स्थिति, जब बीच मे कोई नया पद, वाक्य या शब्द घटाये-बढ़ाये जाने के कारण कुछ अक्षरो या शब्दो के आगे-पीछे खिसकाने या हटाने-बढाने की आवश्यकता होती है। १८ यत्रो के पुरजो के सबध मे, वह स्थिति जिसमे वे किसी त्रुटि या दोष के कारण कुछ आगे-पीछे या इधर-उधर हट-बढकर चलते है और इसी लिए या तो कुछ खड-खड करते या यंत्र के ठीक तरह से चलने मे बाधक होते है। जैसे--इस आगेवाले चक्कर (या पहिये) मे कुछ चाल आ गई है।
स्त्री० [हि० चालना = छानना] छलनी आदि मे रखकर कोई चीज चालने या छानने की क्रिया, ढग या भाव।
पु० [स०√चल् (चलना) +ण, णिच्+अच् वा] १ घर के ऊपर का छप्पर या छाजन। २ छत। पाटन। ३ स्वर्णचूड पक्षी। ४. आज-कल बडे नगरो मे वह बहुत बडा मकान जो गरीबो अथवा साधारण स्थिति के लोगो को किराये पर देने के लिए बनता है। जैसे—बम्बई मे उसने सारी उमर एक ही चाल मे रहकर बिता दी।

चालक—वि० [स०√चल् (चलना) +णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० चालिका] १ चलानेवाला। जो चलाता हो। २ चलने के लिए प्रेरित करनेवाला। जैसे—चालक शक्ति। ३ चालबाज। धूर्त्त। उदा०—घर घालक, चालक, कलहप्रिय कहियत् परम परमारथी।—तुलसी।
पु० १. वह व्यक्ति जो यानो, इजनो आदि को गतिमान करता हो। २ सवाहक (दे०)। ३ वह हाथी जो अकुश का दबाव या नियत्रण न माने। उद्दड और नटखट हाथी। ४ नृत्य मे भाव बताने और सुदरता लाने के लिए हाथ हिलाने की क्रिया।

चालकुंड—पु० [स०] चिरका नाम की झील जो उडीसा मे है।

चाल-चलन—पु० [हि० चाल+चलन] नैतिक दृष्टि से देखा जाने-वाला आचरण या व्यवहार। चरित्र। मनुष्य के आचरण और व्यवहार करने का ढग जिसका मूल्याकन नैतिक दृष्टि से किया जाता है।

चाल-ढाल—स्त्री० [हि० चाल+ढाल] १ किसी व्यक्ति के चलने-फिरने का ढग या मुद्रा। रग-ढग। २ किसी व्यक्ति का ऊपरी आचरण और व्यवहार। ३ किसी चीज की बनावट या रचना का ढग या प्रकार। ४ चाल-चलन।

चालणी—स्त्री० = चलनी (छलनी)।

चालन—पु० [स०√चल् (चलना) +णिच्+ल्युट्+अन] १ चलाने की क्रिया या भाव। परिचालन। २ चलने की क्रिया या भाव। गति। ३ चलनी। छाननी।
पु० [हि० चालना] १. भूसी या चोकर जो आटा चालने के बाद बच रहता है। २. बडी चलनी।

चालनहार—वि० [हि० चालन+हार (प्रत्य०)] १ चलानेवाला। २. ले जाने या ले चलनेवाला।
वि० [हि० चलना] चलनेवाला।

चालना—स० [स० चालन] १. किसी को चलने मे प्रवृत्त करना। चलाना। २ हिलाना-डुलाना। ३ एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ४. बहू को उसके मैके से विदा कराके लाना। उदा०—पाखहू न बीत्यो चालि आयो हमे पीहर तें।—शिवराम। ५ कार्य या उसके भार का निर्वाह या वहन करना। परिचालन करना। उदा०—चालत सब राज-काज आयसु अनुभरत।—तुलसी। ६. चर्चा या प्रसग उठाना। ७ आटे को छलनी मे रखकर इधर-उधर हिलाना जिसमे महीन आटा नीचे गिर जाय और भूसी या चोकर छलनी मे ऊपर रह जाय। छानना। ८ बहुत-सी चीजो मे से छाँटकर कोई अच्छी चीज अलग करना या निकालना। उदा०—जाति, वर्ण, सस्कृति समाज से मूल व्यक्ति को फिर से चालो।—पत।
अ० = चलना।
पद—चालन हार। (देखे)
पु० [स्त्री० चालनी] चलना (बडी चलनी)।

चालनीय—वि० [स०√चल् (चलना) +णिच्+अनीयर्] चलाये या हिलाये जाने के योग्य। जो चलाया या हिलाया-डुलाया जा सके।

चालबाज—वि० [हि० चाल+फा० बाज] [भाव० चालबाजी] स्वार्थ साधन के लिए व्यवहार आदि मे कपट या छल से भरी हुई चालें चलनेवाला। धूर्त्तता से अपना काम निकाल लेनेवाला।

चालबाजी—स्त्री० [हि० चालबाज] १ चालबाज होने की अवस्था या भाव। २ व्यवहार आदि मे छल-पूर्ण चाले चलने की क्रिया या भाव। चालाकी। छल। धोखेबाजी।

चाला—पु० [हि० चाल] १ चलने या प्रस्थान करने की क्रिया या भाव। २. दुल्हिन का पहली बार अपने मायके से ससुराल अथवा ससुराल से मायके जाने की क्रिया। उदा०—चाले की बातें चली सुनत सखिन के टोला।—बिहारी। ३ वह दिन या समय जो किसी दिशा मे रवाना होने के लिए शुभ समझा जाता है। जैसे-रविवार को पश्चिम का चाला नहीं है बल्कि सोमवार को है। ४ एक प्रकार का औपचारिक कृत्य जो मृतक की षोडशी आदि हो जाने पर रात के समय किया जाता है। ५ दे० 'चलौआ'।

चालाक—वि० [फा०] [भाव० चालाकी] १ कौशलपूर्ण ढग से कोई काम करनेवाला। होशियार। २. व्यवहार-कुशल। सूझ-बूझ वाला। समझदार। ३ चालबाज। धूर्त्त।

चालाकी—स्त्री० [फा०] १ चालाक होने की अवस्था या भाव। चतुराई। व्यवहार-कुशलता। दक्षता। २ चालबाजी। धूर्त्तता।
मुहा०—चालाकी खेलना = धूर्त्तता-पूर्ण चाल चलना।
३ कौशल या होशियारी से मिली हुई युक्ति।

चाष—पु० [सं० √चप् (खाना) + णिच् + अच्] १. नीलकंठ पक्षी। २ २ चाहा नामक पक्षी।
†पु० = चक्षु (नेत्र)।

चास—स्त्री० [हिं० चासा] १ खेत जोतने की क्रिया या भाव। जोताई। २. जोता हुआ खेत।
स्त्री० [फा० चाशनी] किसी चीज की जाँच या परख के लिए उसमे से निकाला हुआ कुछ अंश। चाशनी।

चासना—अ० [हिं० चास] जोतना।

चासनी—स्त्री० = चाशनी।

चासा—पु० [देश०] १. उडीसा की एक जाति जो खेती-बारी करती है। २ किसान। खेतिहर। ३ हल चलाने या जोतनेवाला। हलवाहा।

चाह—स्त्री० [सं० उत्साह, प्रा० उच्छाह] १ वह मनोवेग जो मनुष्य को कोई ऐसी वस्तु प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है जिससे उसे संतोष या सुख मिल सकता हो। जैसे—मुझे आपके दर्शनो की चाह थी। २ प्रेम या स्नेहपूर्वक किसी को चाहने की अवस्था या भाव। अनुराग। प्रेम। जैसे—दिल को तुम्हारी ही चाह है। ३ चाहे जाने की अवस्था या भाव। आवश्यकता। गरज। जरूरत। जैसे—जिसकी यहाँ चाह है, उसकी वहाँ भी चाह है। ४ इस बात की जानकारी या परिचय कि किसे किस चीज की आवश्यकता या चाह है। उदा०—सब की चाह लेइ दिन राती।—जायसी। ५ दे० 'चाव'।
पु० [फा०] कूआँ। कूप।
†स्त्री० = चाय।
*स्त्री० [हिं० चाल = आहट] १ खबर। समाचार। उदा०—को सिंहल पहुँचावै चाहा।—जायसी। २ टोह। ३ गुप्त भेद। रहस्य।

चाहक—वि० [हिं० चाहना] १ चाहनेवाला। २ अनुराग या प्रेम करनेवाला।

चाहत—स्त्री० [हिं० चाहना] किसी को अनुराग तथा उत्कठापूर्वक चाहने की अवस्था, क्रिया या भाव। चाह। प्रेम।

चाहना—स० [हिं० चाह] १. ऐसी वस्तु की प्राप्ति अथवा ऐसे कार्य या बात की सिद्धि की इच्छा करना जिससे सतोष या सुख मिल सकता हो। जैसे—कौन नही चाहता कि मैं धनी हो जाऊँ। २ किसी से कोई चीज लेने या कोई कार्य कर देने की विनयपूर्ण प्रार्थना करना। जैसे—हम तो आपकी की कृपा-दृष्टि चाहते हैं। ३ अधिकार या अनधिकारपूर्वक किसी का या किसी से कुछ लेने की उत्कट या उग्र इच्छा व्यक्त करना। जैसे—मेरा भाई तो मेरी जान लेना चाहता है। ४ अनुराग, प्रेम या स्नेह-पूर्वक किसी व्यक्ति को अपने पास और सुख से रखने की अभिलाषा या कामना करना। जैसे—माता अपने छोटे पुत्र को बहुत चाहती है। ५ शृगारिक क्षेत्र मे, स्त्री के मन मे किसी पुरुष के प्रति अथवा प्रति-क्रमात् कामवासना से युक्त अनुराग या प्रेम का भाव होना। जैसे—राजा अपनी छोटी रानी को सब से अधिक चाहता था। ६ अनुराग, चाह या प्रेम से युक्त होकर किसी की ओर ताकना या देखना। जोहना। उदा०—अली अली की ओट ह्वै चली भली विधि चाहि।—बिहारी। ७ साधारण रूप से देखना। दृष्टिपात करना। उदा०—चालिया चदाणी मग चाहि।—प्रिथीराज।
स्त्री० चाहने की अवस्था या भाव। जैसे—आप की चाहना तो यहाँ भी है।

चाहा—पु० [स० चाष] एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका सारा शरीर फूलदार और पीठ सुनहरी होती है। लोग मास के लिए इसका शिकार करते हैं। यह कई प्रकार का होता है। जैसे-चाहा करमाठी = गर्दन सफेद बाकी सब अग काले। चाहा चुक्का = चोच और पैर लाल, बाकी सब अग खाकी, चाहा लमगोटा = लबी और चितकबरी चोच वाला।
†पुं० [हिं० चाहना] [स्त्री० चाही] वह जिसे चाहा या जिससे प्रेम किया जाय। चहेता। प्रिय।

चाहि*—अव्य० [स० चैव = और भी?] बनिस्वत। से। किसी की तुलना मे अधिक या बढकर। उदा०—कहँ बनु कुलिमहु चाहि कठोरा।—तुलसी।

चाहिए—अव्य० [हिं० चाहना] १ आवश्यकता या जरूरत है। जैसे—हमे वह पुस्तक चाहिए। २ उचित, मुनासिब या वाजिब है। जैसे—आगे से तुमको सँभलकर चलना चाहिए।

चाही—वि० [फा० चाह = कूआँ] (खेत) जो कूएँ के पानी से सीचा जाता हो।

चाहे—अव्य० [हिं० चाहना] १ 'यदि जी चाहे' का सक्षिप्त रूप। यदि जी चाहे। यदि मन मे आवे। जैसे-(क) चाहे यहाँ रहो, चाहे वहाँ। (ख) जो चाहे सो करो। २ दो मे से किसी एक वरण करने के प्रसग मे, जो इच्छा हो। जो चाहते हो। जैसे—चाहे कपडा ले लो, चाहे रुपया। ३ जो कुछ हो सकता हो, वह सब, या उनमे से कुछ। जैसे—चाहे जो हो, तुम वहाँ जरूर जाओ।

चिआँ—पु० = चीयाँ (इमली का बीज)।

चिउँटा—पु० = च्यूँटा। (देखें)

चिउँटी—स्त्री० = च्यूँटी। (देखें)

चिकारा—पु० = चिकारा।

चिंगट—पु० [स०] [स्त्री० अल्पा० चिंगटी] झीगा मछली।

चिंगड़ा—पु० [स० चिंगट] झीगा (मछली)।

चिंगना—पु० [स० चिंगट?] १ मुरगी आदि का छोटा बच्चा। २ छोटा बच्चा।

चिंगारी—स्त्री० = चिनगारी।

चिंगुड़ना—अ० [हिं० सिकुडना] १. सूखने आदि के कारण ऊपरी तल मे झुर्रियाँ या शिकन पडना। जैसे—शरीर का चमडा चिंगुडना। २ एक ही स्थिति मे रहने अथवा तनाव या दबाव पडने और फलत खून का दौरा रुकने के कारण नसो आदि का इस प्रकार तनना या सिकुड़ना कि वह अग सहसा उठाया या फैलाया न जा सके। ३ सकुचित होना। सिकुडना। जैसे—कपडा चिंगुडना।

चिंगुड़ा—पु० [हिं० चिंगुडना] बहुत देर तक एक स्थिति मे रहने के कारण किसी अग के चिंगुडने की स्थिति जिसमे वह अग फैलाने से जल्दी न फैले।
क्रि० प्र०—लगना।
पु० [?] एक प्रकार का बगला।

चिंगुरना—अ० = चिंगुडना।

चिंगुरा—पु० = चिंगुड़ा।

चिगुला—पु०[देश०] १. बच्चा। बालक। २. पक्षियों आदि का बच्चा।

चिंघाड़—स्त्री०[स० चीत्कार] १. हाथी के बहुत जोर से चिल्लाने या बोलने का शब्द। २ किसी के सहसा उत्तेजित होकर बहुत जोर से चिल्लाने की ध्वनि या शब्द। (क्व०)

चिंघाड़ना—अ० [स० चीत्कार] १ हाथी का बहुत जोर से चिल्लाना या बोलना। २ उक्त प्रकार से सहसा जोर की ध्वनि या शब्द करना। चिल्लाना। चीखना।

चिंघाना—अ०=चिंघाड़ना।

चिंचा—स्त्री० [स० चिम्√चि (चयन)+ड—टाप्] १ इमली। २. इमली का बीज। चीआँ।

चिंचाटक—पु० [स० चिंचा√अट् (गमनादि+)ण्वुल्—अक] चेंच नामक साग।

चिंचाम्ल—पु०[स० चिंचा-अम्ल, उपमि०स०] चूका नामक साग।

चिंचिका—स्त्री०[स० चिंचा+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] घुँघची। गुंजा।

चिंचिनी—स्त्री०[स०] १. इमली का पेड़। २ इमली की फली।

चिंची—स्त्री०[स० चिंच+ङीष्] गुंजा। घुँघची।

चिंचोटक—पु० [स० चिंचाटक, पृषो० सिद्धि] चेंच नाम का साग।

चिंजा—पु० [स० चिरजीव] [स्त्री० चिंजी] १ पुत्र। बेटा। २ बालक। लड़का। ३ जीव-जंतुओं का छोटा बच्चा।

चिंड—पु०[स०] नृत्य का एक प्रकार या भेद।

चिंत—स्त्री० १ =चिंतन। २.=चिंता।

चिंतक—वि० [स०√चिंत् (सोचना-विचारना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. चिंतन या मनन करनेवाला। २ चिंता करनेवाला। ३ चाहने तथा सोचनेवाला। जैसे—शुभचिंतक।

चिंतन—पु०[स०√चिंत्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० चिंतनीय, चिंतित, चिंत्य] १ कोई बात समझने या सोचने के लिए मन में बार-बार किया जानेवाला उसका ध्यान या विचार। मन ही मन किया जानेवाला विवेचन। गौर। जैसे—यह विषय अच्छी तरह चिंतन करने के योग्य है। २ किसी वस्तु या विषय का स्वरूप जानने या समझने के लिए मन में रह-रहकर होनेवाला उसका ध्यान या स्मरण। जैसे—ईश्वर चिंतन में समय बिताना।

चिंतना—स्त्री० [स०√चिंत्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. चिंतन करने की क्रिया या भाव। चिंतन। २. चिंता। फिक्र। ३ सोच-विचार। *स० १. किसी का चिंतन या ध्यान करना। २ किसी बात की चिंता या फिक्र करना। ३ किसी विषय का विचार करना। गौर करना। सोचना-समझना।

चिंतनीय—वि०[स√चिंत्+णिच्+अनीयर्] १ जिसका चिंतन किया जा सके या हो सके। जो चिंतन का विषय हो सके। २. जिसके संबंध में चिंता, फिक्र या सोच करना आवश्यक अथवा उचित हो। जो चिंता का विषय हो। जैसे—रोगी की दशा चिंतनीय है।

चिंतवन*—पु०=चिंतन।

चिंता—स्त्री०[स०√चिंत्+णिच्+अङ्—टाप्] १. चिंतन करने का कार्य या भाव। किसी बात या विचार का मन में होनेवाला ध्यान या स्मरण। मन में उठने और कुछ समय तक बनी रहनेवाली भावना। २. मन को विकल करने या विचलित रखनेवाली वह भावना जो कोई कष्ट या संकट उपस्थित होने या सामने आने पर उसका निवारण करने या उससे बचने के उपाय सोचने के संबंध में होती है। फिक्र। सोच। (वरी)

विशेष—साहित्य में तैंतीस संचारी भावों में से एक जिसके विभाव धन-हानि, वस्तु का अपहरण, निर्धनता आदि और अनुभाव उच्छ्वास, चिंतन, दुर्बलता, नत मुख होना आदि कहे गये हैं। और इसे वियोग की दस दशाओं में दूसरा स्थान दिया गया है।

३ किसी बात के महत्त्व का विचार। परवाह। (सदा नहिक रूप में) जैसे—तुम्हें इसकी क्या चिंता है!

मुहा०—(किसी बात की) चिंता लगना=चिंता का बराबर बना रहना। जैसे—तुम्हें तो दिन-रात खाने की चिंता लगी रहती है।

पद—कुछ चिंता नहीं=कुछ परवाह नहीं। खटके की कोई बात नहीं है। चिंता मत करो।

४ कोई ऐसी बात या विषय जिसके लिए चिंतन या फिक्र की जाती हो या की जानी चाहिए।

चिंताकुल—वि० [चिंता-आकुल, तृ०त०] चिंता से आकुल या उद्विग्न।

चिंता-जनक—वि०[प०त०] १. चिंता उत्पन्न करनेवाला। जिसके कारण मन में चिंता हो। २. जिसकी अवस्था गंभीर या सोचनीय हो।

चिंतातुर—वि०[चिंता-आतुर, तृ०त०] चिंता से उद्विग्न या घबराया हुआ।

चिंतापर—वि०[चिंता-पर, ब०स०] जो चिंतन या चिंता में लगा हुआ या लीन हो।

चिंता-मणि—पु०[स०त०] १. एक प्रसिद्ध कल्पित मणि या रत्न जिसके संबंध में कहा जाता है कि जिसके पास यह रहता है, उसकी सब आवश्यकताएँ आप से आप और तुरंत पूरी हो जाती हैं। २. कोई ऐसी चीज या तत्त्व जो किसी विषय की सभी आवश्यकताएँ और इच्छाएँ पूरी कर दे। ३. ब्रह्मा। ४. परमात्मा। ५ सरस्वती का एक मंत्र जो लड़के की जीभ पर इसलिए लिखा जाता है कि उसे खूब विद्या आवे। ६. एक बुद्ध का नाम। ७. घोड़े के गले की एक भौंरी जो शुभ मानी जाती है। ८ वह घोड़ा जिसके गले में उक्त भौंरी हो। ९ फलित ज्योतिष में यात्रा का एक योग। १०. वैद्यक में एक प्रकार का रस जो अभ्रक, गंधक, पारे आदि के योग से बनता है। ११ पुराणानुसार एक गणेश जिन्होंने कपिल के यहाँ जन्म लेकर महाबाहु नामक दैत्य से उस चिंतामणि रत्न का उद्धार किया था जो उसने कपिल से छीन लिया था।

चिंता-वेश्म (न्)—पु०[प०त०] गोष्ठी, मंत्रणा, विचार आदि करने का स्थान। मंत्रणागृह।

चिंता-शील—वि०[ब०स०] १. जो किसी बात की प्रायः या बहुत चिंता करता रहता हो २ दे० 'चिंतन'-शील'।

चिंति—पुं० [स०] १. एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

चिंतित—भू०कृ० [स०√चिंत्+क्त] जो चिंता से विकल हो रहा हो। जिसे किसी बात की चिंता या फिक्र हो रही हो। चिंतायुक्त।

चिंतिति—स्त्री०[स०√चिंत्+क्तिन्] चिंता।

चिंतीड़ी—स्त्री०[स०=तिंतिडी, पृषो० सिद्धि] इमली।

चिंत्य—वि०[स० चिंत्+ण्यत्] १. जिसके संबंध में चिंता करना आवश्यक या उचित हो। २ दे० 'चिंतनीय'।

चिंदी—स्त्री० [देश०] किसी चीज का बहुत ही छोटा टुकड़ा या धज्जी।

मुहा०—चिंदी चिंदी करना=किसी चीज को ऐसा तोड़ना-फोड़ना या

चीरना-फाडना कि उसके टुकडे-टुकडे हो जायँ। धज्जियो के रूप मे लाना। **हिंदी की चिंदी निकालना**=बहुत ही सूक्ष्म परन्तु व्यर्थ का तर्क करना या दोष निकालना।

चिपा—पु०[देश०] एक प्रकार का काला कीडा जो ज्वार, बाजरे, अरहर और तमाखू की फसल मे लगकर उसे खा जाता है।

चिपाजी—पु०[अ० शिंपैंजी] अफ्रीका मे होनेवाला एक प्रकार का वनमानुष जिसकी आकृति मनुष्य से बहुत मिलती-जुलती होती है। इसके सारे शरीर पर काले, घने और मोटे बाल होते हैं। यह प्राय झुंड बनाकर रहता है।

चिउँटा—पु०=च्यूँटा। (देखे)

चिउँटी—स्त्री०=च्यूँटी। (देखें)

चिउड़ा—पु०=चिडवा। (देखें)

चिउरा—पु०=चिडवा।

चिउली—स्त्री०[देश०] १ महुए की जाति का एक जंगली पेड जिसमें से एक प्रकार का तेल निकलता है जो मक्खन की तरह जम जाता है। और इसी लिए जो कही-कही घी मे मिलाया जाता है। २ एक प्रकार का रंगीन रेशमी कपडा।

स्त्री०[स० चिपिट, प्रा० चिविड़, चिविल] चिकनी सुपारी।

चिक—स्त्री०[तु०चिक] बाँस या सरकडे की तीलियो का बना हुआ झँझरीदार परदा। चिलमन।

पु० मास बेचनेवाला कसाई। बूचड़।

स्त्री०[अनु०] कमर, पीठ आदि मे बल पडने के कारण सहसा उत्पन्न होनेवाला दर्द या चिलक।

पु०=चेक (देयादेश)।

चिकट—वि०=चिक्कट।

चिकटना—अ० [हिं० चिकट] चिक्कट से युक्त होना। मैल जमने के कारण चिपचिपा होना।

चिकटा—वि०=चिक्कट।

चिकड़ी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। इस लकडी की कघियाँ बहुत अच्छी बनती हैं।

चिकन—पु०[फा०] एक प्रकार का सूती कपडा जिस पर सूई और डोरे से कढे हुए उभारदार फूल या बूटियाँ बनी होती हैं।

चिकनकारी—स्त्री० [फा०] कपडे पर सूई-डोरे की सहायता से उभारदार फूल, बूटियाँ आदि काढने या बनाने की कला या काम।

चिकनगर—पु०[फा०] चिकन का काम करनेवाला कारीगर।

चिकनदोज—पु० =चिकनगर।

चिकना—वि०[स० चिक्कण, प्रा० चिक्कण्ण, गु० चिकोणु, मरा० चिक्कण] [वि० स्त्री० चिकनी] १ जिसका ऊपरी तल जरा भी ऊबड-खाबड या खुरदरा न हो, बल्कि इतना समतल हो कि उँगली या हाथ फेरने से कही उभार न जान पड़े। जैसे—चिकना पत्थर, चिकनी लकडी। २ जिसका ऊपरी तल बहुत ही कोमल और बिलकुल सम हो। जिस पर पैर या हाथ बिना किसी बाधा या रुकावट के आगे बढता या फिसलता जाय। जैसे—चिकनी जमीन, चिकनी मलमल। ३ जिसका ऊपरी तल या रूप बना सँवारकर बहुत ही मोहक और स्वच्छ किया गया हो। जैसे—तुम्हारा यह चिकना मुँह देखकर ही कोई तुम्हे नौकरी नही देगा।

मुहा०—चिकने घड़े पर पानी पड़ना=अच्छी बातो का उसी प्रकार व्यर्थ सिद्ध होना जिस प्रकार चिकने घडे पर पानी पडना इसलिए व्यर्थ सिद्ध होता है कि वह पानी तुरत बहकर नीचे चला जाता है।

पद—चिकना घड़ा=(क) वह जिस पर उपदेश, दंड आदि का कुछ भी प्रभाव न पडता हो, फलत निर्लज्ज या लापरवाह। (उक्त मुहावरे के आधार पर) **चिकना-चुपड़ा**=(क) घी, तेल आदि लगाकर अच्छी तरह चिकना और साफ किया हुआ। (ख) अच्छी तरह सजाया हुआ। (ग) ऊपर से देखने पर बहुत अच्छा जान पडने या प्रिय लगनेवाला। जैसे—चिकनी-चुपडी बातें।

४ जिस पर घी, चरबी, तेल *या ऐसा ही और कोई स्निग्ध पदार्थ* चुपडा या लगा हो। जिसका खुरदरापन या रुखाई किसी प्रकार दूर कर दी गई हो। ५ जिसका ऊपरी रूप केवल दिखाने के विचार से सँवारकर सुन्दर बनाया गया हो।

मुहा०—चिकना देखकर फिसल पड़ना=केवल वैभव, सजावट, सौंदर्य आदि देखकर मोहित होना। केवल ऊपरी रूप देखकर रीझना।

६ केवल दूसरो को प्रसन्न करने के लिए चिकनी-चुपडी अर्थात् मीठी और सुन्दर बातें कहनेवाला। खुशामदी। चाटुकार। ७ अनुराग, प्रेम या स्नेह करनेवाला। (क्व०)

पुं० घी, चरबी, तेल आदि चिकने पदार्थ। जैसे—इसमे चिकना बहुत अधिक पडा है।

चिकनाई—स्त्री०[हिं० चिकना+ई (प्रत्य०)] १ चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २ मन, व्यवहार आदि की सरसता या स्निग्धता। ३ घी, तेल आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाना—स०[हिं० चिकना] १ खुरदरापन दूर करके ऊपरी तल चिकना, सम या साफ करना। २ घी, तेल या और कोई चिकना पदार्थ लगा कर रूखापन दूर करना। ३ किसी प्रकार साफ और स्वच्छ करना या बनाना-सँवारना। ४ केवल अनुरक्त या प्रसन्न करने के लिए मीठी बातें कहना। ५ कोई बिगडी हुई बात बनाने के लिए बनावटी बातें कहना।

अ० १. चिकना होना। २ चिकने पदार्थ से युक्त होकर स्निग्ध बनना। ३ शरीर मे कुछ चरबी भरने और ऊपर से सँवारे-सजाये जाने के कारण डील-डौल या रूप-रग अच्छा निकलना या बनना। जैसे—जब से उनका रोजगार चला है, तब से बहुत कुछ चिकना गये हैं। ४ अनुराग, स्नेह आदि से युक्त होना। उदा०—ज्यों ज्यों रुख रूखो करति त्यों त्यों चित चिकनाय।—बिहारी।

चिकनापन—पु०[हिं० चिकना+पन (प्रत्य०)] चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनाई। चिकनाहट।

चिकनावट†—स्त्री०[हिं० चिकना] १ चिकनी-चुपडी बाते कहने की अवस्था या भाव। २ बिगडा हुआ काम बनाने के लिए मीठी बाते कहने की क्रिया या भाव। जैसे—तुम्हारी यह चिकनावट हमे अच्छी नही लगती। ३ दे० 'चिकनाहट'।

चिकनाहट—स्त्री०[हिं० चिकना+हट (प्रत्य०)] चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनापन।

चिकनिया—वि०[हिं० चिकना] (व्यक्ति) जो प्राय या सदा तेल-फुलेल आदि लगाकर और खूब बन-ठनकर रहता हो। छैला और बाँका। सज-

धजवाला और सुन्दर। उदा०—सूरदास प्रभु तजी कामरी अब हरि भए चिकनियाँ।—सूर।

चिकनी मिट्टी—स्त्री० [हिं० चिकनी+मिट्टी] १ एक प्रकार की लसदार मिट्टी जो सिर मलने आदि के काम में आती है। करैली मिट्टी। २. पीले या सफेद रंग की वह लसीली मिट्टी जो हाथ धोने तथा जमीन, दीवार आदि लीपने-पोतने के काम आती है।

चिकनी सुपारी—स्त्री० [सं० चिक्कणी] एक प्रकार की उबाली हुई बढ़िया सुपारी जो चिपटी और अधिक स्वादिष्ट होती है। चिकनी डली।

चिकर—पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

चिकरना—अ० [सं० चीत्कार, प्रा० चीक्कार, चिक्कार] १ चीत्कार करना। जोर से चिल्लाना। २ चिंघाड़ना।

चिकवा—पुं० [देश०] १ एक प्रकार का टसर। २. उक्त टसर का बना हुआ कपड़ा। चिकट।

†पुं०=चिक (कसाई)।

चिकार—पुं० [सं० चीत्कार, प्रा० चिक्कार] १. चीत्कार। चिल्लाहट। क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।—मचाना।

२. चिंघाड़।

चिकारना—अ० [हिं० चिकार] १ चीत्कार करना। चिल्लाना। २ हाथी का चिंघाड़ना।

चिकारा—पुं० [हिं० चिकार] [स्त्री० अल्पा० चिकारी] १. सारंगी की तरह का एक बाजा जो घोड़े के बालों की कमानी से बजाया जाता है। २ [स्त्री० चिकारी] हिरन की जाति का एक जानवर जो बहुत तेज दौड़ता है और अपनी बड़ी तथा सुन्दर आँखों के लिए प्रसिद्ध है। उसके स्वादिष्ट मांस के लिए इसका शिकार किया जाता है। छिकरी। छिगार।

चिकारी—स्त्री० [हिं० चिकारा] १ छोटा चिकारा। २ मच्छर की तरह का एक फतिंगा।

†स्त्री० =चीत्कार।

चिकित—पुं० [सं० √कित् (जाने)+यङ—लुक्, द्वित्वादि, +अच्] एक ऋषि का नाम।

चिकितायन—पुं० [सं० चिकित+फक्—आयन] चिकित ऋषि के वंशज।

चिकित्सक—पुं० [सं० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +ण्वुल्—अक] रोगों की चिकित्सा करनेवाला, वैद्य।

चिकित्सन—पुं० [सं० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +ल्युट्—अन] चिकित्सा करना।

चिकित्सन-प्रमाणक—पुं० [ष० त०] वह प्रमाण-पत्र जिसमे चिकित्सक किसी की अवस्था या अस्वस्थता को प्रमाणित करता है। (मेडिकल सर्टिफिकेट)

चिकित्सा—स्त्री० [सं० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +अ—टाप्] १ वे सब उपाय और कार्य, जो किसी रोगी का रोग दूर कर उसे स्वस्थ बनाने के लिए किये जाते हैं। इलाज। (ट्रीटमेंट) २ वैद्य का काम या व्यवसाय। ३ उक्त की कोई विशिष्ट प्रणाली या ढंग। (थेरैपी) जैसे—जल-चिकित्सा, विद्युत् चिकित्सा।

चिकित्सालय—पुं० [चिकित्सा-आलय, ष०त०] वह स्थान जहाँ रोगियों की चिकित्सा की जाती है। अस्पताल। दवाखाना।

चिकित्सावकाश—पुं० [चिकित्सा-अवकाश, ष० त०] वह अवकाश या छुट्टी जो किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के लिए मिलती है। (मेडिकल लीव)

चिकित्सा-शास्त्र—पुं० [ष०त०] वह शास्त्र जिसमें अनेक प्रकार के रोगों के लक्षणों और उनकी चिकित्साओं का विवेचन होता है। (मेडिकल सायन्स)

चिकित्सित—भू० कृ० [सं० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +क्त] जिसकी चिकित्सा या दवा की गई हो। जिसका इलाज किया गया हो।

पुं० एक प्राचीन ऋषि का नाम।

चिकित्सु—पुं० [सं० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +उ] चिकित्सक।

चिकित्स्य—वि० [सं० √कित्+सन् द्वित्वादि, +यत्] १. (रोग) जिसे दूर किया जा सके। २ (रोगी) जिसे स्वस्थ बनाया जा सके। (क्योरेबुल, उक्त दोनों अर्थों में)

चिकिन—वि० [सं० नि-नत नासिका+इनच्, चिक् आदेश] चिपटी नाकवाला।

पुं०=चिकन।

चिकिल—पुं० [सं० √चि (चयन)+इलच् क् आगम] कीचड़। पंक।

चिकीर्षक—वि० [सं० √कृ (करना)+सन्, द्वित्वादि, +ण्वुल्—अक] (व्यक्ति) जो कोई कार्य करने के लिए इच्छुक हो।

चिकीर्षा—स्त्री० [सं० √कृ+सन्, द्वित्वादि, +अ—टाप्] [वि० चिकीर्षित, चिकीर्ष्य] कुछ या कोई काम करने अथवा कोई काम जानने की इच्छा।

चिकुटी†—स्त्री० =चिकोटी।

चिकुर—पुं० [सं० चि√कुर् (शब्द करना)+क] १ सिर के बाल। केश। २. पर्वत। पहाड़। ३. रेंगकर चलनेवाले जंतु। सरीसृप। ४. एक प्रकार का पक्षी। ५. एक प्रकार का वृक्ष। ६. छछूंदर। ७. गिलहरी।

वि० चंचल। चपल।

चिकुर-पक्ष—पुं० [ष० त०] १ सिर के सँवारे और सजाये हुए बाल। २ बालों की लट। जुल्फ।

चिकुर-भार—पुं० [ष० त०] =चिकुर-पक्ष।

चिकुर-हस्त—पुं० [ष० त०] =चिकुर-पक्ष।

चिकुला—पुं० [सं० चिकुर] १ चिकुर नामक पक्षी का बच्चा। २. चिड़िया का बच्चा।

चिकूर—पुं० [सं० चिकुर, नि०-दीर्घ] =चिकुर (केश)।

चिकोटी—स्त्री० [अनु०] हाथ की चुटकी की वह मुद्रा जिससे किसी के शरीर का थोड़ा-सा भाग पकड़कर (उसे पीड़ित अथवा कभी सचेत करने के लिए) दबाया जाता है। चुटकी।

चिक्क—वि० [सं० चिक्√कै (शब्द करना)+क] चिपटी नाकवाला।

पुं० छछूंदर।

पुं०=चिक (कसाई)।

स्त्री०=चिक (तीलियों का झँझरीदार परदा)।

चिक्कट—वि० [सं० चिक्लिद] १ चिकनाहट और मैल से भरा हुआ। जिस पर तेल आदि की मैल जमी हो। बहुत गंदा और मैला। २. चिपचिपा। लसीला।

†पु०[?]१ एक प्रकार का टसर या रेशमी कपडा। २ वे कपडे जो भाई अपनी वहन को उसकी सतान के विवाह के समय देता है।

चिक्कण—वि० [स० चित्√कण् (शब्द करना)+क] चिकना।
पु० १. सुपारी का पेड़ और फल। २. हरीतकी। हर्रे। ३. आयुर्वेद मे पाक बनाने के समय उसके नीचे की आँच की एक अवस्था।

चिक्कणा—स्त्री०[स० चिक्कण+टाप्]=चिक्कणी।

चिक्कणी—स्त्री०[स० चिक्कण+ङीप्] १ सुपारी। २ हड। हर्रे।

चिक्कन—वि०=चिकना।

चिक्करना—अ० [स० चीत्कार] चीत्कार करना। जोर से चिल्लाना।

चिक्कस—पु० [स०√चिक्क् (पीसना)+असच्] १ जौ का आटा अथवा जौ के आटे का बना हुआ भोजन। २ तेल और हल्दी के योग से बनाया हुआ जौ के आटे का उबटन जो प्राय. यज्ञोपवीत के समय वटु के शरीर पर मला जाता है।
पु०[देश०] लोहे, पीतल आदि के छड का बना हुआ वह अड्डा जिस पर तोते, बाज, बुलबुल आदि पक्षी बैठाये जाते है।

चिक्का—स्त्री०[स०√चिक्क्+अच्–टाप्] सुपारी।
पु०=चिक्किर (चूहा)।
†पु०=चक्का।

चिक्कार—पु०=चीत्कार।

चिक्किर—पु०[स०√चिक्क्+इरच्] १ एक प्रकार का जहरीला चूहा जिसके काटने से सूजन होती है। २ गिलहरी।

चिक्लिद—पु० [स०√क्लिद् (गीला करना)+यङ्—लुक्, द्वित्वादि,+अच्] १ आर्द्रता। नमी। २ चद्रमा।

चिखना†—पु० [हिं० चखना] मद्यपान के समय चखी या खाई जानेवाली चटपटी चीज। चाट।
†स०=चखना।

चिखर—पु०[स० चिकुर या चिक्क ?] चने का छिलका या भूसी। चने की कराई।

चिखल्ल—पु०[स०]१. कीचड। २ दलदल।

चिखुरन—स्त्री०[स० चिकुर ?] पौधों आदि के आस-पास आप से आप उग आनेवाली घास।

चिखुरना—स०[हिं० चिखुरन] पौधो आदि के आस-पास उगी हुई घास को निकालना।

चिखुरा—पु० [स० चिक्किर या चिकुर] [स्त्री० चिखुरी] नर गिलहरी। गिलहरा।

चिखुराई—स्त्री०[हिं०चिखुराना] चिखुरने अर्थात् पौधों आदि के आस-पास उगी हुई घास को उखाडने तथा निकालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
स्त्री०[हिं० चीखना=चखना] चखने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

चिखुरी—स्त्री०[हिं० चिखुरा] गिलहरी।

चिखौनी—स्त्री०[हिं० चीखना] १. चखने या स्वाद देखने की क्रिया या भाव। २ मद्य आदि के साथ चखकर खाई जानेवाली चीज। चाट।

चिग—स्त्री०=चिक (बाँस की तीलियो का झँझरीदार परदा)।

चिचड़ा—पु० [स० चिचिंड] १ डेढ, दो हाथ ऊँचा एक प्रकार का बरसाती पौधा जिसकी डालो मे थोडी-थोड़ी दूर पर गाँठें होती है। इसकी जड़, पत्तियाँ आदि दवा के काम आती है। इसके फल ककडी की तरह के होते और तरकारी के काम आते हैं। २ अपामार्ग। ३ पशुओं के शरीर मे चिमटकर उनका खून पीनेवाला एक प्रसिद्ध कीडा। किलनी।

चिचड़ी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा कीडा जो गाय, बैल आदि पशुओ के विभिन्न अगो मे चिपका रहता और उनका खून पीता है। किलनी।

चिचान—पु०[स०सचान] बाज पक्षी।

चिचावना†—अ०=चिल्लाना।

चिचिंगा—पु०=चचीडा।

चिचिंडा—पु०=चचीड़ा।

चिचियाना—अ०[अनु० चीं चीं] [भाव० चिचियाहट] बार-बार जोर से चिल्लाना।

चिचियाहट—स्त्री०=चिल्लाहट।

चिचुकना—अ०=चुचुकना।

चिचेड़ा—पु०=चचीडा।

चिचोडना—स०=चचोडना।

चिचोड़वाना—स०=चचोडवाना।

चिच्छक्ति—स्त्री०[स० चिद्-शक्ति, कर्म०स०] चेतना-शक्ति।

चिच्छल—पु०[स०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

चिजारा—पु०[?] मकान बनानेवाला कारीगर। मेमार। राज।

चिज्जड़—वि०[स० चिद्-जड, कर्म० स०] जो कुछ अशो मे चेतन और कुछ अशो मे जड हो।

चिट—स्त्री०[हिं० चिट्ठी से?] १ कागज का वह छोटा टुकडा जिस पर कोई बात लिखी जाय। छोटा पत्र। रुक्का। २ कागज, कपडे आदि का फटा हुआ कोई छोटा लबा टुकडा। धज्जी।

चिटक—वि०=चिक्कट या चीकट (बहुत गदा और मैला)।

चिटकना—अ० [अनु० चिट चिट+ना (प्रत्य०)] १ कडे तलवाले पदार्थ का चिट शब्द करते हुए टूटना अथवा उसमे पतली दरार पडना। जैसे—लालटेन की चिमनी चिटकना। २. लकडी का जलने समय चिट चिट शब्द करते हुए चिंगारियाँ छोडना। ३ चिट शब्द करते हुए खिलना। जैसे—कलियो का चिटकना। ४ अपनी इच्छा के अनुसार कोई कार्य न होते देख अथवा अपने विरुद्ध कोई कार्य या बात होते देखकर सहसा कुछ बिगड खडे होना। ५ चिढना।

चिटकनी—स्त्री०=सिटकिनी।

चिटका—पु०=चिता।

चिटकाना—स० [अनु०]१ किसी चीज को चिटकने मे प्रवृत्त करना। २ किसी व्यक्ति को खिझाना या चिढाना।

चिटनवीस—पु०[हिं० चिट+फा० नवीस] मध्ययुग मे दक्षिण भारतीय दरबारो आदि मे चिट्ठी-पत्री या हिसाब-किताब लिखनेवाला कर्मचारी। मुहर्रिर। लेखक।

चिटनीस—पु०=चिटनवीस।

चिटी—स्त्री० [स०√चिट् (प्रेरणा)+क–ङीप्] चाडाल वेष धारिणी योगिनी, जिसकी उपासना वशीकरण के लिए की जाती है। (तत्रशास्त्र)

चिट्की—स्त्री०=चुटकी।

चिट्ट—स्त्री०=चिट।

चिट्टा—वि०[स० सित, प्रा० चित] [स्त्री० चिट्टी] जिसका रग या वर्ण सफेद हो। जैसे—कपडा धोने से चिट्टा हो जाता है।
पु० १ कुछ विशेष प्रकार की मछलियों के ऊपर का सीप के आकार का बहुत सफेद छिलका या पपडी जिससे रेशम के लिए माँडी तैयार की जाती है। २ रुपया (दलालों की बोली)।
पु०[चटचट शब्द से अनु०?] वह उत्तेजना जो किसी को कोई ऐसा काम करने के लिए दी जाय जिसमें उसकी हानि या हँसी हो। झूठा बढावा।
क्रि० प्र०—देना।
मुहा०—चिट्टा लड़ाना=उक्त प्रकार की उत्तेजना देकर किसी को कुछ अनुचित काम करने में प्रवृत्त करना।

चिट्ठा—पु० [हि० चिट्ठी का पु० रूप] १. आय-व्यय या लेन-देन का वह हिसाब जो मुख्यत. एक ही कागज पर लिखा गया हो। उदा०—दिया चिट्ठा चाकरी चुकाई।—कबीर।
मुहा०—चिट्ठा बाँटना=(क) दैनिक मजदूरी पर काम करनेवाले मजदूरों की मजदूरी चुकाना। जैसे—अब मगल के दिन चिट्ठा बँटेगा। (ख) चिट्ठे पर लिखे हुए आदमियों को अन्न या रसद बाँटना। **चिट्ठा बाँधना**=आय-व्यय आदि का लेखा तैयार करना।
२ वह कागज जिसपर नियमित रूप से किसी निश्चित अवधि के आय-व्यय आदि का मोटा हिसाब लिखा रहता है और जिससे यह पता चलता है कि इस काम में कितना आर्थिक लाभ या हानि हुई। जैसे—कोठी या दूकान का छमाही या सालाना चिट्ठा। ३. वह कागज जिस पर प्राप्त या प्राप्य धनराशि का विवरण लिखा रहता है।
मुहा०—चिट्ठा उतारना (क) चिट्ठा तैयार करना या बनाना। (ख) चिट्ठे पर लिखी हुई रकम वसूल करना। (ग) लोगों से रकम वसूल करते हुए चिट्ठे पर क्रमश लिखते या लिखाते चलना।
४. किसी प्रकार के काम में लगनेवाले धन का विवरण। खरच के मदो की सूची। जैसे—ब्याह का चिट्ठा, मकान की मरम्मत का चिट्ठा। ५ किसी काम या बात का पूरा ब्योरा या विस्तृत विवरण।
पद—कच्चा चिट्ठा=(क) आय-व्यय आदि का वह आरभिक विवरण जो अभी पूरी तरह से जँचा न हो अथवा ठीक और पक्का न माना जा सकता हो। जैसे—पहले कच्चा चिट्ठा तैयार कर लो, तब रोकड़ पर चढाना। (ख) किसी आदमी के आचरण, व्यवहार आदि का अथवा घटना के सबध की ऐसी बातो का विवरण जो अभी तक पूरी तरह से सबके सामने न आया हो अथवा जिसमें कुछ ऐसी बाते हो जो अनुचित होने के कारण साधारणत सब लोगो के सामने आने योग्य न हो। जैसे—अब तुम चुपचाप बैठे रहो नही तो वह तुम्हारा सारा कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देगा।
क्रि० प्र०—खोलना।

चिट्ठी—स्त्री०[स० चिट् (?) चिट्टीका-चिट्टी, फा० चिट; उ० बँ० मरा० सि० चिठी, प० चिट्ठी] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जानेवाला कागज का वह टुकडा जिस पर सूचना आदि के लिए कुछ समाचार लिखे हो। खत। पत्र। २ मध्य युग मे किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिसमें किसी को कुछ रुपए देने का आग्रह या आदेश होता था।
मुहा०—(किसी के नाम) चिट्ठी करना-किसी के नाम इस आशय का पत्र लिखना कि अमुक व्यक्ति या पत्र-वाहक को हमारे हिसाब मे इतने रुपए दे दो। **(किसी की) चिट्ठी भरना**-(क) किसी के लिखे हुए पत्र के अनुसार किसी को कुछ रुपए देना। (ख) किसी प्रकार की विवशता के कारण किसी दूसरे का ऋण, देन आदि चुकाना या और किसी तरह का खर्च करना। जैसे—नानी खसम करे, दोहता चिट्ठी भरे।—कहा०।
३. कागज का कोई ऐसा छोटा टुकडा या पुरजा जिस पर कुछ लिखा हो। जैसे—निमत्रण या ब्राह्मण भोजन की चिट्ठी। ४. वह कागज या पत्र जिस पर कहीं भेजे जानेवाले माल की तालिका, मूल्य, विवरण आदि लिखे रहते है। ५ वह क्रियात्मक प्रणाली जिसके अनुसार कुछ नाम या किसी समस्या के सहित और रहित सूचक सकेत कागज के छोटे-छोटे टुकडो पर अलग-अलग लिख कर उन कागजो की छोटी गोलियाँ बनाई जाती है; और तब उनमें से कोई गोली उठाकर यह निश्चय किया जाता है कि अमुक काम कौन करे, अमुक चीज किसे मिले अथवा अमुक काम किया जाना चाहिए या नही। गोटी। (लॉट)
क्रि० प्र०—उठाना।—डालना।—निकालना।—पड़ना।

चिट्ठी-पत्री—स्त्री०[हि० चिट्ठी+पत्री] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जानेवाला खत। पत्र। २. आपस में चिट्ठियाँ या पत्र भेजने-मँगाने आदि का व्यवहार। पत्र-व्यवहार। पत्रालाप। (कारेस्पान्डेन्स)

चिट्ठीरसाँ—पु०[हि० चिट्ठी+फा० रसाँ] डाकखाने मे आई हुई चिट्ठियाँ बाँटनेवाला कर्मचारी। डाकिया।

चिड़—स्त्री०[स० चटक] चिड़िया। पक्षी। उदा०—चारो पख ग्रीवरी चिड़।—प्रिथीराज।
स्त्री०=चिढ़।

चिड़चिड़ा—वि० [हि० चिड़चिड़ाना] [स्त्री० चिड़चिड़ी] १ (व्यक्ति) जो बिना किसी बात के अथवा बहुत ही साधारण बात से चिढ़कर बिगड खड़ा होता हो। बात-बात पर क्रुद्ध हो जानेवाला। जैसे—रुपए-पैसे की तगी से वे चिड़चिड़े हो गये है। २ (स्वभाव) जिसमें चिड़चिड़ापन हो। ३ जो चिड़ चिड़ या चिट चिट शब्द करता हुआ जलता हो। जैसे—चिड चिड लकड़ी।
पु०[अनु०] भूरे रग का एक प्रकार का छोटा पक्षी।
†पु०=चिचड़ा।

चिड़चिड़ाना—अ०[अनु०] [भाव० चिड़चिड़ाहट] १ (व्यक्ति के सबध मे) जरा-सी बात से चिढकर क्रोध-भरी बाते कहना। नाराज होना। बिगड़ बैठना। २ (काठ या जलावन के सबध मे) जलने या जलाने पर चिड़ चिड़ शब्द होना। ३ (पदार्थ के सबध मे) ऊपरी तल का सूख कर जगह-जगह से थोडा बहुत उखड या फट जाना। जैसे—चमडे का पट्टा या जूता चिडचिडाना।
स० किसी व्यक्ति को इस प्रकार अप्रसन्न या रुष्ट करना कि वह चिढ या बिगडकर उल्टी-सीधी बाते कहने लगे। जैसे—तुमने तो आते ही उन्हे चिडचिड़ा दिया।

चिड़चिड़ाहट—स्त्री०[हिं० चिड़चिड़ाना+हट (प्रत्य०)] १ चिड़चिड़ाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

चिड़वा—पु० [सं० चिपिट] हरे भिगोये या कुछ उबाले हुए धान को भाड़ मे भूनकर और फिर कूटकर बनाया हुआ उसका चिपटा दाना। चिउडा।

चिड़ा—पु०[हिं० चिडी का पु०] गौरा या गौरैया पक्षी का नर।

चिड़ाना—स० दे० 'चिढाना'।

चिड़ारा—पु० [देश०] नीची जमीन का खेत जिसमे जड़हन बोया जाता है। डबरी।

चिड़िया—स्त्री० [सं० चटिका, प्रा० चडिआ या सं० चिरि=तोता] १ वह जीव जो पंखो या परो की सहायता से आकाश मे उड़ता है। पक्षी।
मुहा०—चिड़िया के छिनाले मे पकड़ा जाना=अकारण झंझट मे पड़ना या फँसना।
२ गौरैया।
पद—**चिड़िया का दूध**=ऐसी चीज जो वास्तव मे उसी प्रकार न होती हो, जिस प्रकार चिड़ियो का दूध नही होता। **चिड़िया-नोचन**=ऐसी स्थिति जिसमे चारों ओर से लोग उसी प्रकार तंग या परेशान करते हो, जैसे—चिड़िया के पर नोचे जाते हैं।
३. ऐसा मालदार असामी जिससे कुछ धन ऐंठा या ठगा जा सकता हो।
४ कोई युवती और सुंदर परन्तु कुछ दुश्चरित्रा स्त्री। (बाजारू)
पद—**सोने की चिड़िया**=(क) बहुत बडा और मालदार असामी। (ख) बहुत रूपवती या सुंदरी स्त्री।
५ काठ का वह डंडा जिसके ऊपर दोनो ओर निकला हुआ कुछ लबोतरा अंग होता है और जो किसी चीज के नीचे बैसाखी की तरह टेक या सहारे के लिए लगाया जाता है। जैसे—डोली या पालकी रोकने के समय उसके डंडो के नीचे लगाई जानेवाली चिड़िया। ६ उक्त आकार का लोहे का वह टुकडा जो तराजू की डाँडी के ऊपर और नीचे लगा रहता है। ७ अँगिया, कुरती आदि मे लगे हुए वे गोलाकार टुकडे जिनमे स्त्रियो के स्तन रहते हैं। कटोरी। ८. पायजामे, लहँगे आदि का वह ऊपरी नलाकार अंश जिसमे इजारबंद या नाला डाला जाता है। नेफा। ९ ताश के चार रंगो में से एक रंग जो काला और प्राय पक्षी के आकार का होता है। चिडी। (शेष तीन रंग हुकुम, पान और ईंट कहलाते हैं।) १० एक प्रकार की सिलाई जिसमे पहले कपडे के दोनो पल्ले सीकर तब सिलाई की ओरवाले उनके दोनो सिरो को अलग-अलग उन्हीं पल्लो पर उलट कर इस प्रकार बखिया कर देते हैं कि एक प्रकार की बेल-सी बन जाती है।

चिड़ियाखाना—पु० = चिड़िया-घर।

चिड़िया-घर—पु० [हिं० पद] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी आदि जन-साधारण को प्रदर्शित करने के लिए एकत्र करके रखे जाते है। चिड़िया-खाना। (जू)

चिड़िया-चुनमुन—पुं० [हिं० चिड़िया+अनु०] चिड़िया और उनकी तरह के दूसरे छोटे जीव-जंतु।

चिड़िहार—पु० [हिं० चिड़िया+हार (प्रत्य०)] चिड़िया पकड़नेवाला व्यक्ति। बहेलिया।

चिड़ी—स्त्री० [हिं० चिड़िया] १ चिड़िया। पक्षी। पखेरू। २ ताश का चिड़िया नामक रंग।

चिड़ीमार—पु० [हिं० चिडी+मारना] चिड़िया पकड़ने या फँसानेवाला। बहेलिया।

चिढ—स्त्री० [हिं० चिढना] १ चिढने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी विशिष्ट काम या बात के प्रति होनेवाली वह मनोवृत्ति जिसमें वह चिढता (अर्थात् अप्रसन्न होता या खीझता) हो। किसी के प्रति होनेवाला रोषपूर्ण विराग। जैसे—मुझे चालबाजी और झूठ से बहुत चिढ है। ३. किसी के सबंध मे ढूँढकर निकाली या बनाई हुई वह बात जिससे वह बहुत चिढता हो। जैसे—उनकी चिढ 'करेला' थी। अर्थात् करेला कहने या दिखाने पर वे बहुत चिढते थे।
मुहा०—(किसी की) चिढ निकालना=किसी को चिढाने के लिए कोई खास बात ढूंढ निकालना। जैसे—जब वह सिरके के नाम से बहुत चिढने लगे तो लोगो ने उनके लिए सिरके की चिढ निकाली।

चिढकना†—अ० = चिढना।

चिढकाना†—स० = चिढाना।

चिढ़ना—अ० [हिं० चिड़चिड़ाना] १ कोई अप्रिय या अरुचिकर घटना देख या बात सुनकर दु खी तथा क्रुद्ध होना। जैसे—(क) वे पैसे के नाम पर चिढ़ जाते है। (ख) उन्हे स्त्री जाति से चिढ है। २ वैर-विरोध आदि के कारण किसी का नाम अथवा उसका कार्य या बात सुनना या देखना न पसद करना। जैसे—वह तुम्हारे नाम से चिढता है।

चिढवाना—स० [हिं० चिढाना का प्रे०] किसी को दूसरे से चिढाने का काम कराना।

चिढ़ाना—स० [हिं० चिढना] १ जान-बूझकर कोई ऐसा काम करना या बात कहना जिससे कोई चिढे और नाराज हो। अप्रसन्न और खिन्न करना। खिझाना। जैसे—तुम तो मेरा नाम लेकर उन्हे और भी चिढाते हो। २ किसी को अप्रसन्न या खिन्न करने के लिए उसी की तरह की कोई चेष्टा करना या मुद्रा बनाना। नकल उतारना।
मुहा०—(किसी का) मुंह चिढाना=उपहास करने के लिए उपेक्षापूर्वक किसी के बोलने, हँसने आदि अथवा मुख की आकृति का विद्रूपित अनुकरण करना। बहुत बिगाडकर वैसा ही मुँह बनाना जैसा किसी दूसरे का हो। जैसे—रास्ते मे लडके बुढिया को मुँह चिढाते थे।
३ किसी का उपहास करके उसे अप्रसन्न और खिन्न करने के लिए बार-बार कोई काम करना या बात कहना। जैसे—अब तो घर के लड़के भी उन्हे चिढाने लगे है।

चिढौनी—स्त्री० [हिं० चिढाना] ऐसी बात जो किसी को केवल चिढाने के लिए प्राय बार-बार कही जाती हो। छेड।

चित्—स्त्री० [सं० √चित् (ज्ञाने)+क्विप्] १ सोची, विचारी या अनुभूत की हुई कोई बात। विचार। अनुभूति। २ चेतना। ज्ञान। ३ चित्त की वृत्ति। ४ हृदय। मन। ५ आत्मा। ६ ब्रह्म। ७ रामानुजाचार्य के अनुसार तीन पदार्थो मे से एक जो ज्ञान-स्वरूप, नित्य, निर्मल, और भोक्ता कहा गया है। ८ अग्नि।
प्रत्य० संस्कृत का एक अनिश्चयवाचक प्रत्यय जो क, किम् आदि सर्वनाम शब्दो मे लगता है। जैसे—कदाचित्, कश्चित्, किंचित् आदि।

चित—वि० [सं० √चि (चयन करना)+क्त] १ चुनकर इकट्ठा किया हुआ। ढेर के रूप मे लगाया हुआ। २. ढका हुआ। आच्छादित।
वि० [सं० चित्र] इस प्रकार जमीन पर लेटा पडा हुआ कि पीठ या

पीछे की ओर के सब अंग जमीन में लगे हों और छाती, पेट, मुँह आदि ऊपर हों। पीठ के बल सीधा पड़ा हुआ। 'औंधा' या 'पट' का विपर्याय।

विशेष—प्राचीन काल में चित्र प्रायः कपड़ों पर बनाये जाते थे; इसी लिए उन्हें चित्र-पट कहते थे। जिस ओर चित्र बना रहता था उस ओर का भाग चित्र कहलाता था, और उसके विपरीत नीचेवाला भाग पट (कपड़ा) कहलाता था। इसी चित्र-पट में के चित्र और पट शब्द से विशेषण रूप में 'चित' और 'पट' शब्द बने हैं।

मुहा०—(किसी को) चित करना = कुश्ती में पछाड़कर जमीन पर सीधा पटकना जो हराने का सूचक होता है। चित होना = बेसुध होकर या और किसी प्रकार सीधे पड़ जाना। जैसे—इतनी भाँग में तो तुम चित हो जाओगे।

पद—चारो खाने (या शाने) चित = (क) हाथ-पैर फैलाये बिलकुल पीठ के बल पड़ा हुआ। (ख) लाक्षणिक रूप में, पूरी तरह से परास्त या हारा हुआ।

क्रि० वि० पीठ के बल। जैसे—चित गिरना या लेटना।

पु० [हिं० चितवन] चितवन। दृष्टि। नजर।

†पु० = चित्र।

चितउन*—स्त्री० = चितवन।

चितउर*—पु० १. दे० 'चित्तौर'। २ दे० 'चित्त'।

चितकबरा—वि० [सं० चित्र+कर्बुर] [स्त्री० चितकबरी] १. सफेद रंग पर काले, लाल या पीले दागोंवाला। २ रंग-बिरंगा। कबरा। चितला। शबल। जैसे—चितकबरा कबूतर, चितकबरी बिल्ली।

पु० उक्त प्रकार का रंग या वर्ण।

चितकाबर—वि० = चितकबरा।

चितकूट*—पु० = चित्रकूट।

चितगुपति—पु० = चित्रगुप्त।

चित-चोर—पु० [हिं० चित+चोर] चित्त को चुराने अर्थात् मोहित करने या लुभानेवाला। बलपूर्वक अपनी ओर अनुरक्त और मुग्ध कर लेनेवाला। परम आकर्षक और मनोहर (व्यक्ति)।

चित-पट—पु० [हिं० चित+पट] १ बाजी लगाकर खेला जानेवाला एक प्रकार का खेल जिसमें किसी फेंकी हुई वस्तु (जैसे—सिक्का आदि) के चित या पट पड़ने पर हार या जीत मानी जाती है। २ मल्ल-युद्ध। कुश्ती। (क्व०)

चित-बाहु—पु० [हिं० चित+बाहु] तलवार चलाने के ३२ प्रकारों या हाथों में से एक।

चित-भंग—पु० [हिं० चित+भंग] १ वह अवस्था जिसमें मनुष्य का चित्त या मन एकाग्र और स्वस्थ न रह सके। मानस शांति में होनेवाली बाधा। २ किसी ओर से मन उचटने पर होनेवाली उदासी और विकलता। ३. चेतना, ज्ञान, बुद्धि आदि का ठिकाने न रहना।

चितरना—स० [सं० चित्र] १. चित्रित करना। चित्र बनाना। २ बेल-बूटों आदि की तरह की आकृतियाँ बनाना। जैसे—आड़ चितरना = किसी रंग या चमकीली चीज से मस्तक या मुख पर बेल-बूटों आदि की आकृतियाँ बनाना। ३ ठीक ढंग से लगाना। जैसे—काजल चितरना।

चितरवा—पु० दे० 'चितरोखा'।

चितरा†—पु० = चीतल (देखें)।

चितराला—पु० [सं० चित्र] एक प्रकार का छोटा जंतु या पशु जो छोटे-छोटे झुंडों में रहता और प्रायः पेड़ों पर रहकर गिलहरियाँ, चिड़ियाँ आदि खाता है

चितरोख†—पु० [सं० चित्रक] लाल रंग की एक प्रकार की छोटी सुंदर चिड़िया जिसकी चोंच और पीठ काली तथा पैर कुछ लाल होते हैं।

चितला—वि० [सं० चित्रल] चितकबरा। रंग-बिरंगा।

पु० १. एक प्रकार का खरबूजा जिसके छिलके पर चित्तियाँ होती हैं। २. एक प्रकार की बड़ी मछली जिसकी पीठ उभारदार होती है और जिसके शरीर से यथेष्ट चरबी निकलती है जो खाने और जलाने के काम आती है।

चितवन—स्त्री० [हिं० चितवना] १ किसी की ओर प्रेमपूर्वक या स्नेहपूर्वक देखने की अवस्था, ढंग या भाव। २. दृष्टि। निगाह।

चितवना—स० [सं० चित् = ध्यानपूर्वक देखना] १. अनुराग या स्नेहपूर्वक किसी की ओर देखना। उदा०—जिवत मरन सुनि सुधि परत जेहि चितवत इक बार।—बिहारी। २ यों ही या जल्दी में देख जाना। उदा०—फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा।—तुलसी।

चितवनि—स्त्री० = चितवन।

चितवाना—स० [हिं० चितवना का प्रे०] किसी को चितवने (देखने) में प्रवृत्त करना।

चितसारी—स्त्री० दे० 'चित्रसारी'।

चिता—स्त्री० [सं० √चि (चयन करना)+क्त—टाप्] १ क्रम से चुनकर रखी या सजाई हुई लकड़ियों का वह ढेर जिस पर मृत शरीर जलाये जाते हैं। चिति। चित्या। चैत्य।

मुहा०—चिता चुनना या सजाना = शव-दाह के लिए लकड़ियाँ क्रम से सजाकर रखना। चिता तैयार करना। चिता पर चढ़ना = मरने पर जलाये जाने के लिए चिता पर रखा जाना। (स्त्री का) चिता पर चढ़ना = पति के शव के साथ उसकी चिता पर जलने के लिए जाकर बैठना।

२. श्मशान। मरघट।

चिताउनी†—स्त्री० १ = चेतावनी। २ = चितवन।

चिताना—स० = चेताना (देखें)।

अ० [सं० चित्रण] चित्रित होना। उदा०—लता सुमन पशु पच्छि चित्र सौं चारु चिताए।—रत्नाकर।

स० चित्रित करना।

चिता-प्रताप—पु० [ष० त०] जीते जी चिता पर रखकर जला देने का दंड।

चिता-भूमि—स्त्री० [ष० त०] मरघट। श्मशान।

चितारना—स० [सं० चिंतन] १. चित्त या मन में लाना। किसी ओर चित्त या ध्यान देना। उदा०—चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारै।—कबीर। २ ध्यान में लाना। याद करना। उदा०—रे पपइया प्यारे कब को बैर चितारचो।—मीराँ।

†स० = चितरना।

चितारी—पु० = चितेरा।

चितारोहण—पु० [चिता-आरोहण, स० त०] १ चिता पर जल मरने के उद्देश्य से चढ़कर बैठना। २. विधवा स्त्री का सती होने के लिए अपने पति के शव के साथ चिता पर बैठना।

चितावनी—स्त्री० = चेतावनी।

चिता-साधन—पु० [स० त०] चिता के पास या श्मशान पर बैठकर इष्ट-सिद्धि के लिए मंत्र आदि जपना। (तंत्र)

चिति—स्त्री० [स० √चि (चयन करना)+क्तिन्] १. चुनकर लगाने या सजाने की क्रिया या भाव। २ चिता। ३ ढेर। राशि। ४ अग्नि का एक प्रकार का वैदिक संस्कार। ५. यज्ञ में वेदी बनाने की ईंटों का एक संस्कार। ६. चेतनता। ७ दुर्गा।

चितिका—स्त्री० [स० चिति√कै (शब्द करना)+क-टाप्] १ करधनी। मेखला। २ दे० 'चिति'।

चितिया—वि० [हि० चित्ती] जिस पर चित्तियाँ या दाग पड़े हों। चित्तीदार। जैसे—चितिया साँप, चितिया हिरन।

चितिया गुड़—पु० [हि०] खजूर की चीनी की जूसी में जमाया हुआ गुड़।

चिति-व्यवहार—पु० [ष० त०] गणित की वह क्रिया जिसके द्वारा किसी दीवार या मकान में लगनेवाली ईंटों आदि की संख्या जानी जाती है।

चितु†—पु० =चित्त।

चितेरा—पु० [स० चित्रकार, गु० चितारो, प० चितेरा, सिंह० सितिएर] [स्त्री० चितेरिन, चितेरी] वह जो चित्र अंकित करने या बनाने का काम करता हो। चित्रकार। मुसौवर।

चितेला—पु० = चितेरा।

चितैना—स० = चितवना।

चितौन—स्त्री० = चितवन।

चितौना—स० = चितवना।

चितौनि (नी)—स्त्री० = चितवन।

चित्कार—पु० =चीत्कार।

चित्त—पु० [स० √चित् (ज्ञान करना)+क्त] १. अंत करण की चार वृत्तियों में से एक जो अतरिंद्रिय के रूप में मानी गई है और जिसके द्वारा धारण, भावना आदि की क्रियाएँ सम्पन्न होती है। जी। दिल।

मुहा०—चित्त उचटना = किसी काम, बात या स्थान से जी विरक्त होना या हटना। दिल को भला न लगना। **चित्त करना** =जी चाहना। इच्छा होना। जैसे—उनसे मिलने को मेरा चित्त नहीं करता। **चित्त चढ़ना**=दे० "चित्त पर चढ़ना'। **चित्त चिहुँटना**=प्रेमासक्त होने के कारण मन में कष्टदायक स्मृति होना। उदा०—नहिं अन्हाय नहिं जाय घर चित चिहुँट्यो तकि तीर।—बिहारी। **चित्त चुराना**=मन को मोहित करना। **चित्त देना**=ध्यान देना। मन लगाना। उदा०—चित्त दै सुनो हमारी बात।—सूर। **चित्त धरना**= (क) किसी बात पर ध्यान देना। मन लगाना। (ख) कोई बात या विचार मन में लाना। उदा०—हमारे प्रभु औगुन चित न धरो—सूर। **चित्त पर चढ़ना** = (क) मन में बसने के कारण बार-बार ध्यान में आना। (ख) स्मृति जाग्रत होना। याद आना या पड़ना। **चित्त बँटना** =एक बात या विषय की ओर ध्यान रहने की दशा में कुछ समय के लिए दूसरी ओर ध्यान जाना जो बाधा के रूप में हो जाता है। **चित्त में जमना, धँसना या बैठना** = अच्छी तरह हृदयगम होना। दृढ़ निश्चय के रूप में मन में बैठना। **चित्त में होना या चित्त होना**= इच्छा होना। जी चाहना। **चित्त लगना**= किसी काम या बात में मन की वृत्ति लगना। ध्यान लगना। जैसे—चित्त लगाकर काम किया करो। **चित्त से उतरना**=(क) ध्यान में न रहना। भूल जाना। जैसे—वह बात हमारे चित्त से उतर गई थी। (ख) पहले की तरह आदरणीय या प्रिय न रह जाना। जैसे—अब तो वह हमारे चित्त से उतर गया है। **चित्त से न टलना** =ध्यान में बराबर बना रहना। न भूलना।

२ नृत्य में, शृंगारिक प्रसंगों में अनुराग, प्रसन्नता आदि प्रकट करनेवाली चितवन या दृष्टि।

† वि० चित।

चित्तक—पु० दे० 'चित्रक'।

चित्त-कलित—वि० [स० त०] १ मन में जिसकी आशा या ध्यान किया गया हो। २ प्रत्याशित।

चित्त-गर्भ—वि० [स० चित्त √गर्भ् (ग्रहण करना) +अच्, उप० स०] मनोहर। सुंदर।

चित्त-चारी (रिन्)—वि० [स० चित्त√चर् (चलना)+णिनि, उप० स०] दूसरों की इच्छा के अनुसार आचरण करने या चलनेवाला।

चित्त-चौर—पु० [ष० त०] = चित्त-चोर।

चित्तज—वि० [स० चित्त √जन् (उत्पन्न होना) +ड, उप० स०] चित्त या मन में उत्पन्न।

पु० १ प्रेम। २ कामदेव।

चित्त-जन्मा (न्मन्)—पु० [ब० स०] कामदेव।

चित्तज्ञ—वि० [स० चित्त √ज्ञा (जानना) +क उप० स०] दूसरों के चित्त या मन की बातें जाननेवाला।

चित्त-निवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] इच्छा, कष्ट, भावना आदि से होनेवाला चित्त का छुटकारा या निवृत्ति। मन की शांति, संतोष और सुख।

चित्त-प्रसादन—पु० [ष० त०] योग में चित्त का एक संस्कार जो करुणा, मैत्री, हर्ष आदि के उपयुक्त व्यवहार द्वारा होता है। जैसे—किसी को सुखी देखकर प्रसन्न होना, दु खी के प्रति करुणा दिखाना, पुण्य के प्रति हर्ष और पाप के प्रति उपेक्षा करना। इस से चित्त में सात्त्विक वृत्ति का प्रादुर्भाव होता है।

चित्त-भंग—पु० [ब० स०] बदरिकाश्रम के समीप स्थित एक पर्वत श्रेणी।

चित्त-भू—पु० [स० चित्त √भू (होना) +क्विप्, उप० स०] १ प्रेम। २ कामदेव।

चित्त-भूमि—स्त्री० [ष० त०] योग-साधन के समय होनेवाली चित्त की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ या वृत्तियाँ जिनमें से कुछ तो अनुकूल और कुछ बाधक होती है। मुख्यत क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध ये पाँच चित्त-भूमियाँ मानी गई है जिनमें से अन्तिम दो योग-साधन के लिए अनुकूल होती है।

चित्त-भेद—पु० [ष० त०] १ मन की अस्थिरता और चंचलता। २ दृष्टिकोणों या विचारों में होनेवाला भेद।

चित्त-भ्रम—पु० [ष० त०] १ मन में होनेवाला किसी प्रकार का भ्रम या भ्रांति। २. [ब० स०] उन्माद। पागलपन।

चित्त-भ्रांति—स्त्री० [ष० त०] =चित्त-भ्रम।

चित्त-योनि—पु० [ब० स०] कामदेव।

चित्तर†—पु० = चित्र।

चित्तर-सारी*—स्त्री० = चित्रशाला।

चित्तरा—स्त्री० = चित्रा (नक्षत्र)।

चित्तल—पु० =चीतल। (मृग)।

चित्तवान् (वत्)—वि० [सं० चित्ता+मतुप्, म =व] [स्त्री० चित्तवती] जिसके चित्त मे सदा अच्छी बाते रहती हो।

चित्त-विक्षेप—पु० [ष० त०] १ चित्त का एकाग्र न हो पाना या न रह जाना। चित्त का स्थिर न रहना। २ चित्त की अस्थिरता या चचलता।

चित्त-विद्—पु० [सं० चित्त √विद् (जानना) + क्विप्, उप० स०] १ वह जो दूसरो के चित्त की बात जानता हो। २ वह जो चित्त या मन के सब भेद और रहस्य जानता हो।

चित्त-विप्लव—पु० [ब० स०] उन्माद। पागलपन।

चित्त-विभ्रंश—पु० [ब० स०] = चित्त-भ्रम।

चित्त-विभ्रम—पु० =चित्त-भ्रम।

चित्त-विश्लेषण—पु० [ष० त०] मनोविश्लेषण। (दे०)

चित्त-वृत्ति—स्त्री० [ष० त०] १ चित्त की गति। चित्त की अवस्था। २ अभिरुचि। झुकाव।

चित्त-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] बुरे विचारो को मन से हटाकर अच्छी बातो की ओर ध्यान देना जिससे चित्त निर्मल तथा शुद्ध हो जाय।

चित्त-हारी (रिन्)—वि० [सं० चित्त√हृ (हरण करना)+णिनि, उप० स०] चित्त हरण करनेवाला, अर्थात् आकर्षक। मनोहर।

चित्ताकर्षक—वि० [सं० चित्त-आकर्षक, ष० त०] जो चित्त को अपनी ओर आकृष्ट करता हो। मोहित करने या लुभानेवाला।

चित्तापहारक—वि० [सं० चित्त-अपहारक ष० त०] =चित्तहारी।

चित्ताभोग—पु० [सं० चित्त आभोग, ष० त०] १. पूर्ण चेतनता। २ किसी विषय के प्रति मन की आसक्ति।

चित्तासंग—पु० [सं० चित्त-आसंग] अनुराग। प्रेम।

चित्ति—स्त्री० [सं०√चित् (ज्ञान होना)+क्तिन्] १ चित्त की वह वृत्ति जो मनुष्य को सोचने-विचारने मे प्रवृत्त या समर्थ करती है। २. ख्याति। प्रसिद्धि । ३ आस्था। श्रद्धा। ४. कर्म। कार्य। ५. ५. उद्देश्य। लक्ष्य। ६. अथर्व ऋषि की पत्नी का नाम।

चित्ती—स्त्री० [सं० चित्र, प्रा० चित्त] १ किसी एक रगवाली वस्तु पर दूसरे रग का लगा हुआ चिह्न या दाग।

मुहा०—(रोटी पर) चित्ती पडना = रोटी सेकते समय उस पर छोटे-छोटे काले दाग पडना।

२. वे छोटे-छोटे चिह्न आदि जो वस्त्रो पर काढे या छापे जाते है। ३ मादा लाल। मुनिया। ४ एक प्रकार का साँप। चीतल। (दे०)

स्त्री० [हिं० चित =सफेद दाग] एक ओर से कुछ रगडा हुआ इमली का चिआँ जिसमे छोटे लडके जूआ खेलते है।

चित्तोद्रेक—पु० [सं० चित्त-उद्रेक, ष० त०] गर्व। घमड।

चित्तौर—पु० [सं० चित्रकूट, प्रा० चित्त ऊड, चितउड] राजपूताने का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ किसी समय महाराणा प्रताप की राजधानी थी।

चित्य—वि० [सं० √चि (चयन) +क्यप्, तुक् आगम] १. इकट्ठा किये या चुने जाने के योग्य। २ जो इकट्ठा किया या चुना जा सके। ३ चिता सबधी।

पु० १ चिता। २ अग्नि।

चित्र—पु० [सं० √चित्र् (लिखना) +अच्] १ चदन आदि से शरीर के किसी अग विशेषत मस्तक पर बनाया जानेवाला चिह्न। तिलक। २ कलम, कूची, पेंसिल आदि की सहायता से कपडे, कागज, दीवार या किसी चिपटे तलवाली वस्तु पर बनाई हुई किसी वस्तु या व्यक्ति की आकृति।

क्रि० प्र०—उतारना। —बनाना।—लिखना।

३ यत्र की सहायता से खीचा या छापा जानेवाला चित्र। जैसे—कैमरे का चित्र (फोटो) या समाचार-पत्रो मे प्रकाशित होनेवाले चित्र। ४ कल्पना करने या सोचने पर मानसिक चक्षुओ के सामने आनेवाली आकृति या रूप। मानसिक चित्र। ५ चित्र-काव्य। (दे०) ६ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसका प्रत्येक चरण समानिका वृत्त के दो चरणो के योग से बनता है। ७ काव्य के तीन अगो मे से एक जिसमे व्यग्य की प्रधानता नही होती। अलकार। ८ चित्रगुप्त। ९ एक यम का नाम। १०. धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो में से एक।११. रेंड का पेड़। १२ अशोक वृक्ष। १३. चित्रक। चीता। १४. एक प्रकार का कोढ जिसमे शरीर मे सफेद चित्तियाँ या दाग पड जाते है।

वि० १. रग-बिरगा। कई रगो का।२. चित-कबरा। ३ अनेक प्रकार का। कई तरह का। ४ अद्भुत। विचित्र। विलक्षण। ५ प्राय बदलता रहनेवाला या तरह-तरह के रग बदलनेवाला। ६. चित्र की तरह सब प्रकार से ठीक, दुरुस्त और सुदर।

चित्र-कंठ—पु० [ब० स०] कबूतर।

चित्र-कंबल—पु० [कर्म० स०] १. कालीन, दरी या उसी तरह की और कोई रगीन बुनावटवाला कपडा। २ हाथी की झूल।

चित्रक—पु० [सं० चित्र +कन्] १ मस्तक पर लगाया जानेवाला टीका या तिलक। २. चीता नामक पेड। ३ चीता नाम का जतु। ४ रेंड का पेड। ५. चिरायता। ६ मुचकुद का पेड़। ७. चित्रकार। ८ बहादुर। शूर-वीर।

चित्र-कर—पु० [सं० चित्र √कृ (करना)+ट, उप० स०] १ एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति विश्वकर्मा पुरुष और शूद्रा स्त्री से कही गई है। २ उक्त जाति का व्यक्ति। ३ तिनिश का पेड़। ४. चित्रकार।

चित्र-कर्म (न्)—पु० [ष० त०] चित्रकारी।

चित्रकर्मा (र्मिन्)—पु० [सं० चित्रकर्म+इनि] १. चित्रकार। मुसौवर। २ अद्भुत या विलक्षण काम करनेवाला व्यक्ति। ३ तिनिश का पेड।

चित्र-कला—स्त्री० [ष० त०] चित्र अकित करने की क्रिया, ढग, भाव या विद्या। तसवीर बनाने का हुनर।

चित्र-काय—पु० [ब० स०] चीता। (जतु)

चित्र-कार—पु० [सं० चित्र √कृ (करना) +अण् उप० स०] वह व्यक्ति जो चित्र अकित करने की कला मे दक्ष हो। चित्र बनानेवाला। चितेरा।

चित्रकारी—स्त्री० [हिं० चित्र +कारी] १ चित्र बनाने की कला या विद्या। २ चित्रकार का काम, पद या भाव। ३ बनाये हुए चित्र।

चित्र-काव्य—पु० [मध्य० स०] वह आलकारिक काव्य जिसके चरणो की रचना ऐसी युक्ति से की गई हो कि वे चरण किसी विशिष्ट क्रम से लिखे जाने पर कमल, खड्ग, घोडे, रथ, हाथी आदि के चित्रो के समान बन जाते हो। (इसकी गणना अधम प्रकार के काव्यो मे होती है।)

चित्र-कुष्ठ—पु० [मध्य० स०] सफेद कोढ।

चित्र-कूट—पु० [स० ब० स०] १ उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वन-वास के समय राम-लक्ष्मण और सीता ने बहुत दिनो तक निवास किया था। यह बाँदा जिले मे है और इसके नीचे पयोष्णी नदी बहती है। २ हिमवत् खड के अनुसार हिमालय की एक चोटी का नाम। ३ राजस्थान के चित्तौर नगर का पुराना नाम।

चित्र-कृत्—पु०[स० चित्र √कृ(करना) +क्विप्,तुक्, उप० स०]१ चित्रकार। २ तिनिश का पेड।
वि० अद्भुत। विलक्षण।

चित्र-केतु—पु० [ब० स०] १ वह जिसकी पताका चित्रित या रग-बिरगी हो। २ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम। (भागवत) ३ वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ४ गरुड के एक पुत्र का नाम। ५ शूरसेन का एक पौराणिक राजा जिसे नारद ने मत्र का उपदेश दिया था।

चित्र-कोण—पु० [ब० स०] १ कुटकी। २ काली कपास।

चित्र-गंध—पु० [ब० स०] हरताल।

चित्रगुप्त—पु० [ब० स०] पुराणानुसार चौदह यमराजो मे से एक जो प्राणियो के पाप और पुण्य का लेखा रखनेवाले कहे गये है।

चित्र-घंटा—स्त्री० [ब० स०] एक देवी जो नौ दुर्गाओ मे से एक है।

चित्र-जल्प—पु० [कर्म० स०] साहित्य मे ऐसी बातें जो मान करनेवाली नायिका अथवा रूठा हुआ नायक एक दूसरेसे कहते हैं। (इसके दस भेद कहे गये है।)

चित्र-जात—पु० =चित्र योग।

चित्रण—पु० [स० √चित्र +णिच्+ल्युट्—अन] १ चित्र अकित करने या बनाने की क्रिया या भाव। २ चित्र मे रग भरने का भाव। ३ किसी घटना, भाव, वस्तु, व्यक्ति आदि का विशद तथा सजीव रूप मे शब्दो में किया जानेवाला वर्णन। जैसे-चरित्र-चित्रण।

चित्र-तंडुल—पु० [ब० स०] वायविडग।

चित्र-तल—पु० [ष० त०] वह तल या सतह जिस पर चित्र अकित हो। जैसे—कपडा, कागज, काठ, पत्थर आदि।

चित्र-ताल—पु० [कर्म० स०] सगीत मे एक प्रकार का चौताला ताल।

चित्र-तैल—पु० [कर्म० स०] अडी या रेंडी का तेल।

चित्र-त्वक् (च्)—पु० [ब० स०] भोज-पत्र।

चित्र-दडक—पु० [ब० स०, कप्] जमीकद। सूरन।

चित्र-देव—पु० [कर्म० स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

चित्र-देवी—स्त्री० [कर्म० स०] १ एक प्रकार की देवी या शक्ति। २ महेन्द्रवारुणी लता।

चित्र-धर्मा (र्मन्)—पु० [ब० स०, अनिच्] महाभारत मे उल्लिखित एक दैत्य।

चित्र-धाम—पु० [कर्म० स०] यज्ञादि मे पृथ्वी पर बनाया जानेवाला एक चौखूंटा चक्र जिसके खाने भिन्न-भिन्न रगो से भरे जाते है। सर्वतोभद्र चक्र।

चित्रना—स० [स० चित्र +हिं० ना (प्रत्य०)] १ चित्र आदि बनाना। २ चित्रो मे रग भरना। ३ किसी तल पर बेल-बूटे आदि बनाना। ४ शोभा के लिए मुँह पर चमकी आदि लगाना।

चित्र-नेत्रा—स्त्री० [ब० स० टाप्] मैना पक्षी।

चित्र-पक्ष—पु० [ब० स०] तीतर पक्षी।

चित्र-पट—पु० [ष० त०] १ वह पट (वस्त्र) जिस पर प्राचीन भारत मे चित्र बनता था। २ कपडे या चमडे पर बना हुआ वह चित्र जो लपेट कर रखा जा सकता हो और आवश्यकता पडने पर दीवार आदि पर टाँगा जा सकता हो। ३ कोई ऐसा तल (जैसे-कागज, काठ, पत्थर, हाथी दाँत आदि) जिस पर चित्र बना या अकित हुआ हो। ४ चल-चित्र। (दे०)

चित्र-पटी—स्त्री० [ष० त०] छोटा चित्र-पट।

चित्र-पत्र—पु० [ब० स०] आँख की पुतली के पीछे का वह परदा जिस पर देखी जानेवाली वस्तुओं का प्रतिबिंब पडता है।
वि० रग-बिरगे और विचित्र पखो या परोवाला।

चित्र-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] १ कपित्थपर्णी वृक्ष। २ द्रोणपुष्पी। गूमा।

चित्र-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] जल-पिप्पली।

चित्र-पथा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] प्रभास तीर्थ के अतर्गत ब्रह्मकुड के पास की एक छोटी नदी जो अब सूख चली है।

चित्र-पदा—पु० [ब० स०, टाप्] १ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे २ भगण और २ गुरु होते है। २ मैना पक्षी। ३ लजालू या लज्जावती लता। छूई-मूई।

चित्र-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] १ मजीठ। २ कनफोडा नाम की लता। ३ जल-पिप्पली। ४ द्रोणपुष्पी। गूमा।

चित्र-पादा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] मैना पक्षी।

चित्र-पिच्छक—पु [ब० स०] मयूर। मोर।

चित्र-पुंख—पु [ब० स०] बाण। तीर।

चित्र-पुट—पु० [ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का छ ताला ताल।

चित्र-पुत्री—स्त्री० [मध्य० स०] कपडे, लकडी आदि की बनी हुई गुडिया।

चित्रपुष्प—पु० [ब० स०] शर जाति की एक घास जिसे राम-शर कहते हैं।

चित्र-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] आमडा।

चित्र-पृष्ठ—पु० [ब० स०] गौरैया पक्षी।

चित्र-फल—पु० [ब० स०] १ चितला मछली। २ तरबूज।

चित्र-फलक—पु० [ष० त०] काठ, पत्थर, हाथी-दाँत आदि की वह तख्ती या पटिया जिस पर चित्र बना हो।

चित्रफला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १ ककडी। २ बैंगन। ३ भटकटैया। ४ लिंगिनी नाम की लता। ५ महेन्द्र वारुणी लता। ६ फलुई नाम की मछली।

चित्र-बर्ह—पु० [ब० स०] १ मोर। मयूर। २ गरुड के एक पुत्र का नाम।

चित्रभानु—पु० [ब० स०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ चीते का पेड। ४ आक। मदार। ५ भैरव का एक नाम। ६ अश्विनीकुमार। ७ साठ सवत्सरो के अतर्गत सोलहवे वर्ष का नाम। ८ अर्जुन की पत्नी चित्रागदा के पिता जो मणिपुर मे राज्य करते थे।

चित्र-भेषजा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] कठगूलर। कठूमर।

चित्र-भोग—पु०[ब० स०] राजा का वह सहायक और शुभ-चिंतक जो समय पर अनेक प्रकार के पदार्थो तथा गाडी, घोडे आदि से उसकी सहायता करे। (कौ०)

चित्र-मच—पु० [ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

चित्र-मंडप—पु० [ब० स०] १ अश्विनीकुमार। २ अर्जुन की पत्नी

चित्र-सेन—पु० [ब० स०] १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २. एक गधर्व का नाम। ३ पुरुवशी राजा परीक्षित के एक पुत्र। ४. पुराणानुसार शवरासुर का एक पुत्र।

चित्रस्थ—वि० [स० चित्र√स्था (ठहरना)+क] १ चित्र मे अकित किया हुआ। २. चित्र मे अकित व्यक्ति के समान निश्चल या स्तब्ध।

चित्र-हस्त—पु० [ब० स०] तलवार या और कोई हथियार चलाने का एक विशिष्ट ढग या हाथ।

चित्रांकन—पु० [चित्र-अकन, ष० त०][भू० कृ० चित्राकित] चित्र अकित करने या हाथ से तसवीर बनाने का काम। आलेख्य कर्म। (पेन्टिग)

चित्राकित—भू० कृ० [सं० चित्र-अकित स० त०] जो चित्र के रूप मे या चित्र मे अकित किया गया हो। चित्रित।

चित्रांग—वि० [चित्र-अग, ब० स] जिनके अंग पर चित्तियाँ, धारियाँ, चिह्न आदि हों।

पु० १ चित्रक या चीता नाम का पेड़। २. चीतल साँप। ३ ३. ईंगुर। सिंदूर। ४ हरताल।

चित्रांगद—पु० [चित्र-अगद, ब० स०] १ सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न राजा शातनु के एक पुत्र और विचित्रवीर्य्य के छोटे भाई। २. पुराणानुसार एक गधर्व। ३ महाभारत के अनुसार दशार्ण के एक राजा।

चित्रांगदा—स्त्री० [सं० चित्रागद+टाप्] १. मणिपुर के राजा चित्रवाहन की कन्या जो अर्जुन को व्याही थी। और जो बभ्रुवाहन की माता थी। २ रावण की एक पत्नी जिसके गर्भ से वीरबाहु का जन्म हुआ था।

चित्रांगी—स्त्री० [स० चित्राग+ङीप्] १. मँजीठ। २ कनखजूरा।

चित्रा—स्त्री० [स०√चित्र्+अच्-टाप्] १. सत्ताइस नक्षत्रो मे से चौदहवाँ नक्षत्र जिसमे तीन तारे है। इसमे गृह-प्रवेश, गृहारंभ, और यानो, वाहनो आदि का व्यवहार शुभ कहा गया है। २ मूषिकपर्णी या मूसाकानी लता। ३ ककडी, खीरा आदि फल। ४. दती वृक्ष। ५ गाँडर नामक घास। ६ मँजीठ। ७ वायविडग। ८ अजवायन। ९ चितकबरी गाय। १०. एक अप्सरा का नाम। ११. सुभद्रा का एक नाम। १२ एक प्राचीन नदी। १३. एक प्रकार की रागिनी जो भैरव राग की पत्नी कही गई है। १४ सगीत मे एक प्रकार की मूर्च्छना। १५ एक प्रकार का पुराना बाजा। १६ पंद्रह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसमे पहले तीन नगण, फिर दो यगण होते हैं। १७ एक प्रकार की चौपाई जिसके प्रत्येक चरण मे सोलह मात्राएँ होती है और अत मे एक गुरु होता है। इसकी पाँचवी, आठवी और नवी मात्रा लघु तथा अतिम मात्रा गुरु होती है।

चित्राक्ष—पु० [चित्र-अक्षि, ब० स०, षच्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

वि० [स्त्री० चित्राक्षी] विचित्र और सुदर आँखोवाला।

चित्राक्षी—स्त्री० [स० चित्राक्ष+ङीप्] मैना पक्षी।

चित्राटीर—पु० [स० चित्रा√अट् (गति)+ईरच्] १. चद्रमा। २ शिव का घटाकर्ण नामक अनुचर।

चित्रादित्य—पु० [चित्र-आदित्य, मध्य० स०] प्रभास क्षेत्र मे चित्रगुप्त की स्थापित सूर्य्य की मूर्ति। (स्कद पुराण)

चित्राधार—पु० [चित्र-आधार, ष० त०] कोरे पन्नो की नत्थी की हुई वह पुस्तक जिसमे आग्रहण, चित्र, रेखा-चित्र आदि लगाये जाते हैं। (एलबम)

चित्रान्न—पु० [चित्र-अन्न, कर्म० स०] बकरी के दूध मे पकाया और बकरी के कान के रक्त मे रगा हुआ जौ और चावल। (कर्मकांड)

चित्रायस—पु० [चित्र-अयस्, कर्म० स०, टच्] इस्पात। (लोहा)

चित्रायुध—पु० [चित्र-आयुध, कर्म० स०] १. विलक्षण अस्त्र। २ [ब० स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

वि० जिसके पास विचित्र या विलक्षण अस्त्र-शस्त्र हो।

चित्रार—पु०=चित्रकार। उदा०—किरि कठचीत्र पूतली निज करि चीतारै लागी चित्रण—प्रिथीराज।

चित्राल—पु० [?] कश्मीर के पश्चिम का एक पहाड़ी प्रदेश। चितराल।

चित्रालय—पु० [चित्र-आलय, ष० त०] चित्रशाला। (दे०)

चित्रावसु—स्त्री० [स०] तारो से शोभित रात।

चित्रा-विरली—स्त्री० [स०] एक प्रकार का पुराना कामदार कपड़ा जो आज-कल की जामदानी की तरह का होता था।

चित्राश्व—पु० [चित्र-अश्व, ब० स०] सत्यवान् का एक नाम।

चित्रिक—पु० [स० चैत्र+क, पृषो० सिद्धि] चैत का महीना। चैत्र मास।

चित्रिणी—स्त्री० [स० चित्र+इनि-ङीप्] कामशास्त्र तथा साहित्य मे चार प्रकार की नायिकाओ या स्त्रियो मे वह नायिका जो अनेक प्रकार की कलाओ तथा बनाव-सिंगार करने मे निपुण हो।

चित्रित—भू० कृ० [स०√चित्र्+क्त] १ चित्र के रूप मे खींचा या दिखाया हुआ। २ जिसका रग-रूप चित्र मे दिखाया गया हो। ३ जिस पर चित्तियाँ, बेल-बूटे आदि बने हो। ४ जिसका चित्रण हुआ हो। ५ जो शब्दो मे बहुत ही सुन्दर रूप से लिखा गया हो।

चित्री (त्रिन्)—वि० [स० चित्र+इनि] १, चितकबरा। २ चित्रित।

चित्रीकरण—पु० [स० चित्र+च्वि०, ईत्व-दीर्घ,√कृ (करना)+ल्युट् अन] १ विभिन्न वर्णो से रग भरकर चित्रित करना। २ चित्र के रूप मे लाना या उपस्थित करना। ३ सजाना।

चित्रेश—पु० [चित्रा-ईश, ष० त०]चित्रा नक्षत्र के पति चद्रमा।

चित्रोक्ति—स्त्री० [चित्रा-उक्ति, कर्म स०] १. आकाश। २. अलकृत भाषा मे कही हुई बात। ३ सुन्दर अलकारो से युक्त उक्ति या कविता।

चित्रोत्तर—पु० [चित्र-उत्तर, ब० स०] साहित्य मे उत्तर अलकार का एक भेद जिसमे प्रश्न ऐसे विचित्र ढग से रखे जाते हैं कि उन्ही के शब्दो मे उनके उत्तर भी रहते है अथवा कई प्रश्नो का एक ही उत्तर भी रहता है। जैसे—'मुग्धा तियकी केलि रुचि कोन भौन मे होय?' मे का उत्तर 'कोन भौन' अर्थात् 'भवन का कोना' है।

चित्रोत्पला—स्त्री० [चित्र-उत्पल, ब० स०] उडीसा की एक नदी जिसे आज-कल चितरतला कहते हैं। २ पुराणानुसार ऋक्षपाद पर्वत से निकली हुई एक नदी।

चित्र्य—वि० [स०√चित्र्+ण्यत्] १ पूज्य। २ चुनने या चयन किये जाने के योग्य। ३ जिसे चित्र के रूप मे लाया जा सके। ४. जो चित्र के रूप मे अकित किये जाने के लिए उपयुक्त हो।

चियड़ा—पु० [हिं० चीथना=दाँत से फाडना] १. पुराने तथा घिसे हुए कपडे का फटा या फाड़ा हुआ ऐसा छोटा टुकडा जो किसी काम न आ सकता हो। २ बहुत पुराना, फटा हुआ और मैला कपड़ा।

पद—चियड़ा-गुदड़ा=फटे-पुराने और रद्दी कपड़े।

मुहा०—चियड़ा लपेटना=फटा-पुराना कपडा पहनना।

वि० बहुत फटा हुआ। जैसे—चिथडा कपडा।

चियाड़ना—स० [स० चीर्ण] १. चादर के रूप की वस्तुओं को फाडकर टुकडे-टुकडे करना। धज्जी-धज्जी करना। २. किसी को खूब खरी-खोटी सुनाकर अपमानित करना। धज्जियाँ उडाना। डाँटना।

चिद*—पु०=चित्।

चिदाकाश—पु० [स० चित्-आकाश, उपमि० स०] आकाश के समान निर्लिप्त और सब का आधार भूत ब्रह्म। परब्रह्म।

चिदात्मक—वि० [स० चित्-आत्मन्, ब० स०, कप्] चेतना से युक्त।

चिदात्मा (त्मन्)—पु० [चित्-आत्मन् ब० स०] १. चैतन्य स्वरूप परब्रह्म। २. चेतना शक्ति।

चिदानंद—पु० [स० चित्-आनद, कर्म० स०] चैतन्य और आनन्दमय पर ब्रह्म।

चिदाभास—पु० [स० चित्-आभास, ष० त०] १. आत्मा के चैतन्य स्वरूप पर पडनेवाला ब्रह्म का आभास या प्रतिबिंब। २. जीवात्मा।

चिदालोक—पु० [स० चित्-आलोक ष० त०] सदा बना रहनेवाला आत्मा का प्रकाश। शाश्वत प्रकाश।

चिद्घन—वि० [स० चित् √हन्+अप्, घन आदेश] जिसमे चेतना शक्ति हो। चेतना से युक्त। उदा०—श्री वृदावन चिद्घन कछु छवि वरनि न जाई।—नददास।

पु० ब्रह्म।

चिद्रूप—वि० [स० चित्-रूप, ब० स०] १. शुद्ध चैतन्य रूप, चिन्मय। २. परम ज्ञानी। ३ अच्छे स्वभाववाला।

पु० चैतन्य-स्वरूप। परब्रह्म।

चिद्विलास—पु० [स० चित्-विलास, ष० त०] १. चैतन्य-स्वरूप ईश्वर की माया। २ शकराचार्य के एक प्रसिद्ध शिष्य।

चिन—पु० [देश०] १. एक प्रकार का बहुत बडा सदाबहार पेड जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती और इमारतो मे लगती है। २. एक प्रकार की घास जो चौपायो के खाने के लिए सुखाकर भी रखी जा सकती है।

चिनक—स्त्री० [हि० चिनगी] १ जलन लिये हुए हलकी स्थानिक पीडा। चुनचुनाहट। जैसे—पेशाब करने के समय मूत्रनाली मे होने वाली चिनक। २ चिनगारी।

चिनग—स्त्री०=चिनक।

चिनगटा—पु०=चिथडा।

चिनगारी—स्त्री० [सं० चूर्ण, हिं० चुन+अगार] १. जलती हुई वस्तु से निकलकर अलग होनेवाला आग का छोटा कण जो उडकर इधर-उधर जाता या जा सकता हो।

मुहा०—(किसी की) **आँखो से चिनगारी छूटना**=अत्यधिक क्रुद्ध होने पर आँखो का लाल हो जाना। **चिनगारी छोड़ना**=ऐसा काम करना या बात कहना जिससे बहुत बडा उपद्रव या लडाई खडी हो।

२. दो कडी वस्तुओ की रगड से उत्पन्न होनेवाला आग का कण। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसा छोटा कार्य या बात जिसका प्रभाव आगे चलकर बहुत उग्र तथा भीषण हो सकता है।

चिनगी—स्त्री०=चिनगारी।

पु० बाजीगरो और मदारियों के साथ रहनेवाला वह छोटा लडका जो अनेक प्रकार के कौशलपूर्ण खेल दिखलाता है।

चिनती—स्त्री० [हि० चेना] चेना नामक कदन्न के आटे की रोटी।

चिनना*—स०=चुनना।

चिनाई दौड़—स्त्री० [चिनाई ?+दौड] जहाज की घुमाव-फिराव की चाल। (लश०)

चिनाना—स०=चुनवाना।

चिनाव—स्त्री० [स० चन्द्रभागा] पजाब की एक प्रसिद्ध नदी। चन्द्रभागा नामक नदी।

चिनार—पु० [?] एक प्रकार का बडा वृक्ष।

चिनिग—पु० [?] बटेर की जाति का एक पक्षी जो रूप-रग मे बामस जैसा किंतु उससे कुछ छोटा होता है।

चिनिया—वि० [चीन देश से] १ चीन देश मे उपजने, बनने या होनेवाला। जैसे—चिनिया केला। २ जिसका सबध चीन देश से हो। चीन सबधी।

पु० एक प्रकार का रेशमी कपडा।

वि० [हि० चीनी] १. चीनी का बना हुआ। २. जिसमे चीनी मिली हुई हो। ३. चीनी के रग या स्वाद का।

चिनिया केला—पु० [हि० चिनिया+केला] भारत के पूर्वी प्रदेशो में होनेवाला छोटी जाति का एक केला जिसका स्वाद चीनी की तरह मीठा होता है।

चिनिया घोडा—पु० [हि० चीन या चीनी] वह घोडा जिसके पैर सफेद रग के और शरीर का अधिकाश लाल और कुछ भाग सफेद होता है।

चिनिया बत—पु० [हि० चिनिया+बत] बत्तख की तरह की एक चिडिया।

चिनिया बदाम—पु० [हि० चीन+बादाम] मूँगफली।

चिनियारी—स्त्री० [स० चुचु ?] सुसना का साग।

चिनिया बेगम—स्त्री० [हि० चिनिया+ बेगम] अफीम। (परिहास)

चिनौटिया—वि० [हि० चिनना=चुनना] १. जिससे चुनट पड़ी हुई हो। २ चुना हुआ।

चिनौटिया चीर—पु० [हि०+स०] चुँदरी या चूनरी नाम का कपडा। उदा०—पहिरै चीर चिनौटिया, चटक, चौगुनी होति।—बिहारी।

चिनौती—स्त्री०=चुनौती।

चिन्न—पु० [स० चणक] चना।

चिन्मय—पु० [स० चित्+मयट्] पूर्ण तथा विशुद्ध ज्ञानमय।

पु० परमात्मा।

चिन्ह—पु०=चिह्न। (अशुद्ध रूप)

चिन्हना†—अ०=चीन्हना (पहचानना)।

चिन्हवाना—स० [हि० चीन्हना का प्रे०] किसी को कुछ चीन्हने (पहचानने) मे प्रवृत्त करना।

चिन्हाना—स० [हि० चीन्हना का प्रे०] पहचान या परिचय कराना। चीन्हने या पहचानने मे प्रवृत्त करना।

चिन्हानी—स्त्री० [हि० चिह्न] १ निशानी। यादगार। २ पहचान। ३ रेखा आदि के रूप मे लगाया हुआ चिह्न या निशान।

चिन्हार—वि० [स० चिह्न] १ जिसे कोई चीन्हता अर्थात् पहचानता हो। २ जान-पहचान का। परिचित।

चिन्हारना—स० [स० चिह्न] चिह्नित करना। निशान लगाना।

चिन्हारी—स्त्री० [हिं० चिह्न] १ जान-पहचान। परिचय। २ चिह्नानी।
पु० १ व्यक्ति जिससे जान-पहचान या परिचय हो। परिचित।
२. चिह्न। निशान।

चिन्हित—भू० कृ०=चिह्नित। (अशुद्ध रूप)

चिपकना—अ० [अनु० चिपचिप] १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ बीच मे कोई लसदार वस्तु होने के कारण लग या सट जाना। जुड़ जाना। जैसे—आँखें चिपकना। २. दो वस्तुओं का तल से तल मिलकर इस प्रकार एक होना कि बीच मे अवकाश न रह जाय। जैसे—दरवाजा चिपकना। ३ व्यक्तियो का पास-पास या सटकर बैठना। जैसे—दूर बैठो, चिपको मत। ४ किसी वस्तु या बात का कसकर पकड़ लेना। जैसे—लता का खभे से चिपकना। ५ किसी व्यक्ति से प्रगाढ प्रेम स्थापित करना और उसके पास या साथ रहना। ६ लीन या रत रहना। जैसे—बच्चे खेल मे चिपके रहते है।

चिपकाना—स० [हिं० चिपकना] १. किसी लसीली वस्तु की सहायता से दो वस्तुओं के तल परस्पर इस प्रकार जोडना कि वे जल्दी अलग न हो सकें। श्लिष्ट करना। जैसे—लिफाफे पर टिकट चिपकाना। २ अच्छी तरह आलिंगन करना। गले लगाना। लिपटाना। ३ किसी काम-धधे या नौकरी मे लगाना। (बोल-चाल) जैसे—इस लडके को भी कही चिपका दो।

चिपचिप—स्त्री० [अनु०] १ वह अनुभूति जो किसी रसदार वस्तु को छूने से होती है। २ लसदार वस्तु को बार-बार छूते और उस पर से उँगली या हाथ हटाने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

चिपचिपा—वि० [हिं० चिपचिप] [स्त्री० चिपचिपी] (पदार्थ) जो गाढा तथा लसदार होने के कारण वस्त्र, शरीर आदि से छूए जाने पर उससे चिपक जाता हो। जैसे—किवाड पर लगा हुआ चिपचिपा रग।

चिपचिपाना—अ० [हिं० चिपचिप] किसी गाढी तथा लसीली वस्तु का चिपचिप शब्द करना या किसी वस्तु से छूए जाने पर उससे चिपक जाना। जैसे—गोद या चाशनी का चिपचिपाना।
स० किसी चीज को चिपचिपा करना या बनाना।

चिपचिपाहट—स्त्री० [हिं० चिपचिपा] चिपचिपाने अथवा चिपचिपे होने की अवस्था, गुण या भाव। लसीलापन। लस। लसी।

चिपट—वि० [सं० नि+पटच्, चि आदेश] चिपटी नाकवाला।
पु० चिड़वा।

चिपटना—अ० [स० चिपिट=चिपटा] १ इस प्रकार जुडना कि जल्दी अलग न हो सके। चिपकना। सटना। जैसे—लता या पेड से चिपटना। २ दे० 'चिमटना'।

चिपटा—वि० [स० चर्पट, दे प्रा० चाप्टो, बँ० चाप्टी, उ० चेप्टी, गु० चापट, चपट्, ने० चेप्टो, मरा० चापट] [स्त्री० चिपटी] १ जिसके ऊपरी तल मे आवश्यक अथवा उचित उभार न हो। जिसकी सतह बहुत कुछ दबी हुई या सम हो। जैसे—चिपटी नाक, चिपटी सुपारी।

चिपटाना—स० [हिं० चिपटना] १ चिपकाना। सटाना। २ आलिंगन करना। लिपटाना।

चिपटी—स्त्री० [हिं० चिपटा] १ कान मे पहनने की एक प्रकार की बाली। २. भग। योनि। (बाजारू)
मुहा०—चिपटी खेलना या लड़ाना=कामातुर अथवा दुश्चरित्रा स्त्रियो का आपस मे भग या योनि रगडना। (बाजारू)
वि० हिं० 'चिटा' का स्त्री० रूप।

चिपड़ा—वि० [हिं० चीपड] जिसकी आँख मे अधिक चीपड रहता हो।
पु० [स्त्री० चिपड] जलाने के लिए सुखाए हुए गोबर के बडे पिंड। उपला। कडा। गोइठा।

चिपड़ी—स्त्री० [हिं० चिप्पड] छोटा चिपडा या कडा। उपली। गोइठी।

चिपिट—वि० [स०√चि (चयन)+पिटच्] चिपटा।
पु० १ चिड़वा। २. चिपटी नाकवाला व्यक्ति। ३ आँख मे उँगली लगने, दबने आदि के कारण दृष्टि मे होनेवाला वह क्षणिक विकार जिससे चीजें अपने स्थान से कुछ ऊपर-नीचे हटी हुई या एक ही जगह दो दिखाई देती है।

चिपिट-नासिक—पु० [ब० स०] १ बृहत्सहिता के अनुसार एक देश जो कैलाश पर्वत के उत्तर कहा गया है। २. तातार या मगोल देश जहाँ के निवासियो की नाक चिपटी होती है। ३ उक्त देश का निवासी।
वि० चिपटी नाकवाला।

चिपीटक—पु० [स०=चिपिट+कन् पृषो० सिद्धि] चिडवा।

चिपुआ†—पु० [देश०] चेल्हवा या चेल्हा मछली।

चिप्प—पु० [स०√चिक्क् (पीडा देना)+अच्, क्क् को प्प् आदेश] एक रोग जिसमे उँगलियो के नाखूनो के नीचे तथा आस-पास का मांस गलने या पकने लगता है।

चिप्पल—वि० [हिं० चिपकना] १ चिपका या दबा हुआ। २ चिपटा। ३. बहुत ही दुबला-पतला।

चिप्पड़—पु० [स० चिपिट] [स्त्री० चिप्पी] १. वह छोटा चिपटा टुकडा जो किसी चीज के सूख जाने पर उसके ऊपरी तल मे से कुछ अलग हो रहा हो या निकल चला हो। जैसे—जलाने की लकड़ी के ऊपर का चिप्पड़। २ ऊपर से लगाया या सटाया जानेवाला कोई चिपटा खड। जैसे—इसका छेद बद करने के लिए ऊपर से एक चिप्पड लगा दो।

चिप्पिका—स्त्री० [सं० चिप्प+कन्—टाप्, इत्व] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक रात्रिचर जतु। २ एक प्रकार की चिडिया।

चिप्पी—स्त्री० [हिं० चिप्पड] १. छोटा चिप्पड जो ऊपर से चिपकाया, लगाया या सटाया जाय। जैसे—कागज की चिप्पी। २ वह बटखरा जिससे तौलकर सब को बराबर-बराबर अनाज या रसद बाँटी जाती है। ३ उक्त प्रकार से बाँटा जानेवाला अनाज या रसद। सीधा। (साधुओं की परिभाषा)
†स्त्री०=चिपटी।

चिबि—स्त्री० दे० 'चिवि'।

चिबिल्ला—वि० दे० 'चिलबिल्ला'।

चिबिल्लापन—पु०=चिलबिल्लापन।

चिबुक—पु० दे० 'चिवुक'।

चिमगादड़—पु०=चमगादड।

चिमटना—अ० [स० स्तिम्, प्रा० तिम्, चिम्, बँ० चिमटा, उ० चिमुटवा; मरा० चिवटणें] १. किसी जीव का दूसरे जीव या पदार्थ को अच्छी तरह पकडकर उसके साथ लग या सट जाना। जैसे—(क) बच्चे का माँ के गले से चिमटना। (ख) गुड से च्यूँटो का चिमटना। २. स्वार्थ

साधन के लिए बुरी तरह से किसी को थमना या पकड़ना। जैसे—मुफ्त-खोरों का किसी रईस में चिमटना। ३. बहुत बुरी तरह से किसी के पीछे पड़ना और जल्दी उसका पिंड न छोड़ना। जैसे—भिखमंगों का यात्रियों में चिमटना। ४. चिपकना। सटना।

चिमटवाना—स० [हिं० चिमटना का प्रे०] दूसरे से चिमटाने का काम कराना। किसी को चिमटने या चिमटाने में प्रवृत्त करना।

चिमटा—पु० [हिं०चिमटना] [स्त्री० चिमटी] (हाथ की मुरक्षा के लिए) पीतल,लोहे आदि धातुओं का बना हुआ वह लंबा उपकरण जिसमें आगे की ओर दो लंबी फलियाँ होती हैं और जिनसे पकड़कर चीजें उठाई या रखी जाती है। दस्त पनाह। जैसे—रसोई घर में कोयला उठाने या तवा पकड़ने का चिमटा, साँप पकड़ने का चिमटा।

चिमटाना—स० [हिं० चिमटना] १ किसी को चिमटने में प्रवृत्त करना। २ आलिंगन करना। गले लगाना। लिपटाना।

चिमटी—स्त्री० [हिं० चिमटा] कई प्रकार के कारीगरों के काम का वह छोटा उपकरण जो चिमटे के आकार-प्रकार का होता है और जिससे वे छोटी-छोटी चीजें उठाते, जमाते या रखते है। जैसे—लोहारों, सुनारों या हज्जामों की चिमटी।

चिमड़ा—वि०=चीमड़।

चिमन—पु०=चमन। (बगीचा)

चिमनी—स्त्री० [अं०] १. भवनों, यंत्रों आदि में ऊपर की ओर ऊँची उठी हुई वह गोलाकार नली जिसके द्वारा नीचे का धूआँ ऊपर उठकर बाहर निकलता है। जैसे—बिजलीघर की चिमनी, रेल के इंजन की चिमनी। २. लंपों आदि में शीशे की वह गोलाकार नली जिसमें धूआँ ऊपर जाता है और नीचे की ओर प्रकाश फैलता है।

चिमिक—पु० [स०√चि (चयन)+मिक्, चिमि+कन्] तोता।

चिमोट—स्त्री० [हिं० चिमटना] १. चिमटने की क्रिया या भाव। २. २ चिमटने के कारण पड़नेवाला दवाव या भार। उदा०—इनको लक्कड़ की चिमोट में भूमि से सटा हुआ कर दो। —वृंदावनलाल वर्मा।

चिमोटा—पु०=चमोटा।

चिमोटी—स्त्री० १ =चिमटी। २.=चमोटी।

चिरंजीव—वि० [स० चिरम्√जीव् (जीना)+अच्] १. बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला। २ अमर।

अव्य० छोटों के लिए एक आशीर्वादात्मक विशेषण या संबोधन जिसका अर्थ होता है—बहुत दिनों तक जीवित रहो।

पुं० १. पुत्र। बेटा। जैसे—हमारे भाई साहब के चिरंजीव आज यहाँ आनेवाले है। २ पुराणों के अनुसार अश्वत्थामा, कृपाचार्य, परशुराम, बलि, विभीषण, व्यास और हनुमान जो सदा जीवित रहनेवाले माने जाते हैं। ३. विष्णु। ४. कौआ।

चिरंजीवी (विन्)—वि० [स० चिरम्√जीव्+णिनि] =चिरजीवी।

चिरंटी—स्त्री० [स० चिर√अट् (गति)+अच्, ङीप्, पृषो० मुम्] १. वह सयानी लड़की जो पिता के घर रहती हो। २. युवती।

चिरंतन—वि० [स० चिरम्+ट्यु—अन, तुट् आगम] जो बहुत दिनों से चला आ रहा हो। पुरातन। पुराना।

चिर—वि० [स०√चि (चयन करना)+रक्] १ जो बहुत दिनों से चला आ रहा हो या बहुत दिनों तक चलता रहे। दीर्घ कालव्यापी। जैसे—चिरायु=अधिक काल तक बनी रहनेवाली आयु; चिरस्थायी=बहुत दिनों तक बना रहनेवाला। २ दीर्घ या बहुत। (समय)

पु० देर। विलंब।

क्रि० वि० बहुत दिनों तक।

पु० तीन मात्राओं का वह गण जिसका पहला वर्ण लघु हो।

चिरई—स्त्री० = चिड़िया। (पूरब)

चिरक—स्त्री० [हिं० चिरकना] बहुत जोर लगाने पर होनेवाला जरा-सा पाखाना। मल-कण।

चिरक ढाँस—स्त्री० [हिं० चिरकना+ढाँसना] १. कुकरखाँसी। ढाँसी। २. वह अवस्था जिसमें मनुष्य प्रायः कुछ न कुछ रोगी बना रहता है। ३. नित्य होता रहनेवाला या प्रायः बना रहनेवाला झगड़ा।

चिरकना—अ० [अनु०] बहुत कष्ट से और थोड़ा-थोड़ा मल-त्याग करना। (कोष्ठ-बद्धता का लक्षण)

चिरकार—वि० [स० चिर√कृ (करना)+अण्] हर काम में बहुत देर लगानेवाला। दीर्घ सूत्री।

चिरकारिक—वि० [स० चिरकारिन्+कन्] = चिरकार।

चिरकारी (रिन्)—वि० [स० चिर√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० चिरकारिणी] चिरकार। (दे०)

चिर-काल—पु० [कर्म० स०] [वि० चिरकालिक] दीर्घकाल। बहुत समय। जैसे—चिरकाल से ऐसा ही होता चला आ रहा है।

चिरकालिक—वि० [सं० चिर-काल+ठन्—इक] १ बहुत दिनों से चला आता हुआ। पुराना। २. बहुत दिनों तक बना रहनेवाला।

चिरकालीन—वि० [स० चिरकाल+ख—ईन] =चिरकालिक।

चिरकीन—वि० [फा०] १ कोष्ठबद्धता के कारण थोड़ा-थोड़ा मल-त्याग करनेवाला। २. बहुत अधिक कुत्सित, गंदा या मैला।

चिरकुट—पु० [हिं० चिरना+कुटना] फटा-पुराना कपड़ा। चिथड़ा।

चिर-कुमार—वि० [च० त०] [स्त्री० चिर कुमारी] सदा कुमार अर्थात् ब्रह्मचारी बना रहनेवाला। विवाह न करनेवाला।

चिर-क्रिय—वि० [ब० स०] काम में देर लगानेवाला। दीर्घ सूत्री।

चिरक्रियता—स्त्री० [सं० चिरक्रिय+तल्—टाप्] चिर-क्रिय होने की अवस्था या भाव। दीर्घसूत्रता।

चिरचना—अ० = चिड़चिड़ाना।

चिरचिटा—पु० [स० चिर्चिटा] १ चिचड़ा। अपामार्ग। २ एक प्रकार की बहुत ऊँची या बड़ी घास जो चौपाये खाते हैं।

चिरचिरा†—वि० = चिड़चिड़ा।

पु० दे० 'चिचड़ा'।

चिरजीवक—वि० [स० चिर√जीव् (जीना)+ण्वुल्—अक] बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला। चिरजीवी।

पु० जीवक नामक वृक्ष।

चिर-जीवन—पुं० [मध्य० स०] सदा बना रहनेवाला जीवन। अमर जीवन।

चिरजीवी (विन्)—वि० [स० चिर√जीव्+णिनि] १. अधिक या बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। २ सदा जीवित रहनेवाला। अमर। ३ सदा बना रहनेवाला। शाश्वत।

पु० १. विष्णु। २ मार्कंडेय ऋषि। ३ कौआ। ४ जीवक वृक्ष। ५

सेमर का वृक्ष। ६ अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गये हैं।

चिरता†—पुं० =चिलता (कवच)।

चिर-तिक्त—पु० [ब० स०] चिरायता।

चिर-तुषार-रेखा—स्त्री० [मध्य० स०] पहाड़ों आदि की ऊँचाई का वह स्तर जिसके ऊपर सदा बरफ जमा रहता है। (स्नोलाइन)

चिरना—अ० [स० चीर्ण, हिं० चीरना] १. किसी वस्तु का किसी दूसरी धारदार वस्तु द्वारा चीरा जाना। छोटे-छोटे टुकड़ों में आरे, चाकू आदि के द्वारा विभक्त होना। २ किसी सीध मे फटना या फाड़ा जाना। जैसे—चाकू से उँगली चिरना।

†पु० वह औजार जिससे कोई चीज चीरी जाती हो। जैसे—कसेरों, कुम्हारों या सुनारों का चिरना।

चिर-निद्रा—स्त्री० [च० त०] मृत्यु।

चिर-नूतन—वि० [च० त०] बहुत दिनों तक या सदा नया बना रहनेवाला।

चिर-परिचित—वि० [तृ० त०] जिनसे बहुत दिनो से परिचय या जान-पहचान हो।

चिरपाकी (किन्)—वि० [स० चिर √पच् (पकना) +णिनि] १. बहुत देर मे पकनेवाला। २ बहुत देर मे पचनेवाला।

पु० कपित्थ। कैथ।

चिरपुष्प—पु० [ब० स०] बकुल। मौलसिरी।

चिर-प्रतीक्षित—वि० [तृ० त०] जिसकी बहुत दिनो से प्रतीक्षा की जा रही हो।

चिर-प्रसिद्ध—वि० [तृ० त०] जो बहुत दिनों से प्रसिद्ध या मशहूर हो।

चिरबत्ती—वि० [हिं० चिरना +बत्ती] (कपड़ा) जो चिर या फटकर इतने छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप मे हो गया हो कि दीए की बत्ती बनाने के सिवा और किसी काम मे न आ सकता हो। चिथड़े-चिथड़े किया हुआ।

चिर-बिल्व—पुं० [स० चिर √बिल् (ढकना) +वन्] करज वृक्ष। कजा।

चिरम—स्त्री० [स० चिर्मटी] गुजा। घुँघची।

चिरमिटी—स्त्री० [हिं० चिरम] गुजा। घुँघची।

चिरमी—स्त्री० =चिरमिटी।

चिर-मेही (हिन्)—पु० [स० चिर √मिह् (मूत्र करना) +णिनि] गधा, जो बहुत देर तक पेशाब करता रहता है।

चिर-रोगी (गिन्)—वि० [तृ० त०] १ जो बहुत दिनों से बीमार चला आ रहा हो। २ सदा रोगी बना रहनेवाला।

चिरला—पु० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाड़ी।

चिरवल—पु० [स० चिरबिल्व या चिरवल्ली] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड की छाल से कपड़े रगने के लिए सुदर लाल रग निकलता है।

चिरवाई—स्त्री० [हिं० चिरवाना] चिरवाने का काम, भाव या मजदूरी।

स्त्री० [स० चिर +वाही ?] पानी बरसने पर खेतो मे होनेवाली पहली जोताई।

चिरवादार+—पु० [चिरवा ?+फा० दार] [स्त्री० चिरवा दारिन] साईस।

चिरवाना—स० [हिं० चीरना का प्रे०] चीरने का काम दूसरे से कराना।

चिर-विस्मृत—वि० [तृ० त०] जिसे लोग बहुत दिनों से भूल चुके हो।

चिर-वीर्य—पु० [ब० स०] लाल रेंड का वृक्ष।

चिर-शत्रु—वि० [कर्म० स०] [भाव० चिर-शत्रुता] १ पुराना दुश्मन। २ सदा दुश्मन या शत्रु बना रहनेवाला।

चिर-शांति—स्त्री० [च० त०] १ मृत्यु। २ मुक्ति। मोक्ष।

चिर-संगी (गिन्)—वि० [कर्म० स०] बहुत दिनो का या पुराना सगी (साथी)।

चिर-समाधि—स्त्री० [कर्म० स०] ऐसी समाधि जिसका कभी अत न हो अर्थात् मृत्यु।

चिरस्थ—वि० [स० चिर √स्था (ठहरना) +क] चिरस्थायी।

चिरस्थायी (यिन्)—वि० [स० चिर √स्था +णिनि] बहुत दिनो तक बना रहनेवाला। जैसे—चिरस्थायी आदेश।

चिर-स्मरणीय—वि० [सं० कर्म० स०] जिसे लोग बहुत दिनो तक याद या स्मरण करते रहे। जो जल्दी भुलाया या भूला न जा सके। (पूजनीयता, महत्त्व आदि का सूचक)

चिरहँटा—पु० [हिं० चिड़ी +हता] चिड़ीमार। बहेलिया।

चिरहुला—पु० [?] [स्त्री० चिरहुली] १ चिड़ा। २ पक्षी।

चिरांदा—वि० [अनु० चिर चिर=लकड़ी आदि के जलने का शब्द] थोड़ी-थोड़ी बात पर बिगड़ बैठनेवाला। चिड़चिड़ा।

चिराइता—पु० = चिरायता।

चिराइन—स्त्री० = चिरायँध।

चिराई—स्त्री० [हिं० चीरना] चीरने या चीरे जाने का काम, भाव या मजदूरी।

चिराक़—पु० = चिराग।

चिराग—पु० [फा० चिराग] दीपक। दीआ।

मुहा०—**चिराग का हँसना**=दीये की बत्ती से फूल (अर्थात् चिनगारियाँ) झड़ना। **चिराग को हाथ देना**=चिराग बुझाना। **चिराग गुल होना** =(क) दीये का बुझ जाना। (ख) रौनक या शोभा का नष्ट हो जाना। (ग) परिवार या वंश मे कोई न बच रहना। **चिराग ठंढा करना** =दीया बुझाना। **चिराग तले अँधेरा होना**=ऐसे स्थान या स्थिति मे खराबी या बुराई होना जहाँ साधारणत वह किसी प्रकार न होता या न हो सकता हो। जैसे—हाकिम के सामने रिश्वत लेना, उदार धनी के सबधी का भूखों मरना आदि। **चिराग बढ़ाना**= चिराग बुझाना। दीया ठढा करना। **चिराग में बत्ती पड़ना** = सध्या हो जाने पर दीया जलना। **चिराग लेकर ढूँढ़ना**=बहुत अधिक प्रयत्नपूर्वक ढूँढना। **चिराग से चिराग जलना**= एक से दूसरे का उपकार, लाभ या हित होना। **चिराग से फूल झड़ना** = चिराग की जली हुई बत्ती से चिनगारियाँ निकलना या गिरना।

पद—**चिराग जले** = अँधेरा होने पर। सध्या समय। **चिराग बत्ती का वक्त**= सध्या का समय जब दीआ जलाया जाता है।

कहा०—**चिराग गुल, पगड़ी गायब** =मौका मिलते ही धन का उड़ा लिया जाना।

चिराग-गुल—पु० [फा०] १ युद्ध आदि के समय वह सकट की स्थिति जिसमे शत्रुओं के आक्रमण से लोग या तो रोशनी नही करते या अपने घर से रोशनी बाहर नही आने देते। २ युद्धाभ्यास के समय नगर मे बत्तियाँ न जलाने से उत्पन्न होनेवाली स्थिति। (ब्लैक आउट)

चिराग-दान—पु० [अ०] वह आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीयट। शमादान।

चिरागी—स्त्री० [अ०] १. किसी स्थान पर दीया-बत्ती करने अर्थात् नित्य और नियमित रूप से दीया जलाते रहने का व्यय। २. किसी पवित्र स्थान पर उक्त प्रकार के व्यय-निर्वाह के लिए चढ़ाई जानेवाली भेंट। ३. वह पुरस्कार जो जुए के अड्डे पर दीया जलाने और सफाई करनेवाले व्यक्ति को जीतनेवाले जुआरियों से मिलता है।

चिराटिका—स्त्री० [सं० चिर √अट्+ण्वुल्-अक-टाप्, इत्व] १. सफेद पुनर्नवा। २. चिरायता।

चिरातन—वि० [सं० चिर+तनप्, दीर्घ] १. पुरातन। पुराना। २. फटा हुआ। जीर्ण-शीर्ण।

चिरातिक्त—पु० =चिरतिक्त।

चिराद्—पु० [सं० चिर √अत् (गति)+क्विप्] गरुड।

चिराद—पु० [सं० चिराद् ?] बत्तक की जाति की एक बड़ी चिड़िया जिसका माँस खाने में स्वादिष्ठ होता है।

चिरान†—वि०=चिराना (पुराना)।

चिराना—स० [हिं० चीरना] चीरने का काम किसी से कराना। फड़वाना। जैसे—लकड़ी चिराना।

वि० [सं० चिरतन] १ पुराना। प्राचीन। २. जीर्ण-शीर्ण। जैसे—पुराने-चिराने कपड़े।

चिरायँध—स्त्री० [सं० चर्म+गंध] १ वह दुर्गंध जो चरबी, चमड़े, बाल, माँस आदि के जलने से फैलती है। २. किसी क संबंध में बहुत बुरी तरह से फैलनेवाली बदनामी।

चिरायता—पु० [सं० चिरतिक्त] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ और छाल बहुत कड़वी होती और वैद्यक में ज्वरनाशक तथा रक्तशोधक मानी जाती हैं। इसकी छोटी-बड़ी अनेक जातियाँ होती हैं, जैसे—कलपनाथ, गीमा, सिलारस आदि। किरातक। चिरतिक्त। भूनिंब।

चिरायु (स्)—वि० [सं० चिर-आयुस् ब० स०] जिसकी आयु लंबी हो। दीर्घायु।

चिरारी†—स्त्री० [सं० चार] चिरौंजी।

चिराव—पु० [हिं० चिरना] १. चीरने या चीरे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ चिरने या चीरे जाने के कारण होनेवाला क्षत या घाव।

चिरिंटिका, चिरिंटी—स्त्री० =चिरंटी।

चिरि—पु० [सं० √चि (चयन करना)+रिक्] तोता।

†स्त्री० =चिड़िया।

चिरिका—स्त्री० [सं० चिरि+कन्-टाप्] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

चिरिया†—स्त्री० =चिड़िया।

चिरिहार*—पु० [हिं० चिड़िया+हार (प्रत्य०)] चिड़ीमार। उदा०—कत चिरिहार ढुकत लै लासा।—जायसी।

चिरी†—स्त्री० =चिड़ी (चिड़िया)।

चिरु—पु० [सं० चि+रुक्] कंधे और बाँह का जोड़। मोंढा।

चिरैता†—पुं० चिरायता।

चिरैया—स्त्री० [हिं० चिड़िया] १. पक्षी। २ पुष्य नक्षत्र।

चिरोंटा—पुं० =चिड़ा (गौरैया पक्षी)।

चिरौंजी—स्त्री० [सं० चार+बीज] पयार या पयाल नामक वृक्ष के फलों के बीच की गिरी जो खाने में बहुत स्वादिष्ठ होती है और मेवों में गिनी जाती तथा पकवानों और मिठाइयों में पड़ती है।

चिरौरी—स्त्री० [अनु०] दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनती।

चिर्क—पुं० [फा०] १. गंदगी। २ गुह। मल। ३ पीब। मवाद।

चिर्भटी—स्त्री० [सं० चिर √भट् (पालना)+अच्, पृषो० सिद्धि] ककड़ी।

चिर्म—पु० [फा० मि० सं० चर्म] चमड़ा।

चिर्री—स्त्री० [सं० चिरिका=एक अस्त्र] बिजली। वज्र।

क्रि० प्र०— गिरना।—पड़ना।

चिलक—स्त्री० [हिं० चिलकना] १ सहसा दिखाई देनेवाली और क्षणिक कांति या चमक। उदा०—चिलक चौंधि में रूप-ठग हाँसी फाँसी डारि।—बिहारी। २. सहसा अथवा रह-रहकर कुछ समय के लिए उठनेवाली क्षणिक पीड़ा। टीस। चमक।

†पु० =तिलक (पौधा)।

चिलकना—अ० [हिं० चिल्ली=बिजली या अनु०] १. रह-रहकर चमकना। चमचमाना। उदा०—सब ठाठ इसी चिलकी से देखें हैं चिलकने।—नजीर। २ रह-रहकर दरद या पीड़ा होना। जैसे—उठने-बैठने में कमर या पीठ चिलकना।

चिलका†—पु० [?] नवजात शिशु।

†पु० =चिलकी (रुपया)।

†स्त्री० उड़ीसा की एक प्रसिद्ध बड़ी झील।

चिलकाई*—स्त्री० [हिं० चिलक+आई (प्रत्य०)] १ चमक। उदा०—कै मेघनि मों मुचि चंचला की चिलकाई।—रत्नाकर। २ उतार-चढ़ाव। ३. उत्तेजना।

वि० चमकीला।

चिलकाना—स० [हिं० चिलक] १. चिलकने या चमकने में प्रवृत्त करना। जैसे—माँज या रगड़कर गहने या बरतन चिलकाना। २ चमकाना।

चिलकी†—स्त्री० [हिं० चिलकना] १ चाँदी का रुपया, विशेषतः नया रुपया जो चमकता हो। उदा०—सब ठाठ इसी चिलकी से देखे हैं चिलकते।—नजीर। २ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। उदा०—चिलकी चिक्कन चाह चीर चीनी जापानी।—रत्नाकर।

वि० चमकीला।

चिलगोजा—पु० [फा०] चीड़ या सनोबर का छोटा, लंबोतरा फल जिसके अंदर मीठी और स्वादिष्ट गिरी होती है और इसी लिए जिसकी गिनती मेवों में होती है।

चिलचिल—पु० [हिं० चिलकना] अभ्रक। अबरक। भोडल।

वि० चमकीला।

चिलचिलाना—अ०=चिलकना (चमकना)।

स०=चमकाना।

चिलड़ा—पु० [देश०] पिसी हुई दाल, बेसन आदि की बनी हुई पूरी या रोटी के आकार का पकवान। उलटा। चीला।

चिलता—पु० [फा० चिलत.] एक प्रकार का कवच या बकतर।

चिलबिल—पु० [सं० चिलबिल्व] १ एक प्रकार का बड़ा जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और खेती के औजार बनाने के काम में आती हैं। २ एक प्रकार का बरसाती पौधा जिसकी सफेद जड़ से वर के लिए मुकुट, मौर आदि बनते हैं।

चिलबिला—वि० [स० चल+बल] [स्त्री० चिलबिल्ली] चंचल। चपल। नटखट।

चिलबिल्ला—वि०=चिलबिला।

चिलम—स्त्री० [फा०] मिट्टी का कटोरीके आकार का नलीदार एक प्रसिद्ध पात्र जिसमे गाँजा, चरस या तमाकू तथा आग रखकर यो ही अथवा हुक्के की नली पर लगाकर पीया जाता है।
क्रि० प्र०—पीना।
मुहा०—चिलम चढ़ाना या भरना=चिलम पर तमाकू (गाँजा आदि) और आग रखकर उसे पीने के लिए तैयार करना। **(किसी की) चिलमे चढ़ाना या भरना**=किसी की तुच्छ से तुच्छ सेवाएँ करना।

चिलम-गर्दा—स्त्री० [फा०] हुक्के मे वह लबी बाँस की नली जो चूल और जामिन से मिली होती है। इस पर चिलम रखी जाती है। (नैचाबन्द)

चिलम चट—वि० [फा० चिलम+हिं० चाटना] १ वह जो चिलम पीने का बहुत व्यसनी हो। २ वह जो इस प्रकार कसकर चिलम पीता हो कि फिर वह दूसरे के पीने योग्य न रह जाय।

चिलमची—स्त्री० [फा०] देग के आकार का एक बरतन जिसके किनारे चारो ओर थाली की तरह दूर तक फैले होते हैं। इसमे लोग हाथ धोते और कुल्ली आदि करते है।

चिलमन—स्त्री० [फा०] बाँस की फट्टियो आदि का परदा जो खिड़कियो, दरवाजो आदि के आगे लटकाया जाता है। चिक।

चिलम-पोश—पु० [फा०] धातु का झँझरीदार गहरा ढक्कन जो चिलम पर इसलिए रखा जाता है कि उसमे से चिनगारियाँ उड़कर इधर-उधर न गिरे।

चिलम-बरदार—पु० [फा०] चिलम भरकर हुक्का पिलानेवाला सेवक।

चिलमिलिका—स्त्री० [स० चिर√मिल्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १. गले मे पहनने की एक प्रकार की माला। २. खद्योत। जुगनूँ। ३ बिजली।

चिलमीलिका—स्त्री०=चिलमिलिका।

चिलवाँस—पु [हिं० चिड़िया] चिड़िया फँसाने का एक प्रकार का फदा।

चिलसी—स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का सुरती का पत्ता जो कश्मीर मे होता है। २. दे० 'चिलवाँस'।

चिलहुल†—पु० [स० चिल] एक प्रकार की छोटी मछली।

चिलिम†—स्त्री०=चिलम।

चिलिया—स्त्री० [स०चिल] चिलहुल मछली।

चिलुआ†—स्त्री०=चेल्हा (मछली)।

चिल्काउर—स्त्री० [?] प्रसूता स्त्री। जच्चा।

चिल्लका—स्त्री० [स० चिल्ल√का (शब्द करना)+क टाप्] झींगुर।

चिल्लड़†—पु०=चीलर (कीड़ा)।

चिल्ल-पों—स्त्री० [हिं० चिल्लाना+अनु० पों] १. सकट पड़ने पर होनेवाली दीनतापूर्ण चिल्लाहट। जैसे—कुत्ते आदि मार पड़ने पर करते हैं। २ चिल्लाहट। शोर-गुल। जैसे—इस घर मे रोज चिल्लपों होती रहती हैं।
क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

चिल्लभक्ष्या—स्त्री० [प० त०] नख या नखी नामक गध द्रव्य।

चिल्लवाँस—स्त्री० [हिं० चिल्लाना] कष्ट, रोग आदि के समय बच्चो का चिल्लाना।

चिल्लवाना—स० [हिं० चिल्लाना का प्रे०] किसी को चिल्लाने मे प्रवृत्त करना।

चिल्ला—पु० [फा० चिल्ल] १. किसी विशिष्ट अवसर पर या किसी विशेष उद्देश्य की सिद्धि के लिए नियत किये हुए ४० दिन जिनमे बहुत-सी बातो का बचाव और बहुत-से नियमो का पालन करना पड़ता है। जैसे—(क) प्रसूता के संबध मे प्रसव के दिन से ४० दिनो का समय। (ख) किसी की मृत्यु होने पर ४० दिनो तक मनाया जानेवाला शोक। (ग) व्रत आदि के पालन के लिए ४० दिनो का समय।
मुहा०—चिल्ला खींचना या बाँधना=४० दिनो तक धार्मिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट प्रकार के व्रतो का आचरण या पालन करना।
२ पौष धनुमास के अंतिम १५ दिनो और मकर मास के आरभिक २५ दिनो का समय जिसमे बहुत कड़ी सरदी पड़ती है।
पद—चिल्ले का जाड़ा या सरदी=बहुत कड़ा जाड़ा या तेज सरदी।
पु० [?] १ कमान या धनुष की डोरी। पतचिका।
क्रि० प्र०—उतारना। —चढ़ाना।
२ पगड़ी का वह पल्ला या सिरा जिस पर कलाबत्तू का काम बना हो। ३. एक प्रकार का जंगली पेड़। ४ चीला या उलटा नाम का पकवान।

चिल्लाना—अ० [हिं० चीत्कार] १ अधिक जोर से तीखे स्वर मे मुँह से कोई शब्द बार-बार कहना। जैसे—वह पगला दिन भर गलियो मे राम राम चिल्लाता फिरता है। २ किसी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए गला फाड़कर कुछ कहना। जैसे—इस मिथ्या दोष के लगाये जाने पर वह चिल्लाकर बोल उठे। ३. अस्पष्ट तथा कर्णकटु शब्द या ध्वनि करना। शोर या हल्ला करना। जैसे—गली मे कुत्ते चिल्ला रहे थे।

चिल्लाभ—पु० [सं० चिल्ल-आ√भा (प्रतीत होना)+क] १. छोटी-छोटी चोरियाँ करनेवाला व्यक्ति। २ गिरहकट।

चिल्लाहट—स्त्री० [हिं० चिल्लाना] १ चिल्लाने की क्रिया या भाव। ऊँचे तथा अस्पष्ट शब्दो मे किया हुआ उच्चारण। २ शोर-गुल। हो-हल्ला।
क्रि० प्र०—मचना। —मचाना।

चिल्लिका—स्त्री० [स० चिल्ल+इनि+कन्, टाप्√] १ दोनो भौंहो के बीच का स्थान। २ छोटी पत्तियोवाला एक प्रकार का बथुआ नामक साग। ३ झिल्ली नामक कीड़ा।

चिल्ली—स्त्री० [सं० चिल्लि+ङीप्] १ झिल्ली नाम का कीड़ा। २. लोध। ३ बथुआ का साग। ४ एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी खाकी छाल पर सफेद चित्तियाँ होती है।
स्त्री० [illegible] =एक प्रकार का अस्त्र] १. एक प्रकार का भीषण बिजली। वज्र।

[illegible] लवाँस।

[illegible] ० चील] लड़को का एक खेल जो पेड़ो [illegible]

[illegible] गिलहर।

[illegible] ल (पक्षी)।

[illegible] ल (पक्षी)।

चीखर (ल)—पु० [हिं० चीकड (कीचड)] १ कीच। कीचड। २ गारा। (डिं०)

चीज—स्त्री० [फा० चीज] १ दैनिक उपयोग या व्यवहार मे काम आनेवाला कोई भौतिक पदार्थ। जैसे—बाजार से कई चीजें लानी है। २ किसी कला-कृति, रचना, वस्तु आदि का कोई अग या अवयव। जैसे—इस मशीन मे कोई चीज खराब जरूर है। ३ कोई उपयोगी, निराली या महत्त्वपूर्ण वस्तु। जैसे—यह भी तो कोई चीज है। ४ स्त्रियो की बोल-चाल मे कोई आभूषण। जैसे—उनसे कई बार कहा है कि लडकी को कोई चीज बनवा दें। ५. कोई उत्कृष्ट, महत्त्वपूर्ण या विचारणीय बात। जैसे—इस लेख की कई चीजे समझने और समझाने की हैं। ६ सगीत, साहित्य आदि मे कोई विशिष्ट कृति। जैसे—उन्होंने कई चीजे सुनाई।

चीठ—स्त्री० [हिं० चीकड=कीचड] गदगी। मैल।

चीठा—पु०=चिट्ठा।

चीठी—स्त्री०=चिट्ठी।

चीड—पु० [देश०] १ एक प्रकार का देशी लोहा। २ चमडा छीलकर साफ करने की क्रिया। (मोची)

पु०=चीढ।

चीड़ा—स्त्री० [स० चिड-टाप्-दीर्घ पृषो०] चीढ नामक पेड।

चीढ़—पु० [स० चीडा] एक प्रसिद्ध वडा पेड जिसकी चिकनी और नरम लकडी इमारत और सदूक आदि बनाने के काम आती है। इस लकडी मे तेल का अश अधिक होता है जो निकाला जाता और ताडपीन के तेल के नाम से विकता है। गधा बिरोजा इसी पेड का गोद है। इसके कुछ अशो का प्रयोग औषध, गध-द्रव्य आदि के रूप मे भी होता है।

†पु०=चीट (लोहा)।

चीत—पु० [स०√चि (चयन करना)+क्त-दीर्घ पृषो०] सीसा नामक धातु।

*पु०=चित्त।

†पु०=चित्रा (नक्षत्र)।

चीतकार†—पु० १=चीतकार। २ =चित्रकार।

चीतना—स० [स० चेत][वि० चीता] १ मन मे किसी प्रकार की भावना या सोच-विचार करना। सोचना। जैसे—किसी का बुरा या भला चीतना। २ याद या स्मरण करना। जैसे—विरह मे प्रिय को चीतना। अ० होश मे आना। चेतना।

स० [स० चित्रण] चित्र अकित या चित्रित करना।

चीतर—पु० दे० 'चीतल'।

चीतल—पु० [स० चित्रल] १ एक प्रकार का बारहसिंघा जिसका चमडा चित्तीदार और बहुत सुन्दर होता है। यह जलाशयो के पास झुड मे रहता है और मास के लिए इसका शिकार किया जाता है। २ एक प्रकार का चित्तीदार बडा साँप या छोटा अजगर जो खरगोश, विल्ली आदि छोटे जतुओ पर निर्वाह करता है। ३ एक प्रकार का पुराना सिक्का।

चीता—पु० [स० चित्रक, पा० चित्रो, चित्तो, प्रा० चित्तअ, बँ० चिता, गु० सिं० चित्रो, मरा० चित्ता] १ बिल्ली, शेर आदि की जाति का एक प्रसिद्ध बडा हिंसक जतु जिसके शरीर पर धारियाँ होती है। इसकी कमर पतली होती है और गरदन पर अयाल या बाल नही होते। इसकी सहायता से कुछ लोग हिरनो आदि का शिकार भी करते हैं। २. एक प्रकार का बडा क्षुप जिसकी पत्तियाँ जामुन की पत्तियो से मिलती-जुलती होती है। इसकी कई जातियाँ है जिनमे भिन्न-भिन्न रगो के सुगधित फूल लगते है। इसकी छाल और जड ओषधि के काम मे आती है।

पु० [स० चित्त] १. चित्त। मन। हृदय। दिल। २ चेतना। सज्ञा। होश-हवास।

वि० [हिं० चेतना] [स्त्री० चीती] मन मे विचारा या सोचा हुआ। जैसे—मन-चीती बात होना।

चीतावती—स्त्री० [स० चेत्] यादगार। स्मारक चिह्न।

चीत्कार—पु० [स० चीत्√कृ (करना)+अण्] १ खूब जोर से चिल्लाने की क्रिया, भाव या शब्द। चिल्लाहट। २ घोर दुःख या सकट मे पडने पर मुँह से अनायास निकलनेवाली बात या शब्द।

चीथड़ा—पु०=चिथडा (देखे)।

चीथना—स० [स० चीर्ण] १ टुकडे-टुकडे करना। फाडना। २ दाँतो से कुचलना।

चीथरा—पु०=चिथडा।

चीद—वि० [फा०] चुना या छाँटा हुआ।

चीन—पु० [स० √चि+नक् दीर्घ, चीन+अण्-लुक] १. झडी। पताका। २ सीसा नामक धातु। नाग। ३ तागा। सूत। ४ एक प्रकार का रेशमी कपडा। ५ एक प्रकार का हिरन। ६ एक प्रकार की ईख या ऊख। ७ एक प्रकार का साँवाँ (कदन्न)।

पु०[√चि+नक्, दीर्घ] १ दक्षिण-पूर्वी एशिया का एक प्रसिद्ध विशाल देश। २ उक्त देश का निवासी।

†पु० १. =चिह्न (निशान)। २ =चुनन।

चीनक—पु० [स० चीन+कन्] १ चीनी कपूर। २ चेना नामक कदन्न। ३ कगनी नामक कदन्न।

चीन-कर्पूर—पु० [मध्य० स०] चीनी कपूर।

चीन की दीवार—स्त्री० [चीन देश+फा० दीवार] १ चीन के उत्तरी भाग मे प्राय १५०० मील लबी एक दीवार जो प्राय. दो हजार वर्ष पहले बनी थी और जिसकी गिनती ससार के सात आश्चर्यजनक वस्तुओ मे होती है। २ कोई बहुत बडी अडचन या बाधा।

चीनज—पु० [स० चीन√जन्+ड] एक प्रकार का इस्पात या लोहा जो चीन से आता था।

वि० चीन देश मे उत्पन्न होनेवाला।

चीनना†—स० =चीन्हना (पहचानना)।

चीन-पिष्ट—पु० [ष० त० स०] १ सीसा नामक धातु। २ सिंदूर। ३. इस्पात (लोहा)।

चीनवंग—पु० [मध्य० स०] सीसा नामक धातु।

चीन-वास(स्)—पु० [मध्य० स०] चीन देश का बना हुआ एक प्रकार का रेशमी कपडा।

चीनांशुक—पु० [चीन-अशुक, मध्य० स०] १ एक प्रकार का लाल ऊनी कपडा जो पहले चीन से आता था। २ एक प्रकार का रेशमी कपडा।

चीना—पु० [हिं० चीन] चीन देश का वासी।

पु० [सं० चिह्न] एक प्रकार का कबूतर जिसके शरीर पर काले या लाल दाग या फूल होते हैं।

वि० चीन देश का। जैसे—चीना कपूर।

†पु० =चैना (अन्न)।

चीनाक—पु० [सं० चीन√अक् (गति)+अण्] चीनी कपूर।

चीना ककड़ी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की छोटी ककड़ी।

चीनाचंदन—पु० [हिं० पद] एक प्रकार का पक्षी जिसके पीले शरीर पर काली धारियाँ होती हैं और जिसका स्वर मनोहर होता है। यह प्रायः पाला जाता है।

चीनाबादाम—पु० [हिं० चीन+फा० बादाम] विलायती बादाम। मूँगफली।

चीनिया—वि० [देश०] चीन देश का। चीन देश-संबंधी।

चीनी—स्त्री० [चीन (देश)+ई (प्रत्य०)] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध मीठा चूर्ण जो ईख, चुकंदर, खजूर, आदि कई पदार्थों के मीठे रस को उबाल और गाढ़ा करके बनाया जाता है। इसका व्यवहार प्रायः मिठाइयाँ बनाने और पीने के लिए दूध या पानी आदि मीठा करने में होता है।

वि० चीन देश-संबंधी। चीन देश का। जैसे—चीनी भाषा, चीनी मिट्टी।

पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा।

चीनी कपूर—पु० [हिं०] एक प्रकार का कपूर जो पहले चीन देश से आता था।

चीनी कबाब—स्त्री० दे० 'कबाब चीनी'।

चीनी-चंपा—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा बढ़िया केला। चिनिया केला।

चीनी मिट्टी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की मिट्टी जो पहले-पहल चीन के एक पहाड़ से निकली थी और अब अन्य देशों में भी जहाँ-तहाँ पाई जाती है। इस पर पालिश बहुत अच्छी होती है, इसी लिए इससे खिलौने, गुलदान और छोटे बरतन बनाए जाते हैं।

चीनी मोर—पु० [हिं० चीनी+मोर] मोर की जाति का एक पक्षी जिसका माँस बहुत स्वादिष्ट होता है।

चीन्ह—पु० दे० 'चिह्न'। (अशुद्ध रूप)

चीन्हना—स० [सं० चिह्न] किसी ऐसी वस्तु या व्यक्ति को पहचान लेना जिसे पहले कभी देखा हो।

चीन्हा—पु० दे० 'चिह्न'।

पु०=परिचय (जान-पहचान)।

चीप—स्त्री० [देश०] वह लकड़ी जो जूते के कलबूत में सब से पीछे भरी या चढ़ाई जाती है। (मोची)

†स्त्री०=चिप्पड़।

†स्त्री०=चेप।

चीपड़—पु० [हिं० कीचड़] १. आँख में से निकलनेवाली सफेद रंग की लसदार मैल। आँख का कीचड़। २. दे० 'चिप्पड़'।

चीमड़—वि० [हिं० चमड़ा] १. (वस्तु) जो चमड़े की तरह कड़ी हो तथा जल्दी न टूटे। २. (व्यक्ति) जो जल्दी किसी बात या व्यक्ति का पीछा न छोड़ता हो। किसी बात या व्यक्ति के पीछे पड़ा रहनेवाला। ३. (व्यक्ति) जिससे जल्दी पैसा वसूल न किया जा सकता हो।

चीरी—पु० [सं० चिरा] [illegible] का चीर।

चीरा*—पु० [illegible]। उदा०—[illegible] आदि [illegible] चीरा। —गोरखनाथ।

चीर—पु० [√चि (ढकना)+क्रन्, दीर्घ] १. वस्त्र। कपड़ा। २. [illegible] थान, धोती आदि में [illegible] का वह अंतिम भाग [illegible] ३. रुई, कागज आदि का [illegible] पतला और [illegible] टुकड़ा। ४. पुराने कपड़े का टुकड़ा। [illegible] ५. गायों, [illegible] आदि और [illegible] ६. [illegible] ७. [illegible] ८. [illegible] ९. एक प्रकार का [illegible] १०. [illegible] ११. [illegible] १२. [illegible] मस्तक।

पु० [हिं० चीरना] १. चीरने की क्रिया या भाव।

पद—चीर-फाड़ (क) चीरने या फाड़ने का भाव या क्रिया। (ख) [illegible]।

२. चीर कर [illegible] हुई दरार या [illegible]। ३. [illegible]। ४. कुश्ती का एक दाँव या पेच जिसमें [illegible] बिलकुल अलग और [illegible] है।

चीरक—पु० [सं० चीर+कन्]१. [illegible] कोई सार्वजनिक घोषणा। २. [illegible]। ३. [illegible]। ४. [illegible]। (ग्रं०, [illegible])

चीर-चरम*—पु० [सं० चीर+चर्म] [illegible] और [illegible] आदि।

चीरना—स० [सं० चीर्ण] १. किसी चीज को एक सिरे से दूसरे सिरे तक बीच से किसी धारदार उपकरण द्वारा काट या फाड़कर अलग या टुकड़े करना। जैसे—[illegible], [illegible] या लकड़ी चीरना। २. [illegible] में कोई चीज निकाल लेना।

मुहा०—माल चीरना=अनुचित रूप से बहुत अधिक आर्थिक लाभ करना।

३. किसी बड़ी भीड़ या जल में [illegible] आगे बढ़ने के लिए मार्ग निकालना या रास्ता बनाना। जैसे—(क) पानी चीरते हुए नाव का आगे बढ़ना। (ख) भीड़ चीरकर सबके आगे पहुँचना।

चीरनिवसन—पु० [सं०] १. पुराणानुसार एक देश जो कूर्म विभाग के ईशान कोण में है। २. उक्त देश का निवासी।

चीर-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०] चेंच नाम का साग।

चीर-परिग्रह—पु०, वि० [ब० स] =चीर-वासा।

चीर-पर्ण—पु० [ब० स] साल नामक वृक्ष।

चीर-फाड़—स्त्री० [हिं० चीर+फाड़] १. चीरने और फाड़ने की क्रिया या भाव। २. नश्तर आदि से फोड़े चीरने का काम। शल्य-चिकित्सा। ३. बहुत ही अनुचित रूप से किया जानेवाला किसी साहित्यिक कृति, तथ्य, बात आदि का विश्लेषण।

चीरल्लि—पु० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का पक्षी।

चीरवासा (सस्)—पु० [सं० चीरवासस्] १. शिव। महादेव। २. यक्ष।

वि० जो चीर (छाल या वल्कल) ओढता या पहनता हो।

चीर-हरण—पु० [ष० त०] श्रीकृष्ण की एक प्रसिद्ध लीला जो इस अनुश्रुति के आधार पर है कि एक वार यमुना मे नहाती हुई गोपियो के चीर या वस्त्र लेकर वे वृक्ष के ऊपर जा बैठे थे।

चीरा—पु० [स० चीर] १ एक प्रकार का लहरिएदार रगीन कपडा जो पगड़ी वनाने के काम मे आता है। २ उक्त प्रकार के कपडे की वनी या वँधी हुई पगडी।
पु० [हिं० चीरना] १ चीरने की क्रिया या भाव। २ चीरकर वनाया हुआ क्षत या घाव।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
मुहा०—चीरा उतारना या तोड़ना=कुमारी के साथ पहले-पहल सभोग या समागम करना। (वाजारू)
३ गाँव की सीमा सूचक खभा या पत्थर।

चीरा बंद—पु० [हिं० चीरा=पगडी+फा० वद] वह कारीगर जो लोगों के लिए चीरे वाँधकर तैयार करता हो।
वि० (कुमारी या वालिका) जिसके साथ अभी तक किसी पुरुष ने सभोग या समागम न किया हो। (वाजारू)

चीरा बंदी—स्त्री० [हिं० चीरा=पगडी का कपडा+फा० वदी] १. चीरा (पगडी) वनाने या वाँधने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार की वुनावट जो पगड़ी वनाने के लिए ताश के कपडे पर कारचोवी के साथ की जाती है।

चीरि—स्त्री० [स० चि+क्रि, दीर्घ] १ आँख पर वाँधी जानेवाली पट्टी। २ धोती आदि की लाँग। ३ झींगुर।

चीरिका—स्त्री० [स० चीरि√कै (शब्द करना)+क-टाप्] झींगुर। झिल्ली।

चीरिणी—स्त्री० [स० चीर+इनि-ङीप्] वदरिकाश्रम के निकट की एक प्राचीन नदी जिसके तट पर वैवस्वत मनु ने तस्पया की थी। (महाभारत)

चीरित—भू० कृ० [स० चीर+इतच्] फटा हुआ (केवल समास मे)।

चीरितच्छदा—स्त्री० [चीरित-छद, व० स०, टाप्] पालक का साग।

चीरी (रिन्)—वि० [स० चीर+इनि] १ वल्कलधारी। २ चियडे लपटनेवाला।
पु० १ झिल्ली। झींगुर। २. एक प्रकार की छोटी मछली।
†स्त्री०=चिडी (पक्षी)।
†स्त्री० दे० 'चीढ'।
स्त्री० [स० चीर] चिट्ठी। पत्र। उदा०—सात वरस पेहली रह्यो चीरी जणहन मोकल्ये कोई।—नरपति नाल्ह।

चीरी-वाक—पु० [स० व० स] एक प्रकार का कीडा।

चीरु*—पु०=चीर।

चीरुक—पु० [स० ची√रु (शब्द करना) +क] एक प्रकार का फल जो वैद्यक मे रुचिकर और कफ-पित्त वर्द्धक माना गया है।

चीरू—पु० [स० चीर] १ एक प्रकार का लाल रग का सूत। २. चीर। कपडा।

चीरेवाला—पु० [हिं०] १ घोडों आदि की चीर-फाड करनेवाला हकीम। जर्राह। २ चिकित्सक। (मुसल० स्त्रियाँ)

चीर्ण—वि० [स०√चर् (चलना)+नक् पृषो० ईत्व] चिरा या चीरा हुआ।

चीर्ण-पर्ण—पु० [व० स०] १ नीम का पेड। २ खजूर का पेड।

चील—स्त्री० [स० चिल्ल] गिद्ध और वाज आदि की जाति की वहुत तेज उडने तथा झपट्टा मारकर चीजें छीन ले जानेवाली एक वड़ी चिडिया जो संसार के प्राय सभी गरम देशो मे पाई जाती है।
पद—चील का मूत=कोई दुर्लभ वस्तु।

चील-झपट्टा—पु० [हिं० चील+झपटना] १ चील की तरह एकाएक झपटकर किसी से कोई चीज छीन कर ले भागना। २ वच्चो का एक खेल जिसमे वे एक दूसरे के सिर पर धौल लगाते हैं।

चीलड़—पुं०=चीलर।

चीलर—पु० [देश०] पहने जानेवाले गदे कपडो अथवा कुछ पशुओ के शरीर मे पडनेवाला एक प्रकार का सफेद रग का छोटा कीडा।

चीला†—पु०=चिल्ला (पकवान)।

चीलिका—स्त्री० [स०√ला (लेना)+क—टाप्, इत्व] झिल्ली। झींगुर।

चीलू—पु० [देश०] आडू की तरह का एक प्रकार का पहाडी फल।

चील्लक—पु० [स० ची√ल्लक् (शब्द करना)+अच् पृषो० सिद्धि] झिल्ली। झींगुर।

चील्ह†—स्त्री०=चील (पक्षी)।

चील्हर—पु०=चीलर (कीडा)।

चील्ही—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का टोटका जो स्त्रियाँ वालको के कल्याणार्थ करती हैं।

चीवर—पु० [स० चि (चयन करना) +ष्वरच्, नि० सिद्धि] १. भिक्षुओं, योगियो, सन्यासियो आदि के पहनने का फटा-पुराना कपडा। २ वौद्ध भिक्षुओ का गैरिक उत्तरीय वस्त्र या चादर।

चीवरी (रिन्)—पु० [स० चीवर+इनि] १. चीवर पहननेवाला। वौद्ध भिक्षु। २ भिक्षुक। भिखमगा।

चीस*—स्त्री० १ =टीस। २ =चीख। उदा०—हसति भागि कै चीसा मारै।—कवीर।

चीसना—अ०=चीखना। उदा०—परिभरुखन रख्खिसन, कुइक चीसन मुख सासन।—चन्दवरदाई।

चीह*—स्त्री०=चीख (चीत्कार)। उदा०—मोर सोर कोकिलनि रोर, चीह पप्पहि पुकारत।—चन्दवरदाई।

चुंगना†—स०= चुगना।

चुंगल—पु० दे० 'चगुल'।

चुंगली—स्त्री० [देश०] नाक मे पहनने की एक प्रकार की नय, जिसे 'समया' भी कहते हैं।

चुंगवाना—स०=चुगवाना।

चुंगा†—पु० दे० 'चोगा'।

चुंगाना—स०=चुगाना।

चुंगी—स्त्री० [हिं० चुगल या चगुल] १ चुगल भर वस्तु। चुटकी भर चीज। २ मध्य युग मे वह कर जो पैंठो, वाजारो या मडियो मे आकर अन्न, फल आदि वेचनेवालो से उनकी विक्रय वस्तुओ आदि मे से एक-एक चुगल या चगुल भरकर लिया जाता था। ३ आज-कल नगरपालि-

कार्यों, जिला मडलो आदि मे उक्त कर का वह विकसित रूप जो बाहर से आनेवाले पदार्थों पर नगद धन के रूप मे लगता है। (आक्ट्रॉय, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)

चुंगी-कचहरी—स्त्री० [हिं० पद] नगरपालिका आदि का प्रधान कार्यालय जहाँ और काम होने के सिवा चुगी भी वसूल की जाती है।

चुंगीघर—पु० [हिं०] १ नगर की सीमा पर का वह स्थान जहाँ नगरपालिका आदि का चुगी वसूल करने का काम होता है। २. दे० 'चुगीकचहरी'।

चुंघाना—स० [हिं० चुसाना] माता का बच्चे को अपना स्तन अथवा पशुओ का अपने बच्चों को थन चूसने मे प्रवृत्त करना। चुसाकर बच्चे को दूध पिलाना।

स०=चुगाना।

चुंच—स्त्री०=चोच।

चुंचरी—स्त्री० [स० चुच√रा (लेना)+क ङीप्] वह जूआ जो इमली के चीयों से खेला जाय।

चुंचली—स्त्री०=चुचरी।

चुंचु—पु० [सं०√चच् (हिलना)+उ, पृषो० उत्व] १ छछूंदर। २ एक प्राचीन सकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदेहिक माता और ब्राह्मण पिता से कही गई है। ३ चिनियारी नाम का पौधा।

चुंचुक—पु० [स० चुचु+कन्] वृहत्सहिता के अनुसार नैर्ऋत्य कोण का एक देश।

चुंचुल—पु० [स०] विश्वामित्र का एक पुत्र जो सगीत शास्त्र का बहुत बडा पडित था।

चुंटली—स्त्री० [देश०] घुंघची। गुजा।

चुंटा—पु०=चुटा।

चुंडा—पु० [स० चुडि+अच्-टाप्] [स्त्री० अल्पा० चुडी] कूआँ। कूप।
पु० =चोटा।

चुंडित—वि० [हिं० चुटी=शिखा] चुडी या शिखावाला। शिखाधारी।

चुंडी—स्त्री०=चुदी (शिखा)।

चुंदरी—स्त्री०=चुनरी।

चुंदरीगर—पु० [हिं० चूंदरी+फा० गर] वह रँगरेज जो रँगकर चुनरी तैयार करता हो।

चुंदी—स्त्री० [स०√चुद् (प्रेरणा देना)+अच्-ङीप्-निपा० सिद्ध] कुटनी। दूती।

स्त्री० [स० चूटा ?] हिंदू पुरुषो के सिर पर की चुटिया। चोटी। शिखा।

चुंधलाना†—अ०=चौंधियाना।

अ०=चोंधराना।

चुंधा—वि० [हिं० चौ=चार+अध] [स्त्री० चुधी] १ (जीव) जिसे कुछ दिखाई न देता हो। अधा। २ अपेक्षाकृत बहुत छोटी आँखोवाला।

चुंधियाना—अ०=चौंधियाना।

चुंब—पु० [स०√चुम्ब ('चूमना')+घञ्] चुबन।

चुंबक—वि० [स०√चुम्ब+ण्वुल्-अक] १ चुबन करनेवाला। २. कामुक। ३ धूर्त्त। ४ जो ग्रथो को ध्यानपूर्वक पूरा न पढता हो, बल्कि इधर-उधर से कुछ देखकर छोड देता हो।

पु० १ वह फदा जो कूएँ से पानी भरने के समय घड़े के गले मे फँसाया जाता है। फाँस। २ एक प्रकार का पत्थर जो लोहे आदि के छोटे-छोटे टुकडो को अपनी ओर खीच लेता है। ३. लोहे आदि का बनाया हुआ वह कृत्रिम उपकरण जिसमे उक्त पत्थर के गुणो का आरोपण किया गया हो तथा जो लोहे, निकिल आदि के टुकडो को अपनी ओर खीच लेता हो। (मेगनेट) ४. लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो किसी को अपनी ओर आकृष्ट करता हो।

चुंबकत्व—पु० [स० चुम्बक+त्व] चुम्बक पत्थर का गुण या भाव।

चुंबकीय—वि० [स० चुबक+छ-ईय] १. चुबक-सबधी। २ जिसमे चुबक या उसका गुण हो।

चुंबना—स०=चूमना।

चुंबा—पु० दे० 'सुबा'। (लश०)

पु०=चुम्मा।

चुंबित—भू० कृ० [स०√चुब+क्त] १ जिसका चुबन किया गया हो। चूमा हुआ। २ किसी के साथ थोडा स्पर्श करता हुआ।

चुंबी—वि० [स०√चुब+णिनि] १ चूमनेवाला। २ जो किसी को छूता या स्पर्श करता हुआ हो। बहुत ऊँचा। जैसे—गगन-चुबी पर्वत या प्रासाद।

चुंभना—स०=चूमना।

चुअना†—अ० दे० 'चूना'।

†वि० [स्त्री० चुअनी] जो चूता हो। चूनेवाला। जैसे—चुअना लोटा।

चुआ—पु० [हिं० चौआ=चौपाया] चार पैरोवाला पशु। चौपाया।

पु० [?] १. हड्डी की नली के अन्दर का गाढा लसीला पदार्थ। गूदा। मज्जा। २ एक प्रकार का पहाडी गेहूँ। ३ दे० 'चौआ'।

चुआई—स्त्री० [हिं० चुआना] १ चुआने या टपकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ गौ-भैस आदि दुहने या दुहाने का काम या पारिश्रमिक।

चुआक—पु० [हिं० चूना=टपकना] वह छेद जिसमे से पानी चूता (अथवा जहाज के अन्दर आता) हो। (लश०)

चुआना—स० [हिं० चूनाटपकना] १. किसी तरल पदार्थ को चूने या टपकने मे प्रवृत्त करना। बूंद-बूंद गिराना या टपकाना। २ भभके आदि की सहायता से अरक, आसव आदि तैयार करना। जैसे—शराब चुआना। ३ अच्छी तरह परिष्कृत करके सयम और सावधानी से थोडा-थोडा प्रस्तुत करना या किसी के सामने लाना। उदा०—नेप मु बनाई सुचि बचन कहै चुआइ जाई तीन जरनि धरनि धन धाम की।—तुलसी।

स० दे० 'दुहाना'।

चुआव†—स्त्री०=चुआन।

चुकंदर—पु० [फा०] गाजर, शलजम आदि की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा कद जो लाल रग का होता और तरकारी बनाने के काम आता है। इसके रस से एक प्रकार की चीनी भी बनती है।

चुक†—पु०=चूक।

चुकचुकाना—अ० [हिं० चूना=टपकना] तरल पदार्थ का किसी पात्र या तल मे होनेवाले छोटे छेद के मार्ग से सूक्ष्म कणो के रूप मे बाहर निकलना। पसीजना। जैसे—थप्पड लगने पर गाल से खून चुकचुकाना।

चुकचुहिया—स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार की छोटी चिडिया जो बहुत

तड़के बोलने लगती है। २. बच्चों का एक प्रकार का खिलौना जिसे दबाने या हिलाने से चूँचूँ शब्द होता है।

चुकट—पु०[हिं० चुटका] १ चंगुल। २. चुटकी।

चुकटी†—स्त्री०=चुटकी।

चुकता—वि०[हिं० चुकना] १ (ऋण या देना) जो चुका दिया गया हो। २ (हिसाब) जिसमे लेना और देना दोनों बराबर हो गये हों।

चुकती—वि०=चुकता।

चुकना—अ०[सं० च्यव, चुक्क, प्रा० चुक्कइ, उ० चुकाइबा, पं० चुक्कणा, सिं० चुकणु, गु० चुक्वूं, मरा० चुकणें] १ (काम या बात का) पूरा या समाप्त होना। बाकी न रहना। २. (पदार्थ का) कम होते होते निःशेष या समाप्त होना। जैसे—घर मे आटा चुक गया। ३ (ऋण या देन का) पूरा-पूरा परिशोध होना। देना बाकी न रहना। जैसे—उनका हिसाब तो कभी का चुक गया। ४ (झगडा या बखेडा) तै हो जाना। निपटना। जैसे—चलो, आज यह झगड़ा भी चुका। ५ एक संयोज्य क्रिया जो मुख्य क्रिया की समाप्ति की सूचक होती है। जैसे—खेल चुकना, लड़ चुकना आदि। ६ दे० 'कूकना'।

†अ०=चूकना। उदा०—चुकइन घात मार मुठ भेरी।—तुलसी।

चुकरी—स्त्री०[देश०] रेवंद चीनी।

चुकरंड़—पु०[देश०] दो-मुँहा साँप जिसे गूँगी भी कहते हैं।

चुकवाना—स०[हिं० चुकाना का प्रे०] किसी को कुछ चुकाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—कर्ज या झगडा चुकवाना।

चुकाई—स्त्री०[हिं० चुकता] चुकने या चुकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चुकाना—स०[हिं० चुकना का स०] १ किसी से लिया हुआ धन पूरा-पूरा वापस करना। जैसे—ऋण चुकाना। २. किसी की हुई हानि को पूरा करना। क्षति-पूर्ति करना। जैसे—रेल दुर्घटना मे मरनेवाले व्यक्ति-के परिवारों को दो दो हजार रुपए सरकार ने चुकाए हैं। ३ झगड़ा या विवाद तै करना। निपटाना।

चुकाव—पु०[हिं० चुकना] चुकने या चुकाये जाने की क्रिया या भाव।

चुकावरा†—पु०[हिं० चुकाना] ऋण, देन आदि चुकाने की क्रिया या भाव। (बुन्देल०)

चुकिया—स्त्री०[देश०] तेलियों की घानी मे पानी देने का छोटा बरतन। कुल्हिया।

चुकौता†—पु०[हिं० चुकाना+औता(प्रत्य०)] १ चुकाने की क्रिया या भाव। २ रुपया चुकता पाने के समय लिखी जानेवाली पावती। रसीद।

चुकौती—स्त्री०=चुकौता।

चुक्क—पु०=चूक (खटाई)। उदा०—चुक्क लाइकै रींधे भाँटा।—जायसी।

चुक्कड़—पु०[?] पानी, शराब आदि पीने का मिट्टी का गोल छोटा बरतन। कुल्हड़। पुरवा।

चुक्का—पु० १ दे० 'चूक'। (खटाई) २. दे० 'चुक्कड'।

चुक्कार—पु०[सं०√चुक्क (पीडा देना)+अच्] चुक्क-आ√रा (लेना)+क] गरजने की क्रिया या भाव। गर्जन। गरज।

चुक्की—स्त्री०[हिं० चूकना] १ चूक। भूल। २ छल। धोखा।

चुक्कीमाली—स्त्री०[?] मुडे हुए घुटनों को पीठ के सहारे अंगौछे से कुछ ढीला बाँधकर बैठने का एक ढंग। (देहाती)

चुक्र—पु०[सं०√चक्र(तृप्त करना)+रक्, उत्व] १. चूक नाम की खटाई। चुक। महाम्ल। २ चूका नाम का खट्टा साग। ३ अमलबेत। ४. काँजी। संधान।

चुक्रक—पु०[सं० चुक्र+कन्] चूक नाम का साग।

चुक्र-फल—पु०[ब० स०] इमली।

चुक्र-वास्तुक—पु०[उपमि०स०] अमलोनी नाम का साग।

चुक्र-वेधक—पु०[ष०त०] एक प्रकार की काँजी।

चुक्रा—स्त्री० [सं० चुक्र+टाप्] १. अमलोनी नाम का साग। २ इमली।

चुक्राम्ल—पु०[सं० चुक्र-अम्ल, उपमि० स०] १. चूक नाम की खटाई। २. चूका नाम का साग।

चुक्राम्ला—स्त्री० [चुक्र-अम्ल, ब० स० टाप्] अमलोनी नाम का साग।

चुक्रिका—स्त्री० [सं० चुक्र+ठन्–इक+टाप] १ अमलोनी नाम का साग। नोनिया। २ इमली।

चुक्रिमा (मन्)—स्त्री०[सं० चुक्र+इमनिच्] खट्टापन। खटाई। खटास।

चुक्षा—स्त्री०[सं० √चष् (वध करना)+सं० बाहु० पृषो०] हिंसा।

चुखाना—स०[सं० चूषण] १ गौ, भैंस आदि दुहने के समय थन से दूध उतारने के लिए पहले उसके बछडे को थोड़ा-सा अंश पिलाना। २ कोई चीज या उसका स्वाद चखाना। ३ दे० 'चुसाना'।

चुगद—पु० [फा०] १ उल्लू पक्षी। २ उल्लू की जाति का डुडुल नामक पक्षी।

वि० बहुत बडा बेवकूफ। महामूर्ख।

चुगना—स० [सं० चयन] पक्षियों आदि का अपनी चोंच से अनाज के कण, कीडे-मकोडे आदि उठा-उठाकर खाना।

चुगल—पु०[फा०] १ चुगलखोर। २ तमाकू आदि पीने के समय चिलम के छेद पर रखा जानेवाला ककड। गिट्टक।

चुगलखोर—पु०[फा०] किसी की परोक्ष मे उसकी हानि करने के उद्देश्य से दूसरों के सम्मुख बुराई करनेवाला।

चुगलखोरी—स्त्री०[फा०] किसी की हानि करने के उद्देश्य से परोक्ष मे उसकी निन्दा करने की क्रिया या भाव। चुगलखोर का काम।

चुगलस—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की लकड़ी।

चुगलाना—स० दे० 'चुभलाना'।

चुगली—स्त्री०[फा०] किसी की हानि करने के उद्देश्य से परोक्ष मे दूसरो से की जानेवाली उसकी निंदा या शिकायत। पीठ पीछे की जानेवाली बुराई या लगाया जानेवाला अभियोग।

मुहा०—(किसी की) चुगली खाना=किसी के परोक्ष मे दूसरों मे की जानेवाली उसकी अभियोगात्मक निंदा।

चुगा—पु०[हिं० चुगना] अन्न के वे दाने आदि जो चिडियों के आगे चुगने के लिए डाले जाते हैं। चिडियों का चारा। उदा०—कपट-चुगौ दै फिरि निपट करौ बुरो।—घनानंद।

†पु०=चोगा (पहनावा)।

चुगाई—स्त्री०[हिं० चुगाना+ई(प्रत्य०)] चुगने या चुगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चुगाना—स० [हिं० चुगना] चिड़ियों को चुगने में प्रवृत्त करना। अनाज के कण इस प्रकार बिखेरना कि चिड़ियाँ चुगने लगें।

चुगुल†—पु०=चुगलखोर।

चुगुलखोरी—स्त्री०=चुगलखोरी।

चुगुली—स्त्री०=चुगली।

चुग्गा—पु० १ =चुगा। २ चोगा।

चुग्घी—स्त्री० [देश०] १ चखने की थोड़ी-सी वस्तु। २. चसका। चाट।

चुचकना—अ० [स० शुष्क] १ इस प्रकार सूखना कि ऊपरी या बाहरी तल पर झुर्रियाँ पड़ जायँ। सूखकर सिकुड़ना। जैसे—आम या चेहरा चुचकना। २ मुरझा जाना।

चुचकारना—स०=चुमकारना।

चुचकारी—स्त्री० [अनु०] चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव। चुमकार। पुचकार।

चुचाना†—अ० दे० 'चुकचुकाना'।

चूचि—स्त्री० [स०] स्तन।

चुचु—पु० [स० चञ्चु] चेंच नाम का साग।

चुचुआना—अ० दे० 'चुकचुकाना'।

चुचुक—पु० [स० चुचु√कै (शब्द करना)+क] १ कुच या स्तन के सिरे या नोक पर का भाग जो गोल घुंडी का-सा होता है। ढिपनी। २ दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। ३ उक्त देश का निवासी।

चुचुकना—अ० [स० शुष्क+ना (प्रत्य०)] १ अधिक ताप आदि के कारण किसी वस्तु का सूख जाना। २ फल आदि का इतना अधिक सूख जाना कि उसमें का रस उड़ जाय।

अ०=चुचकना।

चुचुकारना†—स० दे० 'चुमकारना'।

चुच्चु—पु० [स०] पालक की तरह का एक प्रकार का साग। चौपतिया।

चुटक—स्त्री० [हिं० चुटकना] १ चुटकने की क्रिया या भाव। २. चुटकी। ३ एक प्रकार का कोड़ा जिसका प्रयोग घोड़ों को चलाना सिखाने के लिए होता है।

पु० [?] एक प्रकार का कालीन या गलीचा।

चुटकना—स० [हिं० चुटकी] १. चुटकी से पकड़कर कोई चीज उखाड़ना या तोड़ना। जैसे—पत्तियाँ, फूल या साग चुटकना। २ चुटकी से पकड़कर शरीर का कुछ अंग जोर से दबाना। चिकोटी काटना। ३ साँप का किसी को काटना। ४ कोड़ा मारना। चाबुक चलाना।

अ० १ चुटकी बजाना। २. चुट चुट शब्द करना। उदा०—करैं चाह सौं चुटकि कै खरे उड़ौहैं मैन।—बिहारी।

चुटकला†—पु०=चुटकुला।

चुटका—पु० [हिं० चुटकी] १. बड़ी चुटकी। २ उतनी चीज जो चुटकी में आवे। जैसे—चुटका भर आटा।

चुटकी—स्त्री० [चुट चुट शब्द से अनु०] १. कोई वस्तु उठाने, दबाने, पकड़ने आदि के लिए अथवा कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए अँगूठे के सिरे से तर्जनी का सिरा मिलाने की मुद्रा या स्थिति। जैसे—गौ, भैंस दुहने या पत्तों का दोना बनाने के लिए चुटकी से काम लेना।

मुहा०—चुटकी बैठना=चुटकी की सहायता से किये जानेवाले काम का ठीक और पूरा अभ्यास होना। जैसे—जब चुटकी बैठ जायगी, तब दोने ठीक बनने लगेंगे। **चुटकी लगाना**=(क) कोई चीज उठाने, खींचने, तोड़ने, दबाने, पकड़ने आदि के लिए अँगूठे और तर्जनी की उक्त प्रकार की मुद्रा से काम लेना। जैसे—(क) उचक्के ने चुटकी लगाकर उसके जेब से नोट निकाल लिये। (ख) पत्तों को मोड़कर दोना बनाने के लिए चुटकी लगाना। (ग) चुनरी आदि रंगने के समय जगह-जगह से कपड़े के कुछ अंश पकड़कर डोरी-तागे से इस प्रकार बाँधना कि उतने अंश पर रंग न चढ़ने पावे।

२ किसी के शरीर में पीड़ा उत्पन्न करने अथवा उसका ध्यान किसी बात की ओर आकृष्ट करने के लिए अँगूठे और तर्जनी से उसके शरीर का थोड़ा-सा चमड़ा पकड़ कर दबाने की क्रिया या भाव। चिकोटी। जैसे—(क) उसने ऐसे जोर से चुटकी काटी कि चमड़ा लाल हो गया।

क्रि० प्र०—काटना।

मुहा०—चुटकी भरना=उक्त प्रकार की मुद्रा से किसी के शरीर का चमड़ा पकड़कर दबाना। चिकोटी या चुटकी काटना।

३ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप में किसी को मार्मिक कष्ट पहुँचाने, लज्जित करने या हास्यास्पद बनाने के लिए कही हुई कोई चुभती या लगती हुई व्यंग्यपूर्ण उक्ति या बात। जैसे—अपने भाषण में वे मंत्रियों पर भी चुटकियाँ लेते चलते थे।

क्रि० प्र०—लेना।

मुहा०—(किसी को) चुटकियों में उड़ाना=किसी को बहुत ही तुच्छ या हीन समझते हुए और बहुत सहज में नगण्य और हास्यास्पद ठहराना या सिद्ध करना। जैसे—पंडित जी को तो उन्होंने चुटकियों में ही उड़ा दिया।

४. किसी चीज को उठाने या देने के लिए अँगूठे, तर्जनी और मध्यमा उँगलियों के अगले सिरों को मिलाने की मुद्रा या स्थिति।

पद—चुटकी भर=किसी चीज का उतना अंश जितना उक्त प्रकार की पकड़ में आता हो अर्थात् बहुत थोड़ा। जैसे—भिखमंगे को चुटकी भर आटा दे दो।

मुहा०—चुटकी माँगना=उक्त प्रकार से थोड़ा-थोड़ा अन्न घर-घर भीख के रूप में माँगते फिरना।

५ चुमकारने, पुचकारने अथवा अपनी ओर किसी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए अँगूठे और मध्यमा के सिरों को मिलाकर इस प्रकार जोर से चटकाने की क्रिया जिससे चुट शब्द होता है। जैसे—चुटकी बजाकर तोते को पढ़ाना या बच्चे को बुलाना।

क्रि० प्र०—बजाना।

मुहा०—चुटकी देना=अँगूठे और तर्जनी की उक्त प्रकार की मुद्रा से चुट-चुट शब्द उत्पन्न करना। चुटकी बजाना। उदा०—सो मूरति तू अपने आँगन दै दै चुटकी नचाई।—सूर। **(किसी की) चुटकी या चुटकियों पर कोई काम करना**=बहुत ही थोड़े या सामान्य संकेत पर कोई काम ठीक या पूरा करना। जैसे—हमारा पुराना नौकर तो चुटकियों पर सब काम करता था। **चुटकी या चुटकियों में**=उतने ही थोड़े समय में जितना चुटकी या चुटकियाँ बजाने में लगता है; अर्थात् बहुत जल्दी या शीघ्र। जैसे—घबराते क्यों हो, सब काम चुटकियों में हुआ जाता है।

६ धातु आदि का बना हुआ वह उपकरण जो देखने में चुटकी की पकड़

के आकार का होता है और जिससे कपडे, कागज आदि पकडकर इसलिए दवाये जाते है कि वे इधर-उधर उडने या विखरने न पावे। (इस पर पहले हाथ की उँगलियो की-सी आकृति वनी रहती थी, इसी लिए इसे पजा' भी कहते हे)। ७ जरदोजी के काम मे गोटे, लचके आदि को वीच-वीच मे मोडते हुए वनाया जानेवाला लहरियेदार और सुंदर रूप जो कई प्रकार का होता है। जैसे—उस ओढनी पर किश्तीनुमा चुटकी वनी थी। ८ एक प्रकार का गुलवदन या मशरू जिसमे उक्त प्रकार का कटावदार काम होता है। ९. पैर की उँगलियो मे पहना जानेवाला एक प्रकार का चौडा छल्ला। १० कपडे की छपाई और रगाई का एक प्रकार का पुराना ढग जिसमे वीच-वीच मे कपडे का कुछ अश दवाकर रग से अलग रखा जाता था। ११ दरी की वुनावट मे ताने के सूत। १२ वदूक का वह खटका जिसे दवाने से गोली चलती है। वदूक का घोडा। (लश०) १३ पेच कसने और खोलने, वोतल का काग निकालने आदि का पेचकस। (क्व०)

चुटकुला—पु०[हिं० चुटकी] १ कोई ऐसी चमत्कारपूर्ण और विलक्षण उक्ति, कहानी आदि जिसे सुनकर सव लोग प्रसन्न हो जायँ या हँस पडे। हँसी-विनोद की कोई वढिया और मजेदार वात।

मुहा०—चुटकुला छेड़ना=कोई ऐसी अनोखी वात कहना जिससे लोगो को कौतूहल हो और वे उसकी चर्चा करने लगें या उसके सम्वन्ध मे आपस मे कुछ झगडा या विवाद करने लगे।

२ दवा का कोई ऐसा छोटा और सहज अनुयोग या नुस्खा जो वहुत गुण-कारक सिद्ध होता हो। लटका।

चुटफुट—वि०[अनु०] १ इधर-उधर फैला या विखरा हुआ, परन्तु छोटा और वहुत साधारण। जैसे—घर का चुट-फुट सामान। २ जो सव जगह न होकर कभी थोडा यहाँ और कभी थोडा वहाँ होता हो। जैसे—नगर मे हैजे से चुट-फुट मौतें होने लगी है।

स्त्री० इधर-उधर फैली हुई फुटकर और मामूली चीजे।

चुटला—पु०[हिं० चोटी] १ एक प्रकार का गहना जो सिर पर चोटी या वेणी के ऊपर पहना जाता है। २ सिर के वालो की वेणी या जूडा।

वि० दे० 'चुटीला'।

चुटाना—अ० [हिं० चोट] चोट खाना। घायल होना।

चुटिया—स्त्री०[हिं० चोट.] १ सिर के वालो की वह लट जो हिन्दू पुरुष सिर के वीचोवीच रखते है। शिखा। चुदी। चोटी।

विशेष—विस्तृत विवरण और मुहा० के लिए देखे 'चोटी'।

२ चोरो या ठगो का सरदार।

चुटियाना—स०[हिं० चोट] १ घायल या जख्मी करना। चोट पहुँचाना। २ जीव-जन्तुओ का किसी को काट या डसकर घायल करना।

चुटिला†—पु०=चुटला।

चुटीलना—स०[हिं० चोट] चोट पहुँचाना।

चुटीला—वि०[हिं० चोट+ईला (प्रत्य०)] १ चोट खाया हुआ। जिसे घाव या चोट लगी हो। २ चोट करनेवाला (जन्तु)।

वि०[हिं० चोटी] १ चोटी पर का या सिरे का सव से अच्छा और वढकर। २ ठाठ-वाटवाला। भडकीला।

पु०=चुटला।

चुटुकी—स्त्री०=चुटकी।

चुटैल—वि०[हिं० चोट] १ जो चोट खाकर घायल हुआ हो। जिसे चोट लगी हो। जैसे—इस मार-पीट मे चार आदमी चुटैल हुए हैं। २ आक्र-मण या चोट करनेवाला। (क्व०)

चुट्टना—स० दे० 'चुनना'। (राज०) उदा०—कली न चुट्टई आइ।—ढोलामारू।

चुट्टा—पु०[हिं० चोटी] वडी और भारी चोटी या उसका वना हुआ जूडा। चुटला।

चुड़—स्त्री० दे० 'चुड्ड'।

चुड़ला—पु०[स्त्री० अल्पा० चुडली]=चूडा (हाथ मे पहनने का)।

चुड़ाव—पु०[देश०] एक जगली जाति।

चुड़िया—स्त्री०=चूडी।

चुड़िहारा—पु०[हिं० चूडी+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० चुडिहारिन] १ स्त्रियो के पहनने की चूडियाँ वनानेवाला। २ चूडियाँ वेचनेवाला व्यक्ति।

चुड़क्का—पु०[हिं० चिडिया] लाल की तरह की एक छोटी चिडिया जिसकी चोच और पैर काले, पीठ मटमैली तथा पूँछ कुछ लवी होती है। चिडुक्का।

चुड़ैल—स्त्री०[स० चूडा या हिं० चुड्ड?] १ भूत की स्त्री। भूतनी। डायन। पिशाचिनी। २ वहुत ही क्रूर या दुष्ट स्वभाववाली स्त्री। ३ वहुत ही कुरूप और घृणित स्त्री।

चुड्ड—स्त्री०[स० च्युत=भग] भग। योनि। (पश्चिम)

चुड्डो—स्त्री० [हिं० चुड्ड] स्त्रियो को दी जानेवाली एक गारी। छिनाल स्त्री।

चुत—पु०[स०√चुत् (वहना)+क] गुदद्वार।

चुत्यल—वि०[हिं० चुहल] ठठोल। मसखरा।

वि०=चुत्या।

चुत्या—पु०[हिं० चोथना=नोचना] वह वटेर जिसे लडाई मे दूसरे वटेर ने घायल किया हो, और उसके पर आदि चोथ या नोच लिये हो।

वि० चोथा या नोचा-वकोटा हुआ।

चुदक्कड़—वि०[हिं० चोदना] वहुत अधिक चोदनेवाला। अत्यन्त कामी।

चुदना—अ० [हिं० चोदना] स्त्री का पुरुष के द्वारा चोदा जाना।

चुदवाई—स्त्री०[हिं० चुदवाना] चुदवाने की क्रिया, भाव या पुरस्कार।

चुदवाना—अ, स० दे० 'चुदाना'।

चुदवास—स्त्री०[हिं० चुदवाना+आस (प्रत्य०)] स्त्री की सभोग कराने की इच्छा। मैथुन कराने की कामना।

चुदवैया—पु०[हिं० चोदना+वैया (प्रत्य०)] स्त्री के साथ प्रसग करने या सभोग करनेवाला।

चुदाई—स्त्री०[हिं० चोदना] १. चोदने की क्रिया या भाव। स्त्री-प्रसग। मैथुन। २. उक्त क्रिया के वदले मे लिया या दिया जानेवाला धन।

चुदाना—अ०[हिं० चोदने का प्रे०] स्त्री का पुरुष से प्रसग या सभोग कराना।

चुदास—स्त्री०[हिं० चोदना+आस (प्रत्य०)] स्त्री-प्रसग करने की प्रवल इच्छा या कामना।

चुदासा—पु०[हिं० चोदना] [स्त्री० चुदासी] वह पुरुष जिसे स्त्री-प्रसग करने की प्रवल इच्छा या कामना हो।

चुदौवल—स्त्री० [हिं० चोदना] स्त्री के साथ पुरुष के प्रसंग या संभोग करने की क्रिया या भाव।

चुन—पु० [सं० चूर्ण, हिं० चून] १. गेहूँ, जौ आदि का आटा। २. चूर्ण। बुकनी।

चुनचुना—पु० [अनु०] पेट में उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के सफेद रंग के लंबोतरे कीड़े जो मलद्वार से मल के साथ बाहर निकलते हैं।

मुहा०—चुनचुना लगना=चुभती या लगती हुई बात सुनने पर बहुत बुरा लगना।

वि० [देश०] जिसके स्पर्श करने से हलकी जलन होती हो।

क्रि० प्र०—लगना।

चुनचुनाना—अ० [अनु०] [भाव० चुनचुनाहट, चुनचुनी] १. शरीर के किसी अंग में रह-रहकर हलकी सनसनी और जलन-सी होना। जैसे—घाव चुनचुनाना। २. कोई तीक्ष्ण वस्तु खाने अथवा किसी अंग में उसका स्पर्श होने पर हलकी जलन होना। जैसे—सूरन खाने से गला अथवा राई का लेप करने से किसी अंग का चुनचुनाना। ३. बच्चों का धीरे-धीरे चीं-चीं शब्द करते हुए रोना। (क्व०)

चुनचुनाहट—स्त्री० चुनचुनी।

चुनचुनी—स्त्री० [हिं० चुनचुनाना] १. चुनचुनाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. हलकी जलन।

स्त्री० दे० 'चुलचुली'।

चुनट—स्त्री० दे० 'चुनना'।

चुनती—स्त्री० =चुनट (चुनन)।

चुनन—स्त्री० [हिं० चुनना] १. चुनने की क्रिया या भाव। २. अनाज में का वह रद्दी अंश जो उसमें से चुनकर अलग किया जाता है। जैसे—सेर भर दाल में से आधा पाव चुनन निकली है। ३. कपड़े को जगह-जगह से मोड़ या दबा कर उसमें सुंदरता लाने के लिए डाली या बनायी जानेवाली परतें। कपड़े में डाला जानेवाला बल या सिकन। जैसे—साड़ी की चुनन। ४. कुरते, दुपट्टे आदि में चुटकी से चुनकर या उंगली के नीचे से दबाकर डाली या बनाई जानेवाली छोटी-छोटी रेखाएँ या सिकनें जो देखने में सुंदर जान पड़ती हैं।

चुननदार—वि० [हिं० चुनन+फा० दार] जिसमें चुनन पड़ी हो। जो चुना गया हो।

चुनना—स० [सं० चयन] १. बहुत-सी चीजों में से अपनी आवश्यकता, इच्छा, रुचि आदि के अनुसार अच्छी या काम की चीजें छाँटकर अलग करना। जैसे—(क) पढ़ने के लिए किताब या पहनने के लिए कपड़ा चुनना। (ख) चुन-चुनकर गालियाँ देना। २. आज-कल राजनीतिक क्षेत्र में, कई उम्मीदवारों में से किसी को अपने प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित करना। जैसे—नगरपालिका या राज-सभा के लिए सदस्य चुनना। ३. कहीं पड़ी या रखी हुई छोटी चीजें उठाना या लेना। जैसे—कबूतरों या मुर्गियों का जमीन पर पड़े हुए दाने चुनना। चुगना। ४. पौधों में लगे हुए फूलों आदि के सम्बन्ध में, उँगलियों या चुटकी से तोड़कर इकट्ठा करना। जैसे—माली का कलियाँ या फूल चुनना। ५. एक में मिली हुई कई तरह की चीजों में से अच्छी और काम की चीजें एक ओर करना और फालतू या रद्दी चीजें अलग करना। जैसे—चावल या दाल चुनना, अर्थात् उसमें मिले हुए कंकड़, तिनके आदि उठा-उठाकर अलग करना या फेंकना। ६. किसी स्थान पर बहुत-सी चीजें क्रम से और सजाकर यथा-स्थान रखना। जैसे—अलमारी में किताबें चुनना, मेज पर थाली चुनना। ७. दीवारों की जुड़ाई में क्रम से और ठीक जगह से ईंटें, पत्थर आदि बैठाना या लगाना। जैसे—इस मकान की दीवारें चुनने में ही दस दिन लग गये।

मुहा०—(किसी को) दीवार में चुनना=प्राचीन युग में किसी को प्राण-दंड देने के लिए खड़ा करके उसके आस-पास या चारों ओर ईंट-पत्थर आदि की दीवार या दीवारें उठाना, जिससे वह घुटने के कारण [illegible] उसी में मर जाय।

८. उँगलियों की सहायता से, [illegible] में डालने के लिए [illegible] पास-पास [illegible] मोड़ते हुए उसमें छोटी-छोटी सिकुड़नें या [illegible] डालना या बनाना। जैसे—दुपट्टा चुनना। [illegible] को बार-बार इधर-उधर [illegible] नीचे [illegible] बनाना। जैसे—जूड़ा या चोटी [illegible] पर टाँकना या रखना।

चुनरिया†—स्त्री० चुनरी।

चुनरी—स्त्री० [हिं० चुनना] १. [illegible] एक प्रकार का रंगीन [illegible] लाल रंग का [illegible] जिसके बीच में पास-पास थोड़ी-थोड़ी दूर पर सफेद अथवा किसी दूसरे रंग की बुंदकियाँ होती थीं। इस कपड़े का उपयोग स्त्रियाँ साड़ी के रूप में भी और [illegible] के रूप में भी करती थीं। २. चुन्नी नामक रत्न का छोटा टुकड़ा।

चुनवट—स्त्री०=चुनट।

चुनवाँ—वि० [हिं० चुनना] १. चुना हुआ। २. [illegible]। बढ़िया।

पु० [हिं० चुनी या चून (बच्चों का नाम)] [स्त्री० चुनियाँ] १. वह छोटा बच्चा जो अभी [illegible] हो। २. [illegible]।

चुनवाना—स० [हिं० चुनना का प्रे०] चुनने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को चुनने में प्रवृत्त करना।

चुनाँ—वि० [फा०] इस प्रकार का। ऐसा। [illegible] यौ० के आरंभ में प्रयुक्त। जैसे—चुनाँचे, चुनाँ-चुनीं आदि।

चुनाँ, चुनी—स्त्री० [फा०] १. किसी के आदेश, कथन आदि के संबंध में यह कहना या पूछना कि ऐसा क्यों होना चाहिए अथवा ऐसा अनुचित क्या है। २. व्यर्थ की आपत्ति या विरोध। जैसे—अब चुनाँ-चुनी मत करो, हम जो कहते हैं, वह करो।

चुनाँचे—अव्य० [फा० चुनाँचुः] इसलिए। अतः।

चुनाई—स्त्री० [हिं० चुनना] १. चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. कोई चीज चुनने का ढंग, प्रणाली या स्वरूप। जैसे—इस दीवार की चुनाई कुछ टेढ़ी हुई है।

चुनार—पु० [हिं० चूना+गर] चूना बनाने का काम या पेशा करनेवाला।

चुनाना—स०=चुनवाना।

चुनाव—पु० [हिं० चुनना] १. चुनने की क्रिया या भाव। २. बहुत-सी वस्तुओं आदि में से अपनी रुचि, पसन्द, विवेक आदि के अनुसार कोई चीज अंगीकार, ग्रहण करने या ले लेने का कार्य। जैसे—शिक्षा अधिकारी पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चुनाव करेंगे। ३. किसी पद के लिए

कई उम्मीदवारो मे से किसी एक को मतो या वहुमत के आधार पर अपना प्रतिनिधि चुनने का कार्य या व्यापार।

मुहा०—चुनाव लड़ना=निर्वाचन मे उम्मीदवार के रूप मे खडे होना। ४ वह चीज, वात या वस्तु जो आवश्यकता, रुचि आदि के अनुसार चुनी जाय। जैसे—यह भी तो आप ही का चुनाव है।

चुनावट—स्त्री०=चुनट।

चुनाव-याचिका—स्त्री० [हिं० पद] विधिक क्षेत्र मे, वह याचिका या आवेदन-पत्र जो किसी विशिष्ट न्यायालय मे इस आधार पर तथा इस उद्देश्य से किया जाता है कि प्रतिनिधि रूप मे अमुक सदस्य का चुनाव अवैध रूप से हुआ है, अत यह चुनाव रद्द किया जाय। (इलेक्शन पेटिशन)

चुनिंदा—वि० [हिं० चुनना+फा० इदा (प्रत्य०)] १. चुना या छँटा हुआ। २ अच्छा। श्रेष्ठ। ३ गण्य-मान्य या प्रतिष्ठित।

चुनिया गोंद—पु०[हिं० चूना+गोंद]ढाक या पलास का गोंद। कमरकस।

चुनी—स्त्री०[स० चूर्णी]१ मोटे अन्न, दाल, आदि का पीसा हुआ आटा या चूर्ण जो प्राय गरीव लोग खाते है।

पद—चुनी-भूसी। (देखे)

†स्त्री०=चुन्नी।

चुनी भूसी—स्त्री० [हिं०] मोटे अन्न का पीसा हुआ चूर्ण, चोकर आदि।

चुनैटी†—स्त्री०=चुनौटी।

चुनौटिया—पु० [हिं० चुनौटी] एक प्रकार का खैरा या कान-रेजी रग जो आकिलखानी रग से कुछ अधिक काला होता है।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

चुनौटी—स्त्री०[हिं० चूना+औटी (प्रत्य०)] वह छोटी डिविया जिसमे पान, सुरती आदि के साथ खाने के लिए गीला चूना रखा जाता है।

चुनौती—स्त्री०[हिं० चुनना या चुनाव]१ किसी को ललकारते हुए उससे यह कहना कि या तो तुम हमारी वात मान लो या यदि अपनी वात पर दृढ रहना चाहते हो तो हमसे लड-झगड़कर या वाद-विवाद आदि के द्वारा निपटारा कर लो। अपना कथन या पक्ष पुष्ट या सिद्ध करने अथवा अपनी वात मनवाने के लिए किसी को उत्तेजित करते हुए आकर सामना करने के लिए कहना। प्रचारणा। २ इस प्रकार कही हुई वात।

क्रि० प्र०—देना।

†स्त्री०=चुनट (चुनन)।

चुन्नट†—स्त्री०=चुनट।

चुन्नन—स्त्री०=चुनन।

चुन्ना—पु० दे० 'चूना'।

स० दे० 'चुनना'।

प०[मुन्ना का अनु०] छोटे वच्चो को प्यार से वुलाने का शब्द।

चुन्नी—स्त्री० [स० चूर्णी]१ किसी प्रकार के रत्न विशेपत. मानिक का वहुत छोटा टुकड़ा या नग। २ सुनहले-रुपहले सितारे जो स्त्रियाँ शोभा के लिए कपोलो और मस्तक पर लगाती है। चमकी।

मुहा०—चुन्नी रचना=मस्तक और कपोलो पर सितारे या चमकी लगाना। ३ अनाज के दानो का चूरा या छोटे-छोटे टुकडे। ४ लकडी को आरे से चीरने पर निकलनेवाला उसका चूरा या वुरादा। कुनाई। ५. एक प्रकार का छोटा कीडा।

२—३४

चुप—वि०[स० चुप्, उ० वँ० चुप; प० चुप्प, सिं० चुपु; गु०, मरा० चुप] १ जो कुछ भी वोल न रहा हो। जिसके मुँह से कोई वात या शब्द न निकल रहा हो। मौन। जैसे—सव लोग चुप थे।

पद—चुप-चाप। (देखें)

मुहा०—चुप नाधना, मारना, लगाना या साधना=वोलने का अवसर या आवश्यकता होने पर भी जान-बूझकर कुछ न वोलना और चुप रहना। उदा०—गुस्सा चुप नाध के निकालते है।—इन्शाउल्ला। २ (यौ० के आरभ मे) इस प्रकार चुपचाप और चोरी से काम करनेवाला कि औरो को पता न लगे। जैसे—चुप छिनाल।

स्त्री० विलकुल चुप रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुप्पी। मौन। जैसे—(क) सवसे भली चुप। (ख) एक चुप सौ वातों को हराती है।

स्त्री०[?] पक्के लोहे की वह तलवार जिसे टूटने से वचाने के लिए ऊपर से कच्चा लोहा लगा रहता है।

चुपका—वि०[हिं० चुप] [स्त्री० चुपकी] १ जो विलकुल चुप हो। मौन।

मुहा०—चुपके से=(क) विना कुछ भी कहे-सुने। विलकुल चुपचाप। जैसे—चुपके से हमारे रुपए चुका दो। (ख) इस प्रकार जिसमे किसी को कुछ भी पता न चले। जैसे—वह किताव उठाकर चुपके से चलता वना।

२. दे० 'चुप्पा'।

पु० विलकुल चुप रहने की अवस्था या भाव। चुप्पी। मौन।

क्रि० प्र०—साधना।

पु० [?] एक प्रकार का चाहा पक्षी जिसकी चोच नुकीली और लवी होती है।

चुपकाना—स०[हिं० चुपका]१ चुप या मौन कराना। २ वोलने से रोकना।

चुपकी†—स्त्री०=चुप्पी।

चुपचाप—अव्य० [हिं०चुप+अनु० चाप] १ विना कुछ भी कहे-सुने। विलकुल चुप या मौन रहकर। जैसे—वह चुप-चाप यहाँ से उठकर चला गया। २ इस प्रकार छिपे-छिपे या धीरे से कि किसी को पता तक न लगे। जैसे—घर मे लोगो के जागते ही चोर चुपचाप निकल भागा। ३ विना कोई उद्योग या प्रयत्न किये। जैसे—यो चुपचाप बैठे रहना ठीक नहीं है। ४. धीर और शात भाव से। जैसे—यह लडका चुपचाप बैठना तो जानता ही नहीं।

चुपचुप=अव्य० दे० 'चुपचाप'।

चुप-चुपाते†—अव्य० वि०=चुपचाप।

चुपछिनाल—स्त्री० [हिं० पद] छिपे-छिपे व्यभिचार करनेवाली स्त्री।

वि० चुप-चाप अथवा छिपे-छिपे सव प्रकार के दुष्कर्म करनेवाला।

चुपड़ना—स०[हिं० चिपचिपा] १ किसी वस्तु के तल पर किसी गाढे चिकने पदार्थ का हलका लेप करना। जैसे—रोटी पर घी या सिर पर तेल चुपडना। २ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार की वात का किसी पर आरोप करना या भार रखना। जैसे—सव दोप हमारे ही सिर चुपड़ते चलो। ३ कोई विगड़ी हुई वात वनाने के लिए चिकनी-चुपडी या चापलूसी की वातें करना।

चुपड़ा—वि०[हिं० चुपड़ना] [स्त्री० चुपडी] जिसकी आँखो मे बहुत कीचड हो। कीचड़ से भरी आँखोवाला।

चुपरना—स०=चुपडना।

चुपरी आलू—पु०=रसालू (पिंडालू)।

चुपाना—अ० [हिं० चुप] चुप हो जाना। मौन रहना। न बोलना। स० किसी को चुप या मौन कराना। उदा०—मैं आज चुपा आई चातक।—महादेवी।

चुप्पा—वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुप्पी] १ बहुत कम बोलनेवाला। जो किसी बात का जल्दी कोई उत्तर न दे। २ जो अपने मन का भाव सहसा दूसरो पर प्रकट न होने दे। मन की बात मन मे ही रखनेवाला। घुन्ना।

चुप्पी—स्त्री०[हिं० चुप]बिलकुल चुप रहने की अवस्था या भाव। मौन।

क्रि० प्र०—लगाना।—साधना।

चुबलाना—स०=चुमलाना।

चुभकना—अ० [अनु०]पानी मे डूबते हुए चुभ-चुभ शब्द करते हुए गोता खाना। बार-बार डूबना-उतराना।

चुभकाना—स०[अनु०]पानी मे डुबाकर इस प्रकार बार-बार गोते देना कि मुँह से चुभ-चुभ शब्द निकलने लगे।

चुभकी—स्त्री०[अनु० चुभ-चुभ] १. चुभकने की क्रिया या भाव। २. गोता। डुबकी।

चुभन—स्त्री०[हिं० चुभन]१. चुभने की क्रिया या भाव। २ किसी के चुभने के कारण होनेवाली टीस या पीड़ा।

चुभना—अ०[अनु०] १. दाब पडने पर किसी नुकीली चीज का सिरा अदर घुसना या धँसना। जैसे—पैर मे काँटा या हाथ मे सूई चुभना। २. कोई बात मन को उसी प्रकार कष्टदायक जान पडना जिस प्रकार किसी चीज का चुभना कष्टदायक होता है। जैसे—हँसी मे कही हुई उसकी वह बात भी मेरे कलेजे (या मन) मे चुभ गई। ३. उक्त कथन आदि का मन मे प्रविष्ट होकर अच्छी तरह स्थित होना। ४ किसी चीज या बात का अपने गुण, रूप आदि के कारण मन मे घर करना। उदा०—टरति न टारे यह छवि मन मे चुभी।—सूर।

चुभर चुभर—अव्य० वि० [अनु०] इस प्रकार कि मुँह से चुभ-चुभ शब्द निकले। जैसे-कुत्ता चुभर चुभर पानी पीता है।

चुभलाना—स०[अनु०] मुँह मे कोई खाद्य पदार्थ रखकर उसे जीभ से बार-बार हिलाकर इधर-उधर करना और इस प्रकार उसका रस चूसना या स्वाद लेना।

चुभवाना—स०[हिं० चुभना का प्रे०] किसी को कुछ चुभाने मे प्रवृत्त करना।

चुभाना—स०[हिं० चुभना का प्रे०] ऐसी क्रिया करना जिससे नुकीली चीज या उसका सिरा अन्दर धँसे। गडाना। जैसे—किसी के शरीर मे काँटा या सूई चुभाना।

चुभीला*—वि०[हिं० चुभना]१. जो शरीर मे चुभता हो, अर्थात् नुकीला। २ जो मन मे खटकता हो। ३ जो मन मे बरबस घर कर लेता हो; अर्थात् मनोहर या मोहक।

चुभोना†—स०=चुभाना।

चुभौना—वि०=चुभीला।

चुमकार—स्त्री०[हिं० चूमना+कार]१. चुमकारने की क्रिया या भाव। पुचकार। २ किसी को चूमने के समय मुँह से निकलनेवाला चुम शब्द।

चुमकारना—स० [हिं० चुमकार] किसी को अनुरक्त, आकृष्ट या शात करने के लिए चूमने का-सा चुम चुम शब्द मुँह से निकालते हुए उससे दुलार या प्रेम करना। पुचकारना। जैसे—रोते या बच्चे को चुमकारना।

चुमकारी—स्त्री०=चुमकार।

चुमवाना—स०[हिं० चूमना का प्रे०] किसी को कुछ चूमने मे प्रवृत्त करना। चुबन कराना।

चुमाना—स०[हिं० चूमना]चूमने मे प्रवृत्त करना।

चुम्मक†—पु०=चुबक।

चुम्मा—पु० [हिं० चूमना]किसी को, विशेषत प्रिय को चूमने की क्रिया। चुबन।

पद—चुम्मा-चाटी। (देखें)

चुम्मा-चाटी—स्त्री०[हिं० चूमना+चाटना]किसी को बार-बार चूमने और उसके अगो को चाटने या उन पर मुँह रखने की क्रिया या भाव।

चुर—वि० [√चुर् (चुराना)+क]चोरी करनेवाला।

†वि०[सं० प्रचुर]बहुत अधिक या ज्यादा।

पुं० १. जंगली हिंसक पशुओ के रहने का गड्ढा। माँद। २. कुछ लोगो के मिलकर बैठने का स्थान। उदा०—घाट, बाट, चौपार, चुर, देवल, हाट, मसान।-भगवतरसिक।

पुं०[अनु०]कड़ी चीजो; सूखे पत्तो आदि के दबकर टूटने से होनेवाला चुर शब्द।

चुरकट—वि० १=चिरकुट। २=चुरकुट।

चुरकना—अ० [अनु० चुर चुर] १. चूर-चूर होना। २ चटकना, दरकना या फटना।

†अ०=चुरगना।

चुरकी†—स्त्री०[हिं० चोटी] सिर पर की चुटिया। चोटी। शिखा।

चुरकुट—वि० [हिं० चूर+कूटना]१ चकनाचूर या चूर-चूर किया हुआ। चूर्णित। २. घबराया, डरा या सहमा हुआ। उदा०—कुरकुट सुनि चुरकुट भइ बाला।—नददास।

चुरकुस—वि०[हिं० चूर] जो चूर-चूर हुआ या किया गया हो। चकनाचूर। पु० चूर्ण। बुकनी।

चुरगना—अ०[चुर चुर से अनु०]१ प्रसन्न या मगन होकर बातें बोलना या मुँह से शब्द निकालना। जैसे—चिड़ियो का चुरगना। २ किसी व्यक्ति का मगन होकर अपने सबंध मे कुछ बढ-बढकर परन्तु धीरे-धीरे बातें करना। जैसे—आज चुपचाप मोहन का चुरगना सुनो।

चुरगम—स्त्री०[हिं० चुरगना]१. आनद या मगन होकर की जानेवाली बातें। २ आपस मे बहुत धीरे-धीरे की जानेवाली बातें। काना-फूसी। जैसे—उन लोगो की आपस मे खूब चुरगम हो रही थी।

चुरचुरा—वि०[अनु०]१. (खाद्य वस्तु) जिसे खाने पर मुँह से चुर चुर शब्द निकले। खस्ता। जैसे—चुरचुरा पापड। २ (वस्तु) जो टूटते समय चुरचुर शब्द करती हो।

चुरचुराना—अ० [अनु०] १ चुरचुर शब्द उत्पन्न होना या निकलना।

२. (किसी वस्तु का) चुर-चुर शब्द करते हुए चूरचूर या टुकडे-टुकडे होना।

स० १. चुरचुर शब्द उत्पन्न करना या निकालना।२. इस प्रकार चूर करना या तोडना कि चुर चुर शब्द होने लगे।

चुरट—पु०=चुरुट।

चुरना†—अ०[स० चूर=जलना, पकना]१ खाद्य पदार्थ का आँच पर पकना विशेषत खौलते हुए पानी मे उबलकर पकना। जैसे—चावल या दालचुरना। २. आपस मे धीरे-धीरे गुप्त या रहस्यपूर्ण बाते होना।

†अ० चोरी जाना। चुराया जाना ।

†पु०=चुनचुना (कीड़ा)।

चुरमुर—पु० [अनु०] करारी, कुरकुरी या खरी वस्तु के टूटने का शब्द। जैसे—भुने हुए चने या सूखी पत्तियो का चुरमुर बोलना।

†वि०=चुरमुरा।

चुरमुरा—वि० [अनु०] (वस्तु) जो दवाये या तोडे जाने पर चुरमुर शब्द करे। करारा।

चुरमुराना—अ० [अनु०] चुरमुर शब्द करते हुए चूर होना।

स० चुरमुर शब्द करते हुए चूर करना या तोडना।

चुरवाना—स०[हिं०चुराना=पकाना] चुरने अर्थात् उबलने और पकने मे प्रवृत्त करना।

स०[हिं० चुराना=चोरी करना]चुराने या चोरी करने मे प्रवृत्त करना। चोरी कराना।

चुरस—स्त्री० [देश०] दबने, मुड़ने आदि के कारण पडनेवाली शिकन। सिकुडन।

पु०=चुरुट।

चुरा†—पु०=चूरा।

†—पु०=चूडा।

चुराई—स्त्री०[हिं० चुरना] चुरने अर्थात उबलने की क्रिया या भाव।

स्त्री०[हिं० चुराना] चुराने की क्रिया या भाव।

चुराना—स०[स० चुर=चोरी करना] १ किसी की कोई वस्तु बिना उसकी अनुमति के तथा छलपूर्वक कही से उठाकर अपने उपयोग के लिए ले जाना। चोरी करना। जैसे—किसी की कलम या किताब चुराना। २ किसी दूसरे का कोई भाव, विचार आदि अपना बनाकर कहना या लिखना। छलपूर्वक अपना बना लेना। ३ इस प्रकार बरबस अपने अधिकार या वश मे कर लेना कि सहसा किसी को पता न चले। जैसे—किसी का चित्त या मन चुराना। ४ किसी वस्तु को इस प्रकार सुरक्षित रखना कि कोई उसे देखने न पावे। छिपाकर रखना। जैसे—गाय का अपने थन मे दूध चुराना। ५ भय, सकोच आदि के कारण कोई चीज या बात दबा रखना और दूसरो के सम्मुख न लाना अथवा उन्हे न बतलाना। जैसे-(क) रमणी का आँखे चुराना। (ख) मित्रो से विवाह का समाचार चुराना। ६ आवश्यकता पडने पर ठीक या पूरा प्रयोग न करना। जैसे—काम करने से जी चुराना।

स०[हिं० चुरना का स०] किसी तरल पदार्थ को उबालकर अच्छी तरह गरम करते हुए पकाना। चुरने मे प्रवृत्त करना। जैसे—हाँडी मे चावल या दाल चुराना।

चुरिला—पु०=चुडिला।

चुरिहारा†—पु०=चुडिहारा।

चुरी—स्त्री०[स०]छोटा कूआँ।

†स्त्री०=चूडी।

चुरुट—पु० [अ० शेरूट—चेरूट] तबाकू के पत्तो के चूरे की बनाई हुई बडी बत्ती जिसका धूआँ लोग पीते है। सिगार।

चुरू—पु०=चुल्लू। उदा०—एक चुरू रस भरै न हिया।—जायसी।

चुरैल—स्त्री०=चुडैल।

चुर्ट—पु०=चुरुट।

चुर्स†—पु०=चुरुट।

†स्त्री०=चुरस।

चुल—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना से]१. शरीर के किसी अग के मले या सहलाए जाने की इच्छा। खुजलाहट। खुजली। २ प्रसग या सभोग की प्रबल इच्छा या कामना। काम-वासना। ३. किसी प्रकार की प्रबल इच्छा, कामना या वासना।

क्रि० प्र०—उठना।—मिटना।—मिटाना।

†स्त्री०=चुर (माँद)। उदा०—तेंदुओ के आकार स्पष्ट दिखलाई पडने लगे उनकी चुल भी दिखलाई पडी।—वृंदावनलाल वर्मा।

चुलका—स्त्री०=चुलुका।

चुलचुलाना—अ०[अनु०] १. शरीर के किसी अग मे ऐसी हलकी जलन या सुरसुरी होना कि उसे खुजलाने को जी चाहे। हलकी खुजली होना। २. प्रसग या सभोग की प्रबल कामना होना। ३ चचलतापूर्वक इधर-उधर हाथ-पैर करना या चीजे हटाना-बढ़ाना। चिलबिल्लापन करना।

चुलचुलाहट—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना] चुलचुलाने की क्रिया या भाव।

चुलचुली—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना] १. शरीर मे होनेवाली हलकी खुजली। २ काम-वासना। चुल।

चुलबुल—स्त्री०[स० चल और बल] १ चुलबुलाने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुलबुलाहट। २. चचलता। चपलता।

चुलबुला—वि०[हिं० चुलबुलाना] [स्त्री० चुलबुली] १ उमग के कारण जिसके अग बहुत अधिक हिलते-डोलते रहते हो। चचल। चपल। २ दुष्ट। नटखट। पाजी।

चुलबुलाना—अ० [स० चल=चचल अथवा अनु०] १ उमग, यौवन आदि के कारण बार-बार अग हिलाना-डुलाना। चुलबुल करना। २. २ चचलता या चपलता दिखलाना।

चुलबुलापन—पु० [हिं० चुलबुला+पन (प्रत्य०)] १ चुलबुले होने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुलबुलाहट। २ चचलता। चपलता। शोखी।

चुलबुलाहट—स्त्री०=चुलबुलापन।

चुलबुलिया—वि०=चुलबुला।

चुलहाई—वि०[हिं० चुलहाया का स्त्री०] (स्त्री) जिसमे काम या सभोग की वासना अधिक हो।

स्त्री० छिनाल। पुंश्चली।

चुलहाया—वि० [हिं० चुल+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० चुलहाई] जिसमे काम-वासना की अधिकता या प्रबलता हो।

चुलाना—स० =चुआना।

चुलाव—पुं० [हिं० चुलाना=चुआना] चुलाने अर्थात् चुआने की क्रिया या भाव।

पुं० [हिं० पुलाव का अनु०] पुलाव की तरह पकाये हुए ऐसे चावल जिनमें मांस न पड़ा हो।

चुलियाला—पुं० [?] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १३ और १६ के विश्राम से २९ मात्राएँ होती हैं। इसके अंत में एक जगण और एक लघु होता है। दोहे के अंत में एक जगण और एक लघु जोड़ने से यह छंद बनता है। कोई इसके दो और कोई चार पद मानते हैं। जो दो पद मानते हैं वे दोहे के अंत में एक जगण और एक लघु रखते हैं। जो चार पद मानते हैं, वे दोहे के अंत में एक यगण रखते हैं।

चुली†—स्त्री०[हिं० चुल्लू] १. धार्मिक दृष्टि से कोई चीज दान करने के लिए हथेली में जल लेकर किया जानेवाला संकल्प। २. दे० 'चुल्लू'।

चुलुक—पुं० [सं० चुल्(ऊँचा होना)+उक, बा०] १. उतना जल जितने में उड़द का दाना डूब जाय। २. बहुत अधिक कीचड़ या दलदल। ३. हाथ में पानी लेने के लिए हथेली का बनाया हुआ चुल्लू। ४. एक प्रकार का पुराना बरतन जिससे अनाज आदि नापते थे। ५. एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

चुलुका—स्त्री०[सं० चुलुक+टाप्] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

चुलुपा—स्त्री० [सं० चुलु√पा (रक्षा करना)+क-टाप्] बकरी।

चुलूक*—पुं० =चुल्लू।

चुल्ल—वि०[सं० क्लिन्न+लच्, चुल् आदेश] जिसकी आँखों में कीचड़ भरा हो।

स्त्री० =चुल।

चुल्लक—पुं०[सं० चुल्ल+कन्] चुल्लू।

चुल्लकी—स्त्री० [सं०√चुल्ल् (क्रीड़ा करना)+ण्वुल्-अक+ङीप्] शिंशुमार या सूँस नामक जल-जंतु।

चुल्ला—पुं०[सं० चूडा=वलय] जुलाहों के करघे में का काँच का छोटा छल्ला।

वि० =चुल्ली (चंचल और दुष्ट)।

चुल्लि—स्त्री०[सं०√चुल्ल्+इनि]१. चूल्हा। २. चिता।

चुल्ली—वि०[हिं० चुल] १. चुलबुला। चंचल। २. चिलबिल्ला। नटखट। पाजी।

स्त्री० [सं० चुल्लि+ङीप्]=चुल्लि।

†स्त्री० =चुटी।

चुल्लू—पुं० [सं० चुलुक] १. उँगलियों को अंदर की ओर कुछ मोड़कर गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें। २. उतनी वस्तु जितनी हाथ की उक्त मुद्रा में आती है।

पद—चुल्लू-भर=उतना कम या थोड़ा (तरल पदार्थ) जितना एक बार चुल्लू में आता हो।

मुहा०—चुल्लू चुल्लू साधना=थोड़ा-थोड़ा करके किसी प्रकार का अभ्यास, संग्रह या साधन करना। चुल्लू भर पानी में डूब मरना=बहुत ही लज्जाजनक स्थिति में आना, पड़ना या होना। किसी को मुँह दिखाने या जीवित रहने के योग्य न रह जाना। (तिरस्कार सूचक) जैसे—ऐसा काम (या बात) करने से तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना ज्यादा अच्छा है। (किसी का) चुल्लू भर लहू पीना=बदला चुकाने के लिए उसी तरह किसी को मार कर उसका रक्त पीना जिस प्रकार भीम ने दुःशासन का लहू पीया था। चुल्लू में उल्लू होना=बहुत थोड़ी सी नशे की चीज। जैसे—भाँग या शराब पीने से बेसुध होना। चुल्लुओं रोना=बहुत अधिक आँसू बहाना। बहुत रोना। (किसी का) चुल्लुओं लहू पीना—(क) चुल्लू भर लहू पीना। (ख) बहुत अधिक तंग या दुःखी करना। बहुत सताना।

चुल्हौना†—पुं० =चूल्हा।

चुवना—अ० =चूना।

वि० =चूना।

चुवा—पुं० दे० 'चूआ'।

चुवाना—स० =चुआना।

चुसकी—स्त्री० =चुस्की।

चुसना—अ० [हिं० चूसना का अ०] १. चूसा जाना। २. चूसे जाने के कारण रस या सार भाग से रहित होना। ३. सोखा जाना। ४. लाक्षणिक अर्थ में दूसरे द्वारा किसी का शोषण किया जाना। धन-धान्य, बल-वीर्य आदि से रहित हो जाना।

†पुं० [स्त्री० अल्पा० चुसनी] बड़ी चुसनी।

चुसनी—स्त्री०[हिं० चूसना] १. चूसने की क्रिया या भाव। २. बच्चों का एक खिलौना जिसे वे मुँह में रखकर चूसते हैं। ३. बच्चों को दूध पिलाने की शीशी।

चुसवाना—स०[हिं० चूसना का प्रे०] १. किसी को कुछ चूसने में प्रवृत्त करना। चुसाना। २. दूसरों से अपना शोषण करवाते जाना।

चुसाई—स्त्री०[हिं० चूसना] १. चूसने या चूसे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. चूसने या चुसाने का पारिश्रमिक।

चुसाना—स०[हिं० चूसना का प्रे०]चूसने का काम किसी और से कराना। किसी को कुछ चूसने में प्रवृत्त करना। चुसवाना।

चुसौअल—स्त्री०[हिं० चूसना] अधिक मात्रा या मान में अथवा परस्पर चूसने और चुसाने की क्रिया या भाव।

चुसौवल—स्त्री० =चुसौअल।

चुस्की—स्त्री०[हिं० चूसना] १. होंठों से कोई तरल पदार्थ थोड़ा-थोड़ा या धीरे-धीरे सुड़कने की क्रिया या भाव। २. तरल पदार्थ का उतना थोड़ा अंश जितना एक बार में चूस या सुड़ककर पीया जाय। जैसे—एक चुस्की तो और ले लो।

क्रि० प्र०—लगाना।—लेना।

३. मद्य पीने का पात्र। (राज०)

चुस्त—वि०[फा०] १. (पहनावा) जो खूब कसा हुआ हो। जो कहीं से कुछ भी ढीला न हो। यथा-स्थान ठीक और पूरा बैठनेवाला। जैसे—चुस्त अंगा या पाजामा। २. (व्यक्ति) जिसमें किसी प्रकार का आलस्य या शिथिलता न हो। फुर्तीला।

पद—चुस्त-चालाक=हर काम या बात में ठीक या पूरा और होशियार।

३. जिसमें किसी प्रकार का अभाव या त्रुटि न हो। जो उपयोगिता, औचित्य आदि के विचार से अच्छे और ऊँचे स्तर पर हो। जैसे—चुस्त बंदिश या लिखावट। ४ दृढ़। पक्का। मजबूत।

पु० [?] जहाज का वह भाग जो अन्दर की ओर झुका या दबा हो। मूढ। (लश०)

चुस्ता—पु०[स० चुस्त=मासपिंड विशेष] बकरी के बच्चे का आमाशय जिसमे पीया हुआ दूध भरा रहता है।

चुस्ती—स्त्री०[फा०] १ चुस्त होने की अवस्था या भाव। २. काम करने मे दिखाई देनेवाली तेजी या फुरती। ३ कसे हुए या तग होने की अवस्था या भाव। कसावट। ४ पक्कापन। प्रौढता। ५ दृढता। मजबूती।

चुहँटी†—स्त्री०=चुटकी।

चुहचाहट—स्त्री०=चहचहा।

चुहचुहा—वि०[हिं० चुहचुहाना] [स्त्री० चुहचुही]=चुहचुहाता।

चुहचुहाता—वि०[हिं० चुहचुहाना] जिसमे चटक तथा रसीलापन हो। रगीला और रसीला। जैसे—चुहचुहाता पद।

चुहचुहाना—अ० [अनु०] रस से इतना अधिक ओत-प्रोत या भरा हुआ होना कि उसमे से रस टपकता हुआ जान पडे।

†अ०=चहचहाना (पक्षियो का)।

चुहचुही—स्त्री०[अनु०]काले रग की एक प्रकार की छोटी चिडिया। फुलसुंघनी।

चुहट—स्त्री०[हिं० चुहटन.] १ चुहटने की क्रिया या भाव। २. कसक। पीडा।

चुहटना—स० [अनु०]१ चिकोटी काटना। २ पैरो से रौदना। ३ कुचलना। मसलना।

अ० चिमटना।

चुहटनी†—स्त्री०[?] गुजा। करजनी।

चुहड़ा—पु० [देश०] [स्त्री० चुहडी] १. भगी। मेहतर। २. चमार। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत ही निकृष्ट और नीच व्यक्ति।

चुहना†—स०=चूसना।

चुहल—स्त्री०[अनु० चुहचुह=चिडियो की बोली] मनोरजन के लिए आपस मे होनेवाली रस और विनोद की बात-चीत। हलकी हँसी-दिल्लगी।

चुहलपन—पु०=चुहलबाजी।

चुहलबाज—वि०[हिं० चुहल+फा० बाज (प्रत्य०)] जो बीच-बीच मे हलकी हँसी-दिल्लगी की बाते भी कहता चलता हो। चुहल करने-वाला। विनोदशील।

चुहलबाजी—स्त्री०[हिं० चुहल+फा० बाजी] बार-बार या रह-रहकर चुहल करने की क्रिया या भाव।

चुहिया—स्त्री०[हिं० चूसा का स्त्री० अल्पा०] १ मादा चूहा। चूही। २ छोटा चूहा। चूहे का बच्चा।

चुहिल—वि०[हिं० चुहचुहाना] १ रमणीक। सुन्दर । २ (स्थान) जहाँ चहल-पहल या रौनक हो।

चुहिली—स्त्री०[देश०] चिकनी सुपारी।

चुहुँटना*—स०[अनु०] १ चिकोटी काटना। २ तोडने, दबाने आदि के लिए चुटकी से कसकर पकडना।

वि० [स्त्री० चुहुँटनी] १ चिकोटी काटनेवाला। २ कसकर पकडने और दबानेवाला।

अ० [हिं० चिमटना] चिपकना।

वि०[स्त्री० चुहुँटनी] चिपकनेवाला।

चुहुकना—स०[स० चूप] बछडे आदि का भैंस, गाय आदि का स्तन-पान करना। चूसना।

चुहुटना—स०=चुहुँटना।

चुहुटनी—स्त्री०[देश०]गुजा।

चूँ—स्त्री०[अनु०] १ छोटी चिडियो या उनके बच्चो के बोलने का शब्द। २. आपत्ति, विरोध आदि के रूप मे डरते या सहमते हुए कही जाने-वाली कोई छोटी या हलकी बात। जैसे—वहां उसने चूँ तक नही की, सब रुपए चुपचाप चुका दिए।

मुहा०—चूँ-चिरा करना=आपत्ति या विरोध मे डरते या सहमते हुए कुछ कहना।

अ० [फा०] किस कारण से। क्यो।

पद—चूँकि (देखे)।

चूँकि—अव्य० [फा०] कारण यह है कि। क्योकि।

चूँच—†स्त्री०=चोच।

चूँची—स्त्री०=चूची।

चूँचूँ—स्त्री०[अनु०] १ छोटी चिड़ियो या उनके बच्चो के बोलने का शब्द। २ विरोध मे धीरे से कही हुई कोई बात।

पु० एक प्रकार का खिलौना जिसे दबाने से चूँ चूँ शब्द निकलता है।

चूँटना—स०[हिं० चुटकी या चुटकना] तोडने या दबाने के लिए चुटकी से पकडना। उदा०—मन लुटिगो लोटनि चढत चूँटत ऊँचे फूल। —बिहारी।

चूँदरी†— स्त्री०=चुनरी।

चूँदी—स्त्री०=चुदी।

चूअरी—स्त्री०[देश०] जरदालू नामक फल। खूबानी।

चूऊ—पु०[देश०] पहाडी प्रदेशो मे बननेवाला एक प्रकार का बढिया महीन ऊनी कपडा।

चूक—स्त्री०[हिं० चूकना] १ चूकने की क्रिया या भाव। २ अनजान मे असावधानी से अथवा प्रमाद, विस्मृति आदि के कारण होनेवाली कोई गलती या भूल। उदा०—छमहू चूक अनजानत केरी।—तुलसी। ३ वह अक्षर, शब्द, पद, वाक्य आदि जो कहने, पढने-लिखने आदि के समय अनजान मे अथवा असावधानी , जल्दी या विस्मृति के कारण छूट जाता है। (ओमिशन) ४ छल-कपट। धोखा-फरेब। उदा०—अहो हरि बलि सो चूक करी। —परमानददास। ५ छोटा छेद या दरार।

पु०[स० चुक] १ किसी खट्टे फल विशेषत. नीबू के रस से बनी एक प्रकार की बहुत तेज खटाई। २ एक प्रकार का खट्टा साग।

चूकना—अ०[स० च्युत कृत] १ भूल करना। २ कहने, पढने, लिखने आदि के समय कोई अक्षर, शब्द, पद, बात आदि प्राय असावधानी या विस्मृति के कारण छोड देना। जैसा होना चाहिए उससे भिन्न कुछ और कर या कह जाना। ३ किसी लक्ष्य पर ठीक प्रकार से सधान न कर पाना। निशाना या वार खाली जाना। ४ असावधानी ,उपेक्षा आदि के कारण किसी सुअवसर का सदुपयोग करने से रह जाना। ठीक समय पर लाभ न उठा पाना। ५ न रह जाना। समाप्त होना। चुकना। उदा०—सतगुरु मिलै अँधेरा चूकै ।—कबीर।

चूतिया शहीद—पु०[हि०+फा०] बहुत बडा मूर्ख।

चून—पु० [स० चूर्ण[१ गेहूँ, जौ आदि का आटा। २ चूरा। चूर्ण। जैसे—लोह चून=लोहे का चूरा।

पु० [?] पश्चिमी भारत मे होनेवाला एक प्रकार का बडा थूहर।

†पु०=चूना।

चूनर—स्त्री०=चूनरी।

चूनरी—स्त्री०[हि० चुनना] वह रगीन बुदकियोंवाला महीन-पतला कपडा जिसे स्त्रिया चादर के रूप मे कधो पर रखती हैं और जिससे सिर तथा सारा शरीर ढकती है।

चूना—पु०[स० चूर्ण, पा० प्रा० चुण्ण, दे० प्रा० चुणओ, उ० बँ० चून चुना, सिं० चुनु, गु० चुनो, मरा० चुना] कुछ विशिष्ट प्रकार के ककड-पत्थरो, शख, सीप आदि को फूँककर बनाया जानेवाला एक प्रसिद्ध तीक्ष्ण और दाहक क्षार जिसका उपयोग दीवारो पर सफेदी करने, पान -सुरती के साथ खाने और दवाओ आदि मे डालने के लिए होता है।

मुहा०—**चूना छूना या फेरना**=चूने को पानी मे घोलकर दीवारो पर उन्हे सफेद करने के लिए लगाना। **(किसी को) चूना लगाना**=दाँव-पेच, छल-कपट आदि के व्यवहार मे किसी को बुरी तरह से परास्त करना। नीचा दिखाना।

अ०[स०च्यवन] १ किसी आधान या पात्र मे रखे हुए तरल पदार्थ का किसी छेद या सन्धि मे से होकर वाहर निकलना। जैसे—घडा या वाल्टी चूना। २ भीगे हुए वस्त्र आदि मे से जल आदि का निकलना या वह चलना ३ घाव मे से रक्त निकल कर टपकना। ४ किसी वस्तु का ऊपरी आधार छोडकर नीचे आ गिरना। जैसे—पेड मे से फल चूना। ५ किसी चीज मे ऐसा छेद या दराज हो जाना जिससे कोई द्रव पदार्थ बूंद-बूंद करके नीचे गिरने लगे। जैसे—छत चूना, लोटा चूना। ६ स्त्री का गर्भ-पात या गर्भ-स्राव होना।

वि०[स्त्री० चूनी] जिसमे किसी चीज के चूने योग्य छेद या दरज हो। जैसे—चूना घडा, चूनी छत।

चूनादानी—स्त्री०=चूनेदानी।

चूनी—स्त्री०[स० चूर्णिका] १ गेहूँ, चावल आदि का छोटा कण। कनी।

पद—**चूनी-भूसी**=मोटे अन्न का पीसा हुआ चूर्ण।

२ चुन्नी। ३ बिंदी पर लगाये जानेवाले सितारे। चमकी। उदा०—तिलक सवारि जो चूनी रची।—जायसी।

चूनेदानी—स्त्री०[हि० चूना+फा० दान] पान या सुरती के साथ खाने के लिए चूना रखने की छोटी डिबिया। चुनौटी।

चुनौटी†—स्त्री०=चूनेदानी।

चूमना—स०[स० चुव् पा० चुब, प्रा० चुम्ब, ब० चुचा, उ० चुविवा, गु० चुमवूँ, सिं० चुमनु] १. आदर, प्रेम या स्नेहपूर्वक किसी प्रिय या स्नेह-भाजन व्यक्ति (या वस्तु) के किसी अग को होठो से स्पर्श कर कुछ चूसने की-सी क्रिया करना। जैसे—बच्चे या स्त्री का मुँह चूमना।

मुहा०—**(कोई चीज) चूमकर छोड़ देना**=अपने वश या सामर्थ्य के बाहर का काम या बात देखकर अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के विचार से उस काम या बात के प्रति अपना आदर-भाव प्रकट करते हुए उससे अलग या दूर होना। जैसे—जब भारी पत्थर दिखाई पडे तो उसे (न उठा सकने के कारण) चूमकर छोड देना चाहिए। (कहा०) **(किसी को) चूमना चाटना**=(बच्चे आदिको) बार-बार चूमना और उसका दुलार करना।

२ हिन्दुओ मे विवाह से पहले वर के भिन्न-भिन्न अगो से हरी दूब का स्पर्श कराके उस दूब पर होठ रखते हुए उक्त प्रकार की क्रिया करना।

चूमा—पु०[स० चुम्बन, हिं० चूमना] चूमने की क्रिया। चुबन। चुम्मा।

पद—**चूमा-चाटी** (देखे)।

चूमा-चाटी—पु०[हिं० चूमना+चाटना] प्रेम या स्नेह प्रकट करने के लिए बार-बार चूमने की क्रिया या भाव। (बाजारू)

चूर—वि०[स० चूर्ण] १ बहुत अधिक और बार-बार काटे, कूटे या तोडे-फोडे जाने के कारण बहुत ही छोटे-छोटे खडो या टुकडो मे बँटा हुआ। जैसे—काँच की प्याली जमीन पर गिरते ही चूर हो गई। २ जो थकावट, परिश्रम आदि के कारण अत्यन्त शिथिल हो गया हो। जैसे—दिन भर काम करते-करते सन्ध्या को हम थककर चूर हो जाते है। ३ जो किसी काम या बात मे इतना अधिक तन्मय या लीन हो जाता हो कि उसे किसी और काम या बात का ध्यान ही न रह गया हो। जैसे—बातें करने मे चूर। ४ आवेश, उमग आदि के कारण किसी भाव या विषय मे बेसुध। जैसे—(क) घमड मे चूर। (ख) नशे मे चूर।

चूरण—पु०=चूरन।

वि०=चूर्ण।

चूरन—पु०[स० चूर्ण] खूब महीन पीसी हुई पाचक ओषधियो की बुकनी। चूर्ण।

चूरनहार—पु० [स० चूर्णहार] चिकने, मोटे तथा लबे पत्तोवाली एक जगली बेल, जिसके पत्ते दवा के काम आते है।

चूरना—स० [स० चूर्ण] १ चूर करना। टुकडे-टुकडे करना। २. तोड-फोड कर नष्ट करना।

†स०=चुराना। उदा०—तुम्ह अँब राँड लीन्ह का चूरी।—जायसी।

चूरमा—पु०[स० चूर्ण] रोटी को घी मे गूँध तथा भूनकर और चीनी मिलाकर बनाया जानेवाला व्यजन।

चूरमूर—पु०[देश०] जौ या गेहूँ की वे खूँटिया जो फसल कट जाने पर खेत मे बची रह जाती है।

चूरा—पु०[स० चूर्ण] १ किसी चीज के टूटे-फूटे या घिसे-पिसे बहुत छोटे-छोटे टुकडे। जैसे—शीशे का चूरा। २ काठ, धातु आदि को चीरने-रेतने आदि पर उसमे से निकले हुए छोटे-छोटे कण। बुरादा। जैसे—लकडी या लोहे का चूरा।

वि०=चूर (देखे)।

पु०[स० नूड]१ पैर या हाथ मे पहनने का कडा। २ दे० 'चूडी'।

†पु०=चिडवा।

चूरामणि—वि०, पु०=चूडामणि।

चूरी—स्त्री०[स० चूर्ण] १ बहुत महीन चूरा या चूर्ण। बुकनी। २ पूरी, रोटी आदि को चूर-चूर करके घी और चीनी मिलाया हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। चूरमा।

†स्त्री०=चूड़ी।

चूरू—पु०[हिं० चूर]गाँजे के मादा पेड़ो से निकाली हुई एक प्रकार की चरस जो कुछ घटिया समझी जाती है।

चूर्ण—पु०[सं०√चूर्ण् (चूर्ण करना)+अप्] १ किसी चीज के वे बहुत छोटे-छोटे कण जो उसे बहुत अधिक कूटने, पीसने, रेतने आदि से बनते है। चूरा। बुकनी। सफूफ। २. वैद्यक मे, औषधो आदि का वह पिसा हुआ रूप जो खाने, छिड़कने आदि के काम मे आता है। बुकनी। ३ विशिष्ट रूप से उक्त प्रकार से तैयार की हुई कोई ऐसी दवा जो पाचक हो। जैसे—हिंगाष्टक चूर्ण। ४ अबीर। ५ गर्दा। धूल। ६ चूना। ७ कौड़ी।

वि० १ तोड़-फोड़ या काट-चीर कर बहुत छोटे-छोटे टुकड़ो के रूप मे लाया हुआ। चूर किया हुआ। २ सब प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट या शक्ति-हीन किया हुआ। जैसे—किसी का गर्व या शक्ति चूर्ण करना।

चूर्णक—पु०[सं० चूर्ण+कन्] १ सत्तू। सतुआ। २ एक प्रकार का शालि धान्य। ३ एक प्रकार का वृक्ष। ४. साहित्य मे ऐसी गद्य रचना जिसमे छोटे-छोटे तथा मधुर शब्द और पद होते हैं।

चूर्ण-कार—वि० [सं० चूर्ण√कृ (करना)+अण्, उप० स०] चूर्ण करने-वाला।

पु० १ आटा पीसने और बेचनेवाला व्यापारी। २ पराशर के अनु-सार एक संकर जाति जिसकी उत्पत्ति पुड्रक पुरुष और नट स्त्री से कही गई है।

चूर्ण-कुंतल—पु० [कर्म स०] गुँथे हुए बाल। लट। जुल्फ।

चूर्ण-खंट—पु०[सं० ष० त०] कंकड़।

चूर्णन—पु०[सं०√चूर्ण्+ल्युट्-अन] चूर्ण करना। किसी ठोस वस्तु को कूट अथवा पीसकर उसे चूर्ण का रूप देना।

चूर्ण-पारद—पु०[एक० त० स०] शिंगरफ।

चूर्ण-योग—पु०[ष० त० स०] पीसकर एक मे मिलाए हुए बहुत से सुगंधित पदार्थ।

चूर्णशाकांक—पु०[सं० चूर्ण-शाक, उपमि० स०, √अंक+अण्, उप० स०] गौर सुवर्ण नामक साग।

चूर्ण-हार—पु० [ष० त०]चूरनहार नाम की बेल।

चूर्णा—स्त्री०[सं० चूर्ण+टाप्] आर्या छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे १८ गुरु और २१ लघु होते है।

चूर्णि—स्त्री०[सं०√चूर्ण्+इन्] १ पतंजलि मुनि का रचा हुआ भाष्य। २. कौड़ी। ३ सौ कौड़ियो का समूह।

चूर्णिका—स्त्री० [सं० चूर्ण+ठन्-इक+टाप्] १. सत्तू। सतुआ। २ किसी बहुत कठिन ग्रंथ की किसी टीका या भाष्य जिससे उसके सब प्रसंग या स्थल स्पष्ट हो जायें। ३ प्राचीन साहित्य मे, गद्य की एक शैली।

चूर्णि-कृत्—पु०[सं० चूर्णि√कृ (करना)+क्विप्, उप० स०] १. भाष्यकार। २ महाभाष्यकार पतंजलि मुनि की एक उपाधि।

चूर्णित—भू० कृ० [सं०√चूर्ण्+क्त] १ जिसे कूट अथवा पीसकर चूर्ण का रूप दिया गया हो। २ अच्छी तरह तोड़ा-फोड़ा या नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।

चूर्णि-दासी—स्त्री०[मध्य० स०] चक्की पीसनेवाली। पिसनहारी।

चूर्णी—स्त्री०[सं० चूर्णि+ङीप्] १. कार्षापण नामक पुराना सिक्का। २ कपर्द्दिका। कौड़ी। ३ एक प्राचीन नदी का नाम ४ दे० 'चूर्णिका'।

चूर्मा†—पु०=चूरमा।

चूल—पुं० [सं०+चुल् (ऊँचा होना)+क, पृषो० दीर्घ चरन्+क, र=ल पृषो०] १. चोटी। शिखा। २ सिर के बाल। ३ पशुओ आदि के शरीर पर के बाल।

†पु० [?] एक प्रकार का थूहड़।

†पु०=चून।

स्त्री०[देश०] १ किसी आधार पर इधर-उधर घूमनेवाली चीज के वे ऊपर और नीचे के नुकीले, पतले सिरे जो किसी छेद या गड्ढे मे जमाये या फँसाये रहते हैं और जिनके सहारे वह चीज इधर-उधर घूमती है। (पिवॉट) जैसे—किवाड़ें के पल्ले की चूल। २ वह मुख्य आधार जिसके सहारे कोई काम चलता या कोई चीज ठहरी रहती हो।

मुहा०—(किसी की) चूलें ढीली करना=बहुत अधिक कष्ट पहुँचाकर या परिश्रम कराके उसे बहुत कुछ त्रस्त, पराभूत या शिथिल करना।

चूलक—पु० [सं० चूल+कन्] १ हाथी की कनपटी। २. हाथी के कान की मैल। ३ खंभे का ऊपरी भाग। चूड़ा। ४. किसी घटना या बात की परोक्ष रूप से मिलनेवाली सूचना।

चूलदान—पु० [सं० चुल्लि-आधान] १. पाकशाला। रसोईघर। २ बैठने या चीजें आदि रखने के लिए सीढ़ीनुमा बना हुआ स्थान। (गैलरी)

चूला—स्त्री०[सं० चूरा=ड=ल] १. चोटी। शिखा। २. बालाखाने का कमरा। ३. चंद्रशाला।

चूलिक—पु०[सं०√चुल् (उन्नत होना)+ण्वुल्-अक नि० सिद्ध] मैदे की पतली पूरी। लूची। लुचुई।

चूलिका—स्त्री०[सं० चूलक+टाप्, इत्व] १ चूलक। २ नाटक मे वह स्थिति जिसमे किसी घटना की सूचना नेपथ्य से पात्रों द्वारा दी जाती है।

चूलिकोपनिषद्—स्त्री० [सं० चूलिका-उपनिषद्, मध्य० स०] अथर्ववेदीय एक उपनिषद् का नाम।

चूल्हा—पु०[सं० चुल्लि प्रा० उ० चुल्ली चुल्ल, सिं० चूल्ह; प० चुल्ह, गु० चूलो; ने० चुलि, सिं० चल्ली, मरा० चूल] [स्त्री० अल्पा० चूल्ही] मिट्टी, लोहे आदि का वह प्रसिद्ध उपकरण जिसमे चीजें पकाने या गरम करने के लिए कोयले, लकड़ियाँ आदि जलाई जाती हैं।

मुहा०—चूल्हा जलना=भोजन या रसोई बनना। जैसे—आज दो दिन बाद उनके घर चूल्हा जला है। चूल्हा झोंकना या फूँकना=भोजन बनाने के लिए चूल्हे मे आग सुलगाना। चूल्हा न्यौतना=किसी के घर के सब लोगो को भोजन का निमंत्रण देना। चूल्हे मे जाना=(क) नष्ट-भ्रष्ट होना। (ख) किसी के विनाश की ओर से उपेक्षा दिखाने के लिए प्रयुक्त होनेवाला पद। जैसे—हमारी तरफ से वह चूल्हे मे जाय। चूल्हे में झोंकना या डालना=बहुत ही उपेक्ष्य, तुच्छ या नगण्य समझना। चूल्हे मे पड़ना=दे० 'चूल्हे मे जाना'। चूल्हे से निकलकर भाड़ में आना या पड़ना=छोटी विपत्ति से निकल कर बड़ी विपत्ति मे फँसना।

चूषण—पु०[सं०+चूष् (चूसना)+ल्युट्-अन] [वि० चूषणीय, चूष्य] चूसने की क्रिया या भाव।

चूषणीय—वि०[स०+चूष्√अनीयर्] जो चूसा जा सके। चूसे जाने के योग्य।
चूषा—स्त्री०[स०√चूष्+क, टाप्] हाथी की कमर मे बाँधा जानेवाला चमडे का पट्टा।
चूष्य—वि०[स०√चूष्+ण्यत्] १ जो चूसा जा सकता हो। २ जो चूसा जाने को हो।
चूसना—स० [स० चूषण] १. किसी वस्तु विशेषत. किसी फल को मुँह और होठो से लगाकर उसका रस अन्दर खीचना। जैसे—आम चूसना, अँगूठा चूसना। २ किसी वस्तु को मुँह मे डालकर तथा उसे दाँतो से दबाकर उसमे से निकलनेवाला रस पीना। जैसे—गडेरी चूसना। ३ किसी वस्तु को मुँह मे रखकर तथा जीभ से चाटते हुए उसका रस लेना। जैसे—दवा की गोली मुँह मे रखकर चूसना। ४ बच्चे का माता के स्तन का दूध पीना। ५. किसी आर्द्र अथवा गीली वस्तु मे की आर्द्रता सोख लेना। जैसे—सोख्ते ने सारी स्याही चूस ली है। ६ बलपूर्वक अथवा अनुचित रूप से, किसी का सत्त्व या सर्वस्व छीन, निकाल या हडप लेना। जैसे—इसे खुशामदियो ने चूस डाला है।
मुहा०—(किसी को) चूस डालना या लेना=किसी का धन खा-पका या हड़पकर उसे कंगाल या निर्धन कर देना।
चूहड़†—पुं०=चूहडा।
चूहड़ा†—पु०[?] [स्त्री० चूहडी] १ भगी या मेहतर। चांडाल। २. बहुत ही गंदा तथा तुच्छ व्यक्ति।
चूहर—पु०=चूहडा।
चूहरी—स्त्री०=चुडिहारिन।
चूहा—पु०[फा० चुवा, बं० चुया, उ० चुआ; प० चूहा, सिं० चूहो; गु० चुवो; ने० चुहा; मरा० चुवा] [स्त्री० अल्पा० चूहिया, चूही] लबी पूछ तथा चार पैरोवाला एक प्रसिद्ध छोटा घरेलू जन्तु जो अनाज, कपडे आदि कुतरकर खा जाता है।
चूहा-दंती—स्त्री०[हिं० चूहा+दाँत] चाँदी या सोने की बनी हुई एक प्रकार की पहुँची जिसे स्त्रियाँ पहनती है। इसके दाँत चूहे के दाँत जैसे लबे और नुकीले होते हैं जो रेशम या सूत मे पिरोये रहते हैं।
चूहादान—पु०[हिं० चूहा+फा० दान]=चूहेदानी।
चूहेदानी—स्त्री०[हिं०] चूहे पकडने या फँसाने का एक प्रकार का पिंजडा।
चें—स्त्री०[अनु०] चिडियो का शब्द।
पद—**चें चें**=(क) व्यर्थ की बकवाद। (ख) रोने, चिल्लाने आदि का शब्द।
मुहा०—चें बोलना=ची बोलना। (दे०)
चेंगड़ा—पु०[अनु०] [स्त्री० चिंगडी] छोटा बच्चा। शिशु।
चेंगा—पु० दे० "चेंगडा"।
स्त्री० दे० 'चेनगा'।
चेंगी—स्त्री० [देश०] गाडियो मे चमडे की वह चकती अथवा सन का घेरा जिसे पैंजनी और पहिए के बीच मे इसलिए पहना देते हैं जिससे दोनो एक दूसरे से रगड़ न खायँ।
चेंघी†—स्त्री०=चेंगी।
चेंच—पुं०[स० चंचु] एक प्रकार का बरसाती साग।
चेंचर—वि०[चें चें से अनु०] चे चे करनेवाला। बकवादी।
चेंचुआ—पु०[चे चें से अनु०] चातक का बच्चा।
चेंचुला—पु० [देश०] एक प्रकार का पकवान जिसमे आटे की पूरी की तरह पतला बेलकर गोठते और चौखूँटा बनाकर कुछ दबा देते है फिर घी आदि मे तल लेते हैं।
चेंटियारी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का बहुत बडा जल-पक्षी जिसके पैर और चोच लबी होती है और जिसका शिकार किया जाता है।
चेंटी—स्त्री०=च्यूँटी।
चेंटुआ—पु०[हिं० चिडिया] चिडिया का बच्चा।
चेंड़ा—पु०=चेगडा।
चेंथरी—स्त्री०[?] मस्तक का ऊपरी भाग। उदा०—अक्कल चेंथरी मे चढ गई।—वृंदावनलाल वर्मा।
चेंधी—स्त्री०=चेंगी।
चेंपु—पु०=चेप। उदा०—दृग खजन गहि लै गयो चितवन चेंपु लगाय।—बिहारी।
चेंगें—स्त्री०[अनु०] १. चिल्लाहट। व्यर्थ की बकवाद। २. डरते या सहमते हुए कही जानेवाली बात।
चेंफा†—पु०[देश०] ऊख का छिलका।
चेउरी—स्त्री०[हिं० जेवडी=रस्सी] कुम्हार का वह डोरा जिससे वह चाक पर तैयार किये हुए पात्र आदि को काटकर उतारता है।
चेक—पु०[अ०] १ आडी और वेडी पडी हुई धारियाँ। चारखाना। २ दे० 'धनादेश'।
चेकित—पु० [स० कित् (ज्ञान)+यङ्-लुक्+अच्] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ बहुत बडा ज्ञानी।
चेकितान—पु० [स०√कित्+यङ्-लुक्+चानश्] १ महादेव। शिव। २. बहुत बडा ज्ञानी। ३ केकय देश का एक राजकुमार जो महाभारत मे पाडवो की ओर से लडा था।
चेचक—स्त्री० [फा०] शीतला या माता नामक रोग।
चेचकरू—वि०[फा०] (व्यक्ति) जिसके मुँह पर चेचक के दाग हो।
चेजा—पु० [हिं० छेद ?] सुराख । छेद।
चेजारा—पु०[?] दीवारो की चुनाई का काम करनेवाला व्यक्ति। राज।
चेट—पु० [स०√चिट् (प्रेरणा)+अच्] [स्त्री० चेटी, चेटिका] १. दूसरों की छोटी-मोटी सेवाएँ करनेवाला। टहलुआ। २. पति। स्वामी। ३ दुराचारिणी स्त्रियो को पुरुषो से मिलानेवाला दलाल। ४ भांड। ५. एक प्रकार की मछली।
†वि० दे० 'कनौडा'।
चेटक—पु०[स०√चिट्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० चेटकनी, चेटकी] १ दास या सेवक, विशेषत वह दास या सेवक जो किसी विशिष्ट काम मे लगाया गया हो। २ दूत। ३ इद्रजाल। जादूगरी। ४ हास्य रस का खेल या तमाशा। ५ चस्का। ६ फुरती। जल्दी। ७. चटक-मटक।
चेटकनी—स्त्री०[स० चेटक का स्त्री० रूप] गोली। दासी।
चेटका—स्त्री०[स० चिता] १ शव जलाने की चिता । २ मरघट। *श्मशान*।
चेटकी (किन्)—पु०[स० चेटक+इनि] १. चेटक या जादू के खेल

दिखानेवाला। जादूगर। इंद्रजाली। २. तरह-तरह के कौतुक करने-वाला। कौतुकी।
स्त्री० 'चेटक' का स्त्री० रूप। दासी।
चेटवा—स्त्री० दे० 'तुरमुती'।
पु०=चेटुआ।
चेटिका—स्त्री०[स० चेटक+टाप्, इत्व] सेविका। दासी।
चेटिकी—स्त्री०[स० चेटी+कन्-ङीप्, ह्रस्व] चेटिका।
चेटिया—पु० [स० चेटक] १. चेला। शिष्य। उदा०—सब चेटियन ऐसी मन आई। रहे सर्व हरि पद चितलाई।—सूर। २. दास। नौकर।

चेटी—स्त्री०[स० चेट+ङीप्] दासी। नौकरानी।
चेटुवा—पु०=चेटुआ।
चेड़—पु०[स०√चिड् (प्रेरणा करना)+अच्] चेट। चेटक।
चेड़क—पु०=चेटक।
चेड़िका—स्त्री०=चेटिका।
चेडी—स्त्री०=चेटी।
चेत्—अव्य०[स०√चित् (जानना)+विच्-लुक्] १. ऐसा हुआ तो। ऐसी अवस्था या परिस्थिति में। अगर। २ कदाचित्।
चेत (स्)—पु०[स०√चित्+असुन्] १ चित्त की मुख्य वृत्ति, चेतना। होश। २ ज्ञान। बोध। ३. सावधानी। होशियारी। ४. याद। स्मृति। ५ चित्त। मन।
चेतक—वि०[स०√चित्+णिच्+ण्वुल्-अक] १. सचेत करनेवाला। २ चेतन।
पु० १. महाराणा प्रताप का प्रसिद्ध और परम-प्रिय घोड़ा जो हल्दी-घाटी की लड़ाई में मारा गया था। २ दे० 'सचेतक'।
पु०=चेटक।
चेतकी—स्त्री०[स० चेतक+ङीप्] १ एक विशिष्ट प्रकार की हड़ या हर्रे जिस पर तीन धारियाँ होती है। २ हड़। हर्रे। ३ चमेली का पौधा। ४ संगीत में एक प्रकार की रागिनी।
चेतत—स्त्री० दे० 'चेतना'।
चेतन—पु०[स०√चित् (जानना)+ल्यु—अन] १. आत्मा। २. जीव। प्राणी। ३ आदमी। मनुष्य। ४ परमात्मा।
वि० जिसमें चेतना या ज्ञान हो। चेतनायुक्त। 'जड' का विपर्याय। जैसे—जीव, जन्तु आदि।
चेतनकी—स्त्री० [स० चेतन√कृ (करना)+ड—ङीप्] हरीतकी। हड़।
चेतनता—स्त्री०[स० चेतन+तल्—टाप्] १. चेतन होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। चैतन्य। सज्ञानता। २ सजीवता।
चेतनत्व—पु०[स० चेतन+त्व]=चेतनता।
चेतना—स्त्री० [स०√चित्+युच्—अन, टाप्] १. मन की वह वृत्ति या शक्ति जिससे जीव या प्राणी को आन्तरिक (अनुभूतियों, भावों, विचारों आदि) और बाह्य (घटनाओं) तत्त्वों या बातों का अनुभव या भान होता है। होश-हवास। २ बुद्धि। समझ। ३ मनोवृत्ति, विशेषत ज्ञानमूलक मनोवृत्ति। ४. याद। स्मृति।
अ० [हि० चेत] १ संज्ञा से युक्त होना। होश मे आना। उदा०—नैन पसारि चेत मन चेतौ।—जायसी। २. ऐसी स्थिति मे होना कि बुरे परिणामों या बातों से बचकर अच्छी बातों की ओर प्रवृत्त हो सके। ३ सावधान या होशियार होना। ४ सोच-समझकर किसी बात की ओर ध्यान देना।
स० विचारना। समझना। जैसे—किसी का बुरा या भला चेतना।
चेतनीय—वि०[स०√चित् +अनीय] जो चेतन करने या जानने योग्य हो। चेतन का अधिकारी या पात्र।
चेतनीया—स्त्री०[स० चेतना +छ—ईय, टाप्] ऋद्धि नाम की ओषधि।
चेतन्य—पु०=चैतन्य।
चेतयनि*—स्त्री० १.=चेतावनी। २.=चितवन।
चेतव्य—वि०[स०√चि (चयन करना)√तव्यत्] जो चयन या संग्रह किये जाने के योग्य हो। संग्राह्य।
चेता—वि०[स० चेतस्] (यौ० शब्दों के अन्त में) जिसे चेतना हो। चितवाला। जैसे—दृढ़ चेता।
†पु० १. चेतना। संज्ञा। होश। २ याद। स्मृति।
क्रि० प्र०—भूलना।—रहना।
चेताना—स० [हि० चेतना का स०] १ किसी को किसी विस्मृत बात की ओर ध्यान दिलाना। २ उपदेश देना। ३ चेतावनी देना। साव-धान करना। ४ (आग) जलाना या सुलगाना। (पू०)
चेतावनी—स्त्री० [हि० चेत+आवनी (प्रत्य०)] १ किसी को चेताने या सावधान करने के लिए कही जानेवाली बात। २ भविष्य में पुन आज्ञा, आदेश, कर्तव्य आदि का पालन न करने अथवा ठीक प्रकार से पालन न करने पर किसी के विरुद्ध की जानेवाली कार्रवाई की पहले से दी जानेवाली आदेशात्मक और अधिकारिक सूचना। (वार्निंग) ३ उपदेश। शिक्षा।
चेतिका—स्त्री०[स० चिति] चिता।
चेतुरा†—पु०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।
चेतोजन्मा (न्मन्)—पु०[स० चेतस्-जन्मन्, ब० स०] कामदेव।
चेतोभव—पु०[स० चेतस्-भव, ब० स०] कामदेव।
चेतोभू—पु०[स० चेतस्+भू (होना)+क्विप्] कामदेव।
चेतोविकार—पु०[स० चेतस्-विकार, ष० त०] चित्त संबंधी विकार।
चेतोहर—वि०[स० चेतस्√हृ (हरण करना)+अच्] चेतना हरने या नष्ट करनेवाला।
चेतौनी†—स्त्री०=चेतावनी।
चेत्य—वि०[स०√चित् (जानना)+ण्यत्] १ जो चेतना का विषय हो। २ जो जाना जा सके। ३ स्तुत्य।
चेदि—पु०[स०] १ आधुनिक चंदेरी के आस-पास का एक प्राचीन जनपद। शिशुपाल यहीं का राजा था। इसे चैद्यपुर और चैद्य भी कहते थे। २ उक्त जनपद का राजा। ३ उक्त जनपद का निवासी। ४ कौशिक मुनि के पुत्र का नाम।
चेदिक—पु०=चेदि (दे०)।
चेदि-राज—पु०[ष० त०] १ चेदि देश का राजा। २ शिशुपाल, जो चेदि देश का राजा था। ३ एक वसु जिन्हें इन्द्र से एक विमान मिला था। ये जमीन पर नहीं चलते थे और उसी विमान पर घूमा करते थे, इसीलिए इन्हें 'उपरिचर' भी कहते है।

चेन—स्त्री० [अ०] एक मे गुँथी हुई छोटी-छोटी कडियो की लचीली माला या शृखला। जजीर। सिकडी। जैसे—गले मे पहनने की चेन।

चेनआ†—पु०=चेना।

चेनगा—स्त्री०=चेगा (मछली)।

चेनवा (वा)—पु०=चेना (साग)।

चेना—पु०[स० चणक] १ साँवे की जाति का एक मोटा अन्न जिसके दाने छोटे-छोटे और सुन्दर होते है। २ चेच नाम का साग।
पु०=चीना कपूर।

चेप—पु०[हि० चिप-चिपा का भाव०] १ गाटा, चिपचिपा और लसदार रस। लसीला पदार्थ। जैसे—किसी फल या वृक्ष का चेप, चेचक नामक रोग का चेप। २. चिडियो को फँसाने के लिए फैलाया या बिछाया जानेवाला लासा।
पु० दे० 'चाव' (ओषधि)।

चेपदार—वि०[हि० चेप+फा० दार] (पदार्थ) जो चिपचिपा या लसदार हो। जिसमे चेप हो। लसीला।

चेपना—स०[हि० चेपना] १ किसी वस्तु पर चेप लगाना। २ चेप लगाकर चिपकाना या सटाना।

चेपांग—पु०[देश०] नेपाल देश की एक जाति।

चेबुला—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड जिसकी छाल से चमडा सिझाया और रग बनाया जाता है।

चेय—वि० [स० चि+यत्] चयन किये जाने के योग्य। जिसका चयन किया जा सके या होने को हो।
स्त्री० वह अग्नि जो धार्मिक-विधि-पूर्वक चयन की या लाई गई हो।

चेर—पु०=चेरा (चेला)।

चेरना—पु० [हि० चीरना ?] नक्काशो की एक प्रकार की छेनी जिससे वे काठ, धातु, पत्थर आदि पर सीधी रेखा खीचते है।

चेरा—पु० [स० चेटक, प्रा० चेडा] [स्त्री० चेरी, भाव० चेराई] १ चेला। शिष्य। २ नौकर। सेवक। ३. गुलाम। दास।
†पु० [?] एक प्रकार का गलीचा जो मोटे ऊन का बुना हुआ होता है।

चेराई—स्त्री० [हि० चेरा+ई (प्रत्य०)] चेरा (अर्थात् चेला अथवा दास) होने की अवस्था या भाव।

चेराय्ता†—पु०=चिरायता।

चेरि—स्त्री०=चेरी।

चेरी—स्त्री० [स० चेटी] हि० 'चेरा' (चेला, दास या सेवक) का स्त्री०।

चेरु—वि० [स०√चि (चयन)+रु बा०] १ जिसे सग्रह करने का अभ्यास हो। २ सग्रह करनेवाला।

चेरुआ—पु० [देश०] एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो सत्तू सानकर और पानी मे उबालकर बनाया जाता है।

चेरुई†—स्त्री० [देश०] घडे के आकार का एक प्रकार का मिट्टी का बडा बरतन।

चेरू—स्त्री० [?] १ एक प्रकार की जगली जाति जो मिरजापुर जिले तथा दक्षिण भारत मे पाई जाती है। २ उत्तरी भारत के पर्वतो मे रहनेवाला एक प्रकार का हिरन।

चेल—पु० [स०√चिल् (पहनना)+घञ्] कपडा। वस्त्र।
वि० (समासात मे) अधम।

चेलक—पु० [स०] वैदिक काल के एक मुनि।

चेलकाई†—स्त्री०=चेलहाई।

चेल-गंगा—स्त्री० [उपमि० स०] गोकर्ण (आधुनिक मालाबार) प्रदेश की एक नदी।

चेल-प्रक्षालक—वि० [ष० त०] कपडे धोनेवाला।
पु० धोबी।

चेलवा†—स्त्री०=चेल्हा (मछली)।
†पु०=चेला।

चेलहाई—स्त्री० [हि० चेला+हाई (प्रत्य०)] १ चेलो का समूह। शिष्य वर्ग। २ धार्मिक गुरुओ का चारो ओर घूम-घूमकर अपने चेले बनाने अथवा चेलो से भेट, पूजा आदि लेने की प्रणाली या प्रथा।

चेला—पु० [स० चेट, दे प्रा० चेल्ल, चिल्ल] [स्त्री० चेलिन, चेली] १ वह जिसने किसी गुरु से शिक्षा पाई हो। २ वह जो धार्मिक दृष्टि से किसी से उपदेश या गुरु-मत्र लेकर उसका शिष्य बना हो। ३ वह जो किसी को आदर्श या पूज्य मानकर उसके आचरणो, सिद्धान्तो आदि का अनुकरण करता हो। शिष्य।
पद—चेले-चाटी=अनुयायियो, चेलो आदि का वर्ग या समूह।
पु० [देश०] एक प्रकार का साँप जो बगाल मे अधिकता से पाया जाता है।
स्त्री०=चेल्हा (मछली)।

चेलान—पु० [स०] तरबूज की लता।
†पु० [हि० चेला] चेलो का वर्ग।

चेलाल†—पु०=चेलान (तरबूज की लता)।

चेलाशक—पु० [चेल—आशक, ष० त०]=चैलाशक।

चेलिका—स्त्री० [स० चेल+कन्—टाप्, इत्व] १ एक प्रकार का रेशमी कपडा। चिउली। २ चोली।

चेलिकाई†—स्त्री०=चेलहाई।

चेलिन, चेली—स्त्री० हि० 'चेला' का स्त्री० रूप।

चेलुक—पु० [स०√चेल् (चलना)+उक] बौद्ध भिक्षुओ का एक वर्ग।

चेल्हवा—स्त्री०=चेल्हा।

चेल्हा—स्त्री० [स० चिल=मछली] एक प्रकार की छोटी मछली।

चेवारी—पु० [देश०] दक्षिण भारत का एक प्रकार का बाँस जिसकी खमाचियो से चटाइयाँ और टोकरियाँ बनाई जाती है।

चेवी—स्त्री० [स० चेव-ङीप्] एक प्रकार की रागिनी। (सगीत)

चेषटा*—स्त्री० दे० 'चेष्टा'।

चेष्टक—वि० [स०√चेष्टा (चेष्टा करना)+ ण्वुल्—अक] चेष्टा करनेवाला।
पु० काम-शास्त्र मे एक प्रकार का आसन या रति-बध।

चेष्टन—पु० [स०√चेष्ट् (इच्छा करना)+ल्युट्—अन] चेष्टा करने की क्रिया या भाव।

चेष्टा—स्त्री० [स०√चेष्ट्+अङ्—टाप्] १ इधर-उधर हाथ-पैर हिलाना। हिलना-डोलना। २ मन मे कोई भाव या विचार उत्पन्न होने पर बाह्य आकृति या शरीर पर होनेवाली उसकी प्रतिक्रिया। मन का भाव सूचित करनेवाली अग-भगी या शारीरिक व्यापार। ३ मन का भाव प्रकट करनेवाली मुख की आकृति।

(किसी से दो-दो) चोंच होना=कुछ हलकी कहा-सुनी या झड़प हो जाना ।

चोंचला—पु०=चोचला ।

चोंटना—स० [हिं० चिकोटी या अनु०] हाथ की चुटकी से कोई चीज तोड़ना । जैसे—फूल चोंटना ।

चोंटली—स्त्री० [?] सफेद घुँघची।

चोंड़ा—पु० [सं० चूडा] १. स्त्रियों के सिर के बाल। झोंटा। २. मस्तक। सिर ।

पद—(किसी के) चोंडे पर चढ़कर=किसी की परवाह न करते हुए उसके सामने होकर। सिर पर चढ़ कर । जैसे—हमें जो कुछ करना होगा, वह हम उनके चोंडे पर चढ़कर करेंगे। (स्त्रियाँ)

पु० [सं० चूडा] वह कच्चा कूआँ जिससे खेती की सिंचाई की जाती है।

चोंडी—स्त्री० [हिं० चोंडा=सिर ?] स्त्रियों के पहनने की साड़ी।

चोंथ—पु० [अनु०] परिमाण के विचार से उतना गोबर जितना एक बार में गाय, भैंस आदि ने किया या गिराया हो।

स्त्री० [हिं० चोंथना] चोंथने की क्रिया या भाव ।

चोंथना—स० [अनु०] १ किसी चीज में से उसका कुछ अंश बुरी तरह से काट, नोच या बकोटकर निकालना । २. लाक्षणिक रूप से किसी का धन बुरी तरह से और जबरदस्ती उससे लेना ।

चोंधना—स० [अनु०] १ पक्षियों का दाने चुगना । २ दे० 'चूँथना'।

चोंधर—वि० [सं० चक्षुरंध्र] १. बहुत छोटी आँखोंवाला (व्यक्ति या पशु) । २ जिसे अपेक्षया बहुत कम दिखाई देता हो। ३. बेवकूफ। मूर्ख। (अवज्ञा और हास्य में)

चोंप—पु०=चोप।

स्त्री०=चोब।

चोंपी†—स्त्री०=चेप ।

चोहकाँ†—पु० [सं० चूषण] १ गाय, बकरी, भैंस आदि को दुहने से पहले उनके बच्चों को चुसाया जानेवाला दूध। २ इस प्रकार दूध चुसाने की क्रिया या भाव। ३ होंठ लगाकर किसी प्रकार का रस चूसने की क्रिया या भाव ।

चोआ—पु० [हिं० चुआना=टपकाना] १ चुआकर गिराई, निकाली या रखी हुई चीज । २. वह छोटा और हलका दाँव जो जुआरी लोग किसी दूसरे जुआरी के दाँव पर उसके साथ मिलकर हार-जीत के लिए लगाते हैं। ३ वह कंकड़, पत्थर जो तराजू के पल्ले या बटखरे की कमी पूरी करने के लिए पल्ले पर रखा जाता है । ४ अनेक प्रकार के सुगंधित पदार्थों को पकाकर निकाला हुआ रस जिसकी गिनती गन्ध द्रव्यों में होती है। ५ दे० 'चोटा' ।

चोई—स्त्री० [देश०] १ मछली आदि कुछ जल-जन्तुओं की त्वचा पर होनेवाला गोल चितकबरा तथा चमकीला छिलका । २ दाल आदि का छिलका ।

चोईं—स्त्री०=चोई ।

चोक—पु० [सं०√कुच् (रोकना)+क्विप्, क=च, पृषो०, चुक—अच्] भड़भाँड़ या सत्यानासी नामक पौधे की जड़ जो दवा के काम आती है।

चोकर—पु० [हिं० चून=आटा+कराई=छिलका] गेहूँ, जौ आदि के आटे को छानने पर उसमें से बचनेवाला छिलकों का अंश जो दरदरे तथा मोटे कणों के रूप में होता है।

चोका—पु० दे० 'चोहका'। उदा०—चोका लाई अधर रस लेही।—जायसी।

वि० [स्त्री० चोकी]=चोखा। उदा०—चोकी मेरी देह, तन संजोग कोइ लाल को।—सेनापति।

चोकी—स्त्री०=चौकी।

चोक्ष—वि० [सं०√चक्ष् (प्रशस्त होना)+अच्,—पृषो० सिद्धि] १ पवित्र। शुद्ध। २ चतुर। दक्ष। ३ तीक्ष्ण। तेज। ४ प्रशंसित।

चोख—पु० [हिं० चोखा] चोखे अर्थात् प्रखर होने की अवस्था या भाव। चोखापन।

वि० =चोखा।

†पु० [सं० चक्षु] आँख। (बंगाल)

चोखना—स० [सं० चूषण] प्राणियों विशेषतः पशुओं का अपनी माता के थन में मुँह लगाकर उसका दूध पीना। उदा०—गियराहनि चोखनि सत तो में अति वर्ड्यान करेंगो।—कलित किशोरी।

चोखनि, चोखनी—स्त्री० [हिं० चोखना] चोखने अर्थात् स्तन-पान करने की क्रिया या भाव।

चोखा—वि० [सं०, चोक्ष, पा० प्रा० चोक्ख, मरा० गु० पं० चोख, बा उ० प० चोखा] १. तेज या पैनी धारवाला। जैसे—चोखा चाकू। २ जिसमें किसी प्रकार का खोट या मिलावट न हो। जैसे—चोखा घी, चोखा सोना। ३ व्यवहार आदि में खरा और साफ। जैसे—चोखा असामी। ४ औरों की तुलना में बहुत अच्छा या बढ़कर। जैसे—इस मामले में तो तुम्हीं सब से चोखे रहे। ५ सब प्रकार से अच्छा और ठीक। उदा०—चला विमान तहाँ से चोखा।—तुलसी। †६ मात्रा, मान आदि में अधिक।

पु० [?] १ एक प्रकार का चटपटा व्यंजन या सालन जो आलू या बैंगन को उबाल या भूनकर बनाया जाता है। भरता। भुर्ता। २ पकाया हुआ चावल। भात। (राज०)

चोखाई—स्त्री० [हिं० चोखना] चोखने या चोखाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। चुसाई।

†स्त्री०=चोखापन ।

चोखाना—स० [हिं० चोखना] १ बछड़ों आदि को चोखने अर्थात् स्तन-पान करने में प्रवृत्त करना। २ स्तन-पान कराना। †३ दूध दुहना। ४ धार चोखी या तेज करना। जैसे—चाकू चोखाना।

†अ० १ चोखा अर्थात् स्तन-पान किया जाना। २ दूहा जाना। ३. धार का चोखा या तेज किया जाना।

चोगर—पु० [फा० चुगद] उल्लू की-सी आँखोंवाला घोड़ा।

चोगा—पु० [तु० चुगा] एक प्रकार का पहनावा जो घुटनों तक लंबा और ढीला-ढाला होता है। लबादा।

चोगान—पु०=चौगान ।

चोच—पु० [सं०√कुच् (रोकना)+अच्, पृषो० क=च] १ छाल। २ चमड़ा। त्वचा। ३ तेजपत्ता। ४ दालचीनी। ५ नारियल। ६ कदली-फल। केला।

चोचक—पु० [स० चोच+कन्] छाल। वल्कल।

चोचलहाई—स्त्री० [हिं० चोचला+हाई (प्रत्य०)] (स्त्री) जो चोचले करती या दिखाती हो।

चोचला—पु० [अनु०] १ अल्हडपन या जवानी की उमंग मे किसी को खिझाने, रिझाने आदि के उद्देश्य से दिखाई जानेवाली ऐसी अग-भगी, कही या की जानेवाली वात या क्रिया जाने वाला व्यवहार जिसकी गिनती निकृष्ट प्रकार के हाव-भावो मे होती है। नखरा।

मुहा०—चोचले दिखाना या वघारना=दूसरो को खिझाने, रिझाने आदि के लिए ऐसी अग-भगी, हाव-भाव दिखलाना अथवा चेष्टा या वात करना जो प्रिय या रुचिकर न लगे। जैसे—चोचले मत वघारो; सीधी तरह से वाते करो।

२ ऐसा कार्य जो अपनी आन-वान दिखाकर किसी को विशेष रूप से प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। जैसे—ये सब अमीरो के चोचले है।

चोज—पु [स० चोद्य ?] १ किसी चुटीली उक्ति या वात मे का वह चमत्कारपूर्ण अग या तत्त्व जिससे लोग प्रसन्न और मुग्ध हो जायँ। अनूठी, सुन्दर और हास्य की वात। २ ऐसी वात जिसमे उक्त प्रकार का चमत्कारपूर्ण तत्त्व दिखाई देता हो।

पद—चोज का=अनोखा, दुष्प्राप्य और वढिया। **उदा०**—चोज के चष्न खोज खुले जहँ ओछे उरोज रहे उर मे घिसि। —देव।

चोट—स्त्री० [स० चुट=काटना] १ किसी धारदार वस्तु के प्रवल या वेगपूर्ण आघात से शरीर के किसी अग के कट, फट अथवा छिल जाने से होनेवाला घाव। जैसे—तलवार या पत्थर की चोट। २ अस्त्र-शस्त्र आदि के द्वारा किसी जीव पर किया जानेवाला लक्ष्य-भेदन या वार का आघात।

मुहा०—चोट खाली जाना=आघात या वार का चूक जाना। वार खाली जाना **(किसी की) चोट वचाना**=किसी के आघात या प्रहार को युक्ति मे विफल करना। **(आपस मे) चोटें चलना**=दोनो पक्षो का एक दूसरे पर मौखिक रूप से आघात या वार करना।

३ गिरने-पडने, टकराने, ठोकर खाने अथवा किसी वस्तु के शरीर पर आ गिरने से होनेवाला वाहरी या भीतरी घाव, विकृति या सूजन।

मुहा०—**चोट उभरना**=किसी ऐसी पुरानी चोट मे फिर से पीड़ा, सूजन आदि उत्पन्न होना जो वीच मे अच्छी या ठीक हो गई हो। **चोट खाना**=किसी आघात या प्रहार के फल-स्वरूप कष्टदायक या विकृतिकारक परिणाम, प्रभाव या फल से युक्त होना।

४ किसी हिंसक जंतु या पशु द्वारा किया हुआ आघात, वार या प्रहार जो घातक भी हो सकता है। जैसे—शेर या साँप छेडने पर अवश्य चोट करते है। ५ कोई ठोस चीज तोडने, फोडने या चिपटी करने के लिए उस पर किया जानेवाला किसी भारी औजार का आघात। जैसे—पत्थर या लोहे पर की जानेवाली घन या हथौडे की चोट। ६ लाक्षणिक रूप मे, (क) किसी का कोई ऐसा कथन जिससे कोई अपने को अपमानित या लज्जित समझने लगे। (ख) कोई ऐसी घटना जिससे किसी की कोई वहुत वडी क्षति या हानि हुई हो अथवा (ग) अ... आदि के कारण होनेवाला कष्ट जिसके परिणाम-स्वरूप मनुष्य ... दु:खी या विकल होता हो। ७ कपट या छलपूर्वक किया ज... कोई ऐसा काम या वात जिससे किसी का कुछ अनिष्ट हो। दगा। धोखा। विश्वासघात। जैसे—तुमने वहुत वुरे समय मे मेरा साथ छोड कर मुझ पर चोट की है। ८ आक्रमण, आघात, प्रहार आदि के रूप मे होनेवाले कामो या वातो के सवध मे प्रत्येक वार होनेवाली उक्त प्रकार की क्रिया। जैसे—एक चोट कुश्ती, दो चोट दगा-फसाद, चार चोट लडाई-झगडा आदि। ९ वह जो किसी की तुलना मे वरावरी या मुकावले का ठहरता या सिद्ध होता हो। उदा०—उज्ज्वल, अखड खड सातएँ महल महामडल चवारो चदमडल की चोट ही।—देव।

मुहा०—(किसी की) चोट का=तुलना या वरावरी का। जोड या मुकावले का।

चोटइल†—वि०=चुटैल।

चोटना-पोटना*—स० [हिं० चोटी-पोटी] १ रूठे हुए को मनाना। २. फुसलाना।

अ० खुशामद अथवा चापलूसी की वातें करना।

चोटहा†—वि० [हिं० चोट+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० चोटही] १ जिस पर चोट का निशान हो। २ (व्यक्ति या जीव-जतु) जिसे चोट लगी हो। ३ (अग) जिस पर चोट का दाग या निशान वना हुआ हो। ४ चोट करनेवाला।

चोटा—पु० [हिं० चोआ] गुड से चीनी वनाते समय उसे छानने पर निकला हुआ गुड का पसेव। चोआ। माठ।

चोटाना†—अ० [हिं० चोट] चोट से युक्त होना। चोट खाना।

†स० चोट या प्रहार करना।

चोटा-पोटा—वि० [?] [स्त्री० चोटी-पोटी] खुशामद से भरा हुआ (कथन)। चिकनी-चुपडी (वात-चीत)। उदा०—हमसो सदा दुरावत्ति सो यह वात कहत मुख चोटी-पोटी।—सूर।

चोटार—वि० [हिं० चोट+आर (प्रत्य०)] १ (जीव) जो चोट करता या कर सकता हो। २. चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना—अ० [हिं० चोट] चोट पहुँचाना। चुटैल करना।

चोटिका—स्त्री० [स० √चट (घेरदार) + अण्-डीप्-कन्-टाप्] लहँगा।

चोटिया—स्त्री०=चुटिया (चोटी)।

चोटियाना—स० [हिं० चोटी] १ मारने पीटने आदि के लिए किसी की चोटी या सिर के वाल हाथ से पकडना। २ किसी को इस प्रकार पकडकर तग करना या दवाना कि मानो उसकी चोटी अपने हाथ मे आ गई हो।

अ० [हिं० चोटी] स्त्रियो का चोटी करना या वेणी वाँधना।

चोटियाला†—वि० [हिं० चोटी] [स्त्री० चोटियाली] सिर पर के वडे-वडे वालोवाला। उदा०—चोटियाली कूदै चौसठि चाचरि।—प्रिथीराज।

पु० पिशाच, प्रेत, भूत आदि।

चोटी—स्त्री० [स० चूडा ? प्रा० प० चोटी, गु० मरा० चोटी, चोटली] १ स्त्रियो के सिर के वे वडे और लवे वाल जो कई प्रकार से लट या लटो के रूप मे गूँथे रहते है। वेणी।

मुह... ...ी **करना**=स्त्रियो का सिर के वाल गूथ और सँवारकर वेणी वनाना।

... ...ो मे सिर के ऊपर पिछले भाग के मध्य मे थोडे से

बचाकर रखे हुए वे लंबे बाल जो हिन्दुत्व का एक मुख्य चिह्न होता है। चुंदी। शिखा।

पद—चोटीवाला। (देखे)

मुहा०—चोटी कटाना=सिर मुंडाकर साधु-संन्यासी या संसार-त्यागी होना। (किसी के नीचे) चोटी दबना=ऐसी स्थिति में होना कि किसी से दबकर रहना पड़े। जैसे— जब तक उनके नीचे तुम्हारी चोटी दबी है, तब तक तुम उनके विरुद्ध नहीं जा सकते। (किसी की) चोटी (किसी के) हाथ में होना=किसी का किसी दूसरे के अधीन या वश में होना। जैसे—उनकी चोटी तो हमारे हाथ में है। वे हम से बचकर कहाँ जायँगे। चोटी रखना=सिर के पिछले मध्य भाग में थोड़े से बाल आस-पास के बालों से अलग रखकर बढ़ाना जो हिन्दुत्व का चिह्न है। शिखा धारण करना।

३. प्रायः काले धागों या सूत का वह लंबा लच्छा जो स्त्रियाँ अपने सिर के बालों के साथ गूंथकर उन्हें बाँधने और अपनी चोटी लंबी तथा सुन्दर बनाकर दिखाने के काम में लाती हैं। ४ साँप के आकार का वह गहना जो स्त्रियाँ सिर के बालों की जूड़े में खोंसती या अपनी चोटी के नीचे लटकाती हैं। ५ कुछ विशिष्ट पक्षियों के सिर पर ऊपर उठे हुए कुछ लंबे पर या बाल। कलगी। जैसे—मुरगे या मोर की चोटी। ६ किसी बड़ी या भारी चीज का सब से ऊँचा और ऊपरी भाग। जैसे—पहाड़ या महल की चोटी। ७. किसी चीज का किसी ओर निकला हुआ कुछ नुकीला और लंबा सिरा। जैसे—मोलम, पत्ते या हीरे की चोटी। ८ किसी प्रकार के उतार-चढ़ाव या ऊपरी मोड़ का सब से ऊँचा और ऊपरी अंश या भाग। जैसे—पूस-माघ में गेहूँ का भाव चोटी पर पहुँच जाता है।

पद—चोटी का=अपने वर्ग में सब से अच्छा, बढ़कर या श्रेष्ठ। सर्वो-त्तम। जैसे—चोटी का ग्रन्थ, चोटी का पंडित या विद्वान्।

चोटीवाला—पु० [हि०] जिन, प्रेत या भूत जिनके संबंध में यह प्रवाद है कि उसकी चोटी बहुत लंबी होती है। (स्त्रियाँ)

विशेष—प्रायः स्त्रियाँ भूत-प्रेत आदि से बहुत डरती हैं और उनका नाम तक नहीं लेना चाहतीं; इसलिए वे इसी नाम से उनकी चर्चा करती हैं।

चोट्टा†—पु० [हि० चोर] [स्त्री० चोट्टी, भाव० चोट्टापन] वह व्यक्ति जो छोटी-मोटी चीजें दूसरों के घरों से उनकी नजरें बचाकर उठा लाता हो। छोटे दरजे का चोर।

चोड—पुं० [सं०√चुड् (संवरण करना)+अच्] १. उत्तरीय वस्त्र। २. चोल देश।

चोड़क—पु० [सं० चोट+कन्] पहनने का एक कपड़ा।

चोड़ा—पु० [सं० चोड़+टाप्] बड़ी गोरखमुंडी।

चोड़ी—स्त्री० [सं० चोट+ङीप्] स्त्रियों के पहनने की साड़ी।

चोड़्†—पु० [?] उत्साह। उमंग।

चोतक—पु० [सं० चुत् (टपकना)+ण्वुल्—अक] १ दालचीनी। २. छाल। वल्कल।

चोथ—पु०=चोंथ।

†स्त्री०=चौथ। (गुजरात)

चोथना† स०=चोंथना।

चोद—पु० [सं०√चुद् (प्रेरणा करना)+णिच्)+अच्] १ चाबुक। २. ऐसी लंबी लकड़ी जिसके सिरे पर नुकीला काँटा लगा हो।

चोदक—वि० [सं०√चुद्+णिच्+ण्वुल्—अक] चोदना या प्रेरणा करनेवाला।

चोदना—स्त्री०[सं० √चुद्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. वह वाक्य जिसमें कोई काम करने का विधान हो। विधि-वाक्य। २ प्रेरणा। ३. प्रयत्न।

स० पुरुष का स्त्री के साथ संभोग करना। स्त्री-प्रसंग करना।

चोदू—पु०[हि० चोदना] चोदने अर्थात् प्रसंग या संभोग करनेवाला।

चोदू†—वि०[हि० चोदना] चूतिया। (गाली०)

चोद्य—वि०[सं०√चुद्+णिच्+यत्] जो चोदना या प्रेरणा का उपयुक्त पात्र या विषय हो।

पु०१ प्रश्न। सवाल। २ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद में पूर्व पक्ष।

चोप—पु०[हि० चाव] १ उत्साह और उमंग से भरी हुई कामना या लालसा। चाव।

क्रि० प्र०—चढ़ना।

२ उत्साह या उमंग बढ़ानेवाला काम, चीज या बात। ३ उत्तेजना। बढ़ावा।

क्रि० प्र०—देना।

पु०[हि० चूना=टपकना] कच्चे आम के ऊपरी भाग का वह रस जो शरीर में लगने पर खुजली, जलन, फुंसी आदि उत्पन्न करता है।

†स्त्री०[फा० चोब] १ दे० 'चोब'। २ डंके पर लकड़ी से किया जानेवाला आघात। डंके की चोट। ३ इस प्रकार उत्पन्न होनेवाला शब्द।

चोपदार†—पु०=चोबदार।

चोपी—वि०[हि० चोप] १ जिसे किसी बात का बहुत अधिक चाव या चाह हो। २. जिसमें विशेष उत्साह या उमंग हो।

स्त्री०=चेप (लसीला पदार्थ)। जैसे—आम की चोपी।

चोब—स्त्री०[फा०] १. शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा या बाँस। २. वह पतली लकड़ी या खमाची जिससे नगाड़े पर आघात किया जाता है। ३ मोटा डंडा विशेषतः वह मोटा डंडा जिस पर सोने या चाँदी का पत्तर चढ़ा या लगा हो।

चोबकारी—स्त्री०[फा०] जरदोजी।

चोबचीनी—स्त्री०[फा० चोब+हि० चीनी (चीन देश का)] चीन देश में होनेवाली एक लता जिसकी जड़ औषध के काम आती है।

चोबदार—पु०[फा०] [भाव० चोबदारी] वह दरबान या नौकर जिसके हाथ में चोब (मोटा डंडा) रहता हो।

चोबदारी—स्त्री०[फा०] चोबदार का काम या पद।

चोबा—पु०[फा० चोब] १. उबाले हुए चावल। भात। २ दे० 'चोब'।

†पु०=चौबे। (पंजाब)

चोबी—वि०[फा०] लकड़ी का बना हुआ। जैसे—चोबी इमारत या मकान।

चोभ—स्त्री०[हि० चुभना] १. चुभने की क्रिया या भाव। २ चुभने-वाली कोई वस्तु या बात।

चोभना—स०=चुभाना।

चोभा—पु०[हिं०चोभना] १ चोभने या चुभाने की क्रिया या भाव। २ लोहे की सूइयोवाला वह दस्ता जिससे मुरब्बा बनाने के लिए आँवला, आम, पेठे के टुकडे आदि कोचे जाते हैं। ३ दवाओ की बँधी हुई वह पोटली जिससे पीडित अग मुख्यत आँख सेकी जाती है। भाथा। ४ उक्त पोटली से शरीर का कोई पीडित अग सेकने की क्रिया या भाव।

चोभाकारी—स्त्री०[हि० चोभना+फा० कारी=काम] पत्थरो, रत्नो आदि का किसी चीज पर होनेवाला ऐसा जडाव जो किसी तल मे चुभा या धँसाकर कुछ उभारदार रूप मे बनाया गया हो।

चोभाना†—स० =चुभाना।

चोम—स्त्री०[अ० जोम] १ उमग। जोश। २ गर्व। घमड। (राज०)

चोया†—पु० =चोआ।

चोर—पु०[सं०√चुर् (चुराना)+णिच्+अच, प्रा०, पा०, गुज०, प० बँ०, मरा०, चोर, सिं० चोरु, सिह० होर] १ वह जो लोगो की आँख बचाकर दूसरो की कोई चीज अपने उपयोग के लिए उठा ले जाता या रख लेता हो। बिना किसी को जतलाये हुए पराई चीज लेकर उस पर अपना अधिकार या स्वामित्व स्थापित करनेवाला व्यक्ति। चुराने या चोरी करनेवाला। तस्कर। जैसे—(क) चोर उनके घर मे घुस कर सब माल-असबाब उठा ले गये। (ख) आजकल नगर मे चोरो का ऐसा दल आया है जो मकान किराये पर लेकर आस-पास की दूकानो या मकानो मे चोरी करता है।

मुहा०—(कहीं या किसी के घर) चोर पड़ना =चोर या चोरो का आकर बहुत-सी चीजे चुरा ले जाना।

कहा०—चोर के घर (या चोर पर) मोर पड़ना=(क) एक चोर के घर पहुँचकर दूसरे चोर का चीजे चुराना या चोरी करना। (ख) किसी दुष्ट या धूर्त्त के साथ उससे भी बडे दुष्ट या धूर्त्त के द्वारा दुष्टता या धूर्त्तता का व्यवहार होना।

२ लडको के खेल मे, वह लडका जो अपना दाँव हार जाता है, और इसीलिए दूसरे लडके जिससे कोई दौड-धूप या परिश्रम का काम कराके अपना दाँव लेते या बदला चुकाते है।

विशेष—ऐसे लडके को प्राय किसी दूसरे लडके को छूकर चोर बनाना या अपनी पीठ पर चढाकर कुछ दूर पहुँचाना या ले जाना पडता है।

३ क्षत या घाव के सबध मे, वह दूषित और विषाक्त अश, तत्त्व या विकार जो किसी प्रकार अन्दर या नीचे छिपा या दबा रह गया हो और आगे चलकर दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता हो। जैसे—इस घाव का मुँह ऊपर से तो बद हो गया है, पर अभी इसके अन्दर चोर है। (आशय यह कि इसका मुँह फिर से खुलकर दूषित अश या विकार निकलना चाहिए) ४ किसी तल मे वह थोडा-सा या सूक्ष्म अश जो ठीक तरह से बनने, भरने आदि से छूट गया हो, और इसीलिए जो दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता या दोष माना जाता हो। जैसे—(क) जब छत बनने मे कही चोर रह जाता है, तभी वह चूती या टपकती है। (ख) मेहदी हाथ मे ठीक तरह से नही लगी हे, कई जगह चोर रह गया है। ५ ताश, गजीफे आदि के खेलो मे, वह हलका पत्ता जो किसी खिलाडी के हाथ मे इसलिए रुका रहता है कि इसे चलने पर उसकी हार की सम्भावना होती है।

पद—गुलाम चोर=ताश का एक विशिष्ट खेल जिसमे कोई एक पत्ता चोर बनाकर अलग कर दिया जाता है। खेल के अत मे जिसके हाथ मे उस पत्ते के जोड का दूसरा पत्ता बच रहता है, वही खिलाडी चोर कहलाता है।

६ लाक्षणिक रूप मे, मन मे उत्पन्न होने या रहनेवाला कोई अनुचित और कपटपूर्ण उद्देश्य, भाव या विचार। जैसे—यदि तुम उनसे मिलकर सब बातो का निपटारा नही करना चाहते तो तुम्हारे मन मे जरूर कोई चोर है। ७ चोरक नाम का गध द्रव्य। ८ रहस्य सप्रदाय मे, (क) काम, क्रोध, मोह आदि विकार। (ख) मृत्यु।

वि० (क) समस्त पदो मे उत्तर पद के रूप मे और व्यक्तियो के सबध मे—१ किसी की कोई चीज चुरानेवाला। चोरी करनेवाला। जैसे—किताब चोर, जूता-चोर। २ किसी प्रकार कुछ चुराने, छिपाने, दबा रखने या सामने न करनेवाला। जैसे—मुँहचोर=जल्दी किसी को मुँह न दिखानेवाला। ३ कर्त्तव्यपालन, कष्ट, परिश्रम आदि से अपने आप को बचानेवाला। (ख) समस्त पदो मे पूर्वपद के रूप मे पदार्थो आदि के सबध मे—१. जो इस प्रकार आड मे छिपा हुआ हो कि ऊपर या बाहर से देखने पर जल्दी दिखाई न दे, जिसका सब लोगो को सहसा पता न चलता हो या जिसे साधारण लोग न जानते हो। जैसे—अलमारी या सदूक मे का चोर-खाना या चोर-ताला, किसी बडी बस्ती मे की चोर गली, किसी तख्ते मे का चोर छेद, किसी बड़े मकान मे का चोर दरवाजा या चोर सीढ़ी आदि। २ (स्थान) जहाँ या जिसमे कोई ऐसा काम या बात होती हो जो सबके सामने या खुले आम न हो सकती हो, बल्कि चुरा-छिपाकर की जाती हो। जैसे—चोरबाजार, चोर महल आदि। ३ (तल या स्थान) जो ऊपर से देखने पर तो बिलकुल ठीक और पक्का जान पडे, परन्तु जिसके नीचे कुछ पोलापन हो और इसीलिए जो थोड़ा-सा भार पड़ने पर या सहज मे दब अथवा धँस सकता हो। जैसे—चोर जमीन, चोर बालू या चोर मिट्टी आदि। ४ शरीर या उसके किसी अग के सबध मे, जिसकी क्रिया, शक्ति, स्वरूप आदि का बाहर से देखने पर अनुमान न हो सकता हो या पूरा पता न चलता हो। जैसे—चोर थन, चोर पेट, चोर बदन आदि। ५ अनाज के दानो के सबध मे, जो साधारण से बहुत अधिक कडा हो और इसलिए कूटने-पीसने आदि पर भी ज्यो का त्यो बचा या बना रहता हो और टूटता या पिसता न हो। जैसे—चोर ऊडद, चोर मटर, चोर मूँग आदि।

चोर-कंटक—पु० [कर्म०स०] चोरक नाम का गध द्रव्य।

चोरक—पु०[स० चोर+कन्] १ एक प्रकार का गठिवन जिसकी गणना गध द्रव्यो मे होती है। २ असबरग जिसकी गिनती गध द्रव्यो मे होती है।

चोरकट—पु०[हिं० चोर+कट=काटनेवाला] उचक्का। चोट्टा।

चोरखाना—पद पु०[हिं०] अलमारी, सदूक आदि मे का ऐसा छिपा हुआ खाना, घर या विभाग जो ऊपर से देखने पर सहसा न दिखाई देता हो।

चोर खिड़की—स्त्री०[हिं०] छोटा चोर दरवाजा। (दे० 'चोर दरवाजा')

चोर-गणेश—पु० [कर्म० स०] तात्रिको के एक गणेश जिनके विषय मे कहा जाता है कि यदि जप करने के समय हाथ की उँगलियो मे सधि रह जाय, तो वे उसका फल चुरा या हरण कर लेते है।

चोरगली—स्त्री०[हिं०] १ नगर या बस्ती की वह छोटी और तग गली जिसका पता सब लोगो को न हो। २ पाजामे का वह भाग जो दोनो जाँघो के बीच मे पडता है।

चोर-चकार—पु०[हिं० चोर+अनु० चकार] १ चोर। २ उचक्का। चोट्टा।

चोर-चमार—वि०[हिं०] [भाव० चोरी-चमारी] (व्यक्ति) जो चोरी आदि निन्दनीय तथा निकृष्ट काम करता हो।

चोर-छेद—पद पु०[हिं०] दो चीजो के बीच का बहुत छोटा और छिपा हुआ अवकाश। संधि। दरज।

चोर-जमीन—स्त्री०[हिं० चोर+जमीन] ऐसी जमीन जो ऊपर से देखने मे तो ठस या पक्की जान पडे, पर नीचे से पोली हो और जो भार पडते ही नीचे धँस या दब जाय।

चोरटा†—वि० [हिं० चोर+टा (प्रत्य०)] [स्त्री० चोरटी] १ चोरी करने या चुरानेवाला। उदा०—लिये जाति चित चोरटी वह गोरटी नारि।—बिहारी। २. दे० 'चोट्टा'।

पु० चोर।

चोर-ताला—पु० [हिं०] ऐसा ताला जो ऊपर से सहसा दिखाई न देता हो, अथवा साधारण से भिन्न और किसी विशिष्ट युक्ति से खुलता हो।

चोर-थन— पु०[हिं०] गौओ-भैंसो का ऐसा थन जिसके अदर दूध बचा रह जाता या बचा रह सकता हो।

वि०[हिं०] (गौ, बकरी या भैंस) जो अपने बच्चे के लिए थन मे कुछ दूध चुरा या बचा रखे ; दुही जाने पर पूरा या सारा दूध न दे।

चोर-दंत—पु०[हिं०] वह दाँत जो बत्तीस दाँतो के अतिरिक्त निकलता और निकलने के समय बहुत कष्ट देता है।

चोर-दरवाजा—पु०[हिं०] किसी महल या बडे मकान मे प्राय' पिछवाडे की ओर का वह छोटा दरवाजा जो आड मे हो और जिसका पता सब लोगो को न हो।

चोर-द्वार—पु०=चोर-दरवाजा।

चोरना*—स०=चुराना।

चोर-पट्टा—पु०[हिं० चोर+पाट=सन] एक प्रकार का जहरीला पौधा जिसके पत्तो और डठलो पर बहुत जहरीले रोएँ होते हैं जो शरीर मे लगने से सूजन पैदा करते हैं। सूरत।

चोर-पहरा—पु०[हिं० चोर=गुप्त+पहरा] पहरे का वह प्रकार जिसमे पहरेदार या तो छिपे रहते हैं अथवा भेष बदल कर पता लगाने के लिए घूमते-फिरते रहते हैं।

चोर-पुष्प—पु०=चुरपुष्पी।

चोर-पुष्पिका—स्त्री०[चोरपुष्पी+कन्—टाप्, ह्रस्व]=चोर-पुष्पी।

चोर-पुष्पी—स्त्री० [ब०स०, ङीप्] एक प्रकार का क्षुप जिसमे आसमानी रग के फूल लगते हैं। अधाहुली। शंखाहुली।

चोर-पेट—पु०[हिं०] १ स्त्रियो का ऐसा पेट जिसमे गर्भ की स्थिति का ऊपर से देखने पर जल्दी पता न चले। २ ऐसा छोटा उदर या पेट जिसमे साधारण से बहुत अधिक भोजन समा सकता या समाता हो। ३. किसी चीज के अन्दर का कोई ऐसा गुप्त विभाग या स्थान जो ऊपर से दिखाई न दे।

चोर-पैर—पु०[हिं०] ऐसे पैर जिनके चलने की आहट न मिले या शब्द न सुनाई पडे। उदा०—ऐसा ही मोर के चोर पैर आला के ने उन्हें पाया।—अज्ञेय।

चोर-बत्ती—पद स्त्री०[हिं०] हाथ मे रखने की बिजली की वह बत्ती जो खटका या बटन दबाने पर ही जलती है।

चोर-बदन—पद पु०[हिं०] ऐसा बदन या शरीर जो देखने मे विशेष हृष्ट-पुष्ट न होने पर भी यथेष्ट बलवान् या शक्तिशाली हो।

चोर-बदन—वि०[हिं०] (मनुष्य या व्यक्ति) जो देखने मे दुबला-पतला या सामान्य जान पडने पर भी अपेक्षया अधिक बलवान् या शक्तिशाली हो।

चोर-बाजार—पु०[हिं०] [भाव० चोर बाजारी] व्यापार का वह क्षेत्र जिसमे नियत्रित अथवा राशन में मिलनेवाली चीजें चोरी से और अधिक ऊँचे मूल्य पर खरीदी और बेची जाती हैं।

चोर-बाजारी—स्त्री०[हिं०] नियन्त्रित अथवा राशन मे मिलनेवाली वस्तुएँ खुले बाजार मे और उचित मूल्य पर न बेचकर चोरी से और अधिक दाम पर बेचने की क्रिया, प्रकार या भाव।

चोर-बालू—पुं०[हिं० चोर+बालू] वह बालू या रेत जिसके नीचे दलदल, धँसाव या पोलापन हो।

चोर-महल—पु०[हिं०] १. राजाओ, रईसो आदि का ऐसा महल या मकान जिसमे वे अपनी रखेली स्त्री या स्त्रियाँ रखते थे। २. घर के अन्दर का वह छिपा हुआ छोटा कमरा जो साधारणत. लोगो की दृष्टि में न आता हो।

चोर-मिहीचनी—स्त्री०[हिं० चोर+मीचना=बद करना] आँख मिचौली नाम का खेल।

चोर-रास्ता—पु०[हिं०] वह छिपा हुआ मार्ग जिसका जन-साधारण को पता न हो। चोरगली।

चोर-सीढ़ी—स्त्री०[हिं०] किसी बडे मकान या महल मे वह छोटी और सँकरी सीढी जो कही आड मे हो और जिसका पता सब लोगो को न हो।

चोर-स्नायु—पु०[ष०त०] कौवा ठोंठी। काकतुडी।

चोर-हटिया—पु०[हिं० चोर+ हटिया] चोरो से अथवा चोरी का माल खरीदनेवाला दूकानदार।

चोर-हुली—स्त्री०=चोर-पुष्पी।

चोरा—स्त्री०[सं० चोर+अच्-टाप्]=चोर-पुष्पी।

चोराख्य—पु०[स० चोर-आख्या, ब०स०]=चोर-पुष्पी।

चोराना—स०=चुराना।

चोरिका—स्त्री०[स० चोर+ठन्—इक, टाप्] चुराने का काम। चोरी।

चोरित—भू०कृ० [स०√चुर् (चुराना)+णिच्+क्त] चुराया हुआ।

चोरिला—पु०[स०?] एक प्रकार का बढिया चारा जिसके दाने या बीज कभी-कभी गरीब लोग अनाज की तरह खाते है।

चोरी—स्त्री०[हिं० चोर] १ चुराने या चोरी करने की क्रिया या भाव। २. दूसरो से कोई बात चुराने या छिपाने की क्रिया या भाव। जैसे—खुदा की गर नही चोरी की तो फिर बन्दे की क्या चोरी।—कोई शायर।

चोरी-चोरी—क्रि० वि० [हिं० चोरी] १ धीरे-धीरे। २ चुपके-चुपके। ३ बिना किसी को कहे या बतलाये। जैसे—(क) उन्होंने चोरी-चोरी विवाह कर लिया। (ख) आप चोरी-चोरी चले गये, मुझसे मिले तक नहीं।

चोल—पु०[स० √चुल् (ऊँचाई)+घञ्] १ दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश जो आधुनिक तजौर, त्रिचनापल्ली आदि के आस-पास और दक्षिणी मैसूर तक विस्तृत था। २. उक्त देश का निवासी। ३. स्त्रियो के पहनने की चोली। ४ मजीठ। ५ कवच। जिरह-बक्तर। ६ छाल। वल्कल।

वि० लाल (रग)।

चोलक—पु०[स० चोल+कन्]=चोल।

चोलकी (किन्)—पु०[स० चोलक+इनि] १ वाँस का कल्ला। २ नारगी का पेड। ३ करील का पेड। ४ हाथ की कलाई या पहुँचा।

चोल-खंड—पु०[मध्य० स०] कपडे का वह टुकड़ा जो प्राय. साड़ियो के साथ (अथवा अलग भी) इसलिए बुना जाता है कि उससे चोली या कुरती बन सके।

चोलन—स्त्री०[स० चोल+क्विप्+ल्यु-अन]=चोलकी।

चोलना—स०[?] थोडीमात्रा मे कोई चीज खाना।

मुहा०—मुंह चोलना=नाममात्र के लिए कुछ या थोड़ा-सा खा लेना। †पुं०=चोला।

चोल-रंग—पु०[स० चोल=मजीठ+रग] मजीठ का रग जो पक्का लाल होता है।

चोल-सुपारी—स्त्री०[स० चोल+हिं० सुपारी] चोल देश की बढिया सुपारी।

चोला—पु०[स० चोडक, चोलक, प्रा० चोलअ, पा० चोलो, प० चोल्ला, सिं० चोलो] [स्त्री० अल्पा० चोली] १. एक प्रकार का बहुत लबा और घेरदार पहनावा जो प्राय साधु-सत आदि पहनते हैं। २. वह सिला हुआ नया कपडा जो कुछ रसम करने के बाद छोटे बच्चों को पहले-पहल पहनाया जाता है।

मुहा०—चोला पड़ना=कुछ धार्मिक और सामाजिक कृत्यो के बाद छोटे बच्चे को पहले-पहल सिला हुआ नया कपडा पहनाया जाना।

३. छोटे बच्चे को पहले-पहल सिला हुआ नया कपडा पहनाने की रसम या रीति। ४ तन। बदन। शरीर। जैसे—चोला मगन रहे। (आशीर्वाद।)

मुहा०—चोला छोड़ना=दूसरा और नया जन्म या शरीर धारण करने के लिए यह शरीर छोडना। जैसे—स्वामी जी ने अस्सी वर्ष की आयु भोग कर चोला छोडा था। **चोला बदलना**=(क) एक शरीर छोड़कर दूसरा नया शरीर धारण करना। (ख) एक रूप या वेप छोडकर दूसरा रूप या वेप धारण करना। जैसे —आज तो आप चोला बदल कर आये हैं।

चोली—स्त्री०[स०चोल+ङीप्, हिं० चोला] १ स्त्रियो का वह मध्ययुगीन पहनावा जिससे उनका वक्ष-स्थल ढका रहता था; और जिसमे नीचे की ओर लगी हुई तनियाँ या बद पीठ की ओर खीचकर बाँधे जाते थे। २. आज-कल उक्त पहनावे का वह सुधरा हुआ रूप जो स्त्रियाँ स्तनो को ढलने से बचाने के लिए कुरती आदि के नीचे पहनती हैं। ३ अँगरखे आदि का वह ऊपरी भाग जिसमे बद लगे रहते है।

पद—चोली दामन का साथ=वैसा ही अभिन्न, घनिष्ठ और सदा बना रहने-वाला साथ जैसे अँगरखे के उक्त ऊपरी भाग तथा दामन या नीचेवाले भाग मे होता है। जैसे—रिश्तेदारो मे तो आपस मे चोली दामन का साथ होता है।

४ साधु-सतो आदि के पहनने का कुछ छोटा चोला।

स्त्री० [?] तमोलियो की पान रखने की डलिया या दौरी।

चोली-मार्ग—पु०[मध्य० स०] वाम मार्ग का वह भेद या संप्रदाय जिसमे उपासिकाओ की चोलियाँ एक बरतन मे ढककर रख दी जाती हैं, और तब निकालने पर जिस स्त्री की चोली जिस उपासक के हाथ मे आती है, उसी के साथ वह सभोग करता है।

चोल्ला—पु०=चोला।

चोवा—पु०=चोआ (दे०)।

चोष—पु०[स०√चि (चयन)+ड, च-उप, कर्म० स०] पार्श्व या बगल मे जलन होने का एक रोग। (भाव प्रकाश)

चोषक—वि०[स०√चूष (चूसना)+ण्वुल्—अक, आर्ष० गुण] चोषण करने अर्थात् चूसनेवाला।

चोषण—पु०[स०√चूष्+ल्युट्-अन, आर्ष० गुण] चूसने की क्रिया या भाव। चूसना।

चोषना*—स०[स० चोषण] चूसना।

चोष्य—वि०[स०√चूष्+ण्यत्, आर्ष०] १ जो चूसा जा सके। २ जो चूसा जाने को हो।

चोसर—स्त्री०=चौसर।

चोसा—पु० [देश०] वह रेती जिससे लकडी को रगड़ या रेतकर समतल किया जाता है।

चोस्क—पु०[स०] १ अच्छी जाति का घोड़ा। २ सिधुवार वृक्ष।

चोहट†—पु०=चौहट्टा (बाजार)।

चोहान†—पु०=चौहान।

चौं†—अव्य०[हिं० क्यो] क्यो। किसलिए। उदा०—झुकि जा बदरिया बरस चौं न जाय। (ब्रज का लोक गीत)

चौंक—स्त्री०[हिं० चौंकना] चौंकने की क्रिया या भाव।

चौंकड़ा†—पु०[देश०] करील का पौधा।

चौंकना—अ० [?] १ एकाएक किसी प्रकार की आहट, ध्वनि या शब्द सुनकर कुछ उत्तेजित तथा विकल हो उठना। २ सहसा कोई भयभीत करनेवाली बात सुनकर अथवा वस्तु या व्यक्ति को देखकर घबरा जाना। ३ स्वप्न मे कोई विलक्षण या भीषण बात, वस्तु आदि देखने पर एका-एक घबराकर जाग उठना। ४ किसी प्रकार की अहित सबधी अप्रत्याशित सूचना मिलने पर चौकन्ना या सतर्क होना। ५ आशका, भय आदि से सहमना या कांपने लगना। ६. बिदकना। भडकना। जैसे—चलते-चलते घोडे का चौंकना।

चौंकाना—स०[हिं० चौंकना] १ कोई ऐसा काम करना या बात कहना जिसे सहसा देख अथवा सुनकर कोई चौंक उठे। २ सभावित अहित, क्षति या हानि की सूचना किसी को देना और उसे उससे बचने के लिए सतर्क तथा सावधान करना। ३ भडकाना।

चौंचा—पु०[हिं० चौ+फा० चह] सिचाई के लिए पानी एकत्र करने का गड्ढा।

चौंटना*—स०[हिं० चुटकी] हाथ की चुटकी से फूल आदि तोडना। चोटना।

चौंटली†—स्त्री० [स० चूडाला या श्वेतोच्चटा] सफेद घुँघची। श्वेत चिरमिटी।

चौंडा--पु०[स० चुडा] १. वह स्थान जहाँ मोट का पानी गिराया जाता है। २ दे० 'चोडा'।
पु०=चोडा (स्त्रियो के सिर के वाल)।

चौंतरा--पुं०=चबूतरा।

चौंतिस--वि०[स० चतुस्त्रिशत्, प्रा० चत्तुत्तिसो, पा० चउतीसी] जो गिनती मे तीस और चार हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है--३४।

चौंतिसवाँ--वि० [हि० चौंतिस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे चौंतिस के स्थान पर पडनेवाला।

चौंतीस--वि०, पु०=चौंतिस।

चौंध--स्त्री०[स०√चक्=चमकना या चौं=चारो ओर+अध] प्रखर और प्राय क्षणिक प्रकाश की वह स्थिति जिसे नेत्र सहसा सहन नही कर पाते और इसीलिए क्षण भर के लिए मुंद जाते है। कौंध। चका-चौध।

चौंधना†--अ०[हिं० चौंध] किसी वस्तु का क्षणिक किन्तु प्रखर प्रकाश से युक्त होना। कौधना। चमकना।

चौंधियाना--अ०[हिं० चौंध] नेत्रो का, किसी वस्तु के चौंधने पर स्वत पलके झपकने लगना (जिसके कारण कोई चीज ठीक प्रकार से सुझाई नही पडती)
स० ऐसा काम करना जिससे किसी की आँखे प्रकाश के कारण क्षण भर के लिए झपक या मुंद जायँ। किसी की आँखो मे चौंध उत्पन्न करना।

चौंधियारी--स्त्री० दे० 'कस्तूरी'।

चौंधी--स्त्री०=चौंध।

चौंबक--वि०[स० चुम्बक+अण्] १. चुबक-सम्बन्धी। चुबक का। चुबकीय। २ चुबक मे युक्त। जिसमे चुबक मिला या लगा हो।

चौंर--पु०[स० चामर ?] १ पिंगल मे मगण के पहले भेद (ऽ) की सज्ञा। २ भडभाँड या सत्यानाशी नामक पौधे की जड।
†पु० १=चँवर (देखें०)। २ झालर। ३ किसी चीज का गुच्छा।

चौंरगाय--स्त्री०[हिं० चौंर+स० गो] सुरागाय।

चौंरा--पु०[स० चुड=गड्ढा] १. वह गड्ढा जिसमे सुरक्षा के लिए अन्न गाडा जाता है। २ 'चौंडा'।

चौंराना--स०[हिं० चौंर+आना (प्रत्य०)] १ किसी के ऊपर या चारो ओर चँवर डुलाना। चँवर करना। २ जमीन पर झाड देना या लगाना।

चौंरी--स्त्री०[हिं० चौंर+ई (प्रत्य०)] १ छोटा चँवर। चँवरी। २ रेशम या सूत का वह लच्छा जिससे स्त्रियाँ सिर के वाल वाँधती है। चोटी। ३ किसी चीज के आगे लटकनेवाला फुँदना। ४ सफेद पूँछवाली गाय। ५ सुरागाय।

चौंवालिस--वि०,पु०=चौवालिस।

चौंसठ--वि०[स० चतुःषष्टि, प्रा० चउसट्ठि] जो गिनती मे साठ से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है--६४।

चौंसठवाँ--वि०[हिं० चौंसठ+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे चौंसठ के स्थान पर पडनेवाला।

चौंह--पु०[देश०] गलफड़ा।

चौंही--स्त्री०[देश०] हल मे की एक लकडी। परिहारी।

चौ--वि०[स० चतु, प्रा० चउ] चार का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरभ मे लगने मे प्राप्त होता है। जैसे--चौकोना, चौखडा, चौगुना आदि।
पु०मोती आदि तौलने का एक बहुत छोटा मान। जैसे--यह मोती तौल मे चार चौ है।
†विभ० सम्बन्ध-कारक की विभक्ति, का या की। (राज०)उदा०--वालकति करि हस चौ वालक।--प्रिथीराज।

चौअन--वि०, पु०=चौवन।

चौआ--पुं०[स० चतुष्पाद] गाय, वैल, भैंस आदि पशु। चौपाया।
वि०[हिं० चौ=चार] जिसमे चार हो। चार से युक्त।
पु० १. हाथ की चार उँगलियो का समूह। २. चौड़े वल मे अँगूठे को छोड बाकी चार उँगलियो का विस्तार जो नाप का एक मान है। ३ हाथ की उक्त चार उँगलियो को सटाकर उन पर लपेटा हुआ तागा। ४. ताश का वह पत्ता जिस पर चार वूटियाँ हो। जैसे--पान का चौआ।

चौआई--स्त्री०= चौवाई।

चौआना†--अ०[हिं० चौकना] १ चकित या विस्मित होना। चकप-काना। २. चौकना। ३ चौकन्ना या सतर्क होना।

चौक--पु०[स० चतुष्क, प्रा० चउक्क, गु० प० वँ० मरा० चौक, उ० चौका; सिं० चउकु, चौको] १ कोई ऐसी चौकोर जमीन जो ऊपर से विलकुल खुली हो। २ मकान के अदर का चारो ओर से घिरा और ऊपर से खुला स्थान। आँगन। सहन। जैसे--इस मकान मे दो चौक हैं। ३. कोई ऐसा चौकोर तल जो चारो ओर से सीमित, परन्तु ऊपर से खुला हो। जैसे--यज्ञ की वेदी। ४ उक्त के आधार पर कर्मकाड में या मागलिक अवसरो पर अवीर, आटे, गुलाल आदि से वनाई जाने-वाली वह विशिष्ट आकृति जिसमे वहुत से खाने या घर और रेखाएँ या लकीरें वनी रहती हैं।
मुहा०--**चौक पूरना**=अवीर, आटे आदि से उक्त प्रकार की आकृति वनाना। ५. चौसर खेलने की विसात जो प्राय उक्त आकार-प्रकार की होती है। ६ नगर या वस्ती का वह चौकोर मध्यभाग जो कुछ दूर तक विलकुल खुले मैदान की तरह रहता है। ७ उक्त के आस-पास या चारो ओर के वाजार और मकान जो एक महल्ले के रूप मे होते है। ८. मकानो के सवध मे प्रयुक्त होनेवाला सख्या-सूचक शब्द। अदद। जैसे--शहर मे उनके तीन चौक मकान है। ९ चौमुहानी। चौराहा। १० चार चीजो या वातो का समूह। जैसे--दाँतो का चौक=ठीक सामने के (दो ऊपर के और दो नीचे के) चार दाँत। उदा०--दसन चौक वैठे जनु हीरा।--जायसी।
पद--**चारों चौक**=(क) चारो ओर या चारो कोनो से। (ख) हर तरह से विलकुल ठीक, पक्का या वढिया। उदा०--पुनि सोरहो सिंगार जस चारिहु चउक (चौक) कुलीन।--जायसी।
११ स्त्रियो के गर्भ-धारण के आठवें महीने होनेवाला सीमत कर्म नामक सस्कार। अठमासा। अठवाँसा।

चौक गोभी--स्त्री० [हिं० गोभी] एक प्रकार की गोभी।

चौकठ†--पु०=चौखट।

चौकठा†—पु०=चौखटा।

चौकड़—वि० [हिं० चौ+स० कला=अग, भाग] अच्छा। बढिया। (बाजारू) जैसे—चौकड माल।

चौकड़याऊ—पु०[?] बुदेलखड मे होली के दिनो मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

चौकड़ा—पु०[हिं० चौ+कडा] १ कान मे पहनने की वाली जिसमे दो-दो मोती हो। २ फसल मे का चौथा भाग जो जमीदार का होता है। ३ दे० 'चौघडा'।

चौकड़ी—स्त्री०[हिं० चौक (चार चीजो का समूह) का स्त्री०] १ एक मे बँधी या लगी हुई एक ही तरह की चार चीजो का वर्ग या समूह। जैसे—घोडो, दाँतो या मोतियो की चौकडी।

पद—चंडाल चौकड़ी=चार अथवा चार के लगभग गुडो, वदमाशो या लुच्चो का वर्ग या समूह।

२ वह गाडी जिसके आगे चार घोडे या वैल अथवा ऐसे ही और पशु जुतकर खीचते हो। ३ गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना जिसमे चार-चार चौकोर खड एक साथ पिरोये या लगे रहते हैं। ४ कालमान की सूचना के लिए चार युगो का समूह। चतुर्युगी। ५ वैठने का वह ढग या प्रकार जिसमे दोनो पैरो और दोनो जाँघो के नीचेवाले भाग जमीन पर समतल रूप से लगे रहते हैं। पलथी। पालथी।

मुहा०—चौकड़ी मारकर वैठना=उक्त प्रकार से आसन या जमीन पर वैठना।

६ चारपाई की वह बुनावट जिसमे चार-चार डोरियाँ इकट्ठी और एक साथ बुनी जाती है। ७ हिरन की वह चाल या दौड जिसमे वह चारो पैर एक साथ जमीन पर उठाकर कूदता या छलाँग मारता हुआ आगे बढता है।

क्रि० प्र०—भरना।

मुहा०—(किसी की) चौकड़ी भूल जाना=तेजी से आगे वढते रहने की दशा मे सहसा वाधा, विपत्ति आदि आने पर इतना घवडा जाना कि यह समझ मे न आवे कि अव क्या उपाय करना चाहिए अथवा कैसे आगे वढना चाहिए।

८ वास्तु-रचना मे, मदिर की चौकी या मडप का वह ऊपरी भाग या शिखर जो प्राय चार खभो पर स्थित रहता है।

चौकनिकास—पु०[हिं० चौक+निकास] चौक (वाजार) मे वैठनेवाले दूकानदार से लिया जानेवाला कर।

चौकन्ना—वि०[हिं० चौ=चारो ओर+कान] १ (जीव) जो कान लगाकर चारो ओर की आहट लेता रहे। जैसे—चौकन्ना कुत्ता। २ (व्यक्ति) जो चारो ओर होनेवाले कार्यो या वातो विशेषत अपने विरुद्ध होनेवाले कार्यों या वातो का ध्यान रखता हो। ३ हर तरह से किसी प्रकार की विपत्ति, सकट आदि का सामना करने को प्रस्तुत। (एलर्ट) ४ जो सतर्क या सावधान रहता हो। जैसे—चौकन्ने कान, चौकन्नी आँखें। ५ चौंका हुआ। सशकित।

चौकरी†—स्त्री०=चौकडी।

चौकल—पु०[स०] पिंगल मे चार मात्राओ के समूह की सज्ञा। इसके पाँच भेद हैं। यथा—(SS, IIS, ISI, SII और IIII)

चौकस—वि० [हिं० चौ=चार+कस=कसा हुआ] [भाव० चौकसी] १ चारो ओर से अच्छी तरह कसा हुआ। २ जो अपनी अथवा किसी की रक्षा के लिए पूर्णत. सचेत हो। चौकसी करनेवाला। ३ ठीक। दुरुस्त। जैसे—चौकस माल।

चौकसाई—स्त्री०=चौकसी।

चौकसी—स्त्री०[हिं० चौकस+ई(प्रत्य०)] १. चौकस होने की अवस्था या भाव। २. किसी की रक्षा के लिए उस पर सूक्ष्म दृष्टि रखने का कार्य या भाव।

चौका—पु० [स० चतुष्क, प्रा० चउक्क, हिं० चौक] १ एक ही तरह की चार चीजो का वर्ग या समूह। जैसे—अँगोछो का चौका (एक साथ बुने हुए चार अँगोछे), दाँतो का चौका (अगले दो ऊपरी और दो नीचे के दाँत); मोतियो का चौका (एक साथ पिरोये हुए चार मोती)। २ एक प्रकार का जगली वकरा जिसके चार सीग होते है। चौसिंघा। ३ ताश का वह पत्ता जिस पर चार बूटियाँ होती हैं। चौआ। जैसे—पान या हुकुम का चौका। ४ किसी प्रकार चौकोर कटा हुआ ठोस, वडा और भारी टुकडा। जैसे—पत्थर या लकडी का चौका। ५ एक प्रकार की चौकोर ईंट। ६ पत्थर या लकडी का वह गोलाकार टुकडा जिस पर रोटी वेलते है। चकला। ७ रसोई वनाने और वैठकर भोजन करने का स्थान जो पहले प्राय चौकोर हुआ करता था। रसोई वनाने से पहले और भोजन कर चुकने के वाद उक्त को धो-पोछकर अथवा गोवर मिट्टी आदि से लीप-पोतकर की जानेवाली सफाई।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

पद—चौका-बरतन=रसोई वनने और भोजन होने के वाद चौका धोकर साफ करने और बरतन माँज-धोकर रखने का काम। जैसे—वह मजदूरनी चार घरो का चौका-बरतन करती है।

९ किसी स्थान को पवित्र और शुद्ध करने के विचार से गोवर, मिट्टी आदि से पोतने या लीपने की क्रिया या भाव। जैसे—आज यही पूजन (या हवन) होगा, इसलिए यहाँ जरा चौका लगा दो।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—चौका देना, फेरना या लगाना=किसी काम या बात को वुरी तरह से चौपट या नष्ट करना। (परिहास और व्यग्य) जैसे—तुमने जरा सी भूल करके वने-वनाये काम पर चौका फेर या लगा दिया। उदा०—कियो तीन तेरह सबै चौका चौका लाय।—भारतेंदु।

पद—चौके की राँड़=वह स्त्री जो विवाह के कुछ दिन वाद ही विधवा हो गई हो।

१० सिर के पिछले भाग मे बाँधा जानेवाला चौक या सीसफूल नाम का अर्ध गोलाकार गहना। ११ एक प्रकार का मोटा कपडा जो मकानो के चौक मे (या फर्श पर) विछाया जाता है। १२ एक प्रकार का पात्र या वरतन जिसमे अलग-अलग तरह की चीजें (जैसे-नमक, मिर्च, मसाले या साग, भाजी, रायता आदि) रखने के लिए अलग-अलग कटोरे या खाने वने होते हैं। चौघडा।

चौका-विधि—स्त्री० [हिं० चौका+स० विधि] कवीर-पथियो की एक शाखा मे प्रचलित एक कर्मकाडीय विधान जिसमे कुछ निश्चित तिथियो या वारो को दिन भर उपवास करके रात को आटे के वनाये हुए चतुर्भुज क्षेत्र की पूजा होती है।

चौकिया सोहागा—पु० [हिं० चौकी+सोहागा] छोटे-छोटे टुकडो मे कटा हुआ सोहागा जो औषध के लिए विशेष उपयुक्त होता है।

चौकी—स्त्री० [स० चतुष्किका, प्रा० चौक्किआ; गु० चोकी; ने० चौकि; उ० प०, ब०, मरा०, सि०, चौकी] १ लकडी, धातु या पत्थर का वह (छोटा या बडा) आयताकार आसन जो चार पावो पर कसा या जडा रहता है। २. मदिर के मडप के नीचे की चौकोर भूमि। ३. किसी पवित्र आसन पर विराजमान किसी देवी, देवता या महा पुरुष को चढाई जानेवाली भेंट।

मुहा०—**चौकी भरना**=किसी देवी या देवता के दर्शनो का मन्नत पूरी करने के लिए उक्त प्रकार के किसी स्थान पर जाना और वहाँ पूजा करके कुछ भेंट चढाना।

४ कुरसी। (क्व०) ५ गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना जिसमे कई छोटे-छोटे चौकोर खड एक साथ पिरोये रहते है। जगनी। पटरी। ६ वह स्थान जहाँ पहरेदार चौकी बिछा कर बैठते या विश्राम करते हो। ७ पहरा। रखवाली।

क्रि० प्र०—बैठना या बैठाना।

८ नगर के बाहरी भाग मे का वह स्थान जहाँ कुछ अधिकारी या कर्मचारी व्यवस्था, सुरक्षा आदि के लिए नियत रहते हो। जैसे—चुगी, पुलिस या सेना की चौकी।

मुहा०—**चौकी जाना**=दुराचारिणी या पुश्चली स्त्रियो का सभोग कराने तथा धन कमाने के लिए उक्त किसी स्थान पर जाना। **चौकी भरना**=अपनी बारी आने पर घूम-घूमकर पहरा देना।

९ रक्षा आदि के लिए किया जानेवाला जादू या टोना। १०. उक्त के आधार पर, रास्ते मे पैदल यात्रियो के ठहरने का स्थान। अड्डा। पडाव। ११ खेत की पैदावार बढाने के लिए उसमे इस उद्देश्य से रात भर भेड-बकरियो को रखवाना कि वही वे मल-मूत्र त्यागे। १२. तेलियो के कोल्हू की एक विशिष्ट लकडी। १३ पूरी, रोटी आदि बेलने का गोलाकार चकला। १४ शहनाई और उसके साथ बजनेवाले बाजे। रोशनचौकी। जैसे—आज तो उनके दरवाजे पर चौकी बैठी (या हो रही) है। १५ रोशनचौकीवालो के द्वारा एक बैठक मे बजाई जानेवाली चीजे (गीत या धुन)। जैसे-एक चौकी और बजा दो तो तुम्हारी छुट्टी हो जाय।

क्रि० प्र०—बजाना।

१६ प्रासादो, मदिरो का प्रवेशद्वार जहाँ या जिसके ऊपर शहनाई बजानेवाले बैठते है।

चौकी-घर—पु०[हिं० चौकी=पहरा+घर] वह छोटा-सा छाया हुआ स्थान जहाँ चौकीदार पहरा देने के समय धूप, वर्षा आदि से बचने के लिए खडा रहता है।

चौकीदार—पु० [हिं० चौकी+फा० दार] १. किसी स्थान पर चौकी-पहरे का काम करनेवाला कर्मचारी। २ राज्य द्वारा नियुक्त पुलिस विभाग का एक निम्न कर्मचारी जो गाँव-देहात मे पहरा देता है। ३ जुलाहो का का वह खूँटा जिसमे भाँज की डोरी फँसा या बाँधकर रखते है।

चौकीदारी—स्त्री० [हिं०] १. चौकीदार का काम। रखवाली। २ चौकीदार का पद। ३. गाँव-देहातो मे लगनेवाला वह कर जो चौकीदार का वेतन देने के लिए लगाया जाता है।

चौकी-दौड़—स्त्री०[हिं०] कई दलो मे प्रतियोगिता के रूप मे होनेवाली एक प्रकार की दौड जिसमें दल के हर आदमी को थोडी-थोडी दूर पर बनी हुई चौकियो पर नये दौडाक को प्रतीक रूप मे एक डटा सौपना पडता है। (रिलेरेस)

चौकुर—पु० [हिं० चौ=चार+कुरा] खेत की फसल बाँटने का वह प्रकार जिसमे एक हिस्सा जमीदार को और तीन हिस्सा काश्तकार को मिलता है।

चौकोन, चौकोना—वि० [स० चतुष्कोण, प्रा० चउक्कोण] [स्त्री० चौकोनी] १. जिसके या जिसमे चार कोण हो। २. चार कोनोवाला। चौखूँटा।

चौकोर—वि०[सं० चतुष्कोण, प्रा० चउक्कोण, चउक्कोड़,] १ (वस्तु या क्षेत्र) जिसके चारो पार्श्व बराबर हो। २. दे० सम 'चतुर्भुज'। ३ हर तरह से ठीक और दुरुस्त।

पु० क्षत्रियो की एक शाखा।

चौक्ष—वि०[स० चुक्षा+ण] १. निर्मल। स्वच्छ। २. प्रिय या लुभावना। ३ चोखा।

चौखंड, चौखंडा—वि० [हिं० चौ (चार)+सं० खण्ड] १. जिसके चार खण्ड या विभाग हो। २. जो चार खण्डो मे विभक्त हो।

पु० १. चार खण्डों या तल्लोंवाला मकान। २ उक्त मकान का सबसे ऊपर वाला अर्थात् चौथा खंड या तल्ला। ३. वह मकान जिसमे चार चौक हो। (क्व०)

चौखट—स्त्री०[हिं० चौ=चार+काठ] १ चार लकड़ियो का वह चौकोना ढाँचा जो दरवाजे के पल्ले कसने के लिए दीवार में लगाया जाता है। २. उक्त ढाँचे की ऊपर या नीचेवाली लकडी। जैसे—चौखट से सिर (या पैर) मे चोट लगी है।

चौखटा—पु०[हिं० चौखट] १. चौखट के आकार का वह चौकोर छोटा ढाँचा जो चित्र, शीशे आदि के चारों ओर उसकी सुरक्षा तथा शोभा के लिए मढा जाता है। २. उक्त प्रकार का कोई चौकोर वस्त्र जिसके बीच का भाग किसी विशिष्ट कार्य के लिए खाली रहता है।

चौखना—वि०[हिं० चौखड] चौखडा या चौमजिला (मकान)।

चौखा—पु०[हिं० चौ+खाई] वह स्थान जहाँ पर चार गाँवो की सीमाएँ मिलती हो।

चौखाना†—वि०, पु०=चारखाना।

चौखानि—स्त्री०[हिं० चौ=चार+खानि=(जाति या प्रकार)] अडज, पिडज, स्वेदज और उद्भिज ये चार प्रकार के जीव।

चौखूंट—पुं० [हिं० चौ+खूंट] १. चारो दिशाएँ। २ सारी पृथ्वी मडल।

क्रि० वि० १. चारो ओर। २ सब ओर।

वि०=चौखूँटा।

चौखूंटा—वि०[हिं० चौ+खूंट] जिसमे चार कोने हो। चतुष्कोण। चौकोर।

चौगड़ा—पु०[हिं० चौ+गोड=पैर] १ खरगोश। खरहा। २ चौघड़ा।

वि० चार पैरोवाला। (पशु)

चौगड्डा—पु० [हिं० चौ+गड्डवड्ड=मेल] १ चार चीजो का वर्ग या

समूह। २ वह गाँव जहाँ चार गाँवो की सीमाएँ मिली हो। चौहद्दी। चौसिहा। चौखा।

चौगड्डी—स्त्री० [हिं० चौ+गड्डा] जानवर फँसाने का बाँस की फट्टियो का चौकोर ढाँचा।

चौगान—पु० [फा०] १ गेद-बल्ले के एक प्रकार का पुराना खेल जो आज-कल के हाकी खेल से बहुत कुछ मिलता-जुलता होता था। यह खेल घोडो पर चढकर भी खेला जाता था। २. वह मैदान जिसमे उक्त खेल खेला जाता था। ३ उक्त खेल खेलने का बल्ला जिसका अगला भाग कुछ झुका हुआ होता था। ४ नगाडा बजाने की लकडी। ५ किसी प्रकार की प्रतियोगिता का स्थान।

चौगानी—स्त्री० [फा० चौगान ?] हुक्के के ढाँचे की वह सीधी नली जिससे धुआँ खीचा जाता है। निगाली।
वि० चौगान-सम्बन्धी।

चौगिर्द—क्रि० वि० [हिं० चौ+फा० गिर्द=तरफ] (किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के) चारो ओर। चारो तरफ।

चौगुन, चौगुना—वि० [स० चतुर्गुण, प्रा० चउगुण] [स्त्री० चौगुनी] मान या मात्रा मे जितनी कोई वस्तु, शक्ति आदि हो उस जैसी चार वस्तुओ या शक्तियोवाला। जैसे--शारीरिक क्षमता मे वह आप से चौगुने तो है ही।
मुहा०—(किसी का मन) चौगुना होना—बहुत अधिक उत्साह या प्रसन्नता बढना।

चौगून—स्त्री० [हिं० चौगुना] १. चौगुना होने का भाव। २. गाना या बजाना आरम्भ करते समय जिस गति से गाया या बजाया जाता है, अन्त मे उससे चौगुनी गति मे और चौथाई समय मे उसे गाने या बजाने का प्रकार।

चौगोड़ा—वि० [हिं० चौ+गोड=पैर] चार पैरोंवाला। जिसके चार गोड हो अर्थात् पशु।

चौगोड़िया—स्त्री० [हिं० चौ+गोड=पैर] १ वह ऊँची चौकी जिस पर चढने के लिए उसके पाँवो मे सीढियो सदृश डडे लगे हो। २ चिडियो को फँसाने का बाँस की तीलियो का एक प्रकार का ढाँचा।

चौगोशा—पु० [हिं० चौ+फा० गोशा] एक प्रकार की चौखूँटी तश्तरी जिसमे मेवे, मिठाइयाँ आदि रखकर कही भेजते हैं।

चौगोशिया—वि० [हिं० चौ=चार+फा० गोशा=कोना] चार कोनो-वाला। जिसमे चार कोने या सिरे हो।
स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की टोपी जो चार तिकोने टुकडो को सीकर बनाई जाती थी।
पु० तुरकी घोडा।

चौघड़—पु० [हिं० चौ=चार+दाढ़] दोनो जबडो के चारो सिरो पर होनेवाले एक-एक चिपटे तथा चौडे दाँतो की सामूहिक सज्ञा। चौभड।

चौघडा—पु० [हिं० चौ=चार+घर=खाना] १. वह डिब्बा या बरतन जिसमे अलग-अलग कामो के लिए चार अलग-अलग खाने या घर बने हो। जैसे—नमक, मिर्च आदि रखने या तरकारी-भाजी आदि परोसने का चौघडा; दीवाली मे मिठाइयाँ, धान का लावा आदि रखने का चौघडा। २ वह दीवट जिसमे चारो ओर जलाने के लिए चार दीये या बत्तियाँ रखी जाती हैं। ३. पत्ते मे खोसकर एक साथ बाँधे हुए पान के चार बीडे। जैसे—दो चौघडे पान लेते आना। ४ चौटोल नाम का बाजा। ५ बडी जाति की गुजराती (या छोटी) इलायची जो प्राय चौकोर सी होती है।

चौघड़िया—वि० [हिं० चौ=चार+घडी+इया (प्रत्य०)] चार घड़ियो का। चार घड़ी-सम्बन्धी। जैसे—चौघडिया मुहूर्त्त निकालनेवाला।
स्त्री० [हिं० चौ+गोडा] एक प्रकार की ऊँचे पाँवो किन्तु छोटे आसन-वाली चौकी जिस पर खडे होकर दीवारो आदि पर चूना आदि छूआ जाता है।

चौघड़िया मुहूर्त—पु० ह० चौघडिया+स० मूहूर्त्त] वह मुहूर्त्त जो कोई आकस्मिक किन्तु [illegible]श्यक कार्य या यात्रा करने के लिए एक दो दिन के अन्दर ही निकाला जाता है। और जो दो-चार घडी तक ही रहता है।

चौघड़ी—वि० [हिं० चौ+घेरा] जिसकी अथवा जिसमे चार तहे या परतें हो।

चौघर†—वि० [देश०] घोडों की सपाट चाल। चौफाल। पोइयाँ। सरपट।
पु० दे० 'चौघड'।

चौघरा—पु०=चौघडा।

चौघोड़ी—स्त्री० [हिं० चौ+घोडा] वह गाडी जिसमे चार घोडे जोते जाते हो। चौकडी।

चौचंद—पु० [हिं० चौथ+चंद वा चवाव+चड] १. कलक-सूचक चर्चा। अपवाद। बदनामी। २. शोर। हल्ला। ३ क्रीडा।

चौचंदहाई—वि० स्त्री० [हिं० चौचद+हाई (प्रत्य०)] (स्त्री) जिसे दूसरो की निंदा करने का व्यसन हो।

चौज—वि० [हिं० चोज ?] सुन्दर। अच्छा। उदा०—सुणिवाई वचन तै कह्या चौज।—नरपतिनाल्ह।
पु० दे० 'चोज'।

चौजुगी—स्त्री० [हिं० चौ+स० युग] चार युगो का काल।
वि० चारो युगो मे होने अथवा उन सबसे सबध रखनेवाला।
स्त्री० सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग इन चारो युगो का समूह।

चौठी—स्त्री० [स० चतुर्थ] लवनी (ताडी का बर्तन) का चतुर्थांश।

चौड़—प० [स० चूडा+अण्] चूडाकरण सस्कार।
†वि०=चौपट।

चौड़-कर्म (न्)—पु० [कर्म० स०] चूडाकर्म। मुडन।

चौड़ा—वि० [स० चृद् (?) चतर् (चडर>] चडड), दे० प्रा० चाऊड; ब उ० प० चौडा, गु० चोडूँ मरा० चौडे] [स्त्री० चौडी, भाव० चौडाई] १. जिसके दोनो पार्श्वों के बीच मे अधिक विस्तार हो। लबाई के बल मे नही, बल्कि उसके विपरीत बल मे अधिक विस्तृत। जैसे—चौडी नहर। २ जो सँकरा न हो बल्कि खुलता हो। जैसे—चौडी गली।
पु० [स० चुरा] अनाज रखने का गड्ढा।

चौड़ाई—स्त्री० [हिं० चौडा+ई (प्रत्य०)] १ चौडे होने की अवस्था या भाव। २ वह मान जिससे यह पता चलता हो कि कोई वस्तु कितनी चौडी है। जैसे—कपडे की चौडाई दो गज है।

चौडान—स्त्री० [हिं० चौडा+आन (प्रत्य०)] चौडाई। (दे०)

चौड़ाना—स० [हिं० चौडा] १ चौडा करना। फैलाना। २ व्यर्थ का विस्तार करना। जैसे—बात चौडाना।
अ० चौडा होना। उदा०—नद चौडात चले आगे नित आवै।—रत्नाकर।

चौड़ाव—पु०=चौडाई। (दे०)

चौडे—क्रि० वि०[हिं० चौडा] खुले आम। सब के सामने। उदा०—कोई कहै छाने कोई कहै चौडे लियोरी बजंता ढोल।—मीराँ।

चौटोल—पु० १ दे० 'चदोल' (सवारी)। २ दे० 'चौघडा' (वाजा)।

चौतगा—पु० [हिं० चौ+तागा] वह डोरा जिसमे चार तागे एक साथ वटे गये हो।

चौतनिया—स्त्री०=चौतनी।

चौतनी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+तनी=वद] १ पुरानी चाल की बच्चो की टोपी जिसमे चार तनियाँ या वद लगते थे। २ अगिया। चोली।

चौतरका—पु० [हिं० चौ+तडक=लकडी, धरन] एक प्रकार का खेमा या तबू।

चौतरा—पु० [हिं० चौ (चार)+तार] सारगी की तरह का एक बाजा जिसमे चार तार लगे होते है।
†वि० चार तारोवाला।
पु०=चबूतरा।

चौतरिया—स्त्री० [हिं० चौतरा] छोटा चबूतरा।
वि० चार तारोवाला।

चौतही—स्त्री० [हिं० चौ=चार+तह] एक प्रकार का मोटा और बहुत लबा खेम जो चार तह करके ओढा-विछाया जाता है। चौतरा।

चौतार—पु० [स० चतुष्पद] चौपाया। उदा०—प्यडै होड तौ पद की आसा, वनि निपजै चौतार।—गोरखनाथ।

चौताल—पु० [हिं० चौ+ताल] १ मृदग वजाने का एक ताल जिसमे चार आघात और दो खाली होते हैं। २. उक्त ताल पर गाया जानेवाला कोई गीत।

चौताला—पु० [हिं० चौताल] सगीत मे वह ताल जिसमे चार ताल होते हैं।

चौताली—स्त्री० [देश०] कपास के पौधे की कली जिसमे से रूई निकलती है। ढेंढी। डांडा।

चौतुका—वि० [हिं० चौ+तुक] जिसमे चार तुक हो।
पुं० एक प्रकार का छन्द जिसके चारो चरणो मे अनुप्रास होते अथवा तुक मिलते है।

चौथ—स्त्री० [स० चतुर्थी, प्रा० चउत्थि, हिं० चउथि] १. चौथाई अश या भाग। चतुर्थांश। २ मराठी शासन काल का एक प्रकार का कर जो अधीनस्थ भू-खडो से उनकी आय के चतुर्थांश के रूप मे लिया जाता था। ३. चाद्रमास के प्रत्येक पक्ष की चौथी तिथि। चतुर्थी।
पद—चौथ का चाँद=भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चद्रमा जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि इसे देखने से झूठा कलक लगता है।
†वि०=चौथा।

चौथपन—पु० [हिं० चौथा+पन] १. मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था। संन्याम आश्रम मे रहने का समय। २ वुढापा। वृद्धावस्था।

चौथा—वि० [स० चतुर्थ, प्रा० चउत्थ] [स्त्री० चौथी] क्रम या गिनती मे चार की जगह पडनेवाला।
पु० कुछ विरादरियो मे मृतक की मृत्यु के चौथे दिन होनेवाला एक सामाजिक कृत्य जिसमे आपस-दारी के लोग एकत्र होकर मृतक के पुत्र अथवा विधवा को कुछ धन या वस्त्र देते है।

चौथाई—पु० [हिं० चौथा+ई (प्रत्य०)] किसी वस्तु के चार सम अशो या भागो मे से कोई एक अश या भाग। चौथा भाग।

चौथि—स्त्री०=चौथ।

चौथिआई—पु०=चौथाई।

चौथिया—पु० [हिं० चौथा] १ हर चौथे दिन अर्थात तीन-तीन दिन के अन्तर पर आनेवाला ज्वर। २ वह व्यक्ति जो किसी व्यवसाय, सपत्ति आदि के चौथे हिस्से का मालिक हो। चौथे हिस्से का हकदार।

चौथी—स्त्री० [हिं० चौथा] १ हिन्दुओ मे विवाह के चौथे दिन होनेवाली एक रसम जिसमे वर और कन्या के हाथ के कगन खोले जाते हैं।
पद—चौथी का जोड़ा=वस्त्रो का वह कुलक जो वर के घर से कन्या के लिए चौथी के दिन आता है।
मुहा०—चौथी खेलना=चौथी के दिन दूल्हा-दुलहिन का एक दूसरे के ऊपर मेवे, फल आदि फेंकना। **चौथी छूटना**=चौथी के दिन वर-कन्या के हाथो के कगन खुलना।
२ फसल का चौथाई अंश जो पहले जमीदार को मिला करता था।

चौथैया—पु० [हिं० चौथाई] चौथाई भाग। चतुर्थांश।
स्त्री० एक प्रकार की छोटी नाव।

चौदंता—वि० [स० चतुर्दंत] [स्त्री० चौदती] १ चार दाँतोवाला। जिसके चार दाँत हो। २ (पशु) जिसके अभी चार ही दाँत निकले हो; फलत जिसकी जवानी अभी आरभ होने लगी हो। ३ छोटी उमर का और अल्हड।
पु० एक प्रकार का हाथी।

चौदंती—स्त्री० [हिं० चौदता] १. नव-यौवन के समय का अल्हडपन। २. ढिठाई। धृष्टता। ३ अक्खडपन। उद्दडता।

चौदश†—स्त्री०=चौदस।

चौदस—स्त्री० [स० चतुर्दशी, प्रा० चउद्दसि] चाद्रमास के कृष्ण या शुक्ल पक्षो की चौदहवी तिथि। चतुर्दशी।

चौदह—वि० [स० चतुर्दश, प्रा० चउद्दश, अप० पा० चउद्दह] जो गिनती मे दस से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१४।

चौदहवाँ—वि० [हिं० चौदह+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे चौदह के स्थान पर पडनेवाला।
पद—चौदहवीं रात का चाँद—(क) शुक्ल पक्ष की चौदस की रात का चाँद। (ख) बहुत ही सुन्दर व्यक्ति।

चौदाँत—वि० [हिं० चौ=चार+दाँत] (दो हाथी) जिनके दाँत लडने के लिए आपस मे आमने-सामने आकर मिल गये हो।
पु० हाथियो की लडाई।

चौदाँवा—वि० [हिं० चौ=चार+दाँव] जिसमे चार दाँव एक साथ लगते हो।
पु० जूए का वह खेल जिसमे चार दाँव एक साथ लगाये जाते हो।

चौदा†—पु०=चौना।

चौदानिया—स्त्री०=चौदानी।

चौदानी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+दाना+ई (प्रत्य०)] १ कान मे पहनने की एक प्रकार की वाली जिसमे चार पत्तियाँ लगी रहती हैं। २ कान की वह वाली जिसमे चार मोती पिरोये रहते हैं।

चौदायनि--पु० [स०] एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

चौदोंआ, चौदौवाँ --वि०, पु०=चौदांवा।

चौधराई—स्त्री० [हिं० चौधरी] चौधरी होने की अवस्था, काम या पद। चौधरीपन।

चौधरात—स्त्री० [हिं० चौधरी] १. चौधराना। २ चौधराई।

चौधराना—पु० [हिं० चौधरी] १. चौधरी का काम या पद। २ चौधरी का अधिकार या हक।

चौधरानी—स्त्री० [हिं० चौधरी] चौधरी की स्त्री।

चौधरी—पु० [स० चतु.+धर (=धरनेवाला)] [स्त्री० चौधरानी, चौधराइन] १ किसी वर्ग, सप्रदाय या समाज का प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति। मुखिया। २. लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो अगुआ होकर हर काम मे हाथ डालता हो।

विशेष—हमारे यहाँ प्राय. सभी जातियो और वर्गों मे कुछ लोग चौधरी वना या मान लिये जाते थे, जो आपस के झगडो का निपटारा करते थे।

चौधारी*—स्त्री० [हिं० चौ=चार+धारा] एक रग का कपडा जिस पर दूसरे रगो की आडी तथा वेडी धारियाँ या रेखाएँ छपी या वनी हुई हो।

चौना—पु० [स० च्यवन] वह ढालुआँ स्थान जिस पर चरस या मोट का पानी उँडेला जाता है।

चौनावा--वि० [हिं० चौ+नाव (रेखा)] [स्त्री० चौनावी] (शस्त्र आदि का वह फल) जिस पर चार नावे अर्थात् खाँचे या लवे गड्ढे वने हो। जैसे—चौनावा खड्ग, चौनावी तलवार।

चौप†—पु०=चोप।

चौपई—स्त्री० [स० चतुष्परी] १५ मात्राओ का एक प्रकार का छद जिसके चरणो के अन्त मे एक-एक गुरु और एक-एक लघु होता है।

चौपखा†—पु० [हिं० चौ=चार+स० पक्ष, हिं० पाख] १ चारो ओर के पाखे या दीवारें। २ चहारदीवारी। परिखा।

चौपग—पु० [हिं० चौ+पग] वह जिसके चार पैर हो। चौपाया।

चौपट—वि० [हिं० चौ=चार+पट=किवाडा, या हिं० चापट] १. चारो ओर से खुला हुआ, और फलत अरक्षित। जैसे—घर के सव दरवाजे चौपट खुले छोडकर चल दिये। २ (कार्य या वस्तु) जो नष्ट-भ्रष्ट हो गई हो। जैसे—उन्होने सारा खेल (या मकान) चौपट कर दिया। ३ (व्यक्ति) जो वुरे सग-साथ के कारण वुरी आदतें सीखकर विलकुल विगड गया या भ्रष्ट हो चुका हो।

चौपट चरण—पु० [हिं० चौपट+स० चरण] वह व्यक्ति जिसके कही पहुँचने अथवा किसी काम मे हाथ लगाने पर सव कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जाता हो। (परिहास और व्यग्य)

चौपटहा, चौपटा—वि० [हिं० चौपट+हा (प्रत्य०)] १ किया-धरा काम चौपट करनेवाला। २ तोड-फोड या नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला।

चौपड़—स्त्री० [स० चतुष्पट, प्रा० चउप्पट] १ चौसर (खेल और विसात)।

मुहा०—चौपड़ मॅडना, मढ़ना या माँडना=चौपड खेलने के लिए विसात विछाना।

२ खाट, पलग आदि की वुनावट का वह प्रकार जिसमे चौसर की आकृति वनी होती है। ३ मन्दिर, महल आदि के आँगन की उक्त प्रकार की वनावट। जैसे—मन्दिर के चौपड मे. भाले गड़वाये। —वृन्दावनलाल वर्मा।

चौपत—वि० [हिं० चौ=चार+परत] १ चार तहो या परतो मे लगाया या लपेटा हुआ। २ जिसकी या जिसमे चार तहे हो।

पु० [?] पत्थर का वह टुकडा जिसकी कील पर कुम्हार का चाक रखा रहता है।

चौपतना, चौपताना—स० [हिं० चौपात] १ किसी चीज विशेषत. कपडे आदि की चार तहे लगाना। २ लपेटकर तह लगाना।

चौपतिया—वि० [हिं० चौ+पत्ती] १ चार पत्तोवाला। जिसमे चार पत्ते हो। २ जिसमे चार पत्तियाँ एक साथ दिखाई गई हो। जैसे—चौपतिया फूल, चौपतिया कसीदा।

स्त्री० १ कसीदे, चित्रकला आदि मे, ऐसी वूटी जिसमे चार पत्तियाँ वनी हो। २. एक प्रकार का साग। ३ एक प्रकार की घास जो गेहूँ की खेती को हानि पहुँचाती है।

चौपथ—पु० [स० चतुष्पथ] १ चौराहा। चौमुहानी। २ वह पत्थर जिसकी कील पर कुम्हार का चाक रहता है।

चौपद (ा)—पु० [स० चतुष्पद] १ चार पैरोवाला पशु। चौपाया। २ एक प्रकार का छद। चतुष्पद।

चौपया—पु०=चौपाया।

चौपर—स्त्री०=चौपड।

चौपरतना—स०=चौपतना।

चौपल—पु०=चौपथ।

चौपहरा—वि० [हिं० चौ=चार+पहर] [स्त्री० चौपहरी] १ चार पहर का। चार पहर-सवधी। २ चार-चार पहरो के अतर पर होनेवाला। ३ चारो पहर अर्थात् हर समय (दिन भर या रात भर) होता रहनेवाला। जैसे—चौपहरी नौवत वजना।

चौपहल—वि० [हिं० चौ+फा० पहलू, स० फलक] जिसके या जिसमे चार पहल या पार्श्व हो। जिसमे लवाई, चौडाई और मोटाई हो। वर्गात्मक।

चौपहला—पु०=चौपाल (डोला)।

वि०=चौपहल।

चौपहलू†—वि०=चौपहल।

चौपहिया—वि० [हिं० चौ+पहिया] चार पहियोवाला। जिसमे चार पहिये हो। जैसे—रेल-गाडी का चौपहिया डिव्वा।

पु० चार पहियोवाली गाडी।

चौपहिलू†—वि०=चौपहल।

चौपा†—पु०=चौपाया।

चौपाई—स्त्री० [स० चतुष्पदी] चार चरणो का एक प्रसिद्ध मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ होती है।

†स्त्री० चारपाई।

चौपाड़†—पु०=चौपाल।

चौपाया—पु० [सं० चतुष्पाद, चतुष्पदी; प्रा० चौप्पअ, चउप्पाअ; बँ० उ० चौपाया, सिं० चौपाई, गु० चोपाई] ऐसा पशु जो चारों (दो अगले और दो पिछले) पैरों से चलता हो। जैसे—गाय, घोड़ा, हिरन आदि।
वि० जिसमें चार पाये या पावे हों।

चौपार†—स्त्री० =चौपाल। उदा०—सब चौपारिन्ह चंदन खंभा।—जायसी।

चौपाल—पु० [हिं० चौबार] १. ऊपर से छाया हुआ और चारों ओर से खुलता स्थान जहाँ देहात के लोग बैठकर बात-चीत, विचार-विमर्श आदि करते हैं। २. छायादार बड़ा चबूतरा। ३. देहाती मकानों के आगे का दालान या बरामदा। ४. एक प्रकार की पालकी जो ऊपर से छायादार पर चारों ओर से खुली हुई होती है।

चौपुरा—पु० [हिं० चौ=चार+पुर=चरसा+आ (प्रत्य०)] वह बड़ा कूआँ जिस पर एक साथ चार पुर या मोट चलते अथवा चल सकते हों।

चौपेजी—वि० [हिं० चौ (चार)+अं० पेज] १. चार पृष्ठोंवाला। २. (पुस्तकों आदि की छपाई में कागज) जिसके पूरे ताव को दो बार मोड़कर चार सम पृष्ठों में विभक्त किया गया हो। (क्वार्टो)

चौपैया—पु० [सं० चतुष्पदी] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अन्त में गुरु होता है।

चौफला—वि० [हिं० चौ+फल] चाकू या ऐसा ही और कोई धारदार (अस्त्र) जिसमें चार फल लगे हों।

चौफुलिया—वि० [हिं० चार+फूल] १. (पौधा) जिसमें चार फूल एक साथ निकलते हों। २. (अंकन, चित्रण या रचना) जिसमें चार फूल एक-साथ बने या बनाये गये हों।

चौफेर—क्रि० वि० [हिं० चौ+फेर] चारों ओर। चारों तरफ।
वि० चार ओर फेरा या मोड़ा हुआ।

चौफेरी—स्त्री० [हिं० चौ+फेरा] १. चारों ओर लगाई जानेवाली फेरी। परिक्रमा। २. मुगदर भाँजने का एक विशिष्ट प्रकार।
क्रि० वि० चारों ओर।

चौबंदी—स्त्री० [हिं० चौ+बंदी] १. कोई चीज चारों ओर से बाँधने की क्रिया या भाव। जैसे—पल्ले की चौबंदी। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का पहनावा जिसके दोनों तरफ दो-दो बंद लगते हैं। बगल-बंदी। ३. घोड़े के चारों सुमों में नाल जड़ने की क्रिया।

चौबंसा—पु० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक नगण और एक यगण रहता है।

चौबगला—पु० [हिं०] १. कुरती, अंगे आदि में दोनों ओर बगल के नीचे और कली के ऊपर पड़नेवाला भाग।
क्रि० वि० चारों ओर।
वि० [स्त्री० चौबगली] जिसमें चार बगलें या पार्श्व हों।

चौबगली—स्त्री० [हिं० चौ+अ० बगल] बगलबंदी नाम का पहनावा।

चौबच्चा†—पु० =चहबच्चा।

चौबरदी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+बर्द] वह गाड़ी जिसमें चार बरद या बैल जुते या जुतते हों।

चौबरसी—स्त्री० [हिं० चौ+बरसी] १. वह उत्सव या कृत्य जो किसी घटना के चौथे वर्ष होता हो। २. हिंदुओं में किसी पुरुष की मरण तिथि से चौथे वर्ष होनेवाला श्राद्ध।

चौबरा—पु० [हिं० चौ=चार+बरग] जमींदार को मिलनेवाला फसल में का चौथाई अंश।

चौबा—पु० [स्त्री० चौबाइन] =चौबे।

चौबाई—स्त्री० [हिं० चौ+बाई=हवा] १. चारों ओर से चलनेवाली हवा। २. चारों ओर फैलनेवाली खबर या होनेवाली धूम-धाम। ३. चारों ओर फैलनेवाली निंदा या बदनामी।

चौबाछा—पु० [हिं० चौ=चार+बाछना=चुनना या चंदा वसूल करना] मुगल शासन-काल में पाग (प्रति मनुष्य), भाग (प्रति बाखर), चूरी (प्रति घर) और पूँछी (प्रति चौपाया) के हिसाब से लगनेवाला एक कर।

चौबार†—पु० =चौबारा।

चौबारा—पु० [हिं० चौ(=चार)+बार(=द्वार)] १. वह कमरा जिसमें चार खिड़कियाँ, चारों ओर एक-एक दरवाजा हो। २. मकान के ऊपरी मंजिल पर का कमरा जिसके चारों ओर प्रायः दरवाजे होते हैं।
क्रि० वि० चौथी बार। जैसे—वे चौबारा भी आ गये हैं।

चौबाहा†—वि० [हिं० चौ+बाहना (जोतना)] (खेत) जो बोने से पहले चार बार जोता गया हो।
पु० चार बार खेत जोतने की क्रिया या भाव।

चौबिस—वि० =चौबीस।

चौबीस—वि० [सं० चतुर्विंशति, प्रा० चउवीस, चव्वीस, सिं० चोवीह; प० चौवी,] जो गिनती में बीस से चार अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२४।

चौबीसवाँ—वि० [हिं० चौबीस+वाँ] क्रम या गिनती में चौबीस के स्थान पर पड़नेवाला।

चौबे—पु० [सं० चतुर्वेदी, प्रा० चउब्वेदी] [स्त्री० चौबाइन] ब्रज-मंडल में रहनेवाले चतुर्वेदी ब्राह्मण।

चौबोला—पु० [हिं० चौ+बोल] १५ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में लघु-गुरु होता है।

चौभड़—स्त्री० =चौहड़। (दे०)

चौभी—स्त्री० [हिं० चौभना] हल में की वह लकड़ी जिसमें फाल जड़ा होता है।

चौमंजिला—वि० [हिं० चौ=चार+फा० मंजिल] (भवन) जिसमें चार मंजिलें या तल्ले हों। चार खंडोंवाला।

चौमसिया—वि० [हिं० चौमासा+इया (प्रत्य०)] १. चौमासे में सबंध रखनेवाला। चौमासे का। २. चौमासे में होनेवाला।

चौमहला—वि० [हिं० चौ+महल] चार खंडों या तल्लोंवाला। चौमंजिला (मकान)।

चौ-माप—स्त्री० [हिं० चौ (=चार)+सं० माप] कोई चीज नापने के ये चार अंग—लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई तथा काल या इन चारों का समन्वित रूप। चारों आयाम। विशेष दे० 'आयाम'।

चौ-मापी—वि० [हिं० चौ-माप] चार आयामोंवाला। उदा०—वीर मुझे वितरण करना है चौमापी धरती अम्बर की।—बच्चन।

चौमार्ग—पु० [सं० चतुर्मार्ग] चौरस्ता। चौमुहानी।

चौमास—पु० =चौमासा।

चौमासा—पु० [सं० चतुर्मास] १ वर्षाऋतु के चार महीने—आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, और आश्विन। चातुर्मास। २ उक्त ऋतु मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। ३ किसी स्त्री के गर्भवती होने के चौथे महीने का कृत्य या उत्सव।
वि० १ चातुर्मास मे होनेवाला। २. चार महीनो मे होनेवाला।
वि० पु० दे० 'चौमसिया' (तौल)।

चौमासी—स्त्री० [हिं० चौमासा+ई (प्रत्य०)] बरसात मे गाया जानेवाला एक प्रकार का शृंगारिक गीत।
वि०=चौमासा।

चौमुख—क्रि० वि० [हिं० चौ=चार+मुख=ओर] चारो ओर। चारो तरफ।
वि०=चौमुखा।

चौमुखा—वि० [हिं० चौ=चार+मुख=ओर] [स्त्री० चौमुखी] १. जिसके चारो ओर चार मुख हो। जैसे—चौमुखा दीया।
मुहा०—चौमुखा दीया जलाना=दीवाला निकालना। दिवालिया बनना।
२ जो चारो अथवा सब ओर उन्मुक्त या प्रवृत्त हो। जैसे—चौमुखी लडाई।

चौमुहानी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+फा० मुहाना] वह स्थान जहाँ से चारो ओर चार रास्ते जाते हो। चौरस्ता। चौराहा।

चौमेंड़ा—पु० [हिं० चौ=चार+मेड+आ (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ पर चार खेतो की मेडें या सीमाएँ मिलती हो।

चौमेखा—वि० [हिं० चौ=चार+मेख] जिसमे चार मेखें या कीलें हो। चार मेखोवाला।
पु० प्राचीन काल का एक कठोर दड जिसमे अपराधी के प्राण लेने के लिए उसको जमीन पर चित लेटाकर उसकी हथेलियो और तलुए जमीन मे मेखो से इस प्रकार ठोक देते थे कि वह उठ-बैठ या हिल-डोल नही सकता था।

चौरंग—वि० [हिं० चौ=चार+रग] १. चार रगोवाला। चौरगा। २ चारो ओर समान रूप से होनेवाला। ३ सब प्रकार से एक-जैसा। ४ तलवार से ठीक, पूरा या साफ कटा हुआ।
पु० तलवार चलाने का वह ढग या प्रकार जिसमे कडी से कड़ी अथवा भारी से भारी चीज एक ही हाथ से ठीक और पूरी कट जाती अथवा मुश्किल से मुश्किल वार एक ही हाथ मे पूरा उतरता या सफल होता है।

चौरंगा—वि० [हिं० चौ+रग] [स्त्री० चौरगी] चार रगोवाला।

चौरंगिया—पु० [हिं० चौ+रग] मालखभ की एक प्रकार की कसरत।

चौर—पु० [सं० चुरा+ण] १ दूमरो की चीजे चुरानेवाला। चोर। २. चोर नामक गध द्रव्य। ३ चोर-पुष्पी।
पु० [सं० चुडा ?] वह गड्ढा या ताल जिसमे बरसाती पानी इकट्ठा होता हो। खादर।

चौरई†—स्त्री०=चौराई।

चौर-चार—स्त्री० [?] चहल-पहल। (बुन्देल०) उदा०—बडी चौर-चार होगी।—वृन्दावनलाल वर्मा।

चौरठ, चौरठा†—पु०=चौरेठा।

चौरस—वि० [सं० चतुरस्र, प्रा० चउरस] १. जो चारो ओर से एक रस हो। सब तरफ से एक-जैसा। २ (स्थल) जिसके सब विंदु एक समान ऊँचाई के हों। ३ जिसका ऊपरी तल सम हो, कही पर ऊँचा-नीचा या ऊबड-खाबड न हो। जैसे—चौरस जमीन। ४. चौपहल।
पुं० १ ठठेरों का एक औजार जिससे वे बरतनो का तल खुरचकर चौरस या सम करते हैं। २ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक यगण होता है। इसको 'तनुमध्या' भी कहते हैं।

चौरसा—वि० [हिं० चौ+रस] जिसमे चार प्रकार के रस या स्वाद हो। चार रसोवाला।
पु० १. चार रुपए भर का बाट। २ मन्दिर मे ठाकुर या देवता की शय्या पर बिछाने की चादर।

चौरसाई—स्त्री० [हिं० चौरसाना] १ जमीन आदि चौरस करने या होने की अवस्था या भाव। चौरसपन। २ जमीन चौरस करने की पारिश्रमिक या मजदूरी।

चौरसाना—स० [हिं० चौरस] चौरस करना। बराबर करना। किसी वस्तु का तल चौरस या सम करना या बनाना।

चौरसी—स्त्री० [हिं० चौरस] १ बाँह पर पहनने का एक प्रकार का चौकोर गहना। २. अन्न रखने का कोठा या बखार।

चौरस्ता—पु० [हिं० चौ+फा० रास्ता] वह स्थान जहाँ पर चार रास्ते मिलते हो अथवा चार ओर रास्ते जाते हो। चौराहा।

चौरहा†—पु०=चौराहा।

चौरा—पु० [सं० चतुर, प्रा० चउर] [स्त्री० अल्पा० चौरी] १. चबूतरा। वेदी। २ चबूतरे या वेदी के रूप मे बनी हुई वास्तु-रचना जिसमे किसी देवी-देवता, भूत-प्रेत, अथवा मृत साधु-सन्त या सती-साध्वी का निवास माना जाता है और इसी लिए जिसकी पूजा की जाती है।
†पु० [सं० चाभर] सफेद पूँछवाला बैल।
†पु० [?] बोडा या लोबिया नाम की फली।
स्त्री० [सं० चुरा+ण—टाप्] गायत्री का एक नाम।

चौराई—स्त्री० [?] १ एक प्रकार का साग। चौलाई।
मुहा०—चौराई बाँटना=उदारतापूर्वक कोई चीज चारो ओर देते या दिखाते फिरना। (बाजारू)
२ एक प्रकार की चिडिया जिसके डैने चितकबरे, पूँछ ऊपर से लाल और नीचे से सफेद, गला मटमैले रंग का और चोच तथा पैर पीले रग के होते हैं। ३ एक रीति जिसमे किसी व्यक्ति को निमत्रण देते समय उसके घर के द्वार पर हल्दी मे रगे हुए चावल रखे या छिडके जाते है।

चौरानबे—वि० [सं० चतुर्नवति, प्रा० चउण्णवइ] जो गिनती या संख्या मे नब्बे से चार अधिक हो।
पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९४।

चौरानयन—पु० [सं० चौर्य-आनयन] कर, दड आदि से बचने के लिए कोई चीज चोरी से या छिपाकर एक देश या स्थान से दूसरे देश या स्थान मे ले आना या ले जाना। (स्मगलिंग) जैसे—भारत और पाक की सीमा पर होनेवाला चौरानयन।

चौराष्टक—पु० [स० चौर—अष्टक, ब० स०] षाडव जाति का एक संकर राग जो सवेरे के समय गाया जाता है।

चौरासी—वि० [स० चतुरशीति, प्रा० चउरासीइ] जो गिनती या सख्या मे अस्सी से चार अधिक हो।

पु० १ उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८४। **मुहा०—चौरासी में पड़ना या भरमना**=बार-बार जनमना और मरना। चौरासी लाख योनियो मे एक-एक रूप छोडकर और हर वार दूसरा रूप धारण कर आना-जाना। इस लोक मे आत्मा का वार-वार आना-जाना।

२ घुंघरुओ का वह गुच्छा जो नाचते समय पैर मे पहनते है। ३ छोटा घुंघरू। ४ पत्थर काटने की एक प्रकार की टाँकी। ५ बढइयो की एक प्रकार की रुखानी।

चौराहा—पु० [हिं० चौ=चार+राह=रास्ता] वह स्थान जहाँ चारो ओर से आनेवाले मार्ग मिलते हो अथवा चारो दिशाओ को मार्ग जाते हो। चौमुहानी। चौरस्ता।

चौरिंदी *वि०=चर्उरिंदी।

चौरी—स्त्री० [स० चोर+ङीष्] १ चुराने की क्रिया या भाव। चोरी। २ गायत्री देवी का एक नाम।

स्त्री० [हिं० चौरा का स्त्री० रूप] १ छोटा चबूतरा। २. विवाह मडप।

स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का पेड जिसकी छाल से रग बनता और चमडा सिझाया जाता है। २ एक प्रकार का पेड जो हिमालय मे होता है और जिसकी छाल दवा के काम मे आती है।

स्त्री० [स० चाभर] छोटा चँवर।

चौरेठा—पु० [हिं० चाउर (=चावल)+पीठा] चावल को महीन पीस-कर बनाया जानेवाला चूर्ण जो कई प्रकार के पकवान बनाने के काम आता है।

चौर्य—पु० [स० चोर+ष्यञ्] १ चोर होने की अवस्था या भाव। २ चीजे चुराने की क्रिया या भाव। चोरी।

पु०=चोल (देश)।

चौर्य-रत—पु० [मध्य० स०] गुप्त मैथुन।

चौर्य-वृत्ति—स्त्री० [मध्य० स०] १ दूसरो का माल चुराते रहने का स्वभाव। २ चुराये हुए माल से जीविका चलाना।

चौल-कर्म (न्)—पु० [स०चौल=चौड+कर्मन्, कर्म० स०] चूडाकर्म। मुडन।

चौ-लड़ा—वि० [हिं० चौ+लड] [स्त्री० चौ-लडी] जिसमे चार लड या मालाएँ हो। जैसे—चौ-लडा झुमका या हार।

चौला—पु० [देश०] एक लता और उसके बीज। वोड़ा। लोबिया।

चौलाई—स्त्री० [?] १. एक पौधा जिसका साग खाया जाता है। उदा०—चौलाई लाल्हा अरु पोई। मध्य मेलि निवुआन निचोई।—सूर। २ छोटी-छोटी पत्तियोवाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्तो का साग बनाया जाता है। ३ इस पौधे के पत्ते जिनका साग बनता है।

चौलावा—पु० [हिं० चौ+लाना=लगाना] वह बडा कूआँ जिसमे एक साथ चार मोट चल सके।

चौलि—पु० [स० चौल+इञ्] एक प्राचीन ऋषि।

चौलुक्य—पु० [स० चुलुक+यञ्] १ चुलुक ऋषि के वशज। २ दे० 'चालुक्य'।

चौली—पु० [देश०] बोडा या लोबिया नाम की फली।

चौवन—वि० [स० चतुपञ्चाशत्, पा० चतुपञ्जासो, प्रा० चउवण्ण] जो गिनती या सख्या मे पचास से चार अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५४।

चौवा—पु० =चौआ।

चौवाई—स्त्री०=चौवाई।

चौवालीस—वि० [स० चतुश्चत्वारिंशत्, पा० चतुचत्तालीसति, प्रा० चउव्वालीसइ] जो गिनती या सख्या मे चालीस से चार अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—४४।

चौस—पु० [हिं० चौ=चार+स (प्रत्य०)] १ वह खेत जो चार वार जोता गया हो। २ खेत को चौथी वार जोतने की क्रिया। चौथी जोताई।

पु० चूर्ण। बुकनी।

चौसठ—वि० दे० 'चौसठ'।

चौसठ-घड़ी—पद [हिं०] सारा दिन। दिन और रात। आठो पहर। जैसे—चौसठ घडी रोना ही बदा है।

चौसर—पु० [हिं० चौ=चार+सर=वाजी अथवा चतुस्सरि] १ एक प्रकार का खेल जो बिसात पर चार रगो की चार-चार गोटियो और तीन पासो से खेला जाता है। चौपड। नर्दवाजी। २. उक्त खेल की बिसात। ३. चार लडोवाला हार। ४ खेल मे लगातार चार वार होनेवाली जीत। चार सरो की जीत। ५ ताश के नकश नामक खेल मे किसी खिलाडी के हाथ मे एक साथ तीन तसवीरे आना जिससे चौगुनी जीत होती है।

चौसरी—स्त्री०=चौसर।

चौसल्ला—पु० [हिं० चौ =चार+सालना] १. चौकोर जमीन पर विशेषत आँगन की चारो दीवारो पर लवाई के वल रखे हुए चार शहतीर जिन पर इमारत खडी की जाती है। २ उक्त शहतीरो के ऊपर बनी हुई इमारत।

चौसिंगा—वि० [हिं० चौ =चार +सीग] चार सीगोवाला। पु० एक प्रकार का हिरन जिसके चार सीग होते हैं।

चौसिंघा—वि०, पु०=चौसिंगा।

पु०=चौसिहा।

चौसिहा—पु० [हिं० चौ=चार+सीव=सीमा] वह स्थान जहाँ चार गाँवो की सीमाएँ मिलती हो।

चौहट, चौहट्ट—पु०=चौहट्टा।

चौहट्टा—पु० [हिं० चौ =चार+हाट] १ वह स्थान जिसके चारो ओर हाट या दुकानें हो। २. उक्त प्रकार का बाजार। ३ चौरस्ता। चौमुहानी।

चौहड़ा—पु०=चौघड (दे०)।

चौहत्तर—वि० [स० चतुसप्तति, प्रा० चौहत्तरि] जो गिनती या सख्या मे सत्तर से चार अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७४।

चौहद्दी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+हद=सीमा] १ किसी क्षेत्र या

स्थान के चारो ओर (पूरब, पच्छिम, उत्तर और दक्खिन) की सीमा। जैसे—खेत या मकान की चौहद्दी २ किसी मकान या जमीन के चारो ओर पडनेवाले मकानो, जमीनो, सडको आदि का विस्तृत विवरण।

स्त्री० [स० चातुर्भद्र, प्रा० चाउहद्द+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का अवलेह जो जायफल, पिप्पली, काकडासिंगी और पुष्करमूल को पीसकर शहद मे मिलाने से बनता है।

चौहरा—वि० [हिं० चौ=चार+हर (प्रत्य०)] [स्त्री० चौहरी] १ जिसमे चार तहे या परतें हो। जैसे—चौहरा कपडा। २ चौगुना। पु० १. एक मे बँधी हुई एक ही प्रकार की चार चीजे। जैसे—पानो का चौहरा। २. दे० 'चौघडा।'

चौहलका—पु० [चौ=चार+फा० हल्क =घेरा?] गलीचे की एक प्रकार की बुनावट।

चौहान—पु० [हिं० चौ=चार+भुजा] अग्निकुल के अतर्गत क्षत्रियो की एक प्रसिद्ध शाखा जो प्राय उत्तर भारत मे निवास करती है।

चौहैं†—क्रि० वि० [देश०] चारो ओर। चारो तरफ।

च्यंतना*—अ० [स० चिंतन] १ चिंतन करना। २ चिंता करना।

च्यंतामनि—स्त्री० १. दे० 'चेतावनी'। २ दे० 'चिंतामणि।'

च्यवन—पु० [स०√च्यु (टपकना) +ल्युट्—अन] १ बूँद-बूँद करके चूना या टपकना। २ [√च्यु+ल्यु—अन] एक प्राचीन ऋषि जो भृगु के पुत्र थे।

च्यवन-प्राश—पु० [स० मध्य० स०] वैद्यक मे आँवले के रस से बना हुआ एक प्रकार का अवलेह। कहते है कि यह अवलेह पहले-पहल अश्विनी कुमारो ने च्यवन ऋषि का वृद्धत्व और अधत्व दूर करने के लिए बनाया था।

च्यारि—वि०=चार। उदा०—च्यारि प्रकार पिष्पि बन-वारन।—चदवरदाई।

च्यावन—पु० [स०√च्यु+णिच्+ल्युट्—अन] १ चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव। २. निकाल देना।

च्युत—वि० [स०√च्यु+क्त] [भाव० च्युति] १ ऊपर से गिरा, चूआ, झडा या टपका हुआ। २ अपने उचित या नियत स्थान से उतर, गिर या हटकर नीचे आया हुआ। गिरा हुआ। पतित। जैसे—पद-च्युत। ३ औचित्य की सीमा से हटकर अनौचित्य की सीमा मे आया हुआ। जैसे—कर्तव्य-च्युत। ४ नष्ट-भ्रष्ट।

च्युत-मध्यम—पु० [ब० स०] सगीत मे दो श्रुतियो का एक विकृत स्वर जो प्रीति नामक श्रुति से आरभ होता है।

च्युत-षड्ज—पु० [ब० स०] सगीत मे दो श्रुतियो का एक विकृत स्वर जो मदा नामक श्रुति से आरभ होता है।

च्युत-संस्कारता—स्त्री० [स० च्युत्-सस्कार ब० स०,+तल्—टाप्] १. सस्कार से च्युत होने की अवस्था या भाव। २ साहित्य मे काव्य या रचना का वह दोष जो व्याकरण-विरुद्ध पदविन्यास करने पर होता है। साहित्यिक रचना का व्याकरण-सबधी दोष।

च्युत-संस्कृति—स्त्री० [कर्म०स०]=च्युत-सस्कारता।

च्युतात्मा (त्मन्)—वि० [स० च्युत—आत्मन्, ब० स०] जिसकी आत्मा या विचार औचित्य और मर्यादा की सीमा से गिरे हुए या पतित हो।

च्युताधिकार—वि० [स० च्युत—अधिकार, ब० स०] अपने अधिकार, पद आदि से हटा या हटाया हुआ।

च्युति—स्त्री० [स०√च्यु+क्तिन्] १ च्युत होने अर्थात् ऊपर से गिरने, चूने, झडने या टपकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ अपने स्थान से हट जाने विशेषत नीचे आ जाने का भाव। पतन। ३ तत्परतापूर्वक कोई काम न करने की स्थिति। जैसे—कर्तव्य-च्युति। ४. अभाव। कमी। ५ गुदा। मलद्वार। ६ भग। योनि।

च्युप—पु० [स०√च्यु+प कित्] मुख। चेहरा।

च्यटा—पु० [अल्पा० च्यूँटी] च्यूँटी की जाति और प्रकार का, किन्तु आकार मे उससे बडा कीडा।

च्यूँटी—स्त्री० [हिं० चिमटना] एक प्रकार का बहुत छोटा कीडा जो गुड, चीनी आदि या मीठी और रसवाली चीजे खाता है और जमीन आदि मे गड्ढा करके तथा उसी मे अपना घर बनाकर रहता है।

मुहा०—च्यूँटी की चाल चलना=बहुत धीरे-धीरे और प्राय रुक-रुक कर चलना। **च्यूँटी के पर निकलना**=मृत्यु या विनाश का समय समीप आना।

च्यूडा—=चिडवा।

च्यूत—पु० [स०√च्युत्, पृषो० दीर्घ] आम का पेड और फल।

च्योत—पु० [स०=च्युत, पृषो०गुण] च्युत होने की क्रिया या भाव। च्युति।

छ

छ—देवनागरी वर्ण-माला मे चवर्ग का दूसरा व्यजन जो उच्चारण की दृष्टि से तालव्य, अघोष, महाप्राण और स्पष्ट है। कभी-कभी इसका प्रयोग ६ सख्या के सूचक के रूप मे होता है।

छंग*—पु० [हिं० उछग] गोद।

छंगा—वि० [हिं० छ +उँगली] [स्त्री० छगी] जिसके हाथ मे (पाँच की जगह) छ उँगलियाँ हो।

छँगुनियाँ*—स्त्री०=छँगुली।

छँगुलिया†—स्त्री०=छँगुली।

छँगुली†—स्त्री० [हिं० छोटी+उँगली)] हाथ की सबसे छोटी उँगली।

छंगू—पु०= छगा।

छँछला†—पु० [अनु०] छन छन शब्द (नूपुरो आदि का)।

छंछाल—स्त्री० [?+हिं० उछाल] छोटी धारा। फव्वारा। उदा०—रायजादी घर-अगणइ छुटे पेट, छुटे पेट छछाल।—ढोला मारू।

छंछोरी—स्त्री० =छछोरी।

छंट—क्रि० वि० [हिं० झट?] शीघ्र। जल्दी। उदा०—कहे सखी सूँनीर लै रावल छट उनय।—जटमल।

छँटना—अ०[हिं० छाँटना] १. किसी वस्तु अथवा उसके किसी अंग का कटकर अलग होना। जैसे—सिर के बाल या पेड़ की डाल छँटना। २. किसी का अपने वर्ग या समूह से अलग होना। जैसे—दल में से चार आदमियों का छँटना। ३. किसी वस्तु में से अतिरिक्त, अनावश्यक या फालतू अंश निकलकर अलग होना। जैसे—कार्यालय से कर्मचारियों का छँटना। ४. छिन्न-भिन्न या तितर-बितर होना। जैसे—बादल छँटना, भीड़ छँटना। ५. किसी क्रिया के फल-स्वरूप कम होना या नष्ट हो जाना। न रह जाना। जैसे—आँख की लाली छँटना, कपड़े की मैल छँटना। ६. चुन कर अच्छी वस्तुएँ अलग रखी जाना। जैसे—ये अनार छँटे हुए हैं।
पद—छँटा हुआ=चालाक या धूर्त (व्यक्ति)।
७. आकार या मोटाई में कम होना। क्षीण होना।

छँटनी—स्त्री०[हिं० छँटना] १. छाँटने या छाँटे जाने की क्रिया या भाव। छँटाई। २. किसी काम या कार्यालय में लगे हुए आवश्यकता से अधिक कर्मचारियों या कार्यकर्ताओं को निकालकर अलग करने या सेवा से हटाने का काम। (रिट्रेन्चमेंट)

छँटवाना—स०[हिं० छाँटना का प्रे० रूप] छाँटने का काम दूसरे से कराना।

छँटाई—स्त्री०[हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दे० छँटनी।

छँटाना†—स०=छँटवाना।

छँटाव—पुं०[हिं० छाँटना] छाँटने की क्रिया या भाव। छँटाई।

छँटुआ†—वि०[हिं० छाँटना] १. छाँटकर निकाला हुआ। (पदार्थ) २. जिसमें से अच्छी वस्तुएँ छाँटकर निकाल ली गई हों। बचा-खुचा या रद्दी। जैसे—छँटुआ माल।

छँटैल—वि०[हिं० छाँटना] १ छँटुआ। (दे०) २ (व्यक्ति) जो बहुत ही धूर्त हो। छँटा हुआ।

छँटौनी†—स्त्री०=छँटनी।

छँड़ना*—स०[हिं० छोड़ना] छोड़ना। छोड़ देना। उदा०—जमि रसाल गुन गरब, बवि बलुबा नहि छंड़हि।—चंदबरदाई।
स०[हिं० छड़ना] १ किसी चीज का रद्दी अंश निकालने के लिए उसे कूटना। जैसे—ओखली में धान छँड़ना। २ अच्छी तरह मारना-पीटना।

छँड़ाना*—स०[हिं० छुड़ाना] १. मुक्त कराना। २. छीन लेना।
†स०[हिं० छँड़ना का प्रे० रूप] छँड़ने का काम दूसरे से कराना।

छँडुआ†—वि०[हिं० छाड़ना] १. छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। २. मुक्त किया हुआ।

छंदःशास्त्र—पुं०[ष० त०] वह शास्त्र जिसमें विभिन्न छंदों के रूप और लक्षण बतलाये जाते हैं।

छंद—पुं०[सं०√छंद् (प्रसन्न करना)—घञ्] १. अभिलाषा। इच्छा। २. अभिप्राय। मतलब। ३. [illegible] उपाय। तरकीब। युक्ति। ४. तरह-तरह के रूप धारण करने की क्रिया या भाव। ५. कपट। छल। ६. संघात। समूह। ७. गाँठ। बंधन।
पुं०[सं० छंदस् (√छंद्+असुन्)] [illegible] मात्राओं या वर्णों का कोई निश्चित मान जिसके अनुसार किसी [illegible] के चरण लिखे जाते हैं। आकार, विस्तार आदि के विचार से वे रूप या साँचे जिनसे पद्यात्मक रचना बनती है। (मीटर)
विशेष—हमारे यहाँ छंद दो प्रकार के होते हैं—मात्रिक और वर्णिक। मात्रिक छंद को मात्रा-वृत्त और जाति छंद तथा वर्णिक को वर्ण-वृत्त भी कहते हैं।
२ वह साहित्यिक पद्यात्मक रचना जो किसी छंद के नियमों के अनुसार लिखी गई हो। ३ विवाह के समय वर द्वारा कन्या पक्षवालों को सुनाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी कविता। ४. वेद। ५ मनमाना आचरण। स्वेच्छाचार।
पुं०[सं० छदक] कलाई पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना।

छंदक—पुं०[सं० √छद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. वासुदेव। २. गौतम बुद्ध का सारथी।
वि० रक्षा करनेवाला।

छंदना—अ०[हिं० छंद] १ छंद बनाना। २. किसी छंद में कविता करना। ३ कविता करना। उदा०—हृदय-प्रद उमड़ दीख कुछ छंदूँ।—निराला।
अ०[हिं० छाँदना का अ० रूप] छाँदा अर्थात् बाँधा जाना। जैसे—गाय या घोड़े का पैर छँदना।

छँदरना*—स०[सं० छद्] धोखा देना। छलना।

छंदवासी (सिन्)—वि० [सं० छद√वस् (रहना)+णिनि] [स्त्री० छंदवासिनी] उच्छृंखलताएँ और मनमाना आचरण करनेवाला।

छँदा—वि०[हिं० छानना] [स्त्री०छँदी] चरने के लिए छोड़ा हुआ (पशु) जिसके दोनों पैर बँधे हुए हों।

छंदानुवृत्ति—स्त्री०[छंद-अनुवृत्ति ष० त०] किसी को किसी छल या बहाने से प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।

छंदित—भू० कृ०[सं०√छंद्+क्त] प्रसन्न किया हुआ।

छंदोगति—स्त्री०[सं० छंदस्-गति, ष०त०] किसी छंद में शब्दों आदि की वह योजना जिसके द्वारा उसके पढ़ने में एक विशेष प्रकार की गति या लय का अनुभव हो।

छंदोदोष—पुं०[सं० छंदस्+दोष. ष० त०] छंद में निश्चित मात्राओं या वर्णों से अधिक या कम मात्राएँ या वर्ण होने का दोष। (छंदभंग)

छंदोबद्ध—वि०[सं० छंदस्-बद्ध तृ०त०] (साहित्यिक रचना) जो किसी छंद या पद्य के रूप में हो। छंद या पद्य के रूप में बँधा या रचा हुआ (कथन या लेख)। (मीट्रिकल)

छंदोभंग—पुं०[सं० छंदस्-भंग, ष०त०] छंद-रचना में छंद शास्त्र के नियमों के पालन की वह त्रुटि जिससे उसमें ठीक गति या लय का अभाव होता है अथवा ठीक स्थान पर यति या विराम नहीं होता।

छः—वि०[सं० षट्; पा० प्रा० छ, अप० छह; उ० छअ: बं० छय; पं० छे, सिं० छे, छौ; ने० सि० गु० छ; सिंह० स० सय, ह, हय. मरा० सहा] जो गिनती में पाँच से एक अधिक हो।
पुं० उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—६।

छई—स्त्री०[हिं० छाना] संतान। औलाद। उदा०—जग की छई की निराली बातें।—कहा०।
†स्त्री०=क्षय (रोग)।

छड़ेड़ा†—वि०[स्त्री० छड़ेड़ी]=छौड़ा (छोकरा)।

छउनी†—स्त्री० =छावनी।

छकड़ा—पु०[स शकट] [स्त्री० अल्पा० छकडी] माल ढोने की वह छोटी गाडी जिसे आदमी या बैल खीचते हो।

छकड़ी—स्त्री०[हिं० छ] १ छ का समूह। २. वह पालकी जिसे छ कहार उठाते हैं।

छकना—अ०[स० चकन] [भाव० छाक] १.किसी प्रकार की यथेष्ट प्राप्ति से पूर्ण सतुष्ट होना। २. कौशल, चातुरी आदि मे परास्त होना। हारना।

स० कोई चीज इतनी मात्रा मे खाना या पीना कि पूरी तृप्ति हो जाय। जैसे—प्रसाद या भोजन छकना।

अ० [स० चक्र=भ्रात] १ चकराना। २. भ्रम मे पडकर परेशान होना।

छकाछक—क्रि० वि०[हिं० छकना] १. पूरी तरह से। भरपूर। २ भली-भाँति।

वि० १ पूर्ण रूप से तृप्त। २. नशे मे भरा हुआ।

छकाना—स०[हिं० छकना] १. किसी को कुछ देकर पूरी तरह से तृप्त या सतुष्ट करना। २ किसी को अच्छी तरह खिला-पिलाकर तृप्त करना। जैसे—ब्राह्मणो को हलुआ-पूरी छकाना। ३ किसी को किसी प्रयत्न या प्रयास मे परास्त या विफल करने के लिए कौशल, छल आदि से दुखी और शिथिल करना।

छकित—वि०[हिं० छकना] छका हुआ।

†वि०=चकित।

छकीला*—वि०[हिं० छकना] १ छकनेवाला। जी भरकर कोई चीज खाने या पीनेवाला। २ छक. हुआ। तृप्त। उदा०—रगनि ढरीले हौ छकीले मद-मोह तें।—घनानद। ३ मस्त। ४ नशे मे चूर।

छकौहाँ—वि०[हिं० छकना] १.छकनेवाला। २ छकानेवाला।

छक्करा—पु०[हिं० छक्का-पजा या छल] छल-कपट। दाँव-पेच।

†पु०=छकडा।

छक्कवै*—पु०[स० चक्रवर्ती] चक्रवर्ती। उदा०—अनगपाल छक्कवै, बुद्धि जो इसी उकिल्लिय।—चदवरदाई।

छक्का—पु०[स० षड्क, प्रा० छक्को] १ छ का समूह। २ छ अगो या अवयवोवाली वस्तु। ३ चौसर के खेल मे पासे का वह पहल जिस पर छ बिंदियाँ होती है।

पद—छक्का-पजा=दाँव-पेच।

मुहा०—(किसी का या के) छक्का या छक्के छूटना=प्रतियोगिता, प्रयत्न आदि मे पूरी तरह से परास्त या विफल होकर निरुपाय और हताश होना। **छक्का. पंजा भूलना**=परास्त या विफल होकर ऐसी स्थिति मे होना कि कोई और युक्ति सूझ न पडे।

४ सोलही के खेल मे वह स्थिति जिसमे छ कौडियाँ चित पडे। ५ ताश का वह पत्ता जिस पर छ बूटियाँ होती हैं।

छक्का-पंजा—पु०[हिं० छक्का+पजा] दाँव-पेच। छल-कपट।

छक्केबाज—वि०[हिं० छक्का+फा० बाज] [भाव० छक्केबाजी] बहुत बडा चालाक या धूर्त्त।

छगड़ा†—पु० [स० छागल] बकरा।

†पु०=छकडा।

छगन—पु० [स० छगट=एक छोटी मछली] छोटा बच्चा। छोटा बालक।

छगन-मगन—पु०[हिं० छगन+स० मग्न] छोटे-छोटे हँसते-खेलते हुए प्यारे बच्चे।

छगना†अ०=छकना।

†स०=छकना।

छगरा—पु०[स० छागल] [स्त्री० छगरी] बकरा।

छगलात्री(त्रिन्)—पु०[स० छगलात्र+इनि ब०स०] भेडिया।

छगुनिया, छगुनी†—स्त्री०=छँगुली।

छ-गोड़ा—वि० [हिं० छ +गोड=पैर] [स्त्री० छ-गोडी] जिसके छ पैर हो। छ पैरोवाला।

पु० मकडा (जतु)।

छग्गर—पु०[स० शकट] बोझ ढोने की पुरानी चाल की गाडी या ठेला जिसे आदमी खीचते या ठेलते हे। सग्गड।

छछद—वि०[स० स्वच्छन्द] १. मुक्त। स्वतन्त्र २ स्वच्छन्दता-पूर्वक आचरण करनेवाला। उदा०—छछद मुक्ता भै भ्रमपार।—गोरखनाथ।

† पु०=छल-छद।

छछार*—पु०[?] उछले हुए जल-कण। छीटा उदा०--छिछकै छछारे छिति अधिक उछार के।—सेनापति।

छछिआ†—स्त्री०=छछिया।

छछिया—स्त्री०[हिं० छाछ] छाछ नापने या रखने का एक प्रकार का मिट्टी का छोटा पात्र।

छछूँदर—पु०[स० छुच्छुदर] १ चूहे की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु जिसके शरीर से बहुत दुर्गंध निकलती है। २ पश्चिमी भारत मे गले मे पहना जानेवाला एक प्रकार का ताबीज। ३ एक प्रकार की छोटी आतिशबाजी जो छोडे जाने पर छू छू शब्द करती हे। ४. जगह-जगह छोटे-छोटे उत्पात या उपद्रव करनेवाला व्यक्ति।

छछेरु—पु०[हिं० छाछ] घी गरम करने पर उसमे से निकलनेवाला छाछ का अश।

छछौरी—स्त्री०[हिं० छाँछ+बरी] एक व्यजन जो छाँछ मे बरी डालकर बनाया जाता है।

छजना*—अ०[हिं० सजना] सुशोभित होना। सुन्दर जान पडना।

छजली—स्त्री०[हिं० छज्जा] १. छोटा और पतला छज्जा। २.छज्जे के आकार की वह वास्तु-रचना जो प्राय दीवार के ऊपरी भाग मे कुछ आगे या बाहर की ओर निकली हुई होती है। (कारनिस)

छज्जा—पु०[स० छाद्य, हिं० छाजन] १ दीवार से बाहर निकली या बढी हुई छत का भाग। २. ओलती। ओरी।

छज्जू—वि०[हिं० छीजना] छीजा या फटा हुआ (नया कपडा)। (दलाल)

छटकी—स्त्री०[हिं०छटाँक] छटाँक भर तौल का बटखरा।

वि० बहुत छोटा और हलका।

छटकना—अ०[हिं० छूटना]१ आघात, दाब आदि पडने पर अपने स्थान से उछलकर वेगपूर्वक किसी चीज का कुछ दूर जा गिरना। जैसे—मुट्ठी मे से रुपए छटकना। २ बधन या वश मे से निकल जाना।

जैसे—गाय का छटकना। ३ उछलना। कूदना। ४ वर्ग, समूह आदि में से अलग या दूर रहना या हो जाना। ५. पकड़, बंधन आदि से निकलने या बचने का प्रयत्न करना।

छटकाना—स० [हिं० छटकना] झटके से किसी चीज को दूर गिराना या फेंकना। छटकने में प्रवृत्त करना।

छटपटाना—अ० [अनु०] [भाव० छटपटी] १. बहुत अधिक पीड़ा के कारण हाथ-पैर आदि पटकना। जैसे—दरद के कारण मछली की तरह छटपटाना। २ बहुत अधिक दुःखी होने के कारण बेचैन या व्यग्र होना। ३ किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए बहुत अधिक चिंतित और व्यग्र होना।

छटपटी—स्त्री० [हिं० छटपटाना] १ छटपटाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ घबराहट। ३ मन में होनेवाली आतुरता या आकुलता।

छटाँक—स्त्री० [स० षट्+टक, >छटक> छटाँक] १ एक तौल जो ५ तोले अर्थात् सेर के १६ वें भाग के बराबर होती है। २ उक्त तौल का बटखरा।

छटा—स्त्री० [स०] वह विशिष्ट शोभा या सौन्दर्य जो दूर तक फैलती और देखनेवालो पर यथेष्ट प्रभाव डाल कर उन्हे मुग्ध करती हो। जैसे—वर्षाऋतु मे पर्वत की छटा, देव-मदिर मे मूर्ति की छटा।

छटुआ†—वि० [हिं० छँटना] छाँटकर अलग किया या निकाला हुआ, फलत. निकम्मा या रद्दी।

छट्ठी—स्त्री०=छठी।

छठवाँ—वि० [स्त्री० छठवी] छठा।

छठा—वि० [स० षष्ठ, हिं० छ] [स्त्री० छठी] गिनती मे छ के स्थान पर पडनेवाला।

पद—छठे-छमासे=दो, चार, छ. महीनो पर एक-आध बार। साल मे एक-दो बार, फलत कभी-कभी।

छठी—स्त्री० [हिं० छठा का स्त्री०] १ चाद्र मास के कृष्ण या शुक्ल पक्ष की छठवी तिथि। २. बालक के जन्म से छठे दिन होनेवाला एक कृत्य जो उत्सव के रूप मे होता है।

मुहा०—छठी का दूध याद आना=ऐसी कठिन या विकट स्थिति मे पडना कि बुद्धि ठिकाने न रहे।

छड़—पु० [स० शर] [स्त्री० अल्पा० छडी] किसी धातु का गोल या चौकोर लबा पतला टुकडा।

छड़ना—स० [स० चट] १ अनाज के दाने कूटकर उनकी भूसी अलग करना या छडना। जैसे—जौ या धान छडना। २ खूब पीटना या मारना। (परिहास)

छड़ा—पु० [हिं० छड़] १. पैर मे पहनने का एक प्रकार का गहना। २. मोतियो की लडी। ३. हाथ का पजा। (राज०)

वि० [हिं० छाँडना] [स्त्री० छडी] अकेला। एकाकी। जैसे—छडी सवारी।

पु० नौजवान आदमी जिसका अभी विवाह न हुआ हो अथवा जिसके साथ घर-गृहस्थी न हो।

छडाना†—स०=छुडाना।

छड़िया—वि० [हिं० छडी] जिसके हाथ मे छडी हो।

पु० दरबान जिसके हाथ मे प्रायः मोटा डडा रहता है। ड्योढ़ीदार।

छड़ी—स्त्री० [हिं० छड़] १ वह सीधी पतली लकडी जिसे लोग सहारे के लिए हाथ मे लेकर चलते है। २. उक्त प्रकार की पतली छोटी डडी या लकडी जिन पर फूल-पत्तियाँ बँधी रहती है और जो शोभा के लिए कही रखी या लगाई जाती है। ३. किसी की कब्र या मजार पर लगाई जानेवाली झडी। ४ कपडे आदि मे बनी हुई सीधी धारी या रेखा।

छड़ीदार—पु० =चोबदार।

छड़ीबरदार—पु० =चोबदार।

छडीला—पु०=छरीला।

छड़ी सवारी—स्त्री० [हिं०] ऐसा व्यक्ति जो कही अकेला जा रहा हो। वह जिसके साथ और कोई न हो। (परिहास और व्यग्य)

छत—स्त्री० [स० छत्र] १. वह वास्तु-रचना जिससे कमरा ढका होता है। पाटन। २ उक्त रचना का ऊपरी या निचला तल या भाग। जैसे—(क) छत पर मिट्टी डालना। (ख) छत मे झाड-फानूस टाँगना। ३. किसी चीज को ऊपर से ढकनेवाला भाग।

पु [स० क्षत] घाव। व्रण।

वि०=क्षत।

क्रि० वि० [स० सत्] रहते हुए। आछत।

छतगीर—पु० [हिं० छत+फा० गीर] १. कमरे मे ऊपरवाली छत के साथ प्राय. उसे ढकने के लिए तथा तानी जानेवाली चाँदनी। २. पलग के पायो से बाँधकर खडे किये हुए बाँसो आदि पर तानी जानेवाली चाँदनी।

छतगीरी—स्त्री०=छतगीर।

छतना—स० [हिं० छत] छत डालना या बनाना। कमरा या घर छाना।

अ० छाया जाना। छत आदि से युक्त होना।

अ० [स० क्षत] घाव होना।

अ० [स० सत्] वर्त्तमान रहना।

अ० [?] अदृश्य होना।

पु० [हिं० छाता] बडे-बडे पत्तो का बनाया हुआ छाता।

छतनार—वि० [हिं० छाता या छतना] [स्त्री० छतनारी] (वृक्ष) जिसकी शाखाएँ छत्र की तरह चारो ओर दूर तक फैली हुई हो।

छतराना—अ० [स० छत्रक] १. छत्रक या खुमी की तरह चारो ओर फैलना। जैसे—दाद छतराना। २ अधिक विस्तार से युक्त होना। जैसे—घाव छतराना।

छतरी—स्त्री० [स० छत्र] १ चारो ओर से खुले हुए स्थान के ऊपर का मडप। २ किसी पूज्य व्यक्ति का समाधि-स्थल जिसके ऊपर मडप बना हुआ हो। ३. कबूतरो के बैठने के लिए बाँस की पट्टियो का टट्टर। ४ खुमी। ५. दे० 'छाता'। ६. एक प्रकार का बहुत बडा छाता जिसकी सहायता से हवाई जहाज पर से कूदकर सैनिक नीचे उतरते हैं। (पैराशूट)

पद—छतरी फौज=छतरियो के सहारे हवाई जहाजो से उतरनेवाली सेना।

छतलोट—स्त्री० [हिं० छत+लोटना] छत पर पेट के बल लेटकर इधर-उधर लोटते हुए की जानेवाली कसरत या व्यायाम।

छतवंत*--वि० [स० क्षत+वत] जिसे क्षत या घाव लगा हो। घायल।

छतॉं†--क्रि० वि०[हि० आछत का एक प्रातिक रूप] विद्यमानता मे। रहते हुए। उदा०--देह छतॉं तुम मिलहु कृपा करि आरतिवत कबीर। --कबीर।

छता†--पु०१ =छाता। २ =छत्ता।

छति†--स्त्री०=क्षति।

छतिया--स्त्री० =छाती।

छतियाना--अ०[हिं० छाती] १ छाती से लगाना। २ छाती पर या उसके पास लाना या लाकर रखना। जैसे--गोली चलाने के लिए वदूक छतियाना।

छतिवन--पु० [स० छत्रपर्ण] एक प्रकार का वडा पेड जिसके कुछ अग दवा के काम आते है।

छतीस*--पु०[स० क्षितीश] राजा। उदा०--और दसा परहरौ छतीस।--गोरखनाथ।

छतीसा--वि०[हिं० छत्तीस] [स्त्री० छतीसी] १ वहुत ही चतुर। चालाक। २. ढोंगी। उदा०--आए ही पठाए वा छतीसे छलिया के इतै।--रत्नाकर। ३ व्यभिचारी।

छतुरी†--स्त्री०=छतरी।

छतौना†--पु० =छाता।

छत्त†--स्त्री० =छत।

छत्तर--पु० १ दे० 'छत्र'। २. दे० 'अन्नसत्र'।

छत्ता--पु [स० छत्र] १. छाता। छतरी। २. राजा का छत्र। ३ गली आदि की ऊपरी छत। ४ वर्रे, मधुमक्खियो आदि द्वारा निर्मित मोम की वह रचना जिसमे वे स्वयं रहती, अडे देती तथा शहद जमा करती है। ५ वह पौधा या वृक्ष जिसकी शाखाएँ छितरी या फैली हुई हो। ६ कमल का वीजकोश।

छत्ति--स्त्री० [स० छत्र] चमडे का वह कुप्पा जिस पर वैठकर प्राचीन काल मे लोग नदी पार करते थे।

छत्ती†--स्त्री० =छत्ति।

पु०=क्षत्रिय।

छत्तीस--[स० षट्त्रिंशत्, प्रा०, छत्तीसती, छत्तीसम्, वँ० सात्रीस, ओ० छत्रीस, प० छत्ती; सिं० छत्रीह, गु० छत्रीस, ने० छत्तिस्, मरा० छत्तीस) जो गिनती मे तीस से छ अधिक हो।

पु० उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है--३६।

छत्तीसगढ़--पु०[हिं० छत्तीस+स० गढ] आधुनिक मध्यप्रदेश का एक विभाग।

छत्तीसगढ़ी--स्त्री०[हिं० छत्तीसगढ] छत्तीसगढ की वोली।

छत्तीसा--वि०[स्त्री० छत्तीसी, भाव० छत्तीसापन]=छतीसा।

छत्तेदार--वि०[हिं० छत्ता+ फा० दार] १ जिसके ऊपर छत्र या छत्ता हो। २ मधुमक्खियों के छत्ते के आकार का।

छत्र--पु०[स छद् (ढकना) णिच्+ष्ट्रन्] १. छतरी। २ राजाओ या राज-सिंहासन के ऊपर लगाया जानेवाला वडा छाता। ३. कुकुरमुत्ता। ४ एक विष। ५. गुरु का दोषगोपन।

पु०[स० सत्र] वह स्थान जहाँ गरीवो या दीन-दुखियो को धर्मार्थ भोजन कराया जाता है।

छत्रक--पु०[स० छत्र√कै (मालूम पडना)+क] १ एक प्रकार का छोटा उद्भिज जिसका निचला भाग डडी की तरह पतला होता है और जिसका ऊपरी भाग खुले हुए छाते की तरह फैला हुआ होता है। खुमी। (फगस) २ कुकुरमुत्ता। ३ तालमखाने की जाति का एक पौधा। ४ कौडिल्ला (पक्षी)। ५. मण्डप। ६. [छत्र+कन्] छत्ता।

छत्रकायमान--वि०[स० छत्रक+क्यङ्+शानच्] छत्रक के रूप मे होने या फैलनेवाला। (फगेटिव)

छत्र-चक्र--पु०[मध्य०स०] ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जिससे शुभ-अशुभ फल जाने जाते है।

छत्र-छाँह†--स्त्री०=छत्र-छाया।

छत्र-छाया--स्त्री०[प० त०] छाया, ऐसा आश्रय जो छाते की तरह सुरक्षित रखनेवाला और सुखद हो। सरक्षण।

छत्र-धनी*--पु० =छत्रधारी।

छत्र-धर--पु०[छत्र√धृ (धारण)+अच्] १ वह राजा जो छत्र लगाता हो। २ राजा के ऊपर छत्र लगानेवाला सेवक।

छत्रधारी (रिन्)--वि० [स० छत्र√धृ+णिनि] छत्र-धर।

छत्रप*--पु०=क्षत्रप।

छत्रपति--पु०[प० त०] वहुत वडा राजा।

छत्रपन--पु०[स० छत्रिय+पन (प्रत्य०)] क्षत्रियत्व।

छत्र-बंध--पु०[व०स०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमे कविता के अक्षर विशिष्ट प्रकार से सजाने से छत्र या छाते की आकृति वन जाती है।

छत्र-भग--पु०[प०त०] १ राजा का नाश या मृत्यु। २ ज्योतिष का एक योग, जो राजा या उसके शासन के नाश का सूचक माना जाता है। ३ अराजकता।

छत्राक--पु०[स० छत्र+टाप्, छत्रा√कै+क] कुकुरमुत्ते, खुमी आदि की जाति के उद्भिजो की सामूहिक सज्ञा।

छत्रिक--पु०[स० छत्र+ठन्-इक] छत्र धारण करनेवाला राजा।

छत्री (त्रिन्)--वि०[स० छत्र+इनि] छत्रयुक्त।

पु०=क्षत्रिय।

छदंब--पु०[स० छद्म] १ छल। २ वहाना।

छद--पु०[√छद्+अच्] १ ढकनेवाली चीज। आवरण। २. खाल। ३ छाल। ४. खोल। गिलाफ। ५ पत्ता। ६ चिडिया का पख।

छद-पत्र--पु०[व० स०] १ भोजपत्र। २ तेजपात।

छदन--पु०[√छद् ल्युट्--अन्] छद। (दे०)

छदाम--पु०[हिं० छ +दाम] सिक्के का एक मान जो छ दामो अर्थात् पुराने पैसे के चौथाई भाग के वरावर होता था।

छद्दर†--पु०[हिं० छ +दर ?] वह वैल जिसके मुँह मे छ दाँत हो।

छद्दिय*--पु०[स० क्षुधा] भूख। उदा०--मरत काल चलि सथ्य, घाम घामन अरु छद्दिय।--चदवरदाई।

छद्म(न्)--पु० [√छद्+मनिन्] १ किसी चीज पर आवरण डालकर उसे ढकना या छिपाना। २ वह आवरण जिससे कोई चीज ढकी या छिपाई जाती है। जैसे--मकान की छत या छाजन। ३. किसी वस्तु या व्यक्ति का वास्तविक वाह्य रूप इस प्रकार कृत्रिम प्रसाधनों,

वस्त्रों आदि से छिपाना या बदलना जिससे उसे कोई पहचान न सके। ऐसा रूप प्राय. किसी को छलने या धोखा देने अथवा दूसरे का मनोरंजन करने के लिए धारण किया जाता है। ४. छल। धोखा।

छद्म-तापस—पु०[मध्य०स०] वह व्यक्ति जिसने दूसरों को ठगने के लिए अपना साधुओं का-सा वेश बनाया हो।

छद्म-वेश—पु०[मध्य०स०] दूसरों को छलने या धोखा देने या मन-बहलाव के लिए बनाया हुआ कृत्रिम वेश।

छद्मवेशी(शिन्)—वि०[स० छद्मवेश+इनि] १ जिसने छद्मवेश धारण किया हो। २. जो प्राय छद्मवेश धारण करके दूसरों को छलता, धोखा देता अथवा उनका मनोरंजन करता हो।

छद्मी (द्मिन्)—वि०[स० छद्म+इनि] [स्त्री० छद्मिनी] १.छद्मवेशी। २. छली।

छन—पु०[स० क्षण; प्रा० पा० छण, पं० खिण; गु० खण; सि० खुणु] १. क्षण। (दे०) २. पर्व का समय। पुण्यकाल।

†पुं०[हिं० छद] हाथों में पहनने का छद नामक गहना।

पु०[अनु०] १ तपे हुए धातु के पात्र पर ठंढा तरल पदार्थ पड़ने या छिड़कने से होनेवाला शब्द। २. कड़कड़ाते हुए घी या तेल में किसी वस्तु के तले जाने पर होनेवाला शब्द। ३. घुंघरू या पायल के बजने से होनेवाला शब्द।

छनक—स्त्री०[हिं० छनकना] १. छन-छन शब्द। झनकार। जैसे—घुंघरुओं की छनक। २. छन-छन शब्द होने की अवस्था या भाव।

क्रि० वि० [सं० क्षण+एक] क्षण भर।

वि०[स० क्षणिक] १. क्षणिक। क्षणभगुर। २. (व्यक्ति) जो क्षण-क्षण मे अपना मत या विचार बदल देता हो। उदा०--छाके है अयान मद छिति के छनक क्षुद्र।--केशव।

छनकना—अ०[अनु० छन छन] छन-छन शब्द होना। जैसे--घुंघरू का छनकना।

अ० [अनु०] चौंकना। भड़कना।

†पु० दे० 'झुनझुना'।

छनक-मनक—स्त्री०[हिं० छनक+अनु०] १. वह शब्द जो पहने हुए गहनों के आपस में टकराने से उत्पन्न होता है। २. सक। नखरा।

छनकाना—स०[हिं० छनकना] १. पानी को उबाल तथा खौलाकर उसका परिमाण कम करना। २. तपे हुए पात्र में कोई द्रव पदार्थ डाल कर उसे गरम करना। ३. भड़काना। चौंकाना।

स०१. कोई चीज बजाते हुए उसमें से छन-छन शब्द उत्पन्न करना। २. झुनझुना बजाना।

छनछनाना--अ०[अनु०] १. तपी हुई धातु पर जल-कण छोड़ने से छन-छन शब्द होना। २. खौलते हुए घी या तेल में तलने के लिए कोई वस्तु छोड़ने पर छन-छन शब्द होना। ३. क्रुद्ध होना।

स० १. छन-छन शब्द उत्पन्न करना। २. कुपित या क्रुद्ध करना।

छन-छवि--स्त्री०[स० क्षण+छवि] बिजली।

छनदा*--स्त्री०=क्षणदा (रात्रि)।

छनन-मनन—पुं० [अनु०] १. घुंघरुओं आदि के बजने से होनेवाला छन-छन शब्द। २. वह शब्द जो खौलते हुए घी या तेल में किसी तली जानेवाली वस्तु को छोड़ने से उत्पन्न होता है।

छनना--अ०[स० क्षरण] १. चलनी या छलनी अथवा किसी महीन कपड़े में से किसी चूर्ण (जैसे—आटा), छोटे कणों या दानोंवाली वस्तु (जैसे—गेहूँ) अथवा द्रव पदार्थ (जैसे—भांग) का छाना जाना। २. उक्त के आधार पर किसी नशीले तरल पदार्थ विशेषतः भांग का पीसा, छाना या पीया जाना। ३. उक्त के आधार पर आपस मे गूढ वार्तालाप या घनिष्ठ सबध होना।

मुहा०—(आपस में) गहरी छनना=गूढ वार्तालाप या मेल-जोल होना।

४. उक्त क्रिया से किसी वस्तु या द्रव पदार्थ का अनावश्यक या अनुपयोगी अंश अलग होना। ५. किसी चीज का छोटे-छोटे छेदो मे से होकर आना या निकलना। जैसे—पेड़ के पत्तो के बीच से चाँदनी का छनकर आना। ६. किसी आवरण मे से किसी चीज का भासित होना या झलक दिखाना। जैसे—घूंघट मे से सौंदर्य का छनकर निकलना। ७. छेदो से युक्त होना। जैसे—तीरो के घावो से शरीर छनना। ८ किसी अभियोग, झगड़े या विषय की पूरी तथा सही बातों का पता चलना। जैसे—मामला छनना। ९. किसी प्रकार के जाल या धोखे मे फँसना। उदा०--घात मैं लगे हैं ये बिसासी सबै, इनके अनोखे छल-छदनि छनो नही।—रत्नाकर।

अ० [हिं० छानना का अ० रूप] १. कड़कड़ाते घी या तेल मे खाद्य वस्तुओ का तला जाना। छाना जाना। जैसे—पूरी या बुँदिया छनना। २. इस प्रकार तली हुई चीजो का खाया जाना। जैसे—चलो! वहाँ पूरी-कचौरी छनेगी और खीर उड़ेगी।

अ० [सं० आछन्न] १. आच्छादित होना। घिरा होना। २. लिपटा या लपेटा हुआ होना। उदा०—मनो धनी के नेह की बनी छनी पट लाज।--बिहारी।

छनभंगु*—वि०=क्षण भंगुर।

छनभर* क्रि० वि०=क्षण भर।

छनवाना*—स०[हिं०छानना का प्रे०रूप] छानने का काम दूसरे से कराना।

छनिक*—वि०=क्षणिक।

छन्न*—पु० १.=छन। २.=क्षण।

वि० १. =आच्छन्न। २. =छिन्न।

छन्ना—पु० [हिं० छानना] १. वह कपड़ा जिसमे कोई चीज छानी जाय। २. चलनी। छलनी। ३. छोटा कटोरा।

छप—स्त्री० [अनु०] १. किसी तरल पदार्थ (जैसे—जल) अथवा किसी गाढ़े तरल पदार्थ (जैसे--कीचड) मे किसी चीज के आ गिरने से होनेवाला शब्द। २. जोर से छीटा पड़ने का शब्द।

छपकना--स० [हिं० छप (अनु०)] किसी चीज से आघात करना। मारना।

छपका--पुं०[हिं० छपकना] १. बाँस आदि की कमाची। २. पतली छड़ी।

पु० [अनु०] १. कोई चीज कीचड, जल आदि मे फेंककर उसे उछालने की क्रिया या भाव। २. पानी आदि का छीटा। ३. कीचड़ या पानी के छीटे का कपड़े आदि पर पड़ा हुआ धब्बा। ४. लकडी के सदूक के ढक्कन में की वह पटरी जिसमे जंजीर लगी रहती है।

पुं० सिर पर पहनने का एक आभूषण।

छपछप—स्त्री० [अनु०] धारा के किसी चीज से बार-बार टकराने से अथवा किसी चीज को बार-बार धारा मे फेंकने से होनेवाला शब्द।
छपछपाना—अ० [हिं० छपछप] छप-छप शब्द होना।
स० छप-छप शब्द उत्पन्न करना।
छपटना—अ० [सं० चिपिट] १. चिपकना। २. आलिंगित होना।
छपटाना—स० [हिं० छपटना] १ चिपकाना। २. आलिंगन करना। छाती से लगाना। उदा०—छिति-पति उमगि उठाइ छोहि छाती छपटायौ—रत्नाकर।
छपद—पु० [स० षट्पद] भौंरा। भ्रमर।
छपन*—वि० [हिं० छिपना] छिपा हुआ।
पु० [स० क्षपण] नाश। सहार।
छपनहार—वि० [हिं० छपन+हारा (प्रत्य०)] नाश या संहार करनेवाला।
छपना—अ० [हिं० छापना] १. ठप्पे, साँचे आदि की छाप से युक्त होना। ठप्पे या साँचे से चिह्नित होना। जैसे—धोती छपना। २. कागज, पुस्तक आदि का छप कर तैयार होना। मुद्रित होना। जैसे—कोश छपना ३ किसी कृति, घटना आदि का प्रकाशित होना। जैसे—कविता, लेख या समाचार छपना। ४. छापे मे सीसे के बैठाए हुए अक्षरो का अकित, चिह्नित या मुद्रित होना।
†अ०=छिपना।
छपरखट—स्त्री० [हिं० छप्पर+खाट] वह पलंग जिसके ऊपर डडो के सहारे कपडा तना हो।
छपर खाट—स्त्री०=छपरखट।
छपर छपर—स्त्री०=छपछप।
क्रि० वि० छपछप करते हुए।
छपरबंद—वि०, पु० छप्परबंद।
छपरबंदी—स्त्री०=छप्परबंदी।
छपरा†—पु० [हिं० छप्पर] १. छप्पर। २. बाँस का टोकरा जो पत्तो से मढा होता है तथा जिसमे तमोली पान रखते हैं।
छपरिया—स्त्री०=छपरी।
छपरिहाना†—अ० [हिं० छप्पर] १. छप्पर का गिरना या टूटना। २. छप्पर से गिरना या गिरकर टूटना।
छपरी†—स्त्री० [हिं० छप्पर का अल्पा० रूप] १. छोटा छप्पर। २. झोपडी (जिसका छोटा-सा छप्पर होता है)।
छपवाई†—स्त्री०=छपाई।
छपवाना†—स०=छपाना।
छपवैया—वि० [हिं० छापना] छापनेवाला।
छपही†—स्त्री० [देश०] उँगलियों मे पहनने का एक गहना।
छपा*—स्त्री० [स० छपा] १. रात्रि। २. हलदी।
छपाई—स्त्री० [हिं० छापना] छपने या छापने की क्रिया, ढंग, भाव या पारिश्रमिक।
छपाकर*—पु० [स० क्षपाकर] १ चद्रमा। २. कपूर।
छपाका—पु० [अनु० छपछप] १. कीचड, पानी आदि मे कोई चीज फेंकने से होनेवाला छप शब्द। २ धारा के किसी चीज के टकराने से होनेवाला शब्द। ३. छींटा।

छपाना—स० [हिं० छापना] १. छापने (दे० 'छापना') का काम दूसरे से कराना। २. शीतला का टीका लगवाना।
†स०=छिपाना। उदा०—उठि रेनु रवि गयउ छपाई।—तुलसी।
†अ०=[अनु० छप छप] खेत का सींचा जाना।
छपानाथ—पु० [सं० क्षपानाथ] चद्रमा।
छपाव†—पु०=छिपाव।
छप्पन—वि० [स० षट्पंचाशत्, प्रा० छप्पणम्, छप्पण] जो गिनती मे पचास से छ. अधिक हो।
पु० उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—५६।
छप्पन-भोग—पु० [हिं० छप्पन+सं० भोग] छप्पन प्रकार के व्यंजन। तरह-तरह की खाद्य वस्तुएँ।
छप्पय—पु० [सं० षट्पद] छ चरणोंवाला एक मात्रिक छद, जिसके पहले चरण मे रोला के और फिर दो चरण उल्लाला के होते हैं।
छप्पर—पुं० [स० छत्वर, प्रा० छप्पर, बँ० छापर, ओ० छपर, प० ल्हां. छप्पर, सिं० छरु, गु० छाप्रो, ने० छाप्रो, मरा० छप्पर] १. कच्चे मकानों, झोपड़ियों आदि की वह छाजन जो बाँसो, लकडियो तथा फूस की बनी होती है।
मुहा०—(किसी पर) छप्पर टूट पड़ना=एकाएक कोई विपत्ति या सकट आ पड़ना। **(किसी को) छप्पर पर रखना**=नगण्य समझना। **(किसी को) छप्पर फाड़कर देना**=अनायास और बहुत अधिक देना। २ झोपडी या मकान जिसकी छाजन फूस आदि की हो। ३. किसी प्रकार का आवरण जो रक्षा आदि के लिए ऊपर लगाया जाय। जैसे—नाव पर का छप्पर।
छब*—स्त्री० [स० छवि] छवि। सौंदर्य।
छबड़ा—पु० [हिं० छबडी का पु० रूप] बडी छबडी।
छबड़ी—स्त्री० [प० छाबड़ी] १ खोंचा। (दे०) २. टोकरी। डलिया।
छब-तखत—स्त्री० [हिं० छवि+अ० तकतीअ] शरीर की सुदर बनावट।
छबना*—अ० [हिं० छवि] १. छवि या सौंदर्य से युक्त होना। सुशोभित होना। उदा०—उझकि-उझकि पद कजनि के पजनि पै पेखि पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगि।—रत्नाकर। २. किसी चीज का किसी स्थान पर लगकर ठहर जाना। जैसे—गाल पर कालिख छबना। (बुदेल०)
छबि—स्त्री० [स० छवि] छवि। सौंदर्य।
स्त्री० [अ० शबीह] १. ऐसा चित्र या तस्वीर जिसमे किसी व्यक्ति के मुख की आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई गई हो। २. चित्र।
छबीना—पुं० [देश०] पड़ाव। उदा०—आध मील चलने के उपरान्त वह अग्रेजी छबीने के पास पहुँचा।—वृदावनलाल वर्मा।
छबीला—वि० [सं० प्रा० छवि, दे० प्रा० छाइल्लो; गु० छबिलो; पं० छबीला, मरा० छबिला] [स्त्री० छबीली] १. (व्यक्ति) जो छबि से युक्त हो। सुदर। २. जो बन-ठन कर रहता हो। छैला। बाँका।
छबुंदा—पुं० [हिं० छ+बुंदा] काले रग का एक प्रकार का छोटा जहरीला कीडा जिसकी पीठ पर सफेद रग की ६ बुंदकियाँ होती हैं।

छब्बीस—वि० [सं० षट्‌विंशति] जो गिनती में बीस से छः अधिक हो।
पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२६।
छब्बीसी—स्त्री० [हिं० छब्बीस] फलों आदि की गिनती का एक प्रकार जिसमें २६ गाहियों (अर्थात् १३० दानों) का सैकड़ा माना जाता है।
छम¹—वि०=क्षम।
स्त्री० [अनु०] घुँघरू या पायल के बजने का शब्द।
छमक—स्त्री० [हिं० छमकना] छमकने की क्रिया या भाव।
छमकना—अ० [हिं० छम (अनु०)] १. घुँघरुओं आदि के बजने का शब्द होना। २. आभूषणों की झनकार होना। ३. स्त्रियों का गहने पहनकर अथवा यों ही इठलाते या चमकते-मटकते हुए इधर-उधर आना-जाना।
†स०=छौंकना।
†अ०=छौंकना।
छमछम—स्त्री० [अनु०] १. पैरों में पहने हुए गहनों, घुँघरुओं, पायलों आदि के बजने से होनेवाला शब्द। २. जोर से पानी बरसने का शब्द।
क्रि० वि० १. छमछम शब्द करते हुए। २. इठलाते या चमकते-मटकते हुए।
छमछमाना—अ० [अनु०] १. छमछम शब्द उत्पन्न होना। २. चमकना।
स० छमछम शब्द उत्पन्न करना।
छमता*—स्त्री०=क्षमता।
छमना—स० [सं० क्षमन्] क्षमा करना। माफ करना।
छमवाना*—स० [हिं० छमना का प्रे० रूप] १. किसी को क्षमा करने में प्रवृत्त करना। २. अपने आपको क्षमा या माफ करवाना।
छमाई*—स्त्री० [हिं० छमा] क्षमा।
छमाछम—क्रि० वि० [अनु०] छमछम शब्द करते हुए।
छमाना*—स० [हिं० छमना का प्रे० रूप] १. क्षमा कराना। २. सहन कराना। उदा०—की लगि जीव छमावै छपा में छपाकर की छवि छाई रहैरी।—देव।
छमासा—स्त्री० [हिं० छ+मासा] छ मासे की तौल का बाट।
छमासी—स्त्री० [हिं० छ+सं० मास] वह श्राद्ध जो किसी व्यक्ति के मरने के छ महीने बाद किया जाता है। छमाही।
छमाही—स्त्री० [हिं० छ+माह] १. छ महीनों का समय। २. छ महीनों बाद मिलनेवाली अनुवृत्ति। ३. दे० 'छमासी'।
वि० हर छ महीने पर होनेवाला।
छमिच्छा*—स्त्री० १.=समीक्षा। २.=समस्या।
छमुख—वि० [हिं० छ+सं० मुख] जिसके छ मुख हों।
पुं० षडानन।
छय—पुं० [सं० क्षय] क्षय। नाश।
छयना—अ० [हिं० छय] १. क्षय होना। २. क्षीण होना।
स० क्षय करना। उदा०—है कै काई जल की छयो।—सूर।
अ०=छाना।
स०=छाना।
छयल (ल्ल)*—वि०=छैला।
छयासठ—वि०, पुं०=छियासठ।

छर*—पुं०=छल।
पुं०=क्षर।
वि० [सं० क्षार] भारी। जैसे—छरभार भारी बोझ।
छरकना†—अ० [अनु० छरछर] किसी पदार्थ का कभी तल या धरातल को स्पर्श करते हुए और कभी वेग से उछलते हुए आगे बढ़ना।
*अ० =छटकना।
†अ०=छलकना।
†अ० छिटकना।
छरकायल—वि० छरकीला।
छरकीला—वि० [हिं० छरी] १. दुबला-पतला। २. बहुत लंबा।
छरछंद*—पुं०=छलछंद।
छरछराना†—अ० [सं० क्षार] [भाव० छरछराहट] घाव में चुनचुनाहट या जलन होना।
स० चुनचुनाहट या जलन उत्पन्न करना।
छरद—स्त्री० [सं० छर्दि] कै। वमन।
मुहा०—छिया छरद करना=दे० 'छिया' के अंतर्गत मुहा०।
छरन—वि० [हिं० छरना=छलना] [स्त्री० छरनि] छलनेवाला।
पुं० क्षरण।
छरना†—स० [सं० क्षरण] सूप से नाज आदि छाँटना या फटकना।
अ० १. अनाज आदि का छाँटा या फटका जाना। २. दूर होना। नष्ट हो जाना। ३. तरल पदार्थ का कहीं से निकलकर धीरे-धीरे बहना। चूना। टपकना। रसना।
*स० छलना।
*स०=छड़ना।
स्त्री०=छलना।
छरबर*—पुं०=छलबल।
छरहटा—पुं० [सं० छलहट्ट] १. ऐसा स्थान जहाँ लोग छले या ठगे जाते हैं। छल का बाजार। २. छद्मजाल। उदा०—जनहुँ छरहटा पेखन लावा।—जायसी।
छरहरा—वि० [हिं० छड़+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० छरहरी, भाव० छरहरापन] १. जो शारीरिक दृष्टि से इकहरे शरीर का हो। जिसमें मोटाई सामान्यतः बहुत कम हो। दुबला-पतला। २. चुस्त। फुरतीला।
†वि० [हिं० छल+हारा] बहुरूपिया।
छरा—पुं० [सं० शर, हिं० छड़] १. माला या हार का लड़। २. इजारबंद। ३. छर्रा।
छरिंदा—वि०=छरीदा।
छरी—स्त्री०=छड़ी।
†वि०=छली।
*स्त्री० [सं० अप्सरा, हिं० अपछरी] अप्सरा।
छरीदा*—वि० [अ० जरीद] १. अकेला। २. (यात्रा के समय) जिसके पास असबाब या माल न हो।
छरीला—पुं० [सं० शैलेय] एक सुगंधित वनस्पति।
पुं० [?] बकरा।
छरोरा†—पुं० [सं० क्षर] वह घाव या खरोंच जो शरीर के छिलने से बनती हो।

छर्द—पु० [स०√छर्द् (वमन करना)+घञ्] कै। वमन।
छर्दिका—स्त्री० [√छर्द्+णिच्+ण्वुल्—अक,—टाप्, इत्व] १. कै। वमन। २. विष्णुक्राता लता।
छर्दिका-घ्न—पु० [छर्दिका√हन् (मारना)+टक्] बकाइन। महानिंवा।
छर्रा—पु० [अनु० छरछर] १ पत्थर आदि का छोटा टुकडा। २ ककड का छोटा टुकडा जो घुँघरू की कटोरी मे बद रहता है और जो घुँघरू के हिलाए जाने पर शब्द करता है। ३ बदूक, राइफल के द्वारा छोडी जानेवाली किसी धातु की गोली अथवा उसका कोई कण।
मुहा०—छर्रा पिलाना=बदूक या राइफल मे छर्रे भरना।
छलंक, छलग†—स्त्री० =छलाँग।
छल—पु० [स०√छो (काटना) +कलच्, पृषो० सिद्धि पा० प्रा छल, व० छल, आ० छड, प० छल, गु० छड, ने० छल० मरा० सड] १. कपट, कौशल, धूर्त्तता आदि से युक्त वह व्यवहार जो अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को धोखे मे रखकर, वहकाकर या वास्तविकता छिपाकर उसके साथ किया जाता है। २ वहाना। मिस। ३ धूर्त्तता। ४ कपट। ५ धोखेवाजी। ६ शत्रु पर युद्ध के नियम के विरुद्ध वार करना। ७ शास्त्रार्थ मे, प्रतिपक्षी के कथन का उसके अभिप्राय से भिन्न कोई दूसरा अर्थ करना।
छलक—स्त्री० [हि० छलकना] छलकने की क्रिया या भाव।
छलकन*—स्त्री० [हि० छलकना] १ छलक। २ वह अश जो छलक कर गिरे।
छलकना—अ० [स० क्षल्] १ किसी तरल पदार्थ का अपने आधान या पात्र मे पूरी तरह से भर जाने पर उमडकर इधर-उधर गिरना या गिरने को होना। जैसे—आँखो मे आँसू छलकना। २ किसी पात्र मे रखे हुए तरल पदार्थ का (पात्र के हिलने पर) झटके से उछलकर पात्र से बाहर गिरना। ३ लाक्षणिक रूप मे, किसी चीज का किसी बात से पूरी तरह से भर जाने या युक्त होने पर चारो ओर फूटना या फैला हुआ दिखाई पडना। जैसे—आँखो या हृदय से स्नेह छलकना।
छल-कपट—पु० [द्व० स०] धूर्त्ततापूर्ण आचरण या व्यवहार। धोखेवाजी।
छलकाना—स० हि० 'छलकना' का स० रूप।
छल-छंद—पु० [द्व० स०] दूसरे को छलने के लिए किया जानेवाला छलपूर्ण व्यवहार। चालबाजी।
छलछंदी (दिन्)—वि० [स० छलछद+इनि] चालबाज।
छलछलाना—अ०=छलकना।
छल-छाया—स्त्री० [प० त०] माया। कपट-जाल।
छल-छिद्र—पु० [द्व० स०] कपट या छलपूर्ण व्यवहार।
छलछिद्री (द्रिन्)—वि० [स० छलछिद्र+इनि] कपटी। धूर्त्त।
छलन—पु० [स० छल+णिच्+ल्युट्—अन] छलने की क्रिया या भाव।
छलना—स्त्री० [स० छल+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ किसी को छलने अर्थात् धोखा देने की क्रिया या भाव। २ वह काम, चीज या बात जिसका उद्देश्य ही दूसरो को छलना या धोखा देना हो। जैसे—यह सारी सृष्टि ही छलना है।
स० [स० छलन] १. छलपूर्ण आचरण या व्यवहार करना। धोखा देना। भुलावे मे डालना। २. अपने गुण, रूप आदि का ऐसा प्रदर्शन करना कि उसकी आड़ मे किसी का कुछ हर लिया जाय।
छलनी—स्त्री० [स० क्षरण] १. आटा आदि छानने का छेदोवाला या जालीदार छोटा उपकरण। चलनी।
मुहा०—छलनी में डालकर छाज उड़ाना=छोटी बात को बडी करना।
२ ऐसी चीज जिसमे उक्त प्रकार के बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। जैसे—काँटो मे चलते-चलते पाँव छलनी हो गये।
छल-बल—पु० [द्व० स०] वे कपटपूर्ण ढग या व्यवहार जिनसे किसी की खुशामद करके, धोखा देकर अथवा दबाव डालकर अपना काम निकाला जाता है।
छलबल—स्त्री० [अनु०] १ चटक-मटक। २ शोभा।
छलमलना*—अ०=छलकना।
छलमलाना*—अ०=छलकना।
स०=छलकाना।
छलहाया—वि० [स० छल+हि० हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० छलहाई] छल करने या छलनेवाला। छली। छलिया।
छलाँग—स्त्री० [हि० छाल=उछाल+अग] एक स्थान से खड़े-खड़े वेगपूर्वक उछलकर दूसरे स्थान पर जा खडे होने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र० —भरना।
मुहा०—छलाँगें मारना=(क) बहुत तेजी से चलना। (ख) जल्दी-जल्दी उन्नति करते हुए ऊँचे पद पर पहुँचना।
छलाँगना—अ० [हि० छलाँग] छलाँगे भरते हुए आगे बढ़ना।
छला†—पु०=छल्ला।
छलाई*—स्त्री०=छल।
छलाना—स० [हि० छलना का प्रे० रूप] छलने का काम दूसरे से कराना।
अ० छला जाना। धोखे मे आना।
छलावरण—पु० [स० छल—आवरण प० त०] [वि० छलावृत्त] १ वास्तविक बात या रूप छिपाने के लिए ऊपर से उसे कोई ऐसा रूप देना जिससे देखनेवाले धोखे मे पड जायँ। २ युद्ध-क्षेत्र मे अपनी तोपो, मोरचो आदि को शत्रु की दृष्टि से बचाने के लिए वृक्षो की डालियो, पत्तियो आदि से ढकना। (कैमोफ्लेज)
छलावा—पु० [हि० छल] १ भूत-प्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है। २ दलदल या जगलो में रह-रहकर दिखाई पडनेवाला वह प्रकाश जो मृत शरीरो की हड्डियो मे छिपे हुए फासफोरस के जल उठने से उत्पन्न होता है।
विशेष—इसी को लोग अगिया वैताल या उल्कामुख (प्रेत के मुख से निकलनेवाली आग) भी कहते है।
मुहा०—छलावा खेलना=अगिया वैताल का इधर-उधर दिखाई पडना।
छलिक—पु० [स० छल+ठन्—इक] रूपक का एक प्रकार।
छलित—वि० [स० छल+णिच्+क्त] जो छला या ठगा गया हो।
छलिया—वि० [स० छल] दूसरो को छलनेवाला। छलपूर्ण आचरण या व्यवहार करनेवाला।
छली (लिन्)—वि० [स० छल+इनि] छलिया।
छलौरी—स्त्री० [हि० छाला] एक रोग जिसमे उँगलियो के नाखूनो के नीचे का मास सडने लगता है और उसमे छाले पड जाते हैं।
छल्ला—पु० [स० छल्ली=लता] १ किसी धातु अथवा किसी पदार्थ

की बनी हुई अँगूठी के आकार की कोई गोलाकार रचना । २ उक्त की तरह की कोई गोलाकार आकृति। जैसे—बालो का छल्ला। ३. वह गोलाकार रचना या घेरा जो हुक्के के नेचे मे कलाबत्तू आदि के तारो का बना होता है। ४. किसी प्रकार का गोल घेरा या मडल।

छल्लि—स्त्री० [स० छद√ला (लेना)+कि] १ छाल । २. लता। ३. सतति।

छल्ली—स्त्री० [स० छल्लि+ङीप्] १ छाला । २. लता । ३ वृक्षो की टहनियो आदि से बनी हुई दौरी या झाबा । ४. अनाज के बोरो की पक्ति या क्रम से लगा हुआ ढेर। ५. मक्के की बाल। भुट्टा। (पश्चिम)

छल्लेदार—वि० [हिं० छल्ला+फा० दार] मडलाकार घेरे या चिह्नो-वाला। जिसकी आकृति छल्ले की तरह घेरदार हो। जैसे--छल्लेदार बाल ।

छव†—वि०=छ ।

छवक्क—वि० [हिं० छकना] छका हुआ। तृप्त।

छवा†—पु०=छावा (शावक)।
पु० [देश०] पैर की ऐडी।

छवाई—स्त्री० [हिं० छाना] छाने या छवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

छवाना—स० [हिं० छाना का प्रे० रूप] छाने का काम दूसरे से कराना ।

छवि—स्त्री० [स०√छो (छेदन) +क्विन्] छवि । (दे०)

छवैया†—वि० [हिं० छाना] छवाने या छानेवाला । छाने या छवाने का काम करनेवाला ।

छहर--स्त्री० [हिं० छहरना] बिखरने की क्रिया या भाव।

छहरना—अ० [स० क्षरण] छितराना। बिखरना। उदा०—मोती की फुहार सी छहरे--पत।

छहराना†—स० [हिं० छहरना] छितराना । बिखेरना ।
†अ०=छहरना।

छहरीला†—वि० [हिं० छहरना] [स्त्री० छहरीली] छितराने या बिखरनेवाला।

छहियाँ†—स्त्री०=छाँह ।

छही--स्त्री०[देश०] वह मादा पक्षी विशेपत. कबूतरी जो अन्य पक्षियो को बहकाकर अपने अड्डे पर या दल मे लाये ।

छाँ*—स्त्री०=छाँह ।

छाँउँ*—स्त्री०=छाँह।

छाँक—पु० [फा० चाक] खड। भाग।
†स्त्री० =छाक।

छाँगना—स० [स० छिन्न] १. छिन्न या अलग करना । २ कुल्हाडी आदि से पेड आदि की शाखा काटना।

छाँगुर—पु० [हिं० छ.+अगुल] वह व्यक्ति जिसके हाथ मे छ उँग-लियाँ हो।

छाँछ—स्त्री० [हिं० छाछ] १.=छाछ। २. छाछ रखने का एक पात्र। छछिया ।

छाँछी†—स्त्री० [हिं० छाँछ] छाछ रखने का छोटा पात्र। छछिया।

छाँट—स्त्री० [हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया या भाव। २. छाँट कर अलग की हुई निकम्मी वस्तु या रद्दी अश। ३. दे० 'छँटनी'।
†स्त्री० [स० छर्दि] कै। वमन।

छाँट-छिड़का†--पु० [हिं० छींटा+छिड़कना] बूँदा-बाँदी । हलकी वर्षा।

छाँटना—स्त्री०=छाँट।

छाँटना—स० [स० छर्द्; प्रा० छड्ड; २. सं० शत्>शात.>छाट, उस, स्वठ, दे प्रा० छाण्ट, ब० छाटा; ओ० छाटिबा; प० छाटणा; गु० छाटवू; मराठी छाट (णे)] १. आगे की ओर निकला या बढा हुआ (फलत. अनावश्यक और फालतू अश) काटकर अलग करना। जैसे--पेट की शाखाएँ या सिर के बाल छाँटना । २. कूट-फटक कर अनाज की भूसी अलग करना । ३. गदी या दूषित वस्तु किसी चीज मे से निकालना। साफ करना। जैसे—मैल छाँटना । ४ कै करना। वमन करना । ५. किसी वस्तु को कतरकर विशेष आकार या रूप देना। जैसे--मलमल के टुकडे मे से कुर्ता छाँटना। ६ कुल सामग्री मे से उपयुक्त वस्तुएँ चुनकर अपने काम के लि अलग कर लेना। जैसे—पुस्तकें छाँटना । ७ लेख आदि मे का वाछनीय अश ले लेना और अवांछनीय अश काट या छोड़ देना।
पद—काटना-छाँटना। (दे०)
८. अनावश्यक रूप से अपनी योग्यता दिखाना। जानकारी बघारना। जैसे—अग्रेजी छाँटना, कानून छाँटना ।

छाँटा--पु० [हिं० छाँटना] १ छाँटने की क्रिया या भाव। २ किसी को छल से किसी मडली, सभा अथवा उसकी सदस्यता से अलग करना। क्रि० प्र०--देना ।

छाँड़ना†--स०=छोडना।

छाँद—स्त्री० [स० छद=बधन] १. चौपायो के पैरो मे बाँधी जानेवाली रस्सी। २. छाँदने की क्रिया या भाव ।

छाँदना—स० [हिं० छाँद+ना (प्रत्य०)] १. रस्सी से बाँधना। जैसे—असबाब बाँधना-छाँदना । २. चौपायो के पिछले दोनो पैरो को सटाकर रस्सी से बाँधना जिससे वह दूर जाने या भागने न पावें।

छाँदसीय—वि० [स० छन्दस्+अण्+छ--ईय] (वह) जो छदशास्त्र का ज्ञाता हो।

छाँदा--पु० [हिं०छाँदना] वह भोजन जो ज्योनार, भडारे आदि से कपडे आदि मे बाँधकर लाया जाय। परोसा। जैसे—ब्राह्मणो को भोजन कराने के बाद एक-एक छाँदा भी दिया गया था ।

छाँदोग्य—पु० [स० छन्दोग+ञ्य] एक प्रसिद्ध उपनिषद् जो सामवेद का अग है और जिसमे सृष्टि की उत्पत्ति,यज्ञो के विधान तथा अनेक प्रकार के उपदेश हैं।

छाँधना†--स०=छाँदना ।

छाँव--स्त्री० =छाँह ।

छाँवड़ा—पु०=छौना।

छाँह†—स्त्री० [स० छाया; पा० छाय; प्रा० छाआ, छाहा, का० छाय, उ० छाइ; प० छाँ; सिं० छाव; गु० छांइ, मराठी सावली] १ दे० 'छाया'। २. दे० 'प्रतिबिंब'। ३. ऊपर से छाया हुआ स्थान । ४. शरण ।

मुहा०—छाँह न छूने देना=किसी को पास या समीप न आने देना। ५ भूत-प्रेत आदि का प्रभाव

मुहा०—छाँह बचाना=बहुत दूर या परे रहना।

छाँहगीर—पु० [हिं० छाँह+फा० गीर] १ राजछत्र। २. चँदोआ (दे०)। ३ दर्पण।

छाई†—स्त्री० [स० क्षार] १. राख। २. जले हुए पत्थर के कोयले के वे छोटे-छोटे कण जिनमे चूना मिलाकर जुडाई के लिए गारा बनाया जाता है।

छाउँ†—स्त्री०=छाया।

छाउर*—पुं० [सं० क्षार] राख।

छाक—स्त्री० [हिं० छकना] १ छकने की क्रिया या भाव। २ वह भोजन जो दोपहर के समय खेत पर काम करनेवाले व्यक्ति के लिए भेजा जाता है। दोपहर का कलेवा। ३ शराब पीने के समय खाई जानेवाली चटपटी चीजें। चाट। ४. नशा। मद। उदा०—दिन छिनदा छाकी रहत छुटत न विनु छवि छाकु।—विहारी। ५ नशीली चीज। मादक पदार्थ। उदा०—आठहू पहर की छाक पीवै।—कबीर। ६ मत्तता। मस्ती।

छाकना—अ० [हिं० छकना] १ तृप्त होना। छकना। २. भर जाना। उदा०—कियो हुमुकि हुकार छोभि त्रिभुवन भय छाक्यौ।—रत्नाकर। ३. चकित होना।

अ० छकना। धोखा खाना।

छाकु—पु० [हिं० छाक] मद्य। मदिरा।

छाग—पु० [√छो (काटना) +गन्] १ बकरा। २ बकरी का दूध। ३ पुरोडाश। ४ मेष राशि।

वि० बकरा-सबधी। बकरे का।

छागभोजी (जिन्)—वि० [छाग√भुज् (खाना+णिनि] बकरे का मास खानेवाला।

पु० भेडिया।

छागमय—पु० [स० छाग+मयट्] कार्तिकेय का छठा मुख।

छाग-मुख—पु० [ब० स०] १ कार्तिकेय। २. कार्तिकेय का एक अनुचर।

छागर—पु० [सं० छागल] बकरा। उदा०—छागर मेढा बड औ छोटे।—जायसी।

छाग-रथ—पु० [ब० स०] अग्नि।

छागल—पु० [स० छगल+अण्] बकरा।

स्त्री० पानी भरने के लिए बनाई हुई चमडे की मशक। डोल।

स्त्री० [पश्तो] पैर मे पहनने का एक गहना।

छाग-वाहन—पु० [ब० स०] अग्नि।

छागिका—स्त्री० [स० छागी+कन्, टाप्, ह्रस्व] बकरी।

छागी—स्त्री० [स० छाग+ङीप्] बकरी।

छाच्छार—वि० [स० साक्षात्] मूर्तिमान। साकार। उदा०—रानी का है छाच्छार दर्गा है।

छाछ—स्त्री० [स० छच्छिका] दही का वह घोल जिसमे से मक्खन मथकर निकाल लिया गया हो। मट्ठा।

छाछरी*—स्त्री० [?] मछली।

छाछठ—वि० [स० षट्षष्ठि] जो गिनती या सख्या मे साठ से छ अधिक हो।

पु० उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—६६।

छाछी†—स्त्री०=छाछ।

छाज—पु० [स० छाद] १ सरकडो, सीको आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध उपकरण जिससे अनाज फटका जाता है। सूप। २. छप्पर। ३. छज्जा।

पु० [हिं० छजना] १ छजने की क्रिया या भाव। २. किसी को छलने या ठगने के लिए बनाया जानेवाला रूप। स्वाँग ३. सजावट। ४. वेष-भूषा।

छाजन—स्त्री० [स० छादन] १ छाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। छवाई। २ छप्पर। ३ घर के ऊपर की बनावट जो छत के रूप मे और छाया के लिए होती है। ४. त्वचा का एक रोग जिसमे जलन होती है।

पु० कपडा। वस्त्र।

पु० [हिं० छजना] छलने या ठगने के लिए धारण किया जानेवाला वेश।

छाजना—अ० [हिं० छजना] १. सुदर जान पड़ना। २. सुशोभित होना। फबना।

स० १. सुदर बनाना। सजाना। २ सुशोभित करना।

छाड़ना*—स०=छोडना।

छात—स्त्री०=छत।

पु० १.=छत्र। उदा०—का कहँ बोलि सौहँभा, पातसाहि कर छात।—जायसी। २. छाता।

छाता—पु० [स० छत्रकम्, पा० छत्तकम् सि० छट्टु, उ० छाता, मराठी छत्र] १ कपडे का वह प्रसिद्ध आच्छादन जो छडी मे लगी हुई तीलियो पर कपडा आदि चढाकर बनाया जाता है और जिसे धूप, वर्षा आदि से रक्षित रहने के लिए सिर के ऊपर खोल या तानकर चलते हैं। २ उक्त आकार की कोई वानस्पतिक रचना। छत्ता। जैसे—खुमी का छाता। ३. दे० 'छतरी'।

छाती—स्त्री० [स० छादिन् छाने या छाया करनेवाला] १. जीवो के शरीर का सामनेवाला वह भाग जो पेट और गरदन के बीच स्थित होता है। वक्षस्थल। २ मनुष्य के शरीर का उक्त भाग, जिसमे स्त्री जाति मे स्तन होते हैं।

मुहा०—छाती जलना=अपच के कारण उक्त अश के भीतरी भागो मे जलन होना। छाती पीटना=बहुत दु:खी या शोकमग्न होने पर छाती पर हथेली से बार-बार आघात करना। छाती लगाना=आलिगन करना।

३. स्त्रियो का स्तन।

मुहा०—छाती छुड़ाना=ऐसी क्रिया करना जिससे शिशुओ के स्तन-पान करने का अभ्यास छूटे। छाती पिलाना=स्त्री का सतान को अपना दूध पिलाना।

४. मन। हृदय।

मुहा०—छाती उमड़ना=प्रसन्नता से फूले न समाना। छाती जलना=कोई कष्टदायक घटना या बात होने पर सतप्त होना। छाती जुड़ाना

या ठंडी होना=अभिलाषा पूर्ण होने पर मन का शान्त होना। छाती पत्थर की करना=अपने हृदय को इतना कडा करना या बनाना कि उस पर किसी दुख का प्रभाव न पडे। (किसी की) छाती पर कोदो या मूंग दलना=किसी के सामने जान-बूझकर ऐसा आचरण या काम करना जिससे उसका दिल दुखता हो। छाती पर पत्थर रखना=दुखी या शोकमग्न होने पर अपने दिल को कडा करना। छाती पर साँप फिरना या लोटना=(क) कलेजा दहल जाना। (ख) ईर्ष्या के कारण व्यथित होना। छाती फटना=बहुत अधिक असह्य दुख या वेदना होना। छाती भर आना=हृदय गद्‌गद् हो जाना।

५. जीवट। साहस। हिम्मत।

छात्र—पु० [सं० छत्र+ण] [स्त्री० छात्रा] १ विद्यार्थी। २ शिष्य।
वि० १. छात्र-संबंधी। २ गुरु या बडे पर छत्र लगाकर उसके पीछे-पीछे चलनेवाला।

छात्रवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] निर्धन तथा योग्य छात्रो को विद्याध्ययन करने अथवा किसी विषय मे अनुसंधान करने के लिए कुछ समय तक नियमित रूप से दी जानेवाली आर्थिक सहायता। (स्कालरशिप)

छात्रालय—पु० [सं० छात्र-आलय ष०त०]=छात्रावास।

छात्रावास—पु० [सं० छात्र-आवास ष०त०] वह स्थान जहाँ बहुत से छात्र निवास करते हो। छात्रो के रहने का स्थान। (बोर्डिंग हाउस)

छाद—पु० [सं०√छद् (छाना)+णिच्+घञ्] १ छत। २ छप्पर।

छादक—वि० [सं०√छद्+णिच्+ण्वुल्—अक] आच्छादित करने या छानेवाला।

छादन—पु० [सं०√छद्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० छादित] १ छाने या ढकने की क्रिया या भाव। २ वह चीज जिससे कुछ छाया या ढका जाय। आच्छादन। आवरण। ३ छिपाव। दुराव। ४. कपडा। ५ चादर। दुपट्टा।

छादित—भू०कृ० [सं०√छद्=णिच्+क्त] ऊपर छाया हुआ। उदा०—तुहिन वाष्प के सुरग जलद से छादित, इन्दु रश्मि के इन्द्र जाल से स्पर्शित।—पंत।

छादिनी—स्त्री० [सं०√छद्+णिच्+णिनि—ङीप्] १ चमडा। २ खाल।

छाद्मिक—वि० [सं० छद्मन्+ठक्—इक] १ (व्यक्ति) जो छद्मवेश धारण किये हो। बहुरुपिया। २ ढोंगी। मक्कार।

छान—स्त्री० [सं० छादन] छप्पर। छाजन।
स्त्री० [हिं० छानना] छानने की क्रिया या भाव।
पद—छान-बीन (दे०)।
स्त्री० [सं० छद या हिं० छाँद] चौपायो के पैरो मे बाँधी जानेवाली रस्सी।

छानना—स० [सं० चालन] १ (क) चलनी या छाननी मे कोई चीज डालकर उसे (चलनी को) बार-बार इस प्रकार हिलाना कि उस चीज के मोटे कण चलनी मे बचे रहे और महीन कण नीचे गिर पडे। जैसे—गेहूँ छानना। (ख) कपड़े के ऊपर चूर्ण या बुकनी रखकर उसे ऊपर से हाथ आदि से इस प्रकार चलाना कि उसमे का महीन अंश नीचे छनकर गिर पडे। कपडछान करना। (ग) किसी तरल पदार्थ को चलनी या वस्त्र मे से इस प्रकार निकालना कि उसमें मिले या पड़े हुए मोटे कण ऊपर रह जायँ। जैसे—चाय या दूध छानना। (घ) उक्त के आधार पर पिसी या घुली हुई भाँग के संबंध मे उक्त क्रिया करना।
मुहा०—भाँग छानना=भाँग पीस तथा घोलकर पीना।
विशेष—कुछ लोग इसी के आधार पर शराब के साथ 'छानना' क्रिया का प्रयोग करते है जो ठीक नही है।
२ ऐसी रासायनिक क्रिया करना जिससे एक धातु मे मिला हुआ दूसरी धातु का अंश अलग हो जाय। जैसे—तेजाब मे सोना छानना। ३ कोई चीज ढूँढने के लिए सब जगह या सब चीजे अच्छी तरह देखना-भालना। जैसे—(क) सारा घर या शहर छानना। (ख) पूरी रामायण या महाभारत छानना।

छाननी—स्त्री०=चलनी।

छान-बीन—स्त्री० [हिं० छानना+बीनना] १ छानने या बीनने की क्रिया या भाव। २ अनुसंधान। जाँच-पडताल।

छाना—स० [सं० छादनक, पा० छाद] १ छाया के लिए किसी स्थान पर कोई आवरण डालकर या कोई रचना खडी कर उसे ढकना। जैसे—छाजन छाना। २. छाया करने के लिए किसी स्थान से कुछ ऊपर कोई वस्त्र तानना या फैलाना। ३ आवास के प्रसंग मे, निर्मित करना। जैसे—घर या झोपडी छाना।
अ०१ किसी चीज या बात का इस प्रकार चारो ओर फैल जाना कि अपने क्षेत्र मे हर जगह वही दिखाई दे। जैसे—अंधकार छाना, बादल छाना, रोब छाना। २ डेरा डाल कर या जमकर कही रहना। उदा०—जोगिया जी छाइ रह्या परदेश।—मीराँ।

छानि—स्त्री०=छानी।

छानी—स्त्री० [हिं० छाना] घास-फूस की छाजन।
मुहा०—(किसी की) छानी छवाना=ऐसी व्यवस्था करना कि कोई सुरक्षित रूप से रह सके।
वि० छिपा हुआ। गुप्त।

छाने-छाने—क्रि० वि० [हिं० छाना] चुपके से। छिपे-छिपे।

छाप—स्त्री० [हिं० छापना] १ छापने की क्रिया या भाव। २ वह ठप्पा या साँचा, जिससे कोई चीज छापी जाय। ३ छापने से बननेवाला विशिष्टता सूचक कोई चित्र या चिह्न। जैसे—वैष्णवो के अंगो पर गरम धातु से अंकित शंख, चक्र आदि का चिह्न। ४ ऐसी अँगूठी जिस पर छापने के लिए कोई अंक या चिह्न बना हो। मुद्रा। ५ अँगूठी (पश्चिम)। ६ कविता के अन्त मे रहनेवाला कवि का उपनाम। ७ किसी प्रकार के विशिष्ट प्रभाव के फलस्वरूप दिखाई देनेवाला चिह्न या बात। जैसे—इस कवि पर ब्रजभाषा की छाप स्पष्ट दिखाई पडती है। ८ किसी कथन, घटना, दृश्य आदि के प्रभावशाली होने या ठीक जान पडने के कारण मन पर पडनेवाला उसका प्रभाव।

छापना—स० [हिं० छाप] १ ठप्पे आदि पर रंग या स्याही लगाकर उसे किसी वस्तु पर इस प्रकार दबाना कि ठप्पे पर बनी हुई आकृति उस वस्तु पर छप या बन जाय। २ यंत्रो की सहायता से अक्षर, चित्र आदि मुद्रित करना। ३. पुस्तक, लेख, समाचार-पत्र आदि प्रकाशित करना। ४ किसी तल पर काला कागज रख कर उस पर इस प्रकार चित्र बनाना या कुछ लिखना कि उस तल पर उस कागज की सहायता से चिह्न बन जायँ।

स०=छोपना। उदा०--सव मुख कजनि खिल्त सोक पाला परि छार्प्यो।--रत्नाकर।

छापा--पु०[हि० छापना] १. धातु अथवा लकडी का वह टुकडा जिस पर फूल-पत्ती आदि खुदी रहती है और जिस पर रग या स्याही लगाकर उसकी छाप किसी तल पर लगाई जाती है। ठप्पा। २. उक्त उपकरण की छाप। ३. विष्णु के आयुधो के वे चिह्न जो भक्त लोग तप्त मुद्रा से अपने शरीर पर अकित कराते है।उदा०--जप माला छापे तिलक...।--विहारी। ४ मोहर, मुद्रा और उसकी छाप। ५ मगल अवसरो पर हथेली और पाँचो उँगलियो का वह चिह्न जो हल्दी आदि की सहायता से दीवारो आदि पर लगाया जाता है। ६' पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि छापने की कला या यत्र। ७ शत्रु या शिकार पर अचानक किया जानेवाला हमला।

क्रि० प्र०--डालना।--मारना।

८ किसी की तलाशी लेने के लिए और कुछ विशिष्ट वस्तुएँ पकडने के लिए पुलिस का अचानक या अप्रत्याशित रूप से कही पहुँचकर सव चीजे देखना-भालना।

क्रि-प्र०--मारना।

छापा-खाना--पु०[हि०छापना+फा० खान]वह सस्थान जहाँ यत्रो आदि की सहायता से छपाई का काम होता हो। मुद्रणालय। (प्रिंटिंग प्रेस)

छापामार--वि०[हि० छापा+मारना] अचानक किसी पर आक्रमण करनेवाला। छापा मारनेवाला।

छापामारी--स्त्री०[हि० छापामार] छापा मारने की क्रिया या भाव।

छाव†--पु०[देश०] घुटना।

छावड़--पु०[हि० छावडी] वडी छावडी। उदा०--मिणवर छावड माय, पडै न राणप्रतापसी।--दुरसाजी।

छावड़ी--स्त्री०[हि० छावा] वह टोकरी या थाल जिसमे खाने-पीने की चीजे रखकर वेची जाती है। खोचा।

छावा†--पु०=झावा।

छाम†--वि०=छाँह।

वि०=क्षाम।

छामोदर*--वि०[स्त्री० छामोदरी]=क्षामोदर।

छाय†--स्त्री०=छाया।

छायल--स्त्री०[?] स्त्रियो की एक प्रकार की कुरती।

छायाक--पु०[स० छाया-अक व०स०] चद्रमा।

छाया--स्त्री०[स०√ छो (काटना)+य--टाप्] १. वह अधकार या अधकारपूर्ण वातावरण जो किसी स्थान (अवकाश) मे प्रकाश की किरणें किसी वीच मे पडनेवाली आड या आवरण के कारण न पहुँच सकने पर उत्पन्न होता है। २ ऐसा स्थान जहाँ उक्त प्रकार का अधकार या अधकारपूर्ण वातावरण हो। ३. ऊपर या सामने रहनेवाली वह चीज जो धूप, वर्षा, शीत आदि से वचाती है। ४ वह अधकारपूर्ण आकृति जो किसी स्थान पर प्रकाश की किरणें न पहुँच सकने पर वनती है और यह उस वस्तु की आकृति जैसी होती है जो प्रकाश की किरणो को किसी स्थान पर नही पहुँचने देती। परछाई। प्रतिविव। ५. प्राय किसी के पीछे या साथ टोह, रक्षा आदि के लिए लगा रहनेवाला व्यक्ति। ६. किसी वस्तु के अनुकरण पर वनी हुई और कुछ-कुछ वैसी ही जान पडनेवाली पर कम महत्त्व की चीज। प्रतिकृति। अनुहार। ७. ऐसी तत्त्वहीन या निस्सार वात या पदार्थ जो किसी वास्तविक या महत्त्वपूर्ण वात या पदार्थ की भद्दी नकल भर हो। व्यर्थ की निकम्मी और भ्रामक प्रतिकृति। ८. किसी वात या पदार्थ का वहुत ही क्षीण या नाम-मात्र का अवशेष जो उस मूल वात या पदार्थ का आभास देता हो। ९ चित्र का वह अश जहाँ पर किसी अश की छाया पडने के कारण अपेक्षाकृत कुछ अधिक कालापन आ गया हो। (शेड) १० भूत-प्रेत आदि के कारण होनेवाली वाधा। ११ काति। दीप्ति। १२ एक रागिनी। १३ दुर्गा। १४. सूर्य की पत्नी। १५ आर्या छद का एक भेद।

छाया-कर--पु० [छाया √ कृ (करना)+अच्] किसी के पीछे छतरी लेकर चलनेवाला व्यक्ति।

छाया-गणित--पु०[मध्य०स०] गणित की वह प्रक्रिया जिससे उनकी छाया के सहारे ग्रहो की गति-विधि आदि जानी जाती है।

छाया-गत--वि० दे० 'पार्श्वगत'।

छाया-ग्रह--पु०[छाया √ग्रह् (ग्रहण)+अच्] आईना। शीशा।

छाया-ग्राहिणी--स्त्री०[स० छायाग्राहिन्+ङीप्] सिंहिका (दे०) नामक राक्षसी।

छाया-ग्राही--(हिन्) वि० [स० छाया√ग्रह +णिनि] [स्त्री० छाया-ग्राहिणी] किसी की छाया के आधार पर ही उसे ग्रहण कर लेने या पकडनेवाला।

छाया-चित्र--पु०[मध्य० स०] १ वह चित्र जो विशेष प्रकार से निर्मित कागज या शीशे पर किसी वस्तु की छाया मात्र पडने से उतर आता है। २ उक्त प्रतिविम्व को छापने से वननेवाला चित्र। (फोटो)

छाया-चित्रण--पु०[प०त०] वह कला या क्रिया जिससे किसी वस्तु की छाया या प्रतिविम्व एक प्रकार के शीशे पर ले लिया जाता है और उसके द्वारा एक विशेष प्रकार के कागज पर उसका चित्र छापा जाता है। (फोटोग्राफी)

छाया-तनय--पु०[प०त०] शनि।

छाया-दान--पु०[मध्य०स०] एक प्रकार का दान जिसमे ग्रहजन्य अरिष्टो की शाति के लिए काँसे की कटोरी मे घी या तेल भरकर पहले उसमे अपनी छाया देखी जाती है और तव उस पात्र का घी या तेल दक्षिणा सहित किसी को दे दिया जाता है।

छाया-नट--पु०[व०स०] पाडव सपूर्ण जाति का एक सकर राग जो रात के पहले पहर मे गाया जाता है।

छाया नाट्य--पु०[स०] पुतलियो का एक प्रकार का नाटक जिसमे चमडे की पुतलियाँ और पुतले वनाकर उन्हे कठपुतलियो की तरह इस प्रकार नचाया और उनसे अभिनय कराया जाता था कि उनकी छाया आगे पडे हुए उस पर्दे पर पड़ती जो दर्शको के सामने होता था।

विशेष--इसका आरम्भ चीन मे और विकास भारत मे हुआ था जहाँ से यह भारत और अरव होता हुआ अफ्रीका और यूरोप मे पहुँचा था। यही आधुनिक चलचित्रो का मूल रूप माना गया है।

छाया-पथ--पु०[मध्य०स०] असख्य नक्षत्रो का विशिष्ट समूह जो हमे उत्तर-दक्षिण फैला हुआ दिखाई देता है। आकाशगगा। (गैलेक्सी)

विशेष--वस्तुत. महाशून्य मे ऐसे अनेक छाया-पथ जगह-जगह फैले

हुए हैं और हमारी पृथ्वी तथा सौर मडल इसी प्रकार के एक छाया-पथ के अतर्गत है।

छायापाती (तिन्)--पु०[स० छाया√ पत् (गिरना)+णिनि] सूर्य।

छायापात्र--पु०[प० त०] वह छोटा पात्र जिसमे घी या तेल भर कर छाया-दान किया जाता है।

छाया-पुरुष--पु०[मध्य०स०] हठ योग की एक साधना के फलस्वरूप द्रष्टा को आकाश मे दिखाई पडनेवाली निजी छाया रूपी आकृति।

छायाभ (ा)--वि०[स० छाया-आभा व०स०] १. जो छाया से युक्त हो। २. जिस पर छाया पडी हो।

स्त्री० अधकार और प्रकाश। उदा०--यह छायाभा है अविच्छिन्न यह आँख मिचौनी चिर सुन्दर।--पत।

छायामय--वि०[स० छाया+मयट्] छाया से युक्त।

छायामान--पु०[व०स०] चद्रमा।

छाया-मित्र--पु०[प०त०] छतरी।

छाया-मूर्ति--स्त्री०[मध्य०स०] छाया पडने से बनी हुई आकृति या रूप।

छाया-मृगधर--पु० [छाया-मृग मध्य०स०, छायामृग-धर प०त०] चद्रमा।

छाया-यंत्र--पु० [मध्य०स०] धूप-घडी।

छाया-लोक--पु० [मध्य ० स०] अदृश्य जगत्। इस लोक से परे माना जानेवाला वह लोक जो दिखाई न देता हो।

छाया-वाद--पु० [प०त०] आधुनिक साहित्य मे आत्म अभिव्यक्ति का वह नया ढग या उससे सबध रखनेवाला सिद्धान्त जिसके अनुसार किसी सौंदर्यमय प्रतीक की कल्पना करके ध्वनि, लक्षणा आदि के द्वारा उसके सबध मे अपनी अनुभूति या आतरिक भाव प्रकट किए जाते हैं।

छायावादी (दिन्)--वि०[स० छायावाद+इनि] १ छायावाद सबधी (रचना)। २. छायावाद के सिद्धान्त माननेवाला या उसका अनुसरण करनेवाला (व्यक्ति)।

छाया-सुत--पु० [प० त०]शनि।

छार†--पु० [स० क्षार] १ जली हुई वस्तु का वह अश जो भस्म या राख हो गया हो। २. खारा नमक।

छारना*--स० [हिं० छार] १ पूरी तरह से जलाकर राख करना। २. चौपट या नष्ट करना।

छारा*--पु०=छाला।

छाल*--स्त्री० [स०पा०, प्रा० छल्ली] वृक्षों आदि के तने पर का कड़ा, खुरदरा और मोटा छिलका।

*पु० चिट्ठी या पत्र (जो पहले छाल पर लिखा जाता था)।

पुं० छाला। चर्म। उदा०--बैठ सिंघ छाला होइ तपा।--जायसी।

†स्त्री०=उछाल (पश्चिम)।

छालक*--वि० [स० क्षालक] [स्त्री०छालिका] धोने या धोकर साफ करनेवाला। उदा०--त्रिपथ गासि पुन्य रासि पाद-छालिका।--तुलसी।

छालटी--स्त्री०[हिं० छाल] एक प्रकार का कपड़ा जो अलसी आदि के रेशों से बनाया जाता है।

छालित--भू० कृ०[स० प्रक्षालित] धोया अथवा धोकर साफ किया हुआ।

छालिया*--वि० [स० स्थाली] एक प्रकार की छिछली तथा छोटी कटोरी।

पु० [?] १. सुपारी के कटे हुए छोटे-छोटे टुकडे। २. बादाम, पिस्ते आदि के एक मे मिले हुए छोटे टुकडे।

छालो*--पु०=छागल (बकरी)।

छाँव--स्त्री०=छाँह।

छावना†--स०= छाना।

छावनी--स्त्री०[हिं० छाना]१ छप्पर आदि छाने की क्रिया या भाव। २. छप्पर। ३. डेरा। पडाव।

मुहा०--छावनी छाना=मार्ग मे डेरा लगाना। अस्थायी रूप से कही परदेश मे जाकर रहना।

४. शहर का वह भाग जहाँ सैनिक रहते हो। सैनिको की बस्ती। (कैन्टूनमेंट)

छाहरि--स्त्री०[हिं० छाँह] छाया। उदा०--आपनि छाहरि तेज न पास। --विद्यापति।

छिउँकी--स्त्री० [हिं० च्यूँटी] [पु० छिउका]१. एक प्रकार की भूरे रग की च्यूँटी। २ एक प्रकार का कीडा।

†स्त्री०=चिकोटी।

छिकना--अ०=छिकना।

छिकोरा--पु०[देश०] एक वन्य पशु।

छिछ--पु० [अनु०] १. फुहारा। फव्वारा। उदा०--ऊँच छिछ ऊछले अति।--प्रिथीराज। २. छींटा।

†वि० =छूँछा।

छिछना--स०[स० इच्छ] चाहना। इच्छा करना।

छि--अव्य०[अनु०] अश्रद्धा,घृणा, तिरस्कार आदि का सूचक एक शब्द। जैसे--छि. तुम भी ऐसा करने लगे।

छिअ--वि०=छ. (सख्या)।

छिउकी--स्त्री०=छिउँकी।

छिउल--पु०[स० शाल्मलि ?] टेसू। पलाश।

छिकना--अ० [हिं० छेंकना] १. (स्थान आदि का) घेरा जाना। २. मार्ग मे अवरुद्ध किया या रोक लिया जाना। ३. (खाते मे नाम पडी हुई रकम का वसूल होने पर) काटा या रद्द किया जाना।

छिकनी--स्त्री० [स० छिक्कनी] नकछिकनी नाम की एक बूटी।

छिकरा--पु०=चिकारा।

छिकुला†--पु०=छिलका।

छिक्कनी--स्त्री० [स० छिक्√कन् (शब्दकरना)+अप् डीप्] नकछिकनी नाम की बूटी।

छिक्का--स्त्री० [स० छिक्√कै (शब्द करना)+क--टाप्] छीक।

†पु०=छीका।

छिगार†--पु०=चिकारा।

छिगुनी--स्त्री०[स० क्षुद्र+हिं० उँगली] हाथ या पैर की सब से छोटी उँगली। कानी उँगली।

छिगुली†--स्त्री० छिगुनी।

छिच्छ*--पु०=छीटा।

छिछकारना--स०=छिडकना।

छिछड़ा—पु०=छीछडा।

छिछड़ी--स्त्री०[हि० छिछडा] लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का आवरण।

छिछला--वि०[स० उच्छल] [स्त्री० छिछली] १ जिसमे गहराई न हो। कम गहरा। जैसे--छिछला पात्र। २ (जलाशय) जो कम गहरा हो और इसी लिए जिसमे जल थोडी मात्रा मे रहता हो। ३ तुच्छ (वात या स्वभाव)।

छिछिल--वि०=छिछला।

छिछोरा—वि०[हि० छिछला] [स्त्री० छिछोरी, भाव० छिछोरापन] (व्यक्ति) जो स्वभाव से गभीर न हो।

छिजना†--अ०=छीजना।

छिटकना—अ०[स० क्षिप्ति] १ किसी पदार्थ के कणो का इधर-उधर विखरना। २. =छिडकना।

स०=छिटकाना।

छिटकाना--स०[हि० छिटकना] किसी पदार्थ के कणो को चारो ओर डालना, फेकना या विखेरना। जैसे--अन्न या वालू छिटकाना।

छिटकी†—स्त्री०[हि० छीटा] कोई चीज छिटकने के कारण पडा हुआ उसका कण या चिह्न।

छिट-फुट —क्रि० वि०[हि० छिटकना+अनु०] १ कुछ यहाँ कुछ वहाँ। थोडा यहाँ थोडा वहाँ। २. कही-कही। चुट-फुट।

वि० गिनती या मान मे कम।

छिटवा†--पु०[स० शिक्य] टोकरा।

छिड़कना—स० [हि० छीटना] १ जल या कोई तरल पदार्थ को इस प्रकार फेकना कि उसके छीटे विखर कर चारो ओर पडें। जैसे—आग या जमीन पर पानी छिडकना, अभ्यागतो पर गुलाव-जल छिडकना। २=छिटकना।

छिडका†—पु०=छिडकाव।

छिड़काई--स्त्री०[हि० छिडकना] १ छिडकने का कार्य या भाव। २ छिडकने का पारिश्रमिक या पुरस्कार। जैसे—गुलाव छिडकाई।

छिड़काव—पु०[हि० छिडकना] जल या कोई तरल पदार्थ छिडकने की क्रिया या भाव।

छिड़ना--अ०[हि० छेडना] १ छेडा जाना। जैसे-वात छिडना, राग-छिडना। २ आरभ होना। जैसे—युद्ध छिड़ना।

छिण*--पु०=क्षण।

छित*—वि०[स० सित] सफेद।

छितनी†--स्त्री० [?] एक प्रकार की छिछली या कम गहरी टोकरी।

छितराना—अ०, स०=छितराना।

छितर-वितर—वि०=तितर-वितर।

छितरा—वि०[हि०छितराना] छितराया हुआ।

छितराना—अ०[स० क्षिप्त+करण] १ किसी वस्तु के कणो या छोटे-छोटे टुकडो का चारो ओर विखरना। २ थोडे से पशुओ, व्यक्तियो, वस्तुओ आदि का विस्तृत भू-भाग मे फैलना। जैसे—यहूदी सारे ससार मे छितरे हुए हैं।

स० १ किसी वस्तु के कणो को चारो ओर गिराना, फेंकना या विखेरना। २ दूर-दूर या विरल करना। जैसे—किताबे छितराना। ३. व्यक्तियो, पशुओ आदि को तितर-वितर करना।

छितराव—पु०[हि० छितराना] छितरे या छितराए हुए होने की अवस्था या भाव।

छितव*—स्त्री०=क्षिति।

छिताई—स्त्री०[स० क्षिति] देवगिरि के राजा की पुत्री।

छिति*—स्त्री० [स० क्षिति] पृथ्वी। भूमि।

छितिकंत, छितिनाथ, छितिपाल—पु० [हि० छिति+स० कत, नाथ या पाल] राजा।

छितिरुह—पु०[हि० छिति+स० रुह] वृक्ष।

छितीस*—पु०[स० क्षितीश] राजा।

छित्ति—स्त्री० [स०√छिद् (छेदना)+क्तिन्] काटने अथवा छेदने की क्रिया या भाव।

छिदक--पु०[स०√छिद् (छेदना)+क्वुन्—अक] १ वज्र। २.हीरा।

छिदना—अ० [हि० छेदना] १. नुकीली वस्तु के धँसने या धँसाये जाने के कारण किसी वस्तु मे आर-पार छेद होना। जैसे—कान या नाक छिदना। २ सुराख होना। छेदा जाना। जैसे—तीर से शरीर छिदना। ३ घायल होना। ४ चुभना। धँसना।

छिदवाई—स्त्री०[हि० छिदवाना] १ छेदने की क्रिया या भाव। २. छेदने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

छिदवाना—स०[हि० छेदना का प्रे० रूप] [भाव० छिदवाई] छेद या सुराख करवाना।

छिदाना—स०=छिदवाना।

छिदि—स्त्री०[√छिद्(काटना)+इन्] १ काटने या छेदने की क्रिया या भाव। २. कुल्हाडी। ३ वज्र।

छिदिर—पु०[स०√छिद्+किरच्] १ कुल्हाडी। २ तलवार। ३ अग्नि। ४ रस्सी।

छिद्र--पु०[√छिद्+रक्] १ किसी वस्तु के वीच मे का दोनो ओर से खुला हुआ छोटा भाग।छेद। जैसे—कपडे या चलनी मे का छिद्र। २ किसी घन या ठोस वस्तु मे का वह गहरा स्थान जिसमे उस वस्तु का कुछ अश निकाल लिया गया हो। जैसे—जमीन, दीवार या फल मे का छिद्र। ३ किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति मे होनेवाली कोई त्रुटि या दोष। जैसे—छिद्रान्वेषण।

छिद्र-कर्ण—वि०[व० स०] जिसके कान छिदे या विधे हुए हो।

छिद्रदर्शी (र्शिन्)--पु०[छिद्र√दृश् (देखना)+णिनि] व्यक्ति, जो दूसरो के कार्यो मे त्रुटियाँ या दोष ही ढूँढता हो।

छिद्र-पिप्पली—स्त्री०[मध्य० स०] गजपिप्पली।

छिद्र-वैदेही—स्त्री०[मध्य० स०] गजपिप्पली।

छिद्रांतर्—पु०[सं० छिद्र-अतर् व० स०] १ सरकंडा। २ नरकुल।

छिद्रांश—पु० [स० छिद्र-अश व० स०] सरकडा।

छिद्रात्मा (त्मन्)--पु०[सं० छिद्र-आत्मन् व० स०] छिद्रान्वेषी।

छिद्रान्वेषण—पु० [स० छिद्र-अन्वेपण प० त०] किसी कार्य, वात या व्यक्ति मे से त्रुटियाँ या दोप ढूँढने का काम।

छिद्रान्वेषी (षिन्)--पु०[स० छिद्र-अनु√इप् (गति+णिनि] वह जो छिद्रान्वेषण करता हो। दूसरो के कार्यो मे से त्रुटियाँ या दोप खोजने-वाला।

छिन*—पुं०=क्षण।

छिनक—पु०[हिं० छिन+एक] एक क्षण।
क्रि० वि० क्षण भर। थोडी देर।

छिनकना—स०[हिं० छिडकना]नाक मे से इस प्रकार जोर से हवा निकालना कि उसमे रुका हुआ मल बाहर निकल पडे। सिनकना।

छिनकु—पु०, क्रि० वि०=छिनक।

छिनकुरना—अ०[हिं० छिनकु+करना] १ एक क्षण रुकना। २. रुकना। ३. विलब करना।

छिनछबि—वि०[हिं० छिन+छवि] जिसकी छवि क्षणिक या अस्थायी हो।
स्त्री० बिजली। विद्युत्।

छिनदा—स्त्री०[स० क्षणदा] रात।

छिनना—अ०[हिं० छीनना](किसी अधिकार, वस्तु आदि का किसी से) छीना जाना। जैसे—धन छिनना।

छिनभंग—वि०[स० क्षणभगुर]१. जो क्षण मे नष्ट हो जाने को हो। क्षणिक। २ नश्वर।

छिनरा†—वि०=छिनाल।

छिनवाना—स०[हिं० छीनना का प्रे० रूप] किसी को किसी दूसरे से कोई चीज छीनने मे प्रवृत्त करना। छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिनाना—अ०[हिं० छिनना] छीन लिया जाना।
स० छीनना।

छिनाल—वि०[स० छिन्ना] (स्त्री) जिसका सबध बहुत से पर-पुरुषो से हो।
स्त्री० पुश्चली। व्यभिचारिणी स्त्री।

छिनाला—पु०[हिं० छिनाल] पर-पुरुप या पर-स्त्री से होनेवाला अनुचित सबध या सहवास। व्यभिचार।

छिनौछबि*—स्त्री०[हिं० छिनछवि] बिजली।

छिन्न—वि०[स०√छिद् (छेदना)+क्त] १ (किसी वस्तु का वह अश) जो मूल वस्तु से कटकर अलग हुआ हो। २ (वस्तु) जिसमे का कोई अश या भाग काट लिया गया हो अथवा कट कर अलग हो गया हो। खडित। ३. जो किसी के साथ लगा हुआ न हो। किसी से अलग। ४ नष्ट किया हुआ। ५ क्षीण। ६ थका हुआ। क्लात।

छिन्नक—वि०[स० छिन्न+कन्] जिसका कुछ भाग कटकर अलग हो गया हो।
पु०ज्यामिति मे, किसी कोण या कोणाकार गढे हुए घन पदार्थ का वह बचा हुआ भाग जो उसका ऊपरी अश तल के समानान्तर धरातल पर से काट लेने के बाद बच रहे। (फ्रस्टम)

छिन्न-धान्य—वि०[ब० स०] (शत्रुओ द्वारा घिरी हुई वह सेना) जिसके पास धान्य न पहुँच सकता हो।

छिन्न-नास—वि०[ब० स०] जिसकी नाक कटी हुई हो। नकटा।

छिन्न-नासिक—वि०[ब० स०] कटी हुई नाकवाला। नकटा।

छिन्न-पत्री—स्त्री[ब० स०] पाठा।

छिन्न-पुष्प—पु०[ब० स०] पुन्नाग की जाति का वृक्ष। तिलक।

छिन्न-बधन—वि०[ब० स०] जिसके बधन खोल या काट दिये गये हो। मुक्त।

छिन्न-भिन्न—वि०[द्व० स०] १ (वस्तु) जिसके अग अथवा अश कट-फट या टूट-फूट कर इधर-उधर बिखर गये हों। २. तितर-बितर। बिखरा या छितराया हुआ।

छिन्न-मस्त (क)—वि०[ब० स०] जिसका सिर कट गया हो।

छिन्न-मस्तका—स्त्री०[ब० स०, टाप्] दस महाविद्याओ मे से एक देवी जिसके सबध मे कहा जाता है कि वह अपना सिर हथेली पर रखती है और गले मे से निकलती हुई रक्त धारा पीती है।

छिन्न-मस्ता—स्त्री०[ब० स०, टाप्]=छिन्न-मस्तका।

छिन्न-मूल—वि० [ब० स०] जो जड़ से उखाड या काट दिया गया हो।

छिन्न-रुह—पु०[छिन्न√रुह् (उगना)+क] तिलक नामक वृक्ष।

छिन्न-रुहा—स्त्री०[छिन्नरुह+टाप्] गुर्च। गुडुची।

छिन्न-वेशिका—स्त्री०[छिन्न-वेश ब० स०, कन्-टाप्, इत्व] पाठा।

छिन्न-व्रण—पु०[कर्म०स०] चोट, हथियार आदि से शरीर मे होनेवाला घाव।

छिन्न-श्वास—पु०[कर्म० स०] एक प्रकार का श्वास रोग।

छिन्नांत्र—पु०[स० छिन्न-अन्त्र ब० स] एक प्रकार का उदर रोग।

छिन्ना—स्त्री० [स० छिन्न+टाप्] १ गुर्च। २ व्याभिचारिणी स्त्री। छिनाल।

छिन्नाधार—वि०[छिन्न+आधार ब० स०] १ जिसका आधार कट या टूट चुका हो। उदा०—पात हत लतिका वह सुकुमार पडी है छिन्नाधार।—पत। २. निस्सहाय।

छिपकली—स्त्री०[स० क्षेप(=दुम) या रोमवान्] एक प्रसिद्ध चार पैरो और लबी दुमवाला सरी-सृप जो दीवारो तथा छतो पर रेंगता है और कीडे-मकोडे पकडकर खाता है।

छिपना—अ० [स० क्षिप्=डालना] १ दूसरो की दृष्टि से ओझल होने के लिए किसी आड़ के पीछे खड़े होना अथवा किसी गुप्त स्थान मे चले जाना। जैसे—चोर आलमारी के पीछे छिप गया था। २ किसी चीज का इस प्रकार ढका जाना कि वह दृश्य न रहे। जैसे—वस्त्र से अग छिपना, बादलो मे सूर्य छिपना। ३. किसी ऐसे स्थान या स्थिति मे होना कि दूसरो को जल्दी उसका पता न लग सके। जैसे—वे छिपे-छिपे चाले चलते है। ४ जो प्रकट या प्रत्यक्ष न हो। ५. अस्त होना। जैसे—दिन छिपना।

छिपाठी—स्त्री०[?] किनारे का भाग।

छिपाना—स०[हिं० छिपना] १ दूसरो की दृष्टि से बचाकर अथवा उनकी दृष्टि से बचाने के लिए किसी (जीव या वस्तु) को आड या गुप्त स्थान मे रखना। जैसे—यह चित्र मैने सदूक मे छिपा दिया था। २ किसी वस्तु या शरीर के किसी अग को वस्त्र आदि से ढांकना। ३ किसी बात की किसी को जानकारी न कराना अथवा न होने देना। जैसे—भेद छिपाना।

छिपाव—पु०[हिं० छिपाना] छिपने या छिपाने की क्रिया या भाव। दुराव।

छिपिया—पु० [?] दर्जी। उदा०—अँगिया जो उघड़ी हरेलाल की छिपिया को नइआँ।
पु०=छीपी।
स्त्री०[हिं० छीपा] छोटा छीपा या डलिया।

छिपी—पु०=छीपी।

छिपे-छिपे--क्रि० वि०[हि० छिपना] इस प्रकार गुप्त रूप से कि दूसरों को पता न चले।
छिप्र--क्रि० वि०=क्षिप्र।
छिमता†--स्त्री०=क्षमता।
स्त्री०=क्षमा।
छियना--अ०[हि० छीजना] क्षीण होना। उदा०--काम दग मद श्रवण छिया है।--निराला।
छिया--स्त्री०[हि० छी] गुह। मल।
मुहा०--छिया छरद करना=गुह और वमन की तरह घृणित समझकर दूर हटाना। उदा०--जो छिया छरद करि सकल संतति तजी तासों मैं मूढ़-मति प्रीति ठानी।--सूर।
†स्त्री०[?] युवती।
छियाज--पु०[हि० ब्याज का अनु०] ब्याज की रकम पर भी जोड़ा जाने वाला ब्याज। कटुआँ ब्याज।
छियानबे--वि०[स० षण्णवति] जो गिनती मे नब्बे से छ. अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक संख्या--९६।
छियालीस--वि०[स० षट्चत्वारिंशत्; प्रा० छायालीसम्] जो गिनती मे चालीस से छ अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक संख्या--४६।
छियासठ--वि०[स० षट्षष्टि, प्रा० छसठि, छवठ्ठिम्] जो साठ से छ. अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक संख्या--६६।
छियासी--वि०[स० षड शीति, या छडसीति, प्रा० छडसीईअँ] जो संख्या मे अस्सी से छ अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक संख्या--८६।
छिरकना†--स०=छिड़कना।
छिरना*--अ०=छिलना।
*अ०=छिड़ना।
*स० =छीलना।
छिरिआना--अ० दे० 'छिटकना'। उदा०--उपसल केस कुसुम छिरिआयल।--विद्यापति।
छिलक--पु०[स० तिलक] तिलक नामक वृक्ष।
छिलकना†--स०=छिटकना।
छिलका--पु०[स० छिल्लक] वह आवरण जिसके अन्तर्गत फल का सार भाग रहता है। फल की त्वचा। जैसे--केले या सेब का छिलका।
छिलन--स्त्री०[हि० छिलना] १. छिलने या छीलने की क्रिया या भाव। २ शरीर के किसी अग की त्वचा रगड़ आदि के कारण छिल जाने से होनेवाला घाव।
छिलना--अ०[हि० छीलना] १ फलों आदि का छिलका उतारा जाना। २ वृक्ष आदि की छाल उतारी जाना। ३ पशु आदि की खाल मांसल भाग पर से उतारी जाना। ४. शरीर के किसी अग मे रगड़ लगने से त्वचा का उतर जाना।
छिलवाना--स०[हि० छीलना का प्रे० रूप] छीलने का काम दूसरे से कराना।
छिलाई--स्त्री०[हि० छीलना] छिलने या छीलने की क्रिया या भाव। छीलने की मजदूरी।
छिलाना--स० [हि० छीलना का प्रे०] छीलने का काम दूसरे से कराना।
†अ०=छिलना।
छिलड़†--पु०=छिलका।
छींक--स्त्री०[स० छिक्का] १ शरीर का एक प्राकृतिक व्यापार जिसमें श्वास की वायु अकस्मात् नाक और गले से एक साथ ही एक विशिष्ट प्रकार का शब्द करती हुई निकलती है। २ उक्त शारीरिक व्यापार से होनेवाला शब्द।
छींकना--अ०[हि० छींक] सहसा जोर से नाक और मुँह में से इस प्रकार साँस फेंकना कि जोर का शब्द हो।
छींका--पु०[स० शिक्य, प्रा० सिक्का] १. दीवार की खूँटी अथवा छत मे की कड़ी मे टाँगा या लटकाया जानेवाला तारों या रस्सियों का वह उपकरण जिसमे खाने, पीने आदि की रखी हुई वस्तुएँ चूहों, बिल्लियों, बच्चों आदि से सुरक्षित रहती हैं।
मुहा०--बिल्ली के भाग से छींका टूटना=संयोग से कोई अभीष्ट या वांछित घटना घटित होना।
२ बैलों के मुँह पर बाँधी जानेवाली रस्सियों की जाली। ३ झूला। (क्व०)
छींट--स्त्री०[स० क्षिप्त, हि० छींटना] १ पानी अथवा किसी द्रव पदार्थ का किसी तल से टकराने पर उछलनेवाला छोटा जल-कण या बूँद। २. किसी वस्तु, वस्त्र, शरीर आदि पर उक्त जल-कण या बूँद पड़ने से होनेवाला दाग या धब्बा। ३. एक प्रकार का वह कपड़ा जिस पर छापकर बेल-बूटे या फूल पत्तियाँ बनाई गई हों। ४ चित्र कला मे, चित्रों मे बनाये जानेवाले बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ।
छींटना--स०=छितराना।
स०=छिड़कना।
छींटा--पु०[सक्षिप्त हि० छींटना] १ झटके से उछली या उछाली हुई जल अथवा द्रव पदार्थ की बूँदें। जैसे--(क) मुँह पर पानी का छींटा देना। (ख) कीचड़ मे पत्थर फेंकने से छींटे उड़ना। २ उक्त बूँदों के वस्त्र आदि पर पड़ने से होनेवाला धब्बा। ३. हलकी वृष्टि। ४. मुट्ठी मे बीज भरकर एक बार मे खेत में बिखेरने की प्रक्रिया। ५ बोआई का वह ढंग जिसमे बीज खेत मे छींटे जाते हैं। ६. चंडू या मदक की एक मात्रा। दम। ७ किसी को खिन्न या लज्जित करने के लिए कही जानेवाली चुभती हुई व्यंग्यपूर्ण बात।
छींबी--स्त्री० [स० शिम्बी] १. पौधे की फली जिसमें बीज रहते हैं। २ मटर की फली। ३. पशुओं विशेषत गाय, बकरी, भैंस आदि के थन में का फली के आकार का वह अंग जो नीचे लटकता रहता है और जिसे खींच तथा दबाकर दूध निकाला जाता है।
छी--अव्य०[अनु०] घृणा, तिरस्कार, धिक्कार, आदि का सूचक एक अव्यय।
मुहा०--छी छी करना=घृणा करना।
स्त्री०[अनु०] छिया। गूह।
छीअना*--स०=छूना।
छीआ--स्त्री०=छिया।

छीआ-छीआ—वि० [अनु०] छिन्न-भिन्न।
छीका—पुं०=छींका।
छीछ—वि०[सं० क्षीण] क्षीण। दुर्बल। उदा०—लाज की आंचनि या चित पावन नाच नचाई हौं नेह न छीछै।—देव।
छीछड़ा—पुं०[सं० तुच्छ, प्रा०, तुच्छ] १. कटे हुए मांस का रद्दी टुकड़ा। २ पशुओं की अंतड़ी का वह भाग जिसमें मल भरा होता है।
छीछना—अ० [सं० क्षीण] क्षीण होना।
छीछर†—वि०=छिछला।
छीछा—वि०[स्त्री० छी छी]=छिछला।
छीछालेदर—स्त्री०[हि० छीछी] बुरी तरह से की हुई दुर्गति।
छीज—स्त्री०[हि० छीजना] १. किसी वस्तु में का वह अंश जो नष्ट हो गया हो। २. कमी। घाटा। हानि।
छीजना—अ०[सं० क्षीण] १. उपयोग, व्यवहार आदि में आते रहने अथवा पुराने पड़ने के कारण किसी चीज का क्षीण होना या घिस जाना। २.उपयोग में आ जाने अथवा व्यय हो जाने के कारण किसी चीज का कम होना। ३. हानि होना। उदा०—लंकापति-तिय कहति पिया या मैं कछू न छीजौ।—सूर। ४. नष्ट होना।
छीट†—स्त्री०=छींट।
छीटा†—पुं० [सं० क्षिप्त, हि० छींटा] [स्त्री० अल्पा० छिटनी] १. बांस की फमाचियों या किसी अन्य वृक्ष की पतली टहनियों का बना हुआ टोकरा। २. चिलमन। चिक।
छीड़—स्त्री० [सं० क्षीण] मनुष्यों के जमघट का अभाव। 'भीड़' का विपर्याय।
छीण—वि० [सं० क्षीण] क्षीण। दुर्बल।
वि०[सं० छिन्न, प्रा० छिण्ण] टूटा हुआ। उदा०—छीणं जाणि छछोहा छूटा।—प्रिथीराज।
छीत (ति)†—स्त्री०[ब्रज० छीना=छूना] १ छूने या स्पर्श करने की क्रिया या भाव। २. संपर्क। लगाव। उदा०—सो कह सूर जेहि भांति रहै पति जनि बल बाँधि बढ़ावहु छीति।—सूर।
†स्त्री०=छीज।
छीदा—वि०[सं० क्षीण] जो घना या सघन न हो। उदा०—मांहिलो मोड़लो छीदा हाट।—नरपतिनाल्ह।
वि०[सं० छिद्र] जिसमें बहुत से छेद हों।
छीन*—वि०=क्षीण।
छीन-झपट—स्त्री०[हि० छीनना+झपटना] किसी से अथवा आपस में एक दूसरे से कुछ छीनने के लिए झपटने की क्रिया या भाव।
छीनना—स०[सं० छिन्न, प्रा० छिण्ण; बं० छिना; सिं० छिनो, छिनणु; गु० छिनवूं, मराठी छिन (णें)] १. छिन्न करना। काटकर अलग करना। २. किसी के हाथ से कोई वस्तु बलात् ले लेना। ३. अनुचित रूप से किसी की वस्तु अपने अधिकार में कर लेना। ४. किसी को दिया हुआ अधिकार, सुविधा आदि वापस ले लेना। ५ दे० 'रहना'।
छीना†—स०=छूना। (ब्रज)
छीना-खसोटी—स्त्री०=छीन-झपट।
छीना-छीनी—स्त्री०=छीन-झपट।
छीना-झपटी—स्त्री०=छीन-झपट।
छीप*—स्त्री०[हि० छाप] १. मुद्रण का चिह्न। छाप। २ चिह्न। ३. दाग। ४. एक प्रकार का चर्म रोग।
वि०[सं० क्षिप्र] तेज। वेगवान्।
छीपा—पुं०[?] [स्त्री० अल्पा० छीपी] १. बाँस आदि की कमाचियों का टोकरा। २. थाली।
छीपी—पुं०[हि० छापा] [स्त्री० छीपनी, छीपिनी] १. वह व्यक्ति जो कपड़ों पर बेल-बूटे आदि छापने का काम करता हो। २ दरजी। (बुंदेल०)
छीबर—स्त्री०[सं० चीवर] १. छींट नामक कपड़ा। २ एक प्रकार की चुनरी। उदा०—हा हा हमारी सौं साँची कहौ वह कौन हौ छोहरी छीबर वारी।—देव।
छीमर†—स्त्री०=छीबर।
छीमी—स्त्री०=छीबी।
छीया—पुं०[अनु० छी] गूह। विष्ठा।
छीर—पुं०=क्षीर।
पुं०[सं० चीर] १. दे० 'चीर'। २. कपड़े की लम्बाईवाले सिरे का किनारा। ३. उक्त किनारे पर की पट्टी या धारी।
छीरज—पुं०[सं० क्षीरज] १ चन्द्रमा। २. दही।
छीरधि—पुं०=क्षीरधि (समुद्र)।
छीरप—पुं०[सं० क्षीरप] दूध-पीता बच्चा। शिशु।
वि० दूध पीनेवाला।
छीर-फेन—पुं०[सं० क्षीर(=दूध)+फेन] दूध पर की मलाई।
छीर-सागर—पुं०=क्षीर-सागर।
छीलक*—पुं०=छिलका।
छीलन—स्त्री०[हि० छीलना] १. छीलने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु के वे छोटे टुकड़े जो उसे छीलने पर निकलते हैं। (शेविंग्स)
छीलना—स०[प्रा० छोल्लइ, पुं० हि० छोलना] १ किसी चीज के ऊपर जमा या सटा हुआ आवरण, तह या परत खींचकर उससे अलग करना। जैसे—(क) फल के ऊपर का छिलका छीलना। (ख) पेड़ पर की छाल छीलना ।(ग) प्याज छीलना। २ उगी या जमी हुई चीज को काट, खुरच या नोचकर निकालना या हटाना। जैसे—(क) घास छीलना। (ख) भुथरे उस्तरे से दाढ़ी छीलना। (ग) रंदे से लकड़ी छीलना।
छीलर—पुं०[हि० छिछला] पानी से भरा हुआ छोटा गड्ढा।
वि० छिछला।
छीव*—पुं०=क्षीव।
छीवना*—स०=छीना(छूना)।
छीवर†—स्त्री०=छीवर।
छुंगनी†—स्त्री०=छँगुली।
छुंगली*—स्त्री०=छँगुली।
छुआई—स्त्री०[हि० छूना] छूने या छुआने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। जैसे—मकान की चूना छुआई।
छुआना†—स०=छुलाना ।
छुई-मुई—स्त्री०=छुई-मुई (पौधा)।

छुगनूँ†--पु०=घुँघरू।
छुच्छा--वि०[स्त्री० छुच्छी]=छूँछा।
छुच्छी--स्त्री०[हि० छूछा] १. कोई छोटी नली। जैसे--दीये मे की छुच्छी, जिसके अदर कपडे की बत्ती रहती है। २ कान या नाक मे पहनने के फूल या लौंग का वह पूरक अश जो बहुत छोटी पतली नली के रूप मे होता है और जिसमे फूल या लौंग के नीचे की कील घुमा या धँसाकर जमाई या बैठाई जाती है। ३ कीप, जिसकी सहायता से बोतलो मे तेल डाला जाता है।
छुच्छू--वि०[हि० छूछा] १ मूर्ख। २. तुच्छ।
छुछमछली--स्त्री०[स० सूक्ष्म, पु० हि० छूछम+मछली] मेढक आदि कई छोटे जल-जतुओ के बच्चो का वह आरभिक रूप जो बहुत-कुछ लबी पूँछवाले कीडे अथवा मछली के बच्चे जैसा होता है। (टैडपोल)
छुछहँड़--स्त्री० [हि० छूछा+हाडी] १ वह हाँडी जिसमे से पकाई हुई खाद्य वस्तु निकाल ली गई हो। २ खाली हाँडी।
छुछूँदर--स्त्री०=छछूँदर।
छुट--अव्य०[हि० छूटना] छोडकर। अतिरिक्त। सिवा। जैसे--जिसमे हिंदी छुट ओर किसी बोली का पुट न हो।--इशाउल्ला खाँ।
प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ यौगिक शब्दो के अत मे लगकर अनियत्रित आचरण करनेवाले का सूचक होता है। जैसे--बत-छुट, हथ-छुट आदि करनेवाला वि०हि० छोटा का लघु रूप जो उसे यौगिक शब्दो मे प्राप्त होता है। जैसे--छुट-भैया।
छुटकना†--अ०=छूटना (छोडा जाना)।
छुटकाना*--स०=छुडाना
छुटकारा--पु०[हि० छूटना] १ छूटने अथवा छुडाये जाने अर्थात् मुक्त होने या मुक्त किये या कराये जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। मुक्ति। जैसे--कारागार से छुटकारा पाना या मिलना। २. किसी प्रकार की विपत्ति, सकट आदि से सकुशल बच निकलने का भाव। जैसे--कष्टो से छुटकारा पाना या मिलना।
छुटना†--अ०=छूटना।
छुटपन--पु०[हि० छोटा+पन] १ छोटे होने की अवस्था या भाव। छोटाई। २ बचपन। लडकपन।
छुट-फुट--वि०[हि० छूटा+फूटा] १. मूल अग से कटकर छोटे-छोटे टुकडो के रूप मे इधर-उधर फैला हुआ। २ जो थोडा-थोड़ा करके कभी कही और कभी कही घटित हो। चुट-फुट। (स्पोरडिक) जैसे-छुट-फुट मुठभेड, छुट-फुट वर्षा आदि।
छुटभैया--पु०[हि० छोटा+भैया] व्यक्ति जिसकी गिनती बडे आदमियो मे न होकर छोटे या साधारण आदमियो मे होती हो। बडो की तुलना मे अपेक्षया निम्न स्थिति का व्यक्ति।
छुटलना*--अ०=छूटना।
छुटाना†--स०=छुडाना।
छुटौती--स्त्री०=छूट।
छुट्टा--वि०[हि० छूटना] [स्त्री० छुट्टी] १ (वह) जो बधन से मुक्त होकर स्वतत्रतापूर्वक विचरण कर रहा हो। २ (जतु या जीव) जो अपने दल, वर्ग से निकल कर अलग हो गया हो। जैसे--छुट्टा कबूतर, छुट्टा बन्दर। ३ एकाकी। अकेला। ४ फुटकर।
पु० छोटे सिक्के। रेजगारी।
छुट्टी--स्त्री०[हि० छूटना] १ छूटने या छोडे जाने की क्रिया या भाव। छुटकारा। जैसे--चलो, इस काम से भी छुट्टी मिली। २. कोई काम कर चुकने के उपरान्त अथवा कुछ निश्चित समय तक काम करने के उपरान्त मिलनेवाला अवकाश। जैसे--भोजन करने के लिए दस मिनट की छुट्टी मिलती है। ३ वह दिन जिसमे नियमित रूप से लोग काम पर उपस्थित नही होते। जैसे--होली की दो दिन की छुट्टी मिलती है। ४ वह दिन जिसमे काम पर से अनुपस्थित रहने की स्वीकृति मिल गई हो। जैसे--विवाह मे चलने के लिए दो दिन की छुट्टी लेनी पडेगी। ५ कही से चलने या जाने की अथवा इसी प्रकार के और किसी काम की अनुमति या आज्ञा।
छुड़ाई--स्त्री०[हि० छोडना] छोडने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
स्त्री०[हि० छुडाना] छुडाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
छुड़ाना--स०[हि० छोडना] १. बधन, बाधा आदि से मुक्त कराना। उन्मुक्त या स्वतत्र कराना। जैसे--जेल से कैदी छुडाना। २ जकड, पकड आदि से अलग या रहित करना। जैसे--पल्ला या हाथ छुडाना। ३ डोरे, रस्सी आदि मे का उलझाव दूर करना। जैसे--गाँठ छुडाना। ४ देन चुकाकर अथवा और किसी प्रकार से अपनी वस्तु वापस लेना। जैसे--(क) ऋण चुकाकर धरोहर छुडाना। (ख) दड भरकर काजी हौज से गाय छुडाना। ५. किसी को सेवा से अलग करना। नौकरी से हटाना। ६ किसी के साथ चिपकी, सटी या लगी हुई वस्तु अथवा उसका कोई अश अलग करना। जैसे--(क) लिफाफे पर से टिकट छुडाना। (ख) कपडे पर का दाग या धब्बा छुडाना। ७ (देय धन मे) कुछ कमी कराना। जैसे--सौ रुपयो मे से दस रुपए तो तुमने छुडा ही लिये। ८ किसी प्रकार की क्रिया, प्रवृत्ति आदि से रक्षित या रहित करना। जैसे--(क) बालक की पढाई छुडाना। (ख) किसी का अभ्यास या आदत छुडाना। (ग) हाथा-बाही करने वाले लोगो को छुडाना।
स०=छुड़वाना। जैसे--आतिशबाजी छुडाना।
छुड़ैया--वि०[हि० छुडाना+ऐया (प्रत्य०)] बधन से छुड़ाने या मुक्त करानेवाला।
स्त्री० १ छोडने की क्रिया या भाव। २. गुड्डी उडानेवाले की सहायता के लिए उसकी गुड्डी को कुछ दूर ले जाकर इस प्रकार उसे हवा मे छोडना कि उडानेवाला उसे सहज मे उडा सके।
क्रि० प्र०--देना।
छुतहा--वि०[हि०छूत+हा (प्रत्य०)] १ (रोग) जो छूत से फैलता या बढता हो। छूतवाला। सक्रामक। २. जो किसी प्रकार की छूत लगने के कारण अस्पृश्य हो गया हो। ३ जिसे किसी कारण से छूना निषिद्ध हो।
छुतिहर†--वि०=छुतहा।
छुतिहा--वि०=छुतहा।
छुद्र--*वि०=क्षुद्र।
छुद्रघंटिका--स्त्री०=क्षुद्रघटिका।
छुद्रावली--स्त्री०=क्षुद्रघटिका।
छुधा†--स्त्री०=क्षुधा।

किसी की दूकान या कोई बाजार पीछे छूटना। ११ किसी यान आदि का गतव्य स्थान के लिए चल पडना। प्रस्थान या यात्रा आरंभ करना। जैसे—गाडी या जहाज छूटना। १२ अनुसधान करने या टोह लेने के लिए किसी के पीछे लगना या लगाया जाना। जैसे—उनके पीछे जासूस छूटे है। १३ शारीरिक विकार का दूर होना अथवा न रह जाना। जैसे—खाँसी या बुखार छूटना। १४. कुछ विशिष्ट मानसिक या शारीरिक क्रियाओ के सबध मे; अस्तित्व, गति, व्यवहार व्यापार आदि से रहित होना। जैसे—(क) रोगी की नाडी या प्राण छूटना। (ख) भय या साहस छूटना। (ग) अभ्यास या आदत छूटना। १५. काम-धधे से अलग किया जाना या होना। जैसे—नौकरी या रोजगार छूटना। १६ कष्ट, विपत्ति, बाधा, विघ्न आदि से मुक्त या रहित होना। जैसे—(क) झगडे-बखेडे या मुकदमेबाजी से जान छूटना। १७ औचित्य, मर्यादा आदि का इस प्रकार अतिक्रमण या उल्लघन होना कि उसके फल-स्वरूप कोई अनुचित या निन्दनीय कार्य या व्यापार घटित हो। जैसे—(क) बात-चीत करने मे जबान छूटना। (ख) क्रोध मे किसी पर हाथ छूटना। १८. कथन, लेख आदि के प्रसग मे, आवश्यक या उपयुक्त पद, वाक्य या विषय यथा-स्थान आने से रह जाना। जैसे—(क) भाषण मे कोई प्रसग छूटना। (ख) प्रतिलिपि करने मे अक्षर, पद या वाक्य छूटना। १९ किसी चीज का भूल से कही रह जाना या न लाया जाना। जैसे—न जाने मेरा छाता कहाँ छूट गया है। २० उपयोग, व्यवहार आदि मे आने से बचा या रह जाना। जैसे—(क) थाली मे जूठन छूटना (ख)। प्रश्न-पत्र मे का कोई प्रश्न छूटना। २१ नियम, व्रत आदि का भग होना। जैसे—रोजा छूटना। २२ सयोग के लिए नर का मादा की ओर प्रवृत्त होना या उस पर आसन जमाना। जैसे—घोडी पर घोडा छूटना।

छूटा—स्त्री० [हिं० छूटना] एक प्रकार की बरछी।
वि०=छुट्टा।

छूत—स्त्री० [स० युप्ति, प्रा० छुट्टि] १ छूने की क्रिया या भाव।
मुहा०—छूत छुडाना=पीछा छुडाने या नाम-मात्र के लिए यो ही अवज्ञापूर्वक कोई काम करना।
२. ऐसा निषिद्ध ससर्ग जिससे रोग आदि का सचार होता हो। ३. गदी अथवा घृणित वस्तु का ससर्ग। ४. धार्मिक क्षेत्र मे अपवित्र होने अथवा अपवित्र वस्तु छूने पर लगनेवाला दोष। ५ यह धारणा कि अमुक वस्तु या व्यक्ति छूने अथवा उससे छुए जाने पर हम अपवित्र हो जायँगे। ६ व्यक्ति पर पडनेवाली भूत-प्रेत आदि की छाया या उससे होनेवाली बाधा।
मुहा०—छूत झाड़ना=प्रेत बाधा दूर करना।

छूत-छात—स्त्री० [हिं० छूत+अनु० छात] स्पृश्य और अस्पृश्य का भाव। छुआछूत।

छूना—स० [स० चुपति, प्रा० छुवइ] १ उँगलियो या हाथ से किसी वस्तु या व्यक्ति को अथवा उसके तल का कोई अश स्पर्श करना।
मुहा०—आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना।
२ शरीर के किसी अग का अथवा पहने हुए किसी वस्त्र का किसी से लगना या स्पर्श करना। जैसे—तुम्हे चमार ने छू दिया है। ३ दान के लिए कोई वस्तु स्पर्श करना। जैसे—चावल छूकर भिखमगे को बाँटना। ४. ऐसा काम करना जिससे किसी चीज मे गति उत्पन्न हो। जैसे—हृदय के तार छूना। ५ किसी विषय के सबध मे कुछ कहना या लिखना। जैसे—इस विषय को भी उन्होने छुआ है। ६ लीपना। पोतना। जैसे—कमरा छूना।

छेंक—स्त्री० [हिं० छेकना] १. छेंकने की क्रिया या भाव। २. रोक।
†पु०=छेद।

छेंकन—स्त्री० [हिं० छेकना] १ छेकने की क्रिया या भाव। २ वास्तु-कला मे, मकान आदि बनाने से पहले उसके भूमि-तल के सबध मे यह निश्चय या स्थिर करना कि आँगन, कोठरियाँ, बैठक, रसोई आदि विभाग कहाँ-कहाँ रहेगे। जैसे—इस मकान की छेंकन बहुत अच्छी हुई है।

छेंकना—स० [हिं० छद] १ स्थान घेरना। २ विभाग आदि करने के लिए लकीरो से अवकाश घेरना। ३ जानेवाले के सामने खडे होकर उसे जाने से रोकना। ४ किसी का मार्ग अवरुद्ध करना। मिटाना। ५ किसी के नाम लिखी हुई चीज या रकम लौट आने पर काट कर रद्द करना।

छेक†—पु०=छेद। (पश्चिम)
पु० [स०√छो (काटना)+डेकन्] १. पालतू पशु-पक्षी। २. शब्दालकार का एक भेद। छेकानुप्रास।
वि० १ पालतू। २ नागरिक।

छेकानुप्रास—पु० [स० छेक-अनुप्रास कर्म० स०] कवित्त मे एक प्रकार का अनुप्रास जिसमे एक ही चरण मे दो या अधिक वर्णों की आवृत्ति कुछ अन्तर पर होती है।

छेकापह्नुति—स्त्री० [स० छेक-अपह्नुति प० त० ?] साहित्य मे अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे किसी से कही जानेवाली कोई भेद की बात किसी तीसरे या अनभीष्ट व्यक्ति के सुन लेने पर कोई दूसरी बात बनाकर वह भेद छिपाने का उल्लेख होता है। 'कह मुकरी' या मुकरी मे यही अलकार होता है।

छेकोक्ति—स्त्री० [स० छेक-उक्ति प० त०] साहित्य मे एक अलकार जिसमे कोई बात सिद्ध करने के लिए उसके साथ किसी लोकोक्ति या कहावत का भी उल्लेख किया जाता है।

छेड़—स्त्री० [हिं० छेडना] १. छेडने की क्रिया या भाव। २. ऐसा शब्द, पद या बात जिसके कहने से कोई चिढ जाता हो। चिढानेवाली बात। ३ दे० 'चिढौनी'। ४ झगडा। ५ किसी कार्य का आरभ या श्री गणेश। ६ अपनी ओर से कोई ऐसी बात आरभ करना कि उसका उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर आता हो। पहल। उदा०—हम तो चुपचाप बैठे थे, छेड तो तुम्ही ने की।
मुहा०—छेड़ निकालना=उक्त प्रकार से कोई ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लड़ाई-झगडा या वैर-विरोध खडा हो सकता हो।

छेड़खानी—स्त्री०=छेड-छाड।

छेड़छाड़—स्त्री० [हिं० छेडना+अनु०] १ किसी को तग करने के लिए छेडने की क्रिया या भाव। २ अनुचित रूप से किसी के प्रति आरभ किया जानेवाला व्यवहार।

छेड़ना—स० [स० छिदन या हिं० छेड] १ इस प्रकार छूना या स्पर्श

करना कि उसके फल-स्वरूप कोई क्रिया या व्यापार घटित हो। जैसे--वीन या सितार के तार छेडना। २ जीव-जन्तुओ आदि को इस प्रकार स्पर्श करना या उन्हे तग करना जिससे वे क्षुब्ध होकर आक्रमण कर सकते हो। जैसे--कुत्ते, साँड या साँप को छेडना। ३. व्यक्ति को चिढाने या तग करने के लिए हँसी-ठट्ठे के रूप मे कोई ऐसी बात कहना अथवा कोई ऐसा काम करना जिससे वह चिढ या दु खी होकर प्रतिकार कर सकता हो। जैसे—पागल, बच्चे या स्त्री को छेडना। ४. किसी को तग करने के लिए उसके काम मे अडगा लगाना या बाधा खड़ी करना। ५ किसी चीज को अकारण या व्यर्थ मे छूना जिससे उसमे विकार उत्पन्न हो सकता हो। जैसे—घाव या उसमे बँधी पट्टी को छेडना। ६ किसी को कोई ऐसी बात (छेड) बार-बार कहना जिससे कोई चिढता हो। जैसे—उसे सब बुड्ढे मियाँ कह कर छेड़ते हैं। ७. कोई कार्य या बात आरभ करना। जैसे—मकान की मरम्मत छेडना। ८ सगीत मे गीत, वाद्य आदि कलापूर्ण ढग से आरभ करना। ९. चिकित्सा के क्षेत्र मे, फोडा बहाने के लिए नश्तर से उसका मुँह खोलना।

†स०=छेतना (छेदना)।

छेड़वाना--स०[हिं० छेडना का प्रे० रूप]छेडने का काम दूसरे से करवाना।

छेड़ी—=स्त्री० [?] छोटी और तंग गली। (बुदेल०)

स्त्री०=छेरी (बकरी)।

छेत*—पु० [स० छेद] १ अलग होने की क्रिया या भाव। पार्थक्य। २ वियोग। ३ छेद।

छेतना† स०=छेदना।

स० [?] १. ठोक-पीटकर कोई चीज तैयार करना या बनाना। जैसे—चाँदी की गुल्ली से कडा छेतना। २ अच्छी तरह मारना-पीटना या प्रहार करना। जैसे—किसी का मुँह छेतना।

छेति*—स्त्री० [स० छेदन] बाधा।

छेत्ता (तृ)—वि० [स०√छिद् (काटना)+तृच्] छेद करने या छेदनेवाला।

छेत्र--पु० १ =क्षेत्र। २ =सत्र (अन्नसत्र)।

छेद—पु० [स०√छिद्+घञ्] १ काटने, छेदने या विभक्त करने की क्रिया या भाव। जैसे—उच्छेद, विच्छेद। २ बकरे आदि मारने की 'झटका' नाम की क्रिया। उदा०--कतहूँ मिस मिल कतहूँ छेद।—कबीर। ३. विनाश। बरबादी।

पुं० [सं० छिद्र] १ किसी वस्तु मे का दोनो का दोनो ओर से खुला हुआ छोटा अश। छिद्र। सुराख। जैसे—चलनी मे का छेद, कपडे मे का छेद। २ किसी घन या ठोस वस्तु मे का वह गहरा स्थान जिसमे से उस वस्तु का कुछ अश निकाल लिया गया हो। जैसे--जमीन या दीवार मे का छेद। ३ विवर। बिल। ४. दोष। दूषण।

छेदक—वि० [स० छिद्+ण्वुल्—अक] छेदनेवाला।

छेदन—पु० [स०√छिद्+ल्युट्—अन] छेदने की क्रिया या भाव।

छेदनहार—वि० [हिं० छेदना+हार (प्रत्य०)] १ छेदनेवाला। २. काटनेवाला। ३ नष्ट करने या मिटानेवाला।

छेदना—स० [स० छेदन] १ किसी तल मे नुकीली वस्तु धँसाकर उसमे छेद या सुराख करना। २ शरीर मे क्षत या घाव करना। जैसे—तीरो से किसी का शरीर छेदना। ३. छिन्न करना। काटना।

छेदनीय—वि० [स०√छिद्+अनीयर्] जिसका छेदन हो सकता हो या किया जाने को हो।

छेदि—वि०[स० छिद्+इनि]छेद करनेवाला।

पु० बढई।

छेदिका—स्त्री० [सं० छेदक+टाप् ह्रस्व] १. छेदन करनेवाली चीज या रेखा। २. ज्यामिति मे वह रेखा जो किसी वक्र रेखा को दो या अधिक भागो मे काटती हो। (सिकैन्ट)

छेदित—भू० कृ० [स० छेद+इतच्] १ जिसमे छेद किया गया हो। छेदा हुआ। २. कटा या काटा हुआ।

छेना--पु० [सं० छिन्न] फटे या फाडे हुए दूध का वह गाढा अश जो उसका पानी निकाल देने पर बच रहता है।

छेनी--स्त्री० [हिं० छेदना] धातु, पत्थर आदि काटने का चौडे फलवाला एक प्रसिद्ध उपकरण। टाँकी।

छेम*--पु०=क्षेम।

छेमकरी*--स्त्री०[सं० क्षेमकरी] सफेद चील।

छेर†--स्त्री०=छेरी (बकरी)।

छेरना†—अ० [सं० क्षरण] बार-बार पतला मल त्याग करना।

*स०=छेड़ना।

छेरवा--पुं०=छुहारा।

छेरा--पुं० [हिं० छेरना] पतला मल। पतला दस्त।

†पु० [स्त्री० छेरी] १. बच्चा। २ बकरा।

छेरी—स्त्री० [सं० छेलिका] बकरी।

छेलक--पु० [सं०√छो (काटना)+डेलकन्] बकरा।

छेलरा--पु०=छैला।

छेव--पु० [स० क्षेप] १ किसी वस्तु के तल का कुछ अंश काटने या छीलने की क्रिया या भाव। २. कुछ विशिष्ट वृक्षो का रस निकालने के लिए उनके तने का कुछ अश काटने या छीलने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०— लगाना।

३ प्रहार। वार। ४. चोट। घाव। ५ नाश। ६. मृत्यु। ७ विपत्ति। सकट। ८. कपटपूर्ण व्यवहार।

छेवना—स० [हिं० छेव] १. किसी चीज में छेव लगाना। २. आघात, प्रहार या वार करना। ३. चोट पहुँचाना। ४. कष्ट आदि झेलना या सहना। जैसे—अपने जी पर छेवना (अर्थात् मन ही मन कष्ट सहना या दु खी होना।) उदा०—जो अस कोई जिय पर छेवा।—जायसी। ५. फेंकना।

स्त्री० ताडी, जो ताड के वृक्ष मे छेव लगाकर निकाली जाती है।

स० [हिं० छेदना] १ काटना। २. चिह्न लगाना।

छेवला--पु० [?] पलाश का वृक्ष। (बुदेल०)

छेवा—पु० [हिं० छेव] १. छीलने, काटने आदि का काम। २ काटने, छीलने आदि से पडा हुआ निशान। ३. महाजनी बहीखाते मे वह चिह्न जो कही से लौटी हुई चीज या रकम के लेख पर यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि अब वह प्राप्य नही रह गई। ४. पानी का तेज बहाव। (मल्लाह)

†पु०=छेद।

छेह*—पु० [हिं० छेव] १. दे० 'छेव'। २. ध्वंस। नाश। ३. वियोग। विच्छेद। ४. परम्परा का भंग। ५ अत। समाप्ति।

वि० १ खंडित। २ न्यून।

*स्त्री०=खेद।

छेहर†—स्त्री०=छाया।

छेहरा—पु०=छेह।

छैं†—वि०=छ।

*पु०=क्षय।

छैदिक—पु० [स० छेद+ठञ्–इक] वेत।

छैना—अ० [स० क्षय] १. क्षय होना। २. क्षीण होना।

स० १ नष्ट करना। २ क्षीण करना।

पु० [छन छन से अनु०] छोटी झांझ (वाजा)।

छैया—पु० [हिं० छवना] वच्चा।

वि० [हिं० छाना] छानेवाला।

छैल—स्त्री० [हिं० छैलाना] छैलने या छैलाने की क्रिया या भाव। लडको की-सी मचल या हठ।

*पु०=छैला।

छैलचिकनिया—पु०=छैला।

छैल छबीला—पुं०=छैला।

छैलना*—अ०=छैलाना।

छैला—पु० [स० छविल्ल, प्रा० छइल्ल] वहुत वन-ठनकर रहनेवाला नवयुवक।

छैलाना—अ० [हिं० छैला] लडकों का कोई काम करने या कोई चीज पाने के लिए मचलना और हठ करना। उदा०—कोउ छेकत छैलात देखि कहुँ मजु खिलौना।—रत्नाकर।

स० किसी को छैलाने या हठ करने मे प्रवृत्त करना।

छोंच†—पुं०=शौच।

छोंड़ा*—पु० [स० क्वे] [स्त्री० अल्पा० छोंड़ी] मयानी।

छोआ†—पु० दे० 'खोई'।

छोई†—स्त्री० [स० क्षोद] १ दे० 'खोई'। २ निस्सार वस्तु। रद्दी चीज। उदा०—आन व्रतै मानै सव छोई।—श्री भट्ट

छोकरा—पु० [सं० शावक+रा, प्रा० छावक+रा; दे प्रा० छाक्कर] [स्त्री० छोकरी] लडका। वालक। (उपेक्षा सूचक)

छोछा†—वि० [स्त्री० छोछी] दे० 'छूछा'।

छोट†—वि०=छोटा।

छोटा—वि० [स० क्षुद्र+ट, दे० प्रा० छोट्ट] मान, विस्तार आदि मे अपेक्षया कम या थोडा। जैसे—(क) छोटा पेड, छोटा मकान। २ जिसकी अवस्था या उमर किसी की तुलना मे कम हो। थोड़े वय का। जैसे—छोटा भाई, छोटा लडका। ३ प्रतिष्ठा, मान आदि मे औरो से घटकर होनेवाला। तुच्छ। हीन। जैसे—छोटा काम, छोटी जाति, छोटी वात।

छोटाई—स्त्री० [हिं० छोटा+ई (प्रत्य०)] छोटे होने की अवस्था या भाव। छोटापन।

छोटापन—पुं० [हिं० छोटा+पन] छोटाई।

छोटिका—स्त्री० [स०√छुट् (काटना)+ण्वुल्–अक, टाप्, इत्व] चुटकी।

छोटी (टिन्)—पु० [सं०√छुट्+णिनि] मछुआ।

छोटी इलायची—स्त्री० [हिं०] छोटे आकार की एक प्रकार की इलायची जिसका छिलका पीलापन लिये सफेद होता है।

छोड़—अव्य०[हिं० छोडकर का सक्षिप्त रूप] छोड़कर। अतिरिक्त। सिवाय। जैसे—तुम्हे छोड और कोई ऐसा नही कहता।

छोड़ना—स० [स० छोड] १. वधन मे मुक्त करना। स्वतत्र करना। जैसे—कैदियो को छोड़ना। २ अभियोग, आरोप आदि से मुक्त करना। जैसे—अदालत ने उन्हे छोड दिया है। ३ कोई काम, चीज या वात कुछ समय के लिए अथवा सदा के लिए न करने का निश्चय करना। त्याग देना अथवा सवध विच्छेद करना। परित्याग करना। जैसे—(क) आज-कल हमने अन्न खाना छोड़ दिया है। (ख) उसने अव कलकत्ता छोड दिया है। (ग) उन्होंने अपनी पत्नी को छोड दिया है। ४. कथन, लेख आदि के प्रसग मे, कोई आवश्यक अक्षर, पद या वाक्य का उपयोग या व्यवहार न करना अथवा न लिखना। ५. कोई चीज जान-बूझकर या भूल से कही रख देना या रहने देना। जैसे—(क) वह अपना सामान यही छोड गये हैं। (ख) कोई अपनी छडी यही छोड़ गया है। ६ उत्तराधिकार आदि के रूप मे किसी के लिए कुछ वचा या वाकी रहने देना। जैसे—पिता का पुत्र के लिए ऋण या सपत्ति छोड़ना। ७ अवशिष्ट या वाकी रहने देना। जैसे—आज का काम कल पर छोडना। ८ कोई चीज किसी मे अथवा किसी पर डालना। जैसे—(क) पत्र-पेटी मे पत्र छोडना। (ख) जलते अगारो पर पानी छोड़ना। (ग) खेत मे खाद छोडना। ९ किसी वस्तु पर से अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना। जैसे—मकान छोडना। १०. कोई चीज किसी से उदारतापूर्वक या रियायत करते हुए न लेना। जैसे—मूलधन लेकर व्याज छोडना। ११. उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक जाने देना। ध्यान न देना। जैसे—ये सब वातें छोडो; इनमे क्या रखा है। १२ कोई ऐसी यान्त्रिक या रासायनिक क्रिया करना जिससे कोई चीज गति मे आ जाय या अपना कार्य करने लगे। जैसे—(क) अग्निवाण या उपग्रह छोड़ना। (ख) तोप, वदूक, मोटर छोडना। १३ अनुसधान या पीछा करने के लिए किसी को गुप्त रूप से नियुक्त करना। जैसे—उनका पता लगाने के लिए कई आदमी छोडे गये। हैं। १४ कोई ऐसा कार्य या व्यापार करना जिससे किसी चीज या वात का उपयुक्त परिणाम या फल निकले, उसका कोई प्रभाव पड़े अथवा स्पष्ट रूप से सामने आवे। जैसे—(क) तान छोडना। (ख) फुलझडी या शगूफा छोड़ना। १५ आश्रय के रूप मे रहनेवाली चीज का अपने ऊपर टिकी, ठहरी या लगी हुई चीज को अपने से अलग या दूर करना। जैसे—(क) पेड़ का छाल छोड़ना। (ख) खभे का छत या दीवार छोडना। १६ कर्त्तव्य, कार्य आदि का निर्वाह या पालन न करना। जैसे—तुम आधा काम करते हो और आधा छोड देते हो।

छोड़वाना—स० [हिं० छोड़ना का प्रे० रूप] छोड़ने का काम दूसरे से करवाना। छुडवाना।

छोत†—स्त्री०=छूत।

छोतरा—पु० [?] १ छिलका। २. अफीम।
छोना—स०, स०=छूना।
छोनिप*—पु०=क्षोणिप।
छोनिय*—स्त्री०=क्षोणी (पृथ्वी)।
छोनी—स्त्री०=क्षोणी (पृथ्वी)।
छोप—स्त्री० [हिं० छोपना] १ छोपने की क्रिया या भाव। २. छोपा हुआ अश। छोपकर जमाई या लगाई हुई तह।
छोपना—स० [स० क्षेपण] १. बहुत गाढ़ी वस्तु या सानी हुई वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर थोपना या लगाना। २ ढकना। ३. दबोचना।
छोभ†—पु०=क्षोभ।
छोभन—पु०=क्षोभ।
छोभना*—अ०, स० [स० क्षोभ] क्षुब्ध होना या करना।
छोभित—वि०=क्षोभित।
छोम—वि० [स० क्षोभ] १ चिकना। २ कोमल।
छोर—पु० [हिं० ओर का अनु०] किसी वस्तु के किनारे या सिरे पर का अश, भाग या विस्तार। अंतिम सिरा।
*पु०=छोरा।
छोरटा—पु० [स्त्री० छोरटी]=छोरा।
छोरना—स० [स० छोरण] १. गांठ आदि खोलना। २. पहने हुए वस्त्र उतारना। उदा०—कोउ ऐठति तन तोरि छोरि अंगिया कोउ पैठति।—रत्नाकर। ३ किसी की चीज बलात् लेना। छीनना।
*स०=छोडना।
छोलंग—पु० [स० छुर+अङ्ग्‌-ल्‌] नीबू।
छोलना†—स० [हिं० छीलना का पुराना रूप] १ छीलना। २ अनावश्यक और फालतू रूप मे अधिक योग्यता दिखाना। छाँटना। उदा०—गाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुराई छोलत हो।—सूर। पु० वह उपकरण जिससे कोई चीज छीली जाय।
छोला—पु० [हिं० छोलना] १ छोलने या छीलने का काम करनेवाला व्यक्ति। २. चना।
छोह—पु० [स० क्षोभ] १ प्रेम। स्नेह। २ अनुग्रह। दया।
छोहगर†—वि० [हिं० छोह] छोह या प्रेम करनेवाला। प्रेमी।
छोहना—अ० [हिं० छोह+ना (प्रत्य०)] १ प्रेम या स्नेह करना। उदा०—[illegible]—[illegible]। २ [illegible] या [illegible] होना।
छोहरा (?)—पु० [स्त्री० छोहरी, [illegible]] छोकरा। [illegible]।
छोहाना*—अ० छोहना।
छोहारा†—पु० छुहारा।
छोहिनी*—स्त्री० अक्षौहिणी।
छोही*—वि० [हिं० छोह] १. प्रेम करनेवाला। २. अनुग्रह या दया करनेवाला।
छौंक—स्त्री० [हिं० छौंकना] १ छौंकने की क्रिया या भाव। बघार। २. वह मसाला जिससे तरकारी, दाल आदि छौंकी जाती है। तड़का। बघार।
छौंकन†—स्त्री० छौंक।
छौंकना—स० [अनु० छन छौं] दाल, तरकारी को सुगंधित या स्वादिष्ट करने के लिए उसमें घी, जीरे, हींग आदि से मिला हुआ [illegible] डालना। बघारना। (स्थानिक)
अ० [हिं० [illegible]] १. [illegible] के लिए [illegible] २. [illegible]
छौंक-बघार—स्त्री० [हिं०] १ दाल, तरकारी आदि छौंकने की क्रिया या भाव। २. किसी बात में [illegible] के लिए अपनी ओर से कुछ बातें मिलाकर कहना।
छौना—पु० [सं० [illegible], हिं० [illegible]] [स्त्री० छौनी] लड़का। बालक।
पु० [सं० [illegible]] अनाज रखने का गड्ढा।
छौना—पु० [सं० शाव, पा० छाप; प्रा० छाव] १. पशु का बच्चा। जैसे—मृग-छौना। २ बच्चा। बालक।
छौर†—पु० क्षौर।
छौलदारी—स्त्री० [हिं० छौल+फा० दारी] एक प्रकार का छोटा खेमा। रावटी।
छ्वाना*—स० छुआना।

ज

ज

ज—चवर्ग का तीसरा अक्षर जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्श, संघर्षी अल्प प्राण, सघोष व्यंजन है।
प्रत्य० यह प्रत्यय रूप मे कुछ शब्दो के अंत मे लगकर 'मे उत्पन्न' या 'से उत्पन्न' का अर्थ देता है। जैसे—जलज, देशज, पित्तज आदि।
पु० 'जगण' का संक्षिप्त रूप। (छंद शास्त्र)
अव्य० ही। भी। तो। (डिं०) उदा०—तिणि तिणि हीज ब्राह्मण तणै।—प्रिथीराज।
जंकशन—पु०=जंक्शन।
जंक्शन—पु० [अं०] वह रेलवे स्टेशन जहाँ दो से अधिक दिशाओं से गाड़ियाँ आती-जाती हों। (जंक्शन)
जंग—स्त्री० [फा०] सगस्त्र सैनिकों की लड़ाई। युद्ध।
पु० [फा० जग] १. लोहे पर जमनेवाली वह मैल या विकृत अश जो लोहे मे वायु और नमी के प्रभाव से उत्पन्न होता है। मोरचा। २. अफ्रीका का जगबार या जंजीबार नामक प्रदेश।
स्त्री० [अ० जक] एक प्रकार की बहुत बड़ी नाव।
जंगआवर—वि० [फा०] लड़ाका। योद्धा।

जंगजू—वि० [फा०] युद्ध करने की इच्छा रखनेवाला (व्यक्ति)।

जंगबार—पु० [फा० जग+वार] पूर्वी अफ्रीका का एक प्रदेश। जजीवार।

जंगम—वि० [√गम् (जाना) +यङ्—लुक्, द्वित्वादि+अच्] १ जो एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर जाता हो या जा सकता हो। २ चलनेवाले प्राणियो से उत्पन्न होने या उनसे सबध रखनेवाला। जैसे—जगम विष=कीड़े-मकोडो, पशु-पक्षियो आदि के शरीर से निकलनेवाला विष। ३. जिसे एक स्थान से उठा या हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता हो।

पु० १, लिंगायत शैव सप्रदाय के गुरुओ की उपाधि। २ एक प्रकार के साधु।

जंगम-गुल्म—पुं० [कर्म० स०] पैदल चलनेवाले सिपाहियो का दस्ता।

जँगरा—पु० [देश०] कुछ वनस्पतियो के डठल। जैसे—मूँग का जँगरा।

पुं० [हिं० जाँगर] शारीरिक वल।

जँगरैत—वि० [हिं० जाँगर] [स्त्री० जँगरैतिन] (व्यक्ति) जो कोई काम करने मे अपनी पूरी शारीरिक शक्ति लगाता हो। जाँगरवाला। परिश्रमी।

जगल—पु० [स०√गल् (भक्षण) +यङ्+अच्, नि० सिद्धि] १ जल-शून्य भूमि। रेगिस्तान। २ वह स्थान जहाँ वहुत से वृक्ष तथा वनस्पतियाँ आप से आप उग आई हो। वन।

पद—जंगल में मंगल=सूने स्थल मे होनेवाली चहल-पहल।

मुहा०—जंगल जाना=शौच के लिए मैदान मे जाना। टट्टी जाना।

३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह स्थान जहाँ पर वहुत-सी वस्तुएँ ऐसे अव्यवस्थित रूप मे रखी हुई हो कि जल्दी किसी वस्तु का पता न लगे। ४ मांस।

जंगल-जलेबी—स्त्री० [स० जगल+हिं० जलेवी] १ काँटेदार जगली पौधा, जिसमे जलेवी की तरह फल लगते हैं। २ गू की लेंडी। (परिहास)

जंगल बाड़ी—स्त्री० [हिं० जगल+वाडी] एक प्रकार की वढ़िया मलमल।

जगला—पु० [पुर्त० जेगिला] १. वरामदे, छज्जे आदि के किनारे-किनारे खडी की हुई वह रचना जिसमे एक पक्ति मे लकडी या लोहे के छड लगे होते हैं। २ खिडकी का वह चौखट जिसमे लोहे के छड लगे हुए हो। ३ खिडकी। ४. वह चित्रण या नक्काशी जिसमे एक दूसरे को काटती हुई वेलें आदि वनी हो। जैसे—जगले की साडी।

पु० [स० जागलय] १ सगीत के वारह मुकामो मे से एक। २. एक राग का नाम। ३ एक प्रकार की मछली जो वगाल की नदियो मे वहुतायत से होती है। ४. वनस्पतियो के डठल।

जगली—वि० [स० जगल] १ जगल मे उगने, उपजने या होनेवाला। २ (वह वनस्पति) जो आप से आप उग आई हो। ३ जगल मे रहनेवाला। जैसे—जगली चिडियाँ, जगली जातियाँ। ४ जो घरेलू या पालतू न हो। जैसे—जगली कुत्ता। ५ जगल मे रहने वाले पशुओ, व्यक्तियो जैसा (आचरण, स्वभाव)। जैसे—जगली आदत। ६. असम्य तथा असस्कृत। गँवार। ७. मूर्ख। ८. (प्रदेश) जिसमे जगल हो।

पु० १. जंगल में रहनेवाला व्यक्ति। २ असम्य या अशिष्ट व्यक्ति।

जंगली बादाम—पु० [हिं० जगली+वादाम] १ कतीले की जाति का एक पेड जिसके फलो के वीज को भूनकर खाया या उवालकर तेल निकाला जाता है। २ हर्रे की जाति का एक पेड़ जिसकी छाल से चमड़ा सिझाया जाता है और बीजो से तेल निकाला जाता है। हिंदी-वादाम।

जंगली रेंड़†—पु०=वन रेंड।

जंगा—पु० [फा० जगूला] घुँवरू का दाना।

जंगार—पु० [फा०] [वि० जगारी] १. ताँवे का कसाव। तूतिया। २ एक प्रकार का नीला रग जो तावे को सिरके मे भिगोकर निकाला जाता है। ३ आज-कल कुछ नई प्रक्रियाओ मे वनाया हुआ उक्त प्रकार का रग।

जंगारी—वि० [फा० जगार] जगार अर्थात् नीले रगवाला। नीला।

जंगाल—पु०=जगार।

†पुं० [फा० जंग] जग। मोरचा।

जंगाली†—वि०=जगारी।

पु० [हिं० जगार] नीले रग का एक प्रकार का रेशमी कपडा।

जगाली पट्टी†—स्त्री० [हिं० जगारी+पट्टी] फोड़े-फुसियो पर लगाई जानेवाली गघे-विरोजे की पट्टी।

जंगी—वि० [फा०] १ जग अर्थात् युद्ध सवधी। २ युद्ध मे भाग लेनेवाला अथवा युद्ध मे काम आनेवाला। सामरिक। ३ सेना सवधी। सैनिक। ४. वहुत वडा। दीर्घ काय। ५ लडने-झगडनेवाला। झगडालू।

पु० [देश०] घडा। (कहार)

जंगी लाट—पु० [हिं०] आज-कल किसी देश का प्रधान सेनापति।

जंगीहड—स्त्री० [फा० जगी+हड़] काली हड। छोटी हड।

जगुल—पु० [स०√गम् (जाना) +यङ—लुक्+डुल् वा०] जहर। विष।

जंगेला—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसे चौरी, मामरी या रूहो भी कहते हैं।

जंगै—स्त्री० [स० जघा] एक प्रकार की करधनी जिसमे घुँघरू लगे रहते है और जिसे नाच के समय अहीर, धोवी आदि कमर मे वाँधते हैं।

जघ*—स्त्री०=जघा।

†पु०=जाँघिया।

जंघा—स्त्री० [√हन् (जाना) √यङ्—लुक्+अच्, टाप्] १ पैर का घुटने और पेडू के वीच का भाग। २ एक प्रकार का जूता। ३. कैंची का दस्ता जिसमे फल और दस्ताने लगे रहते हैं।

जंघा-त्राण—पु० [प० त०] एक प्रकार का कवच जो जाँघ पर वाँधा जाता था।

जघाफार—पु० [हिं० जघा+फारना] रास्ते में पड़नेवाली खाई। (कहार)

जघा-बन्धु—पु० [ब० स०] एक ऋषि का नाम

जंघामयानी—स्त्री० [स० जघा+हिं० मयानी] १. छिनाल स्त्री। पुश्चली। २. वेश्या।

जंघार—पुं० [हिं० जघा+आर] जाँघ पर होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।

जंघा-रथ—पुं० [ब० स०] १ एक प्राचीन ऋषि। २ उक्त ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।
जंघारा—पुं० [देश०] राजपूतों की एक जाति।
जंघारि—पुं० [सं० ब० स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
जंघाल—पुं० [सं० जंघा+लच्] १ धावन। धावक। दूत। २. मृग।
जंघिल—वि० [सं० जंघा+इलच्] १ तेज दौड़नेवाला। २. फुर्तीला।
जँचना—अ० [हिं० जाँचना] १. जाँचा जाना। जाँचा-परखा जाना। जैसे—हिसाब जँचना। २ जाँच में ठीक या पूरा उतरना। ३. जान पड़ना। प्रतीत होना। ४ भला जान पड़ना।
जँचा—वि० [हिं० जँचना] १ जाँचा हुआ। सुपरीक्षित। २ जो ठीक प्रकार से जाँच करने में अभ्यस्त हो। ३ जाँच करते-करते जिसे किसी बात का अभ्यास हो गया हो। जैसे—जँचा हाथ।
पद—जँचा-तुला=ठीक ठीक।
जंज—अव्य० [?] जो।
स्त्री० [सं० यज्ञ] बरात। (पंजाब)
जंज-घर—पुं० [हिं० जंज+घर] १. बरात को ठहराने का स्थान। २ वह स्थान जहाँ पर बरातें आकर ठहरती हों।
जंजपूक—पुं० [सं०√जप् (जपना)+यङ्+ऊक] मंद स्वर में जप करनेवाला व्यक्ति।
जंजबील—स्त्री० [अ०] सोंठ।
जंजर (रु)*—वि० =जर्जर।
जंजाल—पुं० [हिं० जग+जाल] [वि० जंजालिया] १ सांसारिक व्यापार जिसमे मनुष्य फँसा रहता है। मनुष्य को ईश्वर या भगवद् भजन से विमुख करने तथा उसका ध्यान अपनी ओर लगाये रखनेवाली बात। माया। २ प्रपंच। झंझट। बखेड़ा। ३ उलझन। ४ पानी का भँवर। ५ पुराने ढंग की एक प्रकार की पलीतेदार बड़ी बंदूक। ६ चौड़े मुँहवाली एक प्रकार की पुरानी चाल की तोप। ७ मछलियाँ पकड़ने का बड़ा जाल।
जंजालिया—वि० [हिं० जंजाल+इया (प्रत्य०)]=जंजाली।
जंजाली—वि० [हिं० जंजाल+ई (प्रत्य०)] १ जो जंजाल में फँसा हो। सांसारिक बंधनों में पड़ा हुआ। २ झगड़ा-बखेड़ा करनेवाला।
स्त्री० [देश०] वह रस्सी और घिरनी जिससे नावों का पाल चढ़ाया और उतारा जाता है।
जंजीर—स्त्री०[फा०] १. धातु की बहुत-सी कड़ियों को एक दूसरे में पहनाकर बनाई जानेवाली लड़ी। साँकल। २ साँकल की तरह का बना हुआ गले में पहनने का एक आभूषण। सिकड़ी। ३ कैदियों के पावों में बाँधी जानेवाली लोहे की शृंखला। ४. किवाड़े के पल्ले बंद करने की सिकड़ी। साँकल। ५ लाक्षणिक अर्थ में, वह बात जो आगे-पीछे की घटनाओं को जोड़ती या मिलाती है। शृंखला।
जंजीरा—पुं०[हिं० जंजीर] १. कसीदे के काम में, कपड़े आदि पर काढ़ी या निकाली हुई जंजीर की बनावट। लहरिया। २. लहरियेदार कपड़ा। उदा०—जनि बाँधो जंजीरे की पाग नजर तोहे लगि जायगी।—गीत।
जंजीरी—वि० [हिं० जंजीर] १. गले में पहनने की सिकड़ी। २. हथेली के पिछले भाग पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना।
वि० जिसमें जंजीर या सिकड़ी लगी हो।
जंट—पुं० [अं० ज्वाइंट मजिस्ट्रेट] [भाव० जंटी] जिला मजिस्ट्रेट का सहायक अधिकारी।
जंटी—स्त्री० [हिं० जंट] ज्वाइंट मजिस्ट्रेट होने की अवस्था, भाव या पद।
जंड—पुं० [देश०] एक जंगली पेड़ जिसकी फलियों का अचार डाला जाता है। सांगर।
जंतर—पुं० [सं० यंत्र] १ दे० 'यंत्र'। २ गले आदि में पहनने का धातु का वह छोटा आधान जिसके अंदर मंत्र या टोटके की कोई वस्तु रहती है। तावीज। ३. जंतर-मंतर। ४. यंत्र, जिससे तेल या अरगजा आदि तैयार किया जाता है। ५ [illegible]।
जंतर-मंतर—पुं० [सं० यंत्र-मंत्र] १. भूत-प्रेत आदि उतारने अथवा किसी पर भूत-बाधा आदि लाने का मंत्र। टोटका। २. वेधशाला, जहाँ पर नक्षत्रों आदि की गति-विधि देखी जाती है।
जंतरा—स्त्री० [सं० यंत्र] वह रस्सी जो गाड़ी के ढाँचे पर कसी, तानी या बाँधी जाती है।
जंतरी—स्त्री० [सं० यंत्र] सोनारों का एक उपकरण जिसमें से वे तार खींचकर पतले तथा लंबे करते हैं। २. पंचांग। तिथिपत्र। (उर्दू) ३. जादूगर। ४. बाजा बजानेवाला।
जँतसर—पुं० [हिं० जाँता+सर (प्रत्य०)] वह गीत जिन्हें जाँता अर्थात् चक्की पीसते समय स्त्रियाँ गाती हैं।
जँतसार—स्त्री० [हिं० जाँता+सार=शाला] वह स्थान जहाँ पर जाँता गाड़ा हो।
जंता—पुं० [सं० यंत्र] [स्त्री० जंती, जंतरी] १. यंत्र। कल। २. सुनारों का तार खींचने का उपकरण।
वि० [सं० यंतृ] १. यंत्रणा देनेवाला। २. दंड देनेवाला।
जँताना—अ० [हिं० जाँता] १ (अन्न आदि का) जाँते में पीसा जाना। २. भीड़ में चारों ओर से इस प्रकार दबना जैसे जाँते में दाने पिसते हैं।
जंती—स्त्री० [हिं० जंता] सुनारों का तार खींचने का छोटा जंता।
स्त्री० [सं० जनयित्री] जननी। माता।
जंतु—पुं० [सं०√जन् (प्रादुर्भाव) +तुन्] १ वह जिसने जन्म लिया हो। २ शारीरिक दृष्टि से साधारण या छोटे आकार-प्रकार के पशु, कीड़े-मकोड़े आदि। जैसे—चूहा, मछली, साँप आदि।
जंतुका—स्त्री० [सं० जतु√कै (प्रकाश करना) +क—टाप्] लाह। लाक्षा।
जंतुघ्न—वि० [सं० जंतु√हन् (मारना)+टक्] (औषध या पदार्थ) जंतुओं को नष्ट करनेवाला।
पुं० १. बायबिडंग। २. हींग।
जंतुघ्नी—स्त्री० [सं० जंतुघ्न+ङीप्] बायबिडंग।
जंतु-नाशक—पुं० [ष० त०] हींग।
वि० जंतुओं या कीड़ों का नाशक।
जंतु-फल—पुं० [ब० स०] गूलर।
जंतुमारी (रिन्)—पुं० [सं० जंतु√मृ (मरना)+णिच्+णिनि] जंबीरी नीबू।
वि०=जंतुघ्न।

जंतुला——स्त्री० [स० जतु√ला (लेना)+क—टाप्] कांस नामक घास।

जंतु-विज्ञान—पु०=जीव-विज्ञान।

जंतु-शाला—स्त्री० [प० त०] वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के पशु-पक्षी और जीव-जंतु प्रदर्शन के लिए रखे गये हो। चिड़ियाघर।

जंतुहन—वि०=जतुघ्न।

जंतैत——पु० [हिं० जाँता] वह व्यक्ति जो जाँता अर्थात् चक्की पीसकर अपनी जीविका उपार्जन करता हो ।

जंत्र—पु० [स० यंत्र] १. यत्र (दे०)। २ ताला।

जंत्रना*—स० [हिं० जत्र] १ जत्र अर्थात् ताला लगना। २. बाँध या रोक (दे०) रखना।

स० स्त्री० [सं० यत्रणा] १. यंत्रणा देना। दुख देना। २ दंड देना।

जंत्र-मंत्र—पु०=जतर-मंतर।

जत्रा—स्त्री०=जतरा।

जंत्रित—वि० [स० यत्रित] १ यत्र द्वारा बाँधा या रोका हुआ। २ जो किसी के वश मे हो। पर-वश ।

जंत्री—पु० [स० यत्रिन्] वीणा आदि बजानेवाला। बाजा बजानेवाला व्यक्ति।

*पु० [स० यत्र] बाजा।

†स्त्री०=जतरी।

जंद—पु० [सं० छन्दस् का ईरानी रूप] पारसियो का प्रसिद्ध धर्म-ग्रन्थ जो जरतुश्त की रचना है। (पहले लोग इसे भूल से उक्त ग्रथ की भाषा का नाम समझते थे जो वास्तव मे अवेस्ता है)

जंदरा—पु० [स० यत्र] ताला। (पश्चिम)

†पु०=जाँता।

जंवाला—स्त्री० [सं०] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव जो १२८ हाथ लम्बी, १६ हाथ चौड़ी और १२ हाथ ऊँची होती थी।

जंप—पु० [स० जल्प ?] शाति। उदा०—जप जीव नही आवती जाणे। —प्रिथीराज ।

जंपती—पुं० [सं० जाया-पति द्व० स०, जम् आदेश] दपती।

जंपना*—स० [हिं० जपना, स० जल्पन] १ कहना। बोलना। उदा०—यो कवि भूषण जंपत है लखि संपति को अलका-पति लाजै। —भूषण। २ बकना। बकवाद करना।

अ०=झपना (कूदना)।

जंब—पु० [स०√जम्ब्+घञ्] कीचड़।

जंबाल—पु० [स० जब—आ√ला (लेना)+क] १ कीचड। २ मिट्टी। ३. पानी में होनेवाली एक घास। ४ केवड़े का फूल।

जंबाला—स्त्री० [स० जबाल+टाप्] केतकी का पौधा।

जंबालिनी—स्त्री० [स० जबाल+इनि- ङीप्] नदी।

जंबीर—पु० [स०√जम् (खाना)+ईरन्—बुक्] जँबीरी नीबू (दे०)। स्त्री० [अ० जबीर] मुँह से बजाने की पुरानी चाल की एक सीटी।

जंबीरी नीबू—पु० [स० जबीर] एक प्रकार का बड़ा नीबू जिसका रस बहुत खट्टा होता है।

जंबील—स्त्री० [फा०] फकीरो, साधुओ, सन्यासियो आदि की किसी कपडे के चारो कोनो को गाँठ लगाकर बनाई हुई थैली जिसमे वे भिक्षा से मिली हुई वस्तुएँ रखते हैं ।

जंबु—पु० [स० √जबू पृषो० ह्रस्व] जामुन का पेड और उसका फल।

जंबुक—पु० [स० जबु+कन्] १ बडा जामुन। फरेंदा। २. श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। ३ केवडा। ४ गीदड। ५ वरुण। ६ स्कद का एक अनुचर।

जंबु-खंड—पु० दे० 'जबूद्वीप'।

जंबु-द्वीप—पु०=जबूद्वीप।

जंबु-प्रस्थ—पु०=जबूप्रस्थ (दे०)।

जंबुमती—स्त्री० [स० जबुमत+ङीप] एक अप्सरा का नाम।

जंबुमान् (मत्)—पु० [स० जंबु+मतुप्] १ पहाड। २ जांबवान नामक एक वानर।

जंबुमाली (लिन्)—पु० [सं० जंबु-माला प० त०, इनि ?] एक राक्षस का नाम।

जंबुर†—पु०=जबूर।

जंबुल—पु० [स० जबु√ला (लेना)+क] जंबूल। (दे०)

जंबू—पु० [स० जबु+ऊङ्]=जबु। (दे०)

जंबूका—स्त्री० [स० जबू√(प्रतीत होना)+क-टा प्] किशमिश।

जंबू-खंड—पुं० [मव्य० स०] जंबूद्वीप।

जबू-दीप—पुं०=जबूद्वीप।

जंबू-द्वीप—पु० [मव्य० स०] पुराणानुसार सात द्वीपो में से एक जिसमें भारतवर्ष की भी स्थिति मानी गई है।

जम्बूनद—पु०=जबू-नदी।

जंबू-नदी—स्त्री० [मव्य० स०] ब्रह्म लोक से निकली हुई सात नदियों मे से एक जिसके सबंध मे यह कहा जाता है कि यह जामुन के पेड़ो से चूने वाले जामुनो के रस से निकलती है।

जंबू-प्रस्थ—पु० [ब० स०] वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक नगर का नाम।

जंबूर—पु० [अ० जन बूर] १ बर्रे। भिड। २ शहद की मक्खी। ३. पुरानी चाल की एक तोप।

†पु०=जबूरा।

जंबूरक—स्त्री० [फा० जबूर] १. एक प्रकार की छोटी तोप। २ तोप रखने की गाड़ी। ३ भँवर कली।

जंबूरखाना—पु० [अ० जनबूर+फा० खान] भिड़ या शहद की मक्खियो का छत्ता।

जंबूरची—पु० [अ० जबूर+फा० ची (प्रत्य०) १. तोपची। २ सिपाही।

जंबूरा—पु० [फा० जबूर] १. एक प्रकार की छोटी तोप। २ तोप लादने की गाडी। ३ भँवर कली (दे०)। ४. सँडसी या चिमटी की तरह का एक उपकरण जिससे कारीगर चीजों को ऐंठते, दबाते या घुमाते हैं। ५ मस्तूल पर आडा बँधा रहनेवाला डडा।

जंबूरी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का जालीदार कपड़ा।

जंबूल—पु० [स० जबू√ला (लेना)+क] १ जामुन का वृक्ष और उसका फल। २ केवडा।

जंबू-वनज—पु० [जंबू-वन मव्य० स०, जबूवन√जन (उत्पत्ति)+ड] श्वेत जपापुष्प। सफेद गुडहल का फूल।

जंभ—पुं०[√जभ (भक्षण, जमुहाई)+घञ्] १ दाढ़। २. जबड़ा। ३. जँभाई। ४. तरकश। ५. जँबीरी नीबू। ६. [√जंभ+अच्] महिषासुर का पिता जिसका वध इंद्र ने किया था।

जंभक—पुं० [सं०√जंभ्+णिच्+ण्वुल्-अक] १. जँबीरी नीबू। २. शिव। ३. एक राजा।

वि० १. जिसके सेवन से जँभाई आती हो। २. हिंसक। ३. [जभ् (संभोग)+ण्वुल्-अक] कामुक।

जंभका—स्त्री०[सं० जंभा+कन्-टाप्, ह्रस्व] जँभाई।

जंभन—पुं०[सं० √जभ्+ल्युट्-अन] १. भक्षण। २. रति। ३. जँभाई।

जंभ-भेदी (दिन्)—पुं० [सं० जंभ√भिद् (विदारण)+णिनि] इंद्र।

जंभ-रिपु—पुं०[ष० त०] इंद्र।

जंभा—स्त्री०[सं० √जभ्+णिच्√अ-टाप्] जँभाई।

जँभाई—स्त्री०[सं० जृम्भा] एक शारीरिक व्यापार जिसमें मनुष्य गहरा साँस लेने के लिए पूरा मुँह खोलता है।

विशेष—यह व्यापार थकावट या नींद के आने का सूचक होता है।

क्रि० प्र०-आना।—लेना।

जँभाना—अ०[सं० जृम्भण] पूरा मुँह खोलकर गहरा साँस लेना। जँभाई लेना।

जंभाराति—पुं०[सं० जंभ-अराति ष०त०] जंभारि। (दे०)

जंभारि—पुं०[सं०-जंभ-अरि ष० त०] १. इंद्र। २ विष्णु। ३ अग्नि। ४. वज्र।

जंभिका—स्त्री०[सं० जभा+कन्+टाप, इत्व] जंभा।

जंभी—(भिन्)पुं० [सं०√जभ्+णिच्+णिनि] दे० 'जबीरी'।

जंभीर—पुं०[सं०√जंभ्+ईरन्] दे० 'जबीरी'।

जंभीरी—पुं० दे० 'जबीरी नीबू'।

जंबूरा†—पुं०=जबूरा।

जँवाई—पुं०[सं० जामातृ] दामाद।

जंपना*—अ०[हिं० झखना] पछताना। पश्चात्ताप करना।

जँहड़ना†—अ०, स०=जहँडना।

जइसे*—अव्य०[हिं० जैसे] जिस प्रकार। जैसे।

जई—स्त्री०[हिं० जौ] १. एक प्रसिद्ध मोटा अन्न जिसका पौधा जौ के पौधे से बहुत-कुछ मिलता-जुलता होता है। २. उक्त अन्न का पौधा। ३. जौ का छोटा अंकुर जो मंगल-द्रव्य माना जाता है। ४. किसी पौधे का नया कल्ला। अंकुर। ५. कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधों, वृक्षों, लताओं आदि में लगनेवाले वे फूल जिनके मूल में बतिया (फल का आरंभिक रूप) होता है।

वि० [हिं० जयी] विजयी।

जईफ—वि०[अ० ज़ईफ़] [स्त्री० जईफा, भाव० जईफी] बुड्ढा। बूढ़ा। वृद्ध।

जईफी—पुं०[फा० ज़ईफी] जईफ अर्थात् वृद्ध होने की अवस्था या भाव। बुढ़ापा। वृद्धावस्था।

जउँना*—स्त्री०=जमुना।

जउवा†—पुं०=जौ। (पूरब) उदा०—जउवा में फूटेला बालि।—लोकगीत।

जऊ—अव्य० [हिं० जो+ऊ] यद्यपि। अगरचे। उदा०—(क) कहै रतनाकर वरैना मृगछाला अरु बूरिहू परैं भी जऊ अंग छिलि जाइगौ।—रत्ना०। (ख) लाल हैं प्रवाल फूले देखत विसाल जऊ।—सेनापति।

जकंद—स्त्री० [फा० ज़कंद] उछाल। छलाँग।

जकंदना—अ० [हिं० जकंद] १. उछाल भरना। छलाँग लगाना। २. २ टूट पड़ना।

जकंदनि—स्त्री०[हिं० जकंद] १. उछलने-कूदने की क्रिया या भाव। २. दौड़-धूप। ३. उलझन।

जक—स्त्री० [अ० ज़क] १ पराजय। हार। २ हानि।

स्त्री० [हिं० झक] १. जिद। हठ।

मुहा०—जक पकड़ना=जिद करना। हठ करना। उदा०—अधम समूह उधारन कारन तुम जिय जक पकरी।—सूर।

२. धुन। रट। स्त्री०[?] १. आराम। सुख। २. मन की स्थिरता। शान्ति। चैन। उदा०—जक न परति चकरी भई फिरि आवत फिरि जाति।—बिहारी। *पुं० [सं० यक्ष] १. यक्ष। २. कंजूस आदमी।

जकड़—स्त्री० [हिं० जकड़ना] १. जकड़ने की क्रिया, ढंग या भाव। २. जकड़े अर्थात् चारों ओर से दृढ़ बंधन में होने की अवस्था या स्थिति।

जकड़ना—स० [सं० युक्त+करण] १. इस प्रकार किसी चीज को कसकर दबाते हुए बाँधना कि वह हिल-डुल न सके। २. इस प्रकार से नियम, बंधन आदि बनाना या लागू करना कि उनसे बच सकना किसी का संभव न हो।

अ० १ जकड़ा जाना। चारों ओर से कसकर बाँधा जाना। २ नियमों, बंधनों आदि से इस प्रकार घिरना कि छुटकारा या बचत न हो सकती हो। ३. शीत आदि के जोर से शरीर अथवा शरीर के किसी अंग का इस प्रकार कस, ऐंठ या तन जाना कि वह हिल-डुल न सके। जैसे—गठिया के रोग से घुटने जकड़ना।

जकड़बंद—वि० [हिं० जकड़+फा० बंद] जिसे अच्छी तरह जकड़कर बाँध लिया गया हो। किसी की जकड़ में आया हुआ।

जकना*—अ० [हिं० जक] [वि० जकित] १. भौचक्का होना। चकित या स्तंभित होना। उदा०—दीन से रहैं संत जन सों, रूप में नैना जके।—अलबेली अली। २. व्यर्थ बोलना। बकना। ३. रटना।

जकर—पुं० [अ०] १ पुरुषेंद्रिय। लिंग। २. नर। ३. फौलाद।

जकरना*—स०, अ०=जकड़ना।

जकाजक*—पुं०[अनु०] जोरों की लड़ाई। घोर युद्ध।

क्रि० वि० खूब जोरों से। वेग-पूर्वक।

जकात—स्त्री०[अ० ज़कात] १. इस्लाम में विहित आय का वह चालीसवाँ भाग जो दान-धर्म में देना आवश्यक कहा गया है। २ दान। खैरात। ३. कर। महसूल।

जकाती—वि०[अ० ज़कात] कर या महसूल उगाहनेवाला। जगाती।

जकित*—वि०=चकित।

जकी—वि०[हिं० जक] १ जिद्दी। हठी। २ चकित। स्तंभित। उदा०—चकी जकी सी ह्वै रही बूझे बोलति नीठि।—बीसलदेव।

जकुट—पुं० [सं० ज√कुट् (कौटिल्य)+क] १. मलयाचल। २. कुत्ता। ३ बैंगन के पौधे में लगनेवाला फूल।

जक्की—स्त्री० [देश०] बुलबुलों की एक जाति।

वि० दे०'झक्की'।

जक्त*—पु०=जगत्।

जक्ष—पु०=यक्ष।

जक्षण—पु० [स०√जक्ष् (भक्षण करना)+ल्युट्-अन] १. भक्षण। २ भोजन। खाना।

जक्ष्म—पु०=यक्ष्म।

जक्ष्मा†—पु०=यक्ष्मा (तपेदिक)।

जखन—अव्य०=जब। (पूरब)

जखनी*—स्त्री०=यक्षिणी (यक्ष की पत्नी)।
†स्त्री०=यखनी। (दे०)

जखम—पु० [फा० जख्म] १ आघात आदि के कारण शरीर मे लगनेवाली ऐसी चोट जिसमे त्वचा कट, फट या छिल जाती है और रक्त बहने लगता है। घाव। जैसे—ईट सिर पर गिर पडने से यह जखम हुआ है। २ फोडा आदि फटने से होनेवाला घाव। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी के द्वारा किया हुआ वह आघात या अपकार जिससे मनुष्य सदा दुखी रहता हो।

मुहा०—जखम पर नमक छिड़कना=ऐसा काम करना जिससे दुखी व्यक्ति और भी अधिक दुखी हो। **जख्म ताजा या हरा होना**=किसी के द्वारा किया हुआ अपकार स्मरण हो आना।

जखमी—वि०[फा० जख्मी] जिसे जखम या घाव हुआ हो। घायल।

जखीरा—पु०[अ० ज़खीरा] १ ढेर। राशि। २ कोप। ३ वह प्रदेश जहाँ कोई वस्तु बहुतायत से प्राप्त होती है। जैसे-पंजाब गेहूँ का जखीरा है। ४ वह स्थान जहाँ पौधे, बीज आदि बिकते हों।

जखेड़ा†—पु०=जखीरा।
पु० हिं० बखेडा का अनु०।

जखैया—पु० [स० यक्ष]एक कल्पित भूत जिसके संबंध मे यह कहा जाता है कि वह लोगों को यों ही बहुत कष्ट देता है।

जख्ख*—पु० [स्त्री० जख्खनी] =यक्ष। उदा०—महम जख्ख भक्खनिय, मनह अचले चल बद्दिय।—चंदवरदायी।

जख्म—पु०=जखम।

जग—पु०[स० जगत्] १ जगत्। ससार। २ चेतन सृष्टि।
*पु०=यज्ञ।

जगकर—पु०[स०] ब्रह्मा।

जगकारन—पु०[हिं० जग+कारन] परमेश्वर जो जगत्कर्ता माना जाता है।

जगच्चक्षु—पु०[स० जगत्-चक्षुस् प० त०] सूर्य।

जगजग (ा)—वि०[हिं० जगजगाना=जगमगाना] जगमगाता हुआ।

जगजगा—पु०[जगमग से] किसी चमकीली धातु का पतला पत्तर जिसके कटे हुए छोटे-छोटे टुकडे टिकुली, ताजिए आदि मे लगाये जाते हैं।

जगजगाना†—अ०=जगमगाना।
†स०=जगमगाना।

जग-जीवन—पु०[स० जगज्जीवन] ईश्वर। परमात्मा।

जगजोनि—पु०[स० जगद्योनि] ब्रह्मा।

जगज्जनी—स्त्री०[स० जगत्-जननी प० त०] १ जगदंबा। २. परमेश्वरी। ३. सीता।

जगज्जयी (यिन्)—वि० [स० जगत्-जयी प० त०] जग को जिसने जीत लिया हो। विश्वविजयी।

जगझंप—पुं०[स० ?] युद्ध-क्षेत्र मे बजाया जानेवाला एक प्रकार का ढोल।

जगड्वाल—पु०[स०?] व्यर्थ का आडंबर या बखेडा।

जगण—पु०[ष० त०] छंद शास्त्र मे, तीन ऐसे अक्षरों के समूह की संज्ञा जिसका पहला अक्षर लघु, दूसरा गुरु और तीसरा लघु हो। इसका सांकेतिक चिह्न ।ऽ। है।

जगत्—वि०[स०√गम् (जाना)√क्विप्, द्वित्व, तुगागम] १ जागता हुआ। चेतन। २ जो चलता-फिरता हो।
पु० १ पृथ्वी का वह अंश या भाग जिसमे जीव या प्राणी चलते-फिरते या रहते हों। चेतन सृष्टि। २ किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य-क्षेत्र अथवा उसमे रहनेवाले जीवों, पिंडों आदि का वर्ग या समूह। जैसे—नारी जगत्, सौर जगत्, हिन्दी जगत् आदि। ३ इस पृथ्वी के निवासी। जैसे—जगत् तो मेरी हँसी उड़ाने पर तुला हुआ है। ४ ससार। दुनिया। जैसे—यह जगत् और उसके सब जंजाल झूठे हैं।

जगत—स्त्री०[स० जगति=घर की कुरसी] कूएँ के ऊपर चारों ओर बना हुआ वह चबूतरा जिस पर खडे होकर उसमे से पानी खींचा जाता है।
पु०=जगत्। (दे०)

जगत-जननि—स्त्री०=जगज्जनी।

जगतसेठ—पु०[स० जगत्श्रेष्ठी] वह महाजन या सेठ जो किसी नगर या बस्ती में और उसके चारों ओर दूर-दूर तक सब से बडा माना जाता हो।

जगतारण—वि० [स० जगत्-तारण] १ ससार को तारनेवाला। २ ससार की रक्षा करनेवाला।

जगति—स्त्री०[स० जगत्] द्वारिका।

जगती—स्त्री० [स०√गम्+अति—ङीप्] १. जगत्। २ पृथ्वी। ३ जीवन। ४ एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे बारह अक्षर होते हैं। ५ बारह अक्षरों के छंदों की संज्ञा।

जगती-चर—वि०[जगती√चर् (चलना)+ट] जगत् मे विचरण करनेवाला।
पु० मनुष्य।

जगती-जानि—पुं०[जगती-जाया ब० स०, नि०-आदेश] राजा।

जगती-तल—पु०[प० त०] १. धरती। पृथ्वी। २ ससार।

जगती-धर—पु०[प० त०] पर्वत।

जगती-पति—पु० [प० त०] राजा।

जगती-भर्ता (र्तृ)—पु०[प त०] राजा।

जगती-रुह—पु० [स० जगती√रुह् (उगना)+क] वृक्ष।

जगत्प्राण—पुं०[जगत्-प्राण प० त०] १. संसार को जीवित रखनेवाले तत्त्व। २ ईश्वर।

जगत्साक्षी (क्षिन्)—पुं०[जगत्-साक्षिन् प० त०] सूर्य।

जगत्सेतु—पु०[जगत्-सेतु प० त०] परमेश्वर।

जगदंतक—पु०[जगत्-अंतक प० त०] १ वह जो जगत् का नाश करता हो। मृत्यु। २ यमराज। ३ शिव।

जगदंबा—स्त्री०[जगत्-अंबा प० त०] दुर्गा।

जगदंबिका—स्त्री०[जगत्-अंबिका प० त०] दुर्गा।

जगदात्मा (त्मन्)—पु०[जगत्-आत्मन् ष० त०] १ ईश्वर। २. वायु।
जगदादि—पु०[जगत्-आदि ष० त०] १ ब्रह्मा। २. परमेश्वर।
जगदाधार—पु०[जगत्-आधार ष० त०] १ परमेश्वर। २. वायु। वि० जगत् का आधार।
जगदानन्द—पु०[जगत्-आनद ष० त०] परमेश्वर।
जगदायु (स्)—पु०[जगत्-आयुस् ष० त०] वायु।
जगदीश—पु०[जगत्-ईश ष० त०] १. ईश्वर। परमेश्वर। २ विष्णु। जगन्नाथ।
जगदीश्वर—पु०[जगत्-ईश्वर] ईश्वर। परमेश्वर।
जगदीश्वरी—स्त्री०[जगत्-ईश्वरी ष० त०] भगवती।
जगदीस—पु०=जगदीश।
जगद्गुरु—पु०[जगत्-गुरु ष० त०] १ परमेश्वर। २ शिव। ३ नारद। ४ वह महान व्यक्ति जिसे सब लोग गुरु के समान पूज्य मानते हो। जैसे—जगद्गुरु शकराचार्य। ५ शकराचार्य की गद्दी के अधिकारी महत की उपाधि।
जगद्गौरी—स्त्री०[स० त०] १ दुर्गा। २ नागो की बहन मनसादेवी, जिसका विवाह जरत्कारु ऋषि से हुआ था।
जगद्दीप—पु०[जगत्-दीप ष० त०] १ ईश्वर। २ महादेव।
जगद्धाता (तृ)—पु० [जगत्-धातृ ष० त०] [स्त्री० जगद्धात्री] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ शिव। शकर।
जगद्धात्री—स्त्री०[जगत्-धात्री ष० त०] १ दुर्गा। २ सरस्वती।
जगद्बल—पु०[जगत्-बल ब० स०] वायु। हवा
जगद्योनि—पु० [जगत्-योनि ष० त०] १ शिव। २ विष्णु। ३. ब्रह्मा। ४. परमेश्वर। ५ पृथ्वी।
जगद्वंद्य—वि०[जगत्-वद्य ष० त०] १ जिसकी वदना जगत् करता हो। २. जिसकी वदना जगत् को करनी चाहिए।
जगद्वहा—स्त्री०[स० जगत्√वह् (ढोना)+अ-टाप्] पृथ्वी।
जगद्विख्यात—वि० [जगत्-विख्यात स० त०] जिसकी ख्याति जगत् में हो।
जगद्विनाश—पु०[जगत्-विनाश ब० स०] प्रलयकाल।
जगन*—पु०[स० यज्ञाग्नि] १. यज्ञ की अग्नि। २ यज्ञस्थल। उदा०—जो वै जाँ गृहि गृहि जगन जागवै। —प्रिथीराज। स्त्री०[हिं० जागना] जागने की क्रिया या भाव। पु०=जगण।
जगनक—पुं०[देश०] महोवे के राजा परमाल के दरबार का एक प्रसिद्ध कवि।
जगना†—अ०[स० जागरण] १ जाग्रत होना। जागना। २ अग्नि, दीप-शिखा आदि का प्रज्वलित होना। जैसे—ज्योति जगना।
जगनी—स्त्री०[?]१. एक प्रकार का पौधा। २. उक्त पौधे के बीज जिनका तेल निकाला जाता है।
जगनु—पु०[स० जगन्नु] १ अग्नि। २ कीडा। ३. जतु। पुं०=जुगनूं।
जगन्नाथ—पु० [जगत्-नाथ ष० त०] १. जगत् के नाथ, ईश्वर। २. विष्णु। ३ उडीसा प्रदेश की पुरी नगरी के एक प्रसिद्ध देवता।
जगन्नाथ-क्षेत्र—पु०[ष० त०] उडीसा प्रदेश की पुरी नामक नगरी जो एक तीर्थस्थल है। जगन्नाथपुरी।
जगन्नाथ-धाम (न्)—पु०[ष० त०] जगन्नाथपुरी।
जगन्नियंता (तृ)—पु०[जगत्-नियतृ ष० त०] वह जो जगत् का नियत्रण करता हो। ईश्वर।
जगन्निवास—पु०[जगत्-निवास ष० त०] ईश्वर। परमेश्वर।
जगन्नु—पु० [स० जगत्√नम् (नम होना)+डु] १ अग्नि। २ कीडा। ३ जतु।
जगन्मगल—पु०[जगत्-मगल ब० स०] काली का एक कवच।
जगन्मय—पु०[स० जगत्+मय] विष्णु।
जगन्मयी—स्त्री०[स० जगन्मय+ङीप्] १ लक्ष्मी। २. वह शक्ति जो जगत् का सचालन करती है।
जगन्माता (तृ)—स्त्री०[जगत्-मातृ ष० त०] दुर्गा।
जगन्मोहिनी—स्त्री०[जगत्-मोहिनी ष० त०] १. दुर्गा। २ महामाया।
जगबंद*—वि०[स० जगत् वद्य] जगत् जिसकी वदना करे। जगद्वद्य।
जगमग, जगमगा—वि० [अनु०] १. जगमगाता हुआ। २. चमकदार।
जगमगाना—अ० [अनु० जग-मग] [भाव० जगमगाहट] किसी चीज पर प्रकाश पड़ने से उसका चमकने लगना। जगमग करना। जैसे—बिजली की रोशनी मे पडाल जगमगा रहा था। स० प्रकाश आदि से प्रज्वलित करना या चमकाना।
जगमगाहट—स्त्री०[हिं० जगमग] जगमगाने की अवस्था या भाव।
जगर—पुं०[स०√जागृ (जागना)+अच् पृषो० सिद्ध] कवच।
जगरन*—पु०=जागरण।
जगरनाथ—पु०=जगन्नाथ।
जगरमगर—वि०=जगमग।
जगरा—स्त्री०[स० शर्करा] खजूर के रस से बनी हुई खांड या चीनी।
जगल—पु० [स०√जन् (उत्पत्ति)+ड,√गल्+अच्, ज-गल, कर्म० स०] १. पीठी से बना हुआ मद्य जिसे पृष्टी भी कहते हैं। २. शराब की सीठी। कल्क। ३ मदन वृक्ष। मैंनी। ४ कवच। ५ गोमय। गोबर। वि० धूर्त। चालाक।
जगवाना—स०[हिं० जगाना का प्रे० रूप] किसी को जगाने मे प्रवृत्त करना। जगाने का काम दूसरे से कराना।
जगसूर—पु० [स०जगत्-सूर] राजा। उदा०—बिनती कीन्ह घालि गिउ पागा, ए जगसूर सीउ मोहि लागा—जायसी।
जगसेन—स्त्री०[हिं० जग+?] ससार-प्रसिद्ध। उदा०—स्यामि समुंद मोर निरमल, रतनसेनि जगसेनि।—जायसी।
जगहँसाई—स्त्री०[हिं० जग+हँसना] लोगो का किसी पर उसके कोई मर्यादा विरुद्ध काम करने पर हँसना। जगत् मे होनेवाली बदनामी।
जगह—स्त्री० [फा० जायगाह] १. कोई विशिष्ट भू-भाग या उसका विस्तार। स्थान। २ बीच मे होनेवाला अवकाश या विस्तार। ३ वह पद या स्थान जहाँ पर कोई काम करता हो। जैसे—इस समय कार्यालय मे कोई जगह खाली नही है। ४ अवसर। मौका। जैसे—हर बात अपनी जगह पर अच्छी मालूम होती है।
जगहर†—स्त्री०[हिं० जगना] जागते रहने की अवस्था या भाव। वि० जागता हुआ। जागनेवाला।
जगाजोति*—स्त्री०=जगमगाहट।
जगात†—पुं०=जकात।

जगाती†—पु० [अ० जकात=कर] १. कर उगाहने की क्रिया या भाव। २. कर उगाहनेवाला अधिकारी। उदा०—काहे को कर माँगती विरह जगाती आइ।—रसनिधि।

जगाना—स० [हिं० जगाना] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई जाग उठे। जागने मे प्रवृत्त करना। २ सचेत या सावधान करना या जागरूक करना। ३ तत्र, मत्र आदि के प्रसंग मे, किसी अलौकिक या दैवी शक्ति को जाग्रत करके अपने अनुकूल करने का प्रयत्न करना। जैसे—अलख जगाना, जादू जगाना। ४ धूमिल या मद्धिम चीज को उज्ज्वल और स्पष्ट करना।

जगार—स्त्री० [हिं० जागना] जागरण। जागति।

जगी—स्त्री० [देश०] मोर की जाति की एक प्रसिद्ध बडी चिडिया जिसका शिकार किया जाता है।

जगीत†—स्त्री०=जगत (कूएँ के ऊपर का चबूतरा)।

जगीर†—स्त्री०=जागीर।

जगीला*—वि० [हिं० जागना] [स्त्री० जगीली] १ जागता हुआ। जागा हुआ। २ जागने के कारण थका तथा आलस्य से भरा हुआ।

जगुरि—पु० [स०√गृ (निगलना)+किन्, द्वित्व, उत्व] जगम।

जगैया—वि० [हिं० जगाना] जगानेवाला।

जगौहाँ—वि० [हिं० जागना] १. बराबर जागता रहनेवाला। २ दूसरो को जगाने का प्रयत्न करता रहनेवाला।

जग्ग†—पु० [हिं० जग] जगत्।
*पु० [स० यज्ञ] यज्ञ।
†पु०=जग।

जग्य—पु०=यज्ञ।

जग्युपवीत†—पु०=यज्ञोपवीत।

जग्मि—पु० [स०√गम् (जाना)+कि, द्वित्व] वायु। हवा।
वि० जिसमे गति हो। गतिमान। गतिशील।

जघन—पु० [√हन् (मारना)+अच्, द्वित्व] १ पेड। (विशेषत स्त्रियो का)। २ चूतड़। ३ जघा। जाँघ। ४. सेना का पिछला भाग।

जघन-कूप—पु० [प० त०] चूतड के ऊपर का गड्ढा।

जघनकूपक—पु० [जघनकूप√कै (शब्द करना)+क] जघन-कूप। (दे०)।

जघन-चपला—स्त्री० [ब० स०] १. दुश्चरित्रा स्त्री। कुलटा। २ वह स्त्री जो बहुत तेजी से नाचती हो। ३. आर्या छद का एक भेद जिसका कोई पूर्वार्द्ध आर्या छद का और उत्तरार्द्ध चपला छद का होता है।

जघनी (निन्)—वि० [स० जघन+इनि] जिसके नितब बडे-बडे हो।

जघन्य—वि० [स० जघन+यत्] [भाव० जघन्यता] १ अतिम सीमा पर का। चरम। २ बहुत ही निंदनीय और बुरा। गर्हित। ३ क्षुद्र। नीच।
पु० १. नीच जाति का व्यक्ति। २ पीठ पर का पुट्ठे के पास का भाग।

जघन्यज—पु० [स० जघन्य√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ शूद्र। २ अत्यज।

जघन्य-भ—पु० [कर्म० स०] आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, भरणी और शतभिषा ये छ नक्षत्र।

जघ्नि—पु० [सं०√हन् (मारना)+किन्, द्वित्व] १. वह जो वध करता हो। २. वध करने का अस्त्र।

जघ्नु—वि० [सं०√हन्+कु, द्वित्व] वध करनेवाला।

जघ्रि—पु० [सं०√घ्रा (सूंघना)+कि, द्वित्व] सूंघनेवाला।

जचगी—स्त्री० [फा०] १ प्रसव। २ प्रसूतावस्था।

जचना—अ०=जँचना।

जचा—स्त्री०=जच्चा।

जच्चा—स्त्री० [फा० जच्च.] वह स्त्री जिसको हाल ही मे बच्चा हुआ हो। प्रसूता।

जच्चा-खाना—पु० [फा० जच खाना] सूतिका-गृह। सौरी।

जच्छ*—पु०=यक्ष।

जच्छपति*—पु०=यक्षपति।

जच्छेस*—पु०=यक्षेश्वर।

जज—पु० [स०√जज् (युद्ध करना)+अच्] योद्धा।
पु० [अ०] न्यायाधीश (दे०)।

जजना*—स० [स० यजन] १. आदर करना। २ पूजना।

जजमनिका—स्त्री० [हिं० जजमान] पुरोहिताई।

जजमान—पु०=यजमान।

जजमानी—स्त्री० [स० यजमान] १ यजमान होने की अवस्था, पद या भाव। २ ऐसी वृत्ति जो यजमानो के कृत्य कराने से चलती हो।

जजा—स्त्री० [अ० जजा] १ बदला। प्रतिफल। २ परलोक मे मिलने-वाला अच्छा या बुरा फल।

जजाति*—पु०=ययाति।

जजित—पु० [स० यज्ञ] यज्ञकर्ता। उदा०—सुकरि कमडल वारि, जजित आह्वान थान दिया।—चंदवरदाई।

जजिमान—पु०=यजमान।

जजिया—पु० [अ० जजिय] १ दड। २ मुसलमानी राज्य-काल मे अन्य धर्मवालो पर लगनेवाला एक प्रकार का कर।

जजी—स्त्री० [हिं० जज+ई (प्रत्य०)] १ जज होने की अवस्था, पद या भाव। २ जज की कचहरी।

जजीरा—पु० [अ० जज़ीर द्वीप।

जजीरानुमा—[पु० अ०] प्रायद्वीप।

जज्ज—पु०=जज (न्यायाधीश)।

जज्ञ*—पु०=यज्ञ।

जज्ब—वि० [अ० जज्ब] १. जो सोख लिया गया हो। शोषित। २. जो हडप लिया गया हो।

जज्बा—पु० [अ० जज्बा] १ भाव। भावना। २ जोश। ३. रोष।

जझर—पु० [हिं० झरना] लोहे की चद्दर का तिकोना टुकड़ा जो उसमें से तवे काटने के बाद बच रहता है।

जट—पु० [?] एक प्रकार का गोदना जो झाड के आकार का होता है।
पु० [हिं० जाट] १. पजाब मे खेती-बारी करनेवाली एक जाति। २. कृषक। किसान।

जटना—स० [स० जटन या हिं० जाट] धोखा देकर किसी की कोई चीज ले लेना। ठगना।
†स०=जडना।

जटल—स्त्री० [स० जटिल] व्यर्थ और झूठ-मूठ की बात। गप। बकवास।

मुहा०—जटल काफिये उड़ाना या मलाना=बेसिर-पैर की और व्यर्थ की बातें करना।

जटा—स्त्री०[√जट् (परस्पर सलग्न होना)+अच्—टाप्] १. सिर के लबे तथा आपस मे गुथे और लिपटे हुए बालो की ऐसी लट जो कभी चिकनाई या सुलझाई न गई हो। जैसे—ऋषि-मुनियो या साधुओ की जटा। २. बालो जैसी किसी वस्तु का चिपका हुआ रूप। जैसे—नारियल की जटा। ३. पेड़-पौधो की जड़ो के आपस मे गुथे हुए पतले-पतले रेशो या सूतो का समूह। झकरा। ४. जटामासी। ५. जूट। पाट। ६ केवाँच। ७ वेद-पाठ का एक प्रकार जिसमे मत्र के दो या तीन पदो को क्रमानुसार पूर्व और उत्तरपद पहले पृथक् पृथक् और फिर मिलाकर दो बार पढे जाते है। ८. शतावर। ९. बालछड।

जटा-चीर—पु० [ब० स०] शिव।

जटा-जूट—पु०[ष० त०] जटा को लपेटकर बनाया जानेवाला जूडा।

जटा-ज्वाल—पु०[ब०स०] दीया।

जटा-टंक—पु०[ब०स०] शिव।

जटाटीर—पु०[स० जटा√अट् (प्राप्त होना)+ईरन्] शिव।

जटा-धर—वि०[ष०त०]=जटाधारी।

जटा-धारी (रिन्)—वि०[स० जटा√धृ (रखना)+णिनि] जिसके सिर पर जटा हो।

पु० १. शिव। २ ऐसा साधु, जिसके सिर पर जटा हो। ३. मरसे की जाति का एक पौधा।

जटाना—अ० [हिं० जटना] धोखे मे आकर ठगा जाना।

जटा-पटल—पु०[ब०स०] वेदपाठ का एक जटिल क्रम।

जटामासी—स्त्री० [जटा√मन् (जानना)+स, दीर्घ, ङीप्] औषध के काम आनेवाली एक प्रकार की सुगधित वनस्पति। बालछड।

जटा-माली (लिन्)—पु० [जटा-माला, ष०त० +इनि] शिव।

जटामासी—स्त्री०=जटा-मासी।

जटायु—पु०[स० जटा√या (गति)+कु] एक प्रसिद्ध गिद्ध जिसने सीता को हरण करके ले जाते हुए रावण से युद्ध किया था और जो उसी के हाथो मारा गया था। यह सूर्य के सारथी अरुण का पुत्र था जो उसकी श्येनी नामक पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

जटाल—वि०[स० जटा+लच्] जटा से युक्त। जटावाला।

पु० [स०] १ वट वृक्ष। बरगद। २. कचूर। ३ मुष्कक। मोरवा। ४. गुग्गुल।

जटाला—स्त्री०[स० जटाल+टाप्] जटामासी।

जटाव—स्त्री० [देश०] कुम्हारो की बोली मे वह मिट्टी जिससे वे बरतन आदि बनाते है।

पु०[हिं० जटना] जटने या जटे जाने अर्थात् ठगने या ठगे जाने की क्रिया या भाव।

जटावती—स्त्री०[स० जटा+ मतुप्, वत्व, ङीप्] जटामासी।

जटा-वल्ली—स्त्री० [उपमि०स०] १ रुद्र जटा। शकर जटा। २. गध-मासी नाम की वनस्पति।

जटासुर—पु०[जटा-असुर मध्य०स०] १. एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका वध भीम ने उस समय किया था जब वह ब्राह्मण वेश धारण करके द्रौपदी को हर कर ले जा रहा था। २. एक प्राचीन देश।

जटित—भू०कृ० [स०√जट् (जुडना)+क्त +इतच्] जडा हुआ। जैसे—रत्नजटित मुकुट या सिंहासन।

जटियल—वि०[स० जटिल] निकम्मा। रद्दी।

जटिल—वि० [स० जटा+इलच्] १. जटावाला। जटाधारी। २ (व्यक्ति) जिसके सिर पर जटा हो। ३. (कार्य) जो इतना अधिक उलझा हुआ हो कि सरलता से सपन्न न किया जा सके। ४ (बात) जो इतनी पेचीली हो कि जल्दी समझ मे न आ सके। ५ क्रूर।

पु० १ शिव। २ जटामासी। ३ ब्रह्मचारी। ४ सिंह।

जटिलक—पु० [स० जटिल+कन्] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ उक्त ऋषि के वशज।

जटिलता—स्त्री०[स० जटिल+तल्—टाप्] जटिल होने की अवस्था, गुण या भाव।

जटिला—स्त्री०[स० जटिल+टाप्] १ ब्रह्मचारिणी। २. जटामासी। ३ पिप्पली। पीपल। ४ वचा। वच। ५ दोना। ६ एक ऋषि-कन्या जिसका विवाह सात ऋषि पुत्रो से हुआ था। (महाभारत)

जटी (टिन्)—वि०[स० जटा+इनि] जटाधारी।

पु०१ शिव। २. बरगद।

स्त्री०[√जट्√इन्—ङीप्]=जटामासी।

जटुल—पु०[स०√जट्+उलच्] १ त्वचा पर का काला प्राकृतिक दाग। लच्छन। २ शरीर के अगो मे होनेवाले चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार (स्थल भेद के कारण) शुभ या अशुभ फलदायक माने जाते हैं।

जट्टा—पु०[हिं० जाट] एक प्रसिद्ध खेतिहर जाति। उदा०—ब्रज के गूजर जट्टा।—भगवत रसिक।

जठर—पु० [√जन् (उत्पन्न होना)+अर, ठ आदेश] १ पेट। २ पेट का भीतरी भाग। ३ किसी वस्तु का भीतरी भाग। ४. एक उदर रोग जिसमे पेट फूलने लगता है और भूख बन्द हो जाती है। ५ शरीर। ६. एक पर्वत। (पुराण)

वि० १ जो कठोर, कडा या दृढ हो। २ पुराना। ३ वृद्ध। ४ बँधा या बाँधा हुआ।

जठर-गद—पु०[ष०त०] आँत मे होनेवाला विकार।

जठर-ज्वाला—स्त्री० [ष०त०] १ पेट मे लगनेवाली भूख अथवा इस भूख से होनेवाला कष्ट। २ शूल। (दे०)

जठराग्नि—स्त्री०[जठर-अग्नि, मध्य०स०] जठर या पेट के अदर का वह शारीरिक ताप जिससे खाया हुआ अन्न पचता है।

जठराजि*—स्त्री०=जठराग्नि।

जठरानल—पु०[जठर-अनल मध्य०स०] जठराग्नि। (दे०)

जठरामय—पु०[जठर-आमय] १. अतिसार रोग। २ जलोदर (रोग)।

जठारि*—पु० [देश०] पाला। उदा०—पूस मास जठारि पडत वा, जस कुठार के घाई।—ग्रा० गीत।

जठेरा—वि०[हिं० जेठ, स० ज्येष्ठ] [स्त्री० जठेरी] जो अवस्था मे किसी से अपेक्षाकृत बडा हो। जेठा।

जड़—वि० [√जल् (जमना)+अच्, ड आदेश] १. जिसमे जीवन न हो। निर्जीव। २ जिसमे चेतना-शक्ति न हो। अचेतन। ३. जिसमे कुछ भी बुद्धि या ज्ञान विशेषत. व्यावहारिक बुद्धि या ज्ञान न हो।

४. वेद पढने मे असमर्थ। ५ ठंढा। ६ ठढ आदि से ठिठुरा हुआ। स्त्री०[स० जटा] १ पेड-पौधो आदि का नीचेवाला वह मूल भाग जो जमीन के अन्दर रहता है और जो जमीन मे से रस खींचकर उन पेड-पौधो का पोषण और वृद्धि करता है। मूल।

मुहा०—(किसी की) जड़ उखाड़ना, काटना या खोदना=(क) ऐसा काम करना जिससे कोई फिर उभड़ या पनप न सके। (ख) किसी की बहुत बडी हानि करना। **(किसी की) जड़ जमना**=ठीक प्रकार से चल या बढ सकने की स्थिति मे हो जाना। **जड़ जमाना**=ऐसा काम या प्रयास करना जिससे कोई किसी स्थान पर टिककर अपने कार्य मे सफलतापूर्वक अग्रसर होता जाय। **(किसी की) जड़ (में) लगना**=किसी की बहुत बडी हानि करने मे प्रयत्नशील होना। उदा०—सउतिनि जर लागल हो रामा।—ग्रा० गीत। **जड़ो मे तेल या पानी देना**=समूल नाश करने का प्रयत्न करना या कुचक्र रचना।

२ नीव। आधार-स्थल। जैसे—आपको पहले सस्था की जड मजबूत करनी चाहिए। ३. किसी चीज का बिलकुल नीचेवाला भाग। जैसे—नाखून को जड से मत काटो। ४. वह भाग या स्थल जिसमे कोई चीज गडी या फँसी हुई हो। जैसे—दाँत या बाल को जड से निकालो। ५ किसी कार्य का मूल कारण या प्रेरक। जैसे—चलो, इस झगडे की जड ही कट गई।

जड आमला—पु० [हिं० जड+आमला] भुँइ आँवला।

जड़कना—अ० [हिं० जड़] जड के समान हो जाना। निश्चल या स्तब्ध होना।

जड़-काला—पु० [हिं० जाडा+स० काल] जाडे का समय। सरदी के दिन।

जड़-जगत्—पु० [कर्म०स०] ऐसा जगत् जो जड के रूप मे हो। पाँच भौतिक पदार्थो की समष्टि। जड-प्रकृति।

जड़ता—स्त्री० [स० जड+तल्—टाप्], १ जड (अर्थात् निर्जीव, अचेतन या मूर्ख) होने की अवस्था, गुण या भाव। २ साहित्य मे एक सचारी भाव और पूर्वराग की दस दशाओ मे से एक जो ऐसी अवस्था का सूचक है जिसमे मनुष्य आश्चर्य या भय के कारण इतना अधिक स्तब्ध हो जाता है कि उसे अपने कर्त्तव्य की ही सुध नही रहती।

जड़ताई*—स्त्री०=जडता।

जडत्व—पु०[स० जड√त्व]=जडता।

जड़ना—स०[स० जटन] १ किसी चीज को किसी दूसरी चीज के तल मे ठोक या धँसाकर इस प्रकार जमाना या बैठाना कि वह अपने स्थान से इधर-उधर न हो सके। जड जमाते हुए कही कुछ बैठाना या लगाना। जैसे—तख्ते या दीवार मे कील जडना। २ किसी प्रकार के अवकाश मे कोई चीज इस प्रकार जमाकर बैठाना कि वह अपने स्थान से इधर-उधर न हो सके। जैसे—अँगूठी मे नगीना जडना, दीवार बनाते समय उसमे खिडकी या दरवाजे की चौखट जड़ना। ३ जोर से आघात या प्रहार करना। जैसे—थप्पड, मुक्का या लाठी जडना। ४ किसी के सबध मे कोई बात किसी दूसरे से चोरी से कहना। चुगली खाना। लगाना। जैसे—(क) उन्होने सब बाते भाई साहब से जड दी। (ख) किसी ने तुम्हे जड़ दिया है इसलिए तुम ऐसी बाते करते हो।

जड़-पदार्थ—पु० [कर्म०स०] अचेतन पदार्थ।

जड़-प्रकृति—स्त्री०[कर्म०स०] जड-जगत्। (दे०)

जड-भरत—पु० [उपमि० स०] आगरिस गोत्री एक ब्राह्मण जो ससार की आसक्ति से बचने के लिए जडवत् रहते थे, इसलिए जड़ भरत कहलाते थे।

जड़-वाद—पु०[प०त०] एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार चेतन आत्मा का अस्तित्व नही माना जाता और सब कुछ जडता का ही विकार माना जाता है।

जड़वादी (दिन्)—वि० [स० जडवाद+इनि] जडवाद का अनुयायी या समर्थक।

जड़वाना—स०[हिं० जडना का प्रे० रूप] जडने का काम दूसरे से कराना।

जड़-विज्ञान—पु०[प०त०]=पदार्थ विज्ञान।

जड़वी—स्त्री०[हिं० जड] धान का वह छोटा पौधा जिसे जमे अभी थोडे ही दिन हुए हो।

जड़हन—पु०[हिं० जड+हनन=गाडना] वह धान जिसके पौधे को एक जगह से उखाडकर दूसरी जगह पर रोपा जाता है।

जडा—स्त्री०[स० जड +णिच्+अच्—टाप्]१ भुईआमला। २ केवाँच। कौछ।

जडाई—स्त्री०[हिं० जडना] जडने की क्रिया, भाव या मजदूरी। *स्त्री०=जडता।

जड़ाऊ—वि०[हिं० जडना] (वह आभूषण) जिसमे नग, मोती, रत्न आदि जडे हुए हो।

जड़ान—स्त्री०[हिं० जडना] जडे जाने की क्रिया या भाव।

जड़ाना—स०=जडवाना।

†अ० जडा जाना।

अ० [हिं० जाडा] सरदी से ठिठुरना। उदा०—नगन जडाती ते अब नगन जडाती हैं।—भूषण।

जड़ाव—पु०[हिं० जडना] जडने या जडे जाने की क्रिया, ढग या भाव।

जडावट—स्त्री०=जडाव।

जडावर—पु०[हिं० जाडा] १ जाडे मे पहनने के वस्त्र। २ वे वस्त्र जो किसी कर्मचारी को अथवा नौकर, मजदूर आदि को पहनने के लिए जाडे के दिनो मे दिये जाते हैं।

जड़ावर्त—पु० [स० जड़-आवर्त्त प०त०] दार्शनिक और धार्मिक क्षेत्रो मे अज्ञान का आवर्त्त या चक्कर।

जड़ावल†—पु०=जडावर।

जड़ित—वि० [स० जटित] १ जडा हुआ। २ जकडा हुआ। (असिद्ध प्रयोग)

जड़िमा—स्त्री० [स० जड+इमनिच्] १ जडता। जडत्व। २ ऐसी अवस्था जिसमे मनुष्य इस प्रकार जड़वत् हो जाता है कि उसे भले-बुरे, सुख-दु ख या हानि-लाभ का ज्ञान ही नही होने पाता।

जडिया—पु०[हिं० जडता] वह सुनार जो गहनो पर नगीने आदि जडने का काम करता हो। कुदनसाज।

जड़ी—स्त्री०[हिं० जड] किसी वनस्पति की वह जड जो औषध के रूप मे काम आती हो।

जड़ी-बूटी—स्त्री० [हिं०] औषध के काम आनेवाली जंगली वनस्पतियाँ और उनकी जड़े।

जड़ीभूत—वि० [स०जड+च्वि√भू (होना)+क्त, दीर्घ] जो जड अथवा जड के समान अचेतन हो गया हो। जिसमे हिलने-डुलने की शक्ति न रह गई हो।
जड़ीला—वि०[हिं० जड+ईला (प्रत्य०)] जिसमें जड हो। जड से युक्त।
जड़ुआ—पु०[हिं० जडना] पैर के अँगूठे मे पहनने का एक आभूषण।
जड़ुल—पु०[स० जटुल] त्वचा पर का काला दाग। लच्छन।
जड़ैया—स्त्री०[हिं० जडा+ऐया (प्रत्य०)] वह ज्वर जिसके आने के समय जाडा लगता हो। जूडी। मलेरिया।
†वि०=जडिया (=जडनेवाले)।
जढ़†—वि०[भाव० जढता]=जड।
†स्त्री०=जड।
जढ़ाना—अ०=जडाना।
जण—पु०=जन।
जत—वि०[स० यत्] जितना। जिस मात्रा का।
क्रि० वि० जिस मात्रा मे।
पु०[स० यति] ढोलक, तवले आदि मे, एक प्रकार का ठेका या ताल।
स्त्री०=यति (कविता की)।
जतन†—पु०=यत्न।
जतनी—वि० [स० यत्नी] १ यत्न करनेवाला। २ चालाक या धूर्त्त।
स्त्री०[स०यत्न?] सूत कातने के चर्खे की वह रस्सी जो उसकी चरखी के पंखो पर बँधी रहती है।
जतलाना—स०=जताना।
जतसर—पु०=जँतसर।
जताना—स०[स० ज्ञाप्त] १ किसी को किसी बात की जानकारी कराना। ज्ञात कराना। बतलाना। २ पूर्व सूचना देना। सचेत करने के लिए पहले से सूचना देना। चेताना।
जतारा—पु०[स० जाति] कुल। जाति। वश।
जति*—पु०=यति।
वि०[स०√जित्] जीतनेवाला।
जती—पु०=यति।
जतु—पु०[स०√जन् (उत्पन्न होना)+उ, त आदेश] १. वृक्ष मे से निकलनेवाला गोद। २ लाक्षा। लाख। ३ शिलाजीत।
जतुक—पु० [स० जतु √कै (प्रतीत होना)+क] १ हीग। २ लाख। ३. त्वचा पर का काला चिह्न। लच्छन।
जतुका—स्त्री० [स० जतुक+टाप्] १. पहाडी नामक लता जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती है। २ चमगादड। ३ लाक्षा। लाख।
जतुकारी—स्त्री०[स० जतुक√ऋ (गमनादि)+अण्—ङीष्] पपडी नामक लता।
जतु-कृष्णा—स्त्री०[उपमि०स०] जतुका या पपडी नामक लता।
जतु-गृह—पु०[मध्य०स०] १ घास-फूस की झोपड़ी। २ लाख का वह घर जो वारणावत मे दुर्योधन ने पाडवो के रहने के लिए बनवाया था।
जतुनी—स्त्री०[स० जतु√नी (पहुँचाना)+क्विप्] चमगादड़।
जतु-पुत्रक—पु० [स० जतु-पुत्र मध्य०स०, √कै (प्रतीत होना)+क] १. शतरज का मोहरा। २. चौसर की गोटी।
जतु-रस—पु०[प०त०] राख से बनाया जानेवाला लाल रग जिसे स्त्रियाँ पैरो, हाथो आदि पर लगाती हैं। अलक्तक। आलता। महावर।
जतूका—स्त्री०[स० जतुका, नि० दीर्घ] जतुका। (दे०)
जतेक*—क्रि० वि० [स० यत् या हिं० जितना+एक] जिस मात्रा मे। वि० जितना।
जत्त—पु०=जगत्।
*पु०=यति।
जत्था—पु० [स० यूथ] एक ही वर्ग, विचार या सप्रदाय के लोगो का समूह जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी विशिष्ट उद्देश्य से जाता हो। जैसे—यात्रियो का जत्था, स्वय-सेवकों का जत्था।
जत्र—*क्रि० वि०=यत्र।
जत्रानी—स्त्री०[?] रुहेलखड मे बसी हुई जाटो की एक जाति।
जत्रु—पु०[स०√जन् (उत्पत्ति)+रु, त आदेश] धड के ऊपरी भाग मे गले के नीचे और छाती के ऊपर दोनो ओर की अर्द्ध-चद्राकार हड्डियाँ। हँसली।
जत्रुक—पु०[स० जत्रु+कन्]=जत्रु।
जत्वश्मक—पु०[स० जतु-अश्मन्, मध्य० स०,+कन्] शिलाजीत।
जथा*—अव्य०=यथा।
स्त्री०[हिं० गथ] पूँजी। धन।
स्त्री०[स यूथ हिं० जत्था] मडली।
जथारथ—वि०=यथार्थ।
जद—अव्य०[स० यदा] १. जिस समय। २ जब कभी। ३ यदि।
स्त्री० [फा० जद] १ आघात। चोट। २ लक्ष्य। निशाना। ३ हानि। नुकसान।
ज़दनी—वि०[फा०] मारने योग्य। वाध्य।
स्त्री० मारने की क्रिया या भाव।
जदपि*—अव्य०=यद्यपि।
जदवद—पु०=जद्‌वद्।
जदल—पु०[अ०] युद्ध। लडाई।
जदवर, जदवार—पु० [अ० जडदवार] निर्विषी नामक ओषधि। निर्विसी।
ज़दा—वि०[फा० ज़दा] १. जिस पर किसी प्रकार का आघात हुआ हो। २ पीडित।
जदि*—अव्य०=यदि। २=जब।
जदीद—वि०[अ०] १. नया। नवीन। २. आधुनिक। हाल का।
जदु*—पु०=यदु।
जदुकुल*—पु०=यदुकुल।
जदुपति*—पु०[स० यदुपति] श्रीकृष्ण।
जदुपाल—पु०[स० यदुपाल] श्रीकृष्ण।
जदुपुर—पु०=यदुपुर (मथुरा)।
जदुबंसी*—पु०=यदुवशी।
जदुबीर*—पु०=यदुवीर।
जदुराई*—पु०[स० यदुराज] श्रीकृष्णचद्र।
जदुराज—पु०[स० यदुराज] श्रीकृष्णचद्र।

जदुराम—पु०[स० यदुराम] यदुकुल के राम। वलदेव।
जदुराय—पु०[स० यदुराज] श्रीकृष्णचद्र।
जदुवर*—पु०[स० यदुवर] श्रीकृष्णचद्र।
जदुवीर—पु०=यदुवीर।
जद्—पु०[अ०] १ दादा। पितामह। २ पूर्वज। वि०[अ० ज्यादा] अधिक। ज्यादा। वि०[फा० जद।] प्रचड। प्रवल। अव्य०[स० यदि] १ जव। २ जव कभी।
जद्दपि*—अव्य०=यद्यपि।
जद्बद्—पु०[स० यत्+अवद्य] अकथनीय या अश्लील वात।
जद्दव—पु०[स० यादव] श्रीकृष्ण। उदा०—का चहुआनि किंत्ति, जेपि जद्दव रस चगी।—चदवरदाई।
जद्दी—वि०[अ०] (वह अधिकार या सपत्ति) जो वाप-दादाओं से उत्तराधिकार मे मिलती हो। वाप-दादाओं के समय से चला आनेवाला। स्त्री० कोशिश। प्रयत्न।
जद्दौ—पु०[स० यादव] यादववशी राजा।
जनंगम—पु०[स० जन√गम् (जाना)+ खच्, मुम् आगम] चाडाल।
जन—पु०[सं०√जन्(उत्पन्न होना)+अच्] १ लोक। लोग। २ प्रजा। ३. सेवक। जन। ४ अनुयायी। अनुचर। ५ समुदाय। समूह। ६. सात लोको मे से पाँचवाँ लोक।
अव्य०=जनि (नही)।
जन-आंदोलन—पु० [प० त०] वह आदोलन जिसमे जनता अयवा वहुत से लोग भाग ले।
जनक—वि०[√जन्+णिच्+णवुल्—अक]जननेवाला। जन्म देनेवाला। पु० १ पिता। २ मिथिला के एक राजवश की उपाधि। ३ मिथिला के राजा जिनकी सीता कन्या थी। ४ शवरासुर का चौया पुत्र। ५ एक वृक्ष का नाम।
जनक-तनया—स्त्री० [प० त०] सीता।
जनकता—स्त्री० [स० जनक+तल्-टाप्] जनक होने की अवस्था या भाव।
जनक-नंदिनी—स्त्री०[प० त०] सीता।
जनक-पुर—पु०[प० त०] मिथिला की राजधानी।
जनक-सुता—स्त्री०[प० त०] सीता।
जनकात्मजा—स्त्री०[जनक-आत्मजा प० त०] सीता।
जन-कारी (रिन्)—पु० [जन√कृ (विखेरना)+णिनि, उप० स०] अलक्तक। अलक्तका। अलता।
जनकौर—पु०[हिं० जनक+औरा (प्रत्य०)] १ जनकपुर। २ राजा जनक के वशज।
जनखा—पु० [फा० जन्ख] १. वह व्यक्ति जिसके कार्य-व्यापार या हाव-भाव औरतो जैसे हो। २ वह व्यक्ति जिसमे किसी प्रकार के शारीरिक विकार के कारण वच्चे उत्पन्न करने की शक्ति न हो। नपुसक।
जन-गणना—स्त्री०[प० त०] किसी देश या राज्य के समस्त जनो अर्थात् निवासियो की गणना। वह कार्य जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इस देश मे कुल कितने व्यक्ति रहते हैं।
जनगी—स्त्री०[देश०] मछली।
जनघर—पु०[स० जन-गृह] मडप। (डिं०)
जन-चक्षु (स्)—पु०[प० त०] सूर्य।
जन-चर्चा—स्त्री०[स० त०] वह वात जिसकी चर्चा सव लोग करते या कर रहे हो। सर्वसाधारण मे फैली हुई वात। जनश्रुति।
जन-जागरण—पु०[प० त०] जनता के जागरूक होने की स्थिति या भाव।
जन-जाति—स्त्री०[प० त०] जगलो, पहाडो आदि पर रहनेवाली ऐसी असभ्य जाति या लोगो का वर्ग जो साधारणत. एक ही पूर्वज के वशज होते हैं और जिनका प्राय एक ही पेशा, एक-जैसे विचार और एक जैसी रहन-सहन होती है।
जनड़ी†—स्त्री०[स० जननी] माँ। माता। (स्त्रियाँ)
जन-तंत्र—पु० [प० त०] वह शासन प्रणाली जिसमे देश या राज्य का शासन जनता द्वारा स्वय अयवा जनता के प्रतिनिधियो द्वारा होता हो।
जनता—स्त्री०[स० जन+तल्-टाप्] १ जन का भाव। २ किसी देश या राज्य मे रहनेवाले कुल व्यक्तियों की सज्ञा। प्रजा। जन-साधारण।
जन-त्रा—स्त्री०[जन√त्रै (रक्षा करना)+क] छाता।
जनयोरी—स्त्री०[देश०] कुकडवेल। वदाल।
जन-देव—पु०[प० त०] १ राजा। २ महाभारत मे वर्णित मिथिला का एक राजा।
जन-धन—पु०[द्व० स०] मनुष्य और उसकी सपत्ति।
जनधा—पु०[स० जन√धा (रखना)+क्विप्] अग्नि। आग।
जनन—पु०[सं०√जन् (उत्पत्ति)+ल्युट्-अन] १ जनने अर्थात् सतान को जन्म देने की क्रिया या भाव। २ उत्पत्ति। ३ आविर्भाव। ४ [√जन्+णिच्+ल्यु-अन] पिता। ५ कुल। वश। ६. ईश्वर।
जनन-गति—स्त्री०[प० त०] किसी एक वर्ष मे किसी एक स्थान पर वसे हुए एक हजार व्यक्तियो के पीछे जन्मे हुए वच्चो को सख्या। (वर्यरेट)
जनना—स०[स० जनन] जन्म देकर वच्चो को अस्तित्व मे लाना। जन्म देना। प्रसव करना।
जननाशौच—पु०[स० जनन-अशौच तृ० त०] वह अशौच जो घर मे वच्चे के जन्म लेने पर लगता है। वृद्धि।
जननि—स्त्री०=जननी।
जननिर्देश—पु० [सं०] आधुनिक राजनीति मे, जनता के प्रतिनिधियो, विधान सभाओ आदि के निश्चयो या प्रस्तावित कार्यो आदि के सबध मे की जानेवाली वह व्यवस्था जिसके अनुसार यह जाना जाता है कि मत-दाता वर्ग उस वात के पक्ष मे है या नही। (रेफरेण्डम)
जननी—स्त्री०[स०√जन्+अनि-ङीप्]जन्म देने वाली स्त्री। माँ। माता।
जननेंद्रिय—स्त्री०[स० जनन-इद्रिय प० त०] वह इद्रिय जो जनने (जैसे-योनि) या जनाने (जैसे-लिंग) का काम करती हो।
जन-पद—पु० [व० स०] [वि० जान-पद, जानपदिक, जनपदीय] १ मनुष्यो से वसा हुआ स्थान। वस्ती। २ किसी राज्य की वह समस्त भूमि जिसमे केवल राजधानी का क्षेत्र सम्मिलित न हो। राजधानी के अतिरिक्त वाकी सारा राज्य। ३. किसी देश का वह अंश या भाग जिसमे एक ही तरह की वोली वोलनेवाले लोग वसते हो। सूवा।
जनपद-कल्याणी—स्त्री० [प० त०] वेश्या।
जनपदी(दिन्)—पुं० [सं० जनपद+इनि] जन-पद का शासक।

जनपदीय—वि० [सं० जनपद+छ—ईय] जनपद-संबंधी। जनपद का।

जन-पाल—पुं० [जन√पल् (पालन करना)+णिच्+अण्, उप० स०] १ मनुष्यों का पालन करनेवाला व्यक्ति। २. राजा। ३ सेवक।

जन-प्रवाद—पुं०[ष० त०] जनता में फैली हुई कोई बात।

जन-प्रिय—वि०[ष० त०] [भाव० जनप्रियता] १ (व्यक्ति) जो जनता को प्रिय हो। जैसे—जनप्रिय नेता। २ (बात आदि) जिसे जन-साधारण उचित या वांछनीय समझते हों। जैसे—जनप्रिय विचार या सिद्धांत। ३ धनिया। ४ सहिंजन का पेड़।

जन-प्रिया—स्त्री०[ष० त०] हुलहुल का साग।

जनबगुला—पुं०[सं० जन+हिं० बगुला] बगुलों की एक जाति।

जनम*—पुं०[सं० जन्म] १ जन्म। २. जीवन-काल। आयु। जिंदगी।
मुहा०—जनम गँवाना या घालना=व्यर्थ जीवन नष्ट करना। उदा०—देखत जनम आपनो घालै। —कबीर। जनम हारना=(क) व्यर्थ सारा जीवन बिताना। (ख) जन्म भर किसी का दास होकर रहने की प्रतिज्ञा करना।

जनमघूँटी—स्त्री०[हिं० जनम+घूँटी] वह घूँटी जो बच्चों को जन्म लेने के बाद कुछ दिनों तक दी जाती है।
मुहा० (किसी बात का) जन्म-घूँटी में पड़ना=जन्म से ही (किसी बात का) अभ्यास या चसका होना।

जनम-जला—वि०[हिं० जनम+जलना] [स्त्री० जनम जली] अभागा। भाग्यहीन।

जन-मत—पुं०[ष० त०] १. आधुनिक राजनीति में किसी विशिष्ट प्रदेश या स्थान के वयस्क निवासियों का वह मत जो किसी प्रकार की संधि या सार्वराष्ट्रीय संस्था के निर्णय के अनुसार यह जानने के लिए लिया जाता है कि वे लोग किस अथवा किस के राज्य या शासन में रहना चाहते हैं। (प्लेबिसाइट) २ दे० 'लोकमत'।

जनमधरती—स्त्री०=जन्मभूमि।

जनमना—अ०[सं० जन्म] १ जन्म लेकर अस्तित्व में आना। २ खेल में मरे हुए व्यक्ति का या मरी हुई गोटी का फिर से खेल में सम्मिलित होने के योग्य होना।
स० संतान को जन्म देना। प्रसव करना।

जनमपत्री—स्त्री०=जन्मपत्री।

जन-मरक—पुं०[ष० त०] वह बीमारी या रोग जिससे बहुत से लोग मरते हों। महामारी।

जन-मर्यादा—स्त्री०[ष० त०] लौकिक आचार या रीति।

जनमसँघाती—वि०[हिं० जनम+संघाती] १ जिसका साथ जन्म से ही रहा हो। २ जो जन्म भर साथ रहे।
पुं० मित्र। घनिष्ठ मित्र।

जनमाना—स०[हिं० जनम] १ प्रसूता को प्रसव कार्य में सहायता देना। २=जनमना।

जनमारो*—पुं०=जन्म।

जन-मुरीद—वि०[फा० जन+मुरीद] (व्यक्ति) जो अपनी पत्नी का अंधभक्त हो। पत्नी का गुलाम।

जनमेजय—पुं [सं० जन√एज् (कँपाना)+णिच्+खश्, मुम्]=जन्मेजय।

जन-यात्रा—स्त्री०[सं० ष० त०] बहुत से लोगों का मिल-जुलकर प्रदर्शन आदि के लिए शहर के प्रमुख कूचों, बाजारों आदि में से होकर जाना। जलूस।

जनयिता (तृ)—पुं० [सं०√जन् (उत्पत्ति)+णिच्+तृच्] [स्त्री० जनयित्री] पिता। बाप।

जन-रंजन—वि० [ष० त०] जनता का रंजन करनेवाला।

जनरल—पुं० [अं०] सेना का एक बहुत बड़ा अधिकारी। सेनानायक। सेना-पति।

जन-रव—पुं०[ष० त०] १ लोगों का कोलाहल। शोर। २ [सं० त०] अफवाह। जनश्रुति।

जनवरी—स्त्री०[अं० जनअरी] ईसवी सन् का पहला महीना।

जन-वल्लभ—पुं०[ष० त०] श्वेत रोहित का पेड़। सफेद रोहिड़ा।
वि० जनता का प्यारा। जन-प्रिय।

जनवाई—स्त्री०[हिं० जनवाना] १ जनवाने अर्थात् प्रसव में सहायक होने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. दे० 'जनाई'।

जन-वाद—पुं० जनरव। (दे०)

जनवाना—स० [हिं० 'जनना' का प्रे० रूप] [भाव० जनवाई] जनने अर्थात् प्रसव करने में सहायक होना।
स० [हिं० 'जानना' का प्रे० रूप] जानने या ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होना। ज्ञात या विदित कराना। जनाना। (दे०)

जन-वास—पुं० [ष० त०] १ मनुष्यों के बसने या रहने का स्थान। २=जनवासा।

जनवासा—पुं०[सं० जनवास] वह स्थान जहाँ पर बराती ठहरते या ठहराये जाते हैं। बरातियों के ठहरने की जगह।

जन-शून्य—वि०[तृ० त०] सुनसान। निर्जन।

जन-श्रुत—वि०[स० त०] १. जिसके संबंध में लोगों ने सुना हो। २ प्रसिद्ध।

जन-श्रुति—स्त्री०[ष० त०] १ वह बात जिसे लोग परंपरा से सुनते चले आये हों। २ अफवाह।

जन-संख्या—स्त्री०[ष० त०] १ किसी प्रदेश, राज्य या स्थान पर बसे हुए कुल लोग। २. उक्त बसे हुए लोगों की संख्या।

जन-साधारण—पुं०[कर्म० स०] १. जनता। २. समाज का कोई एक व्यक्ति।

जन-सेवक—पुं०[ष० त०] १. वह जो जन-साधारण या जनता की सेवा के काम करता हो। २. दे० 'लोक-सेवक'।

जन-सेवा—स्त्री०[ष० त०] ऐसे काम जो जन-साधारण या जनता के उपकार या हित के लिए हों। (पब्लिक सर्विस)

जन-स्थान—पुं०[ष० त०] दंडकारण्य। दंडकवन।

जन-हरण—पुं०[ष० त०] एक दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीस लघु और एक गुरु होता है।

जन-हित—पुं० [ष० त०] १. जनता या जन-साधारण का हित। २ जनता के हित का काम।

जन-हीन—वि०[तृ० त०] निर्जन।

जनांत—पुं०[जन-अंत] १. वह स्थान जहाँ मनुष्य न रहते हों। २ वह प्रदेश जिसकी सीमा निश्चित हो। ३ यम।
वि० मनुष्यों का अंत या नाश करनेवाला।

जनांतिक—पु०[जन-अतिक प० त०] नाटक मे, ऐसी साकेतिक बात-चीत जिसका आशय औरो की समझ मे न आता हो।

जना—स्त्री० [स०√जन्+णिच्+अ–टाप्] १ उत्पत्ति। पैदाइश। २. माहिष्मती के राजा नीलध्वज की स्त्री।
पु०=जन (आदमी)।

जनाई—स्त्री० [हिं० जनना] १ जनाने अर्थात् प्रसव कराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ प्रसव मे सहायक होनेवाली दाई।
स्त्री० [हिं० जनाना=जतलाना] किसी बात का परिचय या परिज्ञान कराने की क्रिया या भाव।

जनाउ*—पु०=जनाव।

जनाकीर्ण—वि०[जन-आकीर्ण तृ० त०] १ (प्रदेश) जिसमे बहुत अधिक व्यक्ति बसे हुए हो। घनी बस्तीवाला। २ (स्थान) जो मनुष्यो से भरा हुआ हो।

जनाचार—पु०[जन-आचार प० त०] लोकाचार।

जनाजा—पु०[अ० जनाज] १. शव। २ अरथी या वह सदूक जिसमे मुसलमान लोग शव रखकर कब्रिस्तान ले जाते है।

जनाती—पु[हिं० बराती का अनु० ?] विवाह के अवसर पर कन्या-पक्ष के लोग। घराती।

जनाधिनाथ—पु०[जन-अधिनाथ प० त०] जनाधिप।

जनाधिप—पु०[जन-अधिप प० त०] १ राजा। २ विष्णु।

जनानखाना—पु० [फा० जनान खान] घर या महल का वह भीतरी भाग जिसमे औरते या रानियाँ रहती है।

जनाना—स० [स० ज्ञापय, जानाय, प्रा० जाणावेइ] किसी घटना, चीज या बात की जानकारी किसी को कराना। अवगत कराना।
स० [स० जनन, हिं० जनना] प्रसवकाल मे गर्भिणी की सहायता करना। प्रसव कराना।
वि०[फा० जनान] [स्त्री० जनानी, भाव० जनानापन] १. स्त्रियो का-सा आचरण अथवा उन जैसे हाव-भाव दिखलानेवाला (व्यक्ति)। २ स्त्रियो का-सा। ३ केवल स्त्रियो मे चलने या होनेवाला। जैसे—जनानी धोती।
पु० १ हीजडा। नपुसक। २ अतपुर।
स्त्री० पत्नी। जोरू।

जनानापन—पु०[फा० जनान+हिं० पन (प्रत्य०)] स्त्री होने की अवस्था, गुण या भाव। स्त्रीत्व।

जनानी—स्त्री०[हिं० जनाना] १. स्त्री। २. पत्नी। जोरू।

जनाब—पु०[अ०] महाशय। महोदय।

जनाब-आली—पु०[अ०] मान्य महोदय।

जनाबा—स्त्री०[अ०] श्रीमती।

जनारदन—पु०[स० जनार्दन] विष्णु।

जनार्दन—पु० [स० जन√अर्द् (पीड़ित करना)+णिच्+ल्यु—अन] विष्णु।

जनाव—पु०[हिं० जनाना=जतलाना] जनाने अर्थात् जानकारी कराने की क्रिया या भाव।
पु०[हिं० जनाना=प्रसव कराना] प्रसव करने या कराने की क्रिया या भाव।

२—४२

जनावर—पु०=जानवर।

जनाशन—वि० [स० जन√अश् (खाना)+ल्यु–अन] मनुष्यो को भक्षण करनेवाला।
पु० भेडिया।

जनाश्रम—पु० [जन-आश्रम प० त०] वह आश्रम या स्थान जिसमे मनुष्य जाकर कुछ समय के लिए रहते हो। जैसे—धर्मशाला, सराय आदि।

जनाश्रय—पु०[जन-आश्रय प० त०] १ घर। मकान। २ धर्मशाला। ३ सराय। ४ किसी विशेष कार्य के लिए बनाया हुआ मडप।

जनि—स्त्री० [स० जन्+इन्] १ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। २ नारी। स्त्री। ३ पत्नी। ४. माता।
अव्य० मत। नही। उदा०—तहँ तहँ जनि छिन छोह न छाँडिये। —तुलसी।
स्त्री०=जनी।

जनिक—वि०[स० जनक] १ जन्म देनेवाला। २ उत्पादक।

जनिका—स्त्री०[हिं० जनाना] पहेली। बुझौवल।
स्त्री० [स० जनि+कन्—टाप्]=जनि। (दे०)

जनित—वि० [स०√जन्+णिच्+क्त] १ जन्मा या उपजा हुआ। २ जना हुआ। ३ किसी के कारण या फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाला। जैसे—रोगजनित दुर्बलता।

जनिता (तृ)—पु० [स०√जन्+णिच्+तृच्, णिलोपनि०] वह जो किसी को जनाये अर्थात जन्म दे। जनक। पिता।

जनित्र—पु० [स० जनि+त्रल्] जन्म-स्थान।

जनित्री—स्त्री०[स० जनितृ+ङीप्] वह जो किसी को जन्म दे। माँ। माता।

जनित्व—पु० [स०√जन्+णिच्+इत्वन्] [स्त्री० जनित्वा=माता] पिता।

जनियाँ*—स्त्री०=जानी।

जनी—स्त्री० [स० जनि+ङीप्] १ प्रकृति, जो सब को उत्पन्न करनेवाली मानी गई है। २ माता। ३ स्त्री। ४. बेटी। ५ दासी।
वि० स्त्री० जिसे जना गया हो। पैदा की हुई।

जनु—स्त्री०[स०√जन्+उ] जन्म। उत्पत्ति।
*अव्य०[हिं० जानना] मानो।

जनुक—अव्य०[हिं० जनु] जैसे। कि।

जनू—स्त्री०[स० जनु+ऊङ्] जन्म।

जनून—पु०[अ० जुनून] पागलपन। उन्माद।

जनूनी—वि०[अ०] पागल।

जनूब—पु०[अ०] दक्षिण (दिशा)।

जनूबी—वि०[अ० जनूब] दक्षिण दिशा का। दक्षिणी।

जनेंद्र—पु० [सं० जन-इद्र प० त०] राजा।

जनेऊ—पु०[स० यज्ञोपवीत] १ हिन्दुओ मे बालको का यज्ञोपवीत नामक सस्कार। २ सूत के धागे की वह तेहरी माला जो उक्त सस्कार के समय गले मे पहनाई जाती है। यज्ञोपवीत। ब्रह्मसूत्र।

जनेत—स्त्री० [स० जन+एत (प्रत्य०)] बरात। उदा०—जम मे बुरी जनेत।—कहा०।

जनेता—पु० [स० जनयिता] पिता। बाप। (डिं०)

जनेरा—पुं० [हिं० ज्वार] बाजरे की एक जाति।

जनेव—पुं०=जनेऊ।

जनेवा—पुं० [हिं० जनेऊ] १. किसी चीज के चारों ओर जनेऊ की तरह पड़ी हुई धारी या लकीर। २. एक प्रकार की घास। ३. तलवार का वह वार जो कंधे पर पड़कर तिरछे बल (दूसरी ओर) कमर तक काट करे।

जनेश—पुं० [सं० जन-ईश ष० त०] १. ईश्वर। २. राजा।

जनेष्टा—स्त्री० [सं० जन-इष्टा ष० त०] १. हल्दी। २. चमेली का पेड़। ३. पाढ़ी। ४. एक औषधि।

जनैया—वि० [हिं० जनना+ऐया (प्रत्य०)] जानने या जनानेवाला। जो स्वयं जानता हो अथवा किसी को कुछ जनाता हो।

जनो—पुं०=जनेऊ।

अव्य० [हिं० जनु] मानो।

जनोपयोगी (गिन्)—वि० [सं० जन-उपयोगिन् ष० त०] जन-साधारण के लिए उपयोगी।

जनौं—अव्य० [हिं० जानना] मानों।

जनौघ—पुं० [सं० जन-ओघ ष० त०] मनुष्यों का समूह। भीड़।

जन्नत—स्त्री० [अ०] १. उद्यान। बाग। २. मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग।

जन्नती—वि० [अ०] १. जन्नत में होने या रहनेवाला। २. स्वर्गीय।

जन्म (न्)—पुं० [सं० √जन् (उत्पत्ति)+मनिन्] १. गर्भ से निकलकर जीवन धारण करने की क्रिया या भाव। उत्पत्ति। पैदाइश। २. अस्तित्व में आना। आविर्भाव। जैसे—नये विचार जन्म लेते हैं। ३. जीवन। जिन्दगी। ४. जीवन-काल। आयु। जैसे—जन्म भर वह पछताता रहा।

जन्मअष्टमी—स्त्री०=जन्माष्टमी।

जन्म-कील—पुं० [ष० त०] विष्णु।

जन्म-कुण्डली—स्त्री० [ष० त०] १. फलित ज्योतिष में, वह चक्र जिसमें जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बताई गई हो। २. दे० 'जन्मपत्री।'

जन्म-कृत्—पुं० [सं० जन्म√कृ (करना)+क्विप्, तुक् आगम] जनक। पिता।

जन्म-क्षेत्र—पुं० [ष० त०] जन्मस्थान। जन्मभूमि।

जन्म-गत—वि० [तृ० त०] जन्म से ही साथ लगा रहने या होनेवाला।

जन्म-ग्रहण—पुं० [ष० त०] गर्भ से निकलकर जीवन प्राप्त करने की क्रिया या भाव।

जन्म-तिथि—स्त्री० [ष० त०] जन्म-दिन।

जन्मतुआ—वि० [हिं० जन्म+तुआ (प्रत्य०)] [स्त्री० जन्मतुई] (बच्चा) जिसको जन्म लिए अभी थोड़े ही दिन हुए हों। शिशु।

जन्म-दिन—पुं० [ष० त०] १. वह दिन जिसमें किसी ने जन्म लिया हो। किसी के जीवन धारण करने का दिन। २. तिथि, तारीख आदि के विचार से प्रति वर्ष पड़नेवाला किसी के जन्म लेने का दिन जो प्रायः उत्सव के रूप में मनाया जाता है। वर्ष गाँठ। (बर्थ डे)

जन्म-दिवस—पुं० [ष० त०] जन्म-दिन। (डे०)

जन्म-नक्षत्र—पुं० [ष० त०] वह नक्षत्र जिसके भोग-काल में किसी का जन्म हुआ हो।

जन्मना—अ० [सं० जन्म+हिं० ना (प्रत्य०)] १. जन्म होना। जन्मग्रहण करना। पैदा होना। २. अस्तित्व में आना।

स० १. जन्म देना। प्रसव करना। २. अस्तित्व में लाना।

अव्य० जन्म के विचार से। जन्म की दृष्टि से। जैसे—जन्मना जाति मानना।

जन्म-पंजी—स्त्री० [ष० त०] वह पंजी जिसमें जन्म लेनेवाले बच्चों का जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम आदि लिखा जाता है। (बर्थ रजिस्टर)

जन्म-पति—पुं० [ष० त०] १. कुण्डली में जन्म राशि का मालिक। २. जन्म लग्न का स्वामी।

जन्म-पत्र—पुं०=जन्मपत्री।

जन्म-पत्रिका—स्त्री०=जन्म-पत्री।

जन्म-पत्री—स्त्री० [ष० त०] १. वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी के जन्म-काल के समय के ग्रहों की स्थिति, उनकी दशा, अन्तर्दशा आदि और उनके फलों आदि का उल्लेख होता है। (हारस्कोप) २. किसी घटना या कार्य का आदि से अन्त तक का सारा विवरण।

जन्म-पादप—पुं० [ष० त०] वंश वृक्ष। शजरा।

जन्म-प्रतिष्ठा—स्त्री० [तृ० त०] १. माता। माँ। २. जन्म होने का स्थान।

जन्म-प्रमाणक—पुं० [सं०] वह प्रमाण-पत्र जिसमें किसी व्यक्ति के जन्म-काल, जन्मतिथि, जन्म-स्थान आदि का अधिकारिक विवरण होता है। (बर्थ सर्टिफिकेट)

जन्म-भूमि—स्त्री० [ष० त०] वह देश या राज्य (अथवा संकुचित अर्थ में नगर या ग्राम) जिसमें किसी का जन्म हुआ हो।

जन्म-भृत्—पुं० [सं० जन्म√भृ (भरना)+क्विप्, तुक् आगम] जीव। प्राणी।

जन्म-योग—पुं० [ष० त०] फलित ज्योतिष में, ग्रहों की वह स्थिति जो इस बात की सूचक होती है कि अमुक अवसर या समय पर घर में संतान का जन्म होगा।

जन्म-राशि—स्त्री० [ष० त०] वह राशि जिसमें किसी का जन्म हुआ हो।

जन्म-वर्त्म (न्)—पुं० [ष० त०] योनि। भग।

जन्म-विधवा—स्त्री० [तृ० त०] अक्षत योनि। बाल-विधवा।

जन्म-सिद्ध—वि० [तृ० त०] जिसकी सिद्धि या प्राप्ति जन्म से ही होती या मानी जाती हो। जैसे—जन्म-सिद्ध अधिकार।

जन्म-स्थान—पुं० [ष० त०] १. जन्मभूमि। २. माता का गर्भ। ३. कुंडली में वह स्थान जिसमें जन्म समय के ग्रहों का उल्लेख होता है।

जन्मांतर—पुं० [जन्म-अंतर मयू० स०] एक बार मरने के बाद होनेवाला दूसरा जन्म।

जन्मांध—वि० [जन्म-अंध तृ० त०] जो जन्म से ही अंधा हो।

जन्मा—पुं० [सं० जन्मन्] समस्त पदों के अंत में, वह जिसका जन्म हुआ हो। जैसे—अग्र जन्मा, नेत्र जन्मा आदि।

वि० जन्मा हुआ। जो पैदा हुआ हो।

जन्माधिप—पु० [जन्म-अधिप प० त०] १ शिव का एक नाम। २ जन्म राशि का स्वामी। ३ जन्म लग्न का स्वामी।

जन्माना—स० [हिं० जन्मना] जन्म देना।

जन्माष्टमी—स्त्री० [जन्म-अष्टमी प० त०] भाद्रपद की कृष्णाष्टमी। **विशेष**—भगवान कृष्ण का जन्म इसी अष्टमी की रात्रि मे हुआ था।

जन्मास्पद—पु० [जन्म-आस्पद प० त०] जन्मभूमि। जन्मस्थान।

जन्मी (न्मिन्)—पु० [स० जन्म+इनि] प्राणी। जीव। वि० जन्मा हुआ।

जन्मेजय—पु० [स० जनमेजय] १ विष्णु। २ एक प्रसिद्ध राजा जो हस्तिनापुर के महाराज परीक्षित का पुत्र था। **विशेष**—इसी राजा ने तक्षक नाग से अपने पिता का बदला लिया था और एक नागमेध यज्ञ किया था।

जन्मेश—पु० [जन्म-ईश प० त०] फलित ज्योतिष मे, वह ग्रह जो किसी की जन्म-राशि का स्वामी हो।

जन्मोत्सव—पु० [जन्म-उत्सव प० त०] १ किसी के जन्म के समय होनेवाला उत्सव। २ किसी के जन्म-दिन के स्मरण मे होनेवाला उत्सव।

जन्य—वि० [स० जन+यत्, √जन् (उत्पत्ति)+ण्यत्] [भाव० जन्यता] १ जिसका सबध जन अर्थात् मनुष्य से हो। जन-सबधी। २. जिसे मनुष्य ने उत्पन्न किया हो। ३ किसी जाति, देश या राष्ट्र से सबध रखनेवाला। जातीय, देशीय या राष्ट्रीय। ४ किसी चीज से उत्पन्न होनेवाला। जैसे—विचारजन्य।
पु० १ साधारण मनुष्य। २ राष्ट्र। ३ पुत्र। ४ पिता। ५ जन्म। ६ किवदती। ७ लडाई। ८ बाजार। ९ विवाह के समय दूल्हे के साथ जानेवाला बालक। सहबाला।

जन्यता—स्त्री० [स० जन्य+तल्—टाप्] जन्म होने की अवस्था या भाव।

जन्या—स्त्री० [स० जन्य+टाप्] १ माता की सखी। २ वधू की सहेली। ३ वधू।

जन्यु—पु० [स० जन+युच्] १. जीव। प्राणी। २ अग्नि। ३ ब्रह्मा।

जप—पु० [स०√जप् (जपना)+अप्] १ जपने या जाप करने की क्रिया या भाव। २ वह शब्द, पद या वाक्य जिसका उच्चारण भक्तिपूर्वक बार-बार किया जाय। ३ पूजा, सध्या आदि मे मत्रो का सख्या-पूर्वक पाठ करना। जप करने मे मत्र की सख्या का ध्यान रखना पडता है, इसलिए जप मे माला की भी आवश्यकता होती है।

जपजी—पु० [हिं० जप] सिक्खो का प्रसिद्ध ग्रथ जिसका वे प्राय. पाठ करते है।

जपतप—पु० [हिं० जप+तप] सध्या, पूजा, और पाठ आदि। पूजा-पाठ।

जपता—स्त्री० [स० जप+तल्-टाप्)] जपने की क्रिया या भाव।

जपन—पु० [स०√जप्+ल्युट्-अन] जपने की क्रिया या भाव। जप।

जपना—स० [स० जपन] १ धार्मिक फल-प्राप्ति के लिए किसी शब्द, पद, वाक्य आदि को भक्ति या श्रद्धापूर्वक बार-बार कहना। २ पूजा, सध्या, यज्ञ आदि करते समय सख्यानुसार मन ही मन उच्चारण करना। ३ यज्ञ करना। ४ किसी की कोई चीज हजम करना। हड़पना। (बाजारू)

जपनी—स्त्री० [हिं० जपना] १ माला जिसे जप करते समय फेरा जाता है। जप करने की माला। २. वह थैली जिसमे माला और हाथ डाल-कर जप किया जाता है। गुप्ती। गोमुखी। ३ जपने की क्रिया या भाव। (क्व०) ४ बार-बार कोई बात बहुत आग्रहपूर्वक कहना। रट।

जपनीय—वि० [स०√जप्+अनीयर्] जिसको जपना चाहिए। जपे जाने योग्य।

जप-माला—स्त्री० [स० मध्य० स०] वह माला जो जप करने के समय फेरी जाती है। जपनी।

जपा—स्त्री० [स०√जप्+अच्—टाप्] जवा। अडहुल।
पु० [स० जप] जप. करनेवाला व्यक्ति। उदा०—तपा जपा सब आसन मारे।—जायसी।

जपाना†—स० [हिं० 'जपना' का प्रे० रूप] दूसरे से जप कराना।

जपालक्त—पु० [जपा-अलक्त उपमि० स०] एक प्रकार का अलक्तक जो गहरे लाल रग का होता है।

जपिया*—वि०=जपी।

जपी—वि० [हिं० जपना+ई (प्रत्य०)] जप करनेवाला।

जप्त—वि०=जब्त।

जप्तव्य—वि० [स०+जप्+तव्यत्] जपे जाने के योग्य। जपनीय।

जप्ती—स्त्री०=जब्ती।

जप्य—वि० [स०√जप्+ण्यत्] जपे जाने के योग्य।

जफर—पु० [फा० जफर] तावीज, यत्र आदि बनाने की कला या काम। पु० [अ०] विजय।

जफा—स्त्री० [फा०] १ अन्यायपूर्ण कार्य या व्यवहार। २. अत्याचार।

जफाकश—वि० [फा०] १ अन्यायपूर्ण व्यवहार या अत्याचार-सहन करनेवाला। सहनशील। २ परिश्रमी।

जफीरी—स्त्री० [अ०] १ सीटी अथवा उससे किया जानेवाला शब्द। २. मुँह मे दो उँगलियाँ रखकर बजाई जानेवाली सीटी। ३. एक प्रकार की कपास।

जफील—स्त्री०=जफीरी।

जफीलना—अ० [हिं० जफील] सीटी बजाना। सीटी देना।

जब—अव्य० [स० यावत्] १ जिस समय। जिस वक्त (इस अर्थ मे इसका नित्य सबधी 'तब' है)। जैसे—जब सबेरा होता है तब अध-कार आप से आप नष्ट हो जाता है। २ जिस अवस्था मे। जिस दशा या हालत मे। (इस अर्थ मे इसका नित्य सबधी 'तो' है)। जैसे—जब उन्हे क्रोध चढता है तो उनका चेहरा लाल हो जाता है।
पद—जब कभी=किसी समय। **जब जब**=जिस जिस समय। **जब तब**=कभी-कभी। जैसे—वहाँ जब-तब ही जाना होता है। **जब देखो तब**=प्राय। अक्सर। जैसे—जब देखो तब तुम खेलते ही रहते हो। **जब होता है तब**=अक्सर। प्राय।

जबड़ा—पु० [स० जभ] मुँह मे की उन दो (एक ऊपर तथा एक नीचे) हड्डियो मे से हर एक जिसमे दाँत जमे या जडे रहते हैं।
पद—जबड़े की तान=गवैयो की एक प्रकार की तान (हलक की तान से भिन्न) जो साधारण या निम्न कोटि की मानी जाती है।

जबर—वि० [अ० जब्र] १ बलवान। बली। २. पक्का। दृढ़। मजबूत।

जबरई—स्त्री० [हिं० जबर] १ जबरदस्ती। २ ज्यादती।

जबर-जंग जबरदस्त,—वि० [फा०] १ बहुत बड़ा या बलवान। २ उच्च। श्रेष्ठ।

वि०=जबरदस्त।

जबरदस्त—वि० [फा०] [भाव०, जबरदस्ती] १ (व्यक्ति) जो बहुत अधिक शक्तिशाली हो तथा स्वभाव से कड़ा हो। जैसे—वह जबरदस्त हाकिम है। २ (वस्तु) जो बहुत ही दृढ़ या मजबूत हो। ३ (कार्य) जो बहुत अधिक कठिन हो। जैसे—जबरदस्त सवाल।

जबरदस्ती—स्त्री० [फा०] १ जबरदस्त या शक्तिशाली होने की अवस्था या भाव। २ कोई ऐसा कार्य या व्यवहार जो बलपूर्वक तथा कठाई के साथ किसी के प्रति किया गया हो। जैसे—यह सरासर आपकी जबरदस्ती है।

अव्य० १ बलपूर्वक। जैसे—वे जबरदस्ती अंदर घुस आये। २ दबाव पड़ने पर। जैसे—जबरदस्ती खाना पड़ा।

जबरन्—अव्य० [अ० जब्रन] बलात्। जबरदस्ती। बलपूर्वक।

जबरा—पु० [अ० जेब्रा] घोड़े की तरह का एक जंगली जानवर जिसके सारे शरीर पर लंबी-लंबी सुन्दर काली धारियाँ होती हैं।

† वि०=जबर।

जबरूत—स्त्री० [अ०] १ महत्ता। २ वैभव। ३. ऊपर के तो लोकों में से तीसरा। (मुसल०)

जबल—पु० [अ०] पहाड़।

जबह—पु० [अ०] १ गला काटकर प्राण लेने की क्रिया। २. मुसलमानों में मंत्र पढ़ते हुए पशु-पक्षियों आदि का गला रेतकर काटना।

जबहा—पु० [?] जीवट। साहस।

जबाँ—स्त्री०=जबान।

जबान—स्त्री० [फा०] [वि० जबानी] १ मुँह के अन्दर का वह लचीला लबोतरा चिपटा अंग, जिसके द्वारा चीजों का स्वाद लिया जाता है, मुँह में डाली हुई चीजें गले के नीचे उतारी जाती हैं तथा ध्वनियों का उच्चारण किया जाता है। जीभ।

मुहावरे (क) स्वाद संबंधी (कोई चीज) जबान पर रखना =किसी वस्तु का स्वाद चखना। थोड़ी मात्रा में कोई चीज खाना। **जबान बिगड़ना**=(क) बीमारी आदि के कारण मुँह का स्वाद खराब होना। (ख) अच्छी-अच्छी; विशेषतः चटपटी चीजें खाने का चस्का लगना।

मुहावरे (ख) उच्चारण संबंधी; (किसी की) जबान खींचना या खींच लेना=कोई अनुचित या विरुद्ध बात कहनेवाले को कठोर दंड देना। **(किसी की) जबान खुलना**=(क) बहुत समय तक चुप रहने पर किसी का कुछ कहना आरंभ करना। (ख) अनुचित या उद्दंडतापूर्ण बातें कहने का अभ्यास पड़ना या होना। **(किसी की) जबान घिस जाना या घिसना**=कोई बात कहते कहते हार जाना। **जबान चलना**=हर समय कुछ न कुछ कहते या बोलते रहना। **जबान चलाना**=(क) जल्दी-जल्दी बातें कहना। (ख) अनुचित बात कहना। **जबान चलाने की रोटी खाना**=केवल लोगों की खुशामद करके जीविका चलाना। **(बच्चे की) जबान टूटना**=छोटे बच्चे की जबान का ऐसी स्थिति में आना कि वह कठिन शब्दों या संयुक्त वर्णों का उच्चारण कर सके। **जबान डालना**=किसी से किसी प्रकार की प्रार्थना या याचना करना। **(किसी की) जबान थामना या पकड़ना**=कहते हुए को कोई बात कहने से रोकना। **(कोई बात) जबान पर आना**=भूली हुई कोई बात स्मरण या अवसर के अनुसार कोई बात याद आना। **जबान पर चढ़ना**=कंठस्थ होना। **जबान पर रखना**=सदा स्मरण रखना। जैसे—[illegible]। **जबान पर लाना**=चर्चा या बात करना। **जबान पर होना**=स्मरण रहना। याद होना। **(किसी की) जबान बंद करना**=किसी प्रकार किसी को कुछ कहने से रोकना। **जबान बंद होना**=कुछ न कहने को विशेषतः उत्तर न देने को विवश होना। **जबान [illegible] करना**=किसी की कही हुई बात को [illegible]। **जबान बिगड़ना**=मुँह से अपशब्द निकलने का अभ्यास होना। **जबान में लगाम न होना**=अशिष्टता या धृष्टतापूर्वक अनुचित या कठोर बातें कहने का अभ्यास होना। **जबान रोकना**=(क) कुछ कहते-कहते रुक जाना। (ख) किसी को कुछ कहने से रोकना। **जबान सँभालना**=मुँह से अनुचित या अशिष्ट शब्द न निकलने देना। **जबान हिलाना**=बहुत डरते हुए कुछ कहना।

२ किसी को दिया हुआ वचन।

मुहा०—जबान देना=कोई काम करने का किसी को वचन देना। **जबान बदलना**=कही हुई बात या दिये हुए वचन से पीछे हट जाना। मुकर जाना। **जबान हारना**=वचन देना।

३ भाषा। बोल-चाल।

जबानदराज—वि० [फा०] [भाव० जबानदराजी] अशिष्टता या धृष्टतापूर्वक बढ़-बढ़ के बातें करनेवाला। न कहने योग्य बातें भी बढ़-चढ़कर कहनेवाला।

जबानबंदी—स्त्री० [फा०] १ किसी घटना के संबंध में लिखी जानेवाली किसी साक्षी की गवाही। २. मौन। चुप्पी। ३ चुप रहने की आज्ञा।

जबानी—वि० [फा०] १ जबान-संबंधी। २. जो केवल जबान से कहा गया हो। मौखिक। ३ जो कहा तो गया हो परन्तु जिसका आचरण या व्यवहार न किया गया हो। जैसे—जबानी जमा-खर्च।

जबाला—स्त्री० [सं०] छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार सत्यकाम जाबाल ऋषि की माता का नाम जो एक दासी थी।

जबून—वि० [तु०] १ खराब। बुरा। २ निकृष्ट। निकम्मा।

जब्त—वि० [अ०] १ दबाया या रोका हुआ। जैसे—गुस्सा जब्त करना। २ (वह वैयक्तिक संपत्ति) जो किसी अपराध के दंडस्वरूप शासन द्वारा किसी से छीन ली गई हो।

क्रि० प्र०—करना।

जब्ती—स्त्री० [अ० जब्त] जब्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

जब्भा†—पु०=जबहा।

जब्र—वि०=जबर।

जब्रन—अव्य० =जबरन्।

जब्री—वि० [अ०] जबरदस्ती या बलात् किया हुआ।

जभन—पु० [सं० यभन] मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

जम—पु०=यम।

जमकात—पु०=यमक।

जमकना*—अ०=चमकना।

जमकात*—स्त्री०=जमकातर (यम का खाँडा)। उदा०—बिजुरी चक्र फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात फिरै जम केरी।—जायसी।

जमकातर—पु०[स० यम+हिं० कातर] भवँर।

स्त्री०[स० यम+कर्त्तरी] १ यम का खाँडा। २ एक प्रकार की तलवार। खाँडा।

जमकाना*—स०[हिं० जमकना का सकर्मक रूप] चमकाना।

जमघट—पु० [हिं० जमना+घट] किसी स्थान पर विशेष काम से आये हुए लोगो की भीड।

जमघटा†—पु०=जमघट।

जमघट्ट†—पु०=जमघट।

जमज*—वि०=यमज।

जमजम—अव्य०[स० जन्म, पु० हिं० जमना=जन्म लेना] ऐसे आवश्यक और शुभ रूप मे जिसका सब लोग हार्दिक स्वागत करे। जैसे—आप हमारे यहाँ आवे और जमजम आवे।

जम-जाई*—स्त्री०[स० यम+जाया] मृत्यु। मौत।

जमजोहरा—पु०[देश०] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

जमड़ा*—पु० [हिं० जन्मना] वह जो जन्म दे। पिता। उदा०—अपने जमडा जमडी को छोडा बिलकता।—साँपा।

जमडाढ़—स्त्री०[स० यम+हिं० डाढ] शरीर मे भोकने का कटारी की तरह का एक हथियार जिसकी नोक आगे की ओर झुकी हुई होती है।

जमण—स्त्री०=जमुना।

जमदग्नि—पु० [स०] एक ऋषि जो भृगुवशी ऋचीक के पुत्र थे तथा जिनकी गणना सप्तर्षियो मे होती है।

जमदढ़—स्त्री०=जम-डाढ।

जम-दिसा*—स्त्री० [स० यम+दिशा] वह दिशा जिसमे यम का निवास माना जाता है। दक्षिण दिशा।

जमधर†—पु०=जमडाढ।

जमन*—पु० [स० यवन] [स्त्री० जमनी] १. यवन। २ मुसलमान।

पु०=जमाना।

स्त्री०=यमुना (नदी)।

जमना—अ०[स० यमन=जकडना, मि० अ० जमा] १ किसी तरल पदार्थ का अधिक शीत के कारण ठोस रूप धारण करना। जैसे—पानी जमना। २ उक्त प्रकार से ठोस रूप धारण किये हुए किसी पर स्थित होना। जैसे—(क) पहाडो पर बरफ जमना। (ख) दीवार पर रग जमना। ३ किसी प्रकार का किसी तरल पदार्थ मे विकार उत्पन्न किये जाने पर उसका ठोस रूप धारण करना। जैसे—दही जमना। ४ दृढतापूर्वक स्थित होना। जैसे—धाक जमना। ५ हाथ से काम करने का पूरा अभ्यास होना। जैसे—लिखने मे हाथ जमना। ६ किसी कार्य का बहुत ही अच्छे तथा प्रभावशाली रूप मे निर्वाह होना। जैसे—खेल या गाना जमना। ७ किसी काम का अच्छी तरह चलने योग्य होना। जैसे—रोजगार जमना। ८ एकत्र होना। जमा होना। जैसे—भीड जमना। ९ अच्छा प्रहार होना। खूब चोट पड़ना। जैसे—थप्पड या लाठी जमना। १०. घोडे का हुमक-हुमककर चलना।

अ०[स० जन्म+हिं० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न होना। उगना। जैसे—(क) जमीन पर घास या पौधा जमना। (ख) सिर पर बाल जमना।

पु०[हिं० जमना=उत्पन्न होना] वह घास जो पहली बरसात के बाद खेतो मे उगती है।

स्त्री०=यमुना।

जमनिका—स्त्री०[स० जवनिका] १ जवनिका। परदा। २ काई।

जमनोत्तरी—स्त्री० [स० यमनोत्तरी] हिमालय मे वह स्थान जहाँ से यमुना निकलती है।

जमनौता—पु०[अ० जमानत+औता (प्रत्य०)] वह धन जो अपनी जमानत करने के बदले मे जमानत करनेवाले को दिया जाता है।

जमनौती—स्त्री०=जमनौता।

जमराण—पु०=यमराज।

जमरूद—पु०[?] जामुन की तरह का एक प्रकार का छोटा लबोतरा तथा सफेद फल।

जमरूल—पु०=जमरूद।

जमवट—स्त्री०[स० जम्बु पट्ट] जामुन की लकडी का वह गोल चक्कर या पहिया जो कूआँ बनाने मे भगाड मे रखा जाता है और जिसके ऊपर कोठी की जोडाई होती है।

जमवार*—पु० [स० यमद्वार] यम का द्वार। न्याय-सभा। उदा०—सिंहल द्वीप भए औतारू। जबूद्वीप जाइ जमवारू।—जायसी।

जमशेद—पु०[ईरा०] ईरान का एक प्राचीन राजा जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि इसके पास एक ऐसा प्याला था जिसमे ससार मे होनेवाली घटनाएँ, बातें आदि दिखाई देती थी।

जमहूर—पु०[अ०] १ जन-समूह। २ राष्ट्र।

जमहूरियत—स्त्री०[अ०]=लोकतत्र।

जमहूरी—वि०[अ०] प्रजातात्रिक।

जमाँ—पु०[अ०] 'जमाना' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के अत मे प्राप्त होता है। जैसे—खलीलुलजमाँ, रुस्तमेजमाँ आदि।

जमा—वि०[अ० जमऽ] १ बचा अथवा जोड़कर रखा हुआ (धन)। जैसे—दो वर्षो मे मैंने केवल सौ रुपये मुश्किल से जमा किए हैं।

पद—कुल जमा=सब मिलाकर। कुल। जैसे—कुल जमा वहाँ दस आदमी आये थे।

२ देन अथवा पावने के रूप मे दिया अथवा प्राप्त होनेवाला (धन)। जैसे—(क) सदस्यो का चदा जमा हो गया है। (ख) २० रुपया इनका गेहूँ मद्दे जमा कर लो। ३ (धन आदि) सुरक्षा के लिए किसी के पास अमानत रूप मे रखा हुआ। जैसे—बैंक मे रुपये जमा करना। ४ किसी खाते के आय पक्ष मे लिखा हुआ।

स्त्री०[अ०] १ मूलधन। पूँजी। २ धन। रुपया-पैसा।

मुहा०—जमा मारना=अनुचित रीति से किसी का धन हजम कर लेना।

३ भूमिकर। मालगुजारी। ४ जोड (गणित)। ५ खाते या बही का वह भाग या कोष्ठक जिसमे प्राप्त हुए धन का ब्योरा दिया जाता है। ६ व्याकरण मे किसी शब्द का बहुवचन रूप। जैसे—खबर की जमा अखबार है।

जमाई†—पु०[स० जामातृ] जँवाई।

स्त्री०[हिं० जमाना] जमाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जमाखर्च—पु०[फा० जमा+खर्च] २ आय और व्यय। २ आय और व्यय का हिसाब और मद।

मुहा०—**जमा-खर्च करना**=किसी के यहाँ से आई हुई रकम जमा करके उसके नाम पड़ी हुई रकम का हिसाब पूरा करना।

जमाजथा—स्त्री०[हिं० जमा+गथ=पूँजी] धन-संपत्ति। नगदी और माल।

जमात—स्त्री०[अ० जमाअत] १ कक्षा (विद्यार्थियों की)। २ समुदाय या संघ (व्यक्तियों का)। ३ गरोह।

जमादार—पु० [फा०] भाव० जमादारी। छोटे कर्मचारियों के कार्यों का निरीक्षक एक अधिकारी। जैसे—सेना या सिपाहियों का जमादार, भंगियों या मजदूरों का जमादार।

जमादारी—स्त्री०[अ०] जमादार का कार्य या पद।

जमान—पु०[फा० जामिन] जमानतदार।

जमानत—स्त्री०[अ०] १ जिम्मेदारी। २ वह जिम्मेदारी जो इस रूप में ली जाती है कि यदि कोई व्यक्ति विशेष समय पर कोई काम नहीं करेगा तो उसका दण्ड या हरजाना हम देंगे। जैसे—अदालत ने एक हजार की जमानत पर इसे छोड़ने को कहा है। २ वह धन जो किसी की जिम्मेदारी लेते समय किसी अधिकारी के पास जमा किया जाता है।

जमानतनामा—पु०[अ०जमानत+फा० नामा] वह लिखा हुआ कागज जो जमानतदार जमानत के प्रमाण में लिखकर देता है।

जमानती—पु०[अ० जमानत+ई(प्रत्य०)] जमानत करनेवाला व्यक्ति। वह जो जमानत करे। जामिन। जिम्मेदार।

वि० १ जमानत संबंधी। २ जो जमानत के रूप में हो।

जमाना—स०[हिं० जमना का स० रूप।] १ किसी तरल पदार्थ को शीत पहुँचाकर अथवा और किसी प्रक्रिया से ठोस बनाना। जैसे—दही या बरफ जमाना। २ एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दृढ़तापूर्वक स्थित करना या बैठाना। जैसे—दीवार पर पत्थर जमाना। ३ अच्छी तरह चलने के योग्य बनाना। जैसे—रोजगार या वकालत जमाना। ४. ऐसे ढंग से कोई काम करना कि वह यथेष्ट प्रभावशाली सिद्ध हो। जैसे—खेल या महफिल जमाना। ५ कोई काम अच्छी तरह कर सकने की योग्यता प्राप्त करने के लिए बराबर उसका अभ्यास या संपादन करना। जैसे—लिखने में हाथ जमाना। ७. अच्छी तरह या जोर लगाकर प्रहार करना। जैसे—थप्पड़ या मुक्का जमाना।

पु०[अ० ज़मान] १ काल। समय।

पद—**जमाने की गर्दिश**=समय का फेर।

मुहा०—**(किसी का) जमाना बदलना या पलटना**=किसी की अवस्था या स्थिति बदल जाना।

२ सौभाग्य का समय। जैसे—उनका भी जमाना था। ३ सारी सृष्टि। संसार।

मुहा०—**जमाना देखना**=संसार की गति-विधियाँ देखना। **जमाना देखे होना**=संसार की गति-विधियों का ज्ञान होना। अनुभवी होना।

पद—**जमाने भर का**=संसार में जितना हो सकता हो उतना सब। बहुत अधिक। जैसे—उन्हें तो जमाने भर का सुख चाहिए।

४. संसार के लोग। जैसे—जमाना जो चाहे सो कहे आप किसी की नहीं सुनेंगे।

जमानासाज—वि० [फा०] [भाव० जमानासाजी] १ (व्यक्ति) जो समय विशेष के अनुकूल अपने को ढाल सके। २. विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न रूप धारण करनेवाला।

जमाबंदी—स्त्री०[अ०+फा०] पटवारी का वह खाता जिसमें असामियों के नाम, उनसे मिलनेवाले लगान की रकमें आदि लिखी जाती हैं।

जमामार—वि०[हिं० जमा+मारना] दूसरों की संपत्ति अनुचित रूप से ले लेनेवाला।

जमाल—पु० [अ०] १ बहुत सुन्दर रूप। २. सौंदर्य। खूबसूरती।

जमालगोटा—पु०[स०जयपाल]एक पौधा जिसका बीज बहुत अधिक रेचक होता है। जयपाल। दंतीफल।

जमाली—वि०[अ०] सुन्दर रूपवाला।

जमाव—पु० [हिं० जमाना] १ एक स्थान पर बहुत-सी चीजों या व्यक्तियों के इकट्ठे होने की अवस्था या भाव। २ जमने, जमाने या जमे हुए होने की अवस्था या भाव।

जमावट—स्त्री०[हिं० जमाना] जमने या जमाने की क्रिया या भाव।

जमावड़ा—पु०[हिं० जमना=एकत्र होना] एक स्थान पर इकट्ठे होनेवाले व्यक्तियों का समूह।

जमींकंद—पु०[फा० जमीन+कंद] सूरन। ओल।

जमींदार—पु०[फा०] जमीन का मालिक। भूमि का स्वामी। विशेषत. वह व्यक्ति जो किसानों को लगान पर अपनी जमीन जोतने-बोने को देता है।

जमींदारा†—पु०=जमींदार।

जमींदारी—स्त्री०[फा०] १ जमींदार होने की अवस्था, भाव या पद। २. जमींदार की वह भूमि जिसका लगान वह उन काश्तकारों से वसूल करता है जिसे वे जोतते-बोते हैं।

विशेष—अब इस प्रथा का प्रायः अंत हो चुका है।

जमींदोज—वि०[फा०] १ जमीन से मिला या सटा हुआ। २ जो जमीन पर गिरा या ढा कर उसके बराबर कर दिया गया हो। ३ भूगर्भ में स्थित।

जमी—स्त्री०[स० यमी] यम की बहन। यमी।

वि०[स० यमिन्] यम या संयमपूर्वक रहनेवाला।

जमीन—स्त्री०[फा०]१ सौर जगत् का वह उपग्रह जिसमें हम लोग रहते हैं। पृथ्वी। २ उक्त उपग्रह का ठोस तल (समुद्र से भिन्न) धरातल।

पद—**जमीन आसमान का फरक**=बहुत बड़ा तथा स्पष्ट अंतर या भेद। **जमीन का गज**—व्यक्ति जो सदा इधर-उधर घूमता-फिरता रहता हो।

मुहा०—**जमीन आसमान एक करना**=किसी काम के लिए बहुत अधिक प्रयत्न करना। **जमीन आसमान के कुलाबे मिलाना**=(क) शेखी बघारना। लंबी-चौड़ी हाँकना। डींग मारना। (ख) तोड़-जोड़ मिलाना। चालाकी करना। **जमीन का पैरों तले से निकल या सरक जाना**=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना कि होश-हवास ठिकाने न रहे। **जमीन चूमने लगना**=जमीन पर पट गिरना। **(किसी को) जमीन दिखाना**=जमीन पर गिराना या पटकना। बुरी तरह से पराजित या परास्त करना। **जमीन पर पैर न रखना**=अकड़कर अथवा बड़प्पन दिखाते हुए कोई काम करना। ऐंठ या शेखी दिखलाना। **जमीन पर पैर न पड़ना**=बहुत अभिमान होना।

३ उक्त के आधार पर, ठोस तल अर्थात् धरातल का कोई कोई अंग या भाग। जैसे—ऊँची या नीची जमीन।

मुहा०—**जमीन पकड़ना**=किसी स्थान पर जमकर बैठना।

४ वह आधार या सतह जिस पर वेल-बूटे आदि कढे, छपे या वने हुए हो। जैसे—इस धोती की जमीन सफेद और धारियाँ पीली हैं। ५ वह सामग्री जिसका उपयोग किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने मे आधार रूप से किया जाय। जैसे—अतर खीचने मे चंदन की जमीन, फुलेल में मिट्टी के तेल की जमीन। ६ चित्र वनाने के लिए मसाले से तैयार की हुई सतह या तल। आधार पृष्ठ।

मुहा०—**जमीन बाँधना**=अस्तर या मसाला लगाकर चित्र आदि वनाने के लिए सतह तैयार करना।

७ किसी कार्य के लिए पहले से निश्चित की हुई प्रणाली। उपक्रम। आयोजन।

मुहा०—**जमीन बाँधना**=कोई काम करने से पहले उसकी प्रणाली निश्चित करना।

जमीनी—वि०[फा०] जमीन-सवधी। जमीन का।

जमीमा—पु०[अ० जमीम] परिशिष्ट। (दे०)

जमीर—पु०[अ० जमीर]१ मन। हृदय। २ अन्त करण। ३. विवेक।

जमील—वि० [अ०] [स्त्री० जमीला] जमाल अर्थात सौन्दर्य से युक्त। सुन्दर।

जमुआ†—पु० [हिं० जामुन] जामुन का पेड और उसका फल।

जमुआर—पु०[हिं० जमुआ+आर (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ जामुन के वहुत से पेड हो।

जमुकना—अ०[?] आगे वढकर या वढते हुए किसी के साथ लगना।

जमुण*—स्त्री०[स० यमुना] यमुना नदी।

जमुना†—स्त्री०=यमुना।

जमुनियाँ†—वि०[हिं० जामुन] जामुन के रग का।

पु० उक्त प्रकार का रग।

जमुरका—पु०[फा० जवूर] १ कुलावा। २ एक प्रकार की छोटी तोप।

जमुरी—स्त्री०[फा० जवूर] १. एक प्रकार की छोटी चिमटी या सँडसी। २ घोडो के नाखून काटने का एक उपकरण।

जमुर्रद—पु०[अ० ज़मुर्रद] पन्ना नामक रत्न।

जमुर्रदी—वि०[फा० ज़मुर्रदीन] जमुर्रद अर्थात् पन्ने के रग का। नीलापन लिये हुए हरे रग का।

पु० नीलापन लिये हुए हरा रग।

जमुवाँ—पु०[हिं० जमुआ] जामुन का रग। जामुनी।

पु०=जामुन।

जमुहाना*—अ०[हिं० जम्हाना] जम्हाई लेना। जँभाई लेना।

जमूरक†—पु०[फा० जवूरक] एक प्रकार की छोटी तोप।

जमूरा—पु०=जमूरक।

जमेंती*—स्त्री०=दमयती।

जमैयत—स्त्री०[अ०] परिपद्। सस्था।

जमैयतुलउलेमा—स्त्री०[अ०] आलिमो अर्थात् विद्वानो की परिपद् या सस्था।

जमोग†—[illegible]० [हिं० जमोगना] १. जमोगने की क्रिया या भाव। ऋण चुकाने की एक प्रथा जिसके अनुसार ऋण लेनेवाला स्वय ऋण न चुकाता वल्कि ऋण चुकाने का भार किसी दूसरे पर डाल देता है। चित्रकला मे, वेल-बूटे आदि एक दूसरे से नियत दूरी और अपने-अपने ठीक स्थान पर बैठाने की क्रिया या भाव।

जमोगदार—पु०[हिं० जमोग+फा० दार] वह व्यक्ति जो ऋणी का रुपया चुकाता हो। वह जिसने किसी दूसरे का ऋण चुकाने का भार अपने ऊपर लिया हो।

जमोगना—स०[?] १ आय-व्यय या हिसाव-किताव की जाँच करना। २ व्याज को मलधन मे जोडना। ३ अपने उत्तरदायित्व विशेषत लिए हुए ऋण या देन का भार दूसरे को सौपकर उससे ऋण चुकाने की स्वीकृति दिला देना। सरेखना। ३ किसी वात का दूसरे व्यक्ति से समर्थन कराना।

जमोगवाना—स०[हिं० जमोगना] जमोगने का काम किसी दूसरे से कराना। सरेखवाना।

जमौआ†—वि० [हिं०जमाना] वुनकर नही, वल्कि जमा कर वनाया हुआ। जैसे—जमौआ कवल, जमौआ वनात।

जम्मु*—पु०१ =यम। २ =जन्म।

जम्हाई—स्त्री०=जँभाई।

जम्हाना†—अ०=जँभाना।

जयंत—वि०[स०√जि (जीतना)+झच्—अन्त] [स्त्री० जयती] १ जय प्राप्त करनेवाला। विजयी। २ तरह-तरह के भेस वनाने वाला। वहुरुपिया।

पु० १ रुद्र। २ कार्तिकेय, इद्र के पुत्र, धर्म के पुत्र, अक्रूर के पिता, दशरथ के मत्री आदि लोगो का नाम। ३ सगीत मे ध्रुवक जाति का एक ताल। ४ फलित ज्योतिष मे एक योग जिसमे युद्ध के समय यात्रा करने पर विजय निश्चित मानी जाती है।

जयंत-पुर—पु०[मध्य०स०] एक प्राचीन नगर जिसकी स्थापना निमिराज ने की थी और जिसका अवस्थान गौतम ऋषि के आश्रम के निकट था।

जयंतिका—स्त्री०[स० जयती+कन्—टाप्, ह्रस्व]=जयती।

जयंती—वि० [स०√जि (जीतना) +शतृ—ङीप्] विजय प्राप्त करनेवाली। विजयिनी।

स्त्री०१ वह स्त्री जिसने विजय प्राप्त की हो। २ दुर्गा। ३. पार्वती। ४ ध्वजा। ५ हल्दी। ६ अरणी और जैंत नामक पेडो की सज्ञा। ७. वैजती का पौधा। ८ ज्योतिष का एक योग जो श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी की आधी रात के समय रोहिणी नक्षत्र पडने पर होता है। ९ जन्माष्टमी। १० जौ के छोटे पौधे जो ब्राह्मण अपने यजमान को मगल द्रव्य के रूप मे विजयादशमी के दिन भेंट करता है। ११ किसी महापुरुष की जन्म-तिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव। १२. किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने की वार्षिक तिथि पर होनेवाला उत्सव। जैसे—स्वर्ण या हीरक जयती।

जय—स्त्री०[स० जि+अच्] किसी वहुत वडे कार्य मे मिलनेवाली महत्त्व-[illegible]य या सफलता।

[illegible] **गोपाल**=भेंट होने पर पारस्परिक अभिवादन के लिए कहा [illegible] एक पद।

[illegible] **जय वोलना या मनाना**=विजय, [illegible] मना

[illegible]ष्णु के एक पार्षद का नाम। २ [illegible] [illegible]हाकाव्य

का पुराना नाम। ३ संगीत में एक प्रकार का ताल। ४ ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति के प्रौष्ठपद नामक युग का तीसरा वर्ष। ५ युधिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे विराट् के यहाँ अज्ञातवास कर रहे थे। ६ जयंती नामक पेड। ७ लाभ। ८ अयन। मार्ग। ९ वशीकरण। १० एक नाग। ११ दसवें मन्वन्तर के एक ऋषि।

जय-कंकण—पु०[मध्य०स०] विजय का सूचक कंकण जो प्राचीन काल मे विजयी को पहनाया जाता था।

जयक—वि०[स० जय+कन्] जीतनेवाला। विजयी।

जयकरी—स्त्री०[स० जय√कृ (करना)+ट—ङीप् ?] चौपाई नामक छद का दूसरा नाम।

जय-कार—पु०[प०त०] १ किसी की 'जय' कहने की क्रिया या भाव। २ वह पद या वाक्य जिसमे किसी की जय कही जाय। जैसे—बोलेगा सो निहाल सत् श्री अकाल।

जय-कोलाहल—पु०[ब०स०] पासे का एक प्राचीन खेल।

जय खाता—पु०[हिं० जय=लाभ+खाता]वह वही जिसमे बनिये प्रतिदिन होनेवाले लाभ का हिसाब लिखते हैं।

जय-घोष—पु०[प०त०] जोर से कही जानेवाली किसी की जय।

जय-चिह्न—पु०[प०त०]१ कोई ऐसा चिह्न या सकेत जो किसी प्रकार की जीत का सूचक हो। जैसे—आखेट, युद्ध आदि मे प्राप्त की हुई और अपने पास स्मृति के रूप मे रखी जानेवाली कोई चीज। २ खेल, प्रतियोगिता आदि मे विजयी को मिलनेवाली कोई ऐसी चीज जो स्मारक के रूप मे पास रखी जाय। (ट्राफी)

जय जयकार—स्त्री०[हिं०] सामूहिक रूप से किसी की बार-बार जय कहने की क्रिया या भाव।

जयजयवंती—स्त्री० [हिं०] रात के दूसरे पहर मे गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जिसे कुछ लोग मेघराज की भार्या और कुछ लोग मालकोस की सहचरी बताते हैं।

जय-जीव—पु०[हिं० जय+जी] एक प्रकार का अभिवादन जिसका अर्थ है कि तुम्हारी जय हो और तुम चिरजीवी होओ।

जय-ढक—पु०=जयढक्का।

जय-ढक्का—स्त्री०[मध्य०स०] युद्ध मे जीत होने पर बजाया जानेवाला बाजा।

जय-ताल—पु०[मध्य०स०] सगीत मे एक ताल का नाम।

जयति—पु०[स० जयत्] एक सकर राग जिसे कुछ लोग गौरी और ललित तथा कुछ लोग पूरिया और कल्याण के योग से बना हुआ मानते है।

जयति-श्री—स्त्री०[हिं०] एक रागिनी जिसे दीपक राग की भार्या कहा गया है।

जयती—स्त्री०=जयति।

जयत्कल्याण—पु०[स०] रात के पहले पहर मे गाया जानेवाला संपूर्ण जाति का एक सकर राग जो कल्याण और जयति-श्री के योग से बनता है।

जयत्सेन—पु० [स० जयन्ती-सेना ब०स०] नकुल का वह नाम जो उसने स्वय विराट् नगर मे अज्ञातवास करते समय अपने लिए रखा था।

जय-दुंदुभी—स्त्री०[मध्य०स०] जीत होने पर बजाया जानेवाला डंका।

जय-दुर्गा—स्त्री०[कर्म०स०] दुर्गा की एक मूर्ति। (तत्र)

जयदेव—पु०[सं०]सस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो 'गीत गोविंद' के रचयिता थे।

जयद्बल—पु०[स०जयत्-बल ब०स०] सहदेव का वह नाम जो उसने स्वय विराट् नगर मे अज्ञातवास करते समय अपने लिये रखा था।

जयद्रथ—पु०[स० जयत्-रथ ब०स०] महाभारत मे वर्णित एक राजा जिसने अभिमन्यु को मारा था और जिसका वध अर्जुन ने किया था।

जय-ध्वज—पु०[मध्य० स०] विजय पताका।

जयना*—स० [सं० जयन्] जय प्राप्त करना। जीतना।

जयनी—स्त्री०[स०√जि+ल्युट्—अन, ङीप्] इन्द्र की कन्या का नाम।

जय-पत्र—पु०[मध्य०स०] १ वह पत्र जो प्राचीन काल मे पराजित राजा विजयी राजा को अपनी पराजय स्वीकार करते हुए लिखकर देते थे। २ न्यायालय द्वारा किसी व्यक्ति को दिया हुआ वह पत्र जिसमे उसकी मुकदमे मे होनेवाली जीत का उल्लेख होता है।

जय-पत्री—स्त्री०[मध्य०स०] जावित्री।

जय-पाल—पु० [जय√पाल् (रक्षा करना)+अण्] १ जमालगोटा। २ विष्णु। ३ राजा।

जय-पुत्रक—पु०[मध्य०स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का पासा।

जय-प्रिय—पु०[ब०स०] १ राजा विराट् के भाई का नाम। २ ताल का एक भेद।

जयफर—पु०=जायफल। उदा०—जयफर, लौंग सुपारि छोहारा। मिरिच होइ जो सहै न झारा।—जायसी।

जय-मंगल—पु०[ब०स०] १. वह हाथी जिस पर विजयी राजा सवारी करता था। २ सगीत मे एक प्रकार का ताल।

जय-मल्लार—पु०[सं०] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सभी शुद्ध स्वर लगते है।

जय-माल—स्त्री०=जय-माला।

जय-माला—स्त्री०[मध्य०स०] १ विजेता को पहनाई जानेवाली माला। २ विवाह के समय फूलो आदि की वह माला जो कन्या अपने भावी पति के गले मे डालती है।

जय-यज्ञ—पु०[मध्य०स०] अश्वमेध यज्ञ।

जयरात—पु०[स०] महाभारत मे वर्णित कलिंग देश का एक राजकुमार जो युद्ध मे भीम के हाथो मारा गया था।

जय-लक्ष्मी—स्त्री०[मध्य०स०] जय-श्री। विजय-श्री।

जय-लेख—पु०=जय-पत्र। (दे०)

जय-वाहिनी—स्त्री०[प०त०] इद्राणी। शची।

जयशाल—पु०[स०] यादव वश के प्रसिद्ध राजा जिन्होने जैसलमेर नगर बसाया था।

जय-शृंग—पु०[मध्य०स०] जय-ध्वनि करनेवाला। नरसिंघा।

जय-श्री—स्त्री० [प०त०] १ विजय। २ विजय की अधिष्ठात्री देवी। ३ संध्या के समय गाई जानेवाली सपूर्ण राग की एक रागिनी।

जय-स्तंभ—पु० [मध्य०स०] वह स्तम्भ या बहुत ऊँची वास्तु-रचना जो किसी देश पर विजय होने की स्मृति मे बनाई जाती है।

जया—स्त्री०[स०√जि (जीतना)+अच्—टाप्] १. दुर्गा, दुर्गा की सहचरी तथा पार्वती जी का नाम। २ अरणी, जयती तथा शमी के वृक्षो की सज्ञा। ३. अड़हुल का फूल। ४ हरी दूब। ५ हरीतकी। हड।

६ माँग। ७ पताका। ८ सोलह मातृकाओ मे से एक। ९ माघ शुक्ला एकादशी। १० कृष्ण तथा शुक्ल पक्षो की तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथियाँ।
वि० स्त्री० जय दिलानेवाली।
जयादित्य—पु०[स०] काश्मीर के एक प्राचीन राजा जो 'काशिकावृत्ति' के कर्त्ता माने जाते है।
जया-द्वय—स्त्री०[प०त०] जयती और हड।
जयानीक—पु० [स०] १ राजा द्रुपद के एक पुत्र का नाम। २ राजा विराट् के भाई का नाम।
जयावती—स्त्री०[स० जया+मतुप, वत्व-ङीप्] १. कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। २. सकर जाति की एक रागिनी।
जयावह—वि०[स० जय-आ√वह् (पहुंचाना)+अच्] जय दिलानेवाला।
जयाश्व—पु०[स०] राजा विराट् के एक भाई का नाम।
जयिष्णु—वि० [स०√जि (जीतना)+इष्णुच्] १. जय दिलानेवाला। विजय प्राप्त करनेवाला। २ जो बराबर जीतता रहता हो।
जयी (यिन्)—वि० [स०√जि (जीतना)+इनि] जिसकी जय अर्थात् विजय हुई हो।
†स्त्री०=जई।
जयेंद्र—पु०[स०] काश्मीर के राजा विजय के एक पुत्र का नाम।
जयेती—स्त्री०[स०] एक सकर रागिनी।
जयोल्लास—पु०[जय-उल्लास, प०त०]जय अर्थात्, विजय मिलने पर होने-वाला उल्लास।
जय्य—वि० [स०√जि+यत्] जो जीता जा सकता हो। जीते जाने के योग्य।
जरंड—वि०[स०] १ क्षीण। २ वृद्ध।
जरंत—पु० [स०√जॄ (जीर्ण होना)+झच्-अत] १ अधिक अवस्था-वाला व्यक्ति। २ भैंसा।
जर—पु० [स०√जॄ+अप्] १ जीर्ण या नष्ट होने की अवस्था या भाव। २ वह कर्म जिससे शुभाशुभ कर्मो का क्षय होता है।
वि०[√जॄ+अच्] १ वृद्ध होनेवाला। २ क्षीण या वृद्ध करनेवाला।
पु०[स० जरा] जरा। वृद्धावस्था।
†पु०=ज्वर।
पु०[फा० जर] १ सोना। २. धन।
पु० [हिं० जड़] जड।
पु० [देश०] एक प्रकार की समुद्री सेवार।
जरई—स्त्री० [स० जीरक] १. बोये हुए बीज मे से निकलनेवाला नया अकुर। २ जौ या धान के छोटे अकुर जो विशिष्ट अवसरो पर मगल-कामना प्रकट करने के लिए भेंट किये जाते हैं।
जर-कवर—पुं० [फा० जरी+हिं० कवल] वह आवरण या ओढना जिस पर जरी का काम बना हो। उदा०—जुरा जर कवर सो पहिरायो। केशव।
जरक—स्त्री०=झलक।
जरकटी—स्त्री०[देश०] एक शिकारी चिडिया।
जरकस—वि०[फा० जरकश] (वस्त्र) जिस पर जरी का काम हुआ हो।
पु० जरी का काम।

जरकसी—वि०=जरकस।
जरकान—पु०[अ०] गोमेद नामक रत्न।
जर-खरीद—वि०[फा०] धन देकर खरीदा हुआ। क्रीत।
जरखेज—वि०[फा०] [भाव० जरखेजी] (भूमि) जिसमे फसल अधिक मात्रा मे होती हो। उपजाऊ।
जरगह, जरगा—पु०=जिरगा।
जरछार—वि०[हिं० जरना+स० क्षार] १ जो जलकर राख हो गया हो। २ नष्ट।
जरज—पु०[देश०] एक प्रकार का कद।
जरजर—वि०=जर्जर।
जरजरना—अ०[हिं० जरजर] जर्जर होना या जीर्ण-शीर्ण होना।
जरठ—वि०[स० √जॄ +अठच्] १ बुड्ढा। वृद्ध। २ जीर्ण। ३ कठिन। कठोर। ४ कर्कश। ५ निर्दय। ६. जिसका रग कुछ पीलापन लिये हुए सफेद हो।
पु० बुढापा।
जरठाई*—स्त्री०[स० जरठ+हिं० आई (प्रत्य०)] बुढापा।
जरडा—स्त्री०[√जॄ(बुढापा)+ष्यड-ङीप्] एक प्रकार की घास।
जरण—पु० [स०√जॄ+णिच्+ल्यु—अन] १ हीग। २. जीरा। ३ काला नमक। ४ कासमर्द। कसौजा। ५ बुढापा। ६. दस प्रकार के ग्रहणो मे से वह जिसमे पश्चिम से मोक्ष होना आरम्भ होता है।
वि० जीर्ण। पुराना।
जरण-द्रुम—पु०[कर्म०स०] १. साखू का वृक्ष। २. सागौन।
जरणा—स्त्री०[स० जरण+टाप्] १. काला जीरा। २ वृद्धावस्था। ३ स्तुति। ४ मोक्ष।
जरत्—वि०[स०√जॄ+अतृन] [स्त्री० जरती] १. बुड्ढा। वृद्ध। २ क्षीण। ३ पुराना।
जरतार—पु०[फा० जर+हिं० तार] जरी अर्थात् सोने, चाँदी आदि के वे तार जिनसे कपडो पर बेल-बूटे आदि बनाये जाते हैं।
जरतारा†—वि० [हिं० जरतार] [स्त्री० जरतारी] (वस्त्र) जिस पर जरी का काम हुआ हो।
जरतारी—स्त्री०[हिं० जरतार] जरी से बना हुआ बेल-बूटो का काम।
जरतिका—स्त्री०[स० जरती+कन्—टाप्, ह्रस्व] बूढी स्त्री।
जरती—स्त्री०[स० जरत्+ङीप्]=जरतिका।
जरतुवा—वि०[हिं० जलना] दूसरे की अच्छाई या समृद्धि को देखकर मन ही मन कुढने या जलनेवाला।
जर तुश्त—पु०=जरदुश्त।
जरत्कर्ण—पु०[स०] एक वैदिक ऋषि।
जरत्कारु—पु०[स०] एक ऋषि जिन्होने वासुकि नाग की कन्या मनसा से विवाह किया था।
स्त्री० उक्त ऋषि की पत्नी मनसा का दूसरा नाम।
जरद—वि०[फा० जर्द] पीले रग का।
जरद अंछी—स्त्री०[हिं० जरद+अछी] काली अछी की तरह की एक झाडी।
जरदक—पु०[फा० जर्दक] जरदा या पीलू नाम का पक्षी।
जरदष्टि—वि०[स०]१ वृद्ध। २. बुड्ढा। दीर्घजीवी।

स्त्री०१. बुढ़ापा। २. दीर्घ जीवन।

जरदा—पु०[फा० जरद.] १. विशेष प्रकार से पकाये हुए मीठे पीले चावल। २. पान के साथ खाने के लिए विशेष प्रकार से बनाई हुई मसालेदार सुगंधित सुरती जो प्राय पीले रंग की और कभी-कभी काले या लाल रंग की भी होती है। ३. पीले रंग का घोड़ा।

पु०[सं० जरदक] एक प्रकार का पक्षी जिसकी कनपटी तथा पैर पीले होते हैं। पीलू।

जर-दार—वि०[फा०] [भाव० जरदारी] १. (व्यक्ति) जिसके पास जर अर्थात् धन हो। २ अमीर। धनवान।

जरदालू—पु०[फा० जरद+आलू] खूबानी।

जरदी—स्त्री०[फा०]१. जरद अर्थात् पीले होने की अवस्था, गुण या भाव।

मुहा०—(किसी पर) जरदी छाना=रोग आदि के कारण किसी के शरीर का रंग पीला पड़ना।

२ अंडे में से निकलनेवाला पीला अंश।

जरदुश्त—पु०[फा० मि० सं० जरदष्टि=दीर्घजीवी, वृद्ध] फारस का एक प्रसिद्ध विद्वान् जिसका जन्म ईसा से छ सौ वर्ष पूर्व हुआ था।

जरदोज—पु०[फा० जरदोज] [भाव० जरदोजी] वह व्यक्ति जो सोने, चाँदी आदि की तारों से कपड़ों पर बेल-बूटे बनाता हो। जरदोजी का काम करनेवाला।

जरदोजी—स्त्री०[फा० जरदोजी]१ सोने, चाँदी आदि के तारों से वस्त्रों आदि पर बेल-बूटे बनाने का काम। २. उक्त प्रकार का बना हुआ काम।

वि० (कपड़ा) जिस पर उक्त प्रकार का काम बना हो।

जरद्गव—पु०[सं० जरत्-गो कर्म० स०, टच्] १ बुड्ढा बैल। २. बृहत्संहिता के अनुसार एक वीथी जिसमें विशाखा और अनुराधा नक्षत्र हैं।

जरद्विप—पु०[सं०] जल।

जरन*—स्त्री०=जलन।

जरना*—अ०=जलना।

†स०=जड़ना।

जरनि*—स्त्री०[हिं० जलन] जलन। उदा०—हृदय की कबहुँ न जरनि घटी।—सूर।

जरनिशाँ—पु०[फा० जरनिशाँ] लोहे पर सोने, चाँदी आदि से की जाने-वाली पच्चीकारी।

जरनैल—पु० =जनरल (सेनापति)।

जरब—स्त्री०[अ० जर्ब]१. आघात। चोट। प्रहार। २. तबले, मृदंग आदि पर किया जानेवाला आघात। थाप। ३. गुणा। ४. कपड़े आदि पर काढ़ी या छापी हुई बेल।

जर-बफ्त—पु०[फा० जरबफत] वह रेशमी कपड़ा जिस पर कलाबत्तू का काम हुआ हो।

जर-बफ्ती—वि०[फा० जरबफती]१. जर बफ्त संबंधी। २. (कपड़ा) जिस पर जरबफ्त का काम हुआ हो।

जर-बाफ—पु०[फा०] वह व्यक्ति जो कपड़े पर जरबफ्त का काम करता हो।

जरबाफी—वि०[फा०] जर-बफ्त या जरबाफ संबंधी।

स्त्री० कपड़े आदि पर कलाबत्तू से बेल-बूटे आदि काढ़ने की क्रिया या भाव।

जरबीला—वि०[फा० ज़र्क़] चमक-दमकवाला। भड़कीला।

जरम—पु०=जन्म। उदा०—कहुँ सुआ नारी कौं दुख कहु जस जरम निबाहु।—जायसी।

जरमन—पु०[अं०] यूरोप के जर्मनी नामक देश का नागरिक या निवासी।

स्त्री० उक्त देश की भाषा।

वि० १. जरमनी देश में होने या रहनेवाला। २. जरमन देश-संबंधी।

जरमनसिल्वर—पु०[अं०] एक सफेद मिश्र धातु जो जस्ते, ताँबे, निकल आदि के योग से बनाई जाती है।

जरमनी—पु०[अं०] यूरोप का एक प्रसिद्ध राष्ट्र।

जरमुआ—वि०[हिं० जरना+मुआ=मरना] [स्त्री० जरमुई] ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण जलनेवाला।

जरर—पु० [अ० ज़रर] १. नुकसान। हानि। २. आघात। चोट। ३. विपत्ति।

जरला†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास। [illegible]।

*स्त्री०=जलन।

जरवारा†—वि० [फा० जर(=धन)+हिं० वार (वाला)] [स्त्री० जरवारी] १. जिसके पास जर अर्थात् धन हो। २. अमीर। धनी।

जरस—पु०[देश०] समुद्र में होनेवाली एक प्रकार की घास।

जरांकुश—पु०[सं० ज्वरांकुश] एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियाँ सुगंधित होती हैं।

जरा—स्त्री०[सं०√जॄ (वृद्ध होना)+अङ्+टाप्] १. वृद्ध होने की अवस्था। बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २. बुढ़ापे में होनेवाली कमजोरी। ३. काल की कन्या का नाम। (पुराण)

पु० एक व्याध जिसके बाण से कृष्ण जी देवलोक सिधारे थे।

वि०[अ० ज़र्रः] मान या मात्रा में थोड़ा। अल्प। कम।

पद—जरा-सा=(क) बहुत ही कम। नहीं के बराबर। जैसे—जरा सा चूर्ण खा लो। (ख) तुच्छ या हेय। जैसे—जरा सी बात।

अव्य० किसी काम या बात की अल्पता, तुच्छता, सामान्यता आदि पर जोर देने के लिए प्रयुक्त होनेवाला अव्यय। जैसे—(क) जरा तुम भी चले चलो। (ख) जरा कलम उठा दो।

जराअत—स्त्री०[अ० जिराअत] [वि० जराअती] खेती-बारी।

जराऊ†—वि०[हिं० जड़ाऊ] जिसमें नगीने जड़े हों। उदा०—पाँवरि कनक जराऊ पाऊँ। दीन्हि असीस आइ तेहि ठाऊँ।—जायसी।

जरा-कुमार—पु०[ष०त०] जरासंध।

जरा-ग्रस्त—वि०[तृ० त०] जो जरा से पीड़ित हो। वृद्धावस्था के कारण कमजोर तथा शिथिल।

जरा-जीर्ण—वि०[तृ०त०] जो पुराना अथवा वृद्ध होने के कारण जर्जर हो गया हो। जरा से जर्जर।

जरातुर—वि०[जरा-आतुर तृ० त०] जरा-ग्रस्त। बूढ़ा।

जराद—पु० [सं० जरा√अद् (खाना)+अण् ?] टिड्डी।

जराना—स०=जलाना।

स०=जड़ाना।

जरा-पुष्ट—पु०[तृ० त०] जरासंध।

जराफत—स्त्री० [अ० ज़राफत] जरीफ अर्थात् हँसोड होने की अवस्था या भाव। मसखरापन।

जराफा—पु०[अ०जुर्राफ] ऊँट की तरह का लबी गरदन तथा लबी टाँगो-वाला एक पशु।

जराभीत—वि०[तृ०त०] वृद्धावस्था से डरनेवाला।
पु० कामदेव।

जरायम—पु०[अ० 'जुर्म' का वहु०] अनेक प्रकार के अपराध।

जरायम पेशा—वि०[अ० जरायम+फा० पेश] (वह) जो अनेक प्रकार के अपराधो के द्वारा ही जीविका चलाता हो। अपराधशील।

जरायु—पु०[सं० जरा√इ (गति)+वुण्] १. वह झिल्ली जिसमे माता के गर्भ से निकलते समय बच्चा लिपटा हुआ होता है। आँवल। खेडी। २. गर्भाशय। ३. योनि।

जरायुज—पु०[स० जरायु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] वह प्राणी जो माता के गर्भ मे से निकलते समय खेडी मे लिपटा हुआ होता है। पिंडज।

जराव—वि०=जडाऊ।
पु०=जडाव।

जरा-शोप—पु०[मध्य०म०] वृद्धावस्था मे होनेवाला एक शोष रोग।

जरा-सध—पु०[व०स०] मगध का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजा जो कस का श्वसुर था।

जरा-सुत—पु०[ष० त०] जरासध।

जराह†—पु०=जर्राह।

जरिणी—स्त्री० [स० जरा+इनि—ङीप् ?] अधिक अवस्थावाली स्त्री। बुढिया।

जरित—वि०[स० जरा+इतच्] वुड्ढा।
*वि०=जटित।

जरिमा(मन्)—स्त्री० [सं० जरा+इमनिच्] जरा। बुढापा। वृद्धावस्था।

जरिया—पु०[अ० जरीअऽ] १ सवव। लगाव। २. कारण। हेतु। ३ साधन।
पद—के जरिये=द्वारा।
†वि०[हिं० जडना] जड़नेवाला।
†वि०[हिं० जलना] १. जला हुआ। २. जलाने से बननेवाला। जैसे—जरिया नमक।

जरिश्क—पु०[फा० जरिश्क] दारुहल्दी।

जरी (रिन्)—वि०[स० जरा+इनि] वुड्ढा। वृद्ध।
†स्त्री० जडी।
स्त्री० [फा०]१ वादले से वुना हुआ ताश नामक कपडा। २. सोने के वे तार जिनसे कपडों पर वेल-बूटे आदि वनाये जाते हैं।

जरीनाल—स्त्री०[?] वह स्थान जहाँ पर ईटें और रोड़े पडे हों।

जरीफ—वि०[अ० जरीफ़] १. परिहास-प्रिय। २ हँसोड।

जरीव—स्त्री०[फा०]१ खेत या जमीन नापने की एक प्रकार की जजीर या डोरी जो लगभग ६० गज लबी होती है।
क्रि० प्र०—डालना।
२. डडा। लाठी।

जरीवकश—पु०[फा०] जरीव खीचने अर्थात् जरीव से जमीन नापनेवाला व्यक्ति।

जरी-वाफ—पु०[फा० जरीवाफ] जरी के काम के कपडे आदि वुननेवाला कारीगर।

जरीमाना†—पुं०=जुरमाना।

जरीया—पु० =जरिया।

जरूथ—पु०[सं०√जॄ (जीर्ण होना)+ऊथन्] गोश्त। मास।

जरूर—अव्य० वि०[अ०] अवश्य। अवश्यमेव।

जरूरत—स्त्री०[अ० जरूरत] १. आवश्यकता। २ प्रयोजन।

जरूरी—वि०[फा० जरूरी]१ जिसके विना किसी का काम ठीक प्रकार से न चले। जैसे—रोगी को नीद आना जरूरी है। २. जिसका होना या घटित होना रुकने को न हो। जैसे—मृत्यु जरूरी है। ३. प्रस्तुत परिस्थितियो मे जो किया ही जाना चाहिए। जैसे—उन पर मुकदमा चलाना जरूरी है। ४. जो तुरन्त किया जाने को हो। जैसे—एक जरूरी काम आ गया है।

जरोल—पु०[देश०] आसाम और नीलगिरि के पहाडो पर होनेवाला एक पेड जिसकी लकडी वहुत मजवूत होती है।

जरौट†—वि०[हिं० जडना] जड़ाऊ।

जर्कवर्क—वि० [फा०] चमक-दमकवाला। चमकीला।

जर्कान—पु०=जरकान।

जर्जर—वि०[स०√जर्ज् (झिडकना)+अरन्] १. (वस्तु) जो पुरानी हो जाने के कारण या अधिक उपयोग मे आने के कारण कमजोर तथा वेकाम हो चली हो। जैसे—जर्जर मकान या जर्जर वस्त्र। २. लाक्षणिक अर्थ मे कोई चीज या वात जिसका महत्त्व या मान पुराने पडने के कारण बहुत ही कम हो गया हो। जैसे—ये साहित्यिक परम्पराएँ अब जर्जर हो चुकी है। ३. खडित। टूटा-फूटा। ४. वृद्ध। वुड्ढा।
पु० छरीला। पत्थर फूल।

जर्जरानना—स्त्री० [स० जर्जर-आनन व०स०] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

जर्जरित—वि०[स० जर्जर+णिच् +क्त] जर्जर किया हुआ।

जर्ण—पु०[स०√जॄ+नन्] १. चद्रमा। २ वृक्ष।

जर्त्त—पुं०[√जन् (उत्पत्ति)+त, र आदेश] १ हाथी। २. योनि।

जर्त्तिक—पु०[स०√जॄ+तिकन्] १ प्राचीन वाहीक देश का नाम। २ उक्त देश का निवासी।

जर्तिल—पु० [स०√जॄ+विच् <जर्—तिल, कर्म०स०] जगली तिल। वन तिलवा।

जर्त्तु—पु०[सं०√जन्+तु, र आदेश]=जर्त्त।

जर्द—वि०[फा० जर्द] पीले रगवाला। पीला। जरद।

जर्दा—पु०=जरदा।

जर्दालू—पु०=जरदालू।

जर्दी—स्त्री० [फा०]=जरदी।

जर्दोज—पु०[भाव० जर्दोजी]=जरदोज। (दे०)

जर्रा—पु०[अ० जर्र] १ किसी वस्तु का वहुत छोटा टुकडा। अणु। कण। २ धूल आदि का कण विशेषत वह कण जो प्रकाश मे उडता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है। रेणु। ३ तौल मे एक जौ का सौवाँ भाग।

जर्रार—वि० [अ०] [भाव० जर्रारी] वहादुर। वीर।

जल-पिप्पलिका—स्त्री० [मध्य स०] जलपीपल।
जल-पिप्पली—स्त्री०[मध्य० स०] जलपीपल नामक ओषधि।
जल-पिप्पिका—स्त्री०[प० त०] मछली।
जल-पीपल—स्त्री०[स० जलपिप्पली] १ पीपल की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड जो खडे या स्थिर पानी मे होता है। २ उक्त पेड की फली जो पाचक होती है और ओषधि के काम आती है।
जल-पुष्प—पु०[मध्य० स०] १ जलाशयो मे उत्पन्न होनेवाले फूलो की सज्ञा। २ लज्जावती की जाति का एक पौधा जो प्राय दलदलो मे होता है।
जल-पृष्ठ-जा—स्त्री०[स०जल-पृष्ठ प० त०,√जन्(उत्पत्ति)+ड—टाप्] सेवार।
जल-प्रदान—पु०[प० त०] जल देने विशेषत तर्पण करते समय पितरो आदि को जल देने की क्रिया या भाव।
जल-प्रपा—पु०[प० त०] पौसरा। प्याऊ।
जल-प्रपात—पु०[प० त०] १ पहाडो आदि मे बहुत ऊँचाई से गिरनेवाला पानी का प्राकृतिक झरना। प्रपात। (वाटर फाल) २ वह स्थान या ऊँचा पहाड जहाँ पर से जल की धारा नीचे गिरती हो।
जल-प्रवाह—पु०[ष० त०] १ कोई चीज जल मे प्रवाहित करने अर्थात् बहाने की क्रिया या भाव। २ जल की धारा के किसी ओर बहने की क्रिया, गति या भाव।
जल-प्रागण—पु०[प० त०] समुद्र का उतना भाग जितने पर उसके तट पर स्थित राज्य का अधिकार समझा जाता है। (टेरिटोरियल वाटर्स)
विशेष—अतर्राष्ट्रीय विवान के अनुसार यह क्षेत्र तट से तीन मील की दूरी तक होता है। पर अब कुछ राष्ट्र इसे १२ मील तक रखना चाहते है।
जल-प्रांत—पु०[प० त०] जलाशय के आस-पास का प्रदेश।
जल-प्राय—वि० [ब० स०] (ऐसा भू-भाग) जिसमे जलाशय अर्थात् ताल, नदियाँ, नहरे आदि बहुत अधिक हो।
जल-प्रिय—पु०[प० स०] १ मछली। २ चातक। पपीहा।
जलप्लव—पु०[स० जल√प्लु(कूदना)+अच्] ऊदविलाव।
जल-प्लावन—पु०[प० त०] १ ऐसी भीषण बाढ जिसमे चारों ओर बहुत दूर-दूर तक जल ही जल दिखाई देता हो और धरातल उक्त बाढ के फलस्वरूप पानी से ढक जाता हो। २ एक प्रकार का प्रलय जिसमे सब देश डूब जाते हैं। (पुराण)
जल-फल—पु०[मध्य० स०] सिंघाडा।
जलबंध—पु०[स० जल√ बध् (बाधना)+अच्] मछली।
जल-बधक—वि०[प० त०] जल को बाँधनेवाला।
पु० बाँध।
जल-बंधु—पु०[ब० स०] मछली।
जल-बम—पु०[स० जल+अ० बाम्ब] जल मे छोडा जानेवाला एक प्रकार का रासायनिक विस्फोटक गोला जो आस-पास के जहाजो, पनडुब्बियो आदि को नष्ट कर देता है।
जलबालक—पु०[स० जल√बल् (जिलाना)+णिच्+ण्वुल्—अक] विंध्याचल पर्वत।
जल-बाला—स्त्री०[प० त०] बिजली। उदा०—जलबाला न समाइ जलदि।—प्रिथीराज।
जल-बालिका—स्त्री०[प० त०] बिजली। विद्युत्।
जल-बिंब—पु०[प० त०] पानी का बुलबुला। बुल्ला।
जल-बिडाल—पु०[स० त०] ऊदबिलाव।
जल-बिल्व—पु०[मध्य० स०] १ केकडा। २ वह प्रदेश जहाँ जल की कमी हो।
जल-बुद्बुद—पु०[प० त०] पानी का बुलबुला। बुल्ला।
जलबेंत—पु०[स० जलवेत्र] जलाशयो या दलदल मे लता के रूप मे उपजनेवाला एक प्रकार का बेत का पौधा जिसके छिलको से कुर्सियाँ आदि बुनी जाती है।
जल-ब्राह्मी—स्त्री०[स० त०] हुरहुर का साग।
जल-भँगरा—पु० [स० जल+हिं० भँगरा] जलाशयो मे होनेवाला एक प्रकार का भँगरा।
जल भालू—पु० [हिं० जल+भाल] सील की जाति का आठ-दस हाथ लबा एक समुद्री जतु जिसके सारे शरीर पर बडे-बड़े बाल होते हैं।
जलभू—पु०[स० जल√भू (होना)+क्विप्] १ मेघ। २ एक प्रकार का कपूर। ३ जलचौलाई।।
स्त्री० जल-प्राय भूमि। कछ।
जल-भूषण—पु०[प० त०] वायु। हवा।
जलभृत्—पु० [स० जल√भृ (धारण)+क्विप्] १ बादल। मेघ। २ वह पात्र, जिसमे जल रखा जाता हो। ३ एक प्रकार का कपूर।
जल-भौंरा—पु० [स० जल+हिं० भौंरा] काले रग का एक प्रसिद्ध छोटा कीडा जो जल के ऊपरी स्तर पर चलता, दौडता या तैरता रहता है। भौतुआ।
जल-मंडल—पु० [ब० स०] एक प्रकार की बडी विषैली मकडी जिसके स्पर्श से कभी-कभी मनुष्य मर जाता है। चिरैंयाबुदकर।
जल-मंडूक—पु०[उपमि० स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।
जलम†—पु०=जन्म।
जल-मद्गु—पु०[उपमि० स०] कौडिल्ला (पक्षी)।
जल-मधूक—पु[मध्य० स०] जल-महुआ।
जलमय—पु०[स० जल+मयट्] १ चद्रमा। २ शिव की एक मूर्त्ति।
जल-मल—पु०[प० त०] झाग। फेन।
जल-मसि—पु०[तृ० त०] १ बादल। मेघ। २. एक प्रकार का कपूर।
जल-महुआ—पु०[स० जलमधूक] जलाशयो के समीप होनेवाला एक प्रकार का महुआ (पेड) और उसका फल।
जल-मातृका—स्त्री०[मध्य० स०] जल मे रहनेवाली सात देवियो—मत्सी, कूर्मी, वाराही, दर्दुरी, मकरी, जलूका और जतुका मे से कोई एक। (पुराण)
जल-मानुष—पु०[मध्य० स०] [स्त्री० जलमानुषी] दे० 'जल-परी'।
जल-मापक—पु०[प० त०] घडी के आकार का वह यंत्र जो जल आदि मे से निकले हुए जल का मान बतलाता है। (हाइड्रो मीटर)
जल-माया—स्त्री०[प० त०] मृग-तृष्णा।
जल-मार्ग—पु०[प० त०] नहर, नदी, समुद्र आदि मे का वह मार्ग या

रास्ता जिनसे जहाज, नावें आदि आती-जाती रहती हैं। (वाटरवेज़)

जल-मार्जार—पु०[ष० त०] ऊदबिलाव।

जलमुच्—पु०[स० जल√मुच् (छोड़ना)+क्विप्] १ बादल। मेघ। २. एक प्रकार का कपूर।

जल-मुलेठी—स्त्री० [सं० जलयष्टी] जलाशय में होनेवाली एक प्रकार की मुलेठी।

जल-मूर्ति—पु०[ब० स०] शिव।

जलमूर्तिका—स्त्री०[म० जल-मूर्ति ष० त०, +कन्-टाप्] ओला। करका

जलमोद—पु०[स० जल√मुद् (प्रसन्न होना)+ णिच्+अण्] खस॥

जल-यंत्र—पु०[ष० त०] १. वह उपकरण जिससे कूएँ आदि से पानी ऊपर उठाकर नलों की सहायता से दूर-दूर तक पहुँचाया जाता है। २. फुहारा। ३ जलघड़ी।

जल-यात्रा—स्त्री०[मध्य० स०] १ नदी, समुद्र आदि के द्वारा होनेवाली यात्रा। २ अभिषेक आदि के समय पवित्र जल लाने के लिए कहीं जाना। ३ ज्येष्ठ की पूर्णिमा को होनेवाला वैष्णवों का एक उत्सव जिसमें विष्णु की मूर्त्ति को ठंडे जल से स्नान कराया जाता है। ४ राजपूताने में कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को मनाया जानेवाला एक उत्सव।

जल-यान—पु०[ष०त०] वह यान या सवारी जो जल में चलती हो। जैसे—जहाज, नाव आदि।

जल-रंक—पु०[स० स० त०] बगुला।

जल-रंकु—पु०[स० स० त०] बनमुर्गी।

जल-रंग—पु० [मध्य० स०] १. चित्र-कला में, तैल-रंग से भिन्न वह रंग जो जल और गोंद आदि के योग से तैयार किया जाता है। (वाटर-कलर) २. उक्त प्रकार के रंगों से चित्र अंकित करने की प्रणाली। ३. उक्त प्रकार के रंगों से अंकित चित्र।

जलरंज—पु०[म० जल√रंज् (अनुरक्त होना)+ अच्] बगुलों की एक जाति।

जल-रंड—पु०[ष० त०] १. भवँर। २ जलकण। ३. साँप।

जल-रस—पु०[मध्य०] नमक।

जल-राशि—पु०[ष० त०] १. अथाह जल। २ समुद्र। ३. ज्योतिष में, कर्क, मकर, कुंभ और मीन राशियाँ।

जल-रुद्ध—वि०[तृ० त०] १ जल से घिरा या रुँधा हुआ। २ इतना कड़ा या ठोस (पदार्थ) कि उनके छेदों में जल का प्रवेश न हो सकता हो। (वाटर टाइट)

जल-रुह—वि०[सं० जल√रुह् (उगना)+क] जल में उत्पन्न होनेवाला।

पु० जल में उत्पन्न होनेवाली वनस्पतियों तथा उनके फल-फूलों आदि की संज्ञा। जैसे—कमल, सिंघाड़ा आदि।

जल-रूप—पु०[ब० स०] ज्योतिष में, मकर राशि।

जल-लता—स्त्री०[स० त०] तरंग। लहर।

जल-लोहित—पु०[ब० स० ?] एक राक्षस का नाम।

जल-वर्त—पुं०[ष० त०] १. एक प्रकार के मेघ। २ जलावर्त।

जल-वल्कल—पुं०[ष० त०] जलकुंभी।

जल-वल्ली—स्त्री०[मध्य० स०] सिंघाड़ा।

जलवाना—स० [हिं० जलाना का प्रे० रूप] जलाने का काम किसी दूसरे से कराना।

जल-वानीर—पुं०[मध्य० स०] जलबेंत।

जल-वायस—पु०[स० त०] कौडिल्ला (पक्षी)।

जल-वायु—पुं०[द्व० स०] किसी प्रदेश की प्राकृतिक या वातावरणिक स्थिति जिसका विशेष प्रभाव जीवों, जंतुओं, वनस्पतियों आदि की उपज, विकास तथा स्वास्थ्य पर पड़ता है। (क्लाइमेट)

जल-वायुयान—पु०[ष० त०] वह वायुयान जो समुद्र या बड़े जलाशयों के तल पर भी उतर सकता और फिर वहीं से उड़कर आकाश में भी जा सकता हो। (हाइड्रो प्लेन)

जल-वाष्प—पु०[ष० त०] पानी की वह भाप जो वेग से किसी चमकीले पदार्थ पर डाल कर ताप, प्रकाश आदि उत्पन्न करने के काम में लाई जाती है। (वाटरगैस)

जल-वास—पु०[स० त०] १. जल में वास करने अर्थात् रहने की क्रिया या भाव। २ साँस रोककर तथा पानी में डुबकी लगाकर बैठने की क्रिया या साधना। उदा०—कुशल बली है जलवास की कला में भी। मैथिलीशरण। ३. [ब० स०] खस। ४ [जल√वस्] विष्णुकंद।

जलवाह—पु०[स० जल√वह् (ढोना)+अण्] मेघ।

जलविंदुजा—स्त्री०[स० जल-विंदु ष० त०,√जन् (उत्पत्ति)+ड—टाप्] एक प्रकार की रेचक ओषधि।

जल-विषुव—पु०[मध्य० स०] ज्योतिष में वह योग या स्थिति जब सूर्य कन्या राशि से तुला राशि में संक्रमण करता है।

जल-विश्लेषण—पु०[ष० त०] जल के संयोजक तत्त्वों को अलग-अलग करने की क्रिया या भाव। (हाइड्रोलिसिस)

जल-वीर्य—पु०[ब० स०] भरत के एक पुत्र का नाम।

जल-वृश्चिक—पु०[स० त०] झींगा मछली।

जल-वेतस—पु०[मध्य० स०] जलबेंत।

जल-वैकृत—पु०[ष० त०] जलाशयों, नदियों आदि के संबंध में होनेवाली कुछ अनोखी और असाधारण बातें जो भावी दैवी उत्पात आदि की सूचक होती हैं। जैसे—नदी का अपने स्थान से हटना, जलाशयों का अचानक सूख जाना आदि आदि।

जल-व्याघ्र—पु० [स० त०] [स्त्री० जल-व्याघ्री] सील की जाति का एक हिंसक जल-जंतु।

जल-व्याल—पु०[मध्य० स०] पानी में रहनेवाला साँप।

जल-शयन—पु०[ब० स०] विष्णु।

जलशायी (यिन्)—पु० [जल√शी (शयन करना)+णिनि] विष्णु।

जलशुंडी—स्त्री०=जलस्तंभ।

जल-शूक—पु०[स० त०] सेवार।

जल-शूकर—पु०[ष० त०] कुंभीर नाक नामक जल-जंतु।

जल-संघात—पु०[ष० त०] जल-राशि।

जल-संत्रास—पु०=जलांतक।

जल-संध—पु०[ब० स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

जल-संस्कार—पु०[स० त०] १. स्नान करना। नहाना। २. धोना। ३. शव को नदी आदि में प्रवाहित करना।

जल-समाधि—स्त्री०[स० त०] १ जल मे डूबकर प्राण देना। २. जल मे डुबाया या प्रवाहित किया जाना।

जल-समुद्र—पु०[मध्य० स०] सात समुद्रो मे से अतिम समुद्र। (पुराण)

जल-सर्पिणी—स्त्री० [स० त०] जोक।

जलसा—पु०[अ०] १ दे० 'उत्सव' तथा 'समारोह'। २ दे० 'अधिवेशन'।

जलसाईं—पु०[हिं० जलाना] मुरदे जलाने का स्थान। मरघट।

जलसिंह—पु०[स० त०] [स्त्री० जलसिंही] सील की जाति का एक प्रकार का वडा तथा हिंसक जल-जतु।

जलसिरस—पु०[स० जलशिरीष] जलाशयो मे पैदा होनेवाला एक प्रकार का सिरस का वृक्ष।

जलसीप—स्त्री०[स० जलशुक्ति] वह सीप जिसके अदर मोती हो।

जलसीम—स्त्री०[स० जल+ शिवा] जल की सेम अर्थात् मछली।

जल-सूचि—पु० [स० त०] १ सूँस। २ वडा कछुआ। ३ जोक। ४ जल मे होनेवाला एक पौधा। ५ सिंघाडा। ६ कौआ। ७ कौआ नामक मछली।

जल-सूत—पु०[स० त०] नहरुआ (रोग)।

जल-सेना—स्त्री०[मध्य० स०] किसी राष्ट्र की वह सेना (वायु तथा स्थल-सेना से भिन्न) जो समुद्र-तटो की शत्रुओ से रक्षा करती तथा समुद्र मे पहुँचकर विपक्षियो के जहाजो से युद्ध करती है। (नेवी)

जल-सैनी—पु०[स०] एक प्रकार की मछली।

जल-स्तंभ—पु० [प० त०] एक प्राकृतिक घटना जिसमे जलाशय या समुद्र मे आकाश से वादल झुक पडते है और जलाशय या समुद्र का जल कुछ समय के लिए ऊपर उठकर स्तभ का रूप धारण कर लेता है। सूंडी। (वाटर स्पाउट)

जल-स्तंभन—पु० [प० त०] मत्रो आदि की शक्ति से जल की गति या प्रवाह रोकना या वद करना।

जलस्था—स्त्री०[स० जल√स्था (रहना)+क-टाप्] गडदूर्वा।

जलहर†—वि०=जलहल।
पु०=जलधर।

जल-हरण—पु० [प० त०] मुक्तक दडक का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ वर्ण होते हैं और आठ, आठ, नौ और फिर सात पर यति होती हे।

जलहरी—स्त्री०=जलधरी।

जलहल†—वि०[हिं० जल] जल से भरा हुआ। जलमय।
†पु० १=जलाशय।
२=सागर

जल-हस्ती (स्तिन्)—पु०[स० त०] सील की जाति का एक स्तनपायी जल-जतु।

जलहार—पु०[स० जल√हृ (हरण)+अण्] [स्त्री० जलहारी] पानी भरनेवाला मजदूर। पनिहारा।

जलहालम—पु० [स० जल+हालम ?] जलाशयो के किनारे होनेवाला एक प्रकार का हालम वृक्ष।

जल-हास—पु०[प० त०] समुद्र-फेन।

जल-होम—पु[स० त०]हवन का एक प्रकार जिसमे जल मे ही आहुति दी जाती है।

२–४४

जलांक—पु०[स० जल-अक, प० त०] [वि० जलाकित] जल-चिह्न। (दे०)

जलांकन—पु०[स० जल-अकन, प० त०] जलांक या जल-चिह्न अकित करने की क्रिया या भाव।

जलांचल—पु० [स० जल-अचल प० त०] पानी की नहर।

जलाजल—पु० [स० जल√अज् (व्याप्त करना)+अलच्] १. सेवार। २ सोता। स्रोत।

जलांजलि—स्त्री०[स० जल-अजलि, मध्य० स०] १ जल से भरी अजुली। २ तर्पण के समय पितरो आदि को दी जानेवाली जल की अजुलि।

जलांटक—पु०[स० जल√अट् (घूमना)+ण्वुल्—अक] मगर।

जलातक—पु० [स० जल-अतक व० स०, कप्] १ सात समुद्रो मे से एक। २ श्री कृष्ण का एक पुत्र जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। (हरिवश)

जलांबिका—स्त्री०[स० जल-अविका प० त०] कूआँ। कूप।

जलाऊ—वि० [हिं० जलाना+आऊ (प्रत्य०)] १ जलानेवाला। २ (वह) जो जलाया जाय या जलाये जाने को हो। जैसे—जलाऊ लकडी।

जलाक—स्त्री०[हिं० जलाना] १ पेट की जलन। २ तेज धूप की लपट। ३ लू।

जलाकर—पु०[स० जल-आकर प० त०] वह स्थान जहाँ वहुत अधिक जल हो। जलाशय। जैसे—नदी, समुद्र आदि।

जलाकांक्ष—पु०[स०,जल-आ√कांक्ष्, (चाहना)+अण् व० स०] हाथी।

जलाका—स्त्री० [स० जल-आ√का (जाहिर होना)+क-टाप्] जोक।

जलाक्षी—स्त्री० [स० जल√अक्ष् (व्याप्त होना)+अच्-ङीप्] जलपीपल। जलपिप्पली।

जलाखु—पु०[स० जल-आखु] ऊदविलाव (जतु)।

जलाजल†—वि०=झलाझल।
†पु०=झलाझल।

जलाटन—पु०[स० जल√अट् (घूमना)+ल्यु—अन] सफेद चील।

जलाटनी—स्त्री०[स० जलाटन+ङीप्] जोक।

जलाटीन—पु०=जेलाटीन।

जलांतक—पु०[स० जल-आतक, प० त०] १ जल से लगनेवाला भय। २ पागल कुत्तो, गीदडो आदि के काटने से होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे मनुष्य को जल देखने भर से वहुत अधिक डर लगता है। (हाइड्रोफोविया)

जलातन—वि०[हिं० जलना+तन] १ जिसका तन जला हो अर्थात् वहुत अधिक दुखी या सतप्त। २ क्रोधी। ३ ईर्ष्यालु।
पु० कष्ट देने की क्रिया या भाव। जैसे—इतना जलातन करोगे तो मैं चला जाऊँगा।

जलात्मिका—स्त्री०[स० जल-आत्मन् व० स०, कप्, टाप्, इत्व व० स०] १ जोक। २ कूआँ।

जलात्यय—पु०[स० जल-अत्यय, व० स०] शरत्काल।

जलाद†—पु०=जल्लाद।

जलाधार—पु०[स० जल-आधार, ष० त०] जलाशय।

जलाधिदैवत—पु० [स० जल-अधिदैवत, ष० त०] १. वरुण। २ पूर्वाषाढा नक्षत्र।

जलाधिप—पु०[स० जल-अधिप, ष० त०] १ व ण। २. ज्योतिष मे, वह ग्रह जो किसी विशिष्ट सवत्सर मे जल का अधिपति होता है।

जलाना—स०[हिं० जलना क्रिया का स० रूप] १ आग के सयोग से किसी चीज को जलने मे प्रवृत्त करना। प्रज्वलित करना।

विशेष—कोई चीज या तो (क) ताप उत्पन्न करने के लिए जलाई जाती है, जैसे—ईधन जलाना, या (ख) प्रकाश उत्पन्न करने के लिए, जैसे—लालटेन जलाना, अथवा (ग) नष्ट या भस्म करने के लिए; जैसे—मकान या शहर जलाना।

२ आज-कल उक्त क्रियाएँ आग के अतिरिक्त कुछ दूसरी प्रक्रियाओ से भी की जाती है। जैसे— विजली की वत्ती या लट्टू जलाना। ३ ऐसा काम करना जिससे अधिक ताप लगने के कारण कोई चीज जलकर विकृत दशा को प्राप्त हो जाय। जैसे—तरकारी या रोटी जलाना। ३ किसी पदार्थ को आग पर रखकर इस प्रकार गरम करना कि उसका कुछ अश भाप के रूप मे उड जाय। जैसे—दूध मे का पानी जलाना। ४ कुछ विशिष्ट रासायनिक पदार्थों के सयोग से ऐसी क्रिया करना जिससे कोई तल निर्जीव या विकृत हो जाय। जैसे—क्षार या तेजाव से कपडा या फोडा-फुसी जलाना। ५ किसी को ऐसी चुभती हुई वात कहना अथवा कोई ऐसा काम करना जिससे कोई वहुत अधिक मन ही मन दुःखी हो। ६ ऐसा काम करना जिससे किसी के मन मे ईर्ष्या-जन्य कष्ट उत्पन्न हो।

जलापा—पु० [हिं० जलना+आपा (प्रत्य०)] वरावर वहुत समय तक मन ही मन जलते रहने की अवस्था या भाव।

जलापात—पु०[जल-आपात, ष० त०] जलप्रपात (दे०)।

जलायुका—स्त्री०[जल-आयुस्, व० स०, कप्, पृषो० सलोप] जोक।

जलार्क—पु०[जल-अर्क, मध्य० स०] जल मे दिखाई पडनेवाला सूर्य का प्रतिविव।

जलार्णव—पु०[जल-अर्णव, मध्य० स०] १ जल-समुद्र। २ वरसात। वर्षाकाल।

जलार्द्र—वि०[जल-आर्द्र, तृ० त०] पानी मे या से भीगा हुआ। गीला।

जलार्द्रा—स्त्री०[स० जालार्द्र+टाप्] १ गीला वस्त्र। २ भीगा पखा।

जलाल—पु०[अ०] १ तेज। प्रकाश। २. प्रताप। महिमा। ३ वैभव और सपन्नता।

जलाली—वि०[अ० जलाल] तेज या प्रकाश से युक्त।

जलालु—पु०[जल-आलु, मध्य० स०] जमीकद। सूरन।

जलालुक—पु०[स० जलालु√कै(जाहिर होना)+उक] कमल की जड। भसीड।

जलालुका—स्त्री०[सं० जल√अल् (जाना)+उक-टाप्] जोक।

जलाव—पु०[हिं० जलना+आव (प्रत्य०)]१ जलने या जलाने की क्रिया या भाव। २ जलने के कारण कम होनेवाला अश। ३ खमीर। ४ पतला शीरा।

जलावतन—वि०[अ०] [स्त्री० जलावतनी] देश या राज्य से निर्वासित।

जलावतनी—स्त्री०[अ०] देश-द्रोह आदि के अभियोग मे किसी को देश छोडकर विदेश चले जाने की दी जानेवाली आज्ञा या दड। निर्वासन। देश निकाला।

जलावतार—पु०[जल-अवतार, ष० त०] नाव आदि पर से उतरने का घाट।

जलावन—पु०[हिं० जलाना] १ जलाने की वस्तुएँ। ईंधन। २. किसी वस्तु का वह अश जो जलकर विकृत या नष्ट हो गया हो।

जलावर्त्त—पु०[जल-आवर्त्त, ष० त०] पानी का भँवर।

जलाशय—पु०[जल-आशय, ष० त०] १ वह स्थल (प्राय. गहरा स्थल) जिसमे जल भरा हो। जैसे—गड्ढा, झील, नदी, नहर आदि। २ खस। उशीर। ३ सिंघाडा। ४ लामज्जक नामक तृण।

जलाशया—स्त्री०[स० जलाशय+टाप्] नागरमोथा।

जलाश्रय—पु०[जल-आश्रय व० स० १ दीर्घनाल या वृत्तगुड नामक तृण। २. सिंघाडा।

जलाश्रया—स्त्री०[सं० जलाश्रय+टाप्] शूली घास।

जलाष्ठीला—स्त्री०[जल-अष्ठीला, तृ० त०] वहुत वडा तथा चौकोर तालाव।

जलासुका—स्त्री०[जल-असु, व० स०, कप्-टाप्] जोक।

जलाहल—वि० [हिं० जलाजल अथवा स० जलस्थल] जल से भरा हुआ। जलमय। उदा०—जगत जलाहल होइ कुलाहल त्रिभुवन व्यापै।—रत्ना०।

जलाह्वय—पु०[स० जल-आह्वय, व० स०] १. कमल। २. कुईं। कुमुद।

जलिका—स्त्री०[स० जल+ठन्-इक-टाप्] जोक।

जलिया†—पु०[स० जल] केवट। मल्लाह।

जलीय—वि० [स० जल+छ-ईय] १ जल-संवधी। जल का। जैसे—जलीय क्षेत्र। २. जल मे उपजने, रहने या होनेवाला। जैसे—जलीय जतु। ३. जिसमें जल का अश हो।

जलीय-क्षेत्र—पु०[कर्म० स०] दे० 'जल-प्रागण'।

जलील—वि० [अ०] [भाव० जलाल] पूज्य या महान (व्यक्ति)। वि० [अ० ज़लील] [भाव० जिल्लत] १. जिसका अपमान हुआ हो। अपमानित। २ जो अपमानित किये जाने पर भी हठ वश वही काम करता हो। ३ तुच्छ। नीच।

जलुका—स्त्री०[स० √जल् (तेज होना)+उक-टाप्] जोक।

जलू—स्त्री०[स० जलौका] जोक।

जलूका—स्त्री०[जल-ओक, व० स०, पृषो० सिद्धि] जोक।

जलूस—पु०[अ० जुलूस] १ गलियो, वाजारो, सडको आदि पर प्रचार, प्रदर्शन आदि के लिए निकलनेवाला व्यक्तियो का समूह।

क्रि० प्र०—निकलना।—निकालना।

२. वहुत ही ठाठ-वाट या सजावट की अवस्था या स्थान। उदा०—वैठी जमन जलूस करि फरस फवी सुखयान।—विक्रम सतसई।

जलूसी—वि०[अ० जुलूस] १ जलूस सवधी। जलूस का। २ (सन या सवत्) जिसका आरभ किसी राजा के सिंहासन पर वैठने के दिन से हुआ हो।

जलेंद्र—पु०[जल-इंद्र, ष० त०] १ वरुण। २ महासागर।

जलेंधन—पु०[जल-इधन, व० स०] वडवाग्नि।

जलेचर—वि०[स० जले√चर् (चलना)+ट] जलचर।

जलेच्छया—पु० [स० जल√इ (गति)+क्विप्, √शी (सोना)+अच्, टाप्] जलाशय मे होनेवाला हाथी सूँड नामक पौधा।

जलेज—पु०[स० जले√जन् (उत्पत्ति)+ड] कमल।

जलेतन—वि०[हिं० जलना+तन] १ जिसे बहुत अधिक शारीरिक या मानसिक कष्ट पहुँचा हो। २. ईर्ष्या, द्रोह आदि के कारण बहुत अधिक दुःखी या सतप्त। ३ क्रुद्ध।

जलेबा—पु०[हिं० जलेबी] वडी जलेबी।

जलेबी—स्त्री०[देश०] १ घी मे तलकर शीरे मे पगाई हुई मैदे की कुंडलाकार एक प्रसिद्ध मिठाई। २ बरियारे की जाति का एक पौधा जिसमे पीले रग के फूल लगते है। ३ एक प्रकार की छोटी अतिशबाजी। †४ घेरा। लपेट।

जलेभ—पु०[जल-इभ, मध्य० स०] जलहस्ती नामक जल-जतु।

जलेरुहा—स्त्री०[स० जले√रुह (उगना)+क—टाप्] सूरजमुखी नाम का पौधा और उसका फूल।

जलेला—स्त्री० [स० जले√ला (लेना)+क—टाप्] एक मातृका जो कार्तिकेय की अनुचरी कही गई है।

जलेवाह—पु०[स० जले√वाह् (प्रयत्न)+अण्] गोताखोर। पनडुब्बा।

जलेशय—पु०[सं० जले√शी (शयन करना)+अच्] १ मछली। २. विष्णु।

जलेश्वर—पु०[जल-ईश्वर, ष० त०] १ वरुण। २ समुद्र।

जलोका—स्त्री०[जल-ओक ब० स०, पृषो० सिद्धि] जोक।

जलोच्छ्वास—पु० [जल-उच्छ्वास ष० त०] जलाशय मे उठनेवाली वह वडी लहर जो तट की भूमि को भी स्पर्श करती है।

जलोत्सर्ग—पु०[जल-उत्सर्ग, ष० त०] पुराणानुसार ताल, कूआँ या वावली आदि का विवाह।

जलोदर—पु०[जल-उदर ब० स०] एक रोग जिसमे पेट मे पानी जमा होने लगता है और उसके फलस्वरूप पेट फूलने लगता है।

जलोद्धतगति—स्त्री० [जल-उद्धति, ष० त०, जलउद्धति-गति, ब० स०] बारह अक्षरो की एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश जगण, सगण, जगण और सगण होता है।

जलोद्भवा—स्त्री० [जल-उद्भव, ब० स०, टाप्] १ गुदला नाम की घास। २. छोटी ब्राह्मी।

जलोद्भूता—स्त्री० [जल-उद्भूता, स० त०] गुदला नामक घास।

जलोन्माद—पु० [जल-उन्माद, ब० स०] शिव का एक अनुचर।

जलोरगी—स्त्री० [जल-उरगी, स०त०] जोक।

जलौकस—पु० [जल-ओकस्, कर्म० स०,+अच्] जोक।

जलौका—स्त्री० [जल-ओक, ब० स०, टाप्] जोक।

जल्द—अव्य० [अ०] जल्दी। (दे०)

जल्दबाज—वि० [फा०] [भाव० जल्दबाजी] (किसी काम मे) आवश्यकता से अधिक जल्दी करनेवाला। हर काम या बात मे जल्दी मचानेवाला।

जल्दबाजी—स्त्री० [फा०] जल्दबाज होने की अवस्था या भाव। आवश्यक या उचित से अधिक जल्दी या शीघ्रता करना।

जल्दी—स्त्री० [अ०] तीव्र गति से आगे बढने या कोई काम करने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—हर काम मे जल्दी करना ठीक नही।
अव्य० १ शीघ्रता से। जैसे—जल्दी चलो। २. आनेवाले थोडे समय में। जैसे—अभी जल्दी पानी नही वरसेगा। ३ सहज मे। सुगमता से। जैसे—यह बात जल्दी तुम्हारी समझ मे न आयगी।

जल्प—पु० [स०√जल्प् (कहना)+घञ्] १ कथन। २ बकवाद। प्रलाप। ३ ऐसा तर्क-वितर्क या विवाद जिसमे औचित्य, न्याय, सत्य आदि का विचार छोडकर केवल अपनी बात ठीक सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाय। ४ सोलह पदार्थो मे से एक पदार्थ। (न्याय)

जल्पक—वि० [स०√जल्प्+ण्वुल्—अक] १ कहनेवाला। २ बकवादी। वाचाल। ३ झूठ-मूठ तर्क-वितर्क करनेवाला।

जल्पन—पु० [स०√जल्प्+ल्युट्—अन] १ जल्प करने की क्रिया या भाव। २ डीग।

जल्पना—अ० [स० जल्पन] १ कहना। बोलना। २. व्यर्थ मे या बे-फायदा बोलना। बकवाद करना। ३ व्यर्थ मे तर्क-वितर्क करना। ४ डीग मारना।

जल्पाक—वि० [स०√जल्प्+षाकन्]=जल्पक।

जल्पित—भू० कृ० [स०√जल्प्+क्त] १ कहा हुआ। २ बका हुआ। ३ मनगढत और मिथ्या (बात)।

जल्ला—पु० [स० जल] १ झील। (लश०) २ ताल। ३ हौज। ४ वह स्थान जहाँ जल अधिक होता या ठहरता हो।

जल्लाद—पु० [अ०] १ मुस्लिम शासन-काल मे, राज्य द्वारा नियुक्त वह कर्मचारी जो दडित अपराधी का किसी तेज धारवाले अस्त्र से सिर काटता था। २ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत वडा क्रूर तथा निर्दय (व्यक्ति)।

जल्वा—पु० [अ० जल्व] १ प्रकाश। तेज। २. शोभा। सौदर्य।

जल्सा—पु०=जलसा।

जल्होर†—पु० [देश०] एक प्रकार का धान।

जव—पु० [स०√जु (जाना)+अप्] १. वेग। तेजी। २ जल्दी। शीघ्रता।
वि० १ [√जु+अच्] १. वेगवान्। २ जल्दी या शीघ्रता करनेवाला।
पु०=जौ।

जवन—वि० [स०√जु (जाना)+ल्यु—अन] [स्त्री० जवनी] तेज। वेगवान्।
पु० [√जु+ल्युट्] वेग।
पु०=यवन।

जवनाल—पु०=यवनाल।

जवनिका—स्त्री०=यवनिका।

जवनिमा (मन्)—स्त्री० [स० जवन+इमनिच्] वेग।

जवनी—स्त्री० [स० जवन+ङीप्] १ अजवायन। २ वेग। तेजी।
स्त्री०=यवनी (यवन जाति की स्त्री)।

जवस्—पु० [स०√जु+असुन्] वेग।

जवस—पु० [स०√जु+असच्] घास।

जवाँ—वि० [फा०] जवान का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरभ मे प्राप्त होता है। जैसे—जवाँमर्द।

जवाँमर्द—पु० [फा०] [भाव० जवाँमर्दी] १ नौजवान आदमी। २ वीर पुरुष। बहादुर।

जवांमर्दी—स्त्री० [फा०] १ जवान अर्थात् युवा होने की अवस्था या भाव। २ बहादुरी। वीरता।

जवा—स्त्री० [सं० √ज (प्राप्त होना)+अच्-टाप्] अड़हुल। जपा।
पु० [सं० यव] १ जौ के आकार का दाना। २ लहसुन का दाना। ३ एक प्रकार की सिलाई।

जवाइन—स्त्री०=अजवाइन।

जवाई—स्त्री० [हिं० जाना] १ जाने की क्रिया या भाव। गमन। २ वह धन जो किसी को कहीं जाने पर उपहार या पारिश्रमिक के रूप में दिया जाय।
†पु०=जँवाई (दामाद)।

जवा-कुसुम—पु० [मध्य० स०] अड़हुल का फूल।

जवाखार—पु० [सं० यवक्षार] वैद्यक में जौ के क्षार से बनाया जानेवाला एक प्रकार का नमक।

जवाज़ी—स्त्री० [हिं० जौ+आजी (प्रत्य०)] गेहूँ में मिले हुए जौ के दाने।

जवादानी—स्त्री० [हिं० जौ+दानी] गले में पहनने का एक प्रकार का आभूषण। चपाकली।

जवादि—पु० [अ० जव्वाद, जवाद] कस्तूरी की तरह का एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो गंध-मार्जार की नाभि में से निकलता है।

जवाधिक—पु० [सं० जव-अधिक, ब० स०] बहुत तेज चलनेवाला घोड़ा।

जवान—वि० [फा०] [भाव० जवानी] १. युवा। तरुण। २. (व्यक्ति) जो तरुण अवस्था प्राप्त कर चुका हो। बचपन और प्रौढ़ता के बीच की अवस्थावाला। ३. वीर।
पद—जवान-जहान=पूर्ण यौवन प्राप्त। जैसे—जवान-जहान लड़की।
पु० १ वीर पुरुष। २ पुलिस या सेना का सिपाही।

जवानी—स्त्री० [फा०] जवान होने की अवस्था या भाव। तरुणाई। यौवन।
क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।—ढलना।
पद—उठती या चढ़ती जवानी=वह अवस्था जिसमें किसी का यौवन-काल आरंभ हो रहा हो।
मुहा०—उतरती या ढलती जवानी=यौवन-काल समाप्त होने का समय।
स्त्री० [सं०] अजवायन।

जवाब—पु० [अ०] [वि० जवाबी] १ वह बात जो किसी के प्रश्न, अभियोग, तर्क आदि के संबंध में उसके समाधान के लिए कही जाय। उत्तर। जैसे—पत्र का जवाब दिया गया है।
मुहा०—जवाब तलब करना=अधिकारपूर्वक किसी से उसके अनुचित या अवैधानिक आचरण या व्यवहार का कारण पूछना।
२. ऐसा कार्य जो बदला चुकाने के लिए किया जाय। जैसे—उन्होंने थप्पड़ का जवाब मुक्के से या ईंट का जवाब पत्थर से दिया है। ३ किसी वस्तु के जोड़ की कोई दूसरी वस्तु। जैसे—(क) ताजमहल का जवाब देनेवाली रचना संसार में नहीं है। (ख) वह ऐसा लुच्चा है जिसका जवाब नहीं। (ग) यह कंगूरा उस कंगूरे का जवाब है। ४. नहिक या नकारात्मक आदेश या उत्तर। जैसे—उन्हें नौकरी से जवाब मिल गया है।

जवाबदारी—स्त्री०=जवाबदेही।

जवाबदावा—पु० [अ०] वह लिखित पत्र जो वादी के अभियोग या कथन के उत्तर में प्रतिवादी की ओर से न्यायालय में उपस्थित किया जाता है।

जवाबदेह—वि० [फा०] (व्यक्ति) जिस पर किसी कार्य का पूरा उत्तरदायित्व हो। जिम्मेदार।

जवाबदेही—स्त्री० [फा०] जवाबदेह होने की अवस्था या भाव। उत्तरदायित्व।

जवाब सवाल—पु० [अ० जवाब+सवाल] १. किसी द्वारा पूछे जानेवाले प्रश्नों का दिया जानेवाला उत्तर। प्रश्न और उत्तर। २ वाद-विवाद।

जवाबी—वि० [फा० जवाब] १. जवाब संबंधी। २ जिसका जवाब दिया जाने को हो। ३ जो किसी के जवाब के रूप में हो। जैसे—जवाबी कागज।

जवार—पु० [अ०] १ आस-पास का स्थान। २ पड़ोस। ३ मार्ग। रास्ता।
*पुं०=ज्वार।
†स्त्री०=ज्वार।

जवारा—पु० [हिं० जौ] १ जौ के नये निकले हुए अंकुर। २ नवरात्र की नवमी को होनेवाला एक उत्सव जिसमें लोग उक्त बोये हुए जौ के अंकुर प्रवाहित करने के लिए निकलते हैं।

जवारी—स्त्री० [हिं० ज्वार] १. एक प्रकार की माला जिसमें जौ, छुहारे, नारियल के बीज आदि गूँथे जाते हैं। २. ऊन या रेशम का वह धागा जो तंबूरे के तार के नीचे उस अंश पर लपेटा जाता है जो घोड़ी पर रहता है।
पद—जवारीदार गला=संगीत में ऐसा गला जिससे गाने के समय उसी के साथ रूप या छाया के रूप में उस स्वर की बहुत महीन या हलकी रेखा भी सुनाई पड़ती है।
३. ज्वार।

जवाल—पु० [अ० ज़वाल] १ अवनति। उतार। ह्रास। २ आफत। झंझट।
मुहा०—जवाल में डालना=झंझट में फँसाना। जवाल में पड़ना=आफत या संकट में पड़ना।

जवाशीर—पु० [फा० गावशीर] एक प्रकार का गंधा बिरोजा।

जवास (ा)—पु० [सं० यवासक, प्रा० जवासअ] एक प्रकार का कँटीला क्षुप जिसके कई अंग औषध के रूप में काम आते हैं।

जवाह—पु० [?] प्रवाल नामक रोग।

जवाहड़—स्त्री० [हिं० जवा=दाना+हड़] एक प्रकार की छोटी हड़।

जवाहर—पु० [अ० जौहर का बहु० रूप] रत्न। मणि।

जवाहर खाना—पु० [अ० जवाहर+फा० खानः] वह स्थान जहाँ पर जवाहर अर्थात् रत्न आदि रखे जायँ।

जवाहरात—पु० [अ० जवाहर का बहुवचन रूप] अनेक प्रकार की मणियों या रत्नों का संग्रह या समूह।

जवाहिर—पु०=जवाहर।

जवाहिरात—पु०=जवाहरात।

जवाही—वि० [हिं० जवाह] जवाह अर्थात् प्रवाल रोग से पीड़ित।

जवी (जविन्)—वि० [स० जव+इनि] वेगवान्। तेज।
पु० १ घोड़ा। २ ऊँट।

जवीय (स्)—वि० [स० जव+ईयसुन्] बहुत तेज। वेगवान्।

जवैया†—वि० [हिं० जाना+ऐया (प्रत्य०)] प्रस्थान करने या रवाना होनेवाला। जानेवाला। उदा०—बरसत में कोऊ घर सों न निकसत तुमहीं अनोखे विदेस जवैया।—कोई कवि।

जशन—पु० [फा० मि० स० यजन] १ बहुत धूमधाम से मनाया जानेवाला कोई धार्मिक या सामाजिक उत्सव। आनन्दोत्सव। जलसा। २. बड़ी महफिलों के अन्त में होनेवाला वह नृत्य जिसमें सब नर्त्तकियाँ या वेश्याएँ एक साथ मिलकर नाचती और गाती हों।

जष्ट*—स्त्री०=यष्टि।

जस—वि०=जैसा।
पद—जस का तस=ज्यों का त्यों। जैसा था वैसा ही। उदा०—जस दूलहा तस बनी बराता।—तुलसी।
क्रि० वि०=जैसे।
†पु०=यश।

जसद—पु० [स० जस√दा (देना)+क] जस्ता।

जसन†—पु०=जशन।

जसवै*—स्त्री०=यशोदा।

जसामत—स्त्री० [अ० जिस्म का भाव० रूप] शारीरिक स्थूलता। मोटापा।

जसीम—वि० [अ० जिस्म का वि०] स्थूल आकारवाला। भारी भरकम।

जसु—पु० [स०√जस् (छोड़ना आदि)+उ] १ अस्त्र। हथियार। २ अशक्तता। ३ थकावट।
†पु०=जस (यश)।
†सर्व० [स० यस्य प्रा० जस्स] जिसका।
*स्त्री०=यशोदा।

जसुरि—पु० [स०√जस्+उरिन्] वज्र।

जसूंद—पु० [देश०] एक वृक्ष जिसके रेशों को बटकर रस्से बनाये जाते हैं। नताउल।

जसोदा†—स्त्री०=यशोदा।

जसोमति—स्त्री०=यशोदा।

जसोवा*—स्त्री०=यशोदा।

जसोवै—स्त्री०=यशोदा।

जस्त—पु०=जस्ता (धातु)।
स्त्री० [फा०] छलाँग। चौकड़ी।

जस्तई—वि० [हिं० जस्ता] १ जस्ते का बना हुआ। २. जस्ते के रंग का। खाकी।
पु० उक्त प्रकार का रंग जो प्रायः मटमैला होता है।

जस्ता—पु० [स० जसद] १ कुछ मटमैले रंग की एक प्रसिद्ध धातु। २ कपड़ो में, बुनावट के सूतों का इधर-उधर हट जाने के कारण दिखाई देनेवाला झीनापन।

जहँ†—अव्य०=जहाँ।

जहँड़ना†—अ० [सं० जहन, हिं० जेंहड़ना] १. घाटा उठाना। २ धोखे में आना। ठगा जाना। ३ निष्फल या व्यर्थ होना। उदा०—ई जग तो जहँडे गया, भया जोग ना भोग।—कबीर।
स० धोखा देना। ठगना।

जहँड़ाना—अ०, स०=जहँड़ना।

जहक—वि० [स०√हा (त्याग)+कन्, द्वित्वादि] त्याग करनेवाला।
स्त्री० [हिं० जहकना] जहकने की क्रिया या भाव।

जहकना†—अ० [हिं० झकना] १ चिढ़ना। २ कुढ़ना। ३ बढ़-बढ़कर बातें करना।

जहका—स्त्री० [स० जहक-टाप्] कटास, नेवले आदि की तरह का एक जन्तु।

जहटना—स०=जटना (ठगना)।

जहत्—पु० [स०√हा (त्याग)+शतृ, द्वित्वादि] परित्याग।

जहत्-लक्षणा—स्त्री० [ब० स०] साहित्य में लक्षणा का एक भेद जिसमें पद या वाक्य अपना वाच्यार्थ छोड़कर सामीप्य-संबंध से किसी और अर्थ का बोध कराता है। जैसे—'हमारा घर गंगा पार है' का अर्थ होगा हमारा घर गंगा के किनारे है।

जहत्-स्वार्था—स्त्री० [ब० स०]=जहत् जहल्लक्षणा।

जहतिया—पु० [हिं० जगात+कर] वह जो कर उगाहता या वसूल करता हो। जगाती।

जहद—स्त्री० [अ०] १ उद्योग। प्रयत्न। २ परिश्रम। मेहनत।

जहदजहल्लक्षणा—स्त्री० [स० जहत्-अजहत्-लक्षणा, ब० स०] लक्षणा का वह भेद जिसमें वक्ता के शब्दों में निकलनेवाले कई अर्थों या आशयों में से केवल एक विशिष्ट और संबद्ध अर्थ या आशय ग्रहण किया जाता है।

जहदना—अ० [हिं० जहदा] १. कीचड़ होना। २ शिथिल होना।

जहदा—पु० [?] १ कीचड़। २ दलदल।

जहद्दम—पु०=जहन्नुम।

जहना*†—स० [स० जहन] १. छोड़ना। त्यागना। २ नष्ट करना।

जहन्नुम—पु० [अ०] मुसलमानों के अनुसार नरक। २ लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा स्थान जहाँ बहुत कष्ट भुगतना पड़े।

जहन्नुमी—वि० [फा०] १ नरक-संबंधी। २ नरक में जाने या वास करनेवाला। नारकीय।

जहमत—स्त्री० [अ० ज़हमत] [वि० जहमती] १ आपत्ति। विपत्ति। २ झंझट। बखेड़ा।
मुहा०—जहमत उठाना=कष्ट उठाना। विपत्ति भोगना।

जहर—स्त्री० [फा० ज़ह्र] १ ऐसी वस्तु जिसका सेवन या स्पर्श करने पर जीवन के लिए घातक परिणाम होता या हो सकता हो। विष।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।—पीना।
२ लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसा अप्रिय, कटु या दोषपूर्ण कार्य या बात जिससे कोई बहुत अधिक दुःखी या संतप्त होता हो।
पद—**जहर का बुझाया हुआ**=(क) (व्यक्ति) जो बहुत अधिक उपद्रवी तथा दुष्ट हो। (ख) (कथन या वचन) जो बहुत ही अप्रिय और कटु हो। (ग) (अस्त्रों के संबंध में) जिसे किसी विपाक्त घोल या तरल पदार्थ में इस उद्देश्य से डुबा लिया गया हो कि उससे प्रहार करने पर उस विष का प्रभाव आहत व्यक्ति के सारे शरीर में फैलकर अंत में

उसके प्राण ले ले। जैसे—बहुत-सी जगली जातियाँ जहर मे बुझाए हुए तीर चलाती है। **जहर की गाँठ**=दे० 'विष की गाँठ'।

मुहा०—जहर उगलना=बहुत ही कटु, चुभनी या लगती हुई बाते कहना। **(कोई चीज या बात) जहर कर देना**=अत्यन्त अप्रिय या कटु अथवा प्राय असभव कर देना। जैसे—तुमने झगडा करके खाना पीना जहर कर दिया है। **जहर का घूँट पीना**=बहुत ही अप्रिय बात सुनकर भी चुपचाप सहन कर लेना। **जहर मार करना**=अनिच्छा, अरुचि या भूख न होने पर भी जबरदस्ती खाना।

वि० १ विषाक्त। २ घातक। ३ बहुत ही कड़आ।

जहरगत—स्त्री० [हिं० जहर?+स० गति] घूँघट काढ़कर नाचने का एक प्रकार।

जहरदार—वि० [फा०] जिसमे जहर हो। जहरीला। विषाक्त।

जहरवाद—पु० [फा०] एक प्रकार का फोडा जिसमें उत्पन्न होनेवाले जहर के कारण मनुष्य के प्राण सकट मे पड जाते है।

जहरमोहरा—पु० [फा० जहर मुहरा] एक प्रकार का पत्थर जिसमे जहरीला तत्त्व सोख लेने फलत जहर के प्रभाव से किसी को मुक्त करने की शक्ति होती है।

जहरी—वि० [हिं० जहर] जिसमे जहर हो। विषैला।

जहरीला—वि० [हिं० जहर+ईला (प्रत्य०)] १ जिसमे जहर भरा या मिला हो। विषैला। २ बहुत अधिक अप्रिय या कटु बाते कहनेवाला। ३ बहुत अधिक उप वी या दुष्ट। ४ बहुत अधिक अप्रिय। कटु।

जहल—स्त्री० [अ०] [भाव० जहालत] अज्ञान। मूर्खता।

स्त्री० [?] ताप।

जहल्लक्षणा—स्त्री० [स० जहत्-लक्षणा, ब० स०]=जहदजहल्लक्षणा।

जहाँ—अव्य० [स० यत्र, पा० यत्थ, प्रा० जह] जिस स्थान पर। जिस जगह। जैसे—जहाँ गये वही के हो गये।

पद—जहाँ का तहाँ=जिस स्थान पर कोई चीज है या थी उसी स्थान पर। जैसे—गिलास जहाँ का तहाँ रख देना। **जहाँ-तहाँ**=इधर-उधर। किसी जगह। जैसे—उनके दूत जहाँ-तहाँ फैले हुए थे।

पु० [फा० जहान] लोक। ससार।

जहाँगीर—वि० [फा०] [भाव० जहाँगीरी] ससार को अपने अधिकार मे रखनेवाला।

जहाँगीरी—स्त्री० [फा०] हथेली के पिछले भाग पर पहना जानेवाला एक गहना जिसके आगे पाँचो उँगलियो मे पहनने के लिए पांच अँगूठियाँ लगी रहती है।

जहाँदीद (ा)—वि० [फा०] जिसने ससार को देखा-परखा हो। अनुभवी।

जहाँपनाह—वि० [फा०] ससार की रक्षा करनेवाला।

पु० १ ईश्वर। २ राजा।

जहा—स्त्री० [स०] गोरखमुडी।

जहाज—पु० [अ० जहाज] १ समुद्रो मे चलनेवाली बहुत बडी नाव।

पद—जहाज का पंछी=ऐसा व्यक्ति जिसका आधार या आश्रय एक ही व्यक्ति या स्थान हो। एक को छोडकर जिसका और कही ठिकाना न लगे।

२ दे० 'जलयान'। ३ दे० 'वायुयान'।

विशेष—जो पक्षी कही से जहाज पर आ बैठता है, वह जहाज के बीच समुद्र मे पहुँच जाने पर इधर-उधर कही आश्रय नही पाता और चारों ओर से घूम-फिर कर उसी जहाज पर आ बैठने के लिए विवश होता है। इसी आधार पर यह पद बना है।

जहाजी—वि० [अ०] १ जहाज या जहाजों पर बनने, रहने या होनेवाला।

पद—जहाजी कौआ=(क) जहाज के अन्तर्गत जहाज का पछी। (ख) बहुत बडा चालाक या धूर्त्त।

२. जहाज के कर्मचारियो से सबध रखनेवाला।

पु० १ जहाज का कर्मचारी। खलासी। २ जहाज पर यात्रा करनेवाला व्यक्ति।

स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

जहाजी सुपारी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की सुपारी जो साधारण सुपारी से कुछ बडी होती है।

जहाद—पु० [अ० जिहाद] धर्म की सुरक्षा अथवा अपने सहधर्मियों के लिए किया जानेवाला युद्ध। (मुसलमान)

जहादी—वि० [हिं० जहाद] जहाद-सबधी। जहाद का।

पु० वह व्यक्ति जो जहाद मे सम्मिलित होता हो।

जहान—पु० [फा०] जगत। लोक। ससार।

जहानक—पु० [स०√हा (त्याग)+शानच्, द्वित्वादि+कन्] प्रलय।

जहालत—स्त्री० [अ०] १ अज्ञान। २ मूर्खता।

जहिया*—वि० [स० यद्+हिं० हिया] १ जिस समय। जब। २. जिस दिन।

जहीं†—क्रि० वि० [स० यत्र, पा० यत्थ] [हिं० जहाँ+ही (प्रत्य०)] जिस स्थान पर ही। जहाँ ही।

विशेष—तहीं और वहीं इसके नित्य सबधी है। जैसे—जहीं देखो तहीं या वहीं लोग यही चर्चा कर रहे थे।

†अव्य० ज्यो ही।

जहीन—वि० [अ० ज़हीन] १. हर बात को जल्दी सीख या समझ लेनेवाला। २ समझदार। बुद्धिमान्।

जहु—पु० [स०√हा+उण्, द्वित्वादि] सतान।

जहूर—पु० [अ० ज़हूर] जाहिर अर्थात् प्रकट करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। प्रकाश मे आना या होना।

जहूरा†—पु० [अ० ज़हूर] १. प्रताप। २ अभिव्यक्ति। ३ दृश्य। ४ ठाठ-बाट।

जहेज—पु०=दहेज।

जह्नु—पु० [स०√हा (छोडना)+नु, द्वित्वादि] १ विष्णु। २ एक ऋषि जिन्होने गगा नदी का पान कर लिया था और फिर राजा भगीरथ के प्रार्थना करने पर उसे कान के रास्ते से बाहर निकाल दिया था।

जह्नु-तनया—स्त्री० [ष० त०] गगा नदी।

जह्नु-नंदिनी—स्त्री० [ष० त०] गगा नदी।

जह्नु-सप्तमी—स्त्री [ष० त०] दे० 'गगा सप्तमी'।

जह्नु-सुता—स्त्री० [ष० त०] गगा।

जह्र—पु० [फा० जह्र] जहर।

जाँ—अव्य० [स० यत्र] जहाँ। उदा०—जो वै जाँ गृहि गृहि जगन जागवै। —प्रिथीराज।

स्त्री०=जान।

वि० [फा० जा] उचित। वाजिब।

जाँउन†—पु०=जामुन।

जाँग—पु० [देश०] घोडो की एक जाति।

†स्त्री०=जाँघ।

जाँगड़ा—पु० [देश०] प्राचीन काल मे राजाओ का यश गानेवाला। भाट या वदी।

जाँगर—पु० [हिं० जान या जाँघ] १ देह। शरीर।

क्रि० प्र०—चलना।

२ शरीर का वल विशेषत कोई काम करते समय उसमे लगनेवाला वल। पौरुष।

पद—जाँगरचोर। (दे०)

पु० [देश०] ऐसा डठल जिसमे से अन्न झाड या निकाल लिया गया हो। उदा०—तुलसी त्रिलोक की समृद्धि सौज सपदा अकेलि चाकि राखी रासि जाँगर जहान भो।—तुलसी।

जाँगरचोर—पु० [हिं० जाँगर+चोर] वह व्यक्ति जो आलस्य आदि के कारण जान-बूझकर अपनी पूरी शक्ति किसी काम मे न लगाता हो।

जाँगरा*—पु०=जाँगडा (भाट)।

जांगल—पु० [स० जगल+अण्] १ ऐसा ऊसर तथा निर्जन प्रदेश जिसमे वर्षा कम होने तथा गरमी अधिक पडने के कारण वनस्पतियाँ, वृक्ष आदि वहुत थोडे हो। २ उक्त प्रदेश मे रहने तथा होनेवाला जीव या वस्तु। जैसे—जल, लकडी, हिरन आदि। ३ हिरन आदि पशुओ का मास। ४ तीतर।

वि० १. जगल-सवधी। २ जगली या वन्य अर्थात् जो पालतू न हो।

जांगलि—पु० [स० जगल+इञ्] जागलिक।

जांगलिक—वि० [स० जगल+ठक्–इक] १ जगल-सवधी। २ जगली।

पु० [जागली+ठन्–इक] १ साँप पकडनेवाला व्यक्ति। २ साँप के काट खाने पर चढनेवाले विष उतारने या दूर करनेवाला। गारुडी।

जांगली—स्त्री० [स० जागल+ङीप्] केवाँच। कौछ।

जांगलू—वि० [स० जांगल] १ जगल सवधी। २ जगली। ३. अशिष्ट और असभ्य। उजड्ड।

जाँगी—पु० [?] नगाडा।

जागुल—पु० [स० जगुल+अण्] १ तोरी नामक पौधा और उसकी फली। २ विष।

जागुलि (क)—वि०, पु० [स० जगुल+इञ्]=जागलिक।

जांगुली—स्त्री० [स० जागुल+ङीप्] वह विद्या या मत्र-शक्ति जिसके द्वारा विष के प्रभाव को दूर किया जाता है।

जाँघ—स्त्री० [स० जघा=पिंडली] मनुष्यो और चौपायो के घुटने और कमर के वीच का अग।

मुहा०—**(अपनी) जाँघ उघाड़ना या नंगी करना**=अपनी वदनामी या कलक की वात स्वय करना। उदा०—करियै कहा लाज मरियै जब अपनी जाँघ उघारी।— सूर।

पद—**जाँघ का कोड़ा**=वहुत ही तुच्छ और हीन व्यक्ति।

जाँघा—पु० [देश०] १ हल। (पूरब) २ कूएँ पर वना हुआ गडारी रखने का खभा। ३. वह धुरा जिसमे उक्त गडारी पहनाई जाती है।

जाँघिक—वि० [स० जघा+ठन्–इक] १ जाघ-सबधी। २ वहुत तेज चलनेवाला।

पु० १ ऐसा जीव जो वहुत तेज चलता हो। जैसे—ऊँट, हिरन, हर-कारा आदि। २ मृगो की एक जाति। श्रीकारी जाति के मृग।

जाँघिया—पु० [हिं० जाँघ+इया (प्रत्य०)] १ कमर मे पहना जाने-वाला एक प्रकार का सिला हुआ छोटा पहनावा जिससे दोनो चूतड और जाँघे ढकी जाती हैं। २ मालखभ की एक प्रकार की कसरत।

जाँघिल—वि० [स० जघा+इलच्] वहुत तेज दौडनेवाला।

वि० [हिं० जाँघ] चलने मे जिसका पैर कुछ लचकता हो। (पशु)

स्त्री० [देश०] खाकी या मटमैले रग की एक शिकारी चिडिया।

जाँच—स्त्री० [हिं० जाँचना] १ जाँचने की क्रिया या भाव। (क) वस्तु के सवध मे, उसकी शुद्धता या उसमे के शुद्ध अश का किसी प्रक्रिया से पता लगाना। (ख) वात के सवध मे, उसकी सत्यता का पता लगाना। (ग) घटना आदि के सवध मे, उसके घटित होने के कारण का पता लगाना। (घ) कार्य के औचित्य या अनौचित्य का पता लगाना। (ङ) व्यक्ति के सवध मे, उसकी कार्य कुशलता, योग्यता, स्थिति आदि का पता लगाना। २ अनुसधान या छान-वीन करने का काम। ३ पूछ-ताछ।

जाँचक* —पु० दे० 'याचक'।

वि० [हिं० जाँचना] जाँचनेवाला।

*वि०=याचक।

जाँचकता—स्त्री० [हिं० जाँचक+ता (प्रत्य०)] जाँचक होने की अवस्था या भाव।

जाँचना—स० [स० याचन] १. किसी प्रक्रिया, प्रयोग आदि द्वारा (क) किसी वस्तु की प्रामाणिकता, शुद्धता आदि का पता लगाना, जैसे—घी, तेल या दूध जाँचना। (ख) किसी मिश्रण के सयोजक तत्त्वो अथवा उसमे मिली हुई अन्य वस्तुओ का पता लगाना। जैसे—खून, थूक या पेशाव जाँचना। २ किसी वात, सिद्धात आदि की उपयुक्तता, सत्यता का पता लगाना। जैसे—कवित्त की परिभाषा जाँचना। ३ घटना आदि के घटित होने के कारणो का पता लगाना। ४ किसी कृत्य या क्रिया के औचित्य, अनौचित्य अथवा ठीक होने या न होने का पता लगाना। जैसे—हिसाब जाँचना। ५ किसी की शारीरिक या मान-सिक कार्य-कुशलता, योग्यता, समर्थता, स्थिति आदि का पता लगाना। जैसे—(क) डाक्टर का रोगी को जाँचना। (ख) सेना मे भरती करने से पहले रग-रूटो को जाँचना। ६ अनुसधान या छान-वीन करना। ७ पूछ-ताछ करना। ८ याचना करना। माँगना।

*स० [स० यातना] १. यातना या कष्ट देना। २ नष्ट करना। उदा०—ह्वै गई छान छपाकर की छवि जामिनि जोन्ह मनौ जम जाँची।—देव।

जाँजरा*—वि० [स० जर्ज्जर] जीर्ण-शीर्ण। जर्जर।

जाँझ (त)—पु० [स० झझा] वह गहरी वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी चल रही हो।

जाँट—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड। रोया।

जाँत—पु०=जाँता।

जांतव—वि० [स० जतु+अण्] १ जीव-जतुओ से सम्वन्धित। २ जीव-जतुओ से उत्पन्न होने या मिलनेवाला। जैसे—जातव विष।

जांतविक—वि०[सं० जतु+ठक्—इक]=जातव।
जाँता—पु०[सं० यन्त्रम्, पा० यन्तम्; प्रा० जन्तम्, बँ० जात, जाति; सि० जण्ड, मरा० जाते] १. गेहूँ, आदि पीसने की हाथ से चलाई जानेवाली पत्थर की बड़ी चक्की जो प्रायः किसी स्थान पर गाड़ दी जाती है। २ सोनारों, तारकशों आदि का जंती नामक औजार।
जाँपना*—स०[? अथवा हिंदी चाँपना का अनु०] चाँपना। दबाना।
जाँपनाह—पु०=जहाँपनाह।
जाँबा†—पु०[सं० जांबव] जामुन का वृक्ष और उसका फल।
जाँबव—पु०[सं० जंबू+अण्] १ जामुन का वृक्ष और उसका फल।
वि० १. जामुन संबंधी। २ जामुन के रस से बना हुआ। जैसे—शराब, सिरका आदि।
जाँबवत—पु०=जाँबवान्।
जांबवक—पु०[जंबू+वुन्—अक]=जांबव।
जांबवती—स्त्री०[सं० जांबवत्+अण्—ङीप्] १ द्वापर युग के जांबवान की वह कन्या जिसके साथ श्रीकृष्ण ने विवाह किया था। २ नागदौनी।
जाँबवान् (वत्)—पु०[सं०] राम की सेना का एक रीछ जो राजा सुग्रीव का मंत्री था।
जाँबवि—पु० [सं०जंबू०+इञ्] वज्र।
स्त्री० जांबवती।
जांबवौष्ठ—पु०[सं० जांबव-ओष्ठ ब०स०] दे० 'जांबोष्ठ'।
जाँ-बाज—वि०[फा०] [भाव० जाँबाजी] प्राणों की बाजी लगानेवाला। प्राण तक देने को तैयार रहनेवाला।
जांबीर—पु०[सं० जंबीर+अण्] जंबीरी नींबू।
जांबील—पु०[सं०] घुटने पर की गोल हड्डी। चक्की।
जाँबु—पु०=जामुन।
जांबुक—वि०[सं० जंबुक+अण्] जंबुक अर्थात् सियार संबंधी।
जांबुमाली (लिन्)—पु०[सं०] एक राक्षस जिसका वध हनुमान् जी ने अशोक वाटिका में किया था।
जांबुवत्—पु०=जांबवान्।
जांबुवान—पु०=जांबवान्।
जांबू—पु०=जंबू (द्वीप)।
जांबूनद—पु०[सं० जंबू-नदी+अण्] १. धतूरा। २ सोना।
जांबोष्ठ—पु०[सं० जांबवौष्ठ] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र जिसकी सहायता से फोड़ों आदि को जलाया या दागा जाता था। (शल्य-चिकित्सा)
जाँय†—क्रि० वि०[फा० बेजा] व्यर्थ। बे-फायदे। उदा०—भर्तहि दोसु देइ को जायँ।—तुलसी।
जाँर—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड़।
जाँवत—वि०[सं० यावत्] १ सब। २ जितना। उदा०—जाँवत गरब गहीलि हुति।—जायसी।
अव्य०=यावत्।
जाँवर*—पु०[हिं० जाना] गमन। जाना।
जा—स्त्री० [सं०√जन् (उत्पत्ति)+ड—टाप्] १. माँ। माता। २ देवरानी।
वि० स्त्री० समस्त पदों के अंत में, उत्पन्न होनेवाली। जैसे—गिरिजा, जनकजा।
सर्व० [हिं० जो] जिस।
वि०[फा०] उचित। मुनासिब।
पद—जा-बेजा=उचित और अनुचित।
स्त्री०[फा०] जगह। स्थान।
जाइ—वि०[हिं० जाना] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बे-फायदा।
क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदे।
वि० [फा० जा] उचित।
†वि०[सं० यानि] जितना।
*सर्व०[सं० यत्] जिसको।
जाइफर (फल)—पु०=जायफल।
जाइस†—पु०=जायस।
जाई—स्त्री०[हिं० जाया (वि०) का स्त्री० रूप] कन्या। पुत्री।
स्त्री०=जाही (पौधा और फूल)।
जाईदा—वि०[फा० जाइद] समस्त पदों के अन्त में, उत्पन्न या पैदा किया हुआ। जना या जाया हुआ। जात। जैसे—नवाब जाईदा=नवाब का पैदा किया हुआ।
जाउक—पु०=जावक (अलता)।
जाउर†—स्त्री०[हिं० चाउर=चावल।] खीर।
जाउरि†—स्त्री०=जाउर। (खीर)
जाएँ—क्रि० वि० =जाँय।
जाएल†—वि०[देश०] (खेत) जो दो बार जोता गया हो।
पुं० दो बार जोता हुआ खेत।
वि०[अ० जायल] १. नष्ट-भ्रष्ट। २. जो व्यर्थ हो गया हो।
जाएस†—पु० =जायस।
जाक*—पु०[सं० यक्ष] यक्ष।
स्त्री०[हिं० जकना] जकने की क्रिया या भाव।
जाकट†—स्त्री०=जाकेट।
जाकड़—पु०[हिं० जाकर] १ कोई चीज इस शर्त पर लेना कि यदि पसंद न आई तो वापस कर दी जायगी। २. उक्त शर्त पर दी या ली जानेवाली वस्तु।
जाकड़-बही—स्त्री० [हिं० जाकड+बही] वह बही जिसमें दूकानदार जाकड़ दी जानेवाली वस्तुओं का विवरण आदि लिखता है।
जाकिट—स्त्री०=जाकेट।
जाकिर—वि०[अ० जाकिर] जिक्र अर्थात् उल्लेख, चर्चा या वर्णन करनेवाला।
जाकेट—स्त्री० [अं० जैकेट] सदरी की तरह का एक आधुनिक पहनावा।
जाखन†—स्त्री०[देश०] जमवट (दे०)।=जमवट (कूएँ में की)।
जाखिनी—स्त्री०=यक्षिणी।
जाग—पु०[सं० यज्ञ] यज्ञ।
स्त्री०[हिं० जगह] १. जगह। स्थान। २ गृह। घर।
स्त्री०[हिं० जागना] जागने अथवा जागते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव।
†पु०=जामन।
पु०[देश०] बिलकुल काले रंग का कबूतर।

जागत—पु०[स० जगती+अण्] जगती छद।

जागता—वि०[हिं० जागना] [स्त्री० जागती] १ जागा हुआ। २. जो जाग रहा हो। ३ सतर्क। सावधान। ४ जो अपने अस्तित्व, शक्ति आदि का पूरा और स्पष्ट परिचय या प्रमाण दे रहा हो। जैसे—जागती कला, जागता जादू।

जागतिक—वि०[स० जगत्+ठञ्—इक]१ जगत्-सम्बन्धी। जगत का। २ जगत् या ससार मे रहने या होनेवाला।

जागती-कला—स्त्री० [हिं० जागती+स० कला] देवी-देवता आदि का ऐसा प्रभाव जो स्पष्ट दिखाई देता हुआ माना जाता हो।

जागती जोत—स्त्री० [हिं० जागना+स० ज्योति] १ कोई देवीय चमत्कार। २. दीपक। दीया।

जागना—अ०[सं० जागरण] १ सोकर उठना। नीद खुलने पर चेतन होना। २ जागता हुआ होना। निद्रारहित होना। ३. सजग या सावधान होना। ४ प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूप से अपने अस्तित्व, प्रभाव आदि का प्रमाण दे सकने की अवस्था मे होना। ५. देवी-देवताओ का अपना प्रभाव दिखलाना। ६ उत्तेजित होना। ७ विख्यात होना। ८. (आग का) अच्छी तरह जलना।

जागनौल—स्त्री०[देश०] प्राचीन काल का एक अस्त्र।

जागवलिक†—पु०=याज्ञवल्क्य।

जागर—पु०[स०√जागृ (जागना)+घञ्]१ जागरण। जागने की क्रिया। २ वह स्थिति जिसमे अत करण की सब वृत्तियाँ जाग्रत अवस्था मे होती है। ३ कवच।

जागरक—वि०[स०√जागृ+ण्वुल्—अक] १ जागता हुआ। २. जागनेवाला।

जागरण—पु०[सं० √जागृ+ल्युट्—अन] [वि० जागरित]१. जागते रहने की अवस्था या भाव।२ किसी उत्सव, पर्व आदि की रात को जागते रहने का भाव। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह अवस्था जिसमे किसी जाति, देश, समाज आदि को अपनी वास्तविक परिस्थितियो और उनके कारणो का ज्ञान हो जाता है और वह अपनी उन्नति तथा रक्षा करने के लिए सचेष्ट हो जाता है।

जागरन— पु०=जागरण।

जागरा—स्त्री०[स०√जागृ+अच्-टाप्] जागरण।

जागरित—वि०[स०√जागृ+क्त] १ जागत या जागता हुआ। २. (वह अवस्था) जिसमे मनुष्य को इद्रियो द्वारा सब प्रकार के व्यवहारो और कार्यो का अनुभव और ज्ञान होता हो। (साख्य)

जागरू†—पु०[देश०]१ दाँयी हुई फसल मे का वह अश जिसमे भूसा और कुछ अन्न-कण भी मिले हुए हो। २. भूसा।

जागरूक—वि०[स०√जागृ+ऊक]१. (व्यक्ति) जो जाग्रत अवस्था मे हो। २ (वह) जो अच्छी तरह सावधान होकर सब ओर निगाह या ध्यान रखता हो। (विजिलेन्ट)
पु० पहरेदार।

जागरूप—वि०[हिं० जागना+स० रूप] जिसका रूप बहुत ही प्रत्यक्ष और स्पष्ट हो।

जागर्ति—स्त्री०[स०√जागृ+क्तिन्]१ जाग्रत होने की अवस्था या भाव। २. जागरण। ३ चेतनता।

जागर्या—स्त्री०[सं√जागृ+यक्—टाप्] जागरण।

जागा—पु०[हिं० जागना] किसी धार्मिक उपलक्ष्य मे रात भर जागते रहने की क्रिया या भाव।
स्त्री०=जगह।

जागी†—पु०[सं० यज्ञ] भाट।

जागीर—स्त्री०[फा०] वह भूमि जो मध्ययुग मे राजाओ, बादशाहो आदि की ओर से बडे बड़े लोगो को विशिष्ट सेवाओ के उपलक्ष्य मे सदा के लिए दी जाती थी।

जागीरदार—पु० [फा०] वह जिसे जागीर मिली हो। जागीर का मालिक।

जागीरी†—स्त्री०[फा० जागीर+ई (प्रत्य०)] १. जागीरदार होने की अवस्था, पद या भाव। २ रईसी।
वि० जागीर सबधी। जैसे—जागीरी आमदनी।

जागुड़—पु०[सं० जगुड़+अण्] १ केसर। २. एक प्राचीन देश। ३ उक्त देश का निवासी।

जागृति—स्त्री०[स०√जागृ+क्तिन्]=जाग्रति।

जागृवि—पु०[स० √जागृ+क्विन्]१. राजा। २ आग।
वि०=जाग्रत।

जाग्रत्—वि०[स०√जागृ+शतृ] १. जागता हुआ। २. सचेत। सावधान। ३. जो अपने दूषित वातावरण को बदलने और अपनी उन्नति तथा रक्षा करने के लिए तत्पर हो चुका हो। ४. प्रकाशमान।
पु० दर्शनशास्त्र मे, जीव या मनुष्य की वह अवस्था जिसमे उसे सब बातो का परिज्ञान होता हो और वह अपनी इद्रियो के सब विषयों का भोग कर सकता हो।

जाग्रति—स्त्री०[सं० जागृति] १. जाग्रत होने की अवस्था या भाव। २ जागते रहने की क्रिया। जागरण।

जाघनी—स्त्री०[स० जघन+अण्—ङीप्] जघा। जाँघ।

जाचक—वि०, पु०=याचक (माँगनेवाला या भिखमगा)।

जाचकता†* —स्त्री०=याचकता।

जाचना*—स० [स० याचन] याचना करना। माँगना।
†स०=जाँचना।

जाजम—स्त्री० दे० 'जाजिम'।

जाज मलार—पु०[देश०] सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

जाजरा—वि०[सं० जर्जर] [वि० स्त्री० जाजरी]१ बहुत पुराना। जर्जर। जैसे—जाजरा शरीर। २ जिसमे बहुत से छेद हो। जैसे—जाजरी नाव।

जाजरी—पुं०[देश०] चिडीमार। बहेलिया।

जाजरूर—पु०[फा० जा+अ० जरूर] वह विशिष्ट स्थान जहाँ पर टट्टी की जाय। मल-त्याग करने का स्थान । पाखाना।

जाजल—पु०[सं०] अथर्ववेद की एक शाखा।

जाजलि—पु०[सं०] एक प्रवर-प्रवर्त्तक ऋषि।

जाजात†— स्त्री०=जायदाद।

जाजिब—वि०[फा० जाजिब]१ (तरल पदार्थ) जज्ब करने या सोखनेवाला। २. अपनी ओर खीचनेवाला। आकर्षक।

जात-वेश्म (न्)—पु०[ष०त०] १. वह कमरा, कोठरी या घर जिसमे बालक जन्मा हो। सौरी। सूतिकागार।

जाता—स्त्री०[स० जात+टाप्] कन्या। पुत्री। बेटी।
वि० स्त्री०, स० जात (विशेषण) का स्त्री०।
†पु०=जाँता।

जाति—स्त्री० [स०√जन् (उत्पत्ति)+क्तिन्] १. जन्म। पैदाइश। २ हिंदुओ मे, समाज के उन मुख्य चार विभागो मे से हर एक जिसमे जन्म लेने पर मनुष्य को जीविका निर्वाह करने के लिए विशिष्ट कार्य-क्षेत्र अपनाने का विधान है। वर्ण। विशेष दे० 'वर्ण'। ३. उक्त मे से हर एक बहुत से छोटे-छोटे विभाग और उपविभाग। जैसे—पाडेय, शुक्ल, लोहार, सोनार आदि। ४ किसी राष्ट्र (या राष्ट्रो) के वे निवासी जिनकी नसल एक हो। जैसे—अगरेज जाति, हिंदू जाति।
विशेष—ऐसी जातियो के सदस्यो की शारीरिक बनावट, उनके स्वभाव, परम्पराएँ, विचारधाराएँ भी प्राय एक-सी होती हैं। जैसे—आर्य, मगोल या हब्शी जातियाँ।
५ पदार्थो या जीव-जतुओ की आकृति, गुण, धर्म आदि की समानता के विचार से किया हुआ विभाग। कोटि। वर्ग। (जेनस) जैसे—पशु जाति, पक्षी जाति। ६ उक्त मे के छोटे-छोटे विभाग और उप-विभाग। जैसे—घोडे या हिरन की जाति का पशु। ७ कुल। वश। ८. गोत्र। ९ तर्कशास्त्र और न्यायदर्शन मे, किसी हेतु का वह अनुपयुक्त खडन या उत्तर जो तथ्य के आधार पर नही, बल्कि केवल साधर्म्य या वैधर्म्य के आधार पर हो। १० मात्रिक छद। ११ छोटा आँवला, चमेली, जायफल, जावित्री आदि पौधो की सज्ञा। ११ मालती नामक लता और उसका फूल।

जाति-कर्म (न्)—पु०[प० त०] जातकर्म।

जाति-कोश (ष)—पु०[प० त०] जायफल।

जाति-कोशी (षी)—स्त्री०[जातिकोश+ङीप्] जावित्री।

जातिच्युत—वि०[तृ०त०] (व्यक्ति) जिसके साथ किसी (उसी की) जाति के लोगो ने व्यवहार करना छोड दिया हो।

जातित्व—पु०[स० जाति+त्व] जातीयता।

जातिधर्म—पु०[प०त०] १. वे सब कार्य, गुण या बातें जो किसी जाति मे समान रूप से होती है। २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का अपना अपना अथवा अपनी अपनी जाति के प्रति होनेवाला विशिष्ट कर्त्तव्य।

जाति-पत्र—पु०[प०त०] जावित्री।

जाति-पत्री—स्त्री०[प० त०] जावित्री।

जाति-पर्ण—पु०[ष०त०] जावित्री।

जाति-पाँति—स्त्री०दे० 'जात-पाँत'।

जाति-फल—पु०[मध्य०स०] जायफल।

जाति-ब्राह्मण—पु०[तृ० त०] वह ब्राह्मण जिसका केवल जन्म किसी ब्राह्मण कुल मे हुआ हो परन्तु अपने जाति-धर्म का पालन न करता हो।

जाति-भ्रंश—पु०[प०त०] जाति भ्रष्टता।

जातिभ्रशकर—पु०[स० जातिभ्रश√कृ (करना)+ट] मनु के अनुसार नौ प्रकार के पापो मे से एक जिसमे मनुष्य अपनी जाति, आश्रम आदि से भ्रष्ट हो जाता है।

जाति-भ्रष्ट—वि०[तृ०त०] जाति-च्युत।

जाति-लक्षण—पु०[प०त०] किसी जाति मे विशिष्ट रूप से पाये जानेवाले चिह्न या लक्षण।

जाति-वाचक—वि० [प० त०] १. जाति बतानेवाला। २ जाति के हर सदस्य का समान रूप से सूचक। जैसे—जातिवाचक संज्ञा।

जाति-वाद—पु०[प०त०] [वि० जातिवादी] यह विचार-धारा या सिद्धान्त कि हमारी अथवा अमुक जाति और सब जातियो की तुलना मे श्रेष्ठ है। (रेशियलिज्म)

जाति-विद्वेष—पु०[तृ०त०] जाति-वैर।

जाति-वैर—पु०[तृ०त०] एक जाति के जीवो का दूसरी जाति के जीवो के प्रति होनेवाला प्राकृतिक या वशगत वैर।

जाति-शस्य—पु०[प०त०] जायफल।

जाति-शास्त्र—पु० [प०त०] वह शास्त्र जिसमे मनुष्यो की जातियो के विभागो, पारस्परिक सबधों, जातीय गुणो आदि का विवेचन होता है। (एन्थ्रालोजी)

जाति-संकर—पु०[प०त०] दोगला। वर्णसकर।

जाति-सार—पु०[प०त०] जायफल।

जाति-स्मर—पु०[प०त०] वह अवस्था जिसमे मनुष्य को अपने पूर्वजन्म की बातें याद आती या रहती है।

जाति-स्वभाव—पु०[प०त०] एक अलकार जिसमे आकृति और गुण का वर्णन किया जाता है।

जाति-हीन—वि०[तृ०त०] नीच जाति का।

जाती—स्त्री०[स०√जन् (उत्पत्ति)+क्तिच्—ङीप्] १. चमेली। २ मालती। ३ जायफल। ४ छोटा आँवला।
†पु०[?] हाथी। (डिं०)
†स्त्री०=जाति।
वि०[स० जातीय से फा० जाती] १ स्वय अपना। निजी। २. व्यक्तिगत।

जाती-कोश (ष)—पु०[प० त०] जायफल।

जाती-पत्री—स्त्री०[ष० त०]जावित्री।

जातीपूग—पु०[ष० त०] जायफल।

जाती-फल—पु०[मध्य० स०] जायफल।

जातीय—वि०[स० जाति+छ—ईय] १. जाति-सबधी। जाति का। २ जाति मे होनेवाला। ३. सारी जाति अर्थात् राष्ट्र या समाज का। (नैशनल)

जातीयता—स्त्री० [स० जातीय+तल्—टाप्] १. जाति का भाव। २ किसी जाति के आदर्शो, गुणो, मान्यताओ, विचारधाराओ आदि की सामूहिक सज्ञा। जसे—प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जातीयता का अभिमान होना चाहिए।

जाती-रस—पु०[ब०स०] बोल नामक गध द्रव्य।

जातु—अव्य०[स०√जन्+क्तुन् पृषो० सिद्धि] कदाचित्।

जातु-क—व०[जातु=निंदित क=जल ब०स०] हीग।

जातुज—पु०[स० जातु√जन्+ड] गर्भिणी की इच्छा। दोहद।

जातु-धान—पु०[जातु=निंदित+धान=सामीप्य ब०स०] असुर। राक्षस।

जातुष—वि०[स० जतु+अण्, षुक् आगम] १ लाख-सबधी। २. लाख का बना हुआ।

जातू—पु०[स० ज√तुर्व् (मारना)+क्विप्, दीर्घ] वज्र।

जातूकर्ण—पु०[स०] हरिवश के अनुसार एक उपस्मृतिकार ऋषि जिनका जन्म अट्ठाइसवे द्वापर मे हुआ था। (हरिवश)

जातेष्टि—स्त्री०[स० जात-इष्टि ष०त०] जातकर्म।

जातोक्ष—वि०[जात-उक्षन कर्म०स०, टच्](वह बैल) जिसे छोटी अवस्था में ही वधिया किया गया हो।

जात्यंध—वि०[स० जाति-अध तृ०त०] (जीव) जो जन्म से ही अधा हो।

जात्य—वि०[स० जाति+यत्] १ किसी की दृष्टि मे, जो उसी की जाति का हो। नातेदार। सजातीय। जैसे—जात्य भाई। २ जो अच्छे कुल या जाति मे उत्पन्न हुआ हो। कुलीन। ३ उत्तम। श्रेष्ठ। ४ सुन्दर। सुरूप।

जात्यारोह—पु०[स० जात्य-आरोह, कर्म०स०]खगोल के अक्षाश की गिनती मे वह दूरी जो मेष से पूर्व की ओर प्रथम अंश से ली जाती है।

जात्यासन—पु०[स० जात्य-आसन, कर्म०स०] तान्त्रिक साधना मे, एक विशिष्ट आसन जिसमे हाथ और पैर साथ-साथ जमीन पर रखते हुए चला जाता है।

जात्रा†—स्त्री०=यात्रा।

जात्री—†पु०=यात्री।

जायका—स्त्री०[स० जूथिका] ढेर। राशि।

जादव†—पु० [स० यादव] यादव। यदुवशी।

जादव-पति—पु०[स० यादवपति] श्रीकृष्णचन्द्र।

जादसपति, (ती)—पु० [स० यादसापति] जल-जतुओं के स्वामी। वरुण।

जादा†—वि०=ज्यादा।

वि० [स० जात से फा० जाद'] [स्त्री० जादी] जो किसी से उत्पन्न हुआ हो। उत्पन्न। जात। जैसे—नवावजादा, साहवजादा।

जादुई†—वि०[हिं० जादू] जादू का। जादू सवधी।

जादू—पु०[फा०]१ वह क्रिया या विद्या जिसकी सहायता से किसी दैवी शक्ति (जैसे—आत्मा, देवता भूत-प्रेत आदि) का आराधन किया जाता है और उसी के द्वारा कोई अभिप्रेत कार्य सपन्न कराया जाता है। जैसे—लड़की पर किसी ने जादू कर दिया है।

पद—जादू टोना=तन्त्र-मन्त्र, भूत-प्रेतो आदि के द्वारा कोई काम कराने की क्रिया या भाव।

२ बुद्धि के कौशल और हाथ की सफाई से दिखाया जानेवाला कोई ऐसा खेल जिसका रहस्य न समझने के कारण लोग उसे अलौकिक कृत्य समझें। ३. किसी वस्तु मे का वह गुण या शक्ति जिसके कारण उस वस्तु की ओर लोग वरवस आकृष्ट हो जाते हों। जैसे—इनकी आँखो में भी जादू है। ४. उक्त गुण या शक्ति का किसी पर पडनेवाला प्रभाव।

क्रि० प्र०—डालना।

मुहा०—जादू जगाना=ऐसा कार्य या प्रयोग करना कि लोगो को जादू का-सा प्रभाव दिखाई दे। **जादू जमाना**=किसी पर प्रभाव डालकर उसे पूरी तरह अपने वश मे करना।

पु०=यदु।

जादूगर—पु०[फा०] [स्त्री० जादूगरनी] १. जादू के खेल दिखानेवाले व्यक्ति। २. लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसा व्यक्ति जो आश्चर्यजनक रीति से कोई कठिन या विलक्षण कार्य कर दिखलाता हो।

जादूगरी—स्त्री०[फा०] १. जादूगर का काम, पेशा या वृत्ति। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई वहुत ही अद्‌भुत तथा विलक्षण काम जो अलौकिक-सा जान पड़ता हो।

जादूनजर—वि०[फा०] (व्यक्ति) जिसकी आँखों में जादू हो। बहुत ही सुन्दर तथा लुभावनी आँखोवाला।

जादौ† —वि०,पु०=यादव (यदुवशी)।

जादौराय*—पु०[सं० यादव]=यादवराय (श्रीकृष्ण)।

जान—स्त्री०[फा०]१ वह प्राकृतिक गुण या तत्त्व जिसके द्वारा मनुष्य जीव-जतु, पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ आदि जीवित रहती तथा अपने सव काम (जैसे—खाना-पीना, फलना-फूलना, अपने वर्ग का अभिवर्धन आदि) अच्छी तरह करती चलती है। जीवन। प्राण।

पद—जान का गाहक=(क) ऐसा व्यक्ति जो किसी की जान लेने अथवा उसका अत कर देने पर उतारू हो। (ख) बहुत दिक, तग या परेशान करनेवाला व्यक्ति। **जान का लागू**=दे० 'जान का गाहक'। **जान जोखिम या जान जोखों**=ऐसा काम या बात जिसमे जान जाने या मरने का डर हो।

मुहा०—(किसी में) जान आना=किसी मरती हुई या वेदम वस्तु का फिर से सक्रिय और स्वस्थ होना। **(जान में) जान आना**=धैर्य तथा स्थिरता होना। **जान के लाले पड़ना**=ऐसे सकट मे फँसना कि जान वचना कठिन हो जाय। प्राण सकट मे पडना। **(किसी की) जान को रोना**=ऐसे व्यक्ति को कोसना जिसके कारण वहुत दुख उठाना पडा हो। **(किसी की) जान खाना**=वार-वार दिक या परेशान करना। **जान खोना**=प्राण गवाँना। **(किसी काम से) जान चुराना**=परिश्रम का काम करने से कतराना या भागना। जी चुराना। **जान छुड़ाना**=झंझट या सकट से पीछा छुडाना या छुटकारा पाने का प्रयत्न करना। **जान छूटना**=झझट या सकट मे छुटकारा मिलना। **जान जाना**=प्राण निकलना। मरना। **जान तोड़कर**=वहुत अधिक परिश्रम करके। **जान दूभर होना**=जीवन-यापन मे वहुत अधिक कष्ट होना। जीना कठिन होना। **(अपनी) जान देना**=(क) प्राण-त्यागना। (ख) वहुत अधिक परिश्रम करना। **(किसी पर) जान देना**=(क) प्यार करना। वहुत अधिक प्रेम या स्नेह करना। (ख) जान निछावर करना। **(किसी वस्तु के पीछे या लिए) जान देना**=किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए वहुत अधिक व्यग्र होना। **(अपनी जान को) जान न समझना**=किसी वहुत वडे काम की सिद्धि मे अपने प्राणो तक को सकट मे डालना। **(दूसरे की जान को) जान न समझना**=किसी के साथ वहुत ही निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार करना। **जान निकलना** =(क) प्राण निकलना। मरना। (ख) किसी से वहुत अधिक भयभीत होना। जैसे—वहाँ जाने पर अथवा उनके सामने होने पर उसकी जान निकलती है। **(किसी मे) जान पड़ना**=(क) मृत शरीर मे प्राणो का फिर से सचार होना। (ख) फिर से प्रफुल्लित, प्रसन्न तथा स्वस्थ होना। **(किसी की) जान पर आ वनना**=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना जिससे जीवित रहना वहुत कठिन जान पड़ता हो। **(अपनी) जान पर खेलना**=(क) प्राणो को सकट मे डालकर जोखिम का काम करना।

(ख) (किसी के लिए) वीरतापूर्वक जान देना । जान पर नौबत आना=जान पर आ बनना । (दे०) **जान बचाना**=(क) प्राण रक्षा करना । (ख) पीछा छुडाना । **(किसी की) जान मारना या लेना**=(क) वध या हत्या करना । (ख) अधिक कष्ट देना या सताना । **जान सूखना**=चिंता, भय आदि के कारण निर्जीव-सा होना । **जान से जाना**=प्राण गवाँना । मर जाना । **जान से मारना**=वध या हत्या करना । **जान से हाथ धोना**=जान से जाना । (देखे) जान हलाकान करना=बहुत अधिक दु खी और परेशान करना (या होना) ।
२ शारीरिक बल या सामर्थ्य । ३ कोई ऐसी चीज या बात जो किसी दूसरी चीज या बात को सजीव या सार्थक करती अथवा उसे यथेष्ट प्रभावशाली तथा सबल बनाती हो । मूल तत्त्व । सार भाग । जैसे—यही पंक्ति तो इस कविता की जान है । ४ लाक्षणिक रूप मे, वह चीज जिसके कारण किसी दूसरी वस्तु की महत्ता या शोभा बहुत अधिक बढ जाती हो ।
मुहा०—**(किसी चीज मे) जान आना**=बहुत अधिक शोभा बढाना । जैसे--चित्र टाँगने से इस कमरे मे जान आ गई है ।
वि० प्रिय । उदा०—जान महा सहजे रिझवार ।—आनदघन ।
स्त्री० [स० ज्ञान] १ जानकारी । परिचय । परिज्ञान ।
पद—**जान-पहचान**=परिचय । **जान में**=ध्यान या जानकारी मे ।
२. ख्याल । समझ ।
वि० जाननेवाला । जानकार ।
†पु० १ यान । २ जानु ।

जानकार—वि० [हिं० जानना+कार (प्रत्य०)] १ जाननेवाला । अभिज्ञ । २ परिचित । ३ किसी बात या विषय मे कुशल या उसका अच्छा ज्ञाता ।

जानकारी—स्त्री० [हिं० जानकार] जानकार होने की अवस्था, गुण या भाव ।

जानकी—स्त्री० [स० जनक+अण्—ङीप्] जनक की पुत्री, सीता ।

जानकी-जानि—पु० [स० जानकी-जाया व० स०, नि आदेश] श्री रामचद्र ।

जानकी-नाथ—पु० [प० त०] श्री रामचद्र ।

जानकी-रमण—पु० [प० त०] श्री रामचद्र ।

जानकी रवन—पु० दे० 'जानकी रमण' ।

जानदार—वि० [फा०] १ जिसमे जान हो । सजीव । जीवधारी । २ जिसमे जीवनी-शक्ति हो । प्रबल । शक्तिशाली । जैसे—जानदार पौधा । ३ बहुत ही महत्त्वपूर्ण । जैसे—जानदार बात ।
पु० प्राणी ।

जाननहार*—पु० [हिं० जानना+हार (प्रत्य०)] जाननेवाला । ज्ञाता ।

जानना—स० [स० ज्ञान] १. किसी बात, वस्तु, विषय आदि के सबध की वस्तु-स्थिति का ज्ञान होना । जैसे--(क) किसी का घर या पता जानना । (ख) अँगरेजी या हिंदी जानना ।
पद—**जान बूझकर**=अच्छी तरह समझते हुए और इच्छापूर्वक ।
मुहा०—**जान कर अनजान बनना**=किसी बात के विषय मे जानकारी रखते हुए भी किसी को चिढाने, धोखा देने या अपना मतलब निकालने के लिए अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना । **जान रखना**=सचेत तथा सावधान रहना । जैसे--जान रखो, ईंट का जवाब पत्थर से मिलेगा ।
२ परिचय या सूचना पाना ।
पद—**जानकर**=सूचना मिलने पर । जैसे--आप के पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप काशी पधार रहे हैं ।
३. इस बात की जानकारी तथा समर्थता होना कि कोई काम कैसे किया जाता है । जैसे--वह इजन या मोटर चलाना जानता है । ४ किसी क्रिया, बात आदि की सत्यता पर विश्वास होना । जैसे--मैं जानता हूँ कि पिता जी ऐसे कामों से अवश्य असतुष्ट होंगे । ५ मनोभाव के संबध मे, (क) भाँप लेना । जैसे—मेरे बिना कुछ कहे ही वह मेरे आतरिक भाव जान लेता है । (ख) अनुभूत करना । जैसे--वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे ।—नरसी मेहता ।

जानपद—वि० [स० जनपद+अण्] १ जनपद सबधी । जनपद का ।
पु० १ जनपद । प्रदेश । २ जनपद का निवासी । जन । ३ जमीन पर लगनेवाला कर । मालगुजारी । ४ मिताक्षरा के अनुसार लेख्य (दस्तावेज) के दो भेदो मे एक जो प्रजावर्ग के पारस्परिक व्यवहार के सबध मे होता है ।

जानपदी—स्त्री० [स० जानपद+ङीप्] १ वृत्ति । २ महाभारत मे एक अप्सरा जिसने इन्द्र के कहने के अनुसार शरद्वान ऋषि की तपस्या भग की थी ।

जानपना*†—पु० [हिं० जान+पन (प्रत्य०)] १ जानकार होने का भाव । २. चतुराई । बुद्धिमत्ता ।

जानपनी*—स्त्री०=जानपना ।

जान-पहचान—स्त्री० हिं० [हिं० जानना+पहचानना] आपस मे एक दूसरे को जानने तथा पहचानने की क्रिया, अवस्था या भाव (केवल व्यक्तियों के सबध मे प्रयुक्त ।
विशेष--दो व्यक्तियों मे जान-पहचान होने के लिए यह आवश्यक है कि उनमे परस्पर प्रत्यक्ष परिचय हुआ हो और कई बार बात-चीत भी हुई हो ।

जान-पहचानी—वि० [हिं० जान-पहचान] (व्यक्ति) जिससे जान-पहचान हो । परिचित ।

जान-बख्शी—स्त्री० [फा०] १ प्राण-दड जिसे दिया जा सकता हो उसे कृपाकर छोड देने की क्रिया या भाव । २ किसी को दिया जानेवाला ऐसा आश्वासन या वचन कि तुम्हे प्राण-दड नही दिया जायगा ।

जान-बीमा—पु० [फा० जान+अ० बीमा] वह सविधा या व्यवस्था जिसमे बीमा करनेवाला कुछ निश्चित समय के अनतर बीमा करानेवाले को अथवा उसकी मृत्यु हो जाने पर उसके उत्तराधिकारी को कुछ निश्चित धन देता है ।
विशेष—बीमा करानेवाले को भी सविधा के अनुसार कुछ धन किस्तो के रूप मे कुछ समय तक देना पडता है ।

जानमनि*—पु० [हिं० जान+स० मणि] बहुत बडा ज्ञानी या विद्वान् ।

जा-नमाज—पु० [फा० जा (=जगह)+अ० नमाज] वह छोटी जाजिम या दरी जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं ।

जानु—पुं० [सं० √ जन्+ञुण्] १.टाँग के बीच का जोड़। घुटना।
स्त्री० [फा० जान] परमप्रिय स्त्री।
२. उक्त जोड़ तथा उसके आस-पास का स्थान। जैसे—जानु में दर्द होता है। ३. जघा। रान।

जानु-पाणि—क्रि० वि० [द्व० स०] घुटनों और हाथों से। घुटनों और हाथों के बल।

जानुपानि—क्रि० वि०=जानु-पाणि।

जानुवाँ—पुं० [सं० जानु] पशुओं विशेषत. हाथियों को होनेवाला एक रोग जिसमें उनके घुटनों में पीड़ा होती है तथा जिसमें कभी-कभी घुटनों की हड्डियाँ उभर भी आती हैं।

जानु-विजानु—पुं० [स०] तलवार चलाने का एक ढग।

जानू—पुं० [सं० जानु से फा० जानू] जंघा। जाँघ।

जाने—अव्य० [हिं० न जाने] ज्ञान या जानकारी नहीं कि। मालूम नहीं कि। उदा०--जाने किसकी दौलत हूँ मैं—दिनकर।
पद--न जाने=नहीं जानता हूँ कि।

जानो†—अव्य० [हिं० जानना] १. ऐसा या इस प्रकार प्रतीत या भासित होता है कि। २ इस प्रकार जान या समझ लो कि।

जान्य—पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि। (हरिवंश)

जाप—पुं० [सं०√जप् (जप करना) +घञ्] इष्ट देवता के नाम, मंत्र आदि का बारम्बार उच्चारण। जप। (दे०)
†स्त्री०=जप-माला। (क्व०)
स्त्री० [सं० जप] नाम, मंत्र आदि जपने की माला। जप-माला। उदा०--विरह भभूत जटा बैरागी। छाला काँध जाप कँठ लागी। जायसी।

जापक—वि० [सं०√जप्+ण्वुल्—अक] जाप करने या जपनेवाला।

जापन—पुं० [सं०√जप् +णिच्--ल्युट्--अन] १. जपने की क्रिया या भाव। २. जप।

जापना—अ० [सं० ज्ञपन] जान पड़ना। मालूम होना। उदा०--अनमिल आखर अरथ न जापू।--तुलसी।
स०=जपना।

जापा—पुं० [सं० जनन] १ स्त्री का संतान उत्पन्न करना। प्रसव। २ प्रसूतिका-गृह। सौरी।

जापान—पुं० [हिं०] १. एशिया के पूर्वी समुद्र-तट पर के कई द्वीपों की सामूहिक संज्ञा। २ उक्त द्वीपों का राष्ट्र।

जापानी—वि० [हिं० जापान (देश)] १. जापान देश का। जापान सबधी। २. जापान में बनने या होनेवाला।
पुं० जापान देश का निवासी।
स्त्री० जापान देश की भाषा।

जापी (पिन्)—वि० [सं०√जप्+णिनि] जाप या जप करनेवाला।

जाप्य—वि० [सं०√जप् +ण्यत्] १. जप करने या जपने योग्य। २. जो जपा जाने को हो।

जाफ†—स्त्री० [अ० जोफ़] १. दुर्बलता, रोग आदि के कारण होनेवाली बेहोशी। मूर्च्छा। २. घुमटा। चक्कर।

जाफ्त—स्त्री० [अ० जियाफत] बन्धु-बान्धवों, मित्रों आदि को दिया जानेवाला प्रीति-भोज। दावत।

जाफरान—पुं० [अ० ज़ाफ़रान] [वि० ज़ाफ़रानी] १. केसर २. अफ़गानिस्तान में रहनेवाली एक तातारी जाति।

जाफरानी—वि० [अ०] १. जिसमें जाफरान या केसर पड़ा हो। केसरिया। २. जाफरान या केसर के रंग का पीला। केसरिया।

जाफरानी ताँबा—पुं० [हिं०] एक प्रकार का बढ़िया ताँबा जिसका रंग केसर की तरह पीला होता है।

जाफरी—स्त्री० [अ० जअफ़र] १. बाँसों अथवा उसकी खपचियों की बनी हुई टट्टी अथवा परदा। २. एक प्रकार का गेंदा (पौधा और उसका फूल)।

जाब†—पुं०=जवाब।

जा-बजा—क्रि० वि० [फा०] जगह-जगह पर। बहुत-सी जगहों में।

जाबड़ा†—पुं०=जबड़ा।

जाबता†—पुं०=जाब्ता।

जाबर†—वि० [?] बुड्ढा। वृद्ध। (डिं०)
†पुं०=जाबर।

जाबाल—पुं० [सं० जबाला+अण्] सत्यकाम नामक एक वैदिक ऋषि।

जाबालि—पुं० [सं० जबाला+इञ्] महाराज दशरथ के एक मंत्री का नाम जो उनके गुरु भी थे।

जाबित—वि० [अ० जाबित] जब्त करनेवाला।

जाबिर—वि० [फा०] १. (वह) जो जबर हो। जबरदस्ती करनेवाला। २. अत्याचारी। ३. उग्र। प्रचड।

जाब्ता—पुं० [अ० जाब्त] १ नियम। २. कानून। विधान। जैसे—जाब्ता दीवानी या जाब्ता फौजदारी (अर्थात् आर्थिक व्यवहार से या दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला विधान)। ३. प्रबंध। व्यवस्था।

जाम†—पुं० [सं० जम्बू] १. जामुन का पेड़ या फल। २ एक प्रकार का वृक्ष जिसमें छोटे मीठे फल लगते हैं। ३ उक्त वृक्ष का फल।
†पुं० जिमि (जिस प्रकार या ज्यों ही)। उदा०—जाम हड्ड पल कटे, ताम वंचित वीर दम।—चंद्रबरदाई।
पुं०=याम। (पहर)
पुं० [फा०] १. एक विशिष्ट प्रकार का कटोरा या प्याला जो प्रायः मद्य पीने के काम आता था। २. मद्य पीने का पात्र।
मुहा०—जाम चलना=शराब का दौर शुरू होना।
पुं० [अनु० झम=जल्दी] जहाज की दौड़। (लश०)
वि० [अ०-जैम, मि० हिं० जमना] अधिकता, दबाव आदि के कारण चारों ओर से कसे या दबे होने के कारण अपने स्थान पर अड़ा या रुका हुआ। जैसे--काँटा या कील जाम होना, रास्ता जाम होना।

जामगिरी—स्त्री० [?] बंदूक का पलीता।

जामगी—स्त्री०=जामगिरी।

जामण†—पुं० [सं० जन्मन्] १. जन्म। उदा०—छूटा जामण मरण सूं, भवसागर तिरियाह।--बाँकीदास २. दे० 'जामन'।

जामदग्न्य—पुं० [सं० जमदग्नि+ण्यञ्] जमदग्नि ऋषि के पुत्र, परशुराम।

जामदानी—पुं० [फा० जामदानी] १. पहनने के कपड़े रखने की पेटी या बक्स। २. वह पेटी जिसमें बच्चे अपने खिलौने आदि रखते हैं।

जायफर—पु०=जायफल।

जायफल—पु० [स० जातीफल] एक प्रकार का सुगधित फल जो औषध और मसाले के काम आता है।

जायरी—पु० [देश०] नदियो के किनारे की पथरीली भूमि मे होनेवाली एक प्रकार की लता।

जायल—वि० [फा०] जिसका नाश हो गया हो। जो नष्ट हो चुका हो। विनष्ट।

जायस—पु० [देश०] उत्तर प्रदेश के वरेली जिले मे का एक गाँव। (मलिक मुहम्मद जायसी की जन्म-भूमि)

जायसवाल—पु० [हिं० जायस] १ जायस नामक गाँव मे अथवा उसके आस-पास रहनेवाला व्यक्ति। २ कुरमियो, कलवारो आदि का एक वर्ग।

जायसी—वि० [हिं० जायस] १ जायस गाँव मे होने अथवा उससे सवध रखनेवाला। २ जायस गाँव मे रहनेवाला (व्यक्ति)।

जाया—स्त्री० [स०√जन् (उत्पत्ति) +यक्,--आत्व,--टाप्] १. विवाहिता स्त्री, विशेषत ऐसी स्त्री जो किसी वालक को जन्म दे चुकी हो। २. जोरू। पत्नी। ३ जन्म कुडली मे लग्न से सातवाँ स्थान जहाँ से पत्नी के सवध मे गणना या विचार किया जाता है।
पु० [हिं० जाना=जन्म देना] १ वह जो प्रसव कर के उत्पन्न किया गया हो। २ पुत्र। बेटा।
वि० [अ० जाय] जो उपयोग या उपभोग मे ठीक प्रकार से न लाया गया हो और फलत यो ही नष्ट हो गया हो।

जायाघ्न—पु० [स० जाया√हन् (मारना) +टक्] १ फलित ज्योतिष मे एक योग जो पत्नी के जीवन के लिए घातक माना जाता है। २ व्यक्ति, जिसकी कुडली मे उक्त योग हो। ३ शरीर मे का तिल।

जायाजीव—पु० [स० जाया—आजीव, व० स०] १. वह जो अपनी पत्नी से व्यभिचार अथवा और कोई काम कराके अपनी जीविका चलाता हो। २ वगला पक्षी।

जायानुजीवी (विन्)—पु० [स० जाया--अनु√जीव् (जीना)+णिनि] =जायाजीव।

जायी (यिन्)--पु० [स०√जि (जीतना) + णिनि] सगीत मे एक ताल।

जायु—पु०[स०√जि+उण्] औषध। दवा।
वि० जीतनेवाला। जेता।

जार—पु०[स०√जॄ (जीर्ण होना)+घञ्] १ किसी स्त्री के विचार से, वह पर-पुरुष जिसके साथ उसका अनुचित सवध हो। उपपति। यार।
†पु०=यार (मित्र)।
†वि०[हिं० जलाना] जलाने, नष्ट करने या मारनेवाला।
पु० जलने की क्रिया या भाव।
†पु०=जाल।
पु०[फा० ज़ार] स्थान। जैसे—गुलजार, सब्जजार।
पु०[लैं० सीज़र] रूस के पुराने वादशाहो की उपाधि।

जारक—वि० [स०√जॄ+ण्वुल्—अक] १ जलानेवाला। २ क्षीण या नष्ट करनेवाला। ३ पाचक।

जार-कर्म (न्)—पु०[प० त०] छिनाला। व्यभिचार।

जारज—पु०[स० जार√जन्+ड] वह वालक जो किसी स्त्री के उप-पति के योग से उत्पन्न हुआ हो।

जार-जन्मा (न्मन्)—वि० [व० स०] जारज।

जारज-योग—पु०[मध्य स०] फलित ज्योतिष मे एक योग जिसमे उत्पन्न होनेवाला वालक जारज समझा जाता है।

जार-जात—वि०[तृ० त०] स्त्री के उपपति या जार से उत्पन्न। जारज।

जारजेट—स्त्री० [अ० जार्जेट] एक प्रकार का वढिया महीन कपडा।

जारण—पु०[स०√जॄ+णिच्+ल्युट्-अन] १ जलाने की क्रिया, भाव या विधि। २. पारे की भस्म वनाने के समय होनेवाली एक क्रिया या सस्कार।

जारणी—स्त्री०[स० जारण+ङीप्] सफेद जीरा।

जारदवी—स्त्री० [स० जरद्गव+अण्-ङीप्] ज्योतिष मे एक वीथी का नाम जिसमे वराहमिहिर के अनुसार श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा और विष्णु पुराण के अनुसार विशाखा, अनुराधा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र हैं।

जारन—पु०[स० जारण] १ जलाने की क्रिया या भाव। २ जलाने की लकडी। ईंधन। जलावन।

जारना—स०=जलाना।

जार-भरा—स्त्री० [जार√भृ (पोषण करना)+अच्-टाप्] अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष से सवध रखनेवाली स्त्री।

जारा†—पु०=जाला।

जारिणी—स्त्री० [स० जार+इनि--ङीप्] वह स्त्री जो किसी अन्य पुरुष से प्रेम करती हो।

जारी—वि०[अ०] १. जिसका चलन या प्रचलन वरावर हो रहा हो। जो चल रहा हो। जैसे--कार-वार या रोजगार जारी रहना। २ जिसका प्रवाह या वहाव वरावर होरहा हो। प्रवाहित। जैसे—गले से कफ या खून जारी होना। ३ (नियम आदि) जो इस समय लागू हो। जैसे--अध्यादेश आज ही जारी होगा।
पु०[अ० ज़ारी=रोना] मुहर्रम मे ताजियो के सामने गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।
स्त्री०[स० जार+ई (प्रत्य०)] पर-स्त्री गमन। जार-कर्म। जैसे—चोरी-जारी करना।
पु०[देश०] झरवेरी का पौधा।

जारुत्य—पु०=जारूथ्य।

जारुथी—स्त्री०[स० जरुथ+अण्-ङीप्] एक प्राचीन नगरी। (हरिवश)

जारुधि—पु०[स० जारु√धा (रखना)+कि] एक पर्वत का नाम।

जारूथ्य—पु०[स० जरूथ+यञ्] वह अश्वमेध जिसमे तिगुनी दक्षिणा दी जाय।

जारोब—स्त्री०[फा०] झाड़ू। वुहारी।

जारोब कश—पु०[फा०] झाड़ू देने या लगानेवाला व्यक्ति।

जार्य्यक—पु०[स०√जॄ (जीर्ण होना)+ण्यत्+कन्] मृगो की एक जाति।

जालंधर—पु०[स०] १ एक प्राचीन ऋषि। २ जलधर नामक दैत्य।

जालंधरी विद्या—स्त्री०[स० जालधर+अण्-ङीप्, जालधरी और विद्या व्यस्त पद] इन्द्र-जाल।

जाल—पु० [स०√जल् (घात)+ण, वँ०प०जाल्, सिं० जारु, गु० जाळ;

मरा० जाडे] [स्त्री० अल्पा० जाली] १ धागे, सुतली आदि की बुनी हुई वह छेदोवाली रचना जो चिडियाँ, मछलियाँ आदि फँसाने के काम आती है।

मुहा०—जाल डालना या फेंकना=मछलियाँ आदि पकडने के लिए जलाशय या नदी मे जाल छोडना। **जाल फैलाना या बिछाना**=चिडियो, पशु-पक्षियो आदि को फँसाने के लिए जाल लगाना।

२ उक्त के आधार पर छेदोवाली कोई रचना जिसमे कोई चीज फँसती या फँसाई जाती हो। जैसे—मकडी का जाल (जाला)। ३ बुनी या बनाई हुई कोई छेदोवाली रचना। जैसे—टेनिस या फुटवाल के खेल मे खभो मे बाँधा जानेवाला जाल। ४. झरोखा। ५ जाल की तरह का ततुओ, रेशो आदि का उलझा हुआ रूप। जैसे—जटा या जडो का जाल। ६ रेखा या रेखाओ के आकार की वस्तुओ के एक दूसरे को काटते हुए मिलने से बननेवाला उक्त प्रकार का रूप। जैसे—(क) किसी देश मे बिछा हुआ नदियो का जाल। (ख) साडी मे बना हुआ जरदोजी के तारो का जाल। ७ आपस मे गुथी हुई तथा दूर तक फैली हुई चीजो का विस्तार या समूह। जैसे—पद्य जाल। ८ लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसी युक्ति जिसके कारण कोई दूसरा व्यक्ति प्राय असावधानता के कारण धोखा खाता हो। जैसे—तुम्हारे जाल मे वे भी फँस जायँगे।

मुहा०—(बातो के संबंध में) जाल बिछाना या फैलाना=कोई ऐसी युक्ति निकालना जिससे कोई दूसरा व्यक्ति धोखा खा जाय। **(व्यक्ति के संबंध मे) जाल बिछाना**=स्थान-स्थान पर किसी को पकडने के लिए व्यक्ति खडे करना।

९. इद्र-जाल। १० अभिमान। घमड। ११ वनस्पतियो आदि को जलाकर तैयार किया हुआ क्षार। खार। १२. कदंब का वृक्ष। १३. फूल की कली।† १४. पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप। पु० [अ० जअल मि० स० जाल] [स्त्री० जाली] १. कोई दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी वास्तविक वस्तु का तैयार किया हुआ नकली रूप। २ विधिक क्षेत्र मे, ऐसे पत्र, लेख आदि जो वास्तविक न होने पर भी वास्तविक के रूप मे उपस्थित करना। (फोरजरी)

जालक—पु० [स०√जल् (सवरण)+घञ्,√ कै (प्रतीत होना)+क] १. चिडियाँ, मछलियाँ आदि फँसाने का जाल। २ घास, भूसा आदि बाँधने का जाल। ३ झुड। समूह। ४ कली। ५ झरोखा। ६. केला। कदली। ७ चिडियो का घोसला। ८. अभिमान। घमड। ९ गले मे पहनने का मोतियो का एक गहना।

जाल-कारक—पु०[प० त०] मकडा।

जालकि—पु०[स०] १ जाल लगाकर पशु-पक्षी या मछलियो पकड़नेवाला व्यक्ति। २ बाज। ३ मकडा। ४ जादूगर।

जालकिनी—स्त्री०[स० जालक+इनि-डीप्] भेडी। मेषी।

जालकिरच—स्त्री०[हिं० जाल+किरच] वह पेटी जिसके ऊपर परतला लगा हो और नीचे तलवार लटकती हो।

जालकी (किन्)—पु०[स० जालक+इनि] बादल। मेघ।

जाल-कीट—पु० [ब० स०] १ मकडी। २ [मध्य० स०] मकड़ी के जाल मे फँसा हुआ कीडा।

जाल-गर्दभ—पु०[मध्य० स०] एक क्षुद्र रोग जिसमे शरीर मे सूक्ष्म जन्तु, ज्वर आदि होते है। (सुश्रुत)।

जाल-जीवी (विन्)—पु० [स० जाल√जीव् (जीना)+णिनि] मछुआ। धीवर।

जालदार—वि० [हिं० जाल+फा० दार] १. जिसमे जाल की तरह बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। जालीदार। २ (वस्त्र) जिस पर धागो अथवा जरदोजी आदि के तारो का जाल बुना हुआ हो। जैसे—जालदार साडी।

जालना†—स०=जलाना।

जाल-पाद—पु०[ब० स०] १. हस। २ एक प्राचीन देश। ३ ऐसा जतु या पक्षी जिसके पैर जालीदार झिल्ली से ढके हो। जैसे—चमगादड, बत्तख आदि।

जाल-प्राया—स्त्री०[ब० स०] कवच। जिरह-बकतर।

जालबंद—पु०[हिं० जाल+फा० बद] एक प्रकार का गलीचा जिस पर कढ़ी हुई बहुत-सी लताओ, बेल-बूटो आदि के एक दूसरे को काटने के कारण जाल-सा बन जाता है।

जाल-बर्बुरक—पु [मध्य० स०] बबूल की जाति का एक प्रकार का पेड।

जाल-रंध्र—पु० [ब० स०] जालीदार खिडकी। झरोखा।

जालव—पु० [स०] एक दैत्य जिसका वध बलदेव जी ने किया था। (पुराण)

जालसाज—पु० [अ० जअल+फा० साज़] ऐसा व्यक्ति जो धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए किसी असल चीज की जगह वैसी ही नकली चीज तैयार करता हो।

जालसाजी—स्त्री०[फा०] १ जाल साज होने की अवस्था या भाव। २. जालसाज का वह काम जो जाल के रूप मे हो।

जाला—पु०[स० जाल][स्त्री० अल्पा० जाली] १ घास भूसा आदि बाँधने की बड़ी जाली। २. बहुत से ततुओ का वह विस्तार जो मकडी अपना शिकार फँसाने के लिए दीवारो के कोनो आदि मे बनाती है। ३ आँख का एक रोग जिसमे अदर की ओर मैल के बहुत से ततु इधर-उधर फैल कर दृष्टि मे बाधक होते हैं। ४ सरपत की जाति की एक घास जिससे चीनी साफ की जाती है। ५ पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का घड़ा।

†पु०=जाल।

*स्त्री०=ज्वाला।

जालाक्ष—पु० [स० जाल-अक्षि ब० स०,षच्] झरोखा। गवाक्ष।

जालिक—पु० [स० जाल+ठन्-इक] १ वह जो रस्सियो आदि का जाल बनाता या बुनता हो। २. वह जो जाल मे जीव-जतु फँसाता हो। बहेलिया। ३. बाजीगर। इद्रजालिक। ४. मकडी। (डिं०)

जालिका—स्त्री०[स० जाल+ठन्-इक्, टाप्] १. जाली। २ पाश। फदा। ३ विधवा स्त्री। ४ मकड़ी। ५. कवच या जिरह-बक्तर। ६ लोहा। ७ झुड। समूह।

जालिनी—स्त्री०[स० जाल-इनि-डीप्] १ कद्दू, घीया, तरोई आदि फल जिनकी तरकारी बनती है। २ परवल की लता। ३ चित्रशाला। ४ प्रमेह के रोगियो को होनेवाला एक रोग जिसमे मासल अगो मे फुन्सियाँ होती है।

जालिनी-फल—पु०[ष० त०] तरोई। घीया।

जालिम—वि० [अ०] जुल्म अर्थात् अत्याचार करनेवाला। अत्याचारी।

जालिमाना—वि०[अ०] अत्याचार-सबधी। अत्याचारपूर्ण।

जालिया—पु०[अ० जअल=फरेब+इया (प्रत्य०)] वह जो नकली दस्तावेज आदि बनाकर जालसाजी करता हो और इस प्रकार दूसरो की सम्पत्ति छीनता हो। जालसाज।

†पु० [हिं० जाल+इया (प्रत्य०)] वह जो जाल मे जीव-जतु फँसाकर जीविका चलाता हो।

जाली—स्त्री०[हिं० जाल] १. कोई ऐसी रचना जिसमे प्राय. नियत और नियमित रूप से थोड़ी दूर पर छेद या कटाव हो। जैसे—दीवार मे बनी हुई सीमेंट की जाली। २ एक प्रकार का कपडा जिसमे उक्त प्रकार के बहुत छोटे-छोटे छेद होते हैं। ३ कच्चे आम के अंदर का ततुजाल। ४ वह क्षेत्र जिसका पानी ढलकर किसी नदी मे मिलता हो। ढलान। (कैचमेंट एरिया) ५ दे० 'रध्र' (किले का)। ६ कुट्टी या चारा काटने का गडाँसा। ७ डोरियो आदि की वह जालदार रचना जिसमे घास-भूसा आदि बाँधते हैं।

वि० जो जाल रचकर धोखा देने के लिए बनाया गया हो। झूठा और नकली या बनावटी। जैसे—जाली दस्तावेज, जाली सिक्का।

जालीदार—वि० [देश०] (रचना)जिसमे जाली कटी या बनी हो।

जाल्म—वि० [स०√जल् (दूर करना)+णिच्+म] १. नीच। २ मूर्ख।

जाल्मक—वि०[स० जाल्म+कन्] १ घृणित। २. नीच।

जाव†—पुं०=जवाब।

जावक—पु०[स० यावक] १ अलता। अलक्तक। २. मेहदी।

जावत—अव्य०=यावत्।

जावन—पु०=जामन।

जावन्य—पु०[स० जवन+ष्यञ्] १ तेजी। वेग। २. जल्दी। शीघ्रता।

जावर†—पु०[?] १ ऊख के रस मे पकाई हुई एक प्रकार की खीर। २ कद्दू के टुकडो के साथ पकाया हुआ चावल।

जावा—पु० [हिं० जामन या जमना] वह मसाला जिससे शराब चुआई जाती है। पाँस। वेसवार।

जावित्री—स्त्री०[स० जातिपत्री] जायफल के ऊपर का सुगधित छिलका जो दवा, मसाले आदि के काम आता है।

जाषक—पु०[स०√जस् (छोडना)+ण्वुल्-अक, पृषो० पत्व] पीला चदन।

जाषिणी—यक्षिणी।

जासु—सर्व०[हिं० जो] १ जिसको। जिसे। २ जिसका।

जासू—पु०[देश०] वे पान जो मदक बनाने के लिए अफीम मे मिलाये जाते है।

*सर्व०=जासु।

जासूस—पु०[अ०] वह व्यक्ति, जो प्राय छिपकर अपराधियो, प्रतिपक्षियो आदि की कारस्वाइयो का पता लगाता हो। गुप्तचर। भेदिया।

जासूसी—स्त्री०[अ०] १ जासूस होने की अवस्था या भाव। २ जासूस का काम, पद या विद्या।

वि० १ जासूस सबधी। २ (साहित्य मे उपन्यास, कहानी आदि) जिसमे जासूसो की कारगुजारियो का उल्लेख हो।

जासौं—अव्य०[हिं० जासु] १ जिसकी ओर। २ जिस ओर।

उदा०—जासौं वै हेरहिं चख नारी।। बाँक नैन जनु हनहिं कटारी। —जायसी।

सर्व० जिसको।

जास्ती—वि०=ज्यादा।

स्त्री०=ज्यादती।

जास्पति—पु० [स० जाया-पति ष० त०, नि० सिद्धि।] जामाता। दामाद।

जाह—पु० [फा०] १. पद। पदवी। २ वैभव। ३ गौरव। मर्यादा।

जाहक—पु० [स०√दह् (चमकना)+ण्वुल्—अक, पृषो० सिद्धि] १. गिरगिट। २. जोक। ३ घोघा। ४. बिस्तर। बिछौना।

जाहर पीर—पु०[फा० ज़हर+पीर] १४ वी शताब्दी के पजाब के एक प्रसिद्ध सत जो विषवैद्य भी थे। पजाब तथा मारवाड मे अब भी नाग-पचमी के दिन इनकी धूमधाम से पूजा की जाती है।

जाहि—स्त्री०[सं० जाति] मालती नामक लता और उसका फूल।

जाहिद—पु०[अ०] ऐसा व्यक्ति जो सासारिक प्रपचो, बखेडो, बुराइयो आदि से दूर रहकर ईश्वर का ध्यान करता हो।

जाहिर—वि०[अ०]जो स्पष्ट रूप से सबके सामने हो। २ प्रकट। ज्ञात। विदित।

जाहिरदारी—स्त्री०[अ०] केवल ऊपर से दिखाने के लिए (शुद्ध हृदय से नही) किया जानेवाला सद्व्यवहार। दिखौआ शिष्टाचार।

जाहिरा—क्रि० वि०[अ०] ऊपर से देखने पर।

वि० ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाला।

जाहिरी—वि०[अ०] १. जो जाहिर हो। २ ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाला। ३ ऊपरी। दिखौआ। बनावटी।

जाहिल—वि०[अ०] जो न तो पढ़ा-लिखा हो और न समझदार हो। निरा अशिक्षित और मूर्ख।

जाहिली—स्त्री०[अ०] जाहिल होने की अवस्था या भाव। मूर्खता।

जाही—स्त्री० [स० जाती] १ चमेली की जाति का एक पौधा। २ उक्त पौधे के छोटे सुगधित फूल। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे से उक्त प्रकार के फूल छूटते हैं।

जाहूत—पु०[अ० लाहूत का अनु०]ऊपर के नौ लोको मे से अतिम या नवाँ लोक। (मुसल०)

जाह्नवी—स्त्री०[स० जह्नु+अण्-ङीप्] जह्नु ऋषि की पुत्री। गगा।

जिंगिनी—स्त्री०[√जिग् (गति)+णिनि—ङीप्] जिगिन का पेड़।

जिंगी—स्त्री० [स०√जिग्+अच् ङीप्] मजीठ।

जिंद—पु०=जिन (भूत-प्रेत)।

स्त्री०=जद(फारस की पुरानी भाषा)।

†स्त्री०=जिंदगी। (पजाब)

जिंदगानी—स्त्री०[फा०] जिंदगी।

जिंदगी—स्त्री०[फा०] १ जीवित रहने की अवस्था। जीवन। २ पूरी आयु या जीवन-काल।

मुहा०—जिंदगी के दिन पूरे करना=जैसे-तैसे या बहुत कष्ट से जीवन बिताना।

३. निश्चित और प्रसन्न रहने की मनोवृत्ति।

जिंदा—वि०[फा० ज़िंद] १ जिसमे जीवन या प्राण हो। जीवित।

२. जिसमे जीवनी-शक्ति हो। सक्रिय और सचेष्ट। ३. प्रफुल्ल। हरा-भरा।

पद—जिन्दावाद=अमर हो। सदा जीवित रहे।

जिंदादिल—वि० [फा०] [भाव० जिंदादिली] १ (व्यक्ति) जो सदा प्रसन्न रहता हो। हँसमुख। २ उत्साही।

जिंदु—स्त्री०=जिंदगी।

जिंदाना†—स०=जिमाना।

जिंस—स्त्री०[फा० जिन्स] १ चीज। पदार्थ। २. गेहूँ, चावल आदि अनाज। ३ जीवों, पदार्थों आदि की जाति, प्रकार या वर्ग।

जिंसवार—पु०[फा०] पटवारियो या लेखपालो का वह कागज जिसमे वे परताल के समय खेत मे बोई हुई फसल का नाम लिखते है।

जिंसी लगान—पु०[हिं० जिंस+लगान] १. पकी हुई फसल का वह अश जो जमीदार या सरकार की ओर से लगान के रूप मे लिया जाय। २ जिंस के रूप मे लगान उगाहने की प्रथा।

जिअना†—पु०[स० जीवन] १. जीवन। २. जल।

अ०=जीना (जीवित रहना)।

जिआ—स्त्री० पु०=जिया।

जिआना†—स० १=जिलाना। २=पालना।

जिउ†—पु०=जीव।

जिउका†—स्त्री० दे० 'जीविका'।

जिउकिया—पु०[स० जीविका] किसी विशिष्ट कार्य से जीविका निर्वाह करनेवाला व्यापारी, विशेषत जगलो और पहाडो से चीजें लाकर नगरो मे बेचनेवाला व्यापारी।

जिउतिया—स्त्री० =जीवित-पुत्रिका (व्रत)।

जिउलेवा†—वि० [स० जीव+हिं० लेना] जीवन या प्राण लेनेवाला। प्राण-घातक।

जिकडी—स्त्री०[देश०] व्रज में गाये जानेवाले एक तरह के गीत जिनमें दो दल मे प्राय होड बद कर एक दूसरे के प्रश्नो का उत्तर देते हैं।

जिकिर†—पु०=जिक्र।

जिक्र—पु०[अ०जिक्र] १ किसी घटना या विषय का विवेचनात्मक वर्णन। चर्चा। २. भाषण, लेख आदि मे होनेवाला किसी असंबद्ध या गौण घटना या विषय का उल्लेख। सक्षिप्त कथन। ३. परमात्मा के नाम का स्मरण। (सूफी सम्प्रदाय)

जिगन—स्त्री०=जिगिन।

जिगर—पु०[स० यकृत् से फा०] १ कलेजा। यकृत्। २. साहस। हिम्मत। ३. चित्त। मन। ४. किसी चीज का वह भीतरी अश जिसमे उसका सार भाग रहता हो। जैसे—इमारती लकड़ी का जिगर।

जिगर कीड़ा—पु०[फा० जिगर+हिं० कीडा] १ भेडो आदि का एक रोग जिसमे उनके कलेजे मे कीड़े पड़ जाते हैं। २. उक्त रोग का कीडा।

जिगरा†—पुं०[हिं० जिगर] वह मनोभाव जिसके कारण मनुष्य बिना भय-भीत हुए बहुत बड़ा और प्राय विकट काम करने के लिए उद्यत होता है।

जिगरी—वि० [फा०] १. जिगर-सबंधी। जिगर का। २. आतरिक और हार्दिक। जैसे—जिगरी बात। ३. अभिन्न हृदय। घनिष्ठ। जैसे—जिगरी दोस्त।

जिगिन—स्त्री० [स० जिंगनी] एक प्रकार का जगली पेड।

जिगीषा—स्त्री० [स० √जि (जीतना)+सन् द्वित्वादि, +अ–टाप्] १. किसी पर विजय प्राप्त करने अथवा किसी को अधीन या वशीभूत करने की इच्छा। २. लड़ने-भिड़ने या युद्ध करने की इच्छा। ३ उद्योग। प्रयत्न।

जिगीषु—वि० [स०√जि+सन्, द्वित्वादि,+उ] १ (व्यक्ति) जिसमे जिगीषा हो। विजय का इच्छुक। २ युद्ध करने या चाहनेवाला। युयुत्सु।

जिगुरन—पुं० [देश०] चकोरो की एक जाति।

जिघांसक—वि० [स०√हन् (मारना)+सन्, द्वित्वादि√ण्वुल्–अक] (व्यक्ति) जो किसी का वध करना चाहता हो।

जिघांसा—स्त्री० [स०√हन्+सन्, द्वित्वादि, +अ—टाप्] वध करने की इच्छा।

जिघांसु—वि० [स०√हन्+सन्, द्वित्वादि, +उ]=जिघासक।

जिघ्र—वि०[स०√घ्रा (सूंघना)+श, जिघ्र आदेश] १ सूंघनेवाला। २. शका या सदेह करनेवाला।

जिच—स्त्री०[फा० जिच्च] १. शतरज के खेल मे वह स्थिति जिसमे बादशाह की शह तो न लगे पर उसके चलने के लिए कोई घर न रह जाय। २. उक्त के आधार पर प्रतियोगिता, विवाद मे उत्पन्न होनेवाली ऐसी स्थिति जिसमे दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे और समझौते आदि के लिए आगे कोई रास्ता न दिखाई देता हो। (डेड-लॉक)

जिजिया—स्त्री०=जीजी।

†पु०=जजिया (मुसलमानी कर)।

जिजीविषा—स्त्री० [स०√जीव् (जीना)+सन्, द्वित्वादि,+अ–टाप्] जीने की इच्छा।

जिजीविषु—वि०[स०√जीव्+सन् द्वित्वादि,+उ] जो अधिक समय तक जीवित रहना चाहता हो।

जिज्ञासा—स्त्री० [सं०√ज्ञा (जानना)+सन् द्वित्वादि, +अ–टाप्] १ मनुष्य की वह इच्छा या भावना जिसके कारण वह नई तथा अद्भुत चीजो, बातो आदि के सबध मे जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त होता है। २. जानने अथवा जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी से कुछ पूछना।

जिज्ञासित—भू० कृ०[स०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि,+क्त] (वस्तु या विषय) जिसके सबध मे किसी से जिज्ञासा की गई हो। पूछा हुआ।

जिज्ञासु—वि०[स०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि,+उ] १. जिज्ञासा करनेवाला। २. (वह) जो किसी विषय के सबध मे नई बातो का पता लगा रहा हो।

जिज्ञासू—वि०=जिज्ञासु।

जिज्ञास्य—वि० [स०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि, +ण्यत्] १. जिसके सबध मे जिज्ञासा की जाय। २. जिज्ञासा किये जाने के योग्य।

जिठाई†—स्त्री०=जेठाई।

जिठानी—स्त्री०=जेठानी।

जित्—वि०[स० (पूर्व पद रहने पर) √जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] यौगिक शब्दो मे, जिसने किसी को जीत लिया हो। जैसे—इंद्र-जित् (जिसने इंद्र को जीता हो)।

पु० जीत। विजय।

क्रि० वि० जिस ओर। जिधर।

जितना—वि० [सं० इयत् अथवा हिं० जिस+तना (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० जितनी] जिस मान, मात्रा या सख्या मे हो या हो सकता हो। जैसे—(क) जितना धन चाहो लुटा दो। (ख) जितने लडके आये हैं उनमे मिठाई बाँट दो।

क्रि० वि० जिस मात्रा या परिमाण मे। जैसे—जितना चाहो उतना बोलो। स०=जीतना।

जित-मन्यु—वि० [ब०स०] जिसने क्रोध आदि मनोविकारो को जीत लिया हो।

जितरा†—पु०[हिं० जिता] वह कृषक जो किसी दूसरे कृषक की मजदूरी करने के बदले उससे हल, बैल आदि लेकर अपने खेत जोतता हो।

जित-लोक—वि०[ब० स०] (वह) जिसने स्वर्ग को जीत लिया हो।

जितवना*—स० [हिं०-जताना का पुराना रूप] जतलाना। परिचित कराना। उदा० -जितवत जितवत हित हिए किये तिरीछे नैन। विहारी। स०=जिताना (जीत कराना)।

जितवाना—स०[हिं० जीतना का प्रे० रूप] दूसरे की जीत कराना।

जितवार†—वि० [हिं० जीतना] १ जीतनेवाला। विजेता। २ जितेंद्रिय।

जितवैया†—वि०[हिं० जीतना +वैया] जीतने या विजय प्राप्त करनेवाला।

जित-शत्रु—वि०[ब० स०] जिसने शत्रु पर विजय पाई हो।

जित-स्वर्ग—वि०[ब० स०] जिसने स्वर्ग को जीत लिया हो।

जिता†—वि०=जितना।

पु० [हिं० जोतना] वह सहायता जो किसान लोग परस्पर जोताई, बोआई आदि के समय करते हैं।

जिताक्ष—वि०[जित-अक्ष, ब० स०] जितेंद्रिय।

जिताक्षर—वि० [जित-अक्षर, ब० स०] अच्छी तरह पढने-लिखनेवाला।

जितात्मा (त्मन्)—वि० [जित-आत्मन् ब० स०] जितेन्द्रिय।

जिताना—स० [हिं० जीतना का प्रे० रूप] १ ऐसा काम करना जिससे कोई दूसरा जीत जाय। २ कुछ जीतने मे किसी की सहायता करना।

जितार†—वि०[स० जित्वर] १ जीतनेवाला। विजेता। २ प्रबल। बलवान। ३ भारी। वजनी। (क्व०)

जितारि—वि० [जित-अरि, ब० स०] १ शत्रुओ को जीतनेवाला। २ काम, क्रोध आदि मनोविकारो को जीतनेवाला।

पु०गौतम बुद्ध का एक नाम।

जिताष्टमी—स्त्री०[स० जिता-अष्टमी, कर्म० स०] आश्विन कृष्ण अष्टमी जिस दिन हिन्दू स्त्रियाँ अपने पुत्रो के कल्याण के लिए उपासना, व्रत आदि करती है। जीवित-पुत्रिका।

जिति—स्त्री०[स०√जि (जितना)+क्तिन्] १ जीत। विजय। २ प्राप्ति। लाभ।

जितुम—पु०[यू० डिडुमाई] मिथुन राशि।

जितेंद्रिय—वि०[जित-इद्रिय, ब० स०] जिसने अपनी इद्रियो पर विजय प्राप्त कर ली हो। अर्थात् उन्हे अपने वश मे कर लिया हो।

जितै*—क्रि० वि०[स० यत्र, प्रा० यत्त] जिस ओर। जिस दिशा मे। जिधर।

जितैया*—वि० [हिं० जीतना+ऐया (प्रत्य०)] जीतनेवाला।

जितो†—क्रि० वि०[हिं० जिस] जितना।

जित्तम—पु०[यू० डिडुमाइ] मिथुन राशि।

जित्य—पु०[स०√जि+क्यप्, तुक्] [स्त्री० जित्या] १ एक प्रकार का बडा हल। २ पाटा। हेगा।

जित्या—स्त्री० [स० जित्य+टाप्] १ विजय। २ प्राप्ति। लाभ। ३ हल और उसका फाल।

जित्वर—वि० [स०√जि+क्वरप्, तुक्] वह जिसे विजय मिली हो। जीतनेवाला। विजयी।

जित्वरी—स्त्री० [स० जित्वर+ङीप्] काशी पुरी का एक प्राचीन नाम।

जिद—स्त्री० [अ० जिद] [वि० जिद्दी] १. अपनी बात किसी से पूरी कराने के लिए उस पर अडे रहने और दूसरे की बात न मानने की अवस्था या भाव। हठ। २ अनुचित रूप से किसी बात के लिए किया जानेवाला आग्रह या हठ। दुराग्रह।

क्रि० प्र०—करना।—चढना।—ठानना।—पकडना।—बाँधना।

जिदियाना—अ० [हिं० जिद] जिद करना।

स० किसी को जिद करने मे प्रवृत्त करना।

जिद्द†—स्त्री०=जिद।

जिद्दन्—क्रि० वि० [अ०] जिद अर्थात् दुराग्रह या हठ करते हुए।

जिद्दी—वि० [फा०] वह जो बहुत अधिक जिद (दुराग्रह या हठ) करता हो और दूसरो की बात न मानता हो। दुराग्रही।

जिधर—क्रि० वि० [हिं० जिस्+धर (प्रत्य०)] जिस ओर। जिस तरफ। जैसे—जिधर जी चाहे, उधर चले जाओ।

पद—जिधर-तिधर=अधिकतर स्थानो मे। जहाँ-तहाँ।

जिन—पु० [स०√जि+नक्] १ विष्णु। २ सूर्य। ३ गौतम बुद्ध। ४ जैनो के एक तीर्थंकर।

वि० १ जयी। २ राग-द्वेष आदि को जीतनेवाला। ३ बहुत वुड्ढा।

वि० सर्व० हिं० 'जिस' का विभक्ति युक्त बहु-वचन रूप। जैसे--जिन (लोगो) को चलना हो, वे यहाँ आ जायँ।

पु० [फा०] भूत-प्रेत।

जिनगी†—स्त्री०=जिंदगी।

जिनस†—पु०=जिंस।

जिना—पु० [अ० ज़िना] पर-पुरुष या पर-स्त्री से होनेवाला अनुचित-सबध। छिनाला। व्यभिचार।

जिनाकार—वि० [अ० ज़िना+फा० कार] [भाव० जिनाकारी] पर-स्त्री गमन करनेवाला।

जिना-बिल-जब्र—पु० [अ०] पर-स्त्री से बलात् किया जानेवाला सभोग जो विधिक दृष्टि से बहुत बडा अपराध है। बलात्कार।

जिनि—अव्य० [हिं० जनि] मत। नही।

जिनिस—स्त्री०=जिंस।

जिनिसवार—पु०=जिंसवार।

जिनेंद्र—पु० [जिन-इद्र, ष० त०] १ एक बुद्ध। २ एक जैन सत।

जिन्नात—पु० [अ० 'जिन' का बहु० रूप] भूत-प्रेत आदि।

जिन्नी—वि० [अ०] जिन या भूत सबधी।

पु० वह व्यक्ति जिसके वश मे कोई जिन या भूत हो।

जिन्स—स्त्री०=जिंस ।
जिन्ह†—सर्व०=जिन ।
पु०=जिन (भूत-प्रेत)।
जिप्सी—पु० [ई० जिप्ट (मिस्र देश)] १ भारतीय मूल से उत्पन्न एक यायावर जाति जो पहले मिस्र देश मे रहती थी और जो अव संसार के अनेक भागो मे फैल गई है। २ उक्त जाति का व्यक्ति।
जिवह्*—पु०=जवह ।
जिव्भा†—स्त्री०=जिह्वा (जीभ)।
जिव्रील—पु० [अ० जिव्रईल] इस्लाम मे, एक देव-दूत ।
जिभला†—वि० [हिं० जीभ+ला (प्रत्य०)] चटोरा।
जिमखाना—पु० [अ० जिमनास्टिक मे का जिम+फा० खान:] वह सार्वजनिक स्थान जहाँ तरह-तरह के खेलाड़ी इकट्ठे होकर व्यायाम करते और शारीरिक श्रम के खेल खेलते हो।
जिमाना—स० [हिं० जीमना का स० रूप] भोजन कराना। खिलाना ।
जिमि—क्रि० वि० [हिं० जिस+इमि (प्रत्य०)] जिस प्रकार से। जैसे।
जिमित—पु० [स०√जिम् (खाना) +क्त] भोजन ।
जिमीदार—पु०=जमीदार ।
जिम्मा—पुं० [अ० ज़िम्म] १. किसी वस्तु के सरक्षण का भार । २ कोई कार्य सपादित करने या कराने का भार । ३ किसी प्रकार के परिणाम या फल की जवावदेही । उत्तरदायित्व।
जिम्मादार (वार)—पु० [भाव० जिम्मादारी (वारी)] जिम्मेदार ।
जिम्मेदार—पु० [फा०] वह जिस पर किसी कार्य, वस्तु अयवा और किसी वात की जवावदेही हो ।
जिम्मेदारी—स्त्री० [फा०] जिम्मेदार होने की अवस्था या भाव ।
जिम्मेवार—वि० [भाव० जिम्मेवारी]=जिम्मेदार ।
जिय†—पु० [स० जीत] जी। चित्त। मन ।
जियन†—पु० =जीवन।
जिय-वधा*—वि० [स० जीव+वध] जीवो को वधने या उनकी हत्या करनेवाला। हत्यारा।
पु० जल्लाद ।
जियरा*—पु० [हिं० जी] मन। हृदय ।
जिया—स्त्री० [हिं० जी या जिलाना] दूध पिलानेवाली दाई। (मुसल० स्त्रियाँ)
पु०=जी (मन)।
जिया जंतु†—पु०=जीव-जतु ।
जियादा—वि० [भाव० जियादती] =ज्यादा ।
जियान†—पु० [अ०] १ नुकसान। हानि। २. आर्थिक हानि। घाटा।
जियाना†—स०=जिलाना। (पूरव)
जिया पोता—पु०=पुत्र जीवा (पेड)।
जियाफत—स्त्री० [अ०] १ आतिथ्य। मेहमानदारी । २ दावत। भोज।
जियारत—स्त्री० [अ० जियारत] मुसल्मानो मे, किसी महापुरुप अथवा किसी पवित्र स्थान के दर्शनार्थ की जानेवाली यात्रा ।
जियारतगाह—पु० [जियारत+फा० गाह] १ धार्मिक दृष्टि से वह पवित्र और पूज्य स्थान जहाँ लोग दर्शन, पूजन आदि के लिए जाते हो।
जियारती—वि० [फा० ज़ियारती] १. जियारत (दर्शन, पूजन आदि) से सवध रखनेवाला। २. जियारत करने के लिए कही जानेवाला।
जियारी†—स्त्री० [हिं० जिय=जीव] १ जीवन । जिंदगी। २ जीविका। ३ जीवट। साहस। हिम्मत।
जिरगा—पु० [फा० जिरग] १. दल। मडली । २ पठानो आदि मे किसी एक ही कुल, परिवार आदि के ऐसे लोगो का समूह जो प्राय. एक ही क्षेत्र या स्थान मे रहते हो। ३ उक्त प्रकार के लोगो की सामूहिक सभा या सम्मेलन ।
जिरण—पुं० [सं०√जिर् (हिंसा करना) +ल्युट्--अन्] जीरा ।
जिरह—पु० [अ० जुरह] १. व्यर्थ में किया जानेवाला तर्क । २ न्यायालय मे, किसी की कही हुई वातो की सत्यता की जाँच के लिए की जानेवाली पूछ-ताछ।
स्त्री० [फा० जिरह] लोहे की कडियो का वना हुआ एक प्रकार का जाल जिसे युद्ध के समय छाती पर पहना जाता था।
जिरही—वि० [हिं० जिरह] (योद्धा) जिसने जिरह पहना हो।
जिराअत—स्त्री० [अ० जिराअत] खेती। कृपि।
क्रि० प्र०—करना।
पद—जिराअत पेशा=किसान। खेतिहर ।
जिराफा—पु० [अ० जेराफ] अफ्रीका के जगलो मे रहनेवाला हिरन की जाति का एक पशु ।
जिरायत—स्त्री०=जिराअत।
जिरिया—पु० [हिं० जीरा] एक प्रकार का धान जिसमे से निकलनेवाले चावल जीरे के समान छोटे तया पतले होते हैं।
जिला—स्त्री० [अ०] १. अच्छी तरह साफ करके खूब चमकाने की क्रिया या भाव। २ उक्त प्रकार से उत्पन्न की हुई चमक-दमक। ओप।
क्रि० प्र०—करना।—देना।
पु० [अ० ज़िलऽ] १. प्रदेश। प्रांत। २ आज-कल किसी राज्य का वह छोटा विभाग जो किसी एक प्रधान अधिकारी (कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर) की देख-रेख मे हो और जिसमे कई तहसीलें हो। ३ किसी इलाके या प्रदेश का कोई छोटा विभाग। ४ किसी वात या विषय की वह निश्चित सीमा जिसका उल्लघन अनुचित माना जाता हो। जैसे—जिले की दिल्लगी=शिष्ट-सम्मत परिहास ('छूट की 'दिल्लगी' से भिन्न)।
जिलाकार—पुं० [अ० जिला+फा० कार] धातुओ को माँजकर तथा रोगन आदि के द्वारा उन्हे चमकानेवाला कारीगर ।
जिला-जज—पु० [अ० ज़िला+अ० जज] न्यायालय मे, वह अधिकारी जिसे जिले भर के दीवानी और फौजदारी मुकदमो की अपीले सुनने का अधिकार होता है।
जिलाट—पु० [?] पुरानी चाल का एक प्रकार का चमडे का वाजा।
जिलादार—पु०=जिलेदार ।
जिलादारी—स्त्री०=जिलेदारी ।
जिलाना—स० [हिं० जीना का स०] १ मृत शरीर को फिर से जीवित करना। जीवन डालना या देना। २. मरते हुए को मरने से वचाना।

३. ऐसा उपाय, प्रयत्न या व्यवस्था करना जिसमे कोई अच्छी तरह जीवित रह सके। ४ (पशु-पक्षी आदि) पालना-पोसना। ५ धातु की भस्म को फिर से धातु के रूप मे परिवर्तित करना। (कल्पित)

जिला बोर्ड—पु० [अ० जिला+अ० बोर्ड] वह अर्द्ध सरकारी सस्था जिसे किसी जिले की जनता चुनती है और जो स्थानीय प्रशासन तथा लोक-सेवा सबधी कार्य करती है।

जिलासाज—पु० [फा०] धातुओ के बरतनों, हथियारो आदि पर ओप चढानेवाला कारीगर।

जिलाह्*—वि० [अ० जल्लाद ?] अत्याचारी।

जिलेदार—पु० [फा०] मध्य युग मे, बडे जमीदारो या छोटे राजाओं का वह अधिकारी जो किसी छोटे भू-भाग या जिले की देख-रेख करता और वहाँ से कर, लगान आदि वसूल करता था।

जिलेदारी—स्त्री० [फा०] जिलेदार का काम, पद या भाव।

जिलेबी†—स्त्री०=जलेबी।

जिल्द—स्त्री० [अ०] [वि० जिल्दी] १ शरीर के ऊपर की खाल या चमडा। त्वचा। २. कागज, चमडे आदि से मढी हुई वह दफ्ती जो किसी पुस्तक के ऊपर और नीचे उसके पृष्ठो की रक्षा के लिए लगाई जाती है।

क्रि० प्र०—चढाना।—बाँधना।—मढना।

३ पुस्तक की प्रति। ४. पुस्तक का ऐसा खड जो अलग भाग के रूप मे हो। भाग।

जिल्दगर—पु० [फा०] जिल्द बद।

जिल्दबंद—पु० [फा०] पुस्तको पर जिल्दे बाँधनेवाला कारीगर।

जिल्दबंदी—स्त्री० [फा०] जिल्द बाँधने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जिल्दसाज—पु० [फा०] [भाव० जिल्दसाजी] जिल्द बाँधनेवाला व्यक्ति। जिल्दबद।

जिल्दसाजी—स्त्री० [फा०] जिल्द बाँधने का काम या पेशा।

जिल्दी—वि० [अ०] त्वचा सबधी। जैसे—जिल्दी-बीमारी।

जिल्लत—स्त्री० [अ०] अपमानित, तिरस्कृत और तुच्छ या दुर्दशा-ग्रस्त होने की अवस्था या भाव। दुर्गति।

क्रि० प्र०—उठाना।

जिल्ली—पु० [देश०] बाँसो की एक जाति।

जिल्होर—पु० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान।

जिव†—पु०=जीव।

जिवडा—पु० [स० जीव] प्राण। उदा०—स्याम विना जिवडो मुरझावे। —मीराँ।

जिवडी—स्त्री० [स० जीव] शरीर। उदा०—जो इहाँ परि पालै जिवडी।—प्रिथीराज।

जिवाँना†—स० १ =जिमाना। २ =जिलाना।

जिवाजिव—पु० [स०=जीवञ्जीव, पृषो० सिद्धि] चकोर (पक्षी)।

जिवाना*—स० १ =जिलाना। २. =जिमाना।

जिष्णु—वि० [स०√ जि (जीतना) +ग्स्नु] विजय प्राप्त करनेवाला। जेता। विजयी।

पु० १ विष्णु। २. सूर्य। ३. इद्र। ४ वसु। ५ अर्जुन।

जिस—वि० [स० य, यस्] हिंदी विशेषण 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति से युक्त विशेष्य के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—जिस व्यक्ति को, जिस जीवन का, जिस नौकर ने, जिस कमरे मे आदि। सर्व० हि० सर्वनाम 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—जिसने, जिससे, जिस पर, जिसमें, जिसको आदि।

पद—**जिसका तिसका**=किसी निश्चित व्यक्ति का नहीं। चाहे किसी व्यक्ति का। जैसे—सारी सपत्ति जिसकी तिसकी हो जायगी।

जिसिम—पु०=जिस्म (शरीर)।

जिस्ट—वि० [?] १. बड़ा। २. भारी। उदा०—जग्य जिस्ट उच्चिष्ट करै, कातर कृत हारिय।—चन्दवरदाई।

जिस्ता—पु० १=जस्ता। २=दस्ता।

जिस्म—पु० [फा०] [वि० जिस्मानी] १ देह। बदन। शरीर। २ स्त्री या पुरुष का गुप्त अग। भग या लिंग। (क्व०)।

जिस्मानी—वि० [फा०] जिस्म या शरीर से सबध रखने या उसमे होने-वाला। शारीरिक।

जिस्मी—वि०=जिस्मानी।

जिह—स्त्री० [फा०, स० ज्या] धनुष का चिल्ला। ज्या।

वि०, सर्व०=जिस। उदा०—जिह जिह विधि रीझे हरी सोई विधि कीजै हो।—मीराँ।

जिह्न—पु० [अ० जिहन]=जेहन (बुद्धि)।

जिहाद—पु० [अ०] [वि० जिहादी] १ धार्मिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए किया जानेवाला युद्ध। २. वह युद्ध जो मध्य-युग मे मुसलमान अपने धार्मिक प्रचार करने के लिए दूसरे धर्मावलम्बियो से करते थे।

मुहा०—**जिहाद का झंडा खड़ा करना**=मजहब के नाम पर लडाई छेडना।

जिहादी—वि० [अ०] १ जिहाद-सबधी। २ जिहाद करनेवाला।

जिहानक—पु० [स०√हा (गति)+शानच्,+कन्] प्रलय।

जिहालत—स्त्री०=जहालत (मूर्खता)।

जिहासा—स्त्री० [स०√हा (त्यागना) +सन् द्वित्वादि+अ—टाप्] त्याग की इच्छा।

जिहासु—वि० [स०√हा +सन्, द्वित्वादि+उ] त्याग की इच्छा रखनेवाला।

जिहीर्षा—स्त्री० [स०√हृ (हरण करना) +सन्। द्वित्वादि+अ—टाप्] हरने या हरण करने की इच्छा।

जिहीर्षु—वि० [स० √हृ+सन् द्वित्वादि,+—उ] हरण करने की इच्छा या कामना करनेवाला।

जिह्म—वि० [स०√हा (त्याग)+मन्, सन्वद्भाव, द्वित्वादि] १. टेढा। वक्र। २ क्रूर। निर्दय। ३. कपटी। छली। ४ दुष्ट। पाजी। ५ खिन्न। दुःखी। ६ धीमा। मद।

पु० १. अधर्म। २ तगर का फूल।

जिह्मग—वि० [स० जिह्म√गम् (जाना) +ड] १. टेढी-तिरछी चाल चलनेवाला। २ धीमी चाल से चलनेवाला। ३ चालबाज। धूर्त।

पु० सर्प। साँप।

जिह्म-गति—वि० [ब० स०] जिसकी गति या चाल टेढी हो। टेढा चलनेवाला।

पु० साँप ।

जिह्मगामी (मिन्)—वि० [स० जिह्म√गम्+णिनि] [स्त्री० जिह्म-गामिनी]=जिह्मग ।

जिह्मता—स्त्री० [स० जिह्म+तल्—टाप्] १ टेढापन। वक्रता । २ धीमापन । मदता । ३ कुटिलता। ४ दुष्टता। ५ धूर्त्तता।

जिह्माक्ष—वि० [जिह्म-अक्षि] टेढी या तिरछी आँखवाला । ऐचा या भेगा ।

जिह्मित—वि० [स०जिह्म+इतच्] १ टेढा। २ घूमा हुआ। ३ चकित। विस्मित ।

जिह्मीकृत—वि० [स० जिह्म+च्वि√कृ (करना) +क्त, दीर्घ] झुकाया या टेढा किया हुआ ।

जिह्वक—पु० [स० √ह्वे (बुलाना)+ड, द्वित्वादि,+कन्] एक प्रकार का सन्निपात रोग जिसमे रोगी से स्पष्ट बोला नही जाता और उसकी जीभ लडखडाती है। इसके रोगी प्राय गूगे या बहरे हो जाते हैं ।

जिह्वल—वि० [स० जिह्व√ला (लेना) +क] चटोरा ।

जिह्वा—स्त्री० [स०√लिह् (चाटना)+व, नि० सिद्धि] १ जीभ। २ आग की लपट ।

जिह्वाग्र—पु० [जिह्वा--अग्र, प० त०] जीभ का अगला भाग । वि० (कथन, बात या विषय) जो जीभ के अगले भाग पर अर्थात् हर समय उपस्थित या प्रस्तुत रहे । जैसे--सारी गीता उन्हे जिह्वाग्र है।

जिह्वाच्छेद—पु० [प० त०] वह दड जिसमे किसी की जीभ काट ली जाती है।

जिह्वाजप— वि० [तृ० त०] एक प्रकार का जप जिसमे केवल जीभ हिले।

जिह्वाप—वि० [स० जिह्वा√पा (पीना) +क] जीभ से जल पीनेवाला। जैसे--कुत्ता, गदहा, घोडा आदि।

जिह्वामूलीय—वि० [स० जिह्वा—मूल प० त०, +छ—ईय] १. जो जिह्वा के मूल से सबध रखता या उसमे होता हो। २. (व्याकरण मे उच्चारण की दृष्टि से वर्ण) जिसका उच्चारण जीभ के मूल या बिलकुल पिछले भाग से होता है । जैसे—यदि क या ख से पहले विसर्ग हो तो क या ख का उच्चारण (जैसे—दु ख मे के 'ख' का उच्चारण) जिह्वा-मूलीय हो जाता है ।

जिह्वा-रद—पु० [ब० स०] पक्षी ।

जिह्वा-रोग—पु० [प० त०] जीभ मे होनेवाले रोग जो सुश्रुत मे ५ प्रकार के माने गये है।

जिह्वालिह्—पु० [जिह्वा√लिह् (चाटना) +क्विप्] कुत्ता ।

जिह्विका—स्त्री० [स० जिह्वा+ठन्—इक, टाप्] जीभी।

जिह्वोल्लेखनी—स्त्री० [जिह्वा—उल्लेखनी, प० त०] जीभी।

जींगन† —पु०=जुगनू ।

जी—पु० [स० जीव] चित्त, मन, हृदय, विशेषत. इनका वह पक्ष या रूप जिसमे इच्छा, कामना, दु ख-सुख, प्रवृत्ति, सकल्प-विकल्प, साहस आदि का अवस्थान होता है ।

विशेष—'जी' हमारे शारीरिक अस्तित्व, रुचि, विचार आदि सभी का प्रतिनिधित्व करता या प्रतीक होता है, और इसी लिए अनेक अवसरो पर कलेजा, चित्त, जान, मन, हृदय आदि से सबद्ध कुछ मुहावरे भी 'जी' के साथ चलते और प्राय उसी प्रकार के अर्थ देते है। जैसे—जी या मन उदास या दु खी होना, जी या मन फिर जाना, जी या चित्त चाहना, जी या मन करना या चाहना, जी या मन का बुखार निकालना आदि।

पद—जी का=जीवटवाला। साहसी । हिम्मती। **जी चला**=मन-चला। (देखे) **जी जानता है**=हृदय ही अनुभव करता है, कहा नही जा सकता है । **जी से** =चित्त या मन लगाकर । पूरी तरह से ध्यान देते हुए ।

मुहा०—जी अच्छा होना=शारीरिक आरोग्य के फल-स्वरूप चित्त शात, सुखी और स्वस्थ होना । **(किसी व्यक्ति पर) जी आना**= शृगारिक दृष्टि से, मन मे किसी के प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न होना। **जी उकताना या उचटना** =किसी काम, बात या स्थान से प्रवृत्ति या मन हटना और विकलता या विरक्ति होना। **जी काँपना**=मन ही मन बहुत अधिक भय होना । **जी उड़ जाना**=आशका, भय आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। धैर्य और होश-हवास जाता रहना। **जी करना या चाहना**=कुछ करने, पाने आदि की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **(किसी बात से) जी काँपना**=बहुत अधिक दुर्भावना या भय होना। बहुत डर लगना । **जी का बुखार निकालना**=कुछ कठोर बातें कहकर मन मे दबा हुआ कष्ट या सताप दूर या हल्का करना। **जी का बोझ हल्का होना**=इच्छा पूरी होने, खटका या चिंता दूर होने आदि पर मन निश्चित और स्वस्थ होना। **जी की जी में रहना**=अभिलाषा, कामना अथवा ऐसी ही और कोई बात पूरी न होना और मन मे ही रह जाना। **जी की निकालना**=(क) मन मे दबी हुई कटु या कठोर बात मुँह से कहकर जी हल्का करना । (ख) जी की उमग, वासना या हौसला पूरा करना । **जी को पड़ना**=प्राण बचाना कठिन हो जाना। **(किसी के) जी को जी समझना**=दूसरे को क्लेश न पहुँचाना दूसरे पर दया करना । **जी को मार कर रखना**=प्रवृत्ति, वासना आदि को दबा या रोककर रखना। **(कोई बात) जी को लगना**=(क) चिंता आदि का मन मे घर करना या स्थायी होना । (ख) मन पर पूरा प्रभाव डालना। जैसे—उनकी बात हमारे जी मे लग गई । **(किसी के) जी को लगना**=किसी के पीछे पडना। किसी को सुख से न रहने देना। जैसे—यह लडका तो खिलौनो के लिए जी को लग जाता है। **जी खटकना**=मन मे कुछ आशका या खटका होना। **(किसी से) जी खट्टा होना**=किसी की ओर से (कष्ट पहुँचने पर) चित्त या मन मे विरक्ति उत्पन्न होना । **जी खपाना**=बहुत अधिक परिश्रम या सिर-पच्ची करना। **जी खरा-खोटा होना**=मन कभी स्थिर और कभी चचल होना। यह निश्चय न कर पाना कि अमुक अच्छा काम करे या अमुक बुरा काम। **जी खोलकर**=(क) खूब अच्छी या पूरी तरह से और शुद्ध हृदय से। यथेच्छ। जैसे—जी खोलकर दान देना या बाते करना। **जी गिरा जाना**=जी बैठा जाना । **जी घबराना**=मन मे विकलता, व्यग्रता आदि उत्पन्न होना। **(किसी चीज पर) जी चलना**=कुछ पाने या लेने की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **जी चाहना**=इच्छा या कामना होना। **जी चुराना**=कोई काम करने से बचने के लिए इधर-उधर हटना या होना। **जी छूटना**=(क) मन मे उत्साह, साहस आदि न रह जाना । (ख) पिंड या पीछा छूटना । छुटकारा मिलना । जैसे—चलो, इस झगडे से तो जी छूटा । **जी छोटा करना**=(क)

निराग या विफल होने पर उदास या खिन्न होना। (ख) उदारता के भावो से रहित या सकीर्णता के विचारो से युक्त होना। **जी छोडना**=हृदय की दृढता या साहस खोना। हिम्मत हारना। **जी छोडकर भागना**=अपने बचाव या रक्षा के लिए पूरी शक्ति से दूर निकल जाने का प्रयत्न करना। **जी जलना**=चित्त बहुत ही दुखी और सतप्त होना। मन मे बहुत अधिक कष्ट या सताप होना। **(किसी का) जी जलाना**=किसी को बहुत अधिक दुखी और सतप्त करना।

मुहा०—**(किसी काम में) जी जान लड़ाना या जी जान से लगना**=किसी कार्य या प्रयत्न मे अपनी सारी शक्ति लगा देना। **(कोई काम या बात) जी जान को या जी जान से लगना**=किसी काम या बात की इतनी अधिक चिंता होना कि हर समय उसका ध्यान बना रहे या उसकी सिद्धि का प्रयत्न होता रहे। **(किसी ओर) जी टँगा या लगा रहना**=हर समय चिंता बनी रहना और ध्यान लगा रहना। **जी टूट जाना**=उत्साह भग हो जाना। नैराश्य होना। **जी ठंढा होना**=अभिलाषा पूरी होने से चित्त शात और सतुष्ट होना। प्रसन्नता होना। **(किसी मे) जी डालना**=(क) मृत शरीर मे प्राणो का सचार करना। (ख) किसी के मन मे आशा, उत्साह, बल आदि का सचार करना। **(किसी के) जी में जी डालना**=प्रेम, सौहार्द आदि दिखाकर किसी को अपनी ओर अनुरक्त करना। **जी डूबना या ढहा जाना**=चिंता, निराशा, व्याकुलता आदि के कारण बहुत ही शिथिल और हतोत्साह होना। **जी दहलना**=मन मे कुछ भय का सचार होना। **जी दुखना**=मन मे कष्ट या दुख होना। **(किसी के लिए) जी देना**=किसी पर जीवन या प्राण निछावर करना। **जी दौड़ना**=कुछ करने या पाने के लिए मन का प्रवृत्त होना। **जी धँसा जाना**=दे० 'जी बैठा जाना।' **जी धक धक करना या धडकना**=भय या आशका से चित्त का स्थिर न रहना और उसमे धडकन होना। **जी निकलना**=प्राणो के निकलने की-सी अनुभूति या कष्ट होना। (व्यग्य) जैसे—रुपया खरच करते हुए तो इनका जी निकलता है। **जी निढाल होना**=दुख, चिंता शिथिलता आदि के कारण चित्त ठिकाने न रहना। **(किसी से) जी पक जाना**=बहुत दुखी या सतप्त होने के कारण बहुत अधिक उदासीनता या विरक्ति हो जाना। **जी पकडा जाना**=खुटका, विपत्ति आदि बात सुन या सभावना देखकर मन मे बहुत चिंता और विकलता होना। **जी पर आ बनना**=किसी घटना या बात के कारण ऐसी स्थिति होना कि प्राणो पर सकट आ जाय और फलत सुख शान्ति का अत हो जाय। **जी पर खेलना**=कोई विकट काम पूरा करने के लिए अपने प्राणो की बाजी लगा देना। अपना जीवन सकट मे डालना। **(किसी से) जी फट जाना**=किसी से बहुत दुखी होने के कारण पूरी तरह से विरक्त हो जाना। **(किसी की ओर से) जी फिर जाना**=चित्त का उदासीन, खिन्न और विरक्त हो जाना। **(किसी से) जी फीका होना**=किसी के साथ होनेवाले व्यवहार या सबध मे पहले की-सी सरसता न रह जाना। **जी बँटना**=(क) मन लगाकर कोई काम करते रहने की दशा मे किसी बाधा के कारण चित्त या ध्यान इधर-उधर होना। (ख) दे० 'जी बहलना'। **(किसी ओर अपना) जी बढ़ाना**=अपना ध्यान, मन या विचार किसी ओर प्रवृत्त करना। **(किसी का) जी बढ़ाना**=प्रोत्साहित करना। बढावा देना। **जी बहलना**=ऐसा काम या बात करना जिससे खिन्न, चिंतित या दुःखी मन कुछ समय के लिए प्रसन्न हो और खेद, चिंता या दुख न रह जाय अथवा कम हो जाय। **जी बिगडना या बुरा होना**=(क) उदासीनता खिन्नता या विरक्ति होना। (ख) कै या उलटी करने को जी चाहना। मिचली होना। (ग) मन मे कोई अनुचित या बुरा भाव उत्पन्न होना। **जी बैठा जाना**=आशका, चिंता, दुर्बलता आदि के कारण आत्मिक शक्ति या साहस का बहुत ही क्षीण होने लगना। **जी भर आना**=करुणा आदि के कारण मन का द्रवित होना। **जी भरकर**=जितना जी चाहे उतना। मनमाना। यथेष्ट। **(किसी काम, चीज या बात की ओर से) जी भर जाना**=(क) कटु अनुभव होने के कारण प्रवृत्ति न रह जाना। (ख) भोग आदि की अधिकता के कारण मन मे पहले का सा अनुराग या उत्साह न रह जाना। **(अपना जी) भरना**=सदेह आदि दूर करके आश्वस्त, निश्चित या सतुष्ट होना। **(किसी का) जी भरना**=किसी की शका, सदेह आदि दूर करके उसका पूरा समाधान करना। **जी भरभराना**=करुणा आदि के कारण हलका सा रोमाच होना। **जी भारी होना**=रोग आदि के आगमन से कुछ पहले मन मे अस्वस्थता का बोध होना। **जी भिटकना**=घृणा का अनुभव होने के कारण मन मे विरक्ति होना। **जी मलमलाना**=विवशता की दशा मे मन मे खेद और पछतावा होना। **जी मारना**=कामना, वासना आदि का दमन करना। **जी मिचलाना या मितलाना**=उलटी या कै करने की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **(किसी से) जी मिलना**=प्रकृति, व्यवहार आदि की अनुकूलता दिखाई देने पर परस्पर प्रीति और सद्भाव उत्पन्न होना। **जी मे आना**=किसी काम या बात की इच्छा, कामना या प्रवृत्ति होना। जैसे—जो हमारे जी मे आयेगा, वह हम करेगे। **जी मे चुभना, गड़ना या घर करना**=बहुत ही प्रिय और सुखद होने के कारण मन मे अपने लिए विशिष्ट स्थान बनाना। **जी मे जी आना**=चिंता भय आदि का कारण दूर होने पर मन निश्चिन्त और शात होना। **जी में जी डालना**=चिंता, भय आदि का कारण दूर करके आश्वस्त और निश्चित करना। **(कोई बात) जी मे धरना**=किसी बात या विचार को अपने मन मे स्थान देना और उसके अनुसार आचरण करने का निश्चय करना। **(कोई बात) जी मे बैठना**=बिलकुल उचित या ठीक जान पडना। मन पर पूरा प्रभाव होना। **(कोई बात) जी मे रखना**=अपने मन मे छिपा या दबाकर रखना। जल्दी किसी पर प्रकट न होने देना। **(किसी का) जी रखना**=इसलिए किसी का अनुरोध या आग्रह मान लेना कि वह अपने मन मे दुखी या हताश न हो। **(किसी काम मे) जी लगना**=अनुकूल, रुचिकर आदि जान पडने के कारण यथेष्ट रूप से तत्पर या सलग्न होना। काम मे अच्छी तरह चित्त लगाना। **(किसी व्यक्ति से) जी लगना**=अनुराग या प्रेम होना। **(किसी ओर) जी लगा रहना**=चिंता आदि के कारण बराबर ध्यान लगा रहना। **जी लरजना**=दे० 'जी काँपना'। **जी ललचाना**=कुछ पाने के लिए मन मे बहुत अधिक लालच या लोभ होना। **(किसी का) जी लुभाना**=किसी को मोहित करके अपनी ओर आकृष्ट करना। **(किसी का) जी लेना**=(क) बातो ही बातो मे किसी की इच्छा, प्रवृत्ति या विचार का पता लगाने का प्रयत्न करना। (ख) जीवन या प्राण लेना। **जी सन्न होना**=बहुत अधिक घबराहट, चिंता आदि के कारण स्तब्ध हो जाना। **जी से उतर जाना**=कटु अनुभव होने या दोष आदि दिखाई देने पर

किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति होनेवाला अनुराग नष्ट हो जाना। **जी से जाना**=जीवन या प्राण गवाँना। मरना। **(किसी व्यक्ति या वस्तु से) जी हट जाना**=पहले का-सा अनुराग या प्रवृत्ति न रह जाने के कारण उदासीनता या विरक्ति होना। **जी हवा हो जाना**=भय या आशका आदि के कारण चित्त ठिकाने न रह जाना। होश-हवाश गुम हो जाना। **(किसी का) जी हाथ मे करना, रखना या लेना**=किसी को अपने अनुकूल या वश मे करना या रखना। **जी हारना**=उत्साह, साहस आदि से रहित या हीन हो जाना। हिम्मत हारना। **जी हिलना**=(क) मन मे करुणा, दया आदि का आविर्भाव होना। (ख) दे० 'जी दहलना'। **जी ही में जी जलना**=ईर्ष्या, क्रोध, दुर्भाव आदि के कारण मन ही मन बहुत दु:खी होना।

अव्य० १. धार्मिक स्थानो, मान्य व्यक्तियो आदि के अल्लो और नामो के पीछे लगनेवाला आदर-सूचक अव्यय। जैसे—गया जी, गांधी जी, शुक्ल जी आदि। २. किसी के द्वारा बुलाये जाने पर उत्तर मे कहा जानेवाला एक आदर-सूचक शब्द। जैसे—जी, शहर जा रहा हूँ। ३. किसी मान्य व्यक्ति के आदेश, कथन आदि के उत्तर मे सहमति, स्वीकृति आदि जतलानेवाला अव्यय। जैसे—जी, ऐसी ही होगा।

जीअ*—पु० =जीव।
अव्य०=जी।

जीअन—पु०=जीवन।

जीउ—पु०=जीव।

जीकाद—पु० [अ० जीकाद] हिजरी सन् के ग्यारहवे महीने का नाम।

जीगन*—पु०=जुगनूँ।

जीगा—पुं० [तु०] कलगी। तुर्रा।

जीजना*—अ०=जीना (जीवित रहना)।

जीजा—पु० [हिं० जीजी] भाई (या वहन) की दृष्टि में उसकी किसी वहन का पति। वहनोई।

जीजी—स्त्री० [स० देवी, हिं० देई, दीदी] भाई (या वहन) की दृष्टि मे, उसकी वडी वहन।

जीजूराना—पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

जीट—स्त्री० [हिं० सीटना] डीग।

जीण*—पु०=जीवन।

जीत—स्त्री० [स० जिति] १. युद्ध मे, जीतने की अवस्था या भाव। विजय। २. उक्त के आधार पर, किसी प्रतियोगिता, मुठभेड, शर्त आदि मे मिलनेवाली या होनेवाली सफलता। ३. लाभ।
स्त्री० [?] जहाज मे पाल का बुताम या वटन। (लश०)

जीतना—स० [हिं० जीत+ना (प्रत्य०)] १. युद्ध मे शत्रु को हराकर विजय प्राप्त करना। विजयी होना। २. किसी प्रतियोगिता, मुठभेड, शर्त मे सफल होना। जैसे—दौड जीतना। ३. उक्त के आधार पर तथा जीत के उपलक्ष्य मे कोई चीज प्राप्त करना। जैसे—देश जीतना, दौड में सफल होने पर पुस्तक या पुरस्कार जीतना।

जीता—वि० [हिं० जीना] १. जिसमे अभी जीवन या प्राण हो। जिन्दा। जीवित। २. तौल, नाप आदि के प्रसग मे, जो आवश्यक या उचित से थोडा अधिक या वढा हुआ हो। जिंदा।

जीतालू—पु० [स० आलू] अरारोट।

जीता लोहा—पु० [हिं० जीना+लोहा] चुवक।

जीति—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता जिसका मोटा तना धनुप की डोरी के रूप मे काम मे लाया जाता था।

जीन—पु० [फा० ज़ीन] १ घोडे आदि की पीठ पर रखने की गद्दी। चारजामा। काठी। २. कजावा। पलान। ३. एक प्रकार का वढिया, मजवूत तथा मोटा सूती कपडा।
वि०=जीर्ण।

जीनत—स्त्री० [फा० जीनत] १. शोभा। २ सजावट।

जीनपोश—पु० [फा० ज़ीन पोश] जीन पर विछाया जानेवाला कपडा।

जीनपोशी—स्त्री०=जीनपोश।

जीन सवारी—स्त्री० [देश०] घोडे की पीठ पर जीन रखकर की जानेवाली सवारी।

जीनसाज—पु० [फा०] [भाव० जीनसाजी] घोडो की जीनें वनानेवाला कारीगर।

जीना—अ० [स० जीवति, प्रा० जिअइ, जीअन्त, मरा० जिणे] १. जीवित रहना। काया या शरीर मे प्राण रहना।
मुहा०—जीती मक्खी निगलना=जान-वूझकर कोई अनुचित और घृणित कार्य करना। **जीते जी मरना**=वहुत अधिक कष्ट भोगना। **जीना भारी हो जाना**=जीवन वहुत अधिक दु:खमय हो जाना।
पद—जीता जागता=जीवित और सक्रिय। भला-चंगा। स्वस्थ। **जीते जी**=जीवनकाल मे। जीवित अवस्था मे।
२. जीवन या जिन्दगी के दिन विताना। ३ अभीष्ट फल या वस्तु प्राप्त होने पर वहुत अधिक प्रसन्न या प्रफुल्लित होना।
*वि० [स्त्री० जीनी] १.=जीर्ण। २ =झीना।
पु० [फा ज़ीन] सीढी।

जीपना*—स० [स० जिति] जीतना। उदा०—हल जीपिस्यै जू वाहिस्यइ हाथ।—प्रिथीराज।

जीभ—स्त्री० [स० जिह्वा, जिह्विका, प्रा० जिब्भा, जिब्भया, जैन प्रा० जिब्भा, जीहा] १. मुँह मे तालु के नीचे का वह चिपटा, लवा तथा लचीला टुकड़ा जिससे रसो का आस्वादन और ध्वनियो का उच्चारण किया जाता है। जवान। रसना।
पद—छोटी जीभ=गले के अदर की घटी। कौआ। गलशुडी।
मुहा०—जीभ करना=ढिठाई से जवाव देना। **जीभ खोलना**=कुछ कहना। **जीभ चलना**=(क) विभिन्न वस्तुओ के स्वाद लेने की इच्छा होना। (ख) वहुत उग्र या कटु वाते कहना। **जीभ निकालना**=दड देने के लिए जीभ उखाडना या काट लेना। **(किसी की) जीभ पकड़ना**=(क) किसी को कोई वात कहने न देना। किसी को विवश करना कि वह कोई विशिष्ट वात न कहे। (ख) किसी को उसकी कही हुई वात के पालन के लिए विवश करना। **जीभ हिलाना** =मुँह से कुछ कहना। **(किसी की) जीभ के नीचे जीभ होना**=किसी का अपने सुभीते के अनुसार कई तरह की वाते कहना। अपने कथन या वचन का ध्यान न रखना।
२ जीभ के आकार की कोई चिपटी तथा लवोतरी वस्तु। जैसे—निव।

जीभा—पु० [हिं० जीभ] १ जीभ के आकार की कोई वडी वस्तु। जैसे—कोल्हू का पच्चर। २. एक रोग जिसमे चौपायो की जीभ के काँटे कुछ

सूज तथा बढ जाते हैं और जिसके कारण उन्हें कुछ खाने मे बहुत कष्ट होता है। ३. एक रोग जिसमे बैलो की आँख के आगे का मांस बढकर लटकने लगता है।

जीभी—स्त्री०[हिं० जीभ] १ धातु आदि का बना हुआ वह पतला धनुषाकार पत्तर जिससे जीभ पर जमी हुई मैल उतारी या छीली जाती है। २. मैल साफ करने के लिए जीभ छीलने की क्रिया। ३ कलम की निब। ४ छोटी जीभ। गलशुंडी।

जीमट—पु०[स० जीमूत=पोषण करनेवाला] पेड़, पौधे आदि की टहनी या धड मे का गूदा।

जीमणवार—स्त्री० =ज्योनार।

जीमना—स०[स० जेमन] कहीं बैठकर अच्छी तरह भोजन करना।

जीमूत—पु०[स०√जि (जीतना)+क्त, मूट्, दीर्घ]१ पर्वत। पहाड़। २. बादल। मेघ। ३ नागरमोथा। ४ देव-ताड नामक वृक्ष। ५ घोषा नाम की लता। ६ शाल्मलि द्वीप के एक वर्ष का नाम। ७ इन्द्र। ८ सूर्य। ९ विराट् की सभा का एक मल्ल। १० एक प्रकार का दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं।
वि० जीवित रखने या पोषण करनेवाला।

जीमूत-कूट—पु०[ब०स०] पर्वत।

जीमूत-केतु—पु०[ब०स०] शिव।

जीमूत मुक्ता—स्त्री०[मध्य०स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जिसकी उत्पत्ति बादलो से मानी गयी है।

जीमूत मूल—पु०[ब०स०] गधमूली।

जीमूत वाहन—पु०[स०]इद्र।

जीमूतवाही (हिन्)—पु० [स० जीमूत√वह् (ले जाना)+णिनि] धूआँ।

जीय†—पु० =जीव।

जीयट†—पु०=जीवट।

जीयति†—स्त्री०[हिं० जीना] जीवन। जिंदगी।

जीयदान—पु०=जीव-दान।

जीर—पु०[स०√जॄ (गति)+रक्, ई आदेश]१ जीरा। २. फूलों का केसर। ३. तलवार।
वि० जल्दी या तेज चलनेवाला।
पु०[फा० जिरह] जिरह। कवच।
*वि०=जीर्ण।

जीरक—पु०[स० जीर+कन्] जीरा।

जीरण (रन)—वि०=जीर्ण।

जीरना*—अ०[स० जीर्ण]१ जीर्ण या पुराना होना। उदा०—वह हाले वह जीरई साकर सग निवेदि।—कबीर।
२ कुम्हलाना। मुरझाना। ३ फटना।

जीरह—पु०=जिरह।

जीरा—पुं०[स० जीरक]१ एक पौधा जिसके सुगधित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम मे लाये जाते हैं। २ उक्त पौधे के मुखाये या सूखे हुए फूल। ३ उक्त आकार की कोई छोटी महीन लबी चीज। ४. फूलों का केसर।

जीरिका—स्त्री०[सं० √जॄ (जीर्ण होना)+रिक, ई आदेश,+कन्—टाप्] वशपत्री नामक घास।

जीरी—पु०[हिं० जीरा]१. फूलो आदि का छोटा कण। २. एक प्रकार का अगहनी धान। ३. काली जीरी।

जीरोपटन—पु०[देश०] एक पौधा और उसका फूल।

जीर्ण—वि०[स०√जॄ+क्त, इत्व, नत्व] [स्त्री० जीर्णा] १. जो बहुत पुराना होने के कारण इतना कट-फट या टूट-फूट गया हो कि ठीक तरह से काम में न आ सकता हो। जैसे—जीर्ण दुर्ग, जीर्ण वस्त्र। २. (व्यक्ति) जो बुड्ढा होने के कारण जर्जर और शिथिल हो गया हो। ३ बहुत दिनों का पुराना। जैसे—जीर्ण रोग। ४. जो पुराना होने के कारण अपना महत्त्व गँवा चुका हो। जैसे—जीर्ण विचार। ५. पेट मे पहुँचकर अच्छी तरह पचा हुआ। पचित या पाचित। जैसे—जीर्ण अन्न।

जीर्णक—वि०[स० जीर्ण+कन्]=जीर्ण।

जीर्ण-ज्वर—पु०[कर्म० स०] वैद्यक मे, वह ज्वर जो २१ या अधिक दिनो तक आता हो। पुराना बुखार।

जीर्णता—स्त्री०[सं० जीर्ण+तल्—टाप्] १ जीर्ण होने की अवस्था या भाव। २. बुढापा।

जीर्ण-दारु—पु०[ब०स०] वृद्धदारक वृक्ष। विधारा।

जीर्ण-पत्र—पु०[ब०स०] कदब का पेड।

जीर्ण-वज्र—पु०[कर्म०स०] वैक्रांत मणि।

जीर्णा—स्त्री०[सं० जीर्ण+टाप्] काली जीरी।

जीर्णि—स्त्री०[सं० जॄ+क्तिन्, इत्व, नत्व] १ जीर्णता। २ पाचन।

जीर्णोद्धार—पु०[स० जीर्ण-उद्धार, ष०त०] किसी पुरानी वास्तु-रचना का फिर से होनेवाला उद्धार, सुधार या मरम्मत। टूटी-फूटी इमारत या चीज फिर से ठीक और दुरुस्त करना।

जील—स्त्री०[फा० जीर]१. धीमा या हलका शब्द। २ सगीत में, नीचा या मध्यम स्वर। ३. तबले आदि मे का बाँया (बाजा)।

जीला†—वि०[सं० झिल्ली] [स्त्री० जीली] १ झीना। पतला। २. बारीक। महीन।

जीलानी—पुं०[अ०] एक प्रकार का लाल रंग।
वि० उक्त प्रकार का, लाल।

जीवंजीव—पु० [स० जीव√जीव् (जीना)+णिच्,+खच्, मुम्+] १. चकोर पक्षी। २. एक वृक्ष का नाम।

जीवत—पु० [सं०√जीव्+झ—अन्त] १. जीवनी शक्ति। प्राण। २. औषध। दवा। ३ जीव नाम का साग।
वि० जिसमे प्राण हो। जीता जागता। जीवित।

जीवंतक—पु०[स० जीवत+कन्] जीव शाक।

जीवंतिका—स्त्री०[सं० जीवन्त+कन्—टाप्, इत्व]१ वह वनस्पति जो दूसरे वृक्षो पर रहकर और उन्ही के शरीर से रस चूसकर फैलती या बढती हो। बंदा। बाँदा। २. गुडूची। गुरुच। ३. जीव नामक साग। ४. जीवती लता। ५. एक प्रकार की पीली हर्रे। ५ शमी वृक्ष।

जीवंती—स्त्री० [सं० जीवत+ङीप्] १. एक प्रकार की लता जिसकी टहनियों मे दूध होता है और जिसकी पत्तियाँ दवा के काम मे आती हैं।

कुछ करने या अपना अस्तित्व बनाये रखने की पूरी प्रेरणा या शक्ति प्राप्त होती हो। जान। प्राण। जैसे--आप ही तो इस संस्था के जीवन हैं। १० वह तत्त्व या बात जिसके वर्तमान होने पर किसी दूसरे तत्त्व या बात में यथेष्ट ऊर्जा, ओज आदि अथवा यथेष्ट वांछित प्रभाव उत्पन्न करने या फल दिखाने की शक्ति दिखाई देती है। जैसे--किसी जाति, दल या संघटन में दिखाई देनेवाला जीवन। ११ वायु। हवा। १२ जल। पानी। १३ नवनीत। मक्खन। १४ हड्डियों के अन्दर का गूदा। मज्जा। १५ जीविका निर्वाह का साधन। वृत्ति। १६ पुत्र। बेटा। १७ परमात्मा। परमेश्वर। १८ जीवक नामक ओषधि। वि० परम प्रिय। बहुत प्यारा।

जीवनक—पु० [सं० जीवन+कन्] १ आहार। २. अन्न।

जीवन-कारण—पु० [ष०त०] न्याय-दर्शन में जीव या प्राणी के वे कृत्य या प्रयत्न जो बिना इच्छा, द्वेष आदि के आप से आप और प्राकृतिक रूप से बराबर होते रहते हैं। जैसे--श्वास, प्रश्वास आदि।

जीवन-चरित--पु०[ष०त०]१ सारे जीवन में किसी के किये हुए कार्यों आदि का विवरण। २ वह पुस्तक जिस में किसी के जीवन के मुख्य-मुख्य कार्यों का विवरण हो।

जीवन-चरित्र—पु०=जीवन-चरित।

जीवन-धन—वि०[ष०त०]१ जो किसी के जीवन का धन अर्थात् सर्वस्व हो। परम प्रिय। २ प्राणाधार। प्राण-प्रिय।

जीवन-नौका—स्त्री० [ष० त०] वह छोटी नौका जो बड़े जहाजों पर इसलिए रखी रहती है कि जब जहाज डूबने लगे तब लोग उस पर सवार होकर अपनी जान बचा सकें। (लाइफ-बोट)

जीवन-प्रभा—स्त्री० [ष० त०] आत्मा।

जीवन-प्रमाणक—पु०[ष०त०] इस बात का प्रमाण कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था अथवा इस समय जीवित है। (लाइफ-सर्टिफिकेट)

जीवन-बूटी—स्त्री०[सं० जीवन+हिं० बूटी]१ वह कल्पित जड़ी या बूटी जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को जिला देती है। सजीवनी। २ लाक्षणिक अर्थ में, वह चीज जो किसी के जीवन का आधार हो। ३ प्राण-प्रिय वस्तु।

जीवनमूरि—स्त्री०=जीवन-बूटी।

जीवन-वृत्त—पु०[ष० त०] १ जीवन-चरित। जीवनी। २ किसी जीव या प्राणी के आदि से अंत तक की सब घटनाओं या बातों का वर्णन या इतिहास। (लाइफ-हिस्ट्री)

जीवन-वृत्तांत—पु० [ष० त०] जीवन-वृत्त।

जीवनवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] जीविका। रोजी।

जीवन-संग्राम—पु० =जीवन-संघर्ष।

जीवन-संघर्ष—पु०[ष० त०] प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवित बने रहने या जीविका उपार्जन करने के लिए किया जानेवाला विकट प्रयत्न या प्रयास। (स्ट्रगल फार एक्जिस्टेन्स)

जीवन-हेतु—पु० [ष० त०] जीविका। रोजी।

जीवनांत—पु०[जीवन-अंत, ष० त०] जीवन का अंत अर्थात् मृत्यु।

जीवना—स्त्री० [सं०√जीव्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ महौषध। २. जीवंती लता।

†अ०=जीना (जीवित रहना)।

†स०=जीमना (भोजन करना)।

जीवनाघात—पु० [सं० जीवन-आघात, ब० स०] विष।

जीवनावास—वि० [सं० जीवन-आवास, ब० स०] जल में रहनेवाला। पु० १ वरुण। २ देह। शरीर।

जीवनार्ह—पु०[सं० जीवन-अर्ह, ष०त०] १ अन्न। २. दूध।

जीवनि—वि० [सं० जीवनी]१ (ऐसी ओषधि या वस्तु) जो किसी को जीवित रखने में विशिष्ट रूप से समर्थ हो। २. अत्यन्त प्रिय (वस्तु या व्यक्ति)।

स्त्री०१ सजीवनी बूटी। २ काकोली। ३. तिक्त जीवंती। डोडी। ४ मेदा नाम की ओषधि।

स्त्री०=जीवनी।

जीवनी—स्त्री० [सं० जीवन+ङीप्] १ काकोली। २ जीवंती। ३ महामेदा। ४ डोडी। तिक्त जीवंती।

स्त्री०=जीवन-चरित।

जीवनीय—वि० [सं०√जीव्+अनीयर्] १ जो जीवित रखने या रहने योग्य हो। जी सकनेवाला। २ जीवन या जीवनीशक्ति प्रदान करनेवाला। ३ अपनी जीविका आप चलानेवाला।

पु०१ जल। पानी। २ जयंती वृक्ष। ३ दूध। (डिं०)।

जीवनीय-गण—पु०[ष०त०] वैद्यक में बलकारक ओषधों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत अष्टवर्ग पर्णिनी, जीवंती, मधूक और जीवन नामक वनस्पतियाँ हैं।

जीवनीया—स्त्री० [सं० जीवनीय+टाप्] जीवंती नामक लता।

जीवनेत्री—स्त्री०[सं० जीव√नी(ढोना)+तृच्—ङीप] सैंहली वृक्ष।

जीवनोपाय—पु०[सं० जीवन-उपाय ष०त०] जीवन के निर्वाह और रक्षा का उपाय या साधन। जीविका। रोजी।

जीवनौषध—स्त्री० [जीवन-औषध, ष० त०] वह औषध जिससे मरता हुआ प्राणी जी जाय। जीवन बूटी। सजीवनी।

जीवन्मुक्त—वि० [सं०√जीव्+शतृ, जीवत्-मुक्त कर्म० स०] [भाव० जीवन्मुक्ति] (जीव) जिसने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया हो और इसीलिए जो आवागमन के बंधन से मुक्त हो गया हो।

जीवन्मुक्ति—स्त्री० [सं० जीवत्-मुक्ति, ष० त०] जीवन्मुक्त होने की अवस्था या भाव।

जीवन्मृत—वि०[सं० जीवत्-मृत, कर्म०स०] (अधम प्राणी) जो जीवित होने पर भी मरे हुए के समान हो।

जीव-न्यास—पु० [ष० त०] मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा करते समय कहा जानेवाला एक मन्त्र।

जीव-पति—पु० [ष० त०] धर्मराज।

जीव-पत्नी—स्त्री० [ब० स०] स्त्री, जिसका पति जीवित हो। सधवा।

जीव-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] जीवंती नामक लता।

जीव-पुत्र—पु०[ब० स०] [स्त्री० जीवपुत्रा] वह जिसका पुत्र जीवित हो।

जीवपुत्रक—पु०[सं० जीवपुत्र+कन्] १ जिया-पोता या पुत्रजीव नामक वृक्ष। २ इंगुदी का पेड़। हिंगोट।

जीव-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] बड़ी जीवंती।

जीव-प्रभा—स्त्री० [ष० त०] आत्मा। रूह।

जीव-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] हरीतकी। हर्रे।

जीववंद*—पु०=जीववधु।

जीव-बन्धु—पु०[ष०त०] गुल दुपहरिया या बधूक नामक पौधा और उसका फूल।

जीव-भद्रा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] जीवती नामक लता।

जीव-मातृका—स्त्री०[ष० त०] १ वे सात देवियाँ जो जीवो का कल्याण, पालन आदि माता के समान करती है।

विशेष—ये सात देवियाँ हैं— कुमारी, धनदा, नदा, विमला, मगला, बला और पद्मा।

२. उक्त देवियो मे से हर एक।

जीव-याज—पु०[तृ० त०] वह यज्ञ जिसमे पशुओं की बलि दी जाती हो।

जीव-योनि—स्त्री० [कर्म० स०] १. सजीव सृष्टि। २ [ष० त०] जीव-जतु का वर्ग या समूह।

पु० वह जीव या प्राणी जो इद्रियो के द्वारा ज्ञान प्राप्त करता हो।

जीव-रक्त—पु०[मध्य० स०] रजस्वला स्त्री की योनि मे जानेवाला रक्त।

जीवरा*—पु०=जीव।

जीवरी†—स्त्री०=जीवन।

जीवला—स्त्री० [स० जीव√ला (लेना)+क—टाप्] सिंह-पिप्पली।

जीव-लोक—पु०[ष० त०] वह लोक जिसमे जीव रहते हों। भू-लोक।

जीव-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] क्षीर काकोली (पौधा)।

जीव-विज्ञान—पु०[ष०त०] वह विज्ञान जिसमे जीवों की उत्पत्ति, विकास, शारीरिक रचना तथा उनके रहन-सहन के सबध मे विचार किया जाता है। इसी विज्ञान की शाखाओ के रूप मे, वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान, आकारिकी आदि की गिनती होती है। (बायलॉजी)

जीव-वृत्ति—स्त्री०[ष० त०] १ जीव की वृत्ति अर्थात् गुण, धर्म और व्यापार। २ [कर्म० स०] जीव-जतुओ का पालन-पोषण करके चलाई जानेवाली जीविका।

जीव-शाक—पु०[कर्म०स०] मलाया मे बहुतायत से पाया जानेवाला एक प्रकार का साग। सुसना।

जीव-शुक्ला—स्त्री० [कर्म० स०] क्षीर काकोली (पौधा)।

जीव-सक्रमण—पु० [ष० त०] जीव का एक योनि से दूसरी योनि अथवा एक शरीर से दूसरे शरीर मे जाना।

जीव-साधन—पु० [ष० त०] धान।

जीव-सुत—पु०[ष०त०] [स्त्री० जीव-सुता] वह जिसका पुत्र जीवित हो।

जीवसू—स्त्री०[स० जीव√सू (प्रसव) क्विप्] वह स्त्री जिसकी सन्तान जीवित हो।

जीव-स्थान—पु०[ष०त०] हृदय, जिसमे जीव निवास करता है।

जीव-हत्या—स्त्री० [ष० त०] १. जीवों को मारने की क्रिया या भाव। २ धार्मिक दृष्टि से वह पाप जो जीवों को मारने से लगता है।

जीव-हिसा—स्त्री०[ष०त०] जीव-हत्या।

जीवांतक—वि०[जीव-अतक, ष०त०] जीव या प्राण अथवा जीवो या प्राणियो का अन्त या नाश करनेवाला।

पु०१ यमराज। २ वधिक। ३ बहेलिया। व्याध।

जीवा—स्त्री०[स०√जीव्+णिच्+अच्—टाप्] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक जानेवाली सीधी रेखा। ज्या। २. धनुप की डोरी। ३. जीवंती नामक लता। ४. वच। वचा। ५. जमीन। भूमि। ६. जीविका। ७ जीवन।

जीवाजून—स्त्री० =जीव-योनि।

जीवाणु—पु०[जीव-अणु, ष० त०] १. सेन्द्रिय जीवो का वह मूल और बहुत सूक्ष्म रूप जो विकसित होकर नये जीव का रूप धारण करता है। २ जीवनी-शक्ति से युक्त ऐसे अणु जो प्राय अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं। (जर्म)

जीवातु—पुं०[स०√जीव्+आतु] वह ओषधि जिससे प्राणो की रक्षा होती हो। प्राण-दान करनेवाली ओषधि।

जीवातुमत्—पु०[स० जीवातु+मतुप] आयुष्काम यज्ञ के एक देवता जिनसे आयुवृद्धि की प्रार्थना की जाती है।

जीवात्मा (त्मन्)—पु०[जीव-आत्मन्, ष० त०] १. जीव या प्राणियो मे रहनेवाली आत्मा। वह शक्ति जिसके कारण प्राणी जीवित रहते हैं। †२. हृदय। जैसे—किसी की जीवात्मा नही दुखानी चाहिए।

जीवादान—पु०[जीव-आदान, ष० त०] बेहोशी। मूर्च्छा।

जीवाधार—पु० [जीव-आधार, ष०त०] हृदय, जो आत्मा का आधार या आश्रय माना जाता है।

जीवानुज—पु०[जीव-अनुज, ष०त०]गर्गाचार्य मुनि जो बृहस्पति के वशज और किसी के मत मे बृहस्पति के भाई कहे जाते हैं।

जीवावशेष—पु० [जीव-अवशेष, ष० त०]=जीवाश्म।

जीवाश्म (न्)—पु० [जीव-अश्मन्, ष० त०] बहुत प्राचीन काल के जीव-जतुओं, वनस्पतियों आदि के वे अवशिष्ट रूप जो जमीन की खोदाई करने पर निकलते हैं। जीवावशेष। पुराजीव। (फासिल)

जीवाश्म-विज्ञान—पु० [ष०त०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि भिन्न-भिन्न प्राचीन युगों मे कहाँ-कहाँ और किस प्रकार के जीव होते थे। पुराजैविकी। (पेलिएन्टालोजी)

जीवास्तिकाय—पु० [जीव-अस्तिकाय, ष० त०] जैन दर्शन के अनुसार विशिष्ट कर्म करने और उनके फल भोगनेवाले जीवो का एक वर्ग।

जीविका—स्त्री०[स०√जीव्+अ+कन्—टाप, इत्व] वह काम-धधा, पेशा या वृत्ति जिसके द्वारा मनुष्य को जीवन-निर्वाह के लिए धन तथा अन्य आवश्यक पदार्थ मिलते हो।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।—लगना।—लगाना।

जीवित—वि०[स०√जीव्+क्त] १. जिसे फिर से जीवन या प्राण मिले हो। २. जो अभी जी रहा हो। जिसमे जीवन या प्राण हो। ३. (पदार्थ) जिसकी क्रियात्मक शक्ति काम कर रही हो या वर्त्तमान हो।(एलाइव) जैसे—जीवित कारतूस, बिजली का जीवित तार।

पु० १. जीवन। २. जीवन-काल।

जीवित-काल—पु० [ष० त०] जीवित रहने का पूरा या सारा समय। आयु। उमर।

जीवित-नाथ—पु० [ष० त०] पति।

जीवितव्य—वि० [स०√जीव+तव्यत्] जीवित रखने या रहने योग्य।

जीवितांतक—पु० [जीवित-अतक, ष० त०] शिव।

जीवितेश—पु०[जीवित-ईश, ष०त०]१. जीवन का स्वामी। २. यम। ३ इन्द्र। ४. सूर्य। ५. इडा और पिंगला नाड़ियाँ।

वि० प्राणों से भी बढकर प्रिय। प्राणाधार।

जीवी (विन्)—वि० [स० जीव+इनि] १ जीनेवाला। २. किसी विशिष्ट प्रकार की जीविका से अपना निर्वाह करनेवाला। जैसे--श्रम-जीवी शस्त्र-जीवी।

जीवेश—पु०[जीव-ईश, प० त०] १ जीव या जीवो का स्वामी। ईश्वर। २ प्रियतम।

जीवोपाधि—स्त्री० [स० जीव-उपाधि] जीव की ये तीन उपाधियाँ या अवस्थाएँ--स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत।

जीसो†--वि०=जैसा।

जीस्त— स्त्री० [फा० जीस्त] जीवन।

जीह*—स्त्री० [स० जिह्वा] जीभ।

जीहि*—स्त्री०=जीह।

जुंई—स्त्री०=जुई।

जुंग—पु०[स०√जुग् (त्यागना)+अच्] विधारा नामक वृक्ष।

जुंगित—वि० [स०√जुग्+क्त] १ परित्यक्त। २ नीच या शूद्र जाति का।

जुंडी†—स्त्री०=जुन्हरी।

जुंदर—पु०[?]वदर का वच्चा। (कलदर)

जुंवली—स्त्री०[हि० दुवा] एक प्रकार की पहाडी भेड।

जुंविश—स्त्री०[फा०] १ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव। गति। २ अपने स्थान से थोडा हटकर इधर-उधर होने की क्रिया या भाव।
मुहा०—**जुंविश खाना**=किसी पदार्थ का अपने स्थान से थोडा हटकर इधर-उधर होना।

जु—अव्य० १=जो। २=ज्यो। ३=जी।

जुअ—अव्य०[?]अलग। (दूर या पृथक्)। उदा०--वक्खर पक्खर टुट्टि, टुट्टि हय खड परिय जुअ।--चदवरदाई।

जुअती†—स्त्री०=युवती।

जुअना†—स०=जोवना (देखना)। उदा०—विरदैत दमित आजान भुअ, उर किवार वर वज्र जुअ।--चदवरदाई।

जुअलि—वि०[स० युगल] दो। उदा०--जुअलि नालि तसु गरभ जेहवी। --प्रिथीराज।

जुआँ—स्त्री०=जूँ।

जुआँरी†—स्त्री०[हि० जूँ] वहुत छोटी जूँ (कीडा) या उसका वच्चा। †स्त्री०=ज्वार।

जुआ†—पु०=जूआ।

जुआठा—पु० दे० 'जूआ' (हल का)।

जुआनी†—स्त्री०=जवानी।

जुआर†—स्त्री०=ज्वार।

जुआर वासी—स्त्री०[?] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

जुआर भाटा†—पु०=ज्वारभाटा।

जुआरा—पु०[हि० जोतार] वह भूखड जिसे एक जोडी वैल एक दिन मे जोत सकते हो।

जुआरी—पु०[हि० जुआ] वह व्यक्ति जिसे जुआ खेलने का व्यसन हो।

जुआल*—स्त्री०=ज्वाला।

जुइना—पु०[स०यूनि=बधन या जोड] घास, फूस आदि को वटकर वनाई जानेवाली रस्सी।

जुई—स्त्री०[हि० जूँ] १. वहुत छोटी जूँ (कीडा) या उसका वच्चा। २ मटर, सेम आदि की फलियो मे लगनेवाला एक प्रकार का छोटा कीडा।

जुई—स्त्री०[?]लवा पतला पात्र जिससे हवन करते समय अग्नि मे घी छोडा जाता है। श्रुवा।

जुकत्तिय*—स्त्री०=युक्ति।

जुकाम—पु०[अ०] सरदी-गरमी के योग से होनेवाला वह रोग जिसमे नाक से कफ मिला हुआ पानी निकलता और सिर भारी जान पडता है। प्रतिश्याय सरदी। (कोल्ड)
मुहा०—**मेढकी को भी जुकाम होना**=किसी छोटे व्यक्ति का भी वडे वनने या वडप्पन दिखलाने के लिए वडे आदमियो का अनुकरण, वरावरी या रीस करना।

जुकिहारा—पु० [हि० जोक] [स्त्री० जुकिहारी] जोक लगानेवाला। उदा०—जुकिहारी जौवन लिए हाथ फिरै रस हेत। --रहीम।

जुकुट—पु०[स०]१ कुत्ता। २ मलय पर्वत।

जुगतै—वि०=जाग्रत। उदा०—जानि जुगतै जम लै करण प्रथीपुर अन्त। --रासो।

जुग—पु०[स० युग्म]१ एक ही तरह की दो चीजो का जोडा। जोड। युग्म।
मुहा०--**जुग टूटना या फूटना**=प्राय साथ रहनेवाली दो वस्तुओ या व्यक्तियो का किसी प्रकार एक दूसरो से अलग हो जाना। **जुग वैठना या मिलना**=एक ही तरह की दो वस्तुओ या व्यक्तियो का घनिष्ठ सपर्क या सग-साथ होना।
२ चौसर के खेल मे दो गोटियो का एक ही घर मे एक साथ वैठने की अवस्था।
विशेष—ऐसी गोटियो मे से कोई गोटी तव तक मारी नही जा सकती, जव तक वे दोनो एक दूसरी से अलग या आगे-पीछे न हो जायँ।
३ करघे मे का वह डोरा जो ताने के सूतो को अलग-अलग रखने के लिए होता है।
पद† पु०=युग (काल-विभाग)।

जुगजुग—अव्य० [हि० जुग] अनेक युगो अर्थात् वहुत दिनो तक। जैसे—वच्चा तुम जुग-जुग जीओ (आशीष)।

जुगजुगाना—अ०[हि० जगना=प्रज्वलित होना] १ रह-रहकर थोडा थोडा चमकना। टिमटिमाना। २ अपने अस्तित्व का परिचय या प्रमाण देते रहना।३ नया जीवन पाकर हीन दशा से कुछ अच्छी दशा मे आना। उभरना।

जुगजुगी—स्त्री०[हि० जुगजुगाना] १. शकरखोरा नाम की चिडिया। २. गले मे पहनने का एक आभूषण। जुगनूँ।

जुगत—स्त्री०[स० युक्ति] [कर्त्ता जुगती] १ वहुत सोच-समझकर किया जानेवाला उपाय। तरकीव। युक्ति। २ आचार व्यवहार आदि मे दिखाई देनेवाला कौशल। जैसे-खूव जुगत से गृहस्थी चलाना।

जुगती—पु०[हि० जगत] १ व्यक्ति जो समझ-बूझकर कोई विकट काम करने का उत्तम उपाय निकाले। २ किफायत से घर-गृहस्थी का खरच चलानेवाला व्यक्ति।
स्त्री०=जुगत (युक्ति)।

जुगनी—स्त्री॰=जुगनूँ।

जुगनूँ—पु॰[हिं॰ जुगजुगाना] १ एक प्रसिद्ध कीड़ा जिसका पिछला भाग रात मे खूब चमकता है। खद्योत। २ पान के पत्ते के आकार का गले का एक गहना। जुगजुगी। रामनामी। ३ गले मे पहनने के गहनो मे नीचे लटकनेवाला खड। (पेन्डेन्ट)

जुगम—वि॰=युग्म।

जुगराफिया—पु॰[अ॰] भूगोल।

जुगल—वि॰=युगल।

जुगलिया—पु॰[?] जैन कथाओ के अनुसार वह कल्पित प्राणी जिसके ४०९६ बाल मिलकर आज कल के मनुष्यो के एक बाल के बराबर हो।

जुगवना—स॰ [स॰ योग+अवना (प्रत्य॰)] यत्न अथवा युक्तिपूर्वक थोडा-थोडा इकट्ठा करके और सँभाल कर रखना। युक्तिपूर्वक बचाकर रखना।

जुगाड़—पु॰ [स॰ योग, हिं॰ जुगवना] १ कोई आवश्यक वस्तु कही से लाकर उपस्थित करना। २ कोई कठिन कार्य सिद्ध करने की युक्ति। क्रि॰ प्र॰—बैठाना।

जुगादरी—वि॰[स॰ युगादि से] बहुत पुराना।

जुगादि—*पु॰[स॰ युगादि] १ युग का आरभिक समय। २. बहुत पुराना समय।

जुगाना—स॰=जुगवना।

जुगार†—स्त्री॰=जुगाली।

जुगारना—अ॰=जुगालना।

जुगालना—अ॰ [स॰ उद्गिलन=उगलना] सीगवाले पशुओ (जैसे—गाय भैस, बकरी आदि), का जुगाली या पागुर करना।

जुगाली—स्त्री॰ [हिं॰ जुगालना] सीगवाले पशुओ का जल्दी-जल्दी खाये या निगले हुए चारे को गले से थोडा निकालकर फिर से अच्छी तरह चबाना। पागुर।

जुगुत, जुगुति—स्त्री॰=जुगत।

जुगुप्सक—वि॰ [स॰√गुप् (निंदा करना)+सन्, द्वित्वादि,+ण्वुल्-अक] दूसरे की व्यर्थ मे निंदा करनेवाला। निंदक।

जुगुप्सन—पु॰[स॰√गुप्+सन्, द्वित्वादि+ल्युट्-अन] [वि॰ जुगुप्सु, जुगुप्सित] जुगुप्सा या निंदा करना।

जुगुप्सा—स्त्री॰ [स॰√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+अ—टाप्] १ दूसरो की की जानेवाली निंदा या बुराई। २ उपेक्षापूर्वक की जानेवाली घृणा। ३ योग शास्त्र के अनुसार अपने शरीर तथा ससार के लोगो के प्रति होनेवाली वह घृणा जो मन के परम शुद्ध हो जाने पर होती है।

जुगुप्सित—भू॰ कृ॰ [स॰√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+क्त] १ जिसकी जुगुप्सा हुई हो। निंदक। २ घृणित।

जुगुप्सु—वि॰ [स॰√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+उ] बुराई करनेवाला। निंदक।

जुगुल†—वि॰=युगल।

जुग्ग—पु॰=युग।

जुग्गिनवै*—पु॰ [स॰ योगिनी+पति] दिल्ली का राजा पृथ्वीराज।

जुग्गिनी—स्त्री॰ [स॰ योगिनी] योगिनीपुर। दिल्ली।

जुज़—पु॰ [फा॰ मि॰ स॰ युज] १. अश। भाग। २. छपे हुए कागज के जुडे हुए ८ या १६ पृष्ठो का समूह। एक फारम।

जुजबन्दी—स्त्री॰[फा॰] पुस्तको की सिलाई का वह प्रकार जिसमें प्रत्येक फरमा एक ओर तो अलग-अलग और दूसरी ओर बाकी सब फरमो के साथ मिलाकर भी सीया जाता है। (दफ्तरी)

जुजवी—वि॰[फा॰] १. जो जुज या बहुत छोटे अग के रूप मे अथवा बहुत थोडी मात्रा मे किसी के अतर्गत हो। २ बहुत कम।

जुजोठल†—पु॰=युधिष्ठिर।

जुज्झ'—स्त्री॰[?] १ जूझने की क्रिया या भाव। जूझ। २ युद्ध। लडाई।

जुझवाना*—स॰[हिं॰ जूझना का प्रे॰] किसी को जूझने मे प्रवृत्त करना।

जुझाऊ—वि॰[हिं॰ जूझ+आऊ (प्रत्य॰)] १ प्राय जूझता या लडता रहनेवाला। लडाका। २ युद्ध या लडाई के उपयोग मे आनेवाला। युद्ध-सबधी। जैसे—जुझाऊ जहाज।

जुझाना—स॰=जुझवाना।

जुझार—वि॰[हिं॰ जुज्झ+आर (प्रत्य॰)] योद्धा। लडाका। पु॰ युद्ध। लडाई। उदा॰—का जानसि कस होइ जुझारा। —जायसी।

जुझारू—वि॰, पु॰=जुझार।

जुझ्झ—पु॰[स॰ युद्ध] १ जूझने की क्रिया या भाव। जूझ। २ युद्ध। लडाई।

जुट—पु॰[हिं॰ जुटना] १ एक ही तरह की दो चीजो का जोडा। जुग। २ एक साथ काम आनेवाली कई वस्तुओ का समूह। जोडा। जैसे-कपडो या गहनो का जुट। ३ किसी के जोड या मुकाबले की कोई दूसरी चीज। जोडा। ४ एक साथ बँधी या लगी हुई चीजो का एक वर्ग या समूह जो प्राय गुच्छे के रूप मे हो। ५ जत्था। दल। मडली। ६ दे॰ 'जुग'।

जुटक—पु॰[स॰√जुट् (मिलना)+क+कन्] १ जटा। २ कबरी। जूडा।

जुटना—अ॰ [सं॰ युक्त, प्रा॰ जुत्त+ना (प्रत्य॰)] १ एक चीज का दूसरी चीज के बिलकुल पास पहुँचकर उससे लगना या सटना। जुडना। जैसे—इमारत मे पत्थर के पास पत्थर जुटना। २ इस प्रकार पास या समीप होना कि बीच मे बहुत ही थोडा अवकाश रह जाय। ३ किसी काम मे जी लगाकर योग देना। जैसे—तुम भी आकर जुट जाओ तो काम जल्दी हो जाय। ४ एक या अनेक प्रकार की चीजो, व्यक्तियो आदि का एक जगह इकट्ठा होना। जैसे—(क) धन या पत्थर, लकडी आदि जुटना। (ख) तमाशा देखने के लिए भीड जुटना। ५ किसी प्रकार प्राप्त या हस्तगत होना। मयस्सर होना। ६ स्त्री का पुरुष से अथवा पुरुष का स्त्री से प्रसग या सभोग करना। (बाजारू)

जुटला—वि॰[हिं॰ जूट] [स्त्री॰ जुटली] लबे-लबे बालो की लटोवाला। पु॰[अल्पा॰ जुटली] लबे लबे बालो की लटा। जटा-जूट।

जुटाना—स॰[हिं॰ जुटना] १ जुटने या एकत्र होने मे प्रवृत्त करना। २ इकट्ठा करना। ३ बहुत पास लाकर मिलाना या सटाना।

जुटाव—पु॰[हिं॰ जुटना] जुटाने की क्रिया या भाव।

जुटिका—स्त्री०[स० जुटक+टाप्,—इत्व] १ चोटी। शिखा। २ बालो का जूडा। ३ गुच्छा। ४ एक प्रकार का कपूर।

जुट्टा —वि० [हिं० जुटना=मिलना] [स्त्री० जुट्टी] आपस मे मिले या सटे हुए (पदार्थ)। जैसे—जुट्टी भौहे।

पु०[स्त्री० अल्पा० जुट्टी] १ घास, डठलो आदि का वडा पूला। २ दे० 'जुट्टी'।

जुट्टी—स्त्री०[हिं० जुटना] १ घास, डठलो आदि का पूला। २ ऐसे डठलो, पत्तो आदि का कल्ला जो आरम्भ मे प्राय एक मे मिले या सटे हुए रहते है। ३ एक दूसरी पर रखी हुई एक ही तरह की चीजो की गड्डी या थाक। ४ वेसन मे लपेट कर तले हुए पत्ते या साग।

जुठारना—स० [हिं० जूठा] १ खाने-पीने की चीज कुछ खा या पीकर जूठी करना। जैसे—कुत्ते का दूध जुठारना। २ नाम मात्र के लिए थोडा-सा खाकर वाकी छोड देना। जैसे—थाली जुठारना। ३ नाम मात्र के लिए या वहुत थोड़ा-सा खाना, जैसे—मुँह जुठारना।

जुठिहारा—पु०[हिं० जूठा+हारा] [स्त्री० जुठिहारी] दूसरो का जूठा खानेवाला।

जुठैल*—वि०[स० जुष्ठ+ऐल]जूठा। उच्छिष्ट। उदा०—कातिक राति जगी जम जोइ जुठैल जठेरि सुजठ की जेणी।—देव।

जठौली—स्त्री०[देश०] झुड मे रहनेवाली हलके वादामी रग की एक चिडिया जिसके पैर छोटे, शरीर कुछ चौडा तथा चिपटा होता है। इसके नर का सिर भूरा होता है

जुडगी—वि०[हिं० जुडना+अग] जिसके साथ अग और अगीवाला सबध हो। वहुत ही निकट का सबधी।

जुड़ना—अ०[हिं० जोडना का अ०] १ हिंदी 'जोडना' का अकर्मक रूप। जोडा जाना। २ दो या अधिक वस्तुओ का आपस मे इस प्रकार मिलना कि एक का कोई भाग या अग दूसरे के साथ दृढतापूर्वक लगा या सटा रहे। दृढतापूर्वक सवद्ध, सश्लिष्ट या सयुक्त होना। जैसे—सरेस से कुरसी के पाये जुडना।

सयो० क्रि०-जाना।

३ सगृहीत या सचित होकर एक स्थान पर एकत्र होना। जुटना। जैसे—किसी के पास धन जुडना। ४ किसी प्रकार उपलब्ध, प्राप्त या हस्तगत होना। मयस्सर होना। जैसे—हमे ऐसे कपडे भला कहाँ जुड़ेंगे। ५ गाडी, घोडे, वैल आदि के सवध मे, जोता जाना। जुतना। जैसे—इस गाडी मे दो घोडे जुडते हैं। ६ किसी प्रकार के कठिन या श्रमसाध्य कार्य मे किसी व्यक्ति या कुछ व्यक्तियो का योग देने के लिए सम्मिलित होना। ७ दे० 'जुटना'।

जुड़पित्ती—स्त्री०[हिं० जूड+पित्त] शीत और पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाला एक रोग जिसमे सारे शरीर मे वडे-बड़े चकत्ते पड जाते हैं और उनमे खुजली या जलन होती है।

जुड़वाँ—वि०[हिं० जुडना] १ (वच्चे) जो एक साथ जुडे हुए जन्मे हो। २. (वच्चे) जिनका जन्म एक हो समय मे कुछ आगे-पीछे हुआ हो। ३ (कोई ऐसे दो या अधिक पदार्थ) जो आपस मे एक साथ जुडे, लगे या सटे हों। जैसे—जुडवाँ केले या फलियाँ।

जुड़वाई—स्त्री०[हिं० जुडवाना] जुडवाने या जोड लगवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

२—४८

जुड़वाना—स० [हिं० जुडाना=ठढा होना] ठढा या शीतल करना। २ किसी सतप्त को शात, सतुष्ट या सुखी करना।

स०[हिं० जोडना का प्रे०] १ जोड-वैठवाना, मिलवाना या लगवाना। २ जुडाना

जुड़ाई†—स्त्री०=जोडाई।

स्त्री०[हिं० जुडाना] १ ठढे या शीतल होने की क्रिया या भाव। ठढक। शीतलता। २ तृप्ति।

स्त्री०=जुडवाई।।

जुड़ाना—स०[हिं० जुडना का स०] १. जुडने या जोडने मे प्रवृत्त करना। २ फलित ज्योतिष के अनुसार योग और फल का मिलान करना। जैसे—जन्म पत्र जुड़ाना अर्थात् वर और कन्या के ग्रहो का मिलान कराके यह जानना कि दोनो का वैवाहिक सवध कैसा होगा।

अ०[हिं० जाडा, पू० हिं० जूड़=ठढा] १. ठढा या शीतल होना। २ शात और सुखी होना। जैसे—किसी को देखकर कलेजा जुडाना। ३. तृप्त होना।

स० ठंढा या शीतल करना। २ शात और सुखी करना।

जुड़ावना†—स०=जुडाना।

जुड़िया†—वि०, पु०=जुडवाँ।

जुत†—वि०=युक्त।

जुतना—अ०[स० युक्त, प्रा० जुत्त] १ घोडे, वैल आदि का गाड़ी मे जोता जाना। २. खेत आदि का जोता जाना। ३ जी लगाकर किसी ऐसे काम मे सम्मिलित होना जिसमे वहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता हो। जैसे—वह दिन भर काम मे जुता रहता है।

जुतवाना—स०[हिं० जोतना का प्रे०] १ जोतने का काम किसी दूसरे से कराना। २ ऐसा काम करना जिससे कुछ (जैसे-खेत) या कोई (जैसे-घोडा या वैल) जोता जाय।

जुताई†—स्त्री०[हिं० जोतना] जुतने या जोते जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जुताना†—स०=जुतवाना।

+अ०=जुतना।

जुतिऔवल—स्त्री० [हिं० जूता] ऐसी लडाई जिसमे दोनो पक्ष एक दूसरे पर जूतो से प्रहार करते हो। जूतो से होनेवाली लडाई।

जुतियाना—स० [हिं० जूता+इयाना (प्रत्य०)] १ जूतो से किसी पर प्रहार करना। २ किसी को वहुत अधिक खरी-खोटी सुनाकर अपमानित तथा लज्जित करना।

जुत्य†—पु०=यूथ।

जुथौली—स्त्री०=जुठौली।

जुदा—वि०[फा०] [स्त्री० जुदी (क्व०)] १ किसी से दूर हटा या विछुडा हुआ। अलग। पृथक्। जैसे—माँ का वेटी से जुदा होना। २ आकार, गुण, महत्त्व, रग-रूप आदि की दृष्टि से भिन्न प्रकार का। भिन्न। जैसे—यह वात जुदा है कि आप भी जायँगे या नही।

जुदाई—स्त्री०[फा०] १ जुदा या भिन्न होने की अवस्था या भाव। भिन्नता। २ जुदा या पृथक् होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। ३ प्रेमियो, मित्रो आदि का पारस्परिक वियोग। विछोह।

जुद्ध†—पु०=युद्ध।

जुववान—पुं०[स० युद्ध] १ युद्ध करनेवाला। योद्धा। उदा०—जग्गेय जुववानं, कुंभेनयं कंक लकायं।-चंद वरदाई। २ जो युद्ध कर रहा हो। लडता हुआ।
जुन।—स्त्री० १.=जून (काल या समय)। २.='योनि'।
जुनव्वी।—स्त्री० [अ० जुनूव=दक्षिण] [स्त्री० अल्पा० जुनव्वी] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।
जुनरी—स्त्री०=जुन्हरी (ज्वार)।
जुनून—पु०[फा०] उन्माद। पागलपन।
जुनूनी—वि०[अ०] उन्मत्त। पागल।
जुनूब—पु०=जनूव। (दक्षिण)।
जुन्हरी—स्त्री०[स० यवनाल] ज्वार नाम का अन्न।
जुन्हाई—स्त्री० [स० ज्योत्स्ना, प्रा० जोन्हा, हिं० जोन्ही+ऐया] १. चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २. चन्द्रमा।
जुन्हैया।—स्त्री०=जुन्हाई।
जुफ्त—पु०[फा०] १. जोड़ा। २ सम सख्या।
जुब-राज।—पु०=युवराज।
जुवाद—पु०[अ०] एक प्रकार का तरल गध द्रव्य जो गध मार्जार या मुश्क विलाव के अडकोश से निकलता है।
जुवान।—स्त्री०=जवान।
जुवानी।—वि०=जवानी।
जुमकना।—अ०[हिं० जमना या स० युग्म] १. दृढ़तापूर्वक किसी जगह खड़े रहना। डटना। २. पास या समीप आना। ३ इकट्ठा होना।
जुमना—स०[?] खेत मे उगी या पडी हुई झाड़ियो को जलाकर उनकी खाद वनाना।
पु० खाद वनाने की उक्त क्रिया।
जुमला—वि०[फा० जुम्ल:] कुल। पूरा। सव।
पुं० वाक्य।
जुमा—पु०[अ० जुमऽ] शुक्रवार।
जुमा मसजिद—स्त्री०[अ०]जामा मस्जिद।
जुमिल—पु०[?] एक प्रकार का घोडा।
जुमिल्ला—पु० [?] करघे की लपेटन की वाई ओर गड़ा रहनेवाला खूँटा।
जुमुकना—अ०=जुमकना।
जुमेरात—स्त्री०[अ०] गुरुवार। वृहस्पतिवार।
जुम्मा—पु०[अ० जुमा] शुक्रवार।
।पु०=जिम्मा।
जुयांग—पु०[?] सिंह भूमि के पास पाई जानेवाली एक जगली जाति जो कोलो से मिलती-जुलती है।
जुर*—पु०[स० ज्वर] ज्वर। वुखार। उदा०—वासर रैनि नाँव लै वोलत भयो विरह ज्वर कारो।—सूर।
जुरअत—स्त्री०[फा०] साहस। हिम्मत।
जुरझना।—अ०, स०=झुलसना।
जुरझरी।—स्त्री०=झुरझुरी।
जुरना*—अ०[हिं० जुड़ना का पुराना रूप] १. एक मे मिलना। जुडना। २. अँगडाई लेना। उदा०—झुकि झुकि झपकी हैं पलनु फिरि फिरि जुरि जमुहाई।—विहारी।
अ०=जुड़ाना (ठंडा होना)।
जुरवाना।—पु०=जुरमाना।
जुरमाना—पु०[फा० जुर्मान] १. किसी अपराव के फल-स्वरूप न्यायालय द्वारा अभियुक्त का दिया जानेवाला अर्थ-दड। २ किसी प्रकार की चूक, त्रुटि या भूल करने पर किसी अधिकारी द्वारा दिया जानेवाला अर्थ दड। जैसे—पुस्तकालय मे १५ दिन के अदर पुस्तक न लौटाने पर एक आना रोज जुरमाना लगता है। ३ वह धन जो किसी प्रकार का अपराध, दोप या भूल करने पर दंड-स्वरूप देना पडता है।
जुरा*।—स्त्री० [स० जरा] १ वुढापा। वृद्धावस्था। २. मृत्यु।
जुराना—अ०, स०=जुडाना।
जुराफा—पु०[अ० जुर्राफ] ऊँट की तरह का पद्रह-सोलह फुट ऊँचा अफ्रीका का एक जगली पशु जो ससार का सवसे ऊँचा प्राणी माना जाता है। कहते हैं कि मादा से विछोह होते ही नर की मृत्यु हो जाती है।
जुरावना*—अ०, स०=जुडाना।
जुरी।—स्त्री०=जूड़ी।
जुरूर—क्रि० वि०=जरुर।
जुर्म—पुं०[अ०] १ ऐसा अनुचित कार्य जो विधिक दृष्टि से दंडनीय हो। अपराध। २ कोई ऐसा दोप या भूल जिसके लिए दंड मिल सकता हो।
जुर्माना।—पु०=जुरमाना।
जुर्रत—स्त्री०[अ० जुरअत] साहस।
जुर्रा—पु०[फा० जुर्र.] वाज नामक पक्षी में का नर।
जुर्राव—स्त्री०[तु०] धागो आदि का वुना हुआ पैरो का एक प्रसिद्ध पहनावा। मोजा।
जुल—पु०[सं० छल ?] [वि० जुलवाज] कोई ऐसी वात जो किसी को धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए कही गई हो।
क्रि० प्र०—देना।—में आना।
जुलकरन—पु०[अ० जुलकरनैन] सुप्रसिद्ध यूनानी वादशाह सिकदर की एक उपाधि।
जुलकरनैन—पु०=जुलकरन।
जुलकर्रा—पु०=जुलकरन।
जुलना—स०[हिं० मिलना का अनु० या हिं० जुडना] १ मेल-मिलाप करना या रखना। जैसे—मित्रो से मिलना-जुलना। (केवल 'मिलना' के साथ प्रयुक्त)
जुलफ—स्त्री०[अ० जुल्फ] वालो की लट।
जुलफिकार—पु०[अ० जुलफिकार] अली (मुसलमानो के चौथे खलीफा) की तलवार का नाम।
जुलवाज—वि०[हिं० जुल+फा० वाज] [भाव० जुलवाजी] दूसरो को जुल देनेवाला। धोखेवाज।
जुलम।—पु०=जुलम (अत्याचार)।
जुलहा।—पुं०=जुलाहा।

जुलाई—वि०[हिं० जुल+आई (प्रत्य०)] जुल देनेवाला। धोखेबाज। उदा०--घाती, कुटिल, ढीठ अतिक्रोधी, कपटी कुमति जुलाई।—सूर। स्त्री०=जूलाई (अँगरेजी का सातवाँ महीना)।

जुलाब—पु०[फा० गुलाब, अ० जुल्लाब] १. रेचन। दस्त। २. दस्त लानेवाली दवा। रेचक औषध।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
मुहा०—**जुलाब पचना**=रेचक औषध खाने पर भी उसका प्रभाव या फल न होना।
३ किसी से कुछ व्यय कराने की तरकीब या युक्ति। (बाजारू)

जुलाहा—पु०[फा० जौलाह] १. करघे पर कपड़ा बुननेवाला शिल्पी। कोरी। तंतुवाय। २ कपड़ा बुननेवालो की एक विशिष्ट जाति। ३ योग साधना मे साधक। ४ पानी पर तैरनेवाला एक प्रकार का छोटा बरसाती कीडा।

जुलुफ--स्त्री०[अ० जुल्फ] बालो की लट।

जुलुम—पु०=जुल्म (अत्याचार)।

जुलुस—पु०[अ०] १ सिंहासनारोहण। २ दे० 'जलूस'।

जुलोक—पु०[स० द्युलोक] स्वर्ग।

जुल्फ—स्त्री०[फा० जुल्फ] सिर के वे लबे बाल जो पीछे या इधर-उधर लटो के रूप मे लटकते रहते हैं।

जुल्फी—स्त्री०=जुल्फ।

जुल्म—पु०[अ०] १. किसी प्रबल या शक्तिशाली व्यक्ति का अनीति या अन्यायपूर्ण ऐसा कार्य जिससे असहायो, दुर्बलो तथा निरीहो को कष्ट होता हो। अत्याचार। २. कोई कठोर आचरण या व्यवहार। जैसे--शरीर के साथ जुल्म मत करो।
मुहा०—**जुल्म ढाना**=(क)कोई बहुत बडा अत्याचार करना।(ख) कोई अद्‌भुत या विलक्षण काम कर दिखाना।

जुल्मत—स्त्री०[अ० जुल्मत] अधकार।

जुल्मात—पु०[अ० जुल्मत का बहु० रूप] १ अधकार। २ कुछ विशिष्ट अधकारपूर्ण स्थान। जैसे--स्त्रियो का गर्भाशय, समुद्र का बिलकुल नीचेवाला भाग।

जुल्मी—वि० [अ० जुल्मी] १ जुल्म अर्थात् अत्याचार करनेवाला। २ बहुत अधिक उग्र, तीव्र या विकट। प्रचड। प्रबल।

जुल्लाब—पु०=जुलाब।

जुव†—पु०=युवक।

जुवजन—पु०[स० युवा+जन] नवजवान आदमी। उदा०--मनु जग-जुवजन जीतन एकहि विधिना रची।वनाय—भारतेन्दु।

जुवती†—स्त्री०=युवती।

जुवराज*—पु०=युवराज।

जुवा—वि०=युवा।
पु०=जूआ।

जुवान†—पु०=जवान।

जुवानी†—स्त्री०=जवानी।

जुवार—स्त्री०=ज्वार।

जुवारी—प०=जुआरी।

जुविराज*—पुं०=युवराज।

जुष्ट—वि०[सं०√जुष् (प्रीति, सेवा)+क्त] १ प्रसन्न। २. सेवित। ३. जूठा।
पु० जूठन।

जुष्य—वि०[स०√जुष्+क्यप्] १. पूज्य। २ सेव्य।

जुस्तजू—स्त्री०[फा०] खोज। तलाश।

जुहाना†—स०[स० यूथ, प्रा० जूह+आना (प्रत्य०)] १. एकत्र करना। जुटाना। २ वास्तु-रचना मे एक पत्थर या लकडी को ठीक तरह से दूसरे पत्थर या लकडी पर या उसके साथ जमाना या बैठाना। (बढई और राज) ३ चित्र मे प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियो को यथा-स्थान बैठाना। सयोजन करना।

जुहार—स्त्री०[सं० अवहार=युद्ध का रुकना या बद होना?] १. राज-पूतो मे प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन। २ अभिवादन। प्रणाम।
†स्त्री०=ज्वार।

जुहारना--अ०[हिं० जुहार] अभिवादन या प्रणाम करना। उदा०--मत्री, मित्र कलत्र पुत्र सब आइ जुहार्‌यो।-? सं० [जीवहार] किसी से कुछ सहायता माँगना। किसी का एहसान लेना।

जुहावना—स०=जुहाना।

जुही—स्त्री० [स० यूथी]=जूही (एक पौधा और उसका सुगधित फूल)।

जुहुराण—वि०[स० √हुर्च्छ् (कुटिलता)+सन्, द्वित्वादि, आनच्, सन-लुक् छलोप] कुटिल।
पु० चद्रमा।

जुहुवान—पु०[सं०√हु (देना, लेना)+कानच्] १ अग्नि। आग। २. पेड। वृक्ष। ३. क्रूर या निष्ठुर आदमी।

जुहू—पु०[स०√हु+क्विप्] १ पलाश की लकडी का बना हुआ एक प्रकार का अर्द्ध चंद्राकार यज्ञ-पात्र। २. पूर्व दिशा।

जुहूर--पु० [अ० जहूर] प्रकट या प्रत्यक्ष होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

जुहू-राण—पु०[स० जुहू√रण् (शब्द करना)+अण्] १ अग्नि। २. अध्वर्यु। ३. चद्रमा।

जुहू-वाण—पु०[स० जुहू√वण् (शब्द करना)+अण्] दे० 'जुहूराण'।

जुहूवान् (वत्)—पु०[सं० जुहू+मतुप्] अग्नि।

जुहोता—पु०=होता।

जूं—स्त्री० [स० यूका, पा० ऊका] काले रग का एक बहुत छोटा स्वेदज कीडा जो सिर के बालो मे पड़ जाता है। (लाउस)
क्रि० प्र०--पडना।
पद-जूं की चाल=बहुत ही धीमी चाल।
मुहा०—**(किसी के) कानों पर जूं तक न रेंगना**= किसी के कुछ कहने-सुनने पर भी उसका नाम मात्र को भी परिणाम या फल न होना।
†पु० [स० युज, प्रा० जुआ] जूआ (गाड़ी या हल का)। उदा०--जू सहरी भ्रूह नयण मृग जूता।—प्रिथीराज।

जूंठ†--स्त्री०=जूठन।

जूंठन—स्त्री०=जूठन।

जूंड़िहा—पु०[हिं० झुड] वह बैल जो झुड मे सबके आगे चलता हो।

जूंदन—पु०[देश०] [स्त्री० जूंदनी] बदर। (मदारी)

जूंमुंहां—वि० [हिं० जूं+मुंह] (वह व्यक्ति) जो देखने मे सीधा-सादा होने पर भी वास्तव मे वहुत वडा धूर्त हो।

जू—स्त्री०[स०√जू (गमनादि)+क्विप्] १ सरस्वती। २. वायु-मडल। ३. घोडे, वैल आदि पशुओ के मस्तक पर का टीका।
†अव्य०=जो।
अव्य०=जी।

जूआ—पु०[स० युग] १ गाडी, हल आदि के आगे की वह लकडी जो जोते जानेवाले पशुओ के कधे पर रखी तथा वाँधी जाती है। २. चक्की मे की वह लकडी जिसे पकडकर उसे चलाया जाता है। मूठ।
पु०[स० द्यूत, प्रा० जूअ] १ वह खेल जिसमे हार या जीत होने पर कुछ निश्चित या नियत धन विपक्षी से लिया या उसे दिया जाता है। २. इस प्रकार धन लगाकर खेल खेलने की क्रिया या भाव। ३. कोई ऐसा जोखिम का काम जिसमे हानि और लाभ दोनो अनिश्चित होते हैं।

जूआ-खाना—पु०[हिं० जूआ+फा० खान] वह घर या स्थान जहाँ वैठकर लोग जूआ खेलते हो।

जूआघर—पु०=जूआ-खाना।

जूआ-चोर—पु० [हिं० जूआ+चोर] [भाव० जूआ-चोरी] वहुत वडा ठग या धूर्त्त।

जूक—पु०[यूना० ज्यूकस] तुला राशि।

जूजू—पु०[अनु०] एक कल्पित जीव जिसका नाम लेकर छोटे वच्चों को डराया जाता है। हौआ।

जूझ—स्त्री०[हिं० जूझना] १ जूझने की क्रिया या भाव। २ युद्ध। लडाई।

जूझना—अ०[स० युद्ध वा हिं० जूझ] १ शारीरिक वल लगाते हुए किसी से लडना। उठा-पटक और हाथा-वाही करना। जैसे—योद्धाओ का आपस मे जूझना। २. शारीरिक वल लगाते हुए कोई प्रयत्न करना। जैसे—कुरसी या मेज से जूझना। ३ व्यर्थ ही वहुत अधिक तकरार या हुज्जत करना।

जूट—पु० [स०√जूट् (मिलना)+अच्] १ सिर के उलझे हुए और घने तथा वडे वालो की लट या उन्हे लपेटकर वाँधा हुआ जूडा। जैसे—सिर पर जटा-जूट रखना। २ शिव की जटा।
पु० [अ०] पटसन।

जूटना—स० [हिं० जुटना का स० रूप] जुटाना।

जूटि*—स्त्री० [स० जुड्] १ जोडी। २. मेल। ३ सधि।

जूठ—वि०=जूठा।
स्त्री०=जूठन।

जूठन—स्त्री० [हिं० जूठा] १ वह खाद्य पदार्थ जो किसी ने जूठे छोड़े हो। किसी के खाने-पीने से वची हुई जूठी वस्तु।
मुहा०—(किसी के यहाँ) जूठन गिराना=किसी के यहाँ निमन्त्रित होकर भोजन करना। जैसे—प्रार्थना है कि आज सध्या को मेरे यहाँ आकर जूठन गिराइये।
२. वह पदार्थ जो किसी दूसरे के द्वारा एक या अनेक वार काम मे लाया जा चुका हो और जिसमे किसी प्रकार की नवलता या नवीनता न रह गई हो।

जूठा—वि० [स० जुष्ठ, प्रा० जुट्ठ] १. (खाद्य पदार्थ) जो किसी के खाने-पीने के वाद वच रहा हो। उच्छिष्ट। २ (खाद्य पदार्थ) जिसे किसी ने मुँह लगाकर या उसमे का कुछ अंश खा-पीकर अपवित्र या अशुद्ध कर दिया हो। जैसे—कुत्ते या विल्ली का जूठा भोजन। ३. (पात्र या साधन) जिसके द्वारा अथवा जिसमे कुछ खाया-पीया गया हो। जैसे—जूठा वरतन, जूठा हाथ। ४. (कथन या विषय) जिसका किसी ने पहले उपभोग, प्रयोग या व्यवहार कर लिया हो और इसीलिए जिसमे कोई चमत्कार या नवलता न रह गई हो। जैसे—दूसरो की जूठी उक्ति।
पु०=जूठन।

जूड़—वि० [स० जड] [क्रि० जुड़वाना, जुड़ाना] ठढा। शीतल।
पु०=जूडा।

जूड़न—पु० [देश०] कुछ कालापन लिये खैरे रग का एक प्रकार का वडा पहाड़ी विच्छू।

जूड़ना—अ०=जुटना।

जूड़ा—पु० [सं० जूट] १. सिर के वड़े-वडे वालो को लपेटकर गोलाकार वाँधने या गाँठ लगाने से वननेवाला रूप। २ चोटी। कलगी। ३ मूंज आदि का पूला।

जूड़ी—स्त्री० [हिं० जूड] जाडा देकर आनेवाला ज्वर। विषम ज्वर। शीत ज्वर।

जूण*—स्त्री०=योनि।

जूत—पुं० [हिं० जूता] १ जूता। २ वडा और भारी या मोटा जूता।

जूता—पु० [सं० युक्त, प्रा० जुत्त] १. कंकड, काँटे, कीचड, मिट्टी आदि से पैरो की रक्षा करने के लिए उनमे पहने जानेवाले उपकरण की जोडी जो चमडे, टाट, रवर आदि की वनी होती है। उपानह। जोडा।
विशेष—(क) हमारे देश मे इसकी गिनती वहुत ही उपेक्ष्य और तुच्छ चीजो मे होती है और इससे मारना वहुत ही अपमान-जनक और तिरस्कार सूचक होता है। (ख) मुहावरो आदि मे इसका प्रयोग एक-वचन मे भी होता है और वहुवचन मे भी।
मुहा०—(आपस मे) जूता उछलना=(क) आपस मे जूतो से मार-पीट होना। (ख) आपस मे वहुत ही निकृष्ट प्रकार की कहा-सुनी और थुक्का-फजीहत होना। **(किसी पर) जूता उछालना**=किसी के सवध मे वहुत ही अपमान-जनक वातें कहना। **(किसी का) जूता उठाना**=वहुत ही तुच्छ या हीन वनकर छोटी-छोटी सेवाएँ तक करना। **(किसी पर) जूता उठाना**=जूते से आघात या प्रहार करने पर उद्यत होना। **जूता खाना**=(क) जूतो की मार खाना। (ख) वहुत ही वुरी तरह से अपमानित और तिरस्कृत होना। **जूता घुमाना**=जूता चलाना। (देखें) **(आपस में) जूता चलना**=(क) आपस मे जूतो से मार-पीट होना। (ख) आपस मे वहुत वुरी तरह से कहा-सुनी या थुक्का-फजीहत होना। **जूता चलाना**=छोटे-मोटे चोर का पता लगाने के लिए वह टोना या तान्त्रिक उपचार करना जिसमे जूता चारो तरफ घूमता रहता है, पर चोर का नाम लेने पर ठहर या रुक जाता है। **(किसी पर) जूता चलाना**=किसी को मारने के लिए उस पर जूता फेकना। **(किसी का) जूता चाटना**=स्वार्थवश वहुत ही दीन-हीन वनकर किसी की खुशामद और तुच्छ सेवाओ मे लगे रहना। **(किसी को) जूता देना**=जूते से प्रहार करना। **(किसी पर) जूता पड़ना**=वहुत ही वुरी तरह से अपमानित, तिरस्कृत या लाछित होना। **जूता मारना**=वहुत ही वुरी तरह से अप-

मानित या तिरस्कृत करना। (किसी पर) **जूता पड़ना या बैठना**=बहुत ही अपमान-जनक या तिरस्कार-सूचक व्यवहार होना। (किसी पर) **जूता लगना**=जूता पडना। (देखें ऊपर) (पैर मे) **जूता लगना**=पैर मे जूते की रगड़ के कारण घाव होना (आपस में) **जूतों दाल बँटना**=बहुत ही बुरी तरह से या नीचो की तरह लडाई-झगडा होना। (किसी के साथ) **जूतों से आना**=मारने के लिए तैयार होना। (किसी के साथ) **जूतो से बात करना**=(क) जूतो से मारना। (ख) बहुत ही बुरी तरह से अपमानित और तिरस्कृत करना। अत्यन्त अनादरपूर्ण व्यवहार करना।

२ ऐसा व्यय जो बहुत ही बुरे आघात या प्रहार के रूप में हो। जैसे—इनके फेर मे सौ रुपये का जूता तुम्हे भी लगा (अर्थात् तुम्हे भी व्यर्थ सौ रुपए खर्च करने पडे)।

पद—चाँदी का जूता=घूस आदि के रूप मे धन का ऐसा व्यय जो किसी को दबाकर अपने अनुकूल या वश मे करने के लिए हो। नगद रिश्वत। जैसे—चाँदी का जूता तुम्हे भी ठीक या (सीधा) कर देगा।

जूताखोर—वि॰ [हिं॰ जूता+फा॰ खोर] जो बार-बार अपमानित और तिरस्कृत होने पर भी निंदनीय आचरण या व्यवहार न छोड़ता हो। परम निर्लज्ज और हीन।

जूति—पु॰ [सं॰√जू (वेग)+क्तिन्] वेग। तेजी।

जूतिका—स्त्री॰ [स॰ जूति√कै (प्रकाशित होना)+क—टाप्] एक तरह का कपूर।

जूतिया—पु॰=जीवत्पुत्रिका (व्रत)।

जूती—स्त्री॰ [हिं॰ जूता] १. स्त्रियो के पहनने का जूता जो अपेक्षया कुछ छोटा और हलका होता है।

विशेष—इससे सबद्ध अधिकतर मुहावरे मुख्यत. स्त्रियो मे ही चलते हैं।

मुहा॰—जूतियाँ चटकाना=व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहना या मारे-मारे फिरना। (किसी की) **जूतियाँ सीधी करना**=बहुत ही तुच्छ और हीन बनकर किसी की छोटी-छोटी सेवाएँ तक करना। (किसी को) **जूती की नोक पर मारना**=बहुत ही उपेक्ष्य, तुच्छ या हेय समझना। **जूती के बराबर**=बहुत ही तुच्छ, नगण्य या महत्त्वहीन। (किसी की) **जूती के बराबर न होना** =किसी की तुलना मे बिलकुल तुच्छ या नगण्य होना। (किसी को) **जूती पर रखकर रोटी देना**=किसी को बहुत ही तुच्छ और हीन ठहराते हुए अपने पास रखकर खिलाना-पिलाना।

जूतीकारी—स्त्री॰ [हिं॰ जूती+कार] लगातार जूतों की मार। (परिहास) जैसे—जब तक इसकी जूतीकारी न होगी तब तक यह सीधा न होगा।

जूतीखोर—वि॰=जूताखोर।

जूतीछिपाई—स्त्री॰ [हिं॰ जूती+छिपाना] १. विवाह के समय की एक रसम जिसमे वधू की बहनें और सहेलियाँ वर को तग करने के लिए उसके जूते कही छिपाकर रख देती है। २ उक्त रसम के बाद वह धन या नेग जो जूता चुरानेवाली लडकियो को दिया जाता है।

जूती-पैंजार—स्त्री॰ [हिं॰ जूती+फा॰ पैज़ार] १. आपस मे होनेवाली जूतो की मार-पीट। २. बहुत ही बुरी तरह से या नीच लोगो की तरह होनेवाली कहा-सुनी या लडाई झगडा।

जूथ—पु॰=यूथ।

जूथका—स्त्री॰=यूथिका (जूही)।

जूथिक—स्त्री॰=यूथिका (जूही)।

जून—पुं॰ [स॰ द्युवन्=सूर्य] समय। वेला।

पु॰ [सं॰ जूर्ण] तिनका। तृण।

पु॰ [अं॰] ईसवी सन् का छठा महीना।

†स्त्री॰ [स॰ योनि] योनि। जैसे—कुत्ते-बिल्ली की जून पाना।

जूना—पु॰ [स॰ जूर्ण=एक तृण] १. घास-फूस आदि बटकर बनाई हुई रस्सी जो बोझ आदि बाँधने के काम आती है। २ घास-फूस आदि का पूला।

†वि॰ [सं॰ जीर्ण] १. पुराना। २. बुड्ढा। वृद्ध।

पु॰ [देश॰] १. एक प्रकार का पौधा जो प्रायः बागो मे शोभा के लिए लगाया जाता है। २ उक्त पौधे का पीले रंग का सुन्दर फूल।

जूप†—पुं॰ [सं॰ द्यूत, प्रा॰ जूव] १. जूआ (खेल)। २. विवाह के उपरान्त वर और वधू को खेलाया जानेवाला जूए का एक खेल।

पु॰ [सं॰ यूप] खंभा। स्तम्भ। उदा॰—कित गए वे सब भूप जूप लारे बजमारे।—नददास।

जूमना—अ॰ [अ॰ जमा] इकट्ठा होना। जुटना।

†स॰ इकट्ठा करना। जुटाना।

जूर—पु॰ [हिं॰ जुरना] १. जोड़कर रखी हुई चीजो का समूह। सचय। २ ढेर। राशि।

जूरना†—स॰=जोडना।

स॰ [हिं॰ जूरी] एक पर एक रखकर गड्डियाँ या थाक लगाना।

जूरा†—पु॰ [सं॰ यून] [स्त्री॰ अल्पा॰ जूरी] घास या पत्तो का पूला। जुट्टी।

पुं॰=जूड़ा।

जूर्ण—पु॰ [स॰√जूर् (बढना)+क्त] एक प्रकार का तृण।

जूर्णि—स्त्री॰ [स॰ ज्वर् (रोग)+नि] १. तेजी। वेग। २. देह। शरीर। ३ स्त्रियो का एक रोग।

वि॰ १. वेगवान्। तेज। २. गला हुआ। द्रवित। ३. तपानेवाला। ४ प्रशसा या स्तुति करनेवाला। ५ खुशामदी।

पु॰ १. सूर्य। २ ब्रह्मा। ३. क्रोध। गुस्सा।

जूर्ति—स्त्री॰ [स॰√ज्वर्+क्तिन्] ज्वर।

जूलाई—स्त्री॰ [अ॰] अगरेजी सन् का सातवाँ महीना।

जूव—वि॰ [स॰ युवा] नौजवान। युवक।

स्त्री॰=युवती।

जूषण—पुं॰ [स॰√जूष् (सेवा करना)+ल्युट्—अन] १. धाय का पेड, जो फूलो के लिए लगाया जाता है। २ उक्त पेड का फूल।

जूस—पु॰ [सं॰ जूष्] १. तरकारी, दाल आदि उबालने पर उसका वह पानी या रसा जो प्राय दुर्बल रोगियो को पथ्य के रूप मे दिया जाता है। २. रोगी को दिया जानेवाला पथ्य या बहुत हलका पेय पदार्थ। ३. तरकारियो आदि का झोल या रसा। शोरबा। ४. पके हुए फल का निचोड़ा हुआ रस।

वि॰ [फा॰ जुफ्त, मि॰ स॰ युक्त] जो गिनती या सख्या मे युग्म या सम

ठहरे। ताक या विषम का विपर्याय। जैसे—२, ४, १०, २० सब गिनती के विचार से जूस और ३, ५, ११, १९ ताक हैं।

जूस ताक—पु० [हिं० जूस+फा० ताक] एक प्रकार का जूआ जिसमें, मुट्ठी में कौड़ियाँ भरकर विपक्षी से पूछा जाता है कि इनकी संख्या सम है या विषम।

जूसी—स्त्री० [हिं० जूस] ऊख के रस को उबालकर गाढ़ा करते समय उसमें से निकलने वाली गाढ़ी मल-छट। चोटा।

जूह—पु० [सं० यूथ, प्रा० जूह] १ झुंड। २ समूह।

जूहर—पु०=जौहर।

जूही—स्त्री० [सं० यूथी] १ चमेली की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूलों की गंध भीनी तथा मधुर होती है। २ उक्त पौधे का फूल।

जृंभ—पु० [सं०√जृंभ् (जम्हाई लेना)+घञ्] १. जँभाई। २. आलस्य।

जृंभक—वि० [सं०√जृम्भ्+ण्वुल्-अक] जँभाई लेनेवाला।

पुं० १. रुद्र या शिव का एक गण। २. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। (कहते हैं कि इसके चलने पर विपक्षी योद्धाओं को जँभाइयाँ आने लगती थीं और वे सो जाते थे।)

जृंभण—पु० [सं०√जृम्भ्+ल्युट्-अन] जँभाई लेना।

जृंभमान—वि० [सं०√जृम्भ्+शानच्] १. जो जँभाई ले रहा हो। जँभाइयाँ लेता हुआ। २. चमकता हुआ। प्रकाशमान्।

जृंभा—स्त्री० [सं०√जृभ्+अ-टाप्] १. जँभाई। २. आलस्य। ३ साहित्य में, एक सात्विक अनुभाव जो आलस्य से उत्पन्न माना गया है।

जृंभिका—स्त्री० [सं० जृभा+कन्+टाप्, इत्व] १. जृम्भा। जँभाई। २. आलस्य। ३. एक रोग जिसमें रोगी को प्रायः जँभाई आती रहती हैं और वह धीरे-धीरे शिथिल होता जाता है।

जृंभी (भिन्)—वि० [सं०√जृम्+णिनि] १. जम्हाई लेनेवाला। २. विकसित होनेवाला।

जेंगना*—पुं०=जुगनूं।

जेंगरा—पु० [देश०] वह कटा हुआ डंठल जिसमें से अनाज के दाने निकाल लिए गए हों।

जेंताक—पु० [सं०] एक प्रक्रिया जिसके द्वारा रोगी को शरीर में इसलिए गरमाहट पहुँचाई जाती है कि उसे पसीना आये और उसके साथ ही रोग के कीटाणु आदि भी निकल जायें।

जेंना*—स०=जीमना (भोजन करना)।

जेंवन†—पुं० [हिं० जेंवना] १. जीमने अर्थात् भोजन करने की क्रिया या भाव। २. खाने के लिए बनी या परोसी हुई सामग्री। भोज्य पदार्थ।

जेंवना—स० [सं० जेमन] भोजन करना। जीमना।

पु०=जेंवन (भोज्य पदार्थ)।

जेंवनार—स्त्री०=ज्योनार।

जेंवाना—स० [हिं० जेंवना] अच्छी तरह से भोजन कराना। जिमाना।

जे—सर्व० [सं० ये] १. =जो। २. ='जो' का बहु० रूप।

अव्य० जो। यदि। (भोजपुरी)।

जेइ—सर्व० १. =जो। २. =जिसने।

जेउँ*—क्रि० वि० [सं० यः+इव] ज्यों। जिस प्रकार। उदा०—आपु करै सब भेस मुहमद चादर ओट जेउँ।—जायसी।

जेऊ†—सर्व०=जो।

जेकर—सर्व०[हिं० जे=जो+कर=का] जिसका।

जेकरा—सर्व०=जेकर (जिसका)।

जेज*—पु० [देश०] देर। विलम्ब। उदा०—हजरत गढ़ कीजे हलो, करो जेज किण कज्ज।—बाँकीदास।

जेट—स्त्री० [सं० यूथ] १ ढेर। समूह। २. एक पर एक करके रखी हुई एक तरह की चीजों की तही। थाक। जैसे—कसोरों या हँड़ियों की जेट; पूरियों या रोटियों की जेट।

†स्त्री० [?] झाड़। गोंद।

जेटी—स्त्री० [अ०] समुद्र तट पर बना हुआ वह स्थान जहाँ पर से जहाजों पर माल लादा तथा उतारा जाता है। गोदी।

जेठंस—पु० [हिं० जेठ (ज्येष्ठ)+अंस (अंश)] १ पैतृक संपत्ति में होनेवाला बड़े भाई का अंश। २. उक्त अंश प्राप्त करने का बड़े भाई का अधिकार।

जेठंसी—स्त्री०=जेठंस।

जेठ—वि० [सं० ज्येष्ठ, प्रा०-जिट्ठ, गु० प० जेठ, सिं० जेठु; का० ज्ञेठु; प० ब० और मरा० जेठ] १. बड़ा। २. मुख्य। ३ उत्तम।

पु० * [स्त्री० जेठानी] १. पति का बड़ा भाई। २. बैसाख और आषाढ़ के बीच का महीना।

जेठरा—वि०=जेठा।

जेठरैत—पु० [हिं० जेठा+अ० रैत] १. गाँव में सब से बड़ा या सयाना आदमी। २. गाँव का मुखिया।

वि० जेठा। बड़ा।

जेठवा—वि० [हिं० जेठ] १. जेठ—संबंधी। २ जेठ में होनेवाला।

पुं० एक प्रकार की बढ़िया कपास जो जेठ मास में तैयार होती है। झुलवा।

जेठा—वि० [सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] [भाव० जेठाई] १ अवस्था या वय में औरों से बड़ा। जैसे—जेठा लड़का। २ अपेक्षया अच्छा या बढ़िया। ३. सब के अन्त में और सब से बढ़कर आने या होनेवाला। जैसे—कपड़े की रँगाई में जेठा रंग।

जेठाई—स्त्री० [हिं० जेठा] १. जेठ होने की अवस्था या भाव। जेठापन। २ बड़प्पन। महत्त्व।

जेठानी—स्त्री० [हिं० जेठ] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से, उसके पति के बड़े भाई की स्त्री।

जेठी—वि० [हिं० जेठ+ई (प्रत्य०)] १ जेठ-संबंधी। जेठ मास का। २. जेठ मास में होनेवाला। जैसे—जेठी धान। ३ हिं० 'जेठा' का स्त्री० रूप।

स्त्री० १. जेठ मास का शेषांग जिसमें अगली फसल के लिए जमीन जोती जाती है। २. जेठ में होनेवाली एक प्रकार की कपास। ३. जेठ में होनेवाला एक प्रकार का धान।

जेठी-मधु—स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलेठी।

जेठुआ—वि० [हिं० जेठ] १ =जेठा। २ दे० 'जेठी'।

जेठौत (ा)†—पु० [स० ज्येष्ठ+पुत्र] [स्त्री० जेठौती] जेठ अर्थात् पति के वडे भाई का पुत्र।

जेणि—सर्व० [स० येन] जिसने। उदा०—आरभ मैं कियो जेणि उपायी।—प्रिथीराज।

जेतवार†— वि०=जैतवार (जीतनेवाला)।

जेतव्य—वि० [स०√जि (जीतना)+तव्यत्] १ जीते जाने के योग्य। २ जो जीता जा सके।

जेता (तृ)—वि० [स०√जि+तृच्] जिसे जय या विजय प्राप्त हुई हो। जीतनेवाला। विजयी।

पु० विष्णु।

†वि०, क्रि० वि० [स्त्री० जेती]=जितना।

जेतार—वि० [स० जित्वर] जीतनेवाला। जेता।

जेतिक—क्रि० वि० [हिं० जितना] जितना।

जेन-फेन—क्रि० वि०=येन-केन (जैसे-तैसे)।

जेना† —स०=जीमना।

†वि०=जितना।

जेन्यावसु—पु० [स०√जि या√जन् (उत्पत्ति)+णिच्+डेन्य,+वसु, व० स०] १ इन्द्र। २. अग्नि।

जेब—पु० [फा०] कमीज, कुरते, कोट आदि मे प्राय अन्दर की ओर लगी हुई वह थैली जिसमे छोटी-मोटी चीजे रखी जाती हैं। खीसा।

स्त्री० [फा० जेब] १ शोभा। फबन। २ प्रोत्साहन। वढावा। (क्व०)

क्रि० प्र०—देना।—पाना।

†अव्य०=जिमि।

जेबकट†—पु०=जेबकतरा।

जेबकतरा—पु० [हिं० जेब+कतरना] वह व्यक्ति जो दूसरो के जेब काट कर उनमे से रुपये-पैसे निकाल लेता हो।

जेब खरच—पु० [हिं०] वह धन जो निजी या वैयक्तिक (पारिवारिक से भिन्न) आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए व्यय किया जाता हो, अथवा किसी को मिलता हो।

जेबघड़ी—स्त्री० [फा० जेब+हिं० घडी] जेब मे रखी जानेवाली चिपटी गोल घडी।

जेबदार—वि० [फा०] शोभा से युक्त। सुन्दर।

जेबरा† —पु०=जेबरा (पशु)।

जेबा—पु० [?] जिरह वख्तर। कवच। उदा०—जेबा खोलि राग सो मढे। लेजिम घालि इराकिन्ह चढे।—जायसी।

† पु०=जेब।

वि० [फा० जेबा] शोभाजनक।

जेबी—वि० [फा०] १ जो साधारणत जेब मे रखा जाता हो या रहता हो। जैसे—जेबी घडी, जेबी रूमाल। २ जो इतना छोटा हो कि जेब मे रखा जा सके। जैसे—किताब का जेबी सस्करण।

जेम—अव्य०=जिमि (जैसे)।

जेमन—पु० [स०√जिम् (भक्षण)+ल्युट्—अन] १ भोजन करना। जीमना। २ ज्योनार।

जेय—वि० [स०√जि (जीतना)+यत्] जीते जाने के योग्य। जो जीता जा सके।

वि० [स० जय] जीतनेवाला। जेता। उदा०—अदेव देव जेय भीत रक्षमान लेखिए।—केशव।

जेर—वि० [फा० जेर] [भाव० जेरवारी] १ नीचे आया या लाया हुआ। २ पराजित। परास्त। ३ अधिकार या वश मे किया हुआ। ४. जिसे बहुत तग या परेशान किया गया हो।

क्रि० वि० नीचे। तले।

पु० [?] सुन्दर वन मे होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष।

स्त्री० दे० 'आँवल' (खेडी)।

जेरना*—स० [हिं० जेर] १ पराजित करना। २ अधिकार या वश मे करना। ३ तग या परेशान करना।

जेरपाई—स्त्री० [फा०] १ स्त्रियो की जूती। २ जूता।

जेरबंद—पु० [फा०] घोडे के साज की मोहरी मे लगा हुआ तस्मा जिसका दूसरा सिरा तग मे बाँधा जाता है।

जेर-बार—वि० [फा० जेरबार] [भाव० जेरबारी] १ विपत्ति, सकट आदि से दबा हुआ। २ व्यय आदि के भार से दबा हुआ।

जेरी—स्त्री० [?] १ चरवाहो के हाथ मे रहनेवाला डडा या लाठी। २ खेती-बारी का एक उपकरण।

स्त्री० [फा० जेर=नीचे] तग या परेशान होने की अवस्था या भाव।

जेल—पु० [अ०] वह घिरा हुआ स्थान जिसमे राज्य द्वारा दडित अपराधी कुछ समय तक दड भोगने के लिए बद करके रखे जाते हैं।

क्रि० प्र० —काटना।—भोगना।

†स्त्री० [फा० जेर] परेशानी।

जेलखाना—पु० [अ० जेल+फा० खान] वह इमारत जिसमे अपराधी दड भोगने के लिए बद करके रखे जाते है। कारागार।

जेलर—पु० [अ०] जेल का अधिकारी या प्रबधक।

जेलाटीन—स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बढिया गधहीन और पारदर्शक सरेस जो हलके पीले रग का होता है और जिसका प्रयोग औषधो, छाया-चित्रो और रासायनिक प्रक्रियाओ मे होता है।

जेली—स्त्री० [हिं० जेरी] घास या भूसा इकट्ठा करने का एक उपकरण। पाँचा।

जेवड़ी— स्त्री०=जेवरी।

जेवना†— स०=जीमना।

जेवनार—स्त्री० [हिं० जेवना] बहुत से लोगो का प्राय किसी विशिष्ट अवसर पर एक साथ बैठकर खाना। प्रीति-भोज। दावत।

जेवर—पु० [फा० ज़ेवर] आभूषण। गहना।

पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

†स्त्री०=जेवरी।

जेवरा—पु०=ज्योरा।

पु० [हिं० जेवरी] मोटा रस्सा।

जेवरात—पु० [फा० 'ज़ेवर' का बहु० रूप] बहुत से आभूषण।

जेवरी—स्त्री० [स० जीवा] रस्सी।

जेवाँ—पु० [हिं० जेवना] भोजन। उदा०—बिनु ससि सूरहि भाव न जेवाँ।—जायसी।

जेष्ठ—पु० [स० ज्येष्ठ] जेठ या ज्येष्ठ मास।

वि० अवस्था या वय मे बडा। जेठा।

जोखिमी—वि० [हिं० जोखिम] जिसमे कोई जोखिम हो या हो सकती हो। जिसमे बहुत कुछ अहित, संकट या हानि की संभावना हो। जोखिम का। जैसे—जोखिमी काम, जोखिमी माल।

जोखुआ—पुं० [हिं० जोखना+उआ (प्रत्य०)] माल जोखने या तौलने-वाला। बया।

वि० जोखा या तौला हुआ। जैसे—जोखुआ अनाज।

जोखुवा—पुं०=जोखुआ।

जोखों—स्त्री०=जोखिम।

जोगंधर—पुं० [सं० योगंधर] शत्रु के अस्त्रों से आत्म-रक्षा करने की एक प्राचीन युक्ति।

जोग—पुं० [सं० योग] १ एक प्रकार के गीत जो कन्या और वर दोनों पक्षों मे विवाह से पहले गाये जाते हैं, जिनमे प्रायः वैवाहिक विधियों का वर्णन होता है। २ जादू। टोना। (पूरब)

मुहा०—जोग करना=जादू या टोना करना।

३. दे० 'योग'। ४. दे० 'जोड़'।

वि०=योग्य।

अव्य० पुरानी चाल की चिट्ठी-पत्रियों मे, के लिए। को। जैसे—पत्री भाई किशनचन्द्र जोग लिखा काशी से—।

जोगड़ा—पुं० [हिं० जोगी+ड़ा (प्रत्य०)] १. जोगी (उपेक्षा-सूचक)। २ बना हुआ जोगी। नकली या बनावटी योगी।

जोगता†—स्त्री०=योग्यता।

जोगन†—स्त्री०=जोगिन।

जोगनिया—स्त्री०=जोगिनिया।

जोगनैर—पुं० [सं० योगिनीपुर] दिल्ली। उदा०—जोगनैर जोतिग कहै, प्रभुमु होइ प्रथुराव।—चंदबरदाई।

जोगमाया†—स्त्री०=योगमाया।

जोगवना—स० [सं० योग+अवना (प्रत्य०)] १. योगियों का योगाभ्यास करना। २ उक्त के आधार पर कोई कठिन काम परिश्रम तथा यत्न-पूर्वक करना। ३ यत्नपूर्वक कोई चीज सम्हाल कर रखना। ४ एकत्र या संचित करना। ५ किसी का आदर या सम्मान करने के लिए उसकी अच्छी-बुरी सभी तरह की बाते मानना, सहना और सुनना। ६ पूरा करना। ७ परखना। ८ प्रतीक्षा करना। रास्ता देखना।

जोगवाट†—पुं०=जोगौटा।

जोगसाधन—पुं० [सं० योगसाधन] १ तपस्या। २ परिश्रमपूर्वक किया जानेवाला कोई काम।

जोगा—वि० [सं० योग्य] किसी काम के लिए उपयुक्त, योग्य या लायक। यौ० के अन्त मे। (स्त्रियाँ) जैसे—मरने-जोगा।

पुं० [देश०] अफीम छानने पर उसमे से निकलनेवाली मैल। खूदड।

जोगाड़†—पुं०=जुगाड़।

जोगानल—स्त्री० [सं० योगानल] वह अग्नि, जो योगबल से उत्पन्न की गई हो।

जोगिंद—पुं० १.=योगीन्द्र। २ महादेव। (डि०)

जोगि†—स्त्री०=योगिन।

जोगिणी—स्त्री०=योगिनी।

जोगिन—स्त्री० [सं० योगिनी] १. योग साधनेवाली विरक्त स्त्री। २. जोगियों या योगियों की तरह आचार-विचार, गेरुए वस्त्र, पहनने और नियम, व्रत आदि का पालन करते हुए संयमपूर्वक रहनेवाली स्त्री, विशेषतः किसी प्रकार के आराधन या प्रेम में युक्त उक्त प्रकार की स्त्री। ३. एक प्रकार की रण देवी। ४ पिशाचिनी। ५. एक प्रकार का झाड़ीदार पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं। ६. दे० 'योगिनी'।

जोगिनिया—स्त्री० [हिं० जोगिन] जोगिन।

पुं० १. एक प्रकार का बढ़िया अगहनी धान जिसका चावल कई वर्ष तक ठहरता है। २. एक प्रकार का आम।

जोगिनी—स्त्री०=जोगिन।

जोगिया—वि० [हिं० जोगी+इया (प्रत्य०)] १. जोगी संबंधी। जोगी का। जैसे—जोगिया भेस। २. योगियों के वस्त्रों के रंग का। मटमैला-पन लिये लाल। गेरुआ। गैरिक। जैसे—जोगिया कपड़ा।

पुं० १. गेरू के रंग की तरह का एक प्रकार का लाल रंग जो कुछ मटमैला-पन लिये हुए रहता है। २. जोगीड़ा। ३ जोगी। ४ संपूर्ण जाति का एक राग जो प्रातःकाल गाया जाता है।

जोगींद्र—पुं०=योगींद्र।

जोगी—पुं० [सं० योगी] १. नाथ-पंथी जंगम शैव साधु। २. इस वर्ग के कुछ गृहस्थ जो प्रायः सारंगी पर भजन गाकर भीख माँगते हैं। ३. संपूर्ण जाति का एक राग जो प्रातःकाल गाया जाता है। जोगिया राग। ४. रहस्य संप्रदाय में, मन। ५ दे० 'योगी'।

जोगीड़ा—पुं० [हिं० जोगी+ड़ा (प्रत्य०)] १. होली के दिनों में गाया जानेवाला एक प्रकार का गँवारू गाना। २ उक्त गीत गाने-बजानेवाला व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का दल।

जोगीश्वर†—पुं०=योगेश्वर।

जोगेश्वर—पुं०=योगेश्वर।

जोगौटा†—वि०=जोगटा।

जोगौटा—पुं० [सं० योगपट्ट] १ जोगी। २. योगियों की वह चादर जिसे वे योग-साधना करते समय सिर से पैर तक ओढ़ते हैं। ३. जोगियों की झोली।

जोग्य†—वि० [भाव० जोग्यता] योग्य।

जोजन†—पुं०=योजन।

जोट—पुं० [सं० योटक] १. जोड़ा। जोड़ी। २. संगी। साथी। ३ झुंड। ४. समूह। उदा०—बाहर जुन्हाई जगी जोतिन की जोट ही।—देव।

वि० बराबरी का।

जोटा—पुं० [सं० योटक] १. दो चीजों का जोड़ा। २ संगी। साथी। ३ पशुओं की पीठ पर लादा जानेवाला दोहरा थैला या बोरा। गोन। ४. दे० 'जोड़ा'।

वि० [स्त्री० जोटी] १. बराबरी का। २. साथ रहने या होनेवाला।

जोटिंग—पुं० [सं० जोट√दृग् (प्रकाशित करना)+अच्, पृषो०] शंकर। शिव।

जोटी†—स्त्री०=जोड़ी।

जोड़—पुं० [सं० जुट] १. जुड़ने या जुड़े हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ दो वस्तुओं का आपस में इस प्रकार जुड़ा, मिला या सटा होना कि वे या तो एक हो जायँ या देखने में एक जान पड़े। ३. वह संधि

या स्थान जहाँ दो या अधिक चीजे आपस मे मिली या सटी हुई हों। जैसे—हड्डियो का जोड, पहुँचे और बाँह का जोड़, तख्तों या पत्थरों मे का जोड़।
क्रि० प्र०—उखड़ना।—बैठाना।—लगाना।
४. वह अग या अश जो किसी दूसरी चीज के साथ जोडा या उसमे लगाया गया हो। ५ दो या अधिक चीजों को आपस मे जोडने या मिलाने पर उनके सधि स्थान मे दिखाई देनेवाला चिह्न या लक्षण। जैसे—कुरसी के हत्थे मे का जोड साफ दिखाई पडता है।
पद—जोड-तोड। (दे०)
६ ऐसा मिलान या सयोग जो उपयुक्त, तुल्य अथवा सुदर जान पडे। जैसे—उन दोनो पहलवानो का जोड तो अच्छा है। ७ उक्त के आधार पर होनेवाली बराबरी। गुण, धर्म आदि के विचार से होनेवाली समानता। जैसे—उस लडके के साथ तुम्हारा क्या जोड है।
क्रि० प्र०—बैठाना।—मिलाना।
८ एक ही तरह की अथवा साथ-साथ काम मे आनेवाली दो या अधिक चीजे। जैसे—एक जोड कपडा (अर्थात् कुरता, टोपी और धोती अथवा कमीज या कोट, टोपी और पाजामा) भी साथ रख लो। ९ दे० 'जोडा'। १० गणित मे, दो या दो से अधिक अको, सख्याओ आदि के जुडे हुए होने या जोड़ने की क्रिया, अवस्था या भाव। ११ इस प्रकार जोडने से प्राप्त होनेवाली सख्या। †१२ धन आदि का सग्रह।

जोड़ती—स्त्री० [हिं० जोड+ती (प्रत्य०)] जोड (गणित का)।

जोड़-तोड़—पु० [हिं०] १ कभी जोडने और कभी तोडने की क्रिया या भाव। २ कौशल या धूर्त्तता से की जानेवाली ऐसी युक्तियाँ जिनसे कही कोई क्रम या परम्परा जुड़ती और कही टूटती हो। कार्य-साधन के लिए चालाकी और दाँव-पेंच से मिली हुई कार्रवाई।
क्रि० प्र०—बैठाना।—लगाना।

जोड़न†—स्त्री० [हिं० जोडना] १. जोडने की क्रिया या भाव। २ वह दही या और कोई खट्टा पदार्थ जो दूध मे उसे जमाकर दही बनाने के लिए मिलाया जाता है। जामन।

जोड़ना—स० [स० √जुड्, हिं० जोड+ना (प्रत्य०)] १. दो या अधिक चीजो को किसी क्रिया या युक्ति से आपस मे इस प्रकार साथ बैठाना, लगाना या सटाना कि वे या तो एक हो जायँ या एक के समान काम दे और जान पड़ें। अच्छी तरह दृढतापूर्वक किसी के साथ मिलाना। जैसे—लकडी के तख्ते और पाये जोड कर कुरसी या मेज बनाना, कपडे के टुकडे जोड कर कुरता या चादर बनाना, लेई से फटे हुए कागज या पुस्तक के पन्ने जोडना। २ किसी चीज मे का टूटा हुआ अग या अश उसमे फिर से इस प्रकार जडना, बैठाना या लगाना कि वह चीज फिर से पूरी हो जाय और पहले की तरह काम देने लगे। जैसे—पैर या हाथ की टूटी हुई हड्डी जोडना। ३. किसी चीज के भिन्न-भिन्न या सयोजक अगो को इस प्रकार क्रम से यथा-स्थान बैठाना, रखना या लगाना कि वह चीज पूरी तैयार होकर अपना काम करने लगे। जैसे—घडी के पुरजे या छापे के अक्षर जोडना, दीवार बनाने के लिए ईंटें, पत्थर आदि (मसाले से) जोडना। ४. पहले से जो कुछ रहा हो अथवा मूलत जो कुछ हो, उसमे अपनी ओर से कुछ और मिलाना या लगाना। वृद्धि करना। बढाना। जैसे—उसने वहाँ का हाल कहते समय अपनी तरफ से भी कई बातें जोड़ दी थी। ५. एक ही तरह की बहुत-सी चीजें इकट्ठी करके एक केन्द्र मे लाना या एक स्थान पर रखना। एकत्र या सगृहीत करना। जैसे—धन-सपत्ति जोडना, सग्रहालय के लिए चित्र, पुस्तकें, मूर्तियाँ आदि जोडना। उदा०—कौडी-कौडी माया जोडी, जोड़ जमी मे धरता है। ६ गणित मे दो या अधिक सख्याओं का योग-फल प्रस्तुत करना। मीजान लगाना। ७ लिखना-पढना सीखने अथवा साहित्यिक रचना का अभ्यास करने के लिए अक्षर, पद, वाक्य आदि उपयुक्त क्रम से बैठाना, रखना या लिखना। जैसे—अक्षर जोड कर शब्द बनाना; शब्द जोडकर कविता का चरण या पक्ति बनाना। ८ किसी के साथ किसी प्रकार का सबध स्थापित करना। जैसे—किसी के साथ नाता या मित्रता जोडना। ९ अग्नि, दीपक आदि के सबध मे, जलनेवाली चीज के साथ अग्नि का सयोग कराना। जैसे—रसोई बनाने के लिए आग जोडना, प्रकाश करने के लिए दीआ जोडना। १० गाडी, हल आदि के सबध मे, घोडे या बैल लाकर आगे बाँधना। जोतना। (क्व०) जैसे—तुरत रथ जोडा गया और वे चल पड़े।

जोड़ला†—वि०=जुडवाँ।

जोड़वाँ†—वि०=जुडवाँ।

जोड़वाई—स्त्री० [हिं० जोडवाना] जोडवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़वाना—स० [हिं० जोडना का प्रे०] जोडने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ जोडने मे प्रवृत्त करना।

जोड़ा—पु० [हिं० जोडना] [स्त्री० जोडी] १ प्राय एक साथ रहने, साथ-साथ काम आने या साथ रहने पर उपयुक्त जान पडनेवाले दो पदार्थ या व्यक्ति। जोडी। युग्म। जैसे—धोतियों का जोडा, हाथ मे पहनने के कडो या पहुँचियो का जोडा।
क्रि० प्र०—मिलाना।—लगाना।
२. एक साथ पहने जानेवाले दो या अधिक कपडे। जोड।
पद—जोड़ा-जामा। (दे०)
३. एक ही प्रकार के जीवों, पशु-पक्षियो आदि के नर और मादा का युग्म। जैसे—वर और कन्या का जोडा, शेर और शेरनी का जोडा, बिच्छुओं और साँपों का जोडा।
मुहा०—जोड़ा खाना=पशु-पक्षियो का मैथुन या सभोग करना।
४. दोनों पैरों मे पहनने के दोनों जूते। ५ वह जो किसी दूसरे की बराबरी या समता का हो। जोड। ६ दे० 'जोड'।

जोड़ाई—स्त्री० [हिं० जोडना+आई (प्रत्य०)] १ जोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दीवार बनाने के समय क्रम से ईंटे रखने या लगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़ा-जामा—पु० [हिं० जोडा+फा० जाम] १ विवाह के समय वर के पहनने के सब कपडे जो प्राय उसकी ससुराल से आते है। २ पहनने के वे कपडे जो राजाओं आदि से लोगो को पुरस्कार-स्वरूप मिलते थे। खिलअत।

जोड़ासदेस—पु० [देश०] छेने की एक बँगला मिठाई।

जोड़ी—स्त्री० [हिं० जोडा] १ एक ही आकार-प्रकार, गुण और धर्मवाली दो चीजे। जैसे—मुगदरो की जोडी। २ सग-साथ रहनेवाले दो जीवों विशेषत एक ही जाति के एक नर और एक मादा (जीवों) की सामूहिक सज्ञा। जैसे—बैलो की जोडी, भैसो की जोडी। ३. वह गाडी जिसे दो घोडे या दो बैल खीचते है। जैसे—पहले के रईस जोडी पर निकला

करते थे। ४ एक साथ रहनेवाले दो मुगदर जो कसरत करने के समय दोनों हाथों मे पकड कर घुमाये जाते हैं।

क्रि० प्र०—भाँजना।

५. एक मे बँधी हुई कटोरियों के तरह की वे दोनो चीजें जो गाने-बजाने के समय ताल देने के काम आती हैं। मजीरा।

क्रि० प्र०—बजाना।

६ दे० 'जोड'।

जोड़ी की बैठक स्त्री० [हिं० जोडी=मुगदर+बैठक=कसरत] वह बैठकें (कसरत) जो मुदग्रों की जोडी पर हाथ टेक कर की जाती है।

जोड़ीदार—पु० [हिं० जोडी+फा० दार] वह जो किसी के साथ उसकी बराबरी का होकर रहता हो।

वि० मुकाबले का।

जोड़ीवाल—पु० [हिं० जोडी+वाला (प्रत्य०)] १ गाने-बजानेवालो के साथ जोडी या मजीरा बजानेवाला। २ दे० 'जोडीदार'।

जोड़ुआ—पु० [हिं० जोडा+उआ (प्रत्य०)] पैर मे पहनने का चाँदी का एक प्रकार का सिकडीदार गहना।

†वि०—जुड़वाँ।

जोड़ू—स्त्री०=जोरू।

जोत—स्त्री० [हिं० जोतना] १ जोतने की क्रिया या भाव। २. वह विशिष्ट अधिकार जो किसी असामी को कोई जमीन जोतने-बोने पर उसके संबंध मे प्राप्त होता है।

क्रि० प्र०—लगना।

३ उतनी भूमि जितनी एक असामी को जोतने-बोने आदि के लिए मिली हो अथवा उसके अधिकार मे हो। ४ चमडे आदि की वे लबी पट्टियाँ या रस्सियाँ जो घोडो, बैलों आदि के पार्श्वों मे उनकी गरदन से एक्के, गाडी, हल तक इस लिए बँधी रहती है कि उन पशुओं के चलने से वह चीज भी चलने लगे जिसमे वे बँधे रहते हैं। ५ वह रस्सी जिससे तराजू की डडी से बँधे हुए उसके पल्ले लटकते रहते हैं।

†स्त्री० [स० ज्योति] १ ज्योति। २. शरीर मे रहनेवाली आत्मा जो परमात्मा की ज्योति के रूप मे मानी जाती है।

मुहा०—जोत मे जोत समाना=आत्मा का शरीर मे से निकलकर परमात्मा के साथ मिल जाना। उदा०—इक मुरछा गत सी आय गई और जोत मे जोत समाय गई।—नजीर।

३ देवी-देवता आदि के सामने जलाया जानेवाला घी का दीआ। ४ चित्रकला मे, चेहरे के चारों ओर दिखाया जानेवाला प्रभा-मडल।

जोतखी—पु०=ज्योतिषी।

जोतगी—पु०=ज्योतिषी।

जोतदार—पु० [हिं० जोत+दार] वह असामी जो दूसरे की भूमि पर खेती-बारी करता हो।

जोतना—स० [स० योजन या युक्त, प्रा० जुत्त+ना] १. कोई चीज घुमाने या चलाने के लिए उसके आगे कोई पशु लाकर बाँधना। जैसे—एक्के, गाडी आदि मे घोडा (या घोडे) अथवा कोल्हू, मोट, रथ आदि मे बैल जोतना।

इस क्रिया का प्रयोग स्वय उन यानो के संबंध मे भी होता है आगे पशु बाँधे जाते हैं (जैसे—एक्का, गाडी या रथ जोतना) और उन पशुओं के संबंध मे भी होता है जो उनके आगे बाँधे जाते हैं (जैसे—घोडा या बैल जोतना)।

२ उक्त के आधार पर किसी को जबरदस्ती या विवश करके किसी काम मे लगाना। जैसे—शिक्षक ने लडको को भी उस काम मे जोत दिया। ३ खेत को बोये जाने के योग्य बनाने के लिए उसमे हल चलाना। ४ एक दम से, ऊपर से या कहीं से कोई चीज या बात लाकर उसी का क्रम चलाने लगना। जैसे—तुम अपनी ही जोतते रहोगे या दूसरे किसी को भी कुछ करने (या कहने) दोगे।

जोतनी—स्त्री० [हिं० जोतना] जुए मे लगी हुई वह रस्सी जो जोते जाने-वाले पशु के गले मे बाँधी जाती है।

जोतसी†—पु० =ज्योतिषी।

जोतांत—स्त्री० [हिं० जोतना] खेत की मिट्टी की ऊपरी तह।

जोता—पुं० [हिं० जोतना] १. जुआँठे मे बँधी हुई वह रस्सी जिसमे बैलो की गरदन फँसाई जाती है। २ करघे मे दोनो ओर बँधी हुई वह रस्सियाँ जो ताने के दोनो सिरो पर सूतों को यथास्थान रखने के लिए बँधी रहती हैं। ३ वह बडी धरन या शहतीर जो खभो या उनकी पक्तियो पर इसलिए रखते हैं कि उसके ऊपर और इमारत उठाई जा सके।

†वि० जोतनेवाला (यौ० के अत मे)। जैसे—हल-जोता=हल जोतने-वाला।

†पु०=किसान (खेतिहर)।

जोताई—स्त्री० [हिं० जोतना+आई (प्रत्य०)] जोते जाने या जोतने की अवस्था, क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोतात†—स्त्री०=जोतांत।

जोताना—स० [हिं० जोतना का प्रे० रूप] जोतने का काम किसी दूसरे से कराना।

जोति—स्त्री० [स० ज्योति] १ किसी देवी-देवता के सामने जलाया जाने-वाला दीया। जोत।

क्रि० प्र०—जलाना।

२ दे० 'ज्योति'।

†स्त्री० [हिं० जोतना] ऐसी भूमि जो जोती-बोई जाती हो या जोती-बोई जा सकती हो।

जोतिक†—पु०=ज्योतिषी।

जोतिख†—पु०=ज्योतिष।

जोतिखी†—पु०=ज्योतिषी।

जोतिलिंग†—पु०=ज्योतिर्लिंग।

जोतिवंत*—वि० [स० ज्योतिवान्] १ ज्योति अर्थात् प्रकाश से युक्त। प्रकाशमान्। २. चमकदार।

जोतिष†—पु०=ज्योतिष।

जोतिषी†—पु०=ज्योतिषी।

जोतिस†—पु०=ज्योतिष।

जोतिहा—पु० [हिं० जोतना+हा (प्रत्य०)] १ खेत जोतनेवाला मजदूर। २ कृषक। खेतिहर।

जोती—स्त्री० [हिं० जोतना या जोत] १ घोडे, बैल आदि की लगाम। रास। २. चक्की मे की वह रस्सी जो उसके बीचवाली कीली और

हत्थे मे वँधी रहती है। ३ वह रस्सी जो खेत सीचने की दौरी मे वँधी रहती है। ४. वह रस्सी जिससे तराजू के पल्ले वँधे रहते है।
†स्त्री०=ज्योति।

जोत्स्ना†—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

जोध—पु०=योद्धा।

जोधन—स्त्री०[स० योग+धन] वह रस्सी जिससे जूए के ऊपर और नीचे-वाले भाग आपस मे वँधे रहते है।

जोधा—पु०=योद्धा।

जोधार†—पु०[हिं० जोधा] योद्धा।

जोन†—स्त्री०=योनि।

जोनरी—स्त्री०=जोन्हरी (ज्वार)।

जोना†—स० [हिं० जोवना] १ देखना। २ प्रतीक्षा करना। वाट देखना।

जोनि†—स्त्री०=योनि।

जोन्ह—स्त्री०[स० ज्योत्स्ना] चद्रमा की चाँदनी। चद्रिका। ज्योत्स्ना।

जोन्हरी—स्त्री०[?]=जोधरी (ज्वार)।

जोन्हाई—स्त्री०[स० ज्योत्स्ना]=जोन्ह।

जोन्हार—पु०=जोधरी (ज्वार)।

जोन्हि—स्त्री०=जुन्हाई (चाँदनी)।

जोप—पु०=यूप (यज्ञ का)।

जोपै—अव्य० [हिं०जो+पर] १ अगर। यदि। २ यद्यपि।

जोफ—पु०[अ०]१ वृद्धावस्था। बुढापा। २ शारीरिक दुर्वलता। कमजोरी। जैसे--जिगर, दिमाग या मेदे का जोफ।

जोवन—पु०[स०]१ युवा होने की अवस्था या भाव। यौवन। २ युवा-वस्था मे होनेवाली तेज, लावण्य और सौन्दर्य मिश्रित शारीरिक गठन। जैसे--पेड या पौवे मे जोवन आना।
मुहा०— जोवन पर आना=पूर्ण यौवनावस्था प्राप्त करना।
३ युवा स्त्रियो मे स्पष्ट दिखाई देनेवाला आकर्पक और मोहक रूप या रौनक। सौन्दर्य।
क्रि० प्र०--आना।--उतरना।--चढना।--ढलना।
मुहा०—(किसी का) जोवन लूटना=किसी स्त्री के साथ भोग-विलास करना। (वाजारू)
४ स्त्रियो के कुच। स्तन। ५ एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

जोवना—स०=जोवना।
†पु०=जोवन।

जोम—पु० [अ० जोम] १ उमग। उत्साह। २. आवेश। जोश। ३ शक्ति आदि का अभिमान। घमड।
क्रि० प्र०—दिखाना।
४ तीक्ष्णता। तीव्रता।
†पु०[?]१ झुड। २ समूह।

जोय—स्त्री०[स० जाया]१ जोरू। पत्नी। २ औरत। स्त्री।
†सर्व०१ =जो। २=जिस।

जोयण—पु०=योजन।

जोयना—स०[स० ज्योति]आग, दीया आदि जलाना। उदा०--दीपक जोय कहा करूँ सजनि पिय परदेस रहावे।—मीराँ।
स०=जोवना (देखना)।

जोयसी†—पु० =ज्योतिषी।

जोर—पु०[फा० जोर][वि० जोरदार, जोरावर]१ शरीर का वल या शक्ति। ताकत।
मुहा०—(किसी चीज पर) जोर डालना या देना=शरीर का भार आश्रित या स्थिर करना।
२ शारीरिक वल या शक्ति के फल-स्वरूप दिखाई देनेवाला उत्साह, तेज, दृढता, सामर्थ्य आदि। ओज।
मुहा०—किसी काम के लिए जोर करना, बाँधना, मारना या लगाना= विशेष शक्ति लगाकर प्रयत्न करना। जैसे--तुम लाख जोर मारो पर होगा कुछ नहीं।
३ आर्थिक, मानसिक, शारीरिक या और किसी प्रकार की योग्यता या सामर्थ्य। जैसे—धन का जोर, विद्या का जोर आदि। ४ कोई ऐसी क्रियात्मक प्रवल शक्ति जो अपना गुण, प्रभाव या फल स्पष्ट दिखाती हो। जैसे--दवा, नशे या बीमारी का जोर।
मुहा०—जोर करना या बाँधना=उग्र, उत्कट या विकट रूप धारण करना। जैसे--शहर मे आजकल हैजे ने जोर बाँधा है।
५ अति, वेग आदि के रूप मे दिखाई देनेवाली क्रिया की प्रवलता। जैसे—नदी मे पानी के वहाव का जोर, आँधी या तूफान के समय हवा का जोर।
पद—जोरो का=वहुत उग्र, प्रवल या विकट। जैसे--जोरो की वर्षा।
६ किसी कृति मे दिखाई देनेवाली रचना-कौशल, विशिष्ट दक्षता या योग्यता अथवा आकर्पक, उत्साहवर्द्धक या मनोरजक तत्त्व। ओज। दम। जैसे—कलम, कविता या कहानी का जोर। ७ अनुभूति, आग्रह, तर्क आदि मे दिखाई देनेवाला वल या शक्ति। जैसे—किसी वात पर दिया जानेवाला जोर, खून या मुहव्वत का जोर। ८ उत्कर्प, प्रवलता, वृद्धि आदि की ओर होनेवाली प्रवृत्ति।
मुहा०—जोर मे आना या जोरो पर होना=जल्दी-जल्दी वढना या तेज होना। जैसे—(क) अब यह पेड जोरो मे आया हे, अगले साल खूव फलेगा। (ख) आज-कल शहरो मे चोरियाँ और देहातो मे डाके खूव जोरो पर है।
९ ऐसा आधार या साधन जिससे किसी को कुछ विशेष वल या साहस प्राप्त हो। सहारा। जैसे—उनकी यह सारी उछल-कूद राजकीय अधिकारियो के जोर पर है। १० अधिकार। वश। जैसे--आप पर हमारा कोई जोर तो है नही। ११ कसरत। व्यायाम। जैसे—अखाडे मे लडके जोर करने जाते है। १२ किसी अग से अधिक अथवा अनुचित रूप से काम लिए जाने के फलस्वरूप होनेवाला हानिकारक परिणाम या प्रभाव। जैसे--आँखो या आँतो पर जोर पडना। १३ शतरज के खेल मे, वह स्थिति जिसमे किसी मोहरे को मुफ्त मे या व्यर्थ मारे जाने से रोकने के लिए कोई और मोहरे भी किसी तरफ लगा रहता है। जैसे--घोडे पर हाथी का जोर है, हमारा घोडा मारोगे तो तुम्हारा वजीर मरेगा।
मुहा०—जोर पहुँचाना=उक्त के आधार पर ऐसा काम करना जिससे किसी पर दवाव या प्रभाव पडे। जैसे--अफसर या हाकिम पर जोर पहुँचाना।
क्रि० वि० अपने कार्य,फल आदि के विचार से असाधारण तेज या वहुत

अधिक। काफी। खूब। जैसे—चना जोर गरम। उदा०—तौ मैं बहुत कठोर जोर इन चने चवाये।—दीनदयालगिरि।

*पु०=जोड (जोडी या युग्म)।

जोरई—स्त्री०[हिं० जोट]१. एक ही मे बँधे हुए दो बाँस जिसके सिरे पर मोटी रस्सी का फदा लगा रहता है। २ हरे रग का एक प्रकार का कीडा।

जोरदार—वि० [फा०] १ (व्यक्ति) जिसमे जोर अर्थात् बल हो। २ (बात) जो तत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली हो।

जोरन†—स्त्री०=जोडन (देखें)।

जोरना—स०१=जोडना। २ =जोतना।

जोर शोर—पु०[फा०]किसी काम को पूरा करने के लिए लगाया जानेवाला जोर और दिखाया जानेवाला उत्साह तथा प्रयास।

जोरा†—पु०=जोडा।

जोराजोर†—पु०=जोर शोर।

जोरा जोरी—स्त्री०[फा० जोर]किसी से हठात् कुछ लेने या छीन लेने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। जबरदस्ती।

क्रि० वि० बलपूर्वक। बलात्।

जोरावर—वि० [फा०] १ बलवान। २ जबरदस्त। शक्तिशाली।

जोरावरी—स्त्री० [फा०] १ जोरावर या बलवान होने की अवस्था, गुण या भाव। २ जबरदस्ती। धीगा-धीगी।

जोरिल्ला—पु० [देश०] एक प्रकार का गध बिलाव।

जोरी†—स्त्री० १=जोरावरी। २=जोडी।

जोरू—स्त्री० [हिं० जोडा] पत्नी। भार्या। स्त्री।

पद—**जोरू का गुलाम**=ऐसा व्यक्ति जो पत्नी के वश मे रहकर उसके कहे अनुसार चलता हो। स्त्री-भगत। **जोरू-जाँता**—पत्नी, घर-गृहस्थी और बाल-बच्चे।

जोल†—पु० [?] झुड। समूह।

†पु० =जोर। (क्व०)

जोलाह=†—पु०=जुलाहा।

जोलाहल—स्त्री०=ज्वाला।

जोलाहा†—पु०=जुलाहा।

जोली—वि० [हिं० जोडी] १. वह जिसके साथ बहुत मेल-जोल हो। सगी। साथी। २ बराबरी का। समवयस्क। ३ प्राय. साथ रहनेवाला। जैसे—हम-जोली।

स्त्री० [हिं० झोली] १ जाली या किरमिच का बना हुआ एक प्रकार का बिस्तर जिसके दोनो सिरो पर अदवान की तरह कई रस्सियाँ होती है और जो वृक्षो आदि मे लटकाकर काम मे लाया जाता है। २ वह रस्सी जो जहाजो के पाल चढाने-उतारने के काम मे आती है। (लश०) ३ रस्सो के सिरो को बाँधने के लिए उनमे लगाई जानेवाली एक प्रकार की गाँठ।

जोलो*—पु०[?]अतर। फरक।

जोवण*—पु०=यौवन।

जोवना—स०[स० जुषण=सेवन]१. ध्यानपूर्वक देखना। २ प्रतीक्षा करना। जोहना। ३. तलाश करना। ढूँढना।

जोवारी—स्त्री०[देश०] मैना पक्षी की एक जाति।

जोश—पु०[फा०]१. आँच या गरमी के कारण द्रव-पदार्थ मे आनेवाला उफान। उबाल।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।

२ वह मनोवेग जिसके कारण मनुष्य अकर्मण्यता, आलस्य या तटस्थता छोडकर किसी कार्य मे आवेश, उत्साह या तत्परतापूर्वक अग्रसर या प्रवृत्त होता है।

क्रि० प्र०—आना।—दिलाना।

पद—**खून का जोश**=प्रेम का वह वेग जो अपने कुल, परिवार या वश के किसी मनुष्य के प्रति हो। जैसे—वह उसके खून का जोश ही था जिससे वह अपने लडके (या भाई) को बचाने के लिए जलते हुए मकान मे घुस गया था। **जोश-खरोश**=बहुत उत्सुकतापूर्ण आवेश या मनोवेग।

जोशन—पु०[फा०] १. बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। २ कवच। जिरहबक्तर। (क्व०)

जोशाँदा—पु०[फा०]१ ओषधियो, जडी-बूटियो आदि को उबालकर बनाया हुआ काढा। २ एक मे मिली हुई वे सब ओषधियाँ जिनका काढा बनाया जाता है। जैसे—जोशाँदे की पुडिया।

जोशी—पु०=जोषी।

जोशीला—वि०[फा० जोश+ईला (प्रत्य०)]१. (व्यक्ति) जो जोश मे हो अथवा जिसे बहुत जल्दी जोश आ जाता हो। २ जोश मे आकर अथवा दूसरो को जोश मे लाने के लिए कहा या किया हुआ। जैसे—जोशीला भाषण।

जोष—पु०[स०√जुष् (प्रेम करना)+घञ्] १ प्रीति। प्रेम। २ आराम। सुख। ३ सेवा।

*स्त्री०[स० योषा] १ पत्नी। भार्या। २ नारी। स्त्री।

*स्त्री०=जोख।

जोषक—पु०[स०√जुष्+ण्वुल्-अक] सेवक।

जोषण—पु०[स०√जुष्+ल्युट्-अन] १ प्रेम। प्रीति। २ सेवा।

जोषा—स्त्री०[स० जोष+टाप्] नारी। स्त्री।

जोषिका—स्त्री०[स० जोषक+टाप्, इत्व] १. स्त्री। २ कलियो का गुच्छा।

जोषिता—स्त्री०[स०=योषिता, पृषो० य को ज] औरत। नारी। स्त्री।

जोषी—पु० [स० ज्योतिषी] १ गुजराती, महाराष्ट्र आदि ब्राह्मणो की एक जाति का अल्ल। २ दे० 'ज्योतिषी'।

जोस†—पु०=जोश।

जोसीड़ा—पु०[स० ज्योतिषी] पुरोहित। उदा०—जोसिडा ने लाख बधाई रे।—मीराँ।

जोह—स्त्री०[हिं० जोहना] १. जोहने की क्रिया या भाव। २ खोज। तलाश। ३ प्रतीक्षा। ४ कृपापूर्ण दृष्टि। कृपा-दृष्टि।

जोहड़—पु०[देश०] कच्चा तालाब।

जोहन—स्त्री०[हिं० जोहना] जोहने की क्रिया या भाव। दे० 'जोह'।

जोहना—स० [स० जुषण=सेवन] १ अच्छी तरह ध्यानपूर्वक देखना। २. कुछ ढूँढने या पाने के लिए इधर-उधर देखना। तलाश करना। ढूँढ़ना। ३. प्रतीक्षा करना। रास्ता देखना।

जोहर†—पु०=जोहड।
पु०=जौहर।
जोहार†—स्त्री०[सं० जुषण=सेवन] मुख्यत क्षत्रियो मे प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन या नमस्कार।
†पु०=जौहर।
जोहारना—अ० [हिं०] प्रणाम या नमस्कार करना। अभिवादन करना।
जौं—अव्य०[स० यदि] जो। यदि।
†अव्य०=ज्यों।
जौंकना—स०[अनु० झाँव-झाँव] १ रोष जतलाते हुए ऊँचे स्वर मे बोलना। २ एकाएक बहुत जोर मे चिल्ला या बोल उठना।
जौंची—स्त्री०[देश०] एक रोग जिसमे पौधो की बालें (जैसे—गेहूँ, चने आदि की बालें) काली पड कर मुरझा जाती है।
जौंट—स्त्री०=जेवडी (रस्सी)।
जौंडा†—पु०=जौन।
जौंरा—पु०=जौरा।
जौंरा भौंरा—पु०[हिं० भुइँहरा] १ किले या राजमहल का वह तहखाना जिसमे प्राचीन काल मे राजे, नवाब आदि सुरक्षा की दृष्टि से सोना-चाँदी, हीरे-मोती रखते थे।२. एक साथ जन्म लेनेवाले दो बालक। ३ प्राय या बराबर साथ रहनेवाले दो व्यक्ति।
जौंरे—क्रि० वि०[फा० जवार] निकट। समीप।
जौ—पु०[स० यव] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके दानो या बीजो को पीसकर बनाया हुआ चूर्ण रोटी बनाने के काम आता है।
विशेष—यह पौधा गेहूँ के पौधे से बहुत-कुछ मिलता-जुलता होता है।
२ उक्त पौधे का दाना या बीज जो गेहूँ के दाने की अपेक्षा कुछ बडा तथा लबोतरा होता है। ३ ६ राई की एक तौल। ४. एक पौधा जिसकी लचीली टहनियों से टोकरे आदि बनते है। मध्य एशिया के प्राचीन खडहरो मे इसकी बनी हुई टट्टियाँ भी पाई गई हैं।
*अव्य० १ =जो (अगर या यदि)। २=जब।
सर्व०=जो।
जौक—पु०[तु०जूक=सेना] १ सेना। फौज। २. गोल। झुड। ३ जत्था मडली। ४ पक्ति। श्रेणी।
पु०[अ० जौक] किसी वस्तु या वस्तु से प्राप्त होनेवाला आनद या सुख।
पद-जौक शौक=आनद, उत्साह और प्रसन्नता।
जौ केराई—स्त्री०[हिं० जौ+केराव] केराव या मटर के साथ मिला हुआ जौ।
जौख†—पु०=जौक।
जौगढ़वा—पु०[जौगढ=कोई प्रदेश] अगहन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।
जौचनी—स्त्री० [हिं० जौ+चना] एक मे मिले हुए जौ तथा चने के दाने या बीज।
जौजा—स्त्री० [अ० जौज] जोरू। पत्नी।
जौजियत—स्त्री०[फा० जौजियत] जौजा अर्थात् जोरू या पत्नी होने की अवस्था या भाव।
जौतुक—पु०=यौतुक (दहेज)।
जौधिक—पु० [स० यौधिक] तलवार चलाने का एक ढग, प्रकार या हाथ।
जौन—सर्व०[स० य हिं० जो] जो।
वि०=जो।
पु०=यवन।
स्त्री०=योनि।
जौनाल—स्त्री० [स० यव+नाल] १. जौ के पौधे का डठल और बाल। २ वह भूमि जिसमे जौ बोया जाता हो। ३ ऐसी भूमि जिसमे रबी की कोई सफल होती हो।
जौन्ह†—स्त्री०=जोन्ह(चाँदनी)।
जौपै—अव्य०[हिं० जौ+पै=पर] अगर। यदि।
जौबति†—स्त्री०=युवती।
जौबन†—पु०=जोबन।
जौम†—पु०=जोम (ताकत)।
जौर—पु० [फा०] अत्याचार। जुल्म।
जौरा—पु०[हिं० जूरा] वह अनाज जो गाँवो मे नाई, बारी आदि पौनियो को उनके काम के बदले मे प्रति वर्ष दिया जाता है।
†पु०[हिं० जेवडी] बडा रस्सा।
†पु०=यमराज।
जौलाई† स्त्री०=जुलाई (महीना)।
जौलाय—वि० [?] बारह। (दलाल)
जौशन—पु०=जोशन।
जौहड़†—पु० [पहलवी आवे-जोहर=पवित्र-जल] १ वह गड्ढा जिसमे बरसाती जल जमा होता हो। २. छोटा ताल।
जौहर—पु०[फा० गौहर का अरबी रूप] १ कोई बहुमूल्य पत्थर। जैसे—नीलम, पन्ना, हीरा आदि। २ किसी बात, वस्तु या व्यक्ति मे निहित वे तात्त्विक और मौलिक बातें जो उसके गुणो, दोषो, विशेषताओं, त्रुटियो आदि की परिचायक या सूचक होती हैं। जैसे—आदमी का जौहर विकट परिस्थितियो मे, बहादुरो का जौहर लडाई के मैदान मे अथवा सोने का जौहर उसे तपाने पर खुलते हैं।
क्रि० प्र०—खुलना।
३ उक्त के आधार पर लोहे के धारदार औजारो, हथियारो आदि के सबध मे विशिष्ट प्रकार के वे चिह्न या धारियाँ जो लोहे की उत्तमता की सूचक होती है। जैसे—तलवार या कटार का जौहर। ४ उत्तमता। श्रेष्ठता।
पु०[स० जीव-हर] १. मध्य-युग मे राजपूत स्त्रियो की एक प्रथा जिसमे गढ या नगर के शत्रुओं से घिर जाने और अपने पक्ष की हार निश्चित होने पर वे एक साथ इस उद्देश्य से जलती चिता मे कूद पडती थी कि विजयी शत्रु हमारा अपमान तथा हम पर अत्याचार न करने पावे। २ उक्त उद्देश्य से बनाई हुई बहुत बडी चिता।
क्रि० प्र०—सँजोना।—सजाना।
३ आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए की जानेवाली आत्म-हत्या।
पु०=जौहड।
जौहरी—पु०[फा०] १ हीरा, लाल आदि बहुमूल्य रत्न परखने और बेचनेवाला व्यापारी। २ किसी काम, चीज या बात के गुण-दोष

आदि अच्छी तरह जानने और समझने वाला व्यक्ति। पारखी। जैसे—शब्दों का जौहरी।

ज्ञ—ज और ञ के योग से बना हुआ एक अक्षर जिसका उच्चारण हिंदी में ग्य, मराठी में द्न्य' और गुजराती में 'ज्न' होता है।
पु०[सं०√ज्ञा (जाना)+क] १ ज्ञानी पुरुष। २ ब्रह्म। ३ बुध नामक ग्रह। ४ मगल ग्रह। ५ ज्ञान। बोध।
वि० जाननेवाला। ज्ञाता। (शब्दों के अन्त मे) जैसे—गणितज्ञ, दैवज्ञ, शास्त्रज्ञ आदि।

ज्ञपित—वि० [स०√ज्ञा+णिच्+क्त, पुक्] १. जाना हुआ। ज्ञात। २ दूसरों को जतलाया या बतलाया हुआ। ४ तृप्त या सन्तुष्ट किया हुआ ५. मारा हुआ। हत। ६ (शस्त्र) चोखा या तेज किया हुआ। ७ प्रशमित या स्तुत।

ज्ञप्ति—स्त्री०[स०√ज्ञप् (जानना)+क्तिन्] १ कोई बात जानने या जनाने की क्रिया या भाव। २ जानी या जनाई हुई बात। ३. बुद्धि ४ मार डालना। मारण। ५ तुष्टि या तृप्ति। ६ प्रशसा। स्तुति। ७ जलाना।

ज्ञ-वार—पु०[स० ष० त०] बुधवार।

ज्ञा—स्त्री०[स० ज्ञ+टाप्] ज्ञान। जानकारी।

ज्ञात—भू० कृ० [स०√ज्ञा+क्त] जिसके विषय मे सब बाते मालूम हों। विदित। जाना हुआ।
पु०=ज्ञान।

ज्ञात-नंदन—पु०[स० ज्ञात√नद् (प्रसन्न होना)+णिच्+ल्यु—अन] जैनों के तीर्थंकर महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञात-यौवना—स्त्री०[ब० स०] साहित्य मे वह मुग्धा नायिका जिसे अपने तारुण्य या यौवन के आगमन का स्पष्ट रूप से आभास या भान होने लगा हो।

ज्ञातव्य—वि०[स०√ज्ञा+तव्यत्] १ जानने के योग्य (कोई महत्त्व पूर्ण बात)। २ जो जाना जा सके। बोध गम्य। ३. जो दूसरों को जतलाया जाने को हो।

ज्ञाता (तृ)—वि०[स०√ज्ञा+तृच्] [स्त्री० ज्ञात्री] जिससे किसी बात, विषय आदि का पूरा ज्ञान हो। जानकार।

ज्ञाति—पुं०[स०√ज्ञा+क्तिच्] एक ही गोत्र या वश मे उत्पन्न मनुष्य। गोती। भाई-बधु। बाधव।
स्त्री०=जाति।

ज्ञाति-पुत्र—पु० [ष० त०] १. गोत्रज का पुत्र। २ जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञातृत्व—पु०[सं० ज्ञातृ+त्व] अभिज्ञता। जानकारी।

ज्ञान—पु०[स०√ज्ञा+ल्युट्—अन] १ चेतन अवस्थाओं में इद्रियों आदि के द्वारा बाहरी वस्तुओं, विषयों आदि का मन को होनेवाला परिचय या बोध। मन मे होनेवाली वह धारणा या भावना जो चीजों या बातों को देखने, समझने, सुनने आदि से होती है।
विशेष—न्यायदर्शन मे प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इन चारों प्रमाणों को ज्ञान का मूल कारण या स्रोत माना गया है।
२ लोक-व्यवहार मे, शरीर की वह चेतना-शक्ति जिसके द्वारा जीवों, प्राणियों आदि को अपनी आवश्यकताओं और स्थितियों के अनुसार अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ और सब बातों की जानकारी या परिचय होता है। कुछ जानने, समझने आदि की योग्यता, वृत्ति या शक्ति। जैसे—(क) वनस्पतियों आदि मे भी इतना ज्ञान होता है कि वे गरमी, सरदी और दिन-रात का अनुभव करते हैं। (ख) उसकी चेष्टाओं से पता चलता था कि मरते समय तक उसका ज्ञान बना रहा।
विशेष—प्राणि-विज्ञान के अनुसार, हमारे सारे शरीर मे स्नायविक ततुओं का जो जाल फैला हुआ है, उसी की कुछ क्रियाओं से हमें सब बातों और विषयों का ज्ञान होता है। चेतना की दृष्टि से उक्त ततु-जाल का केन्द्र हमारे मस्तिष्क मे है, जहाँ सारा ज्ञान पहुँचकर एकत्र होता और हमसे सब प्रकार के काम कराता है।
३. किसी बात या विषय के सबध मे होनेवाली वह तथ्यपूर्ण, वास्तविक और सगत जानकारी या परिचय जो अध्ययन, अनुभव, निरीक्षण, प्रयोग आदि के द्वारा प्राप्त होता है। जैसे—किसी कला, भाषा या विद्या का ज्ञान। ४. आध्यात्मिक और धार्मिक क्षेत्रों मे, आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक सबध, वास्तविक स्वरूप आदि और भौतिक जगत ससार की अनित्यता, नश्वरता आदि से सबध की होनेवाली अनुभूति, जानकारी या परिचय जो आवागमन के बधन से छुडाकर मुक्ति या मोक्ष देनेवाला माना गया है। तत्त्व-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान।
मुहा०—ज्ञान छाँटना या बघारना=अनावश्यक रूप से, बहुत बढ-बढकर और केवल अपनी जानकारी या पाडित्य दिखाने के उद्देश्य से ज्ञान सबधी तरह-तरह की बातें कहना।

ज्ञान-कांड—पु०[ष० त०] वेद के तीन काडों या विभागों मे से एक जिसमे जीव और ब्रह्म के पारस्परिक सबधों, स्वरूपों आदि पर विचार किया गया है।

ज्ञान-कृत—वि० [तृ० त०] (कार्य, व्यापार या पाप) जो ज्ञान रहते अर्थात् जान-बूझकर तथा सचेत अवस्था मे किया गया हो।

ज्ञान-गम्य—वि०[तृ० त०] (विषय) जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हो।

ज्ञान-गोचर—वि०[ष० त०] जो ज्ञान के द्वारा जाना जा सके।

ज्ञान-चक्षु (स्)—पु० [ष० त०] १ अतर्दृष्टि। २ बहुत बडा विद्वान्।

ज्ञानतः (तस्)—क्रि० वि० [स० ज्ञान+तस्] ज्ञान रहने या होने की दशा मे। जान-बूझकर।

ज्ञानद—वि० [स० ज्ञान√दा (देना)+क] [स्त्री० ज्ञानदा] ज्ञान कराने या देनेवाला।
पु० गुरु।

ज्ञान-दा—स्त्री०[स० ज्ञानद+टाप्] सरस्वती।

ज्ञान-दाता (तृ)—वि० [ष० त०] ज्ञान कराने या देनेवाला।
पु० गुरु।

ज्ञान-दात्री—स्त्री०[ष० त०] सरस्वती।

ज्ञान-पति—पुं०[ष० त०] १. परमेश्वर। २. गुरु।

ज्ञान-पिपासु—वि०[ष० त०] जो ज्ञान अर्थात् किसी विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहता हो। ज्ञान का जिज्ञासु।

ज्ञान-प्रभ—पु०[ब० स०] एक तथागत का नाम।

ज्ञानमय—वि०[स० ज्ञान+मयट्] ज्ञान से युक्त। ज्ञान से भरा हुआ। पु० ईश्वर।

ज्ञान-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] राम की पूजा की एक मुद्रा। (तंत्रसार)

ज्ञान-मूढ़—पु०[मध्य०स०] वह जो ज्ञानी होने पर भी मूढ़ों या मूर्खों का-सा आचरण या व्यवहार करता हो।

ज्ञान-यज्ञ—पु०[तृ० त०] आत्मा और परमात्मा के अ-भेद का पूरा ज्ञान प्राप्त करके अपने आपको पूर्ण रूप से ईश्वर मे लीन कर देने की क्रिया या भाव।

ज्ञान-योग—पु०[कर्म०स०] वह योग या साधन जिसमे परमात्मा या ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य मोक्ष का अधिकारी बनता है।

ज्ञानवान् (वत्)—वि०[स० ज्ञान+मतुप्, वत्व] १ जिसे बहुत-सी बातों, विषयो आदि की जानकारी हो। २ योग्य तथा समझदार। ३. आत्मा और परमात्मा के अभेद का ज्ञाता।

ज्ञान-साधन—पु०[प० त०] १ इद्रियाँ जिनकी सहायता से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। २. किसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न।

ज्ञानांजन—पु०[ज्ञान-अजन, कर्म० स०] ब्रह्मज्ञान।

ज्ञानाकर—पु०[ज्ञान-आकर, प०त०] बुद्ध।

ज्ञानाकार—पु०[ज्ञान-आकार, प० त०] गौतम बुद्ध।

ज्ञानालय—पु०[ज्ञान-आलय, प० त०] वह स्थान जहाँ ज्ञान सबधी चर्चा या विवेचन हो और ज्ञान का लोक मे प्रचार होता हो। (इन्स्टिट्यूट)

ज्ञानावरण—पु०[ज्ञान-आवरण, प० त०] १ वह चीज या परदा जो ज्ञान की प्राप्ति मे बाधक हो। २ वह पाप जिसका उदय होने पर ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

ज्ञानावरणीयकर्म (र्मन्)—पु० [ज्ञान-आवरणीय, प० त०, ज्ञानावरणीय कर्मन्, कर्म० स०]=ज्ञानावरण।

ज्ञानाश्रयी—वि० [स०] १ ज्ञान पर आश्रित। २ ज्ञान-संबधी।

ज्ञानाश्रयी शाखा—स्त्री०[स०] १ आध्यात्म एव धार्मिक साधना आदि मे एक प्रवृत्ति जिसमे भक्त भगवान् को ज्ञान द्वारा प्राप्त करने के सिद्धात का समर्थक होता है। २. हिन्दी साहित्य के इतिहास मे भक्तिकाल की एक धारा।

ज्ञानासन—पु०[ज्ञान-आसन, मध्य० स०] योग की सिद्धि का एक आसन।

ज्ञानी (निन्)—वि० [स० ज्ञान+इनि] १ जिसे ज्ञान या जानकारी हो। २ योग्य तथा समझदार।
पु० १ वह जिसे आत्म और ब्रह्म के स्वरूप का ठीक-ठीक ज्ञान हो चुका हो। ब्रह्मज्ञानी। २ चार प्रकार के भक्तों मे से एक जो सब बातों का ज्ञान रखकर भक्ति करता और इसी लिए सब मे श्रेष्ठ माना जाता है।

ज्ञानेंद्रिय—स्त्री० [ज्ञान-इद्रिय, मध्य० स०] आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ये पाँच इद्रियाँ जिनसे भौतिक विषयो का ज्ञान होता है।

ज्ञानोदय—पु०[ज्ञान-उदय, प० त०] किसी प्रकार के ज्ञान का (मन मे) होनेवाला उदय।

ज्ञापक—वि० [स०√ज्ञा+णिच्+ण्वुल्–अक] १ ज्ञान प्राप्त करानेवाला। २ जतलाने, बतलाने या परिचय देनेवाला। व्यजक या सूचक (तत्त्व या बात)।

ज्ञापन—पु०[स०√ज्ञा+णिच्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० ज्ञापित, वि० ज्ञाप्य] कोई बात किसी को जतलाने, बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव।

ज्ञापित—भू० कृ० [सं०√ज्ञा+णिच्+क्त] जिसकी जानकारी किसी को कराई जा चुकी हो। जतलाया या बतलाया हुआ।

ज्ञाप्य—वि० [सं०√ज्ञा+णिच्+यत्] जिसका ज्ञान प्राप्त किया या कराया जा सकता हो।

ज्ञेय—वि०[स०√ज्ञा+यत्] १ जिसे जानना आवश्यक या कर्त्तव्य हो। जानने योग्य। २. जो जाना जा सके।

ज्या—स्त्री०[सं०√ज्या (जीर्ण होना)+अङ–टाप्] १ धनुप की डोरी। २ वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक अथवा किसी वृत्त के व्यास तक गई हो। ३ किसी वृत्त का व्यास। ४. माता। माँ। ५ पृथ्वी।

ज्यादती—स्त्री०[फा०] १ ज्यादा अर्थात् अधिक होने की अवस्था या भाव। अधिकता। २. अतिरिक्त होने की अवस्था या भाव। अतिरेक। ३ आवश्यक से अधिक अथवा अनावश्यक रूप से किया हुआ कडा या कठोर व्यवहार। अत्याचार।

ज्यादा—वि०[फा० जियाद] मान या मात्रा मे आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। अधिक । बहुत। जैसे-किसी को ज्यादा बात नहीं कहनी चाहिए।

ज्यान*—पु०[फा० जियान] घाटा। नुकसान। हानि।
पु०=ज्ञान।

ज्याना*—स०[हिं० जिलाना] १ जीवित करना। प्राण डालना। जिलाना। २ जीवित रखना। ३ (पशु-पक्षी आदि) पालना-पोसना।
उदा०—सुक सारिका जानकी ज्याए।—तुलसी।

ज्याफत—स्त्री०[अ० जियाफत] १ दावत। भोज। २ आतिथ्य-सत्कार।

ज्या-मिति—स्त्री०[ष० स०] गणित का वह विभाग जिसमे पिंडो की नाप-जोख, रेखा, कोण, तल आदि का विचार किया जाता है। रेखा-गणित। (ज्यामेट्री)

ज्यारना—स०=ज्याना (जिलाना)।

ज्यारा*—वि०[हिं० ज्याना] १ जीवन-दान देनेवाला। २ जिलाने अर्थात् पालने-पोसनेवाला।

ज्यारी—स्त्री०[हिं० जी=जीवट] १ कडे जी या दिलवाला। २ साहसी। हिम्मती।

ज्यावना†—स०=जिलाना।

ज्युति—स्त्री०=ज्योति।

ज्यूं—अव्य०=ज्यों।

ज्येष्ठ—वि० [स०वृद्ध+इष्ठन्, ज्य आदेश] [स्त्री० ज्येष्ठा] १ अवस्था मे जो अपने वर्ग के अन्य जीवो से सब से बडा हो। जैसे—ज्येष्ठ पुत्र। २ अधिक अवस्थावाला। वृद्ध। बुड्ढा। ३ जो किसी से पद, मर्यादा आदि की दृष्टि से ऊँचा या बढकर हो।
पु० १ ग्रीष्म ऋतु का वह महीना जो वैसाख के बाद और असाढ़ से पहले पडता है। २ फलित ज्योतिष मे वह वर्ष जिसमे बृहस्पति का उदय ज्येष्ठा नक्षत्र मे हो। ३ एक प्रकार का सामगान।

४ परमात्मा। परमेश्वर। ५ जीवनी-शक्ति। प्राण।

ज्येष्ठक—पु०[सं० ज्येष्ठ+कन्] किसी नगर का प्रधान अधिकारी। (प्राचीन भारत)

ज्येष्ठता—स्त्री०[स० ज्येष्ठ+तल्-टाप्] १ ज्येष्ठ होने की अवस्था या भाव। २ बडप्पन। श्रेष्ठता।

ज्येष्ठ-बला—स्त्री०[मध्य० स०] सहदेई नाम की वनस्पति।

ज्येष्ठ-साम (मन्)—पु०[स० कर्म० स०] एक प्रकार का साम। आरण्यक साम।

ज्येष्ठसामग—पु०[स० ज्येष्ठसामन्√गै (गाना)+क] आरण्यक साम पढनेवाला।

ज्येष्ठाम्बु—पु०[स० ज्येष्ठ-अंबु, कर्म० स०] वह पानी जिसमे चावल धोये गये हो। चावलो की धोवन।

ज्येष्ठा—स्त्री०[स० ज्येष्ठ+टाप्] १ २७ नक्षत्रो मे से अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारो से मिलकर बना और कुडल के आकार का है। २. किसी व्यक्ति की कई पत्नियो मे से वह जो उसे सब से अधिक प्रिय हो। ३. हाथ की उँगलियो मे बीच की उँगली जो और सब उँगलियो मे बडी होती है। ४ गगा नदी। ५ पुराणानुसार अ-लक्ष्मी जो समुद्र मथने के समय लक्ष्मी से पहले निकली थी। ६. छिपकली।

ज्येष्ठाश्रम—पु० [स० ज्येष्ठ-आश्रम, कर्म० स०] गृहस्थाश्रम जो शेप सब आश्रमो का पालक होने के कारण उनमे बडा माना गया है।

ज्येष्ठाश्रमी (मिन्)—पु० [स० कर्म० स०] गृहस्थाश्रम मे रहनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ।

ज्येष्ठी—स्त्री० [स० ज्येष्ठ+ङीष्] छिपकली।

ज्यों—अव्य० [म० य.+इव] १ जिस तरह। जिस प्रकार। जैसे—उदा०—ज्यो मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी।—तुलसी।

पद—ज्यों का त्यो=(क) जैसा पहले हो, या रहा है, वैसा ही या उसी रूप मे। जैसे—वह ज्यो का त्यो नकल करके ले आया। (ख) जिसके पूर्व रूप के सबध मे कुछ भी काम न हुआ हो। जैसे—सारा ग्रथ ज्यो का त्यो पडा है। (ग) जिसमे कुछ भी अन्तर, परिवर्त्तन या फेर-बदल न हो या न किया जाय। जैसे—वह समूचा पेड ज्यो का त्यो उखाड लाओ। **ज्यो ज्यों**=जिस क्रम से। जिस मात्रा या मान मे। जितना। (वाक्य-रचना मे इसका नित्य सबधी त्यो त्यो होता है) जैसे—ज्यो ज्यो वह सयाना होता गया, त्यो त्यो वह स्वय अपने सब काम देखने और करने लगा। उदा०—ज्यो ज्यो भीजे कामरी त्यो त्यो गरुई होय। **ज्यो त्यो**=(क) कठिनाइयो और झझटो के रहते हुए भी किसी न किसी प्रकार। सहज मे या अच्छी तरह नही। जैसे—ज्यो त्यो ब्याह के कामो से छुट्टी पाई। (ख) जी न चाहते हुए भी। अनिच्छा या अरुचिपूर्वक। जैसे—ज्यो त्यो उनसे भी मेल हो गया। (ग) जिस प्रकार हो सके। जैसे—ज्यो त्यो सबको बुलवाओ। **ज्यो ही**=ठीक उसी क्षण या समय, जब कोई पहला काम पूरा हुआ हो। कोई काम होते ही ठीक उसी वक्त (इस अर्थ मे 'त्यो ही' इसका नित्य-सबधी होता है।) जैसे—ज्यो ही मैं घर से निकला, त्यो ही पानी बरसने लगा, (अथवा, आपका सँदेसा मिला)।

२. किसी के ढग, प्रकार या रूप से। किसी के अनुकरण पर। उदा०—नीम तैरने समय मगर ज्यों डुबकी साधे आते।—मैथलीशरण।

३ ठीक किसी दूसरे की तरह। किसी के तुल्य या समान। उदा०—प्रिय न था विदुर ज्यो जिसे अनय।—मैथलीशरण।

ज्योतिःशास्त्र—पु० [ज्योतिस्-शास्त्र, प०त०] ज्योतिष। (देखें)

ज्योतिःशिखा—स्त्री० [ज्योतिस्-शिखा, प० त०] १ जलती हुई लपट या लौ। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके चरण के पहले दल मे ३२ लघु और दूसरे दल मे १६ गुरु वर्ण होते है।

ज्योतिःसर—वि० [ज्योतिस्√सृ (गति)+ट, उप० स०] ज्योति मे चलने या सरकनेवाला। उदा०—पहले का-सा उन्नत विशाल ज्योति सर।—निराला।

ज्योति (तिस्)—स्त्री० [स०√द्युत् (प्रकाश)+इसुन्, ज आदेश] १ वह चमक और प्रकाश जो किसी चीज के जलने से उत्पन्न होता है। जैसे—अग्नि, दीपक या बिजली की ज्योति।

मुहा०—ज्योति जगाना या जलाना=किसी देवी देवता के पूजन के समय घी का दीया जलाना। २. कही से निकलनेवाला उज्ज्वल और चमकीला प्रकाश। जैसे—किसी महापुरुष की आँखो या मुखडे की ज्योति। ३ अग्नि। ४ ब्रह्म। ५ सूर्य। ६ विष्णु। ७. नक्षत्र। ८ आँख की पुतली के बीच का काला बिन्दु। तिल। ९. दृष्टि। नजर। १० मेथी। ११ सगीत मे अष्ट-ताल का एक भेद।

ज्योतिक—पु०=ज्योतिषी।

ज्योतित—वि० [स० द्योतित] १ ज्योति के रूप मे आया या लाया हुआ। २ ज्योति या प्रकाश से युक्त किया हुआ।

ज्योतिमान—वि०=ज्योतिष्मान्।

ज्योतिरिंग—पु० [स० ज्योतिस्√इग् (गत्यादि)+अच्] जुगनूँ।

ज्योतिरिंगण—पु० [स० ज्योतिस्√इग्+ल्यु-अन] जुगनूँ।

ज्योतिर्बीज—पु० [ज्योतिस्-बीज, ब०स०] जुगनूँ।

ज्योतिर्मंडल—पु० [ज्योतिस्-मडल, ष० त०] आकाशस्थ तारो, नक्षत्रो आदि का मंडल या लोक।

ज्योतिर्मय—वि० [स० ज्योतिस्+मयट्] बहुत अधिक ज्योति से युक्त। जगमगाता हुआ। परम प्रकाशमान्।

ज्योतिर्लिंग—पु० [ज्योतिस्-लिंग, मध्य० स०] १ महादेव। शिव। २. शिव के मुख्य १२ लिंग जो भारत के भिन्न-भिन्न भागो मे स्थापित हैं।

ज्योतिर्लोक—पु० [ज्योतिस्-लोक, प० त०] १ ध्रुव लोक जो काल-चक्र का प्रवर्त्तक माना गया है। २ उक्त लोक के अधिष्ठाता देवता, विष्णु। ३ परमात्मा। परमेश्वर।

ज्योतिर्विद्—पु० [स० ज्योतिस्√विद् (जानना)+क्विप्] ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—स्त्री० [ज्योतिस्-विद्या प० त०] ज्योतिष।

ज्योतिर्हस्ता—स्त्री० [ज्योतिस्+हस्त ब० स०] दुर्गा।

ज्योतिश्चक्र—पु० [ज्योतिस्-चक्र मध्य० स०] ग्रहो, नक्षत्रो, राशियो आदि का चक्र या मडल।

ज्योतिश्चुंबी (बिन्)—वि० [सं०ज्योतिस्√ चुब् (चूमना)+णिनि] [स्त्री० ज्योतिश्चुंबिनी] आकाशस्थ ज्योति को चूमने अर्थात् उसके बहुत पास तक पहुँचनेवाला; अर्थात् बहुत ऊँचा। गगनचुबी। उदा०—ज्योतिश्चुंबिनी कलश-मधुकर छाया मे।—निराला।

ज्योतिश्छाया—स्त्री० [ज्योतिस्-छाया मध्य० स०] १ ज्योति अथवा

प्रकाश से युक्त छाया। २ ज्योति अथवा प्रकाश मे पडनेवाली छाया। उदा०--ज्योतिश्छाय केश-मुख वाली।—निराला।

ज्योतिष—पु० [स० ज्योतिस्+अच्] १ एक प्रसिद्ध विद्या या शास्त्र जिसमे इस बात का विचार होता है कि आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र आदि पिंड कितनी दूरी पर हैं, कितने दिनो मे किन मार्गो से चक्कर लगाते हैं, उनके कितने प्रकार के वर्ग या विभाग है आदि आदि।

विशेष—बहुत दिनो से इस शास्त्र के मुख्य दो विभाग चले आ रहे हैं—गणित और फलित। गणित ज्योतिष मे पहले प्राय. उन्ही बातो का अनुसधान होता था जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। प्राचीन भारत मे इस शास्त्र की गणना छ वेदागो के अन्तर्गत होती थी। आज-कल पाश्चात्य ज्योतिष मे इस बात का भी विचार होने लगा है कि आकाशस्थ पिडो की उत्पत्ति या जन्म किस प्रकार होता है, वे किन-किन तत्त्वो के बने हुए होते हैं और वे हमारी पृथ्वी से भी और आपस मे एक दूसरे से भी कितनी दूरी पर स्थित हैं।

२ आज-कल लोक-व्यवहार मे उक्त विद्या या शास्त्र का वह पक्ष या विभाग जिसमे इस बात का विचार होता है कि इस पृथ्वी के निवासियो, प्रदेशो आदि पर हमारे सौर जगत् के भिन्न-भिन्न ग्रहो, नक्षत्रो, राशियो आदि की स्थितियो पर कैसे-कैसे भौतिक प्रभाव पडते है। इसी आधार पर अनेक प्रकार के भविष्य कथन भी होते है और अनेक प्रकार के कार्यो के लिए शुभाशुभ मुहूर्त्त या समय भी बतलाये जाते है। ३ प्राचीन भारत मे अस्त्रो आदि का एक प्रकार का मारक या रोक जिससे शत्रुओ के चलाये हुए अस्त्र निष्फल किये जाते थे।

ज्योतिषिक—वि० [स० ज्योतिस्+ठक्-इक] ज्योतिष सबधी। ज्योतिष का। पु०=ज्योतिषी।

ज्योतिषी (षिन्)—पुं० [स० ज्योतिष+इनि] १ ज्योतिष शास्त्र का जानने-वाला विद्वान्। दैवज्ञ। गणक। २ आज-कल मुख्यत फलित ज्योतिष का ज्ञाता या पडित जो ग्रहो की गति-विधि आदि के आधार पर भविष्यद्वाणी करता और पर्व, मुहूर्त्त आदि का समय स्थिर करता हो। स्त्री० [स० ज्योतिष+डीप्] तारा।

ज्योतिष्क—पु० [स० ज्योतिष्√कै (प्रकाशित होना)+क] १. ग्रह, तारे, नक्षत्र आदि आकाश मे रहनेवाले पिंड जो रात के समय चमकते हुए दिखाई देते है। २. जैनो के अनुसार एक प्रकार के देवता जिनमे आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र और सूर्य, चन्द्रमा आदि भी है। ३ मेरु पर्वत की एक चोटी का नाम। ४ चित्रक वृक्ष। चीता। ५. मेथी। ६ गनियारी।

ज्योतिष्का—स्त्री० [सं० ज्योतिष्क+टाप्] मालकगनी।

ज्योतिष्टोम—पुं० [ज्योतिस्-स्तोम, व० स०] एक प्रकार का यज्ञ जिसमे १६ ऋत्विक् होते थे।

ज्योतिष्ना—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

ज्योतिष्पथ—पु० [ज्योतिस्-पथिन्, ष० त०] आकाश।

ज्योतिष्पुंज—पु० [ज्योतिस्-पुज, ष० त०] आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रो आदि का समूह।

ज्योतिष्मती—स्त्री० [स० ज्योतिस्+मतुप्-डीप्] १ रात्रि। रात। २ एक प्रकार का वैदिक छद। ३ एक प्राचीन नदी। ४ एक प्रकार का पुराना बाजा। ५. मालकगनी।

ज्योतिष्मान् (मत्)—वि० [स० ज्योतिस्+मतुप्] १. जिसमे ज्योति हो। ज्योतिवाला। २ खूब चमकता हुआ। प्रकाशमान्। पु० १ सूर्य। २. प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। (पुराण)

ज्योतीरथ—पु० [ज्योतिस्-रथ, ब० स०] ध्रुव।

ज्योतीरस—पु० [ज्योतिस्-रस, द्व० स०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

ज्योत्स्ना—स्त्री० [स० ज्योतिस्+न, इलोप नि०] १. चद्रमा का प्रकाश। २. पृथ्वी पर छिटका या फैला हुआ उक्त प्रकाश। चाँदनी। ३. शुक्ल पक्ष की या चाँदनी रात। ४. सौंफ।

ज्योत्स्नाकाली—स्त्री० [स०] वरुण के पुत्र पुष्कर-की पत्नी जो सोम की कन्या थी।

ज्योत्स्ना-प्रिय—पु० [ब० स०] चकोर।

ज्योत्स्ना-वृक्ष—पु० [ष० त०] दीपाधार। दीवट।

ज्योत्स्निका—स्त्री० [स० ज्योत्स्ना+कन्+टाप्, इत्व]=ज्योत्स्ना।

ज्योत्स्नी—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

ज्योत्स्नेश—पु० [ज्योत्स्ना-ईश, ष० त०] चद्रमा।

ज्योनार—स्त्री० [स० जेमन=भोजन] १. पका हुआ भोजन। रसोई। २. बहुत से लोगो को बुलाकर एक साथ कराया जानेवाला भोजन। भोज। दावत।

मुहा०—**ज्योनार बैठना**=आये हुए लोगो का भोजन करने बैठना। **ज्योनार लगाना**=आये हुए लोगो के लिए खाने-पीने की चीजें परोसना।

ज्योरा—पु० [स० जीव=जीविका] गाँवो मे, चमारो, नाइयो आदि को उनकी सेवाओ के बदले दिया जानेवाला अन्न।

ज्योरी—स्त्री० [सं० जीवा] डोरी। रस्सी।

ज्योहत—वि० [स० जीव+हत] जिसने जीव की हत्या की हो। पु० १. =आत्म-हत्या। २ =जौहर।

ज्यौं—क्रि० वि०=ज्यो।

ज्यौ*—पु० [स० जीव] १. आत्मा। जीव। उदा०—तनमाया ज्यौ ब्रह्म कहावत सूर सुमिलि बिगरौ।—सूर। २ जीवन। प्राण। उदा०—बदी बदी ज्यौ लेत हैं, ए बदरा बदराह।—बिहारी। ३ जी। मन।

अव्य० [सं० यदि] जो। यदि।

ज्यौतिष—वि० [स० ज्योतिष+अण्] ज्योतिष-सबधी। पु०=ज्योतिष।

ज्यौतिषिक—पु० [स० ज्योतिष+ठक्—इक] ज्योतिषी।

ज्यौत्स्नी—स्त्री० [स० ज्योत्स्ना+अण्-डीप्] पूर्णिमा की रात।

ज्यौनार—स्त्री०=ज्योनार।

ज्यौरा—पु०=ज्योरा।

ज्यौहर—पु०=जौहर

ज्वर—पु० [स० √ज्वर् (जीर्ण होना)+घञ्] १ अनेक प्रकार के शारीरिक विकारो के कारण होनेवाला एक रोग जिसमे शरीर का ताप-मान प्रसम या साधारण से बहुत-कुछ बढ जाता है और जिसके फल-स्वरूप नाडी की गति बहुत तीव्र हो जाती है और कभी-कभी मनुष्य बकने झकने लगता या अचेत हो जाता है। ताप। बुखार।

क्रि०प्र०--आना।-चढना।-होना।

२ ऐसी स्थिति जिसमे अशान्ति, आवेग, उत्तेजना, मानसिक चचलता

आदि बातें बहुत बढ़ी हुई हों। जैसे--युद्ध भी देशों और राष्ट्रों को चढ़नेवाला ज्वर-ही समझना चाहिए।

ज्वर-कुटुंब—पु० [ष० त०] ज्वर के फलस्वरूप या साथ-साथ होनेवाले दूसरे उपद्रव। जैसे--शारीरिक शिथिलता, अधिक प्यास, भोजन के प्रति अरुचि, सिर में दरद आदि आदि।

ज्वरघ्न—वि० [स० ज्वर√हन् (नाश)+टक्] जिससे ज्वर का अन्त या नाश होता हो।

पु० १ गुडुच। २ बथुआ नामक साग।

ज्वर-हंत्री—स्त्री० [ष० त०] मजीठ।

ज्वरांकुश—पु० [ज्वर-अकुश, ष० त०] १ कुश की जाति की एक घास जिसकी जड़ में नीबू की-सी सुगंध होती है। २ वैद्यक में ज्वर की एक दवा जो गंधक, पारे आदि के योग से बनती है।

ज्वरांगी—स्त्री० [स० ज्वर√अग् (गति)+अच्-ङीप्] भद्रदती नामक पौधा।

ज्वरांतक—वि० [ज्वर-अतक, ष० त०] ज्वर का अन्त या नाश करनेवाला।

पु० १ चिरायता। २ अमलतास।

ज्वरांश—पु० [ज्वर-अंश, ष० त०] मद या हलका ज्वर जैसा प्राय: जुकाम आदि के साथ होता है और जो कभी-कभी दूसरे रोग के आगमन का सूचक माना जाता है। हरारत।

ज्वरा—स्त्री० [स० जरा] १. बुढ़ापा। २. मृत्यु।

ज्वरापह—स्त्री० [स० ज्वर-अप√हन् (मारना)+ड] बेलपत्री।

ज्वरार्त्त—वि० [ज्वर-आर्त्त, तृ० त०] ज्वर से पीड़ित।

ज्वरित—वि० [स० ज्वर+इतच्] जिसे ज्वर या बुखार चढ़ा हुआ हो।

ज्वरी (रिन्)—वि० [स० ज्वर+इनि] ज्वर से पीड़ित।

ज्वर्रा†—पु०=जुर्रा (पक्षी)।

ज्वलंत—वि० [स० ज्वलत्] १ जलता और चमकता हुआ। देदीप्यमान। २ बहुत अच्छी तरह और स्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाला। जैसे--ज्वलत उदाहरण या प्रमाण।

ज्वल—पु० [स०√ज्वल् (दीप्ति)+अच्] १ ज्वाला। अग्नि। २. दीप्ति। प्रकाश।

ज्वलका—स्त्री० [स०√ज्वल्+ण्वुल-अक, टाप्] आग की लपट। अग्निशिखा।

ज्वलन—पु० [स०√ज्वल्+ल्युट्—अन] १ कोई चीज जलने की क्रिया या भाव। दहन। जलना। २. जलन। दाह। ३. [√ज्वल्+युच्—अन] अग्नि। आग। ४. आग की लपट। लौ। ५. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

ज्वलनांक—पु० [ज्वलन-अक, ष० त०] तीव्र तापमान की वह मात्रा या स्थिति जो किसी चीज को जला देने मे समर्थ होती है। (बर्निंग प्वाइंट)

ज्वलनांत—पु० [ज्वलन-अत, ब० स०] एक बौद्ध का नाम।

ज्वलनाश्मा (श्मन्)—पु० [ज्वलन-अश्मन्, कर्म० स०] सूर्यकात मणि।

ज्वलित—भू० कृ० [स०√ज्वल्+क्त] १. जलता या जलाया हुआ। २. जला हुआ। दग्ध। ३. खूब चमकता हुआ। ४. स्पष्ट रूप से सामने दिखाई देनेवाला।

ज्वलिनी—स्त्री० [स० ज्वल+इनि+ङीप्] मूर्वा लता। मरोड़फली।

ज्वलिनी सीमा—स्त्री० [स० व्यस्त पद] दो गाँवों के बीच की वह सीमा जो ऊँचे पेड़ लगाकर बनाई गई हो।

ज्वान†—वि० [भाव० ज्वानी] =जवान।

ज्वाब—पुं०=जवाब।

ज्वार—स्त्री० [स० यवनाल, यवाकार वा जूर्ण] १ एक प्रसिद्ध पौधा और उसके दाने या बीज जिनकी गिनती अनाजों में होती है। २. समुद्र, उससे सबद्ध नदियों की वह स्थिति जब कि उनमें ऊँची-ऊँची तरंगें उठ रही हों। 'भाटा' का विपर्याय।

विशेष—चन्द्रमा और सूर्य के आकर्षण के फलस्वरूप दिन-रात में एक बार बहुत ऊँची-ऊँची लहरें उठती हैं जिसे ज्वार कहते हैं और दूसरी बार यह लहरें बिलकुल थम जाती है जिससे सबद्ध नदियों का पानी बहुत उतर या घट जाता है। इसी को भाटा कहते हैं। अमावास्या और पूर्णिमा के दिन ज्वार का रूप बहुत ही उग्र या प्रबल होता है।

*स्त्री०=ज्वाला।

ज्वार भाटा—पु० [हिं० ज्वार+भाटा] समुद्र में लहरों का वेगपूर्वक बहुत ऊँचे उठना और बराबर नीचे गिरना।

ज्वारी†—पु०=जुआरी।

ज्वाल—पु० [स०√ज्वल् (दीप्ति)+ण वा घञ्]=ज्वाला।

ज्वालक—वि० [स०√ज्वल्+णिच्+ण्वुल्—अक] जलाने या प्रज्वलित करनेवाला।

पु० दीपक, लप आदि का वह भाग जो बत्ती के जलनेवाले अश के नीचे रहता है और जिसके कारण दीप-शिखा बत्ती के नीचेवाले अश तक नहीं पहुँचने पाती। (बर्नर)

ज्वालमाली (लिन्)—पु० [स० ज्वाल-माला ष० त०,+इनि] सूर्य।

ज्वाला—स्त्री० [स० ज्वाल+टाप्] १. आग की लपट या लौ। अग्निशिखा। २. ताप, विष आदि के प्रभाव से जान पड़नेवाली बहुत अधिक गर्मी। ३ कष्ट, दु:ख आदि के कारण मन में होनेवाली पीड़ा। सताप। ४. तक्षक की एक कन्या जिसका विवाह ऋक्ष से हुआ था।

ज्वाला-जिह्वा—पु० [ब० स०] १ अग्नि। आग। २ एक प्रकार का चित्रक या चीता (वृक्ष)।

ज्वाला-देवी—स्त्री० [मध्य० स०] काँगड़े के पास की एक देवी जिसका स्थान सिद्ध पीठों में माना जाता है।

ज्वाला-मालिनी—स्त्री० [स० ज्वाला-माला, ष० त०, +इनि—ङीप्] तंत्र के अनुसार एक देवी।

ज्वाला-मुखी—पु० [ब० स०, ङीप्] पृथ्वी तल के कुछ विशिष्ट स्थानों और मुख्यत. पर्वतों में होनेवाले मुख के आकार के बड़े-बड़े गड्ढे जिनमें से कभी आग की लपटें, कभी गली हुई धातुएँ, पत्थर आदि और कभी धूएँ या राख के बादल निकलते हैं।

विशेष:—ऐसे गड्ढे जल और स्थल दोनों में होते हैं। जिन पर्वतों की चोटियों पर ऐसे गड्ढे होते हैं उन्हें ज्वालामुखी पर्वत कहते हैं।

ज्वाला हलदी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की हलदी जिससे चीजें रंगी जाती हैं।

ज्वाली (लिन्)—वि० [स० ज्वाल+इनि] ज्वालायुक्त।

पु० शिव।

ज्वैना†—स०=जोवना।

झ

झ—देवनागरी वर्णमाला मे च वर्ग का चौथा अक्षर जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्श सघर्षी, महाप्राण तथा सघोष व्यजन है।

झं—पु०[अव्यक्त ध्वनि] १. धातु के किसी पात्र पर आघात होने से उसमे से निकलनेवाला शब्द। २ हाथी की चिघाड।

झंकना—अ० दे० 'झीखना'।

झकाड़†+पु०=झखाड।

झंकार—स्त्री० [स० झन्-कार, व० स०] १ धातु के किसी पात्र पर आघात लगने पर कुछ समय तक उसमे से बराबर निकलता रहनेवाला झनझन शब्द। झनकार। २ कुछ कीडो के बोलने का झन झन शब्द। जैसे—झिल्ली या झीगुर की झकार।

झंकारना—स० [स० झंकार] धातु के किसी टुकड़े का पात्र पर इस प्रकार आघात करना कि वह झन झन शब्द करने लगे।
अ० झन झन शब्द उत्पन्न होना।

झंकारिणी—स्त्री० [स० झकार+इनि–ङीप्] गगा।

झँकिया—स्त्री० [हिं० झाँकना] १ छोटी खिडकी। झरोखा। २ झँझरी। जाली।

झंकृत—भू० कृ० [स०-झन् √कृ (करना)+क्त] जिसमे से झकार निकली या उत्पन्न हुई हो।

झंकृता—स्त्री० [स० झकृत+टाप्] तारा देवी।

झंकृति—स्त्री० [स० झन्√कृ (करना)+क्तिन्] झकार।

झँकोर†पु०=झकोरा।

झँकोरना†—अ०=झकोरना।

झँकोलना†—अ०=झकोरना।

झँकोला†—पु०=झकोरा।

झखना—अ० १ दे० 'झीखना'। २ दे० 'झाँकना'।

झंखर†—पु०=झखाड।

झंखाट†—वि०=झखाड।

झंखाड़—पु० [हिं० झाट का अनु०] १ काँटेदार अथवा और प्रकार के जगली घने पौधे या उनका समूह। २. व्यर्थ के कूडे-करकट का ढेर।
वि० (वृक्ष) जिसके पत्ते झड गये हो।

झँगरा†—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० झँगरी] बाँस की खपचियो का बना हुआ जालीदार बडा टोकरा।

झंगा†—पु०=झगा।

झंगिया†—स्त्री०=झँगुली।

झँगुला—पु० [हिं० झगा] [स्त्री० अल्पा० झँगुलिया, झँगुली] बच्चो के पहनने का छोटा कुरता।

झँगुली—स्त्री० [हिं० झँगुला का स्त्री०] छोटा झँगुला।

झगूला—पु० [स्त्री० अल्पा० झँगूली]=झँगुला।

झंजोड़ना—स०=झझोडना।

झंझ†—स्त्री० १ दे० 'झाँझ'। २ दे० 'झझा'।

झंझट—स्त्री० [अनु०] ऐसा काम या बात जिसके साधन मे कई प्रकार की छोटी-मोटी कठिनाइयाँ हो और जिसके लिए विशेष परिश्रम या प्रयत्न करना पडे। बखेडा।

झंझटी—वि० [हिं० झझट] १ (काय या बात) जिसे सपादन करने मे अनेक प्रकार की झझटे खडी होती हो। २ (व्यक्ति) जो हर बात को उलझाता तथा उसे झगडे का रूप देता हो। ३ झगडालू।

झंझन—पु० [सं०] झकार।

झंझनाना—अ० [हिं० झन झन] झन झन शब्द उत्पन्न होना।
स० झन झन शब्द उत्पन्न करना।

झझंर—स्त्री० [स० अलिजर] मिट्टी का जल रखने का एक छोटा पात्र।
†वि०=झँझरा।

झँझरा—पु० [हिं०] मिट्टी का छोटे-छोटे छेदोवाला वह ढकना जिससे खौलता हुआ दूध ढका जाता है।
वि० [स्त्री० झँझरी] १ जिसमे बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। २ बहुत ही झीना या महीन (कपड़ा)।

झंझरि—वि० [स० जर्जर] जर्जर। क्षत-विक्षत।
स्त्री०=झँझरी।

झँझरी—स्त्री० [हिं० झर झर से अनु०] १. किसी चीज मे बने हुए बहुत से छोटे-छोटे छेदों का समूह। जाली। २ दीवारो आदि की जालीदार खिडकी या झरोखा। ३ लोहे के चूल्हे की वह जाली जिस पर जलते हुए कोयले रहते है। ४ छेद। सुराख। ५ आटा छानने की चलनी। छाननी। ६ लोहे का जालीदार पौना। झरना। ७ एक प्रकार की जल-क्रीडा जिसमे छोटी नावो पर बैठकर उन्हे चक्कर देते हैं।

झँझरीदार—वि० [हिं० झँझरी+फा० दार] जिसमे बहुत से छोटे-छोटे छेद पास-पास बने हुए हो।

झंझा—स्त्री० [स० झम्√झट् (इकट्ठा होना)+ड–टाप्] १ वह तेज आँधी जिसके साथ पानी भी जोरो से बरसता हो। २ अधड़। आँधी।
†वि० तेज। प्रचड।
†स्त्री०=झाँझ।

झंझानिल—पु० [स० झझा-अनिल, मध्य० स०] १ प्रचड वायु। आँधी। २ ऐसी आँधी जिसके साथ पानी भी बरसे।

झंझा-मरुत्—पु०=झझानिल।

झंझार—पु० [स० झझा] आग की ऊँची तथा बड़ी लपट।

झंझावात—पु०=झझानिल।

झंझी—स्त्री० [देश०] १. फूटी कौडी। २. दलालो को दलाली मे मिलनेवाली रकम। (दलाल)

झझोड़ना—स० [स० झझंन] किसी चीज को अच्छी तरह पकडकर जोर-जोर से तथा बार-बार झटकना या हिलाना जिससे वह टूट-फूट जाय या बेदम हो जाय। झकझोरना। जैसे—बिल्ली का कबूतर या चूहे को झँझोडना।

झँझोरा—पु० [देश०] कचनार का पेड।

झँझोटी, झँझौटी†—स्त्री०=झिंझौटी।

झंड—स्त्री० [स० जट] छोटे बालकों के जन्म-काल के सिर के बाल।

बच्चों के मुंडन से पहले के बाल जो प्रायः कटवाये न जाने के कारण बडे बडे हो जाते है।

मुहा०—झंड उतारना=बच्चे का मुडन-सस्कार करना।

†पु०=जड (करील का वृक्ष)।

झंटा†—पु०[स० ध्वज+दड; पा० धजोदड, प्रा० झपयड, गु०, सि० झडो, मरा० झेंडा] [स्त्री० अल्पा० झडी] १ डडे के सिर पर लगा हुआ कपड का वह आयताकार या तिकोना टुकडा जिस पर कुछ विशिष्ट चिह्न बने होते है तथा जो किसी जाति, दल, राष्ट्र, सम्प्रदाय या समाज का प्रतीक चिह्न होता तथा जो भवनो, मदिरो आदि पर फहराया जाता है। ध्वजा। पताका।

मुहा०—(किसी बात का) झंडा खड़ा करना=इस रूप मे कोई नया काम आरभ करना कि और लोग भी आकर उसमे सम्मिलित हो तथा उसके अनुयायी बनें। जैसे—विद्रोह का झडा खडा करना। **(किसी स्थान पर) झंडा गाड़ना**=किसी स्थान पर अधिकार कर लेने के उपरात वहाँ अपना झडा लगाना, जो विजय का सूचक होता है। **झंडा फहराना**=झडा गाडना। **(किसी के) झंडे तले आना**=किसी की अधीनता स्वीकार करना तथा उसी के पक्ष मे सम्मिलित होना या उसका अनुयायी बनना।

पद—झंडे तले की दोस्ती=बहुत ही साधारण या आकस्मिक रूप से होनेवाली जान-पहचान।

२. उक्त झडे का प्रतीक कागज का वह छोटा टुकडा जिस पर किसी राष्ट्र, सम्प्रदाय आदि के चिह्न बने होते हैं। (फ्लेग)

पद—झंडा दिवस (दे०)।

पु०[स० जयंत]ज्वार, बाजरे आदि पौधे के ऊपर का नर-फूल। जीरा।

झंडा दिवस—पु० [हिं० झडा+स० दिवस] किसी विशिष्ट आदोलन या लोकोपकारी कार्य से लोगो को परिचित कराने और उनकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए मनाया जानेवाला कोई विशिष्ट दिन जिसमे स्वयसेवक लोग प्रतीक रूप मे छोटे-छोटे झडे बेचते और बडे-बडे झडे घरो, दूकानो आदि पर लगाते हैं। (फ्लेग डे)

झंडी—स्त्री० [हिं० झडा का स्त्री० अल्पा० रूप] कपडे, कागज आदि का बना हुआ बहुत छोटा झडा जिसका व्यवहार प्राय दीवारो पर सजावट आदि के लिए लगाने और सेना आदि मे सकेत करने के लिए होता है।

पद—लाल झंडी=किसी प्रकार के अनिष्ट या सकट की सूचना देनेवाला पदार्थ या सकेत।

झंडीदार—वि० [हिं० झडी+फा० दार] जिसमे झडी लगी हो।

झँडूलना†—पु० दे० 'झँडूला'।

झंडूला—वि० [हिं० झड+ऊला (प्रत्य०)] १ (बालक) जिसके सिर पर जन्म-काल के बाल अभी तक वर्त्तमान हो। जिसका अभी तक मुडन-सस्कार न हुआ हो। २ (सिर के बाल) जो गर्भ-काल से ही चले आ रहे हों और अभी तक मूँडे न गये हो। ३ घनी डालियो और पत्तियो-वाला। सघन (वृक्ष)।

पु० १ वह बालक जिसके सिर पर अभी तक गर्भ के बाल हो। २.गर्भ-समय से चले आये हुए बाल जो अभी तक मूँडे न गये हो। ३ घनी डालियो और पत्तियोवाला वृक्ष।

†४.=झुड।

झडोत्तोलन—पु० [हिं० झडा+उत्तोलन] झडा फहराने की क्रिया या रस्म। ध्वजोत्तलन। (असिद्ध रूप)

झंप—पु०[स०झम्√पत् (गिरना)+ड] १ उछलने की क्रिया या भाव। उछाल। २ कूदने की क्रिया या भाव। कुदान।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।

३. बहुत शीघ्रता से होनेवाली उन्नति या वृद्धि।

पु०=झाँप।

झँपकना—अ० १.=झपकना। २ =झँपना।

झँपकी†—स्त्री०=झपकी।

झँपताल†—पु०=झपताल।

झँपना—अ० [स० झप] १ उछलना। २ कूदना। ३ झपटना। ४ एकदम से आ पहुँचना। टूट पड़ना। ५ झेंपना। ६ पलको का गिरना या बद होना। ७. आड मे होना। छिपना। ८ सो जाना। उदा०—वृक्ष मानो व्यर्थ बाट निहार। झँप उठे है झीम, झुक, थक, हार।—मैथिलीशरण।

स० १ आड मे करना। छिपाना। २. ढकना। ३ बन्द करना। मूँदना।

झँपरिया†—स्त्री०=झँपरी।

झँपरी—स्त्री० [हिं० झापना=ढकना] वह कपड़ा जो डोली या पालकी के ऊपर डाला जाता है। ओहार।

झंपा†—पु० १ दे० 'झब्बा'। २. दे० 'बाल' (अनाज की)।

झंपाक—पु० [स० झप√अक् (जाना)+अण्] [स्त्री० झपाकी] बदर।

झँपान—पु० [स० झप] पहाडो पर सवारी के काम आनेवाली एक प्रकार की खटोली।

झंपारु—पु० [स० झप-आ√रा (लेना)+डु] बदर।

झंपित—भू० कृ० [स० झप] १. ढका हुआ। २ छिपा हुआ।

झँपिया—स्त्री० [हिं० झाँपा] छोटा झाँपा।

झंपी(पिन्)—पु० [स० झप+इनि] बदर।

झँपोला—पु० [हिं० झाँपा+ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० झँपोली या झँपोलिया] १ छोटा झाँपा। २ पिटारा।

झंब—पु० [देश०] गुच्छा (प्राय फलो का गुच्छा)।

झँबकार†—वि० [हिं० झाँवला=काला] झाँवें के रग का। कुछ-कुछ काला।

झँवन—स्त्री० [हिं० झँवाना] १. झँवाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी चीज का वह अग जो झँवाने या किंचित् जल जाने के कारण कम हो जाय। जैसे—मशीन मे पीसे जाने पर गेहूँ या आटे की झँवन।

झँवराना—अ० [हिं० झाँवर] १ झाँवला या कुछ काला पडना। २. कुम्हलाना। मुरझाना।

स० १ झाँवला या कुछ-कुछ काला करना। २. कुम्हलाने या मुरझाने मे प्रवृत्त करना।

झँवा†—पु०=झाँवाँ।

झँवाना—अ० [हिं० झाँवाँ] १ ताप आदि के प्रभाव से झाँवें के रग का हो जाना। कुछ काला या झाँवला हो जाना। जैसे—धूप से शरीर का

रग झँवाना। २ अग्नि का जलते-जलते बुझने को होना। आँच धीमी या मन्द पडना। ३. जलने, सूखने आदि के कारण किसी चीज का कुछ अश कम होना या घट जाना। ४. कुम्हलाना। मुरझाना। ५ निर्जीव या वेदम होना। उदा०—मुरछित अवनी परी झँवाई।—तुलसी। ६ शरीर के किसी अग का झाँवें से रगड कर साफ किया जाना। ७ झेपना। स० १. ताप आदि के प्रभाव से किसी चीज को झाँवे के रग का अर्थात् झाँवला या कुछ-कुछ काला कर देना। २ ऐसा करना कि आग धीमी या मद पडकर बुझने लगे। ३ जला या सुखाकर किसी चीज का कुछ अश कम करना या घटाना। ४. कुम्हलाने या मुरझाने मे प्रवृत्त करना। ५ शरीर का कोई अश साफ करने के लिए उसे झाँवे से रगडना। ६ निर्जीव या वेदम करना। ७ लज्जित या शरमिंदा करना।

झँवावना†—स० [हिं० झँवाना] झँवाने का काम किसी दूसरे से कराना।

झँवैला†—वि० [हिं० झाँवाँ+ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० झँवली] १ जो जलकर झाँवें के रग का हो गया हो। झँवाया हुआ। २ झाँवे के रग का। कुछ-कुछ काला। ३ झावे से रगडा हुआ।

झँसना—अ० [अनु०] १ शरीर के किसी अग मे तेल या और कोई चीज कोई प्रभाव उत्पन्न करने के लिए वार-वार रगडते हुए मलना। जैसे—सिर मे तेल झँसना, पैरो के तलुओ मे कद्दू या फूल की कटोरी झँसना। २. झाँसा देकर किसी से कुछ धन वसूल करना। तिकडम से किसी की कोई चीज ले लेना।

झइ*—स्त्री०=झाईं।

झउवा—पुं०=झावा।

झक—स्त्री० [अनु०] १ मन की वह वृत्ति जिसके फलस्वरूप मनुष्य विना समझे-बूझे और प्राय. हठवश किसी काम मे प्रवृत्त होता है। इसकी गिनती कुछ हलके पागलपन मे होती हे।
क्रि० प्र०—चढ़ना।—लगना।—सवार होना।
२. दुर्गंध या वू। जैसे—सडी तरकारी की झक।
वि० [हिं० झकाझक] १ स्वच्छ तथा उज्ज्वल। २ चमकदार। चमकीला।
†स्त्री०=झख।

झककेतु*—पु०=झषकेतु।

झकझक—स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की तकरार या हुज्जत। किचकिच।

झकझका—वि० [हिं० झकझक] १ जो विलकुल साफ या स्वच्छ हो। उज्ज्वल। जैसे—*झकझका कुरता।* २ जिसमे ओप या चमक हो। चमकीला।

झकझकाहट—स्त्री० [अनु०] ओप। चमक।

झकझोर—पु० [अनु०] १ झकझोरने की क्रिया या भाव। २ हवा का झकोरा या झोका। ३ झटका।
वि० १. झकझोरा हुआ। २ जिसमे किसी तरह का झोका या गति की तीव्रता हो। तीव्र। तेज।

झकझोरना—स० [अनु०] १ किसी चीज या जीव को उठा या पकडकर इस प्रकार झटकना या जोर-जोर से हिलाना कि वह टूट-फूट जाय या वेदम हो जाय। २ पेड या उसकी शाखा को इस प्रकार हिलाना कि उसके पत्ते या फल नीचे गिर पडें।

झकझोरा—पु० [अनु०] झटका। धक्का।

झकझोलना—स०=झकझोरना।

झकड†—पु०=झक्कड।

झकड़ी†—स्त्री० [देश०] वह वरतन जिसमे दूध दूहा जाता है।

झकना अ० हिं० वकना का अनु०।
अ० [हिं० झख+ना (प्रत्य०)] झख मारना।

झकर†—पु०=झक्कड।

झका*—वि०=झक।

झकाझक—वि० [अनु०] १ स्वच्छ तथा उज्ज्वल। २ चमकीला।

झकुरना—अ० [?] उदास होना। (वुदेल)

झकुराना†—अ० [हिं० झकोरा] झकोरा लेना। झूमना।
स० झकोरा देना। हिलाना।

झकूटा—पु० [?] छोटा पेड। क्षुप।

झकोर*—स्त्री० [अनु०] झकोरने की क्रिया या भाव।
स्त्री०=झकोरा (हवा का झोका)।

झकोरना—अ० [अनु०] हवा का झोका मारना।
†स०=झकझोरना।

झकोरा—पु० [अनु०] हवा का झोका।

झकोलना—स० [?] १ डालना। २ मिलाना।

झकोला†—पु०=झकोरा।

झकोला—पु० [हिं० झोका] १ हवा का झोका। २ तेज हवा के कारण उठनेवाली पानी की लहर।
वि० जिसमे कुछ भी कसाव या तनाव न हो। ढीला-ढाला। उदा०—चारपाई विलकुल झकोला थी।—वृन्दावनलाल।

झक्क—वि०, स्त्री० =झक।

झक्कड़—पु० [अनु०] तेज आँधी। अधड।
क्रि० प्र०—उठना।—चलना।
पु० दे० 'झक्की'।

झक्का—पु० [अनु०] १ हवा का तेज झोका। २ तेज आँधी। झक्कड। (लश०)

झक्की—वि० [हिं० झक] जिसे किसी वात की झक या सनक हो। नासमझी से और केवल हठ-वश किसी काम मे लगा रहनेवाला। सनकी।

झक्खड†—पु०=झक्कड़।

झखना*—अ०=झीखना।

झख—स्त्री० [हिं० झीखना] १ *झीखने की क्रिया या भाव।*
मुहा०—झख मारना=(क) ऐसा तुच्छ और व्यर्थ का काम करना जिसमे विफलता निश्चित हो, अथवा जिसका कुछ भी परिणाम या फल न हो सकता हो। (उपेक्षा और तिरस्कार-सूचक)। जैसे—आप भी वहाँ झख मारने गये थे। (ख) वहुत ही विवशता की दशा मे झीखना। जैसे—तुम्हे भी झखमार कर वहाँ जाना पडेगा।
विशेष—*कुछ लोग 'झख' को स० झष से व्युत्पन्न मानकर उक्त मुहावरे* का अर्थ करते हैं मछली मारने की तरह का व्यर्थ-सा काम वहुत-सा समय लगाकर और चुपचाप वैठकर प्रतीक्षा करते हुए पूरा करना। पर वह व्युत्पत्ति ठीक नही जान पडती।
†स्त्री० [स० झष] मछली। उदा०—झखौ विलखि दुरि जात जल लखि जलजात लजात।—विहारी।

झखकेतु—पुं०=झषकेतु।

झखना*—अ०=झींखना।

झखनिकेत—पुं०=झषनिकेत।

झखराज†—पुं०=झषराज।

झखलग्न*—पुं०=झषलग्न।

झखिया†—स्त्री०=झखी।

झखी*—स्त्री०[सं० झष] मछली।

झगड़ना—अ० [हिं० झकझक से अनु०] अपना पक्ष ठीक सिद्ध करने के लिए दो व्यक्तियों या पक्षों का आवेश या क्रोध में आकर आपस में कुछ कहा-सुनी करना। झगड़ा करना।

झगड़ा—पुं०[हिं० झगड़ना का भाव०]१ दो पक्षों में होनेवाली ऐसी कहा-सुनी या विवाद जिसमें प्रत्येक अपना पक्ष ठीक बतलाता हुआ दूसरे को अन्यायी या दोषी ठहराता है। २. वह चीज या बात जिसके कारण लोग आपस में लड़ते हों। ३ मुकदमा।

झगड़ालू—वि०[हिं० झगड़ा+आलू (प्रत्य०)]जो प्रायः दूसरों से झगड़ा किया करता हो।

झगड़ी—वि०=झगड़ालू।

स्त्री०=झगड़ा।

झगर—पुं०[देश०]एक प्रकार की चिड़िया।

झगरना†—अ०=झगड़ना।

झगरा†—पुं०=झगड़ा।

झगराऊ†—वि०=झगड़ालू।

झगरी†—स्त्री०=झगड़ी।

झगला—पुं०=झगा।

झगा—पुं०[?]१. छोटे बच्चों के पहनने का एक प्रकार का ढीला-ढाला छोटा कुरता। उदा०—सीस पगा न झगा तन पै, प्रभु जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।—नरोत्तम। २. ढीला कुरता।

झगुलिया—स्त्री०=झगुली।

झगुली*—स्त्री०[हिं० झगा का अल्पा०] झगा।

झज्झर—स्त्री०=झझर।

झज्झी—स्त्री०=झझी।

झझक—स्त्री० [हिं० झझकना] १.झझकने की क्रिया या भाव। २. क्रोध में आकर पागलों की तरह या झुँझलाते हुए बिगड़ खड़े होने की अवस्था या भाव। ३. कभी-कभी होनेवाला पागल का सा हल्का दौरा। जैसे—जब कभी इन्हें झझक आ जाती है तब ये इसी तरह बकते हैं। ४. किसी पदार्थ में से रह-रहकर निकलनेवाली हल्की दुर्गन्ध। जैसे—इस नल में से कभी-कभी कुछ झझक आती है।

क्रि० प्र०—आना।—निकलना।

स्त्री०=झिझक।

झझकन*†—स्त्री०=झझक।

झझकना—अ० [अनु०] १. झझक में आकर अर्थात् झक या सनक में आकर बिगड़ खड़े होना। २ दे० 'झिझकना'।

झझकाना—स०[हिं०झझकना का प्रे०]किसी को झझकने में प्रवृत्त करना। चौंकाना।

स० [हिं० खिजकना] झिझकने में प्रवृत्त करना।

झझकार—स्त्री०[झझकारना] १. झझकारने की क्रिया या भाव। २. दे०'झझक'।

झझकारना—स० [अनु०] १ डाँटना। डपटना। २ तुच्छ समझकर दुरदुराना।

झझिया—स्त्री०=झिझिया।

झट—अ०य० [सं० झटिति]१. बहुत तेजी या फुर्ती से। २. चटपट। तत्काल। तुरन्त।

झटकना—स०[सं० झट]१. इस प्रकार किसी चीज को एकाएक जोर से हिलाना कि वह गिर पड़े। झटका देना। २ धोखा देकर अथवा जबरदस्ती किसी की कोई चीज ले लेना।

अ० चिन्ता, रोग आदि के कारण बहुत अधिक अशक्त या दुर्बल होना।

झटका—पुं०[हिं० झटकना]१. झटकने की क्रिया या भाव। २.ऐसा आघात या हल्की ठोकर जिससे गति सहसा रुक जाय और इधर-उधर हटना या गिरना पड़े। हल्का धक्का। झोंका। (जर्क)३. आपत्ति, रोग, शोक आदि का ऐसा आघात जो बहुत कुछ निकम्मा कर दे। ४. मांस खाने के लिए पशु-पक्षी आदि काटने का वह प्रकार (जबह या हलालवाले प्रकार से भिन्न) जिसमें हथियार के एक ही आघात से गरदन काट देते है।

झटकारना—स०[हिं० झटकना] जोर से झटका देना। जैसे—कपड़ा झट-कारना।

झटपट—अव्य० [हिं० झट+अनु० पट] अति शीघ्र । तुरंत ही। फौरन।

झटा—स्त्री०[सं०√झट्+अच्—टाप्]भू-आँवला।

झटाका—क्रि० वि०=झड़ाका।

झटास†—स्त्री०[हिं० झड़ी] बौछार।

झटि—स्त्री०[सं०√झट्+इन्]झाड़। झाड़ी।

झटिका—स्त्री०[?] तेज हवा।

झटिति†—क्रि० वि० [सं०√झट्+क्विप्,√इ+क्तिन] १ झट से। चटपट। तुरंत। २. बिना कुछ सोचे-समझे और तुरन्त।

झट्ट†—क्रि० वि० =झट।

झड़—स्त्री०=झड़ी।

झड़कना—स०=झिड़कना।

झड़क्का†—पुं०=झड़ाका।

झड़झड़ाना—स०[अनु०]१. झड़ झड़ शब्द उत्पन्न करना। २. झड़ झड़ शब्द करते हुए कुछ गिराना, फेंकना या हटाना। झटकारना। ३. झँझोड़ना। ४. झिड़कना।

अ०१ झड़झड़ शब्द होना। २. झड़ झड़ शब्द करते हुए गिरना।

झड़न—स्त्री०[हिं० झड़ना]१. झड़ने की क्रिया या भाव। २ झड़ने या झाड़ने से निकलनेवाली चीज। ३. दलाली, मुनाफे, सूद आदि के रूप में मिलनेवाली रकम जो किये हुए परिश्रम या लगाई हुई पूँजी में से झड़ी या निकली हुई होती है।

झड़ना—अ०[सं० क्षरण]१. किसी चीज में से उसके छोटे-छोटे अंगों या अंशों का टूट-टूटकर गिरना। जैसे—पेड़ में से पत्तियाँ झड़ना। २. ऊपर पड़े हुए बहुत छोटे छोटे कणों का अलग होकर गिरना। जैसे—

कपडे या शरीर पर की धूल झडना। ३ वीर्य का स्खलित होना। (बाजारू)

अ०[हिं० झाडना का अ०]झाडा या साफ किया जाना।

झड़प—स्त्री०[अनु०]१ झडपने की क्रिया या भाव। २ दो जीवो या प्राणियो मे कुछ समय के लिए होनेवाली ऐसी छोटी लडाई जिसमे वे एक दूसरे पर रह-रहकर झपटते हों। ३ दो व्यक्तियों मे उक्त प्रकार से होने वाली कहा-सुनी। आवेश और क्रोध के वश मे होकर की जाने वाली अप्रिय, आक्षेपपूर्ण और कटु बात-चीत।

झड़पना—अ०[अनु०]आवेश और क्रोधपूर्वक किसी पर आक्रमण करना। टूट पड़ना।

स० उक्त प्रकार से आक्रमण करके किसी से कुछ छीन लेना। जैसे—लडके के हाथ से बदर ने अमरूद झडप लिया।

झड़पा-झड़पी—स्त्री०[अनु०] १ झडप। २ गुत्थमगुत्था। हाथापाई।

झड़पाना —स०[हिं० झडपना]१ दो जीवो विशेषत पक्षियो को झडपने या झपटने मे प्रवृत्त करना। २ दूसरो को लडने-झगडने मे प्रवृत्त करना।

झड़बेरी—स्त्री०[हिं० झाड+बेर]१ जगली बेर का वृक्ष। २ उक्त वृक्ष का फल।

पद—झड़-बेरी का कांटा=ऐसा व्यक्ति जो सदा उलझने या लडने-भिडने को तैयार रहता हो और जिससे जल्दी पीछा छुडाना कठिन हो।

झड़वैरी†—स्त्री०=झड-बेरी।

झड़वाई—स्त्री०[हिं० झडवाना] झाड़ने या झडवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

झड़वाना—स० [हिं० झाडना का प्रे० रूप] १ झाड़ने का काम दूसरे से कराना। २. नजर या भूत-प्रेत आदि लगने पर ओझे से झाड़-फूंक कराना।

झड़ाई—स्त्री०[हिं० झाड़ना] झाडने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री०=झड़वाई।

स्त्री०[हिं० झडना] झडने की क्रिया या भाव।

झड़ाक—पु०, क्रि० वि०=झड़ाका।

झड़ाका—क्रि० वि०[अनु०] बहुत जल्दी से। चटपट। झट से।

†पु०=झडप।

झड़ाझड़—क्रि० वि०[अनु०] १ बराबर एक के बाद एक। निरतर। लगातार। २ बहुत जल्दी जल्दी या तेजी से।

झड़ी—स्त्री०[हिं० झडना]१ झडने की क्रिया या भाव। २ कुछ समय तक लगातार झडते रहने की क्रिया या भाव। २ ऐसी वर्षा जो लगातार अधिक समय तक होती रहे। जैसे—तीन दिन से पानी की झडी लगी है। ४ लगातार एक पर एक होती रहनेवाली क्रिया या बात। जैसे—गालियो की झडी, प्रश्नो की झडी।

क्रि० प्र०—बंधना।—लगना।

५ ताले के अदर का वह खटका जो चाबी के आघात से हटता-बढ़ता रहता है और जिसके कारण ताला खुलता और बद होता है।

झड़ूला—वि०=झडूला।

झण-झण—पु० [स० अव्यक्त शब्द]झनझन शब्द।

झड़त्कार—पु०[स० झणत् (=अव्यक्त शब्द)-कार ब०स०] झनकार।

झन— स्त्री० [अनु०]धातु के किसी पटल या पात्र पर आघात होने से उसमे से निकलनेवाला शब्द।

झनक—स्त्री०[अनु०]झन झन शब्द।

झनकना—अ०[अनु०]१ धातु के किसी पटल या पात्र पर आघात होने पर उसमे से झन झन शब्द निकलना। २ कुछ क्रुद्ध और बहुत दुःखी होकर बडबडाते रहना। बकना-झकना। ३ झीखना। ४. आवेश तथा क्रोध मे आकर हाथ-पाँव पटकना।

झनक-मनक—स्त्री०[अनु]१ पहने हुए गहनो की एक दूसरे से टकराने पर होनेवाली झंकार। २ घुँघरुओ के बजने का शब्द।

झनकवात—स्त्री०[अनु० झनक+स० वात] घोडो को होनेवाला एक वात रोग जिसमे उनकी टागो मे एक प्रकार की कँपकपी होती है।

झनकार—स्त्री०=झकार।

झनकारना†—अ०,स०=झकारना।

झनझन—स्त्री०[अनु०] झनझन शब्द। झकार।

झनझना—पु०[देश०]तमाखू मे लगनेवाला एक कीडा जो उसकी नसो मे छेद कर देता है। चनचना।

वि० झनझन शब्द करनेवाला।

झनझनाना—अ०[अनु०]१. झनझन शब्द होना। २ दे० 'झनझना'।

स० झनझन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झनझनाहट—स्त्री०[अनु०]१ झनझन शब्द होने की अवस्था, क्रिया या भाव। झकार। २. दे० 'झुनझुनी'।

झनझोरा—पु०[देश०] एक प्रकर का पेड।

झननन—पु०[अनु०] घुँघरू या पायल के बजने से होनेवाला शब्द।

झनना—अ०[हिं० झननन] झन झन शब्द होना।

स० झन झन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झनवाँ—पु०[देश०]एक प्रकार का धान।

झनस—पु०[?] पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमड़ा मढा हुआ होता था।

झनाझन—स्त्री०[अनु०] झनझन शब्द। झकार।

क्रि० वि० झन झन शब्द करते हुए।

झनिया†—वि०=झीना।

झन्नाना†—अ०=झनझनाना।

झन्नाहट—स्त्री०=झनझनाहट।

झप—स्त्री०[स० झप या हिं० झपना] एकाएक किसी चीज के ऊँचाई पर से गिर पडने की अवस्था या भाव।

मुहा०—(गुड्डी या पतंग का) झप खाना=उडती हुई गुड्डी या पतग का एकाएक पेंदे के बल नीचे गिर पडना।

क्रि० वि० जल्दी से। झटपट।

झपक—स्त्री०[हिं० झपकना]१ झपकने अर्थात् बार-बार पलके खोलने और बद करने की क्रिया या भाव। २ एक बार पलक गिरने मे लगनेवाला समय। ३ झपकी।

झपकना—अ०[स० झप]१. पलकें गिरना। २ पलको का उठना और गिरना या खुलना और बद होना। ३ झपकी लेना। ऊँघना।

स०=झपकाना।

†अ०=झेंपना।

†अ०=झपटना।
झपका—पु०[अनु०]हवा का झोंका। (लश०)
झपकाना—स०[अनु०]१ पलकें गिराना। २ पलकें उठा तथा गिराकर आँखें खोलना और बंद करना।
झपकी—स्त्री०[हिं० झपकना] १ झपकने या झपकाने की क्रिया या भाव। २ वह नींद जो पलकें गिरने से आरम्भ होती है और कुछ ही क्षणों बाद पलकें खुल जाने के कारण टूट जाती हो। हलकी नींद।
क्रि० प्र०—आना।—लगना।—लेना।
स्त्री०[अनु०]१ वह कपड़ा जिससे अनाज ओसाते हैं। २ धोखा।
झपकौहाँ*—वि० [हिं० झपना] [स्त्री० झपकौही] बार बार या रह-रहकर झपकनेवाला या झपकता हुआ। (आलस्य, तंद्रा, निद्रा आदि के आगमन का सूचक) जैसे—झपकौहे नयन, झपकौही पलकें।
झपट—स्त्री०[स० झप]१ झपटने अर्थात् तेजी से आगे बढकर किसी पर आक्रमण करने की क्रिया या भाव। २ दे० 'झड़प'।
झपटना—अ०[सं० झप=कूदना] १. वेगपूर्वक किसी की ओर बढना। २ किसी को पकडने अथवा किसी के हाथ मे कोई चीज छीन लेने के लिए उस पर वेगपूर्वक आक्रमण करना। जैसे—बिल्ली का चूहे पर झपटना। चील का मास पर झपटना।
स० झपटकर या तेजी से बढकर कोई चीज ले लेना।
झपटान†—स्त्री०=झपट।
झपटाना—स० [हिं० झपटना का प्रे० रूप] किसी को झपटने मे प्रवृत्त करना। जैसे—कुत्ते को बिल्ली पर झपटाना।
झपट्ट†—स्त्री०=झपट।
झपट्टा—पु० [हिं० झपट] १. झपटने की क्रिया या भाव। झपट। २ किसी से कुछ सहसा छीन लेने के लिए उस पर किया जानेवाला आक्रमण।
क्रि० प्र०—मारना।
पद—चील झपट्टा =चील की तरह किसी पर झपटकर कोई चीज छीन लेने की क्रिया या भाव।
झपड़ियाना—अ०[हिं० झापड़+इयाना (प्रत्य०)]लगातार कई झापड़ या थप्पड लगाना।
झपताल—पु०[देश०] संगीत मे पाँच मात्राओं का एक ताल।
झपना—अ०[हिं० झपकना]१ पलक गिरना। २ किसी वस्तु का ऊपर से नीचे की ओर एकाएक आना। जैसे—गुड्डी या पतंग का झपना।
†अ०=झेंपना।
पु०[स्त्री० अल्पा० झपनी]किसी पात्र का ढकना।
झपनी†—स्त्री० [हिं० झाँपना=ढकना] १. वह जिससे कोई चीज ढकी जाय। ढकना। ढक्कन। २. छोटी ढक्कनदार पिटारी।
झपलैया†—स्त्री०[हिं० झँपोला] छोटी टोकरी।
झपवाना—स०[हिं० झपाना का प्रे० रूप] किसी को झपाने अर्थात् पलकें मूँदने मे प्रवृत्त करना।
झपस—स्त्री०[हिं० झपसना] १ झपसने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ मार्ग मे बाधक होनेवाले पेड़ की झुकी हुई डाल। (कहार)
झपसट†—स्त्री० [अनु०] छल। धोखे-बाजी। जैसे—तुम तो अपना काम झपसट मे ही निकाल लेते हो।
झपसना—अ०[हिं० झँपना+ढँकना] पेड़-पौधों, लताओं आदि का खूब अच्छी तरह चारों ओर फैलना।
झपाका—पु०[हिं० झप] जल्दी। शीघ्रता।
क्रि० वि० बहुत जल्दी या तेजी से। चटपट। तुरन्त।
झपाट†—क्रि० वि०=झटपट।
झपाटा†—पु०=झपट्टा।
झपाना—स०[हिं० झपना]१ पलकें गिराना या मूँदना। झपकाना। २. झुकाना।
अ०=झेंपना (लज्जित होना)।
स० ऐसा काम करना जिससे कोई झेंपे। लज्जित करना।
झपाव—पु०[देश०] घास काटने का एक उपकरण।
झपित—वि०[हिं० झपना]१. झपा या मुँदा हुआ। २ जो झप या झपक रहा हो। बार बार बन्द होता हुआ। ३. झेंपा हुआ। लज्जित।
झपिया—स्त्री०[देश०]१. गले मे पहनने का पुरानी चाल का हँसुली के आकार का एक गहना जिसके बीच में कोई नग जडा होता है। २ पिटारी।
झपेट†—स्त्री०[हिं० झपेटना] १. झपेटने की क्रिया या भाव। २. झपेटे जाने की अवस्था या भाव।
झपेटना—स०[हिं० झपटना] १ सहसा आक्रमण करना। झपटना। २. झपटकर किसी से कुछ छीन अथवा किसी को पकड या दबोच लेना।
झपेटा—पुं० [हिं० झपेटना] १ झपेटे जाने या किसी की झपट मे आने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—भूत-प्रेत के झपेटे मे आना या पड़ना। २ हवा का झोंका। झकोरा। ३ दे० 'झपट'। ४. दे० 'झिड़की'।
झपोला—पुं०[स्त्री० झपोली]=झँपोला (छोटी टोकरी)।
झप्पड़†—पुं०=झापड।
झप्पर†—पुं० झापड।
झप्पान†—पुं०=झँपान (एक प्रकार की पालकी या सवारी)।
झप्पानी—पुं०[हिं० झप्पान] झप्पान अर्थात् पालकी उठानेवाला आदमी।
झब-झबी —स्त्री० [देश०] कान मे पहनने का एक प्रकार का तिकोना गहना।
झबड़ा†—वि०=झबरा।
झबघरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास जो गेहूँ की फसल के लिए हानिकारक होती है।
झबरा—वि०[अनु०] [स्त्री० झबरी] (पशु) जिसके अंगों या शरीर मे बड़े-बड़े बाल हों। जैसे—झबरा कुत्ता, झबरी बिल्ली।
†पु०=भालू। (कलंदर)
झबरीला†—वि०[स्त्री० झबरीली]=झबरा।
झबरैरा—वि० =झबरीला (झबरा)।
झबा†—पुं०=झब्बा।
झबार†—पुं० दे० 'झगड़ा'।
झबिया—स्त्री०[हिं० झब्बा का स्त्री० अल्पा०] १ छोटा झब्बा। छोटा फुँदना। २. बहुत छोटी कटोरियों के आकार के वे छोटे-छोटे टुकडे जो शोभा के लिए जोशन, बाजूबंद आदि गहनो मे लगाए जाते हैं।

स्त्री०[हिं० झावा का स्त्री० अल्पा०] छोटा झावा।

झबुआ†—वि०=झबरा।

झबूंकना—अ०१ =चमकना। २ =चौकना।

झब्बा—पु०[अनु०] १ धागे के छोटे-छोटे टुकडो को बीच मे एक साथ बाँधकर बनाया जानेवाला गुच्छा या फुँदना जो कपडो, गहनो आदि मे शोभा के लिए लगाया जाता है। २ गुच्छा।

झमक—स्त्री०[हिं० झमकना]१ झमकने की क्रिया या भाव। २. झम झम के रूप मे होनेवाला शब्द। ३ तीव्र उजाला या प्रकाश। ४. ठसक। नखरा। (क्व०)

झमकड़ा†—पु०=झमक।

झमकना—अ० [अनु० झमझम]१ रह-रहकर परन्तु तेजी से चमकना। २ झमझम शब्द होना। ३ झमझम शब्द करते हुए चलना-फिरना या उछलना-कूदना। ४ अकड, ऐठ या ठसक दिखाना। ५. अधिक मात्रा या तीव्र रूप मे उपस्थित होना। छाना। जैसे—आँखो मे नीद झमकना।

स०=झमकाना।

झमकाना—स०[हिं० झमकना का स० रूप]१ ऐसा काम करना जिससे कोई चीज खूब झमके या अपनी चमक-दमक दिखलावे। जैसे—कपडे, गहने या हथियार झमकाना। २. झमझम शब्द उत्पन्न करना।

झमकारा—वि० [हिं० झमझम] १ झमकनेवाला। २. (बादल) जो बरसने को हो।

झमकीला†—वि०[हिं० झमकना+इला(प्रत्य०)] १ चमकीला। २ अकड़ या ऐंठ दिखानेवाला।

झमपका†—पु०=झमाका।

झमझम—स्त्री०[अनु०]१. घुंघरुओ आदि के बजने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। २ छोटी छोटी बूंदो की वर्षा का शब्द। ३ चमक-दमक। वि०१ झमझम शब्द करता हुआ। जैसे—झमझम पानी बरसना। २ खूब चमकता या दमकता हुआ।

क्रि० वि० १ झमझम शब्द करते हुए। जैसे—पानी का झमझम बरसना। २. दे० 'झमाझम'।

झमझमाना—अ०[अनु०]१. झमझम शब्द होना। २ खूब चमक-दमक से युक्त होना। चमचमाना।

स०१ झमझम शब्द उत्पन्न करना। २. चमक-दमक से युक्त करना। ३ चमक-दमक दिखलाना। जैसे—कपडे या गहने झमझमाना।

झमझमाहट—स्त्री०[अनु०]१ झमझम शब्द होने की अवस्था या भाव। २ खूब चमकते हुए होने की अवस्था या भाव।

झमना—अ०[अनु०]१ पलको आदि का गिरना। झपकना। २. किसी के आगे नम्रतापूर्वक झुकना। ३ चारो ओर से आकर एकत्र होना। ४ दे० 'झमाना'।

झमाका—पु०[अनु०]१ किसी प्रकार उत्पन्न होनेवाला झमझम शब्द। जैसे—गहनो या घुंघरुओ का झमाका। २ ठसक। नखरा। (क्व०) क्रि० वि०१. झमझम शब्द करते हुए। २ झट से। चटपट। तुरन्त।

झमाझम—क्रि० वि०[अनु०]१. झमझम शब्द करते हुए। जैसे—पानी झमाझम बरस रहा था। २ चमचमाते हुए। काति या दमक के साथ। जैसे—रेशमी कपडो का झमाझम चमकना।

वि०१. झमाझम शब्द करता हुआ। २ खूब चमकता-दमकता हुआ।

झमाट†—पु०=झुरमुट।

झमाना—अ०[अनु०]१. पलको का गिरना या झपकना। २ कुठित या लज्जित होना। (पूरब)

स० कुछ या कोई चीज झमने मे प्रवृत्त करना।

अ०[हिं० झाम=झुड] इकट्ठा होना। एकत्र होना।

अ०, स०=झँवाना।

झमूरा—वि०[?](पशु) जिसके सारे शरीर पर घने और लबे बाल हो। झबरा।

पु०१ घने और घुंघराले बालोवाला छोटा सुन्दर बच्चा। २ नटो और बाजीगरो के साथ रहनेवाला लडका जो प्राय अनेक प्रकार के करतब या खेल दिखलाता है। ३ भालू। (कलदर और मदारी)

झमेला—पु०[अनु० झाँव झाँव]१ कोई ऐसी पेचीली बात जिसमे दोनो पक्ष आपस मे झाँव-झाँव करते हो। २ ऐसी झझट या बखेडा जिसका निपटारा सहज मे न हो सकता हो। ३ ऐसा काम जिसके सपादन मे अनेक प्रकार की विपत्तियाँ खडी होती हो। बखेडा। ४ अव्यवस्थित या विश्रृखल जन-समूह। बहुत से लोगो की भीड-भाड। (क्व०)

झमेलिया—पु०[हिं० झमेला+इया (प्रत्य०)]१ वह जो जान-बूझकर और प्राय झमेला खडा किया करता हो। २ झगड़ा करनेवाला व्यक्ति।

झर—स्त्री०[स०√झॄ (झरना)+अच्]१ पानी का झरना। निर्झर। सोता। २. समूह। ३ तेजी। वेग। ३ पानी की (या और किसी चीज की) लगातार होनेवाली झडी। ४ आग की लपट। ५ दे० 'झडी'।

स्त्री० [हिं० झाल का पुराना रूप]१ ज्वाला। जलना। २ गरमी। ताप। उदा०—नैंक न झुरसी विरह-झर नेह लता कुम्हलाति।—बिहारी।

झरक†—स्त्री०=झलक।

झरकना—अ०१ =झिडकना। २ झनखना।

झरझर—स्त्री०[अनु०] तेज हवा के चलने से अथवा उसके किसी चीज के टकराने से होनेवाला शब्द।

क्रि० वि० झरझर शब्द करते हुए।

झरझराना—अ०[हिं० झरझर]१ झरझर शब्द होना। २ झरझर शब्द करते हुए किसी चीज का चलना, जलना या बहना।

स० इस प्रकार किसी चीज को गिराना कि वह झरझर शब्द करे।

झरन—स्त्री०[हिं० झरना]१ झरने की क्रिया या भाव। २ झर कर निकलनेवाली या निकली हुई चीज। ३ दे० 'झडन'।

झरना—पु०[स० झर][स्त्री० अल्पा० झरनी]१ पहाडो आदि मे ऊँचे स्थान से नीचे गिरनेवाला जल-प्रवाह। २ लगातार बहनेवाली पानी की कोई प्राकृतिक छोटी जल-धारा। चश्मा। सोता। ३ कपडो की बुनाई का वह प्रकार जिसमे थोडी-थोडी दूर पर दूसरे रग के सूत इस प्रकार लगाये जाते है जो देखने मे धाराओ के समान जान पडते है। जैसे—झरने की साडी।

वि० झरनेवाला।

अ० ऊँचे स्थान से पानी या और किसी चीज का लगातार नीचे गिरना।

पु०[स० क्षरण][स्त्री० अल्पा० झरनी]१ अनाज छानने की एक प्रकार

की बडी छलनी। २. लवी डडी की एक झँझरीदार चिपटी कलछी। पौना।

†अ०=झडना।

झरनी—स्त्री०हिं० 'झरना' का स्त्री० अल्पा० रूप।

झरप†—स्त्री० [अनु०] १.=झडप। २=झकोरा। ३=तेजी। वेग। ४=चाँड। टेक। ५ चिक। चिलमन। ६. झरोखा।

झरपना—अ०, स०=झडपना।

अ० [अनु०] बौछार मारना।

झरपेटा†—पु०=झपेटा।

झरफ *—स्त्री०=झरिफ (चिलमन)।

झरबेर†—पु०=झड-बेरी।

झरबेरी†—स्त्री०=झड-बेरी।

झरवाना†—स०=झडवाना।

झरसना*—अ०[अनु०]१ झुलसना। २ मुरझाना।

स०१. झुलसना। २ मुरझाने या सूखने मे प्रवृत्त करना।

झरहरना†—अ०=झरझराना।

झरहरा†—वि०=झँझरा।

झरहराना† स०=झरझराना।

झरहिल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिडिया।

झरा—पु०[देश०] एक प्रकार का धान।

झराझर—क्रि० वि०[अनु०] १. झरझर शब्द करते हुए। २ निरतर। लगातार। ३ जल्दी-जल्दी या वेगपूर्वक।

झरापना†—अ०=झरपना (झडपना)।

झरावोर—पु०, वि०=झलाबोर।

झरार—वि० [हिं० झाल] झालदार। चरपरा।

झराहर—पु०[स० ज्वालाधर] सूर्य।

झरि—स्त्री०=झडी।

अव्य०[?] १ बिलकुल। २ कुल। सब।

पु०=झार।

झरिफ*—पु०[हिं० झरप] १ चिक। [चिलमन। २ परदा।

झरी—स्त्री०[हिं० झरना]१ पानी [का] झरना। सोता। चश्मा। २ वह धन जो हाट या बाजार मे बैठ[कर सौदा बेचनेवाले छोटे दूकानदारो से नित्य प्रति कर के रूप मे [उ]गाहा जाता है। ३ दो तख्तो, पत्थरो आदि के बीच मे पड़नेवाला [थोडा-सा अवकाश। दरज। ४. दे० 'झडी'।

झरुआ—पु०[देश०] एक प्रकार [की] घास।

झरोखा—पु०[अनु० झरझर=वायु [के बहने का शब्द+ओख=गावाक्ष] १. दीवार मे बनी हुई जालीदार छोटी [खि]डकी। २. खिड़की।

झर्झर—पु०[स०झर्झ√ रा (दान)+[क] १ एक प्रकार का पुराना बाजा जिस प[र] चमडा मढा हुआ होता [था। २. झाँझ। ३. पैर मे पहनने की झाँझ। ४ कलियुग। ५. एक [प्रा]चीन नद। ६ रसोई मे काम आनेवाला झरना नामक उपकरण। पौना।

झर्झरक—पु०[स० झ[र्झर]+कन्] कलियुग।

झर्झरा—स्त्री०[स० झ[र्झर]+टाप्] १. तारादेवी का एक [नाम]। २. रडी। वेश्या।

झर्झरावती—स्त्री०[स० झर्झरा+मतुप्, वत्व, ङीप्] १. गंगा। २. कटसरैया (क्षुप)।

झर्झरिका—स्त्री०[स० झर्झरा+कन्, टाप्, इत्व] तारादेवी।

झर्झरी (रिन्)—पु०[स० झर्झर+इनि] शिव।

स्त्री०[स० झर्झर+ङीप्] झाँझ नामक बाजा।

झर्झरीक—पु०[स० झर्झर+ईकन्] १ देश। २ देह। शरीर। ३ चित्र। तस्वीर।

झर्प†—स्त्री०=झडप।

झर्रा—पु०[देश०] १ एक प्रकार की छोटी चिड़िया। २ बया नामक पक्षी।

झर्राटा—पु०[अनु०] कपडा फटने अथवा फाडे जाने पर होनेवाला शब्द।

†क्रि० वि० चटपट। तुरन्त।

झर्रैया—पु० [देश०] बया (पक्षी)।

झल—पु०[हिं० झार; स० झल=ताप] १. स्वाद आदि की तीक्ष्णता। झाल। २. जलन। ताप। दाह। ३ काम-वासना। सभोग की प्रबल इच्छा। ४ किसी बात की प्रबल कामना या इच्छा। ५ क्रोध। गुस्सा। ६. झक। सनक। ७. उन्माद। पागलपन। ८. दल। ९ राशि। समूह।

झलक—स्त्री० [सं० झल्लिका=चमक] १ झलकने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ ऐसा क्षणिक दर्शन या प्रत्यक्षीकरण जिसमे किसी चीज के रूप-रग, आकार-प्रकार आदि का पूरा-पूरा ज्ञान तो न हो, पर उसका कुछ आभास अवश्य मिल जाय। ३. ऐसा दृश्य जिससे किसी चीज का सक्षिप्त परिचय मात्र मिलता हो। ४. चित्रकला मे, वह आभा या रगत जो किसी समूचे चित्र मे व्याप्त हो। ५ चमक। प्रभा।

झलकदार—वि०[हिं० झलक+फा० दार] जिसमे आभा या चमक हो। चमकीला।

झलकना—अ०[हिं० झलक+ना (प्रत्य०)] १. इस प्रकार किसी के सामने एकाएक कुछ ही क्षणो के लिए उपस्थित होना और तुरत ही अतर्धान या अदृश्य हो जाना कि उसके आकार-प्रकार, रूप-रग आदि का ठीक और पूरा भान न हो पाये। २ लाक्षणिक अर्थ मे किसी बात आदि का आभास मात्र मिलना। जैसे—उसकी बात से झलकता था कि पुस्तक उसी ने चुराई है। ३. चमकना।

झलकनि†—स्त्री०=झलक।

झलका—पु०[सं० ज्वल=जलना] छाला। फफोला। उदा०—झलका झलकत पायन ऐसे।—तुलसी।

झलकाना—स०[हिं० झलकना का स० रूप] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज झलके या कुछ चमकती हुई थोडी देर के लिए सामने आये। २ चमकाना। ३. बात-चीत, व्यवहार आदि मे कोई अभिप्राय या आशय बहुत ही अस्पष्ट या कुछ छिपे हुए रूप मे लक्षित कराना। आभास देना। दरसाना।

झलकी—स्त्री०[हिं० झलक] १. आकाशवाणी रेडियो से प्रसारित होनेवाली एक प्रकार की बहुत छोटी नाटिका जिसके अगो को परस्पर सम्बद्ध करने के लिए व्याख्यात्मक छोटी वार्ता भी होती है। इनमे दैनिक जीवन की सामान्य घटनाओ का उल्लेख होता है। (आधुनिक) २.=झलक।

झलझल—स्त्री०[सं० झलज्झल] चमक-दमक, विशेषत गहनों की चमक-दमक।
वि० खूब चमकता-दमकता हुआ।
क्रि० वि० १ चमक-दमक से। २ तीव्र आभा या प्रकाश से युक्त होकर। जैसे—गहनो का झलझल चमकना।

झलझलाना—अ०[अनु०] खूब चमकना।
स० खूब चमकाना।

झलझलाहट—स्त्री०[हिं० झल झल +आहट (प्रत्य०)] झलझलाने अर्थात् चमकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

झलना—स० [हिं० झलझल (हिलना) से अनु०] १. हवा करने के लिए पखा या और कोई चीज बार-बार चलाना या हिलाना-डुलाना। २ धक्का देकर आगे बढाना। ढकेलना।
अ० किसी चीज के अगले भाग का इधर-उधर हिलना-डोलना। (क्व०)
स०=झेलना। (देखें)
अ०[हिं० झल्ला=पागल ?] शेखी बघारना। डीग हाँकना।
अ०[हिं० झालना का अ०] धातु आदि की चीजों का झाला या टाँके से जोडा जाना।

झलमल—स्त्री०[सं० ज्वल=दीप्ति] १ अँधेरे के बीच मे रह-रहकर होने वाला मध्यम या हल्का प्रकाश। २. अधकार। अँधेरा। ३. चमक-दमक।
वि० १. जिसमे अधकार के साथ कुछ-कुछ प्रकाश भी हो। २ चमकीला।

झलमला†—वि०=झिलमिला।

झलमलाना—अ०[हिं० झलमल] १. रह-रहकर चमकना। चमचमाना। २. (दीपक का) रह-रहकर कभी तीव्र और कभी मद प्रकाश देना।
स० १ रह-रहकर चमकाना। २ ऐसी क्रिया करना जिससे कभी कुछ तीव्र और कभी कुछ मद प्रकाश निकले।

झलरा† पु०=झालर (पकवान)।

झलराना—स०[हिं० झालर] १ झालर के रूप मे बनाना। झालर का रूप देना। २ झालर टाँकना या लगाना।
अ० झालर के रूप में या यों ही फैलकर छाना या छितराना।

झलरी—स्त्री०[सं० झल√रा+ड-ङीप्] १. हुडुक नाम का बाजा। २. झाँझ।

झलवाना—स०[हिं० झलना] झलने का काम दूसरे से कराना। जैसे—पखा झलवाना।
स०[हिं० झालना] झालने का काम दूसरे से कराना।

झलहल—वि०[अनु० झलाझल] चमकदार।
पु०=झलमल।
क्रि० वि०=झल झल।

झलहाया—वि०[हिं० झल] [स्त्री० [झलहाई] १ जिसे किसी प्रकार की झल या सनक हो। २ डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

झला—स्त्री०[सं०] आतप। धूप।
पु०[हिं० झड] १ हलकी वर्षा। २ ढेर। राशि। ३ झुड। दल।
पु०[हिं० झलना] पखा जो झला जाता है।
स्त्री०=झालर।

झलाई—स्त्री० [हिं० झालना] कडी धातुओ को मुलायम धातुओ के टाँके से जोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी। (सोल्डरिंग)

झलाऊ—वि०[हिं० झोल?] १ जिसमे झोल हो। झोलदार। २ ढीला-ढाला।

झलाझल—वि० [अनु०] [भाव० झलाझली] बहुत अधिक चमक-दमक वाला। चमकता हुआ।
क्रि० वि० चमकते हुए। प्रकाश के साथ।
पु० एक प्रकार का झकीला कपडा।

झलाझली—स्त्री० [अनु०] झलझल या बहुत अधिक चमकीले होने की अवस्था या भाव।
वि०, क्रि० वि०=झलाझल।
स्त्री०[हिं० झलना] पखे आदि का बराबर झला और झलवाया जाना।

झलाना—स०[हिं० झलना] झलने का काम दूसरे से कराना। झलवाना।

झलाबोर—पु० [हिं० झलझल=चमक] १ जरी आदि के बने हुए दुपट्टों या साडियों का आँचल। २ कोई ऐसी चीज जिस पर कारचोबी या जरी का काम किया हुआ हो। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी। ४. चमक- दमक। ५ कँटीली झाडी।
वि० खूब चमक-दमकवाला।

झलामल†—स्त्री, वि०=झलमल।

झलारा—वि० [हिं० झाल] [स्त्री० झलारी] बहुत ही तीक्ष्ण स्वाद-वाला। झालदार।

झलाहा—वि०[हिं० झाल] [स्त्री० झलाही] १ बहुत तीक्ष्ण स्वाद-वाला। झालदार। २. ईर्ष्या या डाह करनेवाला। ३. बहुत ही उग्र या कठोर स्वभाववाला। उदा०—मैं अपने बनडे से पानी भराऊँ, ननदी झलाही को क्या है मलोला।—स्त्रियो का गीत।

झलि—स्त्री०[सं०] एक तरह की सुपारी।

झल्ल—पुं०[सं०√झर्च्छ्+क्विप्√ला+क] १ वह जिसके वैदिक संस्कार न हुए हों। व्रात्य। २ एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति। ३. भाँड। विदूषक। ४ हुडुक नाम का बाजा। पटह। ५ आग की लपट। ज्वाला।
स्त्री०[हिं० झल्ला] झल्ले होने की अवस्था या भाव। पागलपन। सनक।

झल्ल-कंठ—पुं० [ब०स०] कबूतर।

झल्लक—पु०[सं० झल्ल+कन्] १ काँसे का बना हुआ करताल। झाँझ। २. मँजीरा।

झल्लकी—स्त्री०[सं० झल्लक+ङीप्]=झल्लक।

झल्लना†—अ०[हिं० झल्ल] १ बावला या पागल होना। २. क्रुद्ध होना। ३ डींग मारना।
†स०=झलना।

झल्लरा—स्त्री०[√झर्च्छ्+अरन्, पृषो० सिद्धि] १ पुरानी चाल का चमडे से मढा हुआ एक बाजा। हुडुक। २. झाँझ। ३ पसीना। स्वेद। ४. घुँघराले बाल। ५ शुद्धता।

झल्लरी—स्त्री०[सं० झल्लर+ङीप्]=झल्लरा।

झल्ला—पु०[देश०] [स्त्री० झल्ली] १. बहुत बडा टोकरा। झाबा। २ वर्षा की ऐसी झडी जिसके साथ तेज हवा भी हो। झझा। ३. तमाकू के पत्तो पर उभरनेवाले चकत्ते या दाने।

वि०[हिं० झल्लाना] [स्त्री० झल्ली] कम बुद्धि होने के कारण पागलों जैसा आचरण करनेवाला। सिड़ी।

वि०[हिं० झाल] [स्त्री० झल्ली] बहुत ही तरल या पतला। जैसे—झल्ली दाल, तरकारी का झल्ला रसा।

झल्लाना—अ०[हिं० झल] १. क्रुद्ध होकर या खीझकर बहुत ही तीक्ष्ण स्वर में बोलना। २. बिगडते हुए बोलना।

स० किसी को खिजलाने या खीझने में प्रवृत्त करना।

झल्लिका—स्त्री०[स० झल्ली√कै (प्रकाश करना)+क, पृषो० सिद्धि] १. शरीर पोंछने का कपडा। अँगोछा। २. शरीर को मलकर पोंछने पर निकलनेवाली मैल। ३. चमक। दीप्ति। ४. सूर्य की किरणों का तेज या प्रकाश।

झल्ली—स्त्री०[स० झल्ल+ङीप्] एक प्रकार का चमड़े से मढा हुआ छोटा बाजा।

वि० हिं० 'झल्ला' का स्त्री० रूप।

झल्लीवाला—पुं० [हिं० झल्ली] [स्त्री० झल्लीवाली] वह व्यक्ति जो टोकरे में बोझ रखकर ढोता हो।

झल्लीषक—पु०[स०] एक तरह का नृत्य।

झवर†—पु०[हिं० झगडा] झगड़ा।

झवारि†—स्त्री०=झवर (झगडा)।

झष—पु०[स०√झष् (मारना)+अच्] १. मछली। २ मगर। ३ मकर राशि। ४. मीन राशि। ५. ताप। ६ वन।

†स्त्री०=झख।

झष-केतु(केतन)—पु० [ब० स०] कामदेव। मदन।

झष-ध्वज—पु०[ब० स०] कामदेव।

झषना†—अ० [हिं० झख] १. झख मारना। २ दे० 'झीखना'।

झष-निकेत—पु०[प० त०] वह स्थान जहाँ मछलियाँ रहती हों। जैसे—जलाशय, समुद्र आदि।

झष-राज—पु०[प० त०] मकर या मगर नामक जल-जन्तु।

झषांक—पु०[झष-अंक, ब० स०] कामदेव। मदन।

झषा†—स्त्री०[स०√झष्+अच्-टाप्] नागवला। गुलसकरी।

झषाशन—पु०[स० झष√अश् (भक्षण)+ल्यु-अन] सूँस (जल-जंतु)।

झषोदरी—स्त्री०[झष-उदर, ब० स०, ङीप्] व्यास की माता मत्स्यगंधा का एक नाम।

झसना†—स०=झँसना।

झहँगी—वि०[फा० जंगी] १ जंग अर्थात् युद्ध-संबंधी। २ युद्ध में काम आनेवाला। ३ बहुत बडा। (राज०)

झहनना*—अ०[अनु०] १. झन झन शब्द होना। २. झल्लाना। ३ शरीर के रोएँ खड़े होना। रोमांच होना। ४ चकित या स्तब्ध होना। सन्नाटे में आना। सकपका जाना।

स०=झहनाना।

झहनाना—स०[हिं० झहनना का सकर्मक] १. झनझन शब्द उत्पन्न करना। २ किसी प्रकार किसी के शरीर में रोमांच उत्पन्न करना। ३ ऐसा काम करना जिससे कोई चकित हो जाय या सन्नाटे में आ जाय।

झहरना—अ० [अनु०] १ झर झर शब्द होना। जैसे—हवा से पत्तों का झहरना। २. हिलते-डुलते रहना। ३. सामने आना। उपस्थित होना। ४. शिथिल या ढीला होना। ५ दुखी होना।

अ० १.=झल्लाना। २.=झरना।

झहराना—स० [हिं० झहरना] किसी को झहरने में प्रवृत्त करना।

अ०=झहरना।

झाँई—स्त्री० [सं० छाया] १. छाया। परछाईं। उदा०—जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय।—बिहारी। २ अंधकार। अँधेरा। ३. छल। धोखा।

मुहा०—झाँई देना या बताना=बातें बनाकर धोखा देना।

४. रक्त-विकार से मुँह पर पड़नेवाले काले धब्बे। ५ किसी प्रकार की काली छाया या हलका दाग। ६. आभा। झलक।

झाँई-झप्पा†—पु०=झाँसा।

झाँई-माँई—स्त्री०[अनु०] बहुत छोटे बच्चों का एक खेल जिसमें वे कुछ गाते हुए घूमते और झूमते हैं।

मुहा०—(कोई चीज) झाँईं माँईं हो जाना=गायब, गुम या लुप्त हो जाना।

झाँक—स्त्री०[हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। २ झलक।

स्त्री०[?] आग। अग्नि। उदा०—नई गोरी नये बालमा नई होरी की झाँक।—बुंदेल० लो० गी०।

†पु०=चीतल (जंगली हिरन)।

झाँकना—अ०[स० अध्यक्ष, प्रा० अज्झक्ख] १. नीचे की ओर की चीज देखने के लिए गरदन झुकाकर तथा आँखें नीची करके उसकी ओर ताकना। देखने के लिए झुकना। जैसे—खिडकी में से या छत पर से झाँकना। २. आड में से दाहिने या बाएँ कुछ झुककर या किसी संधि में से टोह लेने के लिए देखना। ३ कोई काम करने के लिए उसकी ओर प्रवृत्त होना। उदा०—यही ठीक है धनुष छोड़कर कोडा झाँको।—मैथिलीशरण।

झाँकनी—स्त्री०=झाँकी।

झाँकर†—पु०=झखाड।

झाँका—पु० [हिं० झाँकना] झरोखा, जिसमें से झाँककर देखते हैं।

पु०=खाँचा (रहठे आदि का टोरा)।

झाँकी—स्त्री० [हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। २. किसी पूज्य या प्रिय वस्तु या व्यक्ति का सुखद अवलोकन। दर्शन। ३. सहसा कुछ देर के लिए एक बार दिखाई पडने या सामने आने की क्रिया या भाव। (ग्लांस) ४. कोई मनोहर या सुंदर दृश्य। ५ किसी बात का किया जानेवाला संक्षिप्त परिचय या परिज्ञान। जैसे—कश्मीर और बुंदेलखंड की झाँकी। ६. छोटी खिडकी।

झाँकृत—पु०[स० झंकृत+अण्] १ पैरों में पहनने का झांझन नामक आभूषण। २. झनझन करने या झरने का शब्द।

झाँख—पु०[देश०] जंगली हिरनों की एक जाति।

झाँखना*—अ०=झीखना।

झाँखर—पु०[हिं० झखाड] १ अरहर की वे खूँटियाँ जो फसल काटने के बाद खेत में रह जाती हैं। २. झाड-झखाड।

वि० १. जिसके सारे तल में बहुत से छोटे-छोटे छेद हों। २ ढीली बुनावटवाला।

झाँगला—वि०[देश०] ढीला-ढाला (कपडा)।
पु० एक प्रकार का ढीला-ढाला कुरता। झगा।
झाँगा†—पु०[?] चितकबरे रग का एक छोटा कीड़ा जो गोभी, सरसो आदि के पत्तो मे लगकर उन्हे खाता या उनका रस चूसता है।
पु०=झगा (वच्चों का कुरता)।
झाँजन—स्त्री०=झाँझन।
झाँझ—स्त्री०[स० झर्झर] [स्त्री० अल्पा० झाँझडी] १ काँसे, पीतल आदि के मोटे पत्तर की वनी हुई एक प्रकार की कम उभारदार कटोरियो का जोडा जो पूजन आदि के समय एक दूसरी पर आघात करके वजाई जाती है। छैना।
क्रि० प्र०—पीटना।—वजाना।
२ क्रोध। गुस्सा। ३. किसी दूषित मनोविकार का आवेग। ४ पाजीपन। शरारत।
क्रि० प्र०—उतरना।—चढना।—निकलना।
५ ऐसा जलाशय जिसका जल सूख गया हो।
†स्त्री०=झाँझन।
झाँझड़ी*—स्त्री० १ =छोटी झाँझी। २.=झाँझन (पैर मे पहनने का गहना)।
झाँझन*—स्त्री०[अनु०] चाँदी आदि का वना हुआ नक्काशीदार कडा जिसे स्त्रियाँ पैरो मे पहनती हैं और जिससे झनझन शब्द निकलता है। पैंजनी। पायल।
झाँझर†—स्त्री०[अनु०] १. झाँझन। पैंजनी नाम का गहना जो पैर मे पहना जाता है। २ आटा आदि छानने की छानना।
वि०[स० जर्जर] १ झँझरा। २ जर्जर। ३ बहुत ही खिन्न और दु खी। कष्ट या दु ख से क्षीण या जर्जर। (पूरव) उदा०—एक हम झाँझरि हरि विनु हो, पीलम मेल त्यागी।—स्त्रियो का गीत।
झाँझरी—स्त्री०[देश०] १ झाँझ नाम का वाजा। झाल। २. झाँझन या पैंजनी नाम का पैर मे पहनने का गहना।
झाँझा—पु०[हिं० झझारा] १ फसल के पत्ते आदि खा जानेवाले कुछ छोटे कीडो का एक वर्ग। २ वह वडा पौना जिससे कडाही मे सेव (नमकीन पकवान) छाना या गिराया जाता है। ३ घी मे भूनकर चीनी के साथ मिलाई हुई भाँग की पत्तियाँ जो यो ही फाँक ली जाती है।
पु० १. झझट या वखेडे की वात। २ तकरार। हुज्जत।
पु०=वडी झाँझ।
झाँझिया—पु० [हिं० झाँझ+इया (प्रत्य०)] वह जो झाँझ वजाता हो।
झाँझी—स्त्री० [हिं० झँझरी] १. एक उत्सव जिसमे वालिकाएँ रात के समय झँझरीदार हाँडी में दीपक रखकर गीत गाती हुई घर-घर जाती और वहाँ से पैसे या अनाज पाती है। २ उक्त अवसर या उत्सव पर गाये जानेवाले गीत।
झाँट—स्त्री०[स० जट, हिं० झड=वाल] १ पुरुष या स्त्री की जननेंद्रिय पर के वाल। उपस्थ पर के वाल। शष्प। पशम। २ वहुत ही तुच्छ और निकम्मी चीज।
पद—झाँट की झँटुल्ली=वहुत ही तुच्छ या हीन।

झाँटा†—पु०[देश०] झझट।
पु०=झाडू। (पूरव)
झाँटि†—स्त्री०=झाँट।
झाँप—स्त्री०[हिं० झाँपना] १ वह चीज जिससे कोई दूसरी चीज झाँपी या ढकी जाती हो। ऊपरी आवरण। जैसे—पिटारी की झाँप। २ वास्तु कला मे, खिडकी, दरवाजे आदि के ऊपर दीवार से वाहर निकली हुई वह रचना जो धूप, वर्षा के जल आदि को कमरे के अन्दर आने मे रुकावट उत्पन्न करती है। (शेड) ३. परदा। ४ टट्टी। ५ मस्तूल का झुकाव। ६ कान का एक आभूषण। ७ घोडे को गले मे पहनाई जानेवाली एक प्रकार की हुमेल या हैकल।
स्त्री०=झपकी।
†स्त्री०=उछल-कूद।
झाँपना—स०[स० उत्थापन, हिं० ढाँपना] १ ऊपर से आवरण डाल कर ढाँकना। ढकना। २ मलना। रगड़ना। उदा०—फिरि फिरि झाँपति है कहा रुचिर चरन के रग।—मतिराम। ३ पकडकर दवाना या दवोचना।
अ०=झेंपना।
झाँपा—पु०[हिं० झाँपना] [स्त्री० झाँपी] १ वह वडी टोकरी या दौरी जिससे दही, दूव आदि ढाँके जाते है। २ मूँज की वनी हुई एक प्रकार की वडी पिटारी।
†स्त्री०=झपकी।
झाँपो—स्त्री०[देश] १ खजन पक्षी। २ दुश्चरित्रा या पुश्चली स्त्री। (गाली)
झाँवना—स०[हिं० झाँवा+ना (प्रत्य०)] झाँवे से रगडकर (हाथ-पैर आदि) धोना।
स०, अ०=झँवाना।
झाँवर—पु०[?] वह नीची भूमि जिसमे वर्षा का पानी अधिक मात्रा मे रुकने के कारण मोटा अन्न अधिकता से उपजता हो। २ धान के लिए उपयुक्त नीची भूमि।
वि०[हिं० झाँवला] [स्त्री० झाँवली] १ झाँवे के रग का। काला। २ मलिन। मैला। ३ कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। ४. धीमा। मद। ५ सुस्त।
झाँवली—स्त्री०[हिं० झाँई] १ वहुत ही थोडे समय के लिए या एकाध क्षण कुछ दिखाई पडने की अवस्था या भाव। २ झलक। ३ आँख के कोने से देखने की अवस्था या भाव। कनखी।
मुहा०—झाँवली देना=आँख हिलाकर हलका-सा सकेत करना।
झाँवाँ—पु०[स० झामक] १ भट्ठे मे पकी हुई वह ईंट जो अधिक ताप लगने के कारण काली पड गई हो और कुछ टेढी भी हो गई हो। २ उक्त जली हुई ईंट का टुकडा जिसमे प्राय छोटे-छोटे छेद होते हैं तथा जिसका प्रयोग चीजो पर से दाग छुडाने और विशेषत पाँवो पर जमी हुई मैल रगडकर छुड़ाने के लिए होता है।
झाँसना—स० [हिं० झाँसा] झाँसा या धोखा देना। २ झाँसा या धोखा देकर किसी से कुछ ले लेना। झँसना।
झाँसा—पु०[स० अध्यास=मिथ्या ज्ञान, प्रा० अज्झास] १ किसी से कुछ झँसने या वसूल करने के लिए उसे समझाई जानेवाली उलटी-

सीधी बात। २. अपने काम निकालने के लिए कही जानेवाली कोई झूठी बात।

क्रि० प्र०—देना।—बताना।—में आना।

पद—झाँसा—पट्टी। (देखें)

झाँसा-पट्टी—स्त्री०[हि०] किसी को उलट-फेर की बातों में फुसलाकर दिया जानेवाला धोखा।

झाँसिया—पु०[हि० झाँसा+इया (प्रत्य०)] वह जो लोगों को झाँसा देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता हो।

झाँसी—पु०[देश०] तमाखू, धान आदि की फसल में लगनेवाला एक प्रकार का भूरे रंग का कीड़ा।

झाँसू—पु०[हि० झाँसा] झाँसिया। (दे०)

झा—पु०[सं० उपाध्याय, प्रा० उज्झाओ, हि० ओझा] १. मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि। २. गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।

झाँई—स्त्री०=झाईं।

झाऊ—पु०[सं० झाबुक] मौर पत्ती की जाति का एक पौधा जिसकी टहनियाँ औषध के काम आती हैं।

झाग—पु०[हि० गाज] १. किसी तरल पदार्थ को फेंटने आदि पर उसमें से निकलनेवाले तथा एक में मिले हुए असंख्य बुलबुलों का समूह। फेन। जैसे—तेल या दूध की झाग। २. रोग आदि के कारण मुँह में से निकलनेवाली वह थूक जिसमें बहुत अधिक बुलबुले हों।

क्रि० प्र०—उठना।—छूटना।—छोड़ना।—निकालना।—फेंकना।

झागड़ा—पु०=झगड़ा।

झागना—अ०[हि० झाग] झाग या फेन निकलना।

स० झाग या फेन उत्पन्न करना।

झाज—स्त्री०=झाँझ।

पुं०=जहाज।

झाझन—स्त्री०=झाँझन।

पुं०=झाऊ (पेड़)।

झाझा—वि० [सं० दग्ध?] [स्त्री० झाझी] १. जला हुआ। दग्ध। २. गहरा-गाढ़ा या तेज। जैसे—झाझा रंग।

झाट—पुं०[सं० √झट् (संहनना)+घञ्] १. कुंज। २. झाड़ी। ३. घाव को धोकर साफ करना।

झाटक-पट—पु०[हि० झटपट?] एक प्रकार की ताजीम जो राजपूताने के राज-दरबारों में अधिक प्रतिष्ठित सरदारों को मिला करती थी।

झाटल—पु०[सं० झाट√ला (लेना)+क] एक प्रकार का पेड़ जिसके बड़े-बड़े पत्ते होते हैं और फल घंटियों के समान लटकते हैं। आक की तरह इसकी शाखाओं से भी दूध निकलता है।

झाटा—स्त्री०[सं०√झट्+णिच्+अच्-टाप्] १. जूही। २. भुईं आँवला।

झाटामलक—पुं०[सं० झाट-अम्ल, ब०स०] तरबूज।

झाटिका—स्त्री०[सं० झाट+कन्-टाप्, इत्व] भुईं आँवला।

झाटी—स्त्री०=झाटिका।

झाड़—पुं०[सं० झाट] [स्त्री० अल्पा० झाड़ी] ऐसे छोटे पेड़ों या पौधों का वर्ग जिनकी पतली-पतली शाखाएँ आपस में उलझी हुई और जमीन से थोड़ी ही ऊँचाई पर छितरी या फैली हुई रहती हैं।

पद—झाड़ का काँटा=ऐसा झगड़ालू या हुज्जती आदमी जिससे पीछा छुड़ाना कठिन हो। झाड़-झंखाड़। (देखें स्वतंत्र शब्द)

२. उक्त झाड़ की तरह का एक प्रकार का अनेक शाखाओंवाला दीवे, मोमबत्तियाँ आदि जलाने का शीशे का बहुत बड़ा आधान जो कमरे की छत में शोभा के लिए लटकाया जाता है। ३. उक्त आकार या रूप की एक प्रकार की आतिशबाजी। ४. उक्त आकार या रूप का छीपियों का एक प्रकार का छापा। ५. एक प्रकार की समुद्री घास। जरस। जार। ६. एक ही तरह की बहुत-सी छोटी-बड़ी चीजों का बड़ा गुच्छा या लच्छा।

स्त्री०[हि० झाड़ना] १. झाड़ने की क्रिया या भाव। २. झाड़ने पर निकलने वाली धूल आदि। झाड़न। ३. मंत्र आदि पढ़कर किसी की प्रेत-बाधा, रोग आदि दूर करने का काम।

पद—झाड़-फूंक। (देखें)

४. क्रोधपूर्वक डाँटकर कही जानेवाली बात।

क्रि० प्र०—देना।—पड़ना।—बताना।—सुनाना।

५. कुश्ती में विपक्षी के किसी अंग को दिया जानेवाला झटका।

झाड़खंड—पु०=झारखंड।

झाड़-झंखाड़—पुं०[हि० झाड़+झंखाड़] १. काँटेदार झाड़ियों का समूह। २. व्यर्थ के पेड़-पौधों का समूह। निकम्मी, रद्दी और व्यर्थ की चीजों, विशेषतः काठ-कबाड़ का लगा हुआ ढेर।

झाड़दार—वि०[हि० झाड़+फा० दार] १. (पौधा या वृक्ष) जिसमें बहुत-सी घनी डालियाँ लगती हों। घना। सघन। २. काँटेदार। कँटीला। ३. जिस पर झाड़ों अर्थात् पेड़-पौधों की आकृतियाँ बनी हों। पु० १. एक प्रकार का कसीदा जिसमें पौधों और बेल-बूटों की आकृतियाँ कढ़ी होती हैं। २. उक्त प्रकार के बेल-बूटोंवाला कालीन या गलीचा।

झाड़न—स्त्री०[हि० झाड़ना] १. झाड़ने पर निकलनेवाली धूल अथवा रद्दी चीजें या उनके टुकड़े। २. वह कपड़ा जिससे अलमारियों, कुरसियों, चौकियों दरवाजों आदि पर पड़ी हुई धूल आदि झाड़ी और पोंछी जाती है।

झाड़ना—स०[सं० झर्झ=आघात करना] १. कोई चीज उठाकर उसे इस प्रकार झटका देना कि उस पर पड़ी या लगी हुई फालतू और रद्दी चीजें दूर जा गिरें। जैसे—चाँदनी या दरी झाड़ना। २. झाड़ू, झाड़न आदि की सहायता से किसी चीज के ऊपर पड़ी हुई धूल आदि साफ करना। जैसे—कमरे का फर्श झाड़ना। ३. ऐसा आघात करना कि कहीं लगी या सटी हुई चीज या चीजें कटकर या टूटकर अलग हो जायें या नीचे गिर पड़ें। जैसे—पेड़ में से आम या इमली झाड़ना। ४. डरा धमका कर या और किसी युक्ति से कुछ धन वसूल करना या रकम ऐंठना। झटकना। जैसे—जरा-सी बात में पुलिस ने दो सौ रुपए झाड़ लिये। ५. कुछ विशिष्ट प्रकार के शस्त्र इस प्रकार चारों ओर घुमाते हुए चलाना कि कोई पास आने का साहस न करे। जैसे—तलवार, पटा या लाठी झाड़ना। ६. जोर का आघात या प्रहार करना। जैसे—थप्पड़ या मुक्का झाड़ना। (क्व०) ७. पक्षियों का कुछ विशिष्ट ऋतुओं में, प्रकृत रूप से अपने पुराने पंख या पर गिराना जिससे उनके स्थान पर फिर से नये पंख या पर निकलें।

जैसे—यह पक्षी ग्रीष्मऋतु मे अपने पुराने पख झाडता है।८ कघी फेर कर सिर के वाल साफ करना। ९ मभोग या समागम करके वीर्य-पात करना। (वाजारू) १० तत्र-मत्र आदि का ऐसा प्रयोग करना कि किसी का कोई रोग अथवा उस (व्यक्ति) पर चढा हुआ प्रेत या भूत उतर जाय। जैसे—ओझा लोग देहातियो को भूत-प्रेत झाडने के नाम पर खूब ठगते है। ११ किसी की अकड, ऐंठ या शेखी दूर करनेवाली कडी-कडी बातें सुनाना। फटकारना। जैसे—आज मैंने उन्हे ऐसा झाडा कि वे ठढे हो गये। उदा०—ऐसे वचन कहूँगी इनतें, चतुराई इनकी मैं झारति।—सूर। १२. अपनी योग्यता दिखाकर धाक जमाने के लिए किसी भाषा या विषय मे बहुत सी उलटी-सीधी बातें कह जाना। जैसे—देहातियो के सामने अँगरेजी या कानून झाडना, मूर्खों के सामने वेदात झाडना।

झाड़-फानूस—पु० [हिं० झाड+फा० फानूस] शीशे के झाड, हाँडियाँ आदि जो छत पर टाँगी जाती हैं तथा जिनमे दीये, मोमवत्तियाँ आदि जलाई जाती है।

झाड़-फूंक—स्त्री० [हिं० झाडना+फूंकना] मत्र-बल के द्वारा किसी का रोग या प्रेत-बाधा दूर करने की क्रिया या भाव।

झाड बुहार—स्त्री० [हिं० झाडना+बुहारना] कूडा-करकट, धूल आदि झाडने की क्रिया या भाव।

झाड़ा†—पु० [हिं० झाडना] १ भूत-प्रेत की बाधा, रोग आदि दूर करने के लिए की जानेवाली झाड-फूंक या मत्रोपचार। २ किसी के पहने हुए कपडे आदि झाडकर ली जानेवाली तलाशी। ३ पाखाना फिरने या मल त्याग करने की क्रिया।

क्रि० प्र०—फिरना (हगना)।

४ मल-त्याग करने की कोठरी। पाखाना। शौचालय। ५ गुह। मल। ६ दे० 'झाला' (सितार का)।

झाडी—स्त्री० [हिं० झाड] १ हिं० झाड का स्त्री० अल्पा० रूप। छोटा झाड। २. बहुत से छोटे-छोटे झाडो या पेड-पौधो का झुरमुट।

स्त्री० [हिं० झाडना] सूअर के वालो की बनी हुई कूची। बलौछी।

झाड़ीदार—वि० [हिं० झाडी+फा० दार] १ आकार, रूप आदि के विचार से झाडी की तरह का। छोटे झाड का-सा। २ काँटेदार। कँटीला। ३ (स्थान) जहाँ पर बहुत सी झाडियाँ हो। ४ दे० 'झाड-दार'।

झाड़ू—पु० [हिं० झाडना] १ लबी सीको आदि का वह मुट्ठा जिससे फर्श पर पडा हुआ कूडा-करकट, धूल आदि साफ करते है।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

मुहा०—झाड़ू देना=(क) झाडू की सहायता से जमीन या फर्श पर का कूडा-करकट साफ करना। (ख) इस प्रकार सब कुछ नष्ट करना कि कुछ भी बाकी न रह जाय। **झाड़ू फिरना**=ऐसा अपव्यय या नाश होना कि कुछ भी बाकी न बच रहे। **झाड फेरना**=पूरी तरह नाश करके कुछ भी बाकी न रहने देना। पूरा सफाया करना। **(किसी को) झाड़ू मारना**=बहुत ही उपेक्षा तथा तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना। (स्त्रियाँ) जैसे—झाडू मारो ऐसे धोवी (या नौकर) को।

२. दुमदार सितारा। पुच्छलतारा। धूम-केतु।

झाड़दुमा—पु० [हिं० झाड+फा० दुम] हाथी, जिसकी दुम के बाल झाडू के अगले भाग की तरह छितरे या फैले हुए हो। ऐसा हाथी ऐबी माना जाता है।

झाड़बरदार—पु० [हिं० झाड+फा० वरदार] [भाव० झाड वरदारी] १ वह सेवक जो घर मे झाड लगाता हो। २. गलियो मे और सडको पर झाडू देनेवाला मेहतर।

झाडवाला—पु० [हिं० झाड+वाला (प्रत्य०)] झाडू देने या लगाने-वाला व्यक्ति। झाडबरदार।

झाण—पु० [स० ध्यान] हठ-योग मे, एक प्रकार की साधना जिसमे पच महाभूतों का ध्यान करके उन्हे ऊपर की ओर प्रवृत्त किया जाता था, और इसके लिए शरीर के अन्दर के पाँच चक्रों का भी ध्यान किया जाता था। (बौद्ध)

झापड़—पु० [?] थप्पड। तमाचा।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

झाबड़-झल्ला—वि० [हिं०] बहुत अधिक ढीला-ढाला।

झाबर—पु० [?] दलदली भूमि।

†पु०=झाबा।

†वि०=झबरा।

झाबा—पु० [हिं० झाँपना=ढाँकना] [स्त्री० अल्पा० झाबी] १. रहठे का बना हुआ बडा टोकरा या दौरा। साँवा। २ घी, तेल आदि रखने का चमडे का वह कुप्पा जिसमें टोटी भी लगी रहती है। ३. चमडे का एक प्रकार का बडा थाल। सफरा। (पश्चिम) ४ शीशे का बड़ा झाड जो रोशनी के लिए छत मे लटकाया जाता है।

†पु०=झब्बा।

झाम*—पु० [देश०] १ गुच्छा। २. समूह। ३ झब्बा। तुर्रा। ४ मिट्टी खोदने की एक प्रकार की कुदाल। ५ एक प्रकार का बड़ा यत्र जो नदियों आदि के तल की मिट्टी खोदने के काम आता है। ६ डाँट-फटकार। ७ घुडकी। ८ कपट। छल। धोखा।

झामक—पु० [स० झम् (खाना)+ण्वुल्-अक] जली हुई ईंट। झाँवाँ।

झामर—पु० [स० झाम√रा (देना)+क] १. टेकुआ रगडने की सान। सिल्ली। २ पैंजनी की तरह का पैर मे पहनने का एक गहना।

झामर-झूमर—पु० [अनु०] ऐसी चीज या बात जिसमे ऊपरी आडवर, झझटें या बखेडे तो बहुत से हो परन्तु जिसमे तत्त्व या सार कुछ भी न हो। उदा०—दुनिया झामर-झूमर उलझी सतमान के बकरा लाये, कान पकड़ सिर काटा।—कबीर।

झामरा—वि० [हिं० झाँवला ?] १. झाँवें के रग का। साँवला। २. मलिन। उदा०—सामरि हे झामरि तोर देह।—विद्यापति।

झामा—वि०=झाँवला।

पु०=झाँवाँ।

झामी†—वि० [हिं० झाम=धोखा] धोखा देनेवाला। धोखेबाज।

स्त्री० [अनु०] १ झन् झन् शब्द। झनकार। २. सुनसान जगह मे तेज हवा चलने पर होनेवाला शब्द जो प्राय डरावना होता है।

झार†—वि० [स० सर्व, प्रा० सारो, हिं० सारा] १ आदि से अन्त तक का सब। कुल। पूरा। समस्त। सारा। २. जिसमें कुछ भी मिलावट न हो। खालिस।

पु० १. झुड। दल। २ समूह।
अव्य० १ केवल। निपट। निरा। २ एक दम से। एक सिरे से।
स्त्री० [हिं० झाल] १ स्वाद मे चरपरे या तीखे होने की अवस्था या भाव। झाल। २ आग की लपट। ज्वाला। ३. जलन। ताप। ४ ईर्ष्या के कारण होनेवाला मनस्ताप। डाह।
पु० [हिं० झरना] रसोई का झरना या पौना नामक उपकरण।
पु० [?] एक प्रकार का पेड।

झारखंड—पु० [हिं० झार स०+ खड] १. उजाड जगह। २. जगल। ३ विहार राज्य के एक छोटे भू-भाग का नाम। ४ एक पर्वत जो वैद्यनाथ धाम से जगन्नाथ पुरी तक विस्तृत है।

झारन—स्त्री०=झाड़न।

झारना—स०=झाडना।

झारा—पु० [हिं० झार] वहुत पतली घुली हुई भाँग।
पु० [हिं० झारना] १ अनाज फटकने का सूप। २. अनाज छानने का झरना। ३. पटा, वनेठी, लाठी आदि चलाने की कला या विद्या।
†पु०=झाडा।

झारि†—स्त्री०=झार।

झारी—स्त्री० [हिं० झरना] १ लबी गरदनवाली एक प्रकार की टोंटीदार लुटिया जिससे जल वँधी हुई धार के रूप मे निकलता है। २ पानी मे अमचूर, जीरा, नमक आदि मिलाकर वनाया जानेवाला एक प्रकार का स्वादिष्ठ पेय।
†स्त्री०=झाडी।
*स्त्री० [हिं० झार] समष्टि। समूह। उदा०—गई जहाँ सुर नर मुनि झारी।—तुलसी।
*क्रि० वि० एक दम से। एक सिरे से।

झारू—पु०=झाड।

झार्झर—पु० [स० झर्झर+अण्] हुडुक या ढोल वजानेवाला व्यक्ति।

झाल—स्त्री० [स० झालि =आम का पना या पन्ना] १ गध, स्वाद आदि की तीव्रता। जैसे—मिर्च, राई आदि की झाल। २ स्वाद का चरपरापन या तीक्ष्णता। जैसे—तरकारी या दाल की झाल, आम या इमली के पन्ने की झाल।
स्त्री० [हिं० झालना] १. झालने (अर्थात् धातु की चीजो को टाँका लगाकर जोडने) की क्रिया या भाव। २. धातु की चीजो का वह अश जिसमे उक्त प्रकार का टाँका लगा हो।
स्त्री० [स० ज्वाल] १. जलन। ताप। दाह। २. लपट। लौ। ३ उत्कट या प्रवल काम-वासना। ४ मन की तरग। मौज। (क्व०)
पु० [सं० झल्लक] काँसे आदि की वनी हुई वडी झाँझ।
स्त्री० [हिं० झडी] १ (वर्षा की) झडी। २ वादल के कारण होनेवाला अँधेरा।

झालड़—स्त्री०=झालर।

झालना—स० [?] [भाव० झलाई] १ धातु की वनी हुई चीजो के भिन्न-भिन्न अगो को टाँका लगाकर उन्हे आपस मे जोडना। २. किसी पात्र का मुँह धातु का टाँका लगाकर चारो ओर से अच्छी तरह वद करना। जैसे—गगा जल से भरी हुई लुटिया झालना। ३ पेय पदार्थों की वोतलें आदि वरफ या शोरे मे रखकर खूब ठढी करना।
†स० १. =झेलना। (सहना)। २ =झलना। (ग्रहण या धारण करना)।

झालर—स्त्री० [स० झल्लरी] १ किसी विस्तार में उसके एक या कई सिरों पर शोभा या सजावट के लिए टाँका, वनाया या लगाया जानेवाला लहरियेदार किनारा या हाशिया। जैसे—तकिये, पखे या परदे मे लगी हुई झालर; सायवान मे लगाई जानेवाली झालर। २. वास्तु-रचना मे पत्थर, लकडी आदि को गढ या तराशकर प्रस्तुत की जानेवाली उक्त प्रकार की वनावट। जैसे—दरवाजे के पल्ले या मेहराव मे की झालर। ३. उक्त आकार-प्रकार की कोई ऐसी लटकती हुई चीज जो प्राय हिलती रहती हो। जैसे—गौ या वैल के गले की झालर। ४ किनारा। छोर। सिरा। (क्व०) ५. एक प्रकार का वहुत वड़ा छैना या झाँझ जो पूजा आदि के समय देवताओं के सामने वजाते हैं।
†पुं०=झलरा (पकवान)। उदा०—झालर माँडे आए पोई।—जायसी।

झालरदार—वि० [हिं० झालर+फा० दार] जिसमे झालर टँकी, वनी या लगी हो।

झालरना—अ० [हिं० झालर+ना (प्रत्य०)] १. झालर का हिलना या हवा मे लहराना। २ हवा मे किसी वस्तु का लहराना। ३ (पेड-पौधो का) शाखाओं, पत्तियो, फूलों आदि से युक्त या सपन्न होना। उदा०—नित नित होति हरी हरी खरी झालरति जाति।—विहारी।

झालरा†—पु० [हिं० झालर] एक प्रकार का रुपहला हार। हुमेल।
पुं० [?] कुछ विशिष्ट प्रकार का वना हुआ चौकोर और वडा कूआँ। वावली।

झाला—पुं० [देश०] १ गुजरात, मारवाड आदि प्रदेशो मे वसी हुई एक राजपूत जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति। ३. सितार आदि वजाने मे उत्पन्न होनेवाली एक विशेष प्रकार को कलात्मक झंकार।

झालि—स्त्री० [स०] एक प्रकार की काँजी जो कच्चे आम को पीसकर और उसमे राई, नमक आदि मिलाकर वनाई जाती है। झारी।
†स्त्री०=झाल (वर्षा की झडी)।

झावँ झावँ—पु०=झाँवँ झाँवँ।

झावर—वि०=झावर (झवरा)।

झावु—पु० [स० झा√वा (गति)+डु] झाऊ। (एक क्षुप)

झावुक—पु० [स० झावु+कन्] झाऊ।

झिकार†—पु० [?] वारहसिंघा।

झिंगन—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड जिसकी पत्तियो से लाल रग वनता है।
†पु०[?] सारस्वत व्राह्मणो की एक जाति या वर्ग।

झिंगनी†—स्त्री०=खर-तरोई।

झिंगवा—स्त्री० [स० चिंगट] एक प्रकार की छोटी मछली जिसके अगले और पिछले दोनो भागो पर वाल होते है।

झिंगाक—पु० [सं०√लिग् (गमनादि)+आकन्, पृषो० सिद्धि] तरोई। तोरी।

झिंगारना†—अ० [हिं० झीगुर] झीगुर का वोलना या शब्द करना। स० उक्त प्रकार का शब्द उत्पन्न करना।

झिंगिन —पु०=जुगनूँ।

झिंगिनी—स्त्री० [स०√लिग्+इनि, पृषो० सिद्धि] एक जगली पेड जिसके फल वेर के समान छोटे-छोटे और सफेद रग के फूल होते है जो औषध के काम आते है।

झिंगी†—स्त्री०=झिंगिनी।

झिंगुला—पु० [स्त्री० अल्पा० झिंगुली] झगा (बच्चो का)।

झिंझा†—वि० [?] [स्त्री० झिंझी] चिपटी नाकवाला।

झिंझिम—पु० [स० झिम्√झम्+अच्, पृषो० सिद्धि] ऐसा वन जिसमे आग लगी हो।

झिंझिया†—स्त्री०=झॉझी।

झिंझिरिष्टा—स्त्री० [स०] झिंझिरोटा।

झिंझिरोटा—पु० [स० झिंझिरिष्टा] एक प्रकार का क्षुप।

झिंझी—स्त्री० [स०] झीगुर। झिल्ली।
†स्त्री०=झझी या झज्झी।

झिंझोटी—स्त्री० [देश०] दिन के चौथे पहर मे गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

झिंटी—स्त्री० [स० झिम्√रट् (रटना)+अच्-ङीप्, पृषो० सिद्धि।] कटसरैया। पियावासा।

झिगड़ना*—अ०=झगडना।

झिगड़ा†—पु०=झगडा।

झिझक†—स्त्री० [हिं० झिझकना] झिझकने की क्रिया या भाव।
†स्त्री० दे० 'झझक'।

झिझकना†—अ० [अनु०] [भाव० झिझक] भय, लज्जा, सकोच आदि के कारण कुछ कहने या करने से आनाकानी करना, पीछे हटना या रुकना।
†अ० दे० 'झझकना'।

झिझकार†—स्त्री०=झझकार।

झिझकारना†—स०=झझकारना।

झिटकारना†—स०=झटकारना।

झिड़क†—स्त्री० [हिं० झिडकना] १. झिडकने की क्रिया या भाव। २ =झिडकी।

झिड़कना—स० [हिं० झटकना या झाडना] १ पुरानी हिन्दी मे झटका देकर या झटकारते हुए दूर करना या हटाना। उदा०—कोटि सुर को दड आभा झिरकि डारै वारि।—सूर। २ आज-कल किसी के अनुचित आचरण या व्यवहार से क्रुद्ध या रुष्ट होकर उसे तिरस्कारपूर्वक विगड-कर कोई कठोर बात कहना।

झिड़की—स्त्री० [हिं० झिडकना] १ झिडकने की क्रिया या भाव। झिडक। २. क्रोध मे आकर या विगडते हुए किसी अधीनस्थ या छोटे व्यक्ति से कही हुई वह बात जिसमे उसके अनुचित कामो के प्रति असन्तोष या रोष प्रकट किया गया हो और जिसमे आगे से सचेत रखने का उद्देश्य भी निहित हो।
क्रि० प्र०—देना।—मिलना।—सुनना।

झिड़झिड़ाना†—अ० [भाव० झिडझिडाहट]=चिडचिडाना।

झिनवा—पु० [देश०] एक प्रकार का वढिया धान जिसके चावल बारीक होते हैं।
वि०=झीना।

झिपना†—अ०=झेपना।

झिपाना—स० [हिं० 'झेपना' का स० रूप] किसी को झेपने मे प्रवृत्त करना। लज्जित करना।

झिमकना†—अ०=झमकना।

झिमिटना—अ० [अनु०] एकत्र होना। उदा०—झिमिट जाते है जहाँ जो लोग ।—मैथिलीशरण।

झिर†—स्त्री०=झिरी।

झिरकना†—स०=झिडकना।

झिरझिर—क्रि० वि० [अनु०] १ थोडा-थोडा करके और मन्द गति से। धीरे-धीरे। जैसे—झिरझिर झरना (पानी का सोता) वहना। २. उक्त प्रकार से और झिरझिर शब्द करते हुए। जैसे—झिरझिर हवा वहना।

झिरझिरा†—वि०=झीना।

झिरझिराना†—अ०=झिडझिडाना (चिडचिडाना)।

झिरना—पु० [हिं० झरना] १ झरना। २ झिरी।
अ०=झरना।

झिरहर†—वि०=झीना।

झिरा†—स्त्री० [हिं० झरना=रसकर निकलना] आमदनी। आय।

झिराना—अ०, स०=झुराना।

झिरिका—स्त्री० [स०] झीगुर।

झिरिया†—स्त्री० [हिं० झरना] छोटा झरना।

झिरी—स्त्री० [हिं० झरना] १ वह छोटा छेद या सधि जिसमे से कोई चीज धीरे-धीरे निकल या वह जाय। दरज। २ वह गड्ढा जिसमें आस-पास का पानी झिर-झिरकर इकट्ठा होता है। ३. किसी वडे जलाशय के आस-पास का वह छोटा झरना या सोता जिसमे से पानी झिर या रसकर निकलता हो। ४ तुपार। पाला। ५ ऐसी फसल जो पाला पड़ने से खराव हो गई हो।

झिरीका—स्त्री० [स० झिरी√कै (शब्द)+क—टाप्] झीगुर।

झिर्री†—स्त्री० [हिं० झरना या झिरी] वह छोटा गड्ढा जो नाली आदि का पानी रोकने के लिए खोदा जाता है। घेरुआ।

झिलँगा—वि० [हिं० ढीला+अग] १ ढीले अगोवाला। २. झीनी बुनावटवाला। उदा०—झिलँगा खटिया वातल देह।—घाघ। ३ दुवला-पतला।
पु० १ वह छोटी, हलकी खाट जिसकी बुनावट दूर दूर या विरल हो। २ ऐसी टूटी-फूटी और पुरानी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।
†पु०=झीगा (मछली)।

झिलना—अ० [हिं० झेलना] १ हिं० 'झेलना' का अ० रूप। झेला या सहा जाना। २ कष्ट सहते और जोर लगाते हुए अन्दर घुसना, धँसना या पैठना। उदा०—वाणी की वीणा-ध्वनि सी भर उठी शून्य मे झिल-कर।—प्रसाद। ३ कष्ट सहते हुए अपनी कामना या वासना पूरी करना। ४ तृप्त होना। अघाना। ५ किसी काम या बात मे पूरी तरह से तन्मय या लीन होना।
†पु० [स० झिल्ली] झीगुर।

झिलम—स्त्री० [हिं० झिलमिला] युद्ध के समय पहने जानेवाले टोप मे

पीछे की ओर लगी हुई सिकड़ियों की वह झालर जो गरदन पर लटकी रहती थी।

झिलमटोप—पु०=झिलम।

झिलमा—पु० [देश०] एक प्रकार का धान।

झिलमिल—स्त्री० [स० ज्वल्+झला] १. सन्ध्या या सवेरे की वह स्थिति जब कि कुछ-कुछ अधकार भी हो और कुछ-कुछ प्रकाश भी; और जिसमे चीजें साफ न दिखाई देती हो। झिलमिला। २. प्रकाश की किरणो या लौ के हिलते रहने की वह स्थिति जिसमे कभी तो कुछ अँधेरा हो जाता हो और कभी-कभी कुछ उजाला। ३. किसी चमकीली चीज की वह स्थिति जिसमे रह-रहकर प्रकाश की किरणे दिखाई देती या निकलती हो। जैसे—पानी की झिलमिल। ४ पुरानी चाल की एक प्रकार की बहुत बढिया मलमल जिसकी प्राय. साड़ियाँ बनती थी।

वि०=झिलमिला।

झिलमिला— वि० [स०√ज्वल्+अला] १. (समय) जिसमे न तो पूरा अधकार ही हो और न पूरा प्रकाश ही। मिला-जुला थोडा अँधेरा और थोडा उजाला। २. (प्रकाश) जो हिलते रहने के कारण रह-रहकर चमकता हो और फिर बीच-बीच मे आँखो से ओझल हो जाता हो। रह-रहकर चमकनेवाला। ३. (आवरण) जिसमे जगह-जगह बहुत-से छोटे-छोटे अवकाश या छेद हो और इसी लिए जिसके कारण कही तो प्रकाश आ जाता हो और कही अँधेरा बना रहता हो। ४ जिसका कुछ-कुछ आभास तो मिलता हो, फिर भी जो पूरी तरह से स्पष्ट न हो।

पु०=झिलमिल।

झिलमिलाना—अ० [अनु०] [भाव० झिलमिलाहट, झिलमिली] हिलते रहने के कारण रह-रहकर चमकना। जैसे—लौ का झिलमिलाना।

स० किसी चमकीली चीज को इस प्रकार थोडा-थोडा हिलाना कि उसमे से रह-रहकर प्रकाश या उसकी किरणे निकलें।

झिलमिलाहट—स्त्री० [अनु०] झिलमिलाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

झिलमिली—स्त्री० [हिं० झिलमिल] १ बेडे बल मे एक दूसरी पर जडी या बैठाई हुई पटरियो का वह ढाँचा जो किवाडो के पल्लो के कुछ भागो मे इसलिए जडा रहता है कि खडे बल मे लगी हुई लकडी के सहारे आवश्यकतानुसार प्रकाश, वायु आदि के आने के लिए कुछ अवकाश निकाला जा सके। खड़खड़िया।

क्रि० प्र०—उठाना।—खोलना।—गिराना।—चढाना।

२. चिक। चिलमन। ३. कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ४ झिलमिलाहट।

झिलवाना—स० [हिं० 'झेलना' का प्रे० रूप] किसी को कुछ झेलने मे प्रवृत्त करना।

झिली†—स्त्री०=झींगुर।

झिल्ल—पु० [स०] छोटे-छोटे पत्तोंवाला एक पौधा जिसमे लाल रग के फूल लगते है।

झिल्लड—वि० [हिं० झिल्ला] (वह कपडा) जिसकी बुनावट दूर दूर पर हो। पतला और झँझरा। झीना। 'गफ' का विपर्याय।

झिल्लन—स्त्री० [देश०] दरी बुनने के करघे की वह लकडी जिसमे बय का बाँस लगा रहता है। गुरिया।

झिल्ला†—वि० [अनु०] [स्त्री० झिल्ली] १. पतला। बारीक। महीन। २ दे० 'झिल्लड'।

झिल्लि—स्त्री० [स० झिर्√लिश् (गमनादि)+डि] १ एक प्रकार का बाजा। २. झींगुर।

झिल्लिका—स्त्री० [सं० झिल्लि+कन्—टाप्] १. झींगुर। २. झिल्ली। २ झींगुर की झनकार। ३ सूर्य का प्रकाश।

झिल्ली—स्त्री० [स० झिल्लि+ङीप्] झींगुर।

स्त्री० [?] १ किसी चीज के ऊपर या चारों ओर प्राकृतिक रूप से लगा या लिपटा हुआ बहुत ही पतला और पारदर्शक आवरण। जैसे—गर्भस्थ शिशु के चारो ओर लिपटी हुई झिल्ली, आँख, त्वचा अथवा फेफडे के ऊपर की झिल्ली। २. फलो आदि के ऊपर का उक्त प्रकार का बहुत पतला छिलका। जैसे—अंगूर या जामुन पर की झिल्ली। ३. आँख का जाला नामक रोग।

झिल्लीक—पु० [स० झिल्ली+कन्] झींगुर।

झिल्लीका —स्त्री० [स० झिल्लीक+टाप्] झींगुर।

झिल्लीदार—वि० [हिं० झिल्ली+फा० दार] जिसमे या जिसके ऊपर झिल्ली हो। झिल्ली मे युक्त।

झींक—स्त्री०=झींका।

झींकना†—स० [?] १ पटकना। २ फेंकना। ३. मडित या सज्जित करना।

अ० १ मडित या सज्जित होना। उदा०—आनद-कद चन्द्र के ऊपर तो तारा-गण झींके।—लोक-गीत। २ दे० 'झींखना'।

झींका—पु० [देश०] पीसे जानेवाले अन्न की उतनी मात्रा जितनी एक बार चक्की मे डाली जाती है।

झींख—स्त्री०=झीख।

झींखना—अ०=झीखना।

झींगट—पु० [देश०] मल्लाह। माँझी। (लश०)

झींगन—पु० [देश०] मोटे तने तथा कम शाखाओंवाला मँझोले कद का एक पेड।

झींगा—पु० [स० चिंगट] १. एक प्रकार की छोटी मछली जो प्राय नदियो और जलाशयो मे पाई जाती है। इसका मास खाने मे बहुत स्वादिष्ट होता है। २ एक प्रकार का बढिया अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनो तक रह सकता है। ३ कपास की फसल मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा।

झींगुर—पु० [झीं+कर से अनु०] एक प्रकार का छोटा बरसाती कीडा जो झीं झीं शब्द करने के लिए प्रसिद्ध है।

झींखना†—अ० [अनु०] झुँझलाना।

झींझी—पु०=झाँझी।

झींटना†—अ०=झीखना।

झींपना—अ०=झेंपना।

स० दे० 'ढकना'।

झींवर†—पु०=धीवर (मल्लाह)।

झींसी—स्त्री० [अनु० या हिं० झीना=बहुत महीन] ऐसी हलकी वर्षा जिसमे पानी बहुत ही छोटी-छोटी या महीन बूँदो के रूप मे बरसता हो

क्रि० प्र०—पड़ना।

झीका—पु० [स० शिक्य] छीका। सिकहर।
झीख—स्त्री० [हिं० झीखना] झीखने की अवस्था, क्रिया या भाव।
झीखना—अ० [अनु०] मानसिक कष्ट, चिंता आदि से व्यथित होकर बहुत ही दु खी भाव से रह-रहकर और समय-कुसमय उसकी चर्चा करते रहना। कुढ कुढ कर अपना दुखडा रोते रहना।
पु० वह कथन या बात जो उक्त प्रकार से कुढ-कुढकर कही जाती हो।
झीझा†—वि० [स्त्री० झीझी]=झीना।
†वि० [?] धीमा। मन्द।
झीठ†—वि०=झूठ। (ब्रज)
झीडना*—अ०[अनु०] १ बलपूर्वक प्रविष्ट होना। घुसना। २ धँसना।
झीणा†—वि०=झीना।
झीत—पु० [?] जहाज के पाल मे लगा हुआ बटन। (लश०)
झीन†—वि०=झीना।
झीना—वि० [स० क्षीण] [स्त्री० झीनी] १ क्षीण शरीरवाला। दुबला-पतला। २ पतला। बारीक। महीन। ३ (कपडा) जिसके ताने तथा बाने के सूतों की बुनावट ठस न होकर विरल हो। उदा०—झीनी झीनी बीनी चदरिया।—कबीर।
मुहा०—झीना ओढाना=चित्रकला मे आकृतियो पर ऐसा झीना या पतला वस्त्र अकित करना कि नीचे के अग दिखाई दें।
४ (रचना) जिसके दोनो बल के डोरे, तार आदि अपेक्षया एक दूसरे से दूर या विरल हो। जैसे—खाट या पलग की झीनी बुनावट। ५ जिसमे बहुत से छोटे-छोटे छेद हो। झँझरा। ६ धीमा। मद।
झीनासारी† —पु० [?] एक प्रकार का धान और उसका चावल।
झीमना† —अ० [अनु०] १. झूमना। उदा०—नवनील कुज है झीम रहे कुसुमो की कथा न बद हुई।—प्रसाद। २ ऊँघना।
झींमर—पु०=झीवर (मल्लाह)।
झीमस† —स्त्री० [हिं० झीमना] ऊँघ। झपकी।
झीरिका—स्त्री० [स०] झींगुर।
झीरुका—स्त्री० [स०] झींगुर।
झील—स्त्री० [स० क्षीर=जल] १ वह बहुत बडा प्राकृतिक जलाशय जिसमे पानी रुका रहता हो। बहुत बडा ताल। २ उक्त प्रकार का कोई कृत्रिम छोटा जलाशय।
स्त्री० [?] झोका।
झीलना—स०=झेलना।
झीलम† —स्त्री०=झिलम।
झीलर—पु० [हिं० झील] छोटी झील। ताल।
झीली—स्त्री० [हिं० झिल्ली] १ दही, दूध आदि के ऊपर की मलाई। २ दे० 'झिल्ली'।
झीवर—पु० [स० धीवर] मल्लाह। माँझी।
झुँकवाई † —स्त्री०=झोकवाई।
झुँकवाना† —स०=झोकवाना।
झुँकाई† —स्त्री०=झोकवाई।
झुँगना† —पु०=जुगनूँ।
झुँगरा—पु० [देश०] साँवाँ (कदन्न)।
झुँझना† —पु० [हिं० झुनझुना] १ घर मे बालक के जन्म लेने पर गाये जानेवाले वे गीत जिनमें शिशु के झुनझुना बजाने या उससे खेलने का उल्लेख होता है। २ दे० 'झुनझुना'।
झुँझलाना—अ० [अनु०] [भाव० झुँझलाहट] इस प्रकार कुछ क्रुद्ध तथा व्यथित होकर कोई बात कहना जिससे अप्रसन्नता, असतोष या असहमति सूचित होती हो।
झुँझलाहट—स्त्री० [हिं० झुँझलाना] झुँझलाने की अवस्था, क्रिया या भाव।
झुंट—पु० [स०√लुट् (गति)+अच्, पृषो० सिद्धि] झाडी।
झुंड—पु० [स० यूथ, प्रा० जूट] १ एक ही जाति या वर्ग के बहुत से पक्षियो, पशुओ आदि के एक स्थान पर एकत्र रहने या होने की अवस्था या भाव। जैसे—कबूतरो या हिरनो का झुड।
मुहा०—झुंड में रहना=पशु-पक्षियो का अकेले नहीं, बल्कि अपने वर्ग के अन्य जीवो के साथ मिलकर रहना।
२ व्यक्तियो का समूह।
झुंडी—स्त्री० [?] १ पौधो का ऊपरी भाग काट लेने पर नीचे बची रह जानेवाली उसकी जड या खूँटी। २ वह कुलाबा जिसमे चिलमन या परदा टाँगा जाता है।
झुकझोरना† —स०=झकझोरना।
झुकना—अ० [स० युज्=किसी ओर प्रवृत्त होना] १ किसी ऊर्ध्व या खडे बल मे रहनेवाली चीज के ऊपरी भाग का कुछ टेढा होकर किसी दिशा या पार्श्व मे कुछ नीचे की ओर आना या होना।—जैसे—(क) पढने-लिखने के समय आदमी की गरदन या सिर झुकना। (ख) बरसात मे पानी भरने के कारण मकान की दीवार या बरामदा झुकना। २ क्षैतिज या बेडे बल मे रहनेवाली अथवा सीधी चीज का कोई अश या सिरा नीचे की ओर आना, मुडना या होना। जैसे—(क) लकडी की धरन का बीच मे झुकना। (ख) लोहे के छड का एक या दोनों सिरे झुकना। ३ बोझ, भार आदि के कारण किसी चीज का अपनी प्रसम और स्वाभाविक अवस्था या स्थिति से हटकर कुछ नीचे की ओर आना या प्रवृत्त होना। जैसे—फलो के भार से वृक्ष की डालियाँ झुकना। ४ आकाशस्थ ग्रहो, नक्षत्रो आदि की अपनी पूरी ऊँचाई तक पहुँच चुकने के बाद क्षितिज की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना। जैसे—चद्रमा या सूर्य का (अस्तमित होने के समय या उससे पहले) झुकना। ५ दुर्बलता, रोग, वार्धक्य, शिथिलता आदि के कारण शरीर के किसी ऐसे अग का कुछ नीचे की ओर आना या प्रवृत्त होना जो साधारणत खडा या सीधा रहता हो अथवा जिसे खडा या सीधा रहना चाहिए। जैसे—(क) नशे या लज्जा से आँखें या सिर झुकना। (ख) बुढापे मे कमर या गरदन झुकना। ६ उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए थोडा आगे बढते हुए नीचे की ओर प्रवृत्त होना। जैसे—किसी के चरण छूने या कोई चीज उठाने के लिए झुकना। ७ प्रतियोगिता, वैर, विरोध आदि के प्रसगो मे प्रतिपक्षी की प्रबलता या महत्ता मानते हुए उसके सामने दबना अथवा नम्र भाव से आचरण या व्यवहार करना। अभिमान, बल आदि का प्रदर्शन छोड़कर विनीत और सरल होना। जैसे—(क) युद्ध मे शत्रु के सामने झुकना। (ख) लडाई-झगडे मे भाइयों के आगे झुकना। ८ आवेश, क्रोध आदि से युक्त होकर कठोर बातें कहने या रोष प्रकट करने के लिए किसी की ओर प्रवृत्त होना। जैसे—पहले तो वे अपने भाई से उलझ रहे थे फिर मेरी ओर (या मुझ पर) झुक पडे। उदा०—(क)

नहिं जान्यौ वियोग सों रोग है आगे झुकी। तब हौं तेहि सों तरजी।—तुलसी। (ख) तऊ लाज आई झुकत खरे लजौहैं देखि।—बिहारी। ९ विशेष ध्यान देते हुए किसी काम या बात की ओर प्रवृत्त होना। दत्त-चित्त होकर कुछ करने लगना। जैसे—आज-कल वह इतिहास छोडकर दर्शन (या वेदात) की ओर झुके हैं।

झुकमुख—पु० दे० 'झुट-पुटा'।

झुकरना†—अ० [अनु०] १ =झुँझलाना। २ =झुकराना।

झुकराना†—अ० [हिं० झोंका] वायु, वेग आदि के कारण इधर-उधर झुकना। झोंके खाना।

झुकवाई—स्त्री० [हिं० झुकवाना] झुकवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झुकवाना—स० [हिं० झुकाना का प्रे० रूप] १ किसी को झुकने मे प्रवृत्त करना। २. किसी के द्वारा ऐसा काम कराना जिससे कोई दूसरा झुके। स० दे० 'झोकवाना'।

झुकाई—स्त्री० [हिं० झुकाना] झुकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झुकाना—स० [हिं० झुकना का स०] १ किसी खडी या सीधी चीज का कोई अश या तल किसी प्रकार कुछ नीचे की ओर लाना। ऐसा काम करना जिससे कुछ झुके। नीचे की ओर प्रवृत्त करना। जैसे—दबाकर लकडी या ठोक-पीटकर लोहे का छड झुकाना। २ जो चीज ऊँचाई पर अथवा ऊपर हो उसे या उसका कोई अश नीचे की ओर लाना। जैसे—राजा या सेनापति की मृत्यु होने पर किले का झडा झुकाना। ३ अपना कोई अग किसी ओर कुछ नीचे करना या ले जाना। जैसे—किसी के सामने आँखें या सिर झुकाना, किसी ओर कधा, पैर या हाथ झुकाना। ४ किसी को किसी प्रकार दबाते हुए अथवा उसका अभिमान, विरोध, हठ आदि दूर करते हुए उसे नम्र या विनीत बनाना। जैसे—उदारता अथवा कौशल से विरोधी को अपने सामने झुकाना। ५. उक्त के आधार पर वैरी या शत्रु को पराजित या परास्त करना। ६. कुछ बल प्रयोग करते हुए किसी को किसी काम या बात की ओर प्रवृत्त करना या उसमे लगाना। जैसे—लडका तो अभी पढना चाहता था, पर पिता ने उसे नौकरी (या रोजगार) मे झुका दिया। ७ कोई चीज या बात किसी ओर अग्रसर या प्रवृत्त करना। जैसे—आप लोगो ने आपस के लडाई-झगडे (या हँसी-मजाक) की बात लाकर मुझ पर झुका दी। ८. प्राय या सदा खडी अथवा सीधी रहनेवाली चीज कुछ टेढी करके किसी ओर नत या प्रवृत्त करना। जैसे—बीमारी या बुढापे ने उसकी कमर झुका दी।

झुकामुकी (मुखी)—स्त्री०=झुकमुख (झुटपुटा)।

झुकार—पु० [हिं० झकोरा] हवा का झोंका। झकोरा।

झुकाव—पु० [हिं० झुकना] १. झुकने की क्रिया या भाव। २ झुके हुए होने की अवस्था या भाव। ३ किसी विशेष कार्य या विषय की ओर होनेवाली सामान्य से कुछ आगे बढी हुई प्रवृत्ति जिसके कारण वह कार्य या विषय अपेक्षया अधिक प्रिय और रुचिकर होता है। जैसे—गणित की ओर इस लडके का शुरू से ही झुकाव है।

झुकावट—स्त्री०=झुकाव।

झुगिया† —स्त्री०=झुग्गी।

झुग्गी—स्त्री० [?] १ फकीरो, साधुओ आदि के रहने की झोपडी। २. कोई बहुत छोटा मकान।

झुझकावना—स०=जुझाना (जूझने मे प्रवृत्त करना)।

झुझ्झ*—पु०=युद्ध।

झुट-पुटा—पु० [अनु०] सूर्योदय होने से कुछ पहले और सूर्यास्त होने से कुछ बाद का वह समय जिसमे प्रकाश धुँधला होने के कारण चीजें स्पष्ट रूप से नही दिखाई देती।

झुटलाना†—स०=झुठलाना।

झुटालना†—स०=जुठारना (जूठा करना)।

झुटुंग—वि० [हिं० झोटा] जिसके सिर पर बहुत बडा या भारी झोंटा हो।

झुट्ठल—वि० [हिं० झूठ] झूठा।

क्रि० वि० झूठ-मूठ। व्यर्थ मे।

झुट्ठा†—वि०=झूठा।

झुठकाना—स० [हिं० झूठ] झूठ-मूठ कोई बात कह कर किसी को धोखे या भ्रम मे डालना।

झुठलाना—स० [हिं० झूठ+लाना (प्रत्य०)] १. किसी को झूठा ठहराना या सिद्ध करना। जैसे—तुम तो अपनी बातों से सच्चों को भी झुठला देते हो। २. झूठ-मूठ कोई बात कहकर किसी को धोखे या भ्रम मे डालना। जैसे—खेल मे बच्चो को झुठलाना।

झुठाई†—स्त्री० [हिं० झूठ+आई (प्रत्य०)] झूठे होने की अवस्था या भाव। झूठापन। मिथ्यात्व।

झुठाना—स० [हिं० झूठ+आना (प्रत्य०)] १. (किसी विषय या बात को) झूठा सिद्ध करना। २. झुठलाना।

झुठामूठी†—क्रि० वि० =झूठ-मूठ।

झुठालना†—स०=झुठलाना।

झुन्—स्त्री०=झुनझुनी।

झुनक—पु० [अनु०] घुँघरुओ या नूपुरो के बजने का शब्द।

झुनकना—अ० [अनु० झुनझुन शब्द निकलना या होना।

स० झुनझुन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

†पु०=झुनझुना (खिलौना)।

झुनका—पु० [?] छल। धोखा।

झुनकारा—वि० [स्त्री० झुनकारी]=झीना।

झुनझुन—स्त्री० [अनु०] घुँघरुओं आदि के बजने से होनेवाला शब्द।

झुनझुना—पु० [हिं० झुनझुन] बच्चो के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।

झुनझुनाना—अ० [अनु०] १. झुनझुन शब्द निकलना या होना। २ शरीर के किसी अग में झुनझुनी होना।

स० झुनझुन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झुनझुनियाँ—स्त्री० [अनु०] १ पैरो मे पहनने का एक गहना जिसके घुँघरुओ से झुनझुन शब्द निकलता है। २. अपराधियो के पैरो मे पहनाई जानेवाली बेडी। ३. सनई का पौधा। ४ दे० 'झुनझुनी'।

झुनझुनी—स्त्री० [हिं० झुनझुनाना] शरीर के किसी अग विशेषत हाथ या पैर की वह अस्थायी या क्षणिक अवस्था जिसमे रक्त का सचार रुकने के कारण उस अग मे कुछ देर तक हलकी चुनचुनाहट और कुछ सनसनी-सी होती है।

क्रि० प्र०—चढना।

झुनी†—स्त्री० [देश०] जलाने की पतली लकडी।

झुपझुपी†—स्त्री०=झुबझुबी।

झुपरी†—स्त्री०=झोपडी।

झुप्पा—पु०=झव्वा।

झुब्झुबी—स्त्री०[अनु०] कानो मे पहनने का एक आभूषण। झुपझुपी।

झुमका—पु० [प्रा० झुम्म+अवक (प्रत्य०)] १ कानो मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण जो नीचे लटकता रहता है। २ एक प्रकार का पौधा जिसमे उक्त आभूषण के आकार के फूल लगते हैं। ३ इस पौधे का फूल। ४. उक्त गहने या फूल के आकार का गुच्छा।

झुमना†—वि०[हि० झूमना] जो प्राय या बरावर झूमता रहता हो। जिसकी प्रवृत्ति झूमने या झूमते रहने की हो।
पु० वह बैल जो बँधा रहने पर प्राय झूमता रहता हो। (ऐसा बैल ऐबी या बुरा समझा जाता है)
अ०=झूमना।

झुमरा†—पु०[देश०] एक प्रकार का बहुत बडा हथौडा।

झुमरि—स्त्री०[स०] एक रागिनी।

झुमरी—स्त्री०[देश०]छत, दीवार का पलस्तर आदि पीटने की काठ की छोटी मुँगरी।

झुमाऊ—वि०=झुमना।

झुमाना—स०[हि०झूमना का स०रूप] किसी को झूमने मे प्रवृत्त करना। ऐसी क्रिया करना जिससे कोई झूमने लगे।

झुमिरना†—अ०=झूमना।

झुरकुट—वि०[अनु०] १ मुरझाया या सूखा हुआ। २ कृश और क्षीण शरीरवाला। दुवला-पतला।

झुरकुटिया—पु०[देश०] एक प्रकार का वढिया पक्का लोहा जिसे खेडी भी कहते है।
वि०=झुरकुट।

झुरकुन†—पु० [हि० झड+कण]१ झडी हुई चीज। झडना। २. किसी चीज के बहुत छोटे-छोटे टुकडे। चूर।

झुरझुरी—स्त्री०[अनु०]शरीर मे होनेवाली कुछ हलकी कँपकँपी, विशेपत वह कँपकपी जो जूडी या शीत-ज्वर चढने के समय होती है।

झुरना—अ०[स० क्षर, प्रा० झूरइ; या स० ज्वल्]१ किसी विकट चिंता या दुख के कारण मन ही मन इतना अधिक सतप्त तथा विकल रहना कि शरीर धीरे-धीरे सूखता जाय। अन्दर ही अन्दर दुखी रहकर अपना शरीर घुलाना। २ सूखना। ३ कुम्हलाना। मुरझाना।

झुरमुट—पु०[सं० झुट=झाडी]१ पास-पास उगी तथा एक दूसरी से उलझी हुई घनी झाडियो का समूह। २ बहुत से लोगो का समूह।
मुहा०—झुरमुट मारना=बहुत से लोगो का घेरा बनाकर खडे होना। जैसे—जगह-जगह सिपाही झुरमुट मार कर लड़ रहे हैं।
३ बच्चो का एक खेल जिसमे वे घेरा बनाकर नाचते हैं। ४ चादर से सिर, मुँह तथा सारा शरीर के लपेटे हुए होने की अवस्था। ५ उक्त प्रकार से कोई ओढना ओढने या लपेटने का ढग या प्रकार।

झुरवन—स्त्री०[हि० झुरना]१ झुरने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी चीज के झुरने अर्थात् सूखने के कारण उसमे होनेवाली कमी या छीज।

झुरवाना—स०[हि० झुराना]१ ऐसा काम करना जिससे कोई मन ही मन चिंतित और दुखी होकर सूखता चला जाय। किसी को झुरने मे प्रवृत्त करना। २ कोई चीज धूप आदि मे रखकर या और किसी प्रकार सुखाना।

झुरसना†—अ, स०=झुलसना।

झुरसाना†—स०=झुलसाना।

झुरहुरी—स्त्री०=झुरझुरी (कँपकँपी)।

झुराना—स० [हि० झुरना] १ किसी को झुरने मे प्रवृत्त करना। २ सुखाना।
†अ०१ =झुरना। २ =सूखना।

झुरावन—स्त्री०[हि० झुरना+वन (प्रत्य०)]=झुरवन।

झुर्री—स्त्री०[हि० झुरना]१ वृद्धावस्था मे शरीर के दुर्वल और शुष्क हो जाने पर त्वचा पर पडनेवाली शिकन। २ किसी वस्तु के सूखने पर उसके चिकने या सपाट ऊपरी आवरण या तल पर पड़नेवाली शिकन। जैसे—सूखे हुए आम या परवल पर झुर्री।

झुलका†—पु०=झुनझुना। (खिलौना)।

झुलना—पु०=झुल्ला (स्त्रियो का पहनावा)।
वि०, पु०= झूलना।

झुलनी—स्त्री० [हि० झूलना]१ नाक मे पहनने की नथ मे लटकता रहनेवाला मोतियो का छोटा गुच्छा। २ झूमर (गहना)।

झुलनी वोर—पु०[देश०] धान की वाल। (कहार)

झुलमुला†—वि०[स्त्री० झुलमुली]=झिलमिला।

झुलमुलाना—अ०[?]१ झिलमिलाना। २ सिर मे चक्कर आने के कारण लडखडाना।

झुलमुली†—स्त्री०=१ झिलमिली। २ =झालर।

झुलवा†—पु० दे० 'जेठवा'।
पु०=झूला।

झुलवाना—स०['झुलाना' का प्रे० रूप]किसी को झुलाने का काम किसी दूसरे से कराना।

झुलस—स्त्री०=झुलसन।

झुलसन—स्त्री० [हि० झुलसना] १ झुलसने की क्रिया या भाव। २ झुलसे हुए होने की अवस्था या भाव। ३ ऐसी गरमी या ताप जिससे शरीर झुलस जाय।

झुलसना—अ०[स०√ज्वल्]१ आग की लपट से सहसा स्पर्श होने पर किसी अग की त्वचा का कुछ-कुछ जल जाने के कारण काला पड जाना। जैसे—रोटी पकाते समय हाथ झुलसना। २ अत्यधिक ताप या गरमी के कारण किसी वस्तु के ऊपरी या वाहरी तल का सूखकर काला पड जाना। जैसे—लू से पौधो के पत्ते या शरीर झुलसना।
स० किसी वस्तु को इस प्रकार जलाना या तप्त करना कि उसके ऊपरी आवरण या त्वचा का रग काला पड जाय। जैसे—जलती हुई लकडी से किसी का मुँह झुलसना।

झुलसवाना—स०[हि० 'झुलसाना का प्रे०रूप]कोई चीज झुलसने का काम किसी दूसरे से कराना।

झुलसाना—स०१.=झुलसना। २ =झुलसवाना।
† अ०=झुलसना।

झुलाना—स०[हि० झूलना का स०]१ टँगी या लटकी हुई चीज को वार-वार इधर-उधर हिलाना। जैसे—पालना झुलाना। २ ऐसी क्रिया

करना जिससे कोई झूलने लगे। जैसे—बच्चे को झुलाना। ३ किसी काम या बात के लिए किसी को बराबर आसरा देते रहना या प्रतीक्षा मे रखना (परन्तु वह काम या बात पूरी न करना)। जैसे—यह सुनार तो चीज बनाकर देने मे महीनो झुलाता है।

झुलावना—स०=झुलाना।

झुलावनि†—स्त्री०[हिं० झुलाना]झुलाने की क्रिया, ढग या भाव।

झुलुआ†—पु०[हिं० झूला]छोटा झूला।

झुलौआ†—वि०=झूलना।
†पु०१ =झूला। २ =झुल्ला।

झुल्ला—पु०[देश०] स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का पुरानी चाल का कुरता।
†पु०=झूला।

झुहिरना—अ०[?]लादा जाना। लदना।

झुहिराना—स०[हिं० झुहिरना] लादना।
अ०=झुहिरना।

झूंक†—स्त्री०१ =झोक। २ =झोका।

झूंकना†—स०=झोकना।
अ०=झीखना।

झूंका†—पु०=झोका।

झूंखना†—अ०=झीखना।

झूंझल†—स्त्री०=झुँझलाहट।

झूंटा—पु०[हिं० झोका] झूले पर चढकर तथा उसे झुलाकर एक बार आगे जाने और फिर उसी स्थान पर लौट आने की क्रिया या भाव। पेग।
†वि० झूठा।

झूंठ†—पु०=झूठ।
वि०=झूठा।

झूंठा†—वि०१ =झूठा। २ =जूठा।

झूंठी—स्त्री०[?]वे डठल जो नील के पौधो की डालियो को सडाने पर बच रहते है।

झूंपड़ा†—पु०=झोपडा।

झूंवना—अ०=झूमना।

झूंसना†—स०=झँसना (धोखा देकर लेना)।
अ०, स०=झुलसना।

झूंसा—पु०[देश०] एक तरह की घास।

झूकटी—स्त्री०[देश०] झाडी।

झूझ†—पु०=जूझ।

झूझना†—अ०=जूझना।

झूट—पु०=झूठ।

झूटना—पु०[?]कानो मे पहनने का झुमका।

झूठ—पुं०[स० अयुक्त; प्रा० *अजुत] ऐसा कथन या बात जो वस्तुत. यथार्थ या सत्य न हो फिर भी जो यथार्थ या सत्य के रूप मे कही गई हो।
पद—झूठ का पुतला=बहुत बडा झूठा आदमी। **झूठ की पोट**=सरासर झूठी बात।
मुहा०—झूठ का पुल बांधना=बराबर एक पर एक झूठ बोलते चलना। **झूठ सच जोड़ना**=किसी सच्ची बात में अपनी ओर से भी झूठी बातें मिलाकर कहना।
वि०=झूठा।
†स्त्री०=जूठ।

झूठन—स्त्री०[?] ऐसी भूमि जिसमे दो फसलें पैदा होती हों। दु-फसली जमीन।
†स्त्री०=जूठन।

झूठ-मूठ—अव्य० [हिं० झूठ+अनु० मूठ] १. बिना किसी वास्तविक या सत्य आधार के। झूठ ही। जैसे—झूठमूठ किसी को दौडाना। २. यों ही या व्यर्थ किसी को बहकाने या बहलाने के लिए।

झूठा—वि०[हिं० झूठ][स्त्री० झूठी]१. (कथन) जो सत्य न हो, बल्कि उसके विपरीत हो। वास्तव से अन्यथा या भिन्न। मिथ्या। जैसे—झूठा बयान, झूठी शिकायत। २ (व्यक्ति) जो उक्त प्रकार की बात कहता हो या जिसने उक्त प्रकार की बात कही हो। जैसे—झूठा गवाह। ३. (व्यक्ति) जो वास्तव मे विश्वसनीय और सत्यनिष्ठ न हो, पर स्वार्थ साधन के लिए अपने आपको विश्वसनीय और सत्य-निष्ठ बतलाता हो या सिद्ध करना चाहता हो। जैसे—झूठा मित्र। ४ (स्थिति) जिसमे उक्त प्रकार की विश्वसनीयता और सत्यनिष्ठा का अभाव हो। जैसे—झूठी दोस्ती, झूठी मुहब्बत। ५. (पदार्थ) जो नकली या बनावटी होने पर भी देखने मे असल की तरह जान पडता हो और असल की जगह काम देने के लिए बनाया गया हो। जो केवल दिखाने और धोखा देने भर को हो। जैसे—झूठा गहना, झूठा ताला, झूठा सिक्का।
मुहा०—(किसी चीज का) झूठा पड़ना=खराब हो जाने या बिगड जाने के कारण जो ऊपर से देखने मे तो ज्यो का त्यों हो, पर ठीक या पूरा काम न दे सकता हो। जैसे—(क) उसका बायाँ हाथ झूठा पड गया है। (ख) इस कल के कई पुरजे झूठे पड गये हैं।
६ (तथ्य या पदार्थ) जो अपेक्षया या तुलनात्मक दृष्टि से बहुत घटकर, तथ्यहीन या निरर्थक-सा हो। जैसे—इसके सामने तुम्हारे (क) सब व्यवहार या (ख) सब कपड़े झूठे है।
†वि० दे०'जूठा'।

झूठों—अव्य० [हिं० झूठा]१. केवल किसी को बहकाने भर के लिए। झूठ-मूठ। यो ही। २ सिर्फ कहने भर के लिए। नाम मात्र को। जैसे—उन्होने झूठो भी मुझसे साथ चलने को नही कहा।

झूणि—पु०[स०] १ एक तरह की सुपारी। २. एकप्रकार का अपशकुन।

झूना†—वि०=झीना।

झूबना†—अ०=झूमना।

झूम—स्त्री० [हिं० झूमना] १ झूमने की अवस्था, क्रिया या भाव।
उदा०—होती थी प्रकट एक झूम पद पद से।—मैथिलीशरण।
२. ऊँघने की अवस्था या भाव।

झूमक—पु० [हिं झूमना] १. देहाती स्त्रियो का एक प्रकार का नाच जिसमे वे दल बाँधकर और झूम-झूमकर नाचती है। झुमकरा। झूमर। २. इस नृत्य के साथ गाये जानेवाले गीत। ३. विवाह आदि मागलिक अवसरों पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। ४. चादर, साडी आदि से टाँकी जानेवाली वह झालर जिसमे मोतियो आदि के छोटे-छोटे गुच्छे या झुमके लटकते रहते हैं। ५ झुमका।

झूमक साड़ी—स्त्री० [हिं० झूमक+साडी] वह साडी जिसमे झूमक अर्थात् ऐसी झालर लगी हो जिसमे मोतियो के गुच्छे आदि टँके हुए हों।

झूमका—पु० १. =झूमक। २ =झुमका।

झूमड़ा†—पुं०=झूमर।

झूमड़ झामड़—पु० [हिं० झूमड] व्यर्थ का प्रपच। आडवर।

झूमड़ा—पु०=झूमरा।

झूमना—अ० [स० झप=कूदना] १ किसी चीज के अगले भाग या ऊपरी सिरे का वार-वार या रह-रहकर आगे-पीछे और इधर-उधर झुकते और उठते या हिलते-डुलते रहना। कुछ झोका खाते हुए कभी किसी ओर और कभी किसी ओर हलकी गति मे होना। जैसे—हवा के झोके से पेडों की डालियो का झूमना। २ नशे या नीद के कारण अथवा प्रसन्नता और मस्ती मे आने पर किसी जीव या प्राणी के धड और सिर मे उक्त प्रकार की हलकी गति होना। जैसे—(क) वहुत सुन्दर गीत, भजन या व्याख्यान सुनकर श्रोताओं का झूमना। (ख) मस्ती मे आकर साँप या हाथी का झूमना। ३ एक जगह इकट्ठे होकर कभी कुछ इधर और कभी कुछ उधर होते रहना। जैसे—आकाश मे वादलो का झूमना।

झूमर—पु० [हिं० झूमना] १. सिर पर पहनने का एक गहना जिसमे एक या कई लडो मे आगे की ओर एक छोटी पटरी-सी वनी होती है जो सिर की गति-विधि के अनुसार इधर-उधर झूमती या लहराती रहती है। २ कान मे पहनने का झुमका। ३ पूरव मे, देहाती स्त्रियो का एक प्रकार का नाच जिसमे वे घेरा वाँधकर झूमती हुई नाचती हैं। ४. उक्त नाच के साथ गाये जानेवाले गीत। ५ विवाह आदि मागलिक अवसरो पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत जो प्राय उक्त प्रकार से नाचते हुए गाये जाते है। ६ होली के दिनो मे गाये जानेवाले झूमक नामक गीत। ७ एक ही तरह की वहुत-सी चीजो का ऐसा समूह कि उनके कारण एक गोल घेरा-सा वन जाय। जमघटा। जैसे—नावो का झूमर।
†पु०=झूमड़।
क्रि० प्र०—डालना।—पडना।
८ एक प्रकार की मोगरी जिससे गाडीवान आदि अपनी गाडियो की मरम्मत करते है। ९ काठ का एक प्रकार का खिलौना जिसमे एक गोले या डडे के साथ छोटी-छोटी गोलियाँ वँधी रहती हैं। १०. दे० 'झूमरा' (ताल)।

झूमरा—पु० [हिं० झूमर] चौदह मात्राओ का एक ताल।

झूमरि†—स्त्री०=झूमर।

झूमरी—स्त्री० [देश०] शालक राग के पाँच भेदो मे से एक।

झूर†—वि० [स० जुष्ट] जूठा।
स्त्री० [हिं० झूरना] १. झुरने की क्रिया या भाव। २. उग्र मनस्ताप। जलन। दाह।
वि०=झूरा (सूखा)।
वि०=झूठा।
क्रि० वि०=झूठ-मूठ।

झूरना†—अ०=झुरना।
स०=झुराना।

झूरा—वि० [हिं० झूर] १. सूखा। शुष्क। उदा०—काठहु चाहि अधिक सो झूरा।—जायसी। २ रस-हीन। नीरस। ३ जिसके साथ और कुछ या कोई न हो।। अकेला। ४. (वेतन) जिसके साथ भोजन आदि न मिलता हो। विशेष दे० 'सूखा'।
पु० १ ऐसा स्थान जहाँ जल का अभाव हो। २ ऐसा समय जिसमे वृष्टि का अभाव हो। सूखा। ३ कमी। न्यूनता। विशेष दे० 'सूखा'।
क्रि० प्र०—पडना।

झूरि—स्त्री०=झूर।

झूरें—क्रि० वि० [हिं० झूर] १ विना किसी अर्थ या प्रयोजन के। यों ही। व्यर्थ। २ विना किसी और उपकरण या सामग्री के। खाली।
†क्रि० वि०=झूठमूठ।

झूल—स्त्री० [हिं० झूलना] १ झूलने की क्रिया या भाव। २ वह चौकोर कपडा जो प्राय शोभा के लिए घोडो, वैलो, हाथियो आदि की पीठ पर डाला जाता है और जो दाहिने-वाएँ झूलता या लटकता रहता है।
मुहा०—गधे पर झूल पड़ना=वहुत ही अयोग्य या कुपात्र पर कोई वहुत अच्छा अलकरण या आवरण पडना।
३ वह कपडा जो पहनने पर ढीला-ढाला, भद्दा या भोडा जान पडे। (व्यग्य) जैसे—किसी का ढीला-ढाला कोट देखकर कहना—यह झूल आपको कहाँ मे मिल गई।
†पु०=झूला।

झूल-दंड—पु० [हिं० झूलना+स० दड] एक प्रकार का व्यायाम जिसमे वारी-वारी मे वैठक और झूलते हुए दड किया जाता है।

झूलन†—स्त्री० [हिं० झूलना] झूलने की क्रिया या भाव। झूल।
पु० १ सावन के महीने मे ठाकुरो, देवताओं आदि के सवध मे होनेवाला वह उत्सव जिसमे उनकी मूर्तियाँ हिंडोले मे वैठाकर झुलाई जाती है और उनके सामने नृत्य, गीत आदि होते है। हिंडोला। २ उक्त अवसर पर अथवा सावन-भादो मे गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत।

झूलना—अ० [स० झुल, प्रा० झुलइ, झुल्ल, उ० झुलिवा, गु० झूलवूं, मरा० झुलणे, सिं० झुलणु] १ किसी आधार या सहारे पर लटकी हुई चीज का रह-रहकर आगे-पीछे या इधर-उधर लहराना अथवा हिलना-डोलना। जैसे—टँगा हुआ परदा या उसमे वँधी हुई डोरी का झूलना, पेड़ो मे लगे हुए फलो का झूलना। २ झूले पर वैठकर पेंग लेना या वार-वार आगे वढना और पीछे हटना। ३ किसी उद्देश्य या कार्य की सिद्धि की आशा अथवा प्रतीक्षा मे वार-वार किसी के यहाँ आना-जाना, अथवा अनिश्चित दशा मे पडे रहना। जैसे—किसी कार्यालय मे नौकरी पाने की आशा मे झूलना।
स० झूले पर वैठकर पेंग लेते हुए उसका आनन्द या सुख भोगना। जैसे—वरसात मे लडके-लडकियाँ दिन भर झूला झूलती रहती है।
वि० [स्त्री० झूलनी] (पदार्थ) जो रह-रहकर इधर-उधर हिलता-डोलता हो। झूलता रहनेवाला या झूलता हुआ। जैसे—पहाड़ी झरने या नदी पर वना हुआ झूलना पुल।
पु० १ मात्रिक सम दडक छंदो का एक भेद या वर्ग जिसे प्राकृत मे झुल्लण कहते थे। इसके प्रत्येक चरण मे ३७ मात्राएँ और पहली तथा दूसरी १० मात्राओ के वाद यति या विश्राम होता है। यतियो पर तुक मिलना और अन्त मे यगण होना आवश्यक है। २ एक प्रकार का

वर्णिक समवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे स, ज, ज, भ, र, स और लघु होता है। रूप-माला के प्रत्येक चरण के आरभ मे दो लघु रखने से भी यह छंद बन जाता है। इसमे १२ और ७ वर्णों पर यति होती है। इसे मणि-माल भी कहते हैं। ३ दे० 'झूला'।

झूलनी बगली—स्त्री० [हिं० झूलना+बगली] बगली की तरह की मुगदर की एक प्रकार की कसरत।

झूलनी बैठक—स्त्री० [हिं० झूलना+बैठक=कसरत] एक प्रकार की कसरत जिसमे बैठक करके पैर को हाथी के सूंड की तरह झुलाया जाता है।

झूलरि†—स्त्री० [हिं० झूलना] झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका।

झूला—पु० [स० दोल या हिं० झूलना] १ पेड की डाल, छत या किसी और ऊँचे स्थान मे बाँधकर लटकाई हुई दोहरी या चौहरी जजीरें या रस्सियाँ जिन पर तख्ता, पीढा या और कोई आसन लगाकर लोग खडे होकर या बैठकर आनन्द और मनोविनोद के लिए झूलते हैं।

क्रि०—प्र०—झूलना।—डालना।—पडना।

२. जंगली या पहाडी नदियाँ और नाले पार करने के लिए उनके दोनो किनारो पर किसी ऊँचे खभो, चट्टानो या पेडो की डालो पर रस्से बाँधकर बनाया जानेवाला वह पुल जिसका बीचवाला भाग अधर मे लटकता और इसी लिए प्राय इधर उधर झूलता रहता है। झूलना पुल। जैसे—लछमन झूला। ३ यात्रा आदि मे काम आनेवाला वह बिस्तर जिसके दोनो सिरे दो ओर रस्सियो से वृक्षो की डालो आदि मे बाँध देते हैं और जो उक्त प्रकार से बीच मे झूलता या लटकता रहता है। ४ हवा का ऐसा झटका या झोका जिससे चीजें इधर-उधर झूलने या हिलने-डोलने लगें। (क्व०) ५ दे० 'झूल'।

†पु० [?] तरबूज।

†पु०=झुल्ला (स्त्रियो का पहनावा)।

झूलि—स्त्री० १. =झूल। २ =झूली।

झूली—स्त्री० [हिं० झूलना] १. वह कपडा जिससे हवा करके अन्न ओसाया जाता है। २ ऐसा बिस्तर जिसके दोनो सिरे दोनो ओर किसी ऊँची चीज या जगह मे बँधे हो और जिसका बीचवाला भाग झूलता रहता हो। (दे० 'झूला' के अन्तर्गत)

झूसा—पु० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास जिसे चौपाये बहुत चाव से खाते हैं। गुलगुला। पलजी।

झेंपना—अ० [?] कोई लगती हुई बात सुनकर लज्जित भाव से सिर झुकाना या आँखें नीची करना। कुछ लज्जित होना।

सयो० क्रि०—जाना।

झेंपू—वि० [हिं० झेंपना] जो साधारण-सी बात होने पर भी लज्जित भाव से सिर या आँखें झुकाकर चुप रह जाता हो। प्राय झेंप जानेवाला।

झेपना—अ०=झेंपना।

झेपू—वि०=झेंपू।

झेर†—स्त्री० [?] १. झगडा। बखेडा। २ उलझन। पेच। ३. देर। विलब।

झेरना†—स० १ =छेडना (आरभ करना)। २.=झेलना।

झेरा†—पु० [?] १. गिरा या ढहा हुआ कूआँ। २ गड्ढा।

पु०=झेर।

झेल—स्त्री० [हिं० झेलना] १ झेलने की क्रिया या भाव। २. हलका और सुखद आघात, धक्का या हिलोरा। ३ तैरने के समय पानी हटाने के लिए हाथ-पैर चलाने की क्रिया या भाव।

†स्त्री०=झेर (देर)।

झेलना—स० [स० √जल्=घेरकर फँसाना ?] १. कठिन या विकट परिस्थिति आने या प्रसग पडने पर उससे पार पाने के लिए धैर्य और साहस पूर्वक तत्सबधी कष्ट सहना। विपत्तियो आदि से न घबराते हुए या उनकी परवाह न करते हुए उन्हे बरदाश्त या सहन करना। जैसे—(क) इतने बडे परिवार का पालन करने मे उन्हे बडे-बडे कष्ट झेलने पडे। (ख) यहाँ तक आने मे हमे रास्ते मे कमर और छाती तक पानी झेलना पडा। २. लाक्षणिक रूप मे, शुभ और सुखद परिस्थितियो का आनन्द लेते हुए भोग करना। उदा०—बाल केलि को विशद परम सुख, सुख समुद्र नृप झेलत।—सूर। ३ उचित ध्यान देते हुए ग्राह्य या मान्य करना। कोई बात सुनकर मान लेना। उदा०—पायन आनि परे तो परे रहे, केतो करी मनुहार न झेली।—मतिराम। ४ (कोई चीज या बात) हजम करना। पचाना।

झेलनी—स्त्री० [हिं० झेलना] वह जजीर जो गहनो आदि मे उनका भार सँभालने अथवा उन्हे यथास्थान ठहराये रखने के लिए उनमे लगी रहती है और जिसका दूसरा सिरा ऊपर कही अटकाया या खोसा जाता है। जैसे—नथ या बाली की झेलनी।

झेली—स्त्री० [हिं० झेलना] प्रसव के समय प्रसूता स्त्री को विशेष प्रकार से हिलाने-डुलाने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।

झोंक—स्त्री० [स० जूटक (जटा)] १ झोकने की क्रिया या भाव। २. सहसा किसी बात की ओर वेगपूर्वक झुक पडने अथवा मन के प्रवृत्त होने की अवस्था या भाव। जैसे—झोक मे आकर कोई काम कर बैठना। ३. नशे, मनोविकार, रोग आदि की अवस्था मे सहसा मन मे होनेवाली वह प्रवृत्ति जिसमे भले-बुरे का ज्ञान अथवा ध्यान न रह जाता हो। जैसे—पागलपन (या बीमारी) की झोक मे वह दिन भर बकता-झकता रहा। ४. किसी कार्य मे होनेवाली ऐसी तल्लीनता जिसमे कुछ प्रमाद या भूल हो जाने की सभावना बनी रहती हो अथवा औचित्य की सीमा का उल्लघन हो सकता हो। जैसे—(क) लिखने की झोक मे कलम से कुछ ऐसी बातें भी निकल गईं जो नही आनी चाहिए थी। (ख) पहली ही झोक मे उसने आधा काम निपटा डाला। ५ गति की ऐसी तीव्रता या वेग जो सहसा रुक न सकता हो अथवा जिसे सँभालना प्राय कठिन होता हो। जैसे—(क) मोटर इतनी झोक से जा रही थी कि चालक उसे ढाल पर रोक न सका। (ख) नीद की झोक मे वह पलग से गिरता-गिरता बच गया। ६. किसी चीज के यो ही अथवा वेगपूर्वक किसी ओर झुकने की क्रिया, प्रवृत्ति या भाव। जैसे—(क) नदी के बहाव की किनारे पर पड़नेवाली झोक। (ख) तराजू की डडी या पलडे मे होनेवाली झोक (पासग की सूचक)।

मुहा०—झोक मारना=कौशल या वेगपूर्वक तराजू का आगेवाला पलडा इस प्रकार आगे झुकाना कि देखनेवाला समझ ले कि चीज तौल मे पूरी हो गई। डाँडी मारना।

७ उक्त प्रकार के झुकाव, नति या प्रवृत्ति के कारण किसी ओर अथवा

किसी चीज पर पडनेवाला वोझ या भार।—जैसे—दीवार (या वरामदे) की सारी झोंक इसी खभे पर पडती हे।

पद—नोक-झोंक। (देखे)

८ वैलगाडी मे वे दोनो लट्ठे जो दोनों ओर उसका झुकाव या भार रोकने के लिए लगे रहते है। ९ दे० 'झोका'। १० दे० 'झोकी'।

झोकदार—वि० [हिं० झोक+दार (प्रत्य०)] (वास्तु कला मे, ऐसी रचना) जो सम रेखा के नीचे की ओर झुकी हुई हो। जैसे—झोकदार छज्जा।

झोकना—स० [हिं० झोक] १ झोक या वेग से एक चीज किसी दूसरी चीज मे गिराना, डालना या फेकना। जैसे—(क) इजन मे कोयला, भट्ठी मे लकडी या भाड मे झाड-झखाड झोकना। (ख) लडके को कूएँ मे झोकना।

मुहा०—भाड़ झोकना =दे० 'भाड' के मुहावरे।

२ ढकेलते या धक्का देते हुए अथवा वलपूर्वक किसी अनिष्ट, अप्रिय अथवा कष्टप्रद स्थिति की ओर अग्रसर करना। जान-वूझकर विपत्ति या सकट मे डालना या फँसाना। जैसे—तुम तो मजे मे घर वैठे रहे, और मुझे तुमने इस झझट (मुकदमेवाजी, लडाई-झगडे आदि) मे झोक दिया। ३ किसी प्रकार का कार्य या भार जवरदस्ती किसी पर रखना या लादना। जैसे—यह काम भी तुमने मुझ पर ही झोक दिया। ४ धन आदि के सवंध मे विना परिणाम आदि का विशेष विचार किये आवश्यकता से कही अधिक व्यय करना। जैसे—अमेरिका आज-कल अरवो रुपए ससार के पिछडे हुए देशों मे झोक रहा है।

झोंकवा†—पु० [हिं० झोकना] १ वह जो कही कोई चीज झोकते रहने की सेवा पर नियुक्त हो। २ भट्ठे, भाड आदि मे ईंधन झोकनेवाला व्यक्ति।

झोंकवाई—स्त्री० [हिं० झोकना] १ झोकवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ =झोकाई।

झोंकवाना†—स० [हिं० झोकना का प्रे०] झोकने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को कुछ झोकने मे प्रवृत्त करना।

झोंका—पुं० [हिं० झोक] १. शात या स्तव्ध वातावरण मे थोडे समय के लिए सहसा वेगपूर्वक चलनेवाली वायुलहरी। २ थोडे समय के लिए परन्तु सहसा तथा वेगपूर्वक होनेवाली वर्षा। ३. पानी की लहर। हिलोरा। ४. थोडे समय के लिए परन्तु सहसा आनेवाली नीद। ५ वेगपूर्वक चलनेवाली वस्तु का लगनेवाला आघात या झटका। ६ वेगपूर्वक इधर-उधर झुकने या हिलने की क्रिया या भाव। ७ उक्त प्रकार के हिलने-डोलने के कारण लगनेवाला आघात, झटका या धक्का। ८ किसी प्रकार के उत्कर्ष आदि मे दिखाई देनेवाली अनोखी असाधारणता या विशेषता। उदा०—कटि लहँगा लीलो वन्यो झोको जो देखि मन मोहै।—सूर। ९ कुश्ती का एक पेच जिसमे विपक्षी की वाँह के नीचे से हाथ ले जाकर उसके कन्धे पर रखते और तव उसे झटके या झोके से नीचे गिरा देते है।

झोकाई—स्त्री० [हिं० झोकना] १ झोकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोकिया†—पु०=झोकवा।

झोकी—स्त्री० [हिं० झोका] १ ऐसी स्थिति जिसमे अनिष्ट, सकट, हानि आदि की विशेष आशका या सभावना हो। जोखिम। २. ऐसा साहसपूर्ण कार-वार या लेन-देन जिसमे लाभ और हानि दोनो की वरावर वरावर सभावना हो। (व्यापारी)

क्रि० प्र०—उठाना।—लेना।—सहना।

३ उत्तरदायित्व। जवावदेही।

झोझ†—पु० [देश०] १ पक्षियो का घोसला। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के पक्षियो के गले मे लटकनेवाली मास की थैली या झालर। जैसे—गिद्ध का झोझ। ३. उदर। पेट। ४. कोलाहल। हल्ला। ५ खुजली। चुल।

मुहा०—झोझ मारना=किसी अनिष्ट या अनुचित वात की कामना या वासना होना।

झोझल—स्त्री०=झुँझल (झुँझलाहट)।

झोट—पु० [स० झुट] १. झाडी। २ झाडियो या पौधो का झुरमुट। ३ घास-फूस आदि का पूला। जूरी। ४ झुड। समूह।

†पु०=झोटा।

झोंटा—पु० [स० जूट] [स्त्री० अल्पा० झोटी] १ सिर पर के वढे हुए लवे-लवे वालो का समूह। उदा०—लगे घसीटन धरि धरि झोटी।—तुलसी।

पद—झोटा-झोटी=ऐसी लडाई जिसमे दोनो पक्ष एक दूसरे का झोटा ही पकडकर खीचते हो। **झोटी-झोटा**=झोटा-झोटी।

२ पतली और लवी वस्तुओ का इतना वडा समूह जो एक वार हाथ मे आ सके।

पु०=झूँटा (पेंग)।

पु० [हिं० ढोटा] १ भैसा। २ भैस का वच्चा। पडवा।

झोपड़ा—पु० [स० झोप्प या झोम्य] [स्त्री० अल्पा० झोपडी] गाँव, जगल आदि मे वना हुआ वह छोटा घर जिसकी दीवारे मिट्टी की और छाजन घास-फूस आदि की होती है। कुटी। पर्णशाला।

झोपड़ी—स्त्री० [हिं० झोपडा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा झोपडा।

झोपा—पुं० [हिं० झव्वा] १ झव्वा। फुँदना। २ गुच्छा।

झोकना—स०=झोकना।

झोकवाना—स० [भाव० झोकवाई] झोकवाना।

झोका—पु०=झोका।

झोझ—पु०=झोझ।

झोझर—पु० [अनु०]=ओझर।

झोझरू—पु० [देश०] एक प्रकार की घास।

झोझा—वि० [हिं० झोझ=पेट] जिसका पेट फूला तथा वढा हुआ हो। तोदवाला।

झोटिंग—वि० [हिं० झोटा] जिसके सिर पर झोटा अर्थात् लवे-लंवे वाल हो। झोटेवाला।

पु०=झोटा।

झोड—पु० [स०] सुपारी का वृक्ष।

झोड़ी†—स्त्री०=झोली।

झोपड़ा—पु० [स्त्री० अल्पा० झोपडी]=झोपडा।

झोर†—पु०=झोल।

झोरई†—वि० [हिं० झोल] (तरकारी) जिसमे झोल, रसा या शोरवा हो। रसेदार।

स्त्री० रसेदार तरकारी।

झोरना†—स० [स० दोलन या हि० झकझोरना] १ सहसा जोर से हिलाकर गति मे लाना। २ इस प्रकार किसी चीज को हिलाना या झटकारना कि उस पर पटी या लगी हुई दूसरी चीजें गिर जायँ। ३. झकझोरना। ४ बलपूर्वक या धोखे से धन ऐंठना। ५ अच्छी तरह तृप्त होकर खाना। ६ इकट्ठा या एकत्र करना।

झोरा†—पु० [स्त्री० अल्पा० झोरी]=झोला।

पु० [?] गुच्छा। झब्बा।

झोरि†—स्त्री०=झोली।

झोरी—स्त्री० [?] एक प्रकार की रोटी।

†स्त्री०=झोली।

झोल—पु० [हि० झूलना या झूला] १ ताने जानेवाले कपडो का वह अश या भाग जो उचित कसाव या तनाव के अभाव मे किसी ओर कुछ झुका, दवा या फूला रहता है। जैसे—छत मे टँगी हुई चादर या शामियाने मे का झोल। २ पहनने के कपडो मे उक्त प्रकार का ढीला-ढाला अश जो प्राय कटाई-सिलाई आदि के दोषो के कारण होता है। जैसे—कमीज, कुरते या कोट मे का झोल। ३ ओढे या बाँधे जानेवाले कपडो का आँचल, परला या सिरा जो किसी ओर झूलता या लटकता रहता है। जैसे—पगडी या साडी का झोल। ४ झिल्ली की वह थैली जिसमे गर्भ मे निकलने के समय अडे या बच्चे बद या लिपटे रहते है।

मुहा०—झोल बैठाना=सेने के लिए मुरगी के नीचे अडे रखना।

५ खिडकियो, दरवाजो आदि मे टाँगने का परदा। ६ किसी प्रकार की खडी की हुई आड या ओट। ७ तरकारियो आदि में का रसा या शोरबा जिसमे उनके टुकडे झूलते या इधर-उधर हिलते हुए दिखाई देते हैं। ८. उक्त प्रकार की अथवा कढी की तरह की खाने या पीने की कोई चीज। जैसे—आम या इमली का झोल। ९ भात मे से निकाली हुई पीच। माँड। १०. धातु की चीजो पर किया जानेवाला गिलट या मुलम्मा।

क्रि० प्र०—चढाना।—फेरना।

११ हाथी की वह दोषपूर्ण चाल जिसमे वह कुछ इधर-उधर झूलता हुआ-सा चलता है। १२ किसी प्रकार की कमी, त्रुटि या दोष। उदा०—कैधो तुम पावन प्रभु नाही, कै कछु मो मै झोलो।—सूर। १३ झझट, धोखे या बखेडे की बात। जैसे—यह सब झोल है, पहले हमारा रुपया चुकाकर तब और कोई बात करो। १४ चूक। भूल।

पद—झोल-झाल। (देखें)

वि० १. जिसमे उचित कसाव या तनाव न हो। २ निकम्मा और व्यर्थ का अथवा निस्सार। ३. दूषित। बुरा।

पु० [हि० झाल] १ जलन। दाह। २ भस्म। राख। उदा०—तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल।—जायसी।

झोल-झाल—पु० [हि० झोल+अनु० झाल] १ कपडो मे का झोल। २ निकम्मी या व्यर्थ की चीज या बात।

वि० १ ढीला-ढाला। २ निकम्मा या व्यर्थ। ३ दूषित। बुरा।

झोलदार—वि० [हि० झोल+फा० दार] १. (तरकारी) जिसमे झोल अर्थात् रसा हो। रसेदार। २ (धातु) जिस पर मुलम्मा हुआ हो। ३. (वस्त्र) जिसमे झोल पड़ता हो।

झोलना—स० [स० ज्वलन] १. तपाना या जलाना। २. सतप्त या दु:खी करना।

स० १. दे० 'झुलाना'। २. दे० 'झकझोरना'।

†अ० दे० 'झूलना'।

झोला—पु० [हि० झूलना या झोली] [स्त्री० अल्पा० झोली] १. कपडे आदि की सिली हुई एक प्रकार की प्रसिद्ध लंबोतरी थैली जिसके मुँह पर डोरी या तनी उसे पकडने या लटकाने के लिए लगी रहती है। थैला। २ कपडे का सिला हुआ आवरण। खोली। जैसे—बदूक का झोला। ३. साधुओ के पहनने का ढीला-ढाला कुरता। ४. वात रोग के कारण होनेवाला एक प्रकार का पक्षाघात जिसमे हाथ या पैर निष्प्राण होकर झूलने लगते है।

क्रि० प्र०—मारना।

५. पाले, लू आदि के कारण पेडो के कुम्हला या सूख जाने का एक रोग। ६ आघात। धक्का। ७ झोंका। झकोरा। उदा०—कोई खाँहि पवन कर झोला।—जायसी। ८. पाल की रस्सी को ढीला करने की क्रिया। ९ इशारा। सकेत।

झोलिहारा—पु० [हि० झोली+हारा (प्रत्य०)] १ वह जो गले या हाथ मे अथवा कधे पर झोली लटकाकर चलता हो। २ कहार।

झोली—स्त्री० [प्रा० झोल्लिअ] १. छोटा झोला। थैली। २ ओढे या पहने हुए कपड़े का पेट पर पड़नेवाला वह अश जिसे दोनो हाथों मे फैलाकर उसमे कोई चीज ग्रहण की जाती है। जैसे—फकीर अपनी झोली मे रोटियाँ रखता जाता था।

क्रि० प्र०—फैलाना।

मुहा०—झोली डालना=भिक्षा ग्रहण करने के लिए झोली फैलाना। **(किसी की) झोली भरना**=देवी, देवता आदि का प्रसाद किसी की झोली मे डालना। (मगल सूचक)

३. वह कपड़ा जिसकी सहायता से अनाज ओसाया या बरसाया जाता है। ४. घास-भूसा आदि बाँधने का बडा जाल। ५. चीजे फँसाने के लिए बनाया जानेवाला रस्सियों का एक प्रकार का फदा। ६. चरसा। मोट। ७ एक प्रकार का सफरी बिस्तर। विशेष दे० 'झूला' के अन्तर्गत।

स्त्री० [स० ज्वाल या झाला] राख। भस्म।

मुहा०—झोली बुझाना=(क) कार्य का सपादन या बात की सिद्धि हो जाने के उपरान्त किसी का उसे करने का ढोंग रचना। (ख) निराश होकर या व्यर्थ बैठना।

झौंझट†—स्त्री०=झंझट।

झौंद†—पु०=झोझ (पेट)।

झौंर†—पु०=झौर।

झौंरना†—स०=झौरना।

अ० [?] गूँजना। गुंजारना।

झौंरा†—पु०=झौर।

झौंराना—अ०, स०=झँवाना।

†अ०=झूमना।

स० झूमने मे प्रवृत्त करना।

झौंसना†—स०=झुलसना।

झौआ†—पु० [हिं० झावा] [स्त्री० अल्पा० झौनी] मिट्टी आदि ढोने का खाँचा।

झौड़—स्त्री० [हिं० झाँव झाँव से अनु०] १ कहा-सुनी। २. हुज्जत। ३ डाँट-फटकार। ४ झझट। वखेडा।

झौनी†—स्त्री० [देश०] टोकरी। दौरी।

स्त्री० हिं० 'झौआ' का स्त्री अल्पा० रूप। छोटा खाँचा।

झौर—पु० [?] १ फूलो आदि का गुच्छा। उदा०—माधुरी झौरनि फूलनि भौंरनि वौरनि वौरनि वेली वची है।—देव। २ सूत आदि का झब्बा। ३ झुड। समूह। उदा०—कहै रत्नाकर गुवालिनि की झौरि झौरि दौरि दौरि नन्द पौरि आवन तवै लगी।—रत्नाकर। ४ झुमका नाम का गहना।

†स्त्री०=झौड (कहा-सुनी, तकरार आदि)।

झौरना—स० [प्रा० झोडण] १ दवाने के लिए झपट कर पकडना। २. छोप लेना।

स० [हिं० झौर+ना (प्रत्य०)] झुड वनाना।

झौरा—पु० १ =झौर। २ =झौड।

झौरे—क्रि० वि० [हिं० धौरे] १ समीप। पास। निकट। २ सग। साथ।

झौवा†—पु०=झौआ।

झौहाना—अ० [अनु०] क्रुद्ध होकर झल्लाते हुए वोलना।

ञ

ञ—देवनागरी वर्ण-माला का दसवाँ व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, अनुनासिक, अल्प-प्राण यथा सघोष है।

ट

ट—देवनागरी वर्ण-माला का ग्यारहवाँ व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा अघोष है।

पु० [स०√टल् (उपद्रव करना)+ड] १ नारियल का खोपडा २ वामन। वौना। ३ किसी चीज का चौथाई भाग। चतुर्थाश। ४ आवाज। शब्द।

टंक—पु० [स०√टक् (वाँधना, कसना आदि)+घञ्] १ प्राचीन भारत मे चाँदी की एक तौल जो प्राय चार मासे के वरावर होती थी। २ उक्त तौल का वटखरा या वाट जिसके भार के हिसाव से टकसाल मे सिक्के ढाले जाते थे। ३ उक्त तौल का चाँदी का एक पुराना सिक्का। ४ मोती की एक तौल जो लगभग २१ रत्ती की होती थी। ५ पत्थर काटने और गढने की टाँकी। ६ कुदाल। फरसा। फावडा। ७ कुल्हाडी। ८ तलवार। ९ तलवार की म्यान। १०. टाँग। पैर। ११ अभिमान। घमड। १२ क्रोध। गुस्सा। १३ सुहागा। १४ पहाड का खड्ड। १५ नीला कैथ। १६ वेल की तरह का एक प्रकार का कँटीला पेड और उसका फल। १७ सम्पूर्ण जाति का एक सकर राग जो रात के समय गाया जाता है।

पु० [अ० टैक] १ तालाव। २ पानी रखने का वडा हौज। ३ स्थल पर चलनेवाला एक युद्धयान जिस पर तोपे चढी रहती है।

टंकक—पु० [स० टक+कन्] १ सिक्का, विशेषत चाँदी का ऐसा सिक्का जिस पर छाप आदि लगी हुई हो। २. कुदाल।

पु० [स० टकण से] आज-कल वह व्यक्ति जो टकण यत्र पर चिट्ठी-पत्री आदि छापता हो। (टाइपिस्ट)

टंकक-शाला—स्त्री० [प० त०] धातुओ के सिक्के ढालने का कारखाना। टकसाल।

टकटीक—पु० [स० व० स०] महादेव। शिव।

टंकण—पु० [स०√टक्+ल्यु—अन, णत्व] १ टाँकी से कोई चीज काटने, गढने, तोडने आदि का काम। २ टाँका या जोड़ लगाने का काम। ३ दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। ४ उक्त देश मे होनेवाला एक प्रकार का घोडा। ५ सुहागा। सिक्के ढालने तथा उन पर चित्र, चिह्न आदि की छाप लगाने की क्रिया या भाव। ६ आज-कल टकण-यत्र पर चिट्ठी-पत्री आदि छापने का काम। (टाइपराइटिंग)

टंकण-यत्र—पु० [प० त०] आज-कल छापे की एक प्रकार की छोटी कल जिसमे अलग-अलग पत्तियो पर अक्षर खुदे होते है और उन पत्तियो को जोर से दवाने पर वे अक्षर ऊपर लगे हुए कागज पर छपते चलते है। इससे प्राय चिट्ठियाँ, छोटे लेख आदि छापे जाते है। (टाइपराइटर)

टंकना—अ० [हिं० टाँकना का अ० रूप] १ टाँका जाना। २ कपडे आदि के टुकडो के जोड पर सूई-धागे से टाँका लगाया जाना। ३ टाँका लगने के कारण कपडे के एक टुकडे का दूसरे टुकडे के साथ अथवा किसी चीज का कपडे पर अटकाया जाना। जैसे—साडी मे वेल या कमीज मे वटन टकना। ४ धातुखडो या पात्रो का टाँके के योग से जोडा जाना। ५ टाँकी आदि के द्वारा चक्की, सिल आदि का रेहा जाना। ६ स्मरण रखने के लिए सक्षिप्त रूप मे कही लिखा जाना। जैसे—खाते मे रकम टँकना। ७ अनुचित रूप से हडप लिया जाना।

टंक-पति—पु० [प० त०] टक-शाला अर्थात् टकसाल का प्रधान अधिकारी।

टंक-मार—स्त्री० [अ० टैक+हिं० मारना] एक प्रकार की वहुत वडी तोप जिसका उपयोग टैको पर मढी हुई इस्पात की मोटी चादरें तोडने मे होता है।

टकवान् (वत्)—पु० [स० टक+मतुप्] वाल्मीकि-रामायण मे वर्णित एक पर्वत।

टँकवाना—स० [हिं० टाँकना का प्रे० रूप] १ टाँकने का काम दूसरे से कराना। टँकाना। २ टाँका लगवाना। ३ स्मरण रखने के लिए लिखवाना। †४ (सिक्का) परखवाना। जँचवाना। ५ खिलाना। ६ लाभ कराना। (दलाल)

टंकशाला—स्त्री० [ष० त०] टक अर्थात् सिक्के ढालने तथा उन पर अंक, चित्र, चिह्न आदि छापने का कारखाना। टकसाल।

टंका—स्त्री० [स०√टक्+अच्—टाप्] १ तारादेवी का एक नाम। २. जाँघ। रान। ३ सपूर्ण जाति की एक रागिनी।
पु० [स० टक] १ टक नाम की पुरानी तौल। २ टका नाम का ताँबे का पुराना सिक्का।
†पु० [देश०] एक प्रकार का गन्ना। टनका।

टँकाई—स्त्री० [हिं० टाँकना] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टंकानक—पु० [स० टक√अन् (प्रदीप्त करना)+ण्वुल्—अक] शहतूत।

टँकाना—स० [हिं० टाँकना का प्रे० रूप]=टँकवाना।

टंकार—स्त्री० [स० टम्√कृ (करना)+अण्] १. धनुष की प्रत्यचा (डोरी) को तानकर सहसा ढीला छोडने पर टन-टन होनेवाली कर्कश ध्वनि। २ धातु-खड, विशेषत धातु के कसे या तने हुए तार पर आघात लगने से होनेवाला टन टन शब्द। टनाका। ३. तर्जनी या मध्यमा उँगली का नाखून अँगूठे से दबाकर वह उँगली झटके से छोडते हुए इस प्रकार किसी चीज पर आघात करना कि उसमे टन का शब्द हो। ४ चिल्लाहट। ५ ख्याति। ६ कुख्याति। ७ आश्चर्य। अचरज।

टंकारना—स० [स० टकार] १ धनुष की प्रत्यचा (डोरी) को तानकर सहसा ढीला छोडना जिससे वह टन-टन शब्द करने लगे। २ टन-टन शब्द उत्पन्न करना।

टंकारी (रिन्)—वि० [स० टकार+इनि] टकार उत्पन्न करनेवाला।
स्त्री० [स० टक√ऋ (गति)+अण्—ङीप्] लबोतरी पत्तियोवाला एक प्रकार का वृक्ष जिसमे कई रगो के फूल लगते है और जिसके कुछ अग औषध के काम आते है।

टंकिका—स्त्री० [स० टकक+टाप्, इत्व] लोहे की वह छोटी टांकी जिससे चक्की, सिल आदि रेती जाती है।

टंकी—स्त्री० [अ० टैंक, मि० स० टक=गड्ढा] १ गारे-चूने-ईंट, पत्थर, लोहे आदि का वह चौकोर आधान जिसमे पानी भर कर रखा जाता है। कुड। हौज। २ पानी रखने का एक प्रकार का बरतन।
स्त्री० [?] एक प्रकार की रागिनी।
†स्त्री०=पक्ति।

टँकुआ†—वि० [हिं० टाँकना] [स्त्री० टँकुई] (वस्त्र) जिस पर कोई चीज टाँकी गई हो। जैसे—टँकुआ दुपट्टा। टँकुई साडी।

टंकोर†—स्त्री०=टकार।

टंकोरना†—स०=टकारना।

टंकौरी—स्त्री० [स० टक] टक अर्थात् सिक्के आदि तौलने की छोटी तुला। तराजू।
विशेष—प्राचीन काल मे सिक्को को तौलकर देखा जाता था कि कही इसमे धातु की मात्रा कम या अधिक तो नही है।

टंग—पु० [स० टक√पृपो० सिद्धि] १ टाँग। २. कुल्हाडी। ३ कुदाल। फरसा। ४ सुहागा। ५ चार मासे की एक तौल। टक।

टँगड़ी—स्त्री०=टाँग। (टँगडी के मुहा० के लिए दे० 'टाँग' के मुहा०)।

टंगण—पु० [स० टकण, पृपो० सिद्धि] सोहागा।

टँगना—अ० [स० टकण] १ टाँगा जाना। २. किसी चीज का ऊपरी भाग किसी ऊँचे आधार के साथ या स्थान पर इस प्रकार अटकाया, जडा, बाँधा या लगाया जाना कि वह चीज उसी के सहारे टिकी या ठहरी रहे। ३ फाँसी पर चढाया जाना।
पु० १ दो खूँटियो आदि मे बेडे बल मे बँधा हुआ तार, बाँस, रस्सी आदि जिस पर वस्त्र आदि टाँगे जाते है। २. उक्त काम के लिए लकडी का बनाया हुआ एक प्रकार का ऊँचा चौखटा।

टँगरी†—स्त्री०=टँगड़ी (टाँग)।

टँगवाना—स० [हिं० टाँगना का प्रे० रूप] किसी को कुछ टाँगने मे प्रवृत्त करना।

टँगा†—पु० [देश०] मूँज।

टँगाना—स०=टँगवाना।
अ०=टँगना।

टँगारी†—स्त्री० [स० टंग] कुल्हाड़ी।

टंगिनी—स्त्री० [स०√टक् (गलाना आदि)+णिनि, पृपो० सिद्धि] पाठा।

टंच—वि० [स० चट, हिं० चट] १. बहुत बडा कजूस या कृपण। २ बहुत बडा चालाक या धूर्त। उदा०—पायो जानि जगत मे सब कपटी कुटिल कलिजुगी टचु।—हरिवंश। ३ निष्ठुर।
वि० दे० 'टिचन'।

टंट-घंट—पु० [अनु० टन-टन+म० घटा] १. पूजा-पाठ का भारी आडबर या आडबरपूर्ण सामग्री। २ फालतू, रद्दी या व्यर्थ की चीजें।

टंटा—पु० [अनु० टन-टन] १. ऐसा व्यर्थ का उपद्रव, झगडा या बखेडा जिसमे बहुत-सी पेचीदी बातें हों। सारहीन लडाई या वैर-विरोध।
क्रि० प्र०—मचाना।
२ निकम्मी, रद्दी या व्यर्थ की चीजें या विस्तार।

टडर—पु०=टेंडर।

टंडल—पु०=टडैल।
†पु०=टेंडर।

टँडिया—स्त्री० [सं० ताड] बाँह पर पहनने का टांड़ नामक गहना।

टँडुलिया—स्त्री० [देश०] बन-चौलाई।

टडैल—पुं० [अ० टेंडर] १. मजदूरो का सरदार। २. हृष्ट-पुष्ट जवान।

टंसरी—स्त्री० [?] एक प्रकार की वीणा।

टँसहा†—पु० [हिं० टांस+हा (प्रत्य०)] वह बैल जिसकी टाँग की नसें सिकुड़ गई हो और जो इसी कारण लँगडा कर चलता हो।

टई†—स्त्री० १. =टही (थाक)। २. =टहल।

टक—स्त्री० [स० टंक=बांधना वा स० त्राटक] अनुराग, आश्चर्य, प्रतीक्षा आदि के कारण किसी ओर मनोनिवेशपूर्वक स्थिर दृष्टि से देखते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। नजर गड़ाकर लगातार किसी ओर देखते रहना। टकटकी।
क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—लगना।—लगाना।
मुहा०—**टक-टक देखना**=विवशता की दशा मे स्थिर दृष्टि से देखते रहना। **टक लगाना**=आसरा देखते रहना। दृष्टि लगाकर ध्यानपूर्वक किसी ओर देखते रहना।
स्त्री० [?] चीजें या बोझ तौलने का बड़ा तराजू।

टकटका†—पु०=टकटकी।

टकटकाना†—स० [हिं० टक] टकटकी लगाकर किसी ओर देखना। स्थिर दृष्टि किए हुए किसी ओर देखते रहना।
स० [अ०] टक-टक शब्द उत्पन्न करना।
अ० टक-टक शब्द होना।

टकटकी—स्त्री० [हिं० टक या सं० त्राटकी] टक लगाकर, मनोनिवेशपूर्वक स्थिर दृष्टि से किसी ओर देखते रहने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—लगना।—लगाना।

टकटोना—स०=टकटोरना। उदा०—सबै देस टकटोये।—नागरीदास।

टकटोरना†—स० [हिं० टकटकी] अन्धकार आदि मे किसी चीज के आकार, रूप आदि का पता लगाने के लिए उसे जगह-जगह से छूकर देखना। टटोलना।

टकटोलना—स० [अनु०]=टकटोरना।

टकटोहन†—पु० [हिं० टकटोना] टटोलने की क्रिया या भाव।

टकटोहना†—स०=टकटोरना।

टकतंत्री—स्त्री० [स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का सितार की तरह का बाजा।

टकना—पु० दे० 'टखना'।
अ०=टँकना।

टकबौड़ा—पु० [देश०] प्राचीन काल मे मगल तथा शुभ अवसरो पर प्रजा द्वारा जमीदार को दी जानेवाली भेंट।

टकराना—अ० [हिं० टक्कर] १. विपरीत दिशाओ मे वेगपूर्वक आगे बढने-वाली दो वस्तुओं, व्यक्तियो आदि अथवा उनके अगले भागो या सिरो का आपस मे इस प्रकार भिडना या जोर से लगना कि उनमे से किसी एक अथवा दोनो को भारी आघात लगे। जैसे—बाइसिकिलो या मोटरो का टकराना। २. किसी दिशा मे चलती या बढती हुई वस्तु का मार्ग मे खडी किसी बडी या भारी चीज से सहसा तथा जोर से जा लगना अथवा आघात करना। जैसे—किनारे से लहरो का टकराना। ३ किसी के मार्ग मे बाधक होना अथवा किसी का मुकाबला या सामना करने के लिए उसके मार्ग मे आना या पडना। सघर्ष होना। जैसे—जो हमसे टकरा-येगा चूर-चूर हो जायगा। ४ इधर-उधर मारे-मारे फिरना। टक्करें खाना।
स० एक चीज पर दूसरी चीज मारना।
स० दो चीजो के अगले भागो या सिरो को एक दूसरे से इस प्रकार जोर से भिडाना कि उनमे से एक या दोनो को चोट लगे या उनकी कोई विशेष हानि हो। आपस मे टक्कर खिलाना या लगाना।

टकरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड।

टकसरा—पु० [देश०] भारत के पूर्वी प्रदेशो मे होनेवाला एक तरह का बाँस।

टकसार†—स्त्री०=टकसाल।

टकसाल—स्त्री० [स० टकशाला] [वि० टकसाली] १. प्राचीन भारत मे वह कारखाना जहाँ पैसे, रुपए आदि के सिक्के ढलते थे। २ आज-कल वह स्थान जहाँ आधुनिक यत्रो से ठप्पों आदि की सहायता से रुपए, पैसे आदि के सिक्के तैयार किये या बनाये जाते है। ३. लाक्षणिक रूप मे, वह स्थान जहाँ मानक चीजें बनती हो।
मुहा०—टकसाल चढ़ाना=(क) प्राचीन भारत मे खरे-खोटे की परख के लिए सिक्को का टकसाल मे पहुँचना। (ख) लाक्षणिक रूप मे, किसी चीज का ऐसे स्थान मे पहुँचना जहाँ उसकी बुराई-भलाई की परख हो सके। (ग) दुष्कर्मो आदि मे पराकाष्ठा या पूर्णता तक पहुँचना। (परि-हास और व्यग्य)
पद—टकसाल-बाहर=(चीज या बात) जो ठीक, प्रामाणिक या मानक न मानी जाती हो। जैसे—इस प्रकार के प्रयोग आधुनिक भाषा मे टकसाल बाहर माने जाते है। ४ वह चीज या बात जो सब प्रकार से ठीक, निर्दोष, प्रामाणिक या मानक मानी जाती हो। उदा०—सार शब्द टकसार (ल) है, हिरदय माँहि विवेक।—कबीर।

टकसाली—वि० [हिं० टकसाल] १ टकसाल-सबधी। टकसाल का। २ टकसाल मे ढला या बना हुआ। ३ उतना ही प्रामाणिक और लोक-मान्य जितना टकसाल मे ढाला हुआ असली सिक्का होता है। सब तरह से चलनसार, ठीक और मान्य। शिष्ट-सम्मत। जैसे—बा० बालमुकुद गुप्त की भाषा टकसाली होती थी। ४ सब प्रकार से परीक्षित और प्रामाणिक। जैसे—आप की हर बात टकसाली होती है।
पु० मध्य युग मे टकसाल या सिक्के ढालनेवाले विभाग का प्रधान अधि-कारी।

टकहा†—पु०=टका।
वि०=टकाहा।

टकहाया—वि० [स्त्री० टकहाई]=टकाहा।

टका—पु० [सं० टक] १ प्राचीन भारत मे चाँदी का एक सिक्का जो प्राय आज-कल के एक रुपये के बराबर होता था। २. उक्त के आधार पर वैद्यक मे तीन तोले की तौल। ३ अँगरेजी शासन मे ताँबे का एक सिक्का जो दो पैसे मूल्य का होता था। अधन्ना।
पद—टका भर=बहुत ही अल्प या थोडी मात्रा मे। जैसे—टका भर घी दे दो। टका सा=बहुत ही छोटा, तुच्छ, थोडा या हीन। जैसे—टके-सी जान, और इतना गुमान। टके गज की चाल=(क) बहुत ही मद्धिम या सामान्य अथवा पुराने ढग की चाल-ढाल या रहन-सहन। जैसे—वह तो जनम भर वही टके गज की चाल चलते रहे। (ख) बहुत ही धीमी गति या सुस्त चाल। जैसे—छोटी लाइन की गाडियाँ तो बस वही टके गज की चाल चलती हैं।
मुहा०—टका-सा जवाब देना=उसी प्रकार तिरस्कारपूर्वक और नका-रात्मक उत्तर देना जैसे किसी भिक्षुक के आगे टका फेंका जाता था। इनकार करते हुए साफ जवाब देना। टका-सा मुँह लेकर रह जाना=अपमानित या तिरस्कृत होने पर लज्जित भाव से चुप रह जाना।
४ धन-सम्पत्ति। रुपया-पैसा। ५. गढवाल के पहाडी इलाको की एक तौल जो प्राय सवा सेर के लगभग होती है।

टकाई—वि०, स्त्री०=टकहाई (टकहाया का स्त्री० रूप)।
स्त्री०=टकासी।

टकातोप—स्त्री० [देश०] समुद्री जहाजो पर की एक प्रकार की छोटी तोप।

टकाना†—स०=टँकवाना।

टकानी—स्त्री०=टेकानी।

टकासी—स्त्री० [हिं० टका] १ एक रुपये पर प्रतिमास दो पैसे का सूद

टट*—पु०[स०] तट। उदा०—आएउँ भागि समुद टट ।—जायसी।

टटका—वि०[स० तत्काल] [भाव० टटकाई, स्त्री० टटकी] १. (फलो आदि के सबध मे) जो अभी-अभी (खेत, पौधे आदि से तोडकर) लाया गया हो, फलत. जो वासी न हो। ताजा। जैसे—टटका आम, टटकी तरकारी। २. (समाचार) जिसकी सूचना अब या अभी मिली हो। ताजा। जैसे—टटकी खबर। ३ नया।

टटकाई*—स्त्री०[हिं० टटका] टटके या ताजे होने की अवस्था या भाव। ताजापन।

टटड़ी†—स्त्री०=टटरी।

टटरी†—स्त्री०१=टट्टी। २=ठठरी।

टटरूँ—पु०[अनु०] पेडुकी (चिडिया)।

टटल-बटल—वि०[अनु०] ऊटपटाँग।

पु० अगड-खगड़। काठ-कबाड।

टटाना†—अ० [हिं० ठाँठ] शुष्क होना। सूखना। २ खुश्की, थकावट आदि के कारण शरीर या उसके अगो मे हलकी पीडा होना। ३ भूख आदि से विकल होना।

स० १ सुखाना। २ भूखे रखकर विकल करना।

टटावक—पु०[?] काला टीका। उदा०—मोर चन्द सिर अस कछु लीनौ। मानहु अली टटावक दीनौ।—नन्ददास।

टटावली—स्त्री०[स० टिट्टिभ] कुररी या टिटिहरी नाम की चिडिया।

टटिया†—स्त्री०=टट्टी।

टटियाना†—अ०, स०=टटाना।

टटीबा—पु०[अनु०] १ चारो ओर घूमनेवाला चक्कर या चरखी। २ घिरनी। ३ चारो ओर घूमने या चक्कर खाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—खाना।

४ दे० 'टिटिवा'।

टटीरी—स्त्री०=टिटिहरी (चिडिया)।

टटुआ†—पु०[स्त्री० टटुई]=टट्टू।

†पु० दे० 'टेटुआ'।

टटोना†—स०=टटोलना।

टटोरना†—स०=टटोलना।

टटोल—स्त्री०[हिं० टटोलना] टटोलने की क्रिया, ढग या भाव।

टटोलना—स०[स० तुला से अनु०] १ अन्धकार मे अथवा स्पष्ट दिखाई न देने पर किसी चीज के आकार-प्रकार, रूप-रग आदि का पता लगाने के लिए उसके अगो आदि पर उँगलियाँ या हाथ फेरना। २ किसी आवरण मे रखी हुई वस्तु का अनुमान करने के लिए उसे बाहर से छूना, दबाना या हिलाना। जैसे—किसी का जेब टटोलना। ३ ठीक पता न चलने पर अन्दाज से इधर-उधर ढूँढना या तलाश करना। ४ किसी का आशय या विचार जानने अथवा उसके मन की थाह लेने के लिए उससे जिज्ञासात्मक बात-चीत करना। ५ जाँचने, परखने आदि के लिए किसी प्रकार की ऊपरी या बाहरी क्रिया करना।

टटोहना*—स०=टटोलना।

टट्टड़†—पु०=टट्टर।

टट्टनी—स्त्री०[स० टट्ट√नी (ढोना)+ड—डीप्] छिपकली।

टट्टर—पु०[स० तट=ऊँचा किनारा या स० स्याता=जो खड़ा हो] गाँवो, देहातो आदि के कच्चे मकानो मे दरवाजे के स्थान पर मार्ग अवरुद्ध करने के लिए लगाया जानेवाला बाँस की फट्टियो का चौकोर जालीदार ढाँचा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

पु०[स० टट्ट√रा (देना)+क] भेरी का शब्द।

टट्टरी—स्त्री०[स० टट्टर+ङीष्] १. ढोल, नगाडे आदि के बजने का शब्द। २. लबा या विस्तृत कथन या विवरण। ३. हँसी-मजाक। ठट्ठा।

टट्टा—पु० [सं० तट=ऊँचा किनारा या स० स्याता=जो खडा हो]। [स्त्री० टट्टी] १. टट्टर। बडी टट्टी। २ लकडी का तख्ता या पल्ला। ३ अडकोश। (पजाब)

टट्टी—स्त्री०[स० तटी=ऊँचा किनारा या स० स्थायी] १ तिनको, तीलियो आदि को आपस मे फँसा या बाँधकर तैयार किया हुआ परदा। जैसे—खस की टट्टी। २ टट्टर। ३. आड़ या ओट के लिए सामने खड़ा किया हुआ वह आवरण या परदा जो प्राय वृक्षो की डालियो, बाँसो आदि से बनाया जाता है।

पद—**धोखे की टट्टी**=(क) ऐसा आवरण या परदा जो लोगो को धोखे मे रखकर अपना काम निकालने के लिए खडा किया जाय। (ख) ऐसी चीज या बात जो ऊपर से देखने पर कुछ और जान पडे, परन्तु जिसके अन्दर कुछ और ही हो।

मुहा०—**टट्टी की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना**=स्वय आड मे रहकर या छिपकर किसी पर आघात या वार करना अथवा किसी प्रकार के स्वार्थ-साधन का प्रयत्न करना।। **टट्टी में छेद करना**=ढकने या परदा करनेवाली चीज मे ऐसा अवकाश निकालना जिससे बाहरवालो को अन्दर की चीजो या बातो का पता लगने लगे। **टट्टी लगाना**=ऐसा आवरण या परदा खड़ा करना जिसके अन्दर लुक-छिप कर कोई काम किया जा सके।

४. बाँस की फट्टियो आदि का वह ढाँचा जो बेलें आदि चढाने के लिए खडा किया जाता है। जैसे—अगूर की टट्टी। ५ वे तख्ते या पटरियाँ जिन पर नकली पेड-पौधे आदि बनाकर रखे या लगाये जाते है और जो शोभा के लिए जुलूसो, बरातो आदि के साथ ले जाये जाते है। ६. किसी प्रकार की आड या ओट करने के लिए बनाई जानेवाली छोटी, पतली दीवार। ७ चारो ओर उक्त प्रकार का दीवारो से घेरा हुआ वह स्थान जो केवल शौच आदि के लिए नियत हो। पाखाना।

मुहा०—**टट्टी जाना**—मल-मूत्र आदि का विसर्जन करने के लिए उक्त प्रकार के स्थान मे अथवा खेत आदि मे जाना।

८ मल। गूह। पाखाना। ९ चिक। चिलमन। १० कोई पतली, चौकोर या लबी-चौडी रचना।

पद—**टट्टी का शीशा**=बहुत ही पतले दल का और साधारण शीशा, जैसा तसवीरो, दरवाजो आदि की चौखट मे लगाया जाता है।

टट्टर—पु०[स० टट्ट√रा (देना)+क] नगाडे का शब्द।

टट्टू—पु०[अनु०] [स्त्री० टटुआनी, टटुई] १ छोटे या नाटे कद का घोड़ा। टाँगन।

पद—**भाड़े का टट्टू**=ऐसा व्यक्ति जो अपने पद, मर्यादा, विवेक आदि का ध्यान छोडकर पैसे के लालच से दूसरो का काम करता हो अथवा उनकी बातो का समर्थन करता हो।

ये तो महीनो से नौकरी की आशा में यहाँ बैठे हुए टप रहे है। २. पशु-पक्षियो आदि का जोडा खाना या सभोग करना। ३ उछलना। कूदना। स० १. उछल या कूदकर किसी चीज को लाँघते हुए उसके पार जाना। (पश्चिम) जैसे—दीवार या मुंडेरा टपना। २ आच्छादित करना। ढकना। तोपना। (क्व०)

टपनामा—पु०[हिं० टिप्पन] वह रजिस्टर जिसमे समुद्री जहाजो पर तूफानो आदि का लेखा रखा जाता है।

टपमाल—पु०[अ० टापमाल] जहाजो पर काम आनेवाला लोहे का भारी घन।

टपरना†—स० [अनु०] दीवार मे, मसाला भरने से पहले उसके फर्श की दरजो को कुछ खोदकर चौडी या वडी करना जिससे उनमे मसाला अच्छी तरह से भरा जा सके।

टपरा†—पु०[स्त्री० अल्पा० टपरी] =टप्पर।

टपरियाना†—अ०=टपरना।

टपाटप—क्रि० वि० [अनु० टप टप] १ टप टप शब्द करते हुए। जैसे—टपाटप आँसू गिरना। २ निरन्तर। लगातार। ३ चटपट। तुरन्त। जैसे—टपाटप काम निपटाना।

टपाना—स०[हिं० टपना का स०] १. किसी को टपने (अर्थात् निराश भाव से कष्टपूर्वक समय बिताने) मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिसमे किसी को टपना पडे। २ पशु-पक्षियो आदि को जोडा खिलाना या संभोग कराना। ३. कूदने-फाँदने या लाँघने मे प्रवृत्त करना। जैसे—नाले पर से घोडा टपाना। (पश्चिम)

टपाल—स्त्री०[तेलगु तप्पालु] भेजी जानेवाली चिट्ठी-पत्री आदि। डाक। (महाराष्ट्र)

टप्पर†—पु०[?] १. झोपडा। २ छप्पर। ३. विछाने का टाट।

मुहा०—टप्पर उलटना=दे० 'टाट' के अन्तर्गत मुहा० 'टाट उलटना'।

टप्पा—पु०[हिं० टाप या फा० तप्पा] १. उतनी दूरी या फासला जितना कोई चीज उछाली, कुदाई या फेंकी जाने पर एक बार मे पार करे। जैसे—गेद या गोली का टप्पा।

मुहा०—टप्पा खाना=किसी फेंकी हुई वस्तु का बीच मे गिरकर जमीन से छू जाना और फिर उछलकर आगे बढना।

२. उछाल। फलाँग। ३. दो चीजो या स्थानो के बीच की दूरी या फासला। ४ जमीन का छोटा टुकडा। ५ टिकने का स्थान। पड़ाव। ६ डाक-घर। ७. वह बेडा जिसमे पाल लगी हो। ८ बडी या मोटी सीयन। ९ एक प्रकार का पजाबी लोकगीत, जिसकी तीन-तीन पक्तियो मे स्वतत्र भाव सँजोये हुए होते है।

विशेष—इसका आरभ पजाब के सारवानो से हुआ था।

१० एक प्रकार का पक्का गाना जिसमे गले से स्वरो के बहुत छोटे-छोटे टुकडे या दाने एक विशेष प्रकार से निकाले जाते हैं।

विशेष—इसका प्रचलन लखनऊ के गुलाम नबी शोरी ने किया था।

११ सगीत मे एक प्रकार का ठेका जो तिलवाडा ताल पर बजाया जाता है। १२. एक प्रकार का हुक या काँटा।

टब—पु०[अ० टब] पानी रखने का एक प्रकार का खुले मुँह का चौडा और बड़ा बरतन।

†पु० दे० 'टप' (कान मे पहनने का गहना)।

टब्बर†—पु०[?] कुटुब। परिवार। (पजाब)

टमकी—स्त्री०[स० टकार] डुगडुगी नाम का बाजा।

टमटम—स्त्री०[अ० टैंडेम] एक प्रकार की ऊँची और बडी दो पहियोवाली घोड़ा-गाडी।

टमटी—स्त्री०[देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बरतन।

टमस—स्त्री०[स० तमसा] टौस नदी। तमसा।

टमाटर—पु०[अं० टमैटो] १ बैंगन की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसमे लाल रग के गोल-गोल फल लगते हैं। २. उक्त फल जिनकी तरकारी बनाई जाती है।

टमुकी—स्त्री०=टमकी।

टर—स्त्री०[अनु] १. तीव्र तथा कर्कश ध्वनि। जैसे—मेढक का टर-टर बोलना। २ ऊँचे स्वर मे कही हुई कोई बात।

मुहा०—टर-टर करना या लगाना=हठपूर्वक बढ-बढकर बोलते चलना।

३ अविनीत आचरण या चेष्टा। उद्दडता। ४ जिद। हठ। ५ मुसलमानो का, एक त्योहार।

टरकना—अ०=टलना।

अ०[अनु०] १. टर-टर शब्द होना। २ टर-टर या व्यर्थ की बकवाद करना।

टरकनी†—स्त्री०[देश०]खेत की (विशेषत ऊख के खेत की) की जाने वाली दुबारा सिंचाई।

टरकाना—स०=टालना।

टरकी—स्त्री०[अनु० टर्क टर्क से] मुरगे की जाति का एक प्रकार का पक्षी जो अनेक देशो मे मुरगो की तरह पाला जाता है।

विशेष—यह पक्षी मूलतः उत्तरी अमेरिका का है, और टरकी (तुर्क) देश से इसका कोई सबध नही है। यह टर्क-टर्क शब्द करता है, इसी से इसका यह नाम पड़ा है।

टरकुल—वि०[हिं० टरकाना] बहुत ही साधारण या घटिया। निकम्मा।

टरखल—वि०[?] बुड्ढा। (घृणासूचक)

टरगी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।

टरटराना—स०[हिं० टर] १ टर-टर शब्द करना। २. धृष्टतापूर्वक बहुत अधिक या बढ-बढ कर तथा जोर से बोलना।

टरना†—अ०=टलना।

पु०[देश०] तेली के कोल्हू की वह रस्सी जो ढेंका और कतरी से बँधी होती है।

टरनि†—स्त्री०[हिं० टरना] टलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

टराना†—अ०=टरना (टलना)।

स०=टारना (टालना)।

टर्र टर्र—स्त्री०[अनु०] १. मेढक का तीव्र तथा कर्कश शब्द। २ उद्दण्डतापूर्वक ऊँचे स्वर मे बढ-बढकर कही जानेवाली बाते जिनसे लडाई-झगडा छिड सकता हो।

टर्रा—वि०[अनु० टर टर] १ (व्यक्ति) जो उद्दण्डतापूर्वक ऊँचे स्वर मे बढ-बढकर बाते करता हो। कटुवादी। २ जो जरा-सी बात पर लडने को तैयार हो जाय। ३. कठोर तथा कर्णकटु (शब्द)।

टर्राना—अ०[अनु० टर] ऐसी उद्दण्डतापूर्ण और घमडभरी बाते करना जिनसे झगड़ा या लड़ाई हो सकती हो।

टर्रापन—पु० [हिं० टर्रा] उद्दंडतापूर्वक घमंड-भरी बातें करने का ढंग या भाव।

टर्रू—पु० [हिं० टर-टर] १. बहुत टर-टर करने अर्थात् अनावश्यक रूप से बकने या बोलनेवाला व्यक्ति। २. बहुत ही कठोर और रूखे स्वभाव का ऐसा व्यक्ति जो जरा सी बात पर भी लड़ने को तैयार हो जाता हो। टर्रा आदमी। ३ मेंढक। ४ कौआ या भौंरा नामक खिलौना जिसे घुमाने से मेंढक की तरह का टर-टर शब्द होता है।

टलन—पु० [स०√टल् (बेचैन होना)+ल्युट्-अन] घबड़ाहट। विह्वलता। स्त्री० [हिं० टलना] टलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

टलना—अ० [स० टलन=विचलित होना] १. हिं० 'टालना' का अ० रूप। किसी चीज का अपने स्थान से कुछ खिसकना, सरकना या हटना। २ किसी काम से आए हुए व्यक्ति का बिना अपना काम पूरा किये चले जाना या हट जाना। जैसे—आज तो वह जैसे-तैसे टल गया; कल देखा जायगा। किसी अनिष्ट घटना या स्थिति का किसी प्रकार घटित होने से रुक जाना या कुछ समय के लिए स्थगित हो जाना। जैसे—चलो यह बला भी टली। ४ किसी काम का अपने पूर्व निश्चित समय पर न होकर स्थगित होना। जैसे—मुकदमे की तारीख टलना। ५ किसी के अनुरोध, आग्रह, आदेश, निश्चय आदि का पालन न होना। किसी की बात का न माना जाना। जैसे—उनकी आज्ञा टल नहीं सकती। ६ अपने कार्य, निश्चय, विचार आदि छोड़ना या उनसे हटना। जैसे—यह लड़का इतनी मार खाता है, पर अपनी आदतों (या शरारतों) से किसी तरह नहीं टलता। ७. बहुत कठिनता से या जैसे-तैसे समय बिताना। जैसे—आज का दिन तो किसी तरह टाले नहीं टलता।

टलमल—वि० [हिं० टलना+अनु०] हिलता हुआ। चंचल।

टलवा†—पु० [देश०] बैल।

टलहा†—वि० [देश०] [स्त्री० टलही] १ निकम्मा। रद्दी। २. जिसमें रद्दी चीजों की मिलावट हो। खोटा। जैसे—टलही चाँदी।

टलाटली—स्त्री०=टाल-मटोल।

टलाना—स० हिं० 'टालना' का प्रे० रूप।

टलुआ—वि० [हिं० टाल] टाल-संबंधी।

पु० टाल का स्वामी।

टल्ला†—पु० [अनु०] १ ठोकर। २ धक्का।

मुहा०—**टल्ले मारना**=व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहना।

३. टाल-मटोल।

टल्ली—पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जिसे 'टोली' भी कहते हैं।

टल्लेनवीसी—स्त्री० [हिं० टल्ला+फा० नवीसी] १. टाल-मटोल। बहानेबाजी। २ निकम्मे या निठल्ले होने की अवस्था या भाव। ३ बहुत छोटे, व्यर्थ के या इधर-उधर के काम।

टल्लो†—स्त्री० [स० पल्लव] छोटी हरी टहनी। जैसे—आम का टल्लो।

ट-वर्ग—पु० [प० त०] वर्णमाला के ट ठ ड ढ और ण इन पाँच व्यंजनों का समूह।

टवाई—स्त्री० [स० अटन=घूमना] १. भ्रमण। २ व्यर्थ का घूमना-फिरना।

टस—स्त्री० [अनु०] १ किसी भारी चीज के खिसकने का शब्द। २ जोर लगाये जाने पर भी भारी चीज के अपने स्थान से न हिलने की अवस्था या भाव।

मुहा०—**टस से मस न होना**=(क) भारी चीज का अपने स्थान से न हिलना। (ख) समझाने-बुझाने आदि पर भी अपनी हठ या बात न छोड़ना।

टसक—स्त्री० [हिं० टसकना] १. टसकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. टीस।

टसकना—अ० [स० तस=ढकेलना+करण] १. अपने स्थान से थोड़ा खिसकना या हटना। २. निश्चय, विचार आदि से थोड़ा इधर-उधर या विचलित होना। ३. रह-रहकर हलकी पीड़ा होना। टीस उठना। ४ फलों आदि का पककर गदराना।

अ० [हिं० टसुआ=आँसू] धीरे धीरे-रोते हुए आँसू बहाना। विसूरना।

टसकाना—स० [हिं० टसकना] १ खिसकाना। हटाना। २ विचलित करना। ३ आँसू बहाना।

टसना†—अ० [अनु० टस] खींच पड़ने के कारण कपड़े आदि का फटना, मसकना या दरकना।

टसर—पु० [स० त्रसर] १ मटमैले, पीले रंग का एक प्रकार का रेशम। २. उक्त रेशम से बुना हुआ कपड़ा।

टसरी—वि० [हिं० टसर] टसर के रंग का। मटमैला और पीला। गरदी।

पुं० उक्त प्रकार का रंग। गरदी।

टसुआ†—पु० [हिं० अँसुआ (आँसू) का अनु०] अश्रु। आँसू।

क्रि० प्र०—बहाना।

टहक—स्त्री० [हिं० टहकना] १ टहकने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ शरीर के अंगों में रह-रहकर दरद होने की अवस्था या भाव।

टहकना—अ० [अनु०] १ रह-रहकर शरीर के अंगों में दरद होना। २. पिघलना। ३ टक-टक शब्द करना।

टहकाना—स० [हिं० टहकना का स० रूप] पिघलाना।

टहटहा—वि० [हिं० टहटहाना] १ हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २. टटका। ताजा।

टहटहाना—अ० =लहलहाना।

टहना—पु० [हिं० टहनी] बहुत बड़ी तथा मोटी टहनी।

टहनी—स्त्री० [स० तनु] वृक्ष की शाखा। डाल। डाली।

टहरकट्ठा†—पु० [हिं० ठहर+काठ] काठ का वह टुकड़ा जिस पर तकले से उतारा हुआ सूत लपेटा जाता है।

टहरना†—अ०=टहलना।

टहल—स्त्री० [हिं० टहलना] १ टहलने की क्रिया या भाव। २. किसी को शारीरिक सुख पहुँचाने के लिए की जानेवाली उसकी छोटी या निम्न कोटि की सेवा। खिदमत। जैसे—पैर या सिर दबाना, बदन में तेल मलना आदि।

टहलना—अ० [सं० तत्+चलन =चलना] केवल जी बहलाने, स्वास्थ्य ठीक रखने, हवा खाने आदि के उद्देश्य से धीरे-धीरे इधर-उधर चलना-फिरना या कहीं जाना।

मुहा०—**(कहीं से) टहल जाना**=किसी जगह से चुपचाप या धीरे से खिसक या हट जाना। चल देना।

टहलनी—स्त्री० [हिं० टहलुआ का स्त्री० रूप] १ टहल करनेवाली दासी। सेविका। २ मजदूरनी।
†स्त्री० [?] दीए की बत्ती उसकाने की छोटी लकडी या सीक।

टहलाना—स० [हिं० टहलना] १ किसी को टहलने मे प्रवृत्त करना। मनोविनोद, स्वास्थ्य-रक्षा आदि के लिए धीरे-धीरे चलाना या घुमाना-फिराना। २ चिकनी-चुपडी बातो मे फँसाकर किसी को अपने साथ कही ले जाना।

टहलुआ—पु० [हिं० टहल] [स्त्री० टहलुई, टहलनी] टहल या सेवा करनेवाला व्यक्ति।

टहलुई—स्त्री० [हिं० टहलुवा का स्त्री० रूप] =टहलनी।

टहलुवा†—पु०=टहलुआ।

टहलू†—पु० =टहलुआ।

टही†—स्त्री० [हिं० तह या तही] १ एक पर एक करके रखी हुई चीजो का ढेर या थाक। २. कोई उद्देश्य पूरा करने या काम निकालने के लिए की जाने वाली छोटी-मोटी युक्ति।
क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।—लगाना।

टहुआटारी†—स्त्री० [देश०] दुष्ट उद्देश्य से एक की बात दूसरो से कहने की क्रिया या भाव। चुगलखोरी।

टहूकड़ा—पु० [अनु०] १ कोयल के बोलने का शब्द। २ ऊँट के बोलने का शब्द।
पु०—टहूका।

टहूका—पु० [हिं० ठक या ठहाका] १ पहेली। २ चमत्कारपूर्ण या हास्य रस की छोटी कहानी या बात। चुटकुला।
†पु०—टहूकडा।

टहोका—पु० [हिं० ठोकर] १ हाथ या पैर से किया हुआ बहुत हलका आघात। २. लाक्षणिक रूप मे, मन पर लगनेवाला हलका आघात या ठेस।

टाँक—स्त्री० [स० टक] १ तीन या चार मासे की एक पुरानी तौल। २. प्राय २५ सेर का एक पुराना बाट जिसकी सहायता से धनुष की शक्ति की परीक्षा की जाती थी। ३ अश। भाग। हिस्सा।
स्त्री० [हिं० टाँकना] १ टाँकने की क्रिया या भाव। २ लिखावट या लेख। ३ लिखने की कलम का अगला भाग या सिरा।
स्त्री० [हिं० आँकना] मान, मूल्य आदि का अनुमान। कूत।

टाँकना—स० [स० टकण=बाँधना] १ सूई, डोरे आदि से सीकर कोई चीज कपडो पर लगाना। जैसे—साडी पर बेल या सलमा-सितारे टाँकना, कमीज या कोट मे बटन टाँकना। २ दो चीजो को आपस मे जोडने, मिलाने आदि के लिए किसी प्रकार उनमे टाँका (देखे) लगाना। ३ किसी क्रिया से कोई चीज किसी दूसरी चीज के साथ अटकाना या लगाना। ४. चक्की, सिल आदि को टाँकी से रेहना। ५ आरी, रेती आदि के दाँत किसी क्रिया से चोखे, तेज या नुकीले करना। ६ स्मरण रखने के लिए अथवा हिसाब ठीक रखने के लिए कोई बात या रकम कही लिखना। जैसे—(क) जाकड दिया हुआ माल बही पर टाँकना, कापी पर किसी का पता टाँकना। ७ लिखित रूप मे कोई चीज, या बात किसी के सामने उपस्थित करना। (क्व०) ८ भोजन करना। खाना। जैसे—वह सारी मलाई टाँक गया। ९ किसी प्रकार के लेन-देन मे, बीच मे से कुछ रकम निकाल या हथिया लेना। (दलाल) जैसे—मकान की बिक्री मे सौ रुपये वह भी टाँक गया।

टाँकर—पु० [स० टक+अण्, टाक√रा (देना)+क] १ व्यभिचारी। २ कामुक या विषयी व्यक्ति।

टाँकली—स्त्री० [स० ढक्का] पुरानी चाल का एक तरह का बडा ढोल।
स्त्री० [देश०] वह गराड़ी या घिरनी जिसकी सहायता से जहाज के पाल लपेटे जाते है। (लश०)

टाँका—पु० [हिं० टाँकना] १ हाथ की सिलाई मे, धागे आदि की वह सीयन जो एक बार सूई को एक स्थान से गडाकर दूसरे स्थान पर निकालने से बनती है। जैसे—(क) इस लिहाफ मे टाँके बहुत दूर-दूर पर लगे है। (ख) उसके घाव मे चार टाँके लगे है। २ उक्त प्रकार से जोडी, टाँकी या लगाई हुई चीजो का वह अश जहाँ जोड दिखाई पडता हो। ३ सूई, तागे आदि से की हुई सिलाई या ऊपर से दिखाई देनेवाले उसके चिह्न। सीवन। ४ उक्त प्रकार से टाँक लगाकर जोडा जानेवाला टुकडा। चकती। थिगली। ५ कडी धातुओ को आपस मे जोडने या सटाने के लिए उनके बीच मे मुलायम धातु या मसाले से लगाया हुआ जोड। जैसे—इस थाली (या लोटे) का टाँका बहुत कमजोर है।
मुहा०—(किसी के) टाँके उघड़ना=बहुत ही दुर्गत या दुर्दशा होना। जैसे—इस मुकदमे मे उनके टाँके उधड गये।
६ धातुएँ जोडने का मसाला।
पु० [स० टक=गड्ढा या अ० टैक] [स्त्री० अल्पा० टंकी टाँकी] १ पानी आदि भरकर रखने के लिए वह आधान जो चारो ओर छोटी दीवारे खडी करके बनाया जाता है। चहबच्चा। हौज। २ पानी रखने का बडा गोलाकार बरतन। कडाल। लोहे की बड़ी छेनी या टाँकी। ३. दे० 'टाँकी'।

टाँकाटूक—वि० [हिं० टाँक+तौल] तौल मे ठीक-ठीक। वजन मे पूरा-पूरा। (दूकानदार)

टांकार—पु० =टकार।

टाँकी—स्त्री० [स० टक] १ दो चीजो को जोडनेवाला छोटा टाँका। २ छेनी की तरह का सगतराशो का एक औजार जिससे पत्थर काटे और तोडे जाते है।
मुहा०—(किसी चीज पर) टाँकी बजना=टाँकी का आघात होना।
३ फलो आदि मे से काटकर निकाला हुआ कुछ गोलाकार अश, अथवा इस प्रकार काटने से उनमे बननेवाला छेद या सूराख जिससे उनकी भीतरी स्थिति का पता चलता है। ४ गरमी। सूजाक आदि रोगो के कारण शरीर मे होनेवाला घाव या व्रण। ५ एक प्रकार का फोडा। डुबल। ६. आरी का नुकीला दाँत या दाँता।
†स्त्री० दे० (टकी)।

टाँकीबद—वि० [हिं० टाँकी =फा० बद] (वस्तु या रचना) जिसके विभिन्न अगो को टाँके लगाकर जोडा गया हो। जैसे—टाँकीबद जोडाई, टाँकीबद इमारत।

टाँग—स्त्री० [स० टग] १ मनुष्य के शरीर का चूतड और एडी के बीच का अग जिसमे रान, घुटना, पिंड़ली, टखना आदि अवयव सम्मिलित है।

क्रि० प्र०—लगना।

टाँड़ी†—स्त्री० =टिड्डी।

टाँय-टाँय—स्त्री० [अनु०] कर्कश स्वर मे कही जानेवाली व्यर्थ की बात। बक-बक।

मुहा०—टाँय टाँय फिस होना—बहुत ही लम्बी-चौडी बातो के बाद भी उनका कोई परिणाम या फल न निकलना।

टाँस—स्त्री० [हिं० टाँसना] १ हाथ या पैर के मुडने या मोडे जाने पर उसमे होनेवाला तनाव। २ उक्त तनाव के फलस्वरूप होनेवाली पीडा।

टाँसना—स० [?] किसी का हाथ या पैर मरोडकर उसमे तनाव उत्पन्न करना।

अ० तनाव उत्पन्न होने के फलस्वरूप अग मे पीडा होना।

स० १.=टाँचना। २ =टाँकना।

टा—स्त्री० [स० ट—टाप] १ पृथ्वी। २. शपथ।

टाइटिल—स्त्री० [अ०] १ आवरण-पत्र। २. उपाधि। ३. लेख आदि का शीर्षक। शीर्ष-नाम।

टाइप—पु० [अ०] धातु या लकडी का वह टुकडा, जिसके एक सिरे पर कोई अक्षर या चिह्न खुदा रहता है।

विशेष—इन्ही टुकडो को जोडकर पुस्तके, समाचार-पत्र आदि छापे जाते हैं।

टाइप राइटर—पु० दे० 'टकण यत्र'।

टाइपिस्ट—पु० दे० 'टकक'।

टाइफायड—पु० [अं०] एक प्रकार का रोग जिसमे ज्वर किसी निश्चित अवधि मे उतरता है। मियादी बुखार।

टाइफोन—पुं० दे०'तूफान'।

टाइम—पुं० [अं०] समय।

टाइम-टेबुल—पु० दे० 'समय सारिणी'।

टाइम पीस—स्त्री० [अं०] एक प्रकार की छोटी घडी जिसे मेज आदि पर रखा जाता है। (बाँधी या लटकाई जानेवाली घड़ियो से भिन्न)

टाई—स्त्री० [अ०] १ अँगरेजी पहनावे के अन्तर्गत विशेष ढग से सिली हुई कपडे की वह पट्टी जिसे गले मे कमीज के कालर के ऊपर बाँधा जाता है और जिसके दोनो सिरे सामने लटकते रहते है। २. प्रतियोगिता आदि मे होनेवाली जिच्च। ३. जहाज के ऊपर के पाल की वह रस्सी जिसकी मुद्धी मस्तूल के छेदो मे लगाई जाती है।

टाउन—पु० [अं०] दे० 'नगर'।

टाउन-हाल—पु० [अ०] किसी नगर का वह सार्वजनिक भवन जिसमे बडी-बडी सभाओ के अधिवेशन आदि होते हो।

टाकरा—पु०=टाकरी (लिपि)।

टाकरी—स्त्री० [टक्क देश] टक्क देश अर्थात् चनाव और व्यास नदियो के बीच के प्रदेश मे प्रचलित एक प्रकार की लिपि जो देवनागरी वर्णमाला का ही एक लेखन-प्रकार है।

टाकू†—पु०=तकला।

टाट—पु० [अनु०] १ पटुए, सन आदि की डोरियो से बुनकर तैयार की हुई मोटे कपडे की तरह की वह रचना जो प्राय बिछाने, परदो आदि के रूप मे टाँगने और बाहर भेजा जानेवाला माल बाँधने आदि के काम आती है।

पद—टाट में मूंज का बखिया=एक भद्दी चीज की सजावट मे लगी हुई दूसरी भद्दी चीज। **टाट मे पाट का बखिया**=एक भद्दी चीज की सजावट मे लगी हुई दूसरी बढिया चीज।

२ एक ही बिरादरी के वे सब लोग जो मध्ययुग मे पचायतो आदि के समय एक ही टाट पर बैठा करते थे। ३ उक्त के आधार पर कोई उप-जाति या बिरादरी।

पद—टाट बाहर=जो किसी उप-जाति या बिरादरी से निकाला या बहिष्कृत किया हुआ हो।

४. महाजनो, साहूकारो आदि के बैठने की गद्दी और उसके आस-पास का बिछावन जो एक टाट के ऊपर बिछा हुआ होता है, और जिस पर बैठकर वे रोजगार या लेन-देन करते है। जैसे—अपने टाट पर बैठकर किया जानेवाला सौदा अच्छा होता है।

मुहा०—(महाजन या साहूकार का) टाट उलटना=दिवालिया बनकर पावनेदारो का भुगतान बद कर देना। जैसे—लक्षणो से तो ऐसा जान पडता है कि दस-पाँच दिन मे वह टाट उलट देगा।

५ टाट की वह थैली जिसमे एक हजार रुपये आते है। ६ महाजनी बोलचाल मे एक हजार रुपये। जैसे—इस मुकदमे मे चार टाट लग गये।

†वि० [अ० टाइट] अच्छी तरह कसा, बैठाया या जमाया हुआ। (लश०)

टाटक†—वि०=टटका।

टाटबाफी जूता—पु० [फा० तारबाफी] कामदार जूता।

टाटर†—पु० १ =टट्टर। २ =टाँट (खोपडी)।

टाटिका†—स्त्री०=टट्टी।

टाटी†—स्त्री०=टट्टी।

टाठ†—पु० [स० स्थाली] [स्त्री० अल्पा० टाठी] १. बडी थाली। थाल। २ बटुआ या बटलोई नाम का बरतन।

टाठा—वि० [स० दृढाग] [स्त्री० टाठी] १ मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २ उग्र। विकट।

वि०=टाँठा (सूखा हुआ)।

टाड़—स्त्री० [स० ताड] भुजाओ पर पहनने का एक प्रकार का चौड़ी पट्टीवाला बाजूबद।

†स्त्री०=टाँड।

टाडर—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।

टाड़ा—पु० [देश०] १ मिट्टी का तेल रखने का एक प्रकार का बरतन। २. लकडियो मे लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

टान—स्त्री० [स० तान=फैलाव, खिचाव] १ तनाव। खिचाव। २. आकर्षण। ३ छापे के यत्र मे, कागज हर बार छापे जाने का भाव। ४ सारगी, सितार आदि के परदो पर उँगली रखकर उसे इस प्रकार खीचना कि क्रमात् कई स्वर या उनकी श्रुतियाँ निकलती चलें। ५. साँप के दाँत लगने का एक प्रकार जिससे दाँत कुछ दूर तक खरोच डालता हुआ बाहर निकलता है।

स्त्री०=टाँड।

टानना—स० [हिं० टान+ना (प्रत्य०)] १ तानना। २. खीचना। ३ छापे के यत्र मे, कागज लगाकर कुछ छापना।

टाप—स्त्री० [स० स्तप्] १. गधे और घोडे के पैर का वह निचला भाग जिसमे खुर होता है और जमीन पर पडता है। २. उक्त भाग के जमीन पर पडने से होनेवाला शब्द। ३ खभे, पाए आदि का जमीन से लगा रहनेवाला अश। ४. वह खाँचा जिसकी सहायता से तालावो आदि मे से मछलियाँ पकडी जाती है। ५. वह खाँचा जिसके नीचे मुरगियाँ वन्द करके रखी जाती है।

टापड़—पु० [हिं० टप्पा] ऊसर मैदान।

टापदार—वि० [हिं० टाप+फा० दार] जिसके ऊपर या नीचे का छोर कुछ फैला हुआ और चौडा हो। जैसे—टापदार पाया।

टापना—अ० [हिं० टाप+ना (प्रत्य०)] घोडो का इस प्रकार पैर पटकना जिससे टप-टप शब्द हो। खूँद करना।

†अ०=टपना।

टापर(ा)—पु० [देश०] १ ओढने का मोटा कपडा। चादर। २ टट्टू, टाँघन या ऐसे ही किसी और चौपाये की सवारी। ३. तिरपाल। ४. झोपडा।

टापा—पु० [हिं० टापना] १. भूमि का वह विस्तार जिसे टापकर पार करने मे कुछ समय लगता हो। टप्पा। २. ऊसर या वजर मैदान। ३. चलने के समय भरा जानेवाला डग।

मुहा०—टापा देना या भरना=लवे-लवे डग वढाते हुए आगे वढना या चलते वनना। उदा०—राम नाम जाने नही,आये टापा दीन।—कवीर।

४ व्यर्थ की उछल-कूद। ५. चीजे ढकने का एक प्रकार का टोकरा। ६ वह खाँचा या टोकरा जिसमे मुरगियाँ आदि वन्द करके रखी जाती है। ७ खाँचे या टोकरे की तरह का वह ढाँचा जो वहुत-सी मछलियाँ एक साथ पकडने या फँसाने के काम आता है।

टापू—पु० [हिं० टापा या टप्पा=ऐसा स्थान जहाँ टाप या लाँघकर जाना पडे] १. स्थल का वह भाग जो चारो ओर जल से घिरा हो। द्वीप। २. दे० 'टापा'।

टावर—पु० [पजावी टव्वर] १. वाल-वच्चे। सन्तान। (राज०) २ परिवार।

पु० [?] छोटा जलाशय या झील।

टावू—पु० [देश०] पशुओ के मुँह पर वाँधी जानेवाली जाली।

टामक—पु० [अनु०] १. डुग्गी का शब्द। २ डुग्गी।

टामन—पु० [स० तत्र] तत्रविधि। टोटका।

टामी—पु० [अ० टॉमी] सेना का साधारण विशेषत: गोरा सिपाही।

टार—पु० [स० टा √ऋ (गति)+अण्] १ घोड़ा। २. लौंडा। ३. कुटना। दलाल।

†पु० टाल।

टारकोल—पु० [अ०] अलकतरा।

टारन—पु० [हिं० टारना] १. टारन अर्थात् टालने की क्रिया या भाव। २ वह उपकरण जिससे कोई चीज टाल या हटाकर एक जगह इकट्ठी की जाती है। ३ वह लकडी जिससे कोल्हू मे की गँडेरियाँ चलाई जाती हैं।

वि० टालने, हटाने या दूर करनेवाला।

टारना—स०=टालना।

टारपीडो—पु० [अ०] समुद्री जहाजो को नष्ट करने के लिए जल मे छोड़ा जानेवाला एक प्रकार का लवोतरा गोला।

टाल—पु० [स० अट्टाल, हिं० अटाला] १. एक दूसरी पर लादकर रखी हुई वहुत-सी चीजो का ऊँचा और वडा ढेर। अवार। अटाला। राशि। जैसे—पत्थरो या लकडियो का टाल। २. पयाल, भूसे, लकडी आदि की दूकान जहाँ इन चीजो का उक्त प्रकार का ढेर लगा रहता है।

पु० [देश०] १ गौओ, वैलो आदि के गले मे वाँधा जानेवाला एक प्रकार का घटा। २. वैल-गाडी के पहिए का किनारा।

पु० [हिं० टालना] १ किसी काम या वात के लिए किसी को टालने की क्रिया या भाव। हीला-हवाला।

पद—टाल-मटोल। (देखें)

मुहा०—टाल मारना=कोई चीज तौलने के समय कोई ऐसी चालाकी या युक्ति करना कि वह चीज तौल मे पूरी न होने पावे।

पु० [स० टार=अप्राकृतिक सभोग करानेवाला लडका] व्यभिचार के लिए स्त्री और पुरुष को आपस में मिलानेवाला व्यक्ति। औरतो का दलाल। कुटना।

टाल-टूल—स्त्री०=टाल-मटोल।

टालना—स० [हिं० टलना] १. किसी को उसके स्थान से खिसकाना या हटाना। २. अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को किसी वहाने से अपने सामने से दूर करना या हटाना। जैसे—जव वह शराव पीने वैठता था, तव लडको को अपने कमरे से टाल देता था। ३. किसी उद्देश्य से आये हुए व्यक्ति का उद्देश्य पूरा न करके किसी वहाने से उसे कुछ समय के लिए दूर कर देना या हटा देना। टरकाना। जैसे—जव उससे रुपए माँगने जाओ, तव किसी न किसी वहाने से हमे वह टाल देता है। ४. अनिष्ट घटना या स्थिति से किसी को रक्षित रखने अथवा स्वय रक्षित रहने के लिए किसी युक्ति से उसे घटित न होने देना या दूर करना। जैसे—(क) किसी की विपत्ति या सकट टालना। (ख) अपने मन मे आया हुआ वुरा विचार टालना। ५. कोई काम अपने पूर्व-निश्चित समय पर न करके उसे किसी और समय के लिए छोड़ रखना। जैसे—परीक्षा या विवाह की तिथि टालना। ६ जो काम अभी किया जाने को हो, उसे किसी और समय के लिए छोड रखना। जैसे—इस तरह हर काम टालने की आदत छोड़ दो।

मुहा०—(कोई काम या वात) किसी पर टालना=स्वय कोई काम या वात न करके यह कह देना कि इसे अमुक व्यक्ति कर सकता है या करेगा। जैसे—तुम तो अपना सारा काम मुझ पर टाल दिया करते हो।

७. किसी के अनुरोध, आज्ञा, परामर्श आदि की उपेक्षा करना या उस पर उचित ध्यान न देना। जैसे—आप की वात मैं किसी तरह टाल नही सकता। ८ कोई अनुचित काम या वात होती हुई देखकर भी उसकी उपेक्षा करना या उस पर ध्यान न देना। तरह दे जाना। वचा जाना। जैसे—अव तक तुम्हारे सव दुर्व्यवहार हम टालते आये हैं, पर आगे के लिए तुम्हे सावधान रहना चाहिए। ९ वहुत कठिनता से समय व्यतीत करना। ज्यो-त्यो करके वक्त विताना। उदा०—राम वियोग असोक विटप तर सीय निमेप कलप सम टारति।—तुलसी।

टाल-मटाल—स्त्री० =टाल-मटोल।

टालम-टाल—वि० [हिं० टाला=आधा] (धन, सम्पत्ति) जिसका आधा

भाग एक व्यक्ति के हिस्से मे और आधा भाग किसी दूसरे व्यक्ति के हिस्से मे आया हो या आने को हो। आधा-आधा। (दलाल) जैसे—यह रकम हम लोग आपस मे टालम-टाल बाँट लेंगे।

टाल-मटूल—पु०=टाल-मटोल।

टाल-मटोल—स्त्री० [हि० टालना मे का टाल+अनु० मटोल] १ सामने आया हुआ काम तुरत पूरा न करके उसे बार-बार दूसरे समय के लिए टालते रहने की क्रिया या भाव। २ किसी विशिष्ट उद्देश्य से आये हुए व्यक्ति का काम पूरा न करके उसे बार-बार टालते रहने की क्रिया या भाव।

टाला—वि० [हि० टाली] आधा। (दलाल)

टाली—स्त्री० [देश० टलटल से अनु०] १ गाय, बैल आदि के गले मे बाँधने की घटी। २ बहुत चचल बछिया या छोटी गौ। ३ एक प्रकार का बाजा।

स्त्री० [देश०] आठ आने का सिक्का। अठन्नी। (दलाल)

पु० [देश०] शीशम का पेड और उसकी लकडी। (पश्चिम)

टाल्हीं—पु०=टाली (शीशम)।

टाहली†—पु० =टहलुआ।

टिटिनिका—स्त्री० [स०] १ जल सिरिस का पेड। दाढौन। २ जोक।

टिंड—स्त्री० [देश०] रहट मे लगा हुआ मिट्टी, धातु आदि का वह पात्र जिसके द्वारा कूएँ का पानी सिंचाई के लिए ऊपर खीचा तथा बाहर निकाला जाता है। (पश्चिम)

पु० [?] घुटा या मुँडा हुआ सिर। (परिहास और व्यग्य)

स्त्री०=टिंडा।

टिंडर—स्त्री०=टिंड।

टिंडसी—स्त्री०=टिंडा।

टिंडा—पु० [स० टिंडिश] १ एक लता जिसके छोटे गोल फलो की तरकारी बनाई जाती है। २ उक्त लता का फल। डेडसी।

टिंडी—स्त्री० [देश०] १ हल की मुठिया। २ वह खूँटा जिसे पकडकर चक्की का पाट घुमाया या चलाया जाता है।

टिक—स्त्री० [अनु०] किसी यत्र विशेषत घडी के चलने से होनेवाला शब्द। टिकटिक।

पु० आटे आदि का टिक्कर या लिट्टी नाम का पकवान।

टिकई—वि० [हि० टीका] जिसमे या जिस पर टीका लगा हुआ हो अथवा टीके के आकार के चिह्न बने हुए हो।

स्त्री० वह गाय जिसके माथे पर दूसरे रग के ऐसे बाल होते है जो लगाये हुए टीके की तरह जान पडते है।

टिकट—पु० [अ०] कागज, दफ्ती आदि का कुछ विशिष्ट चिह्नो से युक्त वह छोटा टुकडा जो कुछ निश्चित मूल्य पर बिकता और खरीदनेवाले को कोई विशिष्ट कार्य करने, कही आने-जाने या कुछ भेजने-मँगाने आदि का अधिकारी बनाता है अथवा इस बात का प्रमाण-पत्र होता है कि खरीदनेवाले ने देन चुकाकर कोई काम करने का अधिकार प्राप्त कर लिया है। जैसे—डाक, रेल या सिनेमा का टिकट।

†पु० दे० 'टैक्स'।

टिकट-घर—पु० [अ०+हि०] वह स्थान जहाँ कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए टिकट बिकते हो। जैसे—रेलवे या सिनेमा का टिकट-घर।

२—५५

टिकटिक—स्त्री० [अनु०] १ घोडे, बैल आदि हाँकने के लिए किया जानेवाला टिकटिक शब्द। २ घडी के चलते रहने की दशा मे उसमे होनेवाला शब्द।

टिकटिकी—स्त्री० [अनु०] १ भूरापन लिये लाल रग की एक प्रकार की चिडिया। २. दे० 'टिकठी'।

टिकठी—स्त्री० [स० त्रिकाष्ठ या हि० तीन+काठ] १ मध्ययुग मे लकडियो का वह ढाँचा जिसमे अपराधियो के हाथ-पैर उन्हे मारने-पीटने के समय बाँध या जकड दिये जाते थे। २ उक्त प्रकार का वह चौखटा या ढाँचा जिसमे फाँसी पानेवाले अपराधियो को खडा करके उनके गले मे फाँसी का फदा लगाया जाता है। ३ मृत शरीर या शव को श्मशान तक ले जाने के लिए बनाया जानेवाला बाँसो, लकडियो आदि का ढाँचा। अरथी। ४ जुलाहो का वह ढाँचा जिस पर वे कलफ या माँडी लगाने के लिए कपडा फैलाते है। ५ दे० 'तिपाई'।

टिकड़ा—पु० [हि० टिकिया] [स्त्री० अल्पा० टिकडी] १ किसी चीज का छोटा विशेषत चिपटा गोल टुकडा। २ गले मे पहने जानेवाले आभूषणो मे लटकता रहनेवाला धातु का वह गोल खड जिसमे नग आदि जडे रहते हैं। ३ जडाऊ गहनो मे बना हुआ उक्त आकार-प्रकार का विभाग। ४ आँच पर सेककर पकाई हुई छोटी चिपटी मोटी रोटी।

क्रि० प्र०—लगाना।

५ प्रसूता स्त्रियो को खिलाई जानेवाली वह रोटी जिसके आटे मे अजवाइन, सोठ आदि मसाले मिले रहते हैं।

टिकड़ी—स्त्री० [हि० टिकडा] आँच पर सेककर पकाई हुई छोटी चिपटी रोटी। टिकडा।

टिकना—अ० [स० टिक] १ किसी आधार पर ठीक प्रकार से खडा या स्थित होना। जैसे—(क) चौकी पर मोमबत्ती का टिकना। (ख) छडी की नोक पर तश्तरी का टिकना। २ यात्रा के समय विश्राम के लिए बीच मे कही ठहरना या रुकना। जैसे—धर्मशाला मे यात्रियो का टिकना। ३ प्रवास मे किसी के यहाँ अतिथि के रूप मे ठहरना। ४ कुछ समय के लिए अस्तित्व मे बने रहना। जैसे—प्रथा का टिकना। ५ किसी चीज का ठीक या प्रसम स्थिति मे बने रहना फलत दूषित या विकृत न होना। जैसे—(क) गरमी की अपेक्षा सरदी मे पकाई या पकी हुई चीजे अधिक टिकती है। (ख) यह कपडा या जूता अधिक टिकेगा। ६ (ध्यान आदि के सबध मे) केंद्रित होना। जैसे—ध्यान टिकना। ७ किसी घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल मे जमना।

टिकरी—स्त्री० [हि० टिकिया] १ एक नमकीन पकवान जो बेसन और मैदे की टिकियो को एक मे बेलकर और घी मे तलकर बनाया जाता है। २ टिकिया। ३ सिर पर पहनने का एक प्रकार का गहना। ४ हलके काले या मटमैले रग का एक प्रकार का बडा जल-पक्षी।

†स्त्री०=टोकरी (छोटा टीला)।

टिकली—स्त्री० [हि० टीका] १ काँच, पन्नी आदि का छोटा टुकडा जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हे। २ टीका नामक आभूषण।

स्त्री० [हि० टिकिया] छोटी टिकिया।

स्त्री०=तकली।

टिकसा†—पु० =१ टिकट। २ =टैक्स (कर)।

टिकसार†—वि० =टिकाऊ।

टिक्का†—पु०=टीका।

टिकाई†—पु०=टिकैत।

टिकाऊ—वि०[हिं० टिकना] (चीज) जो अधिक समय तक टिके अर्थात् उपयोग या व्यवहार में आती रहे या आ सके। जैसे—टिकाऊ कपड़ा।

टिकान—स्त्री०[हिं० टिकना] १ टिकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वह स्थान जहाँ पर कोई टिके या बराबर टिकता हो। ३ दे० 'टेकान'।

टिकाना—स० [हिं० टिकना] १ किसी आधार पर किसी चीज को खडा करना या ठहराना। टिकने में प्रवृत्त करना। २ किसी के टिकने अर्थात् कुछ समय तक ठहरने या रहने की व्यवस्था करना। ३. किसी को कही टिकने या रहने देना। जैसे—बरात धर्मशाला मे टिकाई जायगी। ४ किसी को अपने यहाँ अतिथि रूप मे ठहराना या रखना। ५. सहारे पर खडा करना। ६ सहारा देना। ७ चुप-चाप या धीरे-से किसी के हाथ मे कोई चीज दे देना। (दलाल)

टिकानी—स्त्री०[हिं० टिकाना] छकडा गाडी की वे दोनों लकडियाँ जिनमे रस्सी से पैंजनी बँधी होती है।

टिकाव—पु०[हिं० टिकना] १ टिके हुए होने की अवस्था या भाव। २ स्थिरता। ३ टिकने का स्थान। ४ पडाव।

टिकिया—स्त्री०[स० वटिका] १ कोई गोलाकार चिपटी कडी तथा छोटी वस्तु। जैसे—दवा या स्याही की टिकिया। २. कोयले की बुकनी से बना हुआ वह गोल टुकडा जिसे सुलगाकर तमाखू पीते हैं। ३ उक्त आकार की एक मिठाई। ४ बाटी। लिट्टी। ५ बरतन के साँचे का ऊपरी भाग जिसका सिरा बाहर निकला रहता है।

स्त्री०[हिं० टीका]१ माथा। ललाट। २ माथे पर लगी हुई बिंदी। ३ =टिक्की।

टिकुरा†—पु०[देश०] टीला। भीटा।

पु०=टिकडा।

टिकुरी—स्त्री०=टिकली (तकली)।

†स्त्री०=दे० 'निसोथ'।

टिकुला—पु०[स्त्री०टिकुली]=टीका (माथे पर का)।

†पु०=टिकोरा (छोटा कच्चा आम)।

टिकुली†—स्त्री०=टिकली।

टिकुवा†—पु०=टेकुआ (तकला)।

टिकैत—पु०[हिं० टीका+ऐत (प्रत्य०)]१ राजा का वह पुत्र जो उसके बाद राजतिलक का अधिकारी हो। राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २ अधिष्ठाता। ३ जिसके मस्तक पर नेतृत्व का तिलक लगाया गया हो, अर्थात् सरदार।

टिकोर†—स्त्री०=टकोर।

टिकोरा†—पु०[हिं० टिकिया] आम का कच्चा छोटा फल।

टिकोला†—पु०=टिकोरा।

टिक्कड†—पु० [हिं० टिकिया] १ बडी टिकिया। २ आग पर सेकी हुई मोटी रोटी।

टिक्का—पु० १ =टिकडा। २ =टीका। ३ टिकैत (पश्चिम)।

पु०[देश०] मूँगफली की फसल मे होनेवाला एक रोग।

टिक्की†—स्त्री०[हिं० टिकिया] १ छोटी टिकिया। २ छोटी पूरी या रोटी। ३. ताश के पत्ते पर की बूटी। बुँदकी। ४. नकेत आदि के लिए किसी रग की वह बिंदी जो उँगली के पोर से लगाई जाती है।

टिखटी—स्त्री०=टिकठी।

टिघलना—अ०=पिघलना।

टिघलाना†—स०=पिघलाना।

टिचन—वि०[अ० अटेशन] १. जो हर तरह से बिलकुल ठीक या दुरुस्त हो। २ किसी काम के लिए तैयार या लैस। प्रस्तुत।

टिट*—स्त्री० [हिं० टेक] जिद। हठ।

टिटकारना—स०[अनु०] [भाव० टिटकारी] टिकटिक शब्द करते हुए घोडे आदि को हाँकना।

टिटकारी—स्त्री०[हिं० टिटकारना] १ टिक-टिक शब्द करते हुए पशुओं को हाँकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ मुँह से निकलनेवाला टिकटिक शब्द।

क्रि० प्र०—देना।

टिटिंवा—पु०[अ० ततिम्म =परिशिष्ट]१ व्यर्थ का बखेडा। २ आडबर। ढकोसला।

टिटिभी—स्त्री०=टिटिहरी।

टिटिह=पु०=टिटिहा।

टिटिहरी—स्त्री०[स० टिट्टिभ] जलाशयों के समीप रहनेवाली एक छोटी चिडिया जिसके सिर, गले तथा सीने पर के बाल काले रग के, पीठ तथा डैने भूरे रग के, और निचला भाग सफेद होता है। कुररी।

विशेष—यह अपना घोसला नही बनाती बल्कि बालू मे ही अडे देती है।

टिटिहा—पु०[?] नर टिटिहरी।

टिटिहारोर—पु०[हिं० टिटिहा+रोर] १ टिटिहरी के बोलने का शब्द। २ टिटिहरियों की तरह की असयत और निरर्थक चिल्लाहट, पुकार या हल्ला-गुल्ला।

टिट्टिभ—पु०[टिट्टि√भण् (शब्द करना)+ड] [स्त्री० टिटिट्भा, टिटिभी] १ कुररी या टिटिहरी नामक पक्षी। २ टिड्डी।

टिड्डा—पु०[स० टिटिट्भ] एक प्रकार का उडनेवाला बडा फतिगा।

टिड्डी—स्त्री०[स० टिटिट्भ] १ दल बाँधकर उडनेवाला एक प्रकार का बडा फतिगा जो फसलो को नष्ट कर देता है। २ घरो मे रहनेवाला एक छोटा कीडा जो कपडो आदि को खाता है।

टिढ़-बिडंगा—वि०[हिं० टेढा+बेडगा] जो सीधा या सुडौल न हो। टेढा-मेढा।

टिन—पु०=टीन।

टिप—स्त्री०[हिं० टीपना] वह अवस्था जिसमे साँप के काटने पर विष रक्त मे प्रविष्ट हो चुका हो।

टिपकना†—अ०=टपकना।

टिपका†—पु०=टपका।

टिपटिप—स्त्री० [अनु०] १ जल की बूँदे गिरने से होनेवाला शब्द। २ छोटी-छोटी बूँदो के रूप मे होनेवाली थोडी या हलकी वर्षा।

क्रि० वि० टिप-टिप शब्द करते हुए। जैसे—टिप-टिप पानी बरसना।

टिपवाना—स०[हिं० टीपना का प्रे० रूप] टीपने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को टीपने मे प्रवृत्त करना।

टिपाई—स्त्री०[हिं० टीपना] १ टीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ चित्रकला मे, आकृतियों आदि की आरभिक रूपरेखा अकित करने या बनाने की क्रिया या भाव। ३ दे० 'टीप'।

टिपारा—पु०[हिं० तीन+फा० पारः=टुकडा]पुरानी चाल की एक प्रकार की तिकोनी टोपी जो मुसलमान फकीर पहना करते थे।
†पु०=पिटारा।

टिपुर—पु०=टिपोर।

टिपोर†—पु० [देश०] १ अभिमान। घमड। २ आडवर। पाखड।

टिप्पणी—स्त्री०[स०√टिप् (प्रेरणा)+क्विप्, टिप√पन् (स्तुति)+अच्—ङीप्, णत्व]१ स्मरण रखने के लिए कोई बात टीपने या सक्षिप्त रूप मे लिख रखने की क्रिया। २ उक्त प्रकार से लिखा हुआ लेख। ३ जन्म-पत्री। ४ किसी के सवध मे प्रकट किया जानेवाला सक्षिप्त विचार। उप-कथन। ४ आज-कल पत्रिकाओ, पुस्तको आदि मे किसी शब्द, पद या वाक्य के सवध मे कुछ नवीन तथ्य, तर्क या मत उपस्थित करने के लिए लिखा जानेवाला छोटा लेख। ५ समाचार पत्रो मे सपादक की ओर से किसी घटना के सवध मे लिखा हुआ छोटा लेख। (अग्र-लेख से भिन्न)

टिप्पन—पु०[स० टिप्पणी] १ टीका। २ व्याख्या। ३ जन्मपत्री।

टिप्पनी—स्त्री०=टिप्पणी।

टिप्पस†—स्त्री०[देश०] अपना काम या मतलव निकालने के लिए की जानेवाली छोटी-मोटी युक्ति।
क्रि० प्र०—जमाना।—वैठाना।—भिडाना।—लगाना।

टिप्पी—स्त्री०=टिक्की।

टिफिन—पु०[अ०] दोपहर के समय किया जानेवाला जलपान।

टिवरी†—स्त्री०[देश०] पहाड की छोटी चोटी।

टिमकी†—स्त्री०[अनु०] १ छोटा-मोटा वरतन। २. वच्चे का पेट।

टिमटिमाना—अ०[स० तिम=ठढा होना] १ किसी चीज मे से रह-रहकर मद या हलका प्रकाश निकलना। जैसे—जुगनूँ, तारे या दिये का टिमटिमाना। २ (दिये की लौ का) वुझने से कुछ पहले रह-रहकर कुछ प्रकाश देना।

टिमाक—स्त्री०[देश०] १ वनाव-सिंगार। २ ठसक।

टिमिला—पु०[देश०] [स्त्री० टिमिली] छोकरा। लडका।

टिम्मा†—वि० [देश०] छोटे डील-डौलवाला। ठेगना। नाटा।

टिर—स्त्री०=टर।

टिरफिस—स्त्री०[हिं० टिर+फिस] १ वहुत ही तुच्छ कोटि का प्रतिवाद या विरोध। २ व्यर्थ का टर्रापन।

टिर्रा†—वि०=टर्रा।

टिर्राना†—अ०=टर्राना।

टिलटिलाना†—अ०[अनु०] [भाव० टिलटिली] पतला दस्त करना या फिरना।

टिलटिली—स्त्री०[अनु०] १ पतला दस्त फिरने की क्रिया या भाव। †२ पतला दस्त।

टिलवा—पु०[देश०] १ लकडी का टेढा-मेढा छोटा टुकडा। कुदा। २ नाटे कद का आदमी। ३ खुशामदी या चापलूस व्यक्ति।

टिलिया†—स्त्री० [देश०] १ छोटी मुर्गी। २ मुर्गी का वच्चा।

टिली-लिली—स्त्री०[अनु०] वच्चो की आपस मे एक दूसरे को चिढाने की वह क्रिया जिसमे वे टिली-लिली करते हुए अपनी मध्यमा उँगली नचाते हैं।

टिलेहू—पु०[देश०] नेवलो की जाति का एक जंतु जिसके शरीर से वहुत अधिक दुर्गंध निकलती है।

टिलोरिया†—स्त्री०[देश०] मुरगी का वच्चा।
स्त्री०=टिलिया।

टिल्ला—पु०[हिं० ठेलना] १ चोट। २ धक्का।
वि०=निठल्ला।

टिल्लेनवीसी—स्त्री०[हिं० टिल्ला=फा० नवीसी] १ निकृष्ट या निम्न कोटि की सेवा। २ निठल्लापन। ३ टाल-मटोल। वहानेवाजी।
क्रि० प्र०—करना।

टिसुआ†—पु०[स० अश्रु] आँसू। (पश्चिम)

टिहक—स्त्री०=ठिठक।

टिहकना—अ०=ठिठकना।

टिहुकना—अ० १ =ठिठकना। २ चौंकना।

टिहुनी†—स्त्री०[स० घुट, हिं० घुटना] १. घुटना। २ कोहनी।

टिहूक—स्त्री०[हिं० टिहुकना] टिहुकने (अर्थात् १ ठिठकने, और २. चौंकने) की अवस्था, क्रिया या भाव।

टिहूकना—अ०=टिहुकना।

टींड—स्त्री०=टिंड (रहट की)।
पु०=टिंडा।

टींड़सी—स्त्री०[सं० टिंडिश]=टिंडा।

टींड़ा—पु०[देश०] १ जाँता घुमाने का खूँटा। २ जाँते का जुआ।
पु०=टिंडा।

टींड़ी—स्त्री०=टिड्डी।

टीक—स्त्री०[स० तिलक] १ गले मे पहनने का एक आभूषण। २ माथे पर पहनने का टीका नामक आभूषण।

टीकठ†—पु०[हिं० टिकना] रीढ की हड्डी।

टीकन—स्त्री० =टेकन।

टीकना†—स०[हिं० टीका] १ टीका या तिलक लगाना। २ सकेत के लिए टिक्की या विंदी लगाना।

टीका—पु०[स० टीक=चलना] १ धार्मिक हिंदुओ मे वह साप्रदायिक चिह्न जो केसर, चदन, रोली आदि से मुख्यत मस्तक पर और गौणतः छाती, वाँह आदि पर लगाया जाता है। तिलक। २ विवाह स्थिर करने के समय का वह कृत्य जिसमे कन्या-पक्ष से वर को केसर का तिलक लगाकर कुछ धन, मिठाई आदि देते हैं। तिलक। ३ कुछ विशिष्ट धार्मिक सस्कारो के अवसर पर सवधियो के यहाँ दी या भेजी जानेवाली मिठाई, धन आदि। (टीका लगाने का औपचारिक लक्षण)
क्रि० प्र०—चढना।—चढाना।—भेजना।
४ किसी नये राजा के राजसिंहासन पर वैठने के समय का वह कृत्य जिसमे पुरोहित उसके मस्तक पर तिलक लगाकर नियमत या विधानत उसे सिंहासन का अधिकारी नियत या स्थिर करता है। ५ वह राजकुमार जो राजा के उपरान्त उसका उत्तराधिकारी होने को हो या जिसे टीका लगने को हो। टिकैत। ६. दोनो भौहो या ललाट के वीच का वह

मध्य भाग जहाँ उक्त प्रकार का चिह्न लगाया जाता है। ७. पशुओं के मतस्क या ललाट का उक्त भाग। जैसे—घोडे या बैल का टीका। ८ वह जो किसी कुल, वर्ग, समाज, समूह आदि मे सबसे बढकर या मुख्य माना जाता हो। शिरोमणि। ९ आधिपत्य, प्रधानता आदि का चिह्न या लक्षण। जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर कोई टीका है जिससे तुम्हारी ही बात मानी जाय ?

पद—टीके का=सब से बढकर। अच्छा। उत्तम।

१०. मध्य युग मे धन आदि के रूप मे वह भेट जो असामी या प्रजा-वर्ग के लोग किसी बडे जमीदार या राजा को कुछ विशिष्ट मागलिक अवसरो पर देते थे। ११. माथे या ललाट पर पहना जानेवाला एक प्रकार का लबोतरा गहना। १२ किसी प्रकार का लबोतरा चिह्न या निशान। १३. आज-कल कुछ विशिष्ट रोगो का वह चेप या रस जो रासायनिक प्रक्रिया से प्रस्तुत करके प्राणियो के शरीर मे सूइयो आदि से इसलिए प्रविष्ट किया जाता है कि प्राणी उस रोग से रक्षित रहे। जैसे—चेचक, प्लेग या हैजे का टीका।

स्त्री० [स०] किसी ग्रथ, पद या वाक्य का अर्थ स्पष्ट करनेवाला कथन या लेख। अर्थ का विवरण। विवृति। व्याख्या। जैसे—(क) महाभारत या रामायण की टीका। (ख) किसी के उपदेश या गूढ बात की टीका।

टीकाकार—पु० [स० टीका√कृ (करना)+अण्] १ वह जो किसी कठिन या दुर्बोध ग्रथ की टीका करता हो। २ गूढ शब्दो, पदो, वाक्यो आदि की सुबोध भाषा मे व्याख्या लिखनेवाला व्यक्ति।

टीका-टिप्पणी—स्त्री० [स० व्यस्त शब्द] कोई प्रसग छिड़ने या बात सामने आने पर उसके गुणो, दोषो आदि के सबध मे प्रकट किये जानेवाले विचार।

टीकी†—स्त्री० [हिं० टीका] १ टिकुली। २ टिकिया। ३ बिंदी। ४ पुरुषो की चुटिया। चोटी। शिखा।

टीकुर†—पु० [देश०] १ ऊँची भूमि। २ जलाशयो के तट की ऊँची सूखी भूमि। ३ जगल। वन।

टीटा—पु० [देश०] स्त्रियो की योनि मे का वह ऊँचा मास-पिड जो दोनो भगोष्ठो के बीच निकला रहता है। टना।

टीड़ी†—स्त्री०=टिड्डी।

टीन—पु० [अ० टिन] १ राँगा। २ राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर जिसमे कनस्तर, डिब्बे आदि बनाये जाते हैं। ३ टीन की चद्दर का बना हुआ कनस्तर या डिब्बा।

टीप—स्त्री० [हिं० टीपना, मि० अ० टिप] १ टीपने की क्रिया या भाव। २ धीरे-धीरे ठोकने, पीटने या दबाने की क्रिया या भाव। जैसे—गच, छत या दीवार के पलस्तर पर होनेवाली टीप। ३ ईंटो की बनी हुई दीवार, फरश आदि पर पलस्तर न करके केवल उसकी दरजो, सधियो मे मसाला भरकर उन्हे बद करने की क्रिया या भाव। ४ जोर की ध्वनि या शब्द। ५ सगीत मे, किसी एक स्वर पर बहुत जोर देते हुए कुछ देर तक किया जानेवाला उसका ऐसा उच्चारण जिसकी तीव्रता बराबर बढती चलती हो।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—टीप लड़ाना=ऊँचे स्वर मे या गले का पूरा जोर लगाते हुए कोई चीज गाना।

६. पानी मिला हुआ वह दूध जिससे चीनी या शीरा बनाने के समय उसकी मैल साफ की जाती है। ७. हाथी के शरीर पर औषध का किया जानेवाला लेप। ८. सेना की टुकडी या दल। ९ गजीफे के खेल मे विपक्षी के एक पत्ते को अपने दो पत्तो से मारने की क्रिया। १०. स्मरण रखने के लिए सक्षेप मे लिखी हुई सक्षिप्त बात या उसका मुख्य अश। ११ सूचना, व्याख्या या आलोचना के रूप मे लिखी हुई कोई बात। (नोट) १२ वह कागज जिस पर दोनो पक्षो की ओर से लेन-देन, व्यवहार आदि से सबध रखनेवाला कोई निश्चय या उसकी शर्ते लिखी रहती हैं। दस्तावेज। लेख्य। १३. वह कागज जिस पर किसी को निश्चित समय पर कुछ धन देने का आदेश या प्रतिज्ञा लिखी हो। जैसे—चेक, हुडी आदि। १४. जन्म-पत्री। टीपन।

वि० बहुत अच्छा या बढिया।

टीपटाप—स्त्री [अनु०] १ टीप करने अर्थात दरजो या दरारो मे मसाला भरने का काम। २ दे० 'टीम-टाम'।

टीपन—स्त्री० [हिं० टीपना] ककड, काँटे आदि के चुभने के कारण पडने-वाली गाँठ या घट्ठा।

स्त्री०=टीप (जन्म-पत्री)।

टीपना—स० [म० टेपन=फेकना] १ उँगलियो या हथेलियो से दबाना। जैसे—किसी के पैर या हाथ टीपना। २. कोई चीज ठीक तरह से बनाने या सुन्दर रूप देने के लिए उस पर धीरे-धीरे हलका आघात या प्रहार करना। जैसे—गच या पलस्तर टीपना। ३ ईंटो की बनी हुई दीवार, फरश आदि पर सीमेट आदि का पलस्तर न करके उसकी दरजो या सधियो को बद करने के लिए उनमे मसाला भरना। ४ हलके हाथो से लेप आदि लगाना। ५ गाने के समय किसी स्वर को बहुत खीचते हुए और पूरी शक्ति लगाकर उसका उच्चारण करना। ६ गजी के खेल मे अपने दो पत्तो से विपक्षी का एक पत्ता मारना।

स० [स० टिप्पनी] १. याद रखने के लिए कुछ लिख या टाँक लेना। २. अकित करना। निशान लगाना। उदा०—कुकुम चदन चारु चून ऐपन सौ टीपे।—रत्ना०।

टीबा—पु० [हिं० टीला] [स्त्री० टिबरी, टीबी] टीला।

टीम—स्त्री० [अ०] किसी खेल, प्रतियोगिता मे सम्मिलित होनेवाले एक पक्ष के सब लोग। टोली।

टीम-टाम—स्त्री० [देश०] १ ऊपरी बनाव-सिंगार या सजावट। २. ठाट-बाट। तडक-भडक। ३ व्यर्थ का आडबर।

टीला—पुं० [स० अष्ठीला] १ छोटी पहाडी की तरह उभडा तथा ऊँचा उठा हुआ भूखड। ढूह। २ मिट्टी का वह ऊँचा ढेर जो प्राकृतिक रूप से बना हो। २ छोटी पहाडी।

† पु० [देश०] एक जल-पक्षी।

टीस—स्त्री० [देश०] १ सहसा तथा रह-रहकर उठनेवाली वह पीडा जो शरीर का भीतरी भाग चीरती हुई-सी जान पडे। हूल।

क्रि० प्र०—उठना।—मारना।

२. दुश्मनी। वैर। शत्रुता। (पूरब)

†स्त्री० [अ० स्टिच] पुस्तको की सिलाई का वह प्रकार जिसमे उसके फरमे पहले अलग-अलग और तब एक साथ सीये जाते हैं।

टीसना—अ० [हिं० टीस] शरीर के किसी अग मे रह-रहकर ऐसी तीव्र

पीडा होना जो शरीर के उस अग को अदर से चीरती हुई-सी जान पडे।

टीसा—पु० [देश०] खेरे रग का एक शिकारी पक्षी जिसके डैने भूरे होते है।

टुँगना—स०=टूँगना।

टुँच—वि० [स० तुच्छ] १ क्षुद्र। तुच्छ। २ दे० 'टुच्चा'।
स्त्री० बहुत ही थोडा धन या पूँजी।

टुंटा—वि०=टुडा।

टुटुक—पु० [स० टुटु√कै (शब्द)+क] १. सोना पाठा। २ काला खैर।

टुँटुका—स्त्री० [स० टुटुक+टाप्] पाठा।

टुँड(ा)—वि० [स० तुड] [स्त्री० टुडी] १ (वृक्ष) जिसकी डाले या पत्तियाँ कट, गिर या झड गई हो। २ (व्यक्ति) जिसका एक या दोनो हाथ कटे हुए हो। ३ (पशु) जिसका एक या दोनो सीग कटकर या और किसी प्रकार गिर गये हो। ४. (चीज) जिसका कोई अग खडित हो।
पु० १. ठूँठ वृक्ष। २ लूला। ३. पशु जिसका एक सीग टूट चुका हो। ४. एक काल्पनिक प्रेत जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि वह रात के समय अपना कटा हुआ सिर हथेली पर रखकर तथा घोडे पर सवार होकर निकलता है।

टुँडी—स्त्री० [स० तुडि] नाभि। ढोढी।
स्त्री० [?] बाँह। मुश्क।
मुहा०—**टुँडियाँ कसना या बाँधना**=दे० 'मुश्क' के अन्तर्गत 'मुश्के कसना या बाँधना'।

टुइँयाँ—पु० [देश०] १ तोतो या सुग्गो की एक जाति। २ उक्त जाति का तोता जिसकी चोच पीले रग की और गरदन बैंगनी होती है। यह अपेक्षाकृत छोटे आकार का होता है।
वि० १ बहुत छोटा। २ बहुत ठिंगना या नाटा।

टुक—वि० [स० स्तोक=थोडा] थोडा। जरा-सा।
क्रि० वि० जरा। तनिक।
पु० टुकडा। उदा०—इक टुक कपडे पर तेहिं जनि अजि छुडाओ। —रत्ना०।

टुक-टुक—अव्य०=टुकुर-टुकुर। जैसे—लोग टुक-टुक देखते रहे।—राहुल।

टुकड—पु० हिं० 'टुकडा' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—टुकडगदा, टुकडतोड आदि।

टुकड़गदा—पु० [हिं० टुकडा+फा० गदा=भिखमंगा] १ रोटी के टुकडे घर-घर से माँगकर निर्वाह करनेवाला भिखारी। २. वह व्यक्ति जो दूसरो के टुकडो पर पलता हो।
वि० १. बहुत ही तुच्छ और हीन (व्यक्ति)। २ परम दरिद्र। ३ कगाल।

टुकड़गदाई—स्त्री० [हिं० टुकडा+फा० गदाई=भिखमगापन] घर-घर से रोटी के टुकडे भीख माँगने की क्रिया या भाव। भिखारीपन।
वि०, पु०=टुकडगदा।

टुकडतोड—पु० [हिं० टुकडा+तोडना] वह निठल्ला व्यक्ति जो दूसरो के दिये हुए टुकडे खाकर दिन बिताता हो।

टुकड़ा—पु० [स० त्रोटक या स्तोक] [स्त्री० अल्पा० टुकडी] १ किसी वस्तु का वह छोटा अश या भाग जो मूल वस्तु से कट, फट या टूटकर अलग हो गया हो। जैसे—(क) कपडे या कागज का टुकडा। (ख) बादल का टुकडा। (ग) ईंट या पत्थर का टुकडा।
मुहा०—**(किसी चीज के) टुकड़े उड़ाना**=किसी चीज को इस प्रकार काटना, तोडना या फोडना कि उसके बहुत से छोटे-छोटे टुकडे हो जायँ।
२ रोटी आदि मे से काट या तोडकर निकाला हुआ अश या भाग।
मुहा०—**टुकड़ा या टुकड़े माँगना**=घर-घर घूमकर भिक्षा के रूप मे रोटी का टुकडा माँगना। **टुकड़ा-तोड़ या टुकड़ा-सा जवाब देना**=बहुत ही रुखाई से इन्कार करना या साफ जवाब देना। **(किसी के) टुकड़े तोड़ना**=बहुत ही दीन-हीन बनकर किसी के दिये हुए रूखे-सूखे भोजन से निर्वाह करना। दीन रूप मे आश्रित बनकर दिन बिताना या रहना। **(किसी के) टुकडों पर पड़ना या पलना**=(किसी के) टुकडे तोडना।
३ जमीन का वह अश जो मूल से नदी, पहाड, मेड आदि बीच मे पडने या बनने के कारण अलग हो गया हो। जैसे—खेत के इस टुकडे मे खरबूज और उस टुकडे मे तरबूज बोया गया है। ४ किसी कृति या रचना का कोई विशिष्ट अश, खड या भाग। जैसे—कविता, गीत या शेर का टुकडा।

टुकड़ी—स्त्री० [हिं० टुकडा] १ छोटा टुकडा। जैसे—नमक या मिसरी की टुकडी। २ छोटे-छोटे खडो या टुकडो मे काटी या बनाई हुई चीज। जैसे—चार टुकडी मिठाई। ३ कुछ विशिष्ट प्रकार के प्राणियो अथवा कोई विशिष्ट कार्य करनेवाले लोगो का छोटा दल, वर्ग या समुदाय। जैसे—(क) कबूतरो की टुकडी। (ख) ठगो, डाकुओ या सैनिको की टुकडी। ४ कपडे का वह टुकडा जो स्त्रियाँ महीन साडी पहनने से पहले कमर मे लपेट लेती हैं। ५ कार्तिक-स्नान का मेला जिसमे लोग छोटे-छोटे दलो के रूप मे जाया करते थे।

टुकनी†—स्त्री०=टोकनी (टोकरी)।

टुकरी†—स्त्री० [?] सल्लम की तरह का एक प्रकार का मोटा कपडा।
†स्त्री०=टुकडी।

टुकुर-टुकुर—अव्य० [अनु०] ललचाई हुई नजर से या विवशता की दशा मे।
मुहा०—**टुकुर टुकुर देखना**=ललचाई हुई नजरो से या विवशता की दशा मे किसी की ओर चुपचाप टक लगाकर देखना।

टुक्कड़ (र)†—पु० [स० स्तोक] रोटी का टुकडा। (पजाब) उदा०—वह पायेगी सदा दया का टुक्कड।—कोई कवि।

टुक्का—पु० [हिं० टूक] १ किसी चीज का बहुत छोटा अश।
मुहा०—**टुक्का-सा जवाब देना**=साफ इनकार करना। कोरा जवाब देना। **टुक्का-सा मुँह लेकर रह जाना**=लज्जित होकर चुप रह जाना।
२. किसी वस्तु का चौथाई अश।

टुघलाना—अ०=चुभलाना।

टुच्चा—वि० [स० तुच्छ] [स्त्री० टुच्ची] १ (व्यक्ति) जो बहुत ही निम्न या हीन विचारो का या क्षुद्र प्रकृतिवाला हो। २ (कथन) जो अनुचित तथा ओछा या हेय हो। जैसे—टुच्ची बात। ३ जो देखने मे बहुत ही तुच्छ या हेय जान पडता हो। ४ (पहनने का कपड़ा) जिसकी ऊँचाई, लबाई या घेरा उचित या साधारण से कम हो। टुच्ची कमीज, टुच्चा पाजामा।

टुटका†—पु० =टोटका।

टुटनी—स्त्री० [हि० टोटी] झारी या गडुवे की पतली नली। छोटी टोंटी।

टुटपुजिया—वि० [हि० टूटना+पूँजी] (व्यक्ति) जिसके पास बहुत ही थोड़ी पूँजी हो।

टुटरूँ—स्त्री० [अनु० टुटरूँटूँ] छोटी पड़की।

टुटरूँ-टूँ—स्त्री० [अनु०] पड़की के बोलने का शब्द। पेंडुकी या फाख्ता की बोली।

वि० १. अकेला। २ बहुत कम। थोड़ा। ३. क्षीण-काय। दुबला-पतला। ४ तुच्छ। हीन।

टुटहा†—पु० [देश०] एक तरह की चिड़िया।

वि० [हि० टूटना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० टुटही] १. टूटा हुआ। २. जो अपनी जाति, पंक्ति या वर्ग से छूटकर अलग हो गया हो।

टुटियल—वि० [हि० टूटना] १ जो टूटा-फूटा हो अथवा टूटने-फूटने की अवस्था मे हो। जर्जर। २ कमजोर। दुर्बल। ३ टुटपुजिया।

टुटुका—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का नगाड़ा।

टुटुहा—पु०=टुटहा।

टुटेला†—वि०=टुटहा।

टुड़ी†—स्त्री० [सं० तुडि] नाभि।

स्त्री०=टुकड़ी।

टुनका†—पु० [देश०] एक रोग जिसमें मूत्र जल्दी-जल्दी होता और उसके साथ वीर्य भी गिरता है।

टुनकी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फतिंगा।

टुनगा†—पु० [सं० तनु=पतला+अग्र=अगला] [स्त्री० टुनगी] १. डाल या टहनी का सिरा या अगला भाग। २ टहनी।

टुनटुना†—पु० [देश०] मैदे आदि का एक नमकीन पकवान।

टुनहाया—पु० [हि० टोना] [स्त्री० टुनहाई] टोना करनेवाला व्यक्ति। टोनहा।

टुनाका—स्त्री० [सं०] तालमूली। मुसली।

टुनियाँ—स्त्री० [सं० तुड] एक प्रकार का मिट्टी का छोटा पात्र जिसमे टोटी भी लगी होती है।

टुनिहाया—पु० [स्त्री० टुनिहाई]=टुनहाया।

टुन्ना—पु० [सं० तुड] वह नाल जिसमे फल लगते तथा लटकते है। जैसे—कद्दू या कमल का टुन्ना।

टुपकना†—अ० [अनु०] १ धीरे से ऊपरी भाग काटना या कुतरना। २. जीव-जन्तुओं का चुपचाप या धीरे से किसी को काटना या डंक मारना। ३ धीरे से या बहुत ही सीधे-सादे बनकर कोई ऐसी छोटी-सी बात कहना जो किसी का अनिष्ट कर सकती या किसी को कुछ हानि पहुँचा सकती हो।

टुबी†—स्त्री० [हि० डूबना] गोता। डुबकी। (पश्चिम)

टुमकना—अ०=टुपकना।

टुम्मा—पुं० [देश०] कच्ची रसीद।

टुरा—पु० [देश०] [स्त्री० टुरिन, टुरिया] बच्चा। लड़का।

टुर्रा—पु० [?] १ किसी चीज का जमा हुआ या ठोस टुकड़ा या डला। जैसे—मिसरी का टुर्रा। २ ज्वार, बाजरे आदि मोटे अन्नों का बड़ा दाना।

टुलना—अ० =टलना।

टुलाना†—स० =टलाना।

टुसड़ा—पु० [देश०] आसाम के पूर्वी प्रदेशों में होनेवाला एक तरह का बाँस।

टुसकना—अ० =टसकना।

टूँ—स्त्री० [अनु०] पादने पर होनेवाला शब्द।

टूँक—पु० =टूक।

टूँगना—स० [हि० टूँगा] १. (चौपायों का) डालों के सिरे की कोमल पत्तियाँ दाँत से काटना। टुनगना। २. थोड़ा-थोड़ा करके और धीरे-धीरे खाना। (व्यंग्य)

टूँगा—पु० [सं० तुंग] ऊँचा। उदा०—कहीं एक पत्थर का टूँगा।—[illegible]।

टूँड—पु० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टूँडी] १. [illegible] आदि के मुँह पर [illegible] होता है तथा जिसके द्वारा वे [illegible] उसका रस [illegible] है। २ [illegible], जो [illegible] की बालों मे [illegible] की ओर निकला हुआ [illegible] होता है। सीकुर। ३ [illegible], फलों आदि का [illegible] भाग। जैसे—[illegible], बैंगन या मूली की टूँड। ४. किसी चीज की [illegible], नुकीली नोक। ५ टोंटी। नाभि।

टूक†—पु० [सं० स्तोक] १ खंड। टुकड़ा।

मुहा०—दो टूक जवाब देना=थोड़े मे तथा स्पष्ट रूप से नकारात्मक उत्तर देना। साफ इनकार करना।

२. [illegible] का भाग। (बगाल) जैसे—[illegible] टूक [illegible] पाँच टूक [illegible]।

टूकर†—पु० =टुकड़ा।

टूका†—पु० [हि० टूक] १. टुकड़ा। २ भिक्षा। भीख। ३ किसी चीज का चौथाई अंश या भाग।

टूकी†—स्त्री० [हि० टूक] १. खंड। टुकड़ा। २ पहनने की अँगिया मे [illegible] के ऊपर लगनेवाला कपड़े का टुकड़ा।

टूक्यो*—पु० [?] भालू। (डि०)

टूगर—वि० [?] अनाथ।

टूट†—स्त्री० [सं० त्रुट्, हि० टूटना] १ टूटने की क्रिया या भाव। २. कटने, टूटने आदि पर निकला हुआ अंश या भाग। खंड। ३ ऐसी स्थिति जिसमे चीज का कोई अंग कटा या टूटा हुआ हो। ४ क्रम के निर्वाह के प्रसंग मे कहीं बीच मे होनेवाला थोड़ा-सा अभाव या छूट। जैसे—किसी कविता या लेख मे की टूट। ५ कमी। त्रुटि। ६. घाटा। टोटा।

टूटन—स्त्री० [हि० टूटना] १ टूटने की क्रिया, भाव या स्थिति। टूट। २ टूटी हुई चीज के टुकड़े।

टूटना—अ० [सं० √त्रुट्, हि० तोड़ना का अ०] १ किसी चीज के अंग, अंश या अवयव का कटकर अपने मूल से अलग हो जाना। जैसे—पेड़ की डाल या उसमे लगा हुआ फल टूटना। २. किसी चीज का इस प्रकार खंडित या भग्न होना कि उसके दो या बहुत से टुकड़े हो जावें। जैसे—घन की चोट से पत्थर टूटना। ३ किसी चीज के इस प्रकार खंड या टुकड़े होना कि वह काम मे आने योग्य अथवा अपने पूर्व रूप मे न रह

जाय। जैसे—(क) छत, दीवार या मकान टूटना। (ख) गिलास, थाली या लोटा टूटना। (ग) तालाव या नदी का बाँध टूटना।
पद—टूटा-फूटा=(क) जो खडित या भग्न होने के कारण अपने पूर्व रूप मे न रह गया हो अथवा ठीक तरह से काम न दे सके। जैसे—टूटी-फूटी घटी, टूटा-फूटा मकान। (ख) जो नियम, विधान आदि की दृष्टि से अधूरा या असगत हो अथवा ठीक या समीचीन न जान पडे। जैसे—बच्चों का टूटी-फूटी बातें करना या बोली बोलना। (ग) इतर भाषा-भाषियों का टूटी-फूटी हिंदी लिखना।
४. आघात आदि के कारण किसी चीज का कही बीच मे से इस प्रकार कुछ खडित होना कि उसमे कुछ अवकाश, दरज या लकीर पड जाय। जैसे—(क) पैर या हाथ की हड्डी टूटना। (ख) टक्कर लगने से आरसी या घड़ी का शीशा टूटना। ५ अपने दल, पक्ष, वर्ग, समाज आदि से किसी प्रकार अलग या दूर हो जाना अथवा निकल जाना। अलगाव या पार्थक्य हो जाना। जैसे—(क) कबूतर का अपने झुड से टूटना। (ख) मुकदमे का गवाह टूटना। (ग) जाति या बिरादरी से टूटना (अर्थात् अलग होना या निकाला जाना)। ६ किसी प्रकार के निश्चित या परम्परागत सपर्क या सबध का अत या विच्छेद होना। पहले का-सा लगाव या व्यवहार न रह जाना। जैसे—(क) नाता या रिश्ता टूटना। (ख) आपस की सधि, सविदा या समझौता टूटना। ७ किसी चलते हुए कार्य या व्यवहार का इस प्रकार अन्त या समाप्त हो जाना कि उसकी सब क्रियाएँ बिलकुल बन्द हो जायँ। जैसे—(क) कोठी, पाठशाला, महकमा या सस्था टूटना। (ख) दल, मडली या सघटन टूटना। (ग) पदाधिकार की जगह या पद टूटना (समाप्त हो जाना)। ८ किसी प्रकार के क्रम, निश्चय या परम्परा का अन्त होना अथवा उसमे किसी प्रकार की बाधा या व्यतिक्रम होना। जैसे—(क) खाँसते-खाँसते (या हिचकियाँ लेते लेते) उसका दम टूट गया। (ख) पद्रह दिन बाद अब बुखार टूटा है। (ग) बकवाद बद करो, हमारा ध्यान टूटता है। (घ) उनका मौन (या व्रत) टूट गया। ९ किसी पदार्थ के किसी अश या भाग का कही इस प्रकार दब या रुक जाना कि वह काम मे न आ सके या मिल न सके। घटकर या और किसी प्रकार नही के बराबर हो जाना। जैसे—(क) गरमी मे कूओं का पानी टूटना। (ख) लेन-देन या व्यवहार मे सौ-पचास रुपए टूटना (कम मिलना)। १० किसी प्रकार के तत्त्व या शक्ति मे इस प्रकार कमी या ह्रास होना कि पहले की-सी सबल और स्वस्थ स्थिति न रह जाय अथवा बहुत कुछ नष्ट हो जाय। जैसे—(क) रोग से शरीर टूटना अर्थात् बहुत कृश या दुर्बल होना। (ख) बाजार गिरने से महाजन या व्यापारी का टूटना अर्थात् बहुत कुछ निर्धन हो जाना। (ग) युद्ध के कारण देशो या राष्ट्रो का बल टूटना। ११ किसी प्रकार की अनिष्ट, अप्रिय, बाधक या विपरीत घटना अथवा परिस्थिति के कारण किसी मनोदशा या स्थिति का अपने पहले के सबल और स्वस्थ रूप मे न रह जाना। जैसे—उत्साह, दिल या हिम्मत टूटना।
सयो० क्रि०—जाना (उक्त सभी अर्थो मे)।
१२. दुर्बलता, रोग, शिथिलता, श्रम आदि के कारण शरीर के अगो का इस प्रकार पीडा से युक्त होना कि वे अपनी जगह से अलग होते या हटते हुए से जान पडे। जैसे—ज्वर आने या बहुत अधिक परिश्रम करने पर शरीर या उसके अग-अग टूटना। १३. किसी विशिष्ट उद्देश्य या विचार से बहुत से लोगो का एक साथ दल बाँधकर अथवा प्राय एक ही समय मे कही जाना या पहुँचना। जैसे—(क) डाकुओं का यात्रियो पर (अथवा सैनिको का शत्रु के नगर पर) टूटना। (ख) मेला देखने के लिए (या राशन की दूकान पर) लोगों का टूटना।
सयो० क्रि०—पडना।
१४ पूरे वेग या शक्ति से किसी ओर अथवा किसी काम मे प्रवृत्त होना या लगना। जुटना। जैसे—भुक्खडो का भोजन पर टूटना।
सयो० क्रि०—पडना।
१५ किसी चीज का प्राय: अनायास और बहुत अधिक मात्रा या मान मे आने लगना या प्राप्त होना। जैसे—दौलत तो उनके घर मानो टूटी पडती है।
सयो० क्रि०—पडना।
पद—टूटकर या टूट-टूटकर=बहुत अधिक मात्रा या मान मे। जैसे—टूटकर पानी बरसना (अर्थात् मूसलधार वर्षा होना)।
१६ युद्ध के प्रसग मे, किले या गढ के सबध मे, शत्रु के आक्रमण से ध्वस्त या नष्ट होकर आक्रमणकारियो या विरोधियो के हाथ मे चला जाना। जैसे—मुगलो के शासन-काल मे एक-एक करके राजपूताने के बहुत से गढ टूट गये।
सयो० क्रि०—जाना।
१७ प्रतियोगिता, होड आदि के प्रसग मे, पहले के किसी कीर्तिमान या सीमा का किसी नये कृत्य या कौशल से उल्लघित होना या पीछे छूट जाना। जैसे—इस बार के सर्वराष्ट्रीय खेलो की प्रतियोगिता मे कई क्षेत्रो के पुराने कीर्ति-मान टूट गये और उनके स्थान पर नये कीर्ति-मान स्थापित हुए हैं।
सयो० क्रि०—जाना।
१८ आर्थिक, व्यापारिक आदि प्रसगो मे, किसी चल-पत्र, देयादेश या सिक्के का नगद धन या छोटे सिक्को के रूप मे परिवर्त्तित होना। भुनना। जैसे—नोट, रुपया या हुडी टूटना।
सयो० क्रि०—जाना।
टूठना—अ०, स० =तूठना
टूठनि—स्त्री० [हिं० टूठना] तुष्टि। सतोष।
टूनरोटी†—स्त्री० [अ० टाउन-ड्यूटी] चुगी।
टूना†—पु०=टोना।
टूम—स्त्री० [अनु० टुन टुन] १ आभूषण। गहना।
पद—टूम-छल्ला=छोटे-छोटे गहने।
२ बनाव-सिगार। सजावट।
पद—टूम-टाम=बढिया कपडे, गहने आदि, अथवा सजावट और शृगार की सामग्री।
३ धनी या सुन्दर स्त्री जिसके प्रति लोगों के मन मे लोभ उत्पन्न होता हो। ४ बहुत ही चतुर या चालाक या छँटा हुआ आदमी जिसने सहज कोई पार न पा सकता हो। ५ चेतावनी, सकेत आदि के रूप मे किया जानेवाला बहुत हलका आघात या दिया जानेवाला झटका। जैसे—कबूतरो को छतरी पर से टूम देकर उडाना।
क्रि० प्र०—देना।
६ ताने के रूप मे कही हुई कोई व्यग्यपूर्ण बात। (क्व०)

टूमना†—स० [अनु०] १ झटका या धक्का देना। २ व्यंग्यपूर्ण बात कहना। ताना देना।
टूरनामेंट—स्त्री० दे० 'चक्र-स्पर्धा'।
टूल—पु० [अ० स्टूल] एक प्रकार की छोटी तिपाई।
टूस—पु०=तूस।
टूसा†—पु० [स० तुष] १ मदार का फल। २. पाकर का फूल। ३. ततु। रेशा। ४ खड। टुकड़ा।
टूसी†—स्त्री० [हि० टूसा] बिना खिला फूल। कली।
टें—स्त्री० [अनु०] १ तोते की बोली। २ कर्कश या तीखा स्वर।
पद—टें टें=व्यर्थ की बकवाद।
मुहा०—टें बोलना या होना=चटपट मर जाना।
टेंकी—स्त्री० [स०] १ सगीत मे षाड़व जाति का एक प्रकार का राग। २ एक प्रकार का नृत्य।
टेंगड़—स्त्री०=टेंगर।
टेंगन—स्त्री०=टेंगर।
टेंगनि—स्त्री०=टेंगर।
टेंगर—स्त्री० [स० तुड=एक प्रकार की मछली] एक प्रकार की मछली जिसकी रीढ मे केवल एक कांटा होता है।
टेंघुना†—पु०=घुटना।
टेंघुनी—स्त्री० १.=टेंघुना। २. कोहनी।
टेंचन†—पु० [हि० टेक] चांड़। थूनी।
टेंट—स्त्री० [?] कमर मे पहनेवाली धोती की वह लपेट जिसमे रुपये, पैसे आदि भी रखे जाते है।
मुहा०—टेंट मे कुछ होना=पास मे कुछ रुपया-पैसा होना।
स्त्री० [स० तुड] १. कपास की ढोंढ। २. करील का फल। ३. भीतरी घाव।
टेंटर†—पु०=ढेंढर।
टेंटा—पु० [देश०] बगुले की जाति का चितकबरे रग का एक बड़ा पक्षी।
टेंटार—पु०=टेंटा।
टेंटिहा†—पु० [?] क्षत्रियो की एक शाखा।
वि०=टेंटी।
टेंटी—स्त्री० [देश०] १ करील नामक पौधा और उसका फल। कचड़ा।
उदा०—फेट किसी टेंटिन पै मेवन की वयो स्वाद बिगारयो।—भारतेन्दु।
वि० [अनु० टें टें] जिद्दी और झगडालू।
टेंटुवा—पु० [देश०] १ गरदन। २ अँगूठा।
टेंटू*—स्त्री० [स० टुटक] सोनापाठा।
वि०=टेंटी।
टेंटें—स्त्री० [अनु०] १ तोते के बोलने का शब्द। २. बार बार होनेवाला कोई कर्कश या तीखा स्वर। ३ व्यर्थ की बकवाद या बात-चीत।
टेंठा—वि० [?] [स्त्री० टेंठी] चचल।
टेंड† —स्त्री०=टिंड।
टेंडर—पुं० [अ०] किसी काम या सेवा का ठेका लेने से पहले उपस्थित किया जानेवाला वह पत्र जिसमे लिखा रहता है कि हम अमुक अमुक काम इतने दिनो के अन्दर और इतने रुपये लेकर पूरा कर देंगे।
पु०=ढेंडर (आँख का रोग)।
टेंहली†—स्त्री० टेहनी (टिहा)।
टेउ*—स्त्री० टेव।
टेउकन—स्त्री० टेकन।
टेउकी†—स्त्री० टेकनी (गाड़ियों की अड़ानी)।
टेक—स्त्री० [हि० टेकना] १. टेकने की क्रिया या भाव। २ वह बड़ी लकड़ी या ऐसी ही और कोई चीज जो किसी दूसरी बड़ी या भारी चीज को गिरने, लुढ़कने आदि से बचाने तथा रोकने के लिए अथवा किसी प्रकार के सहारे के लिए उसके नीचे लगाई जाती है। चाँड़। थूनी। जैसे—छत के नीचे या दीवार के पास में लगाई जानेवाली टेक।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
३. कोई ऐसी चीज जो उठने-बैठने आदि के समय सहारा देती हो। जैसे—टेक लगाकर बैठना अर्थात्, दीवार आदि से सहारे पीठ टेककर बैठना। ४. गाड़ी की अड़ानी। टेकनी। ५. आश्रय। अवलब। सहारा। ६. टीला। टेकरी। जैसे—नाग-टेक। ७. आग्रह, प्रतिज्ञा, हठ आदि की कोई ऐसी बात जिस पर आदमी दृढ़ रहता हो और जल्दी इधर-उधर न हो।
मुहा०—टेक गहना=टेक पकड़ना। (किसी की) टेक निभाना=किसी की हुई प्रतिज्ञा या हठ पूरा करना। टेक पकड़ना=अपनी कही हुई बात पूरी करने या रखने के लिए जिद या हठ करना। टेक रहना=की हुई बात या जिद पूरी होना। टेक का निर्वाह होना।
८. वह बात जो स्वभाव पड़ जाने के कारण कोई मनुष्य प्रायः या बार-बार करता हो। आदत। टेव। बान।
क्रि० प्र०—पड़ना।
९ गीत के आरभ का वह पद जो प्रायः शेष पदो से छोटा होता और हर पद के बाद दोहराया जाता है। १०. स्थल का वह नुकीला, नोकदार भाग जो जल मे कुछ दूर तक चला गया हो। (स्था०)
टेकड़ी—स्त्री०=टेकरी (छोटी पहाड़ी)।
टेकन—स्त्री० [हि० टेकना] वह बड़ी लकड़ी या ऐसी ही और कोई चीज जो किसी दूसरी बड़ी या भारी चीज को गिरने, लुढ़कने आदि से बचाने तथा रोकने के लिए अथवा किसी प्रकार के सहारे के लिए उसके नीचे लगाई जाती है। चाँड़। थूनी।
टेकना—स० [हि० टिकना का स० रूप] १. किसी चीज को किसी दूसरी चीज के सहारे खड़ा करना, बैठाना या लेटाना। टिकाना। ठहराना। २ किसी चीज को गिरने, लुढ़कने आदि से बचाने के लिए उसके नीचे या बगल मे टेक लगाना। ३ थकावट, दुर्बलता, शिथिलता आदि के समय सीधे खड़े रहने, चलने-फिरने या बैठ सकने के योग्य न रहने पर उठने-बैठने आदि मे सहारे के लिए शरीर के बोझ का कुछ अंश किसी चीज पर डालना या स्थित करना। जैसे—उठते समय दीवार टेकना, चलते समय किसी का कंधा टेकना। बैठते समय लकड़ी टेकना।
मुहा०—(किसी के आगे) घुटने टेकना=हार मानकर अधीनता सूचित करना। माथा टेकना=दडवत करना। नमस्कार या प्रणाम करना।
४ अपनी टेक या हठ पर दृढ़ रहना। ५ टेक ग्रहण करना। दृढ़ प्रतिज्ञा या हठ करना। जैसे—आज तो तुमने यह नई टेक टेकी है।
†पु० [देश०] एक प्रकार का जगली धान।
टेकनी—स्त्री०=टेकन।

टेकरा—पु० [हिं० टेक] [स्त्री० अल्पा० टेकरी] १. प्राकृतिक रूप से ऊँची उठी हुई भूमि या छोटी-सी पहाडी। टीला। (देखे)
†पु०=टिकरा।

टेकरी—स्त्री० [हिं० टेकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटी-सी पहाडी। टीला।

टेकला*—स्त्री० [हिं० टेक] १. मन मे ठानी हुई बात। टेक। सकल्प। २ धुन। रट।
पु० [?] [स्त्री० टेकली] एक उपकरण जिससे चीजे उठाई तथा गिराई जाती है।

टेकान—स्त्री० [हिं० टेकना] १ टेकने या टेके जाने की अवस्था या भाव। २ वह चीज जो किसी दूसरी चीज के साथ उसे सहारा देने के लिए लगाई जाती है। टेक। चाँड। ३ वह ऊँचा चबूतरा जहाँ बोझ ढोनेवाले मजदूर बोझ रखकर थोडी देर के लिए सुस्ताते है। ४. वह स्थान जहाँ से जुआरियो को जूए के अडडे का पता मिलता है।

टेकाना—स० [हिं० टेकना का स०] १ किसी चीज को सहारा देने के लिए उसके साथ कोई दूसरी चीज खडी करना या लगाना। २. किसी भारी चीज का कुछ अश किसी आधार पर स्थित करना। ३ चुप-चाप या धीरे से कोई चीज किसी को थमाना या देना। (दलाल)

टेकानी†—स्त्री० [हिं० टेकाना] १ वह चीज जो किसी को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे या बगल मे लगाई जाय। टेक। २ बैल-गाडी का जूआ। ३ वह कील जो पहिये को धुरे मे पहनाने पर इसलिए जडी जाती है कि वह बाहर निकलकर गिर न जाय।

टेकी—वि० [हिं० टेक] १ अपनी टेक या प्रतिज्ञा या हठ पर अडा रहने-वाला। २. जिद्दी।

टेकुआ†—पु०=तकला।
†पु०=टेकानी।

टेकुरा—पु० [देश०] पान।

टेकुरी—स्त्री० [स० तर्कु, हिं० टेकुआ] १ रस्सी बटने या सूत कातने की तकली। २ चरखे मे का तकला। ३ चमडा सीने का सूआ या सूजा। ४ सुनारो का एक औजार जिससे सोने आदि के तार खीचकर उनमे फदा लगाया जाता है। ५ सगतराशो का एक औजार जिससे मूर्तियो आदि का तल चिकना किया जाता है। ६ जुलाहो की बाँस की वह फिरकी जिसकी नोक मे रेशम के डोरे अटकाये या फँसाये जाते है।

टेघरना†—अ० दे० 'पिघलना'।

टेटका† —पु० [स० ताटक] कानो मे पहनने का एक लटकौआ आभूषण। लोलक।

टेढ़—स्त्री० [हिं० टेढा] १. टेढापन। वक्रता। २ बात-चीत या व्यवहार मे दिखाई देनेवाला लडाकापन।
मुहा०—टेढ़ की लेना=जहाँ सीधी तरह की बात होनी चाहिए वहाँ भी ऐंठ या लडाई-झगडे की बात करना।
†वि०=टेढा। उदा०—टेढ जानि सका सब काहू।—तुलसी।

टेढ़ बिड़ंगा—वि०=टिढ-बिडगा।

टेढा—वि० [स० त्रैधा, मरा० तेडा, सिं० टेडो, पु० हिं० टेढ] [स्त्री० टेढी, भाव टेढाई] १ जो लबाई के बल मे किसी एक सीध मे न गया हो, बल्कि बीच मे कही इधर-उधर कुछ घूम या मुड गया हो। वक्र। 'सीधा' का विपर्याय। जैसे—टेढा बाँस, टेढी लकीर। २ जिसकी क्रिया, गति या मार्ग मे किसी प्रकार की कुटिलता या वक्रता आ गई हो। जैसे—टेढी आँख या चितवन। ३ जिसमे सरलता, सुगमता आदि का बहुत कुछ अभाव हो। जैसे—टेढा रास्ता। ४ जिसमे अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ, विकटताएँ आदि हो। जो सहज मे ठीक या सपन्न न हो सकता हो। जैसे— टेढा काम, टेढा मुकदमा, टेढी समस्या।

२—५६

पद—टेढ़ी खीर=बहुत ही कठिन या विकट काम। जैसे—चद्रमा या मगल तक पहुँचना टेढी खीर है।
विशेष—यह पद उस कहानी के आधार पर बना है, जिसमे किसी अंधे ब्राह्मण को खीर का परिचय कराने के लिए पहले उसके सफेद होने का और फिर सफेदी का बोध कराने के लिए बगले का उल्लेख किया गया था और अत मे बगले का बोध कराने के लिए उसके आगे हाथ टेढा करके रखा गया था, जिसे टटोलकर उसने कहा था कि खीर तो टेढ़ी होती है। वह मेरे गले मे अटक जायगी।
५ व्यावहारिक दृष्टि से जिसमे उग्रता, उद्दडता, कठोरता आदि हो, फलत जिसमे कोमलता, नम्रता, शिष्टता आदि का बहुत-कुछ अभाव हो। जैसे—टेढ़ा आदमी, टेढा स्वभाव।
मुहा०—(किसी को) टेढ़ी आँख से देखना=वैर-विरोध, शत्रुता आदि के भाव से देखना। **(किसी से)टेढ़े पड़ना या होना**=क्रुद्ध या रुष्ट होकर कठोरतापूर्ण बाते कहना या लडने-झगडने को तैयार होना। **टेढ़े-टेढ़े चलना**=इतरा या ऐंठ कर चलना।
पद—टेढ़ी-सीधी बातें=ऐसी बाते जिनमे से कुछ तो ठीक या सीधे ढग से और कुछ क्रुद्ध या रुष्ट होकर कही गई हो। जैसे—उस दिन वे अकारण ही मुझे बहुत-सी टेढी-सीधी बाते सुना गये।

टेढ़ाई—स्त्री० [हिं० टेढा] =टेढापन।

टेढ़ापन—पु० [हिं० टेढा+पन (प्रत्य०)] टेढे होने की अवस्था या भाव।

टेढा-मेढ़ा—वि० [हिं० टेढा+अनु० मेढा अथवा हिं० बेडा] [स्त्री० टेढ़ी-मेढ़ी] १. (वस्तु) जिसमे बहुत अधिक घुमाव-फिराव या मोड हो। २ (कार्य) जो कठिन या मुश्किल हो।

टेढ़े, टेढ़े मेढ़े—क्रि० वि० [हिं० टेढा] सीधी तरह से नही, बल्कि टेढेपन या घुमाव-फिराव के साथ।
मुहा०—टेढ़े टेढ़े चलना=सरल या सीधा व्यवहार न करके छल-कपट या लडाई-झगडे की बात करना।

टेना—स० [देश०] १. धार तेज करने के निमित्त अस्त्र आदि को पत्थर पर रगडना। २ धार चोखी या तेज करना। ३ मूँछो के बालो मे बल डालकर उन्हे खडा या तना रखने के लिए उमेठना।

टेनिस—पु० [अ०] गेंद का एक विदेशी खेल। टेनिस।

टेनी† —स्त्री० [देश०] १ कानी अर्थात् सबसे छोटी उँगली।
मुहा०—टेनी मारना=कोई चीज तौलने के समय तराजू की डडी मे कानी उँगली से इस प्रकार सहारा लगाना कि चीज उचित से कम तौली जाय।
२ एक प्रकार की छोटी चिडिया।

टेपारा—पु०=टिपारा।

टोंटी—स्त्री० [स० तुड] १. किसी पात्र या नल में आगे की ओर लगा हुआ वह छोटा मुँह जिसमे से होकर कोई तरल पदार्थ गिरता या निकलता है। (टैप) २ सूअर आदि पशुओ का थूथन।

टोंस—स्त्री०=टौंस (तमसा नदी)।

टोआ—स्त्री० [?] आम के वृक्ष के आरभिक अकुर जो कुछ समय वाद मजरी का रूप धारण करते है। डाभ।
पु० [हिं० टोना=छूकर देखना] जहाज या नाव का वह मल्लाह जो आगे की ओर बैठकर पानी की गहराई नापता या थाह लेता चलता हो।

टोइयाँ—पु० [देश०] एक तरह का छोटे आकार का तोता जिसकी चोच पीले रंग की तथा गला और सिर बैंगनी रग का होता है।

टोई†—स्त्री० [देश०] उँगली का खड। पोर।

टोक—स्त्री० [स० स्तोक या हिं० टोकना] १ टोकने की क्रिया या भाव। २. वह प्रश्नात्मक छोटी बात जो किसी को कुछ करने या कहने से टोक या रोककर बीच मे कही या पूछी जाती है। साधारणत ऐसी बात कुछ बाधक या विघ्नकारक समझी जाती है।
मुहा०—किसी की टोक मे आना=किसी के टोकने पर उसके अनिष्ट-कारक प्रभाव मे पडना। **टोक लगना**=किसी के बीच मे टोकने पर उसका कुछ अनिष्टकारक या विघ्नकारक प्रभाव पडना। जैसे—(क) तुम्हारी टोक लग गई, इसी से वहाँ जाने पर हमारा काम नही हुआ। (ख) बच्चे को किसी की टोक लगी है, इसी से वह बीमार हो गया।
पद—टोक-टाक=किसी को कोई काम करते देखकर उसके सबध मे किये जानेवाले छोटे-मोटे प्रश्न जो साधारणत लोक मे उस काम के लिए बाधक लक्षण या अपशकुन समझे जाते हैं।
३ बुरी दृष्टि का प्रभाव। नजर।
†पु०=टोका (सिरा)।

टोकना—स० [हिं० टोक+ना (प्रत्य०)] १ वक्ता के बोलते समय बीच मे ही श्रोता का उसे कोई बात कहने से रोकना अथवा किसी बात के सबध मे अपनी शका प्रकट करना।
विशेष—साधारणत लोक मे इस प्रकार के प्रश्न अपशकुन के रूप मे माने जाते हैं।
२ किसी को कोई काम करते हुए देखकर अथवा कोई काम करने के लिए प्रस्तुत देखकर उसे वह काम न करने के लिए अथवा उसे ठीक तरह से करने के लिए कहना। ३ लडने आदि के लिए आह्वान करना।
पु० [?] [स्त्री० अल्पा० टोकनी] १ टोकरा। २ एक प्रकार का हडा।

टोकनी—स्त्री० [हिं० टोकना] १ पानी रखने का चौडे मुँह का एक प्रकार का बडा बरतन। २ बड़ी देगची या बटलोई।
†स्त्री०=टोकरी।

टोकरा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० टोकरी] बाँस की खमाचियो या तीलियो अथवा बेंत, सरकडे आदि का बना हुआ खुले तथा चौडे मुँहवाला बडा आधान। खाँचा। झावा।

टोकरिया†—स्त्री० [हिं० टोकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] टोकरी।

टोकरी†—स्त्री० [हिं० टोकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा टोकरा।
स्त्री०=टोकनी।

टोकवा†—पु० [देश०] उत्पाती या उपद्रवी लड़का।

टोकसी†—स्त्री० [देश०] नारियल की आधी खोपडी।
पुं० [देश०] एक तरह का कीड़ा जो उर्द की फसल को हानि पहुँचाता है।

टोका†—पु० [हिं० टूक] १. किसी चीज का किनारा या सिरा। जैसे—डोरे या धागे का टोका। २ कपडे आदि का कोना या पल्ला। ३. नोक। ४ स्थल का वह भाग जो कुछ दूर तक जल मे चला गया हो।
पु० [हिं० टूक] १ चारा काटने का गँडासा नामक उपकरण। (पश्चिम) २ चारा काटने की कल या यत्र।

टोकारा—पुं० [हिं० टोक] १ वह बात जो किसी को टोकने अथवा टोक कर कुछ याद दिलाने या सचेत करने के लिए कही जाय। २ उक्त उद्देश्य से किया जानेवाला कोई सकेत। उदा०—उसने उँगली से उसके गाल पर टोकारा दिया।—नागार्जुन।
क्रि० प्र०—देना।

टोट—स्त्री० [हिं० टूट] १ टोटा। कमी। २ घाटा। हानि।

टोटक—पु०=टोटका।

टोटक-हाया—पु० [हिं० टोटका+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० टोटक-हाई] वह व्यक्ति जो टोटका या टोना करता हो।

टोटका—पु० [स० तात्रिक से] तात्रिक प्रयोगो के अतर्गत, वह छोटा उपचार या औपचारिक कृत्य जो कष्ट, बाधा, रोग आदि दूर करने या इनसे बचने-बचाने अथवा इसी प्रकार के दूसरे उद्देश्य सिद्ध करने के लिए यह समझकर किया जाता है कि इसमे कुछ अलौकिक या दैवी शक्ति होती है अथवा यह कुछ विलक्षण चमत्कार या प्रभाव दिखाता है।
विशेष—टोटका बहुधा औपचारिक कृत्य के रूप मे ही होता है, और इसमे मत्रो आदि का प्रयोग नही होता। रोगी के सिर पर से उतारा उतारकर चौमुहानी या किसी विशिष्ट स्थान पर रखना, वर्षा कराने अथवा रोकने के लिए नगे होकर कोई कृत्य करना, नजर या भूत-प्रेत का प्रभाव या कोई रोग दूर करने के लिए कुछ चीजे जलाना, अपने बच्चे को जीवित या नीरोग रखने के लिए दूसरो के बच्चो के कपडे फाडकर कही गाडना आदि छोटे-मोटे कृत्य टोटको के वर्ग मे आते है।
मुहा०—(किसी के यहाँ) टोटका करने आना=बहुत ही थोडी देर के लिए या केवल नाम करने के लिए आना। (स्त्रियो का परिहास और व्यग्य) जैसे—तुम तो आते ही इस प्रकार उठकर चलने लगी कि मानो टोटका करने के लिए आई थी। (साधारणत. जब और जहाँ कोई टोटका किया जाता है, तब टोटका करनेवाला व्यक्ति प्राय तुरत वहाँ से हट जाता है।)
†पु० दे० 'टोना'।

टोटके-हाया—पु० [स्त्री० टोटके-हाई]=टोटक-हाया।

टोटल—पु० [अ०] सख्याओं का जोड या योग। मीजान।
मुहा०—टोटल मिलाना=आय-व्यय आदि के ठीक होने की जाँच या मिलान करना।

टोटा—पु० [स० √त्रुट्, हिं० टूटना] १ लेन-देन, व्यवहार आदि मे होने वाली आर्थिक क्षति। घाटा। हानि। २. खटकनेवाला अभाव या कमी। जैसे—आज-कल बाजार मे गेहूँ का टोटा है। ३ किसी वस्तु का कोई छोटा अंश या खड। टुकडा। जैसे—कपडे का टोटा। ४. एक प्रकार की छोटी गरम चद्दर जिसे स्त्रियाँ ओढती है। (पश्चिम)

टोडा—पु० [स० तुड] देहाती कच्चे मकानो मे छाजन के नीचे वाहर की ओर लगाई जानेवाली काठ की घोडिया। टोटा।

टोडिक—पु० [हिं० टोड] वह जिसे सदा पेट भरने की चिन्ता रहे। पेटू। उदा०—टोडिक ह्वै घनआनन्द डाँटत काटत क्यों नहिं दीनता सो दिन।—घनानन्द।

टोड्सि†—वि० [?] उत्पाती। उपद्रवी।

टोड़ी—स्त्री० [स० त्रोटकी] १ प्रात.काल गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। २ सगीत मे चार मात्राओ का एक ताल।

पु० [अ०] नीच प्रकृति का मनुष्य। खुशामदी तथा कमीना व्यक्ति।

टोनहा†—वि० [हिं० टोना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० टोनही] टोना करने-वाला।

टोनहाई—स्त्री० [हिं० टोना+हाई (प्रत्य०)] टोना-टोटका करने की क्रिया या भाव।

स्त्री० हिं० 'टोनहाया' का स्त्री०।

टोनहाया—वि० [स्त्री०टोनाहाई]=टोनहा।

टोना—पु० [हिं० टोटका या तत्र] १. वह टोटका या छोटा-मोटा तात्रिक उपचार जो प्राय. किसी को अनुरक्त या वशीभूत करने, मूढ वनाकर अपना काम निकालने या सहज मे अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए कुछ मत्र पढ़कर किया जाता है।

क्रि० प्र०—चलाना।—डालना।—पढना।—मारना।

२ विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत जिसके हर चरण या पद मे 'टोना' शव्द आता है; और जिसका मुख्य उद्देश्य वर-वधू को परस्पर अनुरक्त करना और उनके अनुराग को दूसरो की नजर या वुरी दृष्टि से वचाना होता है।

स० [हिं० टोहना] किसी चीज के रूप आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस पर उँगलियाँ या हथेली रखना। जानने या समझने के लिए छूना या छूकर देखना। टटोलना।

†पु० [?] एक प्रकार की शिकारी चिडिया।

टोप—पु० [हिं० तोपना=ढाँकना] १. वडी टोपी। २. युद्ध मे सिर पर पहना जानेवाला खोद। शिरस्त्राण। ३ अगुश्ताना। ४. खोली। गिलाफ।

†स्त्री० [अनु०] पानी की वूँद।

टोपन—पु० [देश०] टोकरा।

टोपरा†—पु०=टोकरा।

टोपरी†—स्त्री०=टोकरी।

टोपही—स्त्री० [हिं० टोप] वरतन ढालने के साँचे का ऊपरी भाग जो कटोरे के आकार का होता है।

टोपा—पु० [हिं० तोपना] १ वड़ी टोपी। २. टोकरा। दौरा। ३. काठ का एक पात्र जिसमे भरकर अनाज आदि नापे (तौले) जाते थे और जिसमे लगभग सवा सेर अन्न आता था। (पजाव)

†पुं०=तोपा (सिलाई का)।

पु० [हिं० तोपना] टोकरा।

टोपी—स्त्री० [स० √स्तुभ्,√स्तूप्; दे० प्रा० टिपिआ, टोप्पर] १ सिर पर रखने का एक विशिष्ट प्रकार का हलका पहनावा जो लवोतरा, तिकोना, चौकोर या ऐसे ही किसी और रूप का होता है। जैसे—गांधी या तुर्की टोपी।

क्रि० प्र०—पहनना।—रखना।—लगाना।

मुहा०—(किसी को) टोपी उछालना=किसी को सवके सामने अपमानित या वेइज्जत करना। **(किसी से) टोपी वदलना**=भाई भाई का-सा सवध जोटना।

२. राजमुकुट। ताज।

मुहा०—टोपी वदलना=राज्य के एक राजा या शासक के न रह जाने पर उसके स्थान पर दूसरे राजा या शासक का आना या वैठना।

३. टोपी के आकार की कोई गोल और गहरी वस्तु जिससे प्राय कोई चीज ढकी जाती है। जैसे—चिलम ढकने की टोपी। ४ वोतल आदि का मुँह वद करने का धातु का ढक्कन। ५ टोपी के आकार का धातु का गहरा ढक्कन जिसे वदूक पर चढा कर घोडा गिराने से आग पैदा होती है। ६. दरजी का वह चौडा छल्ला जिसे वह हाथ से सिलाई आदि करते समय उँगली मे पहन लेता है। अगुश्ताना। ७ वह थैली जो कुछ जानवरो के मुँह पर इसलिए चढाई या वाँधी जाती है कि वे किसी को काट न सकें अथवा कुछ खाने न पावें। ८. लिंग का अग्रभाग।

टोपीदार—वि० [हिं० टोपी+फा० दार] टोपी से युक्त। जिस पर टोपी लगी हो।

टोपीवाला—पु० [हिं० टोपी] वह जो कुछ विशिष्ट प्रकार की या वडी टोपी पहनता हो।

विशेष—मध्ययुग मे अहमदशाह और नादिरशाह के सिपाही एक विशिष्ट प्रकार की लाल टोपी पहनने के कारण और परवर्त्ती काल मे युरोप के निवासी हैट पहनने के कारण 'टोपीवाले' कहे जाते थे।

टोभ†—पु० [हिं० डोभ] टाँका।

टोया†—पु० [स० तोय] गड्ढा। (पश्चिम)

टोर—स्त्री० [देश०] १ वह पानी जो घोले हुए क्षार मे से नमक निकाल लेने पर वच रहता है और जिसे उवाल तथा छानकर शोरा निकाला जाता है। २ कटार।

टोरना—स० [?] १ इधर-उधर करना, फिराना या हटाना। जैसे—लज्जित होकर आँखे टोरना। २ दे० 'तोडना'।

पु० [देश०] सूत तौलने का जुलाहो का तराजू।

टोरा†—पु० [स० तोक] [स्त्री० टोरी] लड़का।

†पु०=टोडा।

टोरी†—स्त्री०=टोडी (रागिनी)।

टोर्रा†—पु०=टुर्रा।

टोल—पु० [स० चटशाला?] १ पाठशाला। २ मध्ययुग मे वह वडी पाठशाला जिसमे कोई वहुत वडा पडित अपने शिष्यो को दर्शन, न्याय, व्याकरण आदि की ऊँची शिक्षा दिया करता था। (वगाल)

पु० [?] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सव शुद्ध स्वर लगते हैं।

†स्त्री० दे० 'टोली'।

पु० दे० 'टोला' (महल्ला)।

पु० [अ०] किसी विशिष्ट मार्ग पर चलने के समय यात्रियो पर लगने-वाला मार्ग-कर।

टोला—पु० [हिं० टोली का पु०] १ किसी वस्ती का कोई विशिष्ट विभाग

जो किसी स्वतत्र नाम से प्रसिद्ध हो। मुहल्ला। जैसे—महाजनी टोला।
२. ईंट-पत्थर आदि का वडा तथा भारी टुकडा।
पु० [देश०] १ गुल्ली पर किया जानेवाला डडे का आघात या चोट।
२. उँगली मोड़कर उसकी हड्डी से किया जानेवाला आघात।
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।
२. वेत आदि की चोट का निशान।
क्रि० प्र०—पडना।
३ वडी कौडी। कौडा।

टोली—स्त्री० [स० टोलिका=घेरा वाडा] १ किसी वस्ती का कोई ऐसा छोटा विभाग जो किसी विशिष्ट नाम से प्रसिद्ध हो। छोटा टोला या मुहल्ला। जैसे—ग्वाल टोली। २ जीव-जन्तु या प्राणियो का झुड। जैसे—वदरो की टोली। ३ मनुष्यो का दल या मडली। जैसे—यात्रियो की टोली। ४. पत्थर की चौकोर पटिया। वडी सिल। ५ पूर्वी हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का वाँस जिसे 'नाल' भी कहते हैं।

टोली धनवा—पु० [हिं० टोली+धान] एक तरह की घास जिसके पत्ते धान के पत्तो जैसे होते है।

टोवना†—स०=टोना। उदा०—जोवन रतन कहाँ भुँइ टोवा।—जायसी।

टोवा—पुं०=टोआ।

टोह—स्त्री० [हिं० टोहना] १ टोहने अर्थात् टटोलने या टोने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।—लगना।
२ किसी अज्ञात वात का लगनेवाला कुछ पता। अँधेरे मे छिपी या दवी हुई वात की होनेवाली थोडी वहुत जानकारी। थाह।

टोहना—स० [हिं० टोह] १ किसी अज्ञात वात की टोह लेना या पता लगाना। थाह लेना। २ जानने के लिए कुछ छूकर देखना।

टोहा-टाई—स्त्री० [हिं० टोह] वार-वार टोहने या टोह लेने की क्रिया या भाव।

टोहिया—वि०=टोही।

टोहियाना†—स०=टोहना।

टोही—वि० [हिं० टोह] खोज या टोह लेने या पता लगानेवाला।
पु० जासूस।

टौंस—स्त्री० [स० तमसा] १ एक छोटी नदी जो अयोध्या के पश्चिम से निकलकर वेतिया के पास गगा मे मिलती है। २ विन्ध्य-प्रदेश की एक नदी जो रीवाँ की ओर से आकर प्रयाग के पूर्व सिरसा के पास गंगा मे मिलती है। ३. टेहरी और देहरादून के पास की एक नदी जो जमुना मे मिलती है।

टौनहाल—पु०=टाउनहाल।

टौर†—स्त्री० [हिं० टौरना] १ टौरने की क्रिया या भाव। २. किसी वात की होनेवाली जानकारी या लगनेवाला पता। उदा०—वैठी रही अभिमान सौं टाह टौर नहिं पायी।—सूर। ३.घात। दाव। ४ उपयुक्त अवसर।

टौरना—स० [हिं० टेरना ?] १ जाँच करना। परखना। २. पता लगाना।

टौरिया—स्त्री०=टेकरी।

ट्योंझा—पु० [देश०] व्यर्थ का झगडा या वखेडा।

ट्रंक—पु० [अं०] टीन की चद्दर का वडा सदूक।

ट्रक—स्त्री० [अ०] माल ढोनेवाली एक प्रकार की वडी मोटर-गाडी।

ट्रस्ट—पु० [अ०] न्यास। (दे०)

ट्रस्टी—पु० [अ०] न्यासी। (दे०)

ट्राम—स्त्री० [अं०] कुछ नगरो की सडको पर विछी हुई पटरियो पर विजली की सहायता से चलनेवाली एक प्रकार की छोटी गाड़ी।

ट्रेडमार्क—पु० [अ०] किसी वस्तु पर अकित वह विशेष चिह्न जो यह सूचित करता है कि इस वस्तु का निर्माता अमुक व्यक्ति या सस्था है।

ट्रेडिल मशीन—स्त्री० [अ०] छापे की छोटी मशीन।

ट्रेन—स्त्री० [अ०] रेलगाडी।

ट्रेनिंग—स्त्री० [अ०] दे० 'प्रशिक्षण'।

ट्रौली—स्त्री० [अ०] १ रेल की पटरियो पर चलनेवाली ठेला-गाड़ी। २ ठेला गाडी।

ठ

ठ—देवनागरी वर्णमाला का वारहवाँ तथा टवर्ग का दूसरा व्यजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा अघोष है।
पु० [स० पृषो० सिद्धि] १ शिव। २ महाध्वनि। ३ चद्रमडल। ४. मडल। ५ शून्य। ६ वह वस्तु जिसका ग्रहण इद्रियो से हो सकता हो।

ठंठ—वि० [स० स्थाणु] १ (पेड) जिसकी डाले तथा पत्तियाँ सूख और झड गई हो। २ (गाय या भैंस) जिसका दूध सूख गया हो। ३ (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी धन न रह गया हो। निर्धन।

ठंठस†—स्त्री० [स० डिंडिश] टिंडा। ढेंढसी।

ठंठार—वि० [हिं० ठठ] १ (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी न हो या न रह गया हो। २. (पात्र) खाली। रीता।

ठंठी—स्त्री० [हिं० ठठ] ज्वार, मूँग आदि की वह वाल जिसमे पीट लेने के वाद भी कुछ दाने लगे रह गये हो।
वि०=ठठ।

ठंड†—स्त्री०=ठढ (सरदी)।

ठंडई—स्त्री०=ठढाई।

ठंडक—स्त्री०=ठढक।

ठंडा—वि०=ठढा।

ठंडाई—स्त्री०=ठढाई।

ठंढ—स्त्री० [हिं० ठढा] १ तापमान अधिक गिर जाने के कारण ऋतु या वातावरण की बढी हुई वह शीतलता जो कुछ अप्रिय और कष्टकर जान पडे। शीत। सरदी।

क्रि० प्र०—पडना।—लगना।

२. उक्त शीतलता की होनेवाली अनुभूति या प्रभाव। जैसे—बच्चे को ठढ लग गई है।

ठंढई—स्त्री०=ठढाई।

ठंढक—स्त्री० [हिं०ठढा] १ वातावरण की ऐसी स्थिति जिसमे हलकी ठढ हो। । ऐसी हलकी ठढ जो प्रिय और सुखद हो। २ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार की अभीष्ट सिद्ध होने पर मन मे होनेवाली तृप्ति या सन्तोष। जैसे—हमारशरे सौ रुपये खत्म करा दिये, अब तो तुम्हे ठढक पडी न। ३ उत्पात, उपद्रव, रोग आदि का शमन होने पर मन मे होने-वाली तृप्ति या सन्तोष।

क्रि० प्र०—पडना।

ठंढा†—वि० [स० स्तब्ध, प्रा० थड्ड, मरा० थड; गु० थडु] [स्त्री० ठढी] १. जिसमे किसी प्रकार की और कुछ भी उष्णता या ताप न हो जिसका तापमान प्रसम स्तर से निश्चित रूप मे नीचा हो। 'गरम' का विपर्याय। जसे—ठढा पानी। २ जिसमे कष्टदायक गरमी या प्रखर ताप का अभाव हो और इसी लिए जो प्रिय, वाछित या सुखद हो। जैसे—ठढा दिन।

पद०—ठंढे-ठढे=ऐसे समय मे जब गरमी या धूप न हो अथवा होने पर भी अधिक कष्टदायक न हो। जैसे—पैदल यात्री प्राय कुछ रात रहते ही उठकर चल पडते हैं और ठढे-ठढे अगले पडाव पर पहुँच जाते है।

३ (पदार्थ) जो पूरी तरह से जल चुकने पर अथवा बीच मे ही बिलकुल बुझ चुका हो। जो गरम या जलता हुआ न रह गया हो। जैसे—आग या चूल्हा ठढा करना या होना।

पद—ठंढी आग। (देखे)

विशेष—कुछ विशिष्ट प्रसगो मे 'ठढा करना' का प्रयोग सगऊ-भाषित के रूप मे कई विशिष्ट प्रकार के अर्थ और भाव सूचित करने के लिए होता है। इसी आधार पर 'ठढा करना' के योग से कई मुहावरे बन गये है। (देखे नीचे)

मुहा०—कड़ाही ठंढी करना=किसी शुभ कार्य के अवसर पर सब पकवान, मिठाइयाँ आदि बन चुकने पर सब के अत मे बाँटने के लिए थोडा-सा हलुआ बनाना और तब चूल्हा या भट्ठी बुझाना। **चूड़ियाँ ठंढी करना**= =नई चूडियाँ पहनने के समय पुरानी चूडियाँ उतारना या तोडना। **चूल्हा ठंढा करना**= **चूल्हा बुझाना**। **ताजिया ठंढा करना**=मुहर्रम के दस दिन बीत जाने पर विधिपूर्वक ताजिया गाडना। **दीया ठंढा करना** =दीया बुझाना। **माता या शीतला ठंढी करना**=रोगी के शरीर पर चेचक या शीतला का प्रकोप शात हो जाने पर शीतला देवी की पूजा करना। **मूर्त्ति (या उसके पूजन की सामग्री) ठंढी करना**=पूजन की समाप्ति पर विधि और सम्मानपूर्वक मूर्ति या पूजा की सामग्री जलाशय, नदी आदि मे डालना या बहाना।

४. (शरीर) जिसमे आवश्यक या उचित ताप न रह गया हो। जिसमे उतनी गरमी न रह गई हो, जितनी साधारणत. रहनी चाहिए होती है। जैसे—मरने से कुछ पहले हाथ-पैर ठढे हो जाते है। ५ (शरीर का तापमान) जो मानव-शरीर के प्रसम तापमान से कम या घटकर हो, और फलत. कष्टदायक तथा चिन्ताजनक या रोग का सूचक हो। जैसे—सध्या-सवेरे इस लडके के हाथ-पैर बिलकुल ठढे हो जाते हैं। ६. जिसकी उष्णता या ताप बहुत घट गया हो अथवा कम होता हुआ बिलकुल निकल गया हो। जो गरम न रह गया हो। जैसे—ठढा भात, ठढी रोटी। ७. (पदार्थ) जो गरमी या ताप की अनुभूति या विकलता कम करने मे सहायक हो। जैसे—ठढे कपडे, ठढे पेय पदार्थ। ८. (औषध या खाद्य पदार्थ) जो शरीर के अन्दर पहुँचकर कुछ ठढक लाता या शीतलता उत्पन्न करता हो। जैसे—ठढी दवा, ठढे फल। ९ (व्यक्ति) जिसमे आवेश, उत्तेजना, क्रोध, चचलता, दुर्भाव आदि उग्र या तीव्र मनोविकारो का पूरा या बहुत-कुछ अभाव हो। गभीर, धीर और शात। जैसे—ठढे मिजाज का आदमी; ठढे होकर किसी बात पर विचार करना।

मुहा०—(किसी को) ठंडा करना=किसी का आवेश, क्रोध, चचलता आदि दूर करके उसे प्रकृतिस्थ और शात करना।

१०. (व्यक्ति) जो सब तरह से निश्चिन्त, सन्तुष्ट और सुखी हो। जिसे किसी बात का कष्ट या दु:ख न हो।

पद—ठंढी रहो=सधवा स्त्रियों के लिए आशीर्वाद का पद जिसका आशय होता है—धन और सन्तान का सुख भोगती हुई सौभाग्यवती बनी रहो। (स्त्रियाँ)

११. (व्यक्ति) जो अपना उद्देश्य सिद्ध हो जाने या कामना पूरी हो जाने के कारण तृप्त या सन्तुष्ट हो गया हो। जैसे—जब तक हमारे सौ दो सौ रुपये खत्म न करा लोगे, तब तक तुम ठढे नहीं होगे। १२ (व्यक्ति) जिसमे उद्यम, क्रिया-शीलता, तत्परता, प्रबलता आदि का बहुत-कुछ या बिलकुल अभाव अथवा ह्रास हो गया हो। जैसे—(क) खरी-खरी बाते सुनते ही वे ठढे पड़ (या हो) जाते हैं। (ख) इस मुकदमे ने उन्हें ठंढा कर दिया है।

पद—ठंढा साँस। (देखें स्वतन्त्र शब्द)

१३ (व्यक्ति) जिसमे काम की उमग या सभोग-शक्ति बिलकुल न हो या बहुत ही कम हो। जैसे—लडका तो देखने मे बिलकुल ठढा मालूम पडता है, इसका विवाह व्यर्थ किया जा रहा है। १४ (आवेग या उत्साह) जो केवल ऊपरी, दिखौआ या बनावटी हो।

पद—ठढी गरमी। (देखें स्वतन्त्र शब्द)

१५ (कार्य या क्रिया) जिसमे ऊपर से देखने पर वे दुष्परिणाम, दोष या विकार न दिखाई देते हो जो साधारण अवस्थाओं मे दिखाई देते, रहते या होते है।

पद—ठंढा युद्ध, ठंढी आग, ठढी मार, ठंढी मिट्टी। (देखें अलग-अलग स्वतन्त्र शब्द)

मुहा०—ठंढे कलेजे, ठढे ठंढे या ठंढे पेटो=बिना किसी प्रकार का प्रति-वाद या विरोध किये। चुपचाप या धीर और शात भाव से। जैसे—अब आप ठढे कलेजे (ठढे ठढे या ठढे पेटो) हमारा हिसाब चुकता करके यह झगडा खतम कीजिए।

१६ जो या तो मर गया हो, या मरे हुए के समान जड़, निश्चेष्ट या निष्क्रिय हो गया हो। जैसे—पहली लाठी लगते ही वह गिर कर ठढा हो गया। १७. (कार्य या स्थान) जिसमे नित्य का-सा व्यवहार या

व्यापार न हो रहा हो, बल्कि जो बहुत-कुछ मंदा या हलका पड़ गया हो। जैसे—युद्ध की सम्भावना न रह जाने (अथवा बाहर से माल आने की आशा होने) पर किसी चीज का बाजार ठंढा पड़ना या होना। १८ जिसमे किसी तरह की खराबी या बुराई न हो।

मुहा०—(किसी काम या बात मे) ठंढा गरम न देखना=यह न देखना या समझना कि यह काम अच्छा, उचित अथवा लाभदायक है या नही। ऊँच-नीच या बुरा-भला न देखना या न समझना।

१९ (पदार्थ) जिसमे अग्नि, विद्युत् आदि का सयोग न हो अथवा इनका काम किसी और तरह से चलाया जाता हो। जैसे—ठंढा तार, ठंढा मुलम्मा।

ठंढाई—स्त्री०[हिं० ठंढा] १ एक मे मिले हुए कासनी, सौंफ, गुलाब की पत्तियो और ककडी, खरबूजे आदि के बीज। २ उक्त पत्तियों तथा बीजो का वह मिश्रण जो प्राय गरमी के दिनो मे घोट और घोलकर शरबत के रूप मे बनाया तथा पीया जाता है। ३. दे० 'ठढक'।

ठंढा मुलम्मा—पु०[हिं० ठंढा+अ० मुलम्मा।] कुछ विशिष्ट धातुओ पर सोने या चाँदी का पानी चढाने की वह रीति जिसमे उक्त धातुओ को गरम नही करना पडता। इस प्रकार किया हुआ मुलम्मा।

ठंढा युद्ध—पु०[हिं०+स०] राजनीतिक क्षेत्रो मे एक दूसरे के प्रति चली जानेवाली ऐसी चाले या दाँव-पेच जिसमे शस्त्रास्त्रो का प्रयोग न होने पर भी परिणाम या फल वैसा ही त्रासकारक और भीषण होता है जैसा शस्त्रास्त्रो से होनेवाले प्रत्यक्ष युद्ध का होता है। (कोल्ड वार)

ठंढा साँस—पुं०[हिं०] बहुत खीचकर लिया जानेवाला वह साँस जो बहुत अधिक दुःख, निराशा, विफलता आदि के समय प्राकृतिक रूप से निकलता है। गहरा साँस। जैसे—चुनाव मे अपनी हार का समाचार सुनने पर वे केवल ठंढा साँस लेकर रह गये।

ठंढी—वि० हिं० ठंढा का स्त्री० रूप।

स्त्री० १ चेचक या शीतला नामक रोग। (प्राय बहुवचन रूप मे प्रयुक्त) जसे—बच्चे को ठढियाँ निकली हैं।

क्रि० प्र०—निकलना।

मुहा०—ठंढी ढलना=शीतल नामक रोग के वेग का उतार या कमी होना।

२ दे० 'ठढ'। ३ दे० 'ठढक'।

ठंढी आग—स्त्री० [हिं०] १ बरफ। हिम। २ तुषार। पाला। ३ ऐसी धूर्ततापूर्ण चाल जिससे किसी को अन्दर ही अन्दर बहुत अधिक कष्ट या सताप हो, या उसकी कोई बहुत बडी हानि हो। जैसे—उस दुष्ट (या नीच) को तो ठंढी आग से जलाना (या मारना) चाहिए।

ठंढी गरमी—स्त्री० [हिं०] ऐसा उत्साह, प्रेम या सद्भाव जो वास्तविक या हार्दिक न हो, केवल ऊपर से दिखाने या नाम करने के लिए हो। जैसे—उनकी वह ठंढी गरमी देखकर मुझे तो अन्दर ही अन्दर हँसी आ रही थी।

ठंढी मार—स्त्री०[हिं०] ऐसा प्रहार या मार जिसमे ऊपर से देखने पर चोट के निशान तो न दिखाई दे, पर भीतरी अगो पर अधिक या गहरी चोट आवे। जैसे—जेलो और थानो मे लोगो पर अक्सर ठंढी मार पडती है।

ठंढी मिट्टी—स्त्री०[हिं०] ऐसा शारीरिक सघटन जिसमे जवानी के लक्षण अधिक दिनो तक बने रहे और बुढापे की झलक अपेक्षया देर मे आवे।

ठई—स्त्री०[हिं० ठाँवँ] १ अवस्था। दशा। २ स्थिति।

ठउर†—पु०=ठौर।

ठक—स्त्री०[अनु०] आघात करने या ठोकने से होनेवाला ठक शब्द। वि० सन्नाटे मे आया हुआ। भौचक्का। स्तब्ध।

पुं० चडूबाजो की सलाई या सूजा जिसमे अफीम का किवाम लगाकर सेंकते हैं।

ठक-ठक—स्त्री०[अनु०] १ बार-बार आघात करने से होनेवाला शब्द। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कहा-सुनी या तू-तू मैं-मैं।

ठकठकाना—स० [अनु० ठक-ठक] १ ठक-ठक शब्द उत्पन्न करना। २ अच्छी तरह या खूब पीटना।

अ० ठक-ठक शब्द होना।

ठकठकिया—वि०[अनु० ठक-ठक] १ ठक-ठक शब्द उत्पन्न करनेवाला। २ जो स्वभावत. दूसरो से लडता-झगडता रहता हो।

ठकठेन†—स्त्री०[अनु० ठक+हिं० ठानना] अड। जिद। हठ।

ठकठौआ—पु० [अनु०] १ एक प्रकार का करताल। २ वह जो उक्त करताल बजाकर भीख माँगता हो। ३. एक प्रकार की छोटी नाव।

ठकना—अ०[अनु०] सहारा लगाकर बैठना। टिकना। उदा०—ठकि गो पीय पलँगिया आलस पाई।—रहीम।

स०=टेकना।

ठकमूरी—स्त्री० [हिं० ठग+मूरि] १ वह स्थिति जिसमे आदमी बहुत अधिक चकित या भौचक्का होकर स्तब्ध रह जाय। जैसे—उसे देखकर हमे तो ठकमुरी लग गई।

क्रि० प्र०—लगना।

२ दे० 'ठगमूरि'।

ठकार—पु०[स० ठ+कार] 'ठ' अक्षर।

ठकुआ—पु०=ठोकवा (पकवान)।

ठकुरई†—स्त्री०=ठकुराई।

ठकुरसुहाती—स्त्री० [हिं० ठाकुर=स्वामी+सुहाना] स्वामी अथवा किसी बडे व्यक्ति को प्रसन्न करने या रखने के लिए कही जानेवाली खुशामद भरी बात।

ठकुराइत—स्त्री०=ठकुरायत।

ठकुराइन—स्त्री०=ठकुरानी।

ठकुराइस†—स्त्री०=ठकुरायत।

ठकुराई—स्त्री०[हिं० ठाकुर] १ ठाकुर होने की अवस्था या भाव। २ ठाकुरो का-सा आधिपत्य, प्रभुत्व या स्वामित्व। ३ वह प्रदेश या भू-भाग जो किसी ठाकुर के अधिकार मे या अधीन हो। ४ ठाकुरो की-सी प्रतिष्ठा या महत्त्व। उदा०—हरि के जन की अति ठकुराई।—सूर। ५ बडप्पन। महत्त्व।

†पु० ठाकुर। राजपूत क्षत्रिय।

ठकुराना—पु०[हिं० ठाकुर] गाँव या बस्ती का विभाग जिसमे अधिकतर ठाकुर या क्षत्रिय रहते हों।

ठकुरानी—स्त्री०[हिं० ठाकुर] १ ठाकुर या राजपूत जाति की स्त्री। २ ठाकुर अर्थात् राजा या सरदार की पत्नी। ३ मालकिन। स्वामिनी।

ठकुराय—पु०[हिं० ठाकुर] ठाकुरों या राजपूत क्षत्रियो की एक जाति या वर्ग।

ठकुरायत—स्त्री०[हिं० ठाकुर] १. ठाकुर (अधिपति, प्रभु, आदि) होने की अवस्था, पद या भाव। २. किसी ठाकुर (अधिपति आदि) का अधीनस्थ प्रदेश या भू-भाग।

ठकोरी—स्त्री० [हिं० ठेकना+औरी (प्रत्य०)] वह लकडी या छडी जिसके सहारे अथवा जिसे टेकता हुआ कोई चलता हो।

ठक्क—पु०[स०] व्यापारी।

ठक्कर—स्त्री०=टक्कर।

ठक्कुर—पु०[स०] ठाकुर। देवता। पूज्य प्रतिमा।

ठग—पु०[स० स्थग] [स्त्री० ठगनी, ठगिन, भाव० ठगी] १. वह जो धोखा देकर दूसरो का धन ले लेता हो। जैसे—आज-कल तरह-तरह के ठग चारो ओर घूमते रहते है। २ मध्य युग मे, वह व्यक्ति जो भोले-भाले लोगो पर अपना विश्वास जमा लेता था और धोखे से उन्हे कोई जहरीली या नशीली जडी-बूटी या मिठाई खिलाकर और उनका माल-असबाब लेकर चम्पत होता था।

विशेष—आरभ मे प्राय इक्के-दुक्के लोग ही ठग होते थे। वे जो जहरीली या नशीली, जडी-बूटियाँ या मिठाइयाँ लोगो को खिलाते थे, उन्हे जन-साधारण ठग-मूरि या ठग-मोदक कहते थे। बाद मे मुख्यत अगरेजी शासन के आरभिक काल मे ये लोग बडे-बडे दल बनाकर घूमने लगे थे, और प्राय यात्रियो, व्यापारियो आदि के दलो के साथ स्वय भी यात्री या व्यापारी बनकर दो-चार दिन यात्रा करते थे। जब कही जगल या सुनसान मैदान मे उन्हे अवसर मिलता था, तब वे उन यात्रियो या व्यापारियो के गले कुछ विशिष्ट प्रक्रिया से घोटकर उन्हे मार डालते और उनकी लाशे वही गाडकर और माल लूटकर आगे बढ जाते थे। इनमे हिंदू और मुसलमान दोनो होते थे और ये काली की उपासना करते थे।

३ आज-कल अधिक प्राप्ति या लाभ के लिए अपनी चीज या सेवा के बदले मे उचित से अधिक दाम या धन वसूल करनेवाला व्यक्ति। जैसे—यह दूकानदार बहुत बडा ठग है।

ठगई†—स्त्री० [हिं० ठग+ई(प्रत्य०)] १ ठग का काम या भाव। ठगी। २ कपट। छल। धोखा।

ठगण—पु०[प० त०] छदशास्त्र मे, पाँच मात्राओ का एक गण।

ठगना—स० [हिं० ठग+ना (प्रत्य०)] १ किसी से उसकी कोई चीज छल या धोखे से लेना। २ क्रय-विक्रय मे अधिक लाभ करने के लिए किसी से लिए हुए धन के अनुपात मे उचित से कम या रद्दी चीज देना। जैसे—यह दुकानदार ग्राहको को बहुत ठगता है।

पद—ठगा-सा—ऐसा हक्का-बक्का कि मानो किसी ने उसे ठग लिया हो।

३ किसी को धोखे मे रखकर उसके उद्देश्य की सिद्धि या सकल्प की पूर्ति से वचित करना। जैसे—मुझे मेरे ही मित्रो ने ठगा। ४ किसी प्रकार का छल या धूर्त्तता का व्यवहार करना। ५ पूरी तरह से अनुरक्त या मोहित करके अपना वशवर्त्ती बनाना।

†अ० १.=ठगाना। २.=चकित होना।

ठगनी—स्त्री०[हिं० ठग] १ ठग की पत्नी। २ दूसरो को ठगने या धोखा देनेवाली स्त्री। छली या धूर्त्त स्त्री। ३ कुटनी। ४ धार्मिक क्षेत्रो मे माया (सासारिक) का एक नाम।

ठग-पना—पु०[हिं० ठग+पन] १ दूसरो को ठगने की क्रिया या भाव। ठगी। २. चालबाजी। धूर्त्तता।

ठग-मूरि—स्त्री०[हिं० ठग+मूरि] वह नशीली जडी जिसे खिलाकर ठग पथिको को बेहोश करते और उनका धन लूट लेते थे।

ठग-मूरी—स्त्री०=ठग-मूरि।

ठग-मोदक—पु०[हिं० ठग+सं० मोदक] वह मोदक या लड्डू जिसमे कुछ नशीली चीजे होती थी, और जिसे ठग लोग भोले-भाले यात्रियो को खिलाकर बेहोश कर देते और तब उनका माल लूट लेते थे।

ठग-लाड्डू—पु०=ठग-मोदक।

ठगवाना—स०[हिं० ठगना का प्रे०] किसी को ठगने मे किसी दूसरे को प्रवृत्त करना। ठगे जाने मे प्रवर्त्तक या सहायक होना।

ठग-विद्या—स्त्री०[हिं० ठग+विद्या] लोगों को ठगने की कला या विद्या।

ठगहाई†—स्त्री०[हिं० ठग] =ठगपना।

ठगहारी†—स्त्री० [हिं० ठग+हारी (प्रत्य०)] ठगपना। ठगई।

ठगाई†—स्त्री०[हिं० ठग+आई (प्रत्य०)] ठगी।

ठगाठगी—स्त्री०[हिं० ठग] धोखेबाजी। वचकता।

ठगाना†—अ० [हिं० ठगना] १ किसी ठग के द्वारा ठगा जाना। २ किसी धूर्त्त व्यापारी के फेर मे पडकर और उचित से अधिक मूल्य देकर धन गँवाना। ३. अपना धन अथवा और कोई चीज किसी अविश्वासी को दे या सौंप बैठना। ४ अनुरक्त होना।

ठगाही†—स्त्री०=ठगी।

ठगिन—स्त्री०=ठगनी।

ठगिनी—स्त्री०=ठगनी।

ठगिया—पु०=ठग।

ठगी—स्त्री०[हिं० ठग] १. किसी को ठगने की क्रिया या भाव। २. ठगो का काम या पेशा। ३ चालबाजी। धूर्त्तता। ४. मध्य युग की एक प्रथा जिसमे ठग लोग भोले-भाले यात्रियो को विष आदि के प्रभाव से मूर्छित करके अथवा उनकी हत्या करके उनका धन छीन लेते थे। ५ मोहित करनेवाला जादू या बात। उदा०—ठगी लगी तिहारिऐ सु आप लौं निहारिऐ।—आनन्दघन।

ठगोरी—स्त्री०[हिं० ठग-मूरि] १ ठगने की क्रिया, भाव या विद्या। २ ठगे जाने का भाव या परिणाम। उदा०—चोरन गए स्याम अँग सोभा उत सिर परी ठगोरी।—सूर। ३ ऐसी चीज या बात जिससे किसी को ठगा या धोखा दिया जाय। उदा०—जोग ठगोरी ब्रज न बिकै है।—सूर। ४ टोना। जादू। ५ मिथ्या भ्रम। माया। ६. सुध-बुध भुलानेवाली अवस्था, बात या शक्ति। उदा०—जानहु लाई काहु ठगोरी।—जायसी।

मुहा०—(किसी पर) ठगोरी डालना या लगाना=(क) मोहित करके अथवा और किसी प्रकार विश्वास जमाकर अपने वश मे कर लेना। बहकाकर धोखे मे रखना।

ठट—पु० १ =ठठ्ठ। २ =ठाठ।

ठटई—वि०, स्त्री०=ठठई।

ठटकारी†—स्त्री०=ठठकारी।

ठटकीला†—वि०=ठठकीला।
ठटना—अ०, स०=ठठना।
ठटनि†—स्त्री०=ठठनि।
ठटया—पु०[देश०] एक तरह का जंगली जानवर।
ठटरी—स्त्री०=ठठरी।
ठटा—पु०=ठट्ठ (झुंड)। उदा०—जबहिं आइ जुरिहै वह ठटा।—जायसी।
†पु०=ठठ्ठा
ठटिया†—स्त्री०=ठठिया(भाँग)।
ठटु—पु०१ =ठठ्ठ। २ =ठाठ।
ठट्टी—स्त्री०=ठठरी।
ठट्ठ—पु०=ठठ्ठ
ठट्ठा—पु०=ठठ्ठा।
ठठ—पु०१.=ठठ्ठ। २ =ठाठ।
ठठई—वि०[हिं० ठठ्ठा] हँसी-ठठ्ठा करनेवाला।
†स्त्री०=ठठ्ठा।
ठठकना†—अ०=ठिठकना।
ठठकान†—स्त्री०=ठिठकान।
ठठकारी†—स्त्री०[हिं० ठाठ+फा० कारी] वह टट्टी जिसकी आड मे शिकार किया जाता है।
ठठना—अ०[हिं० ठाठ] १ खडा या स्थित रहना या होना। २ किसी चीज का अदर घुसकर ठहर या रुक जाना। अडना। ३ निश्चित होना। ४ ठाठ से युक्त होना। सुसज्जित होना।
स० १ खडा या स्थित करना। ठहराना। २ निश्चित करना। ३ सुसज्जित करना। सजाना। ४ बनाना। रचना।
स०[हिं० ठठ] 'ठठ' अर्थात् दल या समूह बनाना।
ठठनि—स्त्री० [हिं० ठाठ] १ ठठने की क्रिया या भाव। २ ठाठ। सजावट। ३ बनावट। रचना।
ठठरी†—स्त्री०[हिं० ठाठ] १ मनुष्य या पशु के शरीर मे की हड्डियो का पूरा ढाँचा। कंकाल। २ किसी कृति या रचना का ढाँचा। ३ अरथी, जिस पर मुरदा ले जाया जाता है। ४ घास, भूसा आदि बाँधने का जाल।
ठठवा†—पु०[हिं० टाट] एक तरह का मोटा कपडा। इकतारा। लमगजा।
ठठा†—पु०=ठठ्ठा।
ठठाना—स०[अनु० ठक-ठक] १. आघात करना। २ खूब अच्छी तरह किसी को मारना-पीटना।
अ०[हिं० ठठ्ठा या अनु० ठह-ठह= हँसने का शब्द] इस प्रकार खूब जी खोलकर हँसना कि मुँह से ठह-ठह या इसी प्रकार का कोई और शब्द स्वत निकलने लगे।
अ०[हिं० ठाठ] कोई चीज या बात खूब ठाठ से, अच्छी तरह या बहुत अधिक होना। उदा०—चारो ओर छाई हुई ठठाती हुई अव्यवस्था के बीच से उसे हटाने के लिए उसे खीचने लगा।—अज्ञेय।
ठठिया—स्त्री०[देश०] राजस्थान के कुछ भागो मे होनेवाली एक प्रकार की भाँग।
ठठियार—पु०[देश०] चौपायो को चरानेवाला चरवाहा। (नैपाल-तराई)

ठठियाना—स०[हिं० ठठना] १ सुसज्जित करना।* २. किसी से सब-कुछ लेकर उसे कगाल या निर्धन करना।
ठठियारा†—वि०[हिं० ठठियाना] जिसके पास कुछ भी न रह गया हो। उदा०—तस सिंगार सब लीन्हेसि, मोहि कीन्हेसि ठठियारि।—जायसी।
ठठिरिन—स्त्री० [हिं० 'ठठेरा' का स्त्री० रूप] ठठेरिन।
ठठुकना†—अ०=ठिठकना।
ठठेर-मंजारिका—दे० 'ठठेरा' के अतर्गत पद 'ठठेरे की बिल्ली'।
ठठेरा—पु० [अनु० ठन-ठन] [स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी] १ वह कारीगर जो ताँबे, पीतल आदि के बरतन बनाता हो। †२ उक्त प्रकार के बरतन बेचनेवाला दूकानदार।
पद—**ठठेरे-ठठेरे बदलाई**=ऐसे दो आदमियों के बीच का व्यवहार जो चालाकी, धूर्त्तता, बल आदि मे एक दूसरे से कम न हो। **ठठेरे की बिल्ली**=ऐसा व्यक्ति जो कोई अरुचिकर या विकट काम देखते-देखते या सुनते-सुनते उसका अभ्यस्त हो गया हो।
३ एक प्रकार की चिडिया जिसके बोलने पर ऐसा जान पडता है कि कोई ठठेरा ताँबा या पीतल पीटकर उसके बरतन बना रहा है।
पु०[हिं० ठाँठ] ज्वार, बाजरे आदि का डठल।
ठठेरिन—स्त्री०[हिं० 'ठठेरा' का स्त्री० रूप] ठठेरे की स्त्री। ठठेरी।
ठठेरी—स्त्री०[हिं० ठठेरा] १ ठठेरे की स्त्री। २ ठठेरे का काम या व्यवसाय।
वि० ठेरो का। ठठेरो से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—ठठेरी बाजार।
ठठोल—वि०[हिं० ठठोली] ठठोली करनेवाला। हँसोड।
पु०=ठठोली।
ठठोली—स्त्री०[हिं० ठठ्ठा] किसी को हँसी का पात्र या हास्यास्पद बनाने के लिए उसके सबध मे कही जानेवाली कोई कुतूहलजनक तथा व्यंग्यपूर्ण परतु हँसी की बात।
ठठ्ठ—पु०[स० तट, हिं० टट्ठी या स० स्थाता] १ एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओ का समूह। २ बहुत से लोगो का जमावडा या भीड-भाड। उदा०—पिये भट्ट के ठठ्ठ अस गुजरातिन के वृन्द।—भारतेन्दु।
ठठ्ठा—पु०[हिं० ठठाना] १ वह परिहास या हँसी-दिल्लगी जो कुतूहल-जनक या विलक्षण बातो के आधार पर केवल मनोविनोद के लिए होती है। (बैन्टर) २ परिहास। हँसी-मजाक।
क्रि० प्र०—उडाना।—करना।
ठड़कना†—अ०=ठिठकना।
ठड़ा†—वि०=खड़ा।
ठड़िया—पु०[हिं० ठाड] एक प्रकार का खडी निगालीवाला हुक्के का नैचा।
ठड्ढा—पु०[हिं० ठडा] १ पीठ के बीच की खडी हड्डी। रीढ। २. गुड्डी या पतग मे खडे बल मे लगनेवाली कमाची। ३ ढड्ढा। ढाँचा।
ठढ़ा—अ०, स०=ठठना।
वि०[स० स्थातृ] खडा।
ठढ़िय—स्त्री०[हिं० ठाढ=खडा] काठ की ऊँची तथा बडी ऊखल।
ठढ़ियाना†—स०[हिं० ठढा=खडा] खडा करना।

अ० खडा होना।
ठढ़ई†—स्त्री०=ठढिया।
ठढ्ढा—वि०=ठढा (खडा)।
पु०=ठड्डा। (देखे)
ठन—स्त्री०[अनु०] किसी धातु खड अथवा धातु के किसी पात्र पर आघात लगने से होनेवाला शब्द।
ठनक—स्त्री० [अनु० ठन-ठन] १ वार-वार ठन-ठन होने का शब्द। जैसे—(क) धातुखड पर आघात करने से होनेवाली ठनक। (ख) ढोल, तवले, मृदग आदि के वजने से होनेवाली ठनक। २. रह-रहकर उठने या होनेवाली पीडा। टीस।
ठनकना—अ०[अनु० ठन-ठन]१. ठन-ठन शब्द होना। जैसे—गिरने से पीतल या लोटा ठनकना। २. ढोल, तवले, मृदग आदि ऐसे वाजे वजना जिनमे वीच-वीच मे ठन-ठन शब्द होता हो। जैसे—तवला ठनकना।
मुहा०—तवला ठनकना=नाच-गाना होना।
३. रह-रहकर आघात पडने की-सी पीडा होना। जैसे—माथा ठनकना।
मुहा०—माथा ठनकना=सहसा किसी वात या व्यक्ति के सबध मे मन मे कुछ आशका या सदेह उत्पन्न होना। जैसे—उसका रग-ढग देखकर पहले ही मेरा माथा ठनका था।
ठनका—पु०[हिं० ठनक]१. दे० 'ठनक'। २ गरजता हुआ वादल। उदा०—भादो रैन भयावनी अधो गरजै औ घहराय। लवका लौके ठनका ठनकै, छति दरद उठ जाय।—गीत।
ठनकाना—स०[हिं० 'ठनकना' का स०]१ इस प्रकार आघात करना जिससे कोई चीज ठन-ठन शब्द करने लगे। जैसे—परखने के लिए रुपया ठनकाना। २ ढोल, तवला आदि ऐसे वाजे वजाना, जिनमे से ठन-ठन शब्द निकलता है।
ठनकार—स्त्री०[अनु०]'ठन' की तरह का शब्द। ठनक।
ठनगन—स्त्री०[अनु० ठन-ठन] उपर्युक्त दाता से अपना अधिकार जतलाते हुए कुछ पाने या लेने के लिए वार-वार किया जानेवाला आग्रह या हठ। जैसे—मागलिक अवसरो पर नाई आदि नेगी अपने नेग के लिए यजमानो से ठनगन करते ही है।
ठन-ठन—स्त्री०[अनु०]१ ठन-ठन शब्द। ठनक। २ दे० 'ठन-गन'।
ठन-ठन गोपाल—वि० [अनु० ठन-ठन+गोपाल=कोई व्यक्ति] १. (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी धन न हो या न रह गया हो। २ (वस्तु) जिसमे कुछ भी सार न हो।
पु० रुपये-पैसे का अभाव।
ठनठनाना—स०[अनु०] ठन-ठन शब्द उत्पन्न करना।
अ० ठन-ठन शब्द उत्पन्न होना।
ठनना—अ०[हिं० ठानना]१. (किसी कार्य या व्यापार का) तत्परतापूर्वक या जोर-शोर से आरम्भ होना या किया जाना। जैसे—युद्ध ठनना। २ (विचार या सकल्प का मन मे) निर्धारित या पक्का होना। जसे—अव तो तुम्हारे मन मे उनसे लडने की ठन गई है। ३. (व्यक्ति आदि का) तत्परतापूर्वक किसी कार्य या व्यापार मे लगने को उद्यत होना। ४ किसी विशिष्ट रूप मे दृढतापूर्वक सामने आकर उपस्थित होना। उदा०—दुलरी कल कोकिला कठ वनी, मृग खजन अजन भाँति ठनी।—केशव।
ठनठनाना†—अ०=ठनमनाना।
ठनाका—पु०[अनु० ठन]१. जोर से तथा सहसा होनेवाली ठन-ठन ध्वनि। २. कुछ समय तक निरतर होती रहनेवाली ठन-ठन ध्वनि।
ठनाठन—क्रि० वि०[अनु० ठन-ठन]१ ठन-ठन शब्द करते हुए। जैसे—घटा ठनाठन वज रहा था। २. टनाटन।
ठप—वि०[अनु०]१ (कार्य या व्यापार) जो पूरी तरह से वन्द हो गया हो। जैसे—घोर वर्षा के कारण आज दिन भर सव काम ठप रहे। २. (पदार्थ) जो खुला न हो या खोला न गया हो, अथवा जिसका उपयोग न हो रहा हो। जैसे—(क) पुस्तक ठप होना। (ख) वाजे या यंत्र का ठप पडा रहना।
पु० १. खुली पुस्तक सहसा वन्द करने से होनेवाला शब्द। २ ठपने अर्थात् वन्द करने की अवस्था, क्रिया या भाव।
ठपका—पु०[हिं० ठप]१ ठप शब्द। २. खुली पुस्तक वद करने की क्रिया। ३ आघात। धक्का।
ठपना—स०[हिं० ठप]१. कोई चीज इस प्रकार वन्द करना कि ठप शब्द हो। २. कोई कार्य या व्यापार वन्द करना। ३. कोई चीज वन्द करके कही रखना।
ठप्पा—पु०[ठप से अनु०]१ धातु, लकडी आदि का वह टुकडा जिस पर चित्र, चिह्न आदि खुदे रहते है और जिससे कपडो आदि पर रग या स्याही की सहायता से छाप लगाई जाती है। जैसे—कपडे छापने या सिक्के वनाने का ठप्पा। २. उक्त उपकरण से लगी या लगाई हुई छाप। ३ एक प्रकार का चौडा नकाशीदार गोटा जो ठप्पे से दवाकर वनाया जाता है। ४ वह साँचा जिससे उक्त प्रकार के उभारदार वेल-वूटे वनाये जाते है।
ठमक—स्त्री०[हिं० ठमकना]१ ठमकने की अवस्था, क्रिया या भाव। †२. दे० 'ठुमक'।
ठमकना—अ०[स० स्तम्भ, हिं० थम+करना]१ चलते-चलते सहसा कुछ रुकना। ठिठकना। (प्राय आशका, भय आदि के कारण, अथवा हाव-भाव दिखलाने के लिए) २. दे० 'ठुमकना'।
अ०[अनु०] किसी चीज मे से ठम-ठम शब्द निकलना।
ठमकाना—स०[हिं० ठमकना]१ कोई ऐसी वात कहना जिससे किसी के मन मे शंका या सदेह उत्पन्न हो जाय और वह चलता-चलता या कोई काम करता करता रुक जाय। २ ठसक दिखलाते हुए अगो का सचालन करना। ३. ठम-ठम शब्द उत्पन्न करना।
ठमकारना†—स०=ठमकाना।
ठयऊ*—पु०=ठौर।
ठयना†—स० [स० स्थापन, प्रा० ठावन] १ स्थापित करना। ठहराना, वैठाना या स्थित करना। २. प्रयुक्त करना। लगाना। ३. दे० 'ठानना'।
अ० १ स्थापित या स्थित होना। २. प्रयुक्त होना। लगना। ३. दे० 'ठनना'।
ठरगजी—स्त्री०[?] वहनोई की वहन। वहन की ननद। (व्रज)
ठरना—अ०[हिं० ठार=वहुत ठढा]१. वहुत अधिक सरदी के कारण ठिठुरना। २ वहुत अधिक जाडा या सरदी पडना।
ठरमरुआ—वि०[हिं० ठार=पाला+मरुआ=मरा हुआ]१. जो अधिक

सरदी के कारण अकड़ या ठिठुर कर मर गया हो या मरे हुए के समान हो गया हो। २ (फसल) जिसे पाला मार गया हो।

ठराना—स० [हिं० ठरना] किसी को सरदी से ठरने मे प्रवृत्त करना।

†अ०=ठरना।

ठरुआ†—वि० [हिं० ठार]=ठरमरुआ।

ठर्रा—पु० [हिं० ठड़ा=खडा] १. बटा हुआ मोटा डोरा या सूत जिसमे प्राय. कुछ अकड या ऐंठ रहती है। २. महुए के फलो के रस से बनी हुई एक प्रकार की देशी शराब। ३. अधपकी बडी ईंट। ४ एक तरह का भद्दा जूता। ५ बेडौल तथा भद्दा मोती। ६ अगिया या चोली का बद। तनी।

ठर्रो—स्त्री० [देश०] १ बिना अकुर का धान का बीज जो छितराकर बोया जाता है। २ ऐसे धान की बोआई।

ठलाना*—स० [?] १. गिराना। २ निकलवाना।

ठवन—स्त्री० [सं० स्थापन] १. किसी ऐसी विशिष्ट अवस्था मे होने का भाव या ढग जिससे शरीर के अगो से कलापूर्ण सौदर्य प्रकट होने लगे। २. किसी विशिष्ट भाव की अभिव्यक्ति के लिए बनाई हुई मुद्रा। ३ खडे होने, बैठने आदि की कोई विशिष्ट मुद्रा। (पोज)

ठवना—स०=ठयना।

ठवनि†—स्त्री०=ठवन।

ठवनी†—स्त्री०=ठवन।

ठवर†—पु०=ठौर।

ठस—वि० [स० स्यास्नु] १ (पदार्थ) जो बहुत ही कडा या ठोस और फलत दृढ या मजबूत हो। जैसे—ठस मकान। २ (वस्त्र) जिसके ताने और बाने के सूत परस्पर इस प्रकार सटे हुए हो कि उनमे विरलता न दिखाई पड़े। ३. (बुनावट) जो उक्त प्रकार की हो। ४. जो इतना अधिक भारी हो कि अपने स्थान से हिलाये जाने पर भी जल्दी न हिले। ५ (सिक्का) जो खनकाने पर ठीक ध्वनि न दे। ६ (व्यक्ति) जो बहुत कजूस हो और जल्दी पैसा खरच करनेवाला न हो। ७ आलसी। सुस्त। ८. जिद्दी। हठी।

वि० गभीर। उदा०—परतु वातावरण बिलकुल ठस जान पडा।—वृदावनलाल वर्मा।

ठसक—स्त्री० [हिं० ठस] १ बडप्पन, योग्यता आदि दिखलाने के उद्देश्य से की जानेवाली साधारण से भिन्न कोई शारीरिक चेष्टा। २. नखरा। ३ अभिमान। गर्व।

ठसकदार—वि० [हिं० ठसक+फा० दार] १. (व्यक्ति) जिसमे ठसक हो। अपना बडप्पन या योग्यता प्रदर्शित करने के लिए कोई विशिष्ट शारीरिक चेष्टा करनेवाला। २ घमडी।

ठसका†—पु०=ठसक।

पु० [अनु०] १ एक तरह की सूखी खाँसी। २ धक्का।

ठसाठस—वि० [हिं० ठस] (अवकाश) जो इतना अधिक भर गया हो कि उसमे और अधिक समाई न हो सकती हो। जैसे—यात्रियो से रेल का डिब्बा ठसाठस था।

क्रि० वि० ऐसी अवस्था मे जिसमे और अधिक भरने, रखने आदि के लिए अवकाश न बच रहा हो।

ठस्सा—पु० [अनु०] १ एक प्रकार की छोटी रुखानी जिससे धातुओ पर नक्काशी की जाती है। २ दे० 'ठसक'।

†पु०=ठवन।

ठहक—स्त्री० [अनु०] नगाडे, मृदंग आदि का शब्द।

ठहना—अ० [अनु०] १. घोडे का हिनहिनाना। २ घटे आदि का शब्द होना।

अ० [स० सस्थापन] १ बनाना। सँवारना। २ रक्षा करना। बचाना। उदा०—द्रुपद-सुता की हरि जू लाज ठही।—सूर।

†अ०=ठहरना।

ठहर†—पु० [स० स्थल] १ जगह। स्थान। २ रसोईघर। चौका। ३ रसोईघर को गोबर आदि से लीपने-पोतने का काम।

क्रि० प्र०—देना।

४ अवसर। मौका।

ठहरना—अ० [हिं० ठहर] १ चलते-चलते किसी स्थान पर रुकना। गति से रहित होकर स्थित होना। जैसे—डाक-गाडी इस छोटे स्टेशन पर भी ठहरती है। २ किसी स्थान पर विश्राम करने अथवा थोडे समय के लिए रहने के लिए रुकना। टिकना। जैसे—अगली बार यहाँ आने पर हम लोग आप ही के यहाँ ठहरेगे। ३ किसी स्थान पर किसी की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करना या रुके रहना। जसे—अदालत का फैसला सुनने के लिए हम ठहरे हुए हैं। ४. कुछ समय तक किसी विशिष्ट अवस्था या स्थिति मे बने रहना। जैसे—(क) दूध या दही का ठहरना। (ख) इनका बुखार १००° पर ठहरा रहता है। ५ किसी विशिष्ट स्थिति मे खडा रहना, फलत किसी ओर न झुकना या नीचे न गिरना। जैसे—अधर मे योगी या आकाश मे पतग का ठहरना। ६ किसी विशिष्ट आधार पर स्थित होना। जैसे—यह छत चारो खभो पर ठहरी है। ७ किसी प्रकार की क्रिया, चेष्टा या व्यापार से रहित या हीन होना। जैसे—(क) हवा या वर्षा का ठहरना। (ख) खाँसी या बुखार ठहरना। ८ किसी अशात या उद्विग्न स्थिति का फिर से प्रसम या शात होना। जैसे—अब कुछ तबीयत ठहरी है। ९ घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का थिराना। १० निश्चित या पक्का होना। जैसे—(क) दर, भाव या मूल्य ठहरना। (ख) सौदा ठहरना। ११ गर्भ रहना। १२ किसी विशिष्ट स्थिति मे होना। (केवल जोर देने के लिए) जैसे—(क) तुम तो भाई ठहरे। (ख) आप तो रईस ठहरे।

ठहराई—स्त्री० [हिं० ठहराना] १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ अधिकार। कब्जा। (क्व०)

ठहराउ†—पुं०=ठहराव।

ठहराऊ—वि० [हिं० ठहरना] १. ठहरने या ठहरानेवाला। २. टिकाऊ।

ठहराना—स० [हिं० ठहरना का स०] १. ठहराने मे प्रवृत्त करना। २ किसी चलती हुई चीज को रोककर किसी स्थान पर खड़ा या स्थित करना। जैसे—गाडी या नाव ठहराना। ३ किसी को किसी आधार पर इस प्रकार खडा या स्थिति करना कि वह इधर-उधर होने या हिलने न पावे। जैसे—ऊँगली पर छडी ठहराना। ४ किसी प्रकार के आधार पर दृढतापूर्वक स्थापित करना। जैसे—खभो पर छत ठहराना। ५ किसी को अतिथि के रूप मे अपने यहाँ अथवा और कही ठहरने या

कुछ समय तक रखने अथवा रहने की व्यवस्था करना। जैसे—(क) मित्र को अपने यहाँ ठहराना। (ख) धर्मशाला मे वरात ठहराना। ६ किसी चलते या होते हुए काम को बद करना या रोकना। ७ कोई काम चीज या बात इस प्रकार निश्चित करना, कराना कि सहसा उसमे कोई परिवर्तन न हो सके। जैसे—(क) लडकी या लडके का व्याह ठहराना। (ख) किराये की गाडी या मोटर ठहराना। ८ किसी चीज को नीचे गिरने से रोकने के लिए कोई आड या टेक लगाना।

ठहराव—पु०[हिं० ठहरना+आव (प्रत्य०)]१ ठहरने, ठहराने या ठहरे हुए होने की अवस्था या भाव। २ वह स्थिति जिसमे किसी प्रकार की अशाति, उपद्रव, चचलता आदि न हो। स्थिरता। ३. दो पक्षो मे क्रय-विक्रय, विवाद आदि निपटाने के सबध मे होनेवाला निश्चय। ४. दे०'ठहरौनी'।

ठहरु†—पु०=ठहर।

ठहरौनी—स्त्री०[हिं० ठहराना]१ दो पक्षो मे होनेवाला वह निश्चय जिसके अनुसार एक पक्ष दूसरे पक्ष को निश्चित धन आदि समय-समय पर देता है। २ विवाह के अवसर पर दहेज आदि के लेन-देन का करार या निश्चय। ३ =ठहराव।

ठहाका†—पु०[अनु०]१ ठठाकर या जोर से हँसने का शब्द। २ जोर की हँसी।

वि० चटपट। तुरत।

ठहिया—स्त्री०[हिं० ठाँव] ठाँव। जगह।

ठाँ—स्त्री० १ =ठाँव। २ =ठाँय।

ठाँई—स्त्री०[हिं० ठाँव] जगह। स्थान।

वि० निकट। पास।

†अव्य० १. किसी के प्रति। २. किसी से।

ठाँउँ†—पु०=ठाँव।

अव्य०=ठाँव।

ठाँठ—वि०[स० स्थाणु (ठूँठा पेड़) वा ठन-ठन से अनु०]१ जिसका रस सूख गया हो। नीरस। शुष्क। २ (गौ या भैंस) जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो। जिसके स्तनो मे दूध न रह गया हो।

ठाँठर*—पुं० दे० 'ठठरी'।

पु०[स० स्थान, प्रा० ठान] जगह। स्थान।

ठाँय—स्त्री०[अनु०] वदूक के चलने या ऐसी ही और कोई क्रिया होने का शब्द।

अव्य० निकट। पास। समीप।

ठाँय-ठाँय—स्त्री०[अनु०]१. लगातार वदूक से गोलियाँ छोडते चलने से होनेवाला शब्द। २. ऐसा झगडा या टटा जिसमे व्यर्थ की बहुत-सी बक-बक हो।

ठाँव—पु०[स० स्थान, प्रा० ठान]१. स्थान। जगह। २. ठिकाना।

ठाँसना—अ०[हिं० खाँसना का अनु०] ठन-ठन शब्द करते हुए खाँसना।

स०=ठूसना।

ठाँह (ि)—स्त्री०=ठाँव।

ठाई—स्त्री०=ठाँव।

ठाउ—पुं०=ठाँव।

ठाक—स्त्री०[हिं० ठाकना] ठाकने अर्थात् रोकने या मना करने की क्रिया या भाव।

पु० हिं० 'ठीक' का निरर्थक अनुकरण। जैसे—ठीक-ठाक करना।

ठाकना†—पु०[सं० स्था] कोई ऐसा काम करने से रोकना जिसका परिणाम या प्रभाव प्रायः बुरा होता हो। मना करना। जैसे—बच्चे को गाली देने से ठाकना।

ठाकुर—पु०[स० ठक्कुर] [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी]१ देवमूर्ति, विशेषकर विष्णु या उनके अवतारो की प्रतिमा। देवता। २. ईश्वर। भगवान। ३ मालिक। स्वामी। ४. किसी भूखड का स्वामी। ५. नायक। सरदार। ६. गाँव का जमीदार या मुखिया। ७ पूज्य व्यक्ति। ८. क्षत्रियो की एक उपाधि। ९. नाइयो के लिए एक सबोधन।

ठाकुरद्वारा—पु०[हिं० ठाकुर+सं० द्वार]१ देवालय। मदिर। जैसे—माई का ठाकुरद्वारा। २ सिक्खो का गुरुद्वारा।

ठाकुरप्रसाद—पु०[हिं०]१ देवता को भोग लगाई हुई वस्तु। नैवेद्य। २. भादो मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

ठाकुरबाड़ी†—स्त्री०=ठाकुरद्वारा।

ठाकुर-सेवा—स्त्री०[हिं० ठाकुर+स० सेवा]१ देवता का पूजन और सेवा। २ देवता के भोग-राग के लिए मदिर के नाम अर्पित की हुई सपत्ति।

ठाकुरी—स्त्री०[हिं० ठाकुर+ई (प्रत्य०)]१. ठाकुर होने की अवस्था, पद या भाव। २. वह प्रदेश जो किसी ठाकुर के अधिकार मे हो। ३ शासन। ४. प्रधानता। ५. महत्त्व।

ठाट—पु०=ठाठ।

ठाटना—स०=ठाठना।

ठाट बंदी—स्त्री०=ठाठ-बदी।

ठाट-बाट—पु०=ठाठ-बाट।

ठाटर—पु०=ठाठर।

ठाटी†—स्त्री०=ठठ्ठ(समूह)।

ठाठ—पु०[स० स्थातृ= खडा होनेवाला]१. बाँसो, लकडियो आदि का बना हुआ वह ढाँचा जिसके आधार पर कोई रचना तैयार या पूरी की जाती है। जैसे—छप्पर या नाव का ठाठ।

क्रि० प्र०—खडा करना।—बनाना।

पद—ठाठ बंदी=नवठट। (देखे)

२. किसी प्रकार की लबी-चौडी बनावट या रचना। जैसे—कालीन या दरी बुनने का ठाठ, अर्थात् करघा और उसके साथ की दूसरी आवश्यक सामग्री। ३. ऐसी बनावट या रचना जो तड़क-भडक, वैभव, शोभा, सजावट आदि दिखाने के उद्देश्य से तैयार की या बनाई जाय। आडबर। ४. तड़क-भड़कवाला। वेश-विन्यास।

मुहा०—ठाठ पर रह जाना=उद्देश्य सिद्ध करने मे विफल होकर ज्यो का त्यो रह जाना। **ठाठ बदलना**=(क) नया रूप धारण करने के लिए वेश बदलना। (ख) बल, महत्ता, श्रेष्ठता आदि दिखाने या स्थापित करने के लिए नया रूप धारण करना। जैसे—पहले तो वह सीधी तरह से बातें करता था, पर आज तो उसने अपना ठाठ ही बदल दिया। **ठाठ माँजना**=ठाठ बदलना।

५ तडक-भडकवाला ढग, प्रकार या शैली।
मुहा०—ठाठ से बिताना या रहना=बहुत अच्छी तरह, चैन या सुख से रहना या समय बिताना।
६ कोई काम करने का आयोजन, तैयारी, युक्ति या व्यवस्था। जैसे—(क) अब यहाँ कहीं ठहरने या रहने का ठाठ करना चाहिए। (ख) यह सब अपना मतलब निकालने का ठाठ है। उदा०—यह ठाठ तुझी ने बाँधा है, यह रंग तुझी ने रच्चा है। —नजीर।
क्रि० प्र०—बाँधना।
७. कुश्ती या पटेबाजी मे खडे होने या वार करने का ढंग। पैतरा।
मुहा०—ठाठ बदलना=पुराना पैतरा छोडकर नये पैतरे से खडे होना या वार करना। **ठाठ बाँधना**=प्रतिपक्षी पर वार करने के लिए पैतरे से खडे होना।
८ सगीत मे ऐसे क्रमिक सात स्वरो का वर्ग जो किसी विशेष प्रचलित तथा प्रसिद्ध अथवा शास्त्रीय महत्त्व के राग मे लगता हो। जैसे—भैरवी का ठाठ। ९ कबूतरो, मुरगो आदि का प्रसन्न होकर पर फड-फड़ाने की अवस्था या ढग।
मुहा०—ठाठ मारना=उक्त पक्षियो का प्रसन्न होकर पर फडफडाना।
पु०[हिं० ठठ्ठ]१ झुड, दल या समूह। ठठ्ठ। जैसे—घोडो या हाथियो का ठाठ। २. अधिकता। बहुतायत। ३. बैल या साँड की गरदन पर का डिल्ला।

ठाठना—स०[हिं० ठाठ]१ ठाठ खडा करना या बनाना। २ सजाना। ३. किसी कार्य के अनुष्ठान या आरम्भ का उपक्रम करना।
अ० १ ठाठ का खड़ा होना या बनना। २ सजना। ३ कार्य आदि का अनुष्ठान या आरभ होना।

ठाठ-बंदी—स्त्री० [हिं० ठाठ+फा० बदी] १. किसी प्रकार का ठाठ अर्थात् ढाँचा खडा करने या बाँधने की क्रिया अथवा भाव। जैसे—छाजन या नाव की ठाठ-बदी। २. आयोजन। तैयारी।

ठाठ-बाट—स्त्री० [हिं० ठाठ+अनु० बाट]१. आडबर, तड़क-भडक तथा विलासपूर्ण आयोजन या प्रदर्शन। जैसे—वे ठाठ-बाट से रहते या ठाठ-बाट से बाजार निकलते है। २ सज-धज। सजावट।

ठाठर—पु०=ठाठ।

ठाढ़—वि०=ठाढा। उदा०—ठाढ करत हैं कारन तवही।—तुलसी।

ठाढ़ा—वि०[स० स्थातृ=जो खडा हो] [स्त्री० ठाढी]१ जो सीधा खड़ा हो। दडायमान। २ जो अपने पूर्व या मूलरूप मे वर्तमान या स्थित हो। उदा०—गाढ़ै ठाढ़ै कुचनु ठिलि पिय हिय को ठहराइ।—बिहारी।
मुहा०—ठाढा देना=किसी चीज को यत्नपूर्वक सँभालकर ज्यो का त्यो रखना।
३. (अनाज का दाना) जो कूटा या पीसा न गया हो, बल्कि ज्यो का त्यो अपने मूल रुप मे हो। जैसे— ठाढा गेहूँ या चना। ४. हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा। ५ जो खडे बल मे हो या सीधा ऊपर की ओर गया हो। ६ जो सामने आकर उपस्थित या प्रस्तुत हुआ हो। वर्तमान।

ठाढ़ेश्वरी—पु०[हिं० ठाढा+स० ईश्वर+ई (प्रत्य०)] साधुओ का एक वर्ग जो रात-दिन खड़ा रहता है।
विशेष—ये साधु या तो चलते-फिरते रहते हैं या खड़े रहते हैं, बैठते या लेटते बिलकुल नहीं।

ठादर—पु०[देश०] झगड़ा।

ठान—स्त्री०[हिं० ठानना]१ ठानने की क्रिया या भाव। २ किसी काम को करने के संबध मे किया हुआ दृढ निश्चय या हठ। ३ निश्चय या हठ-पूर्वक ठाना या आरभ किया हुआ कार्य।

ठानना—स०[सं० अनुष्ठान]१. कोई काम तत्परता और दृढतापूर्वक आरम करना। जैसे—युद्ध ठानना। २ कोई काम करने के लिए दृढ निश्चय या सकल्प करना। ३ पक्का करना। ठहराना।

ठाना—स०=ठानना।
स०[?] नष्ट करना। उदा०—लाज की ओर कहा कहि केशव जो सुनिये गुण ते सब ठाए।—केशव।
†पु०=थाना।

ठाम†—पुं०[स० धामन् या स्थान]१. जगह। स्थान। २ ठवन। मुद्रा। ३ शरीर की गठन। अँगलेट।

ठायँ—स्त्री०[अनु०]बदूक आदि के चलने से होनेवाला शब्द। ठाँय स्त्री०=ठाँव।

ठार—वि०[स० स्थावर] बहुत अधिक ठढा।
पु०१ कडा जाडा। गहरी सरदी। २ पाला। हिम।

ठाल—वि०=ठाला।
पु०=ठाला।

ठाला—पु०[हिं० निठल्ला] [स्त्री० ठाली] १ (व्यक्ति) जो कुछ भी काम-धधा न करता हो। निठल्ला।
मुहा०—ठाला बताना या ठाली देना=(वास्तविक काम न करके) व्यर्थ इधर-उधर की बातें करना या बताना।
पु०१ व्यापार की ऐसी स्थिति जिसमे विशेष बिक्री-बट्टा न होता हो। जैसे—आज तो बाजार मे ठाला है। २ किसी बात या वस्तु का होने-वाला प्रत्यक्ष और विशेष अभाव। जैसे—रुपए-पैसे या बुद्धि का ठाला।

ठालिनी—स्त्री०[स०] करधनी।

ठावँ—पु०=ठाँव।

ठावण—पु०[स० स्थान]१ स्थान। जगह। २ ठिकाना।

ठावना—स०=ठानना।

ठासा—पु०[हिं० ठाँसना] लोहारो का एक उपकरण जिससे वे तंग जगह मे लोटे की कोर निकालते और उभारते हैं।
†पु०=ठाह (सगीत का)।

ठाह†—स्त्री०[हिं० स्थान]१. जगह। स्थान। २ ठिकाना। ३. थाह। पता। उदा०—बैठी रही अभिमान सौं ठाह ठौर नहि पायौ।—सूर।
स्त्री०[हिं० ठाहना]१ दृढ निश्चय। सकल्प। २ हठ।
स्त्री०[हिं० ठहरना या ठहराव] सगीत मे, राग-रागिनी गाने या वाद्य बजाने का वह ढंग या प्रकार जिसमे गाने-बजाने मे अपेक्षया अधिक समय लगाया जाता है। बिलबित। 'द्रुत' का विपर्याय।

ठाहना—स०=ठानना।

ठाहर—पु०=ठहर (ठौर)।

ठाहरना†—अ०=ठहरना।

ठाहरु—पु०=ठाहर (ठौर)।

ठहरूपक—पु०[स० स्यान+रूपक]सात मात्राओ का मृदग का एक ताल जो आडा-चौताल से मिलता-जुलता होता है।

ठाहीं—स्त्री०=ठाँव (जगह)।

ठिंगना—वि०[?] [स्त्री० ठिंगनी] (व्यक्ति)जो ऊँचाई मे सामान्य स्तर से अधिक कम हो। छोटे कदवाला।

ठिक—स्त्री०[हिं० टिकिया] धातु की चद्दर का कटा हुआ छोटा टुकडा जो जोड आदि लगाने के काम आता है। थिगली। चकती।

वि०=ठीक।

स्त्री०=स्थिरता।

ठिक-ठान*—पु०=ठौर-ठिकाना।

ठिकठैन*—वि०[हिं० ठीक+ठयना]१ ठीक। २ सुन्दर।

स्त्री०१. ठीक या उत्तम व्यवस्था। २. आयोजन।

ठिकड़ा†—पु०[स्त्री० ठिकडी]=ठीकरा।

ठिकना†—अ० १=टिकना। २ किसी स्थान पर जमकर बैठना। (दलाल) ३ ठिठकना।

ठिकरा†—पु०[स्त्री० ठिकरी]=ठीकरा।

ठिकरौर—वि०[हिं० ठीकरा] ठीकरो से युक्त।

पु० ऐसा स्थान जहाँ बहुत से ठीकरे पडे हुए हों।

ठिकाई—स्त्री०[हिं० ठीक]१ ठीक होने की अवस्था या भाव। २ पाल के यथास्थान जमकर ठीक बैठने की अवस्था या भाव। (लश०)

ठिकान—स्त्री०[हिं० ठिकना] ठिकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

†पु०=ठिकाना।

ठिकाना—पु०[हिं० टिकान या टियान]१ टिकने अर्थात् ठहरने का उपयुक्त स्थान। २ वह जगह जहाँ कुछ या कोई टिक, ठहर या रह सके। जैसे—पहले तो इनके लिए कोई ठिकाना ढूँढना चाहिए। ३. अवलब, आश्रय, सहारे आदि का उपयुक्त या काम-चलाऊ द्वार, साधन या स्थान। जैसे—कोई नौकरी मिले तो यहाँ रहने का ठिकाना हो जाय।

क्रि० प्र०—निकलना।—मिलना।—लगना।

४ टिकने, ठहरने या रहने की नियत, निश्चित या स्थिर स्थान। जैसे—पहले इनका पता-ठिकाना तो पूछ लो। ५ किसी चीज या बात का वह उचित या उपयुक्त स्थान जहाँ उसे रहना या होना चाहिए।

क्रि० प्र०—मिलना।—लगना।

मुहा०—**(किसी चीज, बात या व्यक्ति का) ठिकाने आना**=जहाँ रहना या होना चाहिए, वहाँ आना या पहुँचना। जैसे—(क) जब ठोकर खाओगे, तब अक्ल ठिकाने आवेगी अर्थात् जैसी होनी चाहिए, वैसी हो जायगी। (ख) इतना समझाने पर अब आप ठिकाने आये हैं; अर्थात् मूल तत्त्व या वास्तविक तथ्य की बात अथवा विचार तक पहुँचे हैं। **(कोई काम या बात) ठिकाने पहुँचाना या लगाना**=उचित रूप से पूरा या समाप्त करना। जैसे—जो काम हाथ मे लिया है, उसे पहले ठिकाने पहुँचाओ (या लगाओ)। **(कोई काम या उसके लिए किया जानेवाला परिश्रम) ठिकाने लगना**=सफल या सार्थक होना। जैसे—आपका काम हो जाय तो सारी मेहनत ठिकाने लगे। **(कोई चीज) ठिकाने लगाना**=(क) उपयोग या व्यवहार करके सफल या सार्थक करना। जैसे—जितना भोजन बनाकर रखा है, वह सब ठिकाने लगाओ। (ख) दुरुपयोग करके नष्ट या समाप्त करना। (व्यग्य) जैसे—कुछ ही दिनो मे उसने बाप-दादा की सारी कमाई ठिकाने लगा दी। **(किसी व्यक्ति को) ठिकाने पहुँचाना या लगाना**=किसी प्रकार मार डालना या समाप्त कर देना। जैसे—महीनो से जो लोग उसके पीछे पडे थे, उन्होंने उसे ठिकाने लगाया अर्थात् मार डाला।

पद—**ठिकाने की बात**=ऐसी बात जो हर तरह से उचित या न्यायसगत हो।

६ राजा की ओर से सरदार को मिली हुई जागीर। (राजस्थान) ७ किसी कथन या बात की प्रामाणिकता या विश्वसनीयता। जैसे—इनकी बातो का कोई ठिकाना नही। ८. अस्तित्व, आधार आदि की दृढता या पुष्टता। जैसे—इनके जीवन का अब कोई ठिकाना नही। ९. चरम सीमा या आखिरी हद। अत। पार। जैसे—उसकी नीचता का कोई ठिकाना नही।

स०१. टिकने, ठहरने या स्थिर होने मे प्रवृत्त करना अथवा सहायक होना। २. गुप्त रूप से या छिपाकर दबा रखना या ले लेना। हथियाना। (दलाल) जैसे—एक रुपया उसने धीरे से उठाकर कमर (या जेब) मे ठिका लिया। ३. किसी स्त्री को गुप्त रूप से उपपत्नी बनाकर रख लेना। (बाजारू) जैसे—उसने दो औरतें ठिकाई हुई हैं।

ठिकानेदार—पु०[हिं० ठिकाना+फा० दार] किसी ठिकाने या जागीर का स्वामी। (राजस्थान)

ठिकियाना—स०[हिं० ठीक+इयाना (प्रत्य०)] ठीक करना।

ठिठक—स्त्री०[हिं० ठिठकना] १ ठिठकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. सकोच।

ठिठकना—अ०[स० स्थित+करण]१ आशंका, भय आदि की कोई बात देखकर चलते-चलते एकबारगी ठहर या रुक जाना। सकोच-वश या सहमकर आगे बढने या कोई काम करने से रुकना। जैसे—शेर की गन्ध आते ही घोडा ठिठक गया। २ चकित या स्तम्भित होकर रुकना। ठक रह जाना।

ठिठकान—स्त्री०=ठिठक।

ठिठरना—अ०=ठिठुरना।

ठिठुरना—अ०[स० स्थित या ठार से अनु०] शरीर अथवा उसके किसी अग का बहुत अधिक सरदी लगने के कारण काँपना या स्तब्ध होना। जैसे—सरदी से पैर या हाथ ठिठुरना।

ठिठोली—स्त्री०=ठठोली।

ठिनकना—अ०[अनु०]१. बच्चो का रह-रहकर रोने का-सा शब्द निकालना। ठुनकना। २. नखरा दिखाते हुए मचलना। ३ ठनकना। जैसे—तबला ठिनकना।

ठिया†—पुं०=ठीहा।

ठिर—स्त्री०[स० स्थिर वा स्तब्ध]१. ठिठरने (ठिठुरने) की अवस्था, क्रिया या भाव। २. शीत। सरदी। पाला।

ठिरना—अ०१.=ठिठुरना। २ ठरना।

ठिलना—अ०[हिं० ठेलना का अ० रूप]१ किसी चीज का ठेला जाना। ढकेले जाने पर किसी दिशा मे आगे की ओर बढना। जैसे—मोटर या गाड़ी का ठिलना। २ दबाव पड़ने या आघात होने पर किसी चीज का किसी दूसरी चीज मे घँसना।

ठिलाठिल—स्त्री०=ठेलमठेल।

ठिलिया—स्त्री० [हिं० 'ठिल्ल' का स्त्री० अल्पा०] पानी रखने की मिट्टी की गगरी।

ठिलुआ—वि० [हिं० ठिलना] जो ठिलता हो अथवा ठेला जाता हो।
वि०†=निठल्ला।

ठिल्ला—पु० [स० स्थाली, प्रा० ठाली=हाँडी] मिट्टी की बड़ी ठिलिया या गगरी।

ठिल्ली—स्त्री०=ठिलिया।

ठिल्ही—स्त्री०=ठिलिया।

ठिहार—वि० [स० स्थिर] १ विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय। २ ठीक। ३. निश्चित।

ठिहारी—स्त्री० [हिं० ठिहार] १ ठहराव। स्थिति। २ निश्चय। ३ विश्वास।

ठीक—वि० [हिं० ठिकाना] १. जो अपने ठिकाने अर्थात् उचित या उपयुक्त स्थान पर हो। जो मुनासिव जगह पर हो। जैसे—यह तस्वीर यही ठीक रहेगी। २. जो अपने स्थान पर अच्छी या पूरी तरह से आता, वैठता या लगता हो। जैसे—यह कुरता तुम्हे ठीक होगा। ३ जो क्रम, परम्परा, व्यवस्था आदि के विचार से वैसा ही हो जैसा होना चाहिए। जैसे—अलमारी मे सव चीजें फिर से ठीक करके रखो। ४. जो नियम, नीति, प्रकृति, न्याय आदि की दृष्टि से उचित, उपयुक्त या सगत हो। जैसा होता हो या होना चाहिए, विलकुल वैसा। जैसे—ठीक रास्ता, ठीक व्यवहार। ५ जो तर्क, वास्तविकता आदि के विचार से यथातथ्य या यथार्थ हो। जो मिथ्या न हो। जैसे—आखिर आप की ही वात ठीक निकली। ६ जो वहुत-कुछ या हर तरह से अनुकूल अथवा सुभीते का हो। जैसे—ठहरने के लिए यही जगह ठीक होगी। ७ जिसमे किसी प्रकार की अशुद्धि, चूक या भूल न हो। जैसे—(क) इन प्रश्नो के हमे ठीक उत्तर मिलने चाहिएँ। (ख) यह हिसाव गलत है, इसे ठीक करो। ८ जिसमे कोई कोर-कसर, खरावी, दोष या विकार न हो। जैसे—(क) आज तरकारी ठीक वनी है। (ख) मशीन ठीक है। ९ जो अच्छी, प्रसम या स्वस्थ दशा मे हो। जैसे—आज-कल उनकी तवीयत विलकुल ठीक है। १० जो हर तरह से वैसा ही हो, जैसा होता है या होना चाहिए। जैसे—यह घी (या तेल) ठीक नही है। ११. जो कुछ भी आगे-पीछे, इधर-उधर अथवा घट-वढकर न हो। जैसे—(क) गाडी ठीक चार वजे जाती है। (ख) यह कपडा ठीक वैसा ही है, जैसा तुम चाहते थे। १२ नियत, निश्चित या स्थिर किया हुआ। ठहराया या पक्का किया हुआ। जैसे—(क) वे लडकी का व्याह ठीक करने गये है। १३ (व्यक्ति) जो हर तरह से नीतिमान, न्यायज्ञ, प्रामाणिक, विश्वसनीय या सद्‌गुणी हो। जैसे—हमे यह आदमी ठीक नही मालूम होता। १४. (व्यक्ति) जिसका आचरण या व्यवहार वैसा ही हो, जैसा होना चाहिए। जो कोई अनुचित, निंदनीय या प्रतिकूल काम न करता हो। जैसे—इधर अनेक प्रकार के कष्ट भोगकर वह विलकुल ठीक हो गया है।

पु० 'ठीक' अर्थात् निश्चित या स्थिर होने की अवस्था या भाव। जैसे—उनके आने का कोई ठीक नही है।

क्रि० वि० १ उचित प्रकार या रीति से। जैसे—घडी ठीक चल रही है। २ अवधि, सीमा आदि के विचार से नियत समय पर। जैसे—ठीक साल भर वाद वह वापस आया। ३ ठहरे हुए या नियत होने की अवस्था या भाव। ठहराव। जैसे—पहले रहने का तो ठीक हो जाय, तव और वाते होती रहेगी। ४. अको, सख्याओ आदि का जोड। योग। मीजान। जैसे—इन रकमो का ठीक लगाओ।

क्रि० प्र०—देना।—निकालना।—लगाना।

ठीक ठाक—वि० [हिं०ठीक+अनु०ठाक] जो विलकुल ठीक अवस्था मे हो। पु० १ ठीक होने की अवस्था या भाव। जैसे—गाँव पर सव ठीक-ठाक है। २ निश्चय।

ठीकड़ा—पु०=ठीकरा।

ठीकरा—पु० [हिं० टुकडा] [स्त्री० अल्पा० ठीकरी] १ मिट्टी के टूटे-फूटे वरतन का कोई वडा टुकडा।

मुहा०—(किसी के सिर) ठीकरा फूटना=व्यर्थ किसी वात के लिए कलक लगना। **ठीकरा समझना**=तुच्छ, निरर्थक या व्यर्थ समझना।

२ प्राचीन काल के मिट्टी के वरतन का वह टुकडा जो कही से खुदाई मे निकलता है और जो इतिहास तथा पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्व का होता है। (पॉट-शर्ड) ३ भीख माँगने का मिट्टी का वरतन। भिक्षा-पात्र। ४ तुच्छ वस्तु। ५ रुपया। (साधु)

ठीकरी—स्त्री० [हिं० ठीकरा का अल्पा० स्त्री०] १ छोटा ठीकरा। २. तुच्छ या निकम्मी वस्तु। ३ चिलम के ऊपर रखा जानेवाला मिट्टी का तवा। ४. स्त्रियो की योनि का उभरा हुआ तल। उपस्थ।

ठीका—पु० [हिं० ठीक] १ आपस मे ठीक करके तै की हुई ऐसी वात जिसमे कोई काम करने-कराने और उसका पारिश्रमिक (वेतन से भिन्न) लेने-देने का निश्चय हुआ हो। जैसे—पुल या मकान वनाने का ठीका। (कॉन्ट्रैक्ट) २ कुछ काल के लिए कोई सम्पत्ति या किसी व्यापार का अधिकार इस शर्त पर किसी को देना या किसी से लेना कि उसकी आय, देख-रेख आदि की व्यवस्था ठीक तरह से होती रहेगी। जैसे—अफीम, गाँजे या शराव का ठीका। ३ अफीम, गाँजे, भाँग, शराव आदि की दूकान जो प्राय ठीके पर ली जाती है। ४. उत्तरदायित्व। जिम्मेदारी। जैसे—हमने तुम्हे नौकरी दिलाने का ठीका नही लिया है।

ठीका-पत्र—पु० [हिं० ठीका+स० पत्र] वह पत्र या लेख्य जिसमे किसी के ठीके के सवध की ऐसी वाते या शर्त्तें लिखी हो जिनका पालन दोनो पक्षो के लिए आवश्यक हो। सविदा-पत्र। (कॉन्ट्रैक्ट डीड)

ठीका-भेंट—स्त्री० [हिं०ठीका +स० भेंट] वह धन जो ठीका लेनेवाला उस व्यक्ति को भेंट-स्वरूप देता है जिससे वह कोई ठीका लेता है।

ठीकुरी—स्त्री०=ठीकरी।

ठीकेदार—पु० [हिं० ठीका+फा०दार] वह व्यक्ति जो ठीके पर दूसरो के काम करता या करवाता हो। ठीका लेनेवाला व्यक्ति। (कन्ट्रैक्टर)

ठीठा—पु०=ठेंठा।

ठीठी—स्त्री० [अनु०] अशिष्टतापूर्वक और तुच्छ भाव से ठी-ठी शब्द करते हुए हँसने का शब्द। जैसे—हरदम हाहा ठीठी करनी ठीक नहीं।

ठीलना—स०=ठेलना।

ठीवन*—पु० [स० ष्ठीवन] १ थूक। २ खखार। ३ कफ।

ठीहँ—स्त्री० [अनु०] घोडे के हिनहिनाने का शव्द।

ठीहा—पु० [ठाह से अनु] १ लकडी का वह गोलाकार या चौकोर छोटा टुकडा जो जमीन मे गडा या धँसा रहता है तथा जिस पर रखकर चरी

आदि काटी जाती है। २. बढइयो, लोहारो आदि का वह कुंदा जिस पर वे लकडी या लोहा रखकर छीलते या पीटते है। ३ किसी चीज को लुढकने या हिलने-डोलने से बचाने के लिए उसके इधर-उधर या नीचे रखा जानेवाला ईंट, पत्थर, लकडी आदि का टुकडा। जैसे—गाडी के पहिये के नीचे रखा जानेवाला ठीहा। ४ लकडी का वह ढाँचा जिसमे फँसाकर बढई लकडी चीरते है। ५. वह कुछ ऊँचा स्थान जिस पर बैठकर छोटे दूकानदार सौदा बेचते है। ६ गाँव, बगीचे आदि की सीमा या हद जो पहले पत्थर या लट्ठा गाडकर सूचित की जाती थी। ७ उक्त प्रकार का गाडा हुआ पत्थर या लट्ठा। ८. चाँड। थूनी।

ठुंड—पु०=ठुठ।

ठुक—स्त्री० [हिं० ठुकना] १. ठुकने की अवस्था, क्रिया या भाव। ठोक। २. रुपये-पैसे का व्यर्थ मे होनेवाला व्यय। जैसे—उन्हे दस रुपये की ठुक लग गई।

ठुकना—अ० [हिं० ठोकना का अ०] १ ठोका जाना। २. आघात या प्रहार लगना। ३. आर्थिक हानि या व्यर्थ व्यय होना। जैसे—व्यर्थ सौ रुपये ठुके। ४. जबरदस्ती आगे बढना।

मुहा०—ठुक ठुक कर लड़ना=जबरदस्ती लडना। उदा०—दिन-दिन दैन उरहनो आवै ठुकि-ठुकि करत लरैया।—सूर।

५. परास्त होना।

ठुकराना—स० [हिं० ठोकर] १ पैर, विशेषत पैर के पजे से ठोकर लगाना। २. (व्यक्ति आदि को) उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक दूर करना या हटाना। ३ (प्रस्ताव, सुझाव आदि) अवज्ञा या उपेक्षापूर्वक न मानना।

ठुकवाना—स० [हिं० ठोकना का प्रे० रूप] १ ठोकने का काम दूसरे से कराना। २ मार खिलवाना। पिटवाना। ३ स्त्री का पर-पुरुष से सभोग कराना। (बाजारू)

ठुड्डी—स्त्री० [हिं० ठडा=खडा] किसी अन्न का वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। ठुर्री। जैसे—कमलगट्टे, मक्के या मखाने की ठुड्डी।

†स्त्री०=ठोढी।

ठुनकना—स० [ठुन से अनु०] १ किसी प्रकार ठुन शब्द उत्पन्न करना। २ ठोकना।

अ० [हिं० ठिनकना] बच्चो का अथवा बच्चो की तरह रुक-रुककर रोना।

ठुनका—पु० [हिं० ठुनकाना] तर्जनी या मध्यमा (उँगली) की नोक से किया जानेवाला वेगपूर्वक आघात।

ठुनकाना—स० [ठुन-ठुन से अनु०] १. ठुन-ठुन शब्द उत्पन्न करना। २ तर्जनी या मध्यमा की नोक से किसी चीज पर इस प्रकार आघात करना कि ठुन शब्द उत्पन्न हो।

स० [हिं० ठुनकना] ठुनकने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई ठुनके। ठिनकाना।

ठुन-ठुन—पु० [अनु०] १. धातु के बरतन या टुकडो के बजने का शब्द। २ बच्चो आदि के रुक-रुककर और ठुन-ठुन करते हुए रोने का शब्द। जैसे— यह लडका हरदम ठुन-ठुन लगाये रहता है, अर्थात् प्राय रोता रहता है।

ठुमक—स्त्री० [हिं० ठुमकना] १ ठुमकने की क्रिया या भाव। २. बच्चों, युवती स्त्रियों की ऐसी आकर्षक और लुभावनी चाल जिसमे वे कुछ ठिठकती या रुकती हुई चलती हैं। ठसक-भरी चाल।

ठुमकना—अ० [अनु०] १ बच्चे का उमग मे आकर धीरे-धीरे पैर पटकते तथा इठलाते हुए चलना। उदा०—ठुमुक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनिया।—तुलसी। २. नाच मे, इस प्रकार धीरे-धीरे पैर पटकते हुए आगे बढना कि पैर के घुँघरू बजते रहे।

ठुमका—पु० [अनु०] [स्त्री० ठुमकी] धीरे से किया जानेवाला आघात या दिया जानेवाला झटका। जैसे—पतग उडाने के समय उसे ठुमका देना।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

†वि० [स्त्री० ठुमकी] दे० 'ठिगना'।

ठुमकारना—स० [हिं० ठुमका] (पतग की डोरी को) ठुमका देना।

ठुमकी—स्त्री० [देश०] १. ठुमक-कर चलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ धीरे से किया जानेवाला आघात। थपकी। ३ दे० 'ठुमका'। ४. एक प्रकार की छोटी खरी पूरी (पकवान)।

ठुमरी—स्त्री० [अनु०] १. एक प्रकार का चलता गाना जिसमे एक स्थायी और एक अतरा होता है।

विशेष—ठुमरी कई हलके रागो और तरह-तरह की धुनो मे गाई जाती है। इसका विकास लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह के दरबार मे हुआ था।

२ उडती खबर। अफवाह।

क्रि० प्र०—उड़ना।

ठुरियाना†—अ० =ठिठुरना।

ठुर्री—स्त्री०=ठुड्डी।

ठुसकना—अ० [अनु०] १. ठुस-ठुस शब्द करते हुए रोना। ठुन-ठुन करना। २ ठुस शब्द करते हुए पादना।

ठुसकी—स्त्री० [अनु०] १ ठुस शब्द करते हुए पादने की क्रिया। २ हलका पाद जिसमे ठुस शब्द हो।

ठुसना—अ० [हिं० ठूसना] १. किसी चीज का किसी आधान मे ठूस-ठूसकर भरा जाना। २ अन्न या भोजन का पेट भर कर खाया जाना। (उपेक्षा)

ठुसवाना—स० [हिं० ठूसना का प्रे०] ठूसने का काम किसी और से कराना।

ठुसाना—स० [हिं० ठूसना] १ किसी को ठूसने मे प्रवृत्त करना। २. भोजन कराना। खिलाना। (उपेक्षासूचक)

ठूंग—स्त्री०=ठोग।

ठूंगना—स०=टूँगना।

ठूंगा—पु०=ठोगा।

ठूंठ—पु० [सं० स्थाणु] १. वह वृक्ष जिसका धड ही बच रहा हो तथा जिसकी टहनियाँ टूट गई हो। २. कटा हुआ हाथ। टूँट। ठड। ३ कटे हुए हाथवाला व्यक्ति। ४ ज्वार, बाजरे, ईख आदि की फसलो मे लगनेवाला एक तरह का कीडा।

ठूंठा—वि० [हिं० ठूंठ] [स्त्री० ठूंठी] १ (पेड) जो शाखाओ से रहित हो गया हो। २. (व्यक्ति) जिसका हाथ कटा हुआ हो। लुज। ३ खाली। रिक्त। ४ थोथा। निस्सार।

ठूंठिया†—वि० [हिं० ठूंठ] १. लूला-लँगडा। २ नपुसक। हिजडा।

ठूठी—स्त्री० [हिं० ठूंठ] फसल काट लिए जाने के बाद पौधे की जड के पास रह जानेवाले ज्वार, बाजरे, अरहर आदि के डठल। खूंटी।

ठूंसना—स०=ठूसना।

ठूंसा—पु० [हिं० घूंसा से अनु०] घूंसा।
†पु०=ठोसा।

ठूनू—पुं० [देश०] पटवो की वह टेढी कील जिस पर वे लोग गहने आदि अटकाकर गूंथते हैं।

ठूसना—स० [हिं० ठस] १ खूब अच्छी तरह कसकर दबाते हुए कोई चीज किसी अवकाश या आधान मे भरना। २. जबरदस्ती कोई चीज किसी मे डालना या भरना। ३. खूब कसकर और बुरी तरह से खाना या पेट भरना। (व्यग्य)

ठेंगना†—वि०=ठिगना (नाटे कद का)।

ठेंगा—पु० [हिं० हेठ+अग या अँगूठा] १. किसी को उसकी विफलता पर चिढाने या लज्जित करने के लिए दिखाया जानेवाला दाहिने हाथ का अँगूठा।
क्रि० प्र०—दिखाना।
पद—ठेंगे से=हमारी बला से। हमे कुछ चिन्ता या परवाह नहीं है। (बाजारू)
मुहा०—ठेंगा बजना=लज्जाजनक विफलता होना।
२. लिंगेंद्रिय। (अशिष्ट) ३. डडा। सोटा। उदा०—जम का ठेंगा बुरा है ओहु नहिं सहिआ जाई।—कबीर।
मुहा०—ठेंगा बजाना=लाठियो से मार-पीट होना।
४ मध्ययुग मे, बिक्री के माल पर लिया जानेवाला महसूल। चुगी।

ठेंगुर—पु० [हिं० ठेगा=सोटा] वह डडा या लकडी का टुकडा जो उच्छृंखल पशुओ के गले मे इसलिए बांधा जाता है कि वे भाग कर दूर न जाने पावें।

ठेंघा—पु०=टेक।

ठेंठ—वि०=ठेठ।

ठेंठा—पु० [हिं० ठूंठ या ठूंठी] सूखा डंठल। उदा०—राजो एक मजूर से बैलो के लिए जोन्हरी का ठेंठा कटवा रही थी।—प्रसाद।

ठेंठी—स्त्री० [देश०] १. कान की मैल। २ वह कपडा या रुई जो कान के भीतरी छेद या मुंह पर इसलिए लगाई जाती है कि बाहर का जोर का शब्द भी न सुनाई पड़े। ३ बोतल, शीशी आदि का मुंह बंद करने के लिए उसके ऊपर लगाया जानेवाला काग या डाट।
क्रि० प्र०—लगाना।

ठेंपी†—स्त्री०=ठेंठी।

ठेक—स्त्री० [हिं० ठेकना] १ ठेकने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज को ठेकने या उसके नीचे सहारा देने के लिए लगाई जानेवाली चीज। टेक। जैसे—मटके या हडे के नीचे टेक लगाना। ३ चांड। टेक। ४ किसी वस्तु को कसने के लिए उसके बीच मे ठोकी जानेवाली चीज। पच्चर। ५ पाग का तल या पेंदा। टट्टियो आदि से घिरा हुआ वह स्थान जिसमे अनाज भरकर रखा जाता है। ६. अनाज रखने के लिए टट्टियो आदि से घेरकर बनाया हुआ स्थान।

ठेकना—स० [हिं० टेक] १. किसी चीज पर शरीर का बोझ डालते या रखते हुए उसका सहारा लेना। २. किसी चीज को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे टेक या सहारा लगाना।
स० [अनु०] छापे या ठप्पे से अकित करना।

ठेकवा बांस—पु० [देश०] बंगाल, आसाम आदि प्रदेशो मे होनेवाला एक प्रकार का बांस।

ठेका—पु० [हिं० ठेकना] १ ठेकने अर्थात् टिकने-टिकाने या ठहरने-ठहराने की जगह। २. वह वस्तु जिसकी ठेक लगाई जाय। ठेकनेवाली वस्तु। अड्डा। ३ हलका आघात। थपेडा। जैसे—लहरो का ठेका। ४ तबले के साथ का वह दूसरा बाजा जो बाईं ओर रहता और बाएँ हाथ से बजाया जाता है। डुग्गी। ५ तबला या ढोल बजाने की वह रीति जिसमे पूरे बोल न निकाले जायँ, केवल ताल दिया जाय। यह प्रायः डुग्गी या बाएँ पर बजाया जाता है।
क्रि० प्र०—देना।—बजाना।
मुहा०—घोड़े का ठेका भरना=घोडे का रह-रहकर जमीन पर टाप या पैर पटकना।
६ सगीत मे, कौवाली नाम का ताल।
†पु० दे० 'ठीका'।

ठेकाई—स्त्री० [हिं० ठेकना] ठेकना या ठेकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ठेकाना—स० [हिं० ठेकना का प्रे० रूप] किसी चीज को ठिकने या ठेकने मे प्रवृत्त करना। वि० दे० 'ठिकाना'।
†पु०=ठिकाना।

ठेकी—स्त्री० [हिं० ठेक] १ टेक। सहारा। २. चांड। थूनी।

ठेकेदार†—पु०=ठीकेदार।

ठेगड़ी*—पु० [देश०] कुत्ता। (डि०)

ठेगना†—स० १ =ठेकना। २ =ठाकना (मना करना)।

ठेगनी—स्त्री०=टेकनी।

ठेघना†—स०=ठेगना (ठेकना)।

ठेघनी—स्त्री०=ठेगनी (टेकनी)।

ठेघा—पु०=ठेका (टेक)।

ठेघुना—पु०=ठेहुना (घुटना)।

ठेठ—वि० [देश०] १ जो अपने विशुद्ध मूलरूप मे हो। जिसमे कृत्रिमता, बनावट या किसी तरह की मिलावट न हो। प्ररूपी। (टिपिकल) जैसे—ठेठ बनारसी (=विशिष्ट रूप से बनारस का ही, अर्थात और कहीं का नहीं)। २ जिसमे किसी प्रकार की भूल, सदेह आदि के लिए अवकाश न हो। जैसे—उन्हे ठेठ घर तक पहुँचा आओ।
पुं० आदि। आरभ। शुरु। जैसे—अब सारा काम ठेठ से करना चाहिए।

ठेठर—पु०=थियेटर।

ठेप—स्त्री० [देश०] सोने, चांदी का ऐसा टुकड़ा जो अटी में आ सके। (सुनार)
क्रि० प्र०—चढाना।—लगाना।
†पु० [स० दीप ?] दीआ। दीपक।

ठेपी—स्त्री० १ ठेंठी। २ छोटा ढक्कन।

ठेल—स्त्री० [हिं० ठेलना] ठेलने की क्रिया या भाव।

ठेल-ठाल—स्त्री०=ठेल।

ठेलना—स०[हिं० टालना] १ किसी भारी चीज के पीछे बल लगाकर उसे आगे खिसकाना या बढाना।
मुहा०—(कोई काम) ठेले चलना=जैसे-तैसे काम चलाये चलना। किसी प्रकार निबाहते चलना।
२ अपना भार या दायित्व अपने ऊपर से हटाते हुए किसी दूसरे की ओर बढाना।
*अ० बल-प्रयोग या जबरदस्ती करना। उदा०—ताही पै ठगावै ठेलि जाही को ठगतु है।—केशव।

ठेलम-ठेल—स्त्री०[हिं० ठेलना से] बार-बार बहुत से लोगों का आपस में एक दूसरे को ठेलने या धक्के देने की क्रिया या भाव।
क्रि० वि० एक दूसरे को ठेलते हुए।

ठेला—पु०[हिं० ठेलना] १ ठेलने की क्रिया या भाव। २. माल ढोने की एक तरह की दो या तीन पहियोंवाली छोटी गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते है। ३. उक्त प्रकार की चार पहियोंवाली छोटी गाडी जो केवल रेल की पटरियों पर चलती है। ट्रॉली। ४ छिछली नदियों मे चलनेवाली एक तरह की कम गहरी नाव। ५. धक्का। ६. भीड-भाड।

ठेलाठेल—स्त्री०=ठेलमठेल।

ठेवका—पु०[हिं० ठेवना या स० थापक] वह स्थान जहाँ मोट का पानी खेत सींचते समय गिराया जाता है। चवना।

ठेवकी—स्त्री०=ठेक।

ठेस—स्त्री०[देश०]१ ऐसा हल्का आघात जिससे किसी चीज या व्यक्ति की थोडी-बहुत या सामान्य हानि हो। जैसे—ठेस लगने से शीशा टूट गया। २ किसी प्रकार के अपकृत्य के फलस्वरूप होनेवाला कुछ या सामान्य मानसिक कष्ट। जैसे—आपके व्यवहार से मेरे मन को ठेस लगी है। ३ किसी तत्त्व पर होनेवाला आघात। जैसे—किसी की प्रतिष्ठा या मान को ठेस लगना।
क्रि० प्र०—पहुँचना।—पहुँचाना।—लगना।—लगाना।
४ आश्रय। सहारा। ढासना। जैसे—तकिये पर ठेस लगाकर बैठना।

ठेसना—अ०[हिं० ठेस] आश्रय या सहारा लेना। ठेस लगाकर बैठना।
†स०=ठूसना।

ठेसमठेस—क्रि० वि०[हिं० ठेस] सब पाल एक साथ खोले हुए (जहाज का चलना)। (लश०)

ठेहरी—स्त्री०[देश०] जमीन मे गडा हुआ लकडी का वह टुकडा जिसपर दरवाजे (पुरानी चाल के एक प्रकार के दरवाजे) की चूल घूमती है।

ठेहुका†—पु०[हिं० ठेक]वह पशु जिसके चलते समय पिछले दोनों पैरों के घुटने आपस मे टकराते हों।

ठेहुना†—पु० [स० अष्ठीवान्] घुटना।

ठेहुनी†—स्त्री०[हिं० ठेहुना] कोहनी।

ठैकर—पु०[देश०] एक प्रकार का खट्टा फल जिससे पीला रग बनाया जाता है।

ठैन†—स्त्री०=ठवन।

ठैयाँ—स्त्री०=ठाँव।

ठैरना†—अ०=ठहरना

ठैराई—स्त्री०=ठहराई।

ठैराना—स०=ठहराना।

ठैल-पैल†—स्त्री०=ठेलपेल।

ठोक—स्त्री०=ठोंक।

ठोंकना†—स०=ठोकना।

ठोंग—स्त्री०[स० तुड]१. चोंच। २ चोंच की मार। ३. उँगली की नोक से किया जानेवाला आघात।

ठोंगना—स०[हिं० ठोंग]१ ठोंग या चोंच मारना। २. उँगली की नोक से आघात करना।

ठोंगा—पु०[देश०] कागज की एक प्रकार की थैली जिसमे दूकानदार सूखा चीजें डालकर ग्राहकों को देते हैं।

ठोंचना†—स०=ठोंगना।

ठोंठ—पु०[स० ओष्ठ] होंठ।
पु०=ठोंठ।

ठोंठा—पु०[देश०] ज्वार, बाजरे आदि को हानि पहुँचानेवाला एक तरह का कीडा।

ठोंठी—स्त्री०[स० तुड] १ चने के दाने का कोश या खोल। २. पोस्ते की ढोंढी या ढेंढ़ी।

ठो†—अव्य०[स० स्था] सख्यासूचक शब्दों के साथ लगनेवाला एक अव्यय जो उनकी इकाइयों या मान पर जोर देता है। जैसे—एक ठो, दो ठो, दस ठो, बीस ठो आदि।

ठोक—स्त्री०[हिं० ठोकना] १. ठोकने की क्रिया या भाव। आघात। प्रहार। २ वह लकडी जिससे ठोंक लगाकर दरी की बुनावट ठस की जाती है। ३. अन्न के दानों, फलों आदि पर कीडे-मकोडों के दश या पक्षियों की चोंच से लगा हुआ आघात या उसका चिह्न।

ठोकचा—पु०[देश०] आम की गुठली का ऊपरी कडा आवरण। खोल।

ठोकना—स०[अनु० ठक-ठक से]१ किसी चीज को किसी दूसरी चीज के अन्दर गडाने, जमाने, धँसाने, बैठाने आदि के लिए उसके पिछले भाग पर हथौडे आदि से जोर से आघात करना। जैसे—जमीन मे खूँटा या दीवार मे कील ठोकना। २ किसी छेद या दरज मे उक्त प्रकार का आघात करते हुए कोई चीज धँसाना या बैठाना। जैसे—चूल मे पच्चर ठोकना। ३ किसी चीज के विभिन्न सयोजक अगों को यथास्थान बैठाने के लिए उन पर किसी प्रकार आघात करना। जैसे—(क) खाट या चौखट ठोकना। (ख) किसी के पैरों मे बेडियाँ या हाथों मे हथकडियाँ ठोकना। ४ कोई विशिष्ट प्रकार का कार्य सम्पादित करने के लिए किसी चीज पर ऐसा आघात करना कि वह कुछ दबे भी और उसमे से कुछ शब्द भी निकले। जैसे—पहलवानों का ताल ठोकना। (ग) पकाने के लिए बाटी या रोटी ठोकना।
मुहा०—(किसी की) पीठ ठोकना=(क)कोई अच्छा काम करने पर उसको प्रशसा करते हुए उत्साहित करना, उसकाना या बढावा देना। जैसे—तुम्हारे ही पीठ ठोकने से तो वह मुकदमेबाजी पर उतारू हुआ है।
५ किसी चीज की दृढता, प्रामाणिकता आदि की परीक्षा करने के लिए कोई आवश्यक या उपयुक्त क्रिया करना।
मुहा०—ठोकना-ठठाना या ठोकना-बजाना=हर तरह से जाँचकर देखना कि यह ठीक है या नहीं। जैसे—ठोक-बजा कर सौदा करना।

६ अधिकार या वलपूर्वक अभियोग आदि उपस्थित करना। जैसे—किसी पर दावा या नालिश ठोकना। ७ अच्छी तरह पीटना या मारना। जसे—जव तक यह लडका ठोका नही जायगा तव तक सीधा नही होगा।

ठोकर—स्त्री० [हि० ठुकना या ठोकना] १ किसी चीज के ठुकने अर्थात टकराने आदि से लगनेवाला ऐसा आघात जिससे कुछ टूटने-फूटने या हानि पहुँचाने की आशंका या सभावना हो। जैसे—यह तसवीर (या शीशा) सँभालकर ले जाना; रास्ते मे कही ठोकर न लगने पावे।

क्रि० प्र०—लगना।

२ वह आघात जो चलते समय रास्ते मे पडी हुई किसी उभरी हुई कडी चीज से मुख्यत पैर मे लगता हो। जैसे—चलते समय ईट, ककड या पत्थर से लगनेवाली ठोकर।

क्रि० प्र०—खाना।—लगना।

३ मार्ग मे पडी हुई कोई ऐसी (उक्त प्रकार की) चीज जिससे पैरो को आघात लगता या लग सकता हो। जैसे—अँधेरे मे उधर मत जाया करो, रास्ते मे कई जगह ठोकरें हैं। ४ नगे पैर के अगले भाग अथवा पहने हुए जूते की नोक या पजे से किसी वस्तु या व्यक्ति पर किया जानेवाला आघात। जैसे—नौकर या भिखमगे को ठोकर लगाना या ठोकरो से मारना।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

मुहा०—(किसी को) ठोकरो पर पड़े रहना=वहुत ही दीन-हीन वनकर और सव तरह की दुर्दशाएँ भोगते हुए किसी के आश्रित वने रहना।

५ कुश्ती का एक दाँव-पेच जिसमे विपक्षी को पैर से कुछ विशिष्ट प्रकार की ठोकर लगाकर नीचे गिराया जाता है। ६ लाक्षणिक रूप मे लोक-व्यवहार मे किसी प्रकार का ऐसा कडा या भारी आघात जो वहुत-कुछ अनिष्ट या हानि करनेवाला सिद्ध हो। जैसे—उन्होंने अपने जीवन मे कई वार ठोकरें खाई है, इसलिए अव उनकी वुद्धि वहुत-कुछ ठिकाने आ गई है।

क्रि० प्र०।—खाना।—लगाना।

मुहा०—ठोकर या ठोकरें खाते फिरना=इधर-उधर अपमानित होते हुए और दुख भोगते हुए घूमना। दुर्दशा-ग्रस्त होकर मारे-मारे फिरना।

ठोकरी—स्त्री० [देश०] ऐसी गाय जिसे व्याये कुछ या कई मास हो चुके हो और इसी लिए जिसका दूध गाढा तथा मीठा हो गया हो।

ठोकवा†—पु० [हि० ठोकना] गुना नाम का मीठा पकवान।

ठोका†—पु० [देश०] हाथ मे पहनने का एक प्रकार का पुरानी चाल का गहना।

ठोट—वि० [हि० ठूँठ] १ तत्वहीन। २. मूर्ख।

ठोठ†—पु०=ठूँठ।

†वि०=ठूँठा।

ठोठरा—वि० [हि० ठूँठ?] [स्त्री० ठोठरी] भीतर से खाली खोखला। पोला।

ठोडी—स्त्री०=ठोढी।

ठोढ़ी—स्त्री० [स० तुड] चेहरे का निचला सामनेवाला भाग जो आगे की ओर कुछ झुका हुआ होता है। ठुड्डी। चिवुक। (चिन्)

मुहा०—(किसी की) ठोढी पकडना=प्रेमपूर्वक या अनुनय-विनय करते हुए किसी की ठोढी छूना या दवाना।

ठोढ़ी-तारा—पु० [हि०] स्त्री की ठुड्डी पर का गोदना या तिल।

ठोप†—पु० [अनु० टप-टप] जल-कण। पानी की वूँद।

ठोर—पु० [देश०] एक प्रकार का मीठा पकवान जो मैदे की मोयनदार पूरी को घी मे तलने और चाशनी मे पकाने से वनता है। वल्लभ-सप्रदाय के मदिरो मे प्राय इसका भोग लगता है।

पु० [स० तुड] पक्षियो की चोच।

ठोला—पु० [देश०] रेशम फेरनेवालो की वह चौकोर छोटी पटरी जिसमे लकडी का खूँटा लगा रहता है।

ठोली—स्त्री० [देश०] उपपत्नी के रूप मे रखी हुई स्त्री। रखेल। (पूरव)

ठोस—वि० [हि० ठस] १. (पदार्थ) जिसकी रचना मे अन्दर कही खोखला-पन न हो, और इसलिए जो वहुत कडा, ठस और पक्का हो। जैसे—धातुएँ, पत्थर और लकडियाँ अपने प्राकृतिक या मूल रूप मे सदा ठोस होती हैं। २ (रचना) जिसके अन्दर न तो किसी प्रकार का पोलापन हो और न पोलेपन की पूर्ति के लिए किसी प्रकार का भराव हो। जैसे—चाँदी या सोने का ठोस कडा या ठोस मूर्ति। ३. (तत्त्व या विषय) जिसमे भर-पूर तथ्य, पुष्टता, या सारभूत वाते हो और इसी लिए जिसमे यथेष्ट उपयोगिता, दृढता, प्रामाणिकता, मान्यता आदि गुण वर्तमान हो। जैसे—उनकी सारी पुस्तक ठोस विचारो से भरी पडी है। ४ जिसका कोई ठीक, दृश्य या मूर्त्त रूप सामने हो। जिसमे अव्यावहारिक, असगत या सारहीन वातो की अधिकता या प्रधानता न हो। जैसे—जव तक कोई ठोस प्रस्ताव या सुझाव सामने न आवे, तव तक इस विषय पर विचार नही हो सकता। ५ (व्यक्ति) जिसके पास या जिसमे कुछ आधार-भूत तथा दृढ तत्त्व या वाते हों, और इसी लिए जिसे प्रामाणिक या विश्वसनीय माना जा सकता हो। जैसे—ठोस आसामी, ठोस महाजन।

ठोसना—स० [हि० ठाँसना या ठूसना ?] १ धक्का देते हुए आघात या प्रहार करना। २. किसी को जलाने या कुढाने के लिए वहुत कठोर या लगती हुई वात कहना। ठोसा देना।

ठोसा—पु० [हि० ठोसना] १ वह आघात या प्रहार जो किसी को धक्के देते हुए किया जाय। २ वह व्यग्यपूर्ण वात जो किसी को कुढाने या जलाने के लिए कही जाय। उदा०—इक हरि के दरसन विनु मरियत, अरु कुब्जा के ठोसनि।—सूर। ३ कुढाने या चिढाने के लिए दिखाया जानेवाला हाथ का अँगूठा। ठेगा।

ठोहर—पु० [हि० निठोहर] १ अकाल। २ मँहगी।

ठौका—पु०=ठेवका।

ठौनि*—स्त्री०=ठवनि।

ठौर—पु० [स० स्थान, प्रा० ठान, हि० ठाँव+र(प्रत्य०)] १. जगह। स्थान।

पद—ठौर-कुठौर=अच्छी और वुरी जगह। उचित तथा अनुचित स्थान।

मुहा०—ठौर न आना=किसी ठिकाने पर न पहुँचना या न लगना। **(किसी को) ठौर रखना**=जिस स्थान पर कोई हो उसे वही ढेर कर देना अर्थात् मार डालना। **ठौर रहना**=कही पडे रहना।

२ अवसर। मौका।

ठ्यापा†—वि० [देश०] [स्त्री० ठ्यापी] उपद्रवी। शरारती।

ड

ड—नागरी वर्णमाला का १३वाँ व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा सघोष व्यंजन है। जब इसके नीचे बिन्दी लगती है तब इसके उच्चारण मे विशेष अन्तर होता है। जैसे—लड़का, लड़ी आदि मे का ड़। ड़ मूर्द्धन्य, उत्क्षिप्त, अल्पप्राण तथा सघोष व्यंजन है।

पुं०[स०√डी (उड़ना)+ड] १ शब्द। २. वड़वाग्नि। ३ शिव। ४. एक प्रकार का नगाड़ा। ५. भय।

डंक—पुं०[स० दंश, प्रा० डंक; दे० प्रा० डंक, उ० डंकिवा, गु० मरा० डंस, प० डंक] १ कुछ विशिष्ट प्रकार के कीड़ों और जन्तुओं का वह कड़ा नुकीला काँटे के आकार का अंग जो प्राय उनके पिछले भाग मे होता है तथा जिसे वे दूसरे जीवों या प्राणियों के शरीर मे गड़ा या धँसाकर कुछ विष प्रविष्ट करते हैं। और जिसके फलस्वरूप या तो प्राणियों को जलन या पीड़ा होती है और या वे मर जाते है। जैसे—बर्रे या बिच्छू का डंक। २ कुछ कीड़े-मकोड़ों के मुँह पर का वह लंबा पतला अंग जिसे वे किसी चीज मे उसका रस चूसने के लिए गड़ाते हैं।

क्रि० प्र०—मारना।

३. लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसी खटकने या चुभनेवाली बात जो राग-द्वेष से भरी हो और किसी को बहुत अधिक कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से कही जाय। ४ देशी कलम का वह अगला भाग जिससे लिखा जाता है। उदा०—सूखि लागि स्याही लेखनी कै नेकु डंक लागै।—रत्नाकर। ५ पाश्चात्य ढंग की कलमों की जीभ जो धातु की बनी हुई और बहुत नुकीली होती है। (निब)

†पुं०[हिं० डंका] पूरा एकाधिपत्य। जैसे—इस स्थान पर हमारा ही डंक है।

डंकदार—वि० [हिं० डंक+फा० दार] (कीड़ा) जिसमे डंक हो। डंकवाला।

डंकना—स०[हिं० डंका] १ डंका बजाना। २ डंके की तरह का घोर शब्द उत्पन्न करना।

अ० गरजना।

डंका—पुं०[टंक या ढक्का=दुंदुभि का शब्द] १. बड़ी नाद के आकार का धातु, मिट्टी आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध बाजा जिसके मुँह पर चमड़ा मढ़ा होता है। दमामा।

मुहा०—(कोई बात) डंके की चोट कहना=खुल्लमखुल्ला, दृढ़तापूर्वक और सबको सुनाकर कहना। (किसी बात का) डंका पीटना=चारों ओर सबसे खुलेआम कहते फिरना। डंका देना=डंका बजाकर सैनिकों को सावधान होने या कूच करने की सूचना देना। (कहीं किसी का) डंका बजाना=एकाधिपत्य या पूर्ण अधिकार होने की सबको सूचना मिलना। डंका बजाना=एकत्र होने के लिए डंका देना।

२ मुरगों मे होनेवाली लड़ाई।

मुहा०—डंका डालना=मुरगों को आपस मे लड़ाना।

पुं०[अं० डॉक] समुद्र के किनारे जहाजों के ठहरने का पक्का घाट।

डंका-निशान—पुं०[हिं० डंका+निशान=झंडा] राजाओं की सवारी के आगे बजानेवाला डंका और उसके साथ चलनेवाला झंडा।

डंकिनी—स्त्री०=डाकिनी।

डंकिनी-बंदोबस्त—पुं०=दवामी बन्दोबस्त।

डंकियाना—स०[हिं० डंक+आना (प्रत्य०)] १ डंक से चोट करना। २ डंक मारना या लगाना।

अ०[हिं० डाँकना] १. कोई स्थान डाँकने अर्थात् पार करने के लिए चलना। २ चलकर आना या पहुँचना।

डंकी—स्त्री०[देश०] १ कुश्ती का एक दाँव। २. मालखंभ की एक कसरत।

वि०[हिं० डंक] डंकवाला (जन्तु)।

डंकीला†—वि० [हिं० डंक+ईला (प्रत्य०)] (जन्तु) जिसके शरीर में डंकवाला अंग होता हो। डंकदार।

डंकुर—पुं० [हिं० डंका] पुरानी चाल का एक तरह का ताल देने का बाजा।

डंकौरी†—स्त्री० [हिं० डंक+औरी (प्रत्य०)] बर्रे। भिड़।

डंगा†—पुं०=डगा।

डंग—वि०[देश०] जो पूरा पका न हो। अधपका।

पुं०=पहर। (पश्चिम)

डंगम—पुं०[देश०] एक तरह का वृक्ष।

डंगर—पुं०[देश०] चौपाया। पशु।

वि० पशुओं की तरह निर्बुद्धि या मूर्ख।

डँगरा—पुं०[स० दशांगुल] खरबूजा।

वि० दे० 'डाँगर'।

डँगरी—स्त्री०[हिं० डँगरा] १. लंबी ककड़ी। २. हिमालय में होनेवाला एक प्रकार का मोटा बेंत।

स्त्री० हिं० 'डाँगर' का स्त्री०। उदा०—डाइन डँगरी नरन चबावत।—गोपाल।

डँगवारा—पुं०[हिं० डंगर=चौपाया] किसानों में होनेवाला डंगरों (बैलों आदि) का पारस्परिक लेन-देन, व्यवहार या सहायता।

डंगू-ज्वर—पुं०[अं०] एक तरह का ज्वर जिसमे शरीर जकड़ सा जाता है।

डँगोरी—स्त्री०[देश०] १ डंडा। लाठी। २. वह लाठी जिसे वृद्ध लोग टेकते हुए चलते हैं। जैसे—अंधे की डँगोरी।

डँठरी†—स्त्री०[हिं० डंठल] छोटा तथा पतला डंठल।

डंठल—पुं०[स० दंड] कुछ विशिष्ट छोटी वनस्पतियों, पौधों आदि का धड़ जो पतला और कुछ लंबा होता है। जैसे—अरहर या चौलाई का डंठल।

डंठी†—स्त्री० [स० दंड] १. डंठल। २. किसी चीज मे लगा हुआ कोई लंबा अंश।

डंड—पुं०[स० दंड] १ डंडा। सोटा। २. बाहु-दंड। बाँह। भुजा। ३ एक प्रकार का प्रसिद्ध भारतीय व्यायाम जो मुख्य रूप से बाँहों को पुष्ट और सबल करने के लिए जमीन पर पेट के बल झुककर बाँहों के सहारे बार-बार कुछ ऊपर उठने के रूप मे होता है।

क्रि० प्र०—करना।—पेलना।

मुहा०—डंड पेलना=खूब मौज से समय बिताना। जैसे—बाप इतनी दौलत छोड़ गये है, इसलिए बेटा दिन-भर खूब डंड पेलता है।

पद—डंड-पेल। (देखें)
४ अपराध आदि के लिए मिलनेवाला दड। सजा। ५ जुरमाना।
क्रि० प्र०—भोगना।
६ किसी की हानि के बदले मे उसकी पूर्ति के लिए दिया जानेवाला धन या रकम।
मुहा०—(किसी पर) डंड डालना=किसी पर क्षति-पूर्ति का भार डालना। डंड भरना=किसी की किसी प्रकार की हानि होने पर उसकी पूर्ति के लिए या बदले मे अपने पास से धन देना। जैसे—उनकी कलम खो जाने से हमे १०) डड भरने पडे है।
७ समय का 'दड' नामक बहुत छोटा मान। ८ दे० 'दड'।

डंडक—पु०=दडक।

डंडका†—पु०[हिं० डडा]सीढी का डडा।

डंडकारन*—पु०=दण्डकारण्य।

डडना—स०[हिं० डड; स० दड]१ दडित करना। दड या सजा देना। २. जुरमाना लगाना।

डंड-पेल—पु०[हिं० डड पेलना] १ वह जो डड पेलता हो। डड करनेवाला व्यक्ति अर्थात् तन्दुरुस्त और हट्टा-कट्टा। २ वह जो खूब मौज-मस्ती करता और आनन्द लेता हो।

डडल—स्त्री०[देश०] बगाल, बरमा आदि की नदियो मे मिलनेवाली एक तरह की लबी मछली।

डडवत्*—पु०=दडवत्।

डँडवारा†—पु०[हिं० डाँड=खेत की मेड+वारा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० डँडवारी] किसी खुले स्थान को किसी ओर से घेरने के लिए उठाई जानेवाली ऊँची दीवार।
क्रि० प्र०—उठाना।
मुहा०—डडवारा खीचना=डँडवारा उठाना या खडा करना।
पु०[हिं० दक्खिन+वारा (प्रत्य०)] दक्षिण दिशा की वायु। दखिनैया।
क्रि० प्र०—चलना।

डँडवारी—स्त्री०[हिं० डँडवारा का स्त्री०] छोटा डँडवारा।

डंडवी—पु० [हिं० डड=दड] वह अधिकारी जो दड दे अथवा जिसमे दड देने की क्षमता हो।

डंडवै—पु० =डँडवी। उदा०—डडवै डाँड दीन्ह जहँ ताईं, आइ सो डँडवत कीन्ह सवाईं।—जायसी।

डंडहरा†—पु०[हिं० डडा]१ वह पतली, गोल लबोतरी लकडी जो दरवाजो को खुलने से रोकने के लिए अदर से लगाई जाती है। २ दरवाजो को बद करने के लिए उनमे लगाया जानेवाला लोहे आदि का वह उपकरण जिसमे ताला आदि भी लगता है।

डँडहरी—स्त्री०[देश०] एक तरह की छोटी मछली।

डँडहिया—पु०[हिं०डडा] वह डडा जिसकी सहायता से बैलो की पीठ पर लदे दो बोरे फँसाए रहते हैं।

डंडा—पु०[हिं० दड] १ पेड की शाखा, बाँस आदि का टुकडा, विशेषत. सीधा और लबा सूखा तथा छीला और गढा हुआ टुकडा। जसे—गुल्ली के साथ खेलने का डडा।
विशेष—डडे की लबाई अपेक्षया अधिक होती है और मोटाई तथा चौडाई कम।
मुहा०—डंडा चलाना=डडे मे किसी पर आघात या प्रहार करना। डंडे के जोर से=डड या बाहुबल के आधार पर। जैसे—आप तो डडे के जोर मे सब काम कराना चाहते हैं।
२ कुछ विशिष्ट प्रकार से गढकर बनाये हुए उक्त प्रकार के छोटे टुकडो का जोडा जो प्राय खेलो मे एक दूसरे पर आघात करके बजाने के काम आता है। ३ उक्त प्रकार के लकडी के टुकडो को बजाते हुए खेले जानेवाले कई प्रकार के खेल।
क्रि० प्र०—खेलना।
मुहा०—डंडे बजाते फिरना=व्यर्थ या यो ही इधर-उधर घूमते रहना। कुछ काम न करके केवल घूम-घूमकर समय बिताना।
४ लकडी की सीढी मे के छोटे-छोटे खंडो मे से हर एक जिस पर पैर रख कर ऊपर चढा जाता है। ५ किसी पदार्थ का अपेक्षाकृत कम चौडा तथा कम मोटा परन्तु अधिक लबा टुकडा। जैसे—साबुन का डडा।
†पु०=डाँड (सीमा पर की छोटी दीवार या मेड)।
क्रि० प्र०—उठाना।—खीचना।

डंडा-डोली—स्त्री०[हिं० डडा+डोली]=डोली-डडा (खेल)।

डंडा-बेड़ी—स्त्री०[हिं०] बेडियाँ और उनके माथ लगा रहनेवाला लोहे का डडा जो विकट कैदियो को इसलिए पहनाया जाता है कि वे बैठ न सकें।

डंडा-मुर्री—स्त्री० दे० 'पेचक' (चित्रकला की बेल)।

डंडाल—पु०[हिं० डडा] दुदुभी। नगारा।

डँडिया—स्त्री०[हिं० डाँडी=रेखा]१ पुरानी चाल की वह साडी जिसमे डाँडो या लबी लकीरो के रूप मे गोटा-पट्टा टँका होता था। २. गेहूँ, जौ आदि की बालो की लबी सीक।
पु०[हिं० डाँडा=सीमा-रेखा] वह व्यक्ति जो सीमा पर रहकर कर या महसूल उगाहने का काम करता हो।

डँड़ियाना—स०[हिं० डाँडी]१ किसी कपडे के दो या अधिक पाटो को सी कर जोडना। दो कपडो की लबाई के किनारो को एक मे सीना। २ साडी मे गोटे आदि टाँककर डडे अर्थात् लकीरें बनाना।

डँड़ियारा गोला—पु० [हिं० डडा+गोला] दोहरे सिरे का लबा (तोप का) गोला। लठिया। (लग०)

डंडी—स्त्री०[हिं० डडा का स्त्री० अल्पा०] १. लकडी या धातु का गढा हुआ कोई छोटा, पतला, लबा टुकडा जो कई प्रकार के उपकरणो मे प्राय. उन्हे पकडकर चलाने, रखने, हिलाने आदि के काम मे आता है। जैसे—कलछी, छाते या पखे की डडी। २ धातु या लकडी का उक्त प्रकार का वह लबा टुकडा जिसके दोनों सिरो पर तराजू के पलडे बँधे रहते हैं।
मुहा०—डडी मारना=तराजू की डडी इस प्रकार चालाकी से कुछ दबाते हुए पकडना कि तौली जानेवाली चीज उचित मान से कुछ कम रहे। जैसे—यह बनिया डडी मारकर लोगो को ठगता है।
३ कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधो का वह बडा और लबा डठल जिसके सिरे पर बडे और भारी पत्ते या फूल लगते है। जैसे—कमल की डडी। ४. पेड-पौधो मे की वह छोटी पतली सीक जिनमे पत्तियाँ और छोटे फूल लगते हैं। जैसे—गुलाब या गेंदे की डडी। ५. कुछ विशिष्ट प्रकार के गहनो मे उक्त आकार-प्रकार का लगा हुआ वह छोटा पतला टुकडा जिसके सहारे वे गहने शरीर के अग पर अटकाये, खोंसे या फँसाये जाते है। जैसे—आरसी या सीसफूल की डंडी। ६ झपान या डाँडी नाम की

पहाडी सवारी। ७ पुरुष की लिंगेन्द्रिय। (बाजारू) वि० [हिं० डड=दंड ?] आपस मे लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।
पुं०=दडी (दड धारण करनेवाला सन्यासी)।
*वि०[स० द्वंद्व] चुगलखोर।

डँड़ीर—स्त्री०[हिं० डाँटी] सीधी लकीर।

डंडूरना—अ०[?] हवा का धूल से भर जाना।

डँड़ोरना—स०=ढूँढना।

डंडौत—पु०=दडवत्।

डंबर—पु०[स०]१ आडबर। २ विस्तार। ३ बहुत बडा समूह या झुड। उदा०—डका के दिए तें दल डबर उमडचो।—भूषण। ४ एक तरह का चँदवा।
पद—मेघ-डंबर=बडा शामियाना। दल-बादल। अंबर-डबर=वह लाली जो सध्या समय आकाश मे दिखाई देती है।

डंबेल—पु०[अं०]१ लोहे का एक तरह का छोटा किंतु भारी उपकरण जिसे हाथों मे उठाकर कुछ विशेष कसरतें की जाती हैं। २ वह कसरत जो उक्त उपकरण की सहायता से की जाती है।

डंमरिय—पु०[स० डमरु+धारी] शिव। उदा०—डमरिय डहकि विज्जुल लहकि, खग कढयी गोमेसजा।—चदवरदाई।

डँवरुआ—पु० [स० डमरु] एक तरह का वात रोग जिसमे शरीर के विभिन्न जोडों मे पीडा तथा सूजन होती है। गठिया।

डँवरुआ-साल—पु०[स० डमरु+हिं० सालना] किसी धातु या लकडी के दो टुकडों को परस्पर जोडने का एक विशेष ढग जिसमे एक टुकडे को एक ओर से चौडा और दूसरी ओर से पतला काटते हैं और दूसरे टुकडे मे उसी काट की नाप से गड्ढा करते है और उस कटे हुए अश को उसी गड्ढे मे बैठा देते हैं।

डँवरू—पु०=डमरू।

डँवाँडोल†—वि०=डाँवाँडोल।

डंस—पु०[स० दंश]१ गहरा और तेज डक मारनेवाला एक प्रकार का बडा मच्छर। डाँस। २ दे० 'दश'।

डँसना†—स०=डसना।

डऊ—वि०[हिं० डील?]१ लबा-चौडा तथा हृष्ट-पुष्ट (व्यक्ति)। २. पशुओं की तरह निर्बुद्धि और मूर्ख।

डक—पु०[अं० डाक]१ एक प्रकार का गफ कपडा जिससे जहाजो की पालें बनाई जाती हैं। २. एक प्रकार का मोटा कपडा जो कमीज, कोट आदि के कफ, कालर आदि मे लगाया जाता है।
पु०[अं० डेक] जहाज की ऊपरी छत।

डकइत†—पु०=डकैत।

डकई—पु० [ढाका नगर]१ केले की एक जाति। २ उक्त जाति का केला।
†पु०=१ डाका। २ डकैती।

डकरना—अ०[अनु०]१ बैल, भैंसे आदि का बोलना। २ डकार लेना।

डकरा—पु० [देश०] ताल सूखने पर उसके तले की वह मिट्टी जिसमे अधिक गरमी के कारण दरारें पड़ जाती है।

डकराना†—अ०=डकरना।
†स० डकरने मे प्रवृत्त करना।

डकवाहा†—पु०=डाकिया।

डकार—पु०[स० उद्गार=पुकार]१ वह शारीरिक व्यापार जिसमे पेट भरने पर उसके अन्दर की हवा एकाएक शब्द करती हुई मुँह के रास्ते बाहर निकलती है। २ उक्त हवा के मुँह से निकलते समय होनेवाला शब्द।
मुहा०—डकार तक न लेना=किसी का धन इस प्रकार हजम कर जाना कि किसी को खबर तक न लगे।
३ बाघ, सिंह आदि की गरज। दहाड़।
क्रि० प्र०—लेना।

डकारना—अ०[हिं० डकार+ना (प्रत्य०)] १. डकार लेना। २ दे० 'डकरना'।
स० किसी का धन या माल लेकर पचा जाना। हजम कर जाना।

डकैत—पु०[हिं० डाक+ऐत (प्रत्य०)] वह डाकू जो प्राय. डाके डाला करता हो।

डकैती—स्त्री०[हिं० डकैत]१ डकैत का काम। २ डाका। ३ व्यापारिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों मे, किसी की चीज या धन बलपूर्वक अपने अधिकार या हाथ मे कर लेना।

डकोटा—पु०[अं०] एक प्रकार का बड़ा वायुयान।

डकौत—पु०[देश०] भड्डर। भड्डरी। (दे०)

डक्क—पु०[स० डक्कारी] वीणा। उदा०—भरै पत्र जोगिनी डक्क नारद् बजावै।—चदवरदाई।

डक्कारी—स्त्री०[स०] चडाल वीणा।

डग—पु०[डाँकना या अनु०] १ चलते या दौडते समय एक पैर को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रखने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—देना।—भरना।—मारना।
२ उतना अवकाश या दूरी जितनी चलते या दौडते समय एक पैर एक बार उठाकर फिर रखने मे पार की जाती है।

डगक*—पु०[हिं० डग+एक] एक या दो डग। एक या दो कदम। उदा०—डगकु डगति सी चलि ठठुकि चितई चली निहारि।—बिहारी।

डगडगाना†—अ०, स०=डगमगाना।

डगड़ी*—स्त्री०=डगरी। उदा०—डगडी गडती गड जाय मही।—निराला।

डगडोलना†—अ०, स०=डगमगाना।

डगडौर†—वि०[हिं० डग+डोलना]=डाँवाँडोल।

डगण—पु०[स० मध्य०स०] पिंगल मे एक गण जिसमे चार मात्राएँ होती हैं।

डगना—अ०[हिं० डग+ना (प्रत्य०)]१ डग भरना। कदम या पैर उठाकर चलना। २ डगमगाना। ३ अपने स्थान से इधर-उधर होना। हिलना। ४ चूक या भूल करना।
†अ०=डिगना।

डग-मग—वि० [हिं० डग (कदम)+मग (मार्ग, अनु०)] १. मार्ग मे अर्थात् चलते समय जिसके कदम लडखडा रहे हों। २ जो बहुत अधिक हिल-डुल रहा हो। ३. (व्यक्ति) जो विचलित हो गया हो और इसी लिए कोई ठीक निश्चय न कर पाता हो।

पु० डगमगाने या अस्थिर रहने की अवस्था या भाव। उदा०—डगमग छाँडि दे मन बौरा।—कबीर।

डगमगना†—अ०=डगमगाना।

डगमगाना—अ०[हिं० डगमग+ना (प्रत्य०)]१ चलते समय मार्ग मे कदमो का ठीक प्रकार से न पडना। २ इस प्रकार हिलना-डुलना कि पैर ठीक प्रकार से न पडे। ३. (नाव आदि का) बहुत जोर से इधर-उधर हिलना-डुलना। ४ विचलित होना।

स०१ ऐसा काम करना जिससे कोई डगमग करने लगे। २ विचलित करना।

डगर—स्त्री०[हिं० डग=कदम] १. मार्ग। रास्ता। २. गाँव-देहात का छोटा और तग रास्ता।

डगरना†—अ०[हिं० डगर] डगर या रास्ता चलना।

डगरा—पु०[देश०][स्त्री० अल्पा० डगरी] बाँस की फट्टियो का बना हुआ छिछला बरतन। छावडा। डलरा।

†पु०=डगर (रास्ता)।

डगराना—अ०=डगरना।

स० रास्ते पर चलाना या लगाना।

डगरिया†—स्त्री०[हिं० डगर का स्त्री० रूप] छोटा और तग रास्ता।

डगरी—स्त्री०=डगर।

डगा—पु०[हिं० डागा] वह लकडी जिससे डुग्गी बजाई जाती है। डाग।

†पु०=डग्गा।

डगाना†—स०=डिगाना।

डग्गर—पु०[स० तर्क्षु] भेडिये की तरह का एक मासाहारी हिंसक पशु।

वि० दे० 'डाँगर'।

डग्गा—पु०[हिं० डग] पतली और लबी टाँगोवाला दुबला घोडा।

†पु०=डगा।

डच—पु०[अ०] हालैण्ड का निवासी।

वि० हालैंड का। हालैंड-सबधी।

डट—पु०[देश०] निशाना।

डटना—अ०[हिं० डाट]१ किसी स्थान पर विशेषत उसकी सुरक्षा के लिए साहसपूर्वक खडे रहना। जैसे—युद्ध-भूमि मे सनिक डटे हुए थे।

पद—डटकर=(क) दृढता तथा साहसपूर्वक और सारा बल लगाकर। जैसे—ग्रामीणो ने चोरो का डटकर मुकाबला किया। (ख) अच्छी तरह। जैसे—उन्होने डटकर खाया।

†२ मार्ग मे किसी चीज के बाधक होने पर रुकना। जैसे—नदी की बालू पर चलती हुई नाव का डटना।

†३ ठहरना। रुकना। जैसे— गाडी का डटना।(व्रज)

*४. सुशोभित होना। भला लगना। उदा०—लटकि लटकि लटकतु चलतु डटतु मुकुट की छाँह।—बिहारी।

†स०[स० दृष्टि या हिं० डीठ] देखना।

डटाई—स्त्री०[हिं० डटाना]१. डटे हुए होने की अवस्था या भाव। २ डटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

डटाना—स०[हिं० डटना]१. डटने मे प्रवृत्त करना।२ ठहराना। रोकना। ३ एक वस्तु को दूसरी वस्तु से सटाना या भिडाना।

डट्टा—पु०[हिं० डाटना]१ हुक्के का नेचा। टेरुआ। २ वह ठप्पा जिससे छीट छापते है। साँचा। ३ दे० 'डाट'।

डडकना†—अ० [अनु०] १ जोर से शब्द उत्पन्न होना। २. बजना।

स० १. जोर से शब्द उत्पन्न करना। २ बजाना।

डडही—स्त्री०[देश०] एक तरह की मछली।

डड़ा†—पु०[?]बाँह पर पहनने का टाड नाम का गहना।

डड्ढार(ा)—वि०=डढार।

डढ़न'—स्त्री०[स० दग्ध, प्रा० डड्ढ] जलन। ताप।

डढ़ना—अ०[हिं० डढन] १ जलना। तपना। २ बहुत दुखी या सन्तप्त होना।

डढ़ाना—स०[हिं० डढना]१ जलाना। २ बहुत दुखी या सतप्त करना।

डढ़ार†—वि०=डढारा।

डढ़ारा—वि०[हिं० डाढ]१ डाढवाला। २ डाढी या दाढीवाला। ३ जिसकी डाढी या दाढी के बाल बहुत बडे या लबे हो। बडी और लबी दाढीवाला। ४ बहुत बलवान और साहसी।

डढ़ियल†—वि०=दढियल (दाढीवाला)।

डढ़ुआ†—पु०[स० दृढ] मोट मे मजबूती के लिए लगाया जानेवाला बर्रे, गेहूँ, चने आदि का तेल।

डढ्ढ—वि०[स० दग्ध]१ जला हुआ। २ तप्त। ३ बहुत दुखी और सतप्त।

डढ्ढना—स०[स० दग्ध, प्रा० डड्ढ+ना (प्रत्य०)]१ जलाना। तपाना। २ बहुत दुखी और सतप्त करना।

डढ्योरा†—वि०=डढारा (दाढीवाला)।

डपट—स्त्री० [स० दर्प] १ डपटने की क्रिया या भाव। २ किसी को डाँटते-डपटते हुए कही जानेवाली कोई बात।

स्त्री० [हिं० रपट] १ खूब तेजी से आगे बढते रहने की क्रिया या भाव। २ घोडे की तेज चाल।

डपटना—स० [हिं० डपट] आज्ञा, आदेश आदि का न पालन करने पर, ठीक प्रकार से काम न करने पर अथवा अनधिकार या अनुचित चेष्टा करने पर किसी को दबाने के लिए क्रोधपूर्वक कटु बाते कहना।

अ० [हिं० रपटना] तेज दौडना।

डपोर-संख—पु० [अनु० डपोर=बडा+सख] १ ऐसा व्यक्ति जो बातें तो लबी-चौडी हाँकता हो पर करता कुछ भी न हो। २ डील-डौल का बडा, पर मूर्ख।

डप्पू—वि० [देश०] लबे-चौडे आकारवाला।

डफ—पु० [अ० दफ] १ एक तरह का बाजा जिस पर चमडा मढा हुआ होता है। २ लावनी गानेवालो का एक तरह का बाजा। चग।

डफर—पु० [अ० ड्रापर] जहाज का एक तरफ का पाल।

डफला—पु० [अ० दफ] डफ नामक बाजा।

पु० [?] असम देश की एक जगली जाति।

डफली—स्त्री० [अ० दफ] छोटा डफ। खजरी।

कहा०—अपनी अपनी डफली अपना-अपना राग=वह स्थिति जिसमे किसी विषय पर सब लोगो के परस्पर विभिन्न मत हो।

डफार†—स्त्री० [अनु०] १ डफ के बजने का शब्द। २ गला फाडकर रोने-चिल्लाने से होनेवाला शब्द।

डफारना—अ० [अनु०] गला फाड़कर चिल्लाना या रोना ।
डफालची—पु०=डफाली ।
डफाली—पु० [हिं० डफ] १. डफ बजानेवाला व्यक्ति । २ मुसलमानों का एक वर्ग जो डफ बजाने का पेशा करता है ।
डफोरना—अ०=डफारना ।
डब—पु० [हिं० डब्बा] १ कमर पर पहनी हुई धोती, लुंगी आदि का पल्ला जिसमे रुपए-पैसे आदि लपेटकर रखे जाते है ।
मुहा०—(कोई चीज) डब करना=(क) कमर मे खोंसकर या और किसी प्रकार अपने अधिकार या हाथ मे करना । (ख) किसी को अपने अधीन या वश मे करना । डब पकड़कर कुछ कराना=जोर से कुछ काम कराना । जैसे—रुपया कैसे नहीं देगा, डब पकड़कर लूँगा ।
२ जेब । ३ थैला । ४ वह चमड़ा जिससे कुप्पे बनाये जाते हैं ।
डबकना—स० [हिं० डब] दबा या पीटकर कटोरी या कटोरे की तरह गहरा करना ।
अ० १ शरीर के किसी अंग मे टीस या रह-रहकर दरद होना । २ लँगड़ाकर चलना ।
अ० [?] आँखों मे आँसू भर आना । डबडबाना ।
डबकौंहा—वि० [अनु०] [स्त्री० डबकौंही] (नेत्र) जिसमे आँसू उतर आ भर आये हो । डबडबाता हुआ ।
डबडबाना—अ० [अनु०] (नेत्रों का) अश्रुपूर्ण होना । आँसुओं से भर आना ।
डबरा—पु० [स० दभ्र=समुद्र या झील] [स्त्री० अल्पा० डबरी] १ गंदे पानी का छिछला लंबा गड्ढा । २ वह खेत जिसमे आस-पास का पानी आकर जमा होता हो और इसी लिए जो जड़हन धान बोने के लिए उपयुक्त हो । ३ खेत का वह कोना जो जोताई मे यों ही या बिना जोता हुआ छूट गया हो ।
डबरी—स्त्री० [हिं० डबरा] छोटा गड्ढा या ताल ।
†स्त्री० दे० 'ढिबरी' ।
डबल—वि० [अं०] १ दोहरा । २. दो-गुना । दूना ।
पु० एक पैसे का ताँबे का पुराना सिक्का ।
डबल रोटी—स्त्री० [अं० डबल+हिं० रोटी] खमीर उठाकर पकाई हुई एक प्रकार की बड़ी और मोटी रोटी । पाव रोटी ।
डबला—पु० [देश०] मिट्टी का पुरवा । कुल्हड़ ।
डबा†—पुं०=डिब्बा ।
डबिया†—स्त्री०=डिबिया (डिब्बी) ।
डबिरना†—स० [देश०] भेड़ों को खेत मे बाहर निकालना । (गड़ेरिये)
डबी—स्त्री०=डिब्बी ।
डबुलिया†—स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोटा पुरवा । कुल्हिया ।
डबोना—स०=डुबाना ।
डब्ब†—पु०=डब ।
डब्बल—पु०=डबल ।
डब्बा—पु०=डिब्बा ।
डब्बू—पु० [हिं० डिब्बा] खाने की चीजें रखने का एक प्रकार का डिब्बा या ढकनेदार कटोरा । कटोरदान ।

डभकना†—अ० [अनु०] १. जल मे इस प्रकार बार-बार डूबना-उतराना कि डभ-डभ शब्द हो । २. इतना भर जाना कि बाहर निकलने लगे । छलकना । उदा०—बदन पियर जल डभकहिं नैना ।—जायसी । ३. जी भरकर कुछ खाना या पीना ।
डभका—पु० [देश०] १. कुछ-कुछ भुना हुआ चना, मटर आदि । कोहरा । २ कूएँ का ताजा या तुरत का निकाला हुआ पानी ।
डभकाना—स० [?] कोई चीज इस प्रकार पानी मे डुबाना कि डभ-डभ शब्द हो ।
डभकौंहा—वि० [अ०] [स्त्री० डभकौंही] डभ-डभ शब्द करता हुआ । २ इतना भरा हुआ कि छलकने लगे । डबडबाता हुआ । जैसे—(आँसुओं से भरी हुई) डभकौंही आँखें ।
डभकौरी—स्त्री०=डुभकौरी ।
डम—पु० [स० ड=भाँति√मा (मापना)+क] पुराणानुसार लेट पिता और चाण्डाल माता से उत्पन्न एक वर्ण संकर जाति ।
डमर—पु० [सं० ड=त्रास+मर=मृत्यु, नृ० त०] १ दो गाँवों के बीच मे होनेवाली लड़ाई । २ उत्पात । उपद्रव । ३. हलचल । ४ भगदड़ ।
डमरु—पु० [स० डम√ऋ (प्राप्ति)+कु] १ हाथ मे हिलाकर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो बीच मे पतला होता है और जिसके दोनों सिरे अधिक बड़े तथा चौड़े होते है और जिन पर चमड़ा मढ़ा होता है ।
विशेष—इसके बीच मे गाँठदार दो रस्सियाँ लगी रहती है जो चमड़े पर आघात करती है जिससे शब्द उत्पन्न होता है ।
२ उक्त आकार-प्रकार की कोई ऐसी वस्तु जिसका बीचवाला भाग पतला और दोनों सिरे चौड़े या मोटे हो । दे० 'डमरु-मध्य' । ३ दंडक वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ लघुवर्ण होते हैं ।
डमरुआ—पु० [स० डमरु] घेघा नामक रोग ।
डमरुका—स्त्री० [स० डमरु+कन्—टाप्] हाथ की एक तरह की तान्त्रिक मुद्रा ।
डमरु-मध्य—पु० [ब० स०] १ कोई ऐसा पदार्थ जिसका मध्य भाग डमरु के मध्य भाग की तरह पतला हो और दोनों सिरे अधिक चौड़े, बड़े या विस्तृत हो । जैसे—भूगोल मे जल-डमरु-मध्य, स्थल-डमरु-मध्य । २ स्थल का वह पतला या सँकरा खंड जिसके दोनों ओर लंबे-चौड़े भूखंड हो । दे० 'स्थल-डमरु-मध्य' ।
डमरु-यंत्र—पु० [उपमि० स०] दो हँडियों के मुँह जोड़कर बनाया जानेवाला एक उपकरण जिसका उपयोग धातुओं, औषधों आदि के रस फूँकने मे होता है । (वैद्यक)
डमरू—पु० दे० 'डमरु' ।
डयन—पु० [स० डी (उड़ना) +ल्युट्—अन] १ हवा मे उड़ने की क्रिया या भाव । उड़ान । २ पालकी ।
पु० =डैना (पख) ।
डर—पु० [स० दर] १. मन का वह क्षोभ या विकलता पूर्ण अनुभूति जो किसी प्रकार के उपस्थित या भावी कष्ट, विपत्ति, संकट आदि की आशंका से होती है । २ किसी बड़े या श्रद्धेय व्यक्ति से कुछ कहने अथवा उसके समक्ष उपस्थित होने के संबध मे होनेवाला संकोच । जैसे—दादा

से कुछ कहने मे डर लगता है। ३. भविष्य के सम्बन्ध मे किसी चिंता के कारण होनेवाली बेचैनी। आशका। जैसे—हमे डर है कि कही लडका खो न जाय। ४. वह चीज या बात जिससे कोई डरे अथवा किसी को डराया जाय। जैसे—बच्चे को मारना नही चाहिए, उसके लिए तो आँख का डर काफी है।

डर-डंबर†—पु०=मेघ।

डरना—अ० [हिं० डर से] १ किसी उपस्थित या भावी कष्ट, विपत्ति, सकट आदि की आशका से क्षुब्ध तथा विकल होना। जैसे—बीमारी या मौत से डरना। २ सकोचपूर्वक कुछ करने या कहने से पीछे हटना। जैसे—कचहरी जाने से डरना। उदा०—जेहि तेहि भाँति डरो रहौ, परो रहौ दरबार।—बिहारी। ३ किसी चिंता के कारण बेचैन होना।
संयो० क्रि०—जाना।
*अ० [हिं० डलना] १ =डलना (डाला जाना)। २ पडा रहना।

डरपना†—अ०=डरना।

डरपाना†—स०=डराना।

डरपोक—वि० [हिं० डरना+पोकना] जो (साहस के अभाव के कारण) बहुत जल्दी डर जाता हो। भीरु।

डरपोकना—वि०=डरपोक।

डरवाना—स०=डलवाना।
†स०=डराना।

डरा†—पु० [स्त्री० डरी] =डला। उदा०—छिनकु छ्वाइ छवि गुर-डरी छलै छबीलै छैल।—बिहारी।

डराकू†—वि०=डरपोक।

डरा-डरी†—स्त्री० [हिं० डर] बार-बार मन मे होनेवाला डर या भय।

डराना—स० [हिं० डरना] ऐसा काम करना जिससे कोई डर जाय। किसी के मन मे डर उत्पन्न करना।
†अ०=डरना।

डरापना*—वि०=डरावना।
स०=डरपाना (डराना)।

डरावना—वि० [हिं० डर+आवना (प्रत्य०)] [स्त्री० डरावनी] (चीज या बात) जो दूसरे के मन मे डर उत्पन्न करे। भय-कारक। जैसे—डरावनी आँखे, डरावनी रात।
†स०=डराना।

डरावा—पु० [हिं० डराना] १ ऐसी बात जो किसी को डराने या भय-भीत करने के लिए कही जाय।
क्रि० प्र०—दिखाना।
२ पक्षियो आदि को डराकर फलदार वृक्षो, फसल आदि से दूर रखने के लिए बनाई जानेवाली विकराल आकृति।

डराहुका†—वि०=डरपोक।

डरिया†—स्त्री०=डलिया।
†स्त्री०=छोटी डार या डाल।

डरीला†—वि० [हिं० डार] जिसमे, डारे (डालें या शाखाएँ) हो। जैसे—डरीला पेट।
† वि०=डरपोक। जैसे—डरीला स्वभाव।

डरैला—वि० [हिं० डर] १ डरानेवाला। डरावना। २. डरपोक।

डल—स्त्री० [स० तल्ल] १ झील। २ कश्मीर की एक प्रसिद्ध बहुत बडी झील का नाम।
†पु०=डला।

डलई†—स्त्री०=डलिया।

डलक—पु० [स०] बडी डलिया।

डलना—अ० [हिं० डालना का अ० रूप] १ किसी आधान या पात्र मे किसी चीज का गिराया, छोडा या रखा जाना। डाला जाना। पडना। २ किसी आधार या तल पर किसी चीज का गिराया या छोडा जाना। जैसे—बालो मे तेल डलना। ३ किसी चीज का दिया, रखा या सौपा जाना। जैसे—(क) चिडियो को दाना डलना। (ख) शस्त्र या हथियार डलना। ४ किसी कार्य या बात का किसी के जिम्मे किया जाना। पडना। जैसे—किसी के सिर कोई भार डलना। ५ पहना या पहनाया जाना। ६ किसी चीज का लटकाया जाना। ७ लगना या लगाया जाना। ८ घुसाया या घुसेडा जाना। ९ किसी चीज के ऊपर उसको ढकने के उद्देश्य से कुछ ओढाया, पसारा या फैलाया जाना। १० अकित होना या किया जाना।

डलवा†—पु०=डला (बडी डलिया)।

डलवाना—स० [हिं० 'डालना' का प्रे०] डालने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ डालने मे प्रवृत्त करना।

डला—पु० [स० दल] [स्त्री० अल्पा० डली] किसी जमी हुई या ठोस चीज का टुकडा। जैसे—नमक या मिश्री का डला, पत्थर या मिट्टी का डला।
पु० [स० डलक] [स्त्री० अल्पा० डलिया] बाँस, बेंत आदि की पतली फट्टियो या कमचियो से बनाया हुआ बडा आधान या पात्र जो प्राय थाल के आकार का होता है।

डलिया—स्त्री० [हिं० डला का स्त्री० अल्पा०] १ छोटा डला या टोकरा। दौरी। २ एक प्रकार की तश्तरी।

डली—स्त्री० [हिं० डला का स्त्री० रूप] १ छोटा टुकडा या ढेला। खड। जैसे—नमक की डली। २ सुपारी।
स्त्री०=डलिया ('डला' का अल्पा० रूप)।

डल्लक—पु० [स०] बाँसो आदि का डला या दौरा।

डल्ला†—पु०=डला।

डवँरू—पु०=डमरु।

डवरा—पु० [?] एक तरह का कटोरा।

डवित्य—पु० [स०] काठ का बना हुआ हिरन (खिलौना)।

डस—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की शराब। २ वह डोरी जिसमे तराजू के पलडे बँधे रहते हैं। ३ कपडे के थान का वह छोर जिसमे ताने-बाने के पूरे तागे नही कसे रहते। छोर। दसी।
†स्त्री०=डसन।

डसन—स्त्री० [हिं० डसना] १ डसने की क्रिया या भाव। २ डसने या डक मारने का ढग।

डसना—स० [स० दशन] १ किसी जहरीले कीडे का किसी को इस प्रकार काटना कि उसके शरीर मे जहर का प्रवेश हो जाय। जैसे—साँप का डसना। २ डक मारना।

डसवाना—स०=डसाना ।
डसा†—पु० [स० दश] डाढ । चौभड ।
डसाना†—स० [हिं० डसना का प्रे०] किसी को डसने मे प्रवृत्त करना ।
†स० [हिं० डासना] विछौना विछाना । उदा०—जागे पुनि न डसैहौं ।—तुलसी ।
डसी†—स्त्री० [?] १ पहचान कराने के लिए रखी या दी जानेवाली चीज । निशानी । २ याद कराने के लिए दी जानेवाली चीज । निशानी ।
†स्त्री० दे० 'दसी' ।
डस्टर—पु० [अ०] कुरसी, मेज, दरवाजो आदि की धूल झाडने का कपडा । झाडन ।
डहँक—वि० [?] पाँच और एक । छ । (दलाल)
डहँकलाय—वि० [?] सोलह । (दलाल)
डहकन—स्त्री० [हिं० डहकना] डहकने की क्रिया या भाव ।
†वि० जितना चाहिए उतना । भर-पूर । यथेष्ट ।
डहकना—अ० [हिं० डह-डह से] १. कलियो, फूलो आदि का विकसित होना । फूलना । २. शोभा से युक्त होकर अच्छी तरह चारो ओर फैलना । जैसे—पूर्णिमा की रात मे चाँदनी डहकना । ३. हुकार भरते हुए गरजना । ४ डह-डह शब्द करते हुए जोर से रोना । ५ किसी प्रकार के धोखे या लालच मे पडकर कष्ट या हानि उठाना । ठगा जाना ।
स० १. छल या धोखा करना । भुलावे मे रखकर मूर्ख बनाना । २ ललचाकर भी न देना ।
अ० [देश०] छितराना । फैलाना ।
डहकाना—अ० [हिं० डहकना] किसी के धोखे या भुलावे में आकर कुछ गवाँना या अपनी हानि करना । ठगा जाना ।
स० १ किसी को धोखे मे रखकर अपना लाभ करना । डहकना । (पव०) २. कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर भी न देना ।
डहडहा—वि० [डह-डह से अनु०] [स्त्री० डहडही] १ (पौधा) जो हरा-भरा हो । जो सूखा या मुरझाया हुआ न हो । २ (व्यक्ति) जो खूब प्रसन्न हो । ३. टटका । ताजा ।
डहडहाट*—स्त्री० [हिं० डहडहा] १ डहडहे होने की अवस्था या भाव । २ हरियाली । ३ प्रसन्नता ।
डहडहाना—अ० [हिं० डहडहा] १ हराभरा होना । लहलहाना । २ आनदित या प्रफुल्लित होना ।
स० १ लहलहा या हरा-भरा करना । जैसे—एक ही वर्षा ने पेड, पौधो को डहडहा दिया । २ आनन्दित या प्रफुल्लित करना ।
डहडहाव—पु०=डहडहाट ।
डहन—पु० [म० उड्डयन=उडना] डैना । पख । पर ।
†पु०=दहन ।
†स्त्री०=डाह । (पव०)
डहना—अ० [म० दहन] १ जलना । भस्म होना । २ कुढना । चिढना ।
स० १ भस्म करना । जलाना । २ किसी के मन मे कुढन या डाह उत्पन्न करना । डाहना ।
†पु०=डैना (पख या पर) ।
डहर—स्त्री० [हिं० डगर] १ पथ । मार्ग । रास्ता । २. आकाशगगा ।
डहरना—अ० [हिं० डहर] १. रास्ता चलना । २ टहलना ।
डहराना—स०=चलाना ।
डहरिया†—स्त्री० १.=डेहरी । २ दहलीज ।
डहार*—पु० [हिं० डाहना] १ ईर्ष्या करनेवाला व्यक्ति । ईर्ष्यालु । २ दु ख देने या सतप्त करनेवाला व्यक्ति । ३ ऐसी घटना या वात जिससे कोई दु खी या सतप्त होता हो ।
डहुडहु—पु० [स० डहु-डहु, √ दह् (जलाना) +कु, निपा० सिद्ध] १. लकुच । २ बड़हर ।
डाँक—स्त्री० [हिं० दमक, दवँक] ताँवे या चाँदी का कागज की तरह का वह पतला पत्तर जो नगीनो के नीचे उनकी चमक बढाने के लिए लगाया जाता है ।
स्त्री० [हिं० डाँकना] १ डाँकने या लाँघने की क्रिया या भाव । २ कै । वमन ।
†स्त्री०=डाक ।
† पु० १ =डक । २ =डंका ।
डाँकना—स० [स० √तक से] १ रास्ते मे पडी हुई किसी चीज अथवा होनेवाले किसी गड्ढे को कूदते हुए लाँघना । २ (खेल मे) किसी रोक को दौडते तथा कूदते हुए पार करना । जैसे—रस्सी डाँकना । ३ वीच का कुछ अश छोडते हुए उसके आगे या पार जाना ।
अ० [हिं० डाँक] वमन करना । उलटी करना ।
डाँग†—स्त्री० [स० टक] १ किसी चीज का ऊपरी वडा या भारी भाग । २ पहाड की ऊँची चोटी । ३ पहाडी । ४ जगल । वन । ५ उछल-कूद । ६ छलाँग । फलाँग । ७ कोई उद्देश्य सिद्ध होने का अवसर या सुयोग जिसकी प्रतीक्षा मे रहा जाय । ताक । (बुन्देल०) उदा०—सागर सिह इसी डाँग मे हैं ।—वृन्दावनलाल । ८ वहुत वडा डडा या लाठी । सोटा । (पश्चिम)
डाँगर—वि० [?] १ इतना दुवला-पतला कि शरीर की हड्डियाँ तक दिखाई दे । २ वेवकूफ । मूर्ख ।
पु० १ चौपाया । डगर । २ मरा हुआ पशु या उसकी लाश । (पूरब) ३. एक प्रकार की छोटी जाति ।
डाँगा—पु० [स० दडक] १. जहाज के मस्तूल मे रस्सियो को फैलाने के लिए आडी लगी हुई वरन । २ लगर के बीच का मोटा छड़ । (लश०)
डाँट—स्त्री० [स० दान्ति=दमन, वश] १ किसी को डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव । २. क्रोध मे आकर कही जानेवाली ऐसी कडी वात जो भविष्य मे किसी को सचेत रखने के लिए कही जाय ।
क्रि० प्र०—वताना ।
३ उक्त प्रकार की वाते करते हुए किसी की उच्छृखलता, उद्दडता आदि नियत्रित रखने के लिए उसके साथ किया जानेवाला आतकपूर्ण व्यवहार । जैसे—लड़को को डाँट मे रखना ।
क्रि० प्र०—मानना ।
मुहा०—किसी को डाँट में रखना=वश या शासन मे रखना ।

डांटना—स० [हिं० डांट से] क्रोध मे आकर किसी दोषी को कोई कडी बात ऊँचे स्वर मे कहना।
स० क्रि० —देना।
डांठ—पु० [स० दड] डठल।
डांड—पु० [स० दडक, प्रा० दडअ] १ लडकी का डडा विशेषत सीवा डंडा। जैसे—झडे का वाँस, छत की धरन आदि। २. किसी चीज में उसे चलाने, पकडने आदि के लिये लगा हुआ डडा। दस्ता। हत्था। ३. नाव खेने का डांड। ४ गदका। ५ कोई ऐसी चीज जो एक सीध मे चली गई हो। जैसे—रेखा, मेड, रीढ़ की हड्डी आदि। ६ करघे मे वह ऊँची लकडी जिसमे ऊरी फँसाई जाती है। ७ ऊँचा स्थान। ८ समुद्र का ढालुआँ रेतीला किनारा। ९ सीमा। हद। १० वह मैदान जिसमे का जगल कट गया हो। ११ कमर। १२ क्षति-पूर्ति के रूप मे दिया जानेवाला धन या वस्तु। दड। १३ अर्थ-दड। जुरमाना। १४ दे० 'कट्ठा' (लम्बाई का मान)।
डांड़ना—स० [हिं० डांड+ना (प्रत्य०)] अर्थ-दड से दडित करना। जुरमाना करना।
†स०=डांटना।
डांड़र—पु० [हिं० डांठ] वाजरे की फसल कट जाने पर खेत मे वची रह जानेवाली उसकी खूंटी।
डांडा—पु० [हिं० डांड] १ डडा। २ वह वडा डडा जिसके आगे चप्पू लगा रहता है और जिसकी सहायता से नाव खेते या चलाते हैं। डांडा। ३ सीमा। हद।
पद—डांडा मेंड़ा=। (देखें) **होली का डांडा**= लकड़ियों और घास-फूस आदि का वह ढेर जो होली की रात को जलाने के लिए पहले से ही अपने गाँव या मुहल्ले की सीमा पर इकट्ठा किया जाता है।
४ समुद्र का ढालुआँ रेतीला किनारा। (लश०)
डांडा-मेंड़ा—पुं० [हिं० डांड+मेड] १ खेत, गाँव आदि की वह सीमा या हद जिस पर डांडा या मेड वनी हो। २ ऐसी स्थिति जिसमे न तो विशेष आर्थिक लाभ ही हो और न विशेप हानि ही। जैसे—हम तो समझते थे कि इस सौदे मे वहुत घाटा होगा; पर चलो, डांडे-मेडे रह गये। ३ वीच की ऐसी स्थिति जिसमे आपस के लड़ाई-झगडे का उतना ही अवकाश या सभावना हो जितना अवकाश खेतो या डांडो का साथ-साथ या एक ही जगह पडने से होता है।
डांडा-मेंड़ी—स्त्री०=डांडा-मेड़ा।
डांड़ा-सहेल—पु० [देश०] साँपो की एक जाति।
डांड़ी—स्त्री० [हिं० डांड] १ पतली लवी लकडी। २ वृक्ष आदि की पतली लवी शाखा। टहनी। ३ पौधो का वह लवा डठल जिसमे फूल, फल आदि लगते हैं। ४ व्यवहार मे लाये जानेवाले उपकरणो का वह पतला लवोतरा अश, जिसे पकडकर उस उपकरण को चलाया या हिलाया-डुलाया जाता है। जैसे—कलछी या पखे की डांडी। ५ तराजू की डडी। ६ हिंडोले मे की वे चारो लकड़ियाँ या डोरी की लडें जिन पर वैठने की पटरी रखी जाती है। ७ डडे मे वँधी हुई एक तरह की झोली के आकार की पहाडी सवारी। झप्पान। ८ जुलाहो की वह लकडी जो चरखी की थवनी मे डाली जाती है। ९ शहनाई का वह निचला भाग जिसमे से हवा वाहर निकलती है। १० सीधी रेखा। ११ मर्यादा। १२. चिडियो के वैठने का अड्डा। उदा०—औ सोनहा सोने की डांडी।—जायसी। १३ अनवट नामक गहने का वह भाग जो दूसरी और तीसरी उँगलियो के वीच मे रहता है और उसे घूमने से रोकता है।
पु० १ डांड खेनेवाला आदमी। (लश०) २ सुस्त आदमी।
डांढ़री—स्त्री० [स० दग्ध; हिं० डाढा] मटर की भुनी हुई फली।
डांयरा—पु० [स० डिंव] [स्त्री० डांवरी] लडका। वेटा। पुत्र।
डांवरू—पु० [हिं० डांवरा] १ लडका। पुत्र। २ वाघ का वच्चा।
†पु०=डमरु।
डांवू—पु० [देश०] दलदल मे होनेवाला एक तरह का नरकट।
डांभना†—स०=दागना।
डांरी†—स्त्री०=डोली।
डांवरा—पु० [स्त्री० डांवरी] =डांवरा।
डांवां-डोल—वि० [डांवां (अनु०)+हिं० डोलना] १ साधारणतया अचल या स्थिर रहनेवाली वस्तु के सवध मे, जो सहसा किसी आघात के फलस्वरूप इधर-उधर हिलने-डुलने लगे। जैसे—हिलोर के कारण नाव या भूकप के कारण पृथ्वी का डांवांडोल होना। २ व्यक्ति अथवा उसके चित्त के सवध मे, जो अधिक चिंतित या भावुक होने के कारण किसी निश्चय तक न पहुँच पाता हो। ३ स्थिति के सवध मे, जिसमे दो विभिन्न पक्षो मे सतुलन न होने के कारण किसी परिणाम का ठीक-ठीक अनुमान न होता हो। जैसे—व्यापार का डांवांडोल होना।
डांशपाहिड़—पु० [देश०] सगीत मे रुद्रताल के ग्यारह भेदो मे से एक जिसमे ५ आघात के पश्चात् एक-एक शून्य होता है।
डांस—पु० [स० दश] १ वडा मच्छर। दश। २. एक तरह की मक्खी जो पशुओ को काटती तया उन्हे तग करती है। ३ कुकरौंछी।
डांसर—पु० [देश०] इमली का वीज। चीयाँ।
डा—पु० [अनु०] सितार का एक वोल। उदा०—डा डिड डा डा डा डा डा।
डाइन—स्त्री० [स० डाकिनी] १ भूत-प्रेत योनि की स्त्री। भूतनी। २ वह स्त्री जिसकी कुदृष्टि के प्रभाव से कोई मर जाता हो या वीमार पड़ जाता हो। टोनहाई। ३ कुरूपा और डरावनी स्त्री। ४ वहुत ही दुष्ट प्रभाववाली तथा क्रूर स्त्री।
डाक—स्त्री० [हिं० डांकना] १ डांकने की क्रिया या भाव। २. सवारी का ऐसा प्रवन्ध जिसमे हर पडाव पर वरावर जानवर या यान आदि वदले जाते हो।
मुहा०—डाक वैठाना=शीघ्र यात्रा के लिए स्थान-स्थान पर सवारी वदलने की चौकी नियत करना। **डाक लगना**=(क) शीघ्र संवाद पहुँचाने या यात्रा करने के लिए मार्ग मे स्थान-स्थान पर आदमियों या सवारियो का प्रवन्ध होना। (ख) किसी चीज के आने या जाने का क्रम वरावर चलता रहना। **डाक लगाना**=डाक वैठाना।
३ पत्रो, वडलो आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने की सरकारी व्यवस्था। ४ उक्त व्यवस्था द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने या पहुँचाया जानेवाला पत्र या सामग्री।
स्त्री० [अनु०] कै। वमन।
स्त्री० [स० डक्क या व० डाकिवा] १ पुकार। २. नीलाम की वोली।

पु०[अ०] वंदरगाह का वह विशिष्ट अंश जहा जहाजों पर का माल लादा-उतारा जाता है। गोदी।

डाक-खाना—पु० [हि० डाक+फा० खान] वह सरकारी कार्यालय या उसका भवन जो डाक द्वारा चिट्ठियाँ आदि बाहर भेजवाने तथा बाहर से आई हुई चिट्ठियाँ आदि बँटवाने की व्यवस्था करता है।

डाक-गाडी—स्त्री०[हि०] वह रेल-गाडी जो साधारण गाडियो से बहुत तेज चलती है, केवल बडे-बडे स्टेशनो पर रुकती है तथा जिसमे डाक लाने ले जाने की भी व्यवस्था होती है।

डाकघर—पु०=डाकखाना।

डाक-चौकी—स्त्री०[हि०] १ प्राचीन तथा मध्य काल मे वह स्थान जहाँ कई स्थानो या प्रदेशों के हरकारे चिट्ठियाँ लाते थे तथा अन्य स्थानो से आई हुई चिट्ठियाँ छाँटकर ले जाते थे। २ वह स्थान जहाँ डाक के घोडे, सवारियाँ आदि आगे जाने के लिए बदली जाती थी।

डाकना—स०[हि० डॉकना] फांदना। लाँघना।

अ० कै करना। वमन करना।

†स०[हि० डाक] १ पुकारना। २. नीलाम के समय दाम की बोली बोलना।

डाक-बँगला—पु०[हि०] वह सरकारी भवन जो मुख्य रूप से दौरे पर जानेवाले सरकारी अधिकारियो के ठहरने के लिए बने होते हैं।

डाक-महसूल—पु०[हि० डाक+अ० महसूल] डाक के द्वारा कोई चीज भेजने का महसूल।

डाकर—पु०[देश०] १ सूखे हुए तालो की चिटखी तथा सूखी मिट्टी। †२ कडी किंतु उपजाऊ भूमि।

डाक-व्यय—पु०[हि० डाक+स० व्यय]वह व्यय जो डाक द्वारा कोई चीज भेजने पर करना पडता हो। डाक-महसूल।

डाका—पु०[हि० डाकना=कूदना या स० दस्यु] दल-बल-सहित बल-पूर्वक तथा डरा-धमकाकर लूट-मार करने के लिए किया जानेवाला धावा।

क्रि० प्र०—पडना।—मारना।

डाकाजनी—स्त्री०[हि० डाका+फा० जनी] डाके डालने का काम।

डाकिन—स्त्री०=डाकिनी।

डाकिनी—स्त्री० [सं० ड (त्रास) √अक् (वक्रगति)+णिनि—ङीप्] १ एक पिशाची या देवी जो काली के गणो मे समझी जाती है। २ भूत या प्रेत योनि की स्त्री।

डाकिया—पु०[हि० डाक+इया (प्रत्य०)] वह सरकारी कर्मचारी जो घर-घर डाक द्वारा आई हुई चिट्ठियाँ आदि पहुँचाने का काम करता है।

डाकी—स्त्री०[हि० डाक] वमन। कै।

वि० [?] १ बहुत अधिक खानेवाला। २ प्रचंड।

डाकू—पु०[हि० डाकना या स० दस्यु] वह व्यक्ति जो दूसरो के यहाँ पहुँच-कर और उन्हे डरा-धमकाकर या मार-पीटकर उनसे अवैध रूप से धन छीन लेता हो।

डाकोर—पु०[स० ठक्कुर, हि० ठाकुर] १ ठाकुर। देवता। २ विष्णु भगवान। (गुजराती)

डाक्टर—पु०[अ०] १ किसी विद्या या विषय का आचार्य या पूर्ण पडित। २ उक्त प्रकार के आचार्य या पूर्ण पडित की उपाधि। ३. लोक-व्यवहार मे वह व्यक्ति जो पाश्चात्य शैली मे रोगियो की चिकित्सा करता हो। ४ वह व्यक्ति जिसे उक्त प्रकार की उपाधि मिली हो।

डाक्टरी—स्त्री० [अ० डाक्टर+ई (प्रत्य०)] १ डाक्टर होने की अवस्था, पद या भाव। २ डाक्टर का काम या पेशा। ३ पाश्चात्य ढग की चिकित्सा-प्रणाली या उसका शास्त्र।

डाक्तर—पु०=डाक्टर।

डाख†—पु०=ढाक (पलाश)।

डाग—स्त्री०[स० दडक] डुग्गी, ढोल, नगाडा आदि बजाने की लकडी।

मुहा०—**डाग देना**=डुग्गी,नगाडे आदि पर चोट लगाकर उनसे शब्द उत्पन्न करना।

डागरि—स्त्री०=डगर।

डागा—पु०=डाग।

डागुर—पु०[देश०] जाटो की एक जाति या वर्ग।

डाच—पु० [?] मुँह। मुख। उदा०—बवक्कत डाच कितेकन वैन। मनो वड वक्कर टक्कर मैन।—कविराजा सूर्यमल।

डाट—स्त्री०[स० दान्ति] १ दीवार या ऐसी ही किसी और चीज को गिरने से बचाने या रोकने के लिए सामने या वेडे बल मे लगाई जानेवाली चाँड या रोक। २ किसी चीज का छेद या मुँह बन्द करने के लिए उसमे कसकर जगाई, बैठाई या लगाई जानेवाली वस्तु। ३. वह ईट या पत्थर जो मेहराब के बीचो-बीच दोनो ओर की ईटो आदि को यथा-स्थान दृढतापूर्वक जमाये रखने के लिए लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—बैठाना।—लगाना।

४. मेहराब बनाने का वह प्रकार जिसमे दोनो ओर अर्ध-गोलाकार रूप मे ईंटें जोडी या बैठाई जाती हैं।

†स्त्री० दे० 'डाँट'।

डाटना—स०[हि० डाट+ना (प्रत्य०) १. दीवार आदि को गिरने से रोकने के लिए उसमे डाट लगाना। टेक लगाना। २ किसी चीज का छेद या मुँह डाट लगाकर बद करना। ३ एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु अच्छी तरह जमाकर बैठाना या स्थिर करना। जैसे—किसी की ओर निगाह डाटना। ४ कोई चीज अदर घुसाने या धँसाने के लिए उस पर भरपूर दवाव डालना। ५ कसकर ठूसना, दबाना या भरना। ६ खूब अच्छी तरह पेट भरकर कोई चीज खाना। (व्यग्य) ७ ठाठ से या शान दिखलाने के लिए कपडे, गहने आदि पहनना। जैसे—अँगरखा या अँगूठी डाटना। (व्यग्य)

अ० १ डटकर सामने बैठना। २ ठाठ या वेष बनाना।

स० दे० 'डाँटना'।

डाड़ना—स० दे० 'डाँडना'।

अ० दे० 'दहाडना'।

डाढ़†—स्त्री०=दाढ।

डाढ़ना†—स०[स० दग्ध,प्रा०डड्ढ+ना (प्रत्य०)]=दाहना (जलाना)।

डाढ़ा—पु० [स० दग्ध प्रा० डड्ढ] १ दावानल। वन की आग। २ अग्नि। आग। ३ जलन। ताप। ४ दे० 'दाह'।

†पु०=दाढा (बडी दाढी)।

डाढ़ी†—स्त्री०=दाढी। (देखे)

डाढ़ीजार†—पु० दे० 'दारी-जार'।

डाण†—पु०=डाँड (दड या अर्थ-दड)।
डाव†—स्त्री०=डाभ।
डाबक—वि०=डाभक।
डाबर—पु०[स० दभ्र=समुद्र या झील] १ वह गड्ढा या नीची जमीन जिसमे आस-पास का पानी विशेषत बरसाती पानी आकर जमा होता हो। झाँवर। ऐसी जमीन धान के लिए उपयुक्त होती हे। २ छोटा तालाव। ३ गदा या मैला पानी। ४ चिलमची नामक पात्र जिसमे हाथ-मुँह धोने का पानी रहता है।
†वि० १ गँदला। २ मटमैला।
पु० डावरा।
डावर-नैनी—वि० [हिं०] वडी-वडी और सुदर आँखोवाली (स्त्री)।
डावा†—पु०[स्त्री० डावी] =डिब्बा।
डावी—स्त्री०[?] १ फसल का दसवाँ अश जो मजदूरी के रूप मे काटनेवाले मजदूर को दिया जाता है। २ कटी हुई घास, पुआल आदि का पूला।
†स्त्री०=डिविया।
डाभ—स्त्री०[स० दर्भ] १ ऊसर भूमि मे होनेवाली एक तरह की घास। २ कुश। दर्भ। ३ आम के वृक्ष के वे आरभिक अकुर जो कुछ समय वाद मजरी के रूप मे आते है। टोस। मौर। ४ आम की ढेपनी या मुँह से निकलनेवाला तीखा रस। चोप। उदा०—जो लहि अवहि डाभ न होई।—जायसी। ५ कच्चा नारियल जिसके अन्दर का पानी वहुत गुणकारक और स्वादिष्ट होने के कारण पीया जाता है।
†पु०[हिं० डव=कमर] कमर मे वाँधा जानेवाला परताला।
डाभक†—वि० [अनु० डभक-डभक से अनु०] कूएँ से तुरत का निकाला हुआ। ताजा। जैसे—डाभक पानी।
डाभर—पु०=डावर(बरसाती पानी का गड्ढा)।
डाम—पु०=दाम।
डामचा—पु०[देश०] वह मचान जिस पर बैठकर जगली पशु-पक्षियो से फसल की रक्षा की जाती है।
डामर—पु०[स०] १ शिव-प्रणीत माना जानेवाला एक तत्र, जिसके छ भेद है—योग डामर, शिव डामर, दुर्गा डामर, सारस्वत डामर, ब्रह्म डामर और गधर्व डामर। २ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का चक्र जिसके द्वारा दुर्ग के शुभाशुभ फल जाने जाते थे। ३ धूम-धाम। ४. आडवर। ५ ठाठ-वाट। ६ हलचल। ७ चमत्कार। ८ उनचास क्षेत्रपाल भैरवो मे से एक भैरव का नाम। ९ साल वृक्ष का गोद। राल। १० दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का सफेद गोद। ११ एक प्रकार की छोटी मधु-मक्खी। १२ उक्त छोटी मधु-मक्खियो के छत्ते से निकलनेवाला एक प्रकार का गोद या राल। १३ अलकतरा।
†पु० दे० 'डामल'।
पु०=डावर (बरसाती पानी का गड्ढा)। उदा०—यह सच हे कि मनोहर वोला तुम उथले पानी के डामर।—पन्त।
डामल—पु०[अ० दायमुल्दब्स] १ सदा के लिए वदी बनाकर रखने की सजा। २ अपराधियो को दिया जानेवाला देश-निकाले का दड।
डामाडोल—वि०=डाँवाँडोल।
डामिल—पु०=डामल।
डायँ डायँ—क्रि० वि०[अनु०] विना किसी काम या प्रयोजन के। व्यर्थ। जैसे—दिन भर डायँ-डायँ घूमते रहना।
डायन—स्त्री०=डाइन।
डायरी—स्त्री०[अ०] दैनिकी।
डार†—स्त्री०=डाल।
स्त्री०[स० डलक] डलिया।
डारना†—स०=डालना।
डारा—पु०[हिं० डाल] १ वह रस्सी जिस पर कपडे लटकाये या सुखाये जाते है। २ किसी प्रकार का आधार या आश्रय। सहारा।
मुहा०—(किसी के) डारे लगना=किसी के सहारे पर चलना या होना। उदा०—सौंधे के डारे लगी, अली, चली सँग जाइ।—विहारी।
डारियास—पु०[देश०] वावून वदर की एक जाति।
डारी—स्त्री०=डार।
डाल—स्त्री०[स० दारु=लकडी] १ पेड-पौधे आदि के तने मे से निकला हुआ वडा अग जिसमे फल, फूल आदि लगते है। टहनी। शाखा।
पद—डाल का टूटा=(क) डाल से पककर गिरा हुआ (फल)। (ख) विलकुल तुरत या हाल का। विलकुल नया आया हुआ। ताजा। जैसे—डाल का टूटा हुआ स्नातक। (ग) जिसे अभी तक विशेष अनुभव या ज्ञान न हुआ हो। (घ) अनोखा। विलक्षण। **डाल का पका**=(फल) जो पेड की डाल मे लगे रहने की दशा में पका हो। उससे उतारकर पाल मे न पकाया गया हो।
२. किसी चीज मे से निकली हुई उक्त आकार-प्रकार
जैसे—झाड या फानूस की डाल जिसमे
तलवार का फल जो शाखा के रूप मे आ
४ मध्य भारत और मारवाड मे पहना
गहना।
स्त्री० [स० डलक, हिं० डला] १ फल-फूल
चँगेरी। २ वे कपडे, गहने, फल आदि जो
चँगरो आदि मे सजाकर लडकीवालो के यहाँ
हैं।
डालना—स०[हिं० तलन] १ किसी आधान या पात्र
ऊँचाई से गिराना, छोडना, फेकना या रखना।
मे पानी डालना (ख) कडाही मे घी डालना। २
या पात्र मे कोई चीज प्राय सुरक्षा के उद्देश्य
रखना। जैसे—(क) झोले मे पुस्तकें या वोरे मे
(ख) सदूक मे कपडे डालना। (ग) कैदी को जेल मे डा
चीज किसी आधार या तल पर गिराना, छोडना या फेकना।
पेड की जड़ मे पानी डालना। (ख) सिर या वालो मे
४ कोई चीज किसी को देने या सौपने के उद्देश्य से उसके
या गिराना। जैसे—(क) विजयी के आगे हथियार डालना
कुत्ते या विजली को रोटी डालना। ५ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई
वात किसी के जिम्मे करना। जैसे—किसी पर खरच या काम का
डालना। ६ कोई चीज किसी को पहनाना। जैसे—(क) हाथ मे
या पैर मे जूता डालना। (ख) कन्या का वर के गले मे जय-

डालना। ७. कोई चीज किसी पर से या किसी मे लटकाना। जैसे—(क) पेड़ की डाली जर झूला डालना। (ख) पानी निकालने के लिए कूएँ मे बाल्टी डालना। ८. कोई चीज किसी मे लगाना। जैसे—आँखो मे काजल या सुरमा डालना। ९. घुसाना। घुसेडना। १०. किसी चीज को ढकने के लिए उसके ऊपर कोई दूसरी चीज फैलाना। जैसे—(क) सिर पर चादर डालना। (ख) आग पर पानी या राखी डालना। ११ वस्त्र आदि फैलाना। जैसे—(क) बिछे हुए गद्दे पर चादर डालना। (ख) टँगने पर सूखने के लिए गीली धोती डालना। १२. (स्त्री को रखेली के रूप मे) घर मे रख लेना। १३. परित्याग करना। १४ पशुओं के सम्बन्ध में गर्भपात करना। १५. किसी मद या विभाग मे सम्मिलित करना। जैसे—खाते में किसी के नाम रकम डालना।

विशेष—संयोज्य क्रिया के रूप मे 'डालना' कुछ सकर्मक क्रियाओं के साथ लगकर यह सूचित करता है कि कर्त्ता वह काम या क्रिया पूरी तरह से समाप्त करके उससे अलग या निवृत्त हो चुका है अथवा वह काम या चीज उसने अपने से बिलकुल अलग या दूर कर दी है। जैसे—खा डालना, दे डालना, बेच डालना, मार डालना आदि।

डालर—पु०[अं०] एक अमेरिकन सिक्का जो भारतीय ३ रुपयो से कुछ अधिक मूल्य का होता है।

डाला†—पु०[हिं० डला] बडी चँगेर या डलिया।

डाला छठ—स्त्री०[हिं०] कार्तिक शुक्ला छठ, जिस दिन बडी चँगेर में फल आदि रखकर उदित होते हुए सूर्य की पूजा की जाती है।

डालिम—पु०=दाडिम (अनार)।

डाली—स्त्री०[हिं० डाला या डला] १. छोटा डला या डाला। डलिया। २ वह डलिया जिसमे कोई चीज विशेषत. फल, फूल, मिठाइयाँ आदि रखकर किसी के यहाँ उपहार या भेंट स्वरूप भेजी जाती हैं। ३ उक्त प्रकार से भेजा जानेवाला उपहार या भेंट।

क्रि० प्र०—भेजना।—लगाना।

४. दाँई हुई फसल का अनाज हवा मे उडाकर भूसे से अलग करने की क्रिया या भाव। ओसाने या बरसाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

स्त्री०[हिं० डाल] वृक्ष की छोटी या पतली टहनी।

डाव†—पु०[हिं० दाँव का पुराना रूप] १ दाँव। बाजी। २ अवसर। मौका। उदा०—राम भगति बिनु जम को डाव।—कबीर।

डावड़ा—पु०[देश०] पिठवन। पृश्नपर्णी।

पु०[स्त्री० डावडी] =डावरा (लडका)।

डावरा—पु०[सं० डिंब ?] [स्त्री० डावरी] १ पुत्र। बेटा। २ बालक। लडका।

डास—पु०[देश०] चमारो का एक औजार जिससे वे चमडे का निचला भाग खुरचकर साफ करते है।

डासन—पु०[सं० दर्भ, हिं०डाभ+आसन] १ वह चीज जिसे बिछाकर उसके ऊपर बैठा जाय। २ बिछौना। ३ शय्या।

पु०[हिं० डसना] वह जो डसे अर्थात् सर्प। उदा०—डासन डासन भयउ पियारी।—जायसी।

डासना—स० दे० 'बिछाना'।

स०=डसना।

डासनी—स्त्री०[हिं० डासन] चारपाई। शय्या।

डाह—स्त्री०[सं० दाह] १ मन मे होनेवाली वह जलन जो ईर्ष्याजन्य हो। २ ईर्ष्या। (देखें)

डाहना—स० [सं० दाहन] १ किसी के मन मे डाह उत्पन्न करके उसे दुःखी करना। २ बहुत अधिक कष्ट देना या दुःखी करना। दाहना।

डाहुक—पु०[देश०] टिटिहरी की तरह का एक जल-पक्षी।

डिंगर—पु०[सं० डगर+पृषो० सिद्ध] १. मोटा आदमी। २. दुष्ट या नीच प्रकृति का आदमी। ३. गुलाम। दास।

पु० दे० 'ठिगुरा'।

डिंगल—स्त्री०[?] मध्ययुग मे राजस्थान मे बोली जानेवाली एक भाषा जिसमे यथेष्ट साहित्य मिलता है।

वि०[सं० डिंगर] दूषित और नीच।

डिंगरा—पु०[देश०] एक तरह का चीड (वृक्ष)।

डिंडस—पु० [सं० टिंडिश] टिंडा। डेंड़सी।

डिंडिभ—पु०[सं०] जल मे रहनेवाला साँप। डेड़हा।

डिंडिम—पु०[सं० डिंडि√मा (मापना)+क] १ पुरानी चाल की एक प्रकार की डुग्गी। २ करौंदे की झाडी और उसका फल।

डिंडिमी—स्त्री०=डिंडिम।

डिंडिर—पु०[सं०=हिंडिर, पृषो० सिद्धि] १. समुद्र फेन। २. पानी की झाग।

डिंडिर-मोदक—पु०[सं० उपमि० स०] १ गाजर। २. लहसुन।

डिंडिश—पु०[सं०] टिंडा। डेंड़सी।

डिंब—पु०[सं०√डिंब् (प्रेरणा)+घञ्] १. भयभीत होकर मचाई जानेवाली पुकार। २ दंगा। फसाद। ३ कोलाहल। शोर। ४. तिल्ली। प्लीहा। ५ फुफ्फुस। फेफड़ा। ६. गेंद। ७ पक्षियो, मछलियो आदि का अंडा। ८. स्त्री के गर्भ की वह आरंभिक अवस्था जिसमे जीव केवल अंडे के रूप मे रहता है। ९ गर्भाशय।

डिंब-युद्ध—पु०[मध्य० स०] लोगो मे होनेवाली आपसी मार-पीट या लडाई। (सैनिक युद्ध से भिन्न)

डिंबाशय—पु०[सं०] स्त्री जाति के जीवो मे वह भीतरी अंग जिसमें डिंब रहता या उत्पन्न होता है।

डिंबाहव—पु०[डिंब-आहव, मध्य० स०]=डिंब-युद्ध।

डिंबिका—स्त्री० [सं०√डिंब्+ण्वुल्-अक, टाप्, इत्व] १ मदमाती स्त्री। मस्त औरत। २ श्योनाक। सोनापाठा।

डिंभ—पु०[सं०√डिंभ् (प्रेरणा)+अच्] १ छोटा बच्चा। २ छौना। शावक। ३ मूर्ख। ४ एक प्रकार का उदर रोग।

†पु०=दंभ।

डिंभक—पु०[सं० डिंभ+कन्] छोटा बच्चा।

डिंभचक्र—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार का तान्त्रिक चक्र जिसकी सहायता से शुभाशुभ फल जाने जाते है।

डिंभिया—वि०[सं० दंभ, हिं० डिंभ] १ पाखंडी। २ घमंडी।

डिकामाली—स्त्री०[देश०] एक तरह का पेड जिसका गोंद ओषधि के रूप मे काम मे लाया जाता है।

डिक्करी—स्त्री०[सं० डिक्क√रा (देना)+क—ङीप्] युवती।

डिक्की—स्त्री०[हिं० धक्का] १ मेढे द्वारा किया जानेवाला सीगो से आघात। २. आक्रमण। ३ वार।

डिक्री—स्त्री० दे० 'डिगरी'।

डिगना—अ० [हिं० डग] १ डग का चलते समय ठीक प्रकार से न पडना। २. इधर-उधर होना। हिलना-डुलना। ३ निश्चय, विचार आदि से इधर-उधर होना। विचलित होना। †४ गिरना। (पश्चिम)

डिगमिगाना—अ०=डगमगाना।

डिगरी—स्त्री०[अ० डिक्री] १ किसी अधिकारी की दी हुई आज्ञा या किया हुआ निर्णय। २ लोक व्यवहार मे, दीवानी न्यायालय का वह निर्णय या फैसला जिसमे यह कहा जाता है कि अमुक पक्ष दूसरे पक्ष से इतना धन पाने अथवा अमुक सम्पत्ति लेने का अधिकारी है।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

पद—डिगरीदार। (देखें)

मुहा०—**डिगरी जारी करना**=अदालत के फैसले के मुताबिक किसी जायदाद पर कब्जा करने या प्रतिपक्षी से प्राप्य धन प्राप्त करने की विधिक प्रक्रिया करना या कराना। **डिगरी देना**=दीवानी न्यायालय का किसी के पक्ष मे यह निर्णय करना कि इसे प्रतिपक्षी से अमुक सम्पत्ति या इतना धन मिले।

पद—**जर डिगरी**=वह रकम जिसके सम्बन्ध मे किसी को दीवानी न्यायालय से डिगरी मिली हो।

स्त्री०[अ०] १ किसी प्रकार के क्रम या शृंखला मे का कोई निश्चित विभाग। अश। कला। जैसे—ज्वर (या तापमान) १०२ डिगरी है। २ विश्वविद्यालय की वह उपाधि या प्रमाण-पत्र जो इस बात का सूचक होता है कि अमुक व्यक्ति अमुक सज्ञावाली उच्च परीक्षा मे उत्तीर्ण हो चुका है।

डिगरीदार—पु०[अं० डिक्री+फा० दार] वह व्यक्ति जिसके पक्ष मे दीवानी अदालत की डिगरी हुई हो।

डिगलाना†—स०=डिगाना।

†अ०१ =डिगना। २.=डगमगाना। उदा०—डिगत पानि डिगुलात गिरि लखि सब ब्रज बे-हाल।—बिहारी।

डिगवा—पु०[देश०] एक प्रकार का पक्षी।

डिगाना—स०[हिं० डिगना का स०] १ ऐसा काम करना जिससे कोई डिगे। किसी को डिगने मे प्रवृत्त करना। विचलित करना। २ किसी को अपने वचन, स्थान आदि से हटाकर इधर-उधर करना। ३ ऐसा काम करना जिससे किसी का आसन या पद डगमगाने या हिलने-डुलने लगे।

सयो० क्रि०—देना।

डिग्गी—स्त्री०[स० दीर्घिका, वग० दीघी=बावली या तालाब] छोटा तालाब। पोखरा। जैसे—लाल डिग्गी।

स्त्री०[हिं० डिगना?] साहस। हिम्मत।

†स्त्री० दे० 'डुग्गी'।

डिठार—वि०[हिं० डीठ=नजर] जिसकी डीठ या दृष्टि ठीक और पूरा काम करती हो। जिसे अच्छी तरह दिखाई देता हो।

डिठियार (१)—वि०=डिठार।

डिठोहरी—स्त्री०[हिं० डिठी+हरना] एक प्रसिद्ध जगली वृक्ष जिसके फल के बीज को तागे मे पिरो कर बच्चो के गले मे उन्हे नजर से बचाने के लिए डाला जाता है।

डिठौना—पु०[हिं० डीठ] बच्चो के माथे पर उन्हे कुदृष्टि से बचाने के लिए लगाई जानेवाली काली बिंदी।

डिड़ई—पु०[देश०] अगहन मे तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

डिडका—स्त्री०[स० डिड+कन्-टाप्] मुँहासा।

डिडकारी*—स्त्री०[हिं० ढाड़] ढाड मारकर रोने की क्रिया।

डिड़वा—पु०=डिडई।

डिड़सी—स्त्री०=डेडसी।

डिडिका—स्त्री० [स०] एक रोग जिसमे युवावस्था मे ही सिर के बाल सफेद होने लगते हैं।

डिढ़†—वि०=दृढ (पक्का)।

डिढ़ाना*—स० [हिं० डिढ] १ दृढ अर्थात् पक्का या मजबूत करना। २ विचार आदि निश्चित करना। ठानना।

†अ० दृढ अर्थात् पक्का या मजबूत होना।

डिढ़्या—स्त्री०[स० तृष्णा] १ ऐसी उत्कट तृष्णा या लोभ जिसकी जल्दी तृप्ति न होती हो। २ लोभ-पूर्ण दृष्टि। लालच भरी निगाह।

डित्य्—पु०[स०] १ काठ का बना हुआ हाथी। २ ऐसा व्यक्ति जिसमे कुछ उत्कृष्ट और विशिष्ट लक्षण हो।

डिपटी—पु०[अ०] १. नायब। २ किसी बडे अधिकारी का अधीनस्थ और मुख्य सहायक अधिकारी।

डिपार्टमेंट—पु०[स०]=विभाग।

डिपो—स्त्री०[अ०] गोदाम।

डिबिया—स्त्री०[हिं० डिब्बा] छोटा डिब्बा।

डिबियां टँगड़ी—स्त्री०[?] कुश्ती का एक पेंच जो उस समय किया जाता है जब जोड (विपक्षी) कमर पर होता है और उसका दाहिना हाथ कमर पर लिपटा होता है।

डिब्बा—पु० [स० डिब=गोला] [स्त्री० अल्पा० डिबिया, डिब्बी] १ टीन, लकडी आदि का बना हुआ ढक्कनदार छोटा आधान। २ रेलगाडी मे की कोई एक गाडी। जैसे—माल या सवारी गाड़ी का डिब्बा।

डिभगना†—स० [देश०] १ किसी को अपनी ओर आकृष्ट या मोहित करना। २ छलना। ठगना।

†अ० १ =डगमगाना। २.=डिगना।

डिम—पु० [स०]एक प्रकार का रूपक या नाटक जिसमे इंद्रजाल, क्रोध, लड़ाई आदि के दृश्य होते हैं।

डिमडिमी—स्त्री०=डुग्गी।

डिमाई—स्त्री० [अ०] छापे जानेवाले कागजो की कई नापो मे से एक जिसमे कागज की लबाई साढे बाईस इच और चौडाई साढे सत्रह इच होती है।

डिमोक्रेसी—स्त्री० [अ०] लोक-तन्त्र। (दे०)

डिला—पु० [देश०] गीली भूमि मे होनेवाली एक तरह की घास।

पु० [स० दल] ऊन का लच्छा।

डिलिवरी—स्त्री०[अ०] डाक, रेल आदि विभागो मे बाहर से आई हुई

चिट्ठियाँ या पारसल ऐसे लोगों को दिया जाना जो उन्हें पाने या लेने के अधिकारी हों।

डिल्ला—पु० [स०] १ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ और अत मे भगण होता है। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो सगण (॥ऽ) होते हैं। इसे तिल्का, तिल्ला और तिल्लाना भी कहते हैं।

पु० [स० डेल्ल] बैलों के कंधे पर का उभरा हुआ मोटा भाग। कुब्बा। ककुत्थ।

डिसमिस—वि० [अ० डिस्मिस्ड] १ (मुकदमा) जो खारिज कर दिया गया हो। २ (व्यक्ति) जो नौकरी, पद या सेवा से हटा दिया गया हो।

डिहरी—स्त्री० [देश०] १. कालीनों या गलीचों की बुनावट मे लगनेवाली ६००० गाँठों का एक मान जिसके अनुसार उनका मूल्य निर्धारित किया जाता है। २ अनाज भरकर रखने का मिट्टी का एक प्रकार का ऊँचा और बडा पात्र।

डिहुला—पु० [हिं० डीह=गाँव] [स्त्री० डिहुली] (गाँव मे साथ रहनेवाला)। सगी। सगा। साथी। (मिथिला)

डींग—स्त्री० [स०डीन] १. अपने बल, योग्यता, साहस आदि के सम्बन्ध मे अभिमानपूर्वक बहुत बढा-चढाकर कही जानेवाली बात। सीट। (ब्रेग, ब्रेवेडो)

क्रि० प्र०—मारना। —हाँकना।

मुहा०—डींग की लेना=बहुत बढ-बढकर डींग भरी बातें कहना।

डींभू—पु० [?] बर्रे। भिड। (राज०)

डीक—स्त्री० [देश०] आँखों का जाला नामक रोग।

डीकरा*—पु० [स० डिंभक] [स्त्री० डीकरी] १ पुत्र। बेटा। २ बालक। लडका।

डीठ—स्त्री० [स० दृष्टि] १ दृष्टि। नजर। निगाह।

मुहा०—(किसी की) डीठ बाँधना=जादू, मत्र आदि के बल से ऐसी अवस्था उत्पन्न करना कि किसी को कुछ का कुछ दिखाई पडे। (अन्य मुहावरों के लिए देखें आँख, नजर और निगाह के मुहा०)

२. देखने की शक्ति। ३. अतर्दृष्टि। ज्ञान-चक्षु। ४ ऐसी दृष्टि जो किसी अच्छी चीज पर पडकर उसकी अच्छाई या गुण नष्ट अथवा कम कर दे। नजर।

मुहा०—(किसी को) डीठ लगना=नजर लगना।

डीठना†—अ० [हिं० डीठ+ना (प्रत्य०)] दृष्टिगोचर होना। दिखाई पडना।

स०=देखना।

डीठ-बंध—पु० [स० दृष्टिबंध] १. ऐसी माया या जादू जिससे सामने की घटना या चीज के बदले कोई और ही घटना या चीज दिखाई दे। इंद्र जाल। नजरबंदी। २ वह जो उक्त प्रकार का इंद्रजाल या माया प्रत्यक्ष रूप मे दिखाता हो। नजर-बंदी।

डीठि—स्त्री०=डीठ।

डीठि-मूठि†—स्त्री० [हिं० डीठि+मूठ] किसी को मुग्ध या मोहित करने के लिए मत्र पढते हुए मोहक दृष्टि से देखने की क्रिया या भाव।

डीन—पुं० [स०√डी (उडना)+क्त] १ चिडियों आदि की उडान। २. चिडियों की एक विशिष्ट प्रकार की उड़ान। ३ उडने से होनेवाला शब्द।

डीनक—वि० [स० डायक] उडनेवाला।

डीबी—स्त्री० [?] १ शक्ति। २. कुटलिनी।

†स्त्री०=डिबिया।

डीबुआ†—पु०=ढेउआ (पैसा)।

डीम (ा)—पु०=ढेला।

डीमडाम†—स्त्री०=टीम-टाम।

डील—पु० [?] १ जीव-जन्तुओं, मनुष्यों आदि के शरीर की ऊँचाई, लंबाई-चौडाई या विस्तार।

पद—डील-डौल। (देखें)

२. सख्या के विचार से प्राणियों, व्यक्तियों आदि के शरीर का वाचक शब्द। जैसे—चार डील बैल। ३ व्यक्तित्व। जैसे—जितने डील, उतनी बातें।

डील-डौल—पु० [हिं०] १ बनावट या रचना के विचार से जीव-जतुओं, प्राणियों आदि के शरीर का विस्तार। २ देह। शरीर।

डीला—पुं० [देश०] एक प्रकार का नरकट जो पश्चिमोत्तर भारत मे होता है।

पु०=डिल्ला।

डीली*—स्त्री०=दिल्ली (नगरी)।

डीह—पु० [हिं०] १ आबादी। बस्ती। २. छोटा गाँव। ३. उजड़े हुए गाँव का भग्नावशेष। उदा०—ढहकर जैसे बन रहा डीह।—प्रसाद। ४ टीला। ५ वह स्थान जहाँ ग्राम-देवता का पूजन होता है। ६ पूर्वजों का निवास-स्थान।

डीहदारी—स्त्री० [हिं० डीह+फा० दारी] एक प्रकार का हक जो उन जमीदारों को मिलता था जो अपनी जमीन बेच डालते थे।

डुंग†—पुं० [स० तुग=ऊँचा] १ ढेर। राशि। २ टीला।

डुंड†—पु० [स० दट] १. पेड की ऐसी सूखी डाल जिसमे पत्ते आदि न हों। २. दे० 'ठूंठ'।

डुंडु—पुं०=डुडुभ।

डुंडुभ—पु० [स० डुडु√भा (प्रतीत होना)+क] जल मे रहनेवाला एक तरह का साँप जिसमे बहुत कम विष होता है। डेडहा साँप।

डुडुल—पु० [स० डुडु√ला (लेना)+क] छोटा उल्लू।

डुंब—पु० [स०] डोम (जाति)।

डुंबर—पु० [स० डुंब] १. आडंबर। २ डबर।

डुक—पु० [अनु०] घूँसा। मुक्का।

डुकरिया†—स्त्री०=डोकरी (डोकरा का स्त्री०)।

डुकिया—स्त्री०=डोकी (काठ आदि का तेल रखने का छोटा प्याला)।

डुकियाना—स० [हिं० डुक] १ घूँसे मारना। २. खूब मारना।

डुक्कर†—पु० [स० दुष्कर] कठिन या मुश्किल काम।

डुगडुगाना—स० [अनु०] चमडा मढे बाजे को लकडी से बजाकर डुगडुग शब्द उत्पन्न करना।

अ० उक्त प्रकार से डुग डुग शब्द उत्पन्न होना।

डुगडुगी—स्त्री० [अनु०] चमडा मढा हुआ। एक प्रकार का छोटा बाजा जिसमे डुग डुग शब्द निकलता है। डुग्गी। डौंडी।

क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।

मुहा०—डुगडुगी फेरना=डुगडुगी बजाते हुए चारो ओर सब को सार्वजनिक रूप से कोई सूचना देना। मुनादी करना।

डुगा—पु०=डगा (नगाडा बजाने का डडा)। उदा०—किछु कहि तबल दइ डुगा।—जायसी।

डुगी—स्त्री०=डुगडुगी।

डुग्गी—स्त्री०=डुगडुगी।

डुड्ड|—पु० [स० दादुर] मेंढक।

डुड़का—पु० [देश०] धान की फसल मे होनेवाला एक रोग।

डुड़हा—पु० [हिं० डॉड] खेत मे की दो नालियो (बरहो) के बीच की मेंड।

डुपटना|—स० [हिं० दो+पट] १ कपडा या और कुछ दोहरा करना। दो परत करना। २ चुनना। चुनियाना।

डुपट्टा—पु०=दुपट्टा।

डुबकी—स्त्री० [हिं० डूबना] १ जल मे प्रविष्ट होने की ऐसी क्रिया कि सारे अग जल मे छिप जायँ। २ जल मे एक स्थान से गोता लगाकर दूसरे स्थान पर निकलने की क्रिया या भाव। ३. पानी मे दिया या लगाया जानेवाला गोता। ४. बीच मे अचानक या अनियमित रूप से होनेवाली अनुपस्थिति या गैरहाजिरी।

मुहा०—डुबकी मारना या लगाना=बीच मे अचानक कुछ समय के लिए अनुपस्थित या गायब हो जाना। जैसे—यह दूधवाला प्राय कई-कई दिनों की डुबकी लगा जाता है।

डुबडुभी—स्त्री०=दुंदुभी। उदा०—बाजा बाजइ डुबडुभी।—नरपति नाल्ह।

डुबवाना—स० [हिं० डुबाना का प्रे०] किसी को कुछ डुबाने मे प्रवृत्त करना। डुबाने का काम किसी से कराना।

डुबाना—स० [हिं० डूबना का स०] १ ऐसा काम करना जिससे कोई चीज डूब जाय। जैसे—नाव या पत्थर डुबाना। २. जीव को इस प्रकार जल या जलाशय मे प्रविष्ट करना या कोई ऐसी क्रिया करना जिस के फलस्वरुप वह डूबकर मर जाय। ३ लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसा काम करना जिससे कोई चीज नष्ट या समाप्त हो जाय अथवा उस पर गहरा आघात लगे। जैसे—घर, धन या प्रतिष्ठा डुबाना।

डुबाव—पु० [हिं० डूबना] १ डूबने या डुबाने की क्रिया या भाव। २ पानी की इतनी गहराई जिसमे कुछ या कोई डूब जाय। जैसे—आदमी भर का डुबाव, हाथी का डुबाव।

डुबोना|—स०=डुबाना।

डुब्बा—पु० [हिं०डूबना] वह जो कूएँ, नदी आदि मे डुबकी लगाकर उसके तल की चीजें निकालने का काम करता हो। पनडुब्बा।

डुब्बी—स्त्री० १.=डुबकी। २=पनडुब्बी (नाव)।

डुभकौरी—स्त्री० [हिं० डुबकी+बरी] पीठी की धूप आदि मे सुखाई हुई बरी जिसे पीठी ही के झोल मे डालकर पकाया जाता है।

डुमई—स्त्री [देश०] नदी, समुद्र आदि के किनारे की गीली और नीची भूमि मे होनेवाला एक प्रकार का चावल।

डुलना—अ० [हिं० डोलना] १ किसी स्थान पर जमी, बैठी या लगी हुई अथवा किसी अवस्था मे स्थित किसी चीज का थोडा-बहुत इधर-उधर होना। जैसे—यह पत्थर अभी तक अपने स्थान से डुला नही।

पद—हिलना-डुलना। (देखें)

२ किसी चीज का किसी उद्देश्य से बार-बार हिलाया जाना। ढुरना। जैसे—चँवर या पखा डुलना।

डुलाना—स० [हिं० डोलना का स०] १. किसी को डोलने अर्थात् अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होने मे प्रवृत्त करना। २ कोई पदार्थ बार-बार गति मे लाना या हिलाना। चलाना। जैसे—चँवर या पखा डुलाना। ३ किसी प्राणी को चलने-फिरने मे प्रवृत्त करना। घुमाना या टहलाना। ४ किसी का मन चचल, चलायमान या विचलित करना। जैसे—किसी का चित्त या मन डुलाना।

डुलि—स्त्री० [स० दुलि, पृपो० सिद्धि] कछुई। कच्छपी।

डुलिका—स्त्री० [स० डुलि√कै (प्रतीत होना)+क—टाप्] खजन की तरह की एक चिडिया।

डुली—स्त्री० [स० डुलि+ङीप्] चिल्ली नाम का साग। लाल पत्ती का बथुआ।

डूंगर—पु० [फा० दाग] [स्त्री० अल्पा० डूंगरी] १ छोटी पहाड़ी। २ टीला। ३. ककड-पत्थर और मिट्टी आदि का ऊँचा या बडा ढेर। ढूह। भीटा।

डूंगरफल—पु० [हिं० डूंगर+फल] बदाल या देवदाली का फल जो बहुत कडुआ होता है।

डूंगरी—स्त्री० [हिं० डूंगर का स्त्री० अल्पा०] छोटी सी पहाडी।

डूंगा—पु० [स० द्रोण] १ चम्मच। चमचा। २ एक ही काठ मे से खोद कर बनाई हुई नाव। (लश०) ३. गोले के रूप मे लपेटा हुआ रस्सा। पु० १.=डोंगा। २.=डूंगर।

स्त्री० [?] सगीत मे २४ शोभाओ मे से एक।

डूंजा|—स्त्री० [देश०] आँधी। तेज हवा। (डिं०)

डूंडा—वि० [हिं० टुडा] १ (पशु) जिसका एक सीग टूट गया हो और एक ही बच रहा हो। २ हर तरह से दुर्दशाग्रस्त या नष्ट-भ्रष्ट। उदा०—कुछ दिनो मे हरा-भरा बगाल डूंडा हो गया।—निराला।

डूक—स्त्री० [देश०] पशुओ के फेफडे मे होनेवाला एक रोग।

स्त्री० [हिं० डूकना] डूकने अर्थात् चूकने की क्रिया या भाव। चूक।

डूकना|—स० [स० त्रुटि+करण] गलती या भूल करना। चूकना।

डूब—स्त्री० [हिं० डूबना] १ डूबने की क्रिया या भाव। २ डुबकी। गोता।

डूबना—अ० [डुब डुब से-अनु०] १ जल या तरल पदार्थ मे व्यक्ति अथवा किसी चीज का इस प्रकार स्थित होना कि उसका कोई अग या अश उससे बाहर न निकला रहे। जल मे पूरी तरह से समाना। जैसे—समुद्र मे जहाज डूबना, नदी की बाढ से खेत डूबना। २. जीवो के सबध मे, जल मे इस प्रकार समाना कि प्राण निकल जायँ। जैसे—उनका लडका तालाब मे डूब गया था।

मुहा०—डूब मरना=निंदनीय आचरण करने के कारण मुँह दिखाने के योग्य न रह जाना। जैसे—तुम्हारे लिए यह डूब मरने की बात है।

३. उक्त के आधार पर नष्ट होना। जैसे—घर, नाम या रकम डूबना।

मुहा०—डूबा नाम उछालना=फिर से प्रतिष्ठा प्राप्त करना।

४ ग्रह, नक्षत्रों आदि के सबध मे, अस्त होना या क्षितिज के नीचे हो जाना। जैसे—सूर्य या तारो का डूबना। ५. दिन का पूरी तरह से अत

या समाप्ति तक पहुँचना। ६. लाक्षणिक अर्थ मे, किसी कार्य या व्यापार मे मग्न या लीन होना। जैसे-प्रेम या भक्ति मे डूबना।

मुहा०—डूबना उतराना=रह-रहकर चिंता मे मग्न होना।

७ दु ख, निराशा, रोग आदि के कारण हृदय का बैठा जाना। ऐसा जान पड़ना कि हृदय मे अब शक्ति नही रह गई और वह अपना काम अभी बद कर देगा।

डेंड़सी—स्त्री० [सं० टिंडिश] १ ककडी की तरह की एक लता जिसमे छोटे गोल फल लगते है। २. उक्त लता के फल जिनकी तरकारी बनती है। टिंडा।

डेड़्ढा†—वि०=ड्योढा।

डेडढ़ी†—स्त्री०=ड्योढी।

डेक—पु०[अ०] लकडी के तख्तो आदि की बनी हुई जहाज की पाटन। पुं०[?] बकायन। महानिंव।

डेग—पु०१ दे० 'देग'। २ दे० 'डग'।

डेगची†—स्त्री०=देगची।

डेड़रा—पु०[स० डुडुभ] मेढक।

डेड़हा—पु०[स० डुडुभ] जलाशयो मे रहनेवाले और अल्प विषैले साँपो की सज्ञा।

डेढ़—वि० [स० अध्यर्द्ध; प्रा० डिवड्ढ] मान, मात्रा, सख्या आदि की किसी एक इकाई और उसकी आधी इकाई के योग का सूचक विशेषण। जैसे—डेढ गज, डेढ दिन, डेढ सेर आदि।

मुहा०—**डेढ़ ईंट की जुदा मसजिद बनाना**=अक्खडपन के कारण सब से अलग काम करना या रहना। **डेढ चावल की खिचड़ी पकना**=अपना तुच्छ या अमान्य विचार या कार्य सबसे अलग रखना या चलाना। **(किसी का) डेढ़ चुल्लू लहू पीना**=बहुत ही कठोर दड देना। (क्रोध-सूचक उक्ति)

पद—**डेढ़ गाँठ**=धागे, डोरी आदि की लगाई जानेवाली एक पूरी और उसके ऊपर एक आधी गाँठ जो आवश्यकता पडने पर बहुत सहज मे खोली जा सकती है।

डेढ़ खम्मन—स्त्री० [हिं० डेढ+फा० खम] एक प्रकार की गोल रुखानी।

डेढ़ खम्मा—पु [हिं० डेढ+फा० खम=टेढा] हुक्के का एक प्रकार का नैचा जिसमे कुलफी नही होती।

डेढ़-गोशी—पु० [हिं० डेढ+फा० =गोशी] मध्य युग मे एक प्रकार का बहुत छोटा पर मजबूत जहाज।

डेढ़ा—वि०=ड्योढा।

पु०=ड्योढा (पहाडा)।

डेढ़िया—पु० [देश०] सुगधित पत्तेवाला एक प्रकार का ऊँचा पेड जो दारजिलिंग, सिक्किम, भूटान आदि मे पाया जाता है।

स्त्री० [हिं० डेढ] १ स्त्रियो की चादर या धोती का आँचल। (पूरब) २ दे० 'डेढी'।

डेढ़ी—स्त्री० [हिं० डेढ] वह लेन-देन या व्यवहार जिसमे उधार ली हुई वस्तु डेढ गुनी मात्रा मे चुकानी या वापस करनी पड़ती है।

डेपूटेशन—पु० [अ०] किसी वर्ग या समुदाय का वह प्रतिनिधि मडल जो किसी विशिष्ट उद्देश्य से कही जाता या भेजा जाता है। शिष्ट-मंडल।

डेबरा†—वि० [हिं० डेरा=बायाँ] [स्त्री० डेबरी] (व्यक्ति) जो अधिकतर काम अपने बाएँ हाथ से ही करता हो।

डेबरी†—स्त्री० [देश०] खेत का वह कोना जो जोतने मे छूट जाता है। कोतर।

स्त्री०=ढिबरी।

डेमरेज—पु० [अ०] १ वह हरजाना जो माल भेजने या मँगानेवाले को उस दशा मे देना पडता है जब वह नियत समय के अन्दर जहाज, रेल, गाडी आदि पर अपना माल न लादे अथवा उस पर से उतार न ले जाय। २ आज-कल भारतीय रेलो मे, वह हरजाना जो रेल द्वारा माल मँगाने वालो को उस दशा मे देना पडता है जब कि वह नियत समय के अन्दर आया हुआ पारसल या माल न छुडा लें।

डेयरी—पु० [अ०] वह स्थान जहाँ दूध देनेवाले पशुओ को पाला जाता तथा उनका दूध, मक्खन आदि बेचा जाता है।

डेर—पु०=डर (भय)।

डेरा—पु० [?] १ पैदल यात्रा आदि के समय अस्थायी रूप से बीच मे ठहरने का स्थान। टिकान। पड़ाव। २. छाया आदि का प्रबध करके अस्थायी रूप से ठहरने के लिए किया जानेवाला आयोजन या व्यवस्था।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—पड़ना।

पद—**डेरा-डंडा**। (देखे)

मुहा०—**डेरा डालना**=(क) किसी स्थान पर अस्थायी रूप से ठहरने की व्यवस्था करना। (ख) कही जाकर इस प्रकार ठहर या बैठ जाना कि जल्दी उठाने या चलने का ध्यान ही न रहे।

३ ठहरने या रहने का स्थान। निवास स्थान। जैसे—उनका डेरा यहाँ से बहुत दूर है। ४ विशिष्ट रूप से वह स्थान जहाँ गाने-नाचने आदि का पेशा करनेवालो का दल या मडली रहती हो। जैसे—भाँड़ो या रडियो का डेरा। ५. खेमा। तंबू। शामियाना। ६. शांत और स्थिर रहने की अवस्था या भाव। उदा०—हृदै नहिं डेरा सुधि खान की न पान की।—हठी।

पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा जगली पेड़ जिसकी लकडी सजावट के सामान बनाने के काम मे आती है। इसकी छाल और जड साँप काटने पर पिलाई जाती है। घरोली।

वि० [?] [स्त्री० डेरी]। बायाँ 'दाहिने' का उलटा। जैसे—डेरा हाथ।

डेरा-डंडा—पु० [हिं०] वह खेमा, तबू या कनात तथा उसके साथ की रस्सियाँ, डडे, खूँटे आदि जिनके योग से डेरा तैयार किया या बनाया जाता है। डेरा डालने की आवश्यक सामग्री।

क्रि० प्र०—उखाडना।—उठाना। हटाना।

डेराना†—अ०=डरना।

†स०=डराना।

डेरी—स्त्री० [अ०]=डेयरी।

डेल—पु० [हिं० डला] १ बडी डलिया या झाबा, विशेषत ऐसा झाबा जिसमे बहेलिए फँसाई हुई चिडियाँ आदि बन्द करके रखते हैं। २ चिडियाँ फँसाने का जाल या झाबा। ३. मिट्टी का ढेला।

पु० [स० डुडुल] उल्लू पक्षी।

पु० [देश०] १ कटहल की तरह का एक बडा और ऊँचा पेड़ जिसकी

हीर की लकड़ी चमकदार और मजबूत होती है। २. वह भूमि जो जोत कर रवी की फसल के लिए खाली छोड दी जाय।

डेलटा—पु० [अ०] नदी के मुहाने का वह भू-भाग जिसमे नदी कई शाखाओं मे बँटकर समुद्र मे गिरती है।

विशेष—ऐसा भूभाग नदी द्वारा लाई हुई मिट्टी, रेत आदि से बन जाता और प्राय. तिकोना-सा होता है।

डेला—पु० [स० दल] १ आँख मे का वह सफेद उभरा हुआ भाग जिसमे पुतली रहती है। आँख का कोआ। २.=ढेला।

पु० दे० 'ठेंगुर'।

डेलिगेट—पु० [अ०] किसी शासन-सस्था आदि का वह प्रतिनिधि जो किसी प्रकार का अधिकार देकर कही भेजा जाता हो।

डेलिया—पुं० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसका फूल लाल और पीला होता है।

डेली†—स्त्री०=डलिया।

वि० [अ०] दैनिक।

डेवढ़—पु० [हिं० ड्योढा] किसी उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि की ऐसी स्थिति जो विशेष युक्ति से उत्पन्न की गई हो।

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।

वि०=ड्योढा।

डेवढ़ना—अ० [हिं० डेवढ] १. डेढ गुना या ड्योढा होना। २. आँच पर पकने के समय रोटी का फूलकर बहुत-कुछ डेढ परतो के रूप मे होना।

स० १. डेढ गुना या ड्योढा करना। २ कपडे, कागज आदि को कई परतो मे मोड़ना। ३ रोटी पकाते समय उसे आँच पर इस प्रकार फुलाना कि मानो वह डेढ परतो की हो जाय।

डेवढ़ा—वि०, पु०=ड्योढ़ा।

डेवढ़ी—स्त्री० १.=ड्योढ़ी। २.=डेढी।

डेस्क—पु० [अ०] एक प्रकार की खानेदार छोटी चौकी जिस पर कागज, पुस्तक आदि रखकर लिखने-पढने का काम करते हैं।

डेहरी—स्त्री० [सं० देहली] १ दीवार मे लगे हुए दरवाजे के चौखट की निचली लकड़ी और उसके आस-पास की जमीन। दहलीज। २ मूल निवास-स्थान।

स्त्री० [?] अनाज रखने का एक प्रकार का मिट्टी का छोटा बरतन।

डेहल—पु० [स० देहली] डेहरी। दहलीज।

डेंगना—पु० [हिं० डग] नटखट पशुओं के गले मे बाँधा जानेवाला बाँस या लकडी का डडा। ठेगुर।

डैन*—पुं०=‘डैना’।

डैना—पु० [स० डड्डयन=उडना] १ चिडियो के दोनो ओर के वे अग जिनमे पर निकले होते हैं और जिन्हे फडफडाते हुए वे हवा मे उडते हैं। पक्ष। पखा। २ नाव खेने का डडा। डाँडा।

डैम—पुं० [अ०] एक प्रकार की परम तिरस्कार-सूचक (अँगरेजी) गाली।

डैरू—पु०=डमरू।

डैश—स्त्री० [अ०] लिखते समय दो पदो, वाक्यो आदि के बीच मे खीची जानेवाली लबी बेडी रेखा। 'हाइफन' से कुछ बडा और उससे भिन्न, जिसका रूप यह है—।

डोंका†—पु०=घोघा।

डोंगर†—पुं०=डुंगर (टीला)।

डोंगा†—पु० [स० द्रोण] [स्त्री० अल्पा० डोंगी] १ बिना पाल की नाव। २ बडी नाव।

मुहा०—**डोंगा पार होना**=दे० 'बेडा' के अन्तर्गत 'बेडा पार होना' (मुहा०)।

डोंगी—स्त्री० [सं० द्रोणी; पा०, प्रा० डोणी] १ एक प्रकार की छोटी खुली नाव। २ वह बरतन जिसमे लोहार तपा हुआ लोहा बुझाते हैं।

डोंड़ा—पु० [स० डड] १. बडी इलायची। २ दे० 'टोटा'। ३ दे० 'डोडा'।

डोंड़ी—स्त्री० १.=डोडी (डोडा का स्त्री० अल्पा०) २.=टोटी। ३.=डौडी।

डोंब—पु०=डोम।

डोंबी—स्त्री० दे० 'बगाली' (बौद्ध तान्त्रिक साधना की वृत्ति)।

डोई—स्त्री० [हिं० डोकी] १ लकडी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी कलछी। २ मालपूए की तरह की एक प्रकार की छोटी मीठी रोटी।

डोई फोड़िया—पु० [हिं० डोई+फोडना] १ एक प्रकार के साधु जो अपनी बात मनवाने के लिए पत्थर पर सिर तक पटकने लगते है। २. बहुत बडा दुराग्रही।

डोक—पु० [देश०] खजूर जो पककर पीली हो गई हो।

डोकर—पु०=डोकरा।

डोकरड़ो†—पु०=डोकरा।

डोकरा—पु० [स० दुष्कर, प्रा० डुक्कर?] [स्त्री० डोकरिया, डोकरी] १ बुड्ढा आदमी। २ पिता या दादा (जो बहुत बुड्ढा हो गया हो)।

डोकरिया†—स्त्री० [हिं० 'डोकरा' का स्त्री० रूप] डोकरी।

डोकरी—स्त्री० [हिं० डोकरा] १ बुड्ढी स्त्री। २ वृद्धा माता या दादी। ३ औरत। स्त्री। ४ कन्या। पुत्री। (क्व०)

डोका—पु० [स० द्रोणक] [स्त्री० अल्पा० डोकी] १ तेल, उबटन आदि रखने का लकडी का बना हुआ पुरानी चाल का कटोरा। २. पशुओ के खाने के लिए सूखे डठल।

डोगर—पु०=डूंगर।

†पु०=डोगरा।

डोगरा—पु० [हिं० डोगर?] १. काँगडे, जम्मू आदि प्रदेशो मे बसी हुई एक प्रसिद्ध जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति।

डोगरी—स्त्री० [हिं० डोगरा] डोगरे लोगो की बोली जो पजाबी की एक विभाषा है और 'टाकरी' लिपि मे लिखी जाती है।

डोड़हथी—स्त्री० [हिं० डाँडा+हाथ] तलवार। (डि०)

डोड़हा†—पु०=डेडहा।

डोडा—पु० [देश०] [स्त्री० डोडी] कुछ विशिष्ट पौधो की बडी कली जिसमे उस पौधे के फल या बीज रहते है। बौडी। जैसे—पोस्ते या सेमल का डोडा।

डोड़ी—स्त्री० [हिं० डोडा का स्त्री० अल्पा० रूप] १ छोटी डोडी। २. एक लता जो औषध के काम मे आती है।

डोडो—पु० [अ०] एक प्रकार की चिडिया जिसका वश अब समाप्त हो गया है। और इधर तीन सौ वर्षो से कही देखी नही गई।

डोब—पु० [हि० डूबना] किसी तरल पदार्थ मे कोई चीज डुबाने की क्रिया या भाव। जैसे—रगते समय कपडे को कई डोब देने चाहिए।

†पु०=डोम।

डोबना—स०=डुबाना।

डोभरी—स्त्री० [देश०] ताजा महुआ।

डोम—पु० [स०] [स्त्री डोमिनी, डोमनी] १ हिंदुओ मे एक अस्पृश्य जाति जो सारे उत्तरीय भारत मे पाई जाती है। २ इस जाति के लोग जो श्मशान पर रहकर मृतको के शवो के लिए आग देते हैं और पशुओं की लाशे उठाकर ले जाते हैं। ३ गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति। मीरासी।

डोमकौआ—पु० [हि० डोम+कौआ] गहरे काले रग का एक प्रकार का बडा कौआ।

डोमड़ा—पु० [हि० डोम+डा (प्रत्य०)] डोम जाति का व्यक्ति। (उपेक्षा सूचक)

डोम-तमोटा—पु० [देश०] एक पहाडी जाति जो पीतल, तांबे आदि का काम करती है।

डोमनी—स्त्री० [हि० डोम] १. डोम जाति की स्त्री। २ गदे तथा घृणित काम करनेवाली स्त्री। ३ गाने-बजाने का पेशा करनेवाली डोम जाति की स्त्री।

डोमा—पु० [देश०] एक तरह का साँप।

डोमिन—स्त्री०=डोमनी।

डोर—स्त्री० [स० दोष√रा+ड, पृषो० सिद्धि] १ सूतो आदि का बटा हुआ पतला मजबूत मोटा तार।

मुहा०—डोर भरना=कपडे का किनारा कुछ मोड़कर उसके अन्दर डोर रखना और तब उसे ऊपर से सीना।

२· गुड्डी, पतग आदि उडाने का वह तागा जिस पर माँझा लगा होता है। ३ किसी प्रकार का ऐसा क्रम जो तागे की तरह निरतर बहुत दूर तक चला गया हो। सूत्र।

मुहा०—(किसी को) डोर पर लगाना या लाना=(क) ठीक रास्ते पर लाकर प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल करना। (ख) परचाना। **(किसी की) डोर मजबूत होना**=जीवन का सूत्र दृढ़ होना। दीर्घ-जीवी होना। **(किसी पर) डोर होना**=किसी के प्रेम-सूत्र मे बंधकर प्राय. उसके पीछे या साथ लगे फिरना।

४. आसरा। सहारा।

डोरक—पु० [स० डोर+कन्] डोरा। तागा। सूत्र।

डोरना—अ० [हि० डोर] किसी की डोर या सहारे पर उसके साथ या पीछे चलना। उदा०—बैनन बचक ताई रची रति नैनन के सँग डोलति डोरी।—केशव।

डोरही—स्त्री० [देश०] बडी भटकटैया।

डोरा—पु० [स० डोरक] १. रूई, सन, रेशम आदि के सूतो का बटकर बनाया हुआ वह पतला धागा जो प्राय कपडे आदि सीने और छोटी-मोटी चीजें बांधने के काम आता है। मोटा तागा। २. कोई ऐसी धारी, रेखा या लकीर जो उक्त खंड की तरह दूर तक चली गई हो। जैसे—(क) कपडो की बुनावट में अलग से धारियां या लहरिया दिखाने के लिए डाला जानेवाला डोरा। (ख) आँखों मे काजल या सुरमे का डोरा। ३. उक्त के आधार पर कोई गोलाकार पतली लबी धारी या रेखा। जैसे—भोजन के समय रसोई परोस चुकने पर दाल, भात आदि मे तपे हुए घी का दिया जानेवाला डोरा। ४ कोई ऐसा तथ्य या बात जिसका अनुसरण करने पर किसी घटना के रहस्य का पता लग सके या अनुसधान मे किसी प्रकार की सहायता मिले। सुराग। सूत्र। ५ आँखो की वे बहुत महीन लाल नसें जो साधारणत. मनुष्यो की आँखों मे उस समय दिखाई देती है जब वे सोकर उठते या नशे, प्रेम आदि की उमग मे होते है। ६ उक्त के आधार पर प्रेम या स्नेह का बधन या सूत्र।

मुहा०—(किसी का) डोरा लगना=किसी के प्रेम-सूत्र के बन्धन मे पडना। **(किसी पर) डोरे डालना**=किसी को अपने प्रेम-पाश मे बांधने के लिए उसके साथ बहुत ही मधुर या मृदुल आचरण अथवा व्यवहार करना।

७ नृत्य मे गरदन हिलाने की वह अवस्था जिसमे वह बहुत कुछ हवा में लहराते हुए डोरे या सूत की तरह कभी कुछ इधर और कभी कुछ उधर होती हो। ८. कलछी की तरह वह बरतन जिस मे नीचे बड़ा कटोरा और ऊपर खडे बल मे काठ का कुछ मोटा दस्ता या हत्था लगा होता है और इसी से कडाही मे से जलता हुआ घी, दूध, शीरा आदि निकालते है। ९. रहस्य सप्रदाय मे, श्वास या सांस।

पु० [हि० ढोड] पोस्ते आदि का डोडा।

डोरिया—पु० [हि० डोरा] १ एक प्रकार का सूती कपडा जिसकी बुनावट मे बीच-बीच मे कुछ मोटे डोरे या सूत होते है। २ कोई ऐसा कपडा जिसमे थोडी-थोडी दूर पर लबी धारियां हों। ३ जुलाहो का वह सहकारी लडका जो आवश्यकतानुसार डोरे उठाने का काम करता है।

पु० [हि० डोर=सीधा क्रम या डोरियाना] एक पुरानी छोटी जाति जो राजाओ के शिकारी कुत्तो की देख-रेख करती और उन्ही कुत्तो की सहायता से शिकार का पता लगाती या पीछा करती थी।

पु० [?] एक प्रकार का बगला जो ऋतु के अनुसार अपने शरीर का रग बदलता है।

डोरियाना—स० [हि० डोरी+आना (प्रत्य०)] १. डोरी से युक्त करना। २ (पशुओ को) डोरी से बाँधना या बाँधकर साथ ले चलना। ३ लाक्षणिक रूप मे, किसी को अपना अनुयायी और वशवर्ती बनाना।

डोरिहार—पु० [हि० डोरी+हारा] [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा (गहने गूथनेवाला)।

डोरी—स्त्री० [हि० डोरा] १ रूई, सन आदि के डोरो या तागो को बटकर बनाया हुआ वह बहुत लबा और डोर या तागे से कुछ मोटा खड जो चीजे बाँधने आदि के काम मे आता है। रस्सी। जैसे—कूएँ से पानी निकालने या गठरी बांधने की डोरी। २ कलाबत्तू रेशम आदि की उक्त प्रकार की वह रचना जो प्राय शोभा के लिए कपडो पर टाँकी या लगाई जाती है। ३ वे रस्सियां या रस्से जो जुलूसो, सवारियो आदि के आगे दोनो ओर कुछ दूरी तक लोग इसलिए लेकर चलते है कि आगे का बीचवाला रास्ता भीड-भाड से साफ रहे।

क्रि० प्र०—लगाना।—ले चलना।

४ लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार का आकर्षण, पाश या वन्धन। जैसे—आखिर यमराज की डोरी से कब तक बचे रहोगे ?

मुहा०—(किसी की) डोरी खींचना=किसी प्रकार के आकर्षण के द्वारा अपने पास बुलाना। जैसे—जब भगवती को दर्शन देना होगा, तब वे आप ही डोरी खीचेगी। **डोरी ढीली छोड़ना**=चौकसी या देख-रेख कम करना। थोडी-बहुत स्वतत्रता देना। जैसे—जहाँ डोरी ढीली छोडी कि वच्चा विगडा। **(किसी की) डोरी लगना**=किसी की ओर वरावर ध्यान वँधा या लगा रहना जिसमे किसी प्रकार का आकर्षण हो। जैसे—अब तो घर की डोरी लगी है अर्थात् जल्दी घर पहुँचने की चिन्ता है।

५ कडाही आदि मे से खौलती हुई या गरम चीजे निकालने के लिए वह कटोरी जिसके ऊपर खडे वल मे मूठ लगी रहती है।

डोरी-डंडा—पु० [हिं०] चित्र-कला मे, चित्र के हाशिए पर चारो ओर होनेवाला एक प्रकार का अकन जो फदेदार जालो के रूप मे होता है।

डोरे*—क्रि० वि० [हिं० डोर] किसी के सग। साथ-साथ।

डोल—पु० [स० दोल; हिं० डोलना] [स्त्री० अल्पा० डोलची] १ डोलने की क्रिया या भाव। जैसे—कुछ हिल-डोल किया करो। २. कोई हिलने-डुलनेवाली वस्तु। जैसे—झूला, पालना आदि। ३ डोली नाम की सवारी। ४. धार्मिक उत्सवो के समय निकलनेवाली चौकियाँ या विमान जिन पर देव मूर्तियाँ या अनेक प्रकार के दृश्य रहते थे। ५ लोहे का चौडे मुँहवाला एक प्रकार का वरतन जिसके द्वारा कूएँ से पानी खीचा जाता है। ६ जहाज का मस्तूल। (लश०)

वि० [हिं० डोलना] १ हिलता-डुलता हुआ। २ अस्थिर। चचल।

स्त्री० एक प्रकार की काली उपजाऊ मिट्टी।

डोलक—पु० [स०] ताल देने का एक प्रकार का पुराना वाजा।

डोलची—स्त्री० [हिं० डोल+ची (प्रत्य०)] १ छोटी डोल (पानी रखने का वरतन)। २ डोल के आकार की एक प्रकार की छोटी टोकरी।

डोल-डाल—पु० [हिं० डोलना+डाल अनु०] १ चलने-फिरने, हिलने-डुलने आदि की क्रिया या भाव। २ गाँव-देहातो मे, शौच आदि के लिए वाहर खेत या जगल मे जाने की क्रिया। (वुन्देल०)

डोलना—अ० [स० दोलन] १ किसी चीज का इधर-उधर आना-जाना या हिलना। जैसे—भूकप से पृथ्वी का डोलना। २ लटकती हुई चीज का इधर से उधर और उधर से इधर आते-जाते रहना। जैसे—घडी के लगर का डोलना। ३ किसी चीज के वने रहने की स्थिति मे अस्थिरता तथा शका होना। अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होना। जैसे—आसन या सिंहासन डोलना। ४ व्यक्ति अथवा उसके मन का किसी दूसरे मत या विचार की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होने लगना। मन का चलायमान या विचलित होना। ५ घूमना, चलना या टहलना।

पद—डोलना फिरना=इधर-उधर घूमना। चलना या टहलना।

६ कही से दूर चले जाना या हट जाना।

†स०=डुलाना।

†पु०=डोला (सवारी)।

डोलरी†—स्त्री० [हिं० डोल] खाट। चारपाई।

डोला—पु० [स० दोल यो दोलप] [स्त्री० अल्पा० डोली] १. पालकी की तरह की एक प्रसिद्ध चौकोर छाई हुई सवारी जिसे कहार उठाकर ले चलते हैं और जिस पर प्राय वधू वैठकर पहले-पहल ससुराल जाती है।

मुहा०—(किसी को) डोला देना=डोले पर वैठाकर अपनी कन्या को इस उद्देश्य से वर-पक्ष के घर भेजना कि वही वर के अभिभावक वर के साथ उसका विवाह कर लें।

विशेष—प्राय मध्य युग मे ऐसे लोग अपनी कन्या को डोले पर वैठा कर रईसो, राजाओ या सरदारो के यहाँ भेजते थे जिनके यहाँ या तो वडे आदमियो की वरात आ नही सकती थी या जो उन वडे आदमियो की वरात का उचित आदर-सत्कार करने मे असमर्थ होते थे। इसी लिए डोला भेजना एक प्रकार की अधीनता या हीनता का सूचक होता है।

मुहा० (किसी के) चोंडे या सिर पर (किसी का) डोला उछलना= किसी स्त्री के सामने उसके पति का दूसरा विवाह करना और जलाने के लिए उसकी सौत लाकर वैठाना।

२ झूले को दिया जानेवाला झोका। पेंग।

डोलाना—स० दे० 'डुलाना'।

डोला यत्र—पु० =दोला यत्र।

डोलियाना—स० [हिं० डोली+आना (प्रत्य०)] १. किसी को डोली मे वैठाकर कही ले जाना। २ वधू को डोली मे वैठाकर ससुराल भेजना। ३ कोई चीज चुपके से लेकर चल देना। (वाजारू)

अ० चपत होना। खिसक जाना।

डोली—स्त्री० [हिं० डोला] १ छोटा डोला (सवारी) जिसे दो कहार कधो पर लेकर चलते है।

मुहा०—डोली करना=(क) किसी को जैसे-तैसे दूर करना या हटाना। (ख) कोई चीज चुपके से उठाकर चल देना।

पद—डोली-डडा। (देखें)

२ हिंदुओ की एक प्रथा या रस्म जिसमे विवाह के उपरान्त वधू को डोली या किसी दूसरी सवारी मे वैठाकर वर पक्षवाले ले जाते हैं।

३ रहस्य सप्रदाय मे, शरीर।

डोली-डंडा—पु० [हिं०] लडको का एक खेल जिसमे दो लडके अपनी वाँहो को मिलाकर उन्हे चौकी-का रूप देते और उस पर किसी तीसरे छोटे लडके को वैठाकर, 'डोली-डडा पालकी', कहकर इधर-उधर घुमाते हैं।

डोलू—स्त्री० [देश०] १ एक ओषधि जिसे रेवद चीनी भी कहते हैं। २ पूरबी भारत मे होनेवाला एक प्रकार का वाँस।

†वि० [हिं० डोलना] जो चुपके से कुछ लेकर चपत हो गया हो। (वाजारू) जैसे—किताव लेकर डोलू हो गया।

डोसा—पु० [?] उलटे या चिलडे की तरह का एक दक्षिण भारतीय पकवान जो पीसे तथा खमीर उठाये हुए चावल तथा उडद की दाल से वनता है।

डोह†—पु०=द्रोह।

डोहरा†—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० डोहरी] काठ का एक प्रकार का वरतन जिससे कोल्हू मे से रस निकाला जाता है।

डोही—स्त्री० दे० 'डोई'।

डौआना†—अ० [हि० डावाँडोल] १. डाँवाडोल होना। २. चिंतित होना। घबराना।

स० १. डाँवाडोल करना। २. विकल या विचलित करना।

डौंड़ी—स्त्री० [सं० डिंडिम] १. डुग्गी नाम का छोटा बाजा जिसे बजाकर लोगों को कोई बात बताने के लिए घोषणा की जाती है।

क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।

मुहा०—डौंड़ी देना=(क) ढोल बजाकर सर्वसाधारण को सूचित करना। मुनादी करना। (ख) कोई बात चारों ओर लोगों से कहते फिरना। डौंड़ी बजना=(क) घोषणा होना। (ख) दुहाई फिरना। (ग) किसी का तेज और प्रताप सब पर प्रकट होना।

२. डौंड़ी पीटकर की जानेवाली घोषणा।

डौरा—पु० [देश०] एक प्रकार की घास जिसमें जौ की तरह के परन्तु खाने में कड़ुए दाने होते हैं।

डौरू†—पु०=डमरू।

डौआ—पु० [हि० डोई] बड़ी डोई।

डौकी—स्त्री० [?] पकौड़ी।

डौर*—पु० १=डौल। २=डोर।

डौल—पु० [हि० डील का अनु०] १. किसी वस्तु या व्यक्ति की वह बाहरी आकृति या स्वरूप जो उसकी विशिष्ट प्रकार की रचना—जैसे, अंगों और उपांगों के गठन आदि के आधार पर जानी जाती या स्थिर होती है। बनावट का ढंग या रचना का प्रकार। जैसे—(क) आदमी या औरत का डील-डौल। (ख) नये डौल की थाली या लोटा। २. किसी प्रकार की बनावट या रचना का आरम्भिक ढाँचा या रूप। ठाठ।

क्रि० प्र०—डालना।

३. चित्रों और मूर्तियों के अवयवों में दिखाई पड़नेवाली गोलाई उभार और गहराई जिससे उनमें सुंदरता आती है।

मुहा०—(कोई चीज) डौल पर लाना=सुंदर आकार या रूप में प्रस्तुत करना। अच्छे या सुंदर रूप में लाना।

४. कोई काम करने का अच्छा ढंग या प्रकार। तरीका। जैसे—मैं सब पुस्तकें डौल से लगाकर अलमारी में रख दूँगा। ५. उपाय। युक्ति।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को) डौल पर लाना=युक्ति से अनुकूल बनाना। ऐसा उपाय करना जिससे कोई मतलब निकाला या उद्देश्य सिद्ध किया जा सके। जैसे—मैं तो समझा कर हार गया, अब तुम्हीं उन्हें डौल पर ला सकते हो।

पद—डौल-डाल। (देखें)

मुहा०—(किसी काम का) डौल बाँधना या लगाना=उपाय या युक्ति करना। जैसे—कहीं से कुछ रुपयों का डौल लगाओ।

६. रंग-ढंग। तौर-तरीका। लक्षण। ७. आशा या संभावना। रंग-ढंग। जैसे—अभी तो दो-चार दिन वर्षा का डौल नहीं दिखाई देता।

८. जमीन के बन्दोबस्त में जमा या लगान का अनुमान।

क्रि० प्र०—लगाना।

९. खेतों की मेंड़। डाँड़।

डौल डाल—पु० [हि० डौल] किसी काम का उपाय या युक्ति। ब्योंत।

डौलदार—वि० [हि० डौल+फा० दार (प्रत्य०)] जिसका डौल अच्छा हो। सुडौल।

डौलना†—स० [हि० डौलना] १. किसी वस्तु को सुडौल बनाना। २. डौल या आकार ठीक करना।

अ० डौल या आकार निकलना। सुडौल बनना।

डौलियाना—स० [हि० डौल+इयाना (प्रत्य०)] १. गढ़-छीलकर किसी चीज का आकार ठीक करना। गढ़कर डौल या रूप दुरुस्त करना। २. अपना मतलब सिद्ध करने के लिए किसी व्यक्ति को धीरे-धीरे मीठी-मीठी बातें करके अपने अनुकूल बनाना।

डौर—पु० [देश०] एक प्रकार की लंबी घास जिसके डंठल ... और घास चारे के काम में आती है।

डौरा—पु० डोरा (बड़ी डोरी)।

ड्यूटी—स्त्री० [अं०] १. ऐसा काम जिसे करना नैतिक, धार्मिक, विधिक आदि दृष्टियों से आवश्यक हो। कर्तव्य। २. वह काम जिसे पूरा करने के लिए कोई नियुक्त किया गया हो। ३. विदेशों से आनेवाले तथा विदेश भेजे जानेवाले माल पर लगनेवाला कर या शुल्क।

ड्योढ़ा—वि० [हि० डेढ़] [स्त्री० ड्योढ़ी] कुल पूरा और उसके साथ उसका आधा मिलाकर होनेवाला। डेढ़ गुना। जैसे—इस काम पर पाँच का ... से ड्योढ़ा हो गया है।

पद—ड्योढ़ी गाँठ=रस्सी आदि में दी जानेवाली वह गाँठ जिसमें एक पूरी गाँठ के ऊपर उसी की आधी गाँठ का फंदा इस प्रकार लगाया जाता है कि रस्सी का एक सिरा खींचने से गाँठ खुल जाय।

पु० १. एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें एक से आरंभ होनेवाली संख्याओं का ड्योढ़ा बतलाया जाता है। जैसे—एक ड्योढ़े डेढ़, दो ड्योढ़े तीन, तीन ड्योढ़े साढ़े चार आदि। २. गाने का वह प्रकार जिसमें गाना आरंभ से ड्योढ़े स्वर में होता है। ३. ऐसा सप्तक जिसके स्वर साधारण सप्तक से ऊँचे हों। (संगीत)

ड्योढ़ी—स्त्री० [सं० देहली] १. किसी भवन या मकान के मुख्य प्रवेश-द्वार के आस-पास की भूमि या स्थान।

पद—ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान। (देखें)

२. उक्त प्रवेश द्वार के अन्दर का वह स्थान जिस पर छत पटी होती है। पौरी।

मुहा०—(किसी की) ड्योढ़ी खुलना=राजा आदि के यहाँ दरबार में आने-जाने की अनुमति या आज्ञा मिलना। (किसी की) ड्योढ़ी बंद होना=किसी व्यक्ति के लिए राजा के यहाँ आने-जाने की मनाही या निषेध होना। (किसी के यहाँ) ड्योढ़ी लगना=ड्योढ़ी पर ऐसा दरबान बैठना जो बिना आज्ञा पाये लोगों को अन्दर न जाने दे।

ड्योढ़ीदार—पु० [हि० ड्योढ़ी+फा० दार (प्रत्य०)] वह नौकर या सिपाही जो बड़े आदमियों के मकान की ड्योढ़ी पर रखवाली आदि के लिए रहता है। दरबान। द्वारपाल।

ड्योढ़ीवान—पु०=ड्योढ़ीदार।

ड्रम—पु० [अं०] १. ढोल। नगाड़ा। २. ढोल के आकार का बड़ा पात्र। पीपा।

ड्राइवर—पु० [अं०] वह व्यक्ति जो यंत्रों से चलनेवाला यान चलाता हो।

जैसे—इजन-ड्राइवर, मोटर ड्राइवर आदि।
ड्राम—पु० [अ०] तीन माशे के बराबर की एक अगरेजी तौल।
ड्रामा—पु० [अ०] नाटक।
ड्रिल—स्त्री० [अ०] बच्चो, सिपाहियों आदि के समूह को एक साथ कराया जानेवाला शारीरिक व्यायाम जिसके साथ उन्हे क्रम-बद्ध रूप मे चलने-फिरने आदि की शिक्षा भी मिलती है।

ढ

ढ—हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यजन वर्ण जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा सघोष व्यजन है। इसका एक रूप ढ़ भी है जो मूर्द्धन्य उत्क्षिप्त, महाप्राण, सघोष व्यजन है।
पु० [स० ढौक् (गति) +ड] १ बडा ढोल। २. कुत्ता। ३. कुत्ते की दुम। ४. ध्वनि। नाद। ५ साँप।
ढँकना†—स०=ढकना।
पु०=ढकना (ढक्कन)।
ढकी†—स्त्री०=ढक्कन।
ढँकुली†—स्त्री० दे० 'ढँकी'।
ढंख—पु० [स० आषाढक या हिं० ढाक] १. ढाक या पलाश का पौधा। २ वह स्थान जहाँ पलाश के बहुत-से पौधे हो।
ढंग—पु० [स० तग (तगन)] १ कोई काम करने की रीति, विशेषत. ऐसी रीति जिसके अनुसार प्राय कोई काम किया जाता या होता हो। जैसे—उनके उठने-बैठने या चलने-फिरने का ढग निराला है। २ कोई काम करने या रचना प्रस्तुत करने की प्रचलित तथा व्यवस्थित शैली। जैसे—साडी पर जाल बनाने का ढग भी वह जानता है। ३ किसी चीज की बनावट या रचना का वह विशिष्ट प्रकार जिससे उसका स्वरूप स्थिर होता है। जैसे—आज-कल इस ढग के कपडे नही चलते। ४ भेद-विभेद आदि के विचार से स्थिर होनेवाला प्रकार।
पद—ढग का=(क) अच्छे और उपयुक्त प्रकार का। जैसे—कोई ढग की नौकरी तो पहले मिले। (ख) कार्य-व्यवहार आदि मे कुशल या चतुर। जैसे—कोई ढग का नौकर रखो।
५. किसी चीज की बनावट या रचना का प्रकार जिससे उसका स्वरूप स्थिर होता है। जैसे—आज-कल इस ढग के कपडो का चलन नही है। ६. अभिप्राय या कार्य सिद्ध करने का उपाय या युक्ति। तरकीब। जैसे—किसी ढग से अपनी रकम निकाल लेनी चाहिए।
क्रि० प्र०—निकालना।
मुहा०—(किसी के) ढंग पर चढ़ना=किसी की तरकीब या युक्ति के फेर मे पडकर उसके उद्देश्य-साधन मे अनुकूल होकर सहायक बनना। **(किसी को) ढग पर लाना**=अपना अभिप्राय सिद्ध करने के लिए किसी को अपने अनुकूल करना या बनाना। किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना जिससे कुछ मतलब निकले।
७ अभिप्राय या कार्य सिद्ध करने के लिए धारण किया जानेवाला ऐसा रूप जो केवल दूसरों को धोखे मे रखने के लिए हो। जैसे—यह लडका मिठाई खाने के लिए तरह-तरह के ढग रचता है।
क्रि० प्र०—रचना।—साधना।
८. ऐसा आचरण, बरताव या व्यवहार जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए उपयुक्त या पात्र बनाता हो। जैसे—यह सब तो जाति (या देश) के चौपट होने का ढग है।
मुहा०—ढंग बरतना=पारस्परिक व्यवहार मे ठीक तरह से आचरण करना। जैसे—जरा ढग बरतना सीखो।
९ कोई ऐसी अवस्था या स्थिति जो किसी विशिष्ट बात की सूचक हो। चिह्न। लक्षण। जैसे—अभी पानी बरसने का कोई ढग नही दिखाई देता।
पद—रंग-ढंग=स्वरूप और कार्य-प्रणाली। जैसे—इस कार्यालय का रग-ढग कुछ अच्छा नही जान पडता।
ढंग-उजाड़—पु० [हिं० ढग+उजाड] कुछ घोडो की दुम के नीचे होनेवाली भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।
ढँगलाना†—स० [?] लुढकाना।
अ०=लुढकना।
ढंगी—वि० [हिं० ढग] १. (व्यक्ति) जो ढग से कोई काम करता हो। २ बहुत बडा चालबाज या धूर्त्त (व्यक्ति)। ३ दे० 'ढोंगी'।
ढँढरच—स्त्री० [हिं० ढग+रचना] ढकोसला।
ढंढस—पु० दे० 'ढँढरच'।
ढंढार—वि० [हिं० ढग ?] जिसे कोई ढग न आता हो। अकुशल तथा मूर्ख।
ढँढोर—पु० [अनु० धायँ धायँ] १. आग की लपट। २ लगूर।
†पु०=ढँढोरा।
ढँढोरची—पु० [हिं० ढँढोर+फा० ची (प्रत्य०)] ढँढोरा फेरनेवाला। डुग डुगी बजाकर घोषणा करनेवाला। ढँढोरिया।
ढँढोरना—स० [हिं० ढँढोरा] १ ढँढोरा पीटना या बजाना। २. ढँढोरा फेरना। मुनादी कराना।
†स० [हिं० ढूंढना] तलाश करना। उदा०—सारद उपमा सकल ढँढोरी—तुलसी।
ढँढोरा—पु० [अनु० ढम+ढोल] १. वह ढोल जो जन-साधारण को किसी बात की सूचना देने या सार्वजनिक रूप से घोषणा करने के समय बजाया जाता है। डुगडुगी। डुग्गी। ढौंडी।
क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।
२ ढोल बजाकर की जानेवाली घोषणा। मुनादी।
मुहा०—ढँढोरा फेरना=(क) किसी बात की सूचना सबको ढोल बजाकर देना। जैसे—लडके के खोने पर उन्होने ढँढोरा फिरवाया था। (ख) किसी बात की सूचना सब को देते फिरना। जैसे—घर की बातो का ढँढोरा नही फेरा जाता।
ढँढोरिया—पु०=ढँढोरची।
ढँढोलना—स०=ढँढोरना (ढूँढ़ना)।
ढँपना—अ० [हिं० ढाँपना का अ०] किसी प्रकार की आड मे या आवरण के नीचे होने के कारण आँखो से ओझल होना। ढाँपा जाना।

स्थूल योजना जो उसके आरभ मे की जाती है और जो उसके भावी रूप की परिचायक होती है। ठाठ। ढाँचा। ३ कोई ऐसी वहुत बडी या विस्तृत चीज जिसके बहुत-से अश फालतू या व्यर्थ के हो। ४ व्यर्थ का आडवर या ठाठ-वाट।

ढड्ढो—स्त्री० [हिं० ढड्ढा] १ वह बहुत बुड्ढी स्त्री जिसके शरीर मे हड्डियो का ढाँचा ही रह गया हो। २ मटमैले रग की एक चिडिया जो बहुत शोर करती और प्राय अपने वर्ग की दूसरी चिडियो से लडती रहती है। चरखी।

ढनमनाना†—अ० [अनु०] लुढकना।
स०=लुढकाना।

ढप—पुं०=डफ।

ढपना—पु० [हिं० ढाँपना] ढकने की वस्तु। ढक्कन।
स०=ढकना (ढाँकना)।

ढपरी—स्त्री० [हिं० ढाँपना] १ ढाँपने या ढकने की कोई छोटी चीज। २ अगीठी ढकने का ढक्कन। (चूडीवाले)

ढपला†—पु० [स्त्री० ढपली] =डफला।

ढप्पू—वि० [देश०] १ बहुत बडा, परन्तु प्राय निकम्मा या व्यर्थ का।

ढफ—पु०=डफ (वाजा)।

ढब—पु० [स० धव ?] १ कोई काम ठीक प्रकार से सपादित करने की क्रिया-प्रणाली या रीति। २ ठीक प्रकार से कोई काम सपादित करने का गुण या योग्यता।
पद—ढब का=(व्यक्ति) जो ठीक प्रकार से काम करता हो। जैसे—कोई ढव का नौकर मिले तो रख लिया जायगा।
३ बनावट, रचना आदि का कोई विशिष्ट प्रकार। ४ उपाय। युक्ति।
मुहा०—ढब पर चढ़ाना, लगाना या लाना=किसी को इस प्रकार फुसलाना कि उससे अपना काम निकाला जा सके।
५ प्रकृति। स्वभाव। ६ आदत। वान।

ढबका†—पु० [हिं० ढव] उपाय। तरकीव।

ढबरा†—वि०=ढावर।

ढबरी—=स्त्री०=ढिबरो।

ढबीला†—वि० [हिं० ढव] [स्त्री० ढवीली] १. (वस्तु) जो अच्छे रूप-रग या प्रकार की हो तथा काम मे आने योग्य हो। ढव का। २ (व्यक्ति) जो ठीक ढग से काम करता हो।

ढबुआ†—पु०=ढेउआ (पैसा)।
पु० [देश०] खेत की मचान की छाजन।

ढबैला—वि०[हिं० ढावर] (पानी) जिसमे मिट्टी और कीचड मिला हुआ हो।
†वि०=ढवीला।

ढमकना—अ०[अनु०] ढम ढम शब्द उत्पन्न होना।
स०=ढमकाना।

ढमकाना—स०[हिं० ढमकना] ढम ढम शब्द उत्पन्न करना। उदा०—कोउ उमग सौ सग सग ढोलक ढमकावत—रत्ना०।

ढमढम—पु०[अनु०] ढोल, नगाडे आदि के वजने का शब्द।
क्रि० वि० ढम-ढम शब्द करते हुए।

ढमलाना†—स०=लुढकाना।
अ०=लुढकना।

ढयना—अ०=ढहना (गिरना)।

ढरक†—स्त्री० [हिं० ढरकना] १ ढरकने की क्रिया या भाव। २ दया-लुता। ३ अनुरक्ति। ४ प्रवृत्ति।

ढरकना—अ० [हिं० ढार] १ ढलकना। २. लेटना।

ढरका†—पु०=ढलका।

ढरकाना—स०=ढलकाना।

ढरकी—स्त्री०[हिं० ढरकना] करघे मे छोटे खाने की तरह का वह अग जिसमे वाने का सूत रहता है और जिसके दाहिने-वाएँ आते-जाते रहने से ताने मे वाने का सूत भरता है।

ढरकीरा—वि०[हिं० ढरकना] ढलने या ढलकनेवाला।

ढरना—अ०=ढलना।

ढरनि—स्त्री०[हिं० ढरना] १. ढलने या ढरने की क्रिया या भाव। ढाल। २ वार-वार इधर-उधर प्रवृत्त होने अथवा हिलने-डुलने की क्रिया या भाव। ३ किसी पर अनुरक्त या किसी ओर प्रवृत्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। ४ किसी की दीन-हीन दशा पर मन के द्रवित होने की अवस्था या भाव। ५ नीचे की ओर गिरने या पतित होने की क्रिया या भाव। पतन।

ढरहरना—अ०[हिं० ढरना या ढलना] १ ढाला जाना। उँडेला जाना। २. पूरी तरह से भरा जाना। ३ खिसकना या लुढकना। ४ किसी ओर झुकना या ढलना।

ढरहरा—वि०[हिं० ढार+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० ढरहरी] १ ढलने, वहने या लुढकनेवाला। २ ढालुआँ। ३. किसी ओर प्रवृत्त होनेवाला।

ढरहरी—स्त्री०[देश०] १. एक प्रकार का पकवान। २. पकौडी।
†स्त्री०[हिं=ढलना] ढालुईं जमीन। ढाल।

ढराई†—स्त्री०=ढलाई।

ढराना—स०[?] १. दे० 'ढलाना' या 'ढलवाना'। २. दे० 'ढलकाना'।

ढरारा—वि०[हिं० ढार] [स्त्री० ढरारी] १. किसी ओर ढलने या वहनेवाला। २ ढालुआँ। ३. जल्दी इधर-उधर लुढकनेवाला। ४. किसी की ओर प्रवृत्त होनेवाला। ५ सहज मे किसी के साथ अनुराग या स्नेह करनेवाला। उदा०—नीके अनियारे अति चपल ढरारे प्यारे . .।—सेनापति।

ढरियाना†—स०[हिं० ढारना] १ ढालना। २. ढलकाना।

ढरैया—वि०, पु०=ढलैया।

ढर्रा—पु०[हिं० ढरना=ढलना] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के ढरने (ढलने) या किसी ओर प्रवृत्त होने का प्रकार, मार्ग या रूप। २ कोई काम करने की निश्चित या वँधी हुई पद्धति, प्रणाली या शैली।
मुहा०—ढर्रे पर आना या लगना=कार्य-सिद्धि के लिए अनुकूल, ठीक ढग या रास्ते पर आना। जैसे—अव तो वह वहुत-कुछ ढर्रे पर आ चला है।
३ उपाय। तदवीर। युक्ति। ४ आचार, व्यवहार आदि का प्रकार या रूप। जैसे—उसका यह ढर्रा तो ठीक नही है।

ढलकना—अ०[हिं० ढलना] १ पानी या और किसी द्रव पदार्थ का नीचे की ओर प्रवृत होना या वहना। ढलना। जैसे—आँखो से आँसू

ढलकना। २. लुढकना। ३ नीचे की ओर प्रवृत्त होना। ४ किसी पर अनुरक्त होना। विशेष दे० 'ढलना'।

ढलका—पु०[हिं० ढलकना] १ आँख का एक रोग जिसमे आँख से बराबर पानी बहा करता है। २ बाँस का वह चोगा या नली जिसकी सहायता से चौपायो के गले के नीचे दवा उतारी या ढलकाई जाती है।

ढलकाना—स०[हिं० ढलकना का स०] १ पानी या और किसी द्रव पदार्थ को ढलकने मे प्रवृत्त करना। २. नीचे की ओर प्रवृत्त करना। ३. लुढकाना।
सयो० क्रि०—देना।

ढलकी†—स्त्री०=ढरकी।

ढलना—अ०[हिं० ढालना का अ०] १ द्रव पदार्थ का नीचे की ओर गिरना या गिराया जाना। जैसे—बोतल की दवा गिलास मे ढलना। २ साँचे मे किसी पिघले हुए पदार्थ का, उसे कोई विशेष आकार-प्रकार देने के लिए उँडेला या डाला जाना। ३. उक्त प्रकार से पिघले हुए पदार्थ का साँचे मे जम या ठढा होकर ठोस रूप धारण करना। जैसे—मूर्ति ढलना। ४ अवनति या ह्रास अथवा अत या समाप्ति की ओर बढना। जैसे—उमर या जवानी ढलना, दिन ढलना। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि के सबध मे, अस्त होने पर आना। जैसे—चाँद या सूर्य का ढलना।
पद—ढलती फिरती छाँह=ऐसी स्थिति जो कभी बिगडती और कभी सुधरती हो।
६ समय का बीतने को होना। जैसे—अवधि ढलना। ७. दया, प्रेम आदि के वश मे होकर किसी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त होना। जसे—भगवान का भक्तो पर ढलना। ८ विशिष्ट रूप से केवल मद्य के सबध मे, पीने के लिए पात्र मे उँडेला जाना। जैसे—बोतल या शराब ढलना। ९ लुढकना। १०. दे० 'ढुलना'।

ढलमल—वि०[अनु०] जो कभी इधर और कभी उधर प्रवृत्त होता या लुढकता हो। ढुलमुल।

ढलवाँ—वि०[हिं० ढालना] १. जो साँचे मे ढालकर बनाया गया हो। ढाला हुआ। २ दे० 'ढालुआँ।'

ढलवाना—स०[हिं० ढालना का प्रे०] ढालने का काम किसी और से कराना। किसी को कुछ ढालने मे प्रवृत्त करना।

ढलाई—स्त्री०[हिं० ढालना] १ ढालने की क्रिया या भाव। २ पिघली हुई धातु को साँचे मे ढालकर बरतन, मूर्त्तियाँ आदि बनाने की क्रिया, भाव और मजदूरी। ३ ढलान। (दे०)

ढलान—स्त्री०[हिं० ढलना] १. ढलने या ढालने की क्रिया या भाव। २ कोई ऐसा भू-खड जो चिपटा और समतल न हो, बल्कि तिरछा हो; अर्थात् जिसमे नीचे की ओर ढाल हो। ३ ऐसा ढालुआँ स्थान जहाँ से वर्षा का पानी ढलकर किसी नदी मे मिलता हो।

ढलाना—स०=ढलवाना।

ढलाव—पु०[हिं० ढालना+आव (प्रत्य०)] ढलने या ढालने की क्रिया, ढग या भाव।

ढलुआँ—वि०=ढलवाँ।

ढलैत—पु०[हिं० ढाल] प्राचीन काल मे, वह योद्धा जो ढाल बाँधे रहता था।

ढलैया†—वि०[हिं० ढालना] ढालनेवाला।
पु० वह कारीगर जो गलाई हुई धातुओ को ढालकर कोई चीज बनाता हो।

ढवरी—स्त्री०[हिं० ढलना] १. ढलने अर्थात् किसी ओर प्रवृत्त होने अथवा किसी पर अनुरक्त होने की अवस्था या भाव। २ निरतर किसी की ओर बना रहनेवाला ध्यान। लगन। लौ।

ढसका—स्त्री० [अनु० ढस ढस] सूखी खाँसी। ठाँसी।

ढहना—अ०[स० ध्वसन] १ इमारत, भवन आदि का टूट-फूटकर जमीन पर गिरना। २ पूर्णत नष्ट या समाप्त होना।
सयो० क्रि०—जाना।—पडना।

ढहरना*—अ०=ढलना। उदा०—पै उठि ल्हर समुद्र नैकुँ इत उत नहि ढहरै।—रत्ना०।

ढहरा†—पु०[?] १ जगल। वन। २ गहरी और नीची भूमि। (राज०)

ढहराना†—स०[अनु०] १. ढलकाना। २ ढाना। ३ सूप मे अनाज रखकर फटकना।

ढहरी—स्त्री०[स० देहली] देहरी। दहलीज।
†स्त्री०[?] मिट्टी का घडा या मटका।

ढहवाना—स०[हिं० ढहाना का प्रे०] ढाने का काम दूसरे से कराना। गिरवाना। ढहाना।

ढहाना—स०=ढहवाना।

ढाँक—पु० [हिं० ढाँकना ?] कुश्ती का एक पेंच।
†पु०=ढाक (पलाश)।

ढाँकना—स०=ढकना।

ढाँखा—पु०[हिं० ढाक] ढाक या पलाश का जगल। उदा०—जावंत जग सारा बन ढाँखा।—जायसी।

ढाँगा—वि० दे० 'ढालुआँ'।

ढाँच—पु०=ढाँचा।

ढाँचा—पु० [स० स्थाता] १. कोई वस्तु या रचना बनाते समय उसके विभिन्न मुख्य अगो को जोड या बाँधकर खडा किया हुआ वह आरभिक या स्थूल रूप जिस पर बाकी सारी रचना प्रस्तुत होती है। जैसे—मकान का ढाँचा, कुरसी का ढाँचा। २ कोई ऐसी रचना जिसमे कोई दूसरी चीज जडी, बैठाई या लगाई जाती हो। ३ ग्रथ, लेख, नाटक आदि का आरभिक तथा आकारिक रूप। ४ ठठरी। पजर। ५ गठन। बनावट।

ढाँपना—स०=ढकना (ढाँकना)।

ढाँस—स्त्री० [अनु०] १ ढाँसने की क्रिया या भाव। दे० 'ढाँसी'।

ढाँसना—अ० [हिं० ढाँस] इस प्रकार बार-बार खाँसना कि गले से वैसा ही ढाँ ढाँ शब्द निकले जैसा प्राय: कुत्तो के खाँसने के समय निकलता है।

ढाँसी—स्त्री० [अनु०] एक प्रकार की सूखी खाँसी जिसमे लगातार कुछ समय तक गले से उसी प्रकार का ढाँ ढाँ शब्द निकलता है जैसा कुत्तो के खाँसने पर होता है।

ढाई—वि० [स० अर्द्ध—द्वितीय, प्रा० अड्ढाइय, पु० हिं० अढाई] १. (इकाई या मान) जिसमे दो पूरे के साथ आधा और मिला हुआ हो।

जैसे—ढाई गज कपडा, ढाई सेर चीनी, ढाई रुपए। २. जो गिनती मे दो से आधा अधिक हो। जैसे—ढाई बजे की गाडी।

मुहा०—(किसी को) ढाई घडी की आना=अचानक और चटपट मौत आना। (स्त्रियो का कोसना) जैसे—तुझे ढाई घडी को आवे।

पद—ढाई दिनो की बादशाहत=(क) थोडे समय का ऐश्वर्य या सुख-भोग। (ख) किसी के विवाह के समय के दो-तीन दिन।

स्त्री० [हिं० ढाना] १ लडको का एक खेल जो कौडियो से खेला जाता है। २ उक्त खेल खेलने की कौडियाँ।

ढाक—पु० [स० आषाढक=पलाश] पलाश का पेड। छिउला। छीउल।

पद—ढाक के तीन पात=(क) ऐसा तुच्छ या हीन रूप या स्थिति जो सहायक सी बनी रहे और जिसमे जल्दी कोई परिवर्तन होता हुआ न दिखाई दे। (ख) बहुत ही निर्धन, मूर्ख या हठी होने की अवस्था या भाव।

†पुं०=ढक्का (बडा ढोल)।

ढाकई—वि० [हिं० ढाका नगर]। ढाके का। जैसे—ढाकई नाव, ढाकई साडी। पु० ढाके की तरफ होने वाला एक प्रकार का केला।

ढाकना—स०=ढकना (ढाँकना)।

ढाक-पाटन—पु० [ढाका नगर] एक प्रकार की बढिया मलमल जिसकी बुनावट मे फूल या बूटियाँ बनी होती थी।

ढाकेवाल—वि०=ढाकई। जैसे—ढाकेवाल पटैला।

ढाटा—पु० [हिं० डाढ] १ कपडे की वह चौडी पट्टी जिससे दाढी बाँधी जाती है। २. वह पगड़ी जिसका एक फेंटा या बल गालो और दाढी पर भी लपेटा जाता है। ३ वह कपडा जो मुरदे के क़फन पर उसका मुँह बँधा रखने के लिए बाँधा जाता है।

क्रि० प्र०—बाँधना।

ढाड—स्त्री० [अनु०] १. दहाड। २. दाढ। ३. ढाह (चिल्ला कर रोना)।

मुहा०—ढाह मारकर रोना=खूब जोर से चिल्लाते हुए रोना।

ढाडना†—अ०=दहाडना।

ढाडी—पु०=ढाढी।

ढाढ—स्त्री०=ढाढ।

ढाढ़ना†—स० १ दे० 'डाढना'। २ दे० 'दहाडना'।

ढाढस—पु०=ढारस।

ढाढ़िन—स्त्री० [हिं०] 'ढाढी' का स्त्री० रूप।

ढाढ़ी—पु० [देश०] [स्त्री० ढाढिन] १ गाने-बजानेवालो की एक जाति या वर्ग जो मगल-अवसरो पर बधाइयाँ आदि गाती हैं। २ मुसलमान गवैयो की एक जाति या वर्ग जो प्राय अच्छे सगीतज्ञ होते है।

ढाढ़ोन—पु० [स० ढिंढिणी] जल-सिरिस का पेड़।

ढाना—स० [स० ध्वसन, हिं० ढाहना] १ कोई ऊँची उठी या बनी हुई इमारत या रचना तोड़-फोडकर गिराना। जैसे—दीवार या मकान ढाना। २ किसी प्रकार बे-काम करके जमीन पर गिराना। जैसे—कुश्ती मे प्रतिपक्षी को या लडाई मे शत्रु को ढाना। ३ कोई विकट बात उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—गजब ढाना।

मयो० क्रि०—देना।

†४ मिटाना। (पश्चिम)

ढापना—स०=ढाँपना (ढकना)।

ढाब—पु० [हिं० डाबर] छोटा ताल। तलैया।

ढाबर—वि०, पु०=डाबर।

ढाबा—पु० [देश०] १. ओलती। २ जाल। ३ परछत्ती। मियानी। ४. वह स्थान जहाँ पकी हुई कच्ची रसोई बिकती या दाम लेकर लोगो को खिलाई जाती हो।

†पु०=धावा।

ढामक—पु० [अनु०] ढोल, नगाडे आदि के बजने का शब्द।

ढामना†—पु० [देश०] एक प्रकार का साँप।

ढामरा—स्त्री० [स० ढाम√रा (देना)+क-टाप्] मादा हस। हसी।

ढार—पु० [स० धार] १ पथ। मार्ग। रास्ता। २ ढग। प्रकार। ३ ढाँचा। ४ वस्तुएँ ढालने का साँचा। ५. साँचे मे ढाली हुई वस्तु। ६ रचना। बनावट। ७ दे० 'ढरनि'।

†स्त्री० १ कान मे पहनने का बिरिया नाम का गहना। २ हाथ मे पहनने की पिछेले।

†स्त्री०=ढाल।

ढारना—†स० १.=ढालना। २.=डालना।

ढारस—पु० [स० धृष् या दार्ढ्य?] १ किसी दुखी, निराश या हतोत्साह व्यक्ति के प्रति कही जानेवाली ऐसी आशामय बात जिससे उसके मन मे फिर से कुछ उत्साह या धैर्य का सचार हो। आश्वासन।

क्रि० प्र०—देना।—बँधाना।

२ कष्ट, विपत्ति आदि के समय भी मन मे बना रहनेवाला साहस या हिम्मत। ३ मन या विचार की दृढता। (क्व०)

ढारा—वि० [हिं० ढारना] ढारने अर्थात् ढालनेवाला। उदा०—रखेउ छात चँवर औ ढारा।—जायसी।

ढाल—स्त्री० [स०√ढौक् (चलाना)+अच्, पृपो० सिद्धि] चमड़े, धातु आदि का बना हुआ वह गोलाकार उपकरण जिसे युद्ध-क्षेत्र मे सैनिक लोग तलवार, भाले आदि का वार रोकने के लिए अपने बाँए हाथ मे रखते थे। चर्म। फलक।

मुहा०—ढाल-तलवार बाँधना=वीरो का-सा वेश धारण करके योद्धा बनना।

स्त्री० [स० धार] किसी भूखड का ऐसा तल जो क्षितिज के समतल न हो बल्कि तिरछा या नीचे की ओर झुका हुआ हो।

स्त्री० [हिं० ढालना] १ ढालने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वह प्रकार या रूप जिसमे कोई चीज ढली या ढालकर बनी हो। ३. रग-ढग। तौर-तरीका।

पद—चाल-ढाल। (देखें)

४. चन्दे, प्राप्य धन आदि की उगाही। (पश्चिम)

ढालना—स० [स० ध्वल्, प्रा० ढाल, डल्ल, गु० ढालवूं, मरा० ढालणें, सिं० ढारराड] १ कोई द्रव पदार्थ धार बाँधकर किसी पात्र मे या यो ही कही गिराना या डालना। उँडेलना। जैसे—(क) गिलास मे दूध ढालना। (ख) हडे का पानी जमीन पर ढालना। २ कोई चीज बनाने के लिए गली या पिघली हुई धातु किसी साँचे मे उँडेलना या गिराना। जैसे—पीतल के खिलौने या लोहे के कल-पुरजे ढालना। ३ पीने के लिए बोतल मे से गिलास आदि मे शराब उलटना या गिराना ४. मद्य-पान करना। शराब पीना। जैसे—आज-कल [illegible] मडली मे

ढुकना—अ० [स० ढुक्क; प्रा० ढुक्कइ] १ अन्दर प्रवेश करना, विशेषत झुक या छिपकर अथवा सिर झुकाकर प्रवेश करना। २. किसी के पास या समीप पहुँचना। ३. टोह लेने के लिए आड मे छिपना। ४ किसी पर टूट पडना। धावा करना।

ढुकास†—स्त्री० [अनु० ढुक-ढुक] बहुत तृषित होने पर जल्दी-जल्दी बहुत सा जल पीने की प्रबल इच्छा। कडी या तेज प्यास।

क्रि० प्र०—लगना।

ढुक्का—पु०=ढूका।

ढुच्चा†—पु० [अनु०] घूँसा। मुक्का।

ढुटौना†—पु०=ढोटा (लडका)।

ढुनमुनिया—स्त्री० [हिं० ढनमनाना] १ बराबर लुढकते हुए या बार-बार कलाबाजी खाते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव। २. स्त्रियों का घेरा बाँधकर नाचते हुए कजली गाना।

ढुर—अव्य०=धुर (ठिकाने तक)।

ढुरकना†—अ० [हिं० ढार] १. लुढकना। २ झुकना। ३. प्रवृत्त होना। ४. अनुकूल या प्रसन्न होना।

ढुरकी—स्त्री० [हिं० ढुरकना] ढुरकने की क्रिया या भाव।

स्त्री०=ढरकी (करघे की)।

ढुर-ढुर—वि० [?] १. साफ-सुथरा। २ चिकना।

ढुरन—स्त्री० [हिं० ढुरना] ढुरने की अवस्था, क्रिया या भाव।

ढुरना—अ० [हिं० ढार] १ नीचे की ओर प्रवृत्त होना। ढलना। २ किसी ओर अथवा किसी पर अनुरक्त या कृपालु होना। अनुकूल या प्रसन्न होना। ३ कभी इधर और कभी उधर गिरना, झुकना या लुढकना जैसे—किसी के सिर पर चँवर ढुरना। ४. ढुलकना। लुढकना। ५. ढलकना।

ढुरहरी—स्त्री० [हिं० ढुरना] १. बार-बार इधर-उधर, ढुरने या हिलने-डोलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ नथ मे लगी हुई सोने के गोल दानों, मोतियों आदि की पंक्ति जो प्राय. इधर-उधर लुढकती रहती है। ३ ढुर्री। पगडडी।

ढुराना—स० [हिं० ढुरना का स०] १. ढुरने अर्थात् नीचे की ओर गिरने जाने आदि मे प्रवृत्त करना। ढलकाना। २ बार बार इधर, उधर हिलने-डोलने मे प्रवृत्त करना। जैसे—चँवर ढुराना। ३ लुढकाना।

ढुरावना—स०=ढुराना।

ढुरुआ—पु० [हिं० ढुरना] गोल मटर। केराव मटर।

ढुरुकना*—अ०=ढुलकना।

ढुर्री—स्त्री० [हिं० ढुरना] खेतों जगलो, पहाडो आदि मे का वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते रहने या आने-जाने से आप से आप रेखा के रूप मे बन जाता है। पगडडी।

ढुलकना—अ० [हिं० ढुरना या ढलना] १ द्रव पदार्थ का नीचे की ओर प्रवृत्त होना। २ बराबर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरना। लुढकना। ३. किसी पर अनुरक्त या प्रसन्न होना। ४ दे० 'ढलना'।

ढुलकाना—स० [हिं० ढुलकना का स०] १ किसी चीज को ढुलकने मे प्रवृत्त करना। २ लुढकाना।

ढुलढुल—वि० [हिं० ढुलना=ढुलकना] जो बराबर लुढकता रहता हो।

ढुलना—अ० [हिं० ढोना का अ०] एक स्थान से उठाकर किसी भारी चीज या चीजो का दूसरे स्थान पर पहुँचाया, रखा या लाया जाना। ढोया जाना। जैसे—असबाब या माल का ढुलना।

†अ० १ =ढुलकना (सभी अर्थों मे)। २. =डुलना (चँवर आदि का)।

ढुलमुल—वि० [हिं० ढुलना मे का ढुल+अनु० मुल] १ (पदार्थ) जो किसी स्थान पर स्थिर न रहने के कारण बराबर हिलता-डुलता रहे। २. (व्यक्ति) जो विचारो की दृढता या निश्चय के अभाव मे किसी बात के दोनों पक्षो मे से कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर प्रवृत्त होता हो। जिसमे किसी बात या विषय के सबध मे अतिम निर्णय करने की समर्थता न हो। जैसे—ढुलमुल-यकीन=जल्दी हर बात पर अथवा कभी एक बात पर और कभी दूसरी बात पर विश्वास कर लेनेवाला।

ढुलवाई—स्त्री० [हिं० ढुलवाना] ढुलवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ढुलवाना—स० [हिं० ढोना का प्रे०] किसी को कुछ ढोने मे प्रवृत्त करना। ढोने का काम किसी दूसरे से कराना।

ढुलाई—स्त्री० [हिं० ढोना या ढुलवाना] १ ढोने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'ढुलवाई'।

ढुलाना—स० [हिं० ढोना का प्रे०] कोई चीज ढोने का काम किसी से कराना। ढुलवाना। जैसे—असबाब ढुलाना।

†स० १ नीचे की ओर गिराना, बहाना या लाना। ढलकाना। २ किसी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त कराना, अनुकूल या प्रसन्न कराना। ३ लुढकाना। ४. इधर-उधर चलाना-फिराना या लाना-ले जाना। ५ लेप आदि के रूप मे किसी चीज पर पोतना या लगाना। ६. डुलाना। (दे०)

ढुलुआ—पु० [देश०] खजूर की बनी हुई चीनी।

ढुवारा†—पु० [देश०] घुन (कीडा)।

ढूँकना—अ०=ढुकना।

ढूँका†—पु०=ढूका।

ढूँढ़—स्त्री० [हिं० ढूँढना] ढूँढने की क्रिया या भाव। खोज।

ढूँढ़ना—स० [स० ढुढ] किसी छिपी या खोई हुई अथवा इधर-उधर पडी हुई या आँखो से ओझल वस्तु, व्यक्ति आदि का पता लगाने के लिए इधर-उधर देखना-भालना। जैसे—आलमारी मे से किताब ढूँढना। (ख) किसी वकील का घर या डाक्टर की दूकान ढूँढना।

ढूँढला—स्त्री० [स० ढुढा] हिरण्य कश्यप की बहन ढुँढा।

ढूकड़ा†—अव्य० [स० ढौक] पास। समीप। (राज०) उदा०—साल्ह महलहूँ ढूकडा ढाठी डेरउ लीध।—ढोला मारू।

ढूका—पु० [हिं० ढुकना] १ ढुकने या प्रविष्ट होने की क्रिया या भाव। २ किसी की बात सुनने या रग-ढग देखने के लिए आड मे छिप या लुककर बैठना।

मुहा०—ढूका देना या लगाना=छिप या लुककर किसी की बात-चीत सुनना या रग-ढग देखना। **(किसी के) ढूके लगाना**=ढूका लगाना। (देखे ऊपर)

ढूढ़िया—पु० [देश०] एक तरह के श्वेताम्बर जैन साधु जो मुँह पर पट्टी बाँधे रहते है।

ढूल*—पु०=ढोल। उदा०—असप सारहली बाजइ ढूल।—नरपतिनाल्ह।

ढूलड़ी†—स्त्री० [?] गुड़िया। (डि०) उदा०—राजकुँमारि ढूलड़ी रमाति।—प्रिथीराज।

ढूसर—पु० [देश०] वैश्यों का एक वर्ग जो आज-कल प्राय. 'भार्गव' नाम से प्रसिद्ध हो रहा है।

ढूसा†—पु० [अनु०] कुश्ती के समय नीचे गिरे या पट पडे हुए पहलवान की गरदन पर कलाई और कोहनी के बीच की हड्डी से बार बार रगडते हुए किया जानेवाला आघात। रद्दा।

ढूह†—पु० [स० स्तूप] १ ढेर। अटाला। २ टीला। भीटा। ३ सीमा आदि का सूचक मिट्टी का छोटा, ऊँचा ढेर।

ढूहा—पु०=ढूह।

ढेंक—स्त्री० [स० ढेंक] लबी गरदनवाला एक प्रकार का जलपक्षी।

ढेंकली—स्त्री० [हिं० ढेंक=लबी गरदनवाली एक चिडिया] १ चावल निकालने के लिए धान कूटने का एक प्रसिद्ध यत्र जो लबी मोटी लकडी का बना होता और जो बार बार पैर मे दबाकर चलाया जाता है। ढेंकी।
मुहा०—(किसी को) ढेंकली मे डालना=ऐसी अवस्था मे रखना जिसमे बहुत कष्ट या सकट हो।
२ सिंचाई आदि के लिए कूएँ से पानी निकालने का एक यत्र जिसमे एक ढाँचे पर बधे ऊँचे बाँस के सिरे पर पानी भरने के लिए कोई पात्र विशेषत डोल बधा रहता है। ३ कपडे जोडने के लिए एक प्रकार की आडी सिलाई।
क्रि० प्र०—मारना।
४. अरक, असव आदि खीचने का बक-तुड नामक यत्र। ५ सिर नीचे करके सारे शरीर को उलटकर दूसरी ओर ले जाने की क्रिया। कलाबाजी। कलैया।
क्रि० प्र०—खाना।

ढेंका—पु० [हिं० ढेंक=पक्षी] १ कोल्हू मे का वह बाँस जो जाट के सिरे से कतरी तक लगा रहता है। २ दे० 'ढेंकली'।

ढेंकिका—स्त्री० [स०] एक प्रकार का नृत्य।

ढेंकिया—स्त्री० [हिं० ढेंकी] सिलाई मे, कपडे काटने का एक ढग या काट जिसके फलस्वरूप किसी कपडे की लबाई एक तिहाई घट जाती है और चौडाई एक तिहाई बढ जाती है।

ढेंकी—स्त्री० [स०] नृत्य का एक प्रकार।
स्त्री०=ढेंकली।

ढेंकुर—पु० [स्त्री० ढेकुरी] दे० 'ढेंकली'।

ढेंकुला†—पु०=बडी ढेकली।

ढेंकुली—स्त्री०=ढेकली।

ढेंटी—स्त्री० [देश०] —धव का पेड।

ढेंढ़†—पु० [देश०] १ हिन्दुओ मे एक जाति जिसकी गिनती अन्त्यजो में होती थी। २ कौआ।
वि० जिसे कुछ भी बुद्धि न हो। परम मूर्ख। जड।
†पु०=डोडा (वनस्पतियो का)।

ढेंढर—पु० [हिं० टेंटर] १ एक रोग जिसमे आँख के ढेले पर मास निकल आता है। २. इस प्रकार आँख के ढेले पर उभरा या निकला हुआ मांस।

ढेंढवा—पु० [देश०] लगूर।

ढेंढा†—पु० १ =ढेंढ। २.=ढेंढवा।

ढेंढ़ी—स्त्री० [हिं० ढेढा] १ कपास पोरते आदि की ढोडी। २ कान मे पहनने का एक गहना।

ढेंप—स्त्री०=ढेंपनी (ढिपनी)।

ढेंपनी—स्त्री०=ढिपनी।

ढेउआ†—पु० [म० ढेब्बुका] पैसा नाम का ताँबे का सिक्का।

ढेऊ†—पु० [देश०] पानी की तरग। लहर।

ढेक—स्त्री० =ढेंक (जल-पक्षी)।

ढेकुला—पु० =ढेंकुला (बडी ढेंकली)।

ढेड़—पु०=ढेढ।

ढेड़स—स्त्री०=डेंडसी।

ढेपुनी†—स्त्री०=ढिपनी।

ढेबरी—स्त्री०=ढिबरी।

ढेबुआ—पु०=ढेउआ (पैसा)।

ढेबुक—पु०=ढेउआ (पैसा)।

ढेम मौज—स्त्री० [देश० ढेऊ+फा० मौज] ऊँची या बडी लहर।

ढेर—पु० [हिं० धरना ?] [स्त्री० अल्पा० ढेरी] एक स्थान पर विशेषत एक दूसरी पर रखी हुई बहुत सी वस्तुओं का ऊँचा समूह।
विशेष—ढेर सदा निर्जीव पदार्थो का होता है।
मुहा०—ढेर करना =किसी को मारकर इस प्रकार गिरा देना कि वह निर्जीव पदार्थ का ढेर या राशि जान पडे अथवा हो जाय।
पद—ढेर-सा=मान, मात्रा आदि मे अधिक या बहुत। जैसे—ढेर-सा, रुपया।

ढेरना†—पु० [देश०] सूत या रस्सी बटने की फिरकी।

ढेरा—†पु० [देश०] १ सुतली बटने की फिरकी जो परस्पर काटती हुई दो आडी लकडियो के बीच मे एक खडा डडा जडकर बनाई जाती है। २ लकडी का वह घेरा जो मोट के मुँह पर लगा होता है। ३ चकई नाम का खिलौना। ४ अकोल वृक्ष।
†पु०=ढेला।
पु० [?] सिहोर नामक वृक्ष। उदा०—हैसि मकोई ढाँक औ ढेरा।—नूर मुहम्मद।

ढेरा ढोंक—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली।

ढेरी—स्त्री० [हिं० ढेर] छोटा ढेर। जैसे—आमो की ढेरी।

ढेल—पु०=ढेला।

ढेलवाँस—स्त्री० [हिं० ढेला+स० पाश] एक प्रकार की जालीदार थैली जिसके एक सिरे पर लबी रस्सी बधी रहती है।
विशेष—थैली मे बहुत से छोटे-मोटे ककड पत्थर भरे जाते है और तब उस रस्सी से पकडकर उसे चारो ओर आकाश मे घुमाया जाता है जिससे ककड पत्थर छुट-फुट इधर-उधर गिरकर आघात करते है।

ढेला—पु० [स० दल, हिं० डला] १ किसी जमी हुई चीज का कडा और ठोस छोटा टुकडा जिसका आकार या रूप नियमित न हो और जो हाथ मे उठाया जा सके। जैसे—मिट्टी या पत्थर का ढेला, गुड या नमक का ढेला। २ अवध मे होनेवाला एक तरह का धान। उदा०—मधुकर ढेलाजीरा सारी।—जायसी।

ढेला चौथ—स्त्री० [हिं० ढेला+चौथ] भादो सुदी चौथ जिस दिन चद्रमा देख लेने पर उसके कलकात्मक दोष से बचने के लिए आस-पास के मकानो पर ढेले फेंके जाते और गालियाँ सुनी जाती हैं।

ढेबुआ—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक सिक्का जो एक पैसे के मूल्य के बराबर होता था।
ढेर्रा—पुं०[?] मेंढक।
ढेक्ली—स्त्री०=ढेंकली।
ढेचा—पुं०[देश०]१. बरबेड़ की तरह का एक पेड़ जिसकी छाल से रस्सियाँ बनाई जाती हैं। ज्यंती। २. सन या पटवे के डंठल जिनसे प्रायः बोझा ढोया जाता है।
पुं०=ढाँचा (ढड्ढा)।
ढैया—स्त्री०[हिं० ढाई]१. ढाई सेर का बाट। २. ढाई सेर की तौल। ३. ढाई गुने का पहाड़ा। ढौंचा। ४. फलित ज्योतिष में, शनि का संचार में ढाई पहर, ढाई दिन, ढाई महीने, ढाई वर्ष आदि का होना है।
ढोंक—स्त्री०=ढेंक (मछली)।
ढोंकना—स०[अनु०] कोई चीज अधिक मात्रा में और जल्दी जल्दी पीना। (व्यंग्य)
ढोंका—पुं०[देश०]१. किसी चीज का ठोस, कड़ा तथा बड़ा टुकड़ा। बड़ा ढेला। जैसे—पत्थर या मिट्टी का ढोंका। २. वह बाँस जो कोल्हू में जाट के सिरे से लेकर कोल्हू तक बँधा रहता है। ३. दो ढोली अर्थात् ४०० पानों के मान की संज्ञा।
ढोंग—पुं०[हिं० ढंग] दूसरों की दया, सहानुभूति आदि प्राप्त करने के लिए खड़ा किया हुआ ढकोसला या रचा हुआ पाखंड।
ढोंगधतूर—पुं०[हिं० ढोंग+धूर्त]१. ऐसा व्यक्ति जो ढोंग रचकर अपना काम निकाल लेता हो। २. धूर्त विद्या।
ढोंग-बाज—वि०=ढोंगी।
ढोंग-बाजी—स्त्री०[हिं० ढोंग+फा० बाजी] झूठ-मूठ ढोंग रचने की क्रिया या भाव।
ढोंगी—वि०[हिं० ढोंग] ढोंग रचनेवाला या झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। (व्यक्ति)
ढोंटा—पुं०=ढोटा।
ढोंढ़—पुं०[सं० तुंड] १. कपास, पोस्ते आदि की कली। २. कली।
ढोंढ़ी—स्त्री०[हिं० ढोंढ़] १. नाभि। धुन्नी। २. कली। ढोढ़ी।
ढोंर—स्त्री०[देश०] एक तरह की मछली जो १२ इंच लंबी होती है। ढेरी। ढोंड़।
ढोका—पुं०=ढोंका।
ढोटा—पुं०[हिं० ढोटी का पुं०]१. पुत्र। बेटा। २. बालक। लड़का।
ढोटी—स्त्री०[सं० दुहितृ) १. पुत्री। बेटी। २. बालिका। लड़की।
ढोटौना—पुं०=ढोटा।
ढोड़ा—पुं० [देश०] ऊँट। (डिं०)
ढोना—स०[सं० वोढ=वहन करना, ले जाना; वर्णन विपर्यय—ढोव] १. पीठ या सिर पर रखकर या हाथ में लटकाकर कोई भारी चीज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। जैसे—मजदूरों का माल ढोना। २. पशु, यान आदि पर लादकर भारी चीजें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। जैसे—गधों पर ईंटें ढोना। ट्रक या बैलगाड़ी पर अनाज या माल ढोना। ३. कहीं से बहुत-सी संपत्ति आदि अनुचित रूप से उठाकर ले जाना। ४. विपत्ति, कष्ट आदि में निर्वाह करना।

ढोर—पुं०[हिं० ढुरना] गाय, बैल आदि पशु। चौपाया।
स्त्री०[हिं० ढुरना]१. ढुरने की क्रिया या भाव। २. अंगों आदि का कोमलतापूर्ण और मोहक संचालन। नजाकत की अदा। उदा०—कोमल चरन चलनि नटवर ढोर मोर, पोर-पोर ढोरैं छवि कोटिन अनंग की। —भारतेन्दु।
ढोरना—स०[हिं० ढारना] १. ढालना। ढरकाना। २. लुढ़काना। ३. हिलाना-डुलाना। ४. (अपने या किसी के) पीछे या साथ चलने में प्रवृत्त करना। पीछे लगाना।
अ० १. जमीन पर लोटना या लुढ़कना। २. किसी का अनुयायी बनकर उसके पीछे या साथ चलना।
ढोरा—पुं०=ढोर।
ढोरी—स्त्री०[हिं० ढोरना]१. ढोरने का भाव। २. उत्कट अभिलाषा। ३. धुन। लगन। उदा०—ढोरी लाई सुनन की कहि गोरी मुसकात। —बिहारी।
ढोल—पुं०[सं० ढक्का√ला (लेना)+क, पृषो० सिद्धि, मि० फा० दुहुल] १. एक प्रकार का लंबोतरा बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है।
मुहा०—(किसी बात का) ढोल पीटना या बजाना=कोई बात खुले आम सबसे कहते फिरना। २. कान की वह झिल्ली या परदा जिसपर वायु का आघात पड़ने से शब्द का ज्ञान होता है।
ढोलक—स्त्री० [सं० ढोल+कन्] एक तरह का छोटा ढोल। ढोलकी।
ढोलकिया—पुं०[हिं० ढोलक] ढोल बजानेवाला व्यक्ति।
ढोलकी—स्त्री०=ढोलक।
ढोल-ढमक्का—पुं०[हिं० ढोल+अनु० ढमक्का] १. ढोल और उसके साथ बजनेवाले कई तरह के बाजे। २. व्यर्थ का बहुत अधिक आडंबर।
ढोलन—पुं०[हिं० ढोला]१. दूल्हा। २. पति।
ढोलना—पुं०[हिं० ढोल] ढोलक के आकार का एक तरह का छोटा जंतर जिसे तागे में पिरोकर गले में पहना जाता है।
स०१=ढालना। २.=ढोरना या डोलाना।
ढोलनी—स्त्री०[सं० ढोलन] बच्चों का छोटा झूला। पालना।
ढोलवाई—स्त्री० दे० 'ढुलवाई'।
ढोला—पुं०[हिं० ढोल]१. सड़ी हुई वनस्पतियों, शरीरों आदि में पड़नेवाला एक तरह का सफेद छोटा कीड़ा। २. हद या सीमा का निशाना। ३. देह। शरीर।
पुं०[सं० दुर्लभ; प्रा० दुल्लह] १. वर। दूल्हा। २. पति। ३. प्रियतम। ४. विवाह के समय गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। (पश्चिम) ५. कछवाहा वंश के राजा नल के पुत्र का नाम जिनका प्रेम मारवणी पूगल के राजा पिंगल की कन्या मारू से हुआ था। इनकी प्रेम गाथा अति प्रसिद्ध है।
ढोलिनी—स्त्री०[हिं० ढोलिया का स्त्री० रूप] ढोल बजानेवाली।
ढोलिया—पुं०[हिं० ढोल] [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला व्यक्ति।
ढोली—स्त्री०[हिं० ढोल] दो सौ पानों की गड्डी या थाक।
स्त्री०=ठठोली।
ढोव—पुं०[हिं० ढोवना (ढोना)] १. ढोने की क्रिया या भाव। २ ढोकर ले जाई जानेवाली चीज। ३. प्राचीन काल में, वह भेंट जो राजा को

सरदार लोग मगल अवसरो पर देते थे और जो मात्रा, मान आदि की अधिकता के कारण ढोकर ले जाई जाती थी।

ढोवना†—स०=ढोना।

ढोवा—पु०[हिं० ढोना]१ ढोये जाने की क्रिया या भाव। ढुलाई। २ माल ढोनेवाला व्यक्ति। ३ दूसरो का माल या सपत्ति अनुचित रूप से उठाकर ले जाना। लूट। †४=ढोव।

ढोवाई†—स्त्री०=ढुलाई।

ढोहना*—स०१=ढोना। २=ढूँढना।

ढौंचा—पु० [सं० अर्द्ध प्रा० अट्ठ=हिं० चार] साढे चार का पहाडा।

ढौंसना—अ०[हिं० धौंस से अनु०,] आनद ध्वनि करना।

ढौकन—पु०[स०√ढौक् (गमनादि)+ल्युट्—अन] १ घूसप। रिश्वत। २. उपहार। भेट।

ढौंकना—स०[देश०] तरल पदार्थ जल्दी-जल्दी और बहुत अधिक पीना। (व्यग्य)

ढौरना†—स०[हिं० ढाल] इधर-उधर घुमाना। ढुराना।

ढौरा—वि० [स० धवल] [स्त्री० ढौरी] १. सफेद। २. साफ स्वच्छ।

ढौरी*—स्त्री०[हिं०] धुन। लगन।
स्त्री०[हिं० ढरना] ढग। तरीका।

ण

ण—देवनागरी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषाविज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, अनुनासिक, अल्पप्राण तथा सघोष व्यजन है।
पु०[स०√नख् (गति)+ड, पृषो० सिद्धि]१ आभूषण। गहना। २ ज्ञान। ३. निर्णय। फैसला। ४. वह स्थान जहाँ पीने का पानी रखा जाता हो। ५ दान। ६ शिव का एक नाम। ७ बुद्ध का एक नाम। ८ पिंगल मे नगण का सक्षिप्त रूप।
वि० गुणो आदि से रहित या शून्य।

ण-गण—पु०[मध्य०म०] छन्द शास्त्र मे, दो मात्राओ का एक मात्रिक गण। इसके ये दो रूप होते है—(क)श्री (ऽ) और(ख) हरि (।।)।

त

त—देवनागरी वर्णमाला का १६वाँ और तवर्ग का पहला व्यजन जो उच्चारण तथा भाषाविज्ञान की दृष्टि से दत्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा अघोष होता है। छन्दशास्त्र मे यह तगण का सक्षिप्त रूप माना जाता है और कविता मे यह 'तो' का अर्थ देता है। उदा०—नाहित मौन रहब दिन राती।—तुलसी।
पु०[स० √तक् (हँसना)+ड]१ पुण्य। २ रत्न। ३ अमृत। ४ एक बुद्ध का नाम। ५ स्तन। ६ गोद। ७ गर्भाशय। ८ नाव। ९ योद्धा। १० वर्बर ११ शठ। १२ म्लेच्छ। १३ चोर। १४. झूठ। १५ दुम। पूँछ।
*क्रि० वि०=तो।

तँई—अव्य०=तई।

तक—पु० [स० √तक् (कष्ट से जीना)+अच्] १ दुखी जीवन। २ प्रिय के वियोग से होनेवाला कष्ट या दुख। ३ डर। भय। ४ पत्थर की टाँकी। ५. पहनने के कपडे।

तकन—पु०[स०√तक्+ल्युट्—अन] कष्टमय जीवन व्यतीत करना।

तंकारी—स्त्री०=टँगारी (कुल्हाडी)।

तंग—वि०[फा०]१ जिसमे आवश्यक या उचित चौडाई या विस्तार का अभाव या कमी हो। सँकरा। सकीर्ण। जैसे—तग कमरा, तग गली। २. (पहनने की चीज) जिसमे कष्टदायक कसावट या सकीर्णता हो। आवश्यकता से अधिक कसा हुआ और कुछ छोटा जैसे—तग कुरता, तग जूता। ३ (व्यक्ति) जो किसी बात से बहुत चिन्तित और दुखी या पीडित हो रहा हो। परेशान। हैरान। जैसे—(क) लडका सब को बहुत तग करता है। (ख) महीनो से उसे बुखार ने तग कर रखा है। ४. (काम या बात) जिसमे आवश्यक या उचित विस्तार के लिए यथेष्ट अवकाश न हो। जैसे—आज-कल उनका हाथ बहुत तग है, अर्थात् उनके हाथ मे काम चलाने योग्य धन नही है। ५ (मन या हृदय) जिसमे उदारता, सहृदयता आदि का अभाव हो। जैसे—वह बहुत तग दिल का आदमी है; उससे सहायता की कोई आशा नहीं रखनी चाहिए।
पु०वह तस्मा जिससे घोडो की पीठपर जीन या साज कसकर (उसके पेट के नीचे से) बाँधा जाता है।
पु०[?] १ टाट का बोरा। २ धन-सपत्ति। ३ ज्ञान। उदा० —आवत जात दोऊ विधि लूटै सर्व तगहरि लीन्हो हो।—कबीर।

तंगदस्त—वि०[फा०] [भाव० तग-दस्ती]१ कृपण। २ धनहीन। ३ जिसके हाथ मे अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए यथेष्ट धन न हो।

तंगदस्ती—स्त्री० [फा०] १ कृपणता। कजूसी। २ आर्थिक कष्ट या सकट।

तंगहाल—वि०[फा०+अ०] [भाव० तग-हाली]१ कष्ट विपत्ति या या सकट मे पडा हुआ। २ आर्थिक कष्ट या सकट मे पडा हुआ। ३ रोग-ग्रस्त। बीमार।

तंगहाली—स्त्री०[फा०+अ०]तगहाल होने की अवस्था या भाव।

तंगा—पु०[?]१ एक प्रकार का पेड। २ तावे का एक छोटा सिक्का जो प्राय दो पैसे मूल्य का होता था। टका।

तँगिया—स्त्री० [फा० तग] १ छोटा तग या तरमा। २. पहनने के कपडो मे लगाई जानेवाली तनी। बन्द। जैसे—अँगिया या मिरजई की तगिया।

तगी—स्त्री० [फा०] १. तग होने की अवस्था या भाव। सकीर्णता। २. विपत्ति या सकट मे पडकर चिंतित और दु खी होने की अवस्था या भाव। ३. आर्थिक सकट। धन आदि का अभाव। ४. ऐसी अवस्था जिसमे किसी चीज की पूर्ति की अपेक्षा माँग अधिक होने के कारण उसका यथेष्ट मात्रा मे उपलब्ध होना सभव न हो। जैसे—शहर मे वर्षो से पानी की तगी है।

तंजेब—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बढिया महीन मलमल।

तंड—पु० [स०√तड् (मारण)+अच्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।
पु० [स० ताडव] नाच। नृत्य।

तंडक—पु० [स०√तंड् (नृत्य)+ण्वुल्—अक] १ खजन पक्षी। २ फेन। ३ वृक्ष का तना या धड। ४. साहित्य मे, ऐसी पदावली जिसमे समासो की अधिकता हो। ५. बहुरुपिया।

तंडव—पु०=ताडव।

तंडा—स्त्री० [स०√तड्+अच्—टाप्] वध। हत्या।

तंडि—पु० [स०√तड्+इन् (बा०)] एक वैदिक ऋषि।

तंडु—पु० [स० √तड्+उन्] महादेव जी के नदिकेश्वर।

तंडुरण—पु० [स०] १ चावल का पानी। २ कीडा-मकोडा।

तंडुरीण—पु० [स० तडा+उरच्+ख—ईन] १ चावल की धोवन। २ छोटे-मोटे कीड़े या फतिगे। ३ बर्बर व्यक्ति। ४ वज्र मूर्ख।

तंडुल—पु० [स०√तड्+उलच्] १ चावल। २ वायविडग। ३. चौलाई का साग। ४ हीरे की एक पुरानी तौल जो सरसों के बराबर होती थी।

तंडुल-जल—पु० [मध्य०स०] वह पानी जिसमे चावल भिगोया अथवा पकाया गया हो। वैद्यक मे यह बल-वर्द्धक तथा सहज मे पचनेवाला माना जाता है।

तंडुलांबु—पु० [स० तडुल-अबु, मध्य०स०] १ तडुल-जल। २ पके हुए चावल की माँड। पीच।

तडुला—स्त्री० [स०√तंड्+उलच्—टाप्] १ वायविडग। २. ककही या कघी नाम का पौधा।

तंडुलिया—स्त्री० [स० तडुली] चौलाई (साग)।

तंडुली—स्त्री० [स० तडुल+ङीप्] १ एक प्रकार की ककडी। २ चौलाई का साग। ३. यव-तिक्ता लता।

तंडुलीक—पु० [स० तडुली√कै (प्रतीत होना)+क] चौलाई का साग।

तंडुलीय—पु० [स० तडुल+छ—ईय] चौलाई का साग।
वि० तडुल-सबधी।

तंडुलीयक—पु० [स० तण्डुलीय + क(स्वार्थ)] १. वायविडंग। २ चौलाई का साग।

तंडुलीयिका—स्त्री० [सं० तडुलीय+कन्—टाप्, इत्व] वायविडग।

तंडुलु—पु० [स०=तडुल, पृषो० उत्व] वायविडग।

तंडुलेर (रक)—पु० [स० तडुल+ढ—एय] चौलाई का साग।

तंडुलोत्थ—पु० [स० तडुल-उद्√स्था (ठहरना)+क]=तडुल-जल।

तंडुलोदक—पु० [स० तडुल-उदक, प०त०]=तडुल-जल।

तंडुलौघ—पु० [स० तडुल-ओघ, ष०त०] एक प्रकार का बाँस।

तंत†—पु० [स० तत्तु] १. ततु। ताँत। २ निरन्तर चलता रहनेवाला क्रम। ३. सूत्र। ४. किसी बात के लिए मन मे होनेवाली ऐसी उता-वली जो लगन या लौ की सूचक हो। ५. प्रबल इच्छा या कामना। ६. अधीनता। वश।
क्रि० प्र०—लगना।
७ दे० 'तनु'।
पु० [स० तत्र] १. ऐसा बाजा जिसमे बजाने के लिए तार लगे होते है। जैसे—बीन, सितार आदि। २. क्रिया। ३. तत्र-शास्त्र। ४. किसी के अधीन या वशवर्ती होना।
वि० जो तौल मे ठीक या बराबर हो।
†पु०=तत्व।

तंत-मंत—पु०=तत्र-मंत्र।

तंतरी*—पु०, वि० तत्री।

तंति—स्त्री० [स० √तन् (विस्तार)+क्तिन्] १ डोरी, तात अथवा इसी तरह की कोई और वस्तु। २. कतार। पंक्ति। ३ विस्तार। ४. गाय। गौ। ५ बुनकर। जुलाहा।

तंतिपाल—पु० [स० तति√पाल् (पालन)+णिच्+अण्] १ सहदेव का वह नाम जिससे वह अज्ञातवास के समय विराट के यहाँ प्रसिद्ध थे। २ गौओं का पालन और रक्षा करनेवाला व्यक्ति।

तंतिसरा†—पुं० [स० तत्री स्वर] ऐसे बाजे, जिनमे बजाने के लिए तार लगे हो। जैसे—सारगी, सितार आदि।

तंतु—पु० [स०√तन् (विस्तार)+तुन्] १. ऊन, रेशम, सूत आदि का बटा हुआ डोरा। तागा। २ सूत की तरह के वे पतले, लबे रेशे जिनके योग से प्राणियों, वनस्पतियों आदि के भिन्न-भिन्न अग बने होते हैं। ३. धातु का वह विशिष्ट प्रकार का बहुत ही महीन तार जो बिजली के लट्टुओ, निर्वात नलियो आदि मे लगा रहता है और जो विद्युतधारा से तपकर चमकने और प्रकाश देने लगता है। (फिलामेन्ट) ४. पौधो का वह पतला अग जो आस-पास की टहनियों आदि से लग-कर चक्कर खाता हुआ उनका आश्रय लेता है। ५ मकडी का छाता।
पद—तंतु कीट। (दे०)
६. चमडे की बटी हुई डोरी। तांत। ७. अष्ट-पाद जाति की मछली जो बहुत ही घातक और हिंसक होती है। ८ फैलाव। विस्तार। ९. बाल-बच्चे। औलाद। सतान। १०. किसी प्रकार की परम्परा। निरंतर चलनेवाला क्रम। जैसे—रग या यज्ञ का ततु।
*पु०=तत्र।

तंतुक—पु० [स० तंतु√कै (प्रतीत होना)+क] १ सरसो। २ रस्सी।

तंतुका—स्त्री० [स० ततुक+टाप्] नाडी।

तंतुकाष्ठ—पु० [मध्य०स०] जुलाहो की एक प्रकार की लकडी या ब्रुश जिससे ताना साफ किया जाता है। तूली।

तंतुकी—स्त्री० [स० ततुक+ङीप्] नाडी।

तंतुकीट—पु० [मध्य०स०] १. मकडी। २. रेशम का कीडा।

तंतु-जाल—पु० [ष०त०] शरीर के अन्दर जाल के रूप मे फैली हुई नसें। (वैद्यक)।

तंतुण, तंतुन—पु० [स०√तन्+तुनन्] 'मगर' नामक जल-जंतु।

ततु-नाग—पु०[उपमि०स०] मगर नामक जल-जतु।

तंतु-नाभ—पु०[ब०स०, अच्] मकड़ा।

तंतु-निर्यास—पु०[ब० स०] ताड का वृक्ष।

ततु-पर्व (न्)—पु० [ब०स०] तागा अर्थात् राखी बाँधने का पर्व। रक्षा-बधन।

तंतुभ—पु०[सं० ततु√भा (प्रकाशित होना)+क]१. सरसो। २. गौ का बच्चा। बछडा।

तंतुमत्—पु०=ततुमान्।

तंतुमान् (मत्)—पु०[स० ततु+मतुप्] अग्नि। आग।

तंतुर—पु०[स० ततु+र] कमल की जड। भसीड। मृणाल।

तंतुल—पु०[स० ततु√लच्] मृणाल। कमलनाल।

तंतुवादक—पु० [स० ष०त०] वह व्यक्ति जो तारवाले बाजे (जैसे—सारगी, सितार आदि) बजाता हो।

तंतुवाप—पु०[स० तंतु√वप् (बुनना) +अण्] दे० 'ततुवाय'।

तंतुवाय—पु० [स०ततु√वेञ् (बुनना)+अण्] १ कपडे बुननेवाला। जुलाहा। ताँती। बुनकर। २ मकडी।

ततुविग्रह—स्त्री०[ब०स०]केले का पेड।

तंतु-शाला—स्त्री०[मध्य०स०]१ वह स्थान जहाँ ततु बनाये जाते हो। २ वह स्थान जहाँ कपडे बुने जाते हो।

तंतु-सार—पु०[ब०स०] सुपारी का पेड।

तत्र—पु०[स०√तन् (विस्तार)+ष्ट्रन]१. डोरा या सूत। ततु। २ चमडे की डोरी। तांत। ३ जुलाहा। ४ कपडे बुनने की सामग्री। ५ कपडा। वस्त्र। ६ काम। कार्य। ७ प्रवध। व्यवस्था। ८ कारण। वजह। ९ उपाय। युक्ति। १० दल। समूह। ११ आनन्द। प्रसन्नता। १२ घर। मकान। १३ धन-सम्पत्ति। १४. कोटि। वर्ग। श्रेणी। १५. उद्देश्य। १६. कुल। वश। १७ कसम। शपथ। १८ कायदा। नियम। १९ सजावट। २० औषध। दवा। २१ प्रमाण। सबूत। २२. अधिकार। स्वत्व। २३. अधीनता। परवशता। २४. निश्चित सिद्धान्त। २५. वह पद जिस पर रहकर किसी कर्त्तव्य का पालन किया जाता है। २६ ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था जिसके अनुसार घर-गृहस्थी, राज्य, समाज आदि का नियत्रण और सचालन किया जाता है। २७ राज्य और उसके अन्तर्गत काम करनेवाले सभी राजकीय कर्मचारी। २८ व्यवस्था,शासन आदि करने की कोई निश्चित या विशिष्ट प्रणाली या रीति। जैसे—हिन्दू राज-तत्र, पाश्चात्य समाज-तत्र। ३० हिन्दुओ का प्रसिद्ध शास्त्र जो शिव-प्रोक्त कहा जाता है और जिसमे शिव तथा शक्ति की उपासना, पूजन आदि के द्वारा कुछ प्रकार की क्रियाओ और मत्रो से अनेक प्रकार के लौकिक तथा पारलौकिक उद्देश्य सिद्ध करने के विधान हैं।

विशेष—इस शास्त्र का मुख्य सिद्धान्त यह है कि कलियुग मे वैदिक मत्रो, यज्ञो आदि का नही, बल्कि तात्रिक उपासना, विधि और यत्र-मत्रो का ही अनुष्ठान होना चाहिए। सब प्रकार के अभिचार, झाड-फूँक पुरश्चरण, भैरवी चक्र-पूजन, उच्चाटन, मारण, मोहन आदि षट्कर्म इसी तत्रशास्त्र के अन्तर्गत आते है। यह मुख्यत शाक्तो का प्रधान शास्त्र है और इसके मत्र प्राय एकाक्षरी और अर्थहीन होते है। बौद्धो ने हिन्दुओ से यह शास्त्र लेकर चीन तथा तिब्बत मे इसका विशेप प्रचार तथा विकास किया था। आधुनिक विद्वान् इसे डेढ दो हजार वर्षो से अधिक पुराना नही मानते।

तंत्रक—पु०[स० तत्र+कन्] नया कपडा।

तंत्रकार—पु०[स०] बाजा बजानेवाला।

तंत्रण—पु०[स०√तत्र् (शासन करना)+ल्युट्—अन] १ किसी को अपने तत्र या शासन मे रखना। २ तत्र के अनुसार चलना या चलाना।

तंत्रता—स्त्री०[स०तत्र+तल्—टाप्] १ किसी तत्र के अनुसार होने-होनेवाली व्यवस्था। २. ऐसी योग्यता या स्थिति जिसमे एक काम करने पर उसके साथ और भी कई काम आपसे आप हो जाँय।

तंत्रधारक—पु० [ष० त०] यज्ञ आदि कार्यो मे वह व्यक्ति जो कर्म-काड की पुस्तक लेकर याज्ञिक आदि के साथ बैठता हो।

तंत्र-मंत्र—पु० [द्व० स०] तत्र शास्त्र के विधानो के अनुसार किये जाने वाले अभिचार, पुरश्चरण आदि कृत्य।

तंत्र-युक्ति—स्त्री० [ष० त०] सुश्रुत सहिता के अनुसार वह युक्ति जिसके द्वारा किसी वाक्य का आशय समझा जाय। ये २८ प्रकार की कही गई है।

तंत्रवाप—पु० [स० तत्र √वप् (बुनना)+अण्] १. ततुवाय। ताती। २ मकडी।

तंत्रवाय—पु० [स० तत्र√वेञ्(बुनना)+अण्] १ ततुवाय। ताँती। जुलाहा। २. मकडी। ३ ताँत।

तंत्रसंस्था—स्त्री० [स० ष० त०] वह सस्था जो तत्र अर्थात् शासन करती हो।

तंत्रस्कद—पु० [स०] ज्योतिष शास्त्र का वह अग जिसमे गणित के द्वारा ग्रहो की गति आदि का निरूपण होता है। गणित ज्योतिष।

तंत्रस्थिति—स्त्री० [ष० त०] राज्य के शासन की प्रणाली।

तंत्र-होम—पु० [तृ० त०] तत्र शास्त्र के अनुसार होनेवाला होम।

तंत्रा—स्त्री० [स०√तत्र्+अ+टाप्] तद्रा।

तंत्रायी (यिन्)—पु० [स० तत्र√इ (गति)+णिनि] सूर्य।

तंत्रि—स्त्री० [स० √तत्र्+इ] १. तत्री। २. तद्रा।

तंत्रिका—स्त्री० [स० तत्री+कन्—टाप्, ह्रस्व] १ गुडूची। गुरुच। २ ताँत।

तंत्रिपाल—पु० [स० तत्रि√पाल्+णिच्+अण्] ततिपाल। (दे०)

तत्रि-पालक—पु० [स० ष० त०] जयद्रथ का एक नाम।

तंत्री—पु० [स० तत्र+ङीप्] १. वह जो बाजो आदि की सहायता से गाने-बजाने का काम करता हो। २ गवैया। सगीतज्ञ। ३ सैनिक।

वि० १ तत्र-सम्बन्धी। २ जिसमे पतार लगे हो। ३. तंत्र-शास्त्र का अनुयायी। ४. जो किसी तत्र के अधीन हो। ५ परवश। पराधीन।

स्त्री० [स०√तन्त्र्+ई] १ बीन, सितार आदि बाजो मे लगा हुआ तार। २ ऐसे बाजे जिनमे बजाने के लिए तार लगे हो। ३ ताँत। ४ डोरी। रस्सी। ५. शरीर के अन्दर की नस। ६ वीणा। बीन। ७ एक प्राचीन नदी का नाम। ८ गुडूची। गुरूच।

तंत्री-मुख—पु० [ब० स०] तत्र मे हाथ की एक मुद्रा।

तदरा—स्त्री० =तद्रा।

तदान—पु० [पश्तो] क्वेटा (पाकिस्तान) के आस-पास के प्रदेशो मे होनेवाला एक तरह का अगूर।

तंदिही—स्त्री० =तदेही।

तदुआ—पु०[देश०] ऊसर जमीन मे होनेवाली एक तरह की घास।

तदुरुस्त—वि० [फा०] १ जो शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ हो। नीरोग। २. जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो।

तंदुरुस्ती—स्त्री० [फा०] १ तदुरुस्त या स्वस्थ होने की अवस्था या भाव। २ शारिरिक स्थिति। स्वास्थ्य।

तंदुल—पु० =तडुल।

तदुलीयक—पु० [स० तण्डुलीयक] चौलाई का साग।

तंदूर—पु० [फा० तनूर] मिट्टी मे घास, मूंज आदि मिलाकर बनाई हुई रोटियाँ पकाने की एक प्रकार की भट्ठी जिसकी ऊँची गोलाकार दीवार के भीतरी भाग मे आटे की लोई को हाथ से चिपटाकर चिपकाया जाता है।

तंदूरी—पु० [हि० तदूर] छोटा तदूर।

वि० १ तदूर-सबधी। २ तदूर मे पका हुआ। जैसे—तदूरी रोटी।

पु० [देश०] एक तरह का बढिया रेशम जिसका रग पीला होता है।

तंदेही—स्त्री० [फा० तनदिही] १. कोई काम करने के लिए खूब मन लगाकर किया जानेवाला परिश्रम या प्रयत्न। २ ताकीद। ३ तल्लीनता।

तद्रवाप, तंद्रवाय—पु० [स० तन्त्रवाप, तन्तवाय, पृषो० सिद्धि] तंतुवाय। बुनकर।

तंद्रा—स्त्री० [स० √तन्द्र् (अवसाद)+अ—टाप्] १ हलकी नींद। २. दुर्बलता, रोग, विष आदि के प्रभाव के कारण होनेवाली वह स्थिति जिसमे मनुष्य या पशु-पक्षी को हलकी नींद-सी आ जाती है और वह प्राय निश्चेतन अवस्था मे कुछ समय तक पडा रहता है।

तंद्राल—वि० [स०] १. जो तद्रा मे पडा हुआ हो। २. =तद्रालु।

तंद्रालस—पु० [स० तद्रा-आलस्य] वह आलस्य या शिथिलता जो तद्रा के फलस्वरूप होती है। उदा०—निस्तब्ध मौन था अखिल लोपक तद्रालस का वह विजन प्रान्त।—प्रसाद।

तंद्रालु—वि० [स० तत्√द्रा (निन्दित गति)+आलुच्] जिसे तद्रा आ रही हो।

तंद्रि—स्त्री० [स० √तद्+क्रिन] =तद्रा।

तंद्रिक—वि० [स० तंद्रा+ठन्—इक] १. तद्रा-सबधी। २. (रोग) जिसमे तद्रा भी आती हो।

... ज्वर।

वि० तडुल-सबध ... कर्म० स०] एक तरह का संक्रामक ज्वर जिसमे

...डुलीयक—पु० [... अवस्था मे पडा रहता है। (टाइफस)

पु० =...ई का साग ... कर्म० स०] वैद्यक मे, एक तरह का सन्निपात

...द्रिक-ज्वर—पु० [स० ... से बढता है, दम फूलने लगता, दस्त आने

रोगी प्राय तद्रा ... [डुल, ...गने लगती है तथा जीभ काली पड जाती है।

...क-सन्निपात—पु० [स० ... २५ दिनो की ...ही गई है।

...जिसमे ज्वर बहुत तेज ... [तडुल-उद ...न्—टाप्] तद्रा।

तडुल-उदक

तंद्रिता—स्त्री० [सं० तद्रिन्+तल्—टाप्] तंद्रा में पडे हुए होने की अवस्था या भाव।

तंद्रिल—वि० [स० तद्रा+इलच्] १. तद्रा-संबधी। २ तद्रालु।

तद्री—स्त्री० [स० तद्रि+ङीप्] १ तद्रा। २ भृकुटी। भौह।

वि० [तद्रा+इनि] १. थका हुआ। शिथिल। २ मट्ठर। सुस्त।

तंबा—स्त्री० [स०√तम्ब् (जाना)+अच्-टाप] गौ। गाय।

पु० [फा० तबान] [स्त्री० अल्पा० तबी] ढीली मोहरीवाला एक तरह का पाजामा।

तंबाकू—पु० = तमाकू।

तंबिया—वि० [हि० तांबा+इया (प्रत्य)०] तावे का बना हुआ।

पु० १. तांबे या पीतल का बना हुआ तरकारी आदि बनाने का चौडे मुंहवाला एक तरह का पात्र। ताबिया। २ तसला।

तँबियाना—अ० [हि० तांबा] १ किसी पदार्थ का तावे के रग का हो जाना। पीला पडना। जैसे—आँखें ताबियाना। २ खाद्य पदार्थ का कुछ समय तक तांबे के बरतन मे रखे रहने पर तांबे की गध और स्वाद से युक्त होना। जैसे—तरकारी या दही ताबियाना।

तंबीर—पु० [स०√तब् (जाना)+ईरन् (बा०)] ज्योतिष का एक योग।

तंबीह—स्त्री० [अ०] १ किसी की भलाई के लिए अथवा भविष्य मे होनेवाले किसी अपकार या अहित से सावधान रहने के लिए उसे कही जानेवाली बात या दी जानेवाली सूचना। २ दड। सजा।

तंबू—पु० [हि० तनना] १ मोटे कपडे, टाट आदि को बांसों, खूंटों, रस्सियों आदि की सहायता से तानकर बनाया हुआ अस्थायी आश्रय स्थान। खेमा।

क्रि० प्र०—खडा करना।—तानना।

२ एक तरह की मछली।

तंबूर—पु० [फा०] एक तरह का छोटा ढोल।

पु० =तबूरा।

तबूरची—पु० [फा० तंबूर+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तबूरा बजाता हो।

तबूरा—पु० [हि० तानपूरा] सितार की तरह का तीन तारोवाला एक बाजा जो स्वर मे सहायता देने के लिए बजाया जाता है। तानपूरा।

तंबूरातोप—स्त्री० [हि० तबूरा+तोप] एक तरह की तबूरे के आकार की बड़ी तोप।

तंबूल—पु० = तांबूल।

तंबेरण—पुं० [?] हाथी। (डि०)

तंबोरा—पु० १. दे० 'तँबोली'। २. दे० 'तबूरा'।

तंबोल—पु० [स० ताम्बूल] पान। उदा०—मुख तंबोल रँग धारहि रसा।—जायसी।

†पु० = तमोल।

तंबोलिन—स्त्री० 'तँबोली' का स्त्री० रूप।

तँबोलिया—स्त्री० [सं० तबूल+हि० इया (प्रत्य०)] एक तरह की पान के आकार की मछली।

पु० = तबोली।

तँबोली—पु० [हि० तबोल +ई (प्रत्य०)] वह जो पान लगाकर बेचता हो। पान का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। तमोली।

तंभ—पु० =स्तभ।

तभन—पु० =स्तभन।

तंभावती—स्त्री० [स०] रात के दूसरे पहर मे गाई जानेवाली सपूर्ण जाति की एक रागिनी।

तंभोर—पु० [स० तावूल] पान।

तमोर—पु० =तभोर (पान)।

तँवार—स्त्री० [हि० ताव] १ थकावट, रोग आदि के कारण सिर मे आनेवाला चक्कर। घुमटा। २ ज्वराश। हरारत।

तँवयरी—स्त्री० =तँवार।

तअज्जुव—पु० [अ०] किसी अनोखी, अप्रत्याशित या विलक्षण घटना, वात, व्यवहार आदि का मूल या रहस्यपूर्ण कारण समझ मे न आने पर उत्पन्न होनेवाला मनोविकार। आश्चर्य।

तअम्मुल—पु० [अ०] १ सोच-विचार। २ सोच-विचार के कारण किसी काम मे लगनेवाली देर। विलम्व। ३ धैर्य। सब्र।

तअल्लुक—पु० [अ०] लगाव। सवध।

तअल्लुका—पु० [अ०] वह वहुत से गाँव जो किसी एक जमीदार के अधिकार मे होते थे।

पद—अतल्लुकेदार।

तअल्लुकेदार—पु० [अ०] तअल्लुक +फा० दार] वह जो किसी वडे तअल्लुके या इलाके का अधिकारी या स्वामी हो।

तअल्लुकेदारी—स्त्री० [अ० तअल्लुक +फा० दारी] १ तअल्लुकेदार होने की अवस्था या भाव। २ वह सारी भूमि या क्षेत्र जो किसी तअल्लुकेदार के अधिकार मे हो।

तअस्सुव—पु० [अ०] [वि० तअस्सुवी] वह असहनशील और पक्षपातपूर्ण मनोवृत्ति जो पराई जातियो, धर्मो, व्यक्तियो अथवा उनके आचार, विचारो आदि के साथ उचित और न्यायपूर्ण व्यवहार नही करने देती और जिसके फलस्वरूप मनुष्य उन्हें उपेक्षा, घृणा, भय, सदेह आदि की दृष्टि से देखता है।

तइँ—सर्व०=तैं (तू)।

तइनात—वि० =तैनात।

तइसा—वि० =तैसा।

तईं—अव्य० [स० तनु] १ एक अव्यय जिसका प्रयोग व्यक्तियो के सम्वन्ध मे 'को' 'प्रति' या 'सम्वन्ध मे' के अर्थ मे होता है। जैसे—आपके तईं=आपको या आपके प्रति अथवा सम्वन्ध मे। अपने तईं=अपने प्रति या अपने सम्वन्ध मे। २ लिए। वास्ते।

तई—स्त्री० [हि० तवा या तया का स्त्री०] थाली के आकार की एक प्रकार की छिछली कडाही जिसमे प्राय जलेवी और माल-पुआ वनाया जाता है।

अव्य० [स० तदा] उस समय। तव। (राज०) उदा०—कही तई करुणा मैं केसव।—प्रिथीराज।

तउ*—अव्य० [स० तत] १ उस समय। तव। २ उस प्रकार। त्यों। ३ से। प्रति। उदा०—तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू।—तुलसी। ४. तो।

तऊं†—अव्य० [हि० तव+ऊ (प्रत्य०)] तिस पर भी। तो भी। तथापि।

तक—अव्य० [स० अत+क] सज्ञाओं अथवा सज्ञाओ के समान प्रयुक्त होनेवाले शब्दो के साथ लगकर अवधि, सीमा आदि का अन्तिम या अधिकतम छोर सूचित करनेवाला एक सवध सूचक अव्यय। जैसे—(क) आखिर आप कहाँ तक (सीमा) जायँगे। (ख) आप कव तक (अवधि) आयँगे।

स्त्री० [प० तकडी] १ तराजू। २ तराजू का पल्ला। हिं० स्त्री० [हि० ताकना] १ ताकने की क्रिया या भाव। २ टकटकी। टक।

तकड़ा†—वि० = तगडा।

तकड़ी—स्त्री० [देश०] एक तरह की वारहमासी घास जो रेतीली जमीन मे होती है। इसे घोडे चाव से खाते है। चरमरा। हैन।

†स्त्री० =तराजू। (पजाव)

तकदमा—पु० [अ० तकद्दुम] अटकल। अनुमान। कूत।

तकदीर—स्त्री० [अ०] [वि० तकदीरी] वह प्राकृतिक या लोकोत्तर शक्ति जो घटित होनेवाली वातों को पहले ही निश्चित कर देती है। किस्मत। भाग्य। उदा०—तकदीर मे लिखा था पिजरे का आवोदाना।—इकवाल।

पद—तकदीरवर।

तकदीरवर—वि० [अ० तकदीर+फा० वर] जिसकी तकदीर या भाग्य वहुत अच्छा हो। भाग्यवान्।

तकदीरी—वि० [अ०] तकदीर या भाग्य-सवधी। जैसे—यह सव तकदीरी खेल या मामला है।

स्त्री० [हि०ताकना] तकने ताकने या, तकन की क्रिया या भाव।

तकना*—स० [हि० ताकना] १ ताकना। देखना। २ आश्रय, सहायता आदि पाने के लिए किसी की ओर देखना। जैसे—अकाल मे प्रजा राजा की ओर तकती है। ३ किसी की ओर वुरी दृष्टि या भाव से देखना। जैसे—किसी की वहू-वेटी को तकना अच्छा नही है। ४ आसरा देखना। प्रतीक्षा करना। शरण लेना।

पु० वह व्यक्ति जो वुरी दृष्टि से दूसरो विशेषत पराई स्त्रियो की ओर ताकता रहता हो।

तकवीर—स्त्री० [अ०] ईश्वर और उसके कार्यो तथा देनो की हार्दिक प्रशसा या स्तुति।

तकव्वुर—पु० [अ०] [वि० तकव्वरी] अभिमान। घमड।

तकमा—पु० १ दे० 'तुकमा'। २ दे० 'तमगा'।

तकमील—स्त्री० [अ०] किसी काम के पूरे होने की अवस्था या भाव। पूर्णता।

तकर-मल्हो—स्त्री० [देश०] भेडो के शरीर से ऊन काटने की एक तरह की हँसिया। (गढवाल)

तकरार—स्त्री० [अ०] १ ऐसी कहा-सुनी जो अपना-अपना पक्ष ठीक सिद्ध करने के लिए कुछ उग्रता या कटुतापूर्वक हो। विवाद। हुज्जत। २. साधारण झगडा या लडाई।

पु० १ धान का वह खेत जो फसल काटने के वाद फिर खाद देकर जोता गया हो। २ वह खेत जिसमे गेहूँ, चना, जौ आदि एक साथ वोये गये हो।

तकरारी—वि० [अ०] १ तकरार-सबधी। २. तकरार करने वाला। झगडालू।

तकरीब—स्त्री० [अ०] १ पास होने की अवस्था या भाव। समीपता। २ किसी कार्य या विषय का उपलक्ष्य। ३ विवाह आदि शुभ अवसरो पर होनेवाला उत्सव।

तकरीबन्—अव्य० [अ०] करीब-करीब। प्राय। लगभग। जैसे—कचहरी यहाँ से तकरीबन् दो मील है।

तकरीर—स्त्री० [अ०][वि० तकरीरी] १. बाते करना या कहना। बात-चीत। २ भाषण। वक्तृता।

तकरीरी—वि० [अ० तकरीर] १ तकरीर के रूप मे होनेवाला। तकरीर-सबधी। २ जिसमे कुछ कहने-सुनने की जगह हो। विवाद-ग्रस्त। ३. जबानी। मौखिक।

तकररी—स्त्री० [अ०] किसी पद या स्थान पर नियुक्त या मुकर्रर होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तकला—पु० [स० तर्कु] [स्त्री० अल्पा० तकली] १ लोहे की वह सलाई जो सूत कातने के चरखे मे लगी होती है और जिस पर कता हुआ सूत लिपटता चलता है। टेकुआ। २ टेकुरी की वह सलाई जिस पर बटा हुआ कलाबत्तू लपेटा जाता है। ३ वह सलाई जिसकी सहायता से सुनार सिकडी के गोल दाने बनाते है। ४ रस्सी बटने की टेकुरी।

मुहा०— (किसी के) तकले का बल निकालना=किसी की अकड, पाजीपन या शेखी दूर करना।

तकली—स्त्री० [हिं० तकला] सूत कातने का एक प्रकार का छोटा यत्र जिसमे काठ के एक लट्टू मे छोटा-सा तकला या सूजा लगा रहता है।

तकलीफ—स्त्री० [अ०] १. कष्ट। दु ख। पीडा। जैसे—(क) उनकी ऐसी बातो से हमे तकलीफ होती है। (ख) इस तरह उठाने से बच्चे को तकलीफ होती होगी। २ विपत्ति। सकट। जैसे—सब पर कभी न कभी तकलीफ आती ही है। ३ बीमारी। रोग। जैसे—खाँसी या बुखार की तकलीफ।

विशेष—औपचारिक रूप से इस शब्द का प्रयोग ऐसे अवसरो पर भी होता है जहाँ किसी को किसी दूसरे के अनुरोध-स्वरूप कोई कार्य या परिश्रम करना पडता है। जैसे—आप ही तकलीफ करके यहाँ आ जाँय।

तकल्लुफ—पु० [अ०] ऐसा शिष्टाचार जो केवल सौजन्य का परिचय देने के लिए किया जाय।

पद—तल्लुफ का=बहुत अच्छा या बढिया।

तकवाना—स० [हिं० ताकना का प्रे०] [भाव तकवाही] किसी को ताकने मे प्रवृत्त करना।

तकसना†—अ०=ताकना (देखना)।

तकसी—स्त्री० [?] १. नाश। २. दुर्दशा।

तकसीम—स्त्री० [अ०] १ बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। जैसे—बच्चो मे पुस्तकें या मिठाइयाँ तकसीम करना। २ गणित मे किसी सख्या को भाग देने की क्रिया। भाग।

क्रि० प्र०—करना।

तकसीर—स्त्री० [अ०] १. अपराध। कसूर। २. चूक। भूल।

तकाई—स्त्री० [हिं० ताकना+ई० (प्रत्य०)] १. तकने या ताकने की क्रिया ढग या भाव। २ दूसरो को कुछ दिखलाने की क्रिया या भाव।

तकाजा—पु० [अ० तकाज़ =इच्छा, कामना] १ किसी आवश्यकता, प्रवृत्ति, स्थिति आदि के फलस्वरूप प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से होनेवाला कोई कार्य या परिणाम अथवा आन्तरिक प्रेरणा। जैसे—लडको का बहुत अधिक उछल-कूद या पाजीपन करना उनकी उमर का तकाजा है। २. वह बात जो किसी से कोई काम करने, कराने या अपना प्राप्य प्राप्त करने के उद्देश्य से उसे स्मरण कराने और जल्दी करने के लिए कही या कहलाई जाती है। तगादा। जैसे—उनकी किताब दे आओ, कई बार उनका तकाजा आ चुका है।

तकान—स्त्री० १.=तकाई। †२ =थकान।

तकाना—स० [हिं० ताकना का प्रे०] किसी को कुछ तकने या ताकने मे प्रवृत्त करना। दिखाना।

तकाव—पु० [हिं० तकना+आव (प्रत्य०)] तकने या ताकने की क्रिया ढग या भाव।

तकावी—स्त्री० [अ०] वह धन जो जमीदार, राजा या सरकार की ओर से गरीब खेतिहरो को खेती के औजार बनवाने, बीज खरीदने या कूएँ आदि बनवाने के लिए अथवा किसी विशिष्ट सकट से पार पाने के लिए ऋण के रूप मे दिया जाता है।

तकिया—पु० [फा०] १ एक प्रकार की बडी मुँह-बद थैली जिसमे रूई आदि भरी हुई होती है और जिसे सोते समय सिर के नीचे लगाया जाता है। बालिश। २ पत्थर की वह पटिया जो छज्जे मे रोक या सहारे के लिए लगाई जाती है। मुतक्का। ३ आश्रय या विश्राम स्थान। ४ कब्रिस्तान के पास का वह स्थान जहाँ कोई फकीर रहता हो। ५ आश्रय। सहारा। ६ चारजामा। (क्व०)

तकिया कलाम—पु० दे० 'सखुन तकिया'।

तकियादार—पु० [फा०] मुसलमानी कब्रिस्तान अथवा किसी पीर या फकीर की समाधि पर रहनेवाला प्रधान अधिकारी।

तकिल—पु० [स०√तक् (हँसना)+इलच्] १ धूर्त। २ औषध। दवा।

तकिला—स्त्री० [स० तकिल+टाप्] औषध। दवा।

तकुआ†—पु० १ =तकला। २ =तकना (ताकनेवाला)।

तकैया†—वि० [हिं० ताकना +ऐया (प्रत्य०)] ताकनेवाला।

तकोली†—स्त्री० [देश०] शीशम की जाति का एक तरह का बड़ा वृक्ष। वि० दे० 'पस्सी'।

तक्कर†—वि० दे० 'तगडा'।

तक्की†—स्त्री० [हिं० ताकना] किसी ओर ताकते रहने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—लगाना।

तक्मा (क्मन्)—स्त्री० [स० √तक्+मनिन्] बसत या शीतला नामक रोग।

†पु० १. दे० 'तुकमा'। २ दे० 'तमगा'।

तक्र—पु० [स०√तच् (सकुचित करना)+रक्] १ छाछ। मट्ठा। २. शहतूत के पेड का एक रोग।

तक्र-कूर्चिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] १. फटा हुआ दूध। २. फटे हुए दूध मे से निकलनेवाला पदार्थ। छेना।

तक्र-पिंड—पुं० [स० मध्य० स०] छेना।

तक्रभिद्—पुं० [स० तक्र√भिद् (फाडना)+क्विप्] एक तरह का कँटीला पेड। कैथ।

तक्र-प्रमेह—पुं० [मध्य० स०] एक रोग जिसमे मूत्र छाछ की तरह गाढा और सफेद होता है।

तक्र-मास—पुं० [मध्य० स०] मास का रसा। यखनी।

तक्रवामन—पुं० [स० तक्र√वम् (वमन करना)+णिच्+ल्युट्—अन] नागरग।

तक्र-संधान—पुं० [स० मध्य० स०] सौ टके भर छाछ मे एक एक टके भर साभर नमक, राई और हल्दी का चूर्ण डालकर बनाई जानेवाली काँजी। (वैद्यक)

तक्र-सार—पुं० [स० ष० त०] मट्ठे मे से निकलनेवाला सार तत्त्व। नवनीत। मक्खन।

तक्राट—पुं० [स० तक्र√अट्(चलना)+अच्] मथानी।

तक्रार—स्त्री०=तकरार।

तक्रारिष्ट—पुं० [स० तक्र-अरिष्ट, मध्य० स०] एक प्रकार का अरिष्ट जो मट्ठे मे हड और आँवले आदि का चूर्ण मिलाकर बनाया जाता है। (वैद्यक)

तक्राह्वा—स्त्री० [स० तक्र—आह्वा, ब० स०] एक प्रकार का क्षुप।

तक्वा (क्वन्)—पुं० [स०√तक्(गति)+वनिप्] १. चोर। २ शिकारी चिडिया।

तक्ष—पुं० [स०√तक्ष्(काटना, छीलना)+घञ्] १ पतला करने की क्रिया या भाव। २. रामचन्द्र के भाई भरत का बडा पुत्र जिसने तक्षशिला नामकी नगरी बसाई थी।

तक्षक—पुं० [स०√तक्ष्+ण्वुल्—अक] १ पुराणानुसार पाताल के आठ नागो मे से एक जो कश्यप का पुत्र था और कद्रु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। राजा परीक्षित की मृत्यु इसी के काटने से हुई थी। २ सर्प। साँप। ३ विश्वकर्मा। ४ बढई। ५ सूत्रधार। ६ नाग नामक वायु जो दस वायुओ मे से एक है। ७ एक प्रकार का पेड। ८ प्राचीन काल की एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति सूत्रिक पिता और ब्रह्मणी माता से कही गई है।

वि० १. तक्षण करनेवाला। २ काटने या छेदनेवाला।

तक्षण—पुं० [स०√तक्ष्+ल्युट्—अन] १ लकडी काट, छील या रँदकर ठीक और सुडौल करने का काम। २ उक्त काम करनेवाला कारीगर। बढई। ३ पत्थर, लकडी आदि मे बेल-बूटे या उनसे मूर्तियाँ बनाने का काम।

तक्षणी—स्त्री० [स० तक्षण+ङीप्] बढ़इयो का रदा नाम का औजार।

तक्ष-शिला—स्त्री० [ब० स०] भरत के पुत्र तक्ष की बसाई हुई नगरी और बाद मे पूर्वी गान्धार की राजधानी जिसके खँडहर रावलपिंडी के पास खोदकर निकाले गये हैं।

तक्षा (क्षन्)—पुं० [स०√तक्ष्+कनिन्] बढई।

तखड़ी†—स्त्री० =तकडी (तराजू)।

तखता—पुं०=तख्ता।

तखफीफ—स्त्री० [अ०] खफीफ अर्थात् कम या हल्का करने की क्रिया या भाव। कमी। न्यूनता।

तखमीनन—क्रि० वि० [अ०] अदाज से। अटकल से। अनुमानत।

तखमीना—पुं० [अ० तख्मीन] मात्रा, मान आदि की कल्पना करने के लिए अको सख्याओ आदि के सबध मे किया जानेवाला अनुमान या लगाई जानेवाली अटकल। अंदाज।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

तखरी†—स्त्री० =तकडी।

तखलिया—पुं० [अ० तख्लिय] एकात या निर्जन स्थान।

तखल्लुस—पुं० [अ०] वह उपनाम जिसका प्रयोग कोई कवि या लेखक अपनी रचनाओ मे अपने नाम के स्थान पर करता है।

तखान—पुं० [स० तक्षण] बढाई।

तखिहा†—पुं० [अ० ताक] ऐसा बैल जिसकी एक आँख एक रग की और दूसरी आँख दूसरे रग की हो।

तखीत†—स्त्री० [अ० तहकीक] १ तलाशी। २ जाँच। तहकीकात।

तखैयुल—पुं० [अ०] खयाल करने की क्रिया, भाव या शक्ति। ध्यान।

तख्त—पुं० [फा०] १ राजसिंहासन।

मुहा०—तख्त उलटना=एक राजा या शासक को गद्दी से हटाकर उसके स्थान पर दूसरे को बैठना।

२ तख्तों की बनी हुई बडी चौकी।

पद—तख्त की रात=वधू की सुहाग-रात।

तख्तगाह—स्त्री० [फा०] राजधानी।

तख्त ताऊस—पुं० [फा०+अ०] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य और जडाऊ सिंहासन जो भारत के मुगल सम्राट् शाहजहाँ ने बनवाया था और जिसे सन् १७३९ मे नादिरशाह लूट ले गया था।

तख्त-नशीन—वि० [फा०]जो राजसिंहासन पर बैठा हो। सिंहासनारूढ।

तख्त-नशीनी—स्त्री० [फा०] राजा का पहले-पहल अधिकार पाकर राज-सिंहासन पर बैठना। राज्यारोहण।

तख्तपोश—पुं० [फा०] १ तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २ काठ की बडी चौकी। तख्त।

तख्तबदी—स्त्री० [फा०+अ०] १ तख्तो की बनी हुई दीवार जो प्राय कमरो मे आड, विभाग आदि के लिए खड़ी की जाती है। २ उक्त प्रकार की दीवार खडी करने की क्रिया।

तख्तरवाँ—पुं० [फा०] १ वह तख्त जिस पर बादशाह सवार होकर निकला करते थे। हवादार। २ वह बडी चौकी जिस पर जलूस, बरात आदि के चलने के समय नाच-गाना होता चलता था। ३ उडन-खटोला।

तख्ता—पुं० [फा० तख्त] १ लकडी का आयताकार या चौकोर बडा तथा समतल टुकडा।

मुहा०—तख्ता हो जाना=अकड, ऐंठ या सूखकर काठ के समान कडा, जड़ या निश्चेष्ट हो जाना।

२ लकडी का उक्त आकार-प्रकार का वह टुकडा जिस पर कुछ लिखा जाता है अथवा सूचनाएँ आदि चिपकाई जाती हैं। ३. बैठने, सोने आदि के लिए बनी हुई काठ की बड़ी चौकी। तख्त।

मुहा०—किसी का तख्ता उलटना=(क) बना बनाया काम बिगाडना। (ख) किसी प्रकार का प्रबन्ध या व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट करना।

४ शव ले जाने की अरथी। टिकटी। ५ खेतो मे, बगीचो आदि मे की क्यारी। ६. कागज का बडा और लबा-चौडा टुकडा। ताव।

तख्ता-गरदन—पु०[फा०] वह घोड़ा जिसकी गरदन बहुत मोटी हो; और इसी लिए लगाम खींचने पर भी जल्दी मुड़ती न हो।

तख्ता-पुल—पु०[फा० तख्ता+पुल] लकड़ी का वह पुल जो काठ की पटरियाँ जड़कर या बिछाकर बनाया जाता है।

तख्ती—स्त्री०[फा० तख्त] १ छोटा तख्ता। पटरी। २ काठ की वह छोटी पटरी जिसपर बच्चे अक्षर लिखने का अभ्यास करते है। पटिया।

तख्मीना—पु०=तखमीना।

तगड़ा—वि०[स० त्वक्ष, तृक्ष; प्रा० तग्ग, तग्ग; पा० तज्जे] [स्त्री० तगड़ी]१ जो शारीरिक दृष्टि से बलवान और हृष्ट-पुष्ट हो। मजबूत और हट्टा-कट्टा। २. अच्छा बड़ा और भारी। ३ (पक्ष) जो किसी दृष्टि से दूसरे से अधिक प्रबल या सशक्त हो।

तगड़ी—स्त्री० हिं० तगड़ा का स्त्री० रूप।
स्त्री०=तकड़ी।

त-गण—पु० [मध्य० स०] छद शास्त्र मे, उन तीन वर्णों का समूह जिसके पहले दो वर्ण गुरु हों और अतिम लघु हो (ऽऽ।)।

तगदमा†—पु०=तकदमा।

तगना—अ०[हिं० तागना का अ०]तागों से भरा जाना या युक्त होना। तागा जाना।

तगनी—स्त्री०[हिं० तागना] (रुईदार कपड़े) तागने की क्रिया या भाव। तगाई।

तग-पहनी—स्त्री०[हिं० तागा+पहनना] जुलाहों का एक औजार जिसमें टूटा हुआ सूत जोड़ा जाता है।

तगमा—पु० दे० 'तमगा'।

तगर—पु०[म० प०त०]१ प्राय नदियों के किनारे होनेवाला एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी सुगंधित लकड़ी से तेल निकाला जाता है। २ इस वृक्ष की जड़ जिसकी गिनती गध-द्रव्यों में होती है। ३ मदन नामक वृक्ष। मैनफल। ४ एक प्रकार की शहद की मक्खी।

तगला†—पु०[हिं० तकला] तकला। २ सरकंडे का वह छड़ जिसमें जुलाहे ताने के सूत ठीक करते या मिलाते है।

तगसा—पु०[देश०]वह लकड़ी जिसमें ऊन पीटकर मुलायम और साफ किया जाता है।

तगा—पु०[?]एक जाति जो रुहेलखंड में बसती है। इस जाति के लोग अपने आपको ब्राह्मण कहते हैं।
†पु०=तगा।

तगाई—स्त्री०[हिं० तागना]१ तागने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. तागों मे भरे जाने या युक्त होने की अवस्था या भाव। जैसे—रजाई या लिहाफ की तगाई।

तगाड़—पु०=तगार।

तगाड़ा—पु०=तगारा।

तगादा—पुं०[अ० तकाज़.] वह कथन या बात जो किसी से कोई काम करने या कराने या उससे अपना प्राप्य धन अथवा पदार्थ प्राप्त करने के उद्देश्य से उसे याद दिलाने और जल्दी करने के लिए कही या कहलाई जाती है। तकाजा। जैसे—(क) किरायेदार से किराये के रुपयों का तगादा करना। (ख) छापेखाने से किताब जल्दी छापने का तगादा करना।

तगाना—स०[हिं० तागना का प्रे०]तागने का काम कराना। तागने में किसी को प्रवृत्त करना।

तगाफुल—पु०[अ०] ध्यान न देना। उपेक्षा। गफलत।

तगार—पु०[फा०] [स्त्री० अल्पा० तगारी]१ मिट्टी का बड़ा कूँडा या नाँद। २ वह गड्ढा या छोटा घेरा जिसमे इमारत के काम के लिए ईंटें भिगोई जाती हैं अथवा चूने, सुरखी आदि का गारा बनाया जाता है। ३ वह तसला जिसमे गारा या मसाला भरकर राज मिस्तरियों के पास ईंटों की जोड़ाई आदि करने के लिए पहुँचाया जाता है। ४ दे० 'तगारा'।

तगारा—पु० [फा० तगार=बड़ा कूँडा या नाँद] [स्त्री० अल्पा० तगारी] १ मिट्टी की वह नाद जिसका उपयोग हलवाई लोग मिठाइयाँ आदि बनाने मे करते हैं। २. तरकारी, दाल आदि पकाने का पीतल का एक प्रकार का बड़ा बरतन।

तगियाना—स०=तागना।

तगीर*—पु० [अ० तगय्युर] बदलने की अवस्था, क्रिया या भाव। परिवर्तन।

तगीरी—स्त्री०[अ० तगैयुर]=तगीर (परिवर्तन)।

तग्या†—पु०=तज्ञ।

तघार—पु०=तगार।

तचना—अ०[हिं० तपना]१. तप्त होना। तपना। २ मन ही मन बहुत दुखी या सतप्त होना। जलना। उदा०—तरफराति तमकति तचति सुसुकति सूखत जाति।—पद्माकर।
स० दे० 'तचाना'।

तचा†—स्त्री०=त्वचा।

तचाना—स० [हिं० तपाना] १. तप्त करना। तपाना। २ बहुत अधिक मानसिक कष्ट देना। सतप्त करना। जलाना।

तचित*—वि० [हिं० तचना] १. तपा हुआ। तप्त। २ जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट पहुँचा या पहुँचाया गया हो। सतप्त।

तच्छ†—पु०=तक्ष।

तच्छक—पु०=तक्षक।

तच्छना—स०[स० तक्षण]१ विदीर्ण करना। फाड़ना। उदा०—तीर तुपक तरवारि, तच्छि निकरैं उर औरणि।—चन्दवरदाई।
२ नष्ट करना। ३ काटकर टुकड़े करना।

तच्छप—पुं०=तक्षक।

तच्छिन*—क्रि० वि०[स० तत्क्षण] उसी समय। तत्काल।
†वि०=तीक्ष्ण। (क्व०)

तज—पु० [स० त्वच्] १ तमाल और दारचीनी की जाति का मझोले कद का एक सदाबहार पेड़ जिसके पत्ते 'तेज पत्ता' कहलाते हैं। २ इस पेड़ की सुगंधित छाल जो औषध के काम आती है।

तजकिरा—पु०[अ० तज़किर] चर्चा। जिक्र।
क्रि० प्र०—करना।—चलाना।—छेड़ना।

तजगिरी—स्त्री०[फा० तेजगरी] सिकलीगरों की दो अगुल चौड़ी और

प्राय. डेढ बालिश्त लवी लोहे की पटरी जिसपर तेल गिराकर रदा तेज करते हैं।

तजन†—पु०[स० त्यजन,√त्यज् (त्यागना)+ल्युट्—अन्] तजने की क्रिया या भाव।

पु० [फा० ताज़ियान] आघात करने का कोडा या चाबुक।

तजना—स०[स० त्यजन]सदा के लिए त्याग या छोड देना। परित्याग करना।

तजम्मुल—पु०[अ०]१ शृगार। सजावट। २ शोभा। शान-शौकत।

तजरबा—पु० [अ० तज्रिब] १ अनुभव। २ परीक्षण। प्रयोग।

तजरबाकार—पु० [अ० तज्रिब +फा० कार]अनुभवी।

तजरबाकारी—स्त्री०[अ० तज्रिबः+फा० कारी] तजरबे से होनेवाली जानकारी या ज्ञान। अनुभव।

तजरुबा —पु०=तजरबा।

तजरुबाकार—पु०=तरजबाकार।

तजरुबाकारी —स्त्री०=तजरबाकारी।

तजवीज—स्त्री०[अ०तज्वीज़]१ किसी कार्य के सपादन के सबध मे सोचकर सम्मति के रूप मे कही जानेवाली बात। २ निर्णय। फैसला। ३ प्रबध। व्यवस्था। ४ तरकीब। युक्ति।

तजवीज-सानी—स्त्री० [अ०] १ किसी अदालत से स्वय उसके निर्णय पर फिर से विचार करने के लिए की जानेवाली प्रार्थना या दिया जानेवाला आवेदन-पत्र। २ उक्त प्रकार से की हुई प्रार्थना पर फिर से होनेवाला विचार।

तजिया—स्त्री०[?]बहुत छोटा तराजू। काँटा।

तज्जनित—वि०[स० तद्-जनित,तृ० त०] उसके द्वारा उत्पन्न किया हुआ।

तज्जातीय—वि०[स० तद्-जाति कर्म०स०, तज्जाति+छ—ईय] उस जाति से सबध रखनेवाला।

तज्वी—स्त्री०[स० त √जु (गति)+क्विप्+डीप्] हिंगुपत्री।

तज्ञ—वि०[स० त√ज्ञा (जानना)+क]१ तत्त्व जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। २ ज्ञानी। ३ अच्छा जानकार।

तटंक—पु०[स० ताटक]कर्णफूल नामक कान का आभूषण।

तट—पु० [स०√तट् (ऊँचा होना)+अच्] १ ढालुईं जमीन। ढाल। २ आकाश। ३ क्षितिज। ४ खेत। ५ भूमिखड। प्रात। ६ स्थल का वह भाग जो जलाशय के किसी पार्श्व से ठीक मिला या सटा हो। ७ शिव का एक नाम।

क्रि० वि० निकट। पास।

तटक—पु०[स० तट+कन्] नदी आदि का किनारा। तट।

तटका—वि०=टटका।

तटग—पु० [स०=तडाग, पृषो० सिद्धि] तडाग।

तटनी*—स्त्री०=तटिनी (नदी)।

तटवर्ती—वि०[स०]जलाशय, झील, नदी आदि के तट से सबध रखने या उस पर होनेवाला। (राइपेरियन)

तटस्थ—वि०[स० तट √स्था (ठहरना)+क] [भाव० तटस्थता] १. तीर पर रहनेवाला। किनारे पर रहनेवाला। २ पास रहनेवाला। समीपवर्ती। ३ विरोध, विवाद आदि के प्रसगो मे दोनो दलो से अलग और दूर रहनेवाला। किसी का पक्ष न लेनेवाला। उदासीन। निरपेक्ष।

पु० किसी वस्तु का वह लक्षण जो उसके स्वरूप के आधार पर नही, बल्कि उसके गुण और धर्म के आधार पर बतलाया जाता है।

तटस्थता—स्त्री०[स०] १ तटस्थ रहने या होने की अवस्था या भाव। २ लडने-झगडने या वैर-विरोध रखनेवाले पक्षो से अलग रहने की अवस्था या भाव। ३ आधुनिक राजनीति मे (क) किसी देश या राज्य की वह स्थिति जिसमे वह दूसरे राज्यो के युद्ध मे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नही होता, बल्कि बिलकुल अलग रहता है। (ख) किसी प्रदेश या स्थान के सबध मे सधि द्वारा निश्चित वह स्थिति जिससे सधि करनेवाले राज्य आपस मे युद्ध छिडने पर भी उस प्रदेश या स्थान का न तो उपयोग ही कर सकते हैं और न उस पर आक्रमण ही कर सकते है। (न्यूट्रैलिटी)

तटाक—पु० [स० तट√अक्(गति) +अण्] तडाग। तालाब।

तटाकिनी—स्त्री०[स० तटाक+इनि—ङीप्] बडा तालाब।

तटाघात—पु०[स० तट-आघात, स०त०] पशुओ का अपने सीगो या दातो से जमीन खोदना। खूंद।

तटिनी—स्त्री०[स० तट+इनि+ङीप्] नदी। दरिया।

तटी—स्त्री०[स० तट+ङीप्]१ नदी का किनारा। कूल। तट। तीर। २ नदी। ३ घाटी। ४ तराई।

तट्य—वि०[स० तट+यत्]१ तट-सबधी। २ तट पर बसने, रहने या होनेवाला।

पु० शिव।

तठ†—अव्य० [स० तत्र] उस जगह या स्थान पर। वहाँ। उदा०—काढ काढ तलवार तरल ताछन तठ आये।—केशव।

तड़—पु०[स० तट]१ किसी बिरादरी या वर्ग मे से निकला हुआ कोई दल, वर्ग या विभाग। जैसे—आज-कल हमारी बिरादरी मे दो तड हो गये हैं।

पद—तड-बंदी।

२ सूखी भूमि। स्थल। (लश०)

पु०[अनु०] किसी चीज के टूटने, फटने, फूटने अथवा उस पर अघात लगने से होनेवाला शब्द। जैसे—भूनते समय भुट्टे के दानो का तड़-तड शब्द करना।

पद—तडातड़।(दे०)

३ थप्पड। (दलाल)

क्रि० प्र०—जडना।—जमाना।—देना।—लगाना।

४ आमदनी या लाभ का आयोजन या उपक्रम। (दलाल)

क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।

तड़क—स्त्री०[हिं० तडकना] १ तडकने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज के तडकने के कारण उस पर पडा हुआ चिह्न जो प्राय. सीधी धारी के रूप मे होता है। ३ चमकने की क्रिया या भाव।

पद—तड़क-भड़क।

४ घरो की छाजन मे वह बडी लकडी जो दीवार और बँडेर पर रखी जाती है और जिस पर दासे रखकर छप्पर या छाजन डालते हैं।

तड़कना—अ०[स०√त्रुट् या अनु० तड]१ किसी चीज का तड शब्द करते

हुए टूटना, फटना या फूटना। चटकना। जैसे—(क) चिमनी या शीशा तड़कना। (ख) भूनते समय मक्के के दाने तड़कना। २ किसी चीज के सूखने आदि के कारण उसका ऊपरी तल फटना। दरार पड़ना। ३. जोर का 'तड़' शब्द होना। ४. क्रोधपूर्ण व्यवहार करना। बिगड़ना। ५. दे० 'तड़पना' (उछलना)।

स०[हि० तड़का=छौंक] दाल, तरकारी आदि को सुगंधित करने के लिए उसमें तड़का देना या लगाना। छौंकना। बघारना।

तड़क-भड़क—स्त्री०[अनु०]अपना बल, योग्यता, वैभव आदि दिखाने के लिए की जानेवाली ऊपरी बाहरी सजावट। (पाप) जैसे—तड़क-भड़क से सवारी निकालना।

तड़का—पु०[हि० तड़कना]१. दिन निकलने का समय, जिसमें रात्रि का अन्धकार घटने लगता है और कुछ-कुछ प्रकाश होने लगता है।

मुहा०—(किसी बात का) तड़का होना=(क) पूर्ण रूप से अभाव होना। जैसे—पूंजी निकल जाने से घर में तड़का हो गया। (किसी व्यक्ति का) तड़का होना=आघात, प्रहार आदि के कारण होश-हवास गुम हो जाना।

२. खाने-पीने की चीजों को तड़कने या छौंकने की क्रिया या भाव। बघार। ३ वह मसाला जिससे दाल आदि तड़की जाती है।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

तड़काना—स०[हि० तड़कना का स० रूप]१ किसी वस्तु को इस तरह से तोड़ना जिससे 'तड़' शब्द हो। २ सुखाकर बीच से फाड़ना। ३ जोर का शब्द उत्पन्न करना। ४. क्रोध दिलाना या खिजाना। चटकाना।

तड़कीला†—वि० [हि० तड़कना+ईला (प्रत्य०)] १ तड़क-भड़क वाला। भड़कीला। २ चमकीला। ३ फुर्तीला। ४ सहज में तड़क या टूट जानेवाला।

तड़ाका†—पुं०[अनु० तड़] जोर से होनेवाला 'तड़' शब्द।

क्रि० वि० चटपट। तुरत।

तड़ग—पु०[स०]तड़ाग। तालाब।

तड़तड़ाना—अ०[अनु० तड़-तड़] [भाव० तड़तड़ाहट] तड़-तड़ शब्द करते हुए किसी चीज का चटकना, टूटना, फटना या फूटना।

स० इस प्रकार आघात करना कि तड़-तड़ शब्द हो। जैसे—दस-पाँच थप्पड़ तड़तड़ाना।

तड़तड़ाहट—स्त्री० [हि० तड़तड़ाना] तड़-तड़ शब्द होने की क्रिया या भाव। २. तड़-तड़ होनेवाला शब्द।

तड़ता*—स्त्री०[स० तड़ित्] बिजली। विद्युत्। (डिं०)

तड़प—स्त्री०[हि०तड़पना] १. तड़पने की अवस्था, क्रिया या भाव। छटपटाहट। २ सहसा कुछ समय के लिए उत्पन्न होनेवाली चमक। भड़क। जैसे—पन्ने या हीरे की तड़प।

तड़पदार—वि० [हि० तड़प+फा० दार] चमकीला। भड़कीला।

तड़पन—स्त्री०=तड़प।

तड़पना—अ०[स० तप] १. असह्य शारीरिक पीड़ा होने पर छटपटाना। जैसे—दरद के मारे तड़पना। २. कोई काम करने के लिए आवश्यकता से अधिक अधीर या बेचैन होना। जैसे—किसी से मिलने या कुछ कहने के लिए तड़पना। ३. आवेश के कारण सहसा जोरों से बोलने लगना। ४ जोर से उछलना। जैसे—शेर का तड़पना।

तड़पाना—स० [हि० तड़पना का स० रूप] [प्रे० क्रि० तड़पवाना] १ किसी को बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट देकर तड़पने में प्रवृत्त करना। २ किसी को दिखाने के लिए बार-बार चमकाना। जैसे—अँगूठी या उसका हीरा तड़पाना। ३ तड़पने या उछलने में प्रवृत्त करना। जैसे—पटाके की आवाज करके शेर को तड़पाना।

तड़फड़—स्त्री०=तड़प।

तड़फड़ाना—अ०=तड़पना।

स०=तड़पाना।

तड़फना—अ०=तड़पना।

तड़बन्दी—स्त्री० [हि० तड़+फा० बंदी] १. किसी बिरादरी, समाज आदि के अन्तर्गत कोई दूसरा दल या गुट बनाना। २. गुटबंदी।

तड़ाक—पु० [स० √तड् +आक] तड़ाग। तालाब। स्त्री०=तड़ (शब्द)।

क्रि० वि० १ तड़तड़ शब्द करते हुए। २. जल्दी-जल्दी। चटपट। ३. निरंतर। लगातार।

तड़ाका—पु [अनु०] किसी चीज के गिराने, टूटने फटने या फूटने से होनेवाला तड़ शब्द।

क्रि० वि० चट-पट। तुरत।

तड़ाग—पु [स०√तड्+आग] १. तालाब। २ हिरन फँसाने का फंदा।

तड़ागना*—अ० [अनु०] १. डींग मारना। २. उछल-कूद मचाना। ३ प्रयत्न करना।

तड़ागी—स्त्री० [सं० तड़ाग] १. करधनी। २. कटि। कमर।

तड़ाघात—पुं०=तटाघात।

तड़ातड़—क्रि० वि० [अनु०] १. तड़-तड़ शब्द करते हुए। जैसे—तड़ातड़ थप्पड़ लगाना। २. जल्दी जल्दी और निरंतर। लगातार। जैसे—तड़ातड़ जवाब देना।

तड़ातड़ी—स्त्री०[हि० तड़ तड़]१. किसी काम के लिए मचाई जानेवाली जल्दी। २ उतावलापन। व्यग्रता।

तड़ाना—स० [हि० ताड़ना का प्रे० रूप] किसी को कुछ ताड़ने में प्रवृत्त करना।

तड़ावा—स्त्री० [हि० तड़ना=दिखाना] १. वह रूप जो किसी को अपना बल, वैभव आदि तड़ाने के लिए बनाया या धारण किया जाता है। २. धोखा।

तड़ि—स्त्री० [स०√तड्+इन्] १ आघात। २. वह चीज जिससे आघात किया जाय।

तड़िता—स्त्री० =तड़ित्।

*स्त्री०=तड़ित (बिजली)।

तड़ित्—स्त्री० [सं०√तड्+णिच्+इत्, णिलुक्] आकाश में बादलों के टकराने से होनेवाला क्षणिक परन्तु चकाचौंध उत्पन्न करनेवाला प्रकाश। बिजली।

तड़ित्-रक्षक—पु० [ष० त०] ऊँचे मकानों आदि पर लगाया जानेवाला एक उपकरण जो बिजली के गिरने पर उसके प्रभाव को नष्ट करता है तथा मकानों आदि की सुरक्षा (उसके कु-परिणाम से) करता है। (लाइटनिंग एरेस्टर)

तडित्कुमार—पु०[स० प०त०] जैनो के एक देवता जो भुवनपति देवगण मे से हैं।

तडित्पति—पु०[स० प०त०] वादल। मेघ।

तडित्प्रभा—स्त्री०[सं० व०स०] कार्त्तिकेय की एक मातृका।

तड़ित्वान् (त्वत्)—पु०[स० तडित्+मतुप्] १ नागरमोथा। २ वादल। मेघ।

तड़िद्गर्भ—पु०[स० व०स०] वादल। मेघ।

तडिद्दाम (मन्)—[स०प०त०]विजली कौंधने के समय दिखाई पडनेवाली उसके प्रकाश की रेखा। विद्युल्लता।

तडिन्मय—वि०[स० तडित्+मयट्] जो विजली के समान कौधता हो।

तडिपाना*—अ०=तडपना।
स०=तडपाना।

तडिल्लता—स्त्री० [स० तडित्-लता, प० त०] विजली की वह रेखा जो लता के समान टेढी तिरछी हो तथा जिसमे वहुत सी रेखाएँ हों। विद्युल्लता।

तडिल्लेखा—स्त्री०[स० तडित्-लेखा] विजली की रेखा।

तड़ी—स्त्री०[तड शब्द से अनु०]१ चपत। थप्पड।
क्रि० प्र०—जडना।—जमाना।—देना।—लगाना।
२ किसी को ठगने के लिए किया जानेवाला छल। धोखा। (दलाल)
क्रि० प्र०—देना।—वताना।
३ वहाना। ४ तडातडी।

तड़ीत*—स्त्री०=तडित् (विजली)।

तण—अव्य० [स० तनु] की ओर। की तरफ।

तणई—स्त्री०[स० तनया] कन्या। उदा०—भोज तणई नउँतई मील्यी।—नरपति नाल्ह।

तणक्कना—अ०[अनु०]तण तण शब्द होना।
स० तण तण शब्द उत्पन्न करना।

तणतु*—पु० १. =ततु। २ =तत्री।

तणमोट—पु० [?] मुसलमान। (डिं०)

तणी—स्त्री० =तनी।
अव्य० [स० तनु] १ की ओर। की तरफ। २. प्रति। सम्मुख।
†अव्य०= तनिक।

तणु*—पु० = तनु।

तणौ—अव्य० [स० तनु] की ओर। तरफ।

तत्—पु० [स० √तन्(विस्तार)+क्विप्] १ ब्रह्म या परमात्मा का एक नाम। २. वायु। हवा।
सर्व० १ वही या वह। २. उस या उसी। जैसे—तत्सवधी, तत्काल, तत्क्षण।

तत—पु० [सं०√तन्+क्त] १. वायु। हवा। २. लवाई चौडाई। फैलाव। विस्तार। ३ पिता। वाप। ४. पुत्र। वेटा। ५. [√तन्+तन्] वे वाजे जिनमे वजाने के लिए तार लगे होते हैं। तत्री। जैसे—वीन, सितार आदि।
†पु० = तत्त्व।
†वि० = तप्त।
†सर्व० [स० तत्] वह। जैसे—तत्-छन =उस समय।

ततकार—स्त्री० [हि० तत+कार] तत्तायई। (दे०)
†अव्य०=तत्काल।

ततकाल—अव्य० =तत्काल।

ततखन—अव्य०=तत्क्षण।

ततछन*—अव्य०=तत्क्षण।

तततायेई—स्त्री० [अनु०] =तत्तायेई (नाच के वोल)।

तत-पत्री—पु० [स० व० स०, ङीप्] केले का पेड।

ततपर—वि० =तत्पर।

ततवाउ*—पु०=ततुवाय।

ततवीर†—स्त्री०= तदवीर।

ततरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड।

ततसार*—स्त्री० [स० तप्तशाला] वह स्थान जहाँ कोई चीज तपाई जाती है।

ततहँड़ा—पु० [स० तप्त+हि० हाँडी] [स्त्री० अल्प० ततहँडी] मिट्टी की वडी हाँडी जिसमे नहाने आदि के लिए पानी गरम किया जाता है।

तताई*—स्त्री० [हिं० तत्ता] १ तत्ते अर्थात् गरम होने की अवस्था या भाव। २ उग्रता। प्रचडता।

ततामह—पु० [स० तत+ डामह] पितामह।

तातारना—स० [हि० तत्ता=गरम] १ गरम जल से धोना। २ किसी चीज पर जल आदि की धार गिराना या छोडना।

तति—स्त्री० [स० √तन् (विस्तार)+क्तिन्] १ श्रेणी। ताँता। २ समूह। ३ लवाई-चौडाई। फैलाव। विस्तार।
वि० लवाचौडा या फैला हुआ। विस्तृत।

ततु†—पु० =तत्त्व।

ततुबाऊ†—पु० =ततुवाय।

ततुरि—वि० [स० √तुर्व् (मारना)+कि,पृपो० सिद्धि] १ हिंसा करनेवाला। हिंसक। २ उवारने या तारनेवाला। उद्धारक।

ततैया—स्त्री० [स० तिक्त] १ वर्रे। भिड। २ एक प्रकार की छोटी पतली मिर्च जो वहुत कडवी होती है।
वि० १ वहुत तेज या तीखा। तीक्ष्ण। ३. वहुत अधिक चपल और तीव्र वुद्धिवाला।

ततोधिक—वि० [स० ततस्-अधिक, प० त०] १ उससे अधिक। २. उससे वढ़कर।

तत्काल—अव्य० [स० कर्म० स०] फौरन। उसी समय। उसी क्षण।

तत्कालीन—वि० [स० तत्काल+ख–ईन] १ उस समय का। २ उन दिनों का।

तत्क्षण—अव्य० [स० कर्म० स०] उसी क्षण। तुरन्त।

तत्त†—पु० = तत्त्व।

तत्तत्—सर्व० [स० द्व० स०] उन उन। जैसे—इनमे से कुछ शब्दो की व्याख्या तत्तत् शास्त्रो मे की गई है।

तत्ता*—वि० [स० तप्त] [स्त्री० तत्ती] १ जो छूने मे अधिक गरम लगे। अधिक तपा हुआ। गरम। जैसे—तत्ता दूध या तत्ती कडाही।
पद—तत्ता तवा=गरम मिजाजवाला व्यक्ति।

२ तेजगतिवाला। उदा०—दिन महि तत्ते हयनि तजि महि मडे अति घाइ। चदवरदाई।

तत्ताथेई—स्त्री० [अनु०] नाच के समय जमीन पर पैर पड़ने के शब्द जो नाच के बोल कहे जाते है।

तत्तिम्मा—पु० [अ० तत्तिम] १ परिशिष्ट। २ क्रोड पत्र।

तत्तोथबो—पु० [हि० तत्ता=गरम+थामना] १ लड़ाई-झगड़ा रोकने के लिए दोनो पक्षो को समझा-बुझाकर शान्त करने की क्रिया या भाव। बीच-बचाव।२. बार-बार आशा दिलाते हुए किसी को उग्र रूप धारण करने से रोक रखने की क्रिया या भाव। बहलावा। जैसे-पावनेदारों को तत्तो-थबो करके टाल चलना।

तत्त्व—पु० [सं० तत्+त्व] १ आकाश, अग्नि, जल, थल और पवन ये पाँच गुण (अथवा इनमे से हर एक) जो प्राचीन भारतीय विचारधारा के अनुसार किसी पदार्थ को अस्तित्व मे लाते है और जो जगत् या सृष्टि के मूल कारण कहे जाते हैं।

विशेष—सांख्य मे तत्त्वो की संख्या २५ मानी गई है।

२ आधुनिक रसायन शास्त्र के अनुसार कोई ऐसा पदार्थ जिसमे दूसरे पदार्थों का कुछ भी अंश या मेल न पाया जाता हो, अर्थात् जो सब प्रकार से अमिश्र और विशुद्ध हो। (एलिमेन्ट)

विशेष—पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने अब तक १०० से ऊपर ऐसे तत्त्व ढूंढ निकाले है जो अमिश्र और विशुद्ध रूप मे मिलते है।

३ कोई मूल, मौलिक या वास्तविक आधार, गुण या बात। सार वस्तु। ४. ईश्वर। ५ यथार्थता।

तत्त्वज्ञ—पुं० [सं० तत्त्व√ज्ञा (जानना)+क] १ वह जो ईश्वर या ब्रह्म को जानता हो। तत्त्वज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी। २ किसी बात या विषय का तत्त्व जानने या समझने वाला व्यक्ति। ३ दार्शनिक।

तत्त्वज्ञान—पु० [प० त०] आत्मा, परमात्मा तथा उनकी सृष्टि के संबंध मे होनेवाला सच्चा या यथार्थ ज्ञान जो मोक्ष का कारण माना गया है। ब्रह्मज्ञान।

तत्त्वज्ञानी (निन्)—पुं० [सं० तत्त्वज्ञान+इनि] तत्त्वज्ञ। (दे०)

तत्त्वतः—अव्य० [सं०] तत्त्व या सार-भूत गुण के विचार से। यथार्थत. वस्तुत.।

तत्त्वता—स्त्री०[सं० तत्त्व+तल्-टाप्] १. तत्त्व होने का अवस्था, गुण या भाव। २ यथार्थता। वास्तविकता।

तत्त्वदर्श—पुं० [सं० तत्त्व√दृश् (देखना)+अण्] १. तत्त्वज्ञ। २. सावर्णि मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम।

तत्त्वदर्शी (शिन्)—पु० [सं० तत्त्व√दृश+णिनि] १. तत्त्वज्ञ। २ रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

तत्त्व-दृष्टि—स्त्री० [मध्य० स०] १. वह दृष्टि जो किसी बात के मूल-कारण या गुण का पता लगाती या उस तक पहुँचती हो। २. दिव्य दृष्टि।

तत्त्व-न्यास—पु० [मध्य० स०] तंत्र के अनुसार विष्णु पूजा मे एक अंग न्यास जो सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

तत्त्व-भाव—पु० [प० त०] प्रकृति। स्वभाव।

तत्त्वभाषी (षिन्)—पु० [सं० तत्त्व√भाष् (कहना)+णिनि] वह व्यक्ति जो यथार्थ या सच्ची बात कहता हो। यथार्थ भाषी।

तत्त्वमसि—पद [सं० तत्-त्वम्-असि, व्यस्त पद] वेदान्त का एक प्रसिद्ध वाक्य जिसका अर्थ है, तू वही अर्थात् ब्रह्म है।

तत्त्व-रश्मि—पु० [प० त०] तंत्र के अनुसार किसी देवता का बीज। वधू बीज।

तत्त्ववाद—पुं० [सं० प० त०] १. दर्शन-शास्त्र संबंधी विचार। २. किसी प्रकार की दार्शनिक विचार-प्रणाली या मत-निरूपण का ढग। (फिलासॉफिकल सिस्टम)

तत्त्ववादी (दिन्)—पु० [सं० तत्त्व√वद्+णिनि] जो तत्त्ववाद का ज्ञाता और समर्थक हो।

वि० १. तत्त्ववाद संबंधी। तत्त्वकी। २. सच्ची और साफ बात कहने-वाला।

तत्त्वविद्—पु० [सं० तत्त्व√विद् (जानना)+क्विप्] १ तत्त्वज्ञ। (दे०) २. परमात्मा।

तत्त्व-विद्या—स्त्री० [प० त०] दर्शन शास्त्र।

तत्त्व-वेत्ता (त्तृ)—पु० [प० त०] १. जिसे तत्त्व का ज्ञान हो। तत्त्वविद्। २. दार्शनिक।

तत्त्व-शास्त्र—पु० [सं० प० त०] दर्शन-शास्त्र।

तत्त्वावधान—पु० [सं० तत्त्व-अवधान, प० त०] किसी काम के ऊपर होनेवाली देख-रेख या निरीक्षण।

तत्त्वावधायक—पु०[सं० तत्त्व-अवधायक, प० त०] देख-रेख या निरी-क्षण करनेवाला।

तत्थ† —वि० [सं० तत्त्व] मुख्य। प्रधान।

† पु० = तथ्य।

तत्पत्री—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीप्] १. केले का पेड़। २ वंशपत्री नाम की घास।

तत्पद—पु० [सं० कर्म० स०] परमपद। निर्वाण।

तत्पदार्थ—पु० [सं० तत्पद-अर्थ, प० त०] सृष्टि-कर्ता। पर-मात्मा।

तत्पर—वि० [सं० ब० स०] [भाव० तत्परता] १ जो कोई काम करने के लिए तैयार हो। उद्यत। मुस्तैद। २. जो किसी काम में मनोयोगपूर्वक लगा हुआ हो या लगने को हो। ३ दक्ष। निपुण। होशियार। ४ चतुर। चालाक।

पु० समय का एक बहुत छोटा मान जो एक निमेष का तीसवां भाग होता है।

तत्परता—स्त्री० [सं० तत्पर+तल्-टाप्] १. तत्पर होने की अवस्था, गुण या भाव। सन्नद्धता। मुस्तैदी। २ मनोयोगपूर्वक काम करने का भाव। जैसे—उन्होंने यह काम पूरी तत्परता से किया है। ३ दक्षता। निपुणता। ४ चालाकी।

तत्पश्चात्—अव्य० [सं० प० त०] उसके बाद। अनतर।

तत्पुरुष—पु० [सं० कर्म० स०] १ ईश्वर। परमेश्वर। २. एक रुद्र का नाम। ३ एक कल्प या बडे काल विभाग का नाम। ४. संस्कृत व्याकरण मे एक प्रकार का समास जिसके अनुसार दो संज्ञाओ के बीच की विभक्ति लुप्त हो जाती है, और जिसमे दूसरा पद प्रधान होकर यह सूचित करता है कि वह पहले पद का कार्य या परिणाम है अथवा उस पहले पद 'से' ही सम्बन्ध रखता अथवा उस 'मे' ही होता है। जैसे—

ईश्वर दत्त=ईश्वर का दिया हुआ, देश-भक्ति=देश की भक्ति; ऋण मुक्त=ऋण से मुक्त; निशाचर=निशा मे विचरण करनेवाला।

विशेष—व्याकरण मे यह समास दो प्रकार का माना गया है—व्यधिकरण और समानाधिकरण और इसके विग्रह मे कर्त्ता तथा सबोधन कारको को छोडकर शेष सभी कारको की विभक्तियाँ लगती है।

तत्प्रतिरूपक व्यवहार—पु० [स० तत्-प्रतिरूपक प० त०, तत्प्रतिरूपक-व्यवहार, कर्म० स०] जैनियो के मत से एक अतिचार जो बेची जानेवाली खालिस वस्तुओ मे मिलावट करने से होता है।

तत्फल—पुं० [स० तत्√फल्(फलना)+अच्] १ कूट नामक औषध। कुट। २ बेर का फल। ३ नीला कमल। ४ चोर नामक गध-द्रव्य।

तत्र—अव्य० [स० तत् +त्रल्] उस स्थान पर। उस जगह। वहाँ।

तत्रक—पु० [देश०] एक तरह का पेड जिसकी पत्तियो आदि से चमडा सिझाया जाता है।

तत्रत्य—वि० [स० तत्र+त्यप्] वहाँ रहनेवाला।

तत्रभवान् (वत्)—पु० [स० पूज्य अर्थ मे नित्य० स०] माननीय। पूज्य श्रेष्ठ।

तत्रापि—अव्य० [स० तत्र-अपि, द्व० स०] तथापि। तो भी।

तत्सबधी (धिन्)—वि० [स० प० त०] उससे सबध रखनेवाला।

तत्सम—पु० [स० तृ० त०] किसी भाषा का वह शब्द जो किसी दूसरी भाषा मे अपने मूल रूप मे (विना विकृत हुए) चलता हो।' 'तद्भव' से भिन्न। जैसे—हिन्दी मे प्रयुक्त होनेवाले कृपा, महत्व, सेवा आदि सस्कृत के और खराब, मिजाज, हाजिर आदि अरबी-फारसी के शब्द तत्सम रूप मे ही चलते है।

तत्सामयिक—वि० [स० प० त०] उस समय का।

तथा—अव्य० [स० तद्+थाल्] १ दो चीजो, बातो आदि मे योग या सगति स्थापित करनेवाला एक योजक अव्यय। और। जैसे—कृष्ण तथा राम दोनो गये। २ किसी के अनुरूप या अनुसार। वैसा ही। जैसे—यथा नाम, तथा गुण।

पु० १ सत्य। २. निश्चय। ३ समता। समानता। ४ सीमा। हद।

†स्त्री० =तत्य या तथ्य। (क्व०)

तथा-कथित—वि० [स० तृ० त०] जो इस नाम से अथवा इस रूप मे कहा जाता हो अथवा प्रसिद्ध हो, परन्तु जिसका ऐसा होना विवादास्पद अथवा सदिग्ध हो। जैसे—देश के तथा-कथित नेता=ऐसे लोग जो अपने आपको 'नेता' कहते हैं अथवा जिन्हे लोग 'नेता' कहते हैं फिर भी वक्ता को जिनके 'नेता' होने मे सदेह है।

तथा-कथ्य—वि० दे० 'तथा-कथित'।

तथागत—पु० [स० तथा=सत्य+गत=ज्ञान, ब० स०] बुद्ध का एक नाम।

तथाता—स्त्री० [स० तथा+तल्-टाप्] १ 'तथा' का भाव। २ दार्शनिक क्षेत्रो मे जो वस्तु वास्तव मे जैसी हो उसका ठीक वैसा ही निरूपण। (विश्व के समस्त धर्मों का यही नित्य और स्थायी तत्त्व या मूल धर्म है)।

तथापि—अव्य० [स० तथा-अपि, द्व० स०] तो भी। तिस पर भी। फिर भी।

तथाराज—पु० [स० तथा√राज् (शोभित होना)+अच्] बुद्ध का एक नाम।

तथास्तु—पद [स० तथा अस्तु—व्यस्त पद] (जैसा कहते हो) वैसा ही हो। एवमस्तु (आशीर्वाद, शुभ-कामना आदि का सूचक)।

तथैव—अव्य० [स० तथा-एव, द्व० स०] उसी प्रकार का। वैसा ही। यथैव का नित्य-सबधी। उदा०—तथैव मैं हूँ मलिन, यथैव तू।—हरिऔध। २ उसी प्रकार। वैसे ही।

तथोक्त—वि० [स० तथा-उक्त, तृ० त०] १ उस प्रकार कहा हुआ। २ तथा-कथित। (दे०)

तथ्य†—पु० [स० तथ्य] १ यथार्थ बात। २. तथ्य। ३ रहस्य।

†अव्य० [स० तत्त] उस जगह। वहाँ।

तथ्यु—अव्य० [स० तथापि ?] तो भी। तथापि। (राज०)

तथ्यै†—वि०=तथैव।

तथ्य—पु० [स० तथा+यत्] १. यथार्थता। सत्यता। २ वास्तविकता या मूल कारण। ३ कोई ऐसी घटना बात या सबध जो वस्तुतः अस्तित्व मे हो।

तथ्यक—वि० [स० ताथ्यिक] तथ्य-सबधी।

तथ्यभाषी (षिन्)—वि० [स० तथ्य√भाष् (बोलना) +णिनि] तथ्यपूर्ण और वास्तविक बात कहनेवाला।

तथ्यवादी (दिन्)—वि० [स० तथ्य√वद् (बोलना)+णिनि] =तथ्य भाषी।

तद्—वि० [स०√तन् (फैलना)+क्विप्] वह।

क्रि० वि० [स० तदा] उस समय। तब। (पश्चिम)

तदंतर—अव्य०= [स० तदनतर] उसके बाद।

तदनत†—अव्य०=तदनतर।

तदनतर—अव्य० [स० तद्-अनतर, प० त०] उसके उपरान्त। उसके पीछे या बाद।

तदनन्यत्व—पु० [स० तद्-अनन्यत्व, प० त०] वेदात के अनुसार कार्य और कारण मे होनेवाली एकता।

तदनु—अव्य० [स० तद्-अनु, प० त०] १ उसके पीछे। उसके अनुसार। ३ उसी तरह। उसी प्रकार।

तदनुकूल—वि० [स० तद्-अनुकूल, प० त०] उसके अनुकूल।

तदनुकूलत—अव्य० [स० तदनुकूल+तस्] उसके अनुकूल भाव या विचार से।

तदनुरूप—वि० [स० तद्-अनुरूप, प० त०] उसी के रूप का। उसी के जैसा या समान।

तदनुसार—अव्य० [स० तद्-अनुसार, प० त०] उसी के अनुसार। वि० उसके अनुसार होनेवाला।

तदन्यबाधितार्थ—पु० [स० तदन्य प० त०, बाधितार्थ कर्म० स०, तदन्य-बाधितार्थ कर्म० स०] नव्य न्याय मे तर्क के पाच प्रकारो मे से एक।

तदपि—अव्य० [स० तद्-अपि, द्व० स०] तो भी। तिस पर भी। तथापि।

तदबीर—स्त्री० [अ०] १ विचारपूर्वक निकाली या सोची हुई युक्ति। २ काम करने या निकालने का कोई ढग। उपाय।

तदर्थ—अव्य० [स० तद्-अर्थ, प० त०] उसके वास्ते।

तदर्थ समिति—स्त्री० [तद्-अर्थ, ब० स०, तदर्थ-समिति, कर्म० स०]

किसी विशिष्ट कार्य के संपादन के लिए बनी हुई समिति। (एड-हॉक कमिटी।)

तदर्थी—वि० = तदर्थीय।

तदर्थीय—वि० [सं० तदर्थ+छ—ईय] उसके अर्थ जैसा अर्थ रखनेवाला। समानार्थक। समानक।

तदा—अव्य० [सं० तद्+दा] उस समय। तब।

तदाकार—वि० [सं० तद्-आकार, ब० स०] १ उसी के आकार का। २. जो किसी के आकार या रूप में मिलकर उसी के समान हो गया हो। ३. तन्मय। तल्लीन।

तदारुक—पु० [अ०] १ खोई हुई चीज या भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना आदि के सम्बन्ध में की जानेवाली जाँच। २. किसी दुर्घटना को रोकने या उससे बचने के लिए पहले से किया जानेवाला उपाय या प्रबन्ध। ३ दंड। सजा।

तदि—अव्य० [सं० तदा] तब। उदा०—किरि नी पापी तदि निकुटी। —प्रिथीराज।

तदीय—सर्व० [सं० तद्+छ—ईय] १ उसका। २ उससे संबंधित।

तदुपरांत—अव्य० [सं० तद्-उपरांत, ष० त०] उसके उपरांत। उसके पीछे या बाद।

तद्गत—वि० [सं० द्वि० त०] १ उससे संबंध रखनेवाला। उसके संबंध का। २. उसमें अन्तर्युक्त या व्याप्त।

तद्गुण—पु० [सं० ब० स०] साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु के अपने समीप की किसी दूसरी वस्तु का कोई गुण ग्रहण करने का वर्णन होता है।

तद्देशीय—वि० [सं० तद्देश, कर्म० स०,+छ—ईय] उस देश का।

तद्धन—पु० [सं० ब० स०] कंजूस। कृपण।

तद्धर्म (न्)—वि० [सं० ब० स०] उस धर्म का।

तद्धित—पु० [सं० च० त०] १ व्याकरण में, वे प्रत्यय जो विशेषण शब्दों में लगकर उन्हें संज्ञाएँ और संज्ञाओं में लगकर उन्हें विशेषण का रूप देते हैं। २. उक्त प्रकार के प्रत्यय लगने से बननेवाले शब्द रूप या उनके रूप।

तद्बल—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का बाण।

तद्भव—पु० [सं० ब० स०] किसी भाषा में चलनेवाला वह शब्द जो किसी दूसरी भाषा के किसी शब्द का विकृत रूप हो। जैसे—'काम' सं० के 'कर्म्म' शब्द का तद्भव है।

तद्यपि—अव्य० [सं० तदापि] तथापि।

तद्रूप—वि० [सं० ब० स०] [भाव० तद्रूपता] उसी के रूप का। वैसा ही।

पु० साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को उपमान से पृथक् मानते हुए भी उसे उपमान का दूसरा रूप और उसके कार्य का कर्ता बतलाया जाता है।

तद्रूपता—स्त्री० [सं० तद्रूप+तल्—टाप्] तद्रूप होने की अवस्था या भाव।

तद्वत्—वि० [सं० तद्+वति] उसके समान। उसी के जैसा।

अव्य० उसी की तरह।

तधी†—अव्य० [सं० तदा] तभी। (क्व०)

तन—पु० [सं० तनु] १. जीव का स्थूल ढाँचा। देह। शरीर।

मुहा०—तन करना—तपस्या के द्वारा अपने आपको सहनशील बनाना। तन तोड़ना—(क) अँगड़ाई लेना। (ख) बहुत अधिक परिश्रम करना। तन देना—ध्यान देना। तन मन मारना—इंद्रियों को वश में रखना। (किसी के) तन लगना—(क) किसी के उपयोग में आना। (ख) किसी के प्रति परिणाम होना या प्रभाव पड़ना। जैसे—जिसके तन लगती है वही जानता है।

२. स्त्री की गुप्तेंद्रिय। भग।

मुहा०—(किसी को) तन दिखाना—किसी के साथ प्रसंग या संभोग करना। जैसे—वेश्याएँ सौ आदमियों को तन दिखाती हैं।

*अव्य० [सं० तन्] ओर। तरफ।

तनक—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की रागिनी जिसे कोई कोई मेघ राग की रागिनी मानते हैं।

स्त्री० [हि० तिनकना] १ तनने या रुष्ट होने की क्रिया या भाव।

†वि० =तनिक।

तनकना*—अ०=तिनकना।

तनकीद—स्त्री० [अ०] आलोचना। समीक्षा। २ परख। पहचान।

तनकीह—स्त्री० [अ०] १ कोई मूल कारण या तथ्य जानने या निकालने के लिए किसी से की जानेवाली पूछ-ताछ। २ आज-कल विधिक क्षेत्रों में, दीवानी मुकदमों आदि के सम्बन्ध में दोनों पक्षों के कथन और उत्तर के आधार पर न्यायालय का यह निश्चित करना कि मुख्यतः कौन-कौन सी बातें विचारणीय हैं।

तनखाह—स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन। (दे०)

तनखाहदार—पु० [फा०] वेतन लेकर काम करनेवाला व्यक्ति। वेतन-भोगी।

तनख्वाह—स्त्री०=तनखाह (वेतन)।

तनगना†—अ०=तिनकना।

तनजीम—स्त्री० [अ० तन्ज़ीम] अपने दल वर्ग, समाज आदि के लोगों को एकत्र तथा संघटित करना। संघटन।

तन-तनहा—अव्य० [हि० तन+फा० तनहा] केवल अपना शरीर लेकर। अकेले ही। जैसे—वह तन-तनहा ही घर से निकल पड़ा।

तनतना—पु० [अ० तन्तन] १. रोब-दाब। दबदबा। २. आतंक। ३. आवेश में आकर प्रकट किया जानेवाला क्रोध गुस्सा।

क्रि० प्र०—दिखाना।

तनतनाना—अ० [हि० तनना] बहुत तन या खिंचकर अपनी शान दिखाते हुए क्रोध प्रकट करना।

तनत्राण†—पु०=तनुत्राण।

तनदिही—स्त्री०=तदेही।

तनधर—वि० [हि० तन+सं० धर] शरीरधारी। शरीरवाला।

तनना—अ० [हि० तानना का अ० रूप] १ ताना जाना। २ किसी चीज का इस प्रकार खींचा जाना या ऐसी स्थिति में होना कि उसमें पड़े हुए झोल, बल, सिकुड़नें आदि निकल जायँ। जैसे—रस्सी तनना। ३ किसी स्थान को आच्छादित करने के लिए उसके ऊपर किसी चीज का खींचकर फैलाया जाना। जैसे—चँदोआ या चाँदनी तनना। ४ किसी रचना का रस्सियों आदि की सहायता से खींचकर खड़ी

किया या बाँधा जाना। जैसे—खेमा तनना। ५ खिचाव से युक्त होकर किसी एक पार्श्व मे होना। जैसे—भौहे तनना। ६ लाक्षणिक अर्थ मे व्यक्ति का क्रोध या हठपूर्वक अपने पक्ष या बात पर अडे रहना और किसी की ओर उन्मुख या प्रवृत्त न होना। ७ आघात करने के लिए किसी चीज का उठाया जाना। जैसे—दोनो ओर से लाठियाँ तन गईं।

तनपात—पु०=तनुपात (मृत्यु)।

तनपोषक—वि०[हिं० तन+स० पोषक] जो अपने ही तन या शरीर का ध्यान रखे अर्थात् स्वार्थी।

तनबाल—पु० [स०] १ एक प्राचीन देश। (महाभारत) २ उक्त देश का निवासी।

तनमय†—वि०=तन्मय।

तनमात्रा†—स्त्री० दे० 'तन्मात्रा'।

तनमानसा—स्त्री० [स० ?] ज्ञान की सात भूमिकाओ मे तीसरी भूमिका।

तनय—पु० [स०√तन् (फैलाना) +कयन्] [स्त्री० तनया] १ पुत्र। बेटा। २. ज्योतिष मे जन्म लग्न से पाँचवाँ स्थान जिसके आधार पर यह जाना जाता है कि कितने पुत्र या लडके-बाले होगे।

तनया—स्त्री०[स० तनय+टाप्] १ पुत्री। बेटी। लडकी। २. पिण्वन नाम की लता।

तनराग—पु०=तनुराग।

तनरुह—पु०=तनुरुह (रोआं)।

तनवाना—स० [हिं० 'तानना' का प्रे० रूप] किसी को कुछ तानने मे प्रवृत्त करना। तानने का काम किसी और से कराना।

तनवाल—पु० [देश०] वैश्यो की एक उपजाति।

तनसल—पु० [देश०] स्फटिक पत्थर। बिल्लौर।

तनसीख—स्त्री० [अ०] १. नष्ट करना। मिटाना। २ निरर्थक रद्द या व्यर्थ करना। मिटाना।

तनसुख—पु० [हिं० तन+सुख] एक प्रकार की फूलदार बढिया महीन मलमल।

तनहा—वि०[फा०] [भाव० तनहाई] (व्यक्ति) जिसके साथ और कोई व्यक्ति न हो।
अव्य० बिना किसी सगी या साथी के।

तनहाई—स्त्री० [फा०] १. तनहा अर्थात् अकेले होने की अवस्था। २ एकान्त या निर्जन स्थान।

तना—पु० [फा०] पेड-पौधो का जमीन से ऊपर निकला हुआ वह मोटा भाग जिसके ऊपरी सिरे पर डालियाँ निकली होती है। धड।
*अव्य० वि० दे० 'तनु'।

तनाई—स्त्री० [हिं० तानना] तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तनाऊ*—पु०=तनाव।

तनाकु—क्रि० वि०=तनिक।

तनाजा—पु० [अ० तनाजः] १. दो पक्षो मे कुछ समय तक बराबर चलता रहनेवाला झगडा। २. वैर। शत्रुता।

तनाना—स० [हिं० तनना का प्रे०] कोई चीज किसी को तानने मे प्रवृत्त करना। तनवाना।

तनाब—स्त्री० [अ० तिनाब] १. वह डोरी या रस्सी जिसने खेमे या तबू के बास आदि खीचकर खूँटो से बाँधे जाते है। २. बाजीगरों का वह रस्सा जिसपर चलकर वे तरह तरह के करतब दिखते हैं। ३ वह डोरी या रस्सी जिसपर धोबी कपडे सुखाने के लिए टागते है। ४ डोरी। रस्सी।

तनाय*—पु०=तनाव।

तनाव†—पु० [हिं० तनना] १ तने अर्थात् कसे या खिचे हुए होने की अवस्था या भाव। २ राग-द्वेष आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह स्थिति जिसमे दोनों पक्ष एक दूसरे की ओर प्रवृत्त नही होते।
स्त्री० दे० 'तनाव'।

तनासुख—पु० [अ०] इस लोक मे आत्मा का होनेवाला आवागमन या बार बार शरीर धारण।

तनि*—अव्य०[स० तनु] ओर। तरफ।
पु० [स० तनु] शरीर। देह। उदा०—बधिया तनि सरवरि वेस वधती।—प्रिथीराज।
†क्रि० वि०=तनिक।

तनिक—वि० [स० तनु=अल्प] १ जो अल्प मात्रा या मान मे हो। जरा-सा। थोडा। २ छोटा-सा।
अव्य० कुछ। जरा। टुक। जैसे—तनिक देर हो गई।

तनिका—स्त्री० [स० √तन् (विस्तार) +इन्+कन्—टाप्, इत्व] किसी वस्त्र, पात्र आदि मे लगी हुई वह डोरी जिससे कोई चीज कसकर बाँधी जाती है। तनी। बद।

तनिमा (मन्)—स्त्री० [स० तनु+इमनिच्] १. शारीरिक कृशता। दुबलापन। २. सुकुमारता। नजाकत।
पु० जिगर। यकृत।

तनिया†—स्त्री० [हिं० तनी] १ कौपीन। लँगोटी। २. काछा। जाँघिया। ३ चोली। ४ दे० 'तनी'।

तनिष्ठ—वि० [स० तनु+इष्ठन्] जो शारीकि दृष्टि से दुबला हो। कृश।

तनिस†—पु० [स० तृप या हिं० तिनका ?] पुआल। उदा०—तनिस बिछा के जब हम सोयन गाती बाघ चार हाथ ओ।—लोकगीत।

तनी—स्त्री० [स० तनिका] १ कुरती, चोली, मिरजई आदि मे लगी हुई वह डोरी जिससे पहनी हुई कुरती या चोली या मिरजई कसी जाती है। २ कोई चीज कसने या बाँधने के लिए किसी चीज मे लगी हुई डोरी। जैसे—तकिये या थैली की तनी। ३ दे० 'तनिया'।
†वि०, अव्य०=तनिक।

तनीदार—वि० [हिं० तनी+फा० दार] जिसमे तनी या बद लगे हों।

तनु—वि० [स०√तन् (विस्तार) +उन्] १ दुबला-पतला। कृश। २ अल्प। थोडा। ३ कोमल। सुकुमार। ४ अच्छा। बढिया। ५ तुच्छ। ६. छिछला।
पु० १ देह। शरीर २. शरीर की खाल या चमडा। त्वचा। ३ ज्योतिष मे जन्म-कुडली मे का जन्म-स्थान।
स्त्री० १ औरत। स्त्री। २ केंचुली। ३ योग मे अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश इन चारो क्लेशो का एक भेद जिसमे चित्त मे क्लेश की अवस्थिति तो होती है पर साधन या सामग्री आदि के कारण उनकी अनुभूति या परिणाम नही होता।

क्रि० वि० [सं० तनु] ओर। तरफ। उदा०—बिहँसे करुना ऐन चितै जानकी लखन तनु।—तुलसी।

तनुक*—क्रि० वि०=तनिक।

पु०=तनु।

तनु-कूप—पु० [सं० प० त०] त्वचा मे होनेवाला सूक्ष्म छेद (जिसमें से पसीना आदि निकलता है)।

तनुकेशी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीप्] सुन्दर बालोंवाली स्त्री।

तनु-क्षीर—पु० [सं० ब० स०] आमडे का वृक्ष।

तनु-गृह—पु० [सं०] अश्विनी नक्षत्र।

तनुच्छद—पु०[सं० तनु√छद् (ढकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] १ कवच। २ वस्त्र।

तनुच्छाय—पु० [सं० ब० स०] बबूल का पेड।

तनुज—पु०[सं० तनु√जन् (पैदा होना)+ड] [स्त्री० तनुजा] १ बेटा। पुत्र। २ रोआँ। ३ जन्म-कुंडली मे लग्न से पचवाँ स्थान जहाँ से पुत्र भाव देखा जाता है।

तनुजा—स्त्री० [सं० तनुज+टाप्] कन्या। पुत्री। बेटी।

तनुता—स्त्री० [सं० तनु+तल्—टाप्] १ तनु अर्थात् दुबले-पतले होने की अवस्था या भाव। २. सुकुमारता। ३. छोटाई। ४ तुच्छता। ५ अल्पता। ६ छिछलापन।

तनु-ताप—पु० [प० त०] १ शारीरिक ताप। २ मन को कष्ट देनेवाली बात। दुख। व्यथा।

तनुत्र—पु० [सं० तनु√त्रै (रक्षा करना)+क] =तनुत्राण।

तनु-त्राण—पु० [प० त०] १. वह चीज जो शरीर की रक्षा करे। २ कवच। बकतर।

तनुत्रान—पु०=तनुत्राण।

तनु-त्वच्—वि० [ब० स०] जिसकी त्वचा पतली हो।

स्त्री० छोटी अरणी।

तनुधारी (रिन्)—वि० [सं० तनु√धृ (धारण करना)+णिनि] तनु अर्थात् शरीर धारण करनेवाला। शरीरधारी।

तनु-पत्र—पु० [ब० स०] गोंदी का पेड। इगुदी।

तनु-पात—पु० [प० त०] शरीर का गिर अर्थात् मर जाना। मृत्यु।

तनु-प्रकाश—वि० [कर्म० स०] धुँधले या मद प्रकाशवाला।

तनु-बीज—वि० [ब० स०] जिसके बीज छोटे हो।

पु० राजबेर।

तनुभव—पु० [सं० तनु√भू (होना)+अच्] [स्त्री० तनुभवा] पुत्र। बेटा।

तनु-भूमि—स्त्री० [कर्म० स०] बौद्ध श्रावकों के जीवन की एक अवस्था।

तनुभृत—वि० [सं० तनु√भृ (धारण)+क्विप्] देहधारी।

तनु-मध्य—वि० [ब० स०] [स्त्री० तनुमध्या] पतली कमरवाला।

तनु-मध्या—स्त्री० [ब० स०, टाप्] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक एक तगण और एक एक यगण होता है।

तनु-रस—पु० [प० त०] पसीना। स्वेद।

तनु-राग—पु० [ब० स०] १ केसर, कस्तूरी, चदन, कपूर आदि को मिलाकर बनाया हुआ एक सुगंधित उबटन। बटना। २ केसर, कस्तूरी, चदन, कपूर आदि सुगधित द्रव्य।

तनुरुह—पु० [सं० तनु√रुह (उगना)+क] १ रोआँ। २ पख। पर। ३ पुत्र। बेटा।

तनुल—वि० [सं०√तन् (विस्तार)+उलच्] फैला या फैलाया हुआ।

तनुवात—पु० [ब० स०] १ ऊँचे स्थानों पर की वह हलकी हवा जिसमें श्वास लेना कठिन होता है। २. ऐसा स्थान जहाँ उक्त प्रकार की वायु हो। ३. जैनियों के अनुसार एक प्रकार का नरक।

तनुवार—पु० [सं० तनु√वृ (ढाकना)+अण्] कवच।

तनु-वीज—पुं०=तनुबीज।

तनु-व्रण—पु० [ब० स०] वल्मीक रोग। फील-पाँव।

तनु-शिरा (रस्)—वि० [ब० स०] छोटे सिरवाला।

पु० एक प्रकार का छद।

तनु-सचारिणी—स्त्री० [सं० तनु-सम्√चर् (गति)+णिनि—ङीप्] १ युवा स्त्री। २ दस वर्ष की बालिका।

तनु-सर—पु० [सं० तनु√सृ (गति)+अच्] पसीना। स्वेद।

तनु-ह्रद—पु० [प० त०] गुदा।

तनू—पु० [सं०√तन् (विस्तार)+ऊ] १ शरीर। २. व्यक्ति। ३ शरीर का कोई अवयव। ४ पुत्र। बेटा। ५ प्रजापति।

स्त्री० गाय। गौ।

तनूकरण—पु० [सं० तनु+च्वि, दीर्घ,√कृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० तनूकृत] किसी चीज को जल मे घोलकर या मिलाकर उसकी घनता, तीव्रता आदि कम करना। (डाइल्यूशन)

तनूज—वि० [सं० तनू√जन् (पैदा होना)+ड] [स्त्री० तनूजा] तन से उत्पन्न। शरीर से उद्भूत।

पु० १ बेटा। पुत्र। २ पख। पर।

तनूजा*—स्त्री०[सं० तनूज+टाप्]बेटी। पुत्री।

तनूताप—पु० =तनुताप।

तनूनप—पु०[सं० तनु-ऊन, प०त०, तनून√पा (रक्षा)+क]घी। घृत।

तनूनपात्, तनूनपाद्—पु० [सं० तनून√पत् (गिरना)+णिच्+क्विप्] १ चीते का वृक्ष। चीता। चित्रक। २ अग्नि। आग। ३ घी। घृत। ४ नवनीत। मक्खन।

तनूपा—पु०[सं० तनू√पा+क्विप्] जठराग्नि।

तनू-पान—पु०[प० त०] अंगरक्षक।

तनू-पृष्ठ—पु०[ब०स०] एक तरह का सोमयज्ञ जिसमे सोमपान किया जाता था।

तनूरा—पु०=तदूर।

तनूरुह—पु०[सं० तनू√रुह (उगना)+क]=तनुरुह।

तनें—अव्य० [सं० तन] की ओर। की तरफ। उदा०—राम तने रग रानी ।—मीराँ।

तनेना—वि०[हि० तनना+एना (प्रत्य०)] [स्त्री० तनेनी] १. तना या खिचा हुआ। २. टेढा। तिरछा। ३. (व्यक्ति) जो तनकर क्रोधपूर्वक बातें करता हो। ४. रुष्ट।

तनै*—पु०= तनय।

*अव्य०=तने (की ओर)।

तनैना—वि०=तनेना।

तनैया*—वि०[हि० तानना+ऐया (प्रत्य०)] ताननेवाला।

†स्त्री०[स० तनया] कन्या। वेटी। पुत्री।
स्त्री०=तनी।

तनैला—पु०[देश०] एक तरह के सफेद रग के सुगधित फूलवाला छोटा वृक्ष।

तनोआ†—पु०[हिं० तानना] १ वह कपडा जो छाया आदि के लिए ताना जाता है। २ चँदोआ।

तनोज—वि०, पु०=तनूज।

तनोरुह†—पु०=तनुरुह।

तनोवा—पु०=तनोआ।

तन्दुरुस्त—वि० [फा०]=तदुरुस्त।

तन्दुरुस्ती—स्त्री०=तदुरुस्ती।

तन्ना—पु०[हिं० तानना]१ बुनाई करते समय लवे बल मे ताना हुआ सूत। २ वह जिससे कोई चीज तानी जाय।

तन्नाना—अ०१ =तनना। २ =तनकना।

तन्नि—स्त्री०[स० तत्√नी (ले जाना)+डि (वा०)] १ पिठवन। २ कश्मीर की चन्द्र-कुल्या नदी का एक नाम।

तन्नी—स्त्री०[स० तनिका, हिं० तनी]१ तनी विशेषत वह डोरी जिससे तराजू की डडी मे पलडा लटकाया जाता है। २ लोहे की मैल खुरचने की एक तरह की अँकुसी। ३ वह रस्सी जिसकी सहायता से पाल चढाया जाता है। ४ व्यापारी जहाज का एक अधिकारी जो व्यापार सवधी कार्य करता है।
†पु० दे० 'तरनी'।

तन्मनस्क—वि०[स० तत्-मनस् व०स०, कप्] तन्मय। तल्लीन।

तन्मय—वि०[स० तद्+मयट्][भाव० तन्मयता] १ उस (पूर्वोक्त) से वना हुआ। २ जो दत्तचित होकर कोई काम कर रहा हो। किसी कार्य या व्यापार मे खोया हुआ। मग्न। लवलीन।

तन्मयता—स्त्री०[स० तन्मय+तल्—टाप्] तन्मय होने की अवस्था, गुण या भाव।

तन्मयासक्ति—स्त्री० [स० तन्मयी-आसक्ति, कर्म०स०] भगवान के प्रति होनेवाला वह दिव्य प्रेम जिसमे मनुष्य अपनी सत्ता भूल जाता है।

तन्मात्र—वि०[स० तद्+मात्रच्] वहुत थोडी मात्रा का।
पु० पचभूतो का मूल सूक्ष्म रूप।

तन्मात्रा—स्त्री०=तन्मात्र।

तन्मूलक—वि० [स० तद्-मूल, व०स०, कप्] उस (पूर्वोक्त) से निकला हुआ। तज्जन्य।

तन्य—वि०[स० तान्य] [भाव० तन्यता]१ जो खीचा या ताना जा सके। २ (पदार्थ) जो खीच, तान या पीटकर वढाया या लवा किया जा सके, और ऐसा करने पर भी वीच मे से कही टूटे-फूटे नही। जैसे—धातुएँ तन्य होती है और उनके तार या पत्तर वनाये जा सकते है। (डक्टाइल)

तन्यक—वि० तन्य। (दे०)

तन्यता—स्त्री०[स० तान्यता]१ तन्य होने की अवस्था या भाव। २ वस्तुओ का वह गुण जिससे वे खीचने, तानने या पीटने पर विना वीच मे से टूटे, वढकर लवी हो सकती है। (डक्टिलिटी)

तन्यतु—पु०[स०√तन् (फैलाना)+यतुच्]१ वायु। हवा। २ रात। रात्रि। ३ गर्जन। ४ एक प्रकार का पुराना वाजा।

तन्वंग—वि०[स० तनु-अग, व०स०][स्त्री० तन्वगी] सुकुमार अगोवाला। कोमलाग।

तन्वंगी—स्त्री०[स० तन्वग+ङीप्] सुकुमार अगोवाली स्त्री।

तन्वि—स्त्री०[स०]१ चन्द्रकुल्या नदी का एक नाम जो कश्मीर मे है। २. तन्वगी।

तन्विनी—स्त्री०=तन्वगी।

तन्वी—वि०[स० तनु+ङीप्] दुवले-पतले शरीर या कोमल अगोवाली। स्त्री० १ सुकुमार अगोवाली स्त्री। २ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक-एक भगण, तगण, नगण और अत मे यगण होता है।

तपःकर—पु०[स० तपस्√कृ (करना)+ट] तपस्वी।

तपःकृश—वि० [स० तृ० त०] तपस्या के फलस्वरूप जिसका शरीर क्षीण या कृश हो गया हो।

तपःभूत—वि०[स०तृ० त०] जिसने तपस्या के द्वारा आत्मशुद्धि कर ली हो।

तपःसाध्य—वि०[स० तृ०त०] जिसका साधन तपस्या से होता या हो सकता हो।

तपःसुत—पु० [स०] युधिष्ठिर।

तपःस्थल—पु०[स० ष०त०] तप करने का स्थान। तपोवन।

तपःस्थली—स्त्री० [स० ष० त०] काशी।

तप (स्)—पु०[स०√तप् (शरीर को कष्ट देना)+असुन्] १ स्वेच्छा से शारीरिक कष्ट सहते हुए इन्द्रियो तथा मन को वश मे रखना और यम, नियम आदि का पालन करना। शरीर को तपाना। तपस्या। २ किये हुए अपराध या पाप के प्रायश्चित्त स्वरूप स्वेच्छा से किया जानेवाला ऐसा कठोर आचरण जिससे शरीर को कष्ट होता हो। तपस्या। ३ अग्नि। आग। ४ गरमी। ताप। ५ गरमी के दिन। ग्रीष्म ऋतु। ६ ज्वर। बुखार। ७ एक कल्प का नाम। ८ माघ नाम का महीना। ९ ज्योतिष मे, लग्न से नवाँ स्थान। १० दे० 'तपोलोक'।

तपकना*—अ० [हिं० टपकना या तमकना] १ (छाती या हृदय का) रह-रहकर धडकना। २ चमकना। ३ दे० 'टपकना'।

तपचाक—पु०[देश०] तुर्की (देश) का एक तरह का घोडा।

तपडी—स्त्री०[देश०]१ छोटा टीला। ढूह। २ एक प्रकार का वृक्ष जिसमे जाडे मे लाल रग के फल लगते है। ३ उक्त वृक्ष का फल।

तपत†—स्त्री०=तपन। उदा०—मेरे मन की तपत बुझाई।—कवीर।

तपती—स्त्री०[स०]छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की कन्या। (महाभारत)

तपन—वि०[स०√तप्+ल्यु—अन] १ तपनेवाला। २ कष्ट या दुख देनेवाला।
पु०१ सूर्य। २ सूर्यकांतमणि। ३ एक प्रकार की अग्नि। ४ धूप। ५ साहित्य मे वे कष्टसूचक शारीरिक व्यापार जो प्रिय के वियोग मे स्वाभाविक रूप से होते है। ६ एक नरक जिसमे ताप की बहुत अधिकता कही गई है। ७ अरनी, भिलावाँ, मदार आदि वृक्षो की सज्ञा।
स्त्री०[हिं० तपना] १ तपे हुए होने की अवस्था या भाव। २ किसी

तपानल—पु०[सं० तप-अनल, मध्य०स०]१ तप की अग्नि अर्थात् तपस्या करने के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाला कष्ट। २ उक्त प्रकार से प्राप्त होनेवाला तेज।

तपाना—स०[हिं० तपना] १ ताप से युक्त करके खूब गरम करना। जैसे—आग मे रखकर लोहा तपाना।

विशेष—कुछ विशिष्ट धातुओ को तपाकर उनकी शुद्धता भी परखी जाती है। जैसे—सोना या चाँदी तपाना।

२. आग पर रखकर पकाना या पिघलाना। जैसे—घी तपाना। ३ तप करके अपने शरीर को अनेक प्रकार के कष्ट देना। ४ किसी को दु खी या सतप्त करना।

तपारी—पु०=तपस्वी। उदा०—दीर्घ तपारी देपि श्राप दीनो कुपि ताम।—चदवरदाई।

तपावत—पुं०[हिं० ताप+वत (प्रत्य०)]तपस्वी।

तपाव—पुं०[हिं० तपना+आव(प्रत्य०)]१. तपने या तपे हुए होने की अवस्था या भाव। २. तपाने की क्रिया या भाव। ३ ताप। गरमी।

तपित*—भू० कृ० [स० तप्त] १ ताप से युक्त किया हुआ। तपाया हुआ। २ तपा हुआ।

तपिया—पु०[देश०]एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ औषध के काम मे आती हैं।

†पु०=तपस्वी।

तपिश—स्त्री०[स० तप से फा०]१ किसी चीज के तपने के फलस्वरूप फैलनेवाला ताप। जैसे—जमीन की तपिश। २. वहुत वढ़ा हुआ ताप। ३ ग्रीष्म ऋतु मे होनेवाली तपन।

तपी—पु०[हिं० तप+ई (प्रत्य०)]१. तपस्वी। २ सूर्य।

तपु(पुस्)—वि० [स०√तप्(दाह)+उस्]१ तपा हुआ। उष्ण। गरम। २ तपाने या गरम करनेवाला।

पु०१ अग्नि। आग। २ सूर्य। ३ दुश्मन। शत्रु।

तपुरग्र—वि०[स० तपुस्-अग्र, व०स०] [स्त्री० तपुरग्रा] जिसका अगला भाग तपा या तपाया हुआ हो।

तपुरग्रा—स्त्री०[स० तपुरग्र+टाप्] वरछी या भाला।

तपेदिक—पु०[फा० तप+अ० दिक] एक प्रसिद्ध सक्रामक रोग जिसमे रोगी को खाँसी और बुखार दीर्घकाल तक वना रहता है और जिसके फल-स्वरूप उसके फेफडे सड जाते है। क्षय। यक्ष्मा।

तपेला—पु०[हिं० तपाना][स्त्री० अल्पा० तपेली]१ पानी गरम करने का एक प्रकार का वडा पात्र। उदा०—तन मन कीन्हें विरगाहि के तपेला हैं —रत्नाकर। २ वडी भट्ठी। भट्ठा।

तपेस्सा*—स्त्री०=तपस्या।

तपोज—वि०[स० तपस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड]१ जो तप के फलस्वरूप या प्रभाव से उत्पन्न हुआ हो। २ अग्नि से उत्पन्न।

तपोजा—स्त्री०[स० तपोज+टाप्]जल। पानी।

तपोड़ी—स्त्री०[देश०] काठ का एक प्रकार का वरतन। (लश०)

†स्त्री०[प० थपोडी] करतल-ध्वनि। ताली।

तपोदान—पु०[स० तपस्-दान, व०स०] महाभारत मे वर्णित एक तीर्थ-स्थल।

तपोद्युति—पु०[स० तपस्-द्युति, व०स०] वारहवें मन्वतर के एक ऋषि।

तपोधन—पुं०[स० तपस्-धन, व०स०]१. वह जिसका सारा धन या सर्वस्व तप या तपस्या ही हो; अर्थात् वहुत वड़ा तपस्वी। २. दौने का पौधा।

तपोधना—स्त्री०[स० तपोधन+टाप्] गोरखमुंडी।

तपोधर्म—पु०[स० तपस्-धर्म, व०स०] तपस्वी।

तपोधाम (न्)—पु०[स० तपस्-धामन्, ष०त०]१ तप या तपस्या करने के लिए उपयुक्त स्थान। २. एक प्राचीन तीर्थ।

तपोधृति—पु० [सं० तपस्-धृति, व०स०] वारहवें मन्वन्तर के चौथे सावर्णि के सप्तर्षियो में से एक ऋषि।

तपोनिधि—पु०[स० तपस्-निधि, व०स०] १ तप की निधि अर्थात् वहुत वड़ा तपस्वी। २ वह जो उक्त निधि का स्वामी हो, अर्थात् वहुत वड़ा तपस्वी।

तपोनिष्ठ—वि०[स० तपस्-निष्ठा, व० स०] सदा तप या तपस्या पर निष्ठा रखकर उसमे लगा रहनेवाला।

पु० तपस्वी।

तपोबन*—पु०=तपोवन।

तपोवल—पु०[स० तपस्-वल, मध्य०स०]तप या तपस्या करने के फल-स्वरूप प्राप्त होनेवाला तेज या शक्ति।

तपोभंग—पु०[सं० तपस्-भग, ष०त०] वाधा, विघ्न, आदि के फलस्वरूप तप या तपस्या का वीच मे ही भग होना।

तपोभूमि—स्त्री०[स० तपस्-भूमि, ष०त०]१. ऐसी भूमि या स्थान जहाँ तपस्या होती हो, अथवा जो तपस्या के लिए सव प्रकार से उपयुक्त हो। २ वह भूमि या देश जिसमे वहुत से तपस्वियो ने तपस्या की हो।

तपोमय—पु०[स० तपस्+मयट्]=ईश्वर।

तपोमूर्ति—पु०[स० तपस्-मूर्ति, ष०त०]१ वह जो मूर्तिमान् तप या तपस्वी हो अर्थात् वहुत वडा तपस्वी। २. परमात्मा। परमेश्वर। ३. वारहवें मन्वतर के चौथे सावर्णि के सप्तर्षियो मे से एक। (पुराण)

तपोमूल—पु०[सं० तपस्-मूल, व०स०] तापस मनु के पुत्र का नाम।

तपोरति—पु०[स० तपस्-रति, व०स०]१. तपस्वी। २. तापस मनु के एक पुत्र का नाम।

तपोरवि—पु०[स० तपस्-रवि, तृ० त०] वारहवें मन्वतर के चौथे सावर्णि के समय के सप्तर्षियो मे से एक। (पुराण)

तपोराज—पु०[स० तपस्-राजन्, ष०त०] चद्रमा।

तपोराशि—पु०[स० तपस्-राशि, ष०त०] वहुत वडा तपस्वी।

तपोलोक—पु० [स० तपस्-लोक, मध्य० स०] पुराणानुसार ऊपर के सात लोको मे से छठा लोक जो जन-लोक के वाद और सत्य-लोक के पहले पडता है।

तपोवट—पु०[स० तपस्-वट्, ष० त०] प्राचीन भारत के मध्य मे स्थित एक देश। व्रह्मावर्त्त देश।

तपोवन—पु०[स० तपस्-वन ष० त०]वह वन या आश्रम जिसमे वहुत से तपस्वी तपस्या करते हों।

तपोवरणा†—वि०[स० तपोवारणी] तप से च्युत करनेवाली। उदा०—रे असुन्दर, सुघर घर तू, एक तेरी तपोवरणा।—निराला।

तपोवृद्ध—वि०[सं० तपस्,वृद्ध तृ०त०] तपस्या मे वढा-चढ़ा।

पु० वढा-चढ़ा तपस्वी।

तपोव्रत—पु०[सं० तपस्-व्रत, प०त०] १ तपस्या-संबंधी व्रत। २ [ब०स०] वह जिसने उक्त व्रत धारण किया हो।

तपोऽशन—पु०[सं० तपस्, अशन ब०स०] तापस मनु के पुत्र तपस्य।

तपौनी—स्त्री०[हि० तपाना]१ तपाकर ठीक करने या उपयुक्त बनाने की क्रिया या भाव। २. मध्ययुग मे ठगो की एक रसम जिसमे लूट-मार, हत्या आदि कर चुकने के बाद देवी की पूजा करके सब ठगो को प्रसाद रूप मे गुड बाँटा जाता था।

मुहा०—(किसी को) तपौनी का गुड़ खिलाना=किसी नये आदमी को दीक्षित करके अथवा और कोई रसम करके अपनी मडली या वर्ग मे मिलाना। (परिहास)

३ दे० 'तपनी'।

तप्त—वि०[सं०√तप् (दाह)+क्त] १ (पदार्थ) जो तपा या तपाया हुआ हो। गरम। २ (व्यक्ति) जिसने खूब तपस्या की हो। ३ जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट पहुँचा हो। परम दुःखी। ४ आवेश आदि के कारण विकल।

तप्तक—पु०[सं० तप्त+कन्] कडाही।

तप्तकुंड—पु०[कर्म०स०] वह जलाशय जिसका जल प्राकृतिक रूप से ही गरम रहता हो।

तप्तकुंभ—पु०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक जिसमे जीवो को तपे हुए तेल के कड़ाहो मे फेका जाता है।

तप्त-कृच्छ्—पु०[ब०स०] एक व्रत जिसमे बराबर तीन दिन तक गरम पानी, गरम दूध या गरम घी पीया जाता है और गरम श्वास बराबर निकाला जाता है।

तप्त-पाषाण—पु०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्त-बालुक—पु०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्तमाष—पु०[ब० स०] प्राचीन काल की एक परीक्षा जिसमे तपे हुए तेल मे अभियुक्त के हाथ की उँगलियाँ डलवाकर यह देखा जाता था कि वह अपराधी या दोषी है या नही। यदि उसकी उँगलियाँ जल जाती थी तो वह अपराधी समझा जाता था और यदि उँगलियाँ नही जलती थी तो वह निर्दोष माना जाता था।

तप्त-मुद्रा—पु०[कर्म०स०] वह चिह्न जो वैष्णव-सप्रदाय के लोग धातुओ के गरम ठप्पे से शरीर पर दगवाते है।

तप्त-रूपक—पु०[कर्म०स०] *तपाई हुई (और फलत साफ) चाँदी।*

तप्त-शूर्मी—पु०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक जिसमे जीवो को लोहे के गरम खभो का आलिंगन करना पडता है।

तप्त-सुरा-कुंड—पु०[सं० तप्त-सुरा, कर्म० स०, तप्त-सुरा-कुड, ब० स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्ता (प्तृ)—वि०[सं०√तप् (दाह)+तृच्] तप्त करनेवाला।

तप्ताभरण—पु०[सं० तप्त-आभरण, प०त०] तपाये हुए (फलत शुद्ध) सोने का बना हुआ गहना।

तप्तायन—पु० =तप्तायनी।

तप्तायनी—स्त्री०[सं० तप्त-अयनी, ष०त०] पृथ्वी, जो दुःखी प्राणियो का निवास-स्थान मानी गयी है।

तप्ति—स्त्री०[सं०√तप्+क्तिन्] तप्त होने की अवस्था, गुण या भाव। ताप। गरमी।

तप्पा†—पु०=तप।

तप्य—वि० [सं०√तप्+यत्] १ तपाने योग्य। २ जो तपा करके शुद्ध किया जा सके। ३ तप करनेवाला।

पु० शिव।

तफज्जुल—पु०[अ०] श्रेष्ठता। बडप्पन।

तफतीश—स्त्री०[अ०] छान-बीन, जाँच-पडताल या पूछ-ताछकर किसी भेद या रहस्यपूर्ण बात अथवा उसके मूल कारण का पता लगाना।

तफरका—पु० [अ० तफर्क.] आपस मे होनेवाला वैर-विरोध-मूलक अन्तर। मन-मुटाव।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

तफरीक—स्त्री०[अ०]१ फरक होने की अवस्था या भाव। अन्तर। २ भिन्नता। ३ अलग होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। ४ बँटवारा। विभाजन। ५ गणित मे घटाने या बाकी निकालने की क्रिया।

क्रि० प्र०—निकालना।

तफरीह—स्त्री० [अ०] १ मन-बहलाव। मनोविनोद। २. मन बहलाने के लिए इधर-उधर घूमना-फिरना। सैर। ३ मन मे होनेवाली प्रफुल्लता। ४ आपस मे होनेवाला हास परिहास। हँसी-दिल्लगी।

तफरीहन—अव्य० [अ०] १ मन बहलाने के निमित्त। २ हँसी-दिल्लगी के लिए।

तफसीर—स्त्री० [अ०] १. किसी क्लिष्ट, गहन या दुरूह पद या वाक्य का सरल शब्दो मे किया हुआ विवेचन या स्पष्टीकरण। टीका। २ कुरान की आयतो की व्याख्या।

तफसील—स्त्री० [अ०] १ विस्तृत वर्णन। २. कैफियत। विवरण। ३ कठिन पदो, वाक्यो आदि की टीका या स्पष्टीकरण। ४ ब्योरेवार बनाई हुई तालिका। सूची।

तफावत—पु० [अ०] १ अन्तर। फरक। २ दूरी। फासला। ३. वैर-विरोध आदि के कारण आपस मे होनेवाला अन्तर। मन-मुटाव।

तब—अव्य० [सं० तदा] १ किसी उल्लिखित या विशिष्ट परिस्थिति या समय मे। जैसे—(क) तब हम वहाँ रहते थे। (ख) इतना हो जाय, तब तुम्हारा काम करूँगा। २ इसके पश्चात् या तुरत बाद। *जैसे—वहाँ तब निस्तब्धता छा गई।* ३ *इस कारण या वजह से।* जैसे—मुझे जरूरत थी, तब तो मैंने माँगा था।

तबक—पु० [अ०] १. परत। तह। २. चाँदी, सोने आदि धातुओं को खूब कूटकर बनाया हुआ बहुत पतला पत्तर जो औषधो आदि मे मिलाया और शोभा के लिए मिठाइयो आदि पर लगाया जाता है। वरक। ३ एक प्रकार की चौडी और छिछली थाली। ४ वह उपचार जो मुसलमान स्त्रियाँ भूत-प्रेत और परियो की बाधा से बचने के लिए करती है।

क्रि० प्र०—छोडना।

४ इसलामी, पौराणिक कथाओ के अनुसार पृथ्वी के ऊपर और नीचे के तल या लोक। ५ रक्त-विकार आदि के कारण शरीर पर पड़नेवाला चकत्ता। ६ घोडो का एक रोग जिसमे उनके शरीर के किसी भाग मे सूजन हो जाती और चकत्ता पड़ जाता है।

तबकगर—पु० [अ० तवक+फा० गर] वह व्यक्ति जो सोने-चाँदी आदि के वरक वनाता हो। तवकिया।

तबकड़ी—स्त्री० [अ० तवक+डी (प्रत्य०)] छोटी रिकावी।

तबक-फाड़—पु० [अ० तवक+हिं० फाड] कुश्ती का एक पेंच।

तबका—पु० [अ० तवक] १ पृथ्वी या भूमि का कोई वडा खड या विभाग। भू-खंड। २ पृथ्वी के ऊपर और नीचे के तल या लोक। ३ परत। तह। ४ मनुष्यों का वर्ग या समूह।

तबकिया—वि० [हिं० तवक] तवक-सवधी। जिसमे तवक या परते हो। जैसे—तवकिया हरताल।

पु०=तवकगर। (देखे)

तबकिया हरताल—पु० [हिं० तवकिया+स० हरताल] एक प्रकार की हरताल जिसके टुकडो मे तवक या परतें होती हैं।

तबदील—वि० [अ०] [भाव० तवदीली] १ (पदार्थ) जिसे परिवर्तित कर या वदल दिया गया हो। २ (व्यक्ति) जो एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर भेजा गया हो।

तबदीली—स्त्री० [अ०] १ तवदील होने की अवस्था या भाव। परिवर्तन। २ एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर जाना। तवादला।

तबद्दुल—पु०=तबदीली।

तबर—पु० [फा०] १ कुल्हाडी। टाँगी। २ कुल्हाडी के आकार का लडाई का एक हथियार। परशु।

पु० [देश०] मस्तूल के ऊपरी भाग मे लगाया जानेवाला पाल। (लश०)

तबरदार—वि० [फा०] (व्यक्ति) जिसके पास तवर (कुल्हाड़ी) हो या जो तवर चलाना जानता हो।

तबरदारी—स्त्री० [फा०] तवर या कुल्हाडी चलाने की क्रिया या भाव।

तबर्रा—पु० [अ०] १ घृणा। नफरत। २. वे घृणासूचक दुर्वचन जो शीया लोग मुहम्मद साहव के कुछ मित्रो के सवध मे (सुन्नियो की 'यदहे सहावा' के उत्तर मे) कहते है। ३ उक्त दुर्वचनो के पद या गीत।

तबल—पु० [फा०] १ वड़ा ढोल। २ डका। नगाडा। उदा०—तवल वाज तिण ही समै, निय से सुभट अपार।—जटमल।

तबलची—पु० [अ० तवलः+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तवला वजाने का काम करता हो। तवलिया।

तबला—पु० [अ० तवल] १ ताल देने का एक प्रसिद्ध वाजा जिस पर चमडा मढा होता है, और जो साधारणत 'डुगी' या 'वायाँ' नामक दूसरे वाजे के साथ वजाया जाता है।

विशेष—तवला और वायाँ दोनो पास-पास रखे जाते है; और तवला दाहिने हाथ से और वायाँ वाएँ हाथ से वजाया जाता है।

मुहा०—तबला खनकना या ठनकना=ऐसा नाच-गाना होना जिसके साथ तवला भी वजता हो। **तबला मिलाना**=तवले का वधन या वद्धी आवश्यकतानुसार कसकर या ढीली करके ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिसमे तवले के ठीक स्वर निकलें।

तबलिया—पु० [अ० तवलः+इया (प्रत्य०)] दे० 'तवलची'।

तबलीग—पु० [अ०] १ किसी के पास कुछ पहुँचाना। २ अपने धर्म का प्रचार करना। ३ दूसरो को दीक्षित करके अपने धर्म का अनुयायी वनाना।

तबस्सुम—पु० [अ०] मधुर तथा हलकी हँसी। मुस्कराहट।

तबाख—पु० [अ० तवाक] वडी काली परात।

तबाखी—पु० [हिं० तवाख] थाल या परात मे रखकर सौदा वेचनेवाला।

तबाखी कुत्ता—पु० [हिं०] ऐसा साथी जो अपना स्वार्थ सिद्ध होने के समय तक साथ दे और दुर्दिन मे साथ छोड़ दे।

तबादला—पु० [अ० तवादल.] १. लेन-देन के क्षेत्र मे होनेवाला चीजो का विनिमय। २. रूप आदि मे होनेवाला परिवर्त्तन। ३. व्यक्ति को एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर भेजा जाना। अतरण। वदली।

तबाबत—स्त्री० [अ०] तवीव अर्थात् चिकित्सक का काम या पेशा। चिकित्सा का व्यवसाय।

तबाशीर—पु० [स० तवक्षीर] वसलोचन।

तबाह—वि० [फा०] [भाव० तवाही] १ जो विलकुल नष्ट-भ्रष्ट या ध्वस्त हो गया हो। जैसे—भूकप ने नगरी को तवाह कर डाला। २ (व्यक्ति) जिसकी वहुत वडी हानि हुई हो अथवा जिसका सर्वस्व लुट गया हो।

तबाही—स्त्री० [फा०] १ तवाह करने या होने की अवस्था या भाव। २ वरवादी। विनाश।

मुहा०—तबाही खाना=जहाज का टूट-फूट कर रद्दी होना। (लश०)

तबिअत—स्त्री० =तवीअत।

तबीअत—स्त्री० [अ०] १. स्वास्थ्य की दृष्टि से किसी की शारीरिक या मानसिक स्थिति। मिजाज।

मुहा०—तबीअत खराब होना=शरीर अस्वस्थ या रोगी होना। वीमार होना। जैसे—इधर महीनो से उनकी तवीअत खराव है। **तबीअत बिगड़ना**=(क) कै या मिचली मालूम होना। (ख) अस्वस्थता या रोग का आक्रमण होता हुआ जान पडना।

२ आचरण या व्यवहार की दृष्टि से किसी की प्रवृत्ति या मनोवृत्ति। मन की रुझान। ३ जी। मन। हृदय।

मुहा०—(किसी पर) तबीअत आना=मन मे किसी के प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न होना। **(किसी चीज पर) तबीअत आना**=मन मे कोई चीज पाने या लेने की इच्छा होना। **तबीअत फड़क उठना या जाना**=कोई अच्छी चीज या वात देखकर चित्त या मन वहुत अधिक प्रसन्न होना। **तबीयत पाना**—अच्छे स्वभाववाला होना। जैसे—उन्होंने अच्छी तवीअत पाई है। **(किसी काम या बात से) तबीअत भर जाना**=मन मे अनुराग, कामना आदि न रह जाना और विरक्ति-सी उत्पन्न होना। **(अपनी) तबीअत भरना**=अपनी तसल्ली या समाधान करना। जैसे—पहले मकान देखकर अपनी तवीअत भर लो, तव उसे लेने का विचार करना। **(किसी की) तबीअत भरना**=किसी का पूरा सतोप या समाधान करना। **(किसी काम में) तबीअत लगना**=कोई काम करने मे चित्त, ध्यान या मन लगना। जैसे—लिखने-पढने मे तो उसकी तवीअत ही नही लगती। **(किसी से) तबीअत लगाना**=अनुराग या प्रेम करना।

४. वुद्धि। समझ।

मुहा०—तबीअत पर जोर डालना या देना=अच्छी तरह मन लगाते

तमयी—स्त्री० [स० तममयी] रात।
तमरंग†—पु० [देश०] एक प्रकार का नीबू।
तमर—पु० [स० तम√रा (दान)+क] वग।
पु० [स० तम] अन्धकार। अँधेरा।
तमराज—पु० [स० तम√राज् (चमकना) +अच्] एक तरह की खाँड।
तमलूक—पु०=तामलूक।
तमलेट—पु० [अ० टम्वलर] १ लुक फेरा हुआ टीन या लोहे का वरतन। २ फौजी सिपाहियो का लोटा।
तमस्—पु० [स०√तम् (विकल होना)+असच्] १ अधकार। अँधेरा। २ अज्ञान। अविद्या। ३ प्रकृति का 'तम' नामक तीसरा गुण। ४ नगर। शहर। ५. कूआँ। ६ तमसा नदी।
तमसा—स्त्री० [स० तमस्+अच्—टाप्] इस नाम की तीन नदियाँ, एक जो वलिया के पास गगा मे मिलती है, दूसरी जो अमरकंटक से निकल कर इलाहावाद मे सिरसा के पास गगा मे मिलती है और तीसरी जो हिमालय के पहाडी प्रदेश मे वहती है। टौस।
तमस्क—पु० [स० तमस्+कन्] अधकार।
तमस्कांड—पु० [ष० त०] घोर अधकार।
तमस्तति—स्त्री० [प० त०] घोर अधकार।
तमस्तूर्य—पु० [प० त०] तम का तूर्य। अँधेरे की तुरही। उदा०—अस्तमिन आजरे तमस्तूर्य दिङ् मडल।—निराला।
तमस्वती—स्त्री० [स० तमस्+मतुप्+ङीप्] अँधेरी रात।
तमस्विनी—स्त्री० [स० तमस्विन्+ङीप्] १ अँधेरी रात। २ रात्रि। ३. हल्दी।
तमस्वी (स्विन्)—वि० [स० तमस्+विनि] अधकारपूर्ण।
तमस्सुक—पु० [अ०] १ वह लेख्य जो ऋण लेनेवाला महाजन को लिखकर देता है। २ किसी प्रकार का विधिक लेख्य। दस्तावेज।
तमहँड़ी—स्त्री० [हिं० ताँवा+हाँडी] तावे की वनी हुई एक तरह की छोटी हाँडी।
तमहर—पु० [स० तमोहर] तम अर्थात् अधकार हरने या दूर करनेवाला।
तमहाया—वि० [स० तम+हिं० हाया (प्रत्य०)] १ अधकारपूर्ण। २ तमोगुण से युक्त।
तमहीद—स्त्री० [अ०] १ प्रावकथन। प्रस्तावना।
क्रि० प्र०—वाँधना।
२ ग्रथ आदि की भूमिका।
तमाँचा—पु०=तमाचा।
तमा—स्त्री० [स०तम+अच्—टाप्] रात। रात्रि। रजनी।
पु० [स० तामा. तमस्] राहु।
स्त्री० [अ० तमअ] लालच। लोभ।
तमाई—स्त्री० [स० तम+हिं० आई (प्रत्य०)] तम। अधकार। अंधेरा। उदा०—कहै रत्नाकर औ कचन वनाई काम ज्ञान अभिमान की तमाई विनसाई कै।—रत्नाकर।
स्त्री० [देश०] खेत जोतने के पूर्व उसकी घास आदि साफ करना।
तमाकू—पु० [पुर्त्त० टवैको, स० ताम्रकूट] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपो मे नशे के लिए काम मे लाये जाते हैं। २ उक्त पौधे का पत्ता। ३ उक्त पत्तो से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर रख और सुलगाकर उसका धूआँ पीते है। ४. दे० 'सुरती'।
तमाचा—पु० [फा० तवनच. या तवानूच] हथेली विशषत. उसकी पाँचो सटी हुई उगलियों से किसी के गाल पर किया जानेवाला जोर का आघात। थप्पड।
क्रि० प्र०—जडना।—देना।—मारना।—लगाना।
तमाचारी (रिन्)—वि० [तमा√चर् (चलना)+णिनि] अवकार मे विचरण करनेवाला।
पु० राक्षस।
तमादी—वि० [अ०] जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो। अवधि-वाधित। (वार्ड वाइ लिमिटेशन)
स्त्री० १ किसी काम या वात की मीयाद अर्थात् अवधि का वीत जाना। २ विधिक क्षेत्रो मे वह अवधि वीत जाना या मीयाद गुजर जाना जिसके अन्दर दीवानी न्यायालय मे कोई अभियोग उपस्थित किया जाना चाहिए।
तमान—पु० [?] तग मोहरीवाला एक प्रकार का पाजामा।
तमाम—वि० [अ०] १ कुल। सव। समस्त। २ पूरा। सारा। ३ खतम। समाप्त।
मुहा०—(किसी का) काम तमाम करना=किसी को जान से मार डालना।
तमामी—स्त्री० [फा०] एक तरह का देशी रेशमी कपडा जिस पर कला-वत्तू की धारियाँ वनी होती है।
तमारि—पु० [तम-अरि, ष० त०] सूर्य।
†स्त्री० दे० 'तँवारि'।
तमाल—पु० [स०√तम्+कालन्] १ एक प्रकार का वडा सदावहार पेड, जिसके दो भेद हैं—साधारण तमाल और श्याम तमाल। २ एक प्रकार का वडा वृक्ष जिससे गोद निकलता है। इस गोद से कहीं-कहीं सिरका भी वनता है। उनवेल। मन्होला। ३ काले खैर का पेड। ४ वरुण नामक वृक्ष। ५ तिलक का पेड। ६ तेजपत्ता। ७ वाँस की छाल। ८ पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।
तमालक—पु० [स० तमाल+कन्] १ तेजपत्ता। २ तमाल।
तमालिका—स्त्री० [स० तमाली+कन्—टाप्, ह्रस्व] १ भुँईआवला। २ ताम्रवल्ली लता। ३ काले खैर का पेड। ४ ताम्रलिप्त देश।
तमाली—स्त्री० [स० तमाल+ङीप्] १ वरुण वृक्ष। २ ताम्रावल्ली लता।
तमाशगीर—पु० [अ० तमाश+फा० गीर] [भाव० तमाशागीरी] १ वह जो तमाशा देखना पसद करता हो। २ दे० 'तमाशवीन'।
तमाशवीन—पु० [अ० तमाश+फा० वीन (देखनेवाला)] [भाव० तमाशवीनी] १ तमाशा देखनेवाला व्यक्ति। २. वेश्यागामी। रडीवाज।
तमाशवीनी—स्त्री० [हिं० तमाशवीन+ई (प्रत्य०)] १ तमाशा देखने की क्रिया या भाव। २. रडीवाजी।
तमाशा—पु० [अ० तमाश] १ कोई ऐसा अनोखा, विलक्षण या मनोरजक काम या वात जिसे देखने मे लोगो का जी रमे। चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २ इस प्रकार दिखाया जानेवाला खेल या प्रदर्शित

की जानेवाली घटना या दृश्य। ३. ऐसा कार्य जिसका संपादन सरलता या सुगमता से किया जा सके। जैसे—लेख लिखना कोई तमाशा नही है। ४. बहुत ही बढिया या हास्यास्पद बात या वस्तु। जैसे—सभा क्या है, तमाशा है। ५. पुरानी चाल की एक तरह की तलवार।

तमाशाई—पुं० [अ०] १. वह जो तमाशा देख रहा हो। तमाशा देखनेवाला। २ तमाशा दिखलानेवाला व्यक्ति।

तमासा—पु० = तमाशा।

तमाह्वय—पु० [स० तम-आह्वय, ब० स०] तालीश-पत्र।

तमि—पु० [स०√तम् (खेद)+इन्] १. रात। रात्रि। २. हल्दी।

तमिनाथ—पुं० [ष० त०] चद्रमा।

तमिल—पुं० [?] १. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध देश। २. उक्त देश मे बसनेवाली एक जाति जो द्रविड़ जातियो के अन्तर्गत है।
स्त्री० उक्त जाति (और देश) की बोली या भाषा।

तमिस्र—वि० [सं० तमस्+र, नि० सिद्धि [स्त्री० तमिस्रा] अंधकारपूर्ण।
पु० १. अधकार। अँधेरा। २. क्रोध। गुस्सा। ३. पुराणानुसार एक नरक।

तमिस्र-पक्ष—पु० [मध्य० स०] चाद्र मास का अँधेरा पक्ष। कृष्ण-पक्ष।

तमिस्रा—स्त्री० [स० तमिस्र+टाप्] अँधेरी रात।

तमी—स्त्री० [स० तमि+ङीष्] १. रात। २. हल्दी।
पुं० [सं० तमीचर] राक्षस।

तमीचर—वि० [स० तमी√चर् (गति)+ट] १. जो अंधकार मे चलता हो। २. रात के समय विचरण करनेवाला।
पु० राक्षस।

तमीज—स्त्री० [अ० तमीज] १. भले-बुरे की पहचान। विवेक। २. किसी चीज या बात को परखने की बुद्धि या योग्यता। ३. कोई काम अच्छी तरह से करने की जानकारी या योग्यता। ४. आचार, व्यवहार आदि के पालन का उचित ज्ञान या बोध।

तमी-पति—पु० [ष० त०] चद्रमा।

तमीश—पु० [सं० तमी-ईश, ष० त०] चद्रमा।

तमु†—पु०=तम।

तमूरा†—पु०=तबूरा।

तमूल†—पु०=तांबूल।

तमेड़ा†—पु०[स० ताम्र+भाड] [स्त्री० अल्पा० तमेडी] ताँबे का एक प्रकार का बड़ा गोलाकार बरतन।

तमेरा—पु० [हिं० ताँबा+एरा (प्रत्य०)] वह जो ताँबे के बरतन आदि बनाने का काम करता हो।

तमोऽन्त्य—वि० [सं०] ग्रहण के दस भेदों में से एक जिसमे चद्रमंडल की पिछली सीमा मे राहु की छाया बहुत अधिक और बीच के भाग मे थोड़ी-सी जान पड़ती है। फलित ज्योतिष के अनुसार ऐसे ग्रहण से फसल को हानि पहुँचती है और चोरी का भय होता है।

तमोऽन्ध—वि० [सं० तमस्—अन्ध, तृ० त०] १. अज्ञानी। २. क्रोधी।

तमोगुण—पु० [सं० तमस्-गुण, ष० त०] सृष्टि को अस्तित्व में लानेवाले तीन गुणों या अवयवो में से एक (अन्य दो गुण, सतोगुण और रजोगुण हैं) जो अंधकार, अज्ञान, भ्रम, क्रोध, दुःख आदि का कारण होता है।

तमोगुणी (णिन्)—वि० [सं० तमोगुण+इनि] जिसमे सतोगुण तथा रजोगुण की अपेक्षा तमोगुण की अधिकता हो। फलतः अज्ञानी या अभिमानी।

तमोघ्न—वि० [सं० तमस्√हन् (मारना)+टक्] तम अर्थात् अन्धकार नाश करनेवाला।
पु० १. सूर्य। २. चद्रमा। ३. दीपक। दीआ। ४. अग्नि। आग। ५. ज्ञान। ६. विष्णु। ७. शिव। ८. गौतम बुद्ध। ९ बौद्ध धर्म के आचार और नियम।

तमोज्योति(स्)—पु० [सं० तमस्-ज्योतिस्, ब० स०] जुगनूँ।

तमोदर्शन—पु० [सं० तमस्-दर्शन ब० स०] वैद्यक मे पित्त के प्रकोप से होनेवाला ज्वर।

तमोनुद—पु० [सं० तमस्√नुद् (प्रेरणा)+क्विप्] १ ईश्वर। २. चन्द्रमा। ३. अग्नि। आग।

तमोऽपह—पु० [सं० तमस्-अप√हन्+ड] १ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३. दीपक। दीया। ४. अग्नि। आग।

तमोभिद्—वि० [स० तमस्√भिद् (विदारण)+क्विप्] अधकार को भेदने अर्थात् उसका नाश करनेवाला।
पु० जुगनूँ (कीडा)।

तमोमणि—पु० [सं० तमस्—मणि, स० त०] १ जुगनूँ। २ गोमेद नामक मणि।

तमोमय—वि० [सं० तमस्+मयट्] १ अधकारपूर्ण। २ तमोगुणी। (दे०)
पुं० राहु।

तमोर*—पु० [स० ताम्बूल] पान।

तमोरि—पुं० [सं० तमस्-अरि, ष० त०] सूर्य।

तमोरी†—पु० = तमोली।

तमोल—पुं० [स० ताम्बूल] १ पान का बीडा। २ विवाह के समय, बरात चलने से पहले वर को लगाया जानेवाला टीका या दिया जानेवाला धन। (पश्चिम) ३. इस प्रकार वर को टीका लगाकर धन देने की रीति।

तमोलिन—स्त्री० [हिं० तमोली का स्त्री० रूप] १ तमोली की स्त्री। २. पान बेचनेवाली स्त्री।

तमोलिप्ती—स्त्री० दे० 'ताम्रलिप्त'।

तमोली—पुं० [स० ताबूलिक] १ एक जाति जो पान पकाने और बेचने का काम करती है। २. वह जो पान बेचता हो।

तमोविकार—पु० [सं० तमस्-विकार, ष० त०] तमोगुण की अधिकता के कारण होनेवाले विकार। जैसे—अज्ञान, क्रोध आदि।

तमोहंत—पु० [सं०] 'ग्रहण' के दस भेदो मे से एक।
वि० १. तम या अन्धकार दूर करनेवाला। २ सासारिक मोह-माया का नाश करनेवाला।

तमोहर—वि० [स० तमस्√हृ (हरना)+अच्] १ तम या अधकार का नाश करनेवाला। २. अज्ञान, अविद्या, मोह, माया आदि का नाश करनेवाला।
पुं० १. सूर्य। २. चन्द्रमा। ३. अग्नि। आग। ४ ज्ञान।

तमोहरि—पु० [स० तमस्-हरि, ष० त०] = तमोहर

तय—वि० = तैं।
तयना*—अ० = तपना।
स० = तपाना।
तयनात—वि० = तैनात।
तया†—पु० = तवा।
तयार—वि० [भाव० तयारी] = तैयार।
तय्यार—वि० [भाव० तय्यारी] = तैयार।
तरंग—स्त्री० [स०√तॄ(तैरना)+अगच्] १ पानी की लहर हिलोर। क्रि० प्र०—उठना।
२ किसी चीज या वात का ऐसा सामंजस्यपूर्ण उतार-चढाव जो लहरो के समान जान पडे। जैसे—सगीत मे तान की तरग। ३ उक्त के आधार पर कुछ विशिष्ट प्रकार के वाजो के नाम के साथ लगकर, उत्पन्न की जानेवाली स्वर-लहरी। जैसे—जल-तरग, तवला तरग। ४ सहसा मन मे उत्पन्न होनेवाली कोई उमग या भावना। जैसे—जव मन मे तरग आई, तव उठकर चल पडे। ५ हाथ मे पहनने की एक प्रकार की चूडी जिसके ऊपर की वनावट लहरियेदार होती है। ६ घोडे की उछाल या फलाँग। ७ कपडा। वस्त्र।
तरंगक—पु० [स० तरङ्ग+कन्] [स्त्री० तरगिका] १ पानी की लहर। हिलोर। २ स्वरलहरी।
तरंगभीरु—पु० [प० त०] चौदहवे मनु के एक पुत्र।
तरंगवती—स्त्री० [स० तरग+मतुप्+ङीप्] नदी।
तरंगायति—वि० [स० तरगित] १ जिसमे तरग या तरगे उठ रही हो। २ तरगो की तरह का। लहरियेदार। लहरदार।
तरंगालि—स्त्री० [स० तरग-अलि, व० स०] नदी।
तरगिणि—वि० स्त्री० [स० तरग+इनि+ङीप्] जिसमें तरगें या लहरें उठती हो।
स्त्री० नदी। सरिता
तरगित—वि० [स० तरग+इतच्] [स्त्री० तरगिता] १ (जलाशय) जिसमे तरगे या लहरें उठ रही हो। २ (हृदय) जो तरग या उमग से प्रफुल्लित या मग्न हो रहा हो। ३ जो वार-वार कुछ नीचे गिरकर फिर ऊपर उठता हो।
तरगो (गिन्)—वि० [स० तरग+इनि] [स्त्री० तरगिणी] १ जिसमे तरगें या लहरे उठती हो। २ जो मन की तरग या मौज (आकस्मिक भावावेग या स्फूर्ति) के अनुसार सव काम करता हो। ३ भावुक। रसिक।
पु० वहुत वडी नदी। नद।
तरंड—पु० [स० √तॄ (तैरना) +अडच्] १ नाव। नौका। २ नाव खेने का डाँड। ३ मछलियाँ मारने की वसी मे वँधी हुई वह छोटी लकडी जो पानी के ऊपर तैरती रहती है।
तरडा—स्त्री० [स० तरड+टाप्] नौका।
तरडी—स्त्री० [स० तरड+ङीप्] = तरडा।
तरत—पु० [म०√त+झच्-अन्त] १ समुद्र। २ मडूक। मेढक। ३ राक्षस।
तरंती—स्त्री० [स० तरन्त+ङीप्] नाव। नौका।
तरंवुज—पु० [स० तर-अम्बु कर्म० स०, तरवु√जन्+ड] तरवूज।

तरँहुत—क्रि० वि० [म० तल या हि० तले] १. नीचे। २. नीचे की ओर। वि० १ नीचे की ओर का। नीचेवाला। २ नीचा।
तर—वि० [फा०] १. किसी तरल पदार्थ मे भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। नम। जैसे—तर कपडा, तर जमीन। २ जिसमे यथेष्ट आर्द्रता या नमी हो। जैसे—तर हवा। ३ ठढा। शीतल। जैसे—तर पानी। ४ जो शरीर मे ठढक पैदा करता हो। जैसे—कोई तर दवा खाओ। ५ चित्त को प्रफुल्लित या प्रसन्न करनेवाला। वहुत अच्छा और वढिया। जैसे—तर माल। ६ खूव हरा-भरा। ७ तरह-तरह से भरा-पूरा। यथेष्ठ रूप मे वाछनीय गुणो या वातो से युक्त। जैसे—तर असामी=धनवान व्यक्ति।
पु० [म० √तॄ (पार करना)+अप्] १ नदी आदि पार करने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ अग्नि। आग। ३ पेड। वृक्ष। ४ मार्ग। रास्ता। ५ गति। चाल।
प्रत्य० [स०] एक सस्कृत प्रत्यय जो गुणवाचक विशेषणो मे लगकर उनकी विशेपता अपेक्षाकृत कुछ अधिक वढा देता है। जैसे—अधिकतर, गुरुतर, श्रेष्ठतर।
*पु० [स० तल] तल।
अव्य० १ तले। नीचे। उदा०—प्रभु तरु तर कपि डार पर।—तुलसी। २ तो। उदा०—नहिं तरहोनी हाणि।—कबीर।
*पु० = तरु (वृक्ष)।
तरई†—स्त्री० [स० तारा] नक्षत्र।
तरक†—पु० [स० तर्क] १ सोच-विचार। २ उक्ति। कथन। ३. अडचन। वाधा। ४ गडवडी। व्यतिक्रम। ५ भूल। चूक। ६ दे० तर्क।
पु० [हि० तर=नीचे] लेख आदि का कोई पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे लिखा जानेवाला वह शव्द जिससे वादवाला पृष्ठ आरभ होता है।
†स्त्री० = तडक।
तरकना†—अ० [स० तर्क] १ तर्क करना। २ सोच-विचार करना। ३ वहस या विवाद करना। ४ झगडना। ५ अनुमान या कल्पना करना।
अ० [?] उछलना-कूदना।
अ० दे० 'तडकना'।
†वि० जल्दी चौंकने या भडकनेवाला (बैल)। उदा०—वैल तरकना टूटी नाव, या काहू दिन दैहै दाव।—कहा०।
तरकश—पु० [फा०] कधे पर लटकाया जानेवाला वह आधान जिसमें तीर रखे जाते हैं। तूणीर।
तरकश-वंद—पु० [फा०] वह जो तरकश रखता हो।
तरकस—पु० [स्त्री० अल्पा० तरकसी] =तरकश।
तरका—पु० [अ० तर्क] १ वह सपत्ति जो कोई व्यक्ति छोडकर मरा हो। २ उत्तराधिकारी या वारिस को मिलनेवाली सपत्ति। ३ उत्तराधिकार।
†पु० =तडका।
तरकारी—स्त्री० [फा० तर =सब्जी, साग+कारी] १ वे हरे और विशेषत कच्चे फल आदि जिन्हें आग पर भून या पकाकर रोटी आदि

के साथ खाया जाता है। हरी सब्जी। २ आग पर भून या पकाकर खाने के योग्य बनाई हुई सब्जी। ३ पकाया हुआ गोश्त या मास।

तरकी—स्त्री०[स० ताडकी] कान मे पहनने का एक तरह का गहना।

तरकीव—स्त्री० [अ०] १ मिलान। मेल। २ बनावट। रचना। ३ रचना का प्रकार या शैली। ४ सोच-समझकर निकाला हुआ उपाय या युक्ति।

तरकुल†—पु०[स० ताल+कुल] ताड का पेड।

तरकुला—पु०[हिं०] कान मे पहनने की बड़ी तरकी।

तरकुली—स्त्री०=तरकी (कान मे पहनने की)।

तरक्की—स्त्री०[अ०] १ शारीरिक अवस्था मे होनेवाली अभिवृद्धि तथा सुधार। जैसे—यह पौधा तरक्की कर रहा है। २. किसी कार्य या व्यापार का बराबर उन्नत दशा प्राप्त करना। जैसे—लडका हिसाव मे तरक्की कर रहा है। ३. पदोन्नति। जैसे—पिछले वर्ष उनकी तरक्की हुई थी।

तरक्षु—पु०[स० तर√क्षि (हिंसा करना)+डु] एक प्रकार का छोटा बाघ। लकडवग्घा।

तरखा†—पु०[स० तरग] नदी आदि के पानी का तेज वहाव।

तरखान—पु०[स० तक्षण] लकडी का काम करनेवाला। बढई। (पश्चिम)

तरगुलिया—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा छिछला पात्र जिसमे अक्षत रखे जाते है।

तरचखी—स्त्री०[देश०] सजावट के लिए बगीचो मे लगाया जानेवाला एक तरह का पौधा।

तरछट†—स्त्री०=तलछट।

तरछत*—क्रि० वि०[हिं० तर] १ नीचे। तले। २ नीचे की ओर से। नीचे से।

स्त्री०=तलछट।

तरछन†—स्त्री०=तलछट।

तरछा—पु०[हिं० तर=नीचे] वह स्थान जहाँ गोवर इकट्ठा किया जाता है। (तेली)

तरछाना†—अ०[हिं० तिरछा] १. तिरछी नजर से किसी की ओर देखना। २ आँखो से सकेत करना।

तरज—पु०=तर्ज।

तरजना—अ०[स० तर्जन] १ क्रोधपूर्वक या विगडते हुए कोई वात कहना। भला-बुरा कहते हुए डाँटना। २ भविष्य मे सचेत रहने के लिए कुछ धमकी देते हुए कोई बात कहना।

तरजनी—स्त्री०[स० तर्जन] डर। भय।

†स्त्री०=तर्जनी।

तरजीला—वि०[स० तर्तन] १ तर्जन करनेवाला। २ क्रोधपूर्ण। ३ उग्र। प्रचड।

तरजीह—स्त्री०[अ०] दे० 'वरीयता'।

तरजुई†—स्त्री०[फा० तराजू] छोटा तराजू।

तरजुमा—पु०[अ०] १ एक भाषा से दूसरी भाषा मे अनुवाद करने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार किया हुआ अनुवाद। उलथा। भाषान्तर।

तरजुमान—पु०[अ०] अनुवाद करनेवाला व्यक्ति। अनुवादक।

तरजौहाँ*—वि०=तरजीला।

तरण—पु०[सं०√तृ (पार करना)+ल्युट्—अन] १ नदी आदि को पार करना। पार जाना। २ जलाशय आदि पार करने का साधन। जैसे—नाव, वेडा आदि। ३ छुटकारा। निस्तार। ४ उवारने की क्रिया या भाव। उद्धार। ५ स्वर्ग।

तरणि—पु०[स०√तृ+अनि] १. सूर्य। २. सूर्य की किरण। ३ आक। मदार। ४ ताँवा।

स्त्री०=तरणी।

तरणि-कुमार—पु०[प०त०] तरणिसुत। (दे०)

तरणिजा—स्त्री०[स० तरणि√जन्+ड—टाप्] १. सूर्य की कन्या। यमुना। २ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक नगण और एक गुरु होता है।

तरणि-तनय—पु०[प०त०] तरणिसुत। (दे०)

तरणि-तनूजा—स्त्री०[प०त०] सूर्य की पुत्री, यमुना।

तरणिसुत—पु०[ष०त०] १ सूर्य का पुत्र। २ यमराज। ३ शनि। ४ कर्ण।

तरणि-सुता—स्त्री०[प० त०] सूर्य की पुत्री। यमुना।

तरणी—स्त्री०[स० तरण+ङीप्] १ नाव। नौका। २ घीकुँआर। ३ स्थल-कमलिनी।

तरतराता—वि०[हिं० तरतराना=तडतडाना] तड तड शब्द करता हुआ।

वि०[हिं० तर] घी मे अच्छी तरह डूबा हुआ (पकवान)। जिसमे से घी निकलता या बहता हो (खाद्य पदार्थ)।

तरतराना*—अ०, स०=तडतडाना।

तरतीव—स्त्री०[अ०] विशेष प्रकार से वस्तुएँ रखने या लगाने का क्रम। सिलसिला।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

तरदी—स्त्री०[स० तर√दो (खडन करना)+क+ङीप्] एक प्रकार का कँटीला पेड।

तरदीद—स्त्री०[अ०] १ काटने या रद्द करने की क्रिया। मसूखी। २ किसी की उक्ति या कथन का किया जानेवाला खडन।

तरद्दुद—पु०[अ०] १ किसी काम या बात के सम्बन्ध मे होनेवाली चिंता। परेशानी। २ झझट। वखेडा।

तरद्वती—स्त्री० [स०√तृ+मतुप्+ङीप्] आटे को घी, दही आदि मे सानकर बनाया जानेवाला एक तरह का पकवान।

तरन*—पु० १ दे० 'तरण'। २ दे० 'तरौना'।

तरनतार—पु०[स० तरण] निस्तार। मोक्ष।

वि०=तरन-तारन।

तरन-तारन—पु० [स० तरण; हिं० तरना] १ उद्धार। २ वह जो भवसागर मे किसी को पार उतारता हो। ईश्वर।

वि० १ डूवते हुए को तारने या उबारनेवाला। २ भवसागर से पार करनेवाला।

तरना—अ०[स० तरण] १ पानी के तल के ऊपर ऊपर रहना। 'डूबना' का विपर्याय। जैसे—पानी मे तेल का तैरना। २ अगो के सचालन अथवा किसी अन्य शारीरिक व्यापार के द्वारा जल को चीरते हुए आगे

वढना। तैरना। ३ आवागमन या सासारिक वधनो से मुक्त होना। सद्गति प्राप्त करना। ४ व्यापारिक क्षेत्रो मे, ऐसी रकम का वसूल होना या वसूल हो सकने के योग्य होना जो प्राय डूवी हुई समझ ली गई हो। जैसे—वे मुकदमा जीत गये है, इसलिए हमारी रकम भी तर गई।
स० नदी आदि को तैरकर या नाव से पार करना।
पु० माल ढोनेवाले जहाजो का वह अधिकारी जो रास्ते मे व्यापारिक कार्यों की देख-रेख और व्यवस्था करता है।
†अ० दे० 'तलना'।

तरनाग—पु० [देश०] एक तरह की चिडिया।

तरनाल—पु० [?] पुरानी चाल के जहाजो मे लगा रहनेवाला वह रस्सा जिससे पाल को धरन मे वाँधते थे। (लश०)

तरनि—स्त्री० [स० तरणि] नदी। सरिता।

तरनिजा—स्त्री०=तरणिजा (यमुना)।

तरनी—स्त्री० [स० तरणी] नाव। नौका।
पु० [स० तरणि] सूर्य। उदा०—तेज राशि द्रिग छोर हुए मानो सत तरनी।—रत्ना०।
स्त्री० [हिं० तरे=तले] डमरू के आकार की वह लवी रचना जिस पर खोमचेवाले अपना थाल रखकर सौदा वेचते है।

तरन्नि*—स्त्री०=तरनी (नदी)।

तरप†—स्त्री०=तडप।

तरपट—वि० [हिं० तिरपट ?] (चारपाई) जिसमे टेढापन हो। जिसमे कनेव पडी हो।
पु० १. टेढापन। २ अतर। भेद।

तरपत†—पु० [स० तृप्ति] १ सुभीता। २ आराम। चैन। सुख।

तरपन†—पु०=तर्पण।

तरपना†—अ०=तडपना।

तर-पर—अ० व्य० [हिं० तर=तले+पर=ऊपर] १ एक दूसरे के ऊपर तथा नीचे। जैसे—पहलवान कुश्ती मे तर-पर होते ही रहते है। २ एक के ऊपर एक-एक करके। जैसे—साडियो का तर-पर थाक लगा हुआ था। ३ एक के वाद एक-एक करके। जैसे—ये घटनाएँ तर-पर होती रही। ४ विना क्रम भग किए हुए। निरतर। जैसे—वह सवाल-जवाव तर-पर पूछे तथा दिये जाते थे।

तरपरिया†—वि० [हिं० तर-पर] १ क्रम या स्थिति के विचार से ऊपर और नीचे का। २ जो एक के वाद दूसरे के क्रम से हो। जो क्रम के विचार से दूसरे के ठीक वाद पडता हो। ३ (वच्चे) जो ठीक आगे-पीछे के क्रम से एक के वाद हुए हो। जैसे—तर-परिया भाई-वहन।

तरपीला—वि० [हिं० तडप+ईला (प्रत्य०)] तडपदार। चमकीला।

तरपू—पु० [देश०] एक तरह का वृक्ष जिसकी लकडी कुछ भूरे रग की होती और इमारत के काम आती है।

तरफ—स्त्री० [अ०] १ ओर। दिशा। जैसे—आप किस तरफ जायँगे। २ दो या अधिक दलो, पक्षो आदि मे से हर एक। जैसे—इस तरफ राम थे और उस तरफ रावण। ३ किसी वस्तु के दो या अधिक तलो मे से कोई तल। जैसे—पत्र की दूसरी तरफ भी तो देखो। ४. किनारा। तट। (क्व०)

तरफदार—वि० [अ० तरफ+फा० दार] [भाव० तरफदारी] जो किसी तरफ अर्थात् पक्ष मे हो। किसी का पक्ष लेने या समर्थन करनेवाला।

तरफदारी—स्त्री० [अ० तरफ+फा० दारी] १. तरफदार होने की अवस्था या भाव। २. पक्ष-पात।

तरफराना†—अ०=तडफडाना।

तरव—पु० [हिं० तरपना, तडपना] सारगी मे ताँत के नीचे एक विशेष क्रम से लगे हुए तार जो वजने के समय एक प्रकार की गूँज उत्पन्न करते है।

तर-वतर—वि० [फा०] जल या किसी तरल पदार्थ से वहुत अधिक भीगा हुआ। जैसे—खून या पसीने से तर-वतर।

तर-वहना—पु० [हिं० तर=तले+वहना] वह छोटा कटोरा जिसमे छोटी देव-मूर्त्तियो को पूजा के समय स्नान कराया जाता है।

तरवियत—स्त्री० [अ०] १. पालने-पोसने का काम। पालन-पोषण। २. देख-रेख करके जीवित रखने और वढाने का काम। सवर्धन। ३. शिक्षा।

तरवूज—पु० [फा० तर्वुज] १ एक प्रसिद्ध गोल वडा फल जिसका ऊपरी छिलका मोटा, कडा तथा गहरे हरे रग का होता है और जिसमे गुलावी रग का गूदा होता है जो खाया जाता है। २ वह लता जिसमे उक्त फल लगता है।

तरवूजई—वि० [हिं० तरवूज+ई (प्रत्य०)] तरवूज की तरह गहरे हरे रग का।
पु० गहरा हरा रग।

तरवूजा—पु०=तरवूज।

तरवूजिया—वि० [हिं० तरवूज] तरवूजे के छिलके के रग का गहरा हरा।
पु० उक्त प्रकार का रग।

तरवोना—स० [फा० तर+हिं० वोरना] अच्छी तरह तर या गीला करना। भिगोना।
अ० तर होना। भीगना। उदा०—पर-निंद्रा रसना के रस मे अपने पर तरवोरी।—सूर।

तरमाची—स्त्री० [हिं० तर+माचा] वैलो के जुए मे नीचे लगी हुई लकडी। मचेरी।

तरमाना†—अ० [?] नाराज होना। विगडना। उदा०—सूर रोम अति लोचन देख्यौ विघना पर तरमात।—सूर।
स० किसी को क्रुद्ध या नाराज करना।
अ० [फा० तर+हिं० माना (प्रत्य०)] तर होना। तरी से युक्त होना।
स० गीला या तर करना।

तरमानी—स्त्री० [हिं० तरमाना] जोती हुई भूमि मे होनेवाली तरी।
क्रि० प्र०—आना।

तरमिरा—पु०=तरामीरा।

तरमीम—स्त्री० [अ०] १ किसी कार्य या वात मे किया जानेवाला सुवार। २ प्रस्तावो, लेखो आदि मे होनेवाला सशोधन।

तरराना†—अ० [अनु०] ऐठ या ऐड दिखाना। गर्व-सूचक चेष्टा करना।
स० ऐठना। मरोडना।

तरल—वि० [स०√तॄ+कलच्] [भाव० तरलता] १ तेल, पानी आदि की तरह पतला और वहनेवाला। द्रव। २ हिलता-डोलता हुआ।

चलायमान। ३ अस्थिर। चचल। ४ जल्दी नष्ट हो जानेवाला। ५. चमकीला । कातिवान्। ६ खोखला। पोला। ७. अबाध रूप से बराबर चलता रहनेवाला। उदा०—स्मित बन जाती है तरल हँसी।—प्रसाद।

पु०१ गले मे पहनने का हार। २. हार के बीच मे लगा हुआ लटकन। लोलक। ३ हीरा । ४. लोहा। ५ तल । पेंदा। ६ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। ७. उक्त देश के निवासी। ८ घोडा।

तरलता—स्त्री०[स० तरल+तल्—टाप्]१. तरल होने की अवस्था या भाव। द्रवता। २ चचलता। चपलता।

तरल-नयन—पु०[ब०स०] एक तरह का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण होते है।

तरल-भाव—पु०[ष० त०]१ तरलता। द्रवता। २ चचलता।

तरला—स्त्री०[स० तरल+टाप्]१ जौ का माँड। यवागू। २ मदिरा। शराब। ३ शहद की मक्खी। मधु-मक्खी। ४ छाजन के नीचे लगे हुए बाँस।

तरलाई—स्त्री०—तरलता।

तरलायित—वि०[स० तरल+क्यङ्+क्त] लहर की तरह काँपता या हिलता हुआ।

स्त्री० बडी तरग। हिलोर।

तरलित—भू० कृ० [स० तरल+णिच्+क्त] १ तरल किया या बनाया हुआ। द्रव रूप मे लाया हुआ। २ उदारता, दया, प्रेम आदि से युक्त। जिसका चित्त कोमल हो।

तरवँछी—स्त्री० दे० 'तरमाची'।

तरवड़ी—स्त्री० [स० तुला+डी (प्रत्य०)] १ छोटा तराजू। २ तराजू का पल्ला।

तरवन—पु०[हिं० तरौना]१. कान मे पहनने का तरकी नाम का गहना। २. करन-फूल।

तरवर—पु०[स० तरुवर]१ पेड। वृक्ष। २ एक प्रकार का बडा पेड जिसकी छाल से चमडा सिझाया जाता है। तरोता।

तरवरा—पु०=तिरमिरा। (दे०)

तरवरिया—पु० [हिं० तरवर] १ वह जो तलवार चलाता हो। २. तलवार से युद्ध करनेवाली एक जाति।

तरवरिहा—पु०=तरवरिया।

तरवाँची—स्त्री०=तरमाची।

तरवाँसी—स्त्री०=तरवाँची (तरमाची)।

तरवा—पु०=तलवा।

तरवाई-सिरवाई—स्त्री०[हिं० तर+सिर] १. किसी चीज के ऊपरी और नीचेवाले भाग। २ ऊँची और नीची जमीन। ३ पहाड़ और घाटी।

तरवाना—स०[हिं० तारना का प्रे०] तारने का काम किसी से कराना।

स०=तलवाना।

अ०[हिं० तलवा] पर के तलवे का घिसना। विशेषत बैल का पैरो के तलवो को घिसना।

तरवार—स्त्री०=तलवार।

पु०=तरुवर(वृक्ष)।

तरवारि—स्त्री०[स० तर√वृ+णिच् (रोकना)+इन्]= तलवार।

तरवारी—पु०=तरवरिया।

तरस्—पु०[स०√तृ (तरना)+असुन्]१ बल। शक्ति। २ तेजी। वेग। ३. बीमारी। रोग। ४. तट। किनारा। ५ वानर। बन्दर।

तरस—पु०[स०√त्रस्=डरना]अभागे, दलित, दुखी या पीडित के प्रति मन मे उत्पन्न होनेवाली करुणा या दया।

क्रि० प्र०—आना।

मुहा०—(किसी पर) तरस खाना=किसी के प्रति करुणा या दया दिखलाना और फलत. उसका कष्ट या दुःख दूर करने का प्रयत्न करना।

तरसना—अ०[सं० तर्पण] अभीष्ट तथा प्रिय वस्तु के अभाव के कारण दुखी या निराश व्यक्ति का उसके दर्शन या प्राप्ति के लिए लालायित या विकल होना। जैसे—(क) किसी को मिलने के लिए अथवा कुछ खाने के लिए मन तरसना (ख) प्रिय को मिलने के लिए आँखे तरसना।

अ० [स० त्रसन] त्रस्त या पीडित होना।

स० त्रस्त या पीडित करना।

तरसान—पु०[स०] नौका।

तरसाना—स०[हिं० तरसना का प्रे०]१. ऐसा काम करना जिसमे कोई तरसे। २. किसी प्रकार के अभाव का अनुभव कराते हुए किसी को ललचाना। आशा दिलाकर या प्रवृत्ति उत्पन्न करके खिन्न या दुखी करना।

सयो० क्रि० —डालना।—मारना।

तरसौंहा—वि०[हिं० तरसना+औंहा (प्रत्य०)] [स्त्री० तरसौंही] जो तरस रहा हो। तरसनेवाला। जैसे—तरसौंहे नेत्र।

तरस्वान् (स्वत्)—वि०[स० तरस्+मतुप्]१ जिसकी गति बहुत अधिक या तीव्र हो। २ वीर। बहादुर। साहसी।

पु० १. वायु। २. गरुड। ३ शिव।

तरस्वी (स्विन्)—वि० पु०[स० तरस्+विनि]=तरस्वान्।

तरह—स्त्री०[फा०]१ आकार-प्रकार, गुण, धर्म, बनावट, रूप आदि के विचार से वस्तुओ, व्यक्तियो आदि का कोई विशिष्ट और स्वतन्त्र वर्ग। जैसे—(क) इसी तरह का कोई कपडा लेना चाहिए। (ख) यहाँ तरह-तरह के आदमी आते रहते है। २ ढग। प्रकार। जैसे—तुम यह भी नही जानते कि किस तरह किसी से बात की जाती है।

मुहा०—तरह देना=किसी की त्रुटि, भूल आदि पर ध्यान न देना। जाने देना।

तरहटी—स्त्री०=तलहटी।

तरहदार—वि०[फा०] [भाव० तरहदारी] १ अच्छे ढग या प्रकार का। २ अनोखी और सुन्दर बनावटवाला। ३ सज-धज से युक्त। सजीला।

तरहदारी—स्त्री०[फा०] तरहदार होने की अवस्था या भाव।

तरहर—क्रि० वि०[हिं० तर+हर (प्रत्य०)] तले। नीचे।

पु० नीचे का भाग। तला। पेंदा।

वि०१. जो सब के नीचे का हो। २. निकृष्ट। बुरा।

तरहरि—स्त्री०=तलहटी।

तरहा—पु०[हिं० तर]१. कूँए की खुदाई मे एक माप जो प्राय. एक हाथ की होती है। २. वह कपडा जिस पर मिट्टी फैलाकर चीजे ढालने के लिए साँचा बनाते हैं।

तरहेल†—वि०[हिं० तर+हर, हल (प्रत्य०)]१ अधीन। निम्नस्थ। २. वश मे किया हुआ। ३ हारा या हराया हुआ। पराजित।

तराव—पु०[स० तर-अनु, च०त०] एक तरह की चौड़े पेंदेवाली नाव। तरालु।

पु०[देश०] पटुआ। पटसन। पाट।

तरा†—पु०१.=तला। २=तलवा।

तराइन—स्त्री०[स० तारक] तारो का समूह। तारावली।

तराई—स्त्री०[हिं० तर=नीचे]१. पहाड के नीचे का समतल मैदानी-भू-भाग। २ दे० 'घाटी'। ३. मूंज के वे मुट्ठे जो छाजन मे खपरैल के नीचे लगाये जाते हैं।

स्त्री०[हिं० तारा+ई] तारो का समूह। तारागण।

तराजू—पु०[फा०] वस्तुएँ तौलने का एक प्रसिद्ध उपकरण जिसमे दोनो ओर वे दो पल्ले रहते हैं जिनमे से एक पर बटखरा या बाट और दूसरे पर तौली जानेवाली चीज रखी जाती है। तुला।

मुहा०—(किसी से) तराजू होना=किसी की बराबरी या सामना करने अथवा उसके समान बनने के लिए मुकाबले पर या सामने आना।

तरात्यय—पुं०[स० तर-अत्यय, ष०त०]प्राचीन काल मे वह दड जो बिना आज्ञा के नदी पार करनेवाले पर लगाया जाता था।

तराना—पु०[फा० तरान]१ अच्छे ढग से गाया जानेवाला सुन्दर गीत। २ एक प्रकार का गाना जिसके बोल इस प्रकार के होते हैं—तानूम्, तानूम ता दारा दारा, दिर दिर दारा आदि। (इसमे प्राय सितार और तबले के बोल मिले हुए होते हैं।)

†स०=तैराना (तैरने मे प्रवृत्त करना)।

तराप†—[अनु०] तडाक(शब्द)।

तरापा—पु०[हिं० तरना] पानी मे तैरता हुआ वह शहतीर जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं। (लश०)

पु०[हिं०त्राहि से, स्यापा का अनु०] त्राहि त्राहि की पुकार। हाहाकार।

क्रि० प्र०—पडना।—मचना।

तराबोर—वि०[फा० तर+हिं० बोरना] पानी या और किसी तरल पदार्थ मे अच्छी तरह डूबा या भीगा हुआ। शराबोर।

तरामल—पु०[हिं० तर=नीचे]१. मूंज के वे मुट्ठे जो छाजन मे खपरैल के नीचे लगे होते हैं। २. बैलो के गले के जुए मे की नीचेवाली लकड़ी।

तरामीरा—पु०[देश० पं० तारामीरा]एक तरह का पौधा जिसके बीजो से तेल निकाला जाता है।

तरायला†—वि०[?]१ तेज। २. चचल।

तरारा—पु०[?]१ उछाल। कुलाँच। छलाग।

मुहा०—तरारे भरना या मारना=(क) खूब उछल-कूद करना। (ख) किसी काम मे बहुत जल्दी-जल्दी आगे बढते चलना। (ग) बहुत बढ-बढकर बातें करना। खूब डींगें हाँकना।

२. किसी चीज पर गिराई जानेवाली पानी की पतली धार।

क्रि० प्र०—देना।

तरालु—पु०[सं० तर√अल् (पर्याप्त होना)+उण्] चौडे पेंदेवाली एक तरह की नाव। तराव।

तरावट—स्त्री०[फा० तर+आवट (प्रत्य०)]१ तर अर्थात् आर्द्र या नम होने की अवस्था या भाव। तरी। जैसे—वातावरण मे आज तरावट है। २ प्रिय और वाछित ठढक या शीतलता। ३ ऐसा पदार्थ जिसके सेवन से शारीरिक गरमी शात होती हो और प्रिय और सुखद ठंढक मिलती हो। ४ स्निग्ध भोजन।

तराश—स्त्री०[फा०]१ तराशने अर्थात् धारदार उपकरण से किसी चीज के टुकडे करने की क्रिया, ढग या भाव। २. किसी रचना मे की वह काट-छाँट या बनावट जिससे उसका रूप प्रस्तुत हुआ हो। ३ ढग। तर्ज।

तराश खराश—स्त्री०[फा०] किसी प्रकार की रचना मे की जानेवाली काट-छाँट।

तराशना—स०[फा०]१ धारदार उपकरण से किसी चीज विशेषत. किसी फल को कई टुकडो मे विभाजित करना। काटना। जैसे—अमरूद या सेब तराशना। २ कतरना (कपड़े आदि का)।

तरास—पु०=त्रास।

स्त्री०=तराश।

तरासना*—स०[स० त्रास+ना (अव्य०)]१ त्रास या कष्ट देना। त्रस्त करना। २ भयभीत करना।

†स०=तराशना।

तरासा†—वि०[स० तृषित]प्यासा।

स्त्री०=तृषा (प्यास)।

तराहि†—अव्य०=त्राहि।

तराहीं*—क्रि० वि०[हिं० तले] नीचे।

तरिंदा—पु०[हिं० तरना+इदा (प्रत्य०)] नदी, समुद्र आदि मे तैरता हुआ वह पीपा जो किसी लगर मे बँधा होता है। तरेंदा।

तरि—स्त्री० [स०√तॄ (तरना)+इ] १ नाव। नौका। २ बटी पिटारी। पिटारा। ३ कपडे का छोर या सिरा।

तरिक—पु०[स० तर+ठन्—इक]१ लकडियो का वह ढाँचा जो जलाशय पार करने के लिए बनाया जाता है। बेडा। २ वह जो नदी आदि पार करने का पारिश्रमिक लेता हो। ३ केवट। मल्लाह।

तरिका—स्त्री०[स० तरिक+टाप्]नाव। नौका।

*स्त्री०[स० तडित्] बिजली।

तरिकी (किन्)—पु०[स० तरिका+इनि] नदी आदि के पार उतारने वाला। माँझी। मल्लाह।

तरिको—पु० दे० 'तरौना'।

तरिणी—स्त्री०[स० तर+इनि—ङीप्]=तरणी।

तरिता—स्त्री०[स० तर+इतच्—टाप्]१ तर्जनी उँगली। २. भाँग। भग। ३ गाजा।

†स्त्री०=तडित् (बिजली)।

तरित्र—पु०[स०√तॄ+ष्ट्रन्]बडी नाव। पोत।

तरित्री—स्त्री०[स० तरित्र+ङीप्]छोटा तरित्र।

तरिया†—पु०[हिं० तरना] तैराक।

वि० तैरनेवाला।

तरियाना—स० [हिं० तरे=नीचे] १ किसी चीज को तले या नीचे रखना। २. किसी चीज को झुकाकर नीची कर देना। ३ बटुए के पेंदे मे इसलिए मिट्टी का लेवा लगाना कि आग पर चढाने से उसका पेंदा जलने न पावे। लेवा लगाना। ४. धन-सपत्ति आदि अथवा और कोई चीज चुपचाप अपने अधिकार मे करते जाना या छिपाकर रखते चलना।
†अ० तले या तल मे बैठ जाना या जमना।
स० [फा० तर] पानी आदि के छीटे देकर तर या गीला करना। जैसे—चुनाई करने से पहले ईंटें तरियाना।

तरिवन†—पुं०=तरवन (तरौना)।

तरिवर†—पुं०=तरुवर।

तरिहँत —क्रि० वि० [हिं० तर+अत, हँत (प्रत्य०)] नीचे। तले।

तरी—स्त्री० [स० तरि+ङीप्] १ नाव। नौका। २ गदा। ३ धूआँ। धूम। ४. कपडे रखने का पिटारा। ५ कपडे का छोर या सिरा।
स्त्री० [फा० तर] १. तर होने की अवस्था या भाव। आर्द्रता। गीलापन। २ वातावरण मे होनेवाली आर्द्रता। ३ प्रिय और सुखद। ठढक। शीतलता। ४. तलहटी। तराई। ५ तलछट। तलौछ। ६. वह नीची भूमि जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा होता हो।
†स्त्री०=तरकी (कान का गहना)।
†स्त्री०=तल्ला (जूते का)। उदा०—जो पहिरी तन त्राण को माणिक तरी बनाय।—केशव।

तरीका—पु० [अ० तरीक] १. काम करने का कोई उपयुक्त, मान्य या विशेष ढग। २. आचार या व्यवहार की चाल-ढाल। ३. उपाय। युक्ति।

तरीनि —स्त्री० [हिं० तर=तले] पहाड के नीचे का भाग। तलहटी। (बुदेल) उदा०—फूटे है सुगध घट श्रवन तरिनि मे।—केशव।

तरीष—पु० [स०√तॄ (तरना) +ईषन्] १ सूखा गोबर। २. नाव। ३. जलाशय पार करने का बेड़ा। ४ समुद्र। सागर। ५ स्वर्ग। ६. रोजगार। व्यवसाय।

तरीषी—स्त्री० [स० तरीष+ङीप्] इद्र की एक कन्या।

तरु—पु० [स०√तॄ+उन्] १ पेड। वृक्ष। २ पूर्वी भारत मे होनेवाला एक प्रकार का चीड़ जिससे तारपीन का बढिया तेल निकलता है।

तरुआ†—पु० [हिं० तरना=तलना] उबाले हुए धान का चावल। भुजिया चावल।
पु०=तलवा (पैर का)।

तरुण—वि० [स०√तॄ+उनन्] १ जो बाल्यावस्था पार करके सासारिक जीवन की आरभिक अवस्था मे प्रवेश कर रहा हो। जवान। जैसे—तरुण व्यक्ति। २ जो जीवन की आरभिक अवस्था मे हो। जैसे—तरुण पौधा। ३. जिसमे ओज, नवजीवन या शक्ति हो। जैसे—तरुण हँसी। ४ नया। नवीन।
पु० १. बडा जीरा। २ मोतिया (पौधा और उसका फूल)। ३. रेंड।

तरुणक—पु० [स० तरुण+कन्] अकुर।

तरुण-ज्वर—पु० [कर्म० स०] ऐसा ज्वर जो सात दिन पार कर के और आगे चल रहा हो।

तरुण-तरणी—पु० [कर्म० स०] मध्याह्न का सूर्य।

तरुणता—स्त्री० [स० तरुण+तल्—टाप्] तरुण होने की अवस्था या भाव।

तरुण-दधि—पु० [कर्म० स०] पाँच या अधिक दिन से पडा हुआ बासी दही जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। (वैद्यक)

तरुण-पीतिका—स्त्री० [कर्म० स०] मैनसिल।

तरुण-सूर्य—पु० [कर्म० स०] मध्याह्न का सूर्य।

तरुणाई*—स्त्री० [स० तरुण+हिं० आई (प्रत्य०)] तरुण होने की अवस्था या भाव। जवानी।

तरुणाना—अ० [स० तरुण+हिं० आना (प्रत्य०)] तरुण होना। जवानी पर आना।

तरुणास्थि—स्त्री० [स० तरुण—अस्थि, कर्म० स०] पतली लचीली हड्डी।

तरुणिमा (मन्)—स्त्री० [स० तरुण+इमनिच्] तरुण होने की अवस्था या भाव। तरुणाई।

तरुणी—वि० स्त्री० [स० तरुण+ङीप्] जवान। युवा।
स्त्री० १. जवान स्त्री। युवती। २ चीड़ नामक वृक्ष। ३ घीकुआर। ४. जमाल गोटा। दती। ५. मोतिया नाम का पौधा और उसका फूल। ६. सगीत मे, मेघ राग की एक रागिनी।

तरु-तलिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] चमगादर।

तरुन*—वि०, पु०=तरुण।

तरुनई*—स्त्री०=तरुणाई।

तरुनाई*—स्त्री०=तरुणाई।

तरुनापन*—पुं० [हिं० तरुन+पन (प्रत्य०)] तारुण्य। जवानी।

तरुनापा—पु० [हिं० तरुन+ पा (प्रत्य०)] युवावस्था। जवानी।

तरुबाँहीं*—स्त्री० [स० तरु+हिं० बाँह] वृक्ष की बाँह अर्थात् शाखा।

तरुभुक्—पु० [स० तरु√भुज् (खाना)+क्विप्] बाँदा। बदाक।

तरुभुज—पु० [स० तरु√भुज्+क] दे० 'तरुभुक्'।

तरु-राग—पु० [ब० स०] नया कोमल पत्ता। किशलय।

तरु-राज—पु० [प० त०] १. कल्पवृक्ष। २ ताड का पेड।

तरुरुहा—स्त्री० [स० तरु√रुह् (उगना) +रु—टाप्] बाँदा।

तरु-रोपण—पु० [प० त०] २ वृक्ष लगाने की क्रिया। २ वह विद्या जिसमे वृक्ष लगाने, बढाने और उनकी रक्षा करनेकी कला सिखाई जाती है। (आरबोरी कलचर)

तरुरोहिणी—स्त्री० [स० तरु√रुह्+णिनि—ङीप्] बाँदा।

तरुवर—पु० [स० त०] १ श्रेष्ठ या बडा वृक्ष। २ रहस्य सप्रदाय मे, (क) प्राण। (ख) परमात्मा या ब्रह्म।

तरुवरिया†—स्त्री० [हिं० तरवारि] तलवार। उदा०—लिहलन ढाल तरुवरिया, त अवरु कटरिया नु हो।—गीत।

तरु-वल्ली—स्त्री० [स० त०] जतुका लता। पानडी।

तरुसार—पु० [प० त०] कपूर।

तरुस्था—स्त्री० [स० तरु√स्था (ठहरना)+क—टाप्] बाँदा।

तरूट—पु० [स० तरु—उट, प० त०] भसीड। कमल की जड।

तरेंदा—पु० [स० तरड] जलाशय पार करने का लकडियो आदि का ढाँचा। बेडा।

तरे†—क्रि० वि०=तले (नीचे)।

तरेट—पु० [हिं० तर+एट (प्रत्य०)] पेडू।

तरेटी—स्त्री०=तलहटी (तराई)।

तरेडा—पु०=तरेरा।

तरेरना—स० [सं० तर्ज=डाटना+हिं० हेरना=देखना] रोषपूर्वक या तिरछी आँखों से घूरते हुए किसी की ओर अथवा इधर-उधर देखना।

तरेरा—पु० [अ० तरार] १. लगातार डाली जानेवाली पानी की धार। २ जल की लहरो का आघात। थपेडा।
पु० रोष-भरी दृष्टि।

तरैनी—स्त्री० [हिं० तर=नीचे] हरिस और हल को मिलाने के लिए दिया जानेवाला पच्चर।

तरैया—स्त्री० [हिं० तारा] तारा।
वि० [तरना] १ तरनेवाला। २ तारनेवाला।

तरैला—पु० [हिं० तरे] [स्त्री० तरैली] १ किसी स्त्री के दूसरे पति का वह पुत्र जो उसकी पहली पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। २ किसी पुरुष की दूसरी स्त्री का वह पुत्र जो उसके पहले पति के वीर्य से उत्पन्न हो।

तरैली†—स्त्री०=तरैनी।

तरोंच—स्त्री० [हिं० तर=नीचे] १ कघी के नीचे की लकडी। २ दे० 'तलौछ'।

तरोंचा†—पु० [हिं० तर=नीचे] [स्त्री० तरोंची] जूए की निचली लकडी।

तरोंडा—पु० [देश०] फसल का वह अश जो हलवाहो, मजदूरो आदि को देने के लिए अलग कर दिया जाता है।

तरोई†—स्त्री०=तोरी (तरकारी)।

तरोता—पु० [स० तरवट] मध्य तथा दक्षिण भारत मे होनेवाला एक तरह का ऊँचा पेड जिसकी छाल चमडा सिझाने के काम आती है।

तरोबर*—पु० [सं० तरुवर] श्रेष्ठ वृक्ष।
†वि०=तरोवोर।

तरौंछ—स्त्री०=तलछट।

तरौंछी—स्त्री० [हिं० तर+ओछी (प्रत्य०)] १ करघे के हत्थे के नीचे लगी हुई लकडी। २ बैलगाडी के सुजावे के नीचे लगी हुई लकडी।

तरौंटा—पु० [हिं० तर+पाट] नीचेवाला पाट (चक्की आदि का)।

तरौंता—पु० [हिं० तर+औंता (प्रत्य०)] छाजन मे की वह लकडी जो ठाट के नीचे रखी या लगाई जाती है।

तरौंस*—पु० [हिं० तट+औस (प्रत्य०)] जलाशय का तट। किनारा।

तरौना—पु० [स० तालपर्ण, प्रा० तालवन्न] कानो मे पहनने का एक आभूषण जो ताड के पत्ते की तरह फाँकदार और गोल होता है। तरकी। तरवन।

तर्क—पु० [स०√तर्क् (अनुमान)+अच्] १ कोई वात जानने या समझाने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। २ किसी तथ्य, धारणा, विचार, विश्वास आदि की सत्यता जाँचने के लिए अथवा उसके समर्थन या विरोध मे कही हुई कोई तथ्यपूर्ण युक्ति-सगत तथा सुविचारित वात। दलील। (आर्ग्यूमेन्ट) ३ कोई चमत्कारक कथन या वात। व्यग्यपूर्ण वात। ४. ताना। ५ वहस।
पु० [अ०] छोडने या त्यागने की क्रिया या भाव। जसे—उन्होने यह ख्याल तर्क दिया है।

तर्कक—वि० [स०√तर्क्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ तर्क करनेवाला। २ [तर्क√कै (प्रकाश)+क] मागनेवाला। याचक।

तर्कण—पु० [स० √तर्क्+ल्युट्—अन] [वि० तर्कणीय, तर्क्य] तर्क करने की क्रिया या भाव।

तर्कणा—स्त्री० [स०√तर्क्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ किसी वात या विषय के सब अगो पर किया जानेवाला विचार। विवेचन। २ किसी पक्ष या विचार के समर्थन मे उपस्थित की जानेवाली युक्ति। दलील।

तर्कना—स्त्री०=तर्कणा।
अ०=तरकना।

तर्क-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] १ तात्रिक उपासना मे एक प्रकार की शारीरिक मुद्रा।

तर्क-वितर्क—पु० [द्व० स०] १. यह सोचना कि यह वात होगी या वह। ऊहा-पोह। २ दो पक्षो मे परस्पर एक दूसरे द्वारा प्रस्तुत की हुई सुविचारित वातो का किया जानेवाला खंडन या विरोध और अपनी वातो का किया जानेवाला समर्थन। ३ वाद-विवाद। वहस।

तर्कश—पु०=तरकश।

तर्क-शास्त्र—पु० [मध्य० स०] १ वह विद्या या शास्त्र जिसमे किसी के द्वारा प्रतिपादित सिद्धातो आदि के खडन-मडन करने की पद्धतियो का विवेचन होता है। (लाजिक) २ दे० 'न्याय शास्त्र'।

तर्क-संगत—वि० [तृ० त०] १ (वात) जो तर्क के आधार पर ठीक वैठे या सिद्ध हो। २ (मत) तर्क-वितर्क करने पर उसके परिणाम के रूप मे निकलने या ठीक सिद्ध होनेवाला। (लॉजिकल) ३ =युक्ति-युक्त।

तर्कस—पु० [स्त्री० अल्पा० तर्कसी] =तरकश।

तर्क-सिद्ध—वि० [तृ० त०] जो तर्क की दृष्टि से विलकुल ठीक या प्रमाणित हो।

तर्काभास—पु० [तर्क—आभास, ष० त०] ऐसा तर्क जो ऊपर से देखने पर ठीक-सा जान पडता हो परन्तु जो वास्तव मे ठीक न हो।

तर्कारी—स्त्री० [स० तर्क√ऋ (गति) +अण्—ङीप्] १ अँगेथू या अरणी का वृक्ष। २ जैत नामक वृक्ष।
स्त्री०=तरकारी।

तर्किण—पु० [स०] चकवँड। पँवार।

तर्कित—वि० [स०√तर्क्+क्त] (विषय या सिद्धात) जिस पर तर्क किया गया हो।

तर्किल—पु० [स०√तर्क्+इलच्] चकवँड। पँवार।

तर्की (किन्)—पु० [स०√तर्क्+णिनि] [स्त्री० तर्किनी] वह जो प्राय तर्क करता रहता हो।
†स्त्री०=टरकी (पक्षी)।

तर्कीव—स्त्री०=तरकीव।

तर्कु—पु० [स०√कृत् (काटना)+उ, नि० सिद्धि] सूत कातने का तकला। टेकुआ।

तर्कुक—वि० [स० तर्कु+कन्] प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।

पु० १. प्रार्थी। २ अभियोग उपस्थित करनेवाला। मुद्दई। वादी।

तर्कुटी—स्त्री० [स०√तर्क्+इटन्—ङीप्] छोटा तकला।

तर्कु-पिंड—पु० [मध्य० स०] तकले की फिरकी।

तर्कुल—पु० [हिं० ताड+कुल] १ ताड का पेड। २ ताड का फल।

तर्क्य—वि० [सं०√तर्क्+ण्यत्] १ जिसके सबध मे तर्क किया जा सके। २ विचारणीय।

तर्क्षु—पु० [सं०=तरक्ष, पृषो० सिद्धि] लकडबग्घा।

तर्क्ष्य—पु० [स०√तृक्ष् (गति)+ण्यत्, ना० गुण] जवाखार।

तर्ज—पु० [अ०] १ बनावट या रचना-प्रणाली के विचार से किसी वस्तु का आकार-प्रकार या स्वरूप। किस्म। प्रकार। २. किसी वस्तु को आकार-प्रकार या स्वरूप देने का विशिष्ट ढग, प्रकार या प्रणाली। तरह।

तर्जन—पु० [स०√तर्ज् (भर्त्सना करना)+ल्युट्—अन] १ कोई काम करने से किसी को रोकने के लिए क्रोधपूर्वक कुछ कहना या सकेत करना। २ डराना-धमकाना।

तर्जना*—अ० [हिं० तर्जन] तर्जन करना।

तर्जनी—स्त्री० [स० तर्जन+ङीप्] अँगूठे के पास की उँगली।
विशेष—इस उँगली को होठो पर रखकर अथवा खडी करके किसी को तर्जित किया जाता है इसी लिए इसका यह नाम पडा है।

तर्जनी-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तत्र की एक मुद्रा जिसमे बाँए हाथ की मुट्ठी बाँधकर तर्जनी और मध्यमा को फैलाते है।

तर्जिक—पु० [स०√तज्+घञ्+ठन्—इक] एक प्राचीन देश।

तर्जित—भू० कृ० [स०√तर्ज्+क्त] जिसका तर्जन किया गया हो। जिसे डाँटा-डपटा या डराया-धमकाया गया हो।

तर्जुमा—पु० [अ०] अनुवाद। उलथा। भाषातर।

तर्ण—पु० [स०√तृण् (भक्षण)+अच्] गाय का बछडा। बछवा।

तर्णक—पु० [स० तर्ण+कन्] १ तुरत का जनमा गाय का बछडा। २. बच्चा। शिशु।

तर्णि—पु०=तरणि (नाव)।

तर्तरीक—वि० [स०√तृ+ईक, नि० सिद्धि] १ पार जानेवाला। २ पार करने या ले जानेवाला।
पु० नाव। नौका।

तर्पण—पु० [स०√तृप् (सतुष्ट करना)+ल्युट्—अन] [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी] १ तृप्त करने की क्रिया। २ हिंदुओ का वह कर्मकाडी कृत्य जिसमे वे देवताओ, ऋषियों पितरो आदि को तृप्त करने के लिए अजुली या अरघे मे जल भर कर देते है।

तर्पणी—वि० [स० तर्पण+ङीप्] तृप्ति देनेवाली।
स्त्री० १ गगा नदी। २. खिरनी का पेड और फल।

तर्पणीय—वि० [स०√तृप्+अनीयर्] १ जिसका तर्पण करना आवश्यक या उचित हो। २ जिसका तर्पण किया जा सकता हो। ३. जिसे तृप्त करना आवश्यक हो।

तर्पणेच्छु—वि० [सं० तर्पण-इच्छु, प० त०] १ जिसे तर्पण करने की इच्छा हो। २. जो अपना तर्पण कराना चाहता हो।
पु० भीष्म।

तर्पिणी—स्त्री० [स०√तृप्+णिच्+णिनि—ङीप्] पद्मचारिणी लता। स्थल कमलिनी। स्थलपद्म।

तर्पित—भू० कृ० [स०√तृप्+णिच्+क्त] १ तृप्त किया हुआ २ जिसका तर्पण हुआ हो।

तर्पी (पिन्)—पु० [स०√तृप्+णिच्+णिनि] [स्त्री० तर्पिणी] १ वह जो दूसरो को तृप्त करता हो। २. तर्पण करनेवाला व्यक्ति।

तर्वट—पु० [स०] १ चकवँड। पँवार। २ चाद्र वर्ष।

तर्बूज—पु०=तरबूज।

तर्योना*—पु०=तरौना। (दे०)

तर्रा—पु० [देश०] चाबुक की डोरी या फीता।

तर्राना—पु० दे० 'तराना'।
†अ० दे० 'चर्राना'।

तर्री—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास।

तर्ष—पु० [स०√तृष् (तृष्णा)+घञ्] १ अभिलाषा। इच्छा। २ तृष्णा। ३ सूर्य। ४ समुद्र। ५ जलाशय पार करने का बेडा।

तर्षण—पु० [स०√तृष्+ल्युट्—अन] [वि० तर्षित] १ पिपासा। प्यास। २ अभिलाषा। इच्छा।

तर्षित—वि० [स० तर्ष+इतच्] १. प्यासा। २ अभिलाषा करनेवाला। इच्छुक।

तर्षुल—वि० [स०√तृष्+उलच्] =तर्षित। (दे०)

तल—पु० [स०√तल् (स्थिर होना)+अच्] १ किसी चीज के बिलकुल नीचे का अश या भाग। तला। पेंदा। २ जलाशय आदि के बिलकुल नीचे की जमीन जिस पर जल होता है। जैसे—नदी या समुद्र का तल। ३ किसी चीज के नीचेवाला भाग या स्थान। जैसे—तरु-तल। ४. सात पातालो मे से पहला पाताल। ५ एक नरक का नाम। ६ किसी चीज की ऊपरी सतह। जैसे—धरातल या समुद्रतल मे १००० फुट की ऊँचाई। ७ किसी पदार्थ के किसी पार्श्व का फैलाव या विस्तार। जैसे—चौकोर वस्तु के चारो तल। ८ चमडे का वह पट्टा जो धनुष की डोरी की रगड से बचने के लिए बायी बाँह पर पहना जाता था। ९ बाएँ हाथ से वीणा बजाने की कला या क्रिया। १० हाथ की हथेली। ११ कलाई। पहुँचा। १२ बित्ता। बालिश्त। १३ पैर का तलवा। १४. गड्ढा। १५ ताड का पेड और फल। १६. दस्ता। मुठिया। हत्था। १७ गोह नामक जतु। १८ आधार। सहारा। १९. चपत। थप्पड। २० जगल। वन। २१ शिव का एक नाम। २२. कारण। मूल। २३ उद्देश्य। २४ स्वभाव।

तलक—पु० [स० तल√कै (प्रकाश)+क] ताल। पोखरा।
*अव्य० हिं० 'तक' का पुराना रूप।

तल-कर—पु० [प० त०] ताल या तालाब मे होनेवाली वस्तुओ पर लगनेवाला कर।

तलकी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड जिसकी लकडी का रग ललाई लिये हुए भूरा होता है।

तलकीन—स्त्री० [अ० तल्कीन] शिक्षा।

तलख—वि० [फा०] १ जिसमे कडुआपन हो। २ उग्र। प्रचड।

तलखी—स्त्री० [फा० तल्खी] १. कडुआपन। कड़ुआहट। २. स्वभाव का चिड़चिड़ापन।

तलगू—स्त्री०=तेलगू।

तलघरा—पु० [स० तल+हिं० घर] तल अर्थात् नीचे का कमरा या घर। तहखाना।

तल-छट—स्त्री० [हिं० तल+छँटना] १ किसी तरल या द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाद या मैल। तलौंछ। २ तरल पदार्थ मे घुली या मिली हुई चीज का वह अश जो भारी होने के कारण नीचे बैठ जाता है। कल्क। (सेडिमेन्ट)

तलछटी—वि० [हिं० तल-छट+ई (प्रत्य०)] १ तल-छट-सबधी। २ जिसमे तल-छट हो।

तलना—स० [स० तरण=तिराना] पिघले हुए गरम स्निग्ध द्रव्य मे कोई खाद्य-वस्तु छोडकर पकाना। जैसे—पापड, पकौडे या पूरियाँ तलना।

तलप*—पु०=तल्प।

तल-पट—पु० [मध्य० स०] आय-व्यय फलक।

वि० [हिं० तले+पट] चौपट। नष्ट। बरबाद। उदा०—कही न मुफ्त मे देखो य माल तलपट हो।—नासिख।

तलपना—अ०=तडपना।

तलफ—वि० [अ०] [भाव० तलफी] नष्ट। बर्बाद।

तलफना—अ०=तड़पना।

तलफाना—स०=तडपाना।

तलफी—स्त्री० [फा०] १. तलफ अर्थात् नष्ट होने की अवस्था या भाव। नाश। बरबादी। २ नुकसान। हानि।

पद—हक-तलफी। (दे०)

तलफ्फुज—पु० [अ०] अक्षरो तथा शब्दो का उच्चारण।

तलब—स्त्री० [अ०] १ खोज। तलाश। २ प्राप्त करने की इच्छा।

मुहा०—तलब करना=किसी से अधिकारपूर्वक कुछ माँगना।

३ आवश्यकता। ४ बुलाना। बुलाहट। उदा०—आवैं तलब बाधि लै चालैं बहुरि न करिहैं फेरा।—कबीर। ५ तनख्वाह। वेतन।

तलबगार—वि० [फा०] १ तलब करने या चाहनेवाला। २ माँगनेवाला।

तलबाना—पु० [फा० तल्बान] १. गवाहो को कचहरी मे तलब करने अर्थात् बुलाने के लिए अदालत के अधिकारी के पास जमा किया जानेवाला व्यय। २ वह अर्थदड जो जमीदार को समय पर मालगुजारी न जमा करने पर भरना पड़ता था।

तलबी—स्त्री० [अ०] १. बुलाहट। २ माँग।

तलबेली—स्त्री० [हिं० तलफना] १ कुछ प्राप्त करने के लिए मन मे होनेवाली व्यग्रता। छटपटी। २. विकलता। बेचैनी।

तल-मल—पु० [मध्य० स०] तल-छट। तलौछ।

तलमलाना*—अ० [भाव० तलमलाहट] दे० 'तिलमिलाना'।

तलव—पु० [स० तल√वा (गति) +क] गानेवाला। गवैया।

तलव-कार—पु० [प० त०] १ सामवेद की एक शाखा। २ एक उपनिषद्।

तलवा—पु० [स० तल] पैर के बिलकुल नीचे का वह चिपटा अग जो खड़े होने और चलने के समय जमीन पर पड़ता है। पद-तल।

मुहा०—तलवा (या तलवे) खुजलाना=तलवे (या तलवों) मे खुजली होना जो लोक मे इस बात का सूचक माना जाता है कि शीघ्र ही कोई यात्रा करनी पडेगी या कही बाहर जाना पडेगा। **तलवा (या तलवे) न टिकना**=एक जगह कुछ देर बैठे न रहा जाना। बराबर इधर-उधर आते-जाते या घूमते रहना। **चलते-चलते तलवे चलनी या छलनी होना**=इतनी अधिक दौड-धूप करना कि पैरो मे दम न रह जाय। **(किसी के) तलवे चाटना**=किसी को प्रसन्न करने के लिए उसकी छोटी-से छोटी सेवाएँ करना। **(किसी के) तलवे धो-धो कर पीना**=अत्यत सेवा-शुश्रूषा करना। अत्यत प्रेम प्रकट करना। **(किसी के) तलवे सहलाना**=प्रसन्न करने के लिए बहुत ही दीन बनकर सभी तरह की सेवाएँ करना। **(कोई चीज) तलवों तले मेटना**=कुचल कर नष्ट करना। रौंद डालना। (स्त्री०) **(कोई बात) तलवों तले मेटना**=पूरी तरह से अवज्ञा या उपेक्षा करना। तुच्छ या हेय समझना। **(किसी के) तलवों से आँखें मलना**=दीन भाव मे बहुत अधिक आदर-सत्कार और सेवा-शुश्रूषा करना। **(कोई चीज) तलवों से मलना**=पैरो से कुचल या रौंदकर नष्ट करना। **(कोई बात देख या सुनकर) तलवों से लगना, सिर में जाकर बुझना**=इतना अधिक क्रोध चढना कि मानो सारा शरीर जल रहा हो। नीचे से ऊपर तक सारा शरीर जल जाना। (कभी-कभी इस मुहावरे का सक्षिप्त रूप होता है—तलवो से लगना, जैसे—उसकी बातें सुनकर मुझे तो तलवो मे (आग) लग गई।)

तलवार—स्त्री० [स० तरवारि] लोहे का एक लबा धारदार प्रसिद्ध हथियार जिसके आघात से प्राणियो के अग काटकर अलग किये जाते अथवा सिर काटकर उनकी हत्या की जाती है।

मुहा०—तलवार करना=तलवार की सहायता से युद्ध या वार करना। तलवार चलाना। **तलवार कसना**=तलवार का फल झुकाकर उसके लोहे की उत्तमता की परीक्षा करना। **(किसी को) तलवार का पानी पिलाना**=तलवार से आघात या वार करना। **तलवार की छाँह (या छाहों) मे**=ऐसी स्थिति मे जहाँ चारो ओर अपने सिर पर नगी तलवारें ही दिखाई देती हों। **(किसी को) तलवार के घाट उतारना**=तलवार का आघात करके प्राण लेना। **तलवार खींचना**=आघात या वार करने के लिए म्यान से तलवार बाहर निकालना। **तलवार तौलना**=भरपूर वार करने के लिए तलवार ठीक ढग से ऊपर उठाना। **तलवार पर हाथ रखना (या ले जाना)**=तलवार से वार या आघात करने को उद्यत होना। **तलवार बाँधना**=इस उद्देश्य से तलवार सदा अपनी कमर मे लटकाये रखना कि जब आवश्यकता हो, तब उसका उपयोग किया जा सके। **तलवार सौंतना**=तलवार तौलना। (देखें ऊपर)

पद—तलवार का खेत=लडाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र। **तलवार का छाला**=तलवार के फल पर उभरा हुआ चिह्न या दाग। **तलवार का डोरा**=तलवार की धार या बाढ जो डोरे या सूत की तरह जान पडती है। **तलवार का पट्टा या पट्ठा**=तलवार का चौडा फल। **तलवार का पानी**=तलवार की चमकीली रगत जो उसके बढिया होने की सूचक होती है। **तलवार का फल**=मूठ के आगे का सारा भाग। **तलवार का बल**=तलवार के फल का टेढापन जो काट करने मे

सहायक होता है। तलवार का बाट=तलवार में वह स्थान जहाँ से उसका टेढ़ापन आरंभ होता है। तलवार का मुँह=तलवार की धार। तलवार का हाथ=(क) तलवार का आघात। (ख) तलवार चलाने का ढंग या प्रकार। तलवार की आँच=तलवार का आघात या वार। तलवार की माला=तलवार की मूठ और फल का वह जोड़ जो दुवाले के पास होता है।

तलवारिया—पुं० [हिं० तलवार] वह व्यक्ति जो अच्छी तरह तलवार चलाना जानता हो।

तलवारी—वि० [हिं० तलवार] तलवार-संबंधी। जैसे—तलवारी हाथ।

तलहटी—स्त्री० दे० 'तराई'।

तलहा—वि० [हिं० ताल] ताल-संबंधी। ताल का या ताल में होनेवाला।
वि० [हिं० तल] तल अर्थात् नीचेवाले भाग में होने या रहनेवाला।

तलांगुलि—स्त्री० [सं० तल-अंगुलि, ष० त०] पैर की उँगली।

तला—पुं० [सं० तल] १=तल (पेंदा)। २. तलवा। ३. जूते के नीचे का वह चमड़ा जो चलते समय जमीन पर पड़ता है।

तलाई—स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल। तलैया।
स्त्री० [हिं० तलना] तलने की क्रिया, भाव और मजदूरी।
स्त्री० [हिं० तलाना] तलाने का भाव या मजदूरी।

तलाउ—पुं०=तलाव।

तलाक—पुं० [अ०] १. पति और पत्नी का विधि या नियम के अनुसार वैवाहिक संबंधों का होनेवाला पूर्ण विच्छेद। २. बोल-चाल में, किसी चीज को सदा के लिए छोड़ या त्याग देने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—देना।

तलाची—स्त्री० [सं०] चटाई।

तलातल—पुं० [सं० तल-अतल, ष० त०] पुराणानुसार सात पातालों में से एक।

तलाफी—स्त्री० [अ० तलाफ़ी] क्षति-पूर्ति।

तलाबा—पुं०=तालाब।

तलाबेली—स्त्री०=तलबेली (बेचैनी)।

तलामली—स्त्री०=तलाबेली (तलबेली)।

तलाव—पुं० [हिं० तलना] तलने की क्रिया, ढंग या भाव।
पुं० [सं० तल्ल] तालाब।

तलाश—स्त्री० [तु०] १. किसी खोई हुई अथवा लुप्त वस्तु, व्यक्ति आदि का पता लगाने का काम। अन्वेषण। खोज। २. किसी नई चीज या बात का पता लगाने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ३. आवश्यकता की पूर्ति के लिए होनेवाली चाह।

तलाशना—स० [फा० तलाश] १. तलाश करना। खोजना। ढूँढ़ना। २. किसी बात या विषय का अनुसंधान करना।

तलाशा—स्त्री० [सं०] एक तरह का पेड़।

तलाशी—स्त्री० [फा०] १. तलाश करने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। २. अवैध रूप से छिपाई गई वस्तु का पता लगाने के लिए किसी संदिग्ध व्यक्ति के शरीर, घर आदि की होनेवाली देख-भाल।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।

तलि—क्रि० वि०, पुं० हिं० में तले का एक रूप। उदा०—तलि कर माथा ऊपरि करि मूल।—कबीर।

तलिका—स्त्री० [सं० तल+ठन्—इक+टाप्] पशुओं विशेषतः घोड़ों के मुँह पर बाँधी जानेवाली वह थैली जिसमें दाना आदि भरा होता है। तोबड़ा।

तलित्—स्त्री० [सं०=तडित्, ड—ल] दे० 'तडित्'।

तलित—भू० कृ० [हिं० तलना से ?] तला हुआ।

तलिन—वि० [सं०√तल्+इनन्] १. दुबला-पतला। २. जीर्ण-शीर्ण। टूटा-फूटा। ३. इधर-उधर छितरा या फैला हुआ। विरल। ४. कम। थोड़ा। ५. साफ। स्वच्छ।
स्त्री० शय्या। सेज।

तलिम—पुं० [सं०√तल्+इमन्] १. छत। पाटन। २. खाट या पलंग। शय्या। ३. चँदोआ। ४. खाँड़ा। ५. बड़ी छुरी। छुरा। ६. जमीन पर का पक्का फर्श।

तलिया—स्त्री० [सं० तल] समुद्र की थाह। (डिं०)

तली—स्त्री० [सं० तल] १. तल। पेंदा। २. हाथ और पैर का तल। जैसे—हाथ की तली, पैर की तली। ३. पूजन आदि के समय पैर की तली के नीचे रखा जानेवाला पैसा। ४. दे० 'तलछट'।

तलुआ—पुं०=तालू।

तलुन—पुं० [सं०√तृ (गति)+उनन्] १. वायु। हवा। २. जवान आदमी। मरद।

तले—क्रि० वि० [सं० तल] १. किसी चीज के तल या नीचेवाले भाग में। २. किसी ऊँची या ऊपर टँगी हुई वस्तु से नीचे।
पद—तले-ऊपर—(क) एक के ऊपर दूसरा। (ख) उलट-पलट किया हुआ। तले-ऊपर के=ऐसे दो बच्चे जिनमें एक दूसरे के ठीक बाद उत्पन्न हुए हों। तले-ऊपर होना=उलट-पलट हो जाना। विशृंखल होना। (किसी के साथ) तले-ऊपर होना=प्रसंग या संभोग करना। (जी) तले-ऊपर होना=(क) घबराहट या विकलता होना। (ख) जी मिचलाना। मितली होना।
३. किसी के वश या शासन में। जैसे—इस अधिकारी के तले पाँच आदमी काम करते हैं।

तलेक्षण—पुं० [सं० तल-ईक्षण, ब० स०] सूअर (जन्तु)।

तलेटी—स्त्री० [सं० तल] १.=पेंदी। २.=तलहटी (तराई)।

तलैट—वि० [सं० तल] १. तल में होने या नीचे रहनेवाला। २ तुच्छ। हीन।

तलैंचा—पुं० [हिं० तले] वास्तु शास्त्र में, छत और मेहराब के बीच का भाग या रचना।

तलैया—स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल या तालाब।

तलोदर—वि० [सं० तल-उदर, ब० स०] [स्त्री० तलोदरी] तोंदवाला।

तलोदरी—स्त्री० [सं० तलोदर+ङीप्] स्त्री। भार्या।
वि० 'तलोदर' का स्त्री० रूप।

तलोदा—स्त्री० [सं० तल-उदक, ब० स०, उदादेश] नदी।

तलौंछ—स्त्री० [सं० तल=नीचे] द्रव पदार्थ के पात्र के तल में जमी हुई मैल। तल-छट।

तलौवन—पुं० [अ०] १ मत, विचार, सिद्धांत, स्थिति आदि में होनेवाला परिवर्तन। २ किसी बात या विचार पर स्थिर न होने का भाव।

तल्क—पुं० [सं०√तल्+कन्] वन। जंगल।

तल्ख—वि० [फा० तल्ख] [भाव० तल्खी] १. (पदार्थ) कड़ुआ। कटु। २. (स्वभाव) जिसमें कटुता, चिड़चिड़ापन आदि बातें अधिक हों।

तल्प—पु० [सं० √तल+पक्] १. पलंग। सेज। शय्या। २ बिछौना। बिस्तर। उदा०—दूर्वादल हो तल्प तुम्हारा।—पंत। ३ मकान का ऊपरी खंड। ४. अटारी।

तल्पक—पु० [स० तल्प+वन्] १ पलंग। २. पलंग पर बिस्तर करनेवाला सेवक।

तल्प-कीट—पु० [मध्य०स०] पलंग में रहनेवाला कीड़ा। खटमल।

तल्पज—पु० [सं०तल्प√जन् (उत्पन्न होना)+ड] क्षेत्रज पुत्र।

तल्पन—पुं० [स० तल्प+णिच्(नाम धातु)+ल्युट्—अन] १ हाथी की पीठ। २ हाथी की पीठ का मास।

तल्पल—पु० [स० तल्प√ला (लेना)+क] हाथी की रीढ़।

तल्ल—पुं० [सं० तत्√ली (लीन होना)+ड] १ बिल। विवर। २ गड्ढा। ३. ताल। तालाब।

तल्लज—वि० [स० तत्√लज् (कान्ति)+अच्] उत्तम। श्रेष्ठ।

तल्लह—पु० [स० तल्ल√हा (त्यागना)+क] कुत्ता।

तल्ला—पु० [स० तल] १ तल। पेंदा। २ जूते में चमड़े का वह अंश या भाग जो तलवे के नीचे रहता है और जमीन पर पड़ता है। तला। ३ किसी प्रकार की दोहरी चीज में तले या नीचे की परत या पल्ला। ४. कपड़े में लगाया जानेवाला अस्तर। ५ निकटता। समीपता।
पु० [स० तल्प] मकान का कोई खंड या मंजिल। जैसे—तीन तल्ले का मकान।

तल्लिका—स्त्री० [स० तल्ल+कन्—टाप्, इत्व] ताले की कुंजी। ताली।

तल्ली—स्त्री० [स० तत्√लस् (शोभित होना)+ड—ङीप्] १ तरुणी। युवती। २ नौका। नाव। ३ वरुण की पत्नी का नाम।
स्त्री० [स० तल] १ जूते का तल्ला। तला। २ दे० 'तल-छट'।

तल्लीन—वि० [स०तत्-लीन, स०त०] जो किसी काम या बात के संपादन में दत्तचित्त होकर लगा हो। मग्न।

तल्लुआ—पु० [देश०] मध्य युग में गाढ़े या सल्लम की तरह का एक प्रकार का मोटा कपड़ा। तुकरी। महमूदी।

तल्लो†—पु० [स० तल] जाँते का नीचेवाला पाट।

तल्वकार—पु०=तलवकार।

तवँचुर*—पु० [स० ताम्रचूड़, हिं० तमचुर] मुर्गा।

तव—सर्व० [स०] तुम्हारा।

तवक्का—स्त्री० [अ० तवक्कुअ] आशा। भरोसा।

तवक्कु—पु० [अ० तवक्कुफ] १ देर। विलंब। २. ढील।

तव-क्षीर—पु० [स०√तु(पूर्ति)+अच्, तव-क्षीर, ब० स०, फा०तबाशीर] १ तीखुर। २ वंशलोचन।

तवक्षीरी—स्त्री० [स० तवक्षीर+ङीप्] कनकचूर जिसकी जड़ से एक प्रकार का तीखुर बनता है। अबीर इसी तीखुर का बनता है।

तवज्जह—स्त्री० [अ०] १ कोई कार्य या बात जानने, समझने, सीखने, सुनने आदि के लिए उसकी ओर एकाग्रचित्त होकर दिया जानेवाला ध्यान।
क्रि० प्र०—देना।
२. अनुग्रह या कृपा की दृष्टि और व्यवहार।

तवन*—स्त्री० [स० तपन] १ तपन। २ गरमी। ताप। ३ अग्नि। आग।
†सर्व०=वह।

तवना—अ० [स० स्तवन] स्तुति करना। उदा०—स्त्री पति कृण सुमति तूझ गुण जुतवति।—प्रिथीराज।
†अ० [स० तपन] १. तपना। उदा०—साँसों का पाकर वेग देश की हवा तवी सी जाती है।—दिनकर। २ दुखी या पीड़ित होना। ३ गुस्से से लाल होना। ४ तेज या प्रताप दिखलाना।
†स०=तपाना।

तवनी—स्त्री० [हिं० तवा] छोटा और हलका तवा। तई।

तवर—पु०=तोमर (क्षत्रियों का कुल)।

तवरक—पु० [स० तुवर] जलाशयों के किनारे होनेवाला एक तरह का पेड़।

तवराज—पु० [स०√तु (पूर्ति)+अच्, तव√राज् (शोभित होना)+अच्] तुरंजबीन। यवास शर्करा।

तवर्ग—पु० [ष०त०] देवनागरी वर्ण-माला के त, थ, द, ध और न इन पाँचों वर्णों का वर्ग या समूह।

तवलची†—पु०=तबलची।

तवला†—पु०=तबला।

तवा—पुं० [हिं० तवना=जलना] [स्त्री०अल्पा० तई, तवी, तौई, तौनी] १. लोहे की चादर का बना हुआ गोलाकार छोटा टुकड़ा जिस पर रोटी आदि पकाई जाती है।
मुहा०—**तवा सिर से बाँधना**=(क) बड़े-बड़े आघात या प्रहार सहने के लिए तैयार होना। (ख) अपने को खूब दृढ़ और सुरक्षित करना। **तवे का हँसना**=तवे के नीचे जमी हुई कालिख का तपकर लाल हो जाना और चमकने लगना जो घर में लड़ाई-झगड़ा होने का सूचक समझा जाता है।
पद—**तवे की बूँद**=(क) इतना अल्प या कम जो तवे पर पड़ी हुई घी, तेल या पानी की बूँद के समान हो और तुरत समाप्त हो जाय। (ख) बहुत ही अस्थायी और नश्वर। **तवे सा मुँह** =तवे के नीचेवाले भाग की तरह काली और कुरूप आकृति।
२ उक्त आकार-प्रकार का लोहे का बहुत बड़ा गोल टुकड़ा। ३. मिट्टी या खपड़े का गोल ठीकरा जो चिलम में तमाकू के ऊपर और अंगारों या आग के नीचे रखा जाता है।
पु० [?] एक प्रकार की लाल मिट्टी जो प्राय. हींग में मिलावट करने के काम आती है।

तवाई†—स्त्री० [हिं० ताव=ताप] १ ताप। २ लू।

तवाखीर—पु० [स० त्वक्क्षीर या तवक्षीर] १ तवाशीर। तीखुर। २ वंशलोचन।

तवाजा—स्त्री० [अ० तवाज] आदर-सत्कार। खातिरदारी।

तवाना—वि० [फा०] मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट।
†स० [हिं० तवा] ढक्कन चिपका या बैठाकर बरतन का मुँह बन्द करना।
†स०=तपाना।

तवायफ—स्त्री० [अ०] गाने-नाचने का पेशा करनेवाली वेश्या।

तवारा—पु० [सं० ताप; हिं० ताव] १ अत्यधिक गरमी। २. अत्यधिक गर्मी के कारण होनेवाला कष्ट। ३ जलन।

तवारीख—स्त्री० [अ०] इतिहास। (दे०)

तवारीखी—वि० [अ०] ऐतिहासिक।

तवालत—स्त्री० [अ०] १ तवील अर्थात् लबे होने की अवस्था या भाव। लवाई। २ किसी काम मे होनेवाली ऐसी झझट या वखेडा जिससे उसके सपादन मे प्राय व्यर्थ का विस्तार हो या अधिक समय लगे।

तविष—पुं० [स०√तु (पूर्ण करना)+टिषच्] १ स्वर्ग। २ समुद्र। सागर। ३ बल। शक्ति। ४ रोजगार। व्यवसाय।

वि०१ पूज्य और बडा। वृद्ध। २ महत्त्वपूर्ण या महान्। ३. बलवान। शक्तिशाली।

तविषी—स्त्री० [सं० तविष+ङीप्] १ पृथ्वी। २ शक्ति। ३. नदी। ४ इन्द्र की एक कन्या।

तवी—स्त्री० [हिं० तवा] १. छोटा तवा। २ ऊँचे किनारोवाली थाली की तरह का लोहे का वह पात्र जिसमे इमरती, जलेबी आदि तली जाती है।

तवीयन—पु० तवीव (चिकित्सक)।

तवीष—पु० [स०=तविष] १ स्वर्ग। २ समुद्र। ३ सोना।

तवेला†—पु०=तवेला।

तशखीस—स्त्री० [अ०] १ अच्छी तरह की जानेवाली जाँच-पडताल या उसके फलस्वरूप होनेवाला निश्चय। २. लक्षण आदि देखकर की जानेवाली रोग की पहचान। निदान।

तशद्दुद—पु० [अ०] १ आक्रमण। २ किसी के प्रति किया जानेवाला कठोर या कष्टदायक व्यवहार।

तशरीफ—स्त्री० [अ०] १ महत्त्व। वडप्पन। २ वडों के व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे सम्मानसूचक सज्ञा। जैसे—(क) तशरीफ रखिए या लाइए=पधारिये या विराजिए। (ख) आप भी वहाँ तशरीफ ले गये थे? अर्थात् पधारे थे।

तश्त—पु० [फा०] १ थाली के आकर का हल्का छिछला वरतन। वडी रिकावी। २ परात। ३ वह पात्र जिसमे मल-त्याग किया जाता है। गमला।

तश्तरी—स्त्री० [फा०] धातु की चादर की वनी हुई छोटी, चिपटी तथा छिछली थाली।

तष्ट—वि० [स०√तक्ष् (छीलना)+क्त] १. छीला हुआ। २. कूटा, दला या पीसा हुआ। ३. पीटा हुआ।

तष्टा (ष्टृ)—पु० [स०√तक्ष् +तृच्] १. छीलनेवाला। २ काट-छाँट कर गढनेवाला। २ कूटने, दलने या पीसनेवाला।

पु० १. विश्वकर्म्मा। २ एक आदित्य या सूर्य का नाम।

पु० [फा० तश्त] ताँवे की एक प्रकार की छोटी रिकावी जिसमे पूजन की सामग्री रखते अथवा छोटी मूर्तियो को स्नान कराते है।

तस—वि० [स० तादृश; प्रा० तारिस; पु० हिं० तइस] तैसा। वैसा।

पद—जस का तस =ज्यों का त्यो। जैसा था, वैसा ही।

तसकर†—पु०=तस्कर।

तसकीन—स्त्री० [अ० तस्कीन] ढाढस। सात्वना।

तसगर—पु० [देश०] ताने मे नौलखी के पास की दो लकडियो मे से एक। (जुलाहे)

तसगीर—स्त्री० [अ० तस्गीर] १ हलका या छोटा रूप देने की क्रिया या भाव। सक्षेपण। २ उक्त प्रकार से दिया हुआ रूप। सक्षेप।

तसदीक—स्त्री० [अ० तस्दीक] १. सच्चे होने की अवस्था या भाव। सचाई। सत्यता। २ इस वात की जाँच और निर्णय कि जो कुछ सामने रखा या लगाया गया है, वह वस्तुत. वही है जो होना चाहिए। जैसे—दस्तावेज या उस पर के दस्तखत की तसदीक। ३ किसी वात की सत्यता के सम्वन्ध मे किया जानेवाला समर्थन। ४ गवाही।

तसदीह—स्त्री० [अ० तस्दीअ] १. कष्ट। तकलीफ। २ झझट। वखेडा। ३. परेशानी।

तसद्दुक—पु० [अ०] १ सदके अर्थात् निछावर करने की क्रिया या भाव। २ सदके या निछावर की हुई चीज। ३ कुरवानी। वलिदान।

तसनीफ—स्त्री० [अ० तस्नीफ] किसी प्रकार की साहित्यिक कृति या रचना।

तसफ़ीया—पुं० [अ० तस्फिय] १. फैसला। २ समझौता।

तसवी*—स्त्री०=तसवीह।

तसवीह—स्त्री० [अ० तस्वीह] वह जप-माला या सुमिरनी जो मुसलमान लोग ईश्वर का नाम लेने के समय फेरते है।

मुहा०—तसवीह फेरना=नाम की माला जपना। जप करना।

तसमा—पु० [फा० तस्म.] कोई चीज कसकर वाँधने के लिए उसमे लगा या लगाया हुआ चमडे, सूत आदि का फीता या डोरी। जैसे—जूते का तसमा।

मुहा०—तसमा खींचना=मध्ययुग मे तसमा लपेटकर किसी-किसी का गला घोटना और उसकी हत्या करना।

तसला—पु० [फा० तश्त+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० तसली] खड़ी तथा ऊँची दीवारवाला एक तरह का गोल पात्र जिसमे तरकारी, दाल आदि पकाई जाती है।

तसलीम—स्त्री० [अ० तस्लीम] १. कोई वात मान लेने या कोई आदेश पालन करने की क्रिया या भाव। २ किसी का महत्त्व मानते हुए किया जानेवाला अभिवादन। नमस्कार। सलाम।

तसल्ली—स्त्री० [अ०] ऐसी वात जिससे किसी निराश या हतोत्साह व्यक्ति का धैर्य वँधता हो। ढाढस। सात्वना।

तसवीर—स्त्री० [अ०] १ वह कलापूर्ण रचना जिससे किसी वस्तु के वाहरी आकार-प्रकार या स्वरूप का ज्ञान होता हो। चित्र। (दे०)

क्रि० प्र०—उतारना।—खीचना।—वनाना।

२. किसी घटना या स्थिति की यथार्थता वतलानेवाला विवरण।

वि० वहुत सुन्दर।

तसी†—स्त्री० [देश०] ऐसा खेत जो वोये जाने से पहले तीन वार जोता गया हो।

तसु—सर्व० [स० तस्य] उसका। उसके। उदा०—जुआलि नालि तसु गरभ जेहवी।—प्रिथीराज।

तसू—पु० [स० त्रि+शूक=जौ की तरह का एक अन्न] प्राय. सवा इच के वरावर की एक देशी नाप।

तस्कर—पु० [स० तद्√कृ (करना)+अच्, (नि० सुट् द-लोप)] १. दूसरो

की चीजे चुरानेवाला। चोर। २ चोर नामक गन्ध-द्रव्य। ३ सुनने की इन्द्रिय। कान। ४. मदन नाम का वृक्ष। मैनफल। ५ बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार के केतु जो बुध ग्रह के पुत्र माने गये हैं और जिनकी सख्या ५१ कही गई है।

तस्करता—स्त्री०[स० तस्कर+तल्—टाप्] तस्कर का कार्य या भाव। चोरी।

तस्कर-स्नायु—पु०[ब०स०] काकनासा लता।

तस्करी—स्त्री० [सं० तद्√कृ+ट—ङीप्] १ चोर की स्त्री। २ चोर स्त्री। चोरनी। ३. चोरी।

तस्थु—वि०[स०√स्था (ठहरना)+कु, द्वि०] एक ही स्थान पर दृढता-पूर्वक स्थित रहनेवाला। अचल।

तस्नीफ—स्त्री०=तसनीफ।

तस्बीह—स्त्री०=तसबीह।

तस्मा—पु०=तसमा।

तस्मात्—अव्य०[स०] इसलिए। अत।

तस्य—सर्व०[स०] उसका।

तस्लीम—स्त्री०=तसलीम।

तस्वीर—स्त्री०=तसवीर।

तस्सू—पु०=तसू।

तहँ—क्रि० वि०[हिं० तहाँ] उस स्थान पर। वहाँ।

तहँवां—क्रि० वि०=तहाँ (वहाँ)।

तह—स्त्री०[फा०]१ कागज, कपडे आदि के बडे टुकडे का वह अंश जो मोड़ने पर उसके दूसरे अंश के ऊपर या नीचे पडता हो। परत। जैसे—इस कपडे की चार तहे लगाओ।

क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।—लगाना।

मुहा०—तह करना=किसी फैली हुई (चद्दर आदि के आकार की) वस्तु के भागो को कई ओर मे मोड़ और एक दूसरे के ऊपर लाकर उस वस्तु को समेटना। चौपरत करना। **तह कर रखना**=छिपा या दबाकर रोक रखना। (व्यग्य) जैसे—आप अपनी लियाकत तह कर रखिए। **(किसी चीज पर) तह चढ़ाना या देना**=(क) लेप आदि के रूप मे ऊपर परत या स्तर चढाना या जमाना। (ख) हलका रग चढाना।

२ किसी पदार्थ का बिलकुल नीचेवाला भाग या स्तर। जैसे—(क) किसी बात की तह तक पहुँचना। (ख) गिलास की तह मे मिट्टी जमना या बैठना।

मुहा०—(किसी बात की) तह तोड़ना=मूल आधार नष्ट करना। जैसे—झगडे या बखेडे की तह तोडना। **(कूएँ की) तह तोड़ना**=कूआँ साफ करने के लिए या उसकी मरम्मत करने के लिए उसका सारा पानी बाहर निकाल देना। **(किसी चीज की) तह देना**=नीचे का या मूल स्तर प्रस्तुत या स्थापित करना। जैसे—फुलेल मे मिट्टी के तेल की तह दी जाती है। **(जानवरो की) तह मिलाना**=सभोग के लिए नर और मादा को एक साथ रखना।

पद—तह का सच्चा=वह कबूतर जो बराबर सीधा अपने छत्ते पर चला आवे, अपना स्थान न भूले। **तह की बात**=(क) अन्दर की, छिपी हुई या रहस्य की बात। (ख) यथार्थ ज्ञान या तत्त्व की बात।

३. पानी के नीचे की जमीन। तल। ४ बहुत पतला या महीन पटल। झिल्ली।

क्रि० प्र०—जमना।—बैठना।

तहकीक—स्त्री० [अ०] १. यथार्थता, वास्तविकता या सत्यता। २ यथार्थता या सत्यता के सम्बन्ध मे होनेवाली छान-बीन या जाँच-पड़ताल। ३ जिज्ञासा। पूछ-ताछ।

तहकीकात—स्त्री० [अ० 'तहकीक' का बहु०] यथार्थता या सत्यता का पता लगाने के लिए की जानेवाली छान-बीन या जाँच-पडताल।

तहखाना—पुं०[फा०] किसी मकान, महल आदि का वह कमरा जो आस-पास की जमीन या उस मकान की कुरसी के नीचे पडता हो।

तहजीब—स्त्री०[अ०]१. किसी चीज को दर्शनीय और सुन्दर बनाने का काम। २ शिष्टाचार। ३. सभ्यता। (देखें)

तहत—पुं०[अ०] १ अधिकार। वश। २. अधीनता। मातहती।

तह-दरज—वि०[फा०] (कपडा) या और कोई पदार्थ जिसकी तह अभी तक न खुली हो अर्थात् जिसका उपयोग या व्यवहार न हुआ हो। बिलकुल नया।

तहना†—अ०[हिं० तेह] तेहा दिखाना। क्रुद्ध होना।

तहनिशां—पु०[फा०] १. लोहे पर सोने, चाँदी आदि की की हुई पच्चीकारी। २. उक्त प्रकार से पच्चीकारी करने का काम।

तहपेच—पु०[फा०] वह कपडा जिसे पहले सिर पर लपेटकर उपर से पगडी बाँधी जाती है।

तह-बाजारी—स्त्री०[फा०] हाट, बाजार, सट्टी आदि मे दुकान लगाने-वालो से लिया जानेवाला कर।

तहमत—पु०[फा० तहबद या तहमद] कमर मे लपेटी जानेवाली लुंगी।

तहम्मुल—पु०[अ०] बरदाश्त करने या सहने की शक्ति। सहनशीलता।

तहरा—पुं०=ततहँडा।

तहरी—स्त्री०[अ० ताहिरी=ताहिर नामक व्यक्ति का?] १ चावलो की वह खिचडी जो चने, मटर, पेठे की बरी आदि मिलाकर बनाई जाती है। उदा०—तहरी पाकि लोनि और बरी।—जायसी। २ कालीन बुनने के करघे मे की ढरकी।

तहरीक—स्त्री०[अ०]१ ऐसी क्रिया या बात जिससे किसी को बढावा मिलता हो अथवा वह उत्तेजित होता हो। २. प्रस्ताव।

तहरीर—स्त्री०[अ०]१ लिखाई। लिखावट। २ अक्षरो के रूप आदि के विचार से लिखने का ढग या शैली। ३ लिखी हुई चीज या बात। ४ लिखा हुआ कागज। लेख्य। ५ अदालतो मे मुहर्रिरो, मुशियो आदि को लिखने आदि के बदले मे दिया जानेवाला पारिश्रमिक या पुरस्कार। ६ कपडों पर होनेवाले गेरू की कच्ची छपाई जो कसीदा काढने के लिए की जाती है। (छीपी). ७ दे० 'खुलाई' (चित्रकला की)।

तहरीरी—वि०[फा०] जो तहरीर या लेख के रूप मे हो। लिखा हुआ। लिखित। जैसे—तहरीरी सबूत।

तहलका—पु० [अ० तहल्क =हलाक करना या मार डालना]? १ बहुत बडा उत्पात या उपद्रव। २ बहुत बड़ी खलबली या हलचल। जैसे—यह खून हो जाने से महल्ले भर मे तहलका मच गया है।

क्रि० प्र०—पडना।—मचना।

३ बरबादी। विनाश। (क्व०)

तहवाँ—अव्य०=तहाँ (वहाँ पर)।

तहवील—स्त्री०[अ०]१. किसी के हवाले या सुपुर्द करने की क्रिया या भाव। सपुर्दगी। २ अमानत। धरोहर। ३. वह स्थान जहाँ धन या रोकड रखी जाती हो।

तहवीलदार—पु०[अ० तहवील+फा० दार] वह जिसके पास तहवील रहती हो। खजानची।

तहस-नहस—वि०[अ० नहस] १ पूरी तरह से तोडा-फोडा या नष्ट किया हुआ। नष्ट-भ्रष्ट। २ ध्वस्त।

तहसील—स्त्री०[अ०]१ लोगो से चीजे या रुपए वसूल करने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार वसूल किया हुआ धन या पदार्थ। ३ आधुनिक भारत मे शासन की सुविधा के लिए जिले के विभक्त भागो मे से कोई एक जिसका प्रधान अधिकारी तहसीलदार कहलाता है। ४. तहसीलदार का कार्यालय।

तहसीलदार—पु०[अ० तहसील+फा० दार] १ भूमिकर या लगान तहसीलने अर्थात् वसूल करनेवाला अधिकारी। २ आज-कल किसी तहसील (जिले के विभाग) का प्रधान अधिकारी।

तहसीलदारी—पु०[अ० तहसील+फा० दार+ई] तहसीलदार का काम, पद या भाव।

तहसीलना—स०[अ० तहसील] (कर, लगान, मालगुजारी, चंदा आदि) वसूल करना। उगाहना।

तहाँ—क्रि० वि०[स० तत्+स्थान, प्रा० थाण, थान] उस स्थान पर। वहाँ।

तहाना—स०[हिं० तह] कपडे, कागज आदि के बडे टुकडे की तहे या परतें लगाना। तह करना।

तहाशा—पु०[अ०]१. परवाह। २ डर। भय।

तहियाँ—क्रि० वि०[म० तदाहि]१ उस समय। तब। २ वहीं।

तहियाना—स०=तहाना।

तहीं†—क्रि० वि०[हि० तहाँ] उसी जगह। वही।

तही—स्त्री०[हिं० तह]१ तह। परत। २ एक के ऊपर एक करके रखी हुई चीजो का थाक।

क्रि० प्र०—लगाना।

३. किसी चीज का जमा हुआ थक्का।

तहोबाला—पु०[फा०] उलट-पुलट।

ता—प्रत्य०[स० तल् और टाप् प्रत्य० से निष्पन्न] एक प्रत्यय जिससे विशेषणो और सज्ञाओ के भाववाचक रूप बनाये जाते हैं। जैसे—विशेष से विशेषता; मानव से मानवता।

अव्य०[फा०]तक। पर्यन्त।

*सर्व[स० तद्] उस।

वि०=उस।

ताइँ—क्रि० वि०=ताईं।

ताँकना*अ०, स०=ताकना।

ताँगा—पु०=टाँगा।

तांडव—पु०[स० तडु+अण्]१ वह बहुत ही उग्र और विकट नृत्य जो शिव जी प्रलय या ऐसे ही दूसरे महत्त्वपूर्ण अवसरो पर करते है। २. पुरुषो के द्वारा होनेवाला नृत्य (स्त्रियो के नृत्य या लास्य से भिन्न)। ३ उग्र और उद्धत नृत्य। ४ एक प्रकार का तृण।

तांडवी—पु०[स० ताडव+ङीप्] सगीत के १४ तालो मे से एक।

तांडि—पु०[स० ताड्य+इञ्, यलोप] (तडि मुनि का निकाला हुआ) नृत्य-शास्त्र।

तांडी (डिन्)—पु०[स० तांड्य+इनि, यलोप]१ सामवेद की ताड्य शाखा का अध्ययन करनेवाला। २ यजुर्वेद के एक कल्प सूत्रकार का नाम।

तांड्य—पु०[स० तडि+यञ्]१ तडि मुनि के वशज। २. सामवेद के एक ब्राह्मण (भाग) की सज्ञा।

ताण*—पु०[हिं० तानना] खिचाव।

ताँत—स्त्री०[स० तंतु]१. पशुओ की अँतडियो, नसो आदि से अथवा चमडे को बटकर बनाई हुई पतली डोरी। २ धनुष की डोरी जो पहले प्राय उक्त प्रकार की होती थी। ३ डोरी। रस्सी। ४ सारगी आदि बाजो मे लगा हुआ तार। ५. जुलाहो की राछ।

वि० [स० त-अत, ब०स०] १ (शब्द) जिसके अत मे त हो। २ [√तम् (थकावट)+क्त] थका हुआ। श्रात।

ताँतड़ी—स्त्री०[हिं० ताँत+डी (प्रत्य०)] ताँत।

पद—ताँतड़ी-सा=ताँत की तरह क्षीणकाय और लबा।

तांतव—वि०[स० ततु+अञ्]१ ततु-सबधी। २. ततुओ से बना हुआ। ३. जिससे ततु या तार निकल अथवा बन सके।

ताँतवा—पु०[हिं० आँत] एक रोग जिसमे आँत अडकोश मे उतर आती है। आँत उतरने का रोग।

ताँता—पु०[स० तति=श्रेणी]१ किसी काम, चीज या बात का कुछ समय तक लगातार चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—बरसनेवाले पानी का ताँता। २. निरन्तर एक के बाद एक घटना घटित होते चलने का भाव। जैसे—(क) मौतो का ताँता। (ख) बातो का ताँता। ३. जीवो या प्राणियो की कतार। पक्ति। जैसे—(क) आदमियो का ताँता। (ख) चिडियो का ताँता।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

मुहा०—ताँता बाँधना=बहुत से लोगो का एक पक्ति मे खडा होना या खडा किया जाना।

ताँति†—स्त्री०=ताँत।

पु०=ताँती।

ताँतिया—वि०[हिं० ताँत]१ ताँत-सबधी। २ ताँत की तरह क्षीणकाय और लबा।

ताँती—पु०[हिं० ताँत]१ कपडा बुननेवाला। जुलाहा। २ जुलाहो की राछ।

स्त्री० [हिं० ताँता] १. कतार। पक्ति। श्रेणी। २. बाल-बच्चे। औलाद। सन्तान।

तांतुवायि—पु०[स० ततुवाय+इञ्] जुलाहे का लडका।

तांत्रिक—वि०[स० तत्र+ठक्—इक] [स्त्री० तात्रिकी] १ तत्र-सबधी। २. तत्र-शास्त्र सबधी।

पु०१. वह जो तत्र-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो और तत्र-मत्र के प्रयोगो से सब काम सिद्ध करता हो। २. वैद्यक मे एक प्रकार का सन्निपात।

तांबुल|—पुं०=तदुल (चावल)।
तांबई—वि० [हिं० तांवा] तांवे के रग का।
पु० उक्त प्रकार का रंग।
तांबा—पु० [स० ताम्र] लाल रग की एक प्रसिद्ध धातु जो खानो मे गधक, लोहे आदि के साथ मिली हुई मिलती है। इसमे ताप और विद्युत् के प्रवाह का सचार बहुत जल्दी और अधिक होता है। इसी लिए इसका प्रयोग प्राय. इजनो और बिजली के काम मे होता है। भारत मे इसके अनेक प्रकार के पात्र भी बनते हैं जो धार्मिक दृष्टि से बहुत पवित्र माने जाते है।
पु० [अ० तअम:] हिंसक पक्षियो को खिलाये जानेवाले मास के छोटे-छोटे टुकडे।
तांबिया—वि० [हिं० तांवा] १. तांवे का बना हुआ। २ तांवे के रग का। ३. तांवे से सबध रखनेवाला।
पु० चौडे मुंह का एक प्रकार का छोटा बरतन।
तांबी—स्त्री० [हिं० तावा] १ तांवे की बनी हुई एक प्रकार की करछी। २ छोटा तांबिया।
तांबूल—पु० [स०√तम् (ग्लानि)+उलच्, बुक् आगम, दीर्घ] १ पान का पत्ता। २. पान का लगा हुआ बीडा। ३ मुख-शुद्धि के लिए भोजन के बाद खाई जानेवाली कोई सुगधित चीज। (जैन)
तांबूल-करंक—पु० [प० त०] १ पान और उसके लगाने की सामग्री का बरतन। पानदान। २ पान के लगे हुए बीडे रखने की डिबिया। बिलहरा। पन-बट्टा।
तांबूल-नियम—पु० [प०त०] पान, सुपारी, लवग, इलायची आदि रखने का नियम। (जैन)
तांबूल-पत्र—पु० [प० त०] १ पान का पत्ता। २ अरुआ या पिंडालू नाम की लता जिसके पत्ते पान के आकार के होते है।
तांबूल-बीटिका—स्त्री० [प० त०] लगे हुए पान का बीडा।
तांबूल-राग—पु० [मध्य० स०] १ पान की पीक। २. मसूर नामक कदन्न जिसकी दाल बनती है।
तांबूल-वल्ली—स्त्री० [प० त०] पान की बेल। नागवल्ली।
तांबूल-वाहक—पु० [प० त०] प्राचीन तथा मध्य काल मे राजा, नवाबो आदि का वह सेवक जो उनके साथ पानदान लेकर चलता था।
तांबूलिक—पु० [स० तांबूल+ठन्—इक] पान बेचनेवाला व्यक्ति। तमोली।
तांबूली (लिन्)—पुं० [स० तांबूल+इनि] तमोली। पनवाडी।
स्त्री० [स० तांबूल+ङीप्] पान की बेल।
तांबेक—स्त्री० [हिं० तांवा+फा० कारी] एक प्रकार का लाल रग।
तांबेल—पु० [?] कच्छप। कछुआ।
तांवर—पु०=तांवरा।
तांवरना—अ० [हिं० तांवर] १. ताप से युक्त होना। तप्त होना। २ ज्वर के कारण शारीरिक तापमान अधिक होना। बुखार होना। ३. अधिक ताप के कारण मूर्च्छित या बेसुध होना। ४ क्रुद्ध या नाराज होना। बिगडना।
तांवरा—पु० [स० ताप; हिं० ताव] १. शरीर का ताप नामक रोग। ज्वर। बुखार। २ जाडा देकर आनेवाला बुखार। जूडी। ३ बहुत अधिक गरमी या ताप। ४ गरमी आदि के कारण होनेवाली देहोशी। मूर्च्छा। उदा०—रीतौ पर्यो जबै फल चाख्यो उडि गयौ तूल तांवरो आयो।—सूर।
तांवरी—स्त्री०=तांवरा।
तांसना|—स० [स० त्रास] १ किसी को त्रास देना। डाँट-डपटकर डराना-धमकाना। २ अनुचित व्यवहार करके किसी को बहुत कष्ट देना और दुखी करना। सताना। जैसे—वह दिन भर अपनी बहू-बेटियो को तांसती रहती है।
ताईं—अव्य० [हिं० तई] १ किसी की ओर या किसी के प्रति। २ किसी के विषय या सबध मे। ३ निमित्त। लिए। वास्ते। उदा०—कीन्ह सिंगार मिलन के ताईं।—कबीर।
अव्य० [स० तावत् या फा० ता] १ तक। पर्यंत। २ निकट। पास।
ताई—स्त्री० [स० ताप, हिं० ताप+ई (प्रत्य०)] १. ताप। हलका ज्वर। हरारत। २ जाडा देकर आनेवाला बुखार। जूडी।
स्त्री० [हिं० ताया का स्त्री०] ताया अर्थात् पिता के बडे भाई की पत्नी।
|स्त्री०=तई (छोटा तवा)।
ताईत—पु०=तावीज (जन्तर)।
ताईद—स्त्री० [अ०] १ पक्षपात। तरफदारी। २. किसी के कथन, पक्ष, प्रस्ताव आदि का किया जानेवाला समर्थन।
पु० १ किसी के अधीन या साथ रहकर काम सीखनेवाला व्यक्ति। २ किसी मुख्तार या वकील का मुशी, मुहर्रिर या लेखक।
ताउ|—पु०=ताव।
ताउल|—स्त्री० [हिं० उतावला] उतावली। जल्दी। उदा०—बहुत ताउल है तो छप्पर से मुँह पोछ।—खुसरो।
ताऊ—पु० [स० तात] [स्त्री० ताई] सबध के विचार से पिता का बडा भाई। ताया।
पद—बछिया का ताऊ=बैल की तरह निरा मूर्ख। गावदी।
ताऊन—पु० [अ०] एक प्रसिद्ध घातक और सक्रामक रोग जिसमे बुखार के साथ गिलटी निकलती है। प्लेग।
ताऊस—पु० [अ०] १ मोर। मयूर।
पद—तख्त-ताऊस। (देखें)
२ सारंगी की तरह का एक बाजा जिसके ऊपरी सिरे की आकृति मोर की तरह होती है।
ताऊसी—वि० [अ०] १ मोर-सबधी। मोर का। २. आकार, रूप आदि में मोर की तरह का। ३ मोर के पर की तरह का ऊदा या बैंगनी।
पु० एक प्रकार का रग जो मोर के पर की तरह गहरा ऊदा, नीला या बैंगनी होता है। मोर-पखी।
ताक—स्त्री० [हिं० ताकना] १ ताकने की क्रिया, ढग या भाव।
पद—ताक-झांक। (देखें)
मुहा०—(किसी पर) ताक रखना=किसी के कामो, व्यवहारो आदि पर दृष्टि, ध्यान या निगाह रखना। देखते रहना कि क्या किया जाता है या क्या होता है।
२ स्थिर दृष्टि। टकटकी।

मुहा०—**ताक बाँधना**=टकटकी लगाकर या निगाह जमाकर देखते रहना ।

३ स्वार्थ-साधन के विचार से आघात, लाभ आदि के उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते हुए पूरा ध्यान रखना । घात।

मुहा०—**(किसी की) ताक में निकलना**=किसी को ढूँढ़ने या पाने के लिए कही जाना या निकलना **(किसी की) ताक में रहना**=किसी पर आक्रमण, प्रहार आदि करने के लिए उपयुक्त अवसर, स्थान आदि की प्रतीक्षा करना। **ताक लगाना**=कही ठहर या बैठकर उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते रहना । **ताक मे रहना**=उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करना । अवसर या मौका देखते रहना ।

पु० [अ० ताक] १. दीवार की चुनाई मे प्राय. चौकोर गड्ढे की तरह छोडा हुआ वह खाली स्थान जो छोटी-छोटी चीजे रखने के काम आता है। आला । ताखा।

मुहा०— **ताक पर धरना या रखना**=व्यर्थ समझकर पडा रहने देना या ध्यान न देना । जैसे—हमारी बाते तो तुम ताक पर रखते चलते हो। **ताक पर रहना या होना**=यो ही पडा रहना । किसी काम मे न आना । व्यर्थ जाना । जैसे—उनका यह हुकुम ताक पर ही रह जायगा । **ताक भरना**=मुसलमानो का एक धार्मिक कृत्य जिसमे वे किसी मसजिद या दूसरे पवित्र स्थान मे जाकर (मन्नत पूरी करने के लिए) वहाँ के ताको या आलो मे मिठाइयाँ, फल आदि रखते हैं और तब उन्हे प्रसाद के रूप मे लोगो को बाँटते है।

वि० १ जिसके साथ और कोई न हो। अकेला । २ जिसके जोड या बराबरी का और कोई न हो। अद्वितीय। निरुपम । बेजोड। ३ जो सख्या मे समान हो अर्थात् जिसे दो से भाग देने पर पूरा एक बच रहे । विषम । जैसे—३, ५, ७, ९ आदि ताक है, और ४, ६, ८, १० आदि जुफ्त या जूस है ।

ताकजुफ्त—पु० [अ० ताक=विषम+फा० जुफ्त=जोडा] कौडियो से खेला जानेवाला जूस, ताक (देखे) नाम का खेल।

ताक-झाँक—स्त्री० [हि० ताकना+झाँकना] १ टोह लेने, ढूँढने, पाने आदि के उद्देश्य से रह-रहकर इधर-उधर बराबर ताकते या देखते और झाँकते रहने की क्रिया या भाव। २ छिपकर या औरो की दृष्टि बचाकर बुरे भाव से ताकने की क्रिया या भाव ।

ताकत—स्त्री० [अ०] १. कोई काम कर सकने की शक्ति या सामर्थ्य। जैसे—(क) आँखो मे इतनी दूरी तक देखने की ताकत नही रही। (ख) इस कुरसी मे इतनी ताकत नही है कि वह तुम्हारा बोझ सह सके। २ शारीरिक या मानसिक बल। जैसे—बच्चे मे नदी पार करने की या अँगरेजी बोलने की ताकत कैसे हो सकती है।

ताकतवर—वि० [फा०] जिसमे ताकत हो। शक्तिशाली। जैसे—वह दल इसकी अपेक्षा अधिक ताकतवर है।

ताकना—स० [स० तर्कण] १. तर्क या बुद्धि के द्वारा कोई बात जानना या समझना । (क्व०) २ देखना। ३ ध्यानपूर्वक या आँख गडाकर किसी की ओर देखना। ४ बुरे उद्देश्य या दुष्ट भाव से किसी की ओर देखना । उदा०—जे ताकहि पर धन पर दारा ।—तुलसी। ५ पहले से देखकर कुछ स्थिर करना। ६ अवसर की प्रतीक्षा या घात मे रहना। ७. आघात या वार करने के लिए लक्ष्य की ओर ध्यानपूर्वक देखना। उदा०—नावक सर से लाइकै तिलक तरुनिहत ताकि।—विहारी। ८. देख-रेख या रखवाली करना ।

ताकरी—स्त्री०=टाकरा (देश और लिपि) ।

ताकि—अव्य० [फा०] इसलिए कि। जिसमे । जैसे—तुम यहाँ बैठे रहो, ताकि यहाँ से कोई चीज गायब न होने पावे।

ताकीद—स्त्री० [अ०] कोई काम करने, न करने आदि के सबध मे जोर देकर या कई बार कही जानेवाली बात। जैसे—नौकर को ताकीद कर दो कि वह सौदा लेकर तुरन्त लौट आवे ।

क्रि० प्र०—करना ।

ताकोली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा ।

ताख—पु० =ताखा ।

वि०=ताक ।

ताखड़ा†—वि०=तगडा । (राज०)

ताखडी—स्त्री० [स० त्रि+हि० कडी] तराजू ।

ताखा—पु० [अ० ताक] १ दीवार मे छूटा हुआ वह चौकोर स्थान जिसमे चीजे आदि रखी जाती हैं। आला। ताक। २. गत्ते पर लपेटा हुआ कपडे का थान ।

ताखी—वि० [अ० ताक] (प्राणी) जिसकी एक आँख दूसरी आँख से आकार, रग, रचना आदि की दृष्टि से कुछ भिन्न हो ।

ताग—पु०=तागा ।

तागड़—स्त्री० [देश०] रस्सो आदि की बनी हुई सीढ़ी जिसके सहारे बडे-बडे जहाजो से समुद्र मे उतरा तथा चढा जाता है। (लश०)

तागड़ी—स्त्री० [हि० तागा+कडी] १ कमर मे बाँधने की डोरी। करधनी। २. एक तरह की करधनी जिसमे सोने-चाँदी आदि के घुँघुरू लगे रहते हैं।

तागना—स० [?] १ तागे से सीना या बखिया करना । पिरोना । २ रूईदार कपडो को बीच-बीच मे इसलिए मोटे डोरो से लबाई के बल सीना कि रूई इधर-उधर खिसकने न पावे।

ताग-पहनी—स्त्री० [हि० ताग+पहनाना] करघे मे की एक लकडी जिससे बय मे तागा पहनाया जाता है।

ताग-पाट—पु० [हि० तागा+पाट=रेशम] एक प्रकार का गहना जो रेशम के तागे मे सोने-चाँदी के टिकडे आदि पिरोकर बनाया जाता है और जो विवाह के समय पहना जाता है।

क्रि० प्र०—डालना ।

विशेष—यह गहना प्राय वधू का जेठ उसे देता या पहनाता है।

तागा—पु० [स० तार्कव; प्रा० ताग्गो] १ वह पतला ततु जो ऊन, रूई, रेशम आदि को तकले आदि पर कातने से तैयार होता है । सूत २ इस प्रकार काते हुए ततुओ या सूतो को बटकर तैयार किया हुआ वह रूप जिससे कपडे सीये या मालाएँ आदि गूँथी जाती है।

मुहा०—**कपड़े में तागा डालना**=(क) सीये जानेवाले कपडे मे दूर-दूर पर कच्ची सिलाई करना । (ख) दे० 'तागना' ।

३ जनेऊ। यज्ञोपवीत। ४ वह कर जो मध्य-युग मे घर के प्रति व्यक्ति के हिसाब से लिया जाता था।

ताछन—पु० [स० तक्षण] १. शत्रु का वार बचाने के निमित्त उसके बगल से होकर आगे बढना । कावा। २ घोडे का कावा काटना।

उदा०—उडत अमित गति कटि कटि ताछन।—पद्माकर।

ताछना*—अ० [हिं० ताछन] वार बचाने के लिए शत्रु के बगल से होकर आगे बढना।

ताज—पु० [अ०] बडे राजाओ या बादशाहो के पहनने का मुकुट। राज-मुकुट। २ गजीफे के पत्तो का एक रग जिसमे ताज या मुकुट की आकृति बनी रहती है। ३ अपने वर्ग मे सर्वश्रेष्ठ पदार्थ।

पद—ताज-महल। (देखें)

४ कलगी। तुर्रा। ५ मुरगे, मोर आदि कुछ विशिष्ट पक्षियो के सिर पर के खडे बाल। कलगी। चोटी। शिखा। ६ मकान के ऊपरी भाग मे शोभा के लिए बनाई जानेवाली, छोटे बुर्ज के आकार की रचना। ७ दीवार के ऊपरी भाग मे शोभा के लिए बनाई जानेवाली उभारदार रचना। कँगनी। कारनिस। ८ दे० 'ताज महल'।

†पु०=ताजन (कोडा)।

ताजक—पु० [फा०] १ एक ईरानी जाति जो तुर्किस्तान के बुखारा प्रदेश से काबुल और बलोचिस्तान तक पाई जाती है। २. ज्योतिष का एक प्रसिद्ध ग्रथ जो पहले अरबी और फारसी भाषाओ मे था और जिसका भारत मे सस्कृत मे अनुवाद हुआ था। यह यवनाचार्य कृत माना जाता है।

ताजगी—स्त्री० [फा०] १ 'ताजा' होने की अवस्था, गुण या भाव। ताजापन। २ फूल-पौधो आदि का हरापन। ३ शिथिलता आदि दूर होने पर प्राप्त होनेवाली मन की प्रफुल्लता और स्वस्थता। जैसे—जरा छाँह मे बैठकर ठढी हवा खाओ, अभी थकावट दूर हो जायगी और ताजगी आ जायगी।

ताजदार—वि० [फा०] १ ताज के ढग का। २ जिसमे ताज की-सी आकृति या रचना बनी हो। जैसे—ताजदार कँगूरा।

पु० ताज पहननेवाला, अर्थात् बादशाह या बहुत बडा राजा।

ताजन—पु० [फा० ताजियाना] १ कोडा। चाबुक। २ दड। सजा।

ताजना—पु०=ताजन।

ताजपोशी—स्त्री० [फा०] १ नये राजा का पहले-पहल राज-सिहासन पर बैठने के समय ताज पहनने या राजमुकुट धारण करने का कृत्य या रीति। २ उक्त अवसर पर होनेवाला उत्सव या समारोह।

ताजबीबी—स्त्री० [फा० ताज+बीबी] मुगलकालीन भारत सम्राट् शाहजहाँ की पत्नी मुमताजमहल का एक नाम।

विशेष—इसी की स्मृति मे शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया था।

ताजमहल—पु० [अ०] उत्तर प्रदेश के आगरा शहर मे यमुना नदी के तट पर सगमरमर का बना हुआ एक भव्य तथा विशाल मकबरा जिसे भारत सम्राट् शाहजहाँ ने अपनी पत्नी ताजबीबी की स्मृति मे बनवाया था। (इसकी गणना ससार की सर्वश्रेष्ठ सात सुदर वास्तुओ मे होती है।)

ताजा—वि० [फा० ताज] [स्त्री० ताजी, भाव० ताजगी] १ (वानस्पतिक पदार्थ) जिसे अभी-अभी चयन किया गया हो। जो अधिक समय से पडा या रखा हुआ न हो, फलत जो हरा-भरा हो तथा जिसके मूल गुण नष्ट न हुए हो। जैसे—ताजा फल या फूल। २ (खाद्य पदार्थ) जो अभी-अभी या आज ही बना हो। जो बासी न हो। जैसे—ताजी रोटी, ताजा दूध। ३. (पदार्थ) जिसे तैयार हुए या बने अधिक समय न बीता हो। जैसे—उनके यहाँ अभी दिसावर से ताजा माल आया है। ४ (पदार्थ) जो अपने उद्गम या मूल स्थान से अभी-अभी निकला हो और जिसमे अभी तक कोई मिश्रण या विकार न हुआ हो। जैसे—ताजा खून, ताजा दूध, ताजा पानी। ५ (बात या विचार) जिसकी अनुभूति या बोध पहले-पहल हो रहा हो। जैसे—ताजी खबर। ६ (बात या विचार) जो फिर से नये रूप मे या नये उद्देश्य से सामने लाया गया हो। जैसे—(क) बीता हुआ झगडा फिर से ताजा करना। (ख) कोई चीज या बात देखकर किसी की याद ताजी होना। ७. (चीज) जो शुद्ध तथा स्वच्छ हो। जैसे—ताजी हवा। ८ (चीज) जिसकी गदगी या विकार दूर करके ठीक किया गया हो और जो फिर से काम में आने के योग्य हो गया हो। जैसे—ताजी भरी हुई चिलम, ताजा किया हुआ (पानी बदला हुआ) हुक्का। ९ (व्यक्ति) जिसकी क्लाति या शिथिलता दूर हो चुकी हो और जो प्रफुल्लित या स्वस्थ होकर फिर से अपना पूरा काम ठीक तरह से करने के लिए तैयार हो गया हो। जैसे—कुछ देर तक सुस्ता लेने (अथवा नहा लेने या जलपान कर लेने) पर आदमी ताजा हो जाता है।

ताजिया—पु० [अ०] बाँस की कमाचियो पर रग-बिरगे कागज, पन्नी आदि चिपका कर बनाया हुआ मकबरे के आकार का वह मडप जो मुहर्रम के दिनो मे मुसलमान लोग हजरत इमाम हुसेन की कब्र के प्रतीक रूप मे बनाते है, और जिसके आगे बैठकर मातम करते और मर्सिये पढते है। ग्यारहवें दिन जलूस के साथ ले जाकर इसे दफन किया जाता है।

मुहा०—ताजिया ठढा करना=मुहर्रम के आरभिक दस दिन समाप्त हो जाने पर नियत स्थान पर ताजिया गाडना। (मगल-भाषित) **(किसी का) ताजिया ठढा होना**=सारा आवेश, क्रोध या प्रयत्न विफल होने के कारण नष्ट या समाप्त हो जाना। (परिहास और व्यग्य)

ताजियादारी—स्त्री० [फा०] मुसलमानो मे एक प्रथा जिसमे वे मुहर्रम के आरम्भिक दस दिनो तक ताजिया रखकर उसके आगे मातम करते या शोक मनाते है।

ताजियाना—पु० [फा०] कोडा। चाबुक।

ताजी—वि० [फा०] अरब सबधी। अरब का। अरबी।

पु० १. अरब देश का घोडा जो बढिया समझा जाता है। २ एक प्रकार का शिकारी कुत्ता।

स्त्री० अरब देश की भाषा। अरबी।

स्त्री० हिं० 'ताजा' का स्त्री०।

ताजीम—स्त्री० [अ०] किसी बडे के सामने उसके आदर के लिए उठ कर खडे होना और सम्मान प्रदर्शित करते हुए झुककर अभिवादन करना।

ताजीमी सरदार—पु० [फा० ताजीम +अ० सरदार] वह बडा सरदार जिसके दरबार मे आने पर राजा या बादशाह सम्मान प्रदर्शित करने के लिए थोडा उठकर खडे हो जाते थे।

ताजीर—स्त्री० [अ०] दड। सजा।

ताजीरात—पु० [अ०] आपराधिक दडो से सबध रखनेवाली विधियो का सग्रह।

ताजीरी—वि० [अ०] १ दड या दड-विधान सबधी। २. जो किसी को किसी प्रकार का दड देने के उद्देश्य से हो।

ताजीरी पुलिस—स्त्री० [हिं०] पुलिस का वह दस्ता या सिपाहियों का दल जो ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ के लोग अधिक या प्राय उपद्रव करते हों। (ऐसी पुलिस रखने का सारा व्यय उस स्थान के निवासियों से दड-स्वरूप लिया जाता है।)

ताज्जुब—पु०=तअज्जुब।

ताटंक—पु० [स० ताड—अक, ब० स०, पृषो० ड—ट] १. एक तरह का करनफूल। २ छप्पय का २४ वाँ भेद। ३ एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३० मात्राएँ और अंत मे एक भगण होता है।

ताटस्थ्य—पु० [स० तटस्थ+ष्यञ्] तटस्थ होने की अवस्था या भाव। तटस्थता। (देखें)

ताडंक—पु० =ताटक (करनफूल)।

ताड़—पु० [सं० ताल] १. एक प्रकार का बहुत अधिक ऊँचा और लबा पेड़ जिसमे डालें या शाखाएँ नहीं होती, केवल ऊपरी सिरे पर कुछ बडे और लबे पत्ते होते हैं। इसी का मादक रस 'ताड़ी' कहलाता है।
पद—ताड़पत्र। (देखें)
२. मारना-पीटना या डाँटना-डपटना। ताडना। ३ ध्वनि। शब्द। ४. पर्वत। पहाड। ५ मूर्त्ति का ऊपरी भाग या सिरा। ६ बाँह पर पहनने का टाड़ नाम का गहना। ७ डठलो आदि का पूला। जुट्टी।

ताड़क—वि० [स०√तड् (ताडना)+णिच्+ण्वुल्—अक] ताड़ना करनेवाला।
पु० १ वधिक। २. जल्लाद।

ताड़का—स्त्री० [स०] एक राक्षसी जिसे रामचंद्रजी ने मारा था।

ताड़का-फल—पु० [स० तारका-फल, ब० स०, नि० र—ड] बड़ी इलायची।

ताड़कायन—पु० [स० ताडक+फक्—आयन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

ताड़कारि—पु० [स० ताडका-अरि, ष० त०] (ताडका के शत्रु) रामचंद्र।

ताड़केय—पु० [सं० ताडका+ढक्—एय] ताड़का का पुत्र, मारीच।

ताड़घ—पुं० [स० ताल√हन् (मारना)+टक्, नि० ल—ड] प्राचीन काल मे वह राज-पुरुष जो अपराधियों को कोड़े लगाता था।

ताड़घात—पुं० [स० ताड√हन्+अण्] हथौड़े आदि से चीजें पीटकर काम करनेवाला कारीगर। जैसे—लोहार, सुनार आदि।

ताड़न—पु० [स०√तड्+णिच्+ल्युट्—अन] १. आघात या प्रहार करना। मारना-पीटना। २. डाँट-डपट। घुडकी, झिडकी आदि। ३. दड। सजा। ४. गणित मे गुणा करने की क्रिया। गुणन। जरब। ५. तत्र-शास्त्र का एक विधान जिसमे किसी चीज पर मत्र के वर्ण लिखकर वह चीज कुछ दूसरे मंत्र पढ़ते हुए किसी पर या कहीं फेंकी या मारी जाती है।

ताड़ना—स्त्री० [स०√तड्+णिच्+युच्—अन] १. ताड़न करने अर्थात् मारने-पीटने की क्रिया या भाव। २. किसी के कार्य, व्यवहार आदि से असंतुष्ट होकर उसे सचेत करने तथा कर्तव्यपरायण बनाने के उद्देश्य से कही हुई कड़ी बात। ३. प्रहार। मार। ४. दड। सजा। ५ किसी को दिया जानेवाला कष्ट, दुख आदि।
स० १. मारना-पीटना। २. किसी के कार्य, व्यवहार आदि से अप्रसन्नता प्रकट करते हुए उस व्यक्ति को सचेत करना और उसका ध्यान कर्तव्यपालन की ओर आकृष्ट करना। ३. दड या सजा देना।
स० [सं० तर्कण या ताडन ?] कुछ दूरी पर, लोगों की आँखें बचाकर या लुक-छिपकर किये जाते हुए काम को अपने कौशल या बुद्धि-बल से जान या देख लेना।

ताड़नी—स्त्री० [सं० ताडन+ङीप्] कोड़ा। चाबुक।

ताड़नीय—वि० [सं०√तड्+णिच्+अनीयर्] जिसे ताडना देना आवश्यक या उचित हो।

ताड़पत्र—पु० [सं० तालपत्र] ताड वृक्ष के पत्ते जिन पर प्राचीन काल मे ग्रन्थ, लेख आदि लिखे जाते थे।

ताड़बाज—वि० [हिं० ताडना+फा० बाज] जो प्राय. और सहज मे कोई बात ताड या भाँप लेता हो।

ताड़ित—भू० कृ० [सं०√तड्+णिच्+क्त] १. जिसे ताडना दी गई हो या मिली हो। २ जो मारा-पीटा गया हो। ३ जिसे घुड़का या डाँटा गया हो। ४. जिसे दड या सजा मिली हो। ५. जिसे डाँट-डपट कर या मार-पीट कर कहीं से निकाल, भगा या हटा दिया गया हो।

ताड़ी—स्त्री० [स० √तड्+णिच्+इन्+ङीप्] १ एक प्रकार का छोटा ताड़ वृक्ष। २ एक प्रकार का गहना। ३ ताड के फूलते हुए डठलो से निकाला हुआ नशीला रस जिसका व्यवहार मादक द्रव्य के रूप मे होता है।
†स्त्री० दे० 'तारी' (नरवी)।

ताडुल—वि० [सं० √तड्+ णिच्+उल] ताडना करनेवाला।

ताड़ू—वि० [हिं० ताडना] (वह) जो हर बात बहुत जल्दी ताड़ या भाँप लेता हो। ताडने या भाँपनेवाला।

ताड्य—वि० [स०√तड्+णिच्+यत्] १. जिसका ताडन हो सके। ताडना का अधिकारी या पात्र। २ जिसे डाँटा-डपटा जा सकता हो या डाँटना-डपटना उचित हो। ३ जिसे दड दिया जा सकता हो या दिया जाने को हो। दडनीय।

ताड्यमान—वि० [सं०√तड्+णिच्+शानच् (कर्म मे)] १ जो पीटा जाता हो। जिस पर मार पडती हो। २ जिसे डाँटा-डपटा जाता हो।
पुं० डडे से बजाया जानेवाला एक प्रकार का बड़ा ढोल। ढक्का।

तात—पु० [स०√तन् (विस्तार)+क्त, दीर्घ, नलोप] १. पिता। बाप। २ पूज्य और बड़ा या माननीय व्यक्ति। ३. आपसदारी के लोगों, इष्ट-मित्रो के लिए आदरसूचक और प्रेमपूर्ण संबोधन।
वि० [सं० तप्त] तपा हुआ। गरम। तत्ता।
पुं० १ कष्ट। दुख २ चिन्ता। फिकर। उदा०—तुम्ह जावउ घर आपणोइ म्हारी केही तात।—ढो० मा०।

तातगु—पु० [स० तात+गो (वाचक शब्द), ब० स०, ह्रस्व] चाचा।

तातन—पु० [स० तात√नृत् (नाचना)+ड] खंजन पक्षी। खँडरिच।

तातरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड़।

तातल—पु० [सं० तात√ला (लाना)+क] १. सबध मे वह पूज्य और बड़ा व्यक्ति जो पिता के समान या उसके स्थान पर हो। २. बीमारी। रोग। ३ पूर्ण या पक्के होने की अवस्था या भाव। पक्कापन। पक्वता। ४. लोहे का काँटा या कील।

+वि०=तत्ता (तप्त या गरम)।

ताता†—वि०[स० तप्त; प्रा० तत्त] [स्त्री० ताती] तपा या तपाया हुआ। बहुत गरम।

तातायेई—स्त्री०[अनु०]१ नृत्य मे विशेष प्रकार से पैर रखने के बोल। २. नाच। नृत्य।

तातार—पु०[फा०] मध्य एशिया का एक प्रदेश।

तातारी—वि०[फा०] १ तातार प्रदेश मे होनेवाला। २. तातार प्रदेश-सबधी।

पु० तातार प्रदेश का निवासी।

स्त्री० तातार प्रदेश की भाषा।

ताति—पु०[स०√ताय्(पालन करना)+क्तिच्] पुत्र। लडका।

तातील—स्त्री०[अ०] छुट्टी का दिन।

तात्कालिक—वि०[स० तत्काल+ठब्—इक]१ तत्काल या तुरत का। २ उस समय का।

तात्त्विक—वि०[स० तत्त्व+ठक्—इक]१ तत्त्व-सबधी। २. तत्त्व से युक्त। ३ मूल सिद्धात-सबधी। जैसे—तात्त्विक विचार। ४. यथार्थ। वास्तविक।

पुं० वह जो तत्त्व या तत्त्वो का अच्छा ज्ञाता हो।

तात्पर्य—पु०[स० तत्पर+ष्यञ्]१ शब्द, पद, वाक्य आदि का मुख्य आशय। २ अभिप्राय। हेतु।

तात्पर्यार्थ—पु०[स० तात्पर्य-अर्थ, ष०त०] वाक्यार्थ से और शब्दार्थ से कुछ भिन्न अर्थ जो वक्ता के अभिप्राय या आशय का बोध कराता है।

तात्स्थ्य—पुं०[स० तत्स्थ+ष्यञ्]१ एक चीज या बात के अन्तर्गत दूसरी चीज या बात रहने की अवस्था या भाव। २ तर्क-शास्त्र और साहित्य मे व्यजनात्मक अर्थ बोध का वह भेद जिसमे किसी चीज के नाम से उस चीज के अन्दर की और सब चीजो, बातो आदि का आशय ग्रहण किया जाता है। जैसे—यदि कहा जाय, 'सारा घर मेला देखने गया है।' तो उसका आशय यही माना जायगा कि घर मे रहनेवाले सभी लोग या परिवार के सभी सदस्य मेला देखने गये हैं।

ताय†—अव्य०[?]तिससे। उससे।

तायेई—स्त्री०=तातायेई।

तादर्थ्य—पु०[स० तदर्थ+ष्यञ्]१. तदर्थी होने की अवस्था या भाव। २ अर्थ की एकरूपता या समानता। ३ उद्देश्य या प्रयोजन की समानता। ४ उद्देश्य। प्रयोजन।

तादात्म्य—पु०[सं० तदात्मन्+ष्यञ्] ऐसी अवस्था जिसमे कोई एक चीज किसी दूसरी वस्तु के साथ तदात्म हो जाय या उसके साथ मिलकर उसका रूप धारण कर ले। अभेद मिश्रण या सबध।

तादात्विक—वि० [स०] (ऐसा राजा) जिसका खजाना खाली रहता हो। (कौ०)

तादाद—स्त्री०[अ० तअदाद] वस्तुओ, व्यक्तियों आदि की कुल इकाइयो का जोड। सख्या।

तादृश—वि०[स० तद्√दृश् (देखना)+कञ्] [स्त्री० तादृशी] जो उसी अर्थात् किसी इगित या उल्लिखित वस्तु, व्यक्ति आदि के समान दिखाई देता हो। उसके समान। वैसा।

ताधा—स्त्री० दे०'तातायेई'।

तान—स्त्री०[स०√तन्(विस्तार)+घञ्] १ तनने या तानने अथवा किसी ओर खिचे हुए होने या खीचे जाने की अवस्था या भाव। २. वह चीज जो किसी दूसरी चीज के अंगो को कस या खीचकर आपस मे मिलाये रखती हो और उन्हे एक दूसरे से अलग न होने देती हो। जैसे—पलग, हौदे आदि मे अन्दर की ओर मजबूती के लिए लगाये हुए लोहे के छड़ 'तान' कहलाते हैं। ३ नदी या समुद्र की तरग या लहर जो नावो को किसी एक ओर ले जाती है। ४. कोई ऐसी चीज या बात जिसका ज्ञान इद्रियो से होता हो।

पद—तान की जान=किसी चीज या बात का मूल तत्त्व या सार।

५ कवल बुनने के समय उसमे लगनेवाला ताना। (गडेरिए)६ सगीत मे गाने-बजाने का वह अग जिसमे सौन्दर्य लाने के लिए बीच-बीच मे कुछ स्वरो को खीचते हुए अर्थात् अधिक समय तक उतार-चढाव के साथ उच्चारण करते हुए कलात्मक रूप से उनका विस्तार किया जाता है।

विशेष—आज-कल व्यवहारत गवैयो मे दो प्रकार की तानें प्रचलित हैं। एक तो हलक (या गले) की तान जो बहुत ही स्पष्ट रूप मे गले से निकाली या ली जाती है और जो विशेष अभ्यास-साध्य होती है। दूसरी जबडे की तान जिसमे गले पर बहुत थोडा जोर पडता है और इसी लिए जो निम्न कोटि की मानी जाती है।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—तान उड़ाना=यो ही मन मे मौज आने पर कुछ गाने लगना। **तान तोड़ना**=सगीत का अभ्यास न होने पर भी तान लेते हुए गाना। (व्यग्य) **(किसी पर) तान तोड़ना**=किसी को अपने क्रोध, रोष,व्यग्य आदि का लक्ष्य बनाना। **तान लगाना या लेना**=कलात्मक ढग से गाते हुए स्वरो के उतार-चढाव आदि का विस्तार करना।

†पु०[?]एक प्रकार का पेड।

तान-तरंग—स्त्री०[ष०त०] सगीत मे, कलात्मक रूप से होनेवाला अनेक प्रकार की तानों का उपयोग या प्रयोग।

तानना—स० [स०√तन् (विस्तृत करना या फैलाना)]१. किसी वस्तु के एक या अनेक सिरो को इस प्रकार उपयुक्त दिशा या दिशाओ मे खीचना कि उसमे किसी प्रकार का झोल, बल या सिकुडन न रह जाय। जैसे—(क) ताना तानना, रस्सी तानना। (ख) छाया आदि के लिए चँदोआ तानना। २ कोई चीज ठीक तरह से खडी करने के लिए अथवा खड़ी की हुई वस्तु को गिरने से रोकने के लिए उसे कई ओर से रस्सियो आदि से खीचकर बाँधना। जैसे—(क) खेमा या तबू तानना। (ख) रामलीला मे मेघनाद, रावण आदि के कागजी पुतले तानना। ३ किसी प्रकार का खिचाव उत्पन्न करनेवाली कोई क्रिया करना। जैसे—भौंहे तानना। ४ आघात, प्रहार आदि करने के लिए कोई चीज ऊपर उठाना। जैसे—डडा, मुक्का या लाठी तानना। ५ कोई चीज किसी दूसरी चीज के ऊपर फैलाना। जैसे—सोते समय शरीर पर चादर तानना।

मुहा०—तान कर सोना=किसी बात से बिलकुल निश्चिन्त हो जाना। किसी प्रकार की आशका, चिंता या भय से रहित होकर रहना।

६ किसी को हानि पहुँचाने या दड देने के अभिप्राय से कोई बात उपस्थित या खडी करना। ७ बलपूर्वक किसी ओर पहुँचाना, प्रवृत्त

करना या भेजना। जैसे—अदालत ने उन्हे साल भर के लिए तान दिया, अर्थात् जेल भेज दिया। ९ किसी व्यक्ति को ऐसा परामर्श देना कि वह दूसरे की ओर प्रवृत्त न हो या उससे मेल-जोल की बात न करे। जैसे—आप ने ही उन्हे तान दिया, नही तो अब तक समझौता हो जाता।

तानपूरा—पु०[सं० तान+हिं० पूरना] सितार के आकार का पर उससे कुछ बडा एक प्रसिद्ध बाजा जिसका उपयोग बडे-बडे गवैये गाने के समय स्वर का सहारा लेने के लिए करते है।

तान बाना†—पु०=ताना-बाना।

तानव—पु०[सं० तनु+अण्] तनु अर्थात् कृश होने की अवस्था या भाव। तनुता।

तानसेन—पु० मुगल सम्राट् अकबर के दरबार का प्रसिद्ध गवैया त्रिलोचन मिश्र जो सगीतज्ञ स्वामी हरिदास का शिष्य था और जिसे अकबर ने तानसेन की उपाधि से विभूषित किया था; और जो अन्त मे मुहम्मद गौस नामक मुसलमान फकीर से दीक्षित हो मुसलमान हो गया था। मध्य तथा आधुनिक युग मे वह भारत का सर्वश्रेष्ठ गायक माना जाता है। उसकी कब्र ग्वालियर मे है।

ताना—पु०[हिं० तानना]१ तानने की क्रिया या भाव। २ तनी या तानी हुई वस्तु। ३. करघे की बुनाई मे वे सूत या तागे जो लबे बल मे ताने जाते है।

विशेष—जो सूत या तागे चौडाई के बल बुने जाते हैं, उन्हे 'बाना' कहते है।

क्रि० प्र०—तानना।—फैलाना।—लगाना।

पद—ताना-बाना। (दे०)

३. कालीन, दरी आदि बुनने का करघा।

स०[हिं० ताव+ना (प्रत्य०)]१ आग से अथवा किसी और प्रक्रिया से किसी चीज को खूब गरम करना। तपाना। जैसे—(क) तंदूर ताना। (ख) घी या मक्खन ताना। २ परीक्षा करने के लिए धातुओ आदि को तपाना। ३. किसी को दुखी या सतप्त करना। स० [हिं० तवा] गीली मिट्टी या आटे आदि से ढक्कन चिपकाकर किसी बरतन का मुँह बद करना। मूँदना।

पु०[अ० तअनऽ] ऐसा कथन जिसमे किसी को उसके द्वारा किए हुए अनुचित या अशोभनीय व्यवहार का उसे स्पष्ट किंतु कटु शब्दो मे स्मरण कराकर लज्जित किया जाय।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।

ताना-पाई—स्त्री०[हिं० ताना+पाई=ताने का सूत फैलाने का ढाँचा] १ पाइयो पर ताना तानने या फैलाने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार पाइयो पर फैलाए हुए ताने को बार-बार इधर-उधर आ जा कर कूची आदि से साफ करना तथा सीध मे लाना। ३. बार-बार इधर-उधर आना-जाना।

ताना-बाना—पु०[हिं० ताना+बाना]बुनाई के समय लबाई के बल ताने या फैलाये जानेवाले और चौडाई के बल बुने जानेवाले सूत।

मुहा०—ताना-बाना करना=बार-बार इधर-उधर आना-जाना।

ताना-रीरी—स्त्री०[हिं० तान+अनु० रीरी]साधारण गाना।

तानाशाह—पु०[हिं० तनना या तानना+फा० शाह]१ अब्दुल हसन नामक एक स्वेच्छाचारी बादशाह का लोक प्रसिद्ध नाम। २ ऐसा शासक जो मनमाने ढग से सब काम करता हो और किसी प्रकार के नियम या बधन न मानता हो। ३. ऐसा व्यक्ति जो अपने अधिकारों का बहुत दुरुपयोग करता हो।

तानाशाही—स्त्री०[हिं० तानाशाह] तानाशाह होने की अवस्था या भाव। मनमाना आचरण या शासन करने की वृत्ति। स्वेच्छाचारी।

तानी—स्त्री०[हिं० ताना] उन सब सूतो, तागो का समूह जो करघे आदि मे कपडा बुनते समय लबाई के बल लगाये जाते हैं।

स्त्री०=तनी (बद)।

तानूर—पु०[सं० √तन् (विस्तार)+ऊरण्] १ पानी का भँवर। २ वायु का भँवर। बवडर। बगूला।

तानो—पु०[देश०] ऐसा भूखड जिसमे कई खेत होते है। चक।

तान्व—पु०[सं० तनु+अण्, गुणाभाव]१ पुत्र। बेटा। २ तनु नामक ऋषि के पुत्र एक प्राचीन ऋषि।

ताप—पु०[सं०√तप् (तपना)+घञ्]१ एक प्रसिद्ध ऊर्जा या शक्ति जो अग्नि, घर्षण अथवा कुछ रासायनिक क्रियाओ के द्वारा उत्पन्न होती है और जिसके प्रभाव से चीजें गरमी, जलती, पिघलती, फैलती अथवा भाप बनकर हवा मे उडने लगती है। (हीट) २. गरमी। तपिश। ३ आँच। आग। ४ ज्वर। बुखार। ५ कोई ऐसा मानसिक या शारीरिक कष्ट जिससे प्राणी दुःखी होता हो।

विशेष—हमारे यहाँ धार्मिक क्षेत्रो मे ताप तीन प्रकार के कहे गये है। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। (देखें ये तीनों शब्द)

तापक—वि० [सं०√तप्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ ताप या गर्मी उत्पन्न करनेवाला। २ ताप या कष्ट देनेवाला।

पु०१. रजोगुण। २ ज्वर। ताप। बुखार। ३ एक वैद्युतिक उपकरण जो चीजों या वातावरण को गरम करता है। (हीटर)

तापकी—वि०[सं० तापक] ताप उत्पन्न करनेवाला। उदा०—तापकी तरनि मानो मरनि करत है।—सेनापति।

ताप-क्रम—पु०[प०त०] किसी विशिष्ट स्थान या पदार्थ का वह ताप जो विशेष अवस्थाओं मे घटता-बढता रहता है।

ताप-क्रम-यत्र—पु०[प०त०] वह यत्र जिससे किसी स्थान या पदार्थ के तापक्रम के घटने या बढने का पता चलता है। (बैरोमीटर)

ताप-चालक—पुं०[प०त०]ऐसा पदार्थ जिसमे ताप एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच जाय।

तापचालकता—स्त्री०[सं० तापचालक+तल्—टाप्] वस्तुओ का वह गुण जिससे वे ताप-चालक होती हैं।

ताप-तरंग—स्त्री०[प०त०] वातावरण की वह विशिष्ट स्थिति जिसमे कुछ समय के लिए हवा बहुत गरम और तेज हो जाती है और गरमी बहुत बढ जाती है। (हीट वेव)

तापतिल्ली—स्त्री० [हिं० ताप+तिल्ली] एक रोग जिसमे पेट के अन्दर की तिल्ली या प्लीहा मे सूजन होती है और इसी लिए वह कुछ बड़ी हो जाती है तथा ज्वर उत्पन्न करती है।

तापती—स्त्री०[सं०]१ सूर्य की एक कन्या का नाम। २. ताप्ती नदी जो सतपुडा पर्वत से निकलकर खभात की खाडी मे गिरती है।

तापत्य—वि०[सं० तपती+ष्यञ्] तापती-सबधी

उत्पन्न करने के लिए कोई चीज आग पर चढ़ाना या गरम करना। (हीट ट्रीटमेंट)

ताप्ती—स्त्री०=तापती (नदी)।

ताप्य—पु०[सं० ताप+यत्] सोना-मक्खी।

ताफ्ता—पु०[फा० ताफ्त.] एक तरह का रेशमी कपड़ा जिस पर प्रकाश की किरणें पड़ने से कई रंग झलकते हैं। धूपछाँह।

ताब—स्त्री०[सं० ताप से फा०] १. ताप। गरमी। २ चमक। दीप्ति। जैसे—मोती या हीरे की ताब। ३. शक्ति। सामर्थ्य। जैसे—अब तो उनमें उठने-बैठने की भी ताब नहीं है। ४. कष्ट, दुःख आदि सहने की शक्ति। ५ विरोध, सामना आदि करने की शक्ति। मजाल। जैसे—किसी की क्या ताब है जो तुम्हारी तरफ आँख उठाकर भी देखे।

मुहा०—(किसी काम या बात की) ताब लाना=सहने या सामना करने का साहस करना।

ताबड़-तोड़—अव्य० [हिं० ताब+ तोड़ना] कोई घटना या बात होने पर उसके प्रतिकार, समर्थन आदि के उद्देश्य से, तत्काल। तुरत।

ताबा—वि०=ताबे।

ताबूत—पु०[अ०] वह संदूक जिसमें मृत शरीर बंद करके गाड़े जाते है।

ताबे—वि०[अ० ताबअ]१. जो किसी के अधीन या वश में हो। मातहत। २. अनुगामी या अनुवर्ती।

ताबेदार—वि०[अ० ताबअ+फा० दार] [भाव० ताबेदारी] सब प्रकार से आज्ञा और वश में रहनेवाला। आज्ञाकारी।

पु० नौकर। सेवक।

ताबेदारी—स्त्री० [फा०] १. ताबेदार अर्थात् आज्ञाकारी होने की अवस्था या भाव। २ तुच्छ कामों की नौकरी। चाकरी। ३. टहल। सेवा।

तामंस†—पु०=तामस।

ताम—पु० [सं०√तम् (खेद करना)+घञ्] १ दोष। विकार। २. चित्त या मन का विकार। मनोविकार। ३. कष्ट। तकलीफ। ४. क्लेश। व्यथा। ५. ग्लानि।

वि० १ डरावना। भीषण। विकराल। २ दुःखी। पीड़ित। ३ परेशान। व्याकुल।

पु०[सं० तामस]१ क्रोध। रोष। २. अन्धकार। अँधेरा।

†अव्य०[सं० तु?] तब। तो।

†वि०[सं० ताम्र] ताँबे की तरह का लाल।

तामजान (म)—पु०[हिं० थामना+सं० यान=सवारी] एक तरह की खुली पालकी (सवारी) जिसे दो या चार कहार कन्धे पर लेकर चलते हैं।

तामड़ा—वि०[सं० ताम्र, हिं० ताँबा+ड़ा (प्रत्य०)] ताँबे के रंग का। लाली लिये हुए भूरा।

पुं० १. ताँबे के रंग का-सा स्वच्छ आकाश। २. गंजी खोपड़ी जिसका रंग प्रायः ताँबे का-सा होता है।

मुहा०—तामड़ा निकल आना=सिर के बाल झड़ जाने के कारण खोपड़ी गंजी होना।

३. उक्त रंग का एक प्रकार का मोटा देशी कागज। ४. भट्ठे में पकी हुई वह ईंट जिसका रंग अधिक ताप लगने के कारण कुछ-कुछ काला पड़ गया हो।

पु० [सं० ताम्रक] ताँबे के रंग का एक प्रकार का रत्न। पद्मराग मणि।

तामना—स०[देश०] खेत जोतने से पहले उसमें की घास आदि खोदकर निकालना।

तामर—पु०[सं० ताम√रा (दान)+क]१. पानी। २. घी।

तामरस—पुं०[सं० तामर√सस् (सोना)+ड]१ कमल। २. सोना। स्वर्ण। ३. धतूरा। ४. ताँबा। ५. सारस पक्षी। ६ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो जगण और तब एक यगण होता है।

तामरसी—स्त्री०[सं० तामरस+ङीप्] वह तालाब जिसमें कमल खिले या खिलते हों।

तामलकी—स्त्री०[सं०] भूम्यामलकी। भू-आँवला।

तामलूक—पु०[सं० ताम्रलिप्त] बंगाल राज्य के मेदिनीपुर जिले के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम।

तामलेट—पु०[अं० टंबलर] टीन का गिलास जिस पर चमकदार रोगन या लुक लगाया गया हो।

तामलोट—पु०=तामलेट।

तामस—वि०[सं० तमस्+अण्]१. जिसमें तमोगुण की अधिकता या प्रधानता हो। जैसे—तामस स्वभाव।

पुं०१. अंधकार। अँधेरा। २ अज्ञान और उससे उत्पन्न होनेवाला मोह। ३. दुष्ट प्रकृति का मनुष्य। खल। ४ क्रोध। गुस्सा। ५ सर्प। साँप। ६. उल्लू। ७ पुराणानुसार चौथे मनु का नाम। ८ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ९ दे० 'तामस-कीलक'।

तामस-कीलक—पु० [उपमि०स०] एक प्रकार के केतु जो राहु के पुत्र माने और संख्या में ३३ कहे गये हैं, उनका चन्द्रमंडल में दिखाई पड़ना शुभ और सूर्यमंडल में दिखाई पड़ना अशुभ माना जाता है।

तामस-मद्य—पु०[कर्म० स०] कई बार की खींची हुई शराब जो बहुत तेज हो जाती है।

तामस-बाण—पु०[कर्म० स०] एक तरह का दास्त्र।

तामसिक—वि० [सं० तमस्+ठञ्—इक] १. अंधकार संबंधी। २. तमोगुण संबंधी।

तामसी—वि० [सं० तामस+ङीप्] तमोगुण संबंधी। तामसिक। जैसे—तामसी प्रकृति।

स्त्री०१ अँधेरी रात। २ महाकाली। ३ जटामासी पौधा। बाल छड़। ४. पुराणानुसार माया फैलाने की एक कला या विद्या जो शिव ने मेघनाद के निकुंभिला यज्ञ से प्रसन्न होकर उसे सिखाई थी।

तामस्स—पुं०=तामस।

तामा†—पु०[सं० ताम्र] ताँबा नामक धातु।

तामिल—पु०, स्त्री०=तमिल।

तामिस्र—पु०[सं० तमिस्रा+अण्]१. क्रोध, द्वेष, राग आदि दूषित और तामसिक मनोविकार। २ पुराणानुसार अविद्या का वह रूप जो भोग-विलास की पूर्ति में बाधा पड़ने पर उत्पन्न होता है और जिससे मनुष्य क्रोध, वैर आदि करने लगता है।

तामी—स्त्री०[हिं० तांवा]१ तांवे का तसला। २. एक प्रकार का वरतन जिससे मध्ययुग मे द्रव पदार्थ नापे जाते थे।

तामीर—स्त्री०[अ०] [वि० तामीरी, वहु० तामीरात]१ इमारत या भवन आदि वनाने का काम। निर्माण। २ इमारत। भवन। ३. रचना।

तामील—स्त्री०[?]१. अमल मे लाने अर्थात् कार्य रूप मे परिणत करने की क्रिया या भाव। २. आज्ञा, निर्णय आदि का निर्वहण या पालन।

तामेसरी—स्त्री० [देश०] गेरू के मेल से वनाया हुआ एक तरह का तामडा रग।

तामोल†—पु०१ =तावूल।२.=तमोल।

ताम्मुल—पु० [अ० तअम्मुल] १ सोच-विचार। आगा-पीछा। सकोच। २ देर। विलव।

ताम्र—पु०[स०√तम् (आकाक्षा)+रक, दीर्घ]१. एक प्रसिद्ध धातु। तांवा। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग या कोढ।

ताम्रक—पु०[स० ताम्र+कन्] तांवा।

ताम्रकर्णी—स्त्री०[सं० व०स०, ङीप्] पश्चिम के दिग्गज अजन की पत्नी का नाम।

ताम्रकार—पु०[स० ताम्र√कृ (करना)+अण्] तांवे के वरतन आदि वनानेवाला कारीगर।

ताम्रकूट—पु०[प० त०] तमाकू का पौधा।

ताम्रकृमि—पुं०[मध्य० स०] इन्द्रगोप या वीरवहूटी नामक कीड़ा।

ताम्रगर्भ—पु०[व०स०] तूतिया।

ताम्रचूड़—पु० [व० स०] १ कुकरौवा नामक पौधा। २. कुक्कुट। मुरगा।

ताम्र-दुग्वा—स्त्री०[व०स०, टाप्] छोटी दुद्धी।

ताम्र-पट्ट—पु०[मध्य०स०] ताम्र-पत्र।

ताम्र-पत्र—पु०[प० त०]१. तांवे का पत्तर। २ तांवे का वह पत्तर जिस पर स्थायी रूप से रहने के लिए कोई महत्त्वपूर्ण वात लिखी गई हो।

विशेष—प्राचीन काल मे प्राय तांवे के पत्तर पर अक्षर खोदकर दान-पत्र, विजय-पत्र आदि लिखे जाते थे जो अब तक कही-कही मिलते और ऐतिहासिक शोधो मे सहायक होते हैं।

ताम्र-पर्णी—स्त्री०[व०स०, ङीप्]१ छोटा पक्का तालाव। वावली। २. दक्षिण भारत की एक छोटी नदी।

ताम्र-पल्लव—पु०[व०स०] अशोक वृक्ष।

ताम्रपाकी(किन्)—पु०[स०ताम्र-पाक, कर्म०स०,+इनि] पाकर का पेड़।

ताम्र-पादी—स्त्री० [व०स०, ङीप्] लाल रग की लज्जालु लता। हस-पदी।

ताम्र-पुष्प—पु०[व०स०] लाल फूल का कचनार।

ताम्र-पुष्पिका—स्त्री०[व०स०,कप्—टाप्,—इत्व] निसोथ।

ताम्र-पुष्पी—स्त्री०[व०स०, ङीप्] १. धव का पेड़। धातकी। २. पाढर का पेड। पाटल।

ताम्र-फल—पु०[व०स०] अकोल का वृक्ष। ढेरा।

ताम्र-मूला—स्त्री०[व०स०,टाप्]१. जवासा। धमासा। २. छूई-मूई। लज जावती। ३. कौंछ। केवांच।

ताम्र-युग—पु०[मध्य०स०] इतिहास का वह आरभिक युग जव लोग तांवे के औजार, पात्र आदि काम मे लाया करते थे।

विशेष—आधुनिक पुरातत्त्व-विदो के अनुसार यह युग लौह-युग से पहले और पत्थर युग के वाद का है।

ताम्रलिप्त—पुं०[स०] तमलूक। (दे०)

ताम्र-वर्ण—वि०[व०स०]१. तामड़ा रग का। २ लाल रग का। रक्त-वर्ण का।

पुं०१ पुराणानुसार सिंहल द्वीप का पुराना नाम। २. वैद्यक मे, मनुष्य के शरीर पर की चौथी त्वचा।

ताम्र-वर्णा—स्त्री०[व०स०, टाप्] गुडहर का पेड। अडहुल।

ताम्र-वल्ली—स्त्री०[कर्म०स०]१ मजीठ। २. चित्रकूट के आस-पास होनेवाली एक प्रकार की लता।

ताम्रवीज—पुं०[व०स०] कुलथी।

ताम्र-वृंत—पु०[व०स०] कुलथी।

ताम्र-वृंत्ता—पु०[व०स०, टाप्] कुलथी।

ताम्र-वृक्ष—पु०[कर्म०स०]१. कुलथी। २ लाल चन्दन का वृक्ष।

ताम्रशिखी(खिन्)—पु०[स० ताम्रा, शिखा कर्म०स०,+इनि] मुरगा।

ताम्र-सार—पु०[व०स०] लाल चदन का वृक्ष।

ताम्रसारक—पु०[सं० ताम्रसार+कन्] १ लाल चदन का पेड। २ [व०स०, कप्] लाल खैर।

ताम्रा—स्त्री०[स० ताम्र+टाप्]१. सिंहली पीपल। २ दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप ऋषि को व्याही थी और जिसके गर्भ से पाँच कन्याएँ उत्पन्न हुई थी।

ताम्राक्ष—पु० [ताम्र-अक्षि, व० स०, पच् समा०] कोकिल। वि० लाल आँखोवाला।

ताम्राभ—पु० [ताम्रा-आभा व० स०] लाल चदन।

ताम्रार्द्ध—पु० [ताम्र-अर्ध, व० स०] काँसा।

ताम्राश्म (न्)—पु० [ताम्र-अश्मन्, कर्म० स०] पद्मराग मणि।

ताम्रिक—पु० [स० ताम्र+ठञ्—इक] वह जो तांवे के वरतन आदि वनाता हो।

ताम्रिका-स्त्री० [स० ताम्रिक+टाप्] गुंजा। घुघची।

ताम्रिमा (मन्)—स्त्री० [स० ताम्र+इमनिच्] तांवे का रग।

ताम्री—स्त्री० [स० ताम्र+अण्+ङीप्] एक तरह का तांवे का वाजा।

ताम्रेश्वर—पु० [ताम्र-ईश्वर, ष० त० ?] तांवे की भस्म।

ताम्रोपजीवी (विन्)—पुं० [सं० ताम्र+उप√जीव् (जीना)+णिनि] १. वह जिसकी जीविका का साधन तांवा हो। तांवे का रोजगारी। २. कसेरा।

तायँ*—अव्य० १ से। २ तक।

ताय*—पु० १.=ताप। २.=ताव।

सर्व० = ताहि (उसे)।

तायत—स्त्री० [अ० इताअत]१. आज्ञाकारिता। २ चेष्टा। प्रयत्न। (क्व०)

तायदाद†—स्त्री० = तादाद।

तायना†—स०=ताना (तपाना)।

तायनि*—स्त्री० [हिं० तायना=तपाना] १. ताने अर्थात् तपाने की

क्रिया या भाव। २ तपने की अवस्था या भाव। ३ दुःख। व्यथा।

तायफा—पु० [अ० तायफ =गरोह या दल] नाचने-गाने आदि का व्यवसाय करनेवाले लोगो का सघटित दल। जैसे--भाँडो या रडियो का तायफा।
स्त्री० नाचने-गाने का व्यवसाय करनेवाली वेश्या। तवायफ।

ताया—पु० [स० तात] [स्त्री० ताई] सबध के विचार से पिता का बडा भाई।

तार—वि० [स०√तृ (विस्तार, तरना)+णिच्+अच्] १.जोर का। ऊँचा। जैसे—तार ध्वनि या स्वर। २. चमकता हुआ। प्रकाशमान। ३ अच्छा। बढिया। ४. स्वादिष्ठ। ५ साफ। स्वच्छ। ६. बहुत कम या थोड़ा। अल्प (क्व०) उदा०--कांचा भडाँ कसूर पिण, किलाँ कसूर न तार।—बाँकीदास।
पु० ऊँचाई और नीचाई अथवा कोमलता और तीव्रता के विचार से ध्वनि या स्वर की कोई स्थिति। (पिच)
पु० [स० तारा] १ तारा। नक्षत्र। २ आँख की पुतली। ३. ज्योति। प्रकाश। उदा०—तेज कि रतन कि तार कि तारा।—प्रिथीराज। ४ ओंकार। प्रणव। ५ शिव। ६. विष्णु। ७.असल या सच्चा मोती। ८ किनारा। तट। ९ राम की सेना का एक बदर जो तारा का पिता था और बृहस्पति के अश से उत्पन्न हुआ था। १०. साख्य के अनुसार एक प्रकार की गौण सिद्धि जो गुरु से विधिपूर्वक वेदो का अध्ययन करने पर प्राप्त होती है। ११ अठारह अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त। १२. सगीत के तीन सप्तको (सातो स्वरो के समूहो) मे से अतिम और सब से ऊँचा सप्तक जिसका उच्चारण कठ से आरभ होकर कपाल के भीतरी स्थानो तक होता है। इसे 'उच्च' भी कहते हैं।
पु० [स० करताल] करताल या मँजीरा नाम का बाजा।
पु० [स० ताटक] कान मे पहनने का ताटंक नाम का गहना।
पु० [स० ताडन] १. डाँट-फटकार। २. डर। भय।
पु० [फा०] डोरा। तागा। सूत।
मुहा०—तार तार करना=कपडे आदि के इस प्रकार टुकड़े-टुकडे करना कि उसके तागे या सूत तक अलग-अलग हो जायँ। धज्जियाँ उडाना।
३. किसी धातु से तैयार किया हुआ डोर या लँबे तागेवाला रूप। जैसे—चाँदी या सोने का तार, सारगी या सितार का तार।
क्रि० प्र०—खीचना।
मुहा०—तार दबकना=गोटा, पट्ठा आदि तैयार करने के लिए चाँदी या सोने का तार पीटकर चिपटा और चौडा करना।
४ धातु का वह पतला लबा खड जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार आदि भेजे जाते हैं। जैसे—सारे भारत मे तारो का जाल फैला हुआ है। ५. उक्त के द्वारा भेजा जानेवाला समाचार अथवा वह कागज जिस पर उक्त समाचार लिखा रहता है। जैसे—उनके लडके के व्याह का तार आया है।
मुहा०—तार देना=तार के द्वारा किसी के पास कोई समाचार भेजना।
६. सोने-चाँदी के थोडे से गहने। (तुच्छता-सूचक) जैसे—घर मे जो चार तार थे, वे बेचकर लडकी के व्याह मे लगा दिये। ७ चाँदी। रूपा। (सुनार) ८ डोरी। रस्सी। (लश०) ९ किसी काम या बात का बराबर कुछ दूरी या समय तक चलता रहनेवाला क्रम। ताँता। सिलसिला। जैसे—आज कई दिनो से पानी का तार लगा है।
क्रि० प्र०—टूटना।—बँधना।—लगना।
१०. किसी प्रकार की उद्देश्य-सिद्धि का सुभीता या सुयोग। जैसे-वहाँ तुम्हारा तार न लगेगा।
पद—तार-घाट। (देखें)
मुहा०—तार जमना, बँधना बैठना या लगना=कार्य-सिद्धि का सुभीता या सुयोग होना।
११ पहनी जानेवाली चीजो का ठीक नाप। जैसे--इस लडके के नार का एक कुरता ले आओ। १२ भेद। रहस्य। उदा०--जत्र-मत्र श्री वेद तत्र मे सर्व तार को तार।—हरिराम व्यास।

तारक—वि० [स०√तृ+णिच्+ण्वुल्-अक] तारने या तैरानेवाला। २ भव-सागर से उद्धार करनेवाला। जैसे—तारक मत्र।
पु० १ आकाश का तारा। नक्षत्र। २. आँख की पुतली। ३. आँख। ४. राम का छ अक्षरोंवाला यह मत्र 'ओं रामाय नम' जिसे सुनने मे मनुष्य का मोक्ष होना माना जाता है। ५ इन्द्र का शत्रु एक असुर जिसे नारायण ने नपुसक का रूप धरकर मारा था। ६ एक असुर जिसे कार्तिकेय ने मारा था और जो तारकासुर के नाम से प्रसिद्ध है। ७ भिलावाँ। ८ नाविक। मल्लाह। ९ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण और एक गुरु वर्ण होता है। १० एक सकेत या चिह्न जो ग्रन्थ, लेख आदि मे किसी शब्द, पद या वाक्य के साथ लगाया जाता है, जिसका पाद-टिप्पणी मे विवरण आदि देना होता है। इसका रूप है—*।

तारकजित्—पु० [स० तारक √जि (जीतना)+क्विप्] कार्तिकेय।

तारक-टोड़ी—स्त्री० [स० तारक+हिं० टोडी] एक प्रकार की टोडी रागिनी जिसमे ऋषभ और कोमल स्वर लगते है और पचम वर्जित होता है। (सगीत रत्नाकर)

तारक-तीर्थ—पु० [कर्म० स०] गया। (जहाँ पिंडदान करने से पुरखे तर जाते हैं)

तारक-ब्रह्म—पु० [कर्म० स०] 'ओं रामाय नम' का मत्र।

तार-कमानी—स्त्री० [हिं० तार+कमानी] नगीने आदि काटने की धनुष के आकार की कमानी जिसमे डोरी के स्थान पर लोहे का तार लगा रहता है।

तारकश—पु० [हिं० तार+फा० कश=(खीचनेवाला)] [भाव० तारकशी] वह कारीगर जो धातुओं के तार खीचने या बनाने का काम करता हो।

तारकशी—स्त्री० [हिं० तारकश] तारकश का काम या पेशा।

तारकस—पु० = तारकश।

तारकांकित—वि० [तारक-अकित, तृ० त०] (शब्द, पद या वाक्य) जिस पर तारक (*चिह्न) लगा हो।

तारका—स्त्री० [स० तारक+टाप्] १ तारा। नक्षत्र। २. आँख की

पुतली। कनीनिका। ३ इद्र वारुणी लता। ४. नाराच छद का दूसरा नाम। ५ बालि की पत्नी का नाम। ६ दे० 'तारिका'।
*स्त्री० दे० 'ताडका'।

तारकाक्ष—पु० [स० तारक-अक्षि, ब० स०] तारकासुर का बडा लडका।

तारकामय—पु० [स० तारका+मयट्] शिव। महादेव।

तारकायण—पु० [स० तारक+फक्—आयन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

तारकारि—पु० [स० तारक-अरि, प० त०] कार्तिकेय।

तारकासुर—पु० [स० तारक-असुर, कर्म० स०] एक असुर जिसका वध कार्तिकेय ने किया था। (शिव पुराण)

तारकिणी—वि० [स० तारकिन्+ङीप्] तारो से भरी।
स्त्री० रात।

तारकित—वि० [स० तारका+इतच्] तारो से भरा हुआ।

तारकी (किन्)—वि० [स० तारका+इनि] [स्त्री० तारकिणी] =तारकित।

तार-कूट—पु० [सं० तार =चाँदी+कूट =नकली] चाँदी, पीतल आदि के योग से बननेवाली एक मिश्र धातु।

तारकेश—पु० [स० तारका-ईश, ष० त०] चद्रमा।

तारकेश्वर—पु० [सं० तारका-ईश्वर, प० त०] १ शिव। २ शिव की एक विशिष्ट मूर्ति या रूप। ३ वैद्यक मे एक प्रकार का रस (औषध)।

तारकोल—पु० [अ० टार—कोल] अलकतरा। (दे०)

तार-क्षिति—पु० [स० ब० स०] पश्चिम दिशा मे एक देश जहाँ म्लेच्छो का निवास है। (बृहत्सहिता)

तारख*—पु० [स० तार्क्ष्य] गरुड। (डिं०)

तारखो*—पु० [स० तार्क्ष्य] घोडा। (डिं०)

तारघर—पु० [देश०] वह कार्यालय जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजे जाते और आये हुए समाचार लोगो के पास भेजे जाते है।

तार-घाट—पु० [हिं० तार+घात] तार लगने अर्थात् कार्य सिद्ध होने की सभावना या घाट अर्थात् सभावित स्थिति। जैसे—हो सके तो वहाँ हमारा भी कुछ तार-घाट लगाओ।

तार-चरबी—पु० [देश०] मोम चीना का पेड।

तार-जाली—स्त्री० [हिं०] बहुत ही पतले तारो से बनी हुई जाली जिसका उपयोग यात्रिक और रासायनिक कार्यो मे होता है। (वायर गेज)

तारण—पु० [स०√तृ+णिच्+ल्युट्—अन] १ जलाशय आदि से तारने या पार करने की क्रिया या भाव। २. कठिनता, सकट आदि से उद्धार करने की क्रिया। निस्तार। ३ भव-सागर से पार करके मोक्ष दिलाने की क्रिया या भाव। ४ [√तृ+णिच्+ल्यु—अन] विष्णु। ५ साठ सवत्सरो मे से एक सवत्सर।
वि० १ तारने या पार करनेवाला। २ उद्धार या निस्तार करनेवाला।

तारणी—स्त्री० [स० तारण+ङीप्] कश्यप की एक पत्नी जिसके गर्भ से याज और उपयाज उत्पन्न हुए थे।

तार-तंडुल—पु० [स० ब० स०] सफेद ज्वार।

तारतम्य—पु० [स० तारतम+ष्यञ्] [वि० तारतम्यिक] १ और 'तम' होने की अवस्था या भाव। एक दूसरे की तुलना मे घट और बढकर होने की अवस्था या भाव। २ उक्त प्रकार की दृष्टि से की जानेवाली तुलना या पारस्परिक मिलान। ३ उक्त प्रकार के विचारो से लगाया जानेवाला क्रम या सिलसिला।

तारतम्य-बोध—पु० [प० त०] आपेक्षिक स्थितियो या चीजो के घट-बढ होने का ज्ञान। सापेक्ष सबध का ज्ञान।

तार-तार—पु० [स०, प्रकार अर्थ मे द्वित्व] साख्य के अनुसार एक गौण सिद्धि जो आगम या शास्त्र अच्छी तरह समझ-बूझकर पढने से प्राप्त होता है।
वि० [हिं०] १ जो इस प्रकार फटा या फाडा गया हो कि उसके तार या सूत अलग-अलग हो गये हो, अर्थात् जिसके बहुत से छोटे-छोटे टुकडे या धज्जियाँ हो गई हो। २ पूरी तरह से छिन्न-भिन्न।

तार-तोड़—पु० [हिं०तार+तोडना] कपडो आदि पर किया हुआ कारचोबी या जरदोजी का काम।

तारदी—स्त्री० [स० तरदी+अण् (स्वार्थ मे)+ङीप्] १ काँटेदार पेड। २ तरदी वृक्ष।

तारन—पु० [हिं० तर=नीचे ?] १ छत या छाजन की ढाल अर्थात् नीचे की ओर का उतार। २ छाजन के वे बाँस जो कांडियो के नीचे रहते है।
वि०, पु०=तारण।

तारना—स० [स० तारण] १ ऐसा काम या यत्न करना जिससे कोई (नदी, नाला आदि) तर कर उसके पार उतर जाय। पार लगाना। २ डूबते हुए को सहारा देकर किनारे पर पहुँचाना। ३ भव-सागर मे जनमने-मरने से मुक्त करना। मोक्ष या सद्गति देना।

तार-पत्र—पु० [स०] भारतीय सेना मे प्रचलित एक प्रकार का पत्र (चिट्ठी) जो स्वदेश की सीमा के अन्तर्गत एक जगह से दूसरी जगह भेजा जाता है। (पोस्टग्राम)

तारपीन—पु० [अ० टरपेंटाइन] चीड के पेड से निकला हुआ एक तरह का तेल। (टरपेन्टाइन)

तार-पुष्प—पु० [स० ब०स०] कुद का पेड।

तारबर्की—पु० [हिं० तार+फा० बर्की=बिजली का] धातु का वह तार जिसके द्वारा बिजली की शक्ति से समाचार दूर तक भेजे जाते है।

तार-माक्षिक—पु० [स० उपमि०स०] रूपामक्खी नाम की उपधातु।

तारयिता (तृ)—पु० [स०√तृ+णिच्+तृच्] [स्त्री० तारयितृ+ङीप्, तारयित्री] १ तारनेवाला। २ उद्धार करनेवाला। २ मोक्ष देनेवाला।

तारल्य—पु० [स० तरल+ष्यञ्] १ तरल होने की अवस्था या भाव। तरलता। २ चचलता।

तार-विमला—स्त्री० [स० उपमि०स०] रूपामक्खी नामक उपधातु।

तार-सार—पु० [स० ब०स०] एक उपनिषद्।

तारहीन—वि० [हिं० तार+स० हीन] १. जिसमे तार न हो। २ (सूचना, समाचार आदि) जो बिजली के द्वारा तार-हीन प्रणाली से आवे या जाय। बिना तार की सहायता के भेजा जानेवाला।
पु० विद्युत् की सहायता से समाचार भेजने की एक प्रणाली या प्रक्रिया जिसमे समाचार, सूचनाएँ आदि भेजनेवाले और पानेवाले स्थानो के बीच तार का सबध नही रहता। (वायरलेस)

तारा—पु० [स० तार+टाप्] १ आकाश मे चमकनेवाला नक्षत्र। सितारा।

मुहा०—**तारा टूटना**=तारे का आकाश से अपनी कक्षा से निकलकर पृथ्वी पर या आकाश मे किसी ओर गिरना। **तारा डूबना**=(क) किसी तारे या नक्षत्र का अस्त होना। (ख) शुक्र का अस्त होना। (शुक्रास्त मे हिंदुओ के यहाँ मगल कार्य नही किये जाते) **तारा सी आँखें हो जाना**=इतनी ऊँचाई या दूरी पर पहुँच जाना कि तारे की तरह बहुत छोटा जान पडने लगे। **तारे खिलना या छिटकना**=आकाश मे तारो का चमकते हुए दिखाई देना। **तारे गिनना**=चिता, विकलता आदि से नीद न आने के कारण कष्टपूर्वक जागकर रात बिताना। **(आकाश के) तारे तोड लाना**=कठिन से कठिन अथवा प्राय असभव से काम कर दिखाना। **तारे दिखाई देना**=दुर्बलता, रोग आदि के कारण आँखो के सामने रह-रहकर प्रकाश के छोटे-छोटे कण दिखाई देना। **तारे दिखाना**=प्रसूता स्त्री को छठी के दिन बाहर लाकर आकाश की ओर इसलिए तकाना कि भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर हो जाय। (मुसल०)

पद—**तारो की छाँह**=इतने तडके या सवेरे कि तारो का धुँधला प्रकाश दिखाई दे।

२. आँख की पुतली। जैसे—यह लडका हमारी आँखो का तारा है। ३. किस्मत या भाग्य जिसका बनना-बिगडना आकाश के तारो या नक्षत्रो की स्थिति का परिणाम या फल माना जाता है। सितारा। (मुहा० के लिए दे० 'सितारा' के मुहा०)

पु० [?] सिर पर पगडी की तरह बाँधा जानेवाला पुरानी चाल का चीरा।

†पु०=ताला।

स्त्री० [स०] १. बृहस्पति की स्त्री जिसे चद्रमा ने अपने पास रख लिया था। २ तात्रिको की दस महाविद्याओ मे से एक। ३. जैनो के अनुसार एक देवी या शक्ति। ४. बालि नामक बदर की स्त्री जिसने बालि के मारे जाने पर उसके भाई सुग्रीव के साथ विवाह कर लिया था।

तारा-कूट—पु० [ष० त०] वर-कन्या के शुभाशुभ फल को सूचित करनेवाला एक कूट जिसका विचार विवाह स्थिर करने से पहले किया जाता है। (फलित ज्योतिष)

ताराक्ष—पु० [स० तार—अक्षि, ब० स०] तारकाक्ष दैत्य।

तारा-ग्रह—पु० [स० मयू० स०] मगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन पाँच ग्रहो का समूह। (बृहत्सहिता)

ताराज—पु० [फा०] १. लूट-पाट। २. ध्वस। नाश। बरबादी।

तारात्मक-नक्षत्र—पु० [स० तारा-आत्मन्, ब० स०, कप्, तारात्मक-नक्षत्र, कर्म० स०] आकाश मे क्राति वृत्त के उत्तर और दक्षिण दिशाओ के तारो का समूह जिनमे अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्र है।

ताराधिप—पु० [तारा—अधिप, ष० त०] १. चद्रमा। २ शिव। ३. बृहस्पति। ४ तारा के पति बालि और सुग्रीव।

ताराधीश—पु० [तारा-अधीश, ष० त०]=ताराधिप।

तारा-नाथ—पु० [ष० त०]=ताराधिप।

तारा-पति—पु० [ष० त०] =ताराधिप।

तारा-पथ—पु० [तारा-पथिन्, ष० त०, समा० अच्] आकाश।

तारापीड—पु० [तारा-आपीड, ष० त०] १. चद्रमा। २. अयोध्या के एक प्राचीन राजा।

तारा-पुंज—पु० [ष० त०] पास-पास और सदा साथ रहनेवाले विशिष्ट तारो का वर्ग या समूह। (एस्टेरिज्म)

ताराभ—पु० [तारा-आभा, ब० स०] पारद। पारा।

तारा-भूषा—स्त्री० [ब० स०] रात्रि। रात।

ताराभ्र—पु० [तार-अभ्र, कर्म० स०] कपूर।

तारा-मंडल—पु० [ष० त०] १. नक्षत्रो का समूह या घेरा। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का बूटीदार कपडा। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे जगह-जगह चमकते हुए तारे दिखाई पडते हैं।

तारा-मंडूर—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का मडूर जो अनेक द्रव्यो के योग से बनाया जाता है। (वैद्यक)

तारा-मृग—पु० [मध्य० स०] मृगशिरा नक्षत्र।

तारायण—पु० [तारा-अयन, ष० त०, णत्व] आकाश।

तारारि—पु० [तारा-अरि, ष० त०] बिटमाक्षिक नाम की उपधातु।

तारावती—स्त्री० [स० तारा+मतुप्+ङीप्] एक दुर्गा।

तारावली—स्त्री० [तारा-आवली, ष० त०] तारो की पक्ति।

ताराहर—पु० [स० तारा√हृ (हरना)+अच्] १. सूर्य। २ दिन।

तारा-हार—पु० [ब० स० ?] वह जिसके गले मे तारो या नक्षत्रो का हार हो।

तारिक—पु० [स० तार+ठन्—इक] १. नाव से नदी पार करने का भाडा। २. नदी आर-पार करने का महसूल।

तारिका—स्त्री० [स० ताडिका, ड— र] ताड नामक वृक्ष का रस। ताडी।

स्त्री० [स० तारका] १. आज-कल सिनेमा आदि की प्रसिद्ध और सफल अभिनेत्री। २. दे० 'तारका'।

तारिका-धूलि—स्त्री० [स०] सारे विश्व मे, तारो-तारिकाओ के बीच के अवकाश मे सब जगह व्याप्त एक प्रकार की बहुत ही बारीक तथा सूक्ष्म धूल या रज। (स्टार-डस्ट)

तारिणी—वि० स्त्री० [सं०√तृ (तरना)+णिच्+णिनि—ङीप्] तारने या उद्धार करनेवाली।

स्त्री० १ एक प्रकार की बहुत लबी पुरानी नाव जो ४८ हाथ लबी, ५ हाथ चौडी और ५ हाथ ऊँची होती थी। २ दे० 'तारा' (देवी)।

तारित—वि० [स०√तृ+णिच्+क्त] १ पार कराया हुआ। २. जिसका उद्धार किया गया हो।

तारी—स्त्री० [देश०] एक चिडिया।

स्त्री० [फा० तारीक का सक्षि० रूप] १ अधकार। अँधेरा। २ बेहोशी। मूर्च्छा। ३. किसी प्रकार के ध्यान मे मग्न होने के समय की तन्मयता। उदा०—सुन्नि समाधि लागि गै तारी।—जायसी। ४. समाधि। उदा०—हाट बजोर लावै तारी।—कबीर। ५. उत्कट इच्छा। लगन। लौ। उदा०—लागी दरसन की तारी।—मीराँ।

†स्त्री० [स० तडित्] बिजली। विद्युत्।

†स्त्री० १=ताली। २.=ताडी।

तारीक—वि० [फा०] [भाव० तारीकी] १ काला। स्याह। २ अधकारपूर्ण। अँधेरा। धुँधला।

तारीकी—स्त्री० [फा०] १ कालिमा। स्याही। २ अन्धकार। अँधेरा।

तारीख—स्त्री० [अ०] १. गिनती के हिसाब से पडनेवाला महीने का दिन जो सख्याओ मे सूचित किया जाता है। दिनाक। (डेट) जैसे—(क) अगस्त की १५ वी तारीख को भारत मे स्वतत्रता दिवस मनाया जाता है। (ख) मुकदमा ७ तारीख को पेश होगा। २ घटना के घटित होने, लेख्य आदि के लिखे जाने का दिन जो कही अकित होता है। जैसे—इस किताब पर तारीख नही लिखी है। ३ दे० 'तवारीख' (इतिहास)।

तारीखी—वि०=तवारीखी (ऐतिहासिक)।

तारीफ—स्त्री० [अ०] १ लक्षणो आदि से युक्त परिभाषा। २. उक्त प्रकार की परिभाषा से युक्त वर्णन या विवरण। ३. प्रशसा। श्लाघा। ४ प्रशसनीय काम या बात। ५ विशिष्टता। जैसे—यही तो आप मे तारीफ है।

तारीफी†—स्त्री०=तारीफ (प्रशसा)।

तारुण—वि० [स० तरुण+अण्] जवान। युवा।

तारुण्य—पु० [सं० तरुण+ष्यञ्] तरुण होने की अवस्था, गुण या भाव। तरुणता। यौवन।

तारू—पु० [हिं० तरना=तैरना] तैरनेवाला। तैराक। उदा०—तारू कवण जु समुद्र तरैं। —प्रिथीराज।

†पु०=तालू।

तारेय—पु० [स० तारा+ढक्—एय] १ तारा का पुत्र अगद। २ वृहस्पति (की स्त्री तारा) का पुत्र बुध।

तार्किक—वि० [स०तर्क+ठक्—इक] तर्क सबधी। तर्क का।

पु० १. वह जो तर्क-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो। २. तत्त्ववेत्ता। ३ वे नास्तिक(आध्यक्षिक से भिन्न) जो केवल तर्क के आधार पर सब बाते मानते हो। इनके दो भेद हैं—क्षणिकवादी (बौद्ध) और स्याद्वादी (जैन)।

तार्क्ष—पु० [स० तृक्ष+अण्] १ कश्यप। २ कश्यप के पुत्र गरुड।

तार्क्षज—पु० [स० तार्क्ष√जन् (पैदा होना)+ड] रसाजन।

तार्क्षी—स्त्री० [स० तार्क्ष+ङीप्] पाताल गारुडी लता। छिरेटी। छिरिहटा

तार्क्ष्य—पु० [स० तृक्ष+यञ्] १ तृक्ष मुनि के गोत्रज। २ गरुड और उनके बडे भाई अरुण। ३ घोडा। ४ रसाजन। ५ साँप। ६ एक प्रकार का साल वृक्ष। अश्वकर्ण। ७ महादेव। शिव। ८ सोना। स्वर्ण। ९ रथ। १० एक प्राचीन पर्वत।

तार्क्ष्यज—पु० [स० तार्क्ष्य√जन्+ड] रसौत। रसाजन।

तार्क्ष्य-प्रसव—पु० [ब० स०] अश्वकर्ण वृक्ष।

तार्क्ष्य-शैल—पु० [स० मध्य० स०+अण्] रसाजन। रसौत।

तार्क्ष्या—स्त्री० [स० तार्क्ष्य+ङीप्] एक प्रकार की जगली लता।

तार्प्य—पु० [स० तृपा+ष्यञ्] तृपा नामक लता से बनाया हुआ वस्त्र जिसका व्यवहार वैदिक काल मे होता था।

तार्य—वि० [स० तृ+णिच्+यत्] १. पार करने योग्य। २. विजित करने योग्य।

पु० [तर+ष्यञ्] नाव आदि का किराया।

तालंक—पु० [स०=ताडक (नि० लत्व)] ताटक।

ताल—पु० [स० तल+अण्] १ हाथ की हथेली। कर-तल। २ [√तड्+णिच्+अच्, ड—ल] हथेलियो के आघात से उत्पन्न होने-वाला शब्द। करतल-ध्वनि। ताली। ३ सगीत मे समय का परिमाण ठीक रखने के लिए थोडे-थोडे, परन्तु नियत अतर पर हथेली या और किसी चीज से किया जानेवाला आघात। ४ सगीत मे उक्त प्रकार के आघातो का क्रम, मान्, सख्या आदि स्थिर रखने के लिए कुछ निश्चित आघातो का (जिनमे से प्रत्येक 'आघात्', मात्रा कहलाता है) अलग और विशिष्ट वर्ग या समूह। जैसे—तीन मात्राओ का ताल, पाँच मात्राओ का ताल आदि। ५. सगीत मे तबले, मृदग, ढोल आदि बजाने का कोई विशिष्ट प्रकार जो उक्त अनेक तालो के योग से बना और किसी विशिष्ट राग या लय के विचार से स्थिर किया गया हो। जैसे—चौताल, झूमर, रुद्र या रूपक ताल।

मुहा०—**ताल देना**=गाने-बजाने के समय, कालमान ठीक रखने के लिए राग-रागिनी आदि के अनुरूप विशिष्ट प्रकार के आघात करना। **ताल पूरना (अकर्मक)** =ताल का आकार ठीक समय पर पूरा होना। ताल का क्रम ठीक बैठना। उदा०—इस मनु आगे पूरैं ताल।—कबीर। **ताल पूरना (सकर्मक)**=सगीत के समय उक्त प्रकार का आघात करते हुए ताल देना।

६. झाँझ, मजीरा आदि बाजे जो उक्त विचार से समय का परिमाण ठीक रखने के लिए बजाये जाते हैं। ७. कुश्ती लडने के समय जाँघ या बाँह पर हथेली के आघात से उत्पन्न किया जानेवाला शब्द।

मुहा०—**ताल ठोंकना**=उक्त प्रकार का आघात करके या और किसी प्रकार यह सूचित करना कि आओ हम से लडकर बल-परीक्षा कर लो।

८ ताड़ का पेड। ९ ताला। १० ऐनक या चश्मे मे लगा हुआ काँच, बिल्लौर आदि का टुकडा।

पु० [स० तल्ल] [स्त्री० अल्पा० तलैया] छोटा जलाशय।

ताल-कद—पु० [ब० स०] तालमूली। मुसली।

तालक—पु० [स० ताल+कन्] १ हरताल। २ ताला। ३ गोपी चदन।

†पु०=तअल्लुक (सबध)।

तालकट—प० [स० ताल+कटच्] बृहत्सहिता के अनुसार दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रदेश।

तालकाभ—वि० [तालक-आभा, ब० स०] हरा।

पु० हरा रग।

तालकी—स्त्री० [स० तालक+अण्+ङीप्] ताड वृक्ष का रस। ताडी।

तालकूटा—पु० [हिं० ताल+कूटना] १ ताल देने के लिए झाँझ आदि बजानेवाला। २. वह भजनीक जो गाते समय झाँझ आदि बजाता हो।

ताल-केतु—पु० [ब० स०] १. केतु जिस पर ताल के पेड का चिह्न हो। २ वह जिसकी पताका पर ताड के पेड का चिह्न हो। ३. भीष्म। ४ बलराम।

तालकेश्वर—पु० [स० दे० तारकेश्वर] एक तरह की ओषधि।

तालाब—पु०[हिं० ताल+फा० आव] वह छोटा जलाशय जिसके चारो ओर स्नानार्थियो की सुविधा के लिए सीढियाँ आदि वनी होती हैं।

तालि—स्त्री०[?]समय। उदा०—तिणि तालि सखी गलि स्यामा तेही। —प्रिथीराज।

तालिक—पु०[स० तल+ठक्—इक]१ फैली या फैलाई हुई हथेली। २ वह डोरा जिससे ताड़-पत्र या उन पर लिखे हुए लेख नरथी करके एक मे बाँधे जाते थे। ३ ताडपत्रो का पुलिंदा।

तालिका—स्त्री० [स० ताली+कन्—टाप्, ह्रस्व] १ ताली। कुजी। २. लिखित ताल-पत्रो, कागजो आदि का पृथक् और स्वतन्त्र पुलिंदा। नरथी। ३ ऐसी सूची जिसमे बहुत-सी वस्तुओ आदि के नामो का उल्लेख हो। फेहरिस्त। सूची। ४. [तलिक+टाप्] चपत। थप्पड। ५ ताल-मूली। मुसली। ६ मजीठ।

तालिब—वि०[अ०] १.तलब करनेवाला। २ खोजने या ढूँढनेवाला। ३ चाहनेवाला।

तालिब इल्म—पु०[अ०] [भाव० तालिब-इल्मी] १. वह जिसे इल्म अर्थात् विद्या की चाह हो। २. विद्यार्थी।

तालिम*—स्त्री०[सं० तल्प]१ शय्या। २ विस्तर। (डिं०)

तालियामार—पु०[हिं० ताली+मारना] जहाज का आगे या सामने का वह निचला अश जो पानी को काटता है। गलही। (लश०)

तालिश—पुं० [स०√तल् (प्रतिष्ठा)+इश णित्—वृद्धि] पर्वत। पहाड।

ताली—स्त्री० [स०√तल्+णिच्+अच्—ङीप्] १ एक प्रकार का पहाडी ताड़। वजर-वट्टू। २. ताल-मूली। मुसली। ३ भू-आँवला। ४ ताम्रवल्ली लता। ५ अरहर। ६ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। ७ मेहराव के वीचोवीच का पत्थर या ईंट जो दोनो ओर के पत्थरो या ईंटो को गिरने से रोके रहती है। ८ [ताल+अण्] ताड का रस। ताडी।

स्त्री०[हिं० ताला]१ ताले के साथ रहनेवाला वह छोटा उपकरण जिसकी सहायता से ताला खोला और वद किया जाता है। कुजी। चावी।

क्रि० प्र०—खोलना।—लगाना।

२. किसी प्रकार का आवागमन या मार्ग खोलने और वद करने का कोई उपकरण या साधन। जैसे—विजली के तार मे उसका प्रवाह रोकने की ताली। विशेष दे० 'कुजी'।

स्त्री०[स० ताल]१ थप थप शब्द उत्पन्न करने के लिए दोनो हाथो की हथेलियो को एक दूसरी पर मारने की क्रिया। २. उक्त क्रिया से उत्पन्न होनेवाला शब्द जो किसी की प्रशसा और अपनी प्रसन्नता का सूचक होता है। करतल-ध्वनि। थपोड़ी।

विशेष—कभी-कभी दूसरो का ध्यान आकृष्ट करने के लिए ऐसा शब्द उत्पन्न किया जाता है।

क्रि० प्र०—वजना।—वजाना।

मुहा०—ताली पिटना=किसी की दुर्दशा होने पर लोगो मे उसका उपहास होना। **ताली पीटना**=कोई अच्छा काम या वात देखकर और उससे प्रसन्न होकर उसकी प्रशसा और अपना समाधान सूचित करने के लिए हथेलियो से कई वार उक्त प्रकार का शब्द करना।

कहा०—एक हाथ से ताली नहीं वजती=कोई क्रिया या व्यवहार एक पक्ष से तव तक नही पूरा होता जव तक दूसरे पक्ष से भी वैसी ही क्रिया या व्यवहार न हो।

पु० शिव।

स्त्री०[हिं० ताल=जलाशय]छोटा ताल। तलैया। गडही।

स्त्री०[?] पैर की विचली उँगली का अगला भाग।

तालीका—पु०[अ० तअलीक]१ माल-असवाव की कुर्की या जव्ती। २. कुर्क या जव्त किए हुए माल-असवाव की सूची। तालिका।

ताली-पत्र—पु०[व०स०] तालीश-पत्र।

तालीम—स्त्री०[अ०]१ निपुण तथा योग्य वनाने के लिए किसी को सिखाई जानेवाली वातें या दिये जानेवाले उपदेश। २ पढना-लिखना सीखने या सिखाने का कार्य या कार्य-प्रणाली। शिक्षा।

तालीश-पत्र—पु०[व०स०] १ तमाल या तेजपत्ते की जाति का एक पेड जिसके कई अगो का उपयोग ओषधि के काम मे होता है। २ भू-आँवले की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा।

तालीश-पत्री—स्त्री०[स० व०स०, ङीप्] तालीश-पत्र।

तालु—पु०[स०√तॄ (तैरना)+ञुण्, लत्व] [वि० तालव्य] तालू।

तालु-कंटक—पु० [व०स०] एक रोग जिसमे तालू मे काँटे निकल आते हैं।

तालुक—पु०[स० तालु+कन्]१ तालू। २ तालू मे होनेवाला एक तरह का रोग।

†पु०=ताल्लुक (सवव)।

तालुका—स्त्री०[स० तालुक+टाप्]तालू के अन्दर की एक नाडी।

†पु०=ताअल्लुका।

तालु-जिह्व—पु०[व०स०] घडियाल।

तालु-पाक—पु०[व०स०] तालू मे होनेवाला एक रोग।

तालु-पुप्पुट—पु०[व०स०] तालुपाक रोग।

तालुशोष—पु०[व०स०] तालू मे होनेवाला एक तरह का रोग।

तालू—पु०[स० तालु]१ मुँह के अन्दर का वह ऊपरी भाग जो ऊपरवाले दाँतो की पक्ति और गले के कौए या घटी तक विस्तृत रहता है तथा जिसके नीचे जीभ रहती है। (पैलेट)

मुहा०—तालू उठाना=तुरन्त के जन्मे हुए वच्चे के तालू को दवाकर कुछ ऊपर और ठीक स्थान पर करना जिसमे मुँह अच्छी तरह खुल सके और उसके अन्दर कुछ अवकाश या जगह निकल आवे। **(किसी के) तालू मे दाँत जमना**=किसी का ऐसे वहुत बुरे या विकट काम की ओर प्रवृत्त होना जिससे अत मे स्वय उसी की वहुत वडी हानि हो। **(किसी के) तालू मे दाँत निकलना**=दे० 'दाँत' के मुहा० के अतर्गत। **तालू से जीभ न लगना**=वरावर कुछ न कुछ वकते-वोलते रहना। कभी चुप न रहना।

२. खोपडी के अन्दर और मुँह के उक्त अग के ऊपर का सारा भाग। दिमाग। मस्तिष्क।

मुहा०—तालू चटकना=प्यास, रोग आदि के कारण सिर मे वहुत अधिक गरमी जान पड़ना।

३ घोडो का एक अशुभ लक्षण जो ऐब या दोप माना जाता है।

तालूफाड—पु०[हिं० तालू+फाडना]हाथियो के तालू मे होनेवाला एक तरह का रोग जिसमे घाव हो जाते हैं।

तालूर—पु० [स० √तल् (प्रतिष्ठा करना)+णिच्+ऊर] पानी का भँवर।

तालूपक—पु० [स० √तल्+णिच्+ऊपक]=तालु।

तालेवर—वि० [अ० ताला=भाग्य+फा० वर (प्रत्य०)] १. धनाढ्य। धनी। २. भाग्यवान। सौभाग्यशाली।

ताल्लुक—पु० [अ० तअल्लुक] १ सबध। २ लगाव।

ताल्लुका—पु० [अ० तअल्लुक.] आस-पास के कई गाँवों का समूह जो किसी एक ही जमींदार के अधिकार मे होता था। इलाका।

ताल्लुकेदार—पु० [अ० तअल्लुक+फा० दार] १ किसी ताल्लुके का जमींदार। २. अगरेजी शासन मे अवध प्रदेश मे वह जमींदार जिसे सरकार से कुछ विशिष्ट अधिकार प्राप्त होते थे।

ताल्वर्बुद—पु० [स० तालु-अर्बुद, ष०त०] तालू मे उत्पन्न होनेवाला एक तरह का काँटा जिससे बहुत कष्ट होता है।

ताव—पु० [स० ताप, प्रा० ताव] १. आँच, धूप आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह गरमी जो वस्तुओं को लगकर तपाती या पकाती और व्यक्तियों को लगकर शारीरिक कष्ट देती है। गरमी। ताप।

क्रि० प्र०—लगना।

मुहा०—(किसी वस्तु मे) ताव आना=किसी वस्तु का जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना। जैसे—जब तक तवे मे ताव न आवे तब तक उस पर रोटी नही डालनी चाहिए। (किसी वस्तु का) ताव खा जाना=तेज आँच लगने पर आवश्यकता से अधिक गरम होकर जल या बिगड़ जाना अथवा बे-सवाद हो जाना। कुछ या बहुत जल जाना। जैसे—शीरा ताव खा जायगा तो कड़ुआ हो जायगा। (किसी व्यक्ति का) ताव खाना=अधिक गरमी या धूप लगने से अस्वस्थ या विकल हो जाना। जैसे—लडका कल दोपहर मे ताव खा गया था, इसी से रात को उसे बुखार आ गया। (आँच का) ताव बिगड़ना=आँच का इस प्रकार आवश्यकता से कम या ज्यादा हो जाना कि उस पर पकाई जानेवाली चीज ठीक तरह से न पकने पावे।

२ वह आवेश या मनोवेग का उद्दीप्त रूप जो काम, क्रोध, घमंड आदि दूषित भावों या विचारों के फलस्वरूप अथवा बढावा देने, ललकारने आदि पर उत्पन्न होता और भले-बुरे का ध्यान भुलाकर मनुष्य को किसी काम या बात मे वेगपूर्वक अग्रसर या प्रवृत्त करता है।

मुहा०—ताव चढ़ना=मन मे उक्त प्रकार का विकार या स्थिति उत्पन्न होना। जैसे—अभी इन्हे ताव चढेगा तो बात की बात मे सौ-दो-सौ रुपए खर्च कर डालेंगे। (किसी को) ताव दिखाना उक्त प्रकार की स्थिति मे आकर अभिमानपूर्वक किसी को दबाने, नीचा दिखाने, हराने आदि की तत्परता प्रकट करना। जैसे—बहुत ताव मत दिखाओ, नही तो अभी तुम्हे दुरुस्त कर दूँगा। ताव-पेंच खाना=रह-रहकर क्रोध का आवेश दिखाते हुए रुक-रुक जाना। (किसी व्यक्ति का) ताव में आना=अभिमान, आवेश, क्रोध, दूषित मनोविकार आदि से युक्त होकर कोई दुस्साहसपूर्ण काम करने पर उतारू होना या किसी ओर प्रवृत्त होना।

३. कोई काम या बात तुरत या बहुत जल्दी पूरी करने या होने की प्रबल उत्कठा या कामना। उतावलेपन से युक्त चाह या वासना।

क्रि० प्र०—चढना।

पद—ताव पर=प्रबल आवश्यकता, इच्छा, मनोवेग आदि उत्पन्न होने की दशा मे अथवा उत्पन्न होते ही तत्काल या तुरत। जैसे—तुम्हारे ताव पर तो पुस्तक छप नही जायगी, उसमे समय लगेगा।

पद—ताव-भाव।

४. पदार्थों आदि की वह स्थिति जिसमे वे कृत्रिम उपायों या स्वाभाविक रूप से कुछ कड़े, तने या सीधे रहते हैं और उनमें लचक या कुनकुनाहट या शिथिलता नहीं रहती। जैसे—(क) इस्तरी करने से कपड़ों मे ताव आ जाता है। (ख) लोगों रुपए के कर्जदार होने पर भी वे बाजार मे बहुत ताव मे चलते हैं।

मुहा०—मूँछों पर ताव देना=मूँछें उमेठ या मरोड़कर खड़ी या सीधी करते हुए अपनी ऐंठ, पराक्रम या शान दिखाना।

५. मन को दुःखी या शरीर को पीड़ित करनेवाली कोई बात। कष्ट। तकलीफ। ताप। उदा०—चद्रावत तज साम भ्रम, विणही पड़ियो ताव।—बाँकीदास।

पु० [फा० ता=गरया] कागज का चौकोर और बड़ा टुकड़ा जो पूरी इकाई के रूप मे बनकर आता और बाजारों मे मिलता है। तख्ता। जैसे—दो-तीन ताव कागज भी लेते आना।

विशेष—यद्यपि फरहग आसफिया के आधार पर हिंदी शब्द-सागर मे भी इस अर्थ मे 'ताव' शब्द फा० 'ता' से व्युत्पन्न माना गया है, परन्तु यह व्युत्पत्ति कुछ ठीक नही जान पड़ती। हो सकता है कि 'ताव' का कागज के तख्तेवाला यह अर्थ भी 'ताव' के उस चौथे अर्थ का ही विस्तृत रूप हो जो ऊपर 'ताप' से व्युत्पन्न प्रसंग मे बतलाया गया है और जिसके अन्तर्गत कपड़े मे ताव आने और बाजार मे ताव से चलने के उदाहरण दिये गये है।

तावत—अव्य० [स० तद्+डावतु] १ उस अवधि या समय तक। तब तक। २. उस सीमा या हद तक। वहाँ तक। ३ उस परिमाण या मात्रा तक। (यावत् का नित्य-सबंधी या सबध-पूरक)

तावदार—वि० [हि० ताव+फा० दार] [भाव० तावदारी] १ (व्यक्ति) जिसमे ताव हो। जो उमग या जोश मे आकर अथवा साहसपूर्वक कोई काम कर सकता हो। २. (पदार्थ) जिसमे कुछ विशेष कड़ापन तथा सौंदर्य हो। जैसे—तावदार कपडा या जूता।

तावना*—स० [तपाना] १ गरम करना। जलाना। २ कष्ट या दुःख देना।

तावबंद—पुं० [हि० ताव+फा० बद] वह रसायन जिसके चाँदी का खोट उसे तपाने पर भी दृष्टिगत नही होता।

ताव-भाव—पु० [हि० ताव+भाव] १. वह स्थिति जो किसी काम, बात या व्यक्ति की विशिष्ट प्रवृत्ति या स्वरूप के कारण उत्पन्न होती है और जिससे उसके बल, मान, वेग आदि का अनुमान किया जाता है। जैसे—जरा उनका ताव-भाव तो देख लो, फिर समझौते की बातचीत चलाना।

२. किसी काम, चीज या बात का ठीक-ठीक अन्दाज या हिसाब। जैसे—वह तरकारी मे बहुत ताव-भाव से मसाले डालता है।

३. ऐंठ। ठसक। शेखी। जैसे—जरा देखिए तो आप कैसे ताव-भाव से चले आ रहे हैं। ४. रग-ढग। तौर-तरीका।

तावर†—पु०=तावरा।

तावरा†—पु० [सं० ताप] १. गरमी। ताप। २. आँच, धूप आदि के कारण होनेवाली गरमी। ३. गरमी के कारण सिर मे आनेवाला चक्कर या होनेवाली बेहोशी।

क्रि० प्र०—आना।

तावरी—स्त्री०[सं० ताप, हिं० ताव+री (प्रत्य०)]१. गरमी। ताप। २. जलन। दाह। ३. घाम। धूप। ४ गरमी लगने पर सिर में आनेवाला घुमटा या चक्कर। ५ ज्वर। बुखार। ६. ईर्ष्या। जलन।

तावरो*—पु०=तावरा।

तावल—स्त्री०[हिं० ताव] उतावलापन। हड़बड़ी।

तावला—वि०=उतावला।

तावा†—पु० [हिं० ताव]१. तवा। २. वह कच्चा खपड़ा जिसके किनारे अभी मोड़े न गये हों और इसीलिए जिसका रूप तवे का-सा हो। (कुम्हार)

तावान—पु०[फा०] आर्थिक क्षति आदि होने पर उसकी पूर्ति के लिए या बदले में दिया अथवा लिया जानेवाला धन। डाँड़।

क्रि० प्र०—देना।—लगना।—उगाना।—लेना।

ताविष—पु०[सं० √तव् (गति)+टिषच्, णित्वात् वृद्धि]=तावीष।

ताविषी—स्त्री०[सं० ताविष+ङीप्] १. देवकन्या। २ नदी। ३ पृथ्वी। भूमि।

तावीज—पु०[अ० तअवीज]१. कागज, भोज-पत्र आदि पर लिखा हुआ वह यंत्र-मंत्र जो अपनी रक्षा आदि के विचार से छोटी डिबिया के आकार के संपुट में बन्द करके गले में या बाँह पर पहना अथवा कमर में बाँधा जाता है। रक्षा-कवच।

क्रि० प्र०—पहनना।—बाँधना।

२. चाँदी, सोने आदि का वह गोलाकार या चौकोर छोटा संपुट जो गहने के रूप में गले में या बाँह पर पहना जाता है।

क्रि० प्र०— पहनना।

तावीष—पु०[सं०=ताविष, पृषो० दीर्घ] १. सोना। स्वर्ण। २ स्वर्ग। ३ समुद्र। सागर।

विशेष—वाचस्पत्य अभिधान में शब्द का यह रूप अशुद्ध और असिद्ध कहा गया है।

तावुरि—पुं०[यूना० टारस] वृष राशि।

ताश—पुं०[अ० तास=तश्त या चौड़ा बरतन]१ एक तरह का चमकीला कपड़ा जिसका ताना रेशम का और बाना बादले का होता है। २ गत्ते या दफ्ती के ५२ चौखूँटे पत्तों की गड्डी जिसके पत्तों पर काले और लाल रंगों की बूटियाँ, तसवीरें आदि बनी होती हैं तथा जिससे विभिन्न खेल खेले जाते हैं। ३. उक्त गड्डी में का कोई पत्ता। ४ उक्त पत्तों से खेला जानेवाला खेल। ५ वह छोटी दफ्ती जिस पर कपड़े सीने का तागा लपेटा रहता है।

ताशा—पु०[फा० तास] डुग्गी की तरह का परन्तु उससे कुछ बड़ा और चिपटा बाजा जो गले में लटकाकर तीलियों के आघात से बजाया जाता है।

तास*—सर्व० पु० हिं० में 'तिस' या 'उस' का एक रूप। उदा०—जास का सेवक तास को पाइहै।—कबीर।

†पु०=ताश।

तासन, तासों*—सर्व० [हिं० तास] उससे।

तासला—पु०[देश०] भालू को नचाने के लिए उसके गले में बाँधी जानेवाली रस्सी।

तासा—स्त्री०[सं० त्रय-तिहरा] तीन बार की जोती हुई भूमि।

†पु०=ताशा(बाजा)।

तासीर—स्त्री०[अ०] किसी वस्तु को उपयोग में लाने अथवा उसका सेवन करने पर उसके तात्त्विक गुण का पड़नेवाला प्रभाव। जैसे—इस दवा की तासीर गरम (या ठंडी) है।

तासु —सर्व० [हिं० ता+सु (प्रत्य०)]१ उसका। २. उनको।

तासूं†—सर्व०=तासों।

तासों†—सर्व० [हिं० ता+सों (प्रत्य०)]उससे।

तास्कर्य—पु०[सं० तस्कर+ष्यञ्] तस्कर होने की अवस्था या भाव। तस्करता।

तास्सुब—पु०=तअस्सुब।

ताहम—अव्य०[फा०] इतना या ऐसा होने पर भी। (प्रायः विरोधी भाव सूचित करने के प्रसंग में) जैसे—ताहम आप तो चले ही जायँगे।

ताहि†—सर्व० [हिं० ता० हिं० (प्रत्य०)]उसको। उसे।

ताहिरी—स्त्री०[अ०] तहरी नाम की खिचड़ी।

ताहीं†—अव्य० दे० 'ताईं' या 'तईं'।

तिंतिड़—पु०[सं०=तिंतिडी, पृषो० सिद्धि] इमली।

तिंतिडिका—स्त्री०[सं० तिंतिडी+कन्—टाप्, ह्रस्व] इमली।

तिंतिड़ी—स्त्री०[सं०√तिम् (आर्द्र होना)+ईकन्, पृषो० सिद्धि] इमली।

तिंतिड़ीक—पु०[सं०√तिम्+ईकन्, नि० सिद्धि] इमली।

तिंतिड़ीका—स्त्री०[सं० तिंतिडीक+टाप्] इमली।

तिंतिरांग—पु०[सं० तितिर-अंग, ब०स०] इसपात। वज्रलोह।

तिंतिलिका—स्त्री०[सं०=तिंतिडिका, ड—ल]=तिंतिडिका।

तिंतिली—स्त्री०[सं०=तिंतिडी, ड—ल]=तिंतिडी।

तिंदिश—पु०[सं०=ढिंडिश, नि० सिद्धि] टिंडसी नाम की तरकारी। डेढसी। टिंडा।

तिंदु—पु० [सं०√तिम्+कु, नि०सिद्धि] तेंदू का पेड़।

तिंदुक—पु० [सं० तिंदु+कन्] १ तेंदू का पेड़। २. [तिंदु√क (प्रतीत होना)+क] एक कर्ष या दो तोले की तौल।

तिंदुकतीर्थ—पु०[मध्य०सं० ?] ब्रज मंडल के अन्तर्गत एक तीर्थ।

तिंदुकी—स्त्री०[सं० तिंदुक+ङीप्] तेंदू का पेड़।

तिंदुकिनी—स्त्री०[सं० तिंदुक+इनि—ङीप्] आवर्तकी। भगवत-वल्ली।

तिंदुल—पु०=[सं० तिंदुक, पृषो० क—ल] तेंदू का पेड़।

ति—सर्व० [सं० तद् या त] वह।

वि० हिं० तीन का संक्षिप्त रूप जो उपसर्ग के रूप में कुछ शब्दों के आरम्भ में लगता है । जैसे—तिआह, तिकोना आदि।

तिअ—स्त्री०=तिय (स्त्री)।

पु० दे० 'तीया'।

तिआह†—पु०[हिं० ति+सं० विवाह]१ किसी का (दो बार विधवा या विधुर हो चुकने पर) तीसरी बार होनेवाला विवाह। २ वह व्यक्ति जिसका इस प्रकार तीसरी बार विवाह हुआ हो।

पु०[सं० त्रि+पक्ष] वह श्राद्ध जो किसी की मृत्यु के पैंतालीसवें दिन अर्थात् तीन पक्ष पूरे होने पर किया जाता है।

तिउरा†—पु०[देश०] केसारी या खेसारी नामक अन्न।

स्त्री०[देश०] केसारी। खेसारी।

तिउरी —स्त्री०=त्योरी।
तिउहार†—पु०=त्योहार।
तिकड़म—पु०[स० त्रि+क्रम] ऐसी गहरी अनैतिक चाल या तरकीब जिससे कोई कठिन और प्राय असभव प्रतीत होनेवाला काम सहज मे हो जाय।
तिकड़मी—वि०[हिं० तिकडम] जो तिकडम से काम करता हो।
तिकड़ा—पु०[स० त्रिक्]१ एक साथ बनी या रहनेवाली तीन चीजो का समूह। २ पहनने की वे धोतियां जो तीन एक साथ बुनी गई हो। विशेष—आज-कल जिस प्रकार धोतियो के जोडे बनते और बिकते हैं, उसी प्रकार पहले मोटी धोतियो के तिकडे भी बनते और बिकते थे।
तिकड़ी—स्त्री०[हि० तीन+कडी] १ जिसमे तीन कडियाँ हो। २. चारपाई की बुनावट का वह प्रकार या रूप जिसमे तीन-तीन रस्सियाँ एक साथ बुनी जाती है।
स्त्री०=तिक्का या तिक्की (ताश का पत्ता)।
तिक तिक—स्त्री० [अनु०] किसी पशु को हांकते समय मुँह से किया जानेवाला तिक तिक शब्द।
तिकरि—अव्य०[स० त्वत्कृते] तुम्हारे लिए। उदा०—त्रांहां तिकरि पसारी बेड।—प्रिथीराज।
तिकानी—स्त्री०[हिं० तीन+कान] धुरी मे लगाई जानेवाली वह तिकोनी लकडी जो पहिये को धुरी से बाहर निकलने से रोकती है।
तिकार†—पु०[स० त्रि+कार]१. तीसरी बार जोता हुआ खेत। २. तीन बार खेत जोतने का काम।
तिकुरा—पु०[हि० तीन+कूरा]उपज का तीसरा अश या भाग।
तिकोन —पु०=त्रिकोण।
वि०=तिकोना।
तिकोना—वि०[स० त्रिकोण][स्त्री० तिकोनी] जिसके या जिसमे तीन कोने हो। जैसे—तिकोना मकान।
पु०१ समोसा नाम का पकवान। २ धातुओ पर नक्काशी करने की एक प्रकार की छेनी। ३ क्रोध-सूचक या चढ़ी हुई त्योरी।
तिकोनिया†—वि० [हिं० तिकोना] तीन कोनोवाला।
स्त्री०[हिं० तिकोना] बढइयो का लकडी का एक तिकोना उपकरण या औजार जिससे कोनो की सीध नापते है।
तिक्का—पु०[स० त्रिक्]ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती है। तिक्की। तिडी।
पु०[फा० तिक्क] मास की कटी हुई बोटी।
मुहा०—तिक्का बोटी करना=पूरी तरह से काटकर खड-खड करना।
तिक्की—स्त्री०[स० त्रिक्]१ ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं। तिडी। २ गजीफे का उक्त प्रकार का पत्ता।
तिक्ख*—वि०[स० तीक्ष्ण; प्रा० तिक्ख]१ तीखा। तीक्ष्ण। २ चोखा। तेज। ३ तीव्र बुद्धिवाला। चालाक।
तिक्त—वि०[स०√तिज् (तीखा करना)+क्त]जो गुरुच, चिरायते आदि के स्वाद की तरह का हो। तीता।
पु०१. पित्त-पापडा। २. कुटज। कुरैया। ३ वरुण वृक्ष। ४ खुशबू। सुगध।
तिक्तकंदिका—स्त्री०[स० तिक्त-कद, मध्य०स०,+कन्—टाप्, इत्व] गधपत्रा। वनकचूर।
तिक्तक—वि०[स० तिक्त+कन्] तिक्त।
पु० १. चिरायता। २ नीम। ३. काला खैर। ४ इगुदी। हिंगोट। ५. परवल। पटोल। ६ कुटज। कुरैया।
तिक्त-काड—पु०[ब० स०] चिरायता।
तिक्तका—स्त्री०[स० तिक्त√कै (प्रकाशित होना)+क—टाप्] कडुआ कद्दू। तितलौकी।
तिक्त-गंधा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] वराहीकद।
तिक्तगंधिका—स्त्री०[स०तिक्तगन्धा+कन्—टाप्, ह्रस्व,इत्व]वराहीकद।
तिक्त-गुंजा—स्त्री०[उपमि०स०, परनिपात]कजा। करज।
तिक्त-घृत—पु०] कर्म०स०] वैद्यक मे, कुछ विशिष्ट औषधियों के योग से बनाया हुआ घी जो बहुत से रोगों का नाशक माना जाता है।
तिक्त-तंडुला—स्त्री०[ब०स०] पिप्पली। पीपल।
तिक्तता—स्त्री०[स० तिक्त+तल—टाप्] तिक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। तीतापन।
तिक्त-तुंडी—स्त्री०[स०=तिक्त-तुबी, पृषो० सिद्धि] कडुई तुरई।
तिक्त-तुबी—स्त्री०[कर्म०स०] कडुआ कद्दू। तितलौकी।
तिक्त-दुग्धा—स्त्री०[ब०स०]१. खिरनी। २ मेढासिगी।
तिक्त-धातु—स्त्री०[कर्म०स०] शरीर के अदर का पित्त जो तिक्त या तीता होता है।
तिक्त-पत्र—पु०[ब०स०] ककोडा। खेखसा।
तिक्त-पर्णी—स्त्री०[स० ब०स०, ङीप्] कचरी। पेंहटा।
तिक्त-पर्वा—पु०[ब०स०,टाप्]१ दूब। दूर्वा। २ हुलहुल। ३. जेठी मधु। मुलेठी। ४. गिलोय। गुडुच।
तिक्त-पुष्पा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] पाठा।
तिक्त-फल—पु०[ब०स०] रीठा। निर्मलफल।
तिक्त-फला—स्त्री० [स० ब०स०,टाप्] १ भटकटैया। २ खरबूजा। ३ कचरी।
तिक्त-भद्रक—पु०[कर्म०स०] परवल। पटोल।
तिक्त-यवा—स्त्री०[स० ब०स०, टाप्] शखिनी।
तिक्तरोहिणिका—स्त्री०[स० तिक्तरोहिणी+कन्,—टाप्, ह्रस्व]कुटकी।
तिक्तरोहिणी—स्त्री० [स० तिक्त√रुह् (उगना)+णिनि—ङीप्] कुटकी।
तिक्त-वल्ली—स्त्री०[कर्म०स०] मूर्वालता। मरोडफली। चुरनहार।
तिक्त-बीजा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] तितलौकी। कडुआ कद्दू।
तिक्त-शाक—पु० [ब० स०] १ खैर का पेड। २ वरुण वृक्ष। ३ पत्र-सुन्दर नाम का साग।
तिक्त-सार—पु० [ब० स०] १ रोहिस नाम की घास। २. खैर का पेड।
तिक्तांगा —स्त्री० [स० तिक्त-अंग, ब० स०, टाप्] +अच्+टाप्] पाताल गारुडी लता। छिरेटा।
तिक्ता—स्त्री० [स० तिक्त+अच्—टाप्] १ कुटकी। २ पाठा। पाढा। ३ खरबूजा। ४. नक-छिकनी। ५. यवतिक्ता नाम की लता।
तिक्ताक्ति—स्त्री० [स० तिक्त से] एक प्रकार का वाष्प (गैस) जो

वर्ण-हीन और उग्र गंधवाला होता है। इसके योग से जमे हुए कण प्राय औषध, खाद आदि के काम आते हैं। (एमोनिया)

तिक्ताख्या—स्त्री० [स० तिक्त-आख्या, व० स०] तितलौकी।

तिक्तिका—स्त्री० [सं० तिक्ता+कन्—टाप्, इत्व] १ तितलौकी। २ काक-माछी।

तिक्तिरी—स्त्री० [?] सँपेरो की बीन। तूमडी।

तिक्ष—वि० [भाव० तिक्षता]=तीक्ष्ण।

तिख—वि० [स० त्रि] (खेत) जो बीज बोये जाने से पहले तीन बार जोता गया हो।

तिखटी|-स्त्री० =तिकठी।

तिखरा—वि० दे० 'तिग्र'।

तिखाई—स्त्री० [हिं० तीखा] तीखे होने की अवस्था, गुण या भाव। तीखापन।

तिखारना—स०[सं० त्रि+हिं० आखर] ताकीद करते हुए किसी से कोई बात तीन अथवा कई बार कहना।

तिखूँटा| —वि०=तिखूँटा।

तिखूँटा—वि० [हिं० तीन+खूँट] जिसके तीन खूँट अर्थात् तीन कोने हो। तिकोना।

तिग| —पु० =त्रिक्।

तिगना|—स० [देश०] देखना। (दलाल)
वि० दे० 'तिगुना'।

तिगला| —पु० [हिं० तीन+गली] [स्त्री० अल्पा० तिगली] वह स्थान जहाँ से तीन गलियो को रास्ते जाते हो। तिरमुहानी।

तिगुना—वि० [स० त्रिगुण] [स्त्री० तिगुनी] जो किसी मान या मात्रा के अनुपात में तीन गुना हो। जितना होता हो, उतना तथा उससे दूना और।

तिगूचना—स०=तिगना (देखना)।

तिगून—पु० [हिं० तिगुना] १. तिगुने होने की अवस्था या भाव। २. गाने-बजाने मे, क्रमश आगे बढ़ते और तेज होते हुए ऐसी स्थिति मे पहुँचना जब कि आरभवाले मान से तिहाई समय मे गाना-बजाना होता है और गति या वेग तिगुना बढ जाता है।

तिग्म—वि० [सं०√तिज् (तीखा करना)+मक्] [भाव० तिग्मता] तीक्ष्ण। तेज।
पु० १ वज्र। २. पीपल।

तिग्म-कर—पु० [व० स०] सूर्य।

तिग्म-केतु—पु० [व० स०] भागवत मे वर्णित एक ध्रुववशीय राजा।

तिग्मता—स्त्री० [स० तिग्म+तल्—टाप्] तिग्म अर्थात् तीक्ष्ण होने की अवस्था या भाव।

तिग्म-दीधिति—पु० [व० स०] सूर्य।

तिग्म-मन्यु—पु० [व० स०] महादेव। शिव।

तिग्म-रश्मि—पु० [व० स०] सूर्य।

तिग्मांशु—पु० [तिग्म-अशु, व० स०] सूर्य।

तिघरा—पु० [स० त्रिघट] चौडे मुँहवाला एक तरह का घडा या मटका जिसमे दही, दूध आदि रखते हैं।

तिचिया—पु० [?] जहाज पर का वह आदमी जो नक्षत्रो आदि की गति-विधियाँ देखता है।

तिच्छ (न)—वि०=तीक्ष्ण।

तिजरा—पुं० [स० त्रि+ज्वर] हर तीसरे दिन आने, चढने या होनेवाला ज्वर। तिजारी।

तिजवाँसा—पु० [हिं० तीजा=तीसरा+मास=महीना] कुछ विशेष जातियो मे होनेवाला वह उत्सव जो किसी स्त्री को तीन महीने का गर्भ होने पर मनाया जाता है।

तिजहरिया| —पु०=तिजारी (बुखार)।

तिजारा|—पु०=तिजारी (ज्वर)।

तिजारत—स्त्री० [अ०] [वि० तिजारती] १ रोजगार। व्यापार। व्यवसाय। २ वाणिज्य।

तिजारी—स्त्री० [हिं० तीन+ज्वर] हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर या बुखार जो मलेरिया का एक प्रकार है।

तिजिया|—वि० [हिं० तीजा=तीसरा] (व्यक्ति) जिसके तीन विवाह हो चुके हो।

तिजिल—पु० [?] १ चद्रमा। २ राक्षस।

तिजोरी—स्त्री०[देश०] लोहे की वह मजबूत छोटी किंतु भारी अलमारी या पेटी जिसमे गहने, नकदी आदि सुरक्षा की दृष्टि से रखी जाती है।

तिड| —पु० [?] पक्ष। (डि०)

तिड़लना—स० [?] खीचना। उदा०—जनि अनुरागे पाछ धरि पेललि कर धरि काम तिडली। —विद्यापति।

तिड़ी—स्त्री० [स० त्रि=तीन] ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ बनी होती हैं। तिक्की।
वि० [स० तिर्यक् ?] (व्यक्ति) जो कही से खिसक, टल या हट गया हो। (बाजारू) जैसे—मुझे देखते ही वहाँ वहाँ से तिडी हो गया।

तिड़ी-बिड़ी| —वि०=तितर-बितर। (दे०)

तिणि—अव्य० [स० तेन] इसलिए। उदा०—तथापि रहे न हूँ सकूँ बकूँ तिणि।—प्रिथीराज।

तित*—क्रि० वि० [स० तत्र] १ उस स्थान पर। वहाँ। २. उस ओर। उधर।

तितना—वि०=उतना।

तितर-बितर—वि० [हिं० तीतर+बटेर=कुछ एक तरह का, कुछ दूसरी तरह का] १ जो अपने क्रम या स्थान से हट-बढ कर या अव्यवस्थित रूप से कुछ इधर और उधर हो गया हो। अस्त-व्यस्त। जैसे—भीड (या सेना) तितर-बितर हो गई। २ अनियमित रूप से बिखरा हुआ। जैसे—घर का सारा सामान तितर-बितर पडा है।

तितरात—पु० [?] एक पौधा जिसकी जड औषध के काम मे आती है।

तितरोखी—स्त्री० [हिं० तीतर+रोख] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

तितल|—वि०=शीतल।

तितली—स्त्री० [स० तित्तरीक] १ एक तरह का उडनेवाला छोटा कीडा जिसके पख रग-बिरगे और बहुत सुदर होते है और जो प्राय फूलो पर मँडराता रहता तथा उनका रस चूसता है। २ लाक्षणिक रूप मे, सुन्दर बालिका या स्त्री जो बहुत चचल हो और प्राय खूब बनी-ठनी रहती हो। ३ वन-गोभी का एक नाम।

तितलौआ—पु० दे० 'तितलौकी'।

तितलौकी† स्त्री० [देश०] १ एक प्रसिद्ध लता जिसमे कद्दू के आकार-प्रकार के ऐसे फल लगते है जो स्वाद मे कडवे या तीते होते है। २. उक्त लता का फल।

तितारा†—पु० [स० त्रि+हिं० तार] १ सितार की तरह का तीन तारो-वाला ताल देने का एक बाजा। २ फसल की तीसरी बार की सिंचाई।
वि० तीन तारोवाला। जैसे—तितारा डोरा या ताना।

तितिंबा†—पु०=तितिम्मा।

तितिक्ष—वि० [स०√तिज् (सहन करना)+सन्+अच्] तितिक्षु।
पु० एक प्राचीन ऋषि।

तितिक्षा—स्त्री० [स०√तिज्+सन्+अ—टाप्] सरदी, गरमी आदि सहन करने की शारीरिक शक्ति। २ कष्ट, दुख आदि झेलने का सामर्थ्य। ३. धैर्यपूर्वक या चुप-चाप कोई आघात, आक्षेप आदि सहन करने का भाव। ४ क्षमाशीलता। ५ दे० 'मर्षण'।

तितिक्षु—वि० [स०√तिज्+सन्+उ] १ जिसमे तितिक्षा अर्थात् सहन-शक्ति हो। सहनशील। २ क्षमाशील। क्षात।
पु० एक पुरुवशी राजा जो महामना का पुत्र था।

तितिभ—पु० [स० तिति√भण् (बोलना)+ड] १ बीर बहूटी। २ जुगनूं।

तितिम्मा—पु० [अ०] १ शेष बचा हुआ अश। अवशिष्ट अश। २. पुस्तको आदि का परिशिष्ट। ३ व्यर्थ का झझट या विस्तार। ४ व्यर्थ का आडवर। ढकोसला।

तितिर (तिरि)—पु० [स०=तित्तिरि, पृषो० सिद्धि] तीतर (पक्षी)।

तितिल—पु० [स०√तिल् (चिकना करना)+क, द्वित्व] १ मिट्टी की नाँद। २ ज्योतिष मे, तैत्तिल नामक करण।

तितीर्षा—स्त्री० [स०√तॄ (तैरना)+सन्+अ—टाप्] १ तैरने की इच्छा। २ तरने अर्थात् भव-सागर से पार होने की इच्छा।

तितीर्षु—वि० [स०√तॄ+सन्+उ] १ जो तैरने अर्थात् पार उतरने का इच्छुक हो। २. मोक्ष प्राप्ति की इच्छा करनेवाला।

तितुला†—पु० [देश०] गाडी के पहिये का आरा।

तिते*—वि० [स० तति] उतने। (सख्या वाचक)

तितेक—वि० [हिं० तितो+एक] उस मान या मात्रा का। उतना।

तितै*—क्रि० वि० [हिं० तित+ई (प्रत्य०)] १ उस ओर। उधर। २ उस जगह। वहाँ। ३ वहाँ ही। वही।

तितो*—क्रि० वि० =तेता (उतना)।

तित्तह*—अव्य० [स० तत्र] उस स्थान पर। वहाँ।

तित्तिर—पु० [स० तित्ति√रा (दान)+क] [स्त्री० तित्तिरी] १ तीतर नामक पक्षी। २ तितली नाम की घास।

तित्तिरी—पु० [स० तित्ति√रु (शब्द करना)+डि] १. तीतर पक्षी। २ यास्क मुनि के एक शिष्य जिन्होने यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा चलाई थी। ४ यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा।

तिथ—पु० [स०√तिज् (तीखा करना)+थक्] १ अग्नि। आग। २ कामदेव। ३ काल। समय। ४. वर्षा। काल। बरसात।
†स्त्री०=तिथि।

तिथि—स्त्री० [स०√अत् (सतत गमन)+इथिन्] १ चाद्रमास के किसी पक्ष का कोई दिन अथवा उसे सूचित करनेवाली कोई सख्या। मिती।
विशेष—प्रतिपदा से अमावस या पूर्णिमा तक साधारणत १५ तिथियाँ होती है।
२. उक्त के आधार पर पद्रह की सख्या। ३ श्राद्ध आदि करने के विचार से किसी की मृत्यु की तिथि। ४ दे० 'दिनाक'।

तिथि-क्षय—पु० [प०त०] चाद्र गणना के अनुसार पक्ष मे किसी तिथि का घटना या मान न होना। तिथिहानि।

तिथित—भू०कृ० [स० तिथि से] जिस पर तिथि या तारीख डाली गई या पडी हुई हो। (डेटेड)

तिथि-पति—पु० [प०त०] वह देवता जो किसी तिथि का स्वामी हो।
विशेष—बृहत्सहिता के अनुसार प्रतिपदा के ब्रह्मा, दूज के विधाता, षष्ठी के षडानन आदि आदि देवता माने गये है।

तिथि-पत्र—पु० [प०त०] पचाग। पत्रा।

तिथिप्रणी—पु० [स० तिथि+प्र√नी (लेजाना)+क्विप्] चद्रमा।

तिथ्य†—स्त्री०=तिथि।
पु०=तथ्य।

तिथ्यर्ध—पु० [तिथि-अर्ध, प०त०] करण। (ज्योतिष)

तिदरा—वि० [हिं० तीन+फा० दर=दरवाजा] [स्त्री० अल्पा० तिदरी] तीन दरोवाला।
पु० तीन दरोवाला कमरा।

तिदारी—स्त्री० [देश०] बत्तख की तरह की एक शिकारी चिडिया।

तिदुआरा—वि०, पु० [स्त्री० तिदुआरी]=तिदरा।

तिधर†—क्रि० वि० [स० तत्र] उधर। उस ओर।

तिधारा—पु० [स० त्रिधार] एक प्रकार का थूहर (सेहुड) जिसमे पत्ते नही होते। इसे बज्री या नरसेज भी कहते है।

तिधारी काडवेल—स्त्री० [स०] हडजोड (पौधा)।

तिन—सर्व० हि० 'तिस' का अवधी भाषा मे बहुवचन रूप।
पु०=तृण।
मुहा०—**तिन तूरना**=दे० (तिनका के अतर्गत) 'तिनका तोडना।'

तिनउर—पु० [स० तृण+हिं० उर या और (प्रत्य०)] तिनको का ढेर।

तिनकना—अ० [हिं० चिनगारी, चिनगी या अनु०] अपने विरुद्ध कोई बात अप्रत्याशित रूप से या सहसा सुनकर क्रुद्ध हो जाना। तिनगना।

तिनका—पु० [स० तृण] सूखी घास या वनस्पति के डठलो आदि का छोटा टुकडा। तृण।
मुहा०—**(अपने सिर से) तिनका उतारना**=नाममात्र को थोडा-बहुत काम करके यह जतलाना कि हमने बडा उपकार किया है। बला टालना। **(किसी से) तिनका तोड़ना**=स्थायी रूप से सबध छोडना। कुछ भी लगाव या वास्ता न रखना। जैसे—हमने तो उसी दिन तिनका तोड दिया था।
विशेष—हिन्दुओ मे मृतक का शवदाह कर चुकने पर उपस्थित मित्र और सबधी एक साथ बैठकर तिनका तोडने की एक रसम पूरी करते है। इसी से यह मुहा० बना है।
मुहा०—**(किसी के सिर से) तिनका तोडना**=(क) रूपवान या

सुन्दर व्यक्ति को देखकर उसे नजर लगने से बचाने के लिए स्त्रियों का उसके सिर पर से तिनका उतारकर तोडते हुए फेंकना। (ख) उक्त प्रकार से तिनका तोडते हुए किसी का कष्ट या सकट अपने ऊपर लेना। बलाएँ लेना। (दाँतो मे) तिनका पकड़ना या लेना=किसी का अनुग्रह या कृपा प्राप्त करने के लिए उसके आगे उसी प्रकार परम दीन या विनीत बनना जिस प्रकार गौ मुँह मे तिनका लेकर दीनतापूर्वक सामने आती है। तिनके का पहाड़ करना=जरा-सी या बहुत छोटी बात को बहुत अधिक बढा-चढा देना। तिनके चुनना=विरह, शोक आदि के कारण पागलो की तरह और बहुत उदास होकर बिलकुल तुच्छ और निरर्थक काम करते हुए समय बिताना।

पद—तिनके का सहारा=बहुत ही थोडा या नाम-मात्र का वैसा ही सहारा जैसा 'डूबते को तिनके का सहारा' वाली कहावत मे कहा जाता है। तिनके की आड या ओट=नियम, मर्यादा आदि के पालन के लिए बीच मे रखा जानेवाला नाम-मात्र का परदा या व्यवधान।

कहा०—तिनके की ओट पहाड़=कभी-कभी किसी छोटी-सी बात की आड़ मे भी बहुत बडी बात होती या हो सकती है।

तिनका-तोड—पु०[हिं० तिनका+तोडना]पारस्परिक सबध इस प्रकार टूटना कि फिर स्थापित न हो सके। ('किसी से तिनका तोडना' वाले मुहा० के आधार पर)

तिनगना†—अ०= तिनकना।

तिनगरी—स्त्री०[देश०] एक तरह का मीठा पकवान।

तिनतिरिया—स्त्री०[हिं० तीन+तार?]मनुआ नाम की कपास।

तिन-दरी—स्त्री०[हिं० तीन+फा० दर] वह कमरा जिसमे तीन दर या दरवाजे हो।

तिनधरा—स्त्री०[देश०] एक तरह की रेती जो तिकोनी होती है और जिससे आरी के दाँते तेज किये जाते हैं।

तिनपहल—वि०=तिनपहला।

तिनपहला—वि०[हिं० तीन+पहल][स्त्री० तिनपहली] जिसमे तीन परतें, पहलू या पार्श्व हो।

तिनमिना—पु०[हिं० तीन+मनिया] ऐसी माला जिसके बीच मे जडाऊ जुगनूं हो।

तिनवा—पु०[देश०] एक तरह का बाँस।

तिनपना*—अ०=तिनकना।

तिनस—पु०[स० तिनिश] शीशम की तरह का एक पेड।

तिनसुना—पु०=तिनस। (दे०)

तिनावा—वि०[हिं०तीन+नाव=खाँचा या गहरी रेखा][स्त्री०तिनावी] (कटार, तलवार आदि का फल) जिसपर तीन नावें (खाँचे या नालियाँ) हो। जैसे—तिनावा तेगा।

तिनाशक—पु०[स० तिनिश+कन्, पृषो० आत्व] तिनिश वृक्ष।

तिनास—पु०=तिनस।

तिनिश—पु०[स० अति √निश् (समाधि)+क, पृषो० अलोप] बबूल या खैर की तरह का एक वृक्ष जिसके फल वैद्यक मे कफ; पित्त, रुधिर विकार आदि दूर करनेवाले माने जाते हैं।

तिनुअर—वि०[स० तृण] तिनके [illegible] समान पतला-दुबला। क्षीण-काय। उदा० [illegible] भा [illegible]।—जायसी।

पु० तिनका या तिनको का ढेर।

तिनुका†—पु०=तिनका।

तिनुवर—वि०, पु०=तिनुअर।

तिनूका†—पु०=तिनका।

तिन्नक—पु०[हिं० तनिक]१ तुच्छ वस्तु। २ छोटा बच्चा। उदा० —खसम घतिगड, जोड़ तिन्नक। (कहा०)

तिन्ना—पु०[स०]१ तिन्नी नाम का पौधा या उसके चावल। २ रसेदार तरकारी या सालन। ३ सती नामक वर्ण-वृत्त।

तिन्नी—स्त्री०[स० तृण, हिं० तिन]१ आप से आप जलीय किन्तु बिना जोती-बोई जमीन मे होनेवाला धान्य। २ उक्त के बीज जिनकी गिनती फलाहार मे होती है। वैद्यक मे ये पित्त, कफ और वातनाशक माने जाते है।

स्त्री०[देश०] नीवी। फुफुती।

तिन्ह†—सर्व० हिं० 'तिस' का अवधी भाषा मे होनेवाला बहुवचन रूप।

तिपडा—पु०[हिं० तीन+पट]कमरवाब बुननेवालो के करघे की वह लकडी जिसमे तागा लपेटा रहता है और जो दोनो बैसरो के बीच मे होती है।

तिपति*—स्त्री०=तृप्ति।

तिपल्ला—वि०[हिं० तीन+पल्ला] [स्त्री० तिपल्ली] १ जिसमे तीन पल्ले या परतें हो। तीन पल्लोवाला। २. तीन तागो या तारोवाला।

तिपहला—वि०[हिं० तीन+पहल] [स्त्री० तिपहली] तीन पहलो, पार्श्वों या परतोंवाला।

तिपाई—स्त्री०[हिं० तीन+पाय] तीन पायोवाली एक तरह की बैठने अथवा सामान आदि रखने की ऊँची चौकी।

तिपाड़—पु०[हिं० तीन+पाड] १ वह कपडा जो तीन पाट जोडकर बनाया गया हो। जैसे—तिपाड चादर, तिपाड लहँगा। २. वह कपडा जिसमे तीन परतें या पल्ले हो। ३ वह धोती या साडी जिसमे तीन पाड या चौडे किनारे हो (दो ऊपर नीचे और एक बीच मे)।

तिपारी—स्त्री०[देश०] एक तरह का झाड जिसमे रसभरी की तरह के छोटे फल लगते हैं।

तिपैरा†—पु०[हिं० तीन+पुर] वह बड़ा कूआँ जिसमे तीन चरसे या मोट एक साथ चल सके।

तिफल—पु०[अ० तिफ्ल] [भाव० तिफली] छोटा नन्हा बच्चा।

तिफली—स्त्री० [अ० तिफ्ली] बचपन।

तिब—स्त्री०[अ० तिब्ब] यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। हकीमी।

तिबद्धी—स्त्री०[हिं० तीन+बाँध]चारपाई बुनने का एक ढग जिसमे हर बार तीन-तीन रस्सियाँ साथ खीची जाती है।

तिबाई†—स्त्री० [देश०] एक तरह की छिछली थाली जिसमे प्रायः आटा गूथते है।

तिबारा—क्रि० वि०[हिं० तीन+बार] तीसरी बार।

पु० वह शराब जो तीन बार चुआने पर तैयार की गई हो।

वि०, पु दे० 'तिदरा'।

तिबासी—वि०[हिं० तीन+बासी] तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।

तिबी†—स्त्री० [देश०] खेसारी।

तिब्ब—स्त्री०=तिब।

तिब्बत—पु०[स० त्रिविष्टप] हिमालय के उत्तर का एक देश जिसकी सीमा भारत से मिली हुई है।

तिब्बती—वि०[तिब्बत देश] तिब्बत-सबधी। तिब्बत का। तिब्बत मे उत्पन्न।
पु० तिब्बत देश का निवासी।
स्त्री० तिब्बत देश की भाषा।

तिमजिला—वि०[हिं० तीन+अ० मजिल] [स्त्री० तिमजिली] (भवन) जिसके तीन खड या मजिले हों।

तिम—पु०[हिं० डिंडिम] डका। नगाडा। (डिं०)

तिमाना—स०[देश०] भिगोना।

तिमाशी—स्त्री० [हिं० तीन+माशा] १ तीन माशे की एक तौल। २ उक्त तौल का बटखरा या बाट। ३ पहाडी देशो की एक तौल जो ४० जौ की होती है।

तिमिंगिल—पु०[स० तिमि√गृ (लीलना)+क, मुम्] १ समुद्र मे रहनेवाला एक प्रकार का बहुत बडा और भारी जतु जो तिमि नामक बडे मत्स्य को भी निगल सकता है। बडी भारी ह्वेल। २ एक प्राचीन द्वीप का नाम। ३ उक्त द्वीप का निवासी।

तिमिंगिलाशन—पु० [स० तिमिंगिल-अशन, ष०त०] १ दक्षिण का एक देश जिसके अतर्गत लका आदि है और जहाँ के निवासी तिमिंगिल मत्स्य का मास खाते है। (बृहत्सहिता) २ उक्त देश का निवासी।

तिमि—पु०[स०√तिम् (गीला होना)+इन्]१ एक तरह की समुद्री बडी मछली। २ समुद्र। सागर। ३ आँखो का रतौंधी नामक रोग।
†अव्य०[स० तद्+इमि] उस प्रकार। वैसे।

तिमिकोश—पु०[ष०त०] समुद्र।

तिमिज—पु०[स० तिमि√जन् (पैदा होना)+ड]तिमि नामक मत्स्य से निकलनेवाला मोती। (बृहत्सहिता)

तिमित—वि० [स०√तिम्+क्त]१ अचल। निश्चल। स्थिर। २ भीगा हुआ। आर्द्र। गीला।

तिमि-ध्वज—पु०[ब०स०] शबर नामक दैत्य जिसे मारकर रामचन्द्र ने ब्रह्मा से दिव्यास्त्र प्राप्त किया था।

तिमिर—पु०[स०√तिम्+किरच्] १ अधकार। अधेरा। २ आँखो का एक रोग जिसमे चीजे धुँधली, फीके रग की या रग-बिरगी दिखाई देती है। वैद्यक मे रतौंधी नामक रोग को भी इसी के अन्तर्गत माना है। ३ एक प्रकार का वृक्ष।

तिमिरनुद्—वि०[स० तिमिर√नुद् (नष्ट करना)+क्विप्] अधकार का नाश करनेवाला।
पु० सूर्य।

तिमिरभिद्—वि०[स० तिमिर√भिद् (भेदना)+क्विप्] अधकार को भेदने या नष्ट करनेवाला।
पु० सूर्य।

तिमिरमय—वि०[स० तिमिर+मयट्] जिसमे अधकार हो। अधकार-पूर्ण। अधकार से युक्त।
पु० १ राहु। २ ग्रहण। (सूर्य, चद्र आदि का)

तिमिर-रिपु—पुं०[ष०त०] अधकार का शत्रु, सूर्य।

तिमिरहर—वि०[स० तिमिर√हृ (हरना)+अच्] तिमिर या अधकार दूर करनेवाला।
पु० १ सूर्य। २ दीपक। दीया।

तिमिरांत—पु०[तिमिर-अत, ष०त०]१ तिमिर या अधेरे का अत। २. प्रभात। तडका।

तिमिरारि—पु०[तिमिर-अरि, ष०त०] अधकार का शत्रु अर्थात् सूर्य।

तिमिरारी —स्त्री०[स० तिमिराली] अधकार। अँधेरा।

तिमिला—स्त्री०[स०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा।

तिमिश—पु० =तिनिश (वृक्ष)।

तिमिष—पु०[स०√तिम् (गीला होना)+इसक् (षत्व)] १. ककडी। २ सफेद कुम्हडा। ३ पेठा। ४ तरबूज।

तिमी—पु०[स० तिमि+ङीष्]१ तिमि नाम की मछली। २ दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी और जिससे तिमिंगलो की उत्पत्ति कही गई है।

तिमीर—पु०[स० तिमि√ईर् (गति)+अच्] एक तरह का पेड।

तिमुहानी†—स्त्री०=तिरमुहानी।

तिय—स्त्री०[स० स्त्री]१ स्त्री। औरत। २ पत्नी। भार्या।

तियतरा—वि०[स० त्रि-अतर] तीन पुत्रियो के उपरात जन्मनेवाला (पुत्र)।

तियला—पु०[हिं० तिय+ला(प्रत्य०)]१ कपडा। २ पहनने के कपडे। ३ पोशाक।

तिया*—स्त्री०=तिय (स्त्री)।
पु०=तीया।

तियगाना†—स०=त्यागना।

तियागी*—वि०, पु०=त्यागी।

तिर—वि०[स० त्रि] हिं० तीन का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरम्भ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तिरकुटा, तिरपाई, तिरमुहानी।

तिरक—पु०[स० त्रिक]१ रीढ के नीचे का वह स्थान जहाँ दोनो कूल्हो की हड्डियाँ मिलती है। २ दोनो टाँगो के ऊपरवाले जोड का स्थान। ३. हाथी के शरीर का वह पिछला भाग जहाँ से दुम निकलती है।

तिरकट—पु०[?] आगे का पाल। अगला पाल। (लश०)

तिरकट गावा सवाई—पु०[?] जहाज का आगे का और सबसे ऊपरवाला पाल। (लश०)

तिरकट गावी—पु०[?] सिरे पर का पाल। (लश०)

तिरकट डोल—पु० [?] आगे का मस्तूल। (लश०)

तिरकट तवर—पु०[?] एक तरह का छोटा पाल जो जहाज के सब से ऊँचे मस्तूल पर लगाया जाता है। (लश०)

तिरकट सवर—पु०[?] जहाज मे लगा रहनेवाला सबसे ऊँचा पाल। (लश०)

तिरकट सवाई—पु०[?] एक तरह का पाल। (लश०)

तिरकना—अ०[अनु०] 'तिर' शब्द करते हुए किसी चीज का टूटना या फटना।
स०=थिरकना।

तिरकस†—वि० [स० तिरस्] १. तिरछा। २. टेढ़ा।

तिरकाना—स० [?] रस्सा या और कोई बन्धन ढीला छोड़ना। (ल०) †अ०=थिरकना।

तिरकुटा—पु० [स० त्रिकटु] पीपल, मिर्च और सोंठ ये तीनो एक मे मिली हुई कडवी वस्तुएँ।

तिरखा—स्त्री० [स० तृषा] १. प्यास। उदा०—जाट का मैं लाडला तिरखा लगी सरीर।—लोकगीत। २ लोभ।

तिरखावंत—वि०=तृषित।

तिरखित—वि० [स० तृषित, हिं० तिरखा] १. प्यासा। २. जिसे किसी वात की कामना हो।

तिरखूँटा—वि० [सं० त्रि+हिं० खूँट] [स्त्री० अल्पा० तिरखूँटी] तीन खूँटों या कोनोवाला। तिकोना।

तिरच्छ—पु० [?] तिनिश (वृक्ष)।

तिरछई†—स्त्री० [हिं० तिरछा] तिरछापन।

तिरछा—वि० [स० तिर्यक् या तिरस] [स्त्री० तिरछी] १. कोई सीधी रेखा या इसी तरह की कोई और चीज जो लव रूप मे तथा क्षितिज के समानान्तर न हो वल्कि कुछ या अधिक ढालुई हो। २ जिसमे टेढापन या वक्रता हो।

पद—तिरछी चितवन या नजर=विना सिर घुमाये पार्श्व या वगल मे कुछ देखने का भाव। तिरछी वात या वचन=मन को कष्ट पहुँचानेवाली कटु या अप्रिय वात।

३. एक प्रकार का रेशमी कपडा जो प्राय अस्तर के काम मे आता है।

तिरछाई†—स्त्री० [हिं० तिरछा+ई (प्रत्य०)] तिरछापन।

तिरछाना—अ० [हिं० तिरछा] तिरछा होना।

स० तिरछा करना।

तिरछापन—पु० [हिं० तिरछा+पन (प्रत्य०)] 'तिरछा' करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तिरछी उड़ी—स्त्री० [हिं० तिरछा+उडना] माल खभ की एक कसरत।

तिरछी वैठक—स्त्री० [हिं० तिरछी+वैठक] माल खभ की एक कसरत जिसमे दोनों पैरो को कुछ घुमाकर एक दूसरे पर चढाया जाता है।

तिरछे—क्रि० वि० [हिं० तिरछा] १ तिरछेपन की अवस्था मे। २ वक्रता से।

तिरछौंहाँ†—वि० [हिं० तिरछा] १ जिसमे कुछ या थोड़ा तिरछापन हो। २ तिरछा।

तिरछौहें—क्रि० वि० [हिं० तिरछौहा] १ तिरछापन लिये हुए। २ वक्रता से।

तिरतालीस—वि०=तैंतालिस (४३)।

तिरतिराना†—अ० [अनु०] द्रव पदार्थ का बूँद बूँद करके टपकना।

तिरना—अ० १=तरना। २=तैरना।

तिरनी—स्त्री० [?] १ वह डोरी जिससे घाघरा आदि कमर मे बाँधा जाता है। नीवी। तिन्नी। फुफती। २. घाघरे या धोती का वह भाग जो कमर पर या नाभि के नीचे पडता है।

तिरप—स्त्री० [स० त्रिसम] नृत्य मे एक प्रकार का ताल जिसे त्रिसम या तिहाई कहते हैं।

क्रि० प्र०—लेना।

तिरपट†—वि० [देश०] १ (लकड़ी की धरन, पल्ले आदि के सबध मे) जो सूखकर ऐंठ गया हो। २. टेढा-मेढा। तिर्डविड्गा। ३. कठिन। मुश्किल।

तिरपटा—वि० [हिं० तिरपट] (व्यक्ति या पशु) जिसकी सामने की ओर ताकते समय पुतलियाँ कोनों मे चली जाती हों। ऐंचा-ताना। भेंगा।

तिरपन—वि० [स० त्रिपंचाशत्; प्रा० तिपण्ण] जो गिनती मे पचास से तीन अधिक हो। पचास से तीन ऊपर।

पु० उक्त के सूचक अंक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५३।

तिरपाई—स्त्री०=तिपाई।

तिरपाल—पु० [स० तृण+हिं० पालना=विछाना] फूस, सरकंडे आदि के लंबे पूले जो खपडों आदि के नीचे विछाये जाते हैं। मुट्ठा।

पु० [अं० टारपालिन] एक प्रकार का मोटा कपडा जिस पर राल या रोगन चढ़ाया गया हो। इसको जल नही भेदता।

तिरपित*—वि०=तृप्त।

तिरपौलिया—वि० [सं० त्रि+हिं० पोल=फाटक] (वह वाजार, मकान आदि) जिसमे जाने के तीन वड़े द्वार या रास्ते हों।

तिरफला—स्त्री० =त्रिफला।

तिरवेनी—स्त्री०=त्रिवेणी।

तिरवो—स्त्री० [हिं० तिरवा] एक तरह की नाव। (सिंध)

तिरमिरा—पु० [स० तिमिर] १ एक रोग जिसमे अधिक प्रकाश के कारण आँखें चौंधिया जाती है और कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देने लगता है। २ चकाचौंध।

पु० [हिं० तेल+मिलना] घी, तेल या चिकनाई के छींटे जो पानी, दूध या और किसी द्रव पदार्थ के ऊपर तैरते हुए दिखाई पडते है।

तिरमिराना—अ० [हिं० तिरमिरा] (तिरमिरा के रोगी की) अधिक प्रकाश के कारण आँखें चौंधियाना।

अ०=तिलमिलाना।

तिरमुहानी—स्त्री० [हिं० तीन+फा० मुहाना] १. वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने के तीन मार्ग या रास्ते हों। २ वह स्थान जहाँ तीन ओर से तीन नदियाँ आकर मिलती हों।

तिरयाक—पुं० [अ० तिर्याक] १. जहर-मोहरा जिससे साँप के विष का प्रभाव नष्ट होता है। २. सव रोगों की रामवाण औषधि।

तिरलोक†—पु०=त्रिलोक।

तिरलोकी—स्त्री०=त्रिलोक।

तिरवट—पु० [देश०] तराने (राग) का एक भेद। (सगीत)

तिरवराना—अ० १=तिरमिराना। २=तिलमिलाना।

तिरवाँह—पु० [स० तीर+वाह] नदी के तीर की भूमि। किनारा। तट।

क्रि० वि० नदी के किनारे किनारे।

तिरवा—पु० [फा०] वह दूरी जो उडान भरते समय तीर आदि पार करे। प्रास।

तिरविष्ट—पु० =त्रिविष्टप (स्वर्ग)।

तिरश्चीन—वि० [सं० तिर्यक्+ख—ईन] १ तिरछा। २ टेढा। वक्र।

तिरश्चीन-गति—पु० [कर्म० स०] कुश्ती का एक पेंच या पैंतरा।

तिरसठ—वि० [सं० त्रिषष्टि; प्रा० तिसट्ठि] जो गिनती में साठ से तीन अधिक हो।
पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है।—६३।

तिरसा—पुं० [?] वह डाल जिसका एक सिरा दूसरे सिरे की अपेक्षा अधिक चौड़ा होता है।

तिरसूल†—पुं०=त्रिशूल।

तिरस्कर—वि० [सं० तिरस्√कृ (करना)+ट] १. जो दूसरे से अधिक अच्छा या बढ़ा-चढ़ा हो। २. ढाँकनेवाला।

तिरस्करिणी—स्त्री० [सं० तिरस्करिन्+ङीप्] १. ओट। आड़। २. आड़ करने का परदा। चिक। चिलमन। ३. एक प्रकार की प्राचीन विद्या जिसकी सहायता से मनुष्य सब की दृष्टि से अदृश्य हो जाता था।

तिरस्करी (रिन्)—पुं० [सं० तिरस्√कृ+णिनि] परदा।

तिरस्कार—पुं० [सं० तिरस्√कृ+घञ्] [वि० तिरस्कृत] १. वह मनोभाव जो किसी को निकृष्ट या हेय समझने के कारण उत्पन्न होता है और उसका अनादर करने को प्रवृत्त करता है। २. वह स्थिति जिसमें उपयुक्त स्वागत, सत्कार आदि न किये जाने के फलस्वरूप अपने को अपमानित समझता हो। ३. डाँट-फटकार। भर्त्सना। ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी अच्छी चीज में भी कोई दोष दिखलाकर उसका अनादरपूर्वक त्याग तथा उसे तुच्छ सिद्ध किया जाता है।

तिरस्कृत—भू० कृ० [सं० तिरस्√कृ+क्त] १. जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादरपूर्वक त्यागा या दूर किया हुआ। ३. आड़ या परदे में छिपा हुआ।

तिरस्क्रिया—स्त्री० [सं० तिरस्√कृ+श, इयङ्, टाप्] १. तिरस्कार २. ढकने का कपड़ा। आच्छादन। ३. पहनने के कपड़े। पोशाक। वस्त्र।

तिरहा—पुं० [देश०] एक तरह का उड़नेवाला कीड़ा जो धान को क्षति पहुँचाता है।

तिरहुत—पुं० [सं० तीरभुक्ति] [वि० तिरहुतिया] बिहार के उस प्रदेश का पुराना नाम जिसमें इस समय मुजफ्फरपुर, दरभंगा आदि नगर हैं।

तिरहुति—स्त्री० [हिं० तिरहुत] तिरहुत में गाया जानेवाला एक तरह का गीत।

तिरहुतिया—वि०, पुं० स्त्री०=तिरहुती।

तिरहुती—वि० [हिं० तिरहुत] तिरहुत देश का। तिरहुत संबंधी।
पुं० तिरहुत का निवासी।
स्त्री० तिरहुत देश की बोली।

तिरहेल—वि० [सं० त्रि] जो गणना में तीसरे स्थान पर हो अथवा तीसरी बार आया या हुआ हो। उदा०—जो तिरहेल रहै सो लिया।—जायसी।

तिरा—पुं० [देश०] १. एक पौधा जिसके बीजों की गिनती तेलहन में होती है। २. उक्त पौधे के बीज।

तिराखी—स्त्री० [?] तिपाई।

तिरानबे—वि० [सं० त्रि+हिं० नब्बे] जो गिनती में नब्बे से तीन अधिक हो।
पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९३।

तिराना—स० [हिं० तिरना] १. तिरने (अर्थात् तरने या तैरने) में प्रवृत्त करना। २. दे० 'तारना'।

तिरास†—पुं०=त्रास।

तिरासना—अ० [सं० त्रासन] भयभीत या त्रस्त होना।
स० भयभीत या त्रस्त करना।

तिरासी—वि० [सं० त्र्यशीति; प्रा० तिआसिइ] जो गिनती में अस्सी से तीन अधिक हो।
पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८३।

तिराहा—पुं० [हिं० तीन+फा० राह] वह स्थान जहाँ से तीन ओर रास्ते जाते या आकर मिलते हों। तिरमुहानी।

तिराही—वि० [हिं० तिराह एक प्रदेश] १. तिराह प्रदेश में बनने या होनेवाला। २. तिराह प्रदेश-संबंधी।
स्त्री० उक्त प्रदेश में बननेवाली एक तरह की कटारी।
क्रि० वि० [?] नीचे।

तिरि†—वि० [सं० त्रि] तीन। उदा०—पुनि तिहि ठाँव परी तिरि रेखा।—जायसी।
स्त्री०=तिरिया (स्त्री)।

तिरिगत—पुं०=त्रिगर्त्त (देश)।

तिरिच्छ—पुं० [सं तिनिश] दे० 'तिनिश'।

तिरिजिह्विक—पुं० [सं०] एक प्रकार का पेड़।

तिरिदिवस—पुं०=त्रिदिवस (स्वर्ग)।

तिरिन*—पुं०=तृण।

तिरिम—पुं० [सं०√तॄ (तैरना)+इमक्] एक प्रकार का धान।

तिरिया—स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।
पद—तिरिया चरित्तर=स्त्रियों द्वारा होनेवाला कोई ऐसा चालाकी भरा विलक्षण तथा हेय काम जिसका रहस्य जल्दी सब की समझ में न आता हो।
पुं० [देश०] नैपाल में होनेवाला एक तरह का बाँस।

तिरीछा†—वि०=तिरछा।

तिरीट—पुं० [सं०√तॄ (तैरना)+कीटन्] १. लोध्र। लोध। २. दे० 'किरीट'।

तिरीफल—पुं०=त्रिफला।

तिरी-बिरी—वि०=तिड़ी-बिड़ी।

तिरेंदा—पुं०=तरेंदा।

तिरै—पुं० [अनु०] हाथियों को जल में लेटने के लिए दी जानेवाली आज्ञा का सूचक शब्द या संकेत।

तिरोजनपद—पुं० [सं० तिरस्-जनपद, ब० स०] अन्य राष्ट्र का मनुष्य विदेशी (कौ०)

तिरोधान—पुं० [तिरस्√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १. अंतर्धान या लुप्त होने की अवस्था या भाव। २. इस प्रकार किसी चीज का हटाया-छिपाया जाना कि वह फिर जल्दी दिखाई न पड़े।

तिरोधायक—वि० [सं० तिरस्√धा+ण्वुल्—अक] कोई चीज आड़ में करने या छिपानेवाला।

तिरोभाव—पुं० [तिरस्√भू (होना)+घञ्] १. आँखों से ओट होकर

अदृश्य हो जाना। अतर्धान। अदर्शन। २ गोपन। छिपाव। दुराव।

तिरोभूत—भू० कृ० [स० तिरस्√भू+क्त] जो अदृश्य या गायब हो गया हो। अतर्हित।

तिरोहित—भू०कृ० [स० तिरस्√धा (धारण करना)+क्त, हि आदेश] १ छिपा हुआ। अतर्हित। अदृश्य। २ ढका हुआ। आच्छादित

तिरौंछा†—वि०=तिरछा।

तिरौंदा†—पु०=तरेंदा।

तिर्यंचानुपूर्वी—स्त्री० [स० तिर्यन्च्-आनुपूर्वी, ब० स०] जैनियो के अनुसार वह अवस्था जिसमे जीव को तिर्यग्योनी मे जाने से पहले रहना पडता है।

तिर्यंची—स्त्री० [स० तिर्यच्+ङीप्] पशु-पक्षियो की मादा।

तिर्यक् (च्)—वि० [स० तिरस्√अञ्च् (जाना)+क्विन्] ढालुआँ।

तिर्यक्ता—स्त्री० [स० तिर्यच्+तल्—टाप्] तिरछापन। आडापन।

तिर्यक्त्व—पु० [स० तिर्यच्+त्व] तिरछापन। आडापन।

तिर्यक्पाती (तिन्)—वि० [स० तिर्यक्√पत् (गिरना)+णिनि] आडा फैलाया या रखा हुआ। वेंडा रखा हुआ।

तिर्यक्-भेद—पु० [तृ० त०] दो खभो आदि पर स्थित किसी वस्तु का अधिक दाव के कारण वीच मे से टूट जाना।

तिर्यक्-स्रोतस्—पु० [व० स०] १ वह जिसका फैलाव आडा हो। २ ऐसा जतु या जीव जिसके गले मे की आहार-नलिका सीधी नही, वल्कि टेढी हो और जिसके पेट मे आहार टेढा या तिरछा होकर पहुँचता हो।

विशेष—प्राय सभी पक्षी और पशु इसी वर्ग मे आते है।

तिर्यगयन—पु० [तिर्यक्-अयन, कर्म० स०] सूर्य की वार्षिक परिक्रमा।

तिर्यगीक्ष—वि० [स०तिर्यक्√ईक्ष् (देखना)+अच्] तिरछे देखनेवाला।

तिर्यग्गति—स्त्री० [कर्म० स०] १. तिरछी या टेढी चाल। २. जीव का पशु योनि मे जन्म लेना।

तिर्यग्गामी (मिन्)—पु० [स० तिर्यक्√गम् (जाना)+णिनि] केकडा।

तिर्यग्दिक् (श)—स्त्री० [कर्म० स०] उत्तर दिशा।

तिर्यग्दिश्—स्त्री० [कर्म स०] उत्तर दिशा।

तिर्यग्यान—पु० [व० स०] केकडा।

तिर्यग्योनि—स्त्री० [प० त०] पशु-पक्षियो आदि की योनि। विशेष दे० 'तिर्यक् स्रोतस्'।

तिर्यच—अव्य=तिर्यक्।

तिलंगनी—स्त्री० [हि० तिल+अँगिनी] एक प्रकार की मिठाई जो तिलो को चीनी की चाशनी मे पागकर वनाई जाती है।

तिलगसा—पु० [देश०] एक तरह का पेड।

तिलगा—पु० [हि० तिलगाना, स० तैलग] १ तिलगाने या तैलग देश का निवासी। २ भारतीय सेना का सिपाही।

विशेष—पहले-पहले अँगरेजो ने तैलग देश के आदमियो की ही भारतीय सेना वनाई थी, इसी से यह नाम पडा था।

३ एक प्रकार का कन-कौआ या पतग।

तिलगाना—पु० [स० तैलग] तैलंग देश।

तिलगी—पु० [स० तैलग] तिलगाने का निवासी। तैलग। स्त्री० तिलगाने की वोली।

स्त्री० [हि० तीन+लग] एक तरह की गुड्डी या पतग।

तिलंतुद—पु० [स० तिल√तुद् (पीडित करना)+खश्, मुम्] तेली।

तिल—पु० [स०√तिल् (चिकना होना)+क] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी खेती उसके दानो या वीजो के लिए की जाती है। २ उक्त पौधे के दाने या वीज जो काले, सफेद और लाल तीन प्रकार के होते है और जिन्हे पेरकर तेल निकाला जाता है। हिंदुओ मे यह पवित्र माना जाता है, इसी लिए इसे पापघ्न और पूतधान्य भी कहते है। इसे दान करने और इससे तर्पण, होम आदि करने का माहात्म्य है। यह कई प्रकार के पकवानो और मिठाइयो के रूप मे खाया भी जाता है। वैद्यक मे तिल कफ, पित्त, वातनाशक तथा अग्नि को दीपित करनेवाले माने गये है।

पद—**तिल तिल करके**=वहुत थोडा-थोडा करके। जैसे—वरसात के शुरू मे तिल तिल करके दिन छोटा होने लगता है। **तिल भर**=(क) वहुत ही जरा-सा या थोडा। जैसे—तिल भर नमक तो ले आओ। (ख) वहुत थोडी देर। क्षण भर। जैसे—तुम तो तिल भर ठहरते नही, वात किससे करे।

मुहा०—**तिल का ताड़ करना**=किसी वहुत छोटी-सी वात को वहुत वढा देना। वात का वतगड करना या वनाना। **तिल चाटना**=मुसलमानो मे एक प्रकार का टोटका जिसमे दूल्हा अपनी दुलहिन के वश मे रहना सूचित करने के लिए उसकी हथेली पर रखे हुए तिल चाटकर खाता है। **(किसी के) काले तिल चावना**=किसी का इस प्रकार वहुत अधिक अनुगृहीत या ऋणी होना कि आगे चलकर उसका कोई वुरा परिणाम भोगना पडे। जैसे—मैंने तुम्हारे काले तिल चावे थे, जिसका फल भोग रहा हूँ।

विशेष—तिल का दान प्राय लोग शनि ग्रह का अरिष्ट या दोप टालने के लिए करते हे, इसी आधार पर यह मुहा० वना है।

मुहा०—**(किसी स्थान पर) तिल धरने की भी जगह न होना**=जरा सी भी जगह खाली न रहना। पूरा स्थान ठसाठस भरा रहना। जैसे—कमरे मे इतने अधिक आदमी थे (या इतना अधिक सामान भरा था) कि कही तिल धरने की भी जगह नही थी। **(किसी के) तिलो से तिल निकालना**=किसी से वहुत कठिनतापूर्वक अपना कोई काम निकालना या स्वार्थ सिद्ध करना।

कहा०—**तिल की ओट पहाड़**=किसी छोटी-सी वात की आड मे होनेवाली कोई वहुत वडी वात। **इन तिलो मे तेल नहीं है**=इनसे किसी प्रकार की सहायता नही मिल सकती, अथवा कोई कार्य अथवा स्वार्थ सिद्ध नही हो सकता।

२ काले रग का वह छोटा दाग जो शरीर पर प्राकृतिक रूप से लक्षण आदि के रूप मे होता है। जैसे—गाल, ठोढी या वाह पर का तिल। ३ काली विंदी के आकार का गोदना जो स्त्रियाँ शोभा के लिए गाल, ठोढी आदि पर गोदाती है। ४ आँख की पुतली के वीच की गोल विंदी जिस पर दिखाई पडनेवाली चीज का छोटा-सा प्रतिविंव पडता है। तारा। ५ किसी प्रकार का छोटा काला, गोल विंदु। जैसे—कुछ स्त्रियाँ काजल से गाल या ठोढी पर तिल वनाती है।

मुहा०—**तिल वँधना**=सूर्यकात शीशे से होकर आये हुए सूर्य के प्रकाश का केंद्रीभूत होकर विंदु के रूप मे एक स्थान पर पडना।

६ किसी वस्तु का तुच्छ से तुच्छ या बहुत ही थोडा अंश या कोई बहुत छोटी चीज। जैसे—तिल चोर, सो वज्जर चोर।—कहा०। ७ बहुत ही थोडा समय, क्षण या पल।उदा०—(क) एहि जीवन कै आस का, जस सपना तिल आधु।—जायसी। (ख) तिल मे दिल लेके यूँ मुकरते है कि गोया इन तिलो मे तेल नही।—कोई शायर।

तिल-कंठी—स्त्री० [ब० स०, डीप्] विष्णु कांची। काली कौवा ठोंठी।

तिलक—पु० [स० तिल+कन्] १ केसर, चदन, रोली आदि से ललाट पर लगाई जानेवाली गोल बिंदी। लबी रेखा आदि के आकार का लगाया जानेवाला चिह्न।

विशेष—ऐसा चिह्न मुख्यत विशिष्ट धार्मिक सप्रदायों के अनुयायी होने का सूचक होता है; और प्राय. प्रत्येक सप्रदाय का तिलक कुछ अलग आकार-प्रकार का रहता तथा कभी कभी माथे के सिवा छाती, बाहो आदि पर भी लगाया जाता है। परन्तु प्राय शारीरिक शोभा के लिए भी और कुछ विशिष्ट मांगलिक अवसरो पर प्रथा या रीति के रूप मे भी तिलक लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—धारना।—लगाना।—सारना।

२. उक्त प्रकार का वह चिह्न जो नये राजा के अभिषेक अथवा पहले-पहल राज-सिहासन पर बैठने के समय उसके मस्तक पर लगाया जाता है। राज-तिलक। ३ भावी वर के मस्तक पर लगाया जानेवाला उक्त प्रकार का वह चिह्न जो विवाह-सबध स्थिर होने का सूचक होता है और जिसके साथ कन्या-पक्ष की ओर से कुछ धन, फल, मिठाइयाँ आदि भी दी जाती है। टीका।

क्रि० प्र०—चढना।—चढाना।

मुहा०—**तिलक देना या भेजना**=उक्त अवसर पर धन, मिठाइयाँ आदि देना या भेजना।

४. माथे पर पहनने का स्त्रियो का एक गहना। टीका। ५ वह जो अपने वर्ग मे सब से श्रेष्ठ हो। शिरोमणि। जैसे—रघुकुल तिलक श्रीरामचंद्र। ६. किसी ग्रथ के कठिन पदो, वाक्यो आदि की विशद और विस्तृत व्याख्या। टीका। ७ पुन्नाग की जाति का एक पेड़ जिसके पुष्प तिल के पुष्प से मिलते-जुलते होते है। इसकी लकडी और छाल दवा के काम आती है। ८ मूँज आदि का घूआ या फूल। ९ लोध का पेड। १०. मरुअक। मरुआ। ११. एक प्रकार का अश्वत्थ। १२ एक प्रकार का घोड़ा। १३ पेट के अन्दर की तिल्ली। क्लोम। १४. साँचर नमक। १५. सगीत मे ध्रुवक का एक भेद जिसमे एक-एक चरण पचीस पचीस अक्षरों के होते हैं।

पु० [तु० तिरलीक का सक्षिप्त रूप] १. एक प्रकार का ढीला-ढाला जनाना कुरता जो प्राय मुसलमान स्त्रियाँ सूथन के साथ पहनती हैं। २. राजा या बादशाह की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाले पहनने के कपड़े। खिलअत। सिरोपाव।

वि० १. उत्तम। श्रेष्ठ। २ कीर्ति, शोभा आदि बढानेवाला। जैसे—रघुकुल तिलक।

तिलक-कामोद—पु० [कर्म० स०] ओडव-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर मे गाया जाता है।

तिलकट—पु० [स० तिल+कटच्] तिल का चूर्ण।

तिलकड़िया—पुं० [स० तिलक] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण और एक गुरु होते है। उगाध। यशोदा।

तिलकना—अ० [हिं० तड़कना] गीली मिट्टी का सूखकर स्थान-स्थान पर दरकना या फटना। ताल आदि की मिट्टी का सूखकर दरार के साथ फटना।

†अ० = फिसलना। (पश्चिम)

तिलक-मार्ग—पु० [स०] १. माथे पर का वह स्थान जहाँ तिलक लगाया जाता है। २. माथे पर लगा हुआ तिलक या उसका चिह्न।

तिलक-मुद्रा—पु० [स० मध्य० स०] धार्मिक क्षेत्र मे माथे पर लगा हुआ तिलक और शरीर पर अकित किए हुए साप्रदायिक चिह्न।

तिल-कल्क—पु० [प० त०] तिल का चूर्ण। तिलकुट।

तिलकहरु†—पु० दे० 'तिलकहार'।

तिलकहार—पु० [हिं० तिलक+हार (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो कन्या-पक्ष की ओर से वर को तिलक चढाने के लिए भेजा जाता है।

तिलका—स्त्री० [स०तिल√कै (शब्द करना)+क+टाप्] १. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो सगण (॥S) होते है। इसे 'तिल्ला' 'तिल्लाना' और डिल्ला' भी कहते है। २ गले मे पहनने का एक गहना।

तिल-कालक—पु० [उपमि० स०] १ शरीर पर का तिल के आकार का काला चिह्न। तिल। २. एक प्रकार का रोग जिसमे पुरुष की लिंगेंद्रिय पक जाती है और उस पर काले दाग पड जाते है।

तिलकावल—वि० [स० तिलक+अव√ला (लाना)+क?] १ जिसने अपने शरीर के किसी अग पर तिल का चिह्न बनाया हो। २. तिल सरीखे चिह्न से युक्त।

तिलकाश्रय—पुं० [सं० तिलक-आश्रय ष० त०] तिलक लगाने का स्थान। ललाट।

तिल-किट्ट—पु० [ष० त०] तिल की खली। पीना।

तिलकित—भू० कृ० [स० तिलक+इतच्] जिस पर या जिसे तिलक लगा हो।

तिलकुट—पु० [स० तिलकल्क] १. एक प्रकार की मिठाई जो गुड, चीनी आदि की चाशनी मे तिल पागकर बनाई जाती है। २ [स० तिलखलि] तिल की खली।

तिलकोड़ा—पु० [देश०] एक तरह का जगली कुदरू जिसकी पत्तियों का साग बनाया जाता है।

तिलखलि—स्त्री० [सं०] तिल की खली।

तिलखा—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तिलचटा—पु० [हिं० तिल+चाटना] एक तरह का झींगुर। चपडा।

तिल-चतुर्थी—स्त्री० [मध्य० स०] माघ कृष्ण चतुर्थी।

तिल-चाँवरा†—वि० = तिल-चावला।

तिल-चावला—वि० [हिं० तिल+चावल] [स्त्री० तिल-चावली] जो तिलो और चावलो के मेल की तरह कुछ काला और कुछ सफेद हो। जैसे—तिल-चावलीदाढ़ी, तिल-चावले बाल।

तिल-चावली—स्त्री०[हिं० तिल+चावल] तिलो और चावलो की खिचडी। उदा०—जैसी तरी तिल चावली वैसे मेरे गीत।—कहावत।

तिल-चित्र-पत्रक—पु० [ब० स०, कप्] तैलकद।

तिल-चूर्ण—पु० [प० त०] तिलकुट।

तिलछना—अ० [अनु०] १ विकल तथा व्यग्र होना। २. छटपटाना।

तिलडा—वि० [हिं० तीन लड] [स्त्री० तिलडी] जिसमे तीन लड हों। तीन लड़ोवाला। जैसे—तिलडी करधनी, तिलडा हार।
पु० [देश०] धातु पर नक्काशी करने की छेनी।

तिलडी—स्त्री० [हिं० तीन+लड] तीन लडियो की एक माला जिसके बीच मे एक जुगनी लटकती है।

तिल-तंडुलक—पु० [स० तिल-तडुल, ष० त०, √कै (प्रतीत होना)+क] १ गले लगाना। आलिंगन। २. भेंट। मिलन।

तिल-तैल—पु० [ष० त०] तिलो को पेरकर निकाला हुआ तेल। तिल का तेल।

तिलदानी—स्त्री० [हिं० तिल्ला+स० आधान] सूई, तागा, अगुश्ताना आदि रखने की थैली। (दरजी)

तिल-धेनु—स्त्री० [स० मध्य० स०] दान करने के लिए तिलो की बनाई हुई गौ की आकृति।

तिलपट्टी—स्त्री० [हिं० तिल+पट्टी] खाँड या गुड मे पगे हुए तिलो का जमा हुआ टुकडा।

तिल-पपड़ी—स्त्री० =तिलपट्टी।

तिल-पर्ण—पु० [स० ब० स०] १ चदन। २. साल का गोद।

तिलपर्णिका—स्त्री० [सं० तिलपर्णी+कन्--टाप्, ह्रस्व]=तिल-पर्णी।

तिलपर्णी—स्त्री० [स० तिलपर्ण+ङीप्] रक्त चदन।

तिलपिंज—पु० [स० तिल+पिंज] तिल का वह पौधा जिसमे बीज आदि न लगें।

तिल-पिच्चट—पु० [ष० त०] तिलो की पीठी। तिलकुटा

तिलपीड—पु० [स० तिल√पीड् (पीडित करना)+अच्] तेली जो तिल पेरकर तेल निकालता है।

तिल-पुष्प—पु० [ष० त०] १ तिल का फूल। २ व्याघ्रनख या बघनखा नामक गन्ध-द्रव्य।

तिल-पुष्पक—पु० [ब० स०, कप्] १ बहेडा। २ नाक जिसकी उपमा तिल के फूल से दी जाती है।

तिलफरा—पु० [देश०] एक तरह का वृक्ष।

तिलबढा—पु० [देश०] पशुओ को होनेवाला एक रोग जिसमे उनके गले मे सूजन हो जाती है और जिसके कारण उनसे कुछ खाया-पीया नही जाता।

तिलबर—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तिलभार—पु० [ब० स०] एक प्राचीन देश।

तिलभाविनी—स्त्री० [स० तिल√भू (होना)+णिच्+णिनि–ङीप्] चमेली। मल्लिका।

तिलभुग्गा—पु० [हिं० तिल+स० भुक्त] तिल तथा खोये आदि के योग से बननेवाला एक तरह का चूर्ण।

तिल-भृष्ट—वि० [तृ० त०] तिल के साथ भूना या पकाया हुआ। (खाद्य-पदार्थ)

तिल-भेद—पु० [ष० त०] पोस्ते का दाना।

तिल-मयूर—पु० [मध्य० स०] एक पक्षी जिसके परो पर तिलो के समान काले-काले चिह्न होते है।

तिलमापट्टी—स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत के कुछ प्रदेशो मे होनेवाली एक तरह की कपास।

तिलमिल—स्त्री० [हिं० तिरमिर] १. ऐसी अवस्था जिसमे अधिक प्रकाश के कारण अथवा रोग आदि के कारण आँखो के सामने कभी प्रकाश और कभी अँधेरा आ जाता हो। २ चकाचौंध।

तिलमिलाना—अ० [हिं० तिरमिल] [भाव० तिलमिलाहट] १ तिलमिल होना। आँखो के आगे कभी अँधेरा और कभी प्रकाश आना। २. चकाचौंध होना।
अ० [अनु०] [भाव० तिलमिलाहट, तिलमिली] १ पीडा के कारण विकल होना। २ पछताना।

तिलमिलाहट—स्त्री० [हिं० तिलमिलाना] तिलमिलाने की अवस्था या भाव। बेचैनी।

तिलमिली—स्त्री० =तिलमिलाहट।

तिल-रस—पु० [ष० त०] तिलो का तेल।

तिलरा—पु० [देश०] कसेरो की एक तरह की छेनी।
†पु० = तिलडा।

तिलरिया†—स्त्री० = तिलडी।

तिलरी—स्त्री० = तिलडी (तीन लडोवाला हार)।

तिलवट—पु० = तिल-पट्टी।

तिलवन—स्त्री० [देश०] एक तरह का जगली पौधा जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती हैं।

तिलवा†—पु० [हिं० तिल] तिलो का लड्डू।

तिलशकरी—स्त्री० [हिं० तिल+शकर] तिलो और शक्कर के योग से बना हुआ एक तरह का पकवान। तिलपपडी।

तिल-शिखी (खिन्)—पु० [मध्य० स०]=तिल-मयूर।

तिल-शैल—पु० [मध्य० स०] दान करने के लिए तिलो का लगाया हुआ ऊँचा ढेर या राशि।

तिलस्म—पु० [यू० टेलिस्मा] १ इन्द्रजाल या जादू के जोर से कोई अलौकिक काम कर या करा सकने की शक्ति। २. इस प्रकार किया या कराया हुआ कोई काम। अलौकिक व्यापार।
मुहा०—तिलस्म तोड़ना=ऐसी प्रतिक्रिया करना जिससे किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किया हुआ तिलस्म या जादू का सारा स्वरूप नष्ट हो जाय।

तिलस्मात—पु० [यू० टेलिस्मन] १ जादू। २. अद्भुत या अलौकिक कार्य। चमत्कार। करामात।

तिलस्मी—वि० [हिं० तिलस्म] तिलस्म या जादू-सबधी।

तिलहन—पु० =तेलहन।

तिलांकित दल—पु० [स० तिल-अकित-दल, ब० स०] तैलकद।

तिलांजली—स्त्री० [स० तिल-अजली, मध्य० स०] १ किसी के मरने पर उसके सबधियो द्वारा किया जानेवाला एक कृत्य जिसमे वे हाथ मे तिल और जल लेकर उसके नाम से छोडते है। २. सदा के लिए किसी का सग या साथ छोडना। जैसे—लडका घरवालो को तिलाजली देकर चला गया।
क्रि० प्र०—देना।

तिलांबु—पुं० [सं० तिल-अबु, मध्य० स०] =तिलाजली।

तिला—पुं० [हिं० तेल] एक तरह का तेल जिसे लिंगेंद्रिय पर मलने से पुंसत्व शक्ति बढ़ती है।
†पुं० = तिल्ला।

तिलाक—पुं० = तलाक।

तिलादानी†—स्त्री०= तिलदानी।

तिलान्न—पुं० [सं० तिल-अन्न, मध्य० स०] तिल की खिचड़ी।

तिलापत्या—स्त्री० [सं० तिल-अपत्य, ब० स०, टाप्] काला जीरा।

तिलाम—पुं० [अ० गुलाम का अनु०] गुलाम का गुलाम। दासानुदास।

तिलावा—पुं० [हिं० तीन+लावना, लाना, ?] १ वह बड़ा कूआँ जिस पर एक साथ तीन पुरवट चल सकें। २. नगर-रक्षकों, पुलिस आदि का रात के समय बस्ती में लगनेवाला गश्त।

तिलिंग—पुं० [सं०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध देश।

तिलिंगा†—पुं० =तिलंगा (तैलंग देश का निवासी या सिपाही)।

तिलित्स—पुं० [सं० √तिल् (चिकना करना)+इन्, तिलि√त्सर् (कुटिल गति)+ड] गोनस साँप।

तिलिया—पुं० [देश०] सरपत।
†वि०, पुं० =तेलिया

तिलिस्म—पुं० = तिलस्म।

तिलिस्मी—वि० = तिलस्मी।

तिली—स्त्री० १ =तिल्ली। २ =तिल।

तिलेगू—पुं० = तेलगू।

तिलेती—स्त्री० [हिं० तेलहन+एती (प्रत्य०)] तेलहन (तिल, सरसों आदि पौधे) काटने पर खेत में बची रहनेवाली खूँटी।

तिलेदानी—स्त्री० =तिलदानी।

तिलोक—पुं० =त्रिलोक।

तिलोकपति—पुं०=त्रिलोकपति (विष्णु)।

तिलोकी—पुं० [सं० त्रिलोकी] १ इक्कीस मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में लघु और गुरु होता है। २.=त्रैलोक्य। जैसे—त्रिलोकी नाथ।

तिलोचन—पुं० =त्रिलोचन।

तिलोत्तमा—स्त्री० [सं० तिल-उत्तमा, मध्य० स०] एक अप्सरा जिसके संबंध में कहा जाता है कि ब्रह्मा ने संसार के सभी सुन्दरतम पदार्थों से एक-एक तिल भर अंश लेकर इसके शरीर की रचना की थी।

तिलोदक—पुं० [सं० तिल-उदक, मध्य० स०] =तिलांजलि।

तिलोना—वि० =तेलौना (स्निग्ध)।

तिलोरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मैना जिसे तेलिया मैना भी कहते हैं।
†स्त्री० = तिलौरी।

तिलोहरा†—पुं० [देश०] पटसन का रेशा।

तिलौंछ—स्त्री० [हिं० तिल+औंछ (प्रत्य०)] तेल की वह उग्र गंध जो उसमें तली हुई या उससे मिली हुई वस्तुओं में से निकलती है।

तिलौंछना—स० [हिं० तेल+औंछना (प्रत्य०)] १. किसी चीज पर तेल लगाना या रगड़ना। २. चिकना करना।

तिलौंछा—वि० [हिं० तेल+औंछा (प्रत्य०)] १. जिसमें तिलौंछ हो। २. जिसमें तेल की-सी गंध, रंग या स्वाद हो।

तिलौरी—स्त्री० [हिं० तिल+बरी] वह बरी जिसमें तिल भी मिले हुए हों।
स्त्री० = तिलोरी।

तिल्य—वि० [सं० तिल+यत्] (खेत) जिसमें तेलहन की खेती हो सकती हो।
पुं० उक्त प्रकार का खेत।

तिल्लना—पुं० [सं० तिलक] तिलक नाम का वर्ण-वृत्त।

तिल्लर—पुं० [देश०] तीतर नामक पक्षी का एक नाम।

तिल्ला—पुं० [अ० तिला = स्वर्ण] १. कलाबत्तू, बादले आदि के तार जो कपड़ों में ताने-बाने के साथ बुने जाते हैं।
पद—तिल्लेदार। (देखें)
२ दुपट्टे, पगड़ी, साड़ी आदि का वह आँचल जिसमें उक्त प्रकार का कलाबत्तू या बादले का काम किया हो।
पद—नखरा-तिल्ला। (देखें)
३. वह सुंदर पदार्थ जो किसी वस्तु की शोभा बढ़ाने के लिए उसमें जोड़ दिया जाता है। (क्व०)
पुं० तिलका (वर्ण-वृत्त) का दूसरा नाम।

तिल्लाना†—पुं० = तराना।

तिल्ली—स्त्री० [सं० तिलक] १ पेट के भीतर का गुठली के आकार का वह छोटा अवयव जो बाईं ओर की पसलियों के नीचे होता है। २. एक रोग जिसमें उक्त अवयव में सूजन आ जाती है।
स्त्री० [सं० तिल] तिल (बीज)।
स्त्री० [देश०] एक तरह का बाँस।
†स्त्री० = तिली।

तिल्लेदार—वि० [हिं० तिल्ला+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें कलाबत्तू, बादले आदि के तार भी बुने या लगे हों।
जैसे—तिल्लेदार पगड़ी या साड़ी।

तिल्व—पुं० [सं०√तिल् (चिकना करना)+वन्] लोध्र। लोध।

तिल्वक—पुं० [सं० तिल्व+कन्] १. लोध। २. तिनिश वृक्ष।

तिल्हारी†—स्त्री० [?] घोड़े के माथे पर बाँधी जानेवाली झालर। नुक्ता।

तिवाड़ी—पुं०=तिवारी (त्रिपाठी)।

तिवान—पुं० [?] चिंता। फिक्र।

तिवारी†—पुं०=त्रिपाठी।

तिवासा†—पुं० [सं० त्रिवासर] तीन दिन।

तिवासी†—वि०=तिवासा।

तिवी—स्त्री० [देश०] तेमारी।

तिशना—पुं० [फा० तश्नीय] ताना। मेहना।
†स्त्री०=तृष्णा।

तिष्ट*—वि० [हिं० तिष्टना] बनाया हुआ। रचित।

तिष्टना—स० [सं० स्थिति] रचना। बनाना। उदा०—कोउ कहै यह काल उचावत कोई कहै यह ईसुर तिष्टो।—सुन्दर।

तिष्ठद्गु—पुं० [सं० अव्य० स० (नि०)] गोधूली का समय। संध्या।

तिष्ठना—अ० [सं० तिष्ठत्] १. ठहरना। २. बैठना। ३. स्थिर रहना। बने रहना।

तिष्ठा—स्त्री० [?] एक नदी जो हिमालय से निकलकर नवावगज के पास गगा मे मिली है।

तिष्य—पु० [स०√तुष् (सन्तोष करना)+क्यप्, नि०सिद्धि] १ पुष्य नक्षत्र। २ पौष मास। पूस। ३ कलियुग।
वि० कल्याण या मगल करनेवाला।

तिष्यक—पु० [सं० तिष्य+कन्] पौस मास।

तिष्य-पुष्पा—स्त्री० [व० स०, टाप्] आमलकी।

तिष्या—स्त्री० [स० तिष्य+अच्—टाप्] आमलकी।

तिच्छन*—वि०=तीक्ष्ण।

तिस†—सर्व० [स० तस्मिन्, पा० तिस्स] 'ता' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। 'उस' का पुराना और स्थानिक रूप। जैसे—तिसने, तिसको, तिससे इत्यादि।
पद—तिस पर=इतना होने पर। ऐसी अवस्था मे भी। जैसे—सौ रुपये तो ले गये, तिस पर अभी तक नाराज ही है।

तिसकार—पु०=तिरस्कार।

तिसखुट†—स्त्री० [हि० तीसी+खूँटी] तीसी के पौधे की खूँटी।

तिसखुरा†—स्त्री०=तिसखुट।

तिसन*—स्त्री०=तृष्णा।

तिसरा†—वि०=तीसरा।

तिसरायके—अव्य० [हिं० तिसरा] तीसरी वार।

तिसरायत—स्त्री० [हिं० तीसरा] तीसरा अर्थात् गैर या पराया होने का भाव।
†पु०=तिसरैत।

तिसरैत—पु० [हिं० तीसरा] १ दो विरोधी दलो, पक्षो, व्यक्तियो से भिन्न ऐसा तीसरा व्यक्ति जिसका उनके वैर-विरोध से कोई सम्बन्ध न हो। तटस्थ। जैसे—किसी तिसरैत को वीच मे डालकर झगडा निबटा लो। २. लाभ, सपत्ति आदि मे तीसरे अश या हिस्से का अधिकारी अथवा मालिक।

तिसा†—वि० [स० तादृश] [स्त्री० तिसी] तैसा। वैसा।
*स्त्री०=तृषा।

तिसाना†—अ० [स० तृषा] प्यासा होना। तृषित होना। उदा०—सरवर तटि हसिनी तिसाई।—कबीर।

तिसार†—पु०=अतिसार।

तिसूत—पु० [?] एक प्रकार की ओषधि।

तिसूती—वि० [हि० तीन+सूत] (कपडा) जिसमे तीन-तीन सूत एक साथ ताने और वाने मे होते है।
स्त्री० उक्त प्रकार से बुना हुआ कपडा।

तिसे*—सर्व०=उसे।

तिस्ना—स्त्री०=तृष्णा।

तिस्रा—स्त्री० [?] शख-पुष्पी।

तिस्स—पु० [स० तिष्य] सम्राट् अशोक के एक भाई का नाम।

तिहत्तर—वि० [स० त्रिसप्तति, पा० तिसत्तति, प्रा० तिहत्तरि] जो गिनती मे सत्तर से तीन अधिक हो।
पु० उक्त के सूचक अक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७३।

तिहद्दा—पु० [हिं० तीन+हद्=सीमा] वह स्थान जहाँ तीन हदें मिलती हों।

तिहरा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० तिहरी] दही जमाने या दूध दुहने का मिट्टी का वरतन।
†वि०=तेहरा।

तिहराना†—स०=तेहराना।

तिहरी†—स्त्री० [हिं० तीन+हार] तीन लडो की माला।
+वि०='तेहरा' का स्त्री०।

तिहवार†—पु०=त्योहार।

तिहवारी—स्त्री०=त्योहारी।

तिहा (हन्)—पु० [स०√तुह् (पीडित करना)+कनिन्, नि० सिद्धि] १. रोग। व्याधि। २ सद्भाव। ३ चावल। ४ धनुष।

तिहाई—स्त्री० [स० त्रि+हिं० हाई (प्रत्य०)] १ किसी चीज के तीन समान भागो मे कोई या हर एक। तीसरा अश, भाग या हिस्सा। २ खेत की उपज या पैदावार जिसका केवल तीसरा भाग काश्तकारो को मिला करता था और दो-तिहाई जमीदार ले लेता था। ३ दे० 'तिहैया'। ४ उपज। फसल। (पहले खेत की उपज का तृतीयाश काश्तकार लेता था इसी से यह नाम पडा।)
मुहा०—तिहाई मारी जाना=फसल का न उपजना या नष्ट हो जाना।

तिहउ†—पु०=तिहाव (गुस्सा)।

तिहानी—स्त्री० [देश०] चूडियाँ वनानेवालो की एक लकड़ी जो तीन वालिश्त लवी और एक वालिश्त चौडी होती है।

तिहायत† पु० दे० 'तिसरैत'।

तिहारा, तिहारो* —सर्व० [हिं०] तुम्हारा का ब्रज रूप।

तिहाली—स्त्री० [देश०] कपास की बौडी।

तिहाव†—पु० [हिं० तेह=गुस्सा+ताव] १. क्रोध। गुस्सा। २. आपस की अनवन। विगाड़।

तिहि—सर्व०=तेहि।

तिहीं†—क्रि० वि० [?] १. उसी मे। २ उसी जगह।

तिहूँ†—वि० [हिं० तीन+हूँ (प्रत्य०)] तीनो। जैसे—तिहू लोक।

तिहैया—पु० [हिं० तिहाई] १ किसी चीज का तीसरा अश या भाग। तिहाई। २ ढोलक, तवला, पखावज आदि वजाने मे कलापूर्ण सौन्दर्य लानेवाली तीन थापें जिनमे से प्रत्येक थाप जो अंतिम या समवाले ताल को तीन भागो मे वाटकर प्रत्येक भाग पर दी जाती है और जिसकी अतिम थाप ठीक सम पर पडती है।

ती—स्त्री० [स० स्त्री] १ स्त्री। औरत। उदा०—(क) तीरथ चलत मन ती-रथ चलत है—सेनापति। (ख) औ तैसे यह लच्छन ती के।—रत्नाकर। २ जोरू। पत्नी। ३ नलिनी या मनोहरण छन्द का एक नाम।

तीअन†—स्त्री० [स० तृणान्न] शाक। भाजी। तरकारी।

तीकरा†—पु० [देश०] अँखुआ। अकुर।

तीकुर—पु० [हि० तीन+कूरा=अश] १ दे० 'तिहया'। २ किसी चीज का वहुत छोटा टुकडा।
† पु०=तीखुर।

तीक्षण* —वि०=तीक्ष्ण।

तीक्षन—वि० =तीक्ष्ण।

तीक्ष्ण—वि० [स०√तिज् (तीखा करना)+क्स्न, दीर्घ] १ (पदार्थ) जिसका स्वाद चरपरा, झालदार या हलकी चुनचुनी उत्पन्न करनेवाला हो। तीखे स्वादवाला। जैसे—प्याज, लहसुन आदि। २ (शस्त्र) जिसकी धार बहुत चोखी या तेज अथवा नोक बहुत पैनी हो। जैसे—तलवार, बरछी आदि। ३ जिसकी गति या वेग बहुत अधिक हो। प्रचड। जैसे—तीक्ष्ण वायु। ४. जिसका परिणाम या प्रभाव बहुत उग्र या तीव्र हो। जैसे—तीक्ष्ण स्वभाव। ५ जो किसी बात मे औरो से बहुत बढ-चढकर हो या अधिक गहराई तक पहुँच सके। जैसे—तीक्ष्ण बुद्धि। ६ (कथन) जो अप्रिय और कटु हो। जैसे—तीक्ष्ण वचन। ७. आत्मत्यागी। ८ जो कभी आलस्य न करता हो। निरालस्य। ९. जिसे सहना कठिन हो। जैसे—तीक्ष्ण ताप या शीत।

पु० [स०] १ उत्ताप। गरमी। २. जहर। विष। ३ वत्सनाभ। बछनाग। ४ मृत्यु। मौत। ५. युद्ध। लड़ाई। ६ महामारी। मरी। ७ चव्य। चाव। ८. मुष्यक। मोखा। ९ जवाखार। १० सफेद कुश। ११. समुद्री नमक। करकच। १२ कुंदरू गोद। १३ इस्पात। १४. शास्त्र। १५ योगी। १६ ज्योतिष मे मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा नक्षत्र। १७ पूर्वा और उत्तरा भाद्रपदा, ज्येष्ठा, अश्विनी और रेवती नक्षत्रो मे बुध की गति।

तीक्ष्ण-कंटक—पु० [ब० स] १. धतूरे का पेड। २ बबूल का पेड। ३ करील का पेड। ४. इगुदी या हिंगोट का पेड।

तीक्ष्ण-कंटका—स्त्री० [स० तीक्ष्णकटक+टाप्] एक प्रकार का वृक्ष जिसे ककारी कहते है।

तीक्ष्ण-कंद—पु० [ब० स०] प्याज।

तीक्ष्णक—पु० [स० तीक्ष्ण+कन्] १ मोखा वृक्ष। २ सफेद सरसो।

तीक्ष्ण-कल्क—पु० [ब० स०] तुवरू का पेड।

तीक्ष्ण-कांता—स्त्री० [कर्म० स०] पुराणानुसार तारा देवी का एक नाम।

तीक्ष्ण-क्षीरी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] बसलोचन।

तीक्ष्ण-गंध—पु० [ब० स०] १ शोभाजन। सहिंजन। २ लाल तुलसी। ३ सफेद तुलसी। ४ छोटी इलायची। ५ लोबान।

तीक्ष्ण-गंधक—पु० [स० तीक्ष्ण-गध+कन्] सहिंजन।

तीक्ष्णगंधा—स्त्री० [स० तीक्ष्णगध+टाप्] १ राई। २. छोटी इलायची। ३ सफेद बच। ४ जीवती। ५ कथारी का वृक्ष।

तीक्ष्ण-तडुला—स्त्री० [स० ब० स०, +टाप्] पिप्पली। पीपल।

तीक्ष्णता—स्त्री० [स० तीक्ष्ण+तल —टाप्] तीक्ष्ण होने की अवस्था या भाव।

तीक्ष्ण-ताप—पु० [ब० स०] महादेव। शिव।

तीक्ष्ण-तेल—पु०=तीक्ष्ण-तैल।

तीक्ष्ण-तैल—पु० [सं० तीक्ष्ण+तैलच्] १ सरसो का तेल। २. सेहुड का दूध। ३ मद्य। शराब। ४. राल।

तीक्ष्ण-दंत—वि० [ब० स०] जिसके दाँत बहुत तेज या नुकीले हो।

तीक्ष्ण-दंष्ट्र—वि० [ब० स०] तीखे या तेज दाँतोवाला।

पु० बाघ (हिंसक जतु)।

तीक्ष्ण-दृष्टि—वि० [ब० स०] जिसकी दृष्टि तीक्ष्ण हो। सूक्ष्म दृष्टि-वाला (व्यक्ति)।

तीक्ष्ण-धार—वि० [ब० स०] जिसकी धार बहुत तेज हो।

पु० खड्ग, तलवार आदि शस्त्र।

तीक्ष्ण-पत्र—वि० [ब० स०] जिसके पत्तों के पार्श्व तेज धारवाले हों।

पु० १. एक प्रकार का गन्ना। २ धनिया।

तीक्ष्ण-पुष्प—पु० [स० ब० स०] लवग। लौग।

तीक्ष्ण-पुष्पा—स्त्री० [स० तीक्ष्णपुष्प+टाप्] केतकी।

तीक्ष्ण-प्रिय—पु० [कर्म० स० ?] जौ।

तीक्ष्ण-फल—पु० [ब० स०] तुंबुरु। धनिया।

तीक्ष्ण-फला—स्त्री० [स० तीक्ष्णफल+टाप्] राई।

तीक्ष्ण-बुद्धि—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जिसकी बुद्धि प्रखर हो।

तीक्ष्ण-मंजरी—स्त्री० [ब० स०] पान का पौधा।

तीक्ष्ण-मूल—वि० [ब० स०] जिसकी जड मे से उग्र या तेज गध आती हो।

पु० १. कुलजन। २. सहिंजन।

तीक्ष्ण-रश्मि—वि० [ब० स०] जिसकी किरणें बहुत तेज हों।

पु० सूर्य।

तीक्ष्ण-रस—पु० [ब० स०] १ जवाखार। यवक्षार। २ शोरा।

तीक्ष्ण-लौह—पु० [कर्म० स०] इस्पात।

तीक्ष्ण-शूक—पु० [ब० स०] यव। जौ।

तीक्ष्ण-सारा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] शीशम का पेड।

तीक्ष्णांशु—पु० [तीक्ष्ण-अंशु, ब० स०] सूर्य।

तीक्ष्णा—स्त्री० [स० तीक्ष्ण+टाप्] १ बच। २. केवाच। कौंछ। ३ बड़ी माल-कगनी। ४ मिर्च। ५ सर्पककाली नामक पौधा। ६. अत्यम्लपर्णी नाम की लता। ७ जोक। ८ तारा देवी का एक नाम।

तीक्ष्णाग्नि—स्त्री० [तीक्ष्ण-अग्नि, कर्म० स०] १ प्रबल जठराग्नि। २ अजीर्ण या अपच नाम का रोग।

तीक्ष्णाग्र—वि० [तीक्ष्ण-अग्र, ब० स०] (अस्त्र) जिसका अगला भाग नुकीला हो।

तीक्ष्णायस—पु० [तीक्ष्ण-आयस, कर्म० स०] इस्पात। लोहा।

तीख†—वि०=तीखा।

तीखन†—वि०=तीक्ष्ण।

तीखर†—पु०=तीखुर।

तीखल†—पु०=तीखुर।

तीखा—वि० [स० तीक्ष्ण] [स्त्री० तीखी] [भाव० तीखापन] १. (शस्त्र) जिसकी धार या नोक बहुत तेज या पैनी हो। चोखा। जैसे—तीखी छुरी। २. (व्यक्ति या उसका व्यवहार) जिसमें किसी प्रकार की उग्रता, तीव्रता या प्रखरता हो। कोमलता, मृदुता, सरलता, आदि से रहित। जैसे—तीखी नजर, तीखा स्वभाव। ३ (पदार्थ) जिसका स्वाद उग्र, चरपरा या तेज हो। जैसे—तरकारी मे पडा हुआ तीखा मसाला। ४ (कथन या बात) जिसमे अप्रियता या कटुता हो। जैसे—मैं किसी की तीखी बातें नही सुनना चाहता। ५. किसी की तुलना मे अच्छा या बढकर। चोखा। जैसे—यह घी

(या तल) उससे तीखा पडता है। ६ (दृष्टि) तिरछा। तिर्यक्। जैसे—सुंदरी का किसी को तीखी नजर से देखना।
पु० [?] एक प्रकार की चिडिया।
तीखापन—पु० [हिं० तीखा+पन (प्रत्य०)] तीखे होने की अवस्था या भाव।
तीखी—स्त्री० [हिं० तीखा] एक उपकरण जिससे रेशम फेरा या बटा जाता है।
तीखुर—पु० [सं० तवक्षीर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड का सार सफेद चूर्ण के रूप मे होता और खीर, हलुआ आदि बनाने के काम आता है। अव एक प्रकार का तीखुर विदेशो से भी आता है जिसे आरारूट (देखें) कहते हैं।
तीखुला†—पु०=तीखुर।
तीछन†—वि०=तीक्ष्ण।
तीछा*—वि०=तीखा।
तीज—स्त्री० [सं० तृतीया] १. प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। तृतीया। २ भादो सुदी तीज जिस दिन सुहागनि स्त्रियाँ निर्जल व्रत रखती है। ३ हरितालिका।
तीजा—वि० [हिं० तीज] तीसरा।
पु० किसी के मरने के वाद का तीसरा दिन। इस दिन मृतक के सबधी गरीबों को भोजन बाँटते हैं। (मुसलमान)
तीत*—वि०=तीता। (तिक्त)
तीतर—पु० [सं० तित्तिरि] मुरगी की जाति का एक पक्षी जिसका मास खाया जाता है। काले रग का तीतर काला और चित्रित रंग का तीतर गौर कहलाता है।
कहा०—आधा तीतर और आधा बटेर=ऐसी वस्तु जिसके दो विभिन्न अगो या अंशो का अनुपात या सौंदर्य एक-सा न हो।
विशेष—वैद्यक मे तीतर का मास खाँसी, ज्वर आदि का नाशक माना गया है।
तीता—वि० [सं० तिक्त] १ जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। तिक्त। जैसे—मिर्च। २ कडुआ। कटु।
वि० [?] भीगा हुआ। आर्द्र। तर।
पुं० १ जोती-बोई जानेवाली जमीन की तरी या नमी। २. ऊसर भूमि। ३ ढेंकी और रहट का अगला भाग। ४ ममीरे का पौधा।
तीतुर*—पु०=तीतर।
तीतुरी†—स्त्री० =तितली।
तीतुला†—पु०=तीतर।
तीन—वि० [सं० त्रीणि] जो गिनती मे दो से एक अधिक हो।
पु० १ दो और एक के योग की सख्या। २ उक्त सख्या का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३
मुहा०—**तीन पाँच करना**=घुमाव-फिराव, वहानेवाजी या हुज्जत की बात करना।
३ सरयूपारी ब्राह्मणो मे गर्ग, गौतम और शाडिल्य इन तीन विशिष्ट गोत्रों का एक वर्ग।
मुहा०—**तीन तेरह करना**=(क) अनेक प्रकार के वर्ग या विभेद उत्पन्न करना। (ख) इधर-उधर छितराना या बेखेरना। तितर-बितर करना।
कहा०—न तीन में न तेरह में=जिसकी कही गिनती या पूछ न हो।
†स्त्री०=तिन्नी (धान्य)।
तीन काने—पु० [हिं०] चौपड़ के खेल मे वह दाँव जो तीनो पासों पर एक ही एक विंदी ऊपर रहने पर माना जाता है। (खेल का सवसे छोटा दाँव)
तीनपान—पु० [देश०] एक तरह का वहुत मोटा रस्सा। (लश०)
तीनपाम—पु०=तीनपान।
तीनलड़ी—स्त्री० [हिं० तीन+लडी] तीन लड़ियोंवाला गले मे पहनने का हार।
तीनि†—वि०, पु०=तीन।
तीनी—स्त्री० [हिं० तिन्नी] तिन्नी का चावल।
तीपड़ा—पु० [देश०] रेशमी कपडा बुननेवालो का एक उपकरण जिसके नीचे-ऊपर वे दो लकडियाँ लगी रहती है जिन्हे वेसर कहते है।
तीमन—पु० [?] बनी हुई तरकारी या उसका रसा। (पूरब)
तीमार—पु० [फा०] १ टहल। सेवा-शुश्रूषा। २. रक्षा।
तीमारदारी—स्त्री० [फा०] रोगी की की जानेवाली सेवा-शुश्रूषा।
तीय—स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री। औरत। नारी। २ पत्नी। जोरू।
तीरंदाज—पु० [फा०] [भाव० तीरंदाजी] तीर से लक्ष्य-भेद करनेवाला व्यक्ति।
तीरंदाजी—स्त्री० [फा०] तीर से लक्ष्य-भेद करने की क्रिया या भाव।
तीर—पुं० [सं०√तीर् (पार जाना)+अच्] १. नदी का किनारा। तट।
मुहा०—**तीर पकड़ना या लगना**=किनारे पर पहुँचना।
२ किसी चीज का किनारा। ३. निकटता। सामीप्य। ४ सीसा नामक धातु। ५ राँगा।
अव्य० निकट। पास। समीप।
पु० [फा०] १ धनुष से छोडा जानेवाला वाण। शर।
क्रि० प्र०—चलाना। छोडना।—फेकना।—लगाना।
२ लाक्षणिक रूप मे, कौशल या चालाकी से भरी हुई तरकीव। चाल।
मुहा०—**तीर चलाना या फेंकना**=ऐसी तरकीव या युक्ति लगाना जिससे काम निकलने की वहुत-कुछ सभावना हो। **तीर लगना**=युक्ति सफल होना। काम वनना।
पु० [?] जहाज का मस्तूल। (लश०)
तीरगर—पु० [फा०] तीर वनानेवाला कारीगर।
तीरण—पु० [सं०√तीर् (पार जाना)+ल्युट्—अन] करज।
तीरथ—पु०=तीर्थ।
तीर-भुक्ति—स्त्री० [सं० व० स०] गगा, गडकी और कौशिकी इन तीन नदियो से घिरा हुआ तिरहुत प्रदेश।
तीरवर्त्ती (र्तिन्)—वि० [सं० तीर√वृत् (रहना)+णिनि] १ तट पर रहनेवाला। २. तीर या तट पर स्थित होनेवाला।

तीरस्थ—पुं० [सं० तीर√स्था (स्थित होना)+क] नदी के तीर पर पहुँचाया हुआ मरणासन्न व्यक्ति।

तीरा—पुं० [?] गुलहजारा नामक फूल।
पुं०=तीर।

तीराट—पुं० [सं० तीर√अट् (घूमना)+अच्] लोध।

तीरित—भू० कृ० [सं०√तीर् (कार्य समाप्त होना)+क्त] निर्णीत।

तीरु—पुं० [सं०√तृ (तैरना)+रु (बा०)] १. शिव। महादेव। २. शिव की स्तुति।

तीर्ण—वि० [सं०√तृ (पार करना)+क्त] १. जो पार हो गया हो। उत्तीर्ण। २. जिसने सीमा का उल्लंघन किया हो। ३. भीगा हुआ। गीला। तर।

तीर्णपदी—स्त्री० [ब० स०, टाप्] तालमूल। मूसली।

तीर्णपदी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्]=तीर्णपदा।

तीर्णा—स्त्री० [सं० तीर्ण+टाप्] एक प्रकार का छंद।

तीर्थंकर—पुं० [सं० तीर्थ√कृ (करना)+ख,] जैनियों के प्रमुख देवता। विशेष—कुल ४८ तीर्थंकर माने गये हैं जिनमें से २४ गत उत्सर्पिणी में और २४ वर्त्तमान उत्सर्पिणी में हुए हैं।

तीर्थ—पुं० [सं०√तृ (पार करना)+थक्] १ जलाशय आदि में उतरने अथवा नाव के यात्रियों के उतरने-चढ़ने के लिए बनी हुई सीढ़ियाँ। घाट। २. मार्ग। रास्ता। ३. वह जिसके द्वारा या सहायता से कोई काम होता या हो सकता हो। कार्य सिद्ध करने का उपाय, युक्ति या साधन। ४ कोई ऐसा स्थान, विशेषतः जलाशय, नदी, समुद्र आदि के पास का स्थान जिसे लोग धार्मिक दृष्टि से पवित्र या मोक्षदायक समझते हों और श्रद्धापूर्वक दर्शन, पूजन आदि के लिए जाते हों। जैसे—काशी हिंदुओं का और मक्का मुसलमानों का बहुत बड़ा तीर्थ है। ५. कोई ऐसा स्थान जिसे लोग अन्य स्थानों से विशिष्ट महत्त्व का या कार्य-सिद्धि में सहायक समझते हों। जैसे—आज-कल के राजनीतिज्ञों का तीर्थ तो बस दिल्ली है। ६. कोई ऐसा महात्मा या महापुरुष जिसे लोग पूज्य और श्रद्धेय समझते हों। जैसे—गुरु, पिता, माता आदि तीर्थ हैं। ७. धार्मिक गुरु या शिक्षक। उपाध्याय। ८ किसी चीज या बात का मूल कारण या स्रोत अथवा मुख्य साधन। ९. उपयुक्त अथवा योग्य परामर्श या सूचना। १० किसी काम या बात के लिए उपयुक्त अवसर या स्थल। ११. धार्मिक ग्रंथ, विधान या शास्त्र। १२. यज्ञ। १३. हथेली और उँगलियों के कुछ विशिष्ट स्थान जिनमें कुछ विशिष्ट देवी-देवताओं का अवस्थान माना जाता है। १४. ईश्वर अथवा उसका कोई अवतार। १५. किसी देवता या देवी का चरणामृत। १६. दर्शन-शास्त्र की कोई शाखा या सिद्धांत। १७. ब्राह्मण। १८. अग्नि। आग। १९. पुण्य-काल। २० अतिथि। मेहमान। २१ दसनामी संन्यासियों का एक भेद और उनकी उपाधि। २२ योनि। भग। २३ रजस्वला स्त्री का रज। २४ वैर-भाव छोड़कर किया जानेवाला सद्व्यवहार या सदाचरण। २५ परामर्श देनेवाला व्यक्ति। मंत्री। २६. प्राचीन भारत में, वे विशिष्ट अठारह अधिकारी जो राष्ट्र की संपत्ति माने जाते थे। यथा—मंत्री-पुरोहित, युवराज, भूपति, द्वारपाल, अंतर्वेशिक, कारागार का अध्यक्ष, द्रव्य या धन एकत्र करनेवाला अधिकारी, कृत्याकृत्य अर्थ का विनियोजक प्रदेष्टा, नगराध्यक्ष, कार्यनिर्माण कारक, धर्माध्यक्ष, सभाध्यक्ष, दंडपाल, दुर्गपाल, राष्ट्रान्तपाल और अटवीपाल। २७ रोग का निदान या पहचान।
वि० १. तारने या पार उतारनेवाला। २. उद्धार करने या बचानेवाला।

तीर्थकृत्—पुं० [सं० तीर्थ√कृ (करना)+क्विप्] १. जैनियों के देवता। जिन। देव। २. शास्त्रकार।

तीर्थक—पुं० [सं० तीर्थ√कै (शब्द करना)+क] १. ब्राह्मण। २. तीर्थंकर। ३. तीर्थों की यात्रा करनेवाला व्यक्ति।

तीर्थंकर—पुं० [सं० तीर्थ√कृ+ट] १. विष्णु। २ जैनों के विशिष्ट महापुरुष जो संख्या में २४ हैं और जिन कहे जाते हैं।

तीर्थ-काक—पुं० [सं० स०] वह जो तीर्थ में रह कर धर्म के नाम पर लोगों से धन ऐंठता हो।

तीर्थ-देव—पुं० [ष० त० या उपमि० स०] शिव। महादेव।

तीर्थ-पति—पु [ष० त०]=तीर्थराज।

तीर्थ-पाद्—पुं० [ब० स०] विष्णु।

तीर्थपादीय—पुं० [सं० तीर्थपाद+छ—ईय] वैष्णव।

तीर्थ-पुरोहित—पुं० [सं० त०] वह जो किसी विशिष्ट तीर्थ में स्नान करने आनेवाले यात्रियों का पौरोहित्य करता और उन्हें स्नान, दर्शन आदि कराता हो। पंडा।

तीर्थयात्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तीर्थ-स्थानों के दर्शनार्थ की जानेवाली यात्रा।

तीर्थ-राज—पुं० [ष० त०] प्रयाग।

तीर्थराजि—स्त्री० [ब० स०] काशी।

तीर्थ-व्यास—पुं०=तीर्थ-काक।

तीर्थसेनि—स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

तीर्थ-सेवी (विन्)—पुं० [सं० तीर्थ√सेव् (सेवन करना)+णिनि] वह जो पुण्य, मोक्ष आदि प्राप्त करने के विचार से और धार्मिक भावनाओं से सदाचारपूर्वक किसी तीर्थ में जाकर रहने लगता हो।

तीर्थाटन—पुं० [सं० तीर्थ-अटन, मध्य० स०] तीर्थ यात्रा।

तीर्थिक—पुं० [सं० तीर्थ+ठन्—इक] १ तीर्थ का ब्राह्मण। पंडा। २ तीर्थंकर। ३. बौद्धों की दृष्टि से वह ब्राह्मण जो बौद्ध-धर्म का द्वेषी हो।

तीर्थिया—पुं० [सं० तीर्थ+हिं० इया (प्रत्य०)] जैनी जो तीर्थंकरों के उपासक होते हैं।

तीर्थोदक—पुं० [सं० तीर्थ-उदक, ष० त०] किसी तीर्थ-स्थल का जल जो पवित्र माना जाता है।

तीर्थ्य—पुं० [सं० तीर्थ+यत्] १ एक रुद्र का नाम। २ सहपाठी।

तीर्न—वि० [सं० तीर्ण] १. उत्तीर्ण। २. भीगा हुआ।

तीलखा—पुं० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तीला—पुं० [फा० तीर=बाण] [स्त्री० अल्पा० तीली] तिनका, विशेषतः बड़ा या लंबा तिनका।

तीली—स्त्री० [हिं० तीला] १ वनस्पति आदि का बड़ा तिनका। सींक। २. धातु आदि का पतला कड़ा तार। ३. तीलियों की वह कूँची जिससे जुलाहे करघे पर का सूत साफ करते हैं। ४ जुलाहों की ढरकी में की वह सींक जिसमें नरी पहनाई रहती है।

तीवई*—स्त्री० [म० स्त्री] स्त्री।

तीवट—पु० [स० त्रिवण] १ एक राग जो दोपहर के समय गाया जाता है। २ सगीत मे १४ मात्राओ का एक ताल जिसे तेवर या तेवरा भी कहते हैं।

तीवन—पु० [स० तेमन=व्यजन] १ पकवान। २ रसेदार तरकारी।

तीवर—पु० [स०√तृ (तैरना)+ष्वरच्, नि० सिद्धि] १. समुद्र। सागर। २. [√तीर् (कर्म-समाप्ति)+ष्वरच्] व्याध। शिकारी। ३ मछुआ। ४ पुराणनुसार एक वर्ण-सकर जाति जिसकी उत्पत्ति राजपूत माता और क्षत्रिय पिता से कही गई है।

†वि०=तीव्र।

तीव्र—वि० [स०√तीव् (मोटा होना)+रक्] १. बहुत अधिक। अतिशय। अत्यत। २ बहुत अधिक तीक्ष्ण या तीखा। तेज। ३ बहुत गरम। ४. मान, सीमा आदि मे बहुत बढा हुआ। बेहद। ५ कड़ुआ। कटु। ६ जो सहा न जा सके। असह्य। ७. उग्र, प्रचड, या विकट। ८ जिसमे यथेष्ट वेग हो। ९ (सगीत मे स्वर) जो अपने मानक या साधारण रूप से कुछ ऊँचा या बढा हुआ हो। 'कोमल' का विपर्याय।

विशेष—ऋषभ गान्धार, मध्यम, धैवत और निषाद ये पाचो स्वर दो प्रकार के होते हैं—कोमल और तीव्र।

पु० १ लोहा। २ नदी का किनारा या तट। ३. महादेव। शिव।

तीव्र-कंठ—पु० [ब० स०] सूरन। जमीकद। ओल।

तीव्र-गधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] अजवायन। यवानी।

तीव्रगंधिका—स्त्री० [सं० तीव्रगन्धा+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] अजवायन।

तीव्र-गति—स्त्री० [ब० स०] वायु। हवा।

तीव्र-ज्वाला—स्त्री० [म० तीव्र√ज्वल् (जलना)+णिच्+अच्—टाप्] धव का फूल जिमे छूने से लोगो का विश्वास था कि शरीर मे घाव हो जाता है।

तीव्रता—स्त्री० [स० तीव्र+तल्—टाप्] तीव्र होने की अवस्था या भाव। (सभी अर्थो मे)

तीव्र-सव—पु० [कर्म० स०] एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

तीव्रा—स्त्री० [म० तीव्र+टाप्] १ षडज स्वर की चार श्रुतियो मे से पहली श्रुति। २. खुरासानी अजवायन। ३ राई। ४. गांडर दूब। गड-दूर्वा। ५ तुलसी। ६ कुटकी। ७ बड़ी मालकगनी। ८ तरवी नामक वृक्ष।

तीव्रानन्द—पु० [तीव्र-आनन्द, ब० स०] शिव। महादेव।

तीव्रानुराग—पु० [तीव्र-अनुराग, कर्म० स०] १ किसी वस्तु के प्रति होनेवाला अत्यधिक अनुराग। २. उक्त प्रकार का अनुराग जो जैनो मे अतिचार माना गया है।

तीस—वि० [स० त्रिंशति; पा० तीमा] जो गिनती मे बीस से दस अधिक हो।

स्त्री० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—३०।

पद—तीस मार खाँ=बहुत बडा बहादुर। (व्यग्य) **तीसो दिन**=सदा। नित्य।

तीसर†—स्त्री० [हिं० तीसरा] खेत की तीसरी जुताई।

वि०=तीसरा।

तीसरा—वि० [हि० तीन+सरा (प्रत्य०)] १ क्रम मे तीन के स्थान मे पडनेवाला जो गिनती मे दो के उपरात और चार से पहले हो। २ जिसका प्रस्तुत विषय अथवा दोनो पक्षो मे से किसी एक से भी कोई सबध या लगाव न हो।

तीसवाँ—वि० [हि० तीस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम मे तीस के स्थान मे पडनेवाला। तीसवाँ दिन।

तीसी—स्त्री० [स० अतसी] १ डेढ हाथ ऊँचा एक पौधा जिसमे नीले रग के फूल तथा बीज मटमैले रग के घुडीदार गोल होते हैं। २. उक्त बीज जो वैद्यक के अनुसार वात, पित और कफनाशक होते हैं।

स्त्री० [हिं० तीस+ई (प्रत्य०)] वस्तुएँ गिनने का एक मान जिसका सैकडा तीस गाहियों का अर्थात् १५० का होता है।

स्त्री० [?] एक प्रकार की छेनी जिससे लोहे की थालियो आदि पर नक्काशी करते है।

तीहा†—पु० [स० तुष्टि ?] तसल्ली। आश्वासन।

वि०=तिहाई। जैसे—आधा-तीहा माल।

तुंग—वि० [स०√तुज् (हिंसा करना)+घञ्, कुत्व] १ बहुत ऊँचा। २ उग्र। तीव्र। ३ प्रधान। मुख्य।

पु० १. महादेव। शिव। २ बुध नामक ग्रह। ३ ज्योतिष मे ग्रहों के उच्च होने की अवस्था। दे० 'उच्च'। ४ चतुर व्यक्ति। ५ पर्वत। पहाड। ६ पुन्नाग वृक्ष। ७ नारियल। ८ कमल का केसर। किंजल्क। ९ झुड। समूह। १० एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और दो गुरु होते हैं। ११ एक प्रकार का झाडदार छोटा पेड जो पश्चिमी हिमालय मे होता है। इसे आमी और एरडी भी कहते हैं।

तुंगक—पु० [स० तुग+कन्] १ पुन्नाग वृक्ष। नागकेसर। २. एक प्राचीन तीर्थ जहाँ सारस्वत मुनि ऋषियो को वेद पढाते थे।

तुंग-नाथ—पु० [मध्य० स०] हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।

तुंग-नाभ—पु० [ब० स०] एक तरह का कीडा जिसके काट लेने पर शरीर मे जलन होती है।

तुंग-बाहु—पु० [ब० स०] तलवार चलाने का एक पुराना ढग या प्रकार।

तुंग-बीज—पु० [ष० त०] पारद। पारा।

तुंग-भद्र—पु० [कर्म० स०] मतवाला हाथी।

तुंगभद्रा—स्त्री० [स० तुग-भद्र+टाप्] दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो सह्याद्रि पर्वत से निकलती है और कृष्णा नदी मे मिलती है।

तुंग-मुख—पु० [ब० स०] गैंडा।

तुंगरस—पु० [ब० स०] एक प्रकार का गध-द्रव्य।

तुंगला—पु० [देश०] एक तरह की छोटी झाडी।

तुंगवेणा—स्त्री० [स०] तुगभद्रा नदी का पुराना नाम।

तुंग-शेखर—पु० [ब० स०] पर्वत। पहाड।

तुंगा—स्त्री० [स० तुग+टाप्] १ वशलोचन। २ शमी वृक्ष। ३ तुग नामक वर्णवृत्त।

तुंगारण्य—पु० [तुग-अरण्य, कर्म० स०] झाँसी, ओडछा आदि प्रदेशो के आस-पास के जगलो का पुराना नाम।

तुंगारन्न*—पु०=तुगारण्य।

तुंगारि—पु० [तुग-अरि, ष० त० ?] सफेद कनेर का पेड।
तुंगिनी—स्त्री० [स० तुग+इनि—ङीप्] महाशतावरी। बडी सतावर।
तुंगिमा (मन्)—स्त्री० [स० तुग+इमनिच्] ऊँचाई।
तुंगी (गिन्)—वि० [स० तुग+इनि] ऊँचा।
पु० उच्चस्थ ग्रह।
स्त्री० [स० तुग+ङीप्] १. हल्दी। २ रात्रि। रात। ३ वन-तुलसी। ममरी।
तुंगी-नास—पु० [ब० स०] दे० 'तुगनाभ'।
तुंगी-पति—पु० [प० त०] चद्रमा।
तुंगीश—पु० [तुगि-ईश, कर्म० स०] १ शिव। २ सूर्य। ३ कृष्ण।
तुंज—पु० [स०√तुज् (हिंसा करना)+अच्] वज्र।
तुंजाल—पु० [स० तुरग-जाल] घोडो की पीठ पर डाली जानेवाली एक तरह की जाली या जालीदार कपडा जिससे मक्खियाँ उन्हे तग नही करने पाती।
तुंजीन—पु० [स०तुज+ख—ईन?] प्राचीन काल के कश्मीरी नरेशो की उपाधि।
तुंड—पु० [स०√तुड् (तोडना)+अच्] १. मुख। मुँह। २. चोच। ३ कुछ बडा तथा आगे निकला हुआ मुँह। थूथन। ४. तलवार का अगला भाग। ५ शिव। ६. एक राक्षस।
तुंडकेरिका—स्त्री० [स० तुडकेरी+कन्-टाप्, ह्रस्व] कपास का पौधा।
तुंडकेरी—स्त्री० [स० तुंड+कन्√ईर् (प्रेरित करना)+अण्—ङीप्] १ कपास। २. विबाफल। कुदरू।
तुंडके-शरी—पु० [स० मध्य० स० ?] वैद्यक के अनुसार तालु मे होनेवाली एक तरह की सूजन (रोग)।
तुंडि—स्त्री० [स०√तुड्+इन्] १. नाभि। २. विबाफल। कुदरू। ३ दे० 'तुड'।
तुंडिक—वि० [स० तुडि√कै (शब्द करना)+क] जिसका मुँह आगे की ओर निकला हुआ हो। थूथनवाला।
तुंडिका—स्त्री० [स० तुड+कन्—टाप्] १. टोंटी। २ विबाफल। कुदरू। ३. चोच। ४. गले के अदर जीभ की जड के पास की दो अडाकार ग्रथियाँ। कौआ। घटी। (टासिल्स)
तुडिका-शोथ—पु० [प० त०] तुडिका अर्थात् घटी मे होनेवाली सूजन। (टॉन्सिलाइटिस)
तुंडिकेशी—स्त्री० [स० पृपो० सिद्धि] कुंदरू।
तुंडिभ—वि० [स० तुडि+भ] जिसकी तोद या नाभि आगे निकली तथा बढी हुई हो।
तुंडिल—वि० [स० तुडि+लच्] १. तोद या निकले हुए पेटवाला। तोंदिल। २ जिसकी नाभि मोटी और बाहर निकली हुई हो।
तुंडी (डिन्)—वि० [स० तुड+इनि] १. तुडवाला। तुड से युक्त। २ चोचवाला। ३. थूथनवाला।
पु० गणेश।
स्त्री० [स० तुडि+ङीप्] ढोढी। नाभि।
तुंडी-गुद-पाक—पु० [स० तुडी-गुद, द्व० स०, तुडीगुद+पाक, स० त०] एक रोग जिसमे नाभि और गुदा दोनो मे सूजन हो जाती है।
तुंडीर-मंडल—पु० [ब० स०] एक प्राचीन देश जो दक्षिण मे था।
तुंद—पुं० [स०√तुद् (व्यथा)+दन्, नुम्] उदर। पेट।
वि० [फा०] तीव्र। तेज। प्रचड। जैसे—तुद हवा।
तुंदि—पु० [स०√तुद्+इन्, नुम्] १. नाभि। २ एक गधर्व का नाम।
तुंदिक—वि० [स० तुद+ठन्—इक] जिसकी तोद निकली या बढी हुई हो। तोंदिल।
तुंदिक-फला—स्त्री० [स० ब स०, टाप्] खीरे की बेल।
तुंदिका—स्त्री० [स० तुदिक+टाप्] नाभि।
तुंदित, तुंदिभ—वि० [स० तुद+इतच्; तुदि+भ] तुदिल। (दे०)
तुंदियाना†—अ० [हिं० तोद] तोंद बढना।
स० तोंद बढाना।
तुंदिल—वि० [स० तुद+इलच्] जिसकी तोंद निकली या बढी हुई हो।
तुंदिलीकरण—पु० [स० तुदिल+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ+ल्युट्—अन] १ फुलाना। २ बढाना।
तुंदी—स्त्री० [स० तुन्द+ङीप्] नाभि।
तुंदैल†—वि०=तुदिल।
तुंदैला†—वि०=तुदिल।
तुंब—पु० [स०√तुब् (नष्ट करना)+अच्] १. घीया। लौकी। २. सुखाई हुई लौकी का तूँबा।
तुंबड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड जिसकी लकडी अदर से सफेद और चिकनी होती तथा मकानो मे लगती है।
स्त्री०=तूबडी।
तुंबर—पु० [स०तुब√रा (लाना)+क] तुबुरु। (दे०)
तुंबरी—स्त्री० [स० तुम्बर+ङीप्] एक कदन्न।
तुंबवन—पु० [स०] दक्षिण दिशा का एक प्राचीन देश। (बृहत्संहिता)
तुंबा—पु० [स० तुब+टाप्] [स्त्री० अल्पा० तुबी] १. कडुआ कद्दू। गोल कडुआ घीया। तूबा। २ सुखाये हुए कडए कद्दू को बीच मे से काट कर बनाया हुआ कटोरे के आकार का पात्र। ३ एक प्रकार का जगली धान जो जलाशयो के किनारे होता है।
तुंबिका—स्त्री० [स०√तुब्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व]=तुबी।
तुंबी—स्त्री० [स०√तुब्+इन्—ङीप्] १ छोटा कडुवा कद्दू। तितलौकी। २ उक्त को सुखाकर बनाया हुआ पात्र। छोटा तूबा।
तुंबुक—पु० [स०√तुब् (पीडित करना)+उक] कद्दू का फल। घीया।
तुंबुरी—स्त्री० [स० तुब√रा+क—ङीप्, पृपो० उत्व] १ धनिया। २. कुतिया।
तुंबुरु—पु० [स०=तुबर, पृपो० सिद्धि] १. धनिया। २ चैत्र मास मे सूर्य के रथ पर रहनेवाला एक गधर्व जो बहुत बडा सगीतज्ञ कहा गया है। ३ धनिये की तरह के एक प्रकार के बीज जो बहुत झालदार या तीखे स्वादवाले होते है।
तुअ*—सर्व०=तव (तुम्हारा)।
तुअना†—अ० [हिं० चूना, चुवना] १ चूना। टपकना। २ गर्भपात या गर्भस्राव होना। ३ गिर पडना। गिरना।
तुअर—पु० [स० तुवरी] अरहर।
तुइ—सर्व०=तू।

तुई—स्त्री० [?] कपडे पर बनी हुई एक प्रकार की बेल जो स्त्रियाँ दुपट्टों पर लगाती है।
†सर्व०१ =तू ही। २.=तू।

तुक—स्त्री० [हिं० टूक=टुकडा] १ कविता, गीत आदि के चरण का वह अंतिम व्यंजन (या स्वरयुक्त व्यंजन), शब्द या पद जिसके अनुप्रास का निर्वाह आगे के चरणों, पदों आदि मे करना आवश्यक होता है। अंत्यानुप्रास। अक्षर-मैत्री। काफिया।
पद—**तुक-बंदी**। (देखें)
मुहा०—**तुक जोड़ना**=कविता, गीत आदि के लिए ऐसे चरण या पद बनाना जिनके अंतिम वर्णों, शब्दों आदि मे ध्वनिसाम्य मात्र हो, कौशलपूर्ण या भावमय कवित्वगुण का अभाव हो। जैसे—हम तुक जोडनेवाले कवियों की बात नही कहते।
२ बोल-चाल मे आनेवाले किसी शब्द के जोड का वह दूसरा शब्द जो उच्चारण या ध्वनि के विचार से उस पहले शब्द के जोड या बराबरी का होता है। काफिया। जैसे—'कच्चा' का तुक 'बच्चा' और 'कडा' का तुक 'बडा' है। ३. दो बातों या कार्यों का पारस्परिक सामंजस्य। ४ ऐसा औचित्य जिसका निर्वाह पूर्वापर संबंध को देखते हुए आवश्यक, उपयुक्त या शोभन हो। जैसे—आप उनके प्रीति-भोज मे जो बिना बुलाये चले गये, इसमे क्या तुक था? ५ तीर के अगले भाग मे लगी हुई घुडी।

तुकना—स० हिं० 'तकना' का अनु०।

तुकबंदी—स्त्री० [हिं० तुक+फा० बंदी] ऐसी साधारण कविता करना जिसके चरणों के अंत मे एक-सी तुक या अंत्यानुप्रास के सिवा कोई विशेष भाव या रस न हो। भद्दी या साधारण कविता जिसमे भाव या भाषा का कुछ भी सौंदर्य न हो। (व्यंग्य)

तुकमा—पु० [फा०] वह फंदा जिसमे पहनने के कपडों की घुडी फँसाई जाती है। पाशक। मुद्धी।

तुकांत—स्त्री० [हिं० तुक+सं० अंत] चरणों के अंत मे होनेवाला तुक का मेल। अंत्यानुप्रास।

तुका—पु० [फा० तुक] १ बिना गाँसी का तीर। तुक्का। २ ऐसा उपाय या तरकीब जिससे कार्य की सिद्धि होने की संभावना न हो।

तुकार—स्त्री० [हिं० तू+सं० कार] 'तू' कहकर किसी को पुकारने की क्रिया या भाव। (अपमान-सूचक)

तुकारना—स० [हिं० तुकार] 'तू' कहकर किसी को पुकारना या संबोधित करना।

तुकारी*—स्त्री० [हिं० तुकारना] तुकारने की क्रिया या भाव। तुकार।

तुक्कड—पु० [हिं० तुक+अक्कड (प्रत्य०)] केवल तुक जोडनेवाला अर्थात् बहुत ही निम्नकोटि का कवि।

तुक्कल—स्त्री० [फा० तुक्का] एक तरह की बडी पतंग।

तुक्का—पु० [फा० तुक.] १ वह तीर जिसमे गाँसी के स्थान पर घुडी सी बनी होती है। २ नरकट, सरकंडे आदि का वह टुकडा जो लडके खेल मे छोटी सी कमान पर इधर-उधर चलाते या फेंकते हैं। जैसे—लगा तो तीर, नही तो तुक्का है ही। ३ कोई लंबी और सीधी चीज या उसका टुकडा। जैसे—वह अपने दरवाजे पर तुक्का-सा खडा था। ४. छोटा टीला। टेकरी।

२—७१

तुक्खार—पुं० [सं०]=तुखार।

तुख—पु० [सं० तुष] १ भूसी। छिलका। २ अंडे के ऊपर का छिलका।

तुखम—पु० [फा० तुख्म] १ बीज। २ वीर्य-कण।

तुखार—पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश जिसका उल्लेख अथर्ववेद, रामायण, महाभारत आदि मे है। यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे माने जाते थे। वि० दे० 'तुषार'। २ उक्त देश का निवासी। ३. उक्त देश का घोडा। ४ घोडा।
पु०=तुषार।

तुखारा—वि० [सं० तुषार] [स्त्री० तुखारी] तुषार देश-संबंधी।
पु० तुषार देश का घोडा।

तुखारी—पु० [हिं० तुखार] तुखार देश का घोडा।
वि० तुखार-संबंधी।

तुख्म—पु० [अ० तुख्म] १ फलों, वृक्षों आदि का बीज। २ वीर्य-कण जिससे संतान उत्पन्न होती है।

तुगलक—पु० [अ०] १. सरदार। २ एक प्राचीन मुसलमान राजवंश जिसने मध्य युग मे थोडे समय के लिए भारत पर शासन किया था। मुहम्मद शाह तुगलक इसी वंश के थे।

तुगा—स्त्री० [सं०√तुज् (हिंसा)+घ—टाप्] वंशलोचन।

तुगाक्षीरी—स्त्री० [मयू०स०] वंशलोचन।

तुग्र—पु० [सं०√तुज्+रक्, कुत्व] वैदिक काल के एक राजर्षि जिन्होंने अश्विनीकुमारों की उपासना की थी।

तुग्र्य—पु० [सं० तुग्र+यत्] तुग्र का वंशज।
वि० तुग्र-संबंधी। तुग्र का।

तुचा†—पु० [सं० त्वच्] १ चमडा। २ छाल।

तुचा†—स्त्री०=त्वचा।

तुच्छ—वि० [सं०√तुद् (पीडित करना)+क्विप्, तुद्√छो (काटना)+क] [भाव० तुच्छता] १ जो अंदर से खाली हो। खोखला। २ जिसमे कोई सत्व या सार न हो। नि.सार। ३ जिसका कुछ भी महत्त्व, मान या मूल्य न हो। क्षुद्र। हीन। ४ अल्प। थोडा।
पु०१ अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी। २ तूतिया। ३ नील का पौधा।

तुच्छक—पु० [सं० तुच्छ√कै (मालूम पडना)+क] एक तरह का काले और हरे रंग का मरकत जो घटिया माना जाता है।

तुच्छता—स्त्री० [सं० तुच्छ+तल्—टाप्] तुच्छ होने की अवस्था या भाव।

तुच्छत्व—पु० [सं० तुच्छ+त्व] तुच्छता।

तुच्छद्रु—पु० [कर्म०स०] रेंड का पेड।

तुच्छधान्यक—पु० [कर्म०स०] भूसी। तुस।

तुच्छा—स्त्री० [सं० तुच्छ+टाप्] १ नील का पौधा। २ छोटी इलायची। ३ नीला थोथा। तूतिया।

तुच्छातितुच्छ—वि० [तुच्छ-अतितुच्छ, स०त०] तुच्छों मे भी तुच्छ। अत्यन्त तुच्छ।

तुच्छार्थक—वि० [सं० तुच्छ-अर्थ, ब०स०, कप्] (शब्द का वह) विकृत रूप जो वस्तु या व्यक्ति के वाचक शब्द की तुलना मे तुच्छता सूचित करनेवाला हो। तुच्छता के भाव से युक्त अर्थ देने या रखनेवाला।

(डिमिन्यूटिव) जैसे—'बात' का तुच्छार्थक 'बतोला', 'घोड़ा' का तुच्छार्थक 'घोडवा'।

तुछ*—वि०=तुच्छ।

तुजीह—स्त्री०[हिं०] धनुष।

तुजुक—पु०[तु०]१ वैभव आदि की शोभा। शान। २ नियम। ३ प्रथा। ४ अभिनदन। उदा०—भूषण भनत भौसिला के आय आगे ठाढे बाजे भर उमराय तुजुक करन के।—भूषण।

तुझ—सर्व०[स० तुभ्यम्, पा० तुटह, प्रा० तुज्झ] तू का वह रूप जो उसे द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पचमी और सप्तमी की विभक्तियाँ लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तुझको, तुझसे, तुझमे आदि आदि।

तुझे—सर्व०[हिं० तुझ] 'तू' का वह रूप जो उसे द्वितीया और चतुर्थी की विभक्तियाँ लगने पर प्राप्त होता है। तुझको। जैसे—(क) तुझे मारूँगा। (ख) तुझे भी मिलेगा।

तुट*—वि०[स० त्रुट=टूटना] बहुत थोडा।

तुटितुट—पु०[स०] शिव।

तुट्ठना*—स०[स० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] तुष्ट या प्रसन्न करना।

अ० तुष्ट या प्रसन्न होना।

तुठना—अ०[स तुष्ट] सतुष्ट होना। उदा०—तुठी सारदा त्रिभुवन-भाई।—नरपति नाल्ह।

स० सतुष्ट करना।

तुड़वाई—स्त्री०[हिं० तुडवाना] तुडवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तुड़वाना—स०[हिं० 'तोडना' का प्रे०]१ किसी को कोई चीज तोडने मे प्रवृत्त करना। तुडाना। २ बडे सिक्के को उतने ही मूल्य के छोटे-छोटे सिक्को मे बदलवाना। भुनाना।

तुड़ाई—स्त्री०[हिं० तोडना] तोडने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री०=तुडवाई।

तुड़ाना—स०[हिं० तोडना का प्रे०]१. तोडने का काम कराना। तुडवाना। २ बन्धन तोड़कर उससे अलग या मुक्त होना। जैसे—गौ रस्सा तुडाकर भाग गई। ३ सम्बन्ध-विच्छेद करके अलग करना। जैसे—बच्चे को माँ से तुडाना; अर्थात् अलग या दूर करना। ४ बड़े सिक्के को छोटे-छोटे सिक्को के रूप मे परिवर्तित कराना। जैसे—नोट या रुपया तुडाना। ५. कुछ खरीदने के समय चीज का दाम कम कराना।

तुडी—स्त्री० [स०√तुड् (तोड़ना)+इन—डीप्] एक प्रकार की रागिनी। (कदाचित् आधुनिक टोडी)

तुड़ुम—पुं०[स० तुरम]तुरही। बिगुल।

तुणि—पु०[स०√तुण् (सकोच)+इन्] तुन का पेड।

तुतरा†—वि०[स्त्री० तुतरी]=तोतला।

तुतराना†—अ०=तुतलाना।

तुतरौहाँ†—वि०=तोतला। उदा०—बोलत है बतियाँ तुतरौही चलि चरननि न सकात।—सूर।

तुतला—वि०[स्त्री० तुतली]=तोतला।

तुतलाना—अ०[स० त्रुट्=टूटना वा अनु० अथवा हिं० तोट]१ कठ और जीभ मे किसी प्रकार का प्राकृतिक विकार होने के कारण कोई शब्द कहने से पहले 'तुत्' 'तुत्' शब्द निकलना। २. बोलने मे शब्द का मुँह से रुक-रुक कर तथा अस्पष्ट रूप से निकलना।

तुतुई†—स्त्री०=तुतुही।

तुतुही—स्त्री०[स० तुट] मिट्टी की एक तरह की छोटी झारी।

तुत्थ—पुं०[सं०√तुद् (पीडित करना)+थक्] तूतिया। नीला थोथा।

तुत्थक—पु०[स० तुत्थ+कन्]=तुत्थ।

तुत्थाजन—पु०[सं० तुत्थ-अजन, कर्म० स०] तूतिया। नीलाथोथा।

तुत्था—स्त्री०[स० तुत्थ+टाप्] १ नील का पौधा। २ छोटी इलायची।

तुत्यों—अ०य०=त्यों त्यों। उदा०—तुत्यों गुलाल जुठी मुठी झझकावत पिय जात।—विहारी।

तुदन—पु०[स०√तुद्+ल्युट्—अन्]१. कष्ट या व्यथा देने की क्रिया। पीडन। २ गडाने या चुभाने की क्रिया। ३. कष्ट। ४ पीडा।

तुन—पु०[अनु०] तुन तुन शब्द।

मुहा०—तुन-फुन करना=किसी बात मे सहमत न होने पर कुछ रोष दिखाते हुए आना-कानी करना।

पु० तूनी नामक वृक्ष।

तुनक—वि०[फा०] १ दुर्बल। कमजोर। २ नाजुक। कोमल। ३ हलका। सूक्ष्म।

स्त्री०[हिं० तुनकना] १. तुनकने की क्रिया या भाव। २ गुड्डी या पतग उडाते समय डोर या नख को दिया जानेवाला झटका।

तुनकना—अ० [फा० तुनक] छोटी सी बात से अप्रसन्न या रुष्ट होना। वि० तुनक-मिजाज।

अ० [देश०] उँगली से डोर को झटका देना।

तुनक-मिजाज—वि०[फा०] [भाव० तुनक-मिजाजी] जो बात-बात पर अप्रसन्न या रुष्ट हो जाता हो अथवा बिगड़ या रूठ जाता हो।

तुनकामौज—पु० [फा० तुनक=छोटा+मौज=लहर] छोटा समुद्र।

तुनकी—स्त्री०[फा०] १ तुनक (अर्थात् कोमल, दुबले या हलके) होने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की खस्ता रोटी।

तुनतुनी—स्त्री० [अनु०] १. एक प्रकार का बाजा जिसमे से तुन तुन शब्द निकलता है। २ सारगी। (परिहास और व्यग्य)

तुनना† —स०=धुनना। (पश्चिम)

तुनी—स्त्री०[हिं० तुन] तूनी का पेड।

तुनीर†—पु०=तूणीर।

तुनुक—वि० स्त्री०=तुनक।

तुन्न—वि०[स०√तुद्+क्त] कटा या फटा हुआ।

पु०१ कपडे का टुकडा। २ तुन नाम का पेड।

तुन्नवाय—पु०[स० तुन्न√वे (सीना, बुनना)+अण्] दरजी।

तुपक—स्त्री०[तु० तोप]१ छोटी तोप। २ पुरानी चाल की बन्दूक। कडाबीन।

तुपकची—पु०[हिं० तुपक] वह जो छोटी तोप या बन्दूक चलाता हो।

तुफंग—स्त्री०[तु० तोप, हिं० तुपक]१. प्राचीन काल की वह नली जिसमे मिट्टी की गोलियाँ, लोहे के छोटे टुकडे आदि भरकर जोर से फूँककर दूसरो पर चलाए या फेंके जाते थे। २ हवाई बन्दूक।

तुफ—पु०[फा०]१ मुँह की थूक या लार। २ उक्त के आधार पर धिक्कार, लानत। जैसे—तुफ है तुम्हारे मुँह पर, अर्थात् थुडी है या तुम इस योग्य हो कि लोग तुम्हारे मुँह पर थूकें।

तुफाना—पु०=तूफान।

तुफैल—पु०[अ० तुफ़ैल] किसी के अनुग्रह या कृपा के द्वारा प्राप्त होने वाला साधन। जैसे—मेरी सारी योग्यता (या विद्या) आप के ही तुफैल से है।
तुबक—पु०=तुपक।
तुभना—अ०[सं० स्तुभ, स्तोभन] स्तब्ध होना।
तुम—सर्व० [सं० त्वम्]'तू' शब्द का वह बहुवचन रूप जिसका व्यवहार संबोधित व्यक्ति के लिए होता है तथा जो कहनेवाले की तुलना मे छोटा या बराबरी का होता है। जैसे—तुम भी साथ चल सकते हो।
तुमड़ी—स्त्री०=तूँबड़ी।
तुमतड़ाक—स्त्री०=तूमतड़ाक।
तुमरा—सर्व०=तुम्हारा।
तुमरी†—स्त्री० =तूँबड़ी।
तुमरू—पु०=तुँबुरु।
तुमल*—पु०, वि०=तुमुल।
तुमाना—स०[हिं० 'तूमना' का प्रे०] किसी को कुछ तूमने में प्रवृत्त करना।
तुमारा—सर्व०=तुम्हारा।
तुमुती—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।
तुमुर—पु०[सं० तुमुल, ल—र] क्षत्रियो की एक प्राचीन जाति या वंश। †वि०, पु०=तुमुल।
तुमुल—पु० [सं०√तु (हिंसा करना)+मुलन्]१ सेना का कोलाहल। लड़ाई की हलचल। २ सेना की भिड़त। ३, बहेड़े का पेड़।
वि० बहुत उत्कट, तीव्र या विकट। घोर। प्रचंड। जैसे—तुमुल ध्वनि।
तुमुली—स्त्री० [?] पुरातत्त्व मे एक दूसरे पर चुने हुए पत्थरो का वह ढेर या स्तूप जो प्राय किसी स्थान की विशेषता या समाधि-स्थल आदि सूचित करने के लिए बनाया जाता था। (केयर्न)
तुम्ह*—सर्व०=तुम।
तुम्हारा—सर्व० [हिं० तुम] [स्त्री० तुम्हारी] 'तुम' का षष्ठी की विभक्ति लगने पर बननेवाला रूप। जैसे—तुम्हारा भाई।
तुम्हीं*—सर्व०=तुमही।
तुम्हे—सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का वह विभक्तियुक्त रूप जो उसे द्वितीया और चतुर्थी लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तुम्हे पकड़ूँगा या दूँगा।
तुरग—वि० [सं० तुर√गम् (जाना)+ख, मुम्] जल्दी चलनेवाला।
पु० १ घोड़ा। २. चित्त या मन जो बहुत जल्दी हर जगह पहुँच सकता है। ३ सात की संख्या।
तुरंगक—पु० [सं० तुरग√कै (शब्द करना)+क] बड़ी तोरी (फल)।
तुरंग-गौड़—पु० [सं० कर्म० स० ?] संगीत मे गौड राग का एक भेद।
तुरग-द्वेषिणी—स्त्री० [सं० तुरग√द्विष् (द्वेष करना)+णिनि=ङीप्] भैंस। महिषी।
तुरंगप्रिय—पु० [प० त०] जौ। यव।
तुरंगम—वि०[सं० तुर√गम् (जाना)+खच्, मुम्] जल्दी चलनेवाला।
पु० १ घोड़ा। २ चित्त। मन। ३ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और दो गुरु होते हैं।
तुरंगमी (मिन्)—पु० [सं० तुरङ्गम+इनि] अश्वारोही। घुड़सवार।
तुरंग-वक्त्र—वि०[ब० स०] जिसका मुँह घोड़े के मुँह की तरह लबा हो।
पु० किन्नर।
तुरग-वदन—पुं० [ब० स०] किन्नर।
तुरग-शाला—स्त्री० [प० त०] घुड़साल। अस्तबल।
तुरंगारि—पुं० [तुरग-अरि, प० त०] १ कनेर। करवीर। २. भैंसा।
तुरंगिका—स्त्री० [सं० तुरग+ठन्—इक्] देवदाली। घघरबेल।
तुरंगी—स्त्री० [सं० तुरग+अच्—ङीप्] अश्वगंधा। असगंध।
तुरंज—पु० [फा० तुरुंज] १ चकोतरा नीबू। २ बिजौरा नीबू। ३. सूई-धागे से कपड़े पर बनाई जानेवाली एक तरह की बूटी।
तुरंजबीन—स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार की चीनी जो खुरासान देश मे प्राय ऊँटकटारे के पौधो पर ओस के साथ जमती है। २ नीबू के रस का शरबत। शिकंजबी।
तुरंत—क्रि० वि० [सं० तुर=वेग, जल्दी] १. ठीक इसी समय। २ जितनी जल्दी हो सके। जल्दी से जल्दी।
तुरंता—पु० [हिं० तुरत] गाँजा (जिसका नशा पीते ही तुरत चढता है)।
तुरंबीन—स्त्री० [?] भवासे की जड की शर्करा जो दवा के काम आती है तथा जो वैद्यक मे ज्वरहर तथा अग्निप्रदीपक मानी जाती है और पुरानी होने पर दस्तावर होती है।
तुर—अव्य० [सं०√तुर् (जल्दी करना)+क] शीघ्र। जल्द।
वि० बहुत तेज चलनेवाला। वेगवान्। शीघ्रगामी।
पु० [?] १. करघे की वह मोटी लकड़ी जिस पर बुना हुआ कपड़ा लपेटा जाता है। २ वह बेलन जिस पर बुना हुआ गोटा लपेटा जाता है।
तुरई—स्त्री० [सं० तूर=तुरही बाजा] तोरी नाम की बेल जिसके लबे फलो की तरकारी बनाई जाती है। तोरी।
पद—तुरई के फूल-सा = (क) बहुत ही कोमल और हलका। (ख) जिसका कोई विशेष महत्त्व, मान या मूल्य न हो। जैसे—तुरई के फूल-से इतने रुपए उड़ गये; पर काम कुछ भी न हुआ।
† स्त्री०=तुरही।
तुरक—पुं०=तुर्क।
तुरकटा—पु० [फा० तुर्क+हिं० टा (प्रत्य०)] मुसलमान। (उपेक्षा तथा घृणा-सूचक)
तुरकान†—पुं० [फा० तुर्क] १. तुर्क देश। २ तुर्कों की बस्ती।
तुरकाना—पु० [फा० तुर्क] मुसलमान।
वि० तुर्कों का-सा।
तुरकिन—स्त्री० [फा० तुर्क] १. तुर्क जाति की स्त्री। † २. मुसलमान स्त्री।
तुरकिस्तान—पुं०=तुर्की (देश)।
तुरकी—वि० [फा०] तुर्क देश का।
पु० पश्चिमी एशिया का एक प्रसिद्ध देश। तुर्की।
स्त्री० उक्त देश की भाषा।
तुरग—वि० [सं० तुर√गम् (जाना)+ड] तेज चलनेवाला।
पु० १ घोड़ा। २. चित्त। मन।
तुरग-गंधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] अश्वगंधा। असगंध।

तुरग-दानव—पु० [मध्य० स०] एक दैत्य जो कस के आदेशानुसार घोडे का रूप धारण करके कृष्ण को मारने गया था।

तुरग-ब्रह्मचर्य—पु० [प० त०] वह ब्रह्मचर्य जो केवल स्त्री की अप्राप्ति के कारण चलता हो।

तुरगारोह—पुं० [स० तुरग+आ√रुह् (चढना)+अच्] अश्वारोही।

तुरगास्तरण—पु० [स० तुरग-आस्तरण, मध्य० स०] घोडे की पीठ पर बिछाया जानेवाला कपडा। पलान।

तुरगी—स्त्री० [स० तुरग+ङीप्] १. घोडी। २. [तुरग+अच्—ङीप्] अश्वगधा या असगध नाम की ओषधि।

पु० [स० तुरग+इनि] घुडसवार।

तुरगुला—पु० [देश०] १. कान मे पहनने का झुमका। २ लटकन। लोलक।

तुरगोपचारक—पु० [स० तुरग-उपचारक, प० त०] साईस।

तुरत†—अव्य०=तुरत।

तुरतुरा—वि० [स० त्वरा] [स्त्री० तुरतुरी] १. वेगवान्। तेज। २. जल्दवाज। ३. जल्दी-जल्दी या तेज बोलनेवाला।

तुरतुरिया—वि०=तुरतुरा।

तुरपई—स्त्री० [हिं० तुरपना] एक प्रकार की सिलाई। तुरपन।

तुरपन—स्त्री० [हिं० तुरपन] १ तुरपने की क्रिया या भाव। २. सीयन।

तुरपना—स० [हिं० तूर=नीचे+पर=ऊपर+ना (प्रत्य०)] १. सूई-धागे से वडे वडे और कच्चे टाँके लगाना। तोपे भरना या लगाना। २. सीना।

तुरपवाना—स० [हिं० 'तुरपना' का प्रे०] तुरपने का काम किसी से कराना।

तुरपाना—स०=तुरपवाना।

तुरवत—स्त्री० [अ० तुर्वत] कब्र।

तुरम—पु० [स० तूरम] तुरही।

तुरमती—स्त्री० [तु० तुरमता] एक प्रकार की शिकारी चिडिया।

तुरमनी—स्त्री० [देश०] नारियल की खोपडी रेतने की एक तरह की रेती।

तुरय*—पु० [स० तुरग] [स्त्री० तुरी] घोडा।

तुररा—पु०=तुर्रा।

तुरसीला—वि० [फा० तुर्श=खट्टा] १ तीखा। २. घायल करनेवाला। उदा०—करधनी सब्द है तुरसीले। —नारायण स्वामी।

तुरही—स्त्री० [स० तूर] फूँककर वजाया जानेवाला एक तरह का लवा वाजा।

तुरा†—पु० [स० तुरग] घोडा।

स्त्री० [स० तूरा] जल्दी। शीघ्रता।

†पु०=तुर्रा।

तुराई—अव्य० [हिं० तुराना] १ आतुरतापूर्वक। २ जल्दी से।

तुराई—स्त्री० [स० तूल=रूई, तूलिका=गद्दा] १ रुई भरा हुआ गुदगुदा विछावन। गद्दा। तोशक। २ ओढने की हलकी रजाई। तुलाई। दुलाई।

तुराट*—पु० [स० तुरग] घोडा। (डिं०)

तुराना*—अ० [स० तुर] १. आतुर होना। २ जल्दी मचाना।

†स०=तुडाना।

तुरायण—पु० [स०√तुर् (शीघ्रता)+क, तुर+फक्—आयन] चैत्र शुक्ल पचमी और वैशाख शुक्ल पचमी को होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

तुरावत—वि० [सं० त्वरावत्] [स्त्री० तुरावती] वेगपूर्वक चलनेवाला।

तुरावान—वि०=तुरावत।

तुराषाद्—पु० [स० तुर√सह् (सहना)+णिच्+क्विप्, दीर्घ] इद्र।

तुरास*—पु० [स० तुर] वेग।

क्रि० वि० १. वेगपूर्वक। २ जल्दी से।

तुरासाह—पु०=तुराषाद्।

तुरिया*—वि०, स्त्री०=तुरीय।

स्त्री० दे० 'तोरिया'।

तुरी—स्त्री० [स० तुरगी] १ घोडी। २ घोडे की लगाम।

पु० घुडसवार।

स्त्री० [स० त्वरा] जल्दवाजी। शीघ्रता।

वि० स्त्री० जल्दी या तेज चलनेवाली।

स्त्री० [अ० तुर्रा] १ फूलों का गुच्छा। २. मोतियों, सूतो आदि का वह झव्वा जो शोभा के लिए पगडी आदि मे लगाया जाता है। ३ जुलाहों की वह कूँची जिससे वे ताने के सूत वरावर करते हैं।

स्त्री०=तुरही।

तुरी-यत्र—पु० [स०] वह यत्र जिसके द्वारा सूर्य की गति जानी जाती है।

तुरीय—वि० [सं० चतुर+छ—ईय, चलोप] चतुर्थ। चौथा।

स्त्री० १. वाणी का वह रूप या अवस्था जव वह मुँह से उच्चरित होती है। वैखरी। २ प्राणियों की चार अवस्थाओं मे से अन्तिम अवस्था जो ब्रह्म मे होनेवाली लीनता या मोक्ष है। (वेदान्त)

पु० निर्गुण ब्रह्म।

तुरीय-वर्ण—वि० [व० स०] (व्यक्ति) जो चौथे वर्ण का अर्थात् शूद्र हो।

पु० शूद्र।

तुरुक—पु०=तुर्क।

तुरुप—पु० [अ० ट्रप] कुछ विशिष्ट ताश के खेलो मे वह रग जो प्रधान मान लिया जाता है तथा जिसके छोटे से छोटा पत्ता दूसरे रग के वडे से वडे पत्ते को काट या मार सकता है।

पु० [अ० ट्रूप=सेना] १ सेना की टुकडी या दस्ता। २ घुडसवारो का रिसाला।

तुरुपना—स०=तुरपना।

तुरुष्क—पुं० [स० तुरुस्+कन्] १ तुर्किस्तान का रहनेवाला व्यक्ति। २ तुर्क देश मे वसनेवाली जाति। तुर्क। ३ तुर्किस्तान या तुर्की देश। ४ उक्त देश का घोडा। ५ लोवान जो पहले उक्त देश से आता था।

तुरुष्क गौड़—पु०=तुरग गौड।

तुरुही†—स्त्री०=तुरही।

तुरै—पुं० [सं० तुरग] घोडा। उदा०—जोवन तुरै हाथ हाथ गहि लीजै।—जायसी।

तुरैया—स्त्री०=तोरी।

तुर्क—पुं० [स० तुरुष्क से तु०] १ तुर्किस्तान का निवासी। २. मुसलमान। ३. सैनिक।

तुर्क-चीन—पु० [?] सूर्य।

तुर्कमान—पु० [फा० तुर्क] १ तुर्क जाति का व्यक्ति। २. तुर्की घोड़ा जो बहुत बढिया होता है।

तुर्क-सवार—पु० [फा० तुर्क+फा० सवार] घुडसवार।

तुर्किन—स्त्री०=तुरकिन।

तुर्किनी—स्त्री०=तुरकिन।

तुर्किस्तान—पु० [फा०] पश्चिमी एशिया का एक राज्य जहाँ तुर्क जाति रहती है।

तुर्की—वि० [फा०] तुर्किस्तान का। तुर्किस्तान मे होनेवाला। जैसे—तुर्की घोडा।

पु० १. तुर्किस्तान देश। २. तुर्किस्तान का घोडा।

स्त्री० १ तुर्किस्तान की भापा। २ तुर्कों की-सी ऐंठ, शान या शेखी। अकड।

मुहा०—(किसी को) तुर्की-बतुर्की जवाब देना=किसी के उग्र या तीव्र कथन या व्यवहार का वैसा ही उत्तर देना। **(किसी की) तुर्की तमाम होना**=अकड, ऐंठ या घमड नष्ट या समाप्त होना।

तुर्की टोपी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की गोलाकार ऊँची या कुछ लवी और फूँदनेदार टोपी जो पहले तुर्क लोग पहना करते थे।

तुर्फरी—पु० [स०√तृफ् (हिंसा करना)+अरी (वा०)] अकुश का अगला नुकीला सिरा।

तुर्य—वि० [स० चतुर+यत्, च का लोप] १. चौथा। २. चौगुना।

तुर्या—स्त्री० [स० तुर्य+टाप्] प्राणियो की चार अवस्थाओ मे से अन्तिम अवस्था जो ब्रह्म मे होनेवाली लीनता या मोक्ष है। (वेदात)

तुर्याश्रम—पु० [स० तुर्य-आश्रम, कर्म० स०] चौथा आश्रम। सन्यास।

तुर्रा—पु० [अ० तुर.] १ घुँघराले वालो की लट जो इधर-उधर या माथे पर लटकती है। काकुल। २ कुछ पक्षियो के सिर पर की परो या वालो की चोटी। कलगी। ३ टोपी, पगडी आदि मे खोसा या लगाया जानेवाला पक्षियो का सुदर पर, फूलो का गुच्छा अथवा वादले, मोतियो आदि का लच्छा। कलगी। गोशवारा। ४ किसी चीज या वात मे होनेवाली ऐसी विलक्षण विशेपता जो उस चीज या वात को दूसरी चीजो या वातो से भिन्न और श्रेष्ठ सिद्ध करती हो।

विशेष—परिहास या व्यग्य मे इस शब्द का प्रयोग अनोखी असवद्धता सूचित करने के लिए होता है। जैसे—जवरदस्ती हमारी किताब भी उठा ले गये, तिस पर तुर्रा यह कि हमे ही चोर (या झूठा) वनाते हैं। ५ किसी चीज मे लगाया हुआ सुदर किनारा या हाशिया। ६ मकान का छज्जा। ७ कोडा। चावुक।

मुहा०—तुर्रा करना=(क) कोडा या चावुक मारना। (ख) उत्तेजित या प्रोत्साहित करना।

८ एक प्रकार की वुलवुल जो जाडे भर भारतवर्ष के पूर्वीय भागों मे रहती है, पर गरमी मे चीन और साइवेरिया की ओर चली जाती है। ९ एक प्रकार का वटेर। डुवकी। १० जटाधारी या मुर्गकेश नाम का पौधा और उसका फूल। गुलतर्रा। ११ मुहाँसे आदि का ऊपरी नुकीला भाग। कील।

वि० [फा०] अनोखा। विलक्षण।

पु० [?] दूध, भाँग आदि का थोडा-थोडा करके लिया जानेवाला घूँट। (क्व०)

मुहा०—तुर्रा चढ़ाना या जमाना=खूब ढेर-सी भाँग पीना।

तुर्वसु—पु० [स०] राजा ययाति का एक पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और जिसने पिता के माँगने पर उसे अपना यौवन नही दिया था।

तुर्श—वि० [फा०] [भाव० तुर्शी] खट्टा।

तुर्शरू—वि० [फा०] तीखे मिजाजवाला। कटु-भापी।

तुर्शाई†—स्त्री०=तुर्शी।

तुर्शाना—अ० [फा० तुर्श] खट्टा हो जाना।

स० खट्टा करना या वनाना।

तुर्शी—स्त्री० [फा०] १ तुर्श होने की अवस्था या भाव। अम्लता। खट्टापन। २ खटाई।

तुर्शीदंदाँ—स्त्री० [फा०] घोडो का एक रोग जिसमे उसके दाँतो पर मैल जमने लगती है।

तुल†—वि०=तुल्य।

तुलक—पु० [?] राज-मत्री।

तुलन—पु० [स०√तुल् (तौलना)+ल्युट्—अन] तुलने या तौलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तुलना—अ० [हिं० तौलना का अ०] १. काँटे, तराजू आदि पर रखकर तौला जाना। २. भार या मान का हिसाव लगाया जाना या विचार होना। ३ उक्त प्रकार का विचार होने या हिसाव लगने पर किसी की वरावरी का या किसी के समान ठहरना। ४ किसी की वरावरी मे होकर या उसके साथ अच्छी तरह मिलकर उसी के समान हो जाना। उदा०—सौकन ने पायजामा पहना है गुल-वदन का। फूलों मे तुल रहा है, काँटा मेरे चमन का।—जानसाहव। ५ किसी आधार पर इस प्रकार ठहरना कि आधार से वाहर निकला हुआ कोई भाग अधिक वोझ के कारण किसी ओर झुका न हो। ठीक अदाज के साथ टिकना। जैसे—वाइसिकल पर तुलकर वैठना। ६ अस्त्र, शस्त्र आदि का इस प्रकार ठीक स्थान पर और ऐसे अन्दाज या हिसाव से स्थित होना कि वह लक्ष्य तक पहुँचकर अपना ठीक और पूरा काम करे। ७ कोई काम करने के लिए पूरी तरह से कटिवद्ध या सन्नद्ध होना। जैसे—किसी के साथ झगडा करने पर तुलना।

सयो० क्रि०—जाना।

८ किसी चीज या वात का ठीक-ठीक अनुमान या कल्पना होना। ९. किसी चीज मे पूरी तरह से भरा जाना।

अ० [हिं० तूलना का अ०] गाडी के पहिए का ओंगा जाना या उसमे तेल दिया जाना। तूला जाना।

स्त्री० [स०√तुल्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ दो या अधिक वस्तुओ के गुण, मान आदि के एक दूसरे से घट या वढकर होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २ वरावरी। समता। ३ सादृश्य। ४ उपमा। ५. तौल। वजन। ६ गणना। गिनती।

तुलनात्मक—वि० [स० तुलना-आत्मन्, व० स०, कप्] जिसमे दो या कई चीजो के गुणो की समानता और असमानता दिखलाई गई हो।

जिसमे किसी के साथ तुलना करते हुए विचार किया गया हो। जैसे—कबीर और नानक का तुलनात्मक अध्ययन।

तुलनी—स्त्री० [स० तुला] तराजू या काँटे की सूई मे का दोनो तरफ का लोहा।

तुलनीय—वि० [स०√तुल्+अनीयर्] तुलना किये जाने के योग्य। जिसकी या जिससे तुलना की जा सके।

तुलबुली†—स्त्री० [अनु०] जल्दबाजी।

तुलवाई—स्त्री० [हिं० तौलवाना, तुलना] १ तौलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'तुलाई'। ३. पहियो को औंगने या तूलने (उनमे तेल देने) का पारिश्रमिक या मजदूरी।

तुलवाना—स० [हिं० तौलना का प्र० रूप] [स्त्री० तुलवाई] १. किसी को कुछ तौलने मे प्रवृत्त करना। २ गाडी के पहिये की धुरी मे तेल दिलाना। औंगवाना।

तुलसारिणी—स्त्री० [स० तुर√सृ (जाना)+णिनि—ङीप्, र—ल] तूणीर।

तुलसी—स्त्री० [स० तुला√सो (नष्ट करना)+क—ङीप्, पररूप] १ एक प्रसिद्ध पौधा जो बहुत पवित्र माना गया है और जिसकी पत्तियो मे तीक्ष्ण गध होती है। यह काली और धौली दो प्रकार की होती है। २. उक्त पौधे की पत्ती जो अनेक प्रकार के रोगो की नाशक तथा कफ और पित्त तथा अग्नि प्रदीपक, हृदय को हितकारी, पित्त को बढानेवाली मानी जाती है। ३ उक्त के बीज जो ढाँस को कम करते तथा शुक्र को गाढ़ा करते हैं।

पु० गोस्वामी तुलसीदास (हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि)।

तुलसीघरा—पु०[स० तुलसी+हिं० घर] आँगन के मध्य का वह स्थान जहाँ कुछ हिंदू घरो मे तुलसी के पौधे लगे होते है।

तुलसी दल—पु० [ष० त०] तुलसी के पौधे का पत्ता। तुलसी पत्र।

तुलसीदाना—पु० [हिं० तुलसी+फा० दाना] एक तरह का आभूषण।

तुलसीदास—पु० [स०] मध्यकाल के एक प्रसिद्ध सगुणोपासक भक्त कवि जिन्होने रामचरितमानस, विनय पत्रिका आदि बारह ग्रथ रचे थे।

तुलसी-द्वेष—स्त्री० [स० तुलसी√द्विष् (द्वेष करना)+अण्—टाप्] वन-तुलसी । बर्बरी। ममरी।

तुलसी पत्र—पु० [ष० त०] तुलसी का पत्ता।

तुलसीवास—पु० [हिं० तुलसी+वास=महक] एक तरह का अगहनी धान जिसका चावल सुगधित होता है।

तुलसी-वन—पु० [ष० त०] १ वह स्थान जहाँ पर तुलसी के बहुत अधिक पौधे हो। तुलसी का जगल। २ वृदावन।

तुला—स्त्री० [स०√तुल् (तोलना)+अङ्—टाप्] १ सादृश्य का मिलान। तुलना। २ चीजो का भार तौलने का तराजू। काँटा। **पद—तुला-दंड।**

३ भार का मान। तौल। ४. अनाज नापने का बरतन। भाड। ५ प्राचीन काल की एक तौल जो १०० पल या लगभग ५ सेर की होती थी। ६ ज्योतिष की बारह राशियो मे से सातवी राशि जिसके तारो की आकृति बहुत-कुछ तराजू की तरह होती है। ७ प्राचीन वास्तु कला मे, खभे का एक विशिष्ट अश या विभाग। ८ दे० 'तुला-परीक्षा'।

तुलाई—स्त्री० [स० तूल=रूई] कुछ छोटी, पतली और हलकी रजाई। दुलाई।

स्त्री० [हिं० तौलना] तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

स्त्री० [हिं० तूलना या तुलाना] गाडी के पहियो को औंगाने या धुरी मे चिकना दिलवाने की क्रिया।

तुला-कूट—पु० [ष० त०] १ इस प्रकार कोई चीज तौलना कि वह तुला पर अपने उचित तौल से कम चढे। तौलने मे धोखेबाजी या बेईमानी करना। २. इस तरह तौलने मे होनेवाली कमी या कसर। वि० [स० तुला√कूट् (निन्दा करना)+घञ्] तौल मे कमी या कसर करनेवाला। डाँडी मारनेवाला।

तुला-कोटि—स्त्री० [ष० त०] १ तराजू की डडी के दोनो छोर जिनमे पलडे की रस्सी बँधी रहती है। २ प्राचीन काल की एक प्रकार की तौल या मान। ३. गणित मे अर्बुद की सख्या। ४ घुँघरू। नूपुर।

तुला-कोश—पु० [ष० त०]तुला-परीक्षा। (दे०)

तुला-दंड—पु० [ष० त०] तराजू की वह डडी जिसके दोनो सिरो पर पलडे बँधे रहते है।

तुलादान—पु० [तृ० त०] अपने शरीर के भार के बराबर तौलकर दिया जानेवाला अन्न, वस्त्र आदि का दान।

तुलाधार—पु० [स० तुला√धृ (धारण)+अण्] १ तुलाराशि। २ तराजू की वे रस्सियाँ जिनमे पलडे बँधे रहते है। ३ वणिक्। बनिया। ४ एक प्रसिद्ध व्याध जिसने केवल माता-पिता की सेवा के बल पर मुक्ति पाई थी।

वि० तुला धारण करने अर्थात् तराजू से चीजें तौलने का काम करने-वाला।

तुलाना—अ० [हिं० तुलना=तौल मे बराबर आना] १ किसी चीज का तौला जाना। २ तुल्य या समान होना। पूरा पडना या होना। ३ नष्ट या समाप्त हो जाना। उदा०—नाचहिं राकस आस तुलानी। —जायसी। ४ आ पहुँचना। उदा०—काल समय जब आनि तुलानी।—ध्रुवदास।

स०=तुलवाना।

स० [हिं० तुलना] गाडी के पहियो मे तेल डलवाना। औंगवाना।

तुला-पत्र—पुं० [ष० त०] वह पत्र जिसमे आय-व्यय तथा लाभ-हानि का लेखा लिखा रहता है। तल-पट। (बैलेन्स शीट)

तुला-परीक्षा—स्त्री०[तृ० त०] प्राचीन काल मे होनेवाली एक तरह की परीक्षा जिससे यह जाना जाता था कि अभियुक्त दोषी है या निर्दोष।

तुला-पुरुष-कृच्छ्र—पु० [स० तुला-पुरुष मध्य० स०, तुला, पुरुष-कृच्छ्र, ष० त०] एक प्रकार का व्रत जिसमे पिण्याक (तिल की खली) भात, मट्ठा, जल और सत्तू मे से प्रत्येक क्रमश तीन-तीन दिन तक खाकर पद्रह दिनो तक रहना पडता है।

तुला-पुरुष-दान—पु०[स० तुला-पुरुष, मध्य० स०, तुलापुरुष-दान, ष० त०] तुलादान।

तुला-बीज—पु० [ष० त०] घुँघची के बीच।

तुलाभवानी—स्त्री० [स०] शकर दिग्विजय के अनुसार एक नदी और उसके किनारे बसी हुई नगरी का नाम।

तुला-मान—पु० [ष० त०] १ वह मान जो तौलकर निश्चित किया

जाय। तौल कर निकाला हुआ भार या वजन । २ तराजू की डाँडी। ३ बटखरा। बाट।

तुला-यंत्र—पु० [प० त०] तराजू।

तुला-यष्टि—स्त्री० [प० त०] तुला-दड ।

तुलावा—पु० [हिं० तुलना] ठेले आदि के अगले भाग मे टेक या सहारे के रूप मे लगाई जानेवाली वह लबी लकडी जिससे ठेले का अगला भाग कुछ ऊँचा उठा रहता है और पिछला भाग कुछ नीचे झुक जाता है।

तुला-सूत्र—पु० [प०त०] वह मोटी रस्सी जो तराजू की डडी के बीच पिरोई रहती है और जिसे पकडकर तराजू उठाते है।

तुलि—स्त्री०[स०√तुर् (शीघ्रता)+इन्, र— ल] १ जुलाहो की कूँची। हत्थी। २ चित्रकारो की कूँची। कलम।

तुलिका—स्त्री०[सं०√तुल् (तोलना)+क्वुन्—अक, टाप्, ह्रस्व] एक तरह की चिडिया।

तुलित—वि०[स०√तुल्+क्त] १ तुला हुआ। २ समान। बराबर।

तुलिनी—स्त्री०[स० तूल+इनि—ङीप्, पृपो० ह्रस्व] शालमली वृक्ष। सेमर का पेड।

तुलि-फला—स्त्री०[स० ब० स०, पृपो० ह्रस्व] सेमर का पेड।

तुली—स्त्री०[स० तुलि+ङीप् ?] छोटा तराजू। काँटा।
स्त्री०[?]१ तमाकू। २ सुरती का पत्ता।
स्त्री०=तुलि।

तुलुव—पु०[?] उत्तर कनाडा का एक प्राचीन नाम।

तुलूली—स्त्री०[अनु० तुलतुल] द्रव पदार्थ की पतली किंतु बँधी हुई धार। जैसे—पेशाब की तुलूली।
क्रि० प्र०—बँधना।

तुल्य—वि०[स० तुला+यत्]१. जो किसी की तुलना मे समान हो। बराबर। २ अनुरूप। सदृश्य।

तुल्यता—स्त्री०[सं० तुल्य+तल्—टाप्] तुल्य होने की अवस्था या भाव। बराबरी। समता।

तुल्य-पान—पु० [तृ०त०] छोटे-बडे सब तरह के लोगो का एक साथ मिलकर मद्य आदि पीना।

तुल्य-प्रधान व्यंग्य—पु० [स० तुल्य-प्रधान, ब०स०, तुल्य-प्रधान-व्यग्य, कर्म० स०] साहित्य मे ऐसा व्यग्य जिसमे वाच्यार्थ और व्यग्यार्थ बराबर हों। गुणीभूत व्यग्य का एक भेद।

तुल्ययोगिता—स्त्री०[स० तुल्ययोगिन्+तल्—टाप्] साहित्य मे एक अलंकार जिसमे अप्रस्तुत अथवा प्रस्तुत पदार्थो के किसी एक धर्म से युक्त या सम्बद्ध होने का उल्लेख होता है। जैसे—उस सुन्दरी की कोमलता को देखकर किस तरुण के हृदय मे मालती के फूल, चन्द्रमा की कला और केले के पत्ते कठोर नही जँचने लगे।

तुल्ययोगी (गिन्)—वि० [सं० तुल्य√युज् (जोडना)+णिनि] समान सबध रखनेवाला।

तुल्ल*—वि०=तुल्य।

तुव—सर्व०=तव (तुम्हारा)।

तुवर—वि०[सं०√तु (नष्ट करना)+ष्वरन्]१. कसैला। २ जिसे दाढी और मूँछ न हो।
पु०१. कषाय रस। कसैला स्वाद। २. जलाशयो के किनारे होनेवाला एक पेड जिसके बीज खाने से मादा पशुओं का दूध बढता है। ३ अरहर।

तुवर-यावनाल—पु०[स० कर्म० स०] लाल जोंधरी या ज्वार।

तुवरिका—स्त्री० [स० तुवर+ठन्—इक, टाप्] १. गोपीचदन। २ अरहर।

तुवरी—स्त्री० [स० तुवर+ङीप्] १ तुवरिका। (दे०) २ वैद्यक मे एक तरह का तेल जो रक्त, विकार दूर करने तथा चर्म रोगो का नाशक माना जाता है।

तुवरीशिंब—पु०[स० ब० स०] चकवड का पेड। पवाँर।

तुवि—स्त्री०[स०=तुम्बी, पृषो० सिद्धि] तूँबी।

तुशियार—पु० [स० तुष] एक तरह का झाड जिसकी छाल को बटकर रस्सियाँ आदि बनाई जाती है। पुरनी।

तुष—पु० [स०√तुष्+क] १ अन्न-कण के ऊपर का छिलका। भूसी। २ अडे के ऊपर का छिलका। ३ बहेडे का पेड।

तुषग्रह—पु०[स० तुष√ग्रह् (पकडना)+अप्] अग्नि । आग।

तुष-धान्य—पु०[स० मध्य०स०] ऐसा अन्न जिसके दानो के ऊपर छिलका रहता हो।

तुषसार—पु०[स० तुष√सृ (जाना)+अण्] अग्नि। आग।

तुषांबु—पु० [स० तुष-अबु, प० त०] एक तरह की काजी। (वैद्यक) वि० दे० 'तुषोदक'।

तुषाग्नि—स्त्री०[स० तुष-अग्नि, प०त०] तुषानल। (दे०)

तुषानल—पु०[स० तुष-अनल, प०त०]१ भूसी की आग। घास-फूस की आग। करसी की आँच। २ उक्त प्रकार की वह आग जिसमे प्रायश्चित्त करने के लिए लोग जल मरते थे।

तुषार—पु०[स०√तुष्(प्रसन्न होना)+आरन्] १ हवा मे उडनेवाले वे जलकण जो जम जाने के फलस्वरूप जमीन पर गिर पडते हैं। पाला। २. लाक्षणिक रूप मे, ऐसी बात जो किसी चीज को नष्ट कर दे। ३. बरफ। हिम। ४ एक प्रकार का कपूर। चीनिया कपूर। ५ हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश जहाँ के घोडे प्रसिद्ध थे। ६ उक्त प्रदेश मे रहनेवाली एक जाति।
वि० बरफ की तरह ठढा।

तुषार-कर—पु०[स० ब०स०] हिमकर। चद्रमा।

तुषार-गौर—पु०[स० उपमि०स०] कपूर।

तुषार-मूर्ति—पु०[ब०स०] चद्रमा।

तुषार-पाषाण—पु०[प०त०]१ ओला। २ बरफ। हिम।

तुषार-रश्मि—पु०[ब०स०] चद्रमा।

तुषार-रेखा—स्त्री० [प०त०] पर्वतो पर की वह कल्पित रेखा जिसके ऊपरवाले भाग पर बरफ बराबर जमा रहता है। (स्नो लाइन)

तुषारर्तु—स्त्री०[तुषार-ऋतु, प०त०] जाडे का मौसम। शीतकाल।

तुषारांशु—पु०[तुषार-अंशु, ब०स०] चद्रमा।

तुषाराद्रि—पु०[तुषार-अद्रि, प०त०] हिमालय पर्वत।

तुषित—पु०[स०√तुष् (प्रसन्न होना)+कितच् (बा०)] १. एक प्रकार के गण देवता जो सख्या मे १२ हैं। २. विष्णु। ३ बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग।

तुषोत्थ—पु० [स० तुष-उद्√स्था (उठना)+क] तुषोदक। (दे०)

तुषोदक—पु०[तुष-उदक, ष० त०]१ छिलके समेत कूटे हुए जौ को पानी मे सडाकर बनाई हुई काँजी, जो वैद्यक मे अग्नि को दीप्त करने-वाली मानी गई है। २ भूसी को सडाकर तैयार किया हुआ खट्टा जल।
तुष्ट—भू० कृ० [स०√तुष्+क्त][भाव० तुष्टता]१ जिसका तोष या तृप्ति हो चुकी हो या कर दी गई हो। तृप्त। २. जो अपना अभीष्ट सिद्ध होने के कारण प्रसन्न हो गया हो।
तुष्टता—स्त्री०[स० तुष्ट+तल्—टाप्]१. तुष्ट होने की अवस्था या भाव। २ सतोष। प्रसन्नता।
तुष्टना—अ०[स० तुष्ट] तुष्ट होना।
स० तुष्ट करना।
तुष्टि—स्त्री०[स०√तुष्+क्तिन्]१ तुष्ट होने की अवस्था या भाव। २ प्रसन्नता। ३ कंस का एक भाई।
तुष्टीकरण—पु०[स०तुष्टि+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ(करना)+ल्युट्—अन] किसी को तुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। (एपीजमेंट)
तुस—पु०[स०=तुष, पृषो० सत्व] तुष (भूसी)।
तुसार—पुं०=तुषार।
तुसी—स्त्री०[स० तुष] भूसी।
तुस्त—स्त्री०[स० √तुस् (शब्द करना)+क्त]धूल । गर्द।
तुहफा†—पु०=तोहफा।
तुहमत—स्त्री०=तोहमत।
तुहार—सर्व० हिं०'तुम्हारा' का भोजपुरी रूप।
तुहिं—सर्व०[हिं० तू+हिं(प्रत्य०)] तुझको। तुझे। (भोजपुरी)
तुहिन—पु०[स०√तुह् (पीडित करना)+इनन्] १. तुषार। पाला। २ बरफ। हिम। ३ चद्रमा की चाँदनी। ४ ठढक। शीतलता। ५ कपूर।
तुहिन-कर—पु०[ष०त०]१. चद्रमा। २ कपूर।
तुहिन-किरण—पु०=तुहिन-कर।
तुहिन-गिरी—पु०[ष०त०] हिमालय पर्वत।
तुहिन-शर्करा—पु०[ष०त०] बरफ। हिम।
तुहिन-शैल—पु०=तुहिन-गिरि।
तुहिनांशु—पु०[स० तुहिन-अशु, ब०स०] १ चद्रमा। २ कपूर।
तुहिनाचल—पु०[तुहिन-अचल, ष०त०] तुहिन-गिरि। (दे०)
तुहिनाद्रि—पु०[तुहिन-अद्रि, ष० त०] तुहिन-गिरि। (दे०)
तुहें†—सर्व०=तुम्हे। (भोजपुरी)
तूं—सर्व०=तू।
तूंगी†—स्त्री०[देश०]१ पृथ्वी। भूमि। २ नाव। नौका।
तूंबड़ा—पु०=तूँबा।
तूंबना—स०=तूमना।
तूंबा—पु०[स० तुम्बक] [स्त्री० अल्पा० तूंबी]१ कडुआ गोल कद्दू। कड़ुई गोल घीया। तितलौकी। २ उक्त का सूखा हुआ वह रूप जिसके सहारे नदी-नाले आदि पार किये जाते है। ३. उक्त को सुखाकर और खोखला करके बनाया हुआ पात्र जो प्राय साधु-सन्यासी और भिखमगे अपने पास खाने-पीने की चीजे रखने के लिए रखते है।
पद—तूंबा पलटी या तूंबा फेरी=इधर की चीजे उठाकर उधर करना या एक की चीजे दूसरो को देना। चोरो, चालबाजो आदि का लक्षण। उदा०—ऐसी तूमा-(तूंबा) पलटी के गुन नेति नेति स्तुति गावै।—सत्यनारायण।
तूंबी—स्त्री०[हिं० तूंबा] १ छोटा तूंबा। २ उक्त का बना हुआ छोटा तूंबा या पात्र।
मुहा०—तूंबी लगाना=वात से पीडित या सूजे हुए स्थान का रक्त या वायु खीचने के लिए तूबी की विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया करना।
तू—सर्व० [स० त्वम्] एक सर्वनाम जिसका प्रयोग मध्यम पुरुष एक-वचन मे ऐसे व्यक्ति के लिए होता है जो अपने से बहुत छोटा, तुच्छ या हीन हो। जैसे—तू चुप रह।
मुहा०—तू तड़ाक या तू तुकार=किसी को तू कहकर उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक सबोधित करना। **तू-तू मैं-मैं करना**=आपस मे अशिष्टता पूर्वक कहा-सुनी, तकरार या हुज्जत करना।
विशेष—कुछ अवसरो पर इसका प्रयोग ईश्वर अथवा सर्वशक्तिमान् सत्ता के लिए भी होता है। जैसे—(क) हे ईश्वर, तू हम पर दया कर। (ख) हे राजन् तू यज्ञ कर।
पु०[अनु०]कुत्तो, कौओ आदि को बुलाने का शब्द। जैसे—तू ! तू ! आओ।
तूअर—पु०[स० तूवरी]१ अरहर का पौधा। २ उक्त पौधे के बीज।
तूख†—पु०[स० तुष=तिनका] दो पत्तो को (दोना या पत्तल बनाते समय) जोडने के लिए उनमे लगाई जानेवाली सीक। खरका।
तूखना—अ०[स० तोषण] तुष्ट होना।
स० तुष्ट करना।
तूझ—सर्व०[स० तुभ्यम्, प्रा० तुज्झ] तेरा। मेरे। उदा०—स्त्री पति कुण सुमति तूझ गुण जू तवति।—प्रिथीराज।
तूटना†—अ०=टूटना।
तूठना*—अ०[स० तुष्ट; प्रा० तुट्ठ]१ तुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। उदा०—मानि कामना सिद्ध जानि तूठे दुखहारी—रत्ना०। २ प्रसन्न होना।
तूण—पु०[स०√तूण् (पूरा करना)+ घञ्]१ तीर रखने का चोगा। तरकश। २ चामर वृत्त का दूसरा नाम।
तूणक—पु०[स० तूण+कन्] एक प्रकार का छद जिसके चरणो मे १५-१५ वर्ण होते है।
तूण-क्ष्वेड़—पु०[स० ब०स०] बाण। तीर।
तूणव—पु०[स० तूण+व] बाँसुरी।
तूणि—वि०[स०√तूण्(पूरा करना)+इन्] तेज या वेगपूर्वक चलने या कोई काम करनेवाला।
पु० १. मन। २ श्लोक। ३. गर्द। ४ मल।
तूणी (णिन्)—वि०[स० तूण+इनि] तूण अर्थात् तरकशवाला।
स्त्री०[स० तूण+ ङीप्]१ तरकश। निषग। २ नील का पौधा। ३ एक प्रकार का वात-रोग जिसमे मूत्राशय के पास से दर्द उठकर गुदा और पेडू तक पहुँचता है।
†पु०[स० तूणीक] तूनी (वृक्ष) ।
तूणीक—पु०[स० तूणी√कै (शब्द करना)+क] तुन का पेड।
तूणी-धर—पु०[स० ष०त०] तूण या तरकश रखनेवाला योद्धा।
तूणीर—पु०[स०√तूण+ईरन्] तूण। तरकश। भाथा।

तूत—पु० [स० तूद] १. मँझोले आकार का एक प्रकार का पेड जिसके पत्ते पान की तरह तथा अनीदार होते है। २ उक्त पेड की मीठी फलियाँ जो फल के रूप मे खाई जाती है। शहतूत।

तूतक—पु० [स०=तुत्य, पृपो० सिद्धि] तूतिया। नीलाथोथा।

तूतिया—पुं० [स० तुत्थ] ताँबे का क्षार या लवण जो कुछ नीले रग का होता है और जिसे वैद्यक मे ताँबे की उप-धातु कहा गया है। यह खानो मे प्राकृतिक रूप मे भी मिलता है और गधक के तेजाव और ताँबे के योग से बनाया भी जाता है। नीलाथोथा। वैद्यक मे यह वमनकारक और दस्तावर माना जाता है तथा रगाई के काम मे भी आता है।

तूती—स्त्री० [फा०] १ छोटी जाति का एक प्रकार का तोता जिसकी चोच पीली, गरदन बैंगनी और पर हरे होते है। २ कनेरी नाम की छोटी सुन्दर चिडिया। ३. मटमैले रग की एक प्रकार की छोटी चिडिया। जो बहुत मधुर स्वर मे बोलती है। ४ बाँसुरी या शहनाई की तरह का एक प्रकार का पतला लवा बाजा।

विशेष—उर्दूवाले यह शब्द उक्त अर्थो मे प्राय. पुलिंग बोलते है। यथा —जहाँ मे है शरारत-पेशा जितने। उन्ही का आज तूती बोलती है।—कोई शायर।

मुहा०—(किसी की) तूती बोलना=किसी की खूब चलती होना। किसी का खूब प्रभाव जमना।

कहा०—नक्कार खाने में तूती की आवाज कौन सुनता है=(क) बहुत भीड-भाड या शोरगुल मे कही हुई किसी साधारण आदमी की बात कोई नही सुनता। (ख) बडे लोगो के सामने छोटो की कुछ नही चलती।

५ मिट्टी की एक प्रकार की छोटी टोंटीदार घरिया या पुरवा जिससे छोटे बच्चे पानी पीते है।

तू-तू मैं-मैं—स्त्री० [हिं०] आपस मे अशिष्टतापूर्वक होनेवाली कहा-सुनी या झगडा।

तूद—पु०=तूत (शहतूत)।

तूदह—पु० = तूदा।

तूदा—पु० [फा० तूद] १. ढेर। राशि। २. सीमा का चिह्न जो पहले मिट्टी का ढेर खडा करके बनाया जाता था। ३ मिट्टी की वह ऊँची और बडी राशि या टीला जिस पर तीर, बन्दूक आदि चलाकर निशाना साधने का अभ्यास किया जाता है।

तून—पु० [स० तुन्नक] १. तुन का पेड। दे० 'तुन'। २ तूल नाम का लाल रग का कपडा।

†पु० = तूण (तूणीर)।

तूना—अ० [हिं० चूना] १ तरल पदार्थ का बूँद-बूँद करके गिरना। चूना। टपकना। उदा०—रति रूप लुनाई तुई सीप रैं।—प्रतापशाह। २. खडा या स्थिर न रहकर गिर पड़ना। ३ गर्भपात या गर्भ-स्राव होना।

तूनी—पुं० [सं० तूणी] एक तरह का बडा पेड जिसकी पत्ती नीम के पेड की तरह होती है और लकडी लाल रग की और हलकी किंतु मजबूत होती है। तुन।

तूनीर*—पु० = तूणीर (तरकश)।

तूफाँ—पुं० = तूफान।

तूफान—पु० [अ०; चीनी ताई फू] १ वह बडी बाढ जो आस-पास की चीजो या स्थानो को डुबा दे। २ बहुत तेज चलनेवाली, विशेषत समुद्र-तल पर उठने या चलनेवाली वह आँधी जिसके साथ खूब बादल गरजते और जोरो की वर्षा होती है। ३. ऐसा भीषण या विकट उत्पात या उपद्रव जिसमे या तो बहुत से लोग सम्मिलित हो या जिससे बहुतो की भारी हानि हो। भारी आफत, झझट या बखेडा। जैसे—तुम तो जरा-सी बात मे तूफान खडाकर देते हो।

क्रि० प्र०—उठाना। —खडा करना।

४. ऐसी बहुत अधिक चीख-पुकार या हो-हल्ला जिसे सुनकर आस-पास के लोग घबरा जायँ। ५. किसी पर लगाया जानेवाला झूठा कलक या दोष। तोहमत।

मुहा०—तूफान जोड़ना या बाँधना=किसी पर झूठा आरोप करना या कलक लगाना।

तूफानी—वि० [फा०] १ तूफान-सम्बन्धी। तूफान का। जैसे—तूफानी रात। २ तूफान की तरह का तेज या प्रबल और चारो ओर वेगपूर्वक फैलने या होनेवाला। जैसे—उन दिनो देश मे कई बडे-बडे नेताओ के तूफानी दौरे हो रहे थे। ३ तूफान अर्थात् बहुत बडा उपद्रव या बखेडा खडा करनेवाला। जैसे—उसकी बातो मे मत आना, वह बहुत बडा तूफानी है।

तूबर—पु० [स० तूबर] १ ऐसा बैल जिसके सिर पर सीग न हों। २ नपुसक। हिजडा।

तूबरक—पु० [स० तूबर+कन्] नपुसक। हिजडा।

तूबरी—स्त्री० [स० तूबर+ङीप्] १ गोपी चदन। २ अरहर।

तूमड़ी—स्त्री० [हिं० तूवाँ+डी (प्रत्य०)] १ तूँबी। २ तूँबी से बनाया हुआ एक प्रकार का बाजा जो प्राय सँपेरे बजाते है।

तूम-तड़ाक—स्त्री० [अनु० तूम+तडक (भडक)] १ तडक-भडक। २ व्यर्थ का दिखौआ आडबर। ३ ठसक।

तूमना—स० [स० स्तोम=ढेर+हिं० ना (प्रत्य०)] १. रूई आदि के पहल या रेशे नोचकर अलग-अलग करना। २ किसी चीज को काट-पीट कर उसके बहुत छोटे-छोटे टुकडे करना। धज्जियाँ उडाना। ३ मसलना। ४ अच्छी तरह सारा रहस्य खोलना। ५ बहुत मारना पीटना। ६ गालियाँ आदि देते हुए पूरी दुर्दशा करना। उदा०—तरुन तरुन तन तूमत फिरत है।—देव। ७ इकट्ठा करना। चुनना। उदा०—सजा दे प्रिय पथ पर प्रति बार लजाती रहे स्नेह दल-तूम—निराला।

तूमरा—पु० [स्त्री० तूमरी] =तूवा।

तूमा—पु० = तूवा।

तूमार—पु० [अ०] साधारण बात का होनेवाला व्यर्थ का विस्तार। बात का बतगड।

क्रि० प्र०—खडा करना।—बाँधना।

तूमारिया सूत—पु० [हिं० तुमना+सूत] ऐसा महीन सूत जो तूमी हुई रूई से काता गया हो।

तूया—स्त्री० [देश०] काली सरसो।

तूरंत—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तूर—पु० [स०√तूर् (ताडन करना)+क] १. एक प्रकार का नगाडा। २ तुरही या नरसिंहा नाम का बाजा।
†स्त्री० [सं० तुवरि] १. अरहर का पौधा और उसके बीज। २ अनाज। अन्न। उदा०—पूर्वापाढा धूल किन उपजै साती तूर।—भड्डरी।
पु० [अ०] शाम देश का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसके सबध मे कहा जाता है कि हजरत मूसा को इसी पर अलौकिक प्रकाश दिखाई पडा था।
मुहा०—तूर चमकना=ज्ञान का प्रकाश दिखाई पडना।
स्त्री० [फा० तूल=लबाई] १ गज-डेढ गज लबी एक लकडी जो जुलाहो के करघे मे लगी रहती है और जिसमे तानी लपेटी जाती है। लपेटनी। फनियाला। २ डोली, पालकी आदि पर डाले हुए परदे को यथा स्थान रखने के लिए उसके चारो ओर बाँधी जानेवाली रस्सी। चौबदी।
स्त्री० [स० तूल] १ कपास। २ रूई।
तूरज*—पु० = तूर्य।
तूरण*—अव्य० [स० तूर्ण] १. चट-पट। तुरत। २ शीघ्र। जल्दी।
तूरण*—क्रि० वि० [स० तूर्ण] १ चट-पट। तुरन्त। २ शीघ्र जल्दी।
तूरन*—पुं० = तूर्ण।
क्रि० वि०=तूरण।
तूरना†—पु० [स० तूर] तुरही।
†पु० [?] एक प्रकार की चिडिया।
†स० = तोडना। (पूरब) उदा०—मन तन वचन तजै तिन तूरी।—तुलसी।
†अ० =टूटना। उदा०—परिहैं तूरि लटी कटि ताकी। —नन्ददास।
तूरा—पु० [स० तूर] तुरही नामक बाजा।
तूरान—पु० [फा०] मध्य एशिया; जो तुर्क, तातारी, मगोल आदि जातियो का निवास स्थान है।
तूरानी—वि० [फा०] तूरान देश का। तूरान-सबधी।
पु० तूरान देश का निवासी।
स्त्री० १ तूरान देश की भाषा। २. उक्त भाषा की लिपि।
तूरी—स्त्री० [स०√तूर्+अच्+ङीप्] धतूरे का पेड।
तूर्ण—क्रि० वि० [स०√त्वर् (शीघ्रता करना)+क्त, नत्व] शीघ्र। जल्दी।
वि० १. जल्दी या शीघ्रता करनेवाला। २ शीघ्रगामी। तेज।
तूर्णक—पु० [स० तूर्ण+कन्] सुश्रुत के अनुसार एक तरह का चावल।
तूर्त—अव्य० [स०√त्वर्+क्त, ऊठ्] १ तुरत। तत्काल। २ जल्दी। शीघ्र।
तूर्य—पु० [सं० √तूर् (पूर्ण करना)+ण्यत्] १ तुरही या नरसिंहा नाम का बाजा। २. मृदग।
तूर्य-खंड—पु० [प० त०] एक प्रकार का ढोल।
तूर्व—अव्य० [स०√तुर्व् (हिंसा करना) +अच्, दीर्घ] तुरत। शीघ्र।
तूल—पु० [स०√तूल् (पूर्ति करना) +क] १. आकाश। २ कपास, मदार, सेमल, आदि के ढोडो के अदर का घूआ जो रूई की तरह होता है। ३ शहतूत का पेड। ४. धतूरा। ५ तृण की नोक।
पु० [हिं० तून=एक पेड जिसके फूलो से कपडे रगे जाते है] १ सूती कपडा जो चटकीले रग का होता था और पहले तूल के फूलो के रग मे रगा जाता था। २ गहरा और चटकीला लाल रग।
*वि० = तुल्य (समान)।
पु० [अ०] लबाई के बल का विस्तार। लबाई।
पद—तूल व अर्ज= लबाई और चौडाई। तूल-कलाम=(क) लबी-चौडी बातें। (ख) कहासुनी। तूल-तवील=बहुत लबा-चौडा।
मुहा०—(किसी बात का) तूल खींचना=किसी बात या कार्य का आवश्यकता से बहुत अधिक बढ जाना। तूल देना=व्यर्थ का विस्तार करना। तूल पकड़ना=तूल खीचना। (देखें ऊपर)
तूलक—पु० [स० तूल+कन्] रूई।
तूल-कार्मुक—पु० [च० त०] १ इद्र-धनुष। २ रूई धुनने की धुनकी।
तूल-चाप—पु० = तूल-कार्मुक।
तूलत—स्त्री० [हिं० तुलना] जहाज की रेलिंग मे लगी हुई एक खूँटी।
तूलता*—स्त्री० = तुल्यता। (समता)
तूलना—स० [स० तूलन या तुलना] गाडी के पहिए निकाल करके उनके भीतरी छेद मे तेल डालना। ओंगना।
*अ० [स० तुलना] १ तौला जाना। २ किसी से होड लगाना। बराबर होने का प्रयत्न करना। उदा०—रग न तेरो है कछू सुबरन रग न तूनि।—दीनदयाल गिरि। ३. किसी के बराबर या समान होना। ४ किसी की बराबरी का या समान बनकर उसके सपर्क मे या साथ रहना अथवा विचरण करना। उदा०—मजुल रसातल की मजरी के पुजन मे, पाय कै प्रसाद तहाँ गूँज गूँज तूलेहो।—प्रसाद। ५. तुलना करना। उपमा देना।
तूलम-तूल—अव्य० [अ० तूल = लबा] १. लबाई के बल। २ आमने सामने।
तूलवती—स्त्री० [स० तूल+मतुप्—ङीप्] नील का पौधा।
तूल-वृक्ष—पु० [प० त०] शाल्मली वृक्ष। सेमर का पेड।
तूल-शर्करा—स्त्री० [प० त०] कपास का बीज। बिनौला।
तूल-सेचन—पु० [प० त०] रूई से सूत कातने का काम।
तूला—स्त्री० [स० तूल+टाप्] १. कपास। २ दीए की बत्ती।
* वि० = तुल्य।
तूलि—स्त्री० [स०√तूल् (पूर्ति करना)+इन्] १ तकिया। २ चित्र-कार की कूची। तूलिया।
तूलिका—स्त्री० [स० तूलि+कन्—टाप्] १ हलकी रजाई। दुलाई। २ चित्र अकित करने की कूँची।
तूलिनी—स्त्री० [स० तूल+इनि—ङीप्] १. लक्ष्मण कद। २ सेमल का पेड।
तूलि-फला—स्त्री० [स० ब० स०] सेमर का पेड।
तूली—स्त्री० [स० तूलि+ङीप्] १. नील का पौधा। २ चित्रो आदि मे रग भरने की कूँची। उदा०—आज क्षितिज पर जाँच रहा है तूली कौन चितेरा।—महादेवी। ३. जुलाहो की कूँची जिससे वे ताने का फैला हुआ सूत ठीक जगह पर बैठाते हैं।
तूवर—पु० [स० तु+वरच्, दीर्घ]=तूवरक।
तूवरक—पु० [स० तूवर+कन्] १ बिना सीग का बैल। डूंडा।

२ बिना दाढी-मूँछो का आदमी। ३. कषाय रस। ४ कसैला स्वाद। ५ अरहर।

तूवरिका—स्त्री० [स० तूवरक+टाप्, इत्व] १ अरहर। २ गोपी चदन।

तूवरी—स्त्री० [स० तूवर+ङीप्] १ अरहर। २ गोपी चदन।

तूष—पु० [स०√तूष् (सन्तोष करना)+अच्] किनारा (कपडे का)।

तूष्णी—वि० [स० तूष्णीम् (अव्य०)] मौन। चुप।
स्त्री० चुप्पी। मौन।

तूष्णीक—वि० [स० तूष्णीम्+कन्, मकार-लोप] मौनावलम्वी। मौन रहनेवाला।

तूष्णीयुद्ध—पु० [स० कर्म० स०] वह युद्ध या होड जिसमे कौशल, षडयत्र आदि के द्वारा शत्रु पक्ष के मुख्य मुख्य लोगो को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया जाय।

तूस—पु० [तिव्वती थोश] [वि० तूसी] १ एक प्रकार का बहुत वढिया ओर मुलायम ऊन जो काश्मीर से लेकर नैपाल तक की एक तरह की पहाडी वकरियो के शरीर पर होता है। पशम। २ उक्त ऊन का जमाया हुआ कवल या नमदा। ३ उक्त ऊन की वुनी हुई वढिया चादर। पशमीना।
†पु०=तुष (भूसी)।

तूसदान—पु० [पुर्त्त० काटूश+दान (प्रत्य०)] कारतूस।

तूसना*—अ० [स० तुष्ट] १ सतुष्ट होना। २ प्रसन्न होना।
स० १ सतुष्ट करना। २ प्रसन्न करना।

तूसा†—पु० [सं० तुष] चोकर। भूसी।

तूसी—वि० [स० तुष] धान के छिलके के रग का।
पु० उक्त प्रकार का रग। (हस्क)

तूस्त—पु० [स०√तुस् (शब्द करना)+तन् (दीर्घ)] १ धूल। रज। रेणु। २ किसी चीज का वहुत छोटा टुकडा। कण। ३ जटा। ४ धनुष।

तृक्ष—पु० [स०√तृक्ष् (जाना)+अच्] कश्यप ऋषि।

तृक्षाक—पु० [स०√तृक्ष्+आकन्] एक प्राचीन ऋषि।

तृख—पु० [स०√तृष् (प्यासा होना)+क, पृषो० ष— ख] जातीफल। जायफल।

तृखा* —स्त्री०=तृषा।

तृजग* —वि०=तिर्यक्।

तृण—पु० [सं०√तृह् (हिंसा करना)+क्न, हकारलोप] १. कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियो की एक जाति या वर्ग जिसके काड या पेडी मे काठ या लकडीवाला अग नही होता, गूदा ही गूदा होता है। इस वर्ग के पौधो मे ऐसी लवी-लवी पत्तियाँ होती है जिनमे केवल लवाई के वल नसे होती है। जैसे—ऊख, नरकट, सरकडा आदि। २ घास या उसका डठल।
मुहा०—(मुँह या दाँतो मे) तृण गहना या पकड़ना= उसी प्रकार दीन-हीन वनकर सामने आना जिस प्रकार सीधी-सादी गौ मुँह मे घास या उसका डठल लिये हुए आती है। **तृण गहाना या पकड़ाना**=पूरी तरह से दीन और नम्र वनाकर वशीभूत करना। **तृण तोड़ना**=किसी सुदर वस्तु को देखकर उसे वुरी नजर से वचाने के लिए तिनका तोडने का टोटका करना। **(किसी से) तृण तोड़ना**= सदा के लिए सवध तोडना। (दे० 'तिनका' के अतर्गत 'तिनका तोड़ना' मुहा०)
पद—तृणवत्=अत्यत तुच्छ।

तृणक—पु० [स० तृण+कन्] तृण। घास।

तृण-कर्ण—पु० [व० स०] एक ऋषि।

तृणकीया—स्त्री० [स० तृण+छ—ईय, कुक्, टाप्] ऐसी जमीन जहाँ घास उगी हुई हो।

तृण-कुंकुम—पु० [मध्य० स०] एक सुगधित घास। रोहिश घास।

तृणकुटी—स्त्री० [मध्य० स०] घास-फूस की वनी हुई कुटिया या झोपडी।

तृण-कूर्म—पु० [मध्य स०] गोल कद्दू।

तृण-केतु—पु० [स० त०] १ वाँस। २ ताड।

तृणकेतुक—पु० [स० तृणकेतु+कन्] तृण-केतु।

तृण-ग्रथी—स्त्री० [व० स०,+ङीष्] स्वर्ण जीवती।

तृणा-ग्राही (हिन्)—पु० [स० तृण√ग्रह् (पकडना)+णिनि] १ नीलम। २ कहरुवा।

तृणचर—वि० [स० तृण√चर् (गति)+अच्] तृण चरनेवाला।
पु० १ पशु। २ गोमेदक मणि।

तृण-जलायुका—पु० [मध्य० स०] तृण-जलौका। (दे०)

तृण-जलौका—पु० [मध्य० स०] एक तरह की जोक।

तृण-ज्योतिष—पु० [स० त०] ज्योतिष्मती लता।

तृण-द्रुम—पु० [उपमि० स०] १ ताड का पेड। २ सुपारी का पेड। ३ खजूर का पेड। ४ नारियल का पेड। ५ हिंताल। ६ केतकी का पौधा।

तृण-धान्य—पु० [मध्य० स०] १ तिन्नी या धान का चावल। २ साँवा।

तृण-ध्वज—पु० [स० त०] १ वाँस। २ ताड का पेड।

तृण-निंब—पु० [मध्य० स०] चिरायता।

तृणप—पु० [स० तृण√पा (रक्षा करना)+क] एक गधर्व का नाम।

तृण-पत्रिका—स्त्री० [व० स०, कप्, टाप्, इत्व] इक्षुदर्भ नामक तृण।

तृण-पत्री—स्त्री० [व० स०, ङीप्]=तृण-पत्रिका।

तृण-पीड़—पु० [व० स०] आपस मे होनेवाला गुत्थम-गुत्था या हाथा-पाई।

तृण-पुष्प—पु० [प० त०] १ गठिवन। २ सिन्दूर पुष्पी।

तृण-पूली—स्त्री० [व० स०, ङीप्] घास-फूस या नरकट की चटाई।

तृण-वीज—पु० [व० स०] साँवाँ।

तृण-मणि—पु० [मध्य० स०] तृण को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला एक तरह के गोद का डला। कहरुवा। कपूरमणि।
विशेष—प्राचीन साहित्यकारो ने इसे पत्थर माना था।

तृणमय—वि० [स० तृण+मयट्] [स्त्री० तृणमयी] घास-फूस का वना हुआ।

तृणवत्—वि० [स० तृण+वति] जिसका महत्त्व तृण के समान कुछ भी न हो अर्थात् नगण्य। तुच्छ।

तृणराज—पु० [प० त०] १. खजूर का पेड। २ नारियल का पेड। ३. ताड का पेड।

तृण-वृक्ष—पु० =तृण-द्रुम ।
तृण-शय्या—स्त्री० [प० त०] १. घास का बिछौना । २ चटाई ।
तृणशीत—पु० [स० त०] १ रोहिस घास, जिसमे से नीबू की-सी सुगध आती है। २. जल-पिप्पली ।
तृण-शून्य—वि० [तृ० त०] जिसमे तृण न हो। तृण से रहित । पु० १. चमेली । मल्लिका। २. केतकी ।
तृण-शूली—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] एक प्रकार की लता ।
तृणशोषक—पु० [स०तृण√शुष् (सूखना)+णिच्+ण्वुल्—अक] एक प्रकार का साँप ।
तृण-षट्पद—पु० [उपमि० स०] बर्रे। भिड़।
तृण-सवाह—पु० [स० तृण-सम्√वह् (ढोना)+णिच्+अच्] वायु। हवा।
तृण-सारा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] कदली। केला ।
तृण-सिंह—पु० [स० त०] कुठार । कुल्हाडा ।
तृण-स्पर्श-परीषह—पु० [प० त०] दर्भादि कठोर तृणो को बिछाकर उन पर सोने का व्रत । (जैन)
तृण-हर्म्य—पु० [मध्य० स०] कुटिया। झोपडी ।
तृणाजन—पु० [तृण-अजन, उपमि० स०] एक तरह का गिरगिट।
तृणाग्नि—स्त्री० [तृण-अग्नि, मध्य० स०] तुषानल। (दे०)
तृणाढ्य—पु० [तृण-आढ्य, स० त०] एक तरह का तृण जो औषध के काम मे आता है। पर्वतृण ।
तृणान्न—पु० [तृण-अन्न, प० त०] तिन्नी का जगली धान।
तृणाम्ल—पु० [तृण-अम्ल, स० त०] नोनिया नामक घास ।
तृणारणिमणि न्याय—पु० [तृण-अरणि मणि, द्व० स०, तृणारणिमणि-न्याय, प० त०] तर्क-शास्त्र मे तृण, अरणी और मणि की तरह का स्पष्ट निर्देशन।
विशेष—इन तीनो चीजो से आग जलाई जाती है परन्तु इन तीनो के जलाने के ढग अलग-अलग है।
तृणावर्त्त—पु० [स० तृण+आ+वृत्(घूमना)+णिच्+अण्] १ बवडर। चक्रवात। २. एक दैत्य जिसे कंस ने कृष्ण को मार डालने के लिए गोकुल भेजा था।
तृणेंद्र—पु० [तृण—इद्र, उपमि० स०] ताड का पेड।
तृणोत्तम—पु० [तृण-उत्तम, स० त०] ऊखल तृण । उसर्वल।
तृणोद्भव—पु० [स० तृण+उद्√भू (उत्पन्न होना)+अच्] तिन्नी (धान)।
तृणोल्का—स्त्री० [तृण—उल्का, मध्य० स०] घास-फूस की बनी हुई मशाल।
तृणौक (स्) —पु० [तृण—ओकस्, मध्य० स०] घास-फूस की झोपडी।
तृणौषध—पु० [तृण-औषध, मध्य० स०] एलुवा।
तृण्या—स्त्री० [स० तृण+य—टाप्] तृणो अर्थात् घास-पात का ढेर।
तृतीय—वि० [स० त्रि+तीय (सम्प्रसारण)] जो क्रम सख्या, महत्त्व आदि के विचार से दूसरे के बाद का हो। तीसरा।
तृतीयक—पु० [स० तृतीय+कन्] वह ज्वर जो हर तीसरे दिन आता हो। तिजारी ।
तृतीय-प्रकृति—स्त्री० [कर्म० स०] पुंलिंग और स्त्री लिंग से भिन्न और तीसरा अर्थात् नपुसक । हिजडा ।
तृतीय-सवन—पु० [कर्म० स०] अग्निष्टोम आदि यज्ञो का तीसरा सवन जिसे साय सवन भी कहते है। दे० 'सवन' ।
तृतीयांश—पु० [तृतीय-अश, कर्म० स०] तीसरा उपश या भाग। तिहाई।
तृतीया—स्त्री० [स० तृतीय+टाप्] १ चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन। तीज। २ व्याकरण मे, करण कारक या उसकी विभक्ति की सज्ञा।
तृतीया प्रकृति—वि० [स०] नपुसक। हिजडा।
तृतीयाश्रम—पु० [तृतीय-आश्रम, कर्म० स०] चार आश्रमो मे से तीसरा आश्रम। वानप्रस्थ।
तृतीयी (यिन्)—वि० [स० तृतीय+इनि] तीन बराबर भागो मे से एक का हकदार।
तृन† —पु०=तृण।
तृपत्—पु० [स०√तृप् (प्रसन्न करना)+अति] चद्रमा।
तृपति†—स्त्री०=तृप्ति ।
तृपल—पु० [स०√तृप्+कलच्] १ उपल। २. पत्थर।
तृपला—स्त्री० [स० तृपल+टाप्] १. लता। बेल। २ त्रिफला।
तृपित† —वि०=तृप्त ।
तृपिता* —स्त्री०=तृप्ति।
तृपिताना—अ० [हिं० तृपित, स० तृप्त] तृप्त होना । स० तृप्त करना ।
तृप्त—वि० [स०√तृप्+क्त] १ जो अपनी आवश्यकता पूरी हो जाने पर सतुष्ट हो चुका हो। २ अघाया हुआ। ३ प्रसन्न।
तृप्ताना* —अ० [स० तृप्त] तृप्त होना। स० तृप्त करना।
तृप्ति—स्त्री० [स०√तृप्+क्तिन्] आवश्यकता अथवा इच्छा की पूर्ति हो जाने पर होनेवाली मानसिक शान्ति या मिलनेवाला आनद ।
तृप्र—पु० [स०√तृप्+रक्] १ घी। घृत। २ पुरोडाश । वि० तृप्त करनेवाला।
तृफला—स्त्री०=त्रिफला।
तृषा—स्त्री०[स०√तृष् (लालच करना)+क्विप्—टाप्] [वि० तृषित, तृष्य] १ पानी अथवा कोई तरल पदार्थ पीने की आवश्यकता से उत्पन्न होनेवाली इच्छा। प्यास। २ अभिलाषा। इच्छा। ३ लालच। लोभ। ४. कलिहारी नाम की वनस्पति।
तृषातुर—वि० [तृषा-आतुर] तृषा से आतुर या विकल। बहुत अधिक प्यासा।
तृषा-द्रुम—पु० [मध्य० स०] वह वृक्ष जिसमे से प्यास बुझाने का साधन अर्थात् जल मिलता हो। जैसे—नारियल, ताड आदि।
तृषाभू—स्त्री० [प० त०] पेट मे जल रहने का स्थान । (क्लोम)
तृषालु—वि० [सं०√तृष् (प्यास लगना)+आलुच्] बहुत अधिक प्यासा। तृषित ।
तृषावंत—वि० [स० तृषावान्] प्यासा।
तृषावान् (वत्)—वि० [सं० तृषा+मतुप्] प्यासा।
तृषा-स्थान—पु० [प० त०] पेट के अन्दर का वह स्थान जहाँ जल रहता है। (क्लोम)

तृषाहा—स्त्री० [स० तृषा√हन् (मारना)+ड—टाप्] सौफ।

तृषित—वि० [स० तृषा+इतच्] १ प्यासा। २ विशेष इच्छा या कामना रखनेवाला। ३ घबराया हुआ। विकल। उदा०—कुआर मास तन तृषित घाम से कातिक चहुँदिसि दियरी बराई।—लोक-गीत।

तृषितोत्तरा—स्त्री० [तृषित-उत्तर, ब० स०, टाप्] पटसन।

तृष्णा—स्त्री० [सं०√तृष्+न—टाप्] १ प्यास। तृषा। २. लाक्षणिक अर्थ मे, मन मे होनेवाली वह प्रबल वासना जो बहुत कुछ विकल रखती हो और जिसकी सहज मे तृप्ति न होती हो। ३ प्राय अधिक समय तक बनी रहनेवाली कामना।

तृष्णारि—पु०[तृष्णा-अरि, प० त०] पित्त-पापड़ा जिसके सेवन से रोगी को प्राय. लगनेवाली प्यास बहुत-कुछ कम हो जाती है।

तृष्णालु—वि० [स० तृष्णा+आलु] १ तृषित। प्यासा। २. लालची। लोभी।

तृष्य—पुं० [स०√तृष् (लालच करना)+क्यप्] १. लालच। लोभ। २. तृषा। प्यास।

वि० लोभ उत्पन्न करने वाला।

तृसालवाँ—वि० [स० तृषालु] प्यासा। तृषित।

तृस्ना—स्त्री०=तृष्णा।

तें*—अव्य० [स० तस् (प्रत्य०)] १ द्वारा। २ से अधिक या बढकर। उदा०—चपला ते चमकत अति फारी, कहा करौगी श्यामहि।—सूर। ३ किसी समय या स्थान से।

तेंतरा—पु० [देश०] बैलगाडी मे फड के नीचे की लकडी।

तेंतालीस—वि० [स० त्रिचत्वारिंशत्, प्रा० तिचत्तालीसा] जो गिनती या सख्या मे चालिस से तीन अधिक हो।

पु० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है।—४३।

तेंतालिसवाँ—वि० [हिं० तेंतालिस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम मे तेंतालिस के स्थान पर पड़ने या होनेवाला।

तेंतिस—वि० [स० त्रयस्त्रिंशत्, पा० तिंतिसति; प्रा० तितीसा] जो गिनती मे तीस से तीन अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो अकों मे इस प्रकार लिखी जाती है—३३।

तेंतिसवाँ—वि० [हिं० तेंतिस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती मे तेंतिस के स्थान पर पडे।

तेंदुआ—पु० [देश०] चीते की जाति का एक हिंसक पशु।

तेंदुस—पु० [स० टिंडिश] डेंडसी नामक पौधा और उसका फल।

तेंदू—पु० [स० तिंदुक] १. ऊँचे कद का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके पत्ते शीशम की तरह गोल, नोकदार और चिकने होते हैं और लकडी काली और बहुत मजबूत होती है। आबनूस। २ उक्त पेड का फल जो नीबू के आकार का होता है और वैद्यक मे वातकारक माना गया है। ३. एक तरह का तरबूज। (पश्चिम)

ते—विभ० [हिं०] से।

सर्व०= [स० तद् का बहु०] वे (वे लोग)।

तेइ*—सर्व०[सं० ते] वे लोग ही।

तेइस—वि०, पु०=तेईस।

तेइसवाँ—वि०=तेईसवाँ।

तेईस—वि० [स० त्रिविंशति; पा० तेवीसति; प्रा० तेवीस] गिनती मे बीस से तीन अधिक। बीस और तीन।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२३।

तेईसवाँ—वि० [हिं० तेईस+वाँ (प्रत्य०)] गिनती के क्रम मे बाईस के बाद तेईस पर स्थान पर पड़नेवाला।

तेखना*—अ० [हिं० तेहा] क्रुद्ध होना।

तेखी—वि०=क्रोधी।

तेग—स्त्री० [अ० तेग़] तलवार।

तेगा—पु० [अ० तेग] १ खड्ग या खाँडा नाम का अस्त्र। २. दरवाजे, मेहराब आदि के बीच का खाली स्थान बन्द करने या भरने के लिए उसमे ईंट, पत्थर आदि की जोडाई करके भरने की क्रिया। ३ दे० 'कमरतेगा' (कुश्ती का पेंच)।

तेज—पु० [स० तेजस्] १ पाँच महाभूतों मे से अग्नि या आग नामक महाभूत। २ गरमी। ताप। ३ कोई ऐसी तीव्रता या प्रभावकारक विशेषता जिसके सामने ठहरना या जिसे सहना कठिन हो। जैसे—महात्माओ के चेहरे पर एक विशेष प्रकार का तेज होता है। ४ प्रताप। ५ पराक्रम। बल। ६ काति। चमक। ७ तत्त्व। सार। ८. वीर्य। ९ पित्त। १०. लज्जा। ११ सत्त्व गुण से उत्पन्न लिंग शरीर। १२. घोडो आदि के चलने की तेजी या वेग। १३. सोना। स्वर्ण। १४ नवनीत। मक्खन।

वि० [स० तेजस् से फा० तेज] १ ऐसा उग्र, प्रबल या विकट जिसे सहना कठिन हो। जैसे—तेज धूप। २ जिसकी गति मे बहुत अधिक वेग हो। शीघ्रगामी। जैसे—तेज घोडा, तेज हवा। ३ जिसकी धार बहुत चोखी या पैनी हो। जैसे—तेज चाकू। ४ जिसका स्वाद बहुत चरपरा, झालदार या तीखा हो। जैसे—तेज मिर्च। ५ जिसमे कोई काम बहुत अच्छी तरह और जल्दी करने की विशेष बुद्धि, योग्यता या सामर्थ्य हो। जैसे—पढने-लिखने मे तेज लडका। ६ बहुत जल्दी और यथेष्ट प्रभाव उत्पन्न करनेवाला। जैसे—तेज दवा। ७ बहुत अधिक या बढ-चढकर बोलनेवाला। जैसे—उनकी औरत बहुत तेज है। ८ जिसमे चचलता या चपलता की अधिकता हो। जैसे—यह बच्चा अभी से बहुत तेज है। ९ जिसका दाम या भाव अपेक्षया अधिक हो या पहले से बढ गया हो। जैसे—आज-कल अनाज और कपडा बहुत तेज हो गया है।

तेजक—पु० [सं०√तिज् (क्षमा करना)+ण्वुल्—अक] १ मूँज। २ सरपत।

तेजग*—वि०=तेज।

तेजधारी—वि० [स० तेजोधारिन्] (व्यक्ति) जिसके चेहरे पर तेज हो। तेजस्वी।

तेजन—वि० [स०√तिज्+णिच्+ल्यु—अन] १. तेज उत्पन्न करनेवाला। २ दीप्त करनेवाला। ३ जल्दी जलने या जलानेवाला।

पु० १. बाँस। २. सरपत। ३ मूँज।

तेजनक—पु० [स० तेजन+कन्] शर। सरपत।

तेजना*—स० [हिं० तजना] छोड़ देना। त्यागना। उदा०—तेजि अह गुरु-चरन गहु जम से बाचें जीव।—कबीर।

तेजनाख्य—पु० [स० तेजन-आख्या, ब० स०] मूँज।

तेजोवान् (वत्)—वि० [स० तेजस्+मतुप्] [स्त्री० तेजोवती] तेज-वाला। तेजस्वी।

तेजोवृक्ष—पु० [स० तेजस्-वृक्ष, मध्य० स०] छोटी अरणी का वृक्ष।

तेजोहत—वि० [स० तेजस्-हत, ब० स०] जिसका तेज नष्ट हो चुका हो।

तेजोह्व—स्त्री० [स० तेजस्√हे (स्पर्धा करना)+क] १ तेजवल। २ चाव। चव्य।

तेड़ना†—स०=टेरना (पुकारना)।

तेणि—अव्य० [म० तेन] से। उदा०—वैदे कहियै तेणि विसेखि।—प्रिथीराज।

तेतना†—वि०=तितना (उतना)।

तेतर—वि० [हिं० तोतला] (व्यक्ति) जो तुतला कर बोलता हो।

तेता†—वि० [स्त्री० तेती]=तितना (उतना)।

तेतालिस†—वि०, पु०=तैंतालिस।

तेतिक†—वि० [हिं० तेता] उस मात्रा या मान का। उतना।

तेती†—वि० स्त्री० हिं० तेता (उतना) का स्त्री रूप।

तेतो* वि०=तेता (उतना)।

तेन—पु० [स० ते=गौरी+न=शिव, ब० स०] गीत का आरंभिक स्वर।

तेम—पु० [स०√तिम् (गीला होना)+घञ्] आर्द्र होने की अवस्था या भाव। आर्द्रता।

†अव्य०=तिमि (उस प्रकार)।

तेमन—पु० [स०√तिम्+ल्युट्—अन्] १. आर्द्रता। २ चटनी। ३ व्यजन।

तेमनी—स्त्री० [स० तेमन+ङीप्] चूल्हा।

तेमरू—पु० [देश०] १ तेंदू का पेड। आवनूस। २ उक्त पेड की लकडी।

तेरज—पु० [देश०] वह लेखा जिसमे आय-व्यय की विभिन्न मदो का उल्लेख हो। खतियौनी का गोशवारा।

तेरवाँ†—वि०=तेरहवाँ।

तेरस—स्त्री० [स० त्रयोदश] चाद्रमास के किसी पक्ष की तेरहवी तिथि या दिन।

तेरह—वि० [स० त्रयोदश; प्रा० तेद्दह, अर्द्धमा० तेरस] जो गिनती या सख्या मे दस से तीन अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या और अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१३।

मुहा०—**तीन तेरह होना**—दे० 'तीन' के अन्तर्गत मुहा०। **तेरह बाइस करना**=टाल-मटोल या बहानेवाजी करना।

तेरहवाँ—वि० [हिं० तेरह+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या सख्या के विचार से तेरह के स्थान पर पडने या होनेवाला।

तेरहीं—स्त्री० [हिं० तेरह+ई (प्रत्य०)] हिंदुओ मे, किसी के मरने के दिन से तेरहवाँ दिन।

विशेष—इसी दिन अनेक प्रकार के कृत्य और पिंडदान आदि कराकर मृतक के सबधी शुद्ध होते हैं।

तेरहुत†—पु० = तिरहुत।

तेरा†—सर्व० [स० तव] [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एकवचन सबध कारक अर्थात् षष्ठी का सूचक सर्वनाम। 'तू' का सबधकारक रूप। जैसे—तेरा नाम क्या है?

मुहा०—**तेरा मेरा करना**=यह कहना कि यह तुम्हारा और वह हमारा है, अर्थात् दुजायगी या पार्थक्य के भाव से युक्त बाते करना।

तेरुस*—पु० =त्यौरुस।

स्त्री० = तेरस।

तेरे—सर्व० [हिं० तेरा] १ हिं० 'तेरा' का बहुवचन रूप। जैसे—तेरे बाल-बच्चे। २ हिं० तेरा' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तेरे सिर पर।

†अव्य० [हिं० ते या ते] १ से। २ तुझसे।

तेरो†—सर्व०=तेरा।

तेलंग†—पु० = तैलग।

तेल—पु० [स० तैल] १ तिल अथवा किसी तेलहन के बीजो अथवा कुछ विशिष्ट वनस्पतियो को पेरकर निकाला हुआ प्रसिद्ध स्निग्ध दह्य तरल पदार्थ जो खाने-पकाने, जलाने, शरीर मे मलने अथवा औषध आदि के रूप मे काम आता है। चिकना। स्नेह। जैसे—तिल, नीम बदाम या सरसो का तेल।

मुहा०—**तेल मे हाथ डालना**=अपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिए खौलते हुए तेल मे हाथ डालना। (मध्य युग की एक प्रकार की परीक्षा) **आँखो का तेल निकालना**=ऐसा परिश्रम करना जिससे आँखो को बहुत अधिक कष्ट हो।

२ विवाह की एक रीति जो साधारणत विवाह से दो दिन और कही कही चार-पाँच दिन पहले भी होती है और जिसमे वर अथवा वधू के शरीर मे हल्दी मिला हुआ तेल लगाया जाता है।

मुहा०—**तेल उठना या चढ़ना**=विवाह से पहले उक्त रीति का सम्पादन होना। **तेल चढाना** = उक्त रीति का सपादन करना।

३ पशुओ के शरीर से निकलनेवाली पतली चरबी जो सहज मे जल सकती और दवा, रगाई आदि के काम मे आती है। जैसे—मगर या साँडे का तेल। ४ कुछ विशिष्ट प्रकार के खनिज द्रव्य पदार्थ जो सहज मे जल सकते हैं। जैसे—मिट्टी का तेल।

तेलगू—पु०, स्त्री० =तेलुगू।

तेलचलाई—स्त्री० [हिं० तेल+चलाना] दे० 'मिडाई' (छीट की छपाई की)।

तेलवाई—पु० [हिं० तेल+वाई (प्रत्य०)] १ शरीर मे तेल मलने या लगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ विवाह की एक रसम जिसमे कन्या-पक्ष की ओर से जनवासे मे वर के लगाने के लिए तेल और कुछ रुपए भेजते है।

तेलसुर—पु० [?] एक तरह का लबा वृक्ष जिसकी लकडी नावे आदि बनाने के काम आती है।

तेलहडा†—पु० [हिं० तेल+हडा] [स्त्री० अल्पा० तेलहँडी] १ मिट्टी की वह हाँडी जिसमे तेल रखा जाता हो। २ तेल रखने का कोई पात्र।

तेलहन—पु० [स० तैल धान्य] कुछ वनस्पतियो के वे बीज जिन्हे पेरने से उनमे से चिकना और तरल पदार्थ (अर्थात् तेल) निकलता हो।

तेलहा—वि० [हिं० तेल] [स्त्री० तेलही] १. जिसमे तेल हो (बीज

या पीया)। २. तेल के योग से बना या पका हुआ। जैसे—तेल— ही जलेबी। ३ जिस पर तेल गिरा या लगा हो ४ जिसमें तेल की-सी गंध या चिकनाहट हो।

तेला—पु० [हिं० तीन] वह उपवास जो तीन दिनों तक बराबर चले।

तेलिन—स्त्री० [हिं० तेली की स्त्री०] १. तेली की या तेली जाति की स्त्री। २. एक प्रकार का छोटा बरसाती कीड़ा जिसके स्पर्श से शरीर में जलन होने लगती है।

तेलियर—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी जिसके काले रंग के शरीर पर सफेद रंग की बहुत सी चित्तियाँ होती हैं।

तेलिया—वि० [हिं० तेल] १. जो तेल की तरह चमकीला और चिकना हो। २. तेल की तरह हलके काले रंगवाला। ३. जिसमें तेल होता या रहता हो। तेल से युक्त।

पु० १ तेल की तरह का काला और चमकीला रंग। २ उक्त रंग का घोड़ा। ३ एक प्रकार का बबूल या बबूल। ४ कोई ऐसा पक्षी या पशु जिसका रंग तेल की तरह काला और चिकना हो। ५. सींगिया नामक विष।

स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली।

तेलिया-कंद—पुं० [सं० तैलकंद] एक प्रकार का कंद।

विशेष—यह कंद जिस भूमि में होता है वह तेल से सींची हुई जान पड़ती है।

तेलिया कत्था—पु० [हिं० तेलिया+कत्था] एक तरह का कत्था या खैर जो तेल की तरह कुछ कालापन लिये होता है।

तेलिया काकरेजी—पु० [हिं० तेलिया+काकरेजी] कालापन लिये गहरा ऊदा रंग।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

तेलिया कुमैत—पु० [हिं० तेलिया+कुमैत] १. घोड़े का एक रंग जो अधिक कालापन लिये लाल या कुमैत होता है। २. उक्त रंग का घोड़ा।

तेलिया गर्जन—पु० [सं०] =गर्जन।

तेलिया पाषान—पु० [हिं० तेलिया+पखान] एक तरह का चिकना और मजबूत पत्थर।

तेलिया पानी—पु० [हिं० तेलिया+पानी] वह जल जिसमें कुछ चिकनाहट हो अथवा जिसका स्वाद तेल जैसा हो।

तेलिया मुनिया—स्त्री० [हिं०] मुनिया पक्षी की एक जाति। इस मुनिया के ऊपर और नीचे के पर बादामी रंग के, सिर, ठोंठी तथा गला कत्थई रंग का होता है।

तेलिया मैना—स्त्री० [हिं०] एक तरह की मैना। तिलोरी।

तेलिया सुरंग—पु० =तेलिया कुमैत।

तेलिया सुहागा—पुं० [हिं० तेलिया+सुहागा] एक तरह का सुहागा जिसमें कुछ चिकनापन होता है।

तेली—पु० [हिं० तेल+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० तेलिन] १ वह जो तेलहन पेरकर तेल निकालता और बेचता हो। २. हिन्दुओं में एक जाति जो उक्त काम व्यवसाय के रूप में करती है।

पद—तेली का बैल=वह जो अपना अधिकतर समय बहुत ही कष्ट और परिश्रम के कामों में लगाता हो।

तेलुगु—पु० [सं० तैलंग] १ तैलंग देश का प्राचीन नाम। २ उक्त देश का निवासी।

स्त्री० तैलंग देश की भाषा।

तेलौंछी—स्त्री० [हिं० तेल+औंछी (प्रत्य०)] तेल [illegible] की प्याली।

तेलौना—वि० [हिं० तेल+औना (प्रत्य०)] [स्त्री० तेलौनी] दे० 'तेलहा'।

तेवई—स्त्री० तिरिया (स्त्री)।

तेवट—स्त्री० [देश०] संगीत में, आठ [illegible] का एक ताल जिसमें तीन आघात और एक खाली होता है।

तेवड़ा—पु० [?] [illegible]।

तेवन*—पु० [सं० [illegible]] १. [illegible] का एक छोटा बाग। [illegible]। २ आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा आदि करने का स्थान। ३ आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा।

तेवर—पु० [सं० त्रिकुटी, पु० हिं० तिउरी] १. किसी विशिष्ट उद्देश्य या भाव से किसी की ओर [illegible] दृष्टि। त्योरी। जैसे—[illegible]।

मुहा०—तेवर बदलना [illegible]।

२ भौंह। भृकुटी।

पु० [हिं० तीन] [illegible] (लहँगा, ओढ़नी और चोली) का सामूहिक नाम।

तेवरसी—स्त्री० [देश०] १ [illegible]। २. खीरा। ३ [illegible]।

तेवरा—पु० [देश०] [illegible]।

तेवराना—अ० [हिं० तेवर+आना(प्रत्य०)] १ [illegible]। २. बेसुध या मूर्च्छित होना।

तेवरी—स्त्री० =त्योरी।

तेवहार—पु० =त्योहार।

तेवान*—पु० [देश०] सोच-विचार। चिंता। फिक्र।

तेवाना—अ० [हिं० तेवान] चिंतित होना। फिक्र करना। उदा०—ठाढ़ि तेवानि [illegible]।—जायसी।

तेहा—पु० [सं० [illegible]] १ क्रोध। गुस्सा। [illegible]। २. अभिमान। घमंड। ३. [illegible]। ४ प्रचंडता।

तेहर—स्त्री० [सं० त्रि+हिं० हार] तीन लड़ों की करधनी जो स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं।

तेहरा—वि० [हिं० तीन+हरा] [स्त्री० तेहरी] १ तीन तहों या परतों में लपेटा हुआ। २ जिसमें तीन तहें या परतें हों। ३ जो दो बार हो चुकने के बाद फिर से तीसरी बार करना पड़े या किया गया हो। जैसे—तेहरा काम, तेहरी मेहनत। ४ जो एक साथ तीन हों। ५ तिगुना। (क्व०)

तेहराना—स० [हिं० तेहरा] १. लपेटकर तीन तहों या परतों में करना।

२ कोई काम दो बार कर चुकने के बाद कोर-कसर ठीक करने के लिए फिर से तीसरी बार करना, जाँचना या देखना।

तेहवार†—पु० = त्योहार।

तेहा—पु० [स० तस्=तिरस्कृत या दूर करना] १. अपने अभिमान, बडप्पन, महत्त्व आदि की भावना से उत्पन्न होनेवाला ऐसा हलका क्रोध या गुस्सा जो जल्दी उत्पन्न होने पर भी सहसा उग्र या विकट रूप न धारण करता हो। २ क्रोध। गुस्सा। ३ अभिमान। घमड।

तेहिं†—सर्व० [स० ते] उसे। उसको।

तेही—पु० [हिं० तेह+ई (प्रत्य०)] १ जिसमे तेहा हो या जो तेहा दिखलाता हो। क्रोधी। २ अभिमानी। घमडी।

तेहेदार—पु० = तेही।

तेहेबाज—पु० = तेही।

तैं†—सर्व० = तू।

विभ० = ते (से)।

तैंतिडीक—वि० [स० तिन्तिडीक+अण्] इमली की काजी से बनाया हुआ।

तैंतिस, तैंतीस—वि०, पु० =तेतिस।

तैं†—अव्य० [स० तत्] उस मात्रा या मान का। उतना हिं० 'जैं' का नित्य-सम्बन्धी। जैसे—जैं आदमी कहो, तैं आदमी आवे।

†वि० [अ०] १ जो ठीक और पूरा या समाप्त हो चुका हो। जैसे—काम तैं करना। २ (झगडा) जिसका निपटारा निर्णय या फैसला हो चुका हो। जैसे—आपस का झगडा या मुकदमा तैं करना। ३ जो निर्णीत या निश्चित हो चुका हो। जैसे—किराया या दाम तैं करना।

स्त्री०=तह।

तैकायन—पु० [स० तिक+फक्—आयन] तिक ऋषि के वशज या शिष्य।

तैक्त—पु० [स० तिक्त+अण्] तिक्त होने का भाव। तीतापन। चरपराहट।

तैक्ष्ण्य—पु० [स० तीक्ष्ण+ष्यञ्] तीक्ष्णता।

तैखाना†—पु० =तहखाना।

तैजस—वि० [स० तेजस्+अण्] १ तेज-सम्बन्धी या तेज से युक्त। २ तेज से उत्पन्न।

पु० १ भारतीय दर्शन मे, राजस अवस्था मे, उत्पन्न होनेवाला अहकार जिससे शरीर की ग्यारहो इन्द्रियो और पच तन्मात्रो का विकास होता है। २ कोई ऐसा पदार्थ जो खूब चमकता हो। जैसे—धातुएँ, रक्त आदि। ३ परमात्मा जो स्वय प्रकाश है और जिससे सूर्य आदि को प्रकाश प्राप्त होता है। ४ वैद्यक मे वह शारीरिक शक्ति जो भोजन को रस के रूप मे तथा रस को धातु के रूप मे परिवर्त्तित करती है। ५ पराक्रम। पौरुष। बल। ६ घी। घृत। ७ महाभारत के समय का एक प्राचीन तीर्थ। ८ बहुत तेज चलनेवाला घोडा।

तैजसावर्तनी—स्त्री० [स० तैजस-आवर्त्तनी, प० त०] चाँदी, सोना आदि गलाने की घरिया।

तैजसी—स्त्री० [स० तैजस+ङीप्] गजपिप्पली।

तैतालीस—वि०=तेतालिस।

तैतिक्ष—वि० [स० तितिक्षा+ण] बरदाश्त या सहन करनेवाला। सहनशील।

तैतिर—पु० [स० तैत्तिर=पृषो० सिद्धि] तीतर।

तैतिल—पु० [स०] १ फलित ज्योतिष मे, ग्यारह करणो मे से चौथा करण जिसमे जन्म लेनेवाला कलाकुशल, रूपवान, वक्ता, गुणी और सुशील होता है। २ देवता। ३ गैंडा।

तैतीस—वि० =तेतिस।

तैत्तिर—पु० [स० तित्तिर+अण्] १ तीतर पक्षी। २. तीतरो का समूह। ३ गैंडा (पशु)।

तैत्तिरि—पु० [स०] कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक ऋषि का नाम।

तैत्तिरिक—पु० [स० तैत्तिर+ठक्—इक] तीतर पकडनेवाला बहेलिया।

तैत्तिरीय—स्त्री० [स० तित्तिर+छण्—ईय] १ कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओ मे से एक जो आत्रेय अनुक्रमणिका और पाणिनि के अनुसार तित्तिरि नामक ऋषि प्रोक्त है। २. उक्त शाखा का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।

तैत्तिरीयक—पु० [स० तैत्तिरीय+कन्] तैत्तिरीय शाखा का अनुयायी या अध्येता।

तैत्तिल—पु०=तैतिल।

तैथिक—पु० [स०] १५ मात्राओ के छदो की सज्ञा।

तैना—अ० [स० तपन] १ तप्त होना। तपना। २ दुखी होना। स०=ताना (तपाना)।

तैनात—वि० [अ० तअय्युन] [भाव० तैनाती] (वह) जो किसी स्थान की सुरक्षा अथवा किसी विशिष्ट काम के लिए कही नियत या नियुक्त हुआ हो। मुकर्रर।

तैनाती—स्त्री० [हिं० तैनात+ई (प्रत्य०)] तैनात करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तैमिर—पु० [स० तिमिर+अण्] तिरमिरा (दे०)।

तैया—पु० [देश०] छीपियो का रग घोलने का छोटा प्याला।

तैयार—वि० [अ० तय्यार] १ जो कुछ करने के लिए हर तरह से उद्यत, तत्पर या प्रस्तुत हो चुका हो। जैसे—चलने को तैयार। २. जो हर तरह से उपयुक्त ठीक या दुरुस्त हो चुका हो। जिसमे कोई कोर-कसर न रह गई हो। जैसे—भोजन (या मकान) तैयार होना। ३. सामने आया, रखा या लाया हुआ। उपस्थित, प्रस्तुत, मौजूद। जैसे—जितनी पुस्तकें तैयार है, वे सब ले लो। ४. (शरीर) जो हर तरह से स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हो। जैसे—इधर कुछ दिनो से उसका बदन खूब तैयार हो रहा था। ५ (काम करने के लिए हाथ) जिसमे यथेष्ट अभ्यास के फलस्वरूप पूरा कौशल या दक्षता आ चुकी हो। जैसे—चित्र बनाने या तबला बजाने मे हाथ तैयार होना। ६ (सगीत के क्षेत्र मे कठ या गला) जिससे सब तरह के खटके, तानें, पलटे, मुरकियाँ आदि अनायास या सहज मे और बहुत ही मधुर या सुन्दर रूप मे निकलती हो। पूर्ण रूप से अभ्यस्त और कुशल। जैसे—इतना तैयार गला बहुत कम देखने मे आता है।

तैयारी—स्त्री० [फा० तय्यारी] १ तैयार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ तत्परता। मुस्तैदी। ३ शरीर की अच्छी गठन और पुष्टता तथा स्वस्थता। ४ वैभव, शोभा, सौन्दर्य आदि दिखाने के लिए की जानेवाली धूम-धाम या सजावट। ५ सगीत कला की वह पटुता

जो बहुत अधिक अभ्यास से आती है, जिससे गवैया कठिन-कठिन ताने बहुत सहज में सुनाता है।

तैथो*—क्रि० वि० [स० तथापि] तिस पर भी। तो भी।

तैर—वि० [स० तीर+अण्] तीर या तट-संबंधी। तट का।

तैरणी—स्त्री० [स० तीर√नम् (नमस्कार करना) +ड, तीरण+अण् +ङीप्] एक प्रकार का क्षुप जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती हैं।

तैरना—अ० [स० तरण] १ प्राणियों का अपने हाथ-पैर, पर या डैने अथवा दुम हिलाते हुए पानी के ऊपरी तल पर इस प्रकार इधर-उधर घूमना या आगे बढ़ना कि वे डूबने से बचे रहे। ऐसी युक्ति से पानी मे चलना कि डूब न जायँ। २. मनुष्यो का अपने हाथ-पैर इस प्रकार चलाते या हिलाते हुए आगे बढ़ना कि शरीर पानी के तल मे बैठने न पावे। पैरना।

विशेष—प्राय सभी जीव-जन्तु प्राकृतिक रूप से पानी पर तैरना जानते है; परन्तु मनुष्य को प्रयत्नपूर्वक तैरने की कला सीखनी पड़ती है।

३ पानी मे हलकी चीज का पानी अथवा किसी द्रव पदार्थ की ऊपरी तह पर ठहरा रहना, अथवा उसके प्रवाह या बहाव के साथ-साथ आगे बढ़ना। जैसे—लकड़ी का पानी पर तैरना। ४ लाक्षणिक रूप में, किसी प्राणी अथवा वस्तु का इस प्रकार सहज मे और सरल गति से इधर-उधर हटना-बढ़ना जिस प्रकार जीव-जन्तु जल के ऊपरी भाग पर तैरते है। जैसे—कीटाणुओ अथवा गुड्डी (या पतंग) का हवा मे तैरना।

तैराई—स्त्री० [हि० तैरना+ई (प्रत्य०)] १. तैरने की क्रिया या भाव। २ तैरने या तैराने के बदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक।

तैराक—वि० [हि० तैरना+आक (प्रत्य०)] (वह) जो खूब अच्छी तरह तैरना जानता हो।

तैराकी—स्त्री० [हि० तैराक+ई (प्रत्य०) १. तैरने की क्रिया या भाव। २. वह उत्सव या मेला जिसमे तैरने की कलाओ, जल-क्रीडाओ आदि का प्रदर्शन या प्रतियोगिता हो।

तैराना—स० [हि० तैरना का प्रे०] १ दूसरे को तैरने मे प्रवृत्त करना। तैरने का काम दूसरे से कराना। २. धारदार शस्त्रो के सम्बन्ध मे, शरीर के अन्दर अच्छी तरह धँसाना या प्रविष्ट कराना। जैसे—किसी के पेट मे कटार तैराना।

तैर्थ—वि० [स० तीर्थ+अण्] १ तीर्थ-संबंधी। तीर्थ का। २ तीर्थ मे होनेवाला।

पु० वे धार्मिक कृत्य जो किसी तीर्थ मे जाने पर करने पड़ते हैं।

तैर्थक—वि० [स० तीर्थ+वुञ्—अक] १. स्थल-संबंधी। २ तीर्थ-स्थल मे बनने, मिलने या होनेवाला।

तैर्थिक—पु० [स० तीर्थ+ठञ्—इक] शास्त्रकार।

तैर्यगयनिक—पु० [स० तिर्यक—अयन, ष० त०,+ठञ्—इक] एक प्रकार का यज्ञ।

तैलंग—पु० [स० त्रिकलिंग] आधुनिक आंध्र प्रदेश का पुराना नाम तैलंग।

तैलंगा—पु०=तिलगा।

तैलंगी—वि० [हि० तैलंग+ई (प्रत्य०)] तैलंग देश का।

पुं० तैलंग देश का निवासी।

स्त्री० तैलंग देश की भाषा। तेलगू।

तैल—वि० [स० तिल+अञ्] तिल-संबंधी। तिल या तिलों का।

पु० १. तिल के दानों या बीजों को पेरकर निकाला हुआ तेल। २ दे० 'तेल'।

तैल-कंद—पु० [मध्य० स०] तैलिका-कंद।

तैलकार—पु० [स० तैल√कृ (करना)+अण्) तेल पेरने और बेचनेवाला व्यक्ति। तेली।

तैल-किट्ट—पु० [ष० त०] खली।

तैल-कीट—पु० [मध्य० स०] तेलिन नाम का कीड़ा।

तैल-चित्र—पु० [मध्य० स०] बहुत मोटे कपड़े पर तैल रंगों की सहायता से अंकित किया हुआ चित्र। (आयल पेंटिंग)

तैलत्व—पु० [स० तैल+त्व] तेल का भाव या गुण।

तैल-द्रोणी—स्त्री० [मध्य० स०] तेल रखने का एक तरह का बहुत बड़ा पात्र जिसमें कुछ विशिष्ट रोगियों को प्राचीन काल मे लिटाया जाता था।

तैल-धान्य—पु० [मध्य० स०] १. धान्य का एक वर्ग जिसके अन्तर्गत तीनों प्रकार की सरसों, दोनों प्रकार की राई, तिल और कुसुम के बीज है। २. तिलहन।

तैलपक—पु० [स० तैल√पा (पीना)+क+कन्] झींगुर नामक कीड़ा।

तैल-पर्णक—पु० [ब० स०, कप्] गठिवन।

तैलपर्णिक—पु० [स० तिलपर्ण+ठन्—इक] सलई का गोंद।

तैलपर्णी—स्त्री० [स० तिलपर्ण+अण्—ङीप्] १ चन्दन। २ लोबान। ३. तुरुष्क। शिलारस।

तैलपायी (यिन्)—पु० [स० तैल√पा (पीना)+णिनि] झींगुर। चमड़ा। (कीड़ा)

वि० तेल पीनेवाला।

तैल-पिच्छक—पु० [ष० त०] खली।

तैलपिपीलिका—स्त्री० [मध्य० स०] एक तरह की चींटी।

तैल-फल—पु० [ब० स०] १. इंगुदी। २ बहेड़ा।

तैल-भाविनी—स्त्री० [स० तैल√भू (होना)+णिच्+णिनि—ङीप्] चमेली का पेड़।

तैलमाली—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] तेल की बत्ती।

तैल-यंत्र—पु० [मध्य० स०] कोल्हू।

तैल-रंग—पु० [स०] चित्र कला मे, जल रंग से भिन्न वे रंग जो कई तरह के तेलों या साफ किए हुए पेट्रोल मे मिलाकर तैयार किये जाते हैं। ऐसे रंग जल-रंग की अपेक्षा अच्छे समझे जाते और अधिक स्थायी होते है। (आयल कलर)

तैल-वल्ली—स्त्री० [मध्य० स०] शतावरी। शतमूली।

तैल-साधन—पु० [स० तैल√साध् (सिद्ध करना)+णिच्+ल्यु—अन] शीतलचीनी। कबाबचीनी।

तैलस्फटिक—पु० [मध्य० स०] १ अंबर नामक गंध-द्रव्य। २ कहरुबा। तृण-मणि।

तैलस्यंदा—स्त्री० [स० तैल√स्यन्द् (चूना)+अच्—टाप्] १ गोकर्णी नाम की लता। मुरहटी। २ काकोली।

तैलाक्त—वि० [स० तैल-आक्त, तृ० त०] जिसमे तेल लगा हो। तेल से सना हुआ।

तैलाह्य—पु० [स० तैल-आख्या, ब०स०] शिला रस या तुरुष्क नाम का गध द्रव्य ।
तैलागुरु—पु० [स० तैल-अगुरु, मध्य० स०] अगर की लकडी ।
तैलाटी—स्त्री० [स० तैल√अट् (जाना)+अच्—ङीप्] वर्रे। भिड।
तैलाभ्यग—पु०[स० तैल-अभ्यग, प०त०] शरीर मे तेल लगाने की क्रिया या भाव।
तैलिक—वि० [स० तैल+ठक्—इक] तेल-सबधी।
पु० [तैल+ठन्—इक] तेली ।
तैलिक-यंत्र—पु० [कर्म० स०] तिल आदि पेरने का यत्र। कोल्हू ।
तैलिनी—स्त्री० [स० तैल+इनि—ङीप्] वत्ती ।
तैलि-शाला—स्त्री० [स० प०त०] वह घर या स्थान जहाँ कोल्हू चलता हो।
तैली (लिन्)—पु० [स० तैल+इनि] तेली ।
तैलीन—पु० [स० तिल+खञ्—ईन] तिल का खेत।
तैल्वक—वि० [स० तिल्व+वुञ्—अक] लोध की लकडी से बना हुआ। पु० लोध।
तैश—पु० [अ०] अत्यधिक क्रुद्ध होने पर चढनेवाला आवेश ।
क्रि० प्र०—दिखाना।
मुहा०—तैश मे आना=मारे क्रोध के कोई अनुचित वात कहने या काम करने के लिए आवेशपूर्वक प्रस्तुत होना।
तैष—पु० [स० तिष्य+अण्, य-लोप] चाद्र पौष मास ।
विशेष—पौष मास की पूर्णिमा के दिन तिष्य (पुष्य नक्षत्र) होने के कारण यह नाम पडा है।
तैषी—स्त्री० [स० तैष+ङीप्] पुष्य-नक्षत्र से युक्त पूस की पूर्णिमा।
तैस—वि०=तैसा ।
तैसा—वि० [स० तादृश; प्रा० ताइस] उस आकार, प्रकार, रूप, गुण आदि का। उस जैसा। वैसा।
तैसे—क्रि० वि०=वैसे ।
तोँ†—क्रि० वि०=त्यों।
तोँअर†—पु०=तोमर।
तोँद—स्त्री० [स० तुड] छाती या वक्ष से अधिक फूला तथा वढा हुआ पेट ।
क्रि० प्र०—निकलना।—वढना ।
मुहा०—तोँद पचना=(क) मोटाई कम होना। (ख) घमड या शेखी दूर होना।
तोँदरी—स्त्री० [?] एक तरह के बीज जो मसूर से कुछ छोटे होते हैं और सूजे हुए अग पर बाँधे जाने पर सूजन दूर करते है।
तोँदल—वि० [हिं० तोँद+ल (प्रत्य०)] जिसकी तोँद निकली या वढी हुई हो। तोँदवाला ।
तोँदा—पु० [देश०] वह मार्ग जिसमे से होकर तालाव का पानी वाहर निकलता है।
पु० दे० 'तोदा'।
तोँदी—स्त्री० [स० तुडी] नाभी। ढोंढी।
तोँदीला—वि०=तोँदल ।
तोँदैल—वि०=तोँदल (तोँदवाला)।
तोँवा—पु० [स्त्री० तोँवी]=तूँबा।
तोर—पु०=तोमर।
तोहका—सर्व०=तुम्हे ।
तो—अव्य० [स० तु] एक अव्यय जिसका प्रयोग वाक्य मे किसी कथन, पद या सभावित वात पर जोर देने या पार्थक्य, विशिष्टता आदि सूचित करने के लिए अथवा कभी-कभी यों ही किया जाता है । जैसे—(क) जरा दिन तो चढ लेने दो। (ख) वे किसी तरह आवें तो सही। (ग) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।—मीराँ। (घ) अब तो वात फैल गई, जानत सब कोई।—मीराँ।
अव्य० [स० तत्] उस अवस्था या दशा मे। तव। जैसे—यदि आप चलेंगे तो हम भी आप के साथ हो लेंगे।
*सर्व० [स० तव] १ व्रजभाषा मे 'तू' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है। जैसे—तोको, तोसों आदि। २ तेरा।
†अ० [पु० हिं० हतो=था का सक्षि०] था। (व्रज०)
तोअर†—पु०=तोमर।
तोइ*—पु० [स० तोय] जल। पानी ।
तोई—स्त्री० [देश०] १ अगे, कुरते आदि मे कमर पर लगी हुई गोट या पट्टी । २ चादर आदि की गोट । ३ लहँगे का नेफा।
† स्त्री० [हिं० तवा] छोटा तवा। तौनी ।
तोईज—अव्य० [हिं०] तभी। तभी तो। उदा०—भला भलो मति तोईज भजिया।—प्रिथीराज।
तोक—पु० [स० √तु (वरतना)+क] १ श्रीकृष्णचंद्र के एक सखा। २ वच्चा। शिशु ।
तोकक—पु० [स० तोक+कन्] चातक। पपीहा।
तोकरा—स्त्री० [देश०] एक तरह की लता जो अफीम के पौधों से लिपटती है और उन्हे सुखा डालती है।
तोक्म—पु० [स०√तक् (हँसना)+म, पृषो० सिद्धि] १ अकुर । २ कच्चा या हरा जौ। ३ हरा रग। ४ वादल । मेघ। ५ कान की मैल ।
तोख*—पु०=तोषा।
तोखार—पु० १ =तुखार (एक प्रदेश)। २ =तुषार ।
तोखों—सर्व० [स० तव; हिं० तो+खो (को)] तुझको। उदा० —जननी जनम दियो है तोखों वस आजहि के लानें।—लोकगीत ।
तोट†—पु० [स० त्रुटि या हिं० टूटना] १ टूटने की क्रिया या भाव। २ कमी। त्रुटि। ३ घाटा। ४ दोष। बुराई।
तोटक—पु० [स० त्रोटक] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण होते हैं। २ शकराचार्य के चार मुख्य शिष्यों मे से एक जिनका दूसरा नाम नदीश्वर भी था।
तोटका†—पु०=टोटका।
तोटकी—स्त्री० [देश०] एक तरह की वनस्पति जो प्राय धान के साथ होती है।
तोटना*—अ०=टूटना।
स०=तोडना।
तोड—पु० [हिं० तोडना] १ तोडे या तोडे जाने की क्रिया, दशा या भाव। २ पानी, हवा आदि का वह तेज वहाव जो सामने पडनेवाली

चीजों को तोड़-फोड़ सकता हो या तोड़-फोड़ सहता हो। जैसे—(क) इस बाट पर पानी का जबरदस्त तोड़ पड़ता है। (ख) छोटे-मोटे पेड़ हवा का तोड़ नहीं सह सकते। ३. कोई ऐसा काम, चीज या बात जो किसी दूसरे बड़े काम, चीज या बात का प्रभाव नष्ट कर सकता या उसे व्यर्थ कर सकता हो। जैसे—नशे का तोड़ खटाई है। ४. कुश्ती में वह दाँव-पेंच जो विपक्षी का दाँव-पेंच व्यर्थ कर सकता हो। ५. किले की दीवार का वह अंश जो गोलों की मार से टूट-फूट गया हो। ६ दफा। बार। जैसे—उनमें कई तोड़ लड़ाई या मुकदमेबाजी हो चुकी है। ७. दही का पानी (जो उसके छूटने अर्थात् गलने से बनता है)

तोड़क—वि० [सं०√तुड् (तोड़ना) ; ण्वुल्—अक] तोड़नेवाला। जैसे—जाल-माल तोड़क मल्ल। (अशिष्ट रूप)

पु० [?] स्त्रियों का माँग-टीका नाम का गहना। (पूरब)

तोड़-जोड़—पु० [हि० तोड़ + जोड़] १. कहीं से कुछ तोड़ने और कहीं कुछ जोड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। उदा०—चोटी जो उसने मुलने जाती रस्सी से। उसका तू अपने यार के ये तोड़-जोड़ देख।—रंगीला। २. ऐसा उपाय, युक्ति या साधन जो किसी बिगड़ी हुई बात को बना दे अथवा बनी-बनाई बात बिगाड़ दे। जैसे—वह तोड़-जोड़कर जैसे-तैसे अपना काम निकाल ही लेता है।

क्रि० प्र०—करना।—भिड़ाना।—मिलाना।—लगाना।

तोड़न—पु० [सं०√तुड्+ल्युट्—अन] १. तोड़ने की क्रिया या भाव। २ भेदन करना। ३ आघात या चोट पहुँचाना।

तोड़ना—स० [हि० टूटना] १ किसी चीज पर बराबर आघात करते हुए उसे छोटे-छोटे खंडों में विभक्त करना। जैसे—पत्थर या मिट्टी तोड़ना। २. ऐसा काम करना जिससे कोई वस्तु खंडित, भग्न या नष्ट-भ्रष्ट हो जाय तथा काम में आने योग्य न रह जाय। जैसे—शीशे का गिलास तोड़ना।

सं० क्रि०—डालना।—देना।

३. किसी वस्तु के कोई अंग अथवा उसमें लगी हुई कोई दूसरी वस्तु काटकर या और किसी प्रकार उससे अलग करना या निकाल लेना। जैसे—वृक्ष से फल या फूल तोड़ना, किताब की जिल्द तोड़ना, जानवर के दाँत तोड़ना। ४ किसी वस्तु का कोई अंग इस प्रकार खंडित या भग्न करना कि वह ठीक तरह से या पूरा काम करने योग्य न रह जाय। जैसे—(क) घड़ी या सिलाई की मशीन तोड़ना। (ख) किसी के हाथ-पैर तोड़ना। ५. नियम, निश्चय आदि का पालन न करके अपनी दृष्टि से उसे निरर्थक या व्यर्थ करना। जैसे—(क) अपनी प्रतिज्ञा (या किसी के साथ किया हुआ समझौता) तोड़ना। (ख) व्रत तोड़ना। ६. किसी चलते या होते हुए काम, व्यवस्था, संघटन आदि का स्थायी रूप से अन्त या नाश करना। जैसे—शासन का कोई पद या विभाग तोड़ना। ७ बल, प्रभाव, महत्त्व, विस्तार आदि घटाना या नष्ट करना। अशक्त, क्षीण या दुर्बल करना। जैसे—(क) बाजार की मन्दी ने बहुत से व्यापारियों को तोड़ दिया। (ख) रोग (या यक्ष्मा) ने उनका शरीर तोड़ दिया। ८ किसी प्रकार नष्ट या विच्छिन्न करके समाप्त कर देना। चलता या बना न रहने देना। जैसे—(क) किसी का घमंड तोड़ना। (ख) किसी से नाता (या संबंध) तोड़ना। किसी की दृढ़ता, बल आदि घटाकर या नष्ट करके उसे उसके पूर्व रूप में स्थित या स्थिर न रहने देना। जैसे—(क) मुकदमे में विपक्षी के गवाह तोड़ना। (ख) मकर या किराया तोड़ना। १० सौदा करने के समय किसी चीज का दाम घटाकर कुछ कम करना। जैसे—दूकानदार भी तोड़कर दस रुपये कम कर ही लिये। ११. खेत में हल चलाकर उसकी सतह की मिट्टी खंडित करके ढेलों के रूप में लाना। १२. किसी कुमारी के साथ पहले-पहल समागम करना। (बाजारू) १३. चोरी करने के लिए सेंध लगाना। जैसे—चोर ताला तोड़कर सब माल उठा ले गये। १४ बड़े सिक्कों को छोटे-छोटे सिक्कों में बदलवा देना।

विशेष—यह क्रिया अनेक संज्ञाओं के साथ लगकर उन्हें मुहावरों का रूप देती है, और ऐसे अवसरों पर उनके भिन्न प्रकार के अर्थ होते हैं। जैसे—किसी के पैर या मुँह तोड़ना, किसी से रिश्ता तोड़ना, किसी की रोटी (रोटियाँ) तोड़ना आदि। ऐसे मुहावरों के लिए सम्बद्ध शब्द या संज्ञाएँ देखनी चाहिएँ।

तोड़-फोड़—स्त्री० [हि० तोड़ना+फोड़ना] १ तोड़ने और फोड़ने की क्रिया या भाव। २ जान-बूझकर हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किसी भवन या रचना के कुछ अंश को खंडित करना। ३ दे० 'ध्वंसन'।

तोड़र†—पु०=तोड़ा।

तोड़वाना—स० [भाव० तुड़वाई] तुड़वाना।

तोड़ा—पु० [सं० त्रुट्; हि० तोड़ना] १ टूटने या तोड़ने की क्रिया या भाव। टूट। २. किसी चीज को तोड़कर उसमें से अलग किया या निकाला हुआ अंश या भाग। खंड। टुकड़ा। जैसे—रस्सी या रस्से का तोड़ा। ३ घाटा। टोटा। (देखें)

क्रि० प्र०—आना।—पड़ना।

४. वह मैदान या स्थान जो नदी के तोड़ से धारा हटकर अलग हो गया हो। ५. वह स्थान जो प्रायः नदियों के संगम पर उस बालू और मिट्टी के इकट्ठे होने से बनता है जो नदी अपने साथ मैदानों में से तोड़कर लाती है।

क्रि० प्र०—पड़ना।

६. नदी का किनारा। तट। ७ नाच का उतना टुकड़ा जितना एक बार में नाचा जाता है और जिसमें प्रायः एक ही वर्ग की गतियाँ अथवा एक ही प्रकार के भावों की सूचक अंग-भंगियाँ या मुद्राएँ होती हैं।

क्रि० प्र०—नाचना।

८ चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर या सिकड़ी जिसका व्यवहार आभूषण की तरह पहनने में होता है। जैसे—गले, पैर या हाथ में पहनने का तोड़ा। ९. टाट की वह थैली जिसमें चाँदी के (१०००) आते या रखे जाते हों।

मुहा०—(किसी के आगे) तोड़ा उलटना या गिराना=(किसी को) सैकड़ों, हजारों रुपए देना। बहुत-सा धन देना।

१०. हल के आगे की वह लंबी लकड़ी जिसके अगले सिरे पर जूआ लगा रहता है। हरिस। ११ खूब अच्छी तरह साफ की हुई वह चीनी जिसके दाने या रवे कुछ बड़े होते हैं और जिससे ओला बनता था। कन्द। १२ अभिमान। घमंड।

मुहा०—तोड़ा लगाना=अभिमान या घमंड दिखाना।

पद—नकतोड़। (देखें)

पु० [सं० तुड या टोटा] १. नारियल की जटा की वह रस्सी जिसके ऊपर

सूत बुना रहता था और जिसकी सहायता से पुरानी चाल की तोड़दार बंदूक छोड़ी जाती थी। पलीता।

पद—तोड़दार बंदूक=पुरानी चाल की वह बन्दूक जो तोड़ा दागकर छोड़ी जाती थी।

२. वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है और जिसकी सहायता से तोड़ेदार बन्दूक चलाने का तोड़ा या पलीता सुलगाया जाता था।

तोड़ाई†—स्त्री०=तुड़वाई।

तोतक*—पु० [हिं० तोता?] पपीहा।

तोतरगी—स्त्री०[देश०] एक तरह की चिड़िया।

तोतरा†—वि०=तोतला।

तोतरा—वि०=तोतला।

तोतराना—अ०=तुतलाना।

तोतला—वि०[हिं० तुतलाना] [स्त्री० तोतली] १ जो तुतलाकर बोलता हो। अस्पष्ट बोलनेवाला। जैसे—तोतला बालक। २. (जबान) जिससे रुक-रुककर और तुतलाकर उच्चारण होता हो। ३. (उच्चारण) जो बच्चो की तरह का अस्पष्ट और रुक-रुककर होता हो।

तोतलाना—अ०=तुतलाना।

तोता—पु०[फा०] [स्त्री० तोती]१ एक विशिष्ट प्रकार के पक्षियो की प्रसिद्ध जाति या वर्ग जिसमे से कुछ उप-जातियाँ ऐसी होती है जिनके तोते मनुष्य की बोली की ठीक-ठीक नकल उतारते हुए बोलना सीख लेते और प्राय. इसी लिए घरो मे पाले जाते है। कीर। सुग्गा। सूआ।

विशेष—इस जाति के पक्षियो की चोच अकुड़ीदार या नीचे की ओर घूमी हुई होती है, पर कई तरह के चमकीले रगो के होते है और पैरो मे दो उँगलियाँ आगे की ओर तथा दो पीछे की ओर होती है।

मुहा०—तोता पालना=दोष, दुर्व्यसन, रोग को जान-बूझकर अपने साथ लगाये रहना, उससे छूटने का प्रयत्न न करना। **तोते की तरह आँखे फेरना या बदलना**=बहुत बेमुरौवत होना।

विशेष—कहते हैं कि तोता चाहे कितने दिनो का पालतू क्यो न हो; पर जब एक बार पिंजरे के बाहर निकल जाता है, तब वह फिर अपने पिंजरे या मालिक की तरफ देखता तक नही। इसी आधार पर यह मुहावरा बना है।

मुहा०—तोते की तरह पढ़ना=बिना समझे-बूझे पढ़ते या रटते चलना। **हाथो के तोते उड़ना**=इस प्रकार बहुत घबरा जाना कि समझ मे न आवे कि अब क्या करना चाहिए।

पद—तोता-चश्म।

२ बन्दूक का घोड़ा।

तोता-चश्म—वि० [फा०] [भाव० तोता-चश्मी]१ जिसकी आँखो मे तोते की तरह लिहाज या सकोच का पूर्ण अभाव हो। २. बे-वफा। बे-मुरौवत।

तोता-चश्मी—स्त्री०[फा० तोताचश्म+ई (प्रत्य०)] तोताचश्म होने की अवस्था, गुण या भाव।

तोतापरी—पु०[देश०] एक तरह का बढ़िया आम।

तोती—स्त्री०[फा० तोता] १ तोते की मादा। २ रखैली स्त्री। रखनी।

तो-तो—पु०[अनु०] कुत्तो, कौओ की तरह तिरस्कारपूर्वक किसी व्यक्ति को बुलाने का शब्द।

तोत्र—पु०[स०√तुद्(पीडित करना)+ष्ट्रन्] पशु हाँकने की चाबुक या छड़ी।

तोत्र-वेत्र—पु०[कर्म०स०] विष्णु के हाथ का दड।

तोद—वि०[स०√तुद्+घञ्] कष्ट या पीड़ा देनेवाला।

पु० पीड़ा। व्यथा।

तोदन—पु०[स०√तुद्+ल्युट्—अन]१ पशुओ को हाँकने का उपकरण। २ पीड़ा। व्यथा। ३ एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल वैद्यक मे कसैले, रूखे और कफ तथा वायु नाशक कहे गये हैं।

तोदरी—स्त्री०[फा०] फारस देश मे होनेवाला एक तरह का पेड़ और उसका फल।

तोदा—पु०[फा० तोद] वह मिट्टी की दीवार या टीला जिस पर तीर या बंदूक चलाने का अभ्यास करने के लिए निशाना लगाते है। २ ढेर। राशि।

तोदी—स्त्री०[देश०] सगीत मे, एक प्रकार का ख्याल।

तोन*—पु०[स० तूण] तूणीर। तरकश।

तोप—स्त्री० [तु०] एक आधुनिक यंत्र जिसकी सहायता से युद्ध के समय शत्रुओ पर गोले, बम आदि बहुत दूर-दूर तक फेके जाते हैं।

विशेष—आज-कल समुद्री और हवाई जहाजो पर रखने के लिए और हवा मे उड़ते हुए हवाई जहाज आदि नष्ट करने के लिए अनेक आकार-प्रकार की तोपे बनती है।

क्रि० प्र०—चलाना।—छोड़ना। दागना।—मारना।

मुहा०—तोप कीलना=तोप की नाली मे लकड़ी का कुदा कसकर ठोक देना जिसमे वह गोला छोड़ने के योग्य न रह जाय। **तोप की सलामी उतारना**=किसी प्रसिद्ध और बड़े अधिकारी के आने पर अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के अवसर पर तोप चलाना जिससे बहुत जोरो का शब्द होता है। **तोप के मुँह पर रखकर उड़ाना**=किसी को तोप की नाली के आगे बाँध, बैठा या रखकर उस पर गोला छोड़ना जिससे उसका शरीर टुकड़े-टुकड़े हो जाय। **तोप दम करना**=तोप के मुँह पर रखकर उड़ाना।

पद—तोप का ईंधन या चारा=युद्ध-क्षेत्र मे वे सैनिक जो जान-बूझकर इसलिए आगे किए जाते है कि शत्रुओ की तोपो के गोलो के शिकार बने। (व्यग्य)

२ आतिशबाजो का लोहे का वह बड़ा नल जिसमे रखकर वे बहुत जोर की आवाज करनेवाले गोले छोड़ते है। पाली।

तोपखाना—पु० [अ० तोप+फा० खाना] १. वह स्थान जहाँ तोपे, गोला, बारूद आदि रहता हो। २ कई तोपो का कोई स्वतन्त्र वर्ग या समूह जो प्राय. एक साथ रहता और एक इकाई के रूप मे काम करता है।

तोपची—पु०[[illegible] तोप+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तोप से गोले

तोपड़ा—पु०[देश०] १. एक प्रकार का कबूतर। २ एक प्रकार की मक्खी।

तोपना—स०[स० √तुप्][भाव० तोपाई]१ किसी चीज के ऊपर कोई दूसरी चीज इस प्रकार रखना कि नीचेवाली चीज बिलकुल ढक जाय।†२. (गड्ढा आदि) भरना। पाटना।

तोपवाना—स० [हिं० तोपना का प्रे०] तोपने का काम दूसरे से कराना।

तोपा—पु०[हिं० तुरपना]१ सूई से होनेवाली उतनी सिलाई जितनी एक बार में एक छेद से दूसरे छेद तक की जाती है। सिलाई में का कोई टाँका।

मुहा०—**तोपा भरना या लगाना**=टाँके लगाते हुए सीना। सीधी सिलाई करना।

तोपाई—स्त्री०[हिं० तोपना] तोपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तोपाना—स०=तोपवाना।

तोपास†—पु०[देश०] झाड़ू देनेवाला। झाड़बरदार।

तोपी†—स्त्री०=टोपी।

तोफगी—स्त्री०=तोहफगी।

तोफा—वि०[अ० तोहफा] बहुत बढ़िया।

पु०=तोहफा।

तोबड़ा—पु०[फा० तोबरा या तुबरा]चमड़े, टाट आदि का वह थैला जिसमे चने भरकर घोड़े के खाने के लिए उसके मुँह पर बाँध देते है।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—बाँधना।—लगाना।

मुहा०—**(किसी के मुँह) तोबड़ा लगाना**=बलपूर्वक किसी को बोलने से रोकना। (बाजारू)

तोबा—स्त्री०[अ० तौब] १. भविष्य मे फिर वैसा काम न करने की प्रतिज्ञा। क्रि० प्र०—करना।—तोड़ना।

मुहा०—**तोबा तिल्ला करना या मचाना**=रोते-चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए यह कहना कि हम पर दया करो, अब हम ऐसा नही करेंगे।

२. किसी बुरे काम से बाज रहने की प्रतिज्ञा। जैसे—ऐसे कामो (या बातो) से तो तोबा ही भली।

मुहा०—**तोबा करके (कोई बात) कहना**=अभिमान छोड़कर या ईश्वर से डरकर (कोई बात) कहना। **(किसी से) तोबा बुलवाना**=किसी को दबाते या परेशान करते हुए इतना अधिक दीन और विवश बनाना कि फिर कभी वह कोई अनुचित काम या विरोध करने का साहस न कर सके। पूर्ण रूप से परास्त करना।

अव्य० ईश्वर न करे कि फिर ऐसा कभी हो। जैसे—तोबा! भला अब मैं कभी उनसे बात करूँगा। (उपेक्षा तथा घृणा सूचक)

तोम—पु०[स० स्तोम] समूह। ढेर।

तोमड़ी—स्त्री०[?] एक प्रकार की आतिशबाजी।

स्त्री०=तूँबड़ी।

तोमर—पु०[स० √ तुम्प्(मारना)+अर, पृषो० सिद्धि]१.भाले की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। २ पुराणानुसार एक प्राचीन देश। ३ उक्त देश का निवासी। ४ राजपूतो की एक जाति।

विशेष—इसी जाति ने ८वी से १२वी शती तक दिल्ली मे शासन किया था। अनगपाल, जयपाल इसी विंश के राजा थे।

५ बारह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत मे एक गुरु और एक लघु होता है।

तोमरिका—स्त्री०[स० तोमर+कन्—टाप्, इत्व] १ गोपी चंदन। २ अरहर।

तोमरी*—स्त्री०[हिं० तुमड़ी] तूँबड़ी।

तोय—पु० [स०√तु+विच्, तो√या (जाना)+क] १. जल। पानी। २ पूर्वाषाढा नक्षत्र।

तोयकाम—पु०[स० तोय√कम् (चाहना)+अण्] एक प्रकार का बेत जो जल के पास होता है। वानीर।

तोय-कुंभ—पु०[प०त०] सेवार।

तोय-कृच्छ्र—पु०[तृ०त०] एक प्रकार का व्रत जिसमे जल के सिवा और कुछ ग्रहण नही किया जाता।

तोयडिंब—पु०[प०त०] ओला। पत्थर। करका।

तोय-डिंभ—पु०[प०त०] ओला।

तोयद—पु०[स० तोय√दा(देना)+क] १ मेघ। बादल। २ नागरमोथा। ३ घी। घृत। ४ वह जो किसी को जल देता हो। ५. उत्तराधिकारी जो किसी का तर्पण करता है।

वि० जल देनेवाला।

तोयदागम—पु० [सं० तोयद-आगम, प०त०] वर्षाऋतु। बरसात।

तोय-धर—पु०[प०त०] १ बादल। मेघ। २ मोथा।

तोय—पु० [ब० स०]=तोयधर।

तोय-धि—पु०[स० तोय√धा(धारण करना)+कि] समुद्र। सागर।

तोयधि-प्रिय—पु०[ब०स०] लौंग।

तोय-निधि—पु०[प०त०] समुद्र। सागर।

तोयनीवी—स्त्री०[ब०स०] पृथ्वी।

तोयपर्णी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] करेला।

तोय-पिप्पली—स्त्री०=जलपिप्पली।

तोय-पुष्पी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] पाटला वृक्ष। पाँडर।

तोय-प्रसादन—पु०[प०त०] निर्मली।

तोय-फला—स्त्री०[ब०स०, टाप्] तरबूज या ककड़ी आदि की बेल।

तोय-मल—पु०[प०त०] समुद्र-फेन।

तोयमुच—पु०[स० तोय√मुच्(छोड़ना)+क्विप्, उप०स०] १ बादल। मेघ। २. मोथा।

तोय-यंत्र—पु०[मध्य०स०]१ पानी के द्वारा समय बताने का यंत्र। जल-घड़ी। २ फुहारा।

तोय-राज—पु०[प०त०] समुद्र। सागर।

तोयराशि—पु०[प०त०] १ बड़ा तालाब। झील। २ समुद्र। सागर।

तोयवल्ली—स्त्री०[मध्य०स०] करेले की बेल।

तोय-वृक्ष—पु०[स०त०] सेवार।

तोय शुक्ति—स्त्री०[मध्य०स०] सीपी।

तोय-शूक—पु०[प०त०]=तोय-वृक्ष।

तोय-सर्पिका—स्त्री०[स०त०] मेढक।

तोय-सूचक—पु०[प०त०] १ ज्योतिष का वह योग जिसमे वर्षा होने की संभावना मानी जाती है। २ मेढक।

तोयाधार—पु०[तोय-आधार, ष०त०] पुष्करिणी। तालाब।

तोयाधिवसिनी—स्त्री०[स० तोय-अधि√वस् (रहना)+णिनि—ङीप्, उप०स०] पाटला वृक्ष।

तोयालय—पु० [तोय-आलय, ष०त०] समुद्र।

तोयालिक—वि०[स० तोय से]१ तोय या जल से सबध रखनेवाला। २ तोय या जल के प्रवाह अथवा शक्ति से चलनेवाला।(हाइड्रॉलिक)

तोयालिकी—स्त्री०[स० तोय से] वह विद्या जिसमे जलाशयो, नदियो, समुद्रो आदि की गहराई और प्रवाह का इस दृष्टि से अध्ययन या विचार किया जाता है कि उनमे जहाज या नावे कब और कैसे चलाई जानी चाहिए। (हाइड्रोग्रैफी)

तोयालेख—पु०[तोय-आलेख, ष०त] वह आलेख या नकशा जिनमे किसी जलाशय की गहराई, प्रवाहो की दिशाएँ आदि अकित होती है। (हाइड्रोग्राफ)

तोयाशय—पु०[तोय-आशय, ष०त०]=तोयाधार।

तोयेश—पु० [तोय-ईश, ष० त०] १. वरुण। २ शतभिषा नक्षत्र। ३ पूर्वाषाढा नक्षत्र।

तोयोत्सर्ग—पु०[तोय-उत्सर्ग, ष०त०] वर्षा।

तोर—पु०[स० तुवर] अरहर।
†वि०=तेरा।
†पु०=तोड।

तोरई—स्त्री०=तोरी।

तोरण—पु०[स० √तुर् (जल्दी करना)+ल्युट्—अन्]१ किसी बडी इमारत या नगर का वह बडा और बाहरी फाटक जिसका ऊपरी भाग मडपाकार हो और प्राय पताकाओ, मालाओ आदि से सजाया जाता हो। २ उक्त फाटक को सजाने के लिए लगाई जानेवाली पताकाएँ, मालाएँ आदि। ३ ऐसी बनावट या वास्तु-रचना जिसका ऊपरी भाग अर्द्ध-गोलाकार और बेल-बूटेदार हो। मेहराब। (आर्च) ४ उक्त फाटक के आकार-प्रकार की कोई अस्थायी रचना जो प्राय शोभा-सजावट आदि के लिए की जाती है। ५ वे मालाएँ आदि जो सजावट के लिए खभो और दीवारो आदि मे बाँधकर लटकाई जाती है। बदनवार।
पु० [स०√तुल (तौलना)+ल्युट्, ल—र] १ ग्रीवा। गला। २ महादेव। शिव।

तोरण-माल—पु०[ब०स०] अवतिकापुरी।

तोरण-स्फटिका—स्त्री०[ब०स०] दुर्योधन की वह सभा जो उसने पाडवो की मयदानव वाली सभा देखकर उसके जोड की बनवाई थी।

तोरन*—पु०=तोरण।

तोरना†—स०=तोडना।

तोरश्रवा—पु०[स०] अगिरा ऋषि का एक नाम।

तोरा—पु०[तु० तोरह]१ भेट रूप मे देने या स्वागत-सत्कार के लिए रखा जानेवाला वह बडा थाल जिसमे स्वादिष्ठ पकवान, मास, मिठाइयाँ आदि रखी जाती है। २ विवाह के अवसर पर वर-पक्ष को उक्त प्रकार के थाल भेट करने या भेजने की रसम। (मुसल०)
†सर्व० दे० 'तेरा'।
†पु०=तोडा।
†पु०=तुर्रा (कलगी)।

तोराई*—अ०[अव्य० त्वरा।] १ वेगपूर्वक। तेजी मे। २ जल्दी। शीघ्र।

तोराना*—स०=तुडाना।

तोरावान्†—वि०[स० त्वरावत्] [स्त्री० तोरावली] वेगवान्। तेज।

तोरिया—स्त्री०[स० तूरी] गोटा-किनारी बुननेवालो का वह छोटा बेलन जिस पर वे बुना हुआ गोटा-आदि लपेटते चलते है।
स्त्री०[देश०]१. वह गाय या भैस जिसका बच्चा मर गया हो और जिसका दूध दूहने के लिए कोई युक्ति करनी पडती हो। २ एक प्रकार की सरसो।

तोरी—स्त्री०[स० तूर] १ एक प्रकार की बेल जिसकी फलियो की तर-कारी बनती है। २ उक्त बेल की फली जो प्राय ननुए की तरह की होती और तरकारी बनाने के काम आती है। ३ काली सरसो।

तोल—पु०[स०√तुल्(तौलना)+घञ्] बारह माशे की तोल। तोला।
स्त्री०[हि०]=तौल।
†वि०=तुल्य (समान)। उदा०—मदने पाओल आपन तोल।—विद्यापति।
†पु०[देश०] नाव का डाँडा। (लश०)

तोलक—पु०[स० तोल+कन्] तोला (तौल)। बारह माशे का वजन।

तोलन—पु०[स०√तुल् (तौलना)+ल्युट्—अन]१ तौलने की क्रिया या भाव। २ ऊपर उठाने की क्रिया।
स्त्री० चाँड। थूनी।

तोलना—स०=तौलना।

तोलवाना—स०=तौलवाना।

तोला—पु०[स० तोलक]१. एक तौल जो बारह माशे या छानवे रत्ती की होती है। २ उक्त तौल का बाट।

तोलाना—स०=तौलाना।

तोलिया—पु० दे० 'तौलिया'।

तोल्य—वि०[स०√तुल्(तौलना)+ण्यत्] तौले जाने योग्य।
पु० तौलने की क्रिया या भाव।

तोश—वि०[स०√तुश्(वध करना)+घञ्] हिंसा करनेवाला। हिंसक।
पु०१ हिंसा। २ हिंसक पशु या प्राणी।

तोशक—स्त्री०[तु०] दोहरी चादर या खोल मे रूई, नारियल की जटा आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।

तोशक खाना—पु० दे०'तोशाखाना'।

तोशदान—पु०[फा० तोश दान]१ वह झोला या थैली जिसमे मार्ग के लिए यात्री विशेषत सैनिक अपना जलपान आदि या दूसरी आवश्यक चीजे रखते हैं। २ चमडे की वह पेटी जिसमे सैनिक कारतूस या गोलियाँ रखते है।

तोशल—पु०=तोषल।

तोशा—पुं० [फा० तोश]१. वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रख लेता है। पाथेय। २ खाने-पीने का सामान। ३ बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

तोशाखाना—पु०[तु० तोशक+फा० खाना]वह बडा कमरा या स्थान जहाँ राजाओ और अमीरो के पहनने के बढिया कपडे, गहने आदि रहते हो। वस्त्रो और आभूषणो आदि का भण्डार।

तोष—पु०[स०√तुष्(सन्तोष करना)+घञ्]१ अघाने या मन भरने

की क्रिया या भाव। तुष्टि। तृप्ति। २ असंतोष, कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार हो जाने पर मन में होनेवाली तृप्ति। (संतोष) ३ सुख। प्रसन्नता। ४ पुराणानुसार स्वायंभुव मनु के एक देवता। ५ श्रीकृष्ण के एक सखा।

अव्य० अल्प। कुछ। थोड़ा।

तोषक—वि०[सं०√तुष्+णिच्+ण्वुल्—अक] तोष देने या तृप्त करनेवाला। सन्तुष्ट करनेवाला

तोषण—पु०[सं०√तुष्+णिच्+ल्युट्—अन] १. किसी को तुष्ट या तृप्त करने की क्रिया या भाव। २ [√तुष्+ल्युट्] तृप्ति।

वि०[√तुष्+णिच्+ल्यु—अन] तुष्ट या प्रसन्न करनेवाला। (यौ० पदों के अन्त में)

तोषना*—स्त्री०=तोष (तुष्टि)।

तोषणिक—पु० [सं० तोषण+ठन्—इक] वह धन जो किसी को तुष्ट करने के उद्देश्य से दिया जाय।

तोषना*—स०[सं० तोष] तृप्त या संतुष्ट करना। तृप्त करना। उदा० —विप्र, पितर, सुर, दान, मान, पूजा सों तोषे।—रत्नाकर।

अ० तृप्त या सन्तुष्ट होना।

तोष-पत्र—पु० [मध्य०स०] वह पत्र जिसमें राज्य की ओर से जागीर मिलने का उल्लेख रहता है। बख्शिशनामा।

तोषल—पु०[सं०]१. कंस का एक असुर मल्ल जिसे धनुर्यज्ञ में श्रीकृष्ण ने मार डाला था। २. मूसल।

तोषार*—पु०१ =तुषार'। २ =तुखार। (देश०)

तोषित—वि०[सं०√तुष्+णिच्+क्त] जिसका तोष हो गया हो, अथवा जिसे तृप्त किया गया हो। तुष्ट। तृप्त।

तोषी (षिन्)—वि०[सं०√तुष्+णिनि] समस्त पदों के अन्त में; (क)संतुष्ट होनेवाला। थोड़ी-सी चीज या बात से तुष्टहोनेवाला। जैसे—अल्प-तोषी। (ख) [√तुष्+णिच्+णिनि] तुष्ट या संतुष्ट करनेवाला। जैसे—सर्व-तोषी=सबको तुष्ट करनेवाला।

तोस*—पु०=तोष।

तोसक†—स्त्री० =तोशक।

पु०=तोषक।

तोसल*—पु०=तोषल।

तोसा*—पुं०=तोशा।

तोसाखाना—पु०=तोशाखाना।

तोसागार*—पु० दे०'तोशाखाना'।

तोहफगी—स्त्री० [अ० तोहफा+फा० गी (प्रत्य०)] तोहफा अर्थात् बढ़िया और विलक्षण होने की अवस्था या भाव।

तोहफा—पु०[अ० तुहफ] १ अद्भुत और सुन्दर पदार्थ। बढ़िया और विलक्षण चीज। २ उपायन। बैना। सौगात। ३. उपहार। भेंट।

वि० अच्छा। उत्तम। बढ़िया।

तोहमत—स्त्री०[अ०] किसी पर लगाया जानेवाला झूठा और व्यर्थ का अभियोग या आरोप। झूठा दोषारोपण।

क्रि० प्र०—जोड़ना।—धरना।—लगाना।

तोहमती—वि०[अ० तोहमत+ई (प्रत्य०)]दूसरों पर झूठा अभियोग या तोहमत लगानेवाला। मिथ्या कलंक लगानेवाला।

तोहरा†—सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तोहार—सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तोहिं†—सर्व०[हिं० तू या तैं] मुझको। तुझे।

तौंकना†—स्त्री०=तौंस।

तौंकना—अ०=तौंसना।

तौंस†—स्त्री०[सं० ताप, हिं० ताव+सं० उष्ण; हिं० ऊमस, ओस] वह प्यास जो बहुत अधिक गरमी या धूप लगने से होती है और जल्दी शान्त नहीं होती ।

तौंसना—अ०[हिं० तौंस] गरमी से झुलस जाना। गरमी के कारण संतप्त होना।

स० १. गरमी पहुँचाकर विकल या संतप्त करना। २. झुलसाना। उदा०—तात ताल तौंसियत झौंसियत झारहिं।—तुलसी।

तौंसा—पु०[सं० ताप; हिं० ताव+सं० ऊष्म, हिं० ऊमस, ओस] बहुत अधिक ताप। कड़ी गरमी।

तौ—अ०[हिं० हुतो का संक्षि०] था।

क्रि० वि०=तो।

†अव्य० हाँ, ठीक है। ऐसा ही है।

तौक—पु०[अ०]१ हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक प्रकार का गहना। २. अपराधियों, पागलों आदि के गले में पहनाया जानेवाला लोहे का वह भारी घेरा या मंडल जिसके कारण वे इधर-उधर जा या भाग नहीं सकते। ३ पक्षियों आदि के गले में होनेवाला प्राकृतिक गोलाकार चिह्न या मंडल। ४ कोई गोल घेरा या पदार्थ। ५. गले में लटकाई जानेवाली चपरास या उसका परतला।

तौकीर—स्त्री०[अ०]आदर। सम्मान। प्रतिष्ठा।

तौक्षिक—पुं०[सं०] धनु राशि।

तौचा—पु०[देश०] एक प्रकार का गहना जो देहाती स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।

तौजा—पु० [अ० तौजीह] १. वह धन जो खेतिहरों को विवाहादि में खर्च करने के लिए पेशगी दिया जाता था। विवाही। २ उधार दिया हुआ धन।

वि० यों ही कुछ समय के लिए उधार दिया या लिया हुआ।

तौतातिक—पु०[सं० तुतात+ठञ्—इक] कुमारिल भट्ट कृत मीमांसा शास्त्र।

तौतातित—पु०[सं०] १ जैनियों का एक भेद या वर्ग। २ कुमारिल भट्ट का एक नाम।

तौतिक—पु०[सं० मुक्ता, नि० सिद्धि]१ मुक्ता। मोती। २ शुक्ति। सीप।

तौन—स्त्री०[देश०] वह रस्सी जिससे गौ दुहने के समय उसका बछवा उसके अगले पैर से बाँध दिया जाता है।

†सर्व०=तवन (वह)।

†अव्य०=सो।

तौनी—स्त्री०[हिं० तवा का स्त्री० अल्पा०] रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।

वि०, स्त्री०=तौन।

तौफीक—पु० [अ०] १. शक्ति। सामर्थ्य। २. हिम्मत। हौसला। ३. ईश्वर के प्रति होनेवाली भक्ति और श्रद्धा।
तौबा—स्त्री० =तोबा।
तौर—पु० [स० √तुर्व् (हिंसा करना)+कञ् बा०] एक प्रकार का यज्ञ।
पु० [अ०] १ ढग। तरीका।
पद—तौर-तरीका। (देखें)
२ चाल-चलन। चाल-ढाल।
मुहा०—तौर बे-तौर होना=रग-ढग खराब होना। लक्षण बुरे जान पडना।
३ अवस्था। दशा। हालत।
†पु० [देश०] मथानी मथने की रस्सी। नेत्री।
तौर-तरीका—पु० [अ०] १. चाल-ढाल। २. रग-ढंग।
तौरश्रवस—पु० [स० तोरश्रवस्+अण्] एक प्रकार का साम (गान)।
तौरात—पुं० दे० 'तौरेत'।
तौरायणिक—पु० [सं० तूरायण+ठञ्—इक] वह जो तूरायण यज्ञ करता हो।
तौरि*—स्त्री० [हिं० तांवरि] सिर मे आनेवाली घुमरी या चक्कर।
तौरीत—पु० दे० 'तौरेत'।
तौरेत—पु० [इब्रा०] यहूदियों का प्रधान धर्म-ग्रथ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था। इसमे सृष्टि और आदम की उत्पत्ति आदि का उल्लेख है।
तौर्य—पु० [स० तूर्य+अण्] १ ढोल, मँजीरा आदि वाजे। २ उक्त वाजे वजाने की क्रिया।
तौर्य-त्रिक—पु० [मध्य०स०] नाचना, गाना और वाजे वजाना आदि काम।
तौल—पुं० [स० तुला+अण्] १. तराजू। २ तुला राशि।
स्त्री० [हिं० तौलना] १. कोई चीज तौलने की क्रिया या भाव। २. किसी पदार्थ का वह भार या मान जो उसे तौलने पर जाना जाता है। वजन। (वेट) ३ वटखरों के अलग-अलग प्रकार के मान के विचार से तौलने की नियत प्रणाली या मानक। जैसे—कच्ची या पक्की तौल, छोटी या वडी तौल। ४. किसी प्रकार की जाच की कसौटी या मानक। सर्व-मान्य परिमाण। ५ गम्भीरता, परिमाणु, महत्त्व आदि का अनुमान। कल्पना या थाह। उदा०—वालपना की प्रीत रमइया जी कदे नहीं आयो थारो तोल (तौल)।—मीराँ।
तौलना—स० [स० तोलना] १. काँटे, तराजू, वटखरे आदि की सहायता से यह पता लगाना कि अमुक वस्तु का गुरुत्व या भार कितना है। जोखनी। २ कोई चीज हाथ मे लेकर या हाथ से उठाकर यह अनुमान करना कि यह तौल, भार या वजन मे कितनी होगी।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।
३ अस्त्र-शस्त्र आदि चलाने के समय, उसे हाथ मे लेकर ऐसी मुद्रा या स्थिति मे लाना कि वह ठीक तरह से अपने लक्ष्य पर पहुँचकर पूरा काम कर दिखलावे। साधना। जैसे—डडा या तलवार तौलना। ४ दो या अधिक वस्तुओ के गुण, मान आदि की परस्पर तुलना करके उनके महत्त्व आदि का विचार करना। तारतम्य जानना। मिलान करना। ५ किसी वात का ठीक महत्त्व, मान, स्वरूप आदि जानने के लिए अथवा किसी व्यक्ति के मन की थाह लेने के लिए उसकी सव वातो, व्यवहारो आदि को अच्छी तरह देखते हुए उसके सम्बन्ध मे मन मे अनुभव या कल्पना करना। जैसे—किसी का मन (या किसी को) तौलना (या तौलकर देखना)। ६ गाडी के पहिये के छेद मे इसलिए तेल डालना कि वह विना रगड खाये सहज मे घूमता रहे। ओंगना।
तौलनिक—वि० =तुलनात्मक।
तौलवाई—स्त्री० =तौलाई।
तौलवाना—स० [हिं० तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को तौलने मे प्रवृत्त करना। तौलाना।
तौला—पु० [हिं० तौलना] १ वह जो चीजें तौलने का काम या पेशा करता हो। २ दूध नापने का मिट्टी का वरतन।
पु० [फा० तवल] [स्त्री० अल्पा० तौली] १ एक प्रकार का वड़ा कटोरा। २. मिट्टी का घडा।
पु० [?] महुए की शराव।
तौलाई—स्त्री० [हिं० तौल+आई (प्रत्य०)] १. तौलने की क्रिया या भाव। २. तौलने का पारिश्रमिक या मजदूरी।
तौलाना—स० = तौलवाना।
तौलिक, तौलिकिक—पु० [स० तूली+ठक्—इक, तूलिका+ठक—इक] चित्रकार।
तौलिया—पु० [अं० टावेल] एक प्रकार का मोटा अँगोछा जिससे स्नान आदि करने के उपरात शरीर पोछते है।
तौली—स्त्री० [अ० तवल] १ एक प्रकार की मिट्टी की छोटी प्याली। २ मिट्टी का घडा जिसमे अनाज, गुड आदि रखते हैं।
तौलैया—पु० [हिं० तौलना+ऐया (प्रत्य०)] अनाज तौलने का काम करनेवाला व्यक्ति। वया।
तौल्य—पु० [स० तुला+ष्यञ्] १ वजन। तौल। २ सादृश्य। समानता।
तौषार—पु० [स० तुषार+अण्] तुषार का जल। पाले का पानी।
तौंस†—स्त्री० = तौस।
तौसना—अ०, स०=तौंसना।
तौहीद—स्त्री० [अ०] यह मानना कि ईश्वर एक ही है। एकेश्वरवाद।
तौहीन—स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। वेइज्जती।
तौहीनी—स्त्री० = तौहीन।
त्यक्त—भू० कृ० [स० √त्यज् (त्यागना)+क्त] [स्त्री० त्यक्ता] १ (पदार्थ) जिसका त्याग कर दिया गया हो। छोडा या त्यागा हुआ। २ यौ० पदो के आरभ मे, जिसने छोड या त्याग दिया हो। जैसे—त्यक्त प्राण = मृत, त्यक्त-लज्ज=निर्लज्ज। ३ यौ० पदो के आरभ मे, जो किसी के द्वारा छोड या त्याग दिया गया हो। जैसे—त्यक्त श्री=जिसे श्री या लक्ष्मी ने त्याग दिया हो। अर्थात् अभागा या दरिद्र।
त्यक्तव्य—वि० [स० √त्यज्+तव्यत्] जो छोडे जाने के योग्य हो। जिसे त्यागना उचित हो।
त्यक्ता (क्तृ)—वि० [स० √त्यज्+तृच्] त्यागने वाला। जिसने त्याग किया हो।
त्यक्ताग्नि—वि० [स० त्यक्त-अग्नि, ब० स०] गृहाग्नि की उपेक्षा करने-वाला। (ब्राह्मण)

त्यक्तात्मा (मन)—वि० [स० त्यक्त-आत्मन्, ब० स०] हताश। निराश।

त्यग्नाथि—पु० [स०] एक प्रकार का साँप।

त्यजन—पु० [स० त्यज्+ल्युट्—अन] [वि० त्यजनीय, त्याज्य; भू० कृ० त्यक्त] छोड़ने की क्रिया या भाव। त्याग।

त्यजित—भू० कृ० दे० 'त्यक्त'।

त्यजनीय—वि० [स०√त्यज्+अनीयर] जो त्यागे जाने के योग्य हो। त्याज्य।

त्यज्यमान—वि० [सं०√त्यज्+शानच्, यक्] जिसका त्याग कर दिया गया हो। जो छोड़ दिया गया हो।

त्याँह—सर्व० [स० तेषाम्] उनका या उनके। उदा०—अरि देखे आराण में, तृण मुख मांझल त्याँह।—बाँकीदास।

त्याग—पु० [स०√त्यज् (त्यागना)+घञ्] १ किसी चीज पर से अपना अधिकार या स्वत्व हटा लेने अथवा उसे सदा के लिए अपने पास से अलग करने की क्रिया। पूरी तरह से छोड़ देना। उत्सर्ग। जैसे—घर-गृहस्थी, सपत्ति या सासारिक सबधों का त्याग।

पद—त्याग-पत्र। (देखें)

२ किसी काम, चीज या बात से लगाव या सम्बन्ध हटा लेने अथवा उसे छोड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) मोह-माया का त्याग। (ख) दुर्व्यसनों का त्याग। ३. मन में विरक्ति या वैराग्य उत्पन्न होने पर सासारिक व्यवहार, सम्बन्ध आदि छोड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—सन्यास ग्रहण करने से पहले मन में त्याग की भावना उत्पन्न होना आवश्यक है। ४. दूसरों के उपकार या हित के विचार से स्वय कष्ट उठाने या अपना सुख-सुभीता छोड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—लोकमान्य तिलक (या अरविन्द घोष) का त्याग अनुकरणीय है। ५ इस प्रकार सम्बन्ध तोड़ना कि अपने ऊपर कोई उत्तरदायित्व न रह जाय। जैसे—पत्नी या पुत्र को त्याग करके उनसे अलग होना। ६. उदारता पूर्वक किया जानेवाला उत्सर्ग या दान। ७. कन्या-दान। (डिं०)

त्यागना—स० [स० त्याग] त्याग करना। छोड़ना। तजना।

सयो० क्रि०—देना।

त्याग-पत्र—पु० [स० मध्य० स०] १ वह पत्र जिसमे यह लिखा हुआ हो कि हमने अमुक काम, चीज या बात सदा के लिए छोड़ दी है। २. वह पत्र जो कोई कार्यकर्त्ता या सेवक अपने अधिकारी या स्वामी की नौकरी या पद छोड़ने के समय लिखकर देता है और जिसमे यह लिखा रहता है कि अब मैं अपने पद पर नहीं रहूँगा या उसका काम नहीं करूँगा। इस्तीफा। (रेजिग्नेशन)

त्यागवान् (वत्)—वि० [स० त्याग+मतुप्] जिसने त्याग किया हो अथवा जिसमें त्याग करने की शक्ति हो। त्यागी।

त्यागि (गिन्)—वि० [स०√त्यज्+घिनुण्] १ त्यागने या छोड़नेवाला। २ ससार की झंझटों से विरक्त होकर वैभव या सुख-भोग के सब साधनों या सामग्री का त्याग करनेवाला। 'सग्रही' का विपर्याय। ३ किसी अच्छे काम के लिए अपने स्वार्थ या हित का त्याग करनेवाला।

त्याजना*—स०=त्यागना।

त्याजित—भू० कृ० [सं० √त्यज्+णिच्+क्त] १ जिससे परित्याग कराया गया हो। २ जिसकी उपेक्षा कराई गयी हो। ३ दे० 'त्यक्त'।

त्याज्य—वि० [सं०√त्यज्+ण्यत्] जिसे त्याग देना उचित हो। छोड़े या त्यागे जाने के योग्य।

त्यार†—वि० दे० 'तैयार'।

त्यारन*—पु०, वि० = तारण।

त्यारा†—वि० [स्त्री० त्यारी] =तेरा या तुम्हारा।

त्यूँ†—क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

त्यूरस—पु० दे० 'त्योरस'।

त्यों—क्रि० वि० [स० तत्-एवम्] १ उस प्रकार। उस तरह। २. उसी समय। उसी वक्त।

†अव्य० [स० तनु] ओर। तरफ। उदा०—(क) हरि त्यों टुक डीठि पसारत ही . . —केशव। (ख) सब ही त्यों (त्यों) समुहाति छिनु, चलति सबनि दै पीठि।—बिहारी।

त्योनार—पु० [हिं० तेवर ?] १ ढग। तर्ज। २ तेवर। (देखें)

त्योर*—पु० दे० 'त्योरी'।

त्योरस—पु० [हिं० ति (तीन)+बरस] १ गत वर्ष से पहले का अर्थात् वर्त्तमान वर्ष के विचार से बीता हुआ तीसरा वर्ष। २ आनेवाले वर्ष के बाद का अर्थात् वर्त्तमान वर्ष के विचार से तीसरा वर्ष।

त्योरी—स्त्री० [हिं० त्रिकुटी; स० त्रिकूट (चक्र)] किसी विशिष्ट उद्देश्य से देखनेवाली दृष्टि। निगाह। तेवर।

मुहा०—त्योरी चढ़ना=दृष्टि का ऐसी अवस्था मे हो जाना जिससे कुछ असन्तोष या रोष प्रकट हो। आँखें चढना। त्योरी चढ़ाना या बदलना=दृष्टि या आकृति से क्रोध के चिह्न प्रकट करना। भौंहें चढाना। त्योरी में बल पड़ना = त्योरी चढना।

त्योरुस—पु० = त्योरस।

त्योहार—पु० [स० तिथि+वार] १ वह दिन जिसमे कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाता हो। पर्व दिन। (फेस्टिवल) जैसे—जन्माष्टमी, दशहरा, दीवाली, होली आदि हिन्दुओं के प्रसिद्ध त्योहार है। २ वह दिन या समय जिसमें बहुत से लोग मिलकर उत्सव मनाते हों।

क्रि० प्र०—मनाना।

त्योहारी—स्त्री० [हिं० त्योहार+ई (प्रत्य०)] वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष्य में छोटों, लड़कों या नौकरों आदि को दिया जाता है।

त्यौं—क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

त्यौनार—पु० = त्योनार।

त्यौर—पु० १ दे० 'त्योरी'। २ दे० 'त्योनार'।

त्यौराना—अ० [हिं० तॉवर] सिर मे चक्कर आना। सिर घूमना।

त्यौरी—स्त्री० = त्योरी।

त्यौरुस—पुं० दे० 'त्योरस'।

त्यौहार—पु० दे० 'त्योहार'।

त्यौहारी—स्त्री० = त्योहारी।

त्र—त् और र के योग से बना हुआ एक सयुक्त वर्ण जिसकी गिनती स्वतत्र वर्ण के रूप मे होने लगी है। यह कुछ शब्दों के अत मे प्रत्यय के रूप मे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) त्राण या रक्षा करनेवाला। जैसे—अगुलित्र, आतपत्र। (ख) किसी स्थान पर आया या लाया हुआ, जैसे—अपरत्र, एकत्र, पूर्वत्र, सर्वत्र आदि। और (ग) उपकरण

या यंत्र के रूप मे कोई काम करनेवाला। जैसे—चूपित्र, प्रेपित्र, वाष्पित्र आदि।

त्रंग—पु० [स०√त्रङ्ग् (जाना)+अच्] राजा हरिश्चंद्र के राज्य की राजधानी।

त्रंबाल†—पु० [?] नगाडा। (राज०) उदा०—गुडै घणीचा गाजणा, तो माथे त्रबाल।—कविराजा सूर्यमल।

त्रपा—स्त्री० [स०√त्रप् (लज्जा करना)+अङ्-टाप्] [वि० त्रपमान्] १ कीर्ति। यश। २ लज्जा। शरम। ३ छिनाल स्त्री। पुश्चली।
वि० १ कीर्तिमान्। २. लज्जित। शरमिन्दा।

त्रपा-रंडा—स्त्री० [स० त०] १ छिनाल स्त्री। २ रडी। वेश्या। ३ कीर्ति। यश। ४ कुल। वश।

त्रपित—भू० कृ० [स० √त्रप्+क्त] लज्जित।

त्रपु—पु० [स०√त्रप्+उन्] १ सीसा। २ रागा।

त्रपु-कर्कटी—स्त्री० [मध्य० स० ?] १ खीरा। २ ककडी।

त्रपुटी—स्त्री० [स०√त्रप्+उटक् (वा०)–ङीप्] छोटी इलायची।

त्रपुरी—स्त्री० = त्रपुटी।

त्रपुल—पु० [स०√त्रप्+उलच् (वा०)] राँगा।

त्रपुष—पु० [स०√त्रप्+उष (वा०)] १ राँगा। २ खीरा, ककडी आदि।

त्रपुषी—स्त्री० [स० त्रपुष+ङीप्] १ ककडी। २ खीरा।

त्रपुस—पु० [स०√त्रप्+उस (वा०)] १ राँगा। २. खीरा, ककडी आदि।

त्रपुसी—स्त्री० [स० त्रपुस+ङीप्] १ ककड़ी। २ खीरा। ३. बडा इन्द्रायन।

त्रप्सा—स्त्री० [सं०√त्रप्+सन्+अङ्-टाप्] जमा हुआ कफ या श्लेष्मा।

त्रप्स्य—पु० [स०√त्रप्+सन्+ण्यत्] मठा। लस्सी।

त्रय—वि० [स० त्रि+अयच्] १ तीन अगो, अशो, इकाइयो या रूपो-वाला। २. तीसरा। ३ तीनो। जैसे—ताप-त्रय।

त्रय-ताप—पु० [मध्य० स०] आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्या-त्मिक ये तीनो प्रकार के ताप।

त्रयारुण—पु० [सं०] पद्रहवे द्वापर के एक व्यास का नाम।

त्रयारुणि—पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जो भागवत के अनुसार लोमहर्षण ऋषि के शिष्य थे।

त्रयी—स्त्री० [स०त्रय+ङीप्] १ तीन विभिन्न इकाइयो का योग, सग्रह या समूह। (ट्रिपलेट) जैसे—वेदत्रयी (अथर्ववेद के अतिरिक्त तीनो वेद), लोकत्रयी (स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक) देवत्रयी (ब्रह्मा, विष्णु, महेश)। २. इस प्रकार ली जाने वाली तीनो वस्तुएँ। ३ वह विवाहिता स्त्री जिसका पति और बच्चे जीवित हो। ४ दुर्गा। ५ सोमराजी लता।

त्रयी-तनु—पु० [ब० स०] १. सूर्य। २ शिव।

त्रयी-धर्म—पु० [मध्य० स०] ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद तीनो मे बतलाया हुआ या इन तीनो के अनुसार विहित धर्म।

त्रयीमय—पु० [स० त्रयी+मयट्] १ सूर्य। २ परमेश्वर।

त्रयी-मुख—पु० [ब० स०] ब्राह्मण।

त्रयो-दश (न्)—वि० [स० त्रि-दशन्, द्व० स०] तेरह।

त्रयोदशी—स्त्री० [स० त्रयोदशन्+डट्–ङीप्] चाद्र मास के किसी पक्ष की तेरहवी तिथि। तेरस।

त्रष्टा—पु० [स० तष्टा] बढई।
पु० [फा० तश्त] ताँबे की छिछली और छोटी तश्तरी।

त्रस—वि० [स०√त्रस् (भय करना)+क] चलनेवाला। चलनशील।
पु० १ वन। जगल। २. चलने-फिरनेवाले समस्त जीव। जैसे—पशु, मनुष्य आदि। ३ धूल का वह कण जो प्रकाश-किरणों मे उडता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है।

त्रसन—पु० [स०√त्रस्+ल्युट्-अन] १ किसी के मन मे त्रास या भय उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २ डर। भय। ३ भयभीत होने की अवस्था या भाव। ४ चिंता। फिक्र। ५ वह आभूषण जो पहनने पर झूलता या हिलता-डुलता रहे।

त्रसना*—अ० [स० त्रसन] १ भयभीत होना। २ त्रस्त होना।
स० चिंतित या भयभीत करना।

त्रसर—पु० [स०√त्रस्+अरन् (वा०)] जुलाहो की ढरकी। तसर।

त्रस-रेणु—पु० [स० उपमि० स०] धूल का वह कण जो प्रकाश-रश्मियो मे उडता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है।
स्त्री० सूर्य की एक पत्नी।

त्रसाना—स० [हिं० त्रासना का प्रे० रूप] किसी को किसी दूसरे के द्वारा-त्रस्त या भयभीत कराना।

त्रसित—भू० कृ० [स० त्रस्त] १ डरा हुआ। २ पीडित।

त्रसुर—वि० [स०√त्रस्+उरच्] १ जो भय मे काँप रहा हो। २ डरपोक। भीरु।

त्रस्त—भू०कृ० [स०√त्रस्+क्त] १ बहुत अधिक डरा हुआ। भयभीत। २ पीडित।

त्रस्नु—वि० [स०√त्रस्+क्नु] जो भय से काँप रहा हो। बहुत अधिक डरा हुआ।

त्रहक्कना†—अ० दे० 'बजना'। (राज०)

त्रागा†—पु० = तागा। (राज०) उदा०—तितरै हेक दी पवित्र गलित्रागो। —प्रिथीराज।

त्राटक—पु० दे० 'त्राटिका'।

त्राटिका—स्त्री० [स०] योग की एक क्रिया जिसमे दृष्टि तीव्र या प्रखर करने के लिए कुछ समय तक किसी सूक्ष्म बिंदु को एकटक देखना पडता है।

त्राण—पु० [स०√त्रै (रक्षा करना)+ल्युट्-अन] १ किसी को विपत्ति या सकट से छुटकारा दिलाने तथा उससे सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव। २ शरण। ३ सहायता। ४ रक्षा का साधन। बचाने वाली चीज (यौ० के अन्त मे)। जैसे—पादत्राण, शिरस्त्राण। ५. कवच। बक्तर। ६. त्रायमाणा लता।

त्राणक—पु० [स० त्रायक] त्राण करने या बचानेवाला। रक्षक।

त्राणा—स्त्री० [स० त्राण+टाप्] बनफशे की जाति की एक लता।

त्रात—भू० कृ० [स०√त्रै (रक्षा करना)+क्त] जिसे त्राण दिया गया हो। विपत्ति या सकट से बचाया हुआ।

त्रातव्य—वि० [स०√त्रै+तव्यत्] विपत्ति, सकट आदि मे जिसकी रक्षा करना उचित या वाछनीय हो। त्राण पाने का अधिकारी या पात्र।

त्राता (तृ)—वि० [सं०√त्रै (रक्षा करना)+तृच्] त्राण या रक्षा करनेवाला।

पुं० वह जो किसी का त्राण या रक्षा करे।

त्रातार—पुं० = त्राता।

त्रापुष—वि० [सं० त्रपुष+अण्] १. त्रपुष-सम्बन्धी। २. त्रपुष अर्थात् टीन, राँगे आदि का बना हुआ।

त्रायक—वि० [सं०√त्रै (रक्षा करना)+ण्वुल्-अक] त्राण या रक्षा करनेवाला।

त्रायंती—स्त्री० [सं० त्रा√त्रै+क्विप्, त्रा√इ (जाना)+शतृ—ङीप्] त्रायमाण (लता)।

त्रायमाण—वि० [सं०√त्रै +शानच्] त्राता। रक्षक।

पुं० वनफशे की तरह की एक लता।

त्रायमाणा—स्त्री० [सं० त्रायमाण+टाप्] त्रायमाण (लता)।

त्रायमाणिका—स्त्री० [सं० त्रायमाणा+कन्-टाप्, ह्रस्व, इत्व।] =त्रायमाणा।

त्राय-वृंत—पुं० [सं०√त्रै+क, त्राय-वृत, ब० स०] गडीर या मुडिरी नामक साग।

त्रास—स्त्री० [सं०√त्रस् (डरना)+घञ्] १ ऐसा भय जिससे विशेष अनिष्ट, क्षति, हानि आदि की आशका हो। २. कष्ट। तकलीफ। ३. मणि का एक अवगुण या दोष।

त्रासक—वि० [सं०√त्रस्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. त्रास देनेवाला। डरानेवाला। २ दूर करने या हटानेवाला। निवारक।

त्रासन—पुं० [सं०√त्रस्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० त्रासनीय] त्रास देने अर्थात् डराने का कार्य।

वि० =त्रास देने या डरानेवाला। (यौ० के अन्त मे)

त्रासना*—स० [सं० त्रासन] किसी को त्रस्त या भयभीत करना। डराना।

त्रासित—भू० कृ० [सं०√त्रस्+णिच्+क्त] १. जिसे त्रास दिया गया हो। डराया-धमकाया हुआ। २ जिसे कष्ट पहुँचा या पहुँचाया गया हो।

त्रासी (सिन्)—वि० [सं०√त्रस्+णिच्+णिनि] =त्रासक।

त्राहि—अव्य० [सं०√त्रै+लोट्—हि] इस घोर कष्ट या सकट से त्राण दो। रक्षा करो! बचाओ!

त्रिंश—वि० [सं० त्रिंशत्+डट्] तीसवाँ।

त्रिंशत्—वि० [सं० त्रि-दश, नि० सिद्धि] तीस।

त्रिंशतपत्र—पुं० [सं० ब० स०] कोई का फूल। कुमुदनी।

त्रिंशांश—पुं० [सं० त्रिंश-अंश, कर्म० स०] १ किसी पदार्थ का तीसवाँ भाग। २ फलित ज्योतिष मे, राशि का तीसवाँ अंश या भाग जिसका उपयोग जन्मपत्री बनाने और शुभाशुभ फल निकालने मे होता है।

त्रि—वि० [सं०√तृ (तैरना)+ड्रि] तीन अगो, अवयवो, इकाइयो, खडो या रूपोवाला (यौ० के आरभ मे)। जैसे—त्रिदेव, त्रिदोष, त्रिवर्ग आदि।

त्रि-कंट—पुं० [सं० ब० स०] =त्रिकटक।

त्रि-कंटक—पुं० [सं० ब० स०, कप्] १. त्रिशूल। २. गोखरू। ३ तिधारा। थूहर। ४. जवासा। ५ टेंगरा नाम की मछली।

त्रिक—वि० [सं० त्रि+कन्] १. तीन अगो, इकाइयो या रूपोवाला। २. तीसरी बार होनेवाला। ३ तीन प्रतिशत।

पुं० १ एक ही तरह की तीन चीजो का वर्ग या समूह। २ रीढ के नीचे का वह भाग जो कूल्हे की हड्डियों के पास पड़ता है। ३. कटि। कमर। ४ कधो के बीच का भाग। ५. त्रिकटु। ६. त्रिफला। ७ त्रिमद। । ८ त्रिमुहानी। ९ मनु के अनुसार ३ प्रतिशत होनेवाला लाभ या मिलनेवाला व्याज।

त्रि-ककुद्—वि० [सं० ब० स०] जिसके तीन शृग हों।

पुं० १. त्रिकूट पर्वत। २ जगली सूअर। वाराह। ३. विष्णु जिन्होंने एक बार वाराह का अवतार लिया था। ४ दस दिनों मे पूरा होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

त्रि-ककुभ्—पुं० [सं० त्रि-क (जल) √ स्कुम्भ् (रोकना)+क्विप्] १ इद्र। २ वज्र।

त्रिकट—पुं० [सं० त्रि√कट् (ढकना)+अच्, उप० स०] त्रिकंट। (दे०)

त्रि-कटु—पुं० [सं० द्विगु स०] १. तीन कडवी वस्तुओं का वर्ग। २ ये तीन कडवी वस्तुएँ—सोंठ, मिर्च और पीपल। (वैद्यक)

त्रिकटुक—पुं० [सं० त्रिकटु+क (स्वार्थे)] त्रिकटु। (दे०)

त्रिक-त्रय—पुं० [सं० प० त०] त्रिफला, त्रिकुटा और त्रिमेद अर्थात् हड, बहेडा और आँवला, सोंठ, मिर्च और पीपल तथा मोथा, चीता और वायविडग इन सब का समूह।

त्रि-कर्मा (र्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] ब्राह्मण, जो वेदों का अध्ययन, यज्ञ और दान ये तीन मुख्य कर्म करते है।

त्रि-कल—वि० [सं० ब० स०] तीन कलाओ या मात्राओंवाला।

पुं० १. तीन मात्राओ का शब्द। प्लुत। २. दोहे का एक भेद जिसमे ९ गुरु और ३० लघु होते हैं।

त्रिकलिंग—पुं० = तैलग।

त्रिक-शूल—पुं० [सं० प० त०] एक तरह का वात रोग जिसमे कमर, पीठ और रीढ तीनो मे पीडा होती है।

त्रि-कांड—वि० [सं० ब० स०] जिसमे तीन काड हो।

पुं० १. अमरकोश, जिसमे तीन काड है। २. निरुक्त शास्त्र का एक नाम। ३. बाण तीर।

त्रिकांडी—वि० = त्रिकाडीय।

त्रिकांडीय—वि० [सं० त्रि-कांड, द्विगु स०, +छ—ईय] जिसमे तीन कांड हो। तीन कांडोवाला।

पुं० वेद, जिनमें कर्म, उपासना और ज्ञान तीनो की चर्चा या विवेचन है।

त्रिका—स्त्री [सं० त्रि√कै (भासित होना)+क—टाप्] कूएँ मे से पानी निकालने के लिए लगी हुई गराड़ी।

त्रि-काय—पुं० [सं० ब० स०] गौतम बुद्ध।

त्रि-कार्षिक—पुं० [सं० कर्ष+ठक्-इक, त्रि-कार्षिक, प० त०] सोंठ, अतीस और मोथा इन तीनो समूह।

त्रि-काल—पु० [स० द्विगु स०] १ भूत, वर्त्तमान और भविष्य ये तीनो काल। २ प्रात , मध्याह्न और साय ये तीनो काल।

त्रिकालज्ञ—पु० [स० त्रिकाल√ज्ञा (जानना) +क] [भाव० त्रिकालज्ञता] वह जो भूत, वर्तमान और भविष्य तीनो कालो मे हुई अथवा होनेवाली वातो को जानता हो।

त्रिकालज्ञता—स्त्री० [स० त्रिकालज्ञ+तल्–टाप्] त्रिकालज्ञ होने की अवस्था, भाव या शक्ति।

त्रिकाल-दर्शक—वि० [स० ष० त०] त्रिकालज्ञ।

पु० ऋषि।

त्रिकालदर्शिता—स्त्री० [स० त्रिकालदर्शिन्+तल्–टाप्] त्रिकालदर्शी होने की अवस्था, गुण, भाव या शक्ति।

त्रिकालदर्शी (शिन्)—पु०[स० त्रिकाल√दृश् (देखना)+णिनि, उप० स०] वह जिसे भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनो कालो मे होनेवाली घटनाएँ या वाते दिखाई देती हो।

त्रिकुट—पु० =त्रिकूट।

त्रिकुटा—पु० [स० त्रिकूट] सोठ, मिर्च और पीपल इन तीनो वस्तुओ का समूह।

†वि० [स० त्रिक] [स्त्री० त्रिकुटी] तीसरा। तृतीय। उदा०—इकुटी, विकुटी, त्रिकुटी सधि।—गोरखनाथ।

त्रिकुटी—स्त्री० [स० त्रिकूट] दोनो भौहो के वीच के कुछ ऊपर का स्थान जिसमे हठ योग के अनुसार त्रिकूट का अवस्थान माना गया है।

त्रि-कूट—पु० [स० व० स०] १ वह पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हों। २ पुराणानुसार वह पर्वत जिस पर लंका वसी हुई मानी गई है और जो रुप-सुन्दरी नामक देवी का निवास-स्थान कहा गया है। इसकी गिनती पीठ-स्थानो मे होती है। ३ क्षीरोद समुद्र मे स्थित एक कल्पित पर्वत। ४ हठयोग के अनुसार मस्तक के कुछ चक्रो मे पहला चक्र जिसका स्थान दोनो भौंहो के वीच मे माना गया है।

त्रिकूट-गढ़—पु० [स० त्रिकूट+हिं० गढ] त्रिकूट पर्वत पर स्थित लका।

त्रिकूटा—स्त्री० [स० त्रिकूट+टाप्] तान्त्रिकों की एक भैरवी।

त्रि-कूर्चक—पु० [स० व० स०] एक तरह की छुरी जिसमे तीन तरफ धारें होती है।

त्रि-कोण—वि० [स० व० स०] तीन कोणोवाला।

पु० १ तीनकोणो वाली कोई वस्तु। २ भग। योनि। ३ ज्यामिति मे ऐसी आकृति या क्षेत्र जिसके तीन कोण हो। जैसे—△। ४ कामरूप के अतर्गत एक तीर्थ जो सिद्ध-पीठ माना जाता है। ५. जन्म कुडली मे लग्न स्थान से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

त्रिकोण-घंटा—पु० [कर्म०स०?] लोहे के छट का वना हुआ एक प्रकार का तिकोना वाजा जिस पर लोहे के एक दूसरे टुकडे से आघात करके ताल देते हैं।

त्रिकोण-फल—पुं० [व० स०] सिघाडा।

त्रिकोण-भवन—पु० [कर्म० स०] जन्मकुडली मे लग्न से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

त्रिकोण-मिति—स्त्री० [स० व० स०?] गणित शास्त्र की वह शाखा जिसमे त्रिभुजो के कोण, वाहु, वर्ग, विस्तार आदि का मान निकाला जाता है।

त्रि-क्षार—पु० [स० द्विगु स०] जवाखार, सज्जी और सुहागा ये तीनों क्षार अथवा इनका समूह।

त्रि-क्षुर—पु० [स० व० स०] ताल-मखाना।

त्रि-ख—पु० [स० व० स०] खीरा।

त्रिखा†—स्त्री० तृषा।

त्रिखी†—वि० =तृषित।

त्रि-गग—पुं० [स० अव्य० स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

त्रि-गधक—पु० [स० द्विगु० स०] इलायची, दारचीनी और तेज पत्ता ये तीनो पदार्थ अथवा इनका समूह। त्रिजातक।

त्रि-गंभीर—पु० [स० तृ० त०] वह जिसका स्वत्व (आचरण), स्वर और नाभि ये तीनों गभीर हों। कहते हैं कि ऐसा पुरुष सदा सुखी रहता है।

त्रि-गण—पु० [स० ष० त०] त्रिवर्ग। (दे०)

त्रि-गर्त्त—पु० [स०व० स०] १ रावी, व्यास, और सतलज की घाटियो का अर्थात् आधुनिक काँगडे और जालधर के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम। २ उक्त देश का निवासी।

त्रि-गर्त्ता—स्त्री० [स० व० स०, टाप्] छिनाल स्त्री। पुश्चली।

त्रिगर्तिक—पु० =त्रिगर्त।

त्रि-गुण—पु० [स० द्विगु स०] सत्त्व, रज और तम ये तीनो गुण।

†वि० [व० स०] =तिगुना।

त्रि-गुणा—स्त्री० [स० व० स०, टाप्] १ दुर्गा। २ माया। ३ तत्र मे एक प्रकार का वीज।

त्रिगुणात्मक—वि० [स० त्रिगुण-आत्मन्, व० स०, कप्] [स्त्री० त्रिगुणात्मिका] १ सत, रज और तम नामक तीनों गुणों से युक्त। जिसमे तीनो गुण हो। २ किसी प्रकार के तीन गुणो से युक्त।

त्रिगुणी—स्त्री० वि०[स० त्रिगुण] जिसमे तीन गुण हो। त्रिगुणात्मक।

स्त्री० [व० स०, ङीप्] वेल का पेड।

त्रि-गूढ़—पु० [स० व० स०] पुरुष का ऐसा नृत्य जो वह स्त्री का वेप धारण करके करता है।

त्रि-घटा—स्त्री० [स० व० स०] एक कल्पित नगरी जो हिमालय की चोटी पर अवस्थित मानी जाती है। कहते है यहाँ विद्याधर आदि रहते हैं।

त्रि-चक्र—पु० [स० व० स०] अश्विनीकुमारो का रथ।

त्रि-चक्षु (स्)—पु० [स० व० स०] महादेव।

त्रिचित्—पु० [स० त्रि√चि (वटोरना)+क्विप्, उप० स०] गार्हपत्याग्नि।

त्रि-चीवर—पु० [स० व० स०?] एक प्रकार का वस्त्र।

त्रिजगत्—पु० १ =त्रिलोक। २ =तिर्यक्।

त्रि-जट—पु० [स० व० स०] महादेव। शिव।

वि० [स्त्री० त्रिजटा] तीन जटाओवाला।

त्रि-जटा—स्त्री० [स० व० स०] १ विभीषण की वहन जो अशोक वाटिका मे सीता जी के पास रहा करती थी। २ वेल का पेड।

त्रिजटी (टिन्)—पु० [स० त्रिजटा+इनि] महादेव। शिव।

स्त्री० = त्रिजटा।

त्रि-जड़—पुं० [डिं०] १ कटारी। २ तलवार।

त्रि-जात—पु० [स० द्विगु स०] त्रिजातक। (दे०)

त्रिजातक—पुं० [स० त्रिजात+कन्] इलायची (फल), दारचीनी (छाल) और तेजपत्ता (पत्ता) ये तीनों पदार्थ अथवा इन तीनों का मिश्रण।
त्रिजाम—स्त्री० [स० त्रियामा] रात। रात्रि।
त्रि-जीवा—स्त्री० [स० स० त०] तीन राशियो अर्थात् ९० अशो तक फैले हुए चाप की ज्या।
त्रि-ज्या—स्त्री० [स० ष० त०?] किसी वृत्त के केन्द्र से परिधि तक खिंची हुई रेखा जो व्यास की आधी होती है। व्यासार्द्ध। (रेडियस)
त्रिण*—पु० =तृण।
त्रिण-ता—स्त्री० [स० स० त०, णत्व] धनुष।
त्रि-णव—पु० [स० मध्य० स०, णत्व] सामगान की एक प्रणाली जिसमे एक विशेष प्रकार से उसकी (३+९) सत्ताईस आवृत्तियाँ करते है।
त्रि-णाचिकेत—पु० [स० व० स०, णत्व] १ यजुर्वेद का एक विशेष भाग। २ वह जो उक्त भाग का अध्ययन करता हो या उसका अनुयायी हो। ३ परमात्मा।
त्रिण्ह*—वि० = तीन।
त्रि-तंत्री—स्त्री० [स० मध्य० स०] पुरानी चाल की एक तरह की तीन तारोवाली वीणा।
त्रित—पु० [स०] १ एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र माने जाते हैं। २ गौतम मुनि के तीन पुत्रो मे से एक।
त्रितय—पु० [स० त्रि + तयप्] धर्म, अर्थ और काम इन तीनों का समूह।
त्रि-ताप—पु० [स० द्विगु स०] दैहिक, दैविक और भौतिक ये तीनो ताप या कष्ट।
त्रि-दड—पु० [स० द्विगु स०] सन्यासियो का वह पतला लवा डडा जिसके ऊपरी सिरे पर दो छोटी लकडियाँ वँधी होती है तथा जिसे वे हाथ मे लेकर चलते हैं।
त्रिदंडी (डिन्)—पुं० [स० त्रिदण्ड+इनि] १. वह सन्यासी जो त्रिदड लिये रहता हो। २ मन, वचन और कर्म तीनो का दमन करने या इन्हे वश मे रखनेवाला व्यक्ति। ३ यज्ञोपवीत। जनेऊ।
त्रि-दल—पु० [स० व० स०] बेल का वृक्ष।
त्रि-दला—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] गोधापदी। हसपदी।
त्रि-दलिका—स्त्री० [स० ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] एक प्रकार का थूहर। चर्मकषा। सातला।
त्रि-दश—पु० [स० ब० स०] १ वह जो भूत, भविष्य और वर्त्तमान अथवा बचपन, जवानी और बुढापे की तीनो दशाओ मे एक-सा बना रहे। २. देवता। ३ जिह्वा। जीभ।
त्रिदश-गुरु—पु० [ष० त०] देवताओ के गुरु बृहस्पति।
त्रिदश-गोप—पु० [ब० स०] बीरबहूटी नामक कीड़ा।
त्रिदश-दीर्घिका—स्त्री० [ष० त०] आकाश-गगा।
त्रिदश-पति—पु० [ष० त०] इद्र।
त्रिदश-पुष्प—पु० [मध्य० स०] लौग।
त्रिदश-मंजरी—स्त्री० [ष० स०] तुलसी।
त्रिदश-वधू—स्त्री० [ष० त०] अप्सरा।
त्रिदश-सर्षप—पु० [मध्य० स०] एक तरह की सरसो। देवसर्षप।
त्रिदशांकुश—पुं० [सं० त्रिदश-अकुश, ष० त०] वज्र।
त्रिदशाचार्य—पु० [सं० त्रिदश-आचार्य, ष० त०] बृहस्पति।
त्रिदशाधिप—पु० [स० त्रिदश-अधिप, ष० त०] इद्र।
त्रिदशाध्यक्ष—पु० [स० त्रिदश-अध्यक्ष, ष० त०] विष्णु।
त्रिदशायन—पु० [स० त्रिदश-अयन, ब० स०] विष्णु।
त्रिदशायुध—पु० [स० त्रिदश-आयुध, ष० त०] वज्र।
त्रिदशारि—पु० [स० त्रिदश-अरि, ष० त०] असुर।
त्रिदशालय—पु० [स० त्रिदश-आलय, ष० त०] १ स्वर्ग। २ सुमेरु पर्वत।
त्रिदशाहार—पु० [स० त्रिदश-आहार, ष० त०] अमृत।
त्रिदशेश्वर—पु० [स० त्रिदश-ईश्वर, ष० त०] इद्र।
त्रिदशेश्वरी—स्त्री० [स० त्रिदश-ईश्वरी, ष० त०] दुर्गा।
त्रिदिनस्पृश्—पु० [स० त्रि-दिन, द्विगु स०, √स्पृश् (छूना)+क्विप] वह तिथि जिसका थोडा बहुत अश या मान तीन दिनो तक रहता हो। एक दिन आरभ होकर पूरे दूसरे दिन तक बनी रहनेवाली और तीसरे दिन समाप्त होनेवाली तिथि।
त्रि-दिव—पु० [स० √दिव् (क्रीडा)+क, त्रि-दिव, ब० स०] १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ सुख।
त्रिदिवाधीश—पु० [स० त्रिदिव-अधीश, ष० त०] इद्र।
त्रिदिवेश—पु० [स० त्रिदिव-ईश, ष० त०] देवता।
त्रिदिवोद्भवा—स्त्री० [सं० त्रिदिव-उद्भव, ब० स०, टाप्] १ गगा। २. बड़ी इलायची।
त्रि-दृश—पु० [स० ब० स०] शिव। महादेव।
त्रि-देव—पु० [स० द्विगु स०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनो देवता अथवा इन तीनो देवताओ का समूह।
त्रि-दोष—पु० [स० द्विगु स०] १ ये तीन दोष या शारीरिक विकार-वात, पित्त और कफ। २ सन्निपात नामक रोग जो इन तीनो के कुपित होने से होता है। ३. काम, क्रोध और लोभ, ये तीनो मानसिक दोष या विकार।
त्रिदोषज—वि० [स० त्रिदोष√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो त्रिदोष से उत्पन्न हुआ हो।
पु० सन्निपात नामक रोग।
त्रिदोषना—अ० [स० त्रिदोष] १ वात, पित्त और कफ इन तीन दोषो या विकारो से पीडित होना। २. काम, क्रोध और लोभ नामक तीनो दोषो से युक्त होना।
त्रिधनी—स्त्री० [स० ?] एक रागिनी का नाम।
त्रि-धन्वा (न्वन्)—पु० [स० त्रि-धनुस्, ब० स० (अनड्)] हरिवश के अनुसार सुधन्वा राजा का एक पुत्र।
त्रि-धर्मा (र्मन्)—पुं० [स० ब० स०, अनिच्] शकर। शिव।
त्रिधा—क्रि० वि० [स० त्रि+धाच्] तीन तरह से। तीन रूपो मे।
वि० १ तीन तरह या प्रकार का। २. तीन रूपो वाला।
त्रिधातु—पु० [स० द्विगु स०] १ चाँदी, ताँबा और सोना ये तीनो धातुएँ। २ [त्रि√धा (पापण करना)+तुन्] गणेश का एक नाम।
त्रि-धाम (न्)—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु। २. अग्नि। ३ शिव। ४. स्वर्ग। ५ मृत्यु।
त्रिधा-मूर्ति—पुं० [ब० स०] परमेश्वर जिसके अतर्गत ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनो हैं।

त्रि-धारक—पुं० [स० ब० स०, कप्] १ बड़ा नागरमोथा। गुंदला। २ कसेरू का पौधा।

त्रि-धारा—स्त्री० [स०ब०स०] १ तीन धाराओंवाला सेंहुड। तिधारा। २ गंगा जिसकी स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों मे तीन धाराएँ बहती हैं।

त्रिधा-विशेष—पु० [कर्म० स०] सांख्य के अनुसार सूक्ष्म मातृ, पितृज और महाभूत तीनों प्रकार के रूप धारण करनेवाला शरीर।

त्रिधा-सर्ग—पु० [कर्म० स०] दैव, तिर्यग् और मानुष ये तीनों सर्ग जिसके अंतर्गत सारी सृष्टि आ जाती है।

त्रिन†—पु० =तृण।

त्रि-नयन—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० त्रिनयना] तीन आँखों या नेत्रोंवाला।

पु० महादेव। शिव।

त्रि-नयना—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] दुर्गा।

त्रि-नाभ—पु० [स० त्रि-नाभि ब० स०, अच्] विष्णु।

त्रि-नेत्र—वि० [स० ब० स०] तीन नेत्रोंवाला।

पु० १ महादेव। शिव। २ सोना। स्वर्ण।

त्रिनेत्र-चूडामणि—पु० [ष० त०] चन्द्रमा।

त्रिनेत्ररस—पु० [स० मध्य० स०] (शोधे हुए) पारे, गंधक और फूंके हुए ताँबे के योग मे बनाया हुआ एक तरह का रस। (वैद्यक)

त्रिनेत्रा—स्त्री० [सं० त्रिनेत्र+टाप्] वाराही कंद।

त्रि-पटु—पु० [स०] काँच। शीशा।

त्रिपत†—वि० = तृप्त।

त्रि-पताक—पु० [स० ब० स०] ऐसा मस्तक जिस पर तीन प्राकृतिक वेंड़ी रेखाएँ बनी या बनती हों।

त्रि-पत्र—वि० [सं० ब० स०] जिसमें तीन पत्ते या तीन-तीन पत्तों के समूह हों।

पु० बेल का वृक्ष।

त्रिपत्रक—पु० [स० त्रिपत्र+कन्] १ पलाश या ढाक का पेड़। २ कुद, तुलसी और बेल, के पत्तों का समूह।

त्रिपत्रा—स्त्री० [सं० त्रिपत्र+टाप्] १ अरहर का पौधा। २ तिपतिया नाम की घास।

त्रि-पथ—पुं० [सं० द्विगु स०, अच्] १ आकाश, पाताल और भूमि ये तीनों मार्ग। २ कर्म, ज्ञान और उपासना जो आत्म-लाभ के तीन मार्ग कहे गये है। ३ तिर-मुहानी।

त्रिपथगा—स्त्री० [स० त्रिपथ√गम् (जाना)+ड-टाप्] गंगा नदी।

विशेष—गंगा नदी के संबंध मे कहा गया है कि इसकी तीनों लोकों मे एक-एक धारा बहती है।

त्रिपथगामिनी—स्त्री० [स० त्रिपथ√गम्+णिनि—ङीप्] गंगा।

त्रिपथा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] मथुरा।

त्रिपद—वि० [स०ब०स०] १ तीन पैरोंवाला। २ तीन पदोंवाला।

पु० १. यज्ञों की वेदी नापने की एक नाप जो प्राय तीन कदम या डग की होती थी। २ त्रिभुज। ३ तिपाई। ४ तीन पदों अर्थात् चरणों-वाला छद।

त्रिपदा—स्त्री० [स० त्रिपद+टाप्] १ वैदिक छदों का एक भेद। गायत्री। २ लाल लज्जावती। हंसपदी।

त्रिपदिका—स्त्री० [स० त्रिपदा+कन्-टाप्, इत्व] १ शख आदि रखने के लिए पीतल की बनी हुई छोटी तिपाई। २ तिपाई। ३. संगीत मे, संकीर्ण राग का एक भेद।

त्रिपदी—स्त्री० [स० त्रिपद+ङीप्] १ गायत्री। २ हंसपदी। लाल लज्जावती। ३ हाथी की पलान बाँधने का रस्सा। ४ तिपाई। ५. तिपाई के आकार का वह चौखटा जिस पर शख रखा जाता है।

त्रिपन्न—पु० [स०] चंद्रमा के दस घोडों मे से एक।

त्रि-परिक्रांत—पु० [स० स० त०] ऐसा ब्राह्मण जो यज्ञ करता हो, वेदों का अध्ययन करता हो और दान देता हो।

त्रिपर्ण—पु० [स० ब० स०] पलाश (वृक्ष)।

त्रिपर्णा—स्त्री० [सं० त्रिपर्ण+टाप्] पलाश (वृक्ष)।

त्रिपर्णिका—स्त्री० [स० त्रिपर्ण+कन्, टाप्-इत्व] १ शालपर्णी। २ वन-कपास। ३ एक प्रकार की पिठवन लता।

त्रिपर्णी—स्त्री० [सं० त्रिपर्ण+ङीप्] १ एक प्रकार का क्षुप जिसका कद औषध के काम आता है। २. शालपर्णी।

त्रिपला —स्त्री० = त्रिफला।

त्रिपाठी (ठिन्)—पु० [स० त्रि√पठ्(पढना)+णिनि] १ तीन वेदों का जाननेवाला व्यक्ति। त्रिवेदी। २ ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग। त्रिवेदी। तिवारी।

त्रि-पाण—पु० [स० त्रि-पान, ब० स०, णत्व] १ वह सूत जो तीन बार भिगोया गया हो। (कर्मकाड) २ छाल। वल्कल।

त्रि-पाद—वि० [स० ब० स०] १ तीन पैरोंवाला।

पु० १ परमेश्वर। २ ज्वर। बुखार।

त्रिपादिका—स्त्री० [स० त्रिपाद+कन्—टाप्, इत्व] १ तिपाई। २ हंसपदी लता। लाल लज्जालू।

त्रि-पाप—पु० [स० ब० स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जिससे किसी मनुष्य के किसी वर्ष का शुभाशुभ फल जाना जाता है।

त्रि-पिंड—पु० [सं० द्विगु० स०] पार्वण श्राद्ध मे पिता, पितामह और प्रपितामह के निमित्त दिये जानेवाले तीनों पिंड। (कर्मकांड)

त्रि-पिटक—पु० [स० ब० स०] बौद्धों का एक धर्म-ग्रंथ जिसके तीन पिटक या खंड हैं और जिसमे गौतम बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है।

त्रिपिताना*—अ० [स० तृप्त] तृप्त होना।

स० तृप्त करना।

त्रिपिब—पु० [स० त्रि√पा (पीना) + क, नि० पिब] वह खसी जिसके दोनों कान पानी पीने के समय पानी मे छू जाते हों। ऐसा बकरा मनु के अनुसार पितृकर्म के लिए बहुत उपयुक्त होता है।

त्रि-पिष्टप—पु० [स० कर्म० स०] १ स्वर्ग। २ आकाश।

त्रिपुंड—पु० [स० त्रिपुंड्र] मस्तक पर लगाया जानेवाला तीन आड़ी रेखाओं का तिलक।

क्रि० प्र०—देना।—रमाना।—लगाना।

त्रिपुंडी—वि० [हि० त्रिपुंड] माथे पर त्रिपुंड लगानेवाला।

त्रि-पुंड्र—पु० [स० द्विगु स०]=त्रिपुंड।

त्रि-पुट—पु० [स०ब०स०] १. गोखरू का पेड। २. मटर। ३. खेसारी। ४ तीर। ५. ताला।

त्रिपुटक—पु० [स० त्रिपुट+कन्] १ खेसारी। २. फोड़े का एक आकार।

त्रि-पुटा—स्त्री० [स० व० स०, टाप्] १ वेल का वृक्ष। २. छोटी इलायची। ३. वडी इलायची। ४ निसोथ। ५. कनफोडा वेला। ६ मोतिया। ७. तान्त्रिको की एक अभीष्टदात्री देवी।

त्रि-पुटी—स्त्री० [स० व० स०, ङीप्] १ निसोथ। २. छोटी इलायची। ३ तीन वस्तुओ का समूह। जैसे—ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय।

पु० [स० त्रिपुट+इनि] १ रेड का पेड। २. खेसारी।

त्रि-पुर—पु० [स० द्विगु स०] १ वे तीनो नगरियाँ जो मयदानव ने तारकासुर के तीन पुत्रो के रहने के लिए वनाई थी और जिन्हे शिव ने एक ही वाण से नष्ट कर दिया था। २. वाणासुर का एक नाम। ३ तीनो लोक। ४ चदेरी नगर।

त्रिपुरघ्न—पु० [स० त्रिपुर√हन् (मारना)+टक्] महादेव जिन्होने एक ही वाण से तारकासुर के तीनो पुत्रो के तीनो पुर या नगर नष्ट कर दिये थे।

त्रिपुर-दहन—पु० [ष० त०] महादेव।

त्रिपुर-भैरव—पु० [उपमि० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो सन्निपात का नाशक कहा गया है।

त्रिपुर-भैरवी—स्त्री० [त्रिपुरा-भैरवी, कर्म० स०] एक देवी।

त्रिपुर-मल्लिका—स्त्री० [मध्य० स०?] एक तरह की मल्लिका।

त्रिपुरातक—पु० [त्रिपुर-अंतक, ष० त०] महादेव। शिव।

त्रिपुरा—स्त्री० [स० त्रि√पुर् (देना)+क−टाप्] १. कामाख्या देवी की एक मूर्ति। २ भारत के पूर्वी आचल का एक नगर और उसके आस-पास का प्रदेश।

त्रिपुरारि—पु० [त्रिपुर-अरि, ष० त०] महादेव। शकर।

त्रिपुरासुर—पु० [त्रिपुर-असुर, कर्म० स०] =त्रिपुर।

त्रि-पुरुष—पु० [सं० द्विगु स०] १ पिता, पितामह और प्रपितामह ये तीनो पुरखे। २. सम्पत्ति का ऐसा भोग जो लगातार तीन पीढियो तक चला हो।

त्रिपुष—पु० [स० त्रि√पुप् (पुष्टि करना)+क] १ ककडी। २ खीरा। ३ गेहूँ।

त्रिपुषा—स्त्री० [स० त्रिपुप+टाप्] काली निसोथ।

त्रि-पुष्कर—पु० [स० द्विगु स०] फलित ज्योतिष मे, एक योग जो पुनर्वसु-उत्तरापाढा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी पूर्वभाद्रपद और विशाखा नक्षत्रो रवि, मगल और शनि वारो तथा द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियो मे से किसी एक नक्षत्र, वार या तिथि के एक साथ पडने से होता है। वालक के जन्म के लिए ये यह योग जारज योग समझा जाता है।

त्रि-पृष्ठ—पु० [स० व० स०?] जैनमत के अनुसार प्रथम वासुदेव।

त्रिपौरुष—पु० [स० त्रिपुरुष+अण्, उत्तरपदवृद्धि] =त्रिपुरुष।

त्रिपौलिया—पु० =तिरपौलिया।

त्रि-प्रश्न—पु० [स० प० त०] दिशा, देश और काल सवधी प्रश्न। (फलित ज्योतिष)

त्रि-प्रस्नुत—पु० [स० स० त०] वह हाथी जिसके मस्तक, कपोल और नेत्र इन तीनो स्थानो से मद निकलता हो।

त्रि-प्लक्ष—पु० [स० व० स०] वैदिक ग्रथो मे उल्लिखित एक देश।

त्रि-फला—स्त्री० [स० द्विगु स०, टाप्] आँवले, हड और वहेडे के फल अथवा इन तीनो फलो का मिश्रण जो अनेक प्रकार के रोगो का नाशक माना गया है।

त्रि-वलि—स्त्री० = त्रिवली।

त्रि-वली—स्त्री० [स० मध्य० स०] व्यक्ति विशेषत स्त्री के पेट पर नाभि से कुछ ऊपर पडने या वननेवाली तीन रेखाएँ। (सौंदर्य सूचक)

त्रि-वलीक—पु० [स० व० स०, कप्] १. वायु। २. गुदा। ३ मलद्वार।

त्रि-वाहु—पु० [स० व० स०] १ रुद्र का एक अनुचर। २. तलवार चलाने का एक ढग या हाथ।

वि० जिसकी तीन वाँहे हो।

त्रिवेनी—स्त्री०=त्रिवेणी।

त्रि-भग—वि० [स० व० स०] जिसमे तीन वल पडे हुए हो।

पु० खडे होने की मुद्रा जिसमे टाँग, कमर और गरदन मे कुछ टेढ़ापन रहता है। यह मुद्रा वाँकपन, सुकुमारता और सौन्दर्य की सूचक मानी गई है।

त्रिभंगी (गिन्) —वि० [स० त्रि-भग, द्विगु स०,+इनि] १. जिसमे तीन वल पडे हुए हो। २ त्रिभगवाली मुद्रा से जो खडा हुआ हो।

पु० [स० त्रिभग+ङीप्] १ ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक जिसमे एक गुरु, एक लघु और एक प्लुत मात्रा होती है। २ शुद्ध राग का एक भेद। ३ ३२ मात्राओ का एक तरह का छद जिसमे १०, ८, ८, और ६ मात्राओ पर विश्राम होता है। ४ दण्डक का भेद। ५ दे० 'त्रिभग'।

त्रिभंडी—स्त्री० [स० त्रि√भड् (परिहास)+अण्—ङीप्] निसोथ।

त्रिभ—वि० [स० व० स०] तीन नक्षत्रोवाला।

पु० [स०] चद्रमा के हिसाव से रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्र युक्त आश्विन मास, शताभिषा पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद नक्षत्रयुक्त भाद्रमास और पूर्वफाल्गुनी उत्तर फाल्गुणी और हस्त नक्षत्र युक्त फाल्गुन मास।

त्रिभ-जीवा—स्त्री० [स० प० त०] त्रिज्या। व्यासार्द्ध।

त्रि-भज्या—स्त्री० [स० प० त०] =त्रिज्या। व्यासार्द्ध।

त्रि-भद्र—पु० [स० व० स०] स्त्री-प्रसग। सभोग।

त्रि-भुक्ति—पु० [स० व० स०] तिरहुत या मिथिला देश।

त्रि-भुज—पु० [स० व० स०] ज्यामिति, मे वह आकृति या क्षेत्र जिसकी तीन भुजाएँ हो।

त्रि-भुवन—पु० [स० द्विगु० स०] स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल ये तीनो लोक।

त्रिभुवन-नाथ—पु० [स० प० त०] ईश्वर। परमेश्वर।

त्रिभुवन-सुन्दरी—स्त्री० [स० स० त०] १ दुर्गा। २ पार्वती।

त्रिभूम—पु० [स० त्रि-भूमि, व० स०,+अच्] वह भवन जिसमे तीन खड हो।

त्रिभोलग्न—पु० [स०] क्षितिज वृत्त पर पडनेवाले क्रातिवृत्त का ऊपरी मध्य भाग।

त्रि-मंडला—स्त्री० [स० व० स०, टाप्] मकडियो की एक जाति।

त्रि-मद—स्त्री० [स० द्विगु स०] १. मोथा, चीता और वायविडग ये तीनो पदार्थ अथवा इनका मिश्रण। २. [मध्य० स०] परिवार, विद्या और धन तीनो के कारण होनेवाला अभिमान या मद।

त्रि-मधु—पु० [स० व० स०] १. ऋग्वेद का एक अग। २. वह जो विधि-

पूर्वक उक्त अग पटता हो। ३ ऋग्वेद का एक यज्ञ। ४ [द्विगु स०] घी, चीनी और शहद का समूह।
त्रि-मधुर—पुं० [स० द्विगु स०] घी, मधु और चीनी ये तीनो पदार्थ।
त्रिमात—वि०=त्रिमात्रिक।
त्रि-मात्र—वि० [स० ब० स०] (स्वर) जिसमे तीन मात्राएँ हों। प्लुत।
त्रिमात्रिक—वि० [स० त्रिमात्र+ठन्—इक] (स्वर) जिसमे तीन मात्राएँ हों। प्लुत।
त्रि-मार्ग-गामिनी—स्त्री० [स० त्रिमार्ग, द्विगु स०, त्रिमार्ग√गम् (जाना)+णिनि—ङीप्] गगा।
त्रि-मार्गा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १ गगा। २ तिरमुहानी।
त्रिमास—पु० [स० द्विगु स०] [वि० त्रैमासिक] १ तीन महीनो का समय। २ वर्ष के तीन महीनो के चार विभागो मे कोई एक। (क्वार्टर) जैसे—यह चदा इस वर्ष के तीसरे त्रिमास का है।
त्रि-मुंड—वि० [स० ब० स०] जिसके तीन मुड या सिर हो।
पु० १ त्रिशिर राक्षस का दूसरा नाम। २ ज्वर। बुखार।
त्रि-मुकुट—वि० [स० ब० स०] तीन मुकुटोवाला।
पु० त्रिकुट।
त्रि-मुख—वि० [स० ब० स०] जिसके तीन मुख हो। तीन मुँहोवाला।
पु० १ गायत्री जपने की चौवीस मुद्राओ मे से एक मुद्रा की सज्ञा। २ शाक्य मुनि।
त्रिमुखा—स्त्री० = त्रिमुखी।
त्रिमुखी—स्त्री० [स० त्रिमुख+ङीप्] बुद्ध की माता। माया देवी।
वि० [स० त्रिमुखिन्] तीन मुखो या मुँहोवाला।
त्रि-मुनि—पु० [स० द्विगु स०] पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि ये तीनो मुनि।
त्रिमुहानी—स्त्री० = तिरमुहानी।
त्रि-मूर्ति—पु० [स० ब० स०] १. ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनो देवता। २ सूर्य।
स्त्री० १ ब्रह्मा की एक शक्ति। २ बौद्धो की एक देवी।
त्रिमृत—पु० [स०?] निसोथ।
त्रिमृता—स्त्री० = त्रिमृत।
त्रिय*—स्त्री० = त्रिया।
वि० = त्रय (तीन)।
त्रियना*—अ० = तरना।
त्रि-यव—पु० [स० ब० स०] तीन जौ का एक तौल।
त्रि-यष्टि—पु० [स० स० त०] पितपापडा। शाहतरा।
त्रिया*—स्त्री० [स० स्त्री] औरत। स्त्री।
त्रि-यान—पु० [स० द्विगु स०] महायन, हीनयान और मध्यम यान, बौद्धो के ये तीन सम्प्रदाय।
त्रियामक—पु० [स० त्रि√यम् (नियन्त्रण करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] पाप।
त्रि-यामा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १. रात्रि। २ यमुना देवी। ३ हल्दी। ४ नील का पेड। ५ काला निसोथ।

त्रि-युग—पु० [स० द्विगु स०] १ सतयुग, द्वापर और त्रेता ये तीनो युग। २. [ब० स०] वसत, पावस और शरद ये तीनो ऋतुएँ। ३. विष्णु।
त्रियूह—पु० [स०] सफेद रग का घोडा।
त्रि-रत्न—पु० [स० द्विगु स०] बौद्ध धर्म मे बुद्ध, धर्म और सघ इन तीनो का वर्ग या समूह।
त्रिरश्मि—स्त्री० =त्रिकोण।
त्रि-रसक—पु० [स० ब० स०, कप्] वह मदिरा, जिसमे तीन प्रकार के रस या स्वाद हो।
त्रि-रात्रि—पु० [स० द्विगु स०] १. तीन रात्रियो (और दिनो) का समय। २. उक्त समय तक चलनेवाला उपवास या व्रत। ३. एक प्रकार का यज्ञ।
त्रि-रूप—पु० [स० ब० स०] अश्वमेध यज्ञ के लिए उपयुक्त माना जानेवाला एक प्रकार का घोडा।
त्रि-रेख—वि० [स० ब० स०] जिसमे तीन रेखाएँ हो।
पु० शख।
त्रिल—पु० [स० ब० स०] नगण, जिसमे तीनो लघु वर्ण होते है।
त्रि-लघु—पु० [स० ब० स०] १ नगण, जिसमे तीनो वर्ण लघु होते हैं। २ ऐसा व्यक्ति जिसकी गरदन, जाँघ और मूत्रेंद्रिय तीनो छोटी हो। (शुभ)
त्रि-लवण—पु० [स० द्विगु स०] सेंधा, साँभर और सोचर (काला) ये तीनो प्रकार के नमक।
त्रि-लिंग—पु० [स० द्विगु स०] १ पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, तथा नपुसक तीनो लिंग। २ तैलग शब्द का वह रूप जो उसे सस्कृत व्याकरण के अनुसार मिला है।
त्रिलोक—पु० [स० द्विगु स०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनो लोक।
त्रिलोक-नाथ—पुं० [स० ष० त०] १ तीनो लोको का मालिक ईश्वर। २ राम। ३ कृष्ण। ४ विष्णु का कोई अवतार। ५ सूर्य।
त्रिलोक-पति—पु० [स० ष० त०] = त्रिलोकनाथ।
त्रिलोकी—स्त्री० [स० त्रिलोक+ङीप्] =त्रिलोक।
त्रिलोकी-नाथ—पु० = त्रिलोकनाथ।
त्रिलोकेश—पु० [स० त्रिलोक-ईश, ष० त०] १ ईश्वर। २ सूर्य।
त्रिलोचन—पु० [स० ब० स०] महादेव। शिव।
त्रि-लोचना—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] = त्रिलोचनी।
त्रि-लोचनी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] दुर्गा।
त्रिलोह—पु० [स० द्विगु स०] सोना, चाँदी और ताँबा ये तीनो धातुएँ।
त्रि-लौही—स्त्री० [स० त्रिलोह, ब० स०, +ङीप्] प्राचीन काल की वह मुद्रा या सिक्का जो सोने, चाँदी और ताँबे को मिलाकर बनाया जाता था।
त्रिवट—पु०=त्रिवण।
त्रि-वण—पु० [स०] सपूर्ण जाति का एक राग। यह दोपहर के समय गाया जाता है। इसे हिंडोल राग का पुत्र कुछ लोग मानते हैं।
त्रिवणी—स्त्री० [स० त्रिवण से] शकराभरण, जयश्री और नरनारायण के मेल से बननेवाली एक सकर रागिनी।
त्रि-वर्ग—पु [स० द्विगु स०] १ तीन चीजो का वर्ग या समूह। २ धर्म, अर्थ और काम जो सांसारिक जीवन के तीन मुख्य उद्देश्य हैं। ३ सत्व,

रज और तम इन तीनों गुणों का समूह। ४ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण। ५ त्रिफला। ६ त्रिकुटा।

त्रि-वर्ण—पु [स० द्विगु स०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण।

त्रिवर्णक—पु [स० त्रिवर्ण+कन्] १ गोखरू। २ त्रिफला। ३ त्रिकुटा ४ लाल, काला, और पीला रग। ५. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये तीनों जातियाँ।

त्रि-वर्णी—स्त्री० [स० व० स०, टाप्] वन कपास।

त्रिवर्त्त—पु [स० त्रि√वृत् (रहना)+अण्] एक तरह का मोती, जिसे अपने पास रखने से आदमी दरिद्र हो जाता है।

त्रिवलि—स्त्री०=त्रिवली।

त्रिवलिका—स्त्री०=त्रिवली।

त्रिवली—स्त्री०=त्रिवली।

त्रिवल्य—पु [स० त्रिवलि+यत्] पुराने जमाने का एक बाजा, जिसपर चमड़ा मढ़ा होता था। पुरानी चाल का एक तरह का ढोल।

त्रि-वाचा—स्त्री० [स० मध्य०स०] कोई बात जोर देने के लिए तीन बार कहने की क्रिया। उदा०—कहहिं प्रतीति प्रीति नीतिहूँ त्रिवाचा बाँधि ऊधो साँच मनको हिये की अरु जी के ही।—रत्ना०।

क्रि० प्र०—देना।—बाँधना।

त्रिवार—पु० [स०] गरुड के एक पुत्र का नाम।

त्रिवाहु—पु०=त्रिवाहु।

त्रि-विक्रम—पु [स० व० स०] १. वामन अवतार। २ विष्णु।

त्रिविद्—पु० [सं० त्रि√विद् (जानना)+क्विप्] वह जिसने तीन वेद पढे हों। तीन वेदों का ज्ञाता।

त्रि-विध—वि० [स० व० स०] तीन तरह का। तीन रूपोंवाला।

क्रि० वि० तीन प्रकार से।

त्रि-विनत—पु० [स० स० त०] देवता, ब्राह्मण और गुरु के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखनेवाला व्यक्ति।

त्रि-विष्टप—पु० [स० कर्म० स०] १. स्वर्ग। २ तिब्बत।

त्रि-विस्तीर्ण—पु० [स० तृ० त०] ऐसा व्यक्ति जिसका ललाट, कमर और छाती विस्तीर्ण हो। (शुभ)

त्रि-वीज—पु० [सं० व० स०] साँवाँ।

त्रिवृत्—वि० [स० त्रि√वृ (वरण करना)+क्विप्] जिसके तीन भाग हों।

पु० १ एक यज्ञ। २. निसोथ।

त्रिवृता—वि०=त्रिवृत्त।

त्रिवृत्करण—पु० [स० त्रिवृत्-करण, प० त०] अग्नि, जल और पृथ्वी इन तीनों तत्वों मे से प्रत्येक मे शेष दोनों तत्वों का समावेश करके प्रत्येक को अलग-अलग तीन भागों मे विभक्त करने की क्रिया। (दर्शन शास्त्र)

त्रि-वृत्त—वि० [स० तृ० त०] तिगुना।

त्रिवृत्ता—स्त्री० [स० त्रिवृत्त+टाप्] =त्रिवृत्ति।

त्रिवृत्ति—स्त्री० [स० व० स०] निसोथ।

त्रिवृत्पर्णी—स्त्री० [स० त्रिवृत्-पर्ण, व० स०, ङीप्] हुरहुर। हिल-मोचिका।

त्रिवृद्वेद—पु० [सं० त्रिवृत्-वेद, कर्म० स०] १ ऋक्, यजुः और साम तीनों वेद। २ प्रणव।

त्रि-वृष—पु० [सं० व० स०] ग्यारहवें द्वापर के व्यास का नाम। (पुराण)

त्रि-वेणी—स्त्री० [स० व० स०, ङीप्] १ वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ आकर मिलती हों। २. तीन नदियों की सयुक्त धारा। ३. गगा, यमुना और सरस्वती नदियों का सगम जो प्रयाग मे है। ४. हठयोग मे इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का सगम स्थान, जो मस्तक मे दोनों भौंहों के बीच माना जाता है। ५ सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

त्रि-वेणु—पु० [सं० व० स०] रथ के अगले भाग का एक अग।

त्रि-वेद—पु० [स० द्विगु स०] १ ऋक्, यजु और साम ये तीनों वेद। २. [त्रि√विद् (जानना)+अण्] इन तीनों वेदों का ज्ञाता या पंडित।

त्रिवेदी (दिन्)—पु० [स० त्रिवेद+इनि] १. ऋक्, यजु और साम इन तीनों वेदों का ज्ञाता। २. ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग।

*स्त्री० [स० त्रिपदी] १ तिपाई। २ छोटी चौकी।

त्रिवेनी†—स्त्री०= त्रिवेणी।

त्रि-वेला—स्त्री० [स० व० स०] निसोथ।

त्रि-शंकु—पु० [स० व० स०] १ एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, जो यज्ञ करके स-शरीर स्वर्ग पहुँचना चाहते थे, परंतु देवताओं के विरोध के कारण वहाँ नही पहुँच सके थे। पुराणों की कथा के अनुसार जब विश्वामित्र अपनी तपस्या के बल से इन्हें स्वर्ग भेजने लगे, तब इन्द्र ने इन्हे बीच मे ही रोककर लौटना चाहा, जब ये उलटे होकर गिरने लगे, तब विश्वामित्र ने इन्हे मध्यआकाश मे ही रोक दिया, जहाँ ये अब तक एक तारे के रूप मे स्थित हैं। २ एक प्राचीन पर्वत। ३ पपीहा। ४. बिल्ली। ५. जुगनूँ।

त्रिशंकुज—पु० [स० त्रिशङ्कु√जन् (पैदा होना)+ड] त्रिशंकु के पुत्र, राजा हरिश्चन्द्र।

त्रिशंकुयाजी (जिन्)—पु० [स० त्रिशकु√यज् (यज्ञ करना)+णिच्+णिनि] त्रिशकु को यज्ञ करानेवाले, विश्वामित्र ऋषि।

त्रि-शक्ति—स्त्री० [सं० द्विगु स०] १ इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीन ईश्वरीय शक्तियाँ। २. बुद्धितत्त्व या महत्तत्त्व जो त्रिगुणात्मक हैं। ३. गायत्री। ४ तांत्रिकों की काली, तारा और त्रिपुरा नाम की तीनों देवियाँ।

त्रिशक्तिधृत्—पुं० [स० त्रिशक्ति√धृ (धारण करना)+क्विप्] १ परमेश्वर। २. राजा विजिगीषु का दूसरा नाम।

त्रि-शरण—पु० [स० व० स०] १. महात्मा गौतम बुद्ध। २ एक जैन आचार्य।

त्रि-शर्करा—स्त्री० [स० द्विगु स०] गुड, शक्कर और मिश्री तीनों का समूह।

त्रि-शला—स्त्री० [स० त्रि-शाला, व० स०, पृषो० सिद्धि] वर्तमान अव-सर्पिणी के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर की माता का नाम।

त्रि-शाख—वि० [सं० व० स०] तीन शाखाओंवाला।

त्रिशाख-पत्र—पुं० [स० व० स०] बेल का पेड़।

त्रि-शाल—पु० [स० व० स०] वह घर जिसमे तीन बड़े-बड़े कमरे हों।

त्रि-शालक—पु० [स० व० स०, कप्] वह मकान, जिसकी उत्तर दिशा मे कोई और मकान बना हुआ न हो।

त्रि-शिख—वि० [स० व० स०] तीन शिखाओं या चोटियोंवाला।

पु० १. त्रिशूल। २. किरीट। ३ रावण का एक पुत्र। बेल का वृक्ष। ४ तामस मन्वन्तर के इन्द्र।

त्रि-शिखर—पु० [स० ब० स०] १ तीन चोटियोवाला पहाड। २ त्रिकूट।

त्रिशिखि-दला—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] मालाकद लता और उसका कद।

त्रिशिखी (खिन्)—वि०, पु० [स० त्रिशिखा+इनि]=त्रिशिख।

त्रि-शिर (स्)—वि० [सं० ब० स०] तीन सिरोवाला।

पु० १ खर-दूषण की सेना का एक राक्षस जिसका वध राम ने दडकवन मे किया था। २ कुबेर। ३ त्वष्टा प्रजापति का एक पुत्र।

त्रिशिरा—स्त्री० = त्रिजटा।

पु०=त्रिशिर।

त्रिशिरारि—पु० [स० त्रिशिर-अरि, ष० त०] त्रिशिर को मारनेवाले रामचन्द्र।

त्रि-शीर्ष—वि० [स० ब० स०] तीन चोटियोवाला।

पु० १ त्रिकूट नामक पर्वत। २ त्वष्टा प्रजापति का एक पुत्र।

त्रि-शीर्षक—पु० [स० ब० स०,+कप्] त्रिशूल।

त्रिशुच्—पु० [स० ब० स०] १ धर्म, जिसका प्रकाश स्वर्ग, अतरिक्ष और पृथ्वी तीनो स्थानो मे है। २ वह जिसे दैहिक, दैविक और भौतिक तीनो प्रकार के कष्ट या दु ख हो।

त्रि-शूल—पु० [स० ब० स०] १ लोहे का एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन नुकीले फल होते है और शिव जी का अस्त्र माना जाता है। २. दैहिक, दैविक और भौतिक ये तीनो ताप या दुःख। त्रिताप। ३. एक मुद्रा, जिसमे अँगूठे को कनिष्ठा उँगली के साथ मिलाकर बाकी तीनो उँगलियो को फैला देते हैं। (तत्र) ४. हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी जो २३४०४ फुट ऊँची है।

त्रिशूल-घात—पु० [स० ब० स०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ जहाँ स्नान और तर्पण करने से गाणपत्य देह प्राप्त होती है।

त्रिशूलधारी (रिन्)—पु० [स० त्रिशूल√धृ (धारण करना)+णिनि] त्रिशूल धारण करनेवाले शिव।

त्रिशूल-मुद्रा—स्त्री० [स० मध्य० स०] तत्र मे हाथ की एक मुद्रा।

त्रिशूली (लिन्)—पु० [स० त्रिशूल+इनि] त्रिशूल धारण करनेवाले शिव।

स्त्री० [त्रिशूल+अच्—ङीप्] दुर्गा।

त्रि-शोक—पु० [स० ब० स०] १ जीव, जिसे आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ये तीन प्रकार के शोक (दु ख) सताते हो। २ कण्व ऋषि के एक पुत्र का नाम।

त्रिशृंग—पु० [स० ब० स०] १ त्रिकूट पर्वत जिस पर लका बसी थी। २ त्रिकोण।

त्रिशृंगी—स्त्री० [स० त्रिशृग+ङीप्] एक तरह की मछली जिसके सिर पर तीन काँटे होते हैं। टेंगर।

त्रिश्रुतिमध्यम—पु० [स०] एक प्रकार का विकृत स्वर, जो सदीपनी नाम की श्रुति से आरभ होता है। (सगीत)

त्रि-षवण—पु० स० द्विगु स०] प्रात , मध्या[illegible] [illegible] साय ये तीनों [illegible]

[illegible]

त्रिषष्ट—वि० [स० त्रिषष्टि+ड] तिरसठवाँ।

त्रि-षष्टि—स्त्री० [स० मध्य० स०] तिरसठ की सख्या।

त्रिषा—स्त्री० = तृषा।

त्रिषित—वि० = तृषित।

त्रिषुपर्ण—पु० = त्रिसुपर्ण।

त्रिष्टक—पु० = त्रीष्टक।

त्रिष्टुपा—पु० = त्रिष्टुभ्।

त्रिष्टुभ्—पु० [स० त्रि√स्तुभ् (रोकना)+क्विप्, षत्व] एक वैदिक छद, जिसके चरणो मे ग्यारह-ग्यारह अक्षर होते हैं।

त्रि-ष्टोम—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ, जो क्षत्रधृति यज्ञ करने से पहले या बाद मे किया जाता था।

त्रिष्ठ—पु० [स० त्रि√स्था (स्थित होना) +क, षत्व] ऐसी गाडी या रथ जिसके तीन पहिये हों।

त्रि-संगम—पु० [स० ष० त०] १ तीन नदियों के मिलने का स्थान। त्रिवेणी। २ तीन प्रकार की चीजो का मिश्रण या मेल।

त्रि-सधि—स्त्री० [स० ब० स०] १ एक वृक्ष, जिसका फूल लाल, सफेद और काले तीन रगोवाला होता है। २ उक्त वृक्ष का फूल।

त्रिसध्य—पु० [स० द्विगु स०] दिन के तीन भाग प्रात , मध्याह्न और साय। (ये तीनों सधि-काल है।)

त्रिसंध्यव्यापिनी—वि० [स० त्रिसन्ध्य – वि√आप् (व्यप्ति)+णिनि – ङीप्] तिथि, जिसका भोगकाल सूर्योदय के पहले से सूर्यास्त के बाद तक रहे।

त्रि-सध्या—स्त्री० [स० द्विगु स०] प्रात , मध्याह्न और साय ये तीनों सध्याएँ, या सधि-काल।

त्रिस*—स्त्री० [स० तृषा] प्यास। उदा०—त्रिगुण परसतै पुवा त्रिस।—प्रिथीराज।

त्रि-सप्तति—स्त्री० [स० मध्य० स०] तिहत्तर की सख्या।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७३।

त्रिसप्तति-तम—वि० [स० त्रिसप्तति+तमप्] तिहत्तरवाँ।

त्रि-सम—वि० [स० ब० स०] (क्षेत्र) जिसकी तीनो भुजाएँ बराबर हो।

पु० [द्विगु स०] सोठ, गुड और हर्रे इन तीनों का समूह।

त्रि-सर—पु० [स० त्रि√सृ (गति)+अप्] खेसारी।

त्रि-सर्ग—पु० [स० ष० त०] सत्व, रज और तम, इन तीनो गुणो का सर्ग या सृष्टि।

त्रि-सामा (मन्)—पु० [स० ब० स०] परमेश्वर।

स्त्री० पुराणनुसार एक नदी, जो महेन्द्र पर्वत से निकली है।

त्रि-सिता—स्त्री० = त्रि-शर्करा।

त्रि-सुगधि—स्त्री० [स० द्विगु स०] दालचीनी, इलायची और तेजपात इन तीनों सुगधित मसालो का समूह।

त्रि-सुपर्ण—पु० [स० ब० स०] १. ऋग्वेद के तीन विशिष्ट मत्रो की सज्ञा। २ यजुर्वेद के तीन विशिष्ट मत्रो की सज्ञा।

त्रिसुपर्णिक—पु० [स० त्रिसुपर्ण+ठक्—इक] त्रिसुपर्ण का ज्ञाता।

त्रिसौपर्ण—पु० [स० त्रिसुपर्ण+अण्] १ त्रिसुपर्णिक। २ परमेश्वर।

त्रि-स्कंध—पुं० [स० ब० स०] ज्योतिषशास्त्र, जिसके संहिता, तंत्र और होरा ये तीन स्कंध या विभाग है।

त्रि-स्तनी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] १. गायत्री। २. महाभारत के अनुसार तीन स्तनोंवाली एक राक्षसी।

त्रि-स्तवन—पुं० [स० मध्य० स०] तीन दिनों तक बराबर चलनेवाला एक तरह का यज्ञ।

त्रि-स्तावा—स्त्री० [स० मध्य० स०, अच्—टाप्, टिलोप नि०] अश्वमेध यज्ञ की वेदी (जो साधारण वेदी से तिगुनी बड़ी होती थी)।

त्रि-स्थली—स्त्री० [स० द्विगु स०, ङीप्] ये तीन पवित्र नगरियाँ—काशी, प्रयाग और गया।

त्रि-स्थान—पुं० [स० द्विगु स०] १. सिर, ग्रीवा और वक्ष इन तीनों का समूह। २. [ब० स०] तीन स्थानों या तीनों लोकों मे रहनेवाला व्यक्ति या ईश्वर।

त्रि-स्नान—पुं० [स० ष० त०] सवेरे, दोपहर और संध्या इन तीन समयों मे किये जानेवाले स्नान।

त्रिस्पृशा—स्त्री० [स० त्रि√स्पृश् (छूना)+क—टाप्] वह एकादशी, जिसमें एक ही सायन दिन में उदयकाल के समय थोड़ी-सी एकादशी और रात के अंत में त्रयोदशी होती है।

त्रिस्रोता(तस्)—स्त्री० [स० ब० स०] १. गंगा। २. उत्तरी बंगाल की एक नदी।

त्रि-हायण—वि० [स० ब० स०, णत्व] जिसकी अवस्था तीन वर्ष की हो चुकी हो।

त्रि-हायणी—स्त्री० [स० ब० स०], ङीप् णत्व] द्रौपदी।

त्रिहुँ*—वि० १. = तीन। २ = तीनों।

त्रिहुत†—पुं० = तिरहुत।

त्री*—स्त्री० = स्त्री।

त्रीकम—पुं० [स० त्रिविक्रम] भगवान् का वामन अवतार। (तीन कदम चलने के कारण उनका यह नाम पड़ा है) उदा०—तिणि ही पार न पायौ त्रीकम।—प्रिथीराज।

त्रीषु—पुं० [सं० त्रि-इषु, ब० स०, +कन् (लुक्)] तीन बाणों की दूरी का स्थान।

त्रीषुक—पुं० [स० त्रि-इषु, ब० स०,+कप्] वह धनुष जिससे एक साथ तीन बाण छोड़े जा सकें।

त्रीष्टक—पुं० [स० त्रि-इष्टका, ब० स०] एक प्रकार की अग्नि।

त्रुटि—स्त्री० [स० √त्रुट् (टूटना)+इन्] १. तोड़ने-फोड़ने आदि की क्रिया या भाव। २. ऐसा अभाव जिसके फलस्वरूप कोई कार्य, बात या वस्तु ठीक, पूर्ण या शुद्ध न मानी जा सकती हो। कमी। (डिफेक्ट) ३. भूल। ४. प्रतिज्ञा या वचन का भंग। ५. संदेह। संशय। ६. कार्तिकेय की एक मातृका। ७ छोटी इलायची। ८. समय का एक मान जो आधे लव के बराबर माना गया है।

त्रुटित—वि० [सं०√त्रुट्+क्त] १ जिसमे कोई त्रुटि (अभाव या कमी) हो। २. त्रुटि-पूर्ण। ३. चोट खाया हुआ। ४. आहत।

त्रुटि-बीज—पुं० [स० ब० स०] अरवी। घुइयाँ।

त्रुटी—स्त्री० [स० त्रुटि+ङीष्] =त्रुटि।

त्रूटना—अ० [स० त्रुट्] टूटना। उदा०—त्रूटै कध मुण्ड जड़ त्रूटै।—प्रिथीराज।

त्रेता—पुं० [स० त्रि—इता, पृषो० सिद्धि] १ तीन चीजों का समूह। २ गार्हपत्य, दक्षिण और आहवनीय ये तीन अग्नियाँ। ३ हिंदुओं के अनुसार चार युगों मे से दूसरा युग, जिसका भोगकाल १२९६०० वर्षों का था तथा जिसमें भगवान् राम का अवतार हुआ था। ४ जुए मे तीन कौड़ियों का अथवा पासे के उस भाग का चित्त पड़ना, जिसपर तीन बिंदियाँ हो। तीया।

त्रेताग्नि—स्त्री० [स० त्रेता-अग्नि, कर्म० स०] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय—ये तीन अग्नियाँ।

त्रेतिनी—स्त्री० [स० त्रेता+इनि—ङीप्] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय तीनों प्रकार की अग्नियों से होनेवाली क्रिया।

त्रेधा—अव्य० [स० त्रि+एधाच्] तीन प्रकारों या रूपों में।

त्रै—वि० [स० त्रय] तीन।

त्रैकंटक—वि० [स० त्रिकंटक+अण्] जिसमे तीन काँटे हों।

पुं० = त्रिकंटक।

त्रैककुद्—पुं० [स० त्रिककुद्+अण्] १. त्रिकूट पर्वत। २. विष्णु।

त्रैककुभ—पुं० [सं० त्रिककुभ+अण्] = त्रिककुभ।

त्रैकाल्ल—पुं० [सं० त्रिकाल+अण्] = त्रिकाल।

त्रैकालिक—वि० [स० त्रिकाल+ठञ्—इक] १ भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों मे अर्थात् सदा होनेवाला। २. प्रातः, मध्याह्न और संध्या तीनों कालों मे होनेवाला।

त्रैकाल्य—पुं० [स० त्रिकाल+ष्यञ्] १. भूत, वर्तमान और भविष्यत् ये तीनों काल। २. प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल। ३. जीवन की आरंभिक, मध्यम और और अंतिम ये तीनों स्थितियाँ। बचपन, जवानी और बुढ़ापा।

त्रैकूटक—पुं० [सं० त्रिकूटक (त्रिकूट+कन्)+अण्] एक प्राचीन राजवंश।

त्रैकोणिक—वि० [स० त्रिकोण+ठञ्—इक] १ जिसमें तीन कोण हों। २ जिसके तीन पार्श्व हों। तिपहला।

त्रैगर्त—पुं० [स० त्रिगर्त+अण्] १ त्रिगर्त देश का राजा। २ त्रिगर्त देश का निवासी।

त्रैगुणिक—भू० कृ० [स० त्रिगुण+ठञ्—इक] १ तिगुना किया हुआ। २. तीन बार किया हुआ।

त्रैगुण्य—पुं० [स० त्रिगुण+ष्यञ्] सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणों का भाव या समूह।

त्रैदशिक—पुं० [स० त्रिदश+ठञ्—इक] उँगली का अगला भाग जो तीर्थ कहलाता है।

त्रैध—वि० [स० त्रि+धमुञ्] १ तिगुना। २ तेहरा।

अव्य० तीन प्रकार से।

त्रैधातवी—स्त्री० [सं० त्रिधातु+अण्—ङीप्] एक प्रकार का यज्ञ।

त्रैपिष्टप—वि० पुं० [स० त्रिपिष्टप+अण्] दे० 'त्रैविष्टप'।

त्रैपुर—पुं० [स० त्रिपुर+अण्] = त्रिपुर।

त्रैफल—पुं० [स० त्रिफला+अण्] वैद्यक में त्रिफला के योग से तैयार किया हुआ घी।

त्रैबलि—पु० [स०] महाभारत के समय के एक ऋषि।
त्रैमातुर—पु० [स० त्रिमातृ+अण्, उत्व] लक्ष्मण।
त्रैमासिक—वि० [स० त्रिमास+ठञ्–इक] हर तीसरे महीने होनेवाला। जैसे—त्रैमासिक पत्रिका।
त्रैमास्य—पु० [स० त्रिमास+ष्यञ्] तीन महीनो का समय।
त्रैयबक—वि० [स० त्र्यम्बक+अण्] त्र्यबक-सबधी। त्र्यबक का।
 पु० एक प्रकार का होम।
त्रैयबिका—स्त्री० [स० त्रैयम्बक+टाप्, इत्व] गायत्री।
त्रैराशिक—पु० [सं० त्रिराशि+ठञ्–इक] गणित की एक क्रिया, जिसमे तीन ज्ञात राशियो की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का मान निकाला जाता है। (रूल ऑफ थ्री)
त्रैरूप्य—पु० [स० त्रिरूप+ष्यञ्] तीन रूपो का भाव।
त्रैलोक—पु० [स० त्रिलोक+अण्] = त्रैलोक्य।
त्रैलोक्य—पु० [स० त्रिलोकी+ष्यञ्] १ स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनो लोक। २ इक्कीस मात्राओ के छदो की सज्ञा।
त्रैलोक्य-चिंतामणि—पु० [स० स० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस, जो (क) सोने, चाँदी और अभ्रक के योग से अथवा (ख) मोती, सोने और हीरे के योग से बनता है।
त्रैलोक्य-विजया—स्त्री० [स० ब० स०] भाँग।
त्रैलोक्य-सुंदर—पुं० [स० स० त०] पारे, अभ्रक, लोहे, त्रिफला आदि के योग से बननेवाला एक तरह का रस। (वैद्यक)
त्रैलोक्य-सुदरी—स्त्री० [स० स० त०] दुर्गा या देवी का एक रूप।
त्रैवर्गिक—पु० [स० त्रिवर्ग+ठञ्–इक] वह कर्म, जिससे धर्म, अर्थ और काम इन तीनो की साधना हो।
 वि० १ त्रिवर्ग-सबधी। तीन वर्गों का। २ तीन वर्गों मे होनेवाला।
त्रैवर्ग्य—पु० [स० त्रिवर्ग+ष्यञ्] धर्म, अर्थ, काम ये तीनो वर्ग या जीवन के उद्देश्य अथवा साधन।
त्रैवर्णिक—वि० [त्रिवर्ण+ठञ्–इक] जिसका सबध तीन वर्णो से हो। तीन वर्णोवाला।
 पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनो जातियो का धर्म।
त्रैवर्षिक—वि० [स० त्रिवर्ष+ठञ्–इक] हर तीसरे वर्ष होनेवाला। (ट्रीनियल)
त्रैविक्रम—पु० [स० त्रिविक्रम+अण्] विष्णु।
त्रैविद्य—वि० [स० त्रिविद्या+अण्] तीन वेदो का ज्ञाता। २ बहुत बडा चालाक। चलता-पुरजा। (व्यग्य)
त्रैविष्टप—पु० [स० त्रिविष्टप+अण्] स्वर्ग मे रहनेवाले अर्थात् देवता।
त्रैशंकव—पु० [स० त्रिशकु+अण्] त्रिशङ्कु के पुत्र राजा हरिश्चन्द्र।
त्रैस्वर्य—पु० [स० त्रिस्वर+ष्यञ्] उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीनो प्रकार के स्वर।
त्रैहायण—वि० [स० त्रिहायण+अण्] = त्रैवर्षिक।
त्रोटक—पु० [स०√त्रुट् (टूटना)+णिच्+ण्वुल्–अक] १ नाटक का एक भेद, जिसका नायक कोई दिव्य पुरुष होता है तथा जिसमे ५, ७, ८ या ९ अक होते हे और प्रत्येक अक मे विदूषक रहता है। २ सगीत मे एक प्रकार का राग।
त्रोटकी—स्त्री० [स० त्रोटक+ङीप्] एक प्रकार की रागिनी। (सगीत)
त्रोटि—स्त्री० [स०√त्रुट् (छेदन)+णिच्+इ] १ कायफल। २ चोच।
 पु० एक पक्षी।
त्रोण—पु० [स०] तरकश।
त्रोतल—वि० [स०] तोतला।
त्रोत्र—पु० [स०√त्रै (रक्षा करना)+उत्र] १ अस्त्र। २ चाबुक। ३ एक रोग।
त्रोन*—पु० = त्रोण।
त्र्यंगर—पु० [स०] १ ईश्वर। २ चद्रमा। ३ छीका। सिकहर।
त्र्यंगुल—वि० [स० त्रि-अगुलि, तद्धितार्थ द्विगु स०,+द्वयसच् (लुक्)+अच्] जो नाप मे तीन उँगलियो की चौडाई के बराबर हो।
त्र्यंजन—पु० [स० त्रि-अजन, द्विगु स०] कालाजन, रसाजन और पुष्पाजन ये तीनो अजन। काला सुरमा, रसोत और वे फूल जो अजनो मे मिलाये जाते हैं। जैसे—चमेली, तिल, नीम, लौंग, अगस्त्य इत्यादि।
त्र्यंबक—पु० [स० त्रि-अम्बक, ब० स०] १ महादेव। शिव। २ ग्यारह रुद्रो मे से एक रुद्र का नाम। ३ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
 वि० तीन आँखो या नेत्रोवाला।
त्र्यबक-सख—पु० [स० ष० त०, टच् समा०] कुबेर।
त्र्यंबका—स्त्री० [स० त्र्यम्बक+टाप्] दुर्गा, जिसके सोम, सूर्य और अनल ये तीनो नेत्र माने जाते है।
त्र्यंबुक—पु० [स०] एक तरह की मक्खी।
त्र्यक्ष—वि० [स० त्रि-अक्षि, ब० स०, षच् समा०] तीन आँखोवाला। जिसके तीन नेत्र हो।
 पु० १. महादेव। शिव। २ पुराणानुसार एक दैत्य जिसकी तीन आँखें थी।
त्र्यक्षक—पु० [स० त्र्यक्ष+क (स्वार्थे)] शिव।
त्र्यक्षर—वि० [स० त्रि-अक्षर, ब० स०] त्र्यक्षरक। (दे०)
त्र्यक्षरक—वि० [स० त्र्यक्षर+कन्] जो तीन अक्षरो से मिलकर बना हो।
 पु० १ ओकार या प्रणव। २ एक प्रकार का वैदिक छद। ३. तत्र मे तीन अक्षरोवाला मत्र।
त्र्यक्षी—स्त्री० [स० त्र्यक्ष+ङीप्] एक राक्षसी का नाम।
त्र्यधिपति—पु० [स० त्रि-अधिपति, ष० त०] तीनो लोको के स्वामी, विष्णु।
त्र्यध्वगा—स्त्री० [स० त्रि-अध्वन्, द्विगु स०, त्र्यध्व√गम् (जाना)+ड–टाप्] = त्रिपथगा (गगा)।
त्र्यमृतयोग—पु० [स० अमृत-योग, उपमि० स०, त्रि-अमृतयोग, ष० त०] एक योग, जो कुछ विशिष्ट वारो, तिथियो और नक्षत्रो के योग्य से होता है। (ज्योतिष)
त्र्यवरा—स्त्री० [स० त्रि-अवर, ब० स०, टाप्] तीन सदस्योवाली परिषद्।
त्र्यशीति—स्त्री० [स० त्रि-अशीति, मध्य० स०] अस्सी और तीन की सख्या, तिरासी।

त्र्यस्त—पु० [स० त्रि-अस्त, स० त०] त्रिकोण।

त्र्यहस्पर्श—पु० [स० त्रि-अहन्, द्विगु स०, त्र्यह√स्पृश् (छूना)+अण्] वह सावन दिन, जो तीन तिथियाँ स्पर्श करता हो।

स्त्री० [स० त्र्यह√स्पृश्+क्विन्] वह तिथि, जो तीन सावन दिनो को स्पर्श करती हो। ऐसी तिथि विवाह, यात्रा आदि के लिए निषिद्ध मानी जाती है।

त्र्यहिकारि रस—पु० [स०] पारा, गधक, तूतिया और शख आदि-के योग से बनाया जानेवाला रस। (वैद्यक)

त्र्यहीन—पु० [स० त्र्यह+ख—ईन] तीन दिनों मे होनेवाला एक यज्ञ।

त्र्यहैहिक—वि० [स० त्र्यह-ऐहिक, ब० स०] जिसके पास तीन दिन तक के निर्वाह के लिए यथेष्ट सामग्री हो।

त्र्यार्षेय—पु० [स० त्रि-आर्षेय, ब० स०] १ वह गोत्र जिसके तीन प्रवर हो। त्रिप्रवर गोत्र। २ अधे, गूगे और बहरे लोग, जिन्हे यज्ञो मे नहीं जाने दिया जाता था।

त्र्याहण—पु० [स० त्रि-आ√हन् (मारना)+अच्] १ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का पक्षी।

त्र्याहिक—वि० [स० त्र्यह+ठञ्—इक] तीन दिनो मे होनेवाला। पु० हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर। तिजारी।

त्र्यूषण—पु० [स० त्रि-उषण, द्विगु स०, पृषो० दीर्घ] १. सोठ, पीपल और मिर्च इन तीनो का समूह या मिश्रण। २. वैद्यक मे उक्त तीनो चीजो के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का घृत।

त्वक्(च्)—पु० [स०√त्वच् (ढकना)+क्विप्] १ वृक्ष की छाल। २ फलो आदि का छिलका। ३ शरीर पर की खाल। चमडा। त्वचा। ४ पाँच ज्ञानेद्रियो मे से एक जो सारे शरीर के ऊपरी भाग मे व्याप्त है। इसके द्वारा स्पर्श होता है। ५ दारचीनी।

त्वक्-क्षीरा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] = त्वक्क्षीरी।

त्वक्-क्षीरी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] वसलोचन।

त्वक्-छद—पु० [ब० स०] क्षीरीश का वृक्ष। क्षीरकचुकी।

त्वक्-पंचक—पु० [प० त०] वट, गूलर, अश्वत्थ, सिरिस और पाकर ये पाँचो वृक्ष।

त्वक्-पत्र—पु० [ब० स०] १ तेजपत्ता। तेजपात। २ दारचीनी।

त्वक्पत्री—स्त्री० [स० त्वक्पत्र+ङीप्] १ हिंगुपत्री। २ केले का पेड।

त्वक्-पाक—पु० [ब० स०] एक रोग, जिसमे पित्त और रक्त के कुपित होने से शरीर मे फुसियाँ निकल आती है। (सुश्रुत)

त्वक्-पुष्प—पु० [प० त०] एक रोग जिसमे त्वचा पर सफेद रग की चित्तियाँ निकलने या पडने लगती है। सेहुआँ रोग। २ शरीर के रोएँ खड़े होने की अवस्था। रोमाच।

त्वक्पुष्पिका—स्त्री० [स० त्वक्पुष्पी+क (स्वार्थे)–टाप्, ह्रस्व] = त्वक्पुष्प।

त्वक्-पुष्पी—स्त्री० [सं० त्वक्पुष्प+ङीप्] = त्वक्पुष्प।

त्वक्-सार—पु० [ब० स०] १. बाँस। २ दारचीनी। ३ सन का पेड़।

त्वक्-सारा—स्त्री० [स० त्वक्सार+अच्-टाप्] वसलोचन।

त्वक्-सुगंधा—पु० [ब० स०, टाप्] १ एलुआ। २. छोटी इलायची।

त्वगंकुर—पु० [स० त्वच्-अकुर, ष० त०] रोमाच।

त्वगाक्षीरी—स्त्री० [स० त्वक्क्षीरी, पृषो० सिद्धि] वसलोचन।

त्वगिंद्रिय—स्त्री० [स० त्वच्-इद्रिय, कर्म० स०] स्पर्शेंद्रिय।

त्वग्गंध—पु० [स० त्वच्-गध, ब० स०] नारगी का पेड़।

त्वग्ज—पु० [स० त्वच्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ रोआँ। रोम। २ रक्त। खून।

त्वग्जल—पु० [स० त्वच्-जल, ष० त०] पसीना।

त्वग्दोष—पु० [स० त्वच्-दोष, ब० स०] कुष्ट। कोढ।

त्वग्दोषापहा—स्त्री० [स० त्वग्दोष-अप√हन् (नष्ट करना)+ड—टाप्] बकुची। बावची।

त्वग्दोषारि—पु० [स० त्वग्दोष-अरि, ष० त०] हस्तिकद।

त्वग्दोषी (षिन्)—पु० [स० त्वग्दोष+इनि] कोढी।

वि० जिसे कुष्ट या कोढ नामक रोग हो।

त्वच—पुं० [स० त्वच्+अच्] १ दारचीनी। २. तेजपात। ३. त्वचा। चमडा।

त्वचकना—अ० [स० त्वचा] १ वृद्धावस्था के कारण शरीर का चमडा झूलना। २ भीतर की ओर धँसना। ३ पुराना पडना।

त्वचा—स्त्री० [स० त्वच्+टाप्] १. जीव की काया का ऊपरी और प्राय रोओ से युक्त कोमल आवरण। चमड़ा। २. छाल।

त्वचा-ज्ञान—पु० [प० त०] किसी विषय की केवल ऊपरी या बाहरी बातो का स्थूल ज्ञान।

त्वचा-पत्र—पुं० [ब० स०] १ तेजपत्ता। २ दारचीनी।

त्वचि-सार—पु० [स० ब० स०, अलुक् समा०] बाँस।

त्वचि-सुगंधा—स्त्री० [स० ब० स०, अलुक् समा०] छोटी इलायची।

त्वदीय—सर्व० [स० युष्मद्+छ–ईय, त्वद् आदेश)] तुम्हारा।

त्वन्मय—वि० [स० त्वच्+मयट्] त्वचा से युक्त।

त्वम्—सर्व० [स०] तुम।

पु० जीव।

त्वरण—पु० [स० √ त्वर् (वेग)+ल्युट्–अन] [वि० त्वरणीय] १ शीघ्रतापूर्वक कोई काम होने की अवस्था, गुण या भाव। २ अधिक वेग से किसी यत्र के चलने का भाव। (एक्सलेरेशन)

त्वरा—स्त्री० [स०√त्वर्+अङ्—टाप्] १ शीघ्रता। जल्दी। २ वेग। तेजी।

त्वरारोह—पु० [स० त्वरा-आरोह, ब० स०] कबूतर।

त्वरावान्(वत्)—वि० [स० त्वरा+मतुप्] १ शीघ्रता करनेवाला। २. वेगपूर्वक चलनेवाला। ३. जल्दबाज।

त्वरि—स्त्री० [सं०√त्वर् (शीघ्रता करना)+इन्] =त्वरा।

त्वरित—वि० [स०√त्वर्+क्त] तेजी से या वेगपूर्वक चलता हुआ। क्रि० वि० जल्दी या तेजी से।

त्वरितक—पु० [स० त्वरित√कै (प्रकाशित होना)+क] एक प्रकार का चावल। तूर्णक। (सुश्रुत)

त्वरित-गति—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, जगण, नगण और एक गुरु होता है। इसे अमृतगति भी कहते है।

त्वरिता—स्त्री० [स० त्वरित+टाप्] एक देवी, जिसकी पूजा युद्ध मे जल्दी विजय पाने के लिए की जाती है। (तत्र)

त्वलग—पु० [स० पृषो० सिद्धि] पानी मे रहनेवाला साँप। डेड्हा।

त्वष्टा (ष्टृ)—पु० [स० √त्वक्ष् (छीलना, पतला करना)+तृच्] १ बढई। विश्वकर्मा। ३. प्रजापति। ४ ग्यारहवे आदित्य, जो आँखो के अधिष्ठाता देव माने गये है। ५ वृत्रासुर के पिता का नाम। ६ शिव। ७ पशुओ और मनुष्यो के गर्भ मे वीर्य का विभाग करनेवाले एक वैदिक देवता। ८ सूत्रधार नामक प्राचीन जाति। ९ चित्रा नक्षत्र के अधिष्ठाता देवता।

त्वष्टि—पु० [स०√त्वक्ष्+क्तिन्] एक सकर जाति। (मनु)

त्वाच—वि० [स० त्वच्+अण्] त्वचा-सबधी। त्वचा का।

त्वाष्टी—स्त्री० [स० तुष्टि, नि० सिद्धि] दुर्गा।

त्वाष्ट्र—पु० [स० त्वष्टृ+अण्] १ वज्र नामक अस्त्र, जो विश्वकर्मा ने बनाया था। २ चित्रा नक्षत्र। ३ वृत्रासुर का एक नाम।

त्वाष्ट्री—स्त्री० [स० त्वाष्ट्र+ङीप्] १ विश्वकर्मा की पुत्री, जो सूर्य की पत्नी तथा अश्विनी कुमारो की माता थी। २ चित्रा नक्षत्र।

त्विषा—स्त्री० [स० त्विष्+टाप्] चमक। दीप्ति। प्रभा।

त्विषामीश—पु० [स० ष० त०, अलुक् समा०] १ सूर्य। २ आक का पेड।

त्विषि—स्त्री० [स०√त्विष् (दीप्ति)+इन्] किरण।

त्वेष—वि० [स०√त्विष्+अच्] १. दीप्त। २ प्रकाशित।

त्सरु—पु० [स०√त्सर् (टेढी चाल)+उन्] १ तलवार की मूठ। २ सर्प। साँप।

त्सारुक—पु० [स० त्सरु+कन्+अण् (स्वार्थे)] तलवार चलाने मे निपुण व्यक्ति।